Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

9-05-1999

...ાગર ગચ્છ
...ીમદ્ બુદ્ધિ... સાણંદ
...ન જ્ઞાન મંદિર
...ક
...ાંક
...ય
(१२)

...जगह बम्बई,इटावा,लाहौर आदिके छपे जैनग्रंथ मंगानेका सबसे बड़ा कार्यालय

श्री आराधनासारकथाकोष १२६ कथा

❋ श्री पद्मपुराण भाषा ❋

श्री पाण्डवपुराण भाषा छन्द

पता-लाला जैनीलाल जैन मालिक दिगम्बरजैनग्रन्थप्रचारक पुस्तकालय मु०देवबन्द (सहारनपुर)

...सागर ग...
श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
...g Jinshasan

For Private and Personal Use Only

❀ खास हमारी छपाई पुस्तकें ❀

श्री पद्म पुराणजी महान ग्रंथ	६)	तीर्थक्षेत्र पूजन गुटका	।=)	शत्रुंजय गिर पूजन	=)॥
पाण्डव पुराण चौपाईबंद	२॥)	विषापहार भाषा	)॥।	पंचपरमेष्ठी वन्दना	)॥
आराधनासारकथाकोषबड़ा	३।।)	नमोकार मन्त्र वेलबूटेदार	–)	बारहमासा नेमनाथ	)॥
यशोधर चरित्र वचनिका	२)	पंचमंगल रूपचन्दजी कृत	)॥	समाधिमरण भाषा बड़ा	–)
तेरह द्वीप पूजन पाठ	२।)	ज्योतीप्रसाद भजनमाला	=)	संकटहरण, दुःखहरणविनती	)॥
सेठसुदर्शन की कथा	)॥।	न्यामतसिंह भजनमाला	–)	उपदेशपचीसी, पुकारपचीसी	)॥
चार दान कथा	=)	मंगलराय भजनमाला	–)	सप्तऋषी पूजन	)।
राजा श्रेणिक व चेलना चरित्र	–)।	लावनी कर्त्ता खण्डन	)।	प्रभुविलास भजन नईरंगतमें	=)॥
निशा भोजन त्याग कथा	–)।	चर्चासी अखाड़ा	–)॥	कृपण पचीसी	)॥
निशा भोजन कथा	)॥	जोगीरासा (वैराग्य भावना)	)।	निर्वाणकाण्ड भाषा	)।
करकुण्ड स्वामी की कथा	=)	आलोचना पाठ	)॥	बारहभावना संग्रह बड़ी	)॥।
प्रातस्मर्णमंगल पाठ	)॥	नित्य न्येम पूजन संस्कृत	–)॥	दर्शन कथा	।)
गिरनार और पावा गिर पूजा	–)	सर्वपूजनसंग्रह भादोंपाठ	।।=)	क्रियाकोष कृष्णसिंह कृत	१)

बम्बई लाहौरतथा इटावा आदि नगरों के छपे जैनग्रन्थ सर्व हमारे पास मिलते हैं

भगवती आराधना सार	७)	समयसार आत्मख्याति	४)	छहढालादि लत रामकृत	–)
चौबीस पूजनपाठ वृन्दावन	१)	द्रव्यसंग्रह सटीक	॥)	छहढाला दं ल० सटीक	।)
शील कथा	=)	रत्नकरंड श्रावकाचार बड़ा	४)	पक्षी भाव भाषा	)।
प्रद्युम्न चारित्र	२॥)	रत्न कंड छोटी टीका	।)	दर्शनपाठ	–)
परमात्मप्रकाश सटीक	=)	धर्म परीक्षा	१)	इष्टछतीसी	)॥।
वसुनन्दीश्रावकाचारसटीक	॥)	पार्श्वपुराण	२।)	जैनार्णव १०० पुस्तक	१)
देवगुरुशास्त्र पूजन सटीक	=)	प्रवचनसार	१।)	जैननित्य पाठ संग्रह	।=)
पुण्याश्रावकथाकोष	३)	वृंदावन विलास	॥।)	सामायक पाठ	)॥।
चौबीसठाणागुटका	।–)	ज्ञानसूर्योदयनाटक नया	॥)	बाईस परीषह	–)
स्वानुभवदर्पण	।)	मोक्ष शास्त्र	॥।)	विनती संग्रह	–)
जिनदत्त चारित्र	१)	भूधर जैनशतक	=)	परमार्थजकड़ी	)॥।
दानकथा	=)	अकलंक स्तोत्र व जीमनी	=)	बारामासा मुनि राज	)।
रक्षाबन्धन कथा	=)	जैनपद संग्रह दौलतराम	।=)	,, सीता जी	–)
इतवार कथा	–)	,, भागचंद	।)	,, राजुल	–)
व्रत कथा संग्रह	=)	,, भूधरदास	।–)	,, वज्रदंत	–)
होली की कथा	–)	,, द्यानतराय	॥=)	श्रावक वनिता बोधनी	।=)
बुढ़ापे का विवाह	–)	,, नैनसुखदास	।=)	पुण्यआश्रव कथा कोष	३)
मनमोहनी नाटक	।)	श्रावकवनिता रागनी	=)	हरिवंश पुराण	६)
नागरीप्रकाश	)।	भक्तामर स्तोत्र संस्कृत	)॥।	आत्मानुशासन	२)
१०० के दाम	१)	,, भाषा	–)	श्रीपाल चरित्र	२॥)
पुरुषार्थसिद्ध्युपायसटीक	।)	सूत्रजी सदासुख जी कृत टीका	१)	धर्मसंग्रह श्रावकाचार	२)

नोट-हमारे पास सर्वप्रकार और सर्वजगह के छपे जैनग्रन्थ हरसमय तैयार मिलते हैं आवश्यक्ता पूर्वक मंगाओ. कमीशन का हिसाब इसके दूसरी तरफ देखो — कमीशन काटकर पुस्तकें भेजी जावेंगी।

पता—लाला जैनीलाल जैन

मालिक दिगम्बर जैनग्रन्थ कार्यालय मु० देवबन्द ज़िला सहारनपुर

ॐनमः सिद्धेभ्यः ॥

ऊँकारम्बिन्दुसंयुक्तं नित्यन्ध्यायन्तियोगिनः कामदंमोक्षदं चैव ऊँकारायनमोनमः ॥१॥ अविरल शब्दघनौघा प्रक्षालित सकलभूतलमलकलङ्का। मुनिभिरुपासिततीर्था सरस्वती हरतुनोदुरितम् ॥२॥ अज्ञानतिमिरांधानां ज्ञानांजन शलाकया। चक्षुरुन्मीलितंयेन तस्मै श्रीगुरवेनमः॥ ३ ॥ परमगुरुवेनमः परम्पराचार्य्यश्रीगुरवेनमः । सकलकलुषविध्वंसकं श्रेयसा-म्परिवर्द्धकं धर्म्मसम्बन्धकं भव्यजीव मनःप्रति बोध कारक मिदंशास्त्रं श्रीपद्मपुराणनामधेयं तन्मूल ग्रंथ कर्त्तारः श्री सर्वज्ञदेवास्तदुत्तरग्रंथ कर्त्तारःश्रीगणधरदेवास्तेषां वचोनुसार मासाद्य श्री रविषेणाचार्य्यैण विरचितम् । मङ्गलं भगवान् वीरो मङ्गलं गौतमोगणी मङ्गलं कुन्दकुंदाद्यो जैनधर्मोस्तु मङ्गलम् ॥ वक्तारः श्रोतारश्च सावधानतया शृणवन्तु ॥

विषय सूची श्री पद्मपुराणजी

नम्बर विषय पृष्ठ

१ पंडित दौलतराम कृत मंगलाचरण १
२ संस्कृत ग्रन्थकार का मंगलाचरण ४

प्रथम अधिकार लोक स्थिति

३ मगध देश का वर्णन १०
४ राजगृह नगर का वर्णन १२
५ राजा श्रेणिक का वर्णन १३
६ वर्द्धमान स्वामीके समोशरण का विपुलाचल पर्वत पर आगमन १५
७ वर्द्धमान स्वामी के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञानका वर्णन १६
८ समोशरण में इन्द्र का आगमन १८
९ इन्द्र का भगवानकी स्तुति करना १९
१० समोशरण की विभूति का वर्णन १९
११ राजा श्रेणिक का समोशरण में आगमन २०
१२ जीवादितत्व और चतुर्गति के दुःखों का वर्णन २०
१३ राजाश्रेणिक का रामचन्द्र जी के वृत्तान्त पूछने का विचार २५
१४ राजा श्रेणिक का गौतम स्वामी से रामचन्द्र का वृतान्त पूछना २७
१५ गणधर देव का व्याख्यान करना २७
१६ लोकालोक का वर्णन २८
१७ कालचक्र का वर्णन २९
१८ चारप्रकारदान का वर्णन ३१
१९ कुलकरों की उत्पत्ति ३२
२० नाभि राजा और मरुदेवी का वर्णन ३३
२१ ऋषभ देव स्वामी के गर्भ कल्याणकका वर्णन ३४
२२ मरुदेवी के सोलह स्वप्नों का वर्णन ३४
२३ मरुदेवी माता को सखियों कर मंगल शब्द सुनाना ३६
२४ मरुदेवीका नाभिराजा से स्वप्न फल पूछना और राजाका उत्तरदेना ३६
२५ ऋषभदेव स्वामीका जन्मकल्याण ३७
२६ ऋषभदेव का सुमेरु पर्वतपरइन्द्र से न्हवन कराना ३८
२७ ऋषभ देवकी कुमारादिअवस्था क्षत्रियादि वर्ण विभाग ४१
२८ ऋषभदेव स्वामीका तप कल्याणक ४३
२९ कच्छ महा कच्छ के पुत्र नमि विनमिका भगवान्‌से राज्यमांगना ४५
३० ऋषभदेव का आहार लेना ४७
३१ ऋषभदेवस्वामीकाज्ञानकल्याणक ४८
३२ ऋषभदेवस्वामी की दिव्यध्वनि का खिरना ४९
३३ भरत को चक्रवर्त्ति पदका प्राप्त होना और बाहुबली से युद्ध ५१
३४ विप्रवर्ण की उत्पत्ति ५२
३५ ऋषभदेवस्वामी और भरत जी का मोक्ष गमन ५४

दूसरा अधिकार वंशोकी उत्पत्ति

३६ चार वंशों की उत्पत्ति ५४
३७ इक्ष्वाकवंश (सूर्यवंश) की उत्पत्ति ५४
३८ सोम (चन्द्र) वंश की उत्पत्ति ५४
३९ विद्याधरों के वंशकी उत्पत्ति ५५
४० संजयतिमुनि श्रीवर्धन राजा और सत्यघोष की कथा ५६
४१ अजित नाथ का वर्णन ५८

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४२ सगर चक्रवर्ती सुलोचन सहस्र
४३ मेघबाहनको लंका और पाताल
लंकाका राज्य भीम सुभीमसेदेना ६४
४४ चौबीस तीर्थंकर १२ चक्रवर्त्ति ९
नारायण ९ प्रतिनारायण बल
भद्र का कथन ६६
नयन मेघवाहन भावनिचन्द्र
आवली की कथा ६९
४५ राजा महा रक्ष का वर्णन ६९
४६ अजित नाथ का निर्वाण सगर
के पुत्रोंको कैलाशके गिरद खाई
खोदते मृत्यु ७०
४७ लंकाकेविद्याधर राजाओंका वर्णन ७२
४८ श्रुत सागर मुनि का धर्मोपदेश
और महारक्ष राजाका वैराग्य ७४
४९ वानरद्वीपऔरवानरवंशी राजावों
का वर्णन ८०
५० धर्मोपदेश और नरकादिकगति
के दुःखों का वर्णन ९५
५१ श्रीमालाकास्वयंवरऔर किहकंध
का विजयसिंहसे युद्ध १०१
५२ राजा इन्द्रका जन्म और वर्णन ११३
५३ इन्द्र और माली सुमाली का
युद्ध और मालीका मारा जाना ११७
५४ सुमालीका लंका छोड़ पाताल
लंका में भागना ११९
५५ इन्द्र से सोम वरुण कुबेर और
यमकोलोकपाल थापना १२०
५६ इन्द्र से वैश्रवण को लंकाके
थाने राखना १२१
५७ सुमाली के रत्नश्रवा पुत्र का
जन्म होना १२१
५८ रत्नश्रवा के रावण कुम्भकर्ण
विभीषण का जन्म होना १२५
५९ वैश्रवण को जाते हुए देखकर
रावण का माता से पूछना १२७
६० रावण कुम्भकर्ण और विभीषण
का विद्या साधना १२८
६१ रावणका सहस्त्रों विद्या साधन
कर माता पिता आदिसेमिलना १३१
६२ राजा मय की पुत्री मन्दोदरी से
रावण का विवाह । १३७
६३ रावण का छह हजार कन्याओं से
गन्धर्व विवाह । १४२
६४ कुम्भकर्ण विभीषण का विवाह १४५
६५ इन्द्रजीत और मेघनादका जन्म १४५
६६ रावण का वैश्रवण को युद्ध में जीत
लंका को गमन करना । १४६
६७ वैश्रवण का दीक्षा धर मोक्ष पाना १५१
" रावणकाराक्षसवंशमेंउत्तमपदपाना १५२
६८ हरिषेण चक्रवर्तीका चरित्र १५३
६९ रावणका त्रैलोक्यमण्डल हस्ती को
वश करना । १६०
७० रावण का यम से युद्ध और यम
का भागना । १६२
७१ रावण का सूर्यरज को किहकन्धपुर
और रक्षरज को किहकूपुर का
राज्य देना। १६६
७२ रावण का लंका में प्रवेश १६७
७३ बाली सुग्रीव नल और नीलकी
उत्पत्ति १६९
७४ चन्द्रनखाको खरदूषण का हरना १७०
७५ विराधित की उत्पत्ति १७१

For Private and Personal Use Only

७६ रावण का बालीपर चढ़ना और बाली का दीक्षा लेना। १७२
७७ रावणका कैलाश को उठावना और बाली मुनि का अगूष्ठ से दबाना १७६
७८ धरणेन्द्रका रावणकोशक्तिकादेना १८२
७९ बाली मुनिका निर्वाण १८३
८० सुग्रीव और सुतारा राणीके अंग और अङ्गद का जन्म। १८४
८१ रावण का इन्द्र पर चढ़ाई करना १८५
८२ रेवा नदी पर बालूके चबूतरे पर रावण की पूजा में विघ्न और सहस्त्रनय से युद्ध। १८८
८३ राजा वसु और कदम्ब ब्राह्मण और नारद पर्वत की कथा और यज्ञ का वर्णन १९५
८४ यज्ञ के विषय नारद और पर्वत का संवाद १९७
८५ नारद मुनि की उत्पत्तिका वर्णन २०१
८६ राजा मरुत के यज्ञ में नारदका आना और रावणका मरुत के यज्ञ का विध्वंस २०३
८७ रावण का मरुत को वश करना और उसकी पुत्री से विवाह २१०
८८ राजा मधु से कृतचित्रा रावणकी पुत्री का विवाह २१५
८९ राजा सुमित्र से भील पुत्री का विवाह और मधु को त्रिशूलकी प्राप्ति २१६
९० उररम्भा का रावण पै आना और रावणका नलकूबर को जीतना २२०
९१ रावण का इन्द्र से युद्ध २२५
९२ रावण कर युद्ध में इन्द्र को पकड़ लङ्का में लेजाना २३५
९३ सहस्त्रार का लङ्का में जाकर इंद्र का छुड़वाना और इंद्र का दीक्षा लेना। २३७
९४ केवली कर धर्मोपदेश और चतुर्गति के दुःखों का विशेष वर्णन २४४
९५ रावण का केवली के सन्मुख दृढ़ नियम धारण करना २७३
९६ पवनञ्जय (वायुकुमार) और अंजनी का वृत्तान्त २७५
९७ पवनञ्जय की काम चेष्टाकावर्णन २८०
९८ पवनंजयका अंजनीपर कोप २८३
९९ पवनंजय का अंजनी से विवाह कर उसको तज युद्ध में जाना २८८
१०० पवनंजय का युद्ध से अंजनी के महल में आना और अंजनीको गर्भ रहना। २९६
१०१ अंजनी को सासू का घर से निकालना ३०२
१०२ अंजनी को गंदर्भ देवका सिंह से बचाना और रक्षा करना और हनूमान का गुफा में जन्म ३१६
१०३ राजा प्रतिसूर्य का अजनीको पुत्रसहित हनूरुहद्वीपमें लेजाना ३२१
१०४ पवनंजय का रावन की मदद कर वरुणको जीत घर वापिस आकर अंजनी को न देख उनके विरह से रुदन करते हुये बनों में फिरना ३२७

१०५ पवनंजय का अंजनी से मिलाप ३३३
१०६ हनूमान का रावण की मदद करना और वरुण को जीतकर रावणके सनमुख लाना ३३५
१०७ हनूमानका रावणकी भानजी से विवाह ३४१
१०८ चौबीस तीर्थंकरोंका पूर्वभवादि सहित सकल वर्णन ३४४
१०९ पल्य सागर अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी कालका वर्णन ३४९
११० चौबीस तीर्थंकरोंके जन्मकाल में अन्तर ३५०
१११ पांचवें और छटे काल का वर्णन ३५१
११२ चौबीस तीर्थंकरों के शरीरकी ऊंचाई और आयुका वर्णन ३५२
११३ चौदह कुलकरोंकी आयु और काय का वर्णन ३५३
११४ बारह चक्रवर्तियों का वर्णन ३५४
११५ नव वासुदेवों का वर्णन ३५९
११६ नव बलभद्रों का वर्णन ३६१
११७ प्रति नारायणों का वर्णन ३६२
११८ हरिवंश की उत्पत्तिका वर्णन ३६३
११९ श्रीमुनि सुव्रतनाथ तीर्थंकर का वर्णन ३६३
१२० राजा जनक की उत्पत्ति ३६६
१२१ राजा वज्रबाहु का वर्णन ३६७
१२२ कीर्तिधर और सुकौशल मुनि का वर्णन ३७३
१२३ राजा हिरण्यगर्भ का वर्णन ३८१
१२४ मनुष्य भक्षी राजा सौदास का वर्णन ३८३
१२५ राजा दशरथ का वर्णन ३८५
१२६ रावणकाकृत्रिमदशरथऔरजनक ६८६
१२७ के सिर को कटवाना ३९१
१२८ राजा दशरथसे केकईको स्वयंबर में परणाना ३९२
१२९ केकई के वर का दशरथ के धरोहर रखना ३९६
१३० श्री रामचन्द्र लक्ष्मण भरत और शत्रुघन का जन्म ३९७
१३१ भामण्डलऔरसीताकी उत्पत्ति का वर्णन ४०१
१३२ पर स्त्री रमता राजा कुण्डल मंडित।और पिंगल ब्राह्मण का वर्णन ४०२
१३३ नरकोंके दुःखों का वर्णन ४००
१३४ देव से भामण्डल का हरन ४१०
१३५ जानकी का वर्णन ४१३
१३६ राम लक्ष्मण कर अन्तगत म्लेछ का जीतना ४१४
१३७ सीता का चित्र देख भामण्डल का उसपर आसक्त होना ४२०
१३८ मायामई घोडे से जनक को चढ़ायकर रथनुपुर लेजाना ४२४
१३९ चन्द्रगति का भामंडल को परणावने के अर्थ जनक से सीता का मागना ४२७
१४० स्वयम्बर में सीता कर राम को वरना ४३५
१४१ सुप्रभाके पास [illegible]का गन्धोदक देरी से लाना ४४०
१४२ राजा दशरथ का मुनिराज से धर्म श्रवण करना ४४५

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४३ भामंडल का यह सुन कि सीता ने राम को वराई विवाह रूप होय सीता के देश जाना रास्ते में सीताको अपनी बहन जान जनक विदेहा और सीता से मिलाप ४५७

तीसरा महा अधिकार श्रीराम वनवास

१४४ राजा दशरथ को अपने भव सुनकर वैराग्य होना ४६०

१४५ केकई को दशरथ से वर मांगना भरत को राज्य दिलाना ४६३

१४६ श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण और सीता का वनको जाना ४७७

१४७ भरत का राज्याभिषेक और दशरथका मुनि होना ४७९

१४८ द्युति भट्टारकाचार्य कर श्रावक धर्म का वर्णन करना ४८३

१४९ श्रीराम लक्ष्मणका वनमें विहार ४८८

१५० राम लक्ष्मणका सिंहोदर से वज्रकर्ण को बचाना ४९०

१५१ राम लक्ष्मण का रौद्रभूत से बालखिल्य को छुड़ाना ५०६

१५२ राम लक्ष्मणका कपिल ब्राह्मण का उपकार ५१३

१५३ लक्ष्मण का वनमाला को फांसी से बचा कर उसको परणना ५२५

१५४ श्रीराम लक्ष्मण का नृत्यकारणी बनकर राजा अति वीर्य को पकड़ना ५२९

१५५ जितपद्मा का लक्ष्मण को वरना ५४२

१५६ राम लक्ष्मणकर देश भूषण कुलभूषण मुनियों का उपसर्ग निवारण ५४७

१५७ श्रीराम लक्ष्मण को जटायु पक्षी की प्राप्ति ५६४

चौथा महाअधिकार युद्ध

१५८ लक्ष्मण का बांसों के बिड़ में संबूक को काटना ५८३

१५९ लक्ष्मण का खरदूषन से युद्ध ५८४

१६० रावन से सीता का हरन ५९३

१६१ विराधित का लक्ष्मन से मिलाप ५९९

१६२ लक्ष्मण से खरदूषन का मरना ६०१

१६३ रत्नजटी कर रावन को सीता लेजाते हुए देखना ६०२

१६३ रावण का सीता को लेजाकर उसको समझाना और सीता का न मानना फिर विभीषण और मंत्रियों का रावण को समझाना कि सीता को रामचन्द्रजी को देदो और रावण का न मानना ६०५

१६४ राम लक्ष्मण से सुग्रीव का मिलाप ६१८

१६५ राम का मायामई सुग्रीव को मारना ६२५

१६६ रामका सुग्रीवकी पुत्रीको वरना ६२६

१६७ सुग्रीवका सीताको ढूंढने जाना और रत्नजटीको रामपै लाना ६२९

१६८ लक्ष्मण कर कोटि शिला का उठावना ६३६

१६९ हनूमान का रामचन्द्र जी से मिलाप ६३८

१७० हनूमानका सीताकी सुधलेने को लंका जाना ६४६

१७१ हनूमानका मुनियोंका उपसर्ग दूर करना और राजा गंधर्व का अपनी कन्याओं का रामचन्द्रजी से विवाह करना ६५०

१७२ हनूमान का लंका में अनेक उपद्रव करना और सीता को रामकी कुशल के समाचार सुनाना ६५२

१७३ हनूमानका सीताकी सुधलेकर रामपै आना ६७२

For Private and Personal Use Only

१७४ श्री रामचन्द्र का सेना सहित लंका पर चढ़ाई करना ६७३
१७५ विभीषणका रामसे मिलाप ६७७
१७६ भामण्डलका सेना सहित राम पै आवना ६८२
१७७ अक्षौहिणी का परिमाण ६८३
१७८ रामलक्षमण का रावणके साथ युद्ध और अनेक सामन्तों का मारा जाना ६८६
१७९ लक्षमणके रावणका शक्तिबाण लगना ७१२
१८० हनुमानआदिक का अयोध्या जाकर भरत को सर्व हाल सुनाना और विशल्याको शक्ति निवारणार्थ लक्षमण के निकट लेजाना और विशल्या के प्रभावकर लक्षमण के शरीरसे शक्ति का निकलना और विशल्या से लक्षमणका विवाह होना ७२२
१८१ रावणका संधीके अर्थ दूत को राम पै भेजना संधी न होने कारण रावण का भय के वश होय बहुरूपणी विद्या साधने में उद्यमी होना ७२६
१८२ लक्षमण का रावण की विद्या भंगकरनेको सामन्तोंको लंका भेजना परन्तु रावण को विद्या सिद्ध होना और युद्धका आरम्भ ७५८
१८३ लक्षमणसे रावणका माराजाना ७७७
१८४ श्रीरामका सीतासे मिलाप ७९८
१८५ नारदका कौशल्या सुमित्रा के शोकका समाचार रामपरलाना ८१२
१८६ रामलक्षमणका अयोध्या गमन८१९
१८७ रामलक्षमणका माताओंसेमिलाप८२१
१८८ देशभूषण कुलभूषणका अयोध्या में व्याख्यान ८३३
१८९ भरत का अपने और त्रलोक मंडन हाथीके पूर्व भव सुनकर विरक्त चित्तहोयअन्यराजाओं सहित जिनदीक्षा लेना ८४४
१९० रामलक्षमणका राज्याभिषेक ८४९
१९१ मधुको जीत शत्रुघ्नका मथुरा में राज्य ८५१

पांचवां महा अधिकार लव अंकुशका वृत्तान्त

१९२ लवणांकुशका गर्भमें आना ८७४
१९३ रामको सीता का परित्याग सीताका वनमें विलाप ८९८
१९४ राजा वज्रजंघ का सीता को पुण्डरीकपुर लेजाना ८९६
१९५ सेनापतिका सीताको भयानक वनमें छोड़नेकी रामको खबर देना रामका व्याकुलहोयरुदनकरना ९०५
१९६ लवणांकुशका जन्म ९११
१९७ लवणांकुश की अयोध्या पर चढ़ाई ९२२
१९८ लवणांकुशका रामलक्षमण से मिलाप ९३६
१९९ सीताका अग्निकुण्ड में प्रवेश और अग्निका कमलों सहित सरोवर होजाना ९४७
२०० सीताका दीक्षालेना ९५१
२०१ सकलभूषणकेवलीका व्याख्यान ९५४
२०२ कृतांतवक्र रामके सेनापतिका जिनदीक्षा लेना ९८८
२०३ लक्षमणके ८ पुत्रोंकावर्णन और दीक्षा लेना १००७
२०४ भामंडल का भव वर्णन १०१४
२०५ हनुमान का दीक्षा लेना १०१७
२०६ लक्षमण की मृत्यु और लव अंकुशका दीक्षा लेना १०२७

छठा महाअधिकार रामचन्द्र जीका निर्वाण

२०७ रामका दीक्षा लेना १०५०

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औंनमः सिद्धेभ्यः ॥

अथ पद्मपुराण भाषा वचनिका

पण्डित दौलतराम कृत मङ्गलाचरण ॥ दोहा ॥

चिदानन्द चैतन्य के, गुण अनन्त उरधार । भाषा पद्मपुराण की, भाषूं श्रुति अनुसार ॥ १ ॥
पंच परमपद पद प्रणामि, प्रणमि जिनेश्वरबानि । नमि जिन प्रतिमा जिन भवन, जिनमारग उरआनि॥२॥
ऋषभ अजित संभव प्रणमि, नमि अभिनन्दन देव। सुमति जु पद्म सु पार्श्व नमि, करि चन्दाप्रभुसेव ॥३॥
पुष्पदन्त शीतल प्रणमि, श्री श्रेयांस को ध्याय । वासपूज्य विमलेश नमि, नमि अनंतके पाय ॥४॥
धर्मशांति जिन कुन्थु नमि, और मल्लि यश गाय। मुनिसुव्रत नमिनेमि नमि, नमि पार्श्वके पाय ॥५॥
वर्द्धमान वरवीर नमि, सुरगुरुवर मुनि वंद । सकल जिनंद मुनिन्द नमि, जैनधर्म अभिनन्द ॥६॥
निर्वाणादि अतीत जिन, नमोनाथ चौबीस । महापद्म परमुख प्रभू, चौबीसों जगदीश ॥७॥
होंगे तिन को बंदिकर, द्वादशांग उरलाय । सीमन्धर आदिक नमूं, दश दूने जिनराय ॥८॥
विहरमान भगवान ये, क्षेत्र विदेह मझारि । पूजें जिन को सुरपती, नागपती निरधार ॥९॥
द्वीप अढाई के विषे, भये जिनेन्द्र अनन्त । होंगे केवलज्ञानमय, नाथ अनन्तानन्त ॥१०॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सब को बन्दन कर सदा, गणधर मुनिवर ध्याय । केवली श्रुतिकेवली, नमूं आचार्य उवझाय ॥११॥
बन्दूं शुद्धस्वभाव को धर सिद्धन का ध्यान । सन्तन को परणाम कर, नामि दृगव्रत निज ज्ञान ॥१२॥
शिवपुर दायक सुगुरु नमि, सिद्धलोक यश गाय । केवलदर्शन ज्ञान को पूजूं मन वच काय ॥१३॥
यथाख्यात चारित्र और, क्षपक श्रेणि गुण ध्याय । धर्म शुक्ल निज ध्यान को, बन्दूं भाव लगाय ॥१४॥
उपशम वेदक क्षायका, सम्यग्दर्शन सार । कर बन्दन समभाव को, पूजूं पञ्चाचार ॥ १५ ॥
मूलोत्तर गुण मुनिन के, पञ्च महाव्रत आदि । पञ्च सुमति और गुप्तित्रय, ये शिव मूल अनादि ॥१६॥
अनित्य आदिक भावना, सेऊं चित्त लगाय । अध्यातम आगम नमूं, शांति भाव उरलाय ॥ १७ ॥
अनुप्रेक्षा द्वादश महा. चितवें श्रीजिनराय । तिन स्तुति करि भाव सों, षोड़श कारण ध्याय ॥१८॥
दश लक्षणमय धर्म की, धर सरधा मन मांहि । जीवदया सत् शील तप, जिनकर पाप नसाहिं ॥१९॥
तीर्थंकर भगवान् के पूजूं पंच कल्याण । और केवलिन को नमूं केवल अरु निर्वाण ॥ २० ॥
श्रीजिनतीरथ क्षेत्र नमि, प्रणमि उभय विधि धर्म । थुति कर चहुं विधि संघ की, तजकर मिथ्या भर्म ॥२१॥
बन्दूं गौतम स्वामि के, चरण कमल सुखदाय । बन्दूं धर्म मुनीन्द्र को, जम्बूकेवलि ध्याय ॥२२॥
भद्रबाहु को कर प्रणति, भद्रभाव उरलाय । बन्दि समाधि सुतन्त्र को, ज्ञानतने गुणगाय ॥ २३ ॥
महा धवल अरु जयधवल, तथा धवल जिन ग्रन्थ । बन्दूं तन मन बचन कर, जे शिवपुर के पंथ ॥२४॥
षट पाहुड नाटक त्रय, तत्वारथ सूत्रादि । तिन को बन्दूं भाव कर, हरें दोष रागादि ॥ २५ ॥
गोमठ सार अगाधि श्रुत, लब्धिसार जगसार । क्षपण सार भवतार है, योगसार रस धार ॥ २६ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञानार्णव हैं ज्ञान मय, नमूं ध्यानका मूल। पद्मनन्द पच्चासिका, करे कर्म उन्मूल ॥ २७ ॥
यत्याचार विचार नमि, नमूं श्रावका चार। द्रव्य संग्रह नय चक्रफुनि, नमूं शांति रसधार ॥ २८ ॥
आदि पुराणादिक सबै, जैन पुराण बखान। बन्दूं मन बचकाय कर दायक पद निर्वाण ॥ २९ ॥
तत्व सार आराधना, सार महारस धार। परमातम परकाश को, पूजूं बारम्बार ॥ ३० ॥
बन्दूं विशाखाचारिजे, अनुभव के गुण गाय। कुन्द कुन्द पद धोक के, कहूं कथा सुखदाय ॥३१॥
कुमन्द चन्द अकलंक नमि, नेमिचंद्र गुण ध्याय। पात्र केशरी को प्रणमि, समत भद्र यशगाय ॥ ३२ ॥
अमृत चन्द्र यति चन्द्र का, उमा स्वामि को बन्द। पूज्य पाद को कर प्रणति, पूजादिक अभिनन्द ॥ ३३ ॥
ब्रह्मचर्यब्रत वान्दि के, दानादिक उरलाय। श्रीयोगीन्द्र मुनिन्द्र को, बन्दूं मन वचकाय ॥ ३४ ॥
बन्दूं मुनि शुभ चन्द्र को, देवसेन को पूज। करि बन्दन जिनसेन को, जिनके जग सों दूज ॥३५॥
पद्म पुराण निधान को, हाथजोड़ि सिरनाय। ताकी भाषा वचनिका, भाषूं सब सुखदाय ॥३६ ॥
पद्म नाम बल भद्र का, रामचन्द्र बलभद्र। भये आठवें धार नर, धारक श्रीजिनमुद्र ॥ ३७ ॥
पीछे मुनिसुब्रत्त के, प्रगटे अति गुण धाम। सुर नर वान्छित धर्ममय, दशरथ के सुत राम ॥ ३८ ॥
शिवगामी नामी मही, ज्ञानी करुणा वन्त। न्यायवन्त बलवन्त अति, कर्म हरण जयवन्त ॥ ३९॥
जिन के लक्ष्मण वीर हरि, महावली गुणवन्त। भ्रात भक्त अनुरक्त अति जैन धर्म यशवन्त ॥४०॥
चन्द्र सूर्य से वीरये, हरें सदा पर पीर। कथा तिनों की शुभ महा, भाषी गौतम धीर ॥ ४१ ॥
जो मवै श्रेणिक नृपति, धीर सरधा मन मांहि। सो भाषी रविषेणने, यामे संशय नांहि ॥४२॥

For Private and Personal Use Only

महा सती सीता शुभा, रामचन्द्र की नारि । भरत शत्रुघन अनुज हैं, यही बात उरधार ॥४३॥
तदभव शिवगामी भरत, अरु लवअंकुश पूत, मुक्त भए मुनिवरत धरि, नमै तिने पुरहूत ॥४४॥
रामचन्द्र को करि प्रणति, नमि रविषेण ऋषीश । रामकथा भाषूं यथा, नमि जिन श्रुति मुनिईश ॥४५॥

॥ संस्कृत ग्रन्थकार का मङ्गलाचरण ॥

सिद्धं सम्पूर्णभव्यार्थं सिद्धेः कारणमुत्तमम् । प्रशस्तदर्शन ज्ञानचारित्रप्रतिपादनम् ॥ १ ॥
सुरेन्द्रमुकुटाशिलष्ट पादपद्मांशुकेसरम् । प्रणमामि महावीरं लोकत्रितयमङ्गलम् ॥ २ ॥

अर्थ—सिद्ध कहिये कृत कृत्य हैं, और सम्पूर्ण भये हैं सर्व सुन्दर अर्थ जिनके अथवा जो भव्य जीवों के सर्व अर्थ पूर्ण करते हैं, आप उत्तम हैं अर्थात् मुक्त हैं औरों को मुक्ति के कारण हैं। प्रशंसा योग्य दर्शन ज्ञान और चारित्रके प्रकाशन हारे हैं। और सुरेन्द्र के मुकटकर पूज्य जो किरण रूप केसर ताको धरें चरणकमल जिनके, ऐसे भगवान महावीर जो तीनलोकके प्राणियोंको मङ्गलरूपहैं तिनको नमस्कार करूं हूं

भावार्थ-सिद्ध कहिये मुक्ति अर्थात् सर्व बाधा रहित उपमारहित अनुपम अविनाशी जो सुख ताकी प्राप्ति के कारण श्रीमहावीर स्वामी जो काम, क्रोध, मान, मद, माया, मत्सर, लोभ, अहंकार, पाखण्ड दुर्जनता क्षुधा, तृषा, व्याधि, वेदना, जरा. भय, रोग, शोक, हर्ष, जन्म, मरणादि रहितहैं शिव अर्थात् अविनश्वर हैं। द्रव्यार्थिकनय से जिनका आदिभी नहीं और अन्त भी नहीं अछेद्य अभेद्य क्लेशरहित शोकरहित, सर्वव्यापी, सर्वसन्मुख, सर्वविद्या के ईश्वर हैं यह उपमा औरोंको नाहीं बने है। जो मीमांसक सांख्य, नैयायिक वैशेषिकबौद्धादिक मत हैं तिनके कर्त्ता जो मुनि जैमिनि, कपिल, अक्षपाद, कणाद

बुद्ध हैं वे मुक्तिके कारण नाहीं। जटा मृगछाला वस्त्र शस्त्र स्त्री रुद्राक्ष कपाल मालाके धारक हैं और जीवों के दहन घातन छेदन विषे प्रवृत्ते हैं। विरुद्ध अर्थ कथन करनेवाले हैं मीमांसा तो धर्मका हिंसा लक्षण बताय हिंसा विषे प्रवृत्ते हैं और सांख्य जो हैं सो आत्मा को अकर्ता और निर्गुण भोक्ता माने हैं और प्रकृतिही को कर्ता माने हैं। और नैयायिक वैशेषिक आत्माको ज्ञान रहित जड़ माने हैं और जगत कर्ता ईश्वर मानेहैं। और बौद्ध क्षिण भंगुर माने हैं। शून्यवादी शून्य मानेहैं और वेदांतवादी एक ही आत्मा त्रैलोक्यव्यापी नर नारक देव तिर्यंच मोक्ष सुख दुःखादि अवस्था विषे मानेहैं इसलिये ये सब ही मुक्ति के कारण नाहीं। मोक्ष का कारण एक जिन शासनही है जो सर्व जीवमात्रका मित्रहै। और सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, का प्रगट करनेवाला है ऐसे जिन शासनको श्रीवीतराग देव प्रकट कर दिखावें हैं। वह सिद्ध अर्थात् जीवन मुक्तहैं और सर्व अर्थकर पूर्ण हैं मुक्ति के कारण हैं सर्वोत्तम हैं और सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र के प्रकाश करनेवाले हैं इन्द्रों के मुकुटों कर स्पर्शे गये हैं चरणारबिन्द जिनके ऐसे श्रीमहावीर वर्द्धमान सन्मत नाथ अन्तिम तीर्थंकर तीनलोक के सर्व प्राणियोंको महा मङ्गल रूप हैं महा योगीश्वर हैं मोह मल्ल के जीतनेवाले हैं अनन्त बल के धारक हैं संसार समुद्र विषे डूब रहे जे प्राणी तिनके उद्धार के करन हारे हैं शिव विष्णु दामोदर, त्र्यम्बक, चतुर्मुख, बुद्ध ब्रह्मा, हरि शङ्कर, रुद्र, नारायण, हरभास्कर, परममूर्त्ति इत्यादि जिनके अनेक नाम हैं तिनको शास्त्रकी आदि विषे महा मङ्गल के अर्थ सर्व विघ्न के विनाशवे निमित्त मन वचन काय कर नमस्कार करूं हूं इस अवसर्पिणी काल में प्रथमही भगवान् श्रीऋषभदेव भए सर्व योगीश्वरों के नाथ सर्व विद्या के निधान

स्वयम्भू तिनको हमारा नमस्कार हो। जिन के प्रसाद कर अनेक भव्य जीव भवसागर से तिरे हैं फिर श्रीअजितनाथस्वामी जीते हैं वाह्य अभ्यन्तर शत्रु जिन्हों ने हमको रागादिक रहित करो। तीजे सम्भव नाथ जिनकर जीवन को सुख होय और चौथे श्री अभिनन्दनस्वामी आनन्द के करनहारे हैं और पांचवें सुमति के देन हारे सुमतिनाथ मिथ्यात्व के नाशक हैं, और छटे श्रीपद्म प्रभु ऊगते सूर्य की किरणों कर प्रफुल्लित कमल के समान हैं प्रभा जिनकी। सातवें श्रीसुपार्श्वनाथ स्वामी सर्व के वेत्ता सर्वज्ञ सज्जन के निकट वर्त्तीही हैं और शरदकी पूर्णमासी के चन्द्रमा समान है प्रभाजिनकी ऐसे आठवें श्रीचंद प्रभु ते हमारे भव ताप हरो। और प्रफुल्लित कुन्द के पुष्प समान उज्ज्वल हैं दन्त जिनके ऐसे नवमें श्रीपुष्पदन्त जगत के कन्त हैं और दशवें श्री शीतलनाथ शुक्ल ध्यान के दाता परमइष्ट ते हमारे क्रोधादिक अनिष्ट हरो। और जीवों को सकल कल्याण के कर्त्ता धर्मके उपदेशक ग्यारहवें श्रेयांसनाथ स्वामी ते हमको परम आनन्द करो और देवों कर पूज्य सन्तों के ईश्वर कर्म शत्रुओं के जीतने हारे बारहवें श्रीवासपूज्य स्वामी ते हमको निज वास देवो और संसारके मूल जो रागादि मल तिनसे अत्यन्त दूर ऐसे तेरहवें श्रीविमलनाथ देव ते हमारे कलंक हरो और अनन्त ज्ञान के धरन हारे सुन्दर हैं दर्शन जिनका ऐसे चौदहवें श्रीअनन्तनाथ देवाधिदेव हमको अनन्त ज्ञान की प्राप्ति करो। और धर्मकी धुराके धारक पन्दरवें श्रीधर्मनाथ स्वामी हमारे अधर्म को हरकर परम धर्मकी प्राप्ति करो और जीते हैं ज्ञानावरणादिक शत्रु जिन्होंने ऐसे श्रीशांतिनाथ परमशान्त हमको शान्त भावकी प्राप्तिकरो। और कुंथु आदि सर्व जीवों के हितकारी सतरहवें श्रीकुंथुनाथ स्वामी हमको भ्रमरहित करो। समस्त क्लेश से रहित मोक्ष

के मूल अनन्त सुख के भण्डार अठारहवें श्रीअरनाथ स्वामी कर्मरज रहितकरो । संसारके तारक मोह मल्ल के जीतन हारे वाह्याभ्यन्तर मल रहित ऐसे उन्नीसवें श्रीमल्लिनाथ स्वामी ते अनन्त वीर्यकी प्राप्ति करो और भले व्रतों के उपदेशक समस्त दोषों के विदारक बीसवें श्रीमुनिसुव्रत नाथ जिनके तीर्थ विषय श्रीरामचन्द्र का शुभचरित्र प्रगट भया ते हमारे अव्रत मेट महाव्रत की प्राप्ति करो । और नमी भूत भये हैं सुर नर असुरों के इन्द्र जिनको ऐसे इक्कीसवें श्रीनमिनाथ प्रभु ते हम कों निर्वाण की प्राप्ति करो । और समस्त अशुभकर्म तेई भये अरिष्ट तिनके काटिबेको चक्रकी धारा समान बाईसवें श्रीअरिष्ट नेमि भगवान् हरिबंश के तिलक श्रीनेमिनाथ स्वामी ते हमको यम नियमादि अष्टांग योग की सिद्ध करो और तेईसवें श्री पार्श्वनाथ देवाधिदेव इन्द्र नागेन्द्र चन्द्र सूर्य्यादिक कर पूजित हमारे भव सन्ताप हरो । और चौबीसवें श्री महावीर स्वामी जो चतुर्थकाल के अन्त में भये हैं । ते हमारे महा मंगल करो । और भी जो गणधरादिक महामुनि तिनको मन, वच, काय कर बारम्बार नमस्कार कर श्री रामचन्द्र के चरित्र का व्याख्यान करूं हूं । कैसे हैं श्रीराम लक्ष्मीकर आलिंगत है हृदय जिन का और प्रफुल्लितहै मुख रूपी कमल जिनका महापुण्याधिकारी हैं महाबुद्धिमान् हैं गुणनकेमंदिर हैं उदार है चरित्र जिनका, जिनका चरित्र केवलज्ञान के ही गम्य है ऐसे जो श्री रामचन्द्र उनका चरित्र श्री गणधर देवही किंचित् मात्र करनेको समर्थ हैं यह बड़ा आश्चर्य्य है कि जो हम सारिखे अल्प बुद्धि पुरुष भी उनके चरित्र को कहें हैं यद्यपि हम सारिखे इस चरित्रके कहनेको समर्थ नहीं तथापि परंपरा से महामुनि जिस प्रकार कहते आए हैं उनके कहे अनुसार कुछयक संक्षेपता कर कहे

हैं जैसे जिस मार्ग विषे मस्तहाथी चालें तिस मार्ग विषे मृग भी गमन करे हैं और जैसे युद्ध विषे महा सुभट आगे होय कर शस्त्रपात करे हैं तिन के पीछे और भी पुरुष रण विषे जायहैं और जैसे वज्रसूची के मुख कर भेदी जो मणि उस विषे सूत भी प्रवेश करे है तैसे ज्ञानीन की पंक्तिकर भाषा हुआ चला आया जो राम सम्बन्धी चरित्र ताके कहने को भक्ति कर प्रेरी जो हमारी अल्प बुद्धि सो भी उद्यमवती भई है। बड़े पुरुष के चिन्तवन कर उपजा जो पुण्य ताके प्रसाद कर हमारी शक्ति प्रकट भई है। महा पुरुषन के यश कीर्तन से बुद्धि की वृद्धि होय है और यश अत्यंत निर्मल होय है और पाप दूर जाय है। यह प्राणीनका शरीर अनेक रोगों कर भरा है इसकी स्थिति अल्प काल है और सत्पुरुषन की कथा कर उपजाया जो यश सो जब तक चांदसूर्य्य हैं तब तक रहे हैं इस लिये जो आत्मवेदी पुरुष हैं वे सर्व यत्नकर महापुरुषनके यश कीर्तन से अपना यश स्थित करे हैं जिसने सज्जनों को आनन्द की देन हारी जो सत्पुरुषन की रमणीक कथा उसका आरम्भ किया उसने दोनों लोकका फल लिया जो कान सत्पुरुषन की कथा श्रवण विषे प्रवृतेहैं वेही कान उत्तम हैं और जे कुकथा के सुनन हारे कान हैं वे कान नाहीं वृथा आकार धरे हैं और जे मस्तक सत्पुरुषन की चेष्टा के वर्णन विषे घूमे हैं तेही मस्तक धन्य हैं और जे शेष मस्तक हैं वे थोथे नारियल समान जानने। सत्पुरुषन के यश कीर्तन विषे प्रवृते जे होंठ तेही श्रेष्ठ हैं और जे शेष होंठ हैं ते जोंक की पीठ समान विफल जानने। जे पुरुष सत्पुरुषन की कथा के प्रसंग विषे अनुराग को प्राप्त भये उनही का जन्म सफल है। और मुख वेही हैं जो मुख्य पुरुषन की कथा विषे रत भया। शेष

मुख दांत रूपी कीड़ान का भरा हुआ बिल समानहै और जे सत्पुरुषन की कथा के वक्ताहैं अथवा श्रोता हैं सो ही पुरुष प्रशंसा योग्य हैं और शेष पुरुष चित्र के पुरुष समान जानने । गुण और दोषन के संग्रह विषे जे उत्तम पुरुष हैं ते गुणन ही को ग्रहण करे हैं जैसे दुग्ध और पानीके मिलाप विषे हंस दुग्ध ही को ग्रहणकरे है और राग दोषनके मिलाप विषे जे नीच पुरुष हैं ते दोषहीको ग्रहण करे हैं जैसे गजके मस्तक विषे मोती मास दोऊ हैं तिन काग मोतीको तज मासही को ग्रहण करे है। जो दुष्ट हैं ते निर्दोष रचनाको भी दोष रूप देखेहैं जैसे उल्लू सूर्यके बिम्ब को तमाल वृक्षके पत्र समान स्याम देखे है, जे दुर्जन हैं ते सरोवरमें जल आनेका जाली समान हैं जैसे जाली जल को तज तृण पत्रादि काठकादिक का ग्रहण करेहैं तैसे दुर्जन गुणको तज दोषनहीको धारें हैं इस लिये सज्जन और दुर्जनका ऐसा स्वभाव जानकर जो साधु पुरुष हैं वे अपने कल्याण निमित्त सत्पुरुषनकी कथाके प्रबंध विषेही प्रवृतेहैं सत्पुरुषनकी कथाके श्रवणसे मनुष्योंको परम सुख होयहै जे विवेकी पुरुषहैं उन को धर्म कथा पुण्यके उपजावनेका कारणहै सो जैसा कथन श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्रकी दिव्य ध्वनिमें खिरा तिसका अर्थ गौतम गणधर धारते भए। और गौतमसे सुधर्माचार्य धारते भए ता पीछे जम्बूस्वामी प्रकाशते भए जम्बूस्वामीके पीछे पांचश्रुत केवली और भए वे भी उसी भांति कथन करते भये इसी प्रकार महा पुरुषनकी परम्पराकर कथन चला आया उसके अनुसार रविषेणाचार्य व्याख्यान करते भये। यह सर्व रामचन्द्रका चरित्र सज्जन पुरुष सावधान होकर सुनो यह चरित्र सिद्ध पदरूप मंदिर की प्राप्तिका कारणहै और सर्व प्रकारके सुखका देनहाराहै। और जे मनुष्य श्रीरामचन्द्रको आदि दे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जे महापुरुष तिनको चिन्तवन करें हैं वे अतिशयकर भावनके समूहकर नम्रीभूत होय प्रमोदको धरे हैं तिनको अनेक जन्मोंका संचित किया जो पाप सो नाशको प्राप्त होयहै औरजे सम्पूर्ण पुराण का श्रवण करें तिनका पाप दूर अवश्य ही होय यामें संदेह नहीं कैसा है पुराण चन्द्रमा समान उज्ज्वल है इस लियेजे विवेकी चतुर पुरुषहैं वे इस चरित्रका सेवन करें यह चरित्र बड़े पुरुषकर सेवन योग्य है।

इस ग्रन्थ विषे ६ महा अधिकार हैं ॥

(१) लोकस्थिति (२) वंशोंकीउत्पत्ति (३) बनवास (४) युद्ध (५) लवअंकुशका वृतान्त (६) रामचन्द्रजीका निर्वाण।

अथ लोकस्थिति महा अधिकार

मगध देशके राजगृह नगरमें श्रीमहावीरस्वामी के समोसरणका आना और राजा श्रेणिक का श्रीरामचन्द्रकी कथाका पूछना।

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में मगध देश अति सुन्दर है, जहां पुण्याधिकारी बसेहैं इन्द्र के लोक समान सदा भोगोपभोग करेंहैं जहां योग्य व्यवहार से लोक पूर्ण मर्यादा रूप प्रवृतेहैं और जहां सरोवरमें कमल फूल रहे हैं और भूमि मे सांठेन के बाड़े शोभायमान हैं और जहां नाना प्रकार के अन्नोंके समूह के पर्वत समान ढेर होय रहेहैं अरहट की घड़ीसे सींचे जीराके खेत हरित होय रहेहैं. जहां भूमि अत्यन्त श्रेष्ठ है सर्व वस्तु निपजेहैं। चांवलों के खेत शोभायमान और मूंग मोठ ठौरठौर फूल रहेहैं गेहूं आदि अन्नको किसी भांति विघ्न नहीं और जहां भैंस की पीठ पर चढे ग्वाल गावेंहैं गऊओं के समूह अनेक वर्ण के हैं जिनके गलेमें घराटा बाजे हैं और दुग्ध झरती अत्यन्त शोभेहैं, जहां, दूधमयी धरती हो रहीहै, अत्यन्त स्वादु

For Private and Personal Use Only

रस के भरे तृण तिन को चरकर गाय भैंस पुष्ट होय रही हैं, और श्याम सुन्दर हिरण हजारों विचरे हैं मानो इन्द्र के हजारों नेत्र हीहैं. जहां जीवन को कोई बाधा नहीं जिन धर्मियों का राज्य है और बनके प्रदेश केतकी के फूलों से धवल होरहे हैं, गंगा के जल के समान उज्वल बहुत शोभायमान हैं और जहां केसर की क्यारी अति मनोहर हैं और जहां ठौर ठौर नारियल के वृक्ष हैं और अनेक प्रकार के शाक पत्र से खेत हरित होरहे हैं और बनपाल नर मेवादिक का आस्वादन करे हैं, और जहां दाड़म के बहुत वृक्ष हैं जहां सूवादि अनेक पक्षी बहुत प्रकार के फल भक्षण करें हैं, जहां बांदर अनेकप्रकार किलोल करेहैं, बिजौरा के वृक्ष फल रहेहैं बहुत स्वाद रूप अनेक जाति के फल तिनका रस पीकर पक्षी सुखसों सोय रहेहैं. और दाख के मण्डप छाय रहेहैं. जहां बन विषे देव विहार करेहैं जहां खजूर को पथिक भक्षण करेहैं केलाके बन फल रहेहैं। ऊंचे ऊंचे अरजुनवृक्षोंके बन सोहैहैं और नदीके तट गोकुल के शब्द से रमणीक हैं, नदियों में पक्षी के समूह किलोल करेहैं, तरङ्ग उठैहैं मानो नदी नृत्य ही करे हैं और हंसन के मधुर शब्दों मानो नदी गान ही करेहैं, जहां सरोवर के तीर पर सारस क्रीड़ा करे हैं और वस्त्र आभरणसुगन्धादि सहित मनुष्यों के समूह तिष्ठैहैं, कमलों के समूह फूल रहे हैं और अनेक जीव क्रीड़ा करेहैं, जहां हंसों के समूह उत्तम मनुष्यों के गुणों समान उज्ज्वल सुन्दर शब्द सुन्दर चालवाले तिनकर बन धवल होय रहाहै। जहां कोकिलों का रमणीक शब्द और भंवरों का गुञ्जार मोरों के मनोहर शब्द संगीत की ध्वनि बीन मृदङ्गों का बजना इनकर दशों दिशा रमणीक होरही हैं औरवह देश गुणवन्त पुरुषों से भराहै, जहां दयावान् क्षमावान् शीलवान्

उदार चित्त तपस्वी त्यागी विवेकी आचारी लोग बसेहैं, मुनि विचरेहैं, आर्यिका विहार करेहैं उत्तम श्रावक, श्राविका बसेहैं शरद की पूर्णमासी के चन्द्रमा समानहै चित्त की वृति जिन की मुक्ता फल समान उज्वल हैं आनन्द के देने हारेहैं; और वह देश बड़े २ गृहस्थीन,कर मनोहर है कैसेहैं गृहस्थी कल्पवृक्ष समान हैं तृप्त कीयेहैं अनेक पथिक जिन्होंने जहां अनेक शुभ ग्रामहैं जिनमें भले भले किसान बसे हैं और उस देश विषे कस्तूरी कपूरादि सुगन्ध द्रव्य बहुत हैं और भांति भांति के वस्त्र आभूषणों कर मण्डित नर नारी विचरेहैं मानो देव देवी ही हैं, जहां जैन वचन रूपी अंजन (सुरमा) से मिथ्यात्व रूपी दृष्टि विकार दूर होवे है और महा मुनियों को तप रूपी अग्नि से पाप रूपी वन भस्म होय है ऐसा धर्म रूपी महा मनोहर मगध देश बसे है ॥

मगधदेश में राजगृह नामा नगर महा मनोहर पुष्पों की बासकर महा सुगन्धित अनेक सम्पदा कर भरा है मानो तीन भवनका योबनही है और वह नगर इन्द्रके नगर समान मनका मोहनेवाला है इन्द्र के नगरमें तो इंद्राणी कुंकुम कर लिप्त शरीर विचरे हैं और इस नगर में राजा की रानी सुगन्ध कर लिप्त विचरे हैं, महिषी ऐसा नाम रानी का है और भैंसका भी है सो जहां भैंसभी केसरकी क्यारी में लोटकर केसर सों लिप्तभई फिरे हैं और सुन्दर उज्ज्वल घरों की पंक्ति और टांचीनके घड़े हुऐ सफेद पाषाण तिनसे मकान बने हैं मानो चन्द्रकान्ति मणिन का नगर बनाहै मुनियों को तो वह नगर तपोवन भासे है, [मालूम होताहै] वेश्या को काम मन्दिर, नृत्यकारनी को नृत्यका मन्दिर और बैरीको यम पुर है, सुभटको वीरका स्थान, याचकको चिन्तामणी, विद्यार्थीको गुरु गृह गीत शास्त्रके पाठीको गंधर्व

नगर, चतुरको सर्व कला चतुराई सीखने का स्थान, और ठगकों धूर्त्त का मन्दिर भासे है सन्तनको साधुओं का संगम ब्यापारी को लाभ भूमि शरणागति को बज्रपिंजर नीति के वेताको नीति का मन्दिर कौतुकी (खिलारियों) को कौतिकका निवास, कामिनि को अप्सरों का नगर सुखीयाको आनन्दका निवास भासे है। जहां गज गामिनी शीलवन्ती ब्रतवन्ती रूपवन्ती अनेक स्त्री हैं जिनके शरीरकी पद्म राग मणिकीसी प्रभा है और चन्द्रकांति मणि जैसा बदन है सुकुमार अङ्ग हैं पतिव्रता हैं ब्यभिचारीको अगम्य हैं महा सौन्दर्य युक्त हैं मिष्ट वचनकी बोलनेहारी हैं और सदा हर्षरूप मनोहर हैं मुख जिनके और प्रमाद रहित हैं चेष्टा जिनकी सामायिक प्रोषध प्रतिक्रमण की करनहारी हैं ब्रत नेमादि विषे सावधान हैं अन्न का शोधन जलका छानना यतिनको भक्ति से दान देना और दुखित भुखित जीव को दयाकर दान देना इत्यादि शुभ क्रिया में सावधान हैं जहां महा मनोहर जिन मन्दिर हैं जिनेश्वर की और सिद्धांतकी चरचा ठौर ठौर है। ऐसा राजगृह नगर बसे है जिसकी उपमा कथन में न आवे, स्वर्ग लोक तो केवल भोगहीका बिलासहै और यह नगर भोग और योग दोनोही का निवासहै जहां पर्वत समान तो ऊंचा कोट है और महागंभीर खाई है जिसमें बैरी प्रवेश नहीं करसक्के ऐसा देवलोक समान शोभायमान राजगृह नगर बसे है॥

राजगृह नगर में राजा श्रेणिक राज्य करे है जो इन्द्र समान विख्यात है। बड़ा योधा कल्याण रूप है प्रकृति जिसकी कल्याण ऐसा नाम स्वर्ण का भी है और मंगल का भी है सुमेर तो सुवर्ण रूप है और राजा कल्याण रूप है, वह राजा समुद्रसमान गम्भीर है मर्य्यादा उलंघन का है भय जिसको

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कला के ग्रहण में चन्द्रमा के समान है, प्रताप में सूर्य्य समान है. धन सम्पदा में कुबेर के समान है,
शूरवीरपनों में प्रसिद्ध है लोक का रक्षक है महा न्यायवन्त है लक्ष्मी कर पूर्ण है गर्व से दूषित नहीं
सर्व शत्रुओं का विजय कर बैठाहै तथापि शस्त्र (हथियार) का अभ्यास रखताहै और जो आपसे नम्री-
भूत भये हैं तिनके मान का बढ़ावन हारा है जे आपते कठोर हैं तिन के मान का छेदन हारा है और
आपदा विषे उद्वेग नहीं सम्पदा विषे मदोन्मत्त नहीं जिसकी साधुओं में निर्मलरत्न बुद्धि है और रत्न
के विषे पाषाणबुद्धि है जो दानयुक्त क्रिया में बड़ा सावधान है और ऐसा सामन्त है कि मदोन्मत्त
हाथीको कीट समान जाने है और दीन पर दयालु है जिसकी जिन शासन में परम प्रीतिहै धन और
जीतब्य में जीर्ण तृण समान बुद्धि है दशों दिशा वश करी हैं प्रजा के प्रतिपालन में सावधानहै और
स्त्रियों को चर्मकी पुतली के समान देखे है धनको रज समान गिने है गुणनकर नम्रीभूत जो धनुष
ताही को अपना सहाई जाने है चतुरंग सेनाको केवल शोभा रूप माने है (भावार्थ) अपने बल परा-
क्रम से राज करे है जिसके राजमें पवनभी वस्त्रादिक का हरण नहीं करे तो ठग चोरों की क्या बात
जिसके राज में क्रूर पशु भी हिंसा न करते भये तो मनुष्य हिंसा कैसे करे, यद्यपि राजा श्रेणिक से
वासुदेव बड़े होते हैं परंतु उन्होंने बृष कहिये बृषासुरका पराभव कियाहै और यह राजाश्रेणिक बृषकहिये
धर्म ताका प्रतिपालक है इसलिये उनसे श्रेष्ठ है और पिनाकी अर्थात् शंकर उसने राजा दक्ष के गर्व
को आताप किया और यह राजा श्रेणिक दक्ष अर्थात् चतुर पुरुषों को आनन्दकारी है इसलिये शंकर
से भी अधिक है और इन्द्र के वंश नहीं यह वंश कर विस्तीर्ण है और दक्षिण दिशाका दिग्पाल जो

For Private and Personal Use Only

यम सो कठोर है यह राजा कोमल चित्त है और पश्चिम दिशाका दिग्पाल जो वरुणसो दुष्ट जलचरों का अधिपति है इसके दुष्टों का अधिकाग्ही नहीं और उत्तर दिशा का अधिपति जो कुबेर वह धनका रक्षक है यह धनका त्यागी है और बौद्ध की समान क्षणिक मती नहीं चन्द्रमाकी न्याई कलंकी नहीं राजा श्रेणिक सर्वोत्कृष्ट है जिसके त्याग का अर्थी पार न पावें जिसकी बुद्धि का पार पण्डित न पावते भए शूरवीर जिसके साहस का पार न पावते भए जिसकी कीर्ति दशों दिशामें विस्तरीहै जिसके गुणन की संख्या नहीं सम्पदा का क्षय नहीं सेना बहुत बड़े बड़े सामन्त सेवा करे हैं हाथी घोडे रथ पयादे सबही राजका ठाठ सबसे अधिक है और पृथिवी विषे प्राणीन का चित्त जिस से अति अनुरागी होता भया जिसके प्रताप का शत्रु पार न पावते भये सर्व कला विषे प्रवीण है इसलिये हम सारखे परुष वाके गुण कैसे गासकें जिसके क्षायक सम्यक्त की महिमा इन्द्र अपनी सभा विषे सदाही करे है वह राजा मनिराजके समूह में वेतकी लता के समान नम्रीभूत है और उद्धत बैरी को वज्र दण्ड सेवश करनेवाला है जिसने अपनी भुजों से पृथिवी की रक्षा करी है कोट खाई तो नगरकी शोभामात्रहै जिन चैत्या लयों का कराने वाला जिन पूजा का करानेवाला जिसके चेलना नामा रानी महा पतिव्रता शीलवंती गुणवन्ती रूपवन्ती कुलवन्ती शुद्ध सम्यग्दर्शन की धरनेवाली श्रावक के व्रत पालनेवाली सर्व कलामें निपुण उसका वर्णन कहां लग करें ऐसा उपमा कर रहित राजा श्रेणिक गुणों का समूह राज गृह नगर में राज करे है।

एक समय राजगृह नगर के समीप विपुलाचल पर्वत के ऊपर भगवान महावीर अंतिम तीर्थंकर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समोशरण सहित आय विराजे तब भगवन् के आगमन का वृत्तांत वनपालने आनकर राजासे कहा और छहों ऋतुओं के फल फूल लाकर आगे धरे तब राजाने सिंहासनसे उठकर सात पैंड़ पर्वतके सम्मुख जाय भगवान्को अष्टांग नमस्कार किया और वनपालको अपने सर्व आभरण उतारकर पारितोषिक में देकर भगवान के दर्शनोंको चलने की तैयारी करता भया।

श्रीवर्द्धमान भगवान के चरणकमल सुर नर और असुरों से नमस्कार करने याग्यहैं गर्भ कल्याण में छप्पन कुमारिकाओं ने शोधा जो माता का उदर उसमें तीन ज्ञान संयुक्त अच्युत स्वर्गसे आय विराजे हैं। और इंद्र के आदेशसे धनपति ने गर्भ में आवने से छह मासपहले से रतन वृष्ट करके जिन के पिता का धर पूरा है और जन्म कल्याणक में सुमेर पर्वतके मस्तक पर इंद्रादिक देवोंने क्षीर सागर के जल जिनका जन्माभिषेक किया है और धरा है महावीर नाम जिनका और बाल अवस्था में इंद्रने जो देवकुमार रखके उन सहित जिन्हों ने क्रीड़ा करी है और जिनके जन्म में माता पिताको तथा अन्य समस्त परिवार को और प्रजाको और तीनलोकके जीवों को परम आनन्द हुआ नारकियोंका भी त्रास एक महूरत के वास्ते मिट गया जिनके प्रभाव से पिता के बहुत दिनों के विरोधी जो राजाथे वह स्वमेवही आय नम्रीभूत भये और हाथी घोड़े रथ रत्नादिक अनेक प्रकार के भेट किये और छत्र चमर वाहनादिक तजदी नहो हाथजोड़ कर पांवों में पड़े, और नाना देशों की प्रजा आयकर निवास करती भई जिन भगवानका चित्त भोगों में रत न हुवा जैसे सरोवरमें कमल जलसे निर्लेप रहे तैसे भगवान् जगत्की माया से अलिप्त रहे वह भगवान् स्वयं बुद्ध बिजली के चमत्कारवत् जगत्की माया को

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चञ्चल जान बैरागी भए, और कियाहै लोकांतिक देवों ने स्तवन जिनका मुनिव्रतको धारण कर सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र का आराधन कर घातिया कर्मों का नाशकर केवल ज्ञानको प्राप्त भये वह केवल ज्ञान समस्तलोकालोकका प्रकाशकहै, ऐसे केवल ज्ञानके धारक भगवानने जगत्के भव्यजीवोंके उपकार के निमित्त धर्म तीर्थ प्रगट किया, वह श्रीभगवान मल रहित पसेव रहित है जिनका रुधिर क्षीर[दूध]समानहै और सुगंधित शरीर शुभलक्षण अतुलबल मिष्ट वचन महा सुन्दर स्वरूप सम चतुरस्त्र संस्थान वज्र वृषभ नाराच संहनन के धारक हैं जिन के विहार में चारों ही दिशाओ में दुर्भिक्ष नहीं रहता, सकल ईति भीति का अभाव रहेह, और सर्व विद्याके परमेश्वर जिनका शरीर निरमल स्फटिक समान है और आखों की पलक नहीं लगती हैं और नख केश नहीं बढ़ते हैं, समस्त जीवों में मैत्री भाव रहता है और शीतल मन्द सुगन्ध पवन पीछे लगी आवे है, छह ऋतु के फल फूल फलें हैं और धरती दर्पण समान निर्मल होजाती है और पवनकुमार देव एक योजन पर्यंत भूमि तृण पाषाण कण्टकादि रहित करे हैं और मेघकुमारदेव गन्धोदिक की सुवृष्टि महा उत्साह से करें हैं, और प्रभु के विहार में देव चरण कमल के तले स्वर्णमयी कमल रचे हैं चरणों को भूमिका स्पर्श नहीं होता है, आकाश में ही गमन करें हैं, धरती पर छह ऋतु के सर्व धान्य फलें हैं, शरद के सरोवर के समान आकाश निर्मल होय है और दश दिशा धूम्रादि रहित निर्मल होय है, सूर्य्य की कांति को हरणे वाला सहस्र धारों से युक्त धर्मचक्र भगवान् के आगे आगे चले है, इस भान्ति आर्यखण्ड में विहार कर श्रीमहावीरस्वामी विपुलाचल पर्वत ऊपर आय विराजे हैं, इस पर्वत पर नाना प्रकार के जलके निझरने झरे हैं उन का शब्द मन कूं हरण हारा है. जहां बेल और

वृक्ष शोभायमान हैं। और जहां जाति विरोधी जीवों ने भी बैर छोड़दिया है, पक्षी बोल रहे हैं उन के शब्दों से मानो पहाड़ गुंजार ही करे है, और भ्रमरों के नाद से मानो पहाड़ गान ही कर रहा है, सघन वृक्षों के तले हाथियों के समूह बैठे हैं, गुफाओं के मध्य सिंह तिष्ठे हैं, जैसे कैलास पर्वत पर भगवान् ऋषभ देव विराजे थे तैसे विपुलाचल पर श्री वर्द्धमान स्वामी विराजे हैं ॥

जब श्री भगवान् समोसरण में केवल ज्ञान संयुक्त विराजमान भये तब इन्द्रका आसन कम्पायमान भया, इन्द्रने जाना कि भगवान् केवल ज्ञान संयुक्त विराजे हैं मैं जायकर बन्दना करूं इन्द्र ऐरावत हाथी पर चढकर आए वह हाथी शरद के बादल समान उज्ज्वल है मानो कैलास पर्वत ही है सुवर्ण की सांकलनसे संयुक्त है जिसका कुम्भस्थल भ्रमरोंकी पंक्तिसे मण्डितहै जिसने दशोंदिशा सुगन्धसे व्याप्त करी है महा मदोन्मन्त है, जिसके नख सचिक्कण हैं जिसके रोम कठोर हैं जिसका मस्तक भले शिष्य के समान बहुत विनयवान और कोमल है, जिसका अंगदृढहै और दीर्घ कायहै जिसका स्कंध छोटा है मद झरैहै और नारद समान कलह प्रियहै, जैसे गरुड़ नागको जीते तैसे यह नाग अर्थात् हाथीयों को जीते है जैसे रात्री नक्षत्रों की माला शोभैहै तैसे यह नक्षत्र माला जो आभरण उससे शोभैहै सिन्धुर कर अरुण (लाल) ऊंचाजो कुम्भस्थल उस से देव मनुष्यों के मनको हरेहै, ऐसे ऐरावत गज पर चढकर सुरपति आए और भी देव अपने अपने बाहनों पर चढ कर इन्द्र के संग आये जिनके मुख कमल जिनेन्द्र के दर्शन के उत्साह से फूल रहेहैं, सोलहही स्वर्गों के समस्त देव और भवन बासी व्यन्तर ज्योतिषी सबही आये और कमलायुध आदि अखिल विद्याधर अपनी स्त्रियों सहित आए, वे विद्याधर रूप और विभव में देवों के समान हैं ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समोसरण में इन्द्र भगवान् की ऐसे स्तुति करते भये। हे नाथ ! महामोहरूपी निद्रा में सोता यह जगत् तुमने ज्ञानरूप सूर्य के उदय से जगाया। हे सर्वज्ञ वीतराग ! तुमको नमस्कार हो, तुम परमात्मा पुरुषोत्तम हो संसार समुद्र के पार तिष्ठो हो, तुम बडे सार्थवाही हो, भव्य जीव चेतन रूपी धन के व्यापारी तुमारे संग निर्वाण द्वीप को जायेंगे तो मार्ग में दोषरूपी चोरों से नाहीं लूटेंगे, तुमने मोक्षाभिलाषियों को निर्मल मोक्ष का पन्थ दिखाया और ध्यान रूपी अग्नि कर कर्म रूपी ईंधन को भस्म कियेहैं। जिनके कोई बांधव नहीं, नाथ दुःख रूपी अग्नि के ताप कर सन्तापित जगत् के प्राणी तिन के तुम भाई हो और नाथ हो, परम प्रताप रूप प्रगट भये हो, हम तुमारे गुण कैसे वर्णन कर सकें। तमारे गुण उपमा रहित अनन्तहैं, सो केवल ज्ञान गोचरहैं इस भांति इन्द्र भगवान् की स्तुति कर अष्टांग नमस्कार करते भये समोशरण की विभूति देख बहुत आश्चर्य को प्राप्त भये।

वह समोशरण नाना वर्णके अनेक महारत्न और स्वर्णसे रचा हुवा जिसमें प्रथमही रत्न की धूलि का धूलि साल कोट है और उसके ऊपर तीन कोट हैं एक एक कोट के चार चार द्वार हैं द्वारे २ अष्ट मङ्गल द्रब्य हैं और जहां रमणीक वापी हैं सरोवर अद्भुत शोभा धरे हैं तहां स्फटिक मणि की भी (दिवार) से बारह कोठे प्रदक्षिणा रूप बनेहैं एक कोठे में मुनिराज हैं दूसरे में कल्पवासी देवों की देवांगना हैं तीसरे में आर्यिका हैं चौथे में जोतिषी देवोंकी देवीहैं पांचवें में व्यन्तर देवीहैं छठेमें भवन वासिनी देवी हैं, सातवें में जोतिषी देव हैं, आठवें में व्यन्तर देवहैं, नवमेंमें भवनवासी, दशवें में कल्प वासी, ग्यारवें में मनुष्य, बारवेंमें तिर्यंच ॥ सर्व जीव परस्पर बैरभाव रहित तिष्ठे हैं। भगवान् अशोक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृक्षके समीप सिंहासनपर विराजे हैं, वह अशोक वृक्ष प्राणियों के शोकको दूर करे है, और सिंहासन नाना प्रकार के रत्नोंके उद्योत से इन्द्र धनुषके समान अनेक रंगोंको धरैहै, इंद्र के मुकट में जो रत्न लगेहैं, उनकी कान्तिके समूहको जीते हैं, तीन लोककी ईश्वरता के चिन्ह जो तीन छत्र उनसे श्री भगवान शोभायमान हैं और देव पुष्पोंकी वर्षा करे हैं, चौंसठ चमर सिरपर ढूरे हैं, दुंदुभी बाजे बजे हैं उनकी अत्यन्त सुन्दर ध्वनि होय रही है।

राजगृह नगरसे राजा श्रेणिक आवते भये। अपने मन्त्री तथा परिवार और नगर निवासियों सहित समोशरण के पास पहुंच समोशरण को देख दूरही से छत्र चमर वाहनादिक तज कर स्तुति पूर्वक नमस्कार करते भये पीछे आयकर मनुष्योंके कोठेमें बैठे अक्रूर, वारिषेण, अभय कुमार, विजय बाहु इत्यादिक राज पुत्र भी नमस्कार कर आय बैठे जहां भगवान् की दिव्य ध्वनि खिरे है, देव मनुष्य तिर्यंच सबही अपनी अपनी भाषामें समझे हैं वह ध्वनि मेघके शब्द को जीते है, देव और सूर्यकी कान्तिको जीतने वाला भामण्डल शोभे है, सिंहासन पर जो कमल है उसपर आप अलिप्त विराजे हैं। गणधर प्रश्न करे है और दिव्य ध्वनि विषे सर्व का उत्तर होय है॥

गणधर देवने प्रश्न किया कि हे प्रभो तत्वके स्वरूप का व्याख्यान करो तब भगवान् तत्वका निरूपण करते भये। तत्व दो प्रकार के हैं एक जीव दूसरा अजीव, जीवों के दो भेद हैं सिद्ध और संसारी॥ संसारीके दो भेदहैं एक भव्य दूसरा अभव्य, मुक्त होने योग्यको भव्य कहिये और कोरडू (कुड़कू) मूंग समान जो कभी भी न सीझे तिनको अभव्य कहिये, भगवान्के भाषे तत्वोंका श्रद्धान भव्य जीवोंके

ही होय अभव्य को न होय, और संसारी जीवों के एकेन्द्रिय आदि भेद और गति काय आदि चौदह मारगणा का स्वरूप कहा और उपशम क्षायक श्रेणी दोनों का स्वरूप कहा और संसारी जीव दुःख रूप कहे, मूढ़ो को दुःख रूप अवस्था सुख रूप भासे है, चारों ही गति दुःख रूप हैं नारकियों को तो आंखके पलक मात्र भी सुख नहीं,मारण,ताड़न,छेदन,शूलारोपणादिक अनेक प्रकारके दुःख निरन्तरहैं, और तिर्यञ्चोंको ताड़न,मारण,लादन,शीत उष्ण भूख प्यास आदिक अनेक दुःखहैं और मनुष्यों को इष्ट वियोग और अनिष्ट संयोग आदि अनेक दुःखहैं औरदेवोंको बड़े देवोंकी विभूति देखकर संताप उपजे है और दूसरे देवोंका मरण देख बहुत दुःख उपजेहै तथा अपनी देवांगनाओंका मरण देख वियोग उपजेहै और जब अपना मरण निकट आवे तब अत्यन्त विलापकर झुरे हैं, इसी भांति महा दुःख कर संयुक्त चतु गतिमें जीव भ्रमण करे है, कर्म भूमिमें मनुष्य जन्म पाकर जो सुकृत (पुण्य) नहीं करे है उनके हस्तमें प्राप्त हुआ अमृत जाता रहे है, संसारमें अनेक योनियों में भ्रमण करता हुआ यह जीव अनन्त काल में कभी ही मनुष्य जन्म पावे है तब भीलादिक नीच कुलमें उपजा तो क्या हुआ और म्लेच्छ खंडों में उपजा तो क्या हुआ और कदाचित् आर्य खंडमें उत्तम कुलमें उपजा और अंग हीन हुआ तो क्या और सुंदर रूप हुआ और रोग संयुक्त हुआ तो क्या और सर्व ही सामग्री योग्य भी मिली परंतु विषयाभिलाषी होकर धर्ममें अनुरागी न भया तो कुछ भी नहीं, इस लिये धर्मकी प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभहै, कई एक तो पराये किंकर होकर अत्यन्त दुःखसे पेट भरे हैं, कई एक संग्राममें प्रवेश करे हैं संग्राम शस्त्र के पातसे भयानक है और रुधिर के कर्दम (कीचड़) से महा ग्लानि रूप है, और कई

एक किसाण वृतिकर क्लेशसे कुटुम्बका भरण पोषण करें हैं, जिसमें अनेक जीवोंकी बाधा करनी पडती है ॥ इस भांति अनेक उद्यम प्राणी करें हैं उनमें दुःख क्लेशही भोगें हैं, संसारी जीव विषय सुखके अत्यन्त अभिलाषी हैं, कै एक तो दरिद्र से महा दुखी हैं और कई एक धन पायकर चोर वा अग्नि वा जल वा राजादिकके भयसे सदा आकुलता रूप रहे हैं, और कै एक द्रव्यको भोगते हैं परंतु तृष्णा रूप अग्निके बढ़नेसे जले हैं, कै एकको धर्मकी रुचि उपजे है परंतु उनको दुष्ट जीव संसार ही के मारग में डारे हैं, परिग्रह धारियों के चित्तकी निर्मलता कहांसे होय, और चित्त की निर्मलता बिना धर्म का सेवन कैसे होय, जब तक परिग्रह की आसक्तता है तब तक जीव हिंसा विषे प्रवृते हैं, और हिंसा से नरक निगोद आदि कुयोनि में महा दुःख भोगें हैं, संसार भ्रमण का मूल हिंसाही है, और जीव दया मोक्ष का मूल है, परिग्रहके संयोगसे राग द्वेष उपजे है सो रागद्वेषही संसारमें दुःख के कारण हैं, कै एक जीव दर्शन मोहके अभावसे सम्यक् दर्शनकोभी पावे हैं परन्तु चारित्र मोहके उदय से चारित्र को नहीं धार सक्के हैं और कै एक चारित्र को भी धारकर बाईस परीषहों से पीड़ित होकर चारित्र से भ्रष्ट होय हैं, कै एक अणुब्रतही धारे हैं और कै एक अणुब्रतभी धार नहीं सके हैं केवल अब्रत सम्यक्ती ही होय हैं, और संसार के अनन्त जीव सम्यक्त से रहित मिथ्या दृष्टिही हैं, जो मिथ्या दृष्टि हैं वे बार बार जन्म मरण करें हैं, दुःख रूप अग्नि से तपतायमान भव संकटमें पड़े हैं, मिथ्या दृष्टि जीव जीभ के लोलुपी हैं और काम कलंकसे मलीन हैं क्रोध मान माया लोभ में प्रवृत्ते हैं, और जो पुण्याधिकारी जीव संसार शरीर भोगने से विरक्त होकर शीघ्रही चारित्रको धारे हैं और निबाहे हैं और संयम में

प्रवृत्ते हैं. वे महाधीर परम समाधि से शरीर छोड़कर स्वर्ग में बड़े देव होकर अद्भुत सुख भोगे हैं, वहांसे चयकर उत्तम मनुष्य होकर मोक्ष पावें हैं, कई एक मुनि तपकर अनुत्तर विमान में अहिमन्द्र होयहैं वहां से चयकर तीर्थंकर पद पावे हैं, कई एक चक्रवर्त्त बलदेव कामदेव पदपावे हैं, कई एक मुनि महातप कर निदान बांध स्वर्ग में जाय वहां से चयकर बासुदेव होय हैं वे भोगको नाहीं तज सके हैं इसप्रकार श्रीवर्द्धमान स्वामी के मुख से धर्मोपदेश श्रवण कर देव मनुष्य तिर्यंच अनेक जीव ज्ञानको प्राप्त भए कई एक उत्तम पुरुष मुनि भए कईएक श्रावक भए कईएक तिर्यंचभी श्रावक भए देवव्रत नहीं धारणकर सक्ते हैं इसलिये अव्रत सम्यक्तकोही प्राप्त भए, अपनी अपनी शक्ति अनुसार अनेक जीव धर्म्ममें प्रवर्ते पाप कर्म के उपार्जन से विरक्त भए, धर्म्म श्रवणकर भगवान को नमस्कार कर अपने अपने स्थानगए श्रेणिक महाराज भी जिन बचन श्रवणकर हर्षित होय अपने नगरको गए। सन्ध्या समय सूर्य्य अस्त होनेको सन्मुख भया अस्ताचल के निकट आया अत्यन्त आरक्तता (सुरखी) को प्राप्त भया किरण मंद भई सो यह बात उचितही है जब सूर्य्य का अस्त होय तब किरण मन्द होयही होंय जैसे अपने स्वामी को आपदा परे तब किसके तेजकी बृद्धि रहै। चकवीनके अश्रूपात सहित जे नेत्र तिनको देख मानो दयाकर सूर्य अस्तभया, भगवान के समवशरण विषे तो सदा प्रकाशही रहे है रात्रि दिनका बिचार नहीं और सर्वत्र पृथिवी विषे रात्रि पड़ी सन्ध्या समय दिशा लाल भई सो मानो धर्म श्रवणकर प्राणियों के चित्तसे नष्टभया जो राग सो सन्ध्या के छल कर दशों दिशान में प्रवेश करता भया (भावार्थ) राग का स्वरूप भी लाल होय है और दिशा विषे भी ललाई भई और सूर्य्य के अस्त होनेसे लोगोंके

नेत्र देखने से रहित भए क्योंकि सूर्य्य के उदय से जो देखनेकी शक्ति प्रगटभईथी सो अस्त होनेसे नष्ट भई और कमल संकुचित भये जैसे बड़े राजाओं के अस्त भये चोरादिक दुर्जन जगत् विषे परधन हरणादिक कुचेष्टा करें तैसे सूर्य के अस्त होने से पृथिवी विषे अन्धकार फैलगया रात्री समय घर२ चम्पे की कली समान जो दीपक तिनका प्रकाश भया, वह दीपक मानो रात्री रूप स्त्री के आभूषणही हैं। कमल के रससे तृप्त होकर राजहंस शयन करते भए और रात्रि सम्बन्धी शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलती भई मानो निशा (रात) का स्वासही है और भ्रमरों के समूह कमलों में विश्राम करतेभये और जैसे भगवान के बचनों कर तीन लोकके प्राणी धर्म का साधन कर शोभायमान होय हैं तैसे मनोज्ञ तारों के समूह से आकाश शोभायमान भया और जैसे जिनेन्द्र के उपदेशसे एकान्त वादियोंकी संशय विलाय जाय तैसे चन्द्रमा की किरणों से अन्धकार विलाय गया लोगों के नेत्रों को आनन्द करनहार चन्द्रमा उद्योत समय कम्पायमान भया। मानो अन्धकार पर अत्यन्त कोप भया (भावार्थ) क्रोधसमय प्राणी कम्पायमान होय हैं अन्धकार कर जे लोक खेदको प्राप्त भएथे वे चन्द्रमा के उद्योतकर हर्षको प्राप्तभए और चन्द्रमा की किरण को स्पर्श कर कुमुद प्रफुल्लित भये। इस भांति रात्रि का समय लोकों को विश्राम का देनहारा प्रगट भया राजा श्रेणिकको सन्ध्या समय सामायिकपाठ करते जिनेन्द्रकी कथा करते करते घनी रात्रि गई सोनेको उद्यमी भये कैसा है रात्रि का समय जिसमें स्त्रीपुरुषोंके हितकी बृद्धिहोय है राजा के शयन का महल गंगा के पुलिन [किनारा] समान उज्ज्वल है और रत्नों की ज्योति से अति उद्योत रूप है और फूलोंकी सुगन्धित जहांसे झरोखोंके द्वारा आवे है और महलके समीप सुन्दर स्त्री मनोहर

गीत गाय रही हैं और महल के चौगिरद सावधान सामन्तोंकी चौकी है और अति शोभा बन रही है सेज पर अति कोमल बिछौने बिछ रहे हैं वह राजा भगवान के पवित्र चरण अपने मस्तक पर धारे है और स्वप्न में भी बारम्बार भगवानहीका दर्शन करे है और स्वप्नमें गणधरदेव सेभी प्रश्न करे है इस भांति सुख से रात्री पूर्णभई पीछे मेघकी ध्वनि समान प्रभातके वादित्र बाजतेभए उनके नादसे राजा निद्रासे रहितभया

राजा श्रेणिकअपने मन में विचार करता भया कि भगवान की दिव्य ध्वनि में तीर्थंकर चक्रवर्त्यादिक के जो चरित्र कहेगये वह मैंने सावधान होकर सुने अब श्रीरामचन्द्र के चरित्र सुनने में मेरी अभिलाषा है क्योंकि लौकिक ग्रन्थों में रावणादिक को मांस भक्षी राक्षस कहा है परन्तु वे विद्याधर महाकुलवन्त कैसे मद्य मांस रुधिरादिक का भक्षण करें । और रावण के भाई कुम्भकरण को कहे है कि वह छै महीने की निद्रा लेता था और उसके ऊपर हाथी फेरते और ताते तेल से कान पूरते तोभी छह महीना से पहले नहीं जागता था और जब जागता था तब ऐसी भूख प्यास लगती थी कि अनेक हस्ती महिषी (भैंसा) आदि तिर्यंच और मनुष्यों को भक्षण करजाता था और राधि रुधिर का पान करता तोभी तृप्ति नहीं होतीथी और सुग्रीव हनूमानादिकको बानर कहें हैं परंतु वे तो बड़े राजा विद्याधर थे बड़े पुरुष को विपरीत कहनेमें महा पापका बंध होयहै जैसे अग्निके संयोगसे शीलता न होय और तुषार (बर्फ) के संयोगसे ऊष्णता (गरमी) न होय जलके मथन से घीकी प्राप्ति न होय और बालूरेतके पेलने से तेल की प्राप्ति न होय तैसे महा पुरुषों के चरित्र विरुद्ध सुनने से पुण्य न होय और लोक ऐसा कहे हैं कि देवों के स्वामी इन्द्र को रावण ने जीता परन्तु यह बात नहीं बनती, कहां वह देवों का इन्द्र और कहां

यह मनुष्य जो इन्द्र के कोपमात्र से ही भस्म हो जाय, जिस के ऐरावत हस्ती, वज्रसा आयुध, जिस की ऐसी सामर्थ कि सर्व पृथिवी को वश कर ले, सो ऐसे स्वर्ग के स्वामी इन्द्रको यह अल्प शक्तिका धनी मनुष्य विद्याधर कैसे लाकर बन्दी में डारै, मृग से सिंहको कैसे बाधाहोय तिलसे शिलाको पीसना और गिडोए से सांप का मारना और श्वान से गजेन्द्र का हनना कैसे होय, और लोक कहे हैं कि श्रीराम चन्द्र मृगादिक की हिंसा करते थे परन्तु यह बात न बने, वे व्रती विवेकी दयावान् महापुरुष कैसे जीवों की हिंसा करें और कैसे अभक्ष्य का भक्षण करें, और सुग्रीव का बड़ा भाई बाली को कहे हैं कि उस ने सुग्रीव की स्त्री अङ्गीकार करी परन्तु बड़ा भाई जो बाप समान है कैसे छोटे भाई की स्त्री अङ्गीकार करे, सो यह सर्व बात सम्भवे नहीं इसलिये गणधर देवको पूछकर श्रीरामचन्द्र की यथार्थ कथा श्रवण करूंगा, ऐसा विचार श्रेणिक महाराज ने किया और मनमें विचारे हैं कि नित्य गुरुजीका दर्शन किये धर्म्म के प्रश्न किए तत्व निश्चय किए से परम सुख होय है ये आनन्द के कारण हैं ऐसा बिचार कर राजा सेज से उठे और रानी अपने स्थानको गई, रानी जिसकी कांति लक्ष्मी समान है, महा पतिव्रता और पतिकी बहुत विनयवान है, और राजा जिसका चित्त अत्यन्त धर्म्मानुराग में निष्कम्प है दोनों प्रभात क्रिया का साधन करते भये और जैसे सूर्य्य शरदके बादलों से बाहिर आवे तैसे राजा सुफेद कमल समान उज्ज्वल सुगन्ध महल से बाहिर आवते भए, उस सुगन्ध महल में भंवर गुंजार करे हैं।

राजा सभा में आकर विराजे और प्रभात समय जो बड़े बड़े सामन्त आए उन को द्वारपाल ने राजा का दर्शन कराया, सामन्तोंके वस्त्र आभूषण सुन्दर हैं उन समेत राजा हाथी पर चढ़ कर नगर से समो-

शरण को चले । आगे आगे बन्दीजन बिरद बखानतें जाय हैं, राजा समोशरण के पास पहुंचे, समोशरण में अनन्त महिमा के निवास महावीर स्वामी बिराजे हैं, उन के समीप गौतम गणधर तिष्ठें हैं तत्वों के व्याख्यान में तत्पर और कांति में चन्द्रमा के तुल्य दीप्ति, प्रकाश में सूर्य्य के समान, जिन के हाथ और चरण वा नेत्ररूपी कमल अशोक वृक्ष के पल्लव (पत्र) समान लाल हैं और अपनी शांतता से जगत् को शान्ति करै हैं, मुनियों के समूह के स्वामी हैं। राजा दूर से ही समोशरण को देख कर हाथी से उतर कर समोशरण में गए, हर्ष कर फूल रहे हैं मुख कमल जिन के सो भगवान् की तीन प्रदक्षिणा दे हाथ जोड़ नमस्कार कर मनुष्यों की सभा में बैठे ॥

राजा श्रेणिक ने श्री गणधर देव को नमोस्तुते कह कर समाधान (कुशल) पूछ प्रश्न किया कि भगवान् मेरेको राम चरित्र सुनने की इच्छा है यह कथा जगत् में लोगोंने और भांति प्ररूपी है इसलिये हे प्रभो कृपा कर सन्देह रूप कीचड़ से बहुत जीवों को काढ़ो ॥

राजा श्रेणिक का प्रश्न सुन श्री गणधर देव अपने दांतों की किरण से जगत् को उज्ज्वल करते गम्भीर मेघकी ध्वनि समान भगवान् की दिव्य ध्वनि के अनुसार व्याख्यान करते भए, हे राजा ! तू सुन मैं जिन आज्ञा प्रमाण कहूं हूं, जिन बचन तत्व के कथन में तत्पर हैं, तुम यह निश्चय करो कि रावण राक्षस नहीं मनुष्य है मांस का आहारी नहीं विद्याधरों का अधिपति है, राजा बिनमि के वंस में उपजा है, और सुग्रीवादिक बन्दर नहीं यह बड़े राजा मनुष्य हैं, विद्याधर हैं ॥ जैसे नीव विना मन्दिर का चिणना न होय तैसे जिन बचन रूपी मूल बिना कथा की प्रमाणता नहीं होय है इस लिये प्रथम

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ही क्षेत्र कालादिक का वरणन सुन फिर और महा पुरुषों का चरित्र जो पाप का विनाशन हारा है सुनो ॥

लोकालोक, कालचक्र, कुलकर, नाभि राजा, और श्री ऋषभदेव और भरत का वर्णन

गौतम स्वामी कहे हैं कि हे राजा श्रेणिक अनन्त प्रदेशी जो अलोकाकाश उसके मध्य तीन बात वलों से वेष्टित तीनलोक तिष्ठे हैं तीनलोक के मध्य यह मध्य लोक है इस में असंख्यात द्वीप और समुद्र हैं उनके बीच लवण समुद्रकरवेढ़ा लक्ष योजन प्रमाण यह जम्बूद्वीप है, उसके मध्य सुमेरु पर्वत है वह मूल में वज्र मणि मई है और ऊपर समस्त सुवर्ण मई है अनेक रत्नों से संयुक्त है संध्या समय रक्तता को धरे है मेघों के समूह के समान सुरङ्ग ऊंचा शिखर है शिखर के और सौधर्म्म स्वर्ग के बीच में एक बालकी अणी का अन्तर है सुमेरु पर्वत निन्यानवें हजार योजन ऊंचा है और एक हजार योजन कन्द है और पृथिवी पर तो दश हजार योजन चौड़ा है और शिखर पर एक हजार योजन चौड़ा है मानो मध्यलोक के नापने का दण्डही है जम्बूद्वीप में एक देव कुरु एक उत्तर कुरु हैं और भरतआदि सप्त क्षेत्र हैं षट्-कुलाचलों से जिनका बिभाग है जम्बू और शालमली यह दोय वृक्ष है जम्बूद्वीप में चौंतीस विजि-यार्ध पर्वत हैं एक एक विजियार्ध में एकसौ दश विद्याधरों की नगरी हैं एक एक नगरी को कोटि २ ग्राम लगे हैं, और जम्बू द्वीप में बत्तीस विदेह एक भरत एक ऐरावत यह चौंतीस क्षेत्र हैं एक एक क्षेत्र में एक एक राजधानी है, और जम्बूद्वीप में गङ्गा आदिक १४ महानदी हैं और छह भोग भूमि हैं एक एकविजियार्ध पर्वत में दोय दोय गुफा हैं सो चौंतीस विजियार्ध में अड़सठ गुफा हैं षट्कुलाचलों में और विजियार्ध पर्वतों में तथा वक्षार पर्वतों में सर्वत्र भगवान के अकृत्रिम चैत्यालय हैं और जम्बवृक्ष और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाल्मली वृक्ष में भगवान्‌के अकृत्रिम चैत्यालय हैं जो रत्नोंकी ज्योतिसे शोभायमान हैं जम्बूद्वीप की दक्षिण दिशा की ओर राक्षसद्वीप है और ऐरावत क्षेत्र की उत्तर दिशा में गन्धर्व नामा देश है और पूर्व विदेह की पूर्व दिशा में वरुण द्वीप है और पश्चिम विदेह की पश्चिम दिशा में किन्नर द्वीप है वे चारोंही द्वीप जिन मन्दिरों से मण्डित हैं॥

जैसे एक मासमें शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष यह दो पक्ष होती हैं तैसेही एक कल्प में अवसर्पणी और उत्सर्पणी दोनों काल प्रवृते हैं, अवसर्पणी कालमें प्रथमही सुखमा सुखमा कालकी प्रवृति होय है, फिर दूसरा सुखमा, तीसरा सुखमा दुखमा, चौथा दुखमासुखमा, पांचवां दुखमा और छठा दुखमादुखमा प्रवृते है, तिसके पीछे उत्सर्पणी काल प्रवृते है उसकी आदिमें प्रथम ही छठा काल दुखमादुखमा प्रवृते है फिर पांचवां दुखमा फिर चौथा दुखमासुखमा फिर तीसरा सुखमा दुखमा फिर दूसरा सुखमा फिर पहला सुखमासुखमा। इसी प्रकार अरहटकी घड़ी समान अवसर्पणीके पीछे उत्सर्पणी और उत्सर्पणीके पीछे अवसर्पणीहै, सदा यह कालचक्र इसी प्रकार फिरता रहताहै, परन्तु इस कालकी पलटना केवल भरत और ऐरावत क्षेत्रमें ही है, इस लिये इनमें ही आयु कायादिककी हानि वृद्धि होयहै, और महा विदेह क्षेत्रादिमें तथा स्वर्ग पातालमें और भोग भूमिआदिक में तथा सर्व द्वीप समुद्रादिक में कालचक्र नहीं फिरता इस लिये उनमें रीति नहीं पलटती, एकही रीति रहे है। देवलोकमें तो सुखमासुखमा जो पहला कालहै सदा उसकीही रीति रहेहै और उत्कृष्ट भोग भूमिमें भी सुखमासुखमा कालकी रीति रहेहै और मध्य भोगभूमिमें सुखमा अर्थात् दूजे काल की रीति रहे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है और जघन्य भोगभूमि में सुखमा दुखमा जो तीसरा कालहै उसकी रीति रहेहै, और महा विदेह क्षेत्रोंमें दुखमासुखमा जो चौथा कालहै उसकी रीति रहे है, और अढाई द्वीपके परे अन्तके आधे स्वयम्भू रमण द्वीप पर्यन्त बीचके असंख्यात द्वीप समुद्र में जघन्य भोगभूमिहै सदा तीसरे कालकी रीति रहे है और अन्तके आधे द्वीपमें तथा अन्तके स्वयम्भू रमण समुद्रमें तथा चारों कोण में दुखमा अर्थात् पंचम काल की रीति सदा रहे है, और नरकमें दुखमादुखमा जो छठा काल उसकी रीति रहेहै और भरत ऐरावत क्षेत्रोंमें छहों काल प्रवृते हैं, जब पहला सुखमासुखमा काल ही प्रवृते है तब यहां देव कुरु उत्तर कुरु भोगभूमि की रचना होयहै कल्प वृक्षों से मंडित भूमि सुखमई शोभे है और उगते सुर्य समान मनुष्य की कांति होय है, सर्व लक्षण पूर्ण लोक शोभे हैं, स्त्री पुरुष युगल ही उपजेहैं और साथही मरे हैं, स्त्री पुरुषों में अत्यन्त प्रीति होय है, मरकर देव गति पावे हैं, भूमि काल के प्रभावसे रत्नसुवर्णमयी और कल्पवृक्ष दश जातिके सर्वही मन बांछित पूर्ण करेहैं जहां चार चार अंगुल के महा सुगंध महा मिष्ट अत्यन्त कोमल तृणोंसे भूमि आछादित है सर्व ऋतुके फल फूलोंसे वृक्ष शोभे हैं और जहां हाथी घोड़े गाय भैंस आदि अनेक जातिके पशु सुख से रहे हैं. और कल्प वृक्षों से उत्पन्न महा मनोहर आहार मनुष्य करे हैं, जहां सिंहादिक भी हिंसक नहीं मांस का आहार नहीं योग्य आहार करे हैं, और जहां वापी सुवर्ण और रत्नकी पैड़ियों संयुक्त कमलों से शोभित दुग्ध दही घी मिष्टान्नकी भरी अत्यन्त शोभा को धरे हैं, और पहाड़ अत्यन्त ऊंचे नाना प्रकार रत्न की किरणोंसे मनोज्ञ सर्व प्राणियोंको सुख के देने वाले पांच प्रकारके वर्णको धरे हैं, और जहां नदी

जलचरादि जंतु रहित महा रमणीक दुग्ध (दूध) घी मिष्टान्न जलकी भरी अत्यन्त स्वाद संयुक्त प्रवाहरूप बहे हैं, जिनके तट रत्ननकी ज्योतिसे शोभायमान हैं। जहां बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री असैनी पंचेन्द्री तथा जलचरादि जीव नहीं हैं, जहां थलचर, नभचर, गर्भज तिर्यंच हैं, वह तिर्यंच भी युगल ही उपजे हैं, वहां शीत उष्ण वर्षा नहीं, तीव्र पवन नहीं, शीतल मंद सुगंध पवन चले हैं और किसी भी प्रकारका भय नहीं सदा अद्भुत उत्साह ही प्रवर्ते है और ज्योतिरंग जाति के कल्पवृक्षोंकी ज्योतिसे चांद सुर्य नजर नहीं आते हैं, दशही जाति के कल्प वृक्ष सर्वही इंद्रियोंके सुख स्वादके देने वाले शोभे हैं, जहां खाना, पीना, सोना, बैठना, वस्त्र, आभूषण, सुगन्धादिक सबही कल्प वृक्षोंसे उपजे हैं और भाजन (वर्तन) तथा वादित्रादि (वाजे) महा मनोहर सर्व ही कल्प वृक्षों से उपजे हैं यह कल्प वृक्ष वनस्पति काय नहीं और देवाधिष्ठित भी नहीं केवल पृथ्वीकाय रूप सार वस्तु है, तहां मनुष्यों के युगल ऐसे रमें हैं जैसे स्वर्ग लोक में देव।

जब लोक के वर्णन में गौतम स्वामीने भोगभूमि का वर्णन किया तब राजा श्रेणिकने भोग भूमि में उपजने का कारण पूछा सो गणधर देव कहे हैं कि जैसे भले खेत में बोया बीज बहुत गुणा होकर फले हैं और इक्षु में प्राप्त हुआ जल मिष्ट होय है और गाय ने पिया जो जल सो दूध होय परिणमे है तैसे व्रतकर मंडित परिग्रह रहित मुनिको दिया जो दान सो महा फल को फले है, जो सरल चित्त साधुओं को आहारादिक दान के देने वाले हैं वे भोगभूमि में मनुष्य होय हैं और जैसे निरस क्षेत्र में बोया बीज अल्प फल को प्राप्त होय और नींब में गया जल कटुक होय है

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तैसे ही भोग तृष्णा से जो कुदान करें हैं वह भोग भूमि में पशु जन्म पावें हैं ॥ (भावार्थ)-दान चार प्रकार का है एक आहार दान दूजा औषधदान तीजा शास्त्रदान चौथाअभयदान, तिस में मुनि आर्यिका उत्कृष्ट श्रावकों को भक्ति कर देना पात्र दान है और गुणों कर आप समान साधर्मीजनों को देना समदान है और दुखित जीव को दया भावकर देना करुणादान है और सर्व त्याग कर के मुनिव्रत लेना सकल दान है यह दान के भेद हैं ॥

जब तीजे काल में पल्य का आठवां भाग बाकी रहा तब कुलकर उपजे प्रथम कुलकर प्रतिश्रुति भये तिनके वचन सुनकर लोक आनन्द को प्राप्त भये वह कुलकर अपने तीन जन्म को जाने हैं और उनका चेष्टा सुन्दर है और वह कर्म भूमि के व्यवहारके उपदेशक हैं तिनके पीछे दूजा कुलकर सम्मति भया तिनके पीछे तीसरा कुलकर क्षेमंकर चौथा क्षेमंधर पांचवां सीमंकर छठा सीमंधर सातवां बिमल वाहन आठवां चक्षुष्मान् नवां यशस्वी दशवां अभिचंद्र ग्यारवां चन्द्राभ बारहवां मरुदेव तेरहवां प्रसेनजित चौदवां नाभि राजा यह चौदह कुलकर प्रजा के पिता समान महा बुद्धिमान शुभ कर्मसे उत्पन्न भये नव ज्योतिरांग जाति के कल्पवृक्षों की ज्योति मन्द भई और चांदसूर्य नजर आए तिनको देख कर लोग भयभीत भए कुलकरोंको पूछते भये हे नाथ! यह आकाश में क्या दीखे है तब कुलकर ने कहा कि अब भोगभूमि समाप्तहुई कर्म भूमिका आगमन है ज्योतिरांग जाति के कल्पवृक्षोंकी ज्योति मन्द भई है इसलिये चांद सूर्य नजर आएहैं देव चार प्रकार के हैं कल्पवासी भवनवासी व्यंतर और ज्योतिषी तिन में चांद सूर्य ज्योतिषयों के इन्द्र पतीन्द्र हैं चन्द्रमा तो शीत किरण है और सूर्य उष्ण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किरण है जब सूर्य अस्त होय है तब चंद्रमा कांतिका धरे है और आकाश विषे नक्षत्रों के समूह प्रगट होय हैं सूर्यकी कांति से नक्षत्रादि नहीं भासे ह इसी प्रकार पहिले कल्पवृक्षोंकी ज्योतिसे चंद्रमा सूर्यादिक नहीं भासते थे अब कल्पवृक्षोंकी ज्योति मंदभई इसलिये भासे हैं यह कालका स्वभाव जानकर तुम भय को तजो कुलकर का बचन सुनकर उनका भय निबृत्त भया॥

चौदवें कुलकर श्रीनाभि राजा जगत् पूज्य तिनके समय में सबही कल्पवृक्षोंका अभाव भया और युगल उत्पत्ति मिटी अकेलेही उत्पन्न होने लगे तिनके मरुदेवी राणी मनकी हरणहारी उत्तम पतिव्रता जैसे चन्द्रमाके रोहिणी,समुद्र केगंगा,राजहंसके हंसिनी तैसे यह नाभि राजाके होती भई, वह राणी राजाके मन में बसेहै उसकी हंसिनी कैसी चालऔर कोयलकैसे वचनहैं जैसे चकवीकी चकवेसों प्रीति होयहै तैसे राणीकी राजासों प्रीति होतीभईराणीको क्या उपमा दीजाय जो उपमा दीजाय वह पदार्थराशीसे न्यूननजर आवेहैं, सर्व लोकपूज्य मरुदेवी जैसे धर्मके दया होय तैसे त्रैलोक्यपूज्य जो नाभिराजा उसके परमप्रिय होतीभई, मानो यह राणी आताप की हरण हारी चन्द्रकला ही कर निरमापी (बनाई) है, आत्मस्वरूप की जानन हारी सिद्ध पदका है ध्यान जिस को त्रैलोक्य की माता महा पुण्याधिकारनी मानो जिनवाणी ही है और अमृत का स्वरूप तृष्णा की हरण हारी मानो रत्न वृष्टि ही है सखियों को आनन्द की उपजावन हारी महा रूपवती काम की स्त्री जो रति उस से भी अति सुन्दरी है, महा आनन्द रूप माता जिन का शरीर ही सर्व आभूषणों का आभूषण है जिस के नेत्रों समान नील कमल भी नहीं और जिसके केश भ्रमरों से भी अधिक श्याम, वह केश ही ललाट का शृङ्गार हैं यद्यपि इनको आभूषणों की अभिलाषा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहीं तथापि पतिकी आज्ञा प्रमाण कर कर्ण फूलादिक आभूषण पहिरे हैं जिन के मुख का हास्य ही सुगन्धित चूर्ण है उन समान कपूरकीरज कहां और जिन की वाणी बीणके स्वरको जीते है उनके शरीरके रंगके आगे स्वर्ण कुंकुमादिक का रंग क्या चीज़ है, जिन के चरणारबिन्द पर भ्रमर गुञ्जार करे हैं,नाभि राजा सहित मरुदेवी राणीके यश का बर्णन सैकड़ों ग्रन्थों में भी न होसकै तो थोड़े से श्लोकों में कैसे होय ॥

जब मरु देवी के गर्भ में भगवान् के आगमन के छह महीना बाकीरहे तब इन्द्र की आज्ञा से छप्पन कुमारिका हर्ष की भरी माता की सेवा करती भई और १ श्री २ ह्री ३ धृति ४ कीर्ति ५ बुधि ६ लक्ष्मी। यह षट् (६) कुमारिका स्तुति करती भई हे मात ! तुम आनन्दरूप हो हम को आज्ञा करो तुमारी आयु दीर्घ होवे इस भान्ति मनोहर शब्द कहती भई और नाना प्रकार की सेवा करती भई, कई एक बीणबजाय महा सुन्दर गान कर माता को रिझावती भई और कई एक आसन बिछावती भई और कई एक कोमल हाथों से माता के पांव पलोटती भई कई एक देवी माता को तांबूल (पान) देती भई कैएक षड्ग हाथ में धारण कर माता की चौंकी देती भई कैएक बाहरले द्वार में कैएक भीतर के द्वार में सुवर्ण के आसे लिये खड़ी होती भई और कै एक चवर ढोरती भई कई एक आभूषण पहरावती भई कई एक सेज बिछावती भई कै एक स्नान करावती भई कई एक आंगन बहारती भई कै एक फूलों के हार गूथती भई कई एक सुगन्ध लगावती भई कई एक खाने पीने की विधि में सावधान होती भई कई एक जिस को बुलावे उस को बुलावती भई इस भान्ति सर्व कार्य्य देवी करतीं भईं, माता को किसी प्रकार की भी चिन्ता न रही ॥

एक दिन माता कोमल सेज पर शयन करती थी, उसने रात्री के पिछले पहर अत्यन्त कल्याणकारी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोलह स्वप्न देखे १ पहले स्वप्ने में ऐसा चन्द्र समानउज्ज्वल मद झरता गाजता हाथी देखा जिसपर भ्रमर गुंजारकरे हैं २ दूजे स्वप्ने में शरद के मेघसमान उज्ज्वल धवल दहाड़ता हुआ बैल देखा जिसके बड़बड़े कन्धे हैं ३ तीसरे स्वप्ने में चन्द्रमा की किरण समान सुफेद केशों वाला विराजमान सिंह देखा ४ चौथे स्वप्ने में देखाकि लक्ष्मी को हाथी सुवर्ण के कलशों से स्नान करारहे हैं, वह लक्ष्मी प्रफुल्लित कमल पर निश्चल तिष्ठे है ५ पांचवे स्वप्ने में ऐसी दो पुष्पों की माला आकाश में लटकती हुई देखी जिनपर भ्रमर गुञ्जार कररहे हैं ६ छठे स्वप्ने में उदयाचलपर्वत के शिखर पर तिमिर के हरण हारे मेघ पटल रहित सूर्य्य देखा ७ सांतवे स्वपने में कुमदनी को प्रफुल्लित करण हारा रात्री का आभूषण जिसने किरणों से दशोंदिशा उज्ज्वल करी हैं ऐसा तारों का पति चन्द्रमा देखा ८ आठवें स्वप्ने में निर्मल जल में कलोल करते अत्यन्त प्रेम के भरे हुवे महा मनोहर मीन युगल (दो मछ) देखे ९ नवमें स्वप्ने में जिन के गले में मोतियों के हार और पुष्पों की माला शोभायमान हैं ऐसे पञ्च प्रकार के रत्नों कर पूर्ण स्वर्ण के कलश देखे और १० दशवें स्वप्ने में नाना प्रकार के पक्षियों से संयुक्त कमलों कर मण्डित सुन्दर सिवाण (पौड़ी) कर शोभित निर्मल जल कर भरा महा सरोवर देखा ११ ग्यारहवें स्वप्ने में आकाश के तुल्य निर्मल समुद्र देखा जिस में अनेक प्रकार के जलचर केलकरें हैं और उतंग लहरें उठें हैं १२ बारहवें स्वप्ने में अत्यन्त ऊंचा नाना प्रकार के रत्नों कर जड़ित स्वर्ण का सिंहासन देखा १३ तेरहवें स्वप्ने में देवताओं के बिमान आवते देखे जो सुमेरु के शिखर समान और रत्नों कर मण्डित चामरादिक से शोभित हैं १४ और चौधहवें स्वप्ने में धरणींद्र का भवन देखा जिस में अनेक खण (मंजिल) हैं

For Private and Personal Use Only

और मोतियों की माला कर मण्डित रत्नों की ज्योति कर उद्योत मानो कल्प वृक्ष कर शोभित है. १५ पन्द्रहवें स्वप्ने में पञ्च वर्ण के महा रत्नों की राशि अत्यन्त ऊंची देखी जहां परस्पर रत्नों की किरणों के उद्योत से इन्द्रधनुष चढ़ रहा है १६ सोलहवें स्वप्ने में निर्धन अग्नि ज्वाला के समूह से प्रज्वलित देखी। ऐसे सोलह स्वप्ने देख कर मंगल शब्द के श्रवण से माता जागती भई॥

सखी जन कहें हैं हे देवी तेरे मुखरूप चन्द्रमाकी कांतिसे लज्जावान् हुआ जो यह निशाकर (चंद्रमा) सो मानो कांतिकर रहित हुआ है और उदयाचल पर्वतके मस्तक पर सूर्य उदय होने को सन्मुख भया है मानो मंगलके अर्थ सिन्दूरसे लिप्त स्वर्गका कलश ही है और तुम्हारे मुखकी ज्योति से और शरीरकी प्रभासे तिमिरका क्षय हुआ मानो इससे अपना उद्योत वृथा जान दीपक मंद ज्योति भये हैं और पक्षियोंके समूह मनोहर शब्द करेहैं मानो तिहारे अर्थ मंगल पढ़े हैं और जो यह मंदिर में बाग है तिनके वृक्षोंके पत्र प्रभात की शीतलमंद सुगन्ध पवन से हालें हैं और मन्दिरकी वापिका में सूर्य के बिम्ब के विलोकन से चकवी हर्षित भई मिष्ट शब्द करती संती चकवे को बुलाये हैं और यह हंस तेरी चाल देख कर अति अभिलाषा वान हरषित होय महा मनोहर शब्द करे हैं और सारसोंके समूह का सुन्दर शब्द होय रहा है। इस लिये हे देवी अब रात्रि पूर्ण भई तुम निद्रा को तजो। यह शब्द सुनकर माता सेजसे उठी जिस पर कल्प वृक्षके फूल और मोती बिखर रहेहैं मानो वह सेज क्या है तारोंसे संयुक्त आकाश ही है।

मरुदेवी माता सुगंध महलसे बाहिर आई और सकल प्रभातकी क्रिया कर जैसे सूर्यकी प्रभा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूर्यके समीप जाय तैसे नाभिराजाके समीप गई, राजा देखकर सिंहासनसे उठे राणी बराबर आय बैठी, हाथ जोड़कर स्वप्नोका समाचार कहा, तब राजाने सर्व स्वप्नो का फल भिन्न भिन्न कहते भए कि हे कल्याण रूपिणी तेरे गृहमें त्रैलोक्यका नाथ श्री आदीश्वर स्वामी प्रगट होवेगा यह शब्द सुनकर वह कमल नयनी चन्द्रबदनी परम हर्षको प्राप्त भई और इन्द्रकी आज्ञासे कुवेरने पन्द्रह महीना तक रत्नोंकी बरषा करी जिनके गर्भमें आए छै मास पहले से ही रत्नो की बरषा भई इस लिये इन्द्रादिक देव इनका हिरण्यगर्भ जैसा नाम कहकर स्तुति करते भए और तीन ज्ञानकर संयुक्त भगवान् माताके गर्भमे आय बिराजे, माताको किसी प्रकारकी भी पीड़ा न हुई।

जैसे निर्मल स्फटिकके महलसे बाहिर निकसिये तैसे नवमे महीने ऋषभदेव स्वामी गर्भसे बाहिर आए तब नाभिराजाने पुत्रके जन्मका महान उत्सव किया त्रैलोक्य के प्राणी अति हर्षित भए इन्द्र के आसन कम्पायमान भए और भवनवासी देवोंके बिना बजाए शंख बजे और व्यन्तरोंके स्वयमेव ही ढोल बजे और ज्योतिषी देवोंके अकस्मात सिंहनाद बाजे और कल्पवासियोंके बिना बजाये घंटा बाजे, इस भांति शुभ चेष्टायों सहित तीर्थंकर देवका जन्म जान इन्द्रादिक देवता नाभिराजा के घर आये, वह इन्द्र ऐरावत हाथी पर चढ़े हैं और नाना प्रकार के आभूषण पहरेहैं, अनेक प्रकार के देव नृत्य करते भये, देवोंके शब्दसे दशों दिशा गुंजार करती भई, अयोध्यापुरीकी तीन प्रदक्षिणा देय कर राजाके आंगनमें आए, वह अयोध्या धनपतिने रची है, पर्वत समान ऊंचे कोटसे मंडितहै जिस की गम्भीर खाई है और जहां नाना प्रकार के रत्नोंके उद्योत से घर ज्योति रूप होय रहे हैं। तब

For Private and Personal Use Only

इन्द्र ने इन्द्राणी को भगवान् के लावने के अर्थ माता के पास भेजी, इन्द्राणीने जाकर नमस्कारकर माया मई बालक माताके पास रखकर भगवान् को लाकर इन्द्रके हाथमें दिया, भगवान का रूप त्रैलोक्यके रूपको जीतने वालाहै॥ इन्द्रने हजार नेत्रोंसे भगवानके रूपको देखा तो भी तृप्त न भया।

भगवान को सोधर्म इन्द्र गोद में लेकर हस्ती पर चढ़े, ईशानइन्द्र ने छत्र धरे, और सनत्कुमार महेंद्र चमर ढोरते भए, और सकल इन्द्र और देव जयजयकार शब्द उच्चारते भए फिर मेरुपर्वतके शिखरपर पांडुक शिलापर सिंहासन ऊपर पधारे अनेक बाजोंका शब्द होता भया जैसा समुद्र गरजे और यक्ष किन्नर गन्धर्व तुंबरु नारद अपनी स्त्रियों सहित गान करते भए, वह गान मन और श्रोत्रण (कान) का हरण हाराहै, जहां वीन आदि अनेक वादित्र बाजते भए, अप्सरा अनेक हाव भाव कर नृत्य करती भई और इन्द्र स्नानके अर्थ क्षीर सागरके जलसे स्वर्णकलश भर अभिषेक करनेको उद्यमी भए, उन कलशोंका एक योजन का मुखहै और चार योजनका उदर है आठ योजन ऊंड [ऊंच] और कमल तथा पल्लवसे ढके हैं ऐसे कलशों से इन्द्र ने अभिषेक कराया, विक्रिया ऋद्धि की समर्थता से इन्द्र ने अपने अनेक रूप किये और इन्द्रों के लोकपाल सोम वरुण यम कुवेर सर्वही अभिषेक करावते भए, इन्द्राणी आदि देवी अपने हाथो से भगवान के शरीर पर सुगन्ध का लेपन करती भई, इन्द्राणियों के हाथ पल्लव (पत्र) समान हैं, महागिरि समान जो भगवान् तिनको मेघ समान कलशसे अभिषेक कराय गहना पहरावने का उद्यम किया, चांद सूर्य समान दोय कुण्डल कानों में पहराये, और पद्मराग मणि के आभूषण मस्तक विषे पहराए जिनकी कांति दशों दिशा

विषे प्रगट होती भई और अर्धचन्द्राकार ललाट (माथा) विषे चन्दनका तिलक किया और दोनों भुजों में रत्नों के बाजूबन्द पहराए और श्रीवत्सलक्षण कर युक्त जो हृदय उस पर नक्षत्र माला समान मोतियों का सत्ताईस लड़ीका हार पहराया और अनेक लक्षणके धारक भगवान को महा मणि मई कड़े पहराये और रत्नमयी कटिसूत्रसे नितम्ब महा शोभायमान भया जैसा पहाड़का तट सांझ की बिजली कर शोभे और सर्व आंगूरियों में रत्न जड़ित मुद्रिका पहराई, इस भांति भक्तिकर देवीयों ने सर्व आभूषण पहराए और आभूषणों से आपके शरीर को कहां शोभा होय, त्रैलोक्य के आभूषण श्री भगवान के शरीर की ज्योति से आभूषण अत्यन्त ज्योति को धरते भए, और कल्प वृक्ष के फूलोंसे युक्त जो उत्तरासन सो भी दिया, जैसे तारों से आकाश शोभे है तैसे पुष्पन कर यह उत्तरासन शोभे है और पारिजात सन्तानकादिक जो कल्प वृक्ष उनके पुष्पों से सेहरा रचकर सिर पर पधराया जिसपर भ्रमर गुंजार करे हैं ॥ इस भांति त्रैलोक्य भूषणको आभूषण पहराय इन्द्रादिक देव स्तुति करते भए, हे देव कालके प्रभावसे इस जगतमें धर्म नष्ट हो गया है और महा अज्ञान अन्धकार फैल रहाहै इस जगतमें भ्रमण करते भव्य जीवों के मोह तिमिर के हरणेको तुम सूर्य ऊगे हो हे जिनचंद्र तुम्हारे वचन रूप किरणों से भव्य जीव रूपी कुमुदनीकी पंक्ति प्रफुलित होवेगी, भव्योंको तत्वके दिखावनेके अर्थ इस जगत् रूप घरमें तुम केवल ज्ञानमयी दीपक प्रकट भये हो और पाप रूप शत्रुओं के नाशने के लिये मानो तुम तीक्ष्ण बाणही हो और तुम ध्यानाग्नि कर भव अटवी [जंगल] को भस्म करणे वाले हो और दुष्ट इन्द्रि रूप जो सर्प तिनके वशीकरण के अर्थ तुम गरुड़ रूपही हो और संदेह

रूप जे मेघ उनके उड़ावन को महा प्रबल पवन ही हो, हे नाथ भव्य जीव रूपी पपैए तिहारे धर्म्मामृत रूप बचन के तिसाए तुमहीको महा मेघ जानकर सन्मुख भए देखे हैं तुम्हारी अत्यंत निर्मल कीर्ति तीनलोक में गाई जाती है, तुम्हारे ताईं नमस्कार हो तुम कल्प वृत्तहो गुणरूप पुष्पों से मण्डित मन बांछित फल के देनवाले हो कर्मरूप काष्ठ के काटनेको तीक्षण धार के धारण हारे महा कुठार रूपहो मोहरूप पर्वत के भंजिवे को महा बज्रूप ही हो और दःख रूप अग्नि के बुझावनेका जल रूपहीहो बारम्बार तुमको नमस्कार करू हूं । हे निर्मल स्वरूप ! तुम कर्मरूप रज के संग से रहित केवल आकाश स्वरूप ही हो इस भांतिइन्द्रादिक देव भगवान् की स्तुति कर बारम्बार नमस्कार कर ऐरावत गज पर चढ़ाय अयोध्या में लावनेको सनमुख भए अयोध्या आय इन्द्र ने माताकी गोद में भगवान्को स्थापन कर परम आनन्द हो तांडव नृत्य करतेभए इस भान्ति जन्मोत्सव कर देव अपने अपने स्थानक को गए माता पिता भगवान् को देखकर बहुत हर्षित भये श्रीभगवान अद्भुत आभूषण से विभूषित हैं और परम सुगन्ध के लेप से चरचित हैं और सुन्दर चारित्र हैं जिनके शरीरकी कान्तिसे दशों दिशा प्रकाशित होरही हैं महा कोमल शरीर है माता भगवान्को देखकर महा हर्षको प्राप्त भई और कहने में न आवे सुख जिसका ऐसे परमानन्द सागर में मग्न भई वह माता भगवान् को गोद में लिये ऐसीं शोभती भई जैसे उगते सूर्य्य से पूर्व दिशा शोभे त्रैलोक्य के ईश्वर को देख नाभिराजा आपको कृतार्थ मानते भए पुत्र के गात्रको स्पर्श कर नेत्र हर्षितभए मन आनन्दित भया समस्त जग विषे मुख्य ऐसा जे जिनराज उनका ऋषभ नाम धर माता पिता सेवा करते भए हाथ के अंगुष्ट में इन्द्रने अमृत रस मेला उसको पान

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर शरीर बृद्धिको प्राप्त भये प्रभुकी वय (उमर) प्रमाण इन्द्रने देवकुमार रक्खे उन सहित निःपाप क्रीड़ा (खेल) करतेभये वह क्रीड़ा माता पिता को अति सुखकी देनहारी है ॥

अथानन्तरके भगवान्के आसन शयन सवारी बस्त्र आभूषण अशन पान सुगन्धादि विलेपनन गात नृत्य वादित्राकि सर्व सामग्री देवोपनीत होती भई थोडेही काल में अनेक गुणोंकी बृद्धि होती भई रूप उनका अत्यन्त सुन्दर जो वर्णन में न आवे मेरुकी भीति समान महा उन्नत महा दृढ़ वत्तस्थल शोभता भया और दिग्गज के थम्भ समान बाहु होती सई वह बाहु जगत् के अर्थ पूर्ण करने को कल्पवृक्षही हैं और दोऊ जंघा त्रैलोक्यरूप घरके थांभवेको थम्भही हैं और मुख महासुन्दर मनोहर जिसने अपनी कांति से चन्द्रमाको जीताहै और दीप्तिसे जीता है सूर्य्य जिसने और दोऊ हाथ कोपल सेभी अति कोमल और लाल हथेली और केश महासुन्दर सघन दीर्घ बक्र पतले चीकने श्याम हैं मानों सुमेरु के शिखर पर नीलाचलही विराजे है और रूप महा अद्भुत अनुपन सर्व लोक के लोचनको प्रिय जिसपर अनेक कामदेव वारे जावैं सर्व उपमाको उलंघैं सर्वका मन और नेत्र हरैं इसभांति भगवान् कुमार अवस्था मेंभी जगत् को सुखदायक होते भये उस समय कल्पवृक्ष सर्वथा नष्टभए और विना वाहे धान अपने आपही उगे उनसे पृथिवी शोभती भई और लोक निपट भोले षट कर्मसे अनजान उन्होंने प्रथम ईक्षु रसका आहार किया वह आहार क्रांति वीर्यादिक के करनेको समर्त है कै एक दिन पीछे लोगों को क्षुधा बधी जो ईक्षुरस से तृप्ति न भई तब लोक नाभिराजा के निकट आए और नमस्कारकर विनती करते भए कि हे नाथ कल्प बृक्ष समस्त क्षय हो गये और हम क्षुधा तृषा कर पीड़ित हैं तुमारे शरण आये

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं तुम रक्षा करो, यह कितनेक फल युक्त वृक्ष पृथ्वी पर प्रगट भए हैं इनकी विधि हम जानते नहीं हैं, इनमें कौन भक्ष्य है कौन अभक्ष्य है, और गाय भैंसके थनोंसे कुछ झिरे है पर वह क्याहै और यह व्याघ्रसिंहादिक पहले सरलथे अब वक्रता रूप दीखे हैं और यह महा मनोहर स्थल पर और जलमें पुष्प दीखे हैं सो क्या हैं, हे प्रभु तुमारे प्रसाद कर आजीवका का उपाय जानें तो हम सुख सों जीवें। यह बचन प्रजा के सुनकर नाभिराजाको दया उपजी, नाभिराजा महाधीर तिनसो कहते भये कि इस संसार में ऋषभदेव समान और कोई भी नहीं जिनकी उत्पत्तिमें रत्नोंकी वृष्टि भई और इन्द्रादिक देवोंका आगमन भया, लोकोंको हर्ष उपजा, वह भगवान महा अतिशय संयुक्त हैं तिनके निकट जायकर हम तुम आजीवका का उपाय पूछें भगवान का ज्ञान मोह तिमिरसे अंत तिष्ठा है प्रजा सहित नाभिराजा भगवानके समीप गये और समस्त प्रजा नमस्कार कर भगवानकी स्तुति करती भई, हे देव तुम्हारा शरीर सर्वलोक को उलंघकर तेजोमय भासे है सर्व लक्षण संपूर्ण महा शोभायमान हैं और तुम्हारे अत्यन्त निर्मल गुण सर्व जगतमें व्याप रहे हैं वह गुण चन्द्रमा की किरण समान उज्ज्वल महा आनन्द के करणहारे हैं। हे प्रभु हम कार्य के अर्थ तुम्हारे पिता के पास आये थे सो यह तुम्हारे निकट लाये हैं तुम महा पुरुष महा बुद्धिमान् महा अतिशय कर मंडित हो जो ऐसे बड़े पुरुष भी तुमको सेवें हैं इस लिये तुम दयालु हो हमारी रक्षा करो क्षुधा, तृषा हरनेका उपाय कहो और जिससे सिंहादिक क्रूर जीवोंका भी भय मिटे सो उपाय बताओ तब भगवान कृपानिधि कोमल है हृदय जिनका इन्द्रको कर्म भूमिकी रीति प्रकट करनेकी आज्ञा करते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भये प्रथमहि नगर ग्राम गृहादिककी रचना भई और जे मनुष्य शूरवीर जानें तिनको क्षत्री वर्ण ठह राये और उनको यह आज्ञा भई कि तुम दीन अनाथोंकी रक्षा करो कैएकनको वाणिज्यादिक कर्म बताकर वैश्य ठहराए और जो सेवादिक अनेक कर्मके करने वाले उनको शूद्र ठहराए, इस भांति भगवानने किया जो यह कर्म भूमि रूप युग उसको प्रजा कृतयुग [सत्ययुग] कहते भए और परम हर्षको प्राप्त भए श्री ऋषभदेव के सुनंदा और नंदा यह दो राणी भई, बड़ी राणी के भरतादिक सौ पुत्र और एक ब्राह्मी पुत्री भई और दूसरी राणीके बाहुबल एक पुत्र और सुंदरी एक पुत्री भई इस प्रकार भगवान ने त्रेसठ लाख पूर्व काल राज किया और पहले बीस लाख पूर्व कुमार रहे इस भांति तिरासी लाख पूर्व गृह में रहे।

एक दिन नीलांजना अपसरा नृत्य करती करती विलाय [मर] गई उसको देखकर भगवान की बुद्धि वैराग्य में तत्पर भई वह विचारने लगे कि यह संसारके प्राणी वृथाही इन्द्रियों को रिझा कर उन्मत्त चरित्रोंकी विडंबना करे है, अपने शरीरको खेद का कारण जो जगत की चेष्टा उस से जगत जीव सुख माने है इस जगतमें कई एक तो पराधीन चाकर हो रहे हैं कई एक आपको स्वामी मान तिनपर आज्ञा करे हैं जिनके बचन गर्व से भरे है धिक्कार है इस संसार को जिसमें जीव दुःख ही भोगे हैं और दुःखही को सुख मान रहे हैं इस लिये मैं जगतके विष सुखोंको तजकर तप संयमादि शुभ चेष्टा कर मोक्ष सुखकी प्राप्तिके अर्थ यत्न करूं यह विषय सुख क्षणभंगुर हैं और कर्म के उदय से उपजे हैं इस लिये कृत्रिम [बनावटी] है इस भांति श्री ऋषभदेवके मन वैराग्य चिन्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वनमें प्रवरता तबही लोकांतिक देव आय स्तुति करते भए कि हे नाथ तुमने भली बिचारी त्रैलोक्यमें कल्याणका कारण यहही है, भरत क्षेत्रमें मोक्ष का मार्ग विच्छेद भया था सो आपके प्रसादसे प्रवरतेगा, यह जीव तुम्हारे दिखाए मार्गसे लोक शिखर अर्थात् निर्वाणको प्राप्त होंगे, इस भांति लोकांतिक देव स्तुति कर अपने धाम गए और इन्द्रादिक देव आयकर तप कल्याणका समय साधते भये रत्न जड़ित सुदरशन नामा पालिकी में भगवानको चढ़ाया वह पालकी कल्प वृक्षके फूलों की मालासे महा सुगंधित है, और मोतीनके हारोंसे शोभायमान है, भगवान उसपर चढ़कर घरसे बनको चले, नाना प्रकारके वादित्रोंके शब्द और देवों के नृत्यसे दशों दिशा शब्द रूप भई इस प्रकार महा विभूति संयुक्त तिलकनामा उद्यानमें गए माता पितादिक सर्व कुटंबसे क्षमा भावकराकर और सिद्धों को नमस्कार कर मुनि पद अंगीकार किया, समस्त वस्त्र आभूषण तजे और केशोंका लौंच किया वह केश इन्द्रने रत्नों के पिटारे में रखकर क्षीरसागरमें डारे भगवान जब मुनिराज भए तब चौदह हजार राजा मुनिपद को न जानते हुवे केवल स्वामी की भक्तिके कारण नग्न रूप भए भगवान ने छः महीने पर्यंत निश्चल कायोत्सर्ग धरा अर्थात् सुमेरु पर्वत समान निश्चल होय तिष्ठे और मन और इन्द्रियों का निरोध किया कच्छ महा कच्छादिक राजा जो नग्न रूप धार दीक्षित भये थे वह सर्व ही क्षुधा तृषादि परीषह सहनेको समर्थ चलायमान भए, कैएक तो परीषह रूप पवनके मारे भूमि पर गिर पड़े कई एक जो महा बलवान थे वे भूमि पर तो न पड़े परन्तु बैठ गये, कैएक कायोत्सर्गको तज क्षुधा तृषा से पीड़ित फलादिक के आहार को गये, और कैएक गरमीसे तपतायमान होकर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शीतल जलमें प्रवेश करते भये, उनकी यह चेष्टा देखकर आकाशमें देववाणी भई कि मुनि रूप धार कर तुम ऐसा काम मत करो, यह रूप धार तुमको ऐसा कार्य करना नरकादिक दुखको कारण है, तब वे नग्न मुद्रा तजकर बक्कल धारते भये. कैएक चरमादि धारते (पहनते) भये, कैएक दर्भ (कुशादिक) धारते भये और फलादि से क्षुधा को शीतल जलसे तृषा को निवारते भये, इस प्रकार यह लोग चारित्र भ्रष्ट होकर और स्वेच्छाचारी बनकर भगवान के मत से पराङ्मुख होय शरीरका पोषण करते भये किसी ने पूछा कि तुम यह कार्य भगवान की आज्ञा से करो हो वा मन हीसे करो हो, तब उन्हों ने कहा कि भगवान तो मौन रूप हैं कुछ कहते नहीं हम क्षुधा तृषा शीत उष्ण से पीड़ित होकर यह कार्य करे हैं, और कैएक परस्पर (आपस में) कहते भए कि आओ गृह में जाय कर पुत्र दारादिकका अवलोकन करें तब उनमें से किसी ने कहा जो हम घर में जावेंगे तो भरत घर में से निकाल देंगे और तीव्र दण्ड देंगे इस लिये घर नहीं जायें, तब बनही में रहें, इन सब में महा मानी मारीच भरतका पुत्र भगवानका पोता भगवें बस्त्र पहरकर परिब्राजक (संयासी) मार्ग प्रकट करता भया।

अथानंतर कच्छ महाकच्छके पुत्र नमिविनमि आयकर भगवानके चरणोंमें पड़े और कहने लगे कि हे प्रभु तुमने सबको राज दिया हमको भी दीजे इस भांति याचना करते भए तब धरणीन्द्रका आसन कंपायमान भया धरणीन्द्रने आयकर इनको बिजियार्धका राज दिया वह विजियार्ध पर्वत भोगभूमि के समान है, पृथिवी तलसे पच्चीस योजन ऊंचा है और सवाछै योजन का केन्द्र है और भूमि पर पचास योजन चौड़ा है और दशदश योजन ऊपर दशदशयोजनकी चौड़ीदोयश्रेणी हैं एक दक्षिणश्रेणी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक उत्तरश्रेणी इन दोनों श्रेणियों में विद्याधर बसे हैं दक्षिणश्रेणी की नगरी पचास उत्तर श्रेणी की साठ एक एक नगरी को कोटि कोटि ग्राम लगे हैं और दस योजन से ऊपर दस योजन जाइये तहां गंधर्व किन्नर देवों के निवास हैं और पांच योजन ऊपर जाइये तहां नव शिखर हैं उन में प्रथम सिद्धकूट उस में भगवान् के अकृत्रिम चैत्यालय हैं और देवों के स्थान हैं, सिद्धकूट पर चारण मुनि आयकर ध्यान धरे हैं। विद्याधरों की दक्षिणश्रेणी की जो पचास नगरी हैं उन में रत्नपुर मुख्य है और उत्तरश्रेणी की जो साठ नगरी हैं उन में अलकावती नगरी मुख्य है इस विद्याधरों के लोक में स्वर्ग लोक समान सुख है सदाउत्साह ही प्रवृते है, नगरों के बड़े बड़े दरवाजे, और कपाट युगल, और सुवर्ण के कोट, गंभीर खाई, और बन उपबन वापी कूप सरोवरादि से महा शोभायमान हैं। जहां सर्व ऋतु के धान और सर्व ऋतु के फल फूल सदा पाइये हैं जहां सर्व औषधि सदा पाइये हैं जहां सर्व काम का साधन है, सरोवर कमलों से भरे जिन में हंस क्रीड़ा करे हैं, और जहां दधि दुग्ध घृत मिष्टान्नों के झरने वहे हैं, वापी काओं के मणि सुवर्ण के सिवान (पौड़ी) हैं और कमल के मकरन्दों से शोभायमान हैं, जहां कामधेनु समान गाय हैं और पर्वत समान अनाज के ढेर हैं और मार्ग धूल कंटकादि रहित हैं, मोटे वृक्षों की छाया है महा मनोहर जल के निवाण हैं। चौमासे में मेघ मनवांछित वरसे हैं और मेघों की आनन्दकारी ध्वनि होय है, शीत काल में शीत की विशेष बाधा नहीं और ग्रीष्म ऋतु में विशेष आताप नहीं, जहां छै ऋतु के विलास हैं, जहां स्त्री आभूषण मंडित कोमल अंगवाली हैं और सर्व कला में प्रवीण पट् कुमारीका समान प्रभावाली हैं कईएक तो कमल के गर्भ समान प्रभा को धरे हैं, कईएक श्यामसुन्दर नील कमल की प्रभा को धरे हैं, कईएक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिभना के फूल समान रंग को धरे हैं, कईएक विद्युत समान ज्योति को धरे हैं, यह विद्याधरी महा सुगंधित शरीरवाली हैं मानों नन्दन बन की पवन ही से बनाई हैं, सुन्दर फूलों के गहने पहरे हैं मानों बसंत की पुत्री ही हैं, चन्द्रमा समान कांति है मानो अपनी ज्योति रूप सरोवर में तिरेही हैं, और श्याम श्वेत सुरंग तीन वर्ण के नेत्र की शोभाको धरणहारी, मृग समान हैं नेत्र जिनके, हंसनी समान है चाल जिनकी, वे विद्याधरी देवांगना समान शोभे हैं, और पुरुष विद्याधर महा सुन्दर शूर वीर सिंह समान पराक्रमी हैं महा बाहु महा पराक्रमी आकाश गमन में समर्थ भले लक्षण भली क्रिया के धरणहारे न्यायमार्गी, देवों के समान हैं प्रभा जिनकी अपनी स्त्रियों सहित विमान में बैठे अढ़ाई द्वीप में जहां इच्छा होय तहां ही गमन करे हैं, इस भांति दोनों श्रेणियों में वे विद्याधरदेव तुल्य इष्ट भोग भोगते महा विद्याओंको धरे हैं, कामदेव समान है रूप जिनका और चन्द्रमा समानहै बदन जिनका। धर्मके प्रसाद से प्राणी सुख संपत्ति पावें हैं इस लिये एक धर्म ही में यत्नकरो और ज्ञानरूप सूर्य से अज्ञानरूप तिमिर को हरो।

वे भगवान् ऋषभदेव महाध्यानी सुवर्ण समान प्रभा के धारण हारे प्रभु जगत् के हित करने निमित्त छै मास पीछे आहार लेने को चले लोक मुनिके आहारकी विधि जानें नहीं अनेक नगर ग्राम विषे विहार किया मानो अद्भुत सूर्यही विहार करे है जिन्होंने अपने देहकी कांतिसे पृथ्वी मण्डल पर प्रकाश करदिया है जिनके कांधे सुमेरु के शिखर समान देदीप्यमान हैं और परम समाधानरूप अधोदृष्टि देखते जीव दया पालते विहार करे हैं पुर ग्रामादि में लोक अज्ञानी नाना प्रकारके वस्त्र रत्न हाथी घोड़े रथ कन्यादिक भेट करें सो प्रभुके कुछभी प्रयोजनकी नहीं इस कारण प्रभु फिर बनको चले जावें इस भांति

For Private and Personal Use Only

और छै महीने तक विधि पूर्वक आहारकी प्राप्ति न भई अर्थात् दीक्षा समय से एक वर्ष बिना आहार बीता, पीछे विहार करते हुये हस्तिनापुर आऐ सर्वही लोक पुरुषोत्तम भगवान् को देखकर आश्चर्यको प्राप्त भए, राजा सोमप्रभ और तिनके लघु भ्राता श्रेयांस दोनोंही भाई उठकर सन्मुख चले, श्रेयांस को भगवान् के देखने से पूर्वभवका स्मरण भया और मुनि के आहार की विधि जानी वह नृप भगवान की प्रदक्षिणा देते ऐसे शोभेहैं मानो सुमेरुकी प्रदक्षिणा सूर्यही देरहाहै, और बारम्बार नमस्कारकर रत्न पात्र से अर्घ देय चरणारविन्द धोए और अपने सिर के केशसे पोंछे आनन्दके अश्रुपात आए और गद गद वाणी भई श्रेयांस ने जिसका चित्त भगवान् के गुणों में अनुरागी भया है महा पवित्र रत्नन के कलशों में रखकर महा शीतल मिष्टइक्षुरस आहार दिया परम श्रद्धा और नवधा भक्ति से दान दिया वर्षोंपवारणा भया उसके अतिशय से देव हर्षित होय पांच आश्चर्य करते भए (१) रत्ननकी वर्षा भई (२) कल्पवृक्षों के पंच प्रकारके पुष्प बरसे (३) शीतल मन्द सुगन्ध पवन चली (४) अनेक प्रकार दुन्दभी बाजे बाजे (५) यह देवबाणी भई कि धन्य यह पात्र और धन्य यह दान और धन्य दानका देनहारा श्रेयांस, ऐसे शब्द देवताओंके आकाश में भए, श्रेयांश की कीर्ति देखकर दानकी रीति प्रगटभई, देवतों कर श्रेयांस प्रशंसा योग्य भए और भरत ने अयोध्यासे आयकर बहुत अस्तुति करी अति प्रीति जनाई भगवान् आहार लेकर वन में गये।

अथानंतर भगवान्ने एक हजार वर्षपर्यंत महातप किया और शुक्ल ध्यानसे मोहका नाशकर केवल ज्ञान उपजाया केवल ज्ञान में लोकालोक का अवलोकन होताहै जब भगवान् केवल ज्ञानको प्राप्त भए

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तब अष्ट प्रातिहार्य प्रगटे प्रथमतो आप के शरीकी कांतिका ऐसा मण्डल हुआ जिससे चन्द्र सूर्यादिक का प्रकाश मन्द नजर आवे रात्रि दिवसका भेद नजर न आवे और अशोक वृक्ष रत्नमई पुष्पोंसे शोभित रक्त हैं पल्लव जिनके और आकाश से देवों ने फूलोंकी वर्षा करी जिनकी सुगन्धसे भ्रमर गुंजारकरैं महा दुन्दुभी बाजोंकी ध्वनि होती भई जो समुद्र के शब्द सेभी अधिक थी देवोंने बाजे बजाए उनका शरीर मायामई नहीं दीखता है जैसा शरीर देवों का है तैसाही दीखे है, और चन्द्रमाकी किरण सेभी अधिक उज्ज्वल चमर इन्द्रादिक ढोरते भए और सुमेरु के शिखर तुल्य पृथिवीका मुकट सिंहासन आपके विराजने को प्रकट भया, कैसाहै सिंहासन अपनी ज्योति कर जीती है सूर्यादिक की ज्योति जिसने और तीन लोक की प्रभुताके चिन्ह मोतियों की झालर से शोभायमान तीन छत्र अति शोभें हैं मानो भगवान् के निर्मल यशही हैं और समोशरणमें भगवान सिंहासनपर विराजे सो समोशरणकी शोभा कहने को केवली ही समर्थ हैं और नहीं। चतुरनिकाय के देव सर्वही बन्दना करनेको आए, भगवानके मुख्य गणधर वृषभसेन भये आपके द्वितीय पुत्र और भी बहुत जे मुनि भएथे वह महा वैराग्य के धारण हारे मुनि आदि बारह सभा के प्राणी अपने अपने स्थानक में बैठे।

अथानन्तर भगवानकी दिव्य ध्वनि होती भई जो अपने नादकर दुन्दुभी बाजोंकी ध्वनिको जीते है, भगवान जीवों के कल्याण निमित्त तत्त्वार्थ का कथन करते भये कि तीन लोकमें जीवोंको धर्मही परम शरण है इसही से परम सुख होय है, सुखके अर्थ सभी चेष्टा करै हैं और सुख धर्म के निमित्त से ही होय है ऐसा जानकर धर्म का यत्न करो। जैसे मेघ बिना वर्षा नहीं बीज बिना धान्य नहीं तैसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवोंको धर्म बिना सुख नहीं, जसे कोई उपंग (लंगड़ा) परुष चलनेकी इच्छा करे और गूंगा बोलने की इच्छा करे औरअंधा देखने की इच्छा करे तैसे मूढ़ प्राणी धर्म बिना सुखकी इच्छा करे हैं, जैसे परमाणु से और कोइ अल्प (सूक्ष्म) नहीं और आकाश से कोई महान् [बड़ा] नहीं तैसे धर्म समान जीवों का और कोइ मित्र नहीं और दया समान कोइ धर्म नहीं मनुष्य के भोग और स्वर्ग के भोग सब परमसुख धर्मही से होय हैं इसलिये धर्म बिना और उद्यमकर क्याहै, जो पण्डित जीव दयाकर निर्मल धर्मको सेवे हैं उनही का ऊर्ध (ऊपर) गमनहै दूसरे अधो [नीचे] गति जायहैं, यद्यपि द्रव्यलिंगी मुनि तपको शक्ति से स्वर्गलोक में जायहैं तथापि बडे देवोंके किंकर होकर उनकी सेवा करे हैं देवलोक में नीच देव होना देव दुर्गति है सो देव दुर्गतिके दुःखको भोगकर तिर्यंच गतिके दुख को भोगे हैं, और जो सम्यग्दृष्टि जिन शासन के अभ्यासी तप संयमके धारण हारे देवलोक में जाय हैं ते इन्द्रादिक बडे देव होयकर बहुत काल सुख भोग देवलोक से चय मनुष्य होय मोक्ष पावे हैं, धर्म दो प्रकार का है एक यतीधर्म दूसरा श्रावकधर्म, तीजा धर्म जो माने हैं वे मोह अग्नि से दग्ध हैं, पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत यह श्रावक का धर्म है, श्रावक मरण समय सर्व आरम्भ तज शरीर से भी निर्ममत्व होकर समाधि मरणकर उत्तमगति को जावे है, और यती का धर्म पंच महाव्रत पंच सुमति तीन गुप्ति यह तेरह प्रकार का चारित्र हैं। दशों दिशा ही यतिके वस्त्र हैं, जो परुष यति का धर्म धारे हैं वे शुद्धोपयोग के प्रसाद से निर्वाण पावे हैं, और जिन के शभोपयोग की मुख्यता है वे स्वर्ग पावे हैं परम्पराय मोक्ष जाय हैं। और जो भावों से मुनियों की स्तुति करे हैं वेभी धर्म को प्राप्त होय हैं, मुनि परम ब्रह्मचर्य्य के धारण हारे हैं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह प्राणी धर्म के प्रभाव से सर्व पाप से छूटे हैं और ज्ञान को पावे हैं, इत्यादिक धर्म का कथन देवाधिदेवने किया सो सुन कर देव मनुष्य सर्व ही परम हर्ष को प्राप्त भए कैएक तो सम्यक्त को धारण करतेभए, कैएक सम्यक्त सहित श्रावक के व्रतको धारते भए, कैएक मुनिव्रत धारते भए, सुर असुर मनुष्य धर्म श्रवण कर अपने अपने धामगए, भगवान् ने जिन जिन देशों में गमन किया उन उन देशों में धर्म का उद्योत भया। आप जहां जहां विराजे तहां तहां सौ सौ योजन तक दुर्भिक्षादिक सर्व बाधा मिटी, प्रभु के चौरासी गणधर भए और चौरासी हज़ार साधुभए इनसे मण्डित सर्व उत्तम देशोंमें विहार किया॥

अथानन्तर भरत चक्रवर्ती पद को प्राप्त भए और भरत के भाई सब ही मुनिव्रत धार परमपद को प्राप्त भए, भरतने कुछ काल छै षण्ड का राज किया, अयोध्या राजधानी, नवनिधि चौदह रत्न प्रत्येक की हज़ार हज़ार देव सेवा करें, तीन कोटि गाय एक कोटि हल चौरासी लाख हाथी इतने ही रथ अठारा कोटी घोडे और बत्तीस हज़ार मुकट बन्ध राजा और इतने ही देश महासम्पदाके भरे, छियानबे हज़ार रानी देवांगना समान, इत्यादिक चक्रवर्त्ति के विभवका कहां तक वरणन करिए। पोदनापुर में दूसरी माता का पुत्र बाहुबली था वह भरत कीआज्ञा न मानतेभए, कहतेभए कि हम भी ऋषभदेवके पुत्र हैं किस की आज्ञा मानें, तबभरत बाहुबलि पर चढे, सेनायुद्ध न ठहरा, दोऊ भाई परस्पर युद्ध करें यह ठहरा, तब तीन युद्ध थापे॥१॥ दृष्टियुद्ध॥२॥ जलयुद्ध॥३॥ और मल्लयुद्ध, तीनों ही युद्धों में बाहुबली जीते और भरत हारे, तब भरत ने बाहुबली पर चक्र चलाया, वह उनके चरम शरीरपर घात नकर सका, लौटकर भरत के हाथ पर आया भरत लज्जितभए, बाहुबली सर्व भोग त्यागकर बैरागीभए, एक वर्ष पर्यंत

कायोत्सर्ग धर निश्चलतिष्ठे शरीर बेलों से वेष्टित भया, सांपों ने बिलकिए, एक वर्ष पीछे केवल ज्ञान उपजा, भरत चक्रवर्त्ति ने आय कर केवली की पूजा करी, बाहुबली केवली कुछ काल में निर्वाण को प्राप्त भए अवसर्पणी काल में प्रथम मोक्ष को गमन किया, भरत चक्रवर्त्ति ने निष्कंटक छै खंड का राज किया जिसके राज्य में विद्याधरों के समान सर्वसम्पदा के भरे और देव लोक समान नगर महा विभूति कर मंडित हैं जिनमें देवों समान मनुष्य नाना प्रकार के वस्त्राभरण से शोभायमान अनेक प्रकार की शुभ चेष्टा कर रमते हैं, लोक भोगभूमि समान सुखी और लोकपाल समान राजा और मदन के निवास की भूमि अप्सरा समान नारियां जैसे स्वर्ग विषे इन्द्र राज करे तैसे भरत ने एक छत्र पृथिवी विषे राजकिया, भरत के सुभद्रा राणी इन्द्राणी समान भई जिस की हज़ार देव सेवा करे चक्री के अनेक पुत्र भए उनको पृथिवी का राज दिया इसप्रकार गौतम स्वामी ने भरत का चरित्र श्रेणिक राजा से कहा ॥

अथानन्तर श्रेणिक ने पूछा हे प्रभो तीन वर्णकी उत्पत्ति तुमने कही सो मैंने सुनी अब विप्रों की उत्पति सुना चाहताहूं सो कृपाकर कहो गणधर देव जिन का हृदय जीव दयाकर कोमलहै और मद मत्सर कर रहित हैं वे कहते भए कि एक दिन भरतने अयोध्या के समीप भगवान्का आगमन जान समोशरणमें जाय वन्दना कर मुनिके आहार की विधि पूछी तब भगवान की आज्ञा भई कि मुनि तृष्णाकर रहित जितेन्द्री अनेक मासोपवास करें तो पराए घर निर्दोष आहार लें अन्तराय पड़े तो भोजन न करें, प्राण रक्षा निमित्त निर्दोष आहार करें, और धर्मके हेतु प्राण को राखें, और मोक्षके हेतु उस धर्म को आचरें जिसमें किसी भी प्राणीको बाधा नहीं यह मुनिका धर्म सुन कर

चक्रवर्ती विचारे हैं अहो यह जैनका मत महा दुर्धर है मुनि शरीर से भी निःस्पृह (निर्ममत्व) तिष्ठे हैं तो और वस्तु में तो उनकी बांछा कैसे होय मुनि महा निग्रन्थ निर्लोभी सर्व जीवों की दया विषे तत्पर हैं, मेरे विभूति बहुत हैं मैं अणुव्रती श्रावक को भक्ति करदूं और दीन लोकों को दया करदूं यह श्रावक भी मुनि के लघु भ्राता हैं ऐसा विचार कर लोकों को भोजन को बुलाए और वृतियों की परीक्षा निमित्त आंगण में जो धान उर्द मूंगादि बोए तिनके अंकुर उगे सो अविवेकी लोक तो हरितकाय को खूंदते आए और जो विवेकी थे वे अंकुर जान खड़े होय रहे तिनको भरतने अंकुर रहित जो मार्ग उसपर बुलाया और व्रतीजान बहुत आदर किया और यज्ञोपवीत (जनेऊ) कंठमें डाला आदरसे भोजन कराया वस्त्राभर्ण दिये और मन बांछित दान दिये और जो अंकुरको दल मलते आए थे तिनको अव्रती जान उनका आदर न किया और व्रतियों को ब्राह्मण ठहराए चक्रवर्ती के मानने से केएक तो गर्व को प्राप्त भये और केएक लोभ की अधिकता से धनवान् लोकोंको देख कर याचना को प्रवृते तब मतिसमुद्र मंत्री ने भरत से कहा कि समोशरणमें मैंने भगवान के मुख से ऐसा सुना है कि जो तुमने विप्र धर्माधिकारी जान कर माने हैं वे पंचम कालमें महा मदोन्मत्त होवेंगे और हिंसा में धर्म जान कर जीवों को हनेंगे और महा कषाय संयुक्त सदा पाप क्रिया में प्रवर्तेंगे और हिंसा के प्ररूपक ग्रन्थों को कृत्रिम मान कर समस्त प्रजा को लोभ उपजावेंगे महा आरम्भ विषे आसक्त परिग्रह में तत्पर जिन भाषित जो मार्ग उस की सदा निन्दा करेंगे निर्ग्रन्थ मुनि को देख महा क्रोध करेंगे, यह वचन सुन भरत इन पर क्रोधायमान भए, तब यह भगवान्

For Private and Personal Use Only

के शरण गए भगवान् ने भरत को कहा हे भरत कालिकाल विषे ऐसा ही होना है तुम कषाय मत करो इस भांति विप्रों की प्रवृती भई और जो भगवान के साथ वैराग्य को निकलेथे तजो चारित्र भ्रष्ट भए तिनमें कछादिक तो कैएक सुलटे और मारीचादिक नहीं सुलटे तिनके शिष्य प्रति शिष्यादिक सांख्य योगमें प्रवृते कोपीन (लंगोटी) पहरी बकलादि धारे।

अथानंतर अनेक जीवन को भवसागर से तार कर भगवान ऋषभ कैलाश के शिखर से लोक शिखर जो निर्वाण उस को प्राप्त भए और भरत भी कुछ काल राज्य कर जीर्ण तृणवत् राज्य को छोड़ कर वैराग्यको प्राप्त भये अंतर्मुहूर्त में केवल उपजा पीछे आयु पूर्णकर निर्वाण को प्राप्त भये।

अथ वंशोत्पत्ति नामा महा अधिकार ॥ २ ॥

अथानंतर गौतम स्वामी राजा श्रेणिक से वंशों की उत्पत्ति कहते भए कि हे श्रेणिक इस जगत विषे महावंश जो चार तिनके अनेक भेद हैं।

१ प्रथम इक्ष्वाकु बंश यह लोक का आभूषण है इस में से सूर्य बंश प्रवर्ता है। २ दूसरा सोम (चन्द्र) बंश चन्द्रमा की किरण समान निर्मल है। ३ तीसरा विद्याधरों का बंश अत्यन्त मनोहर है। ४ चौथा हरिबंश जगत् विषे प्रासिद्ध है। अब इनका भिन्न २ बिस्तार कहें हैं॥

इक्ष्वाकु बंश में भगवान ऋषभदेव उपजे तिनके पुत्र भरत भए भरत के पुत्र अर्क कीर्ति भये राजा अर्ककीर्ति महा तेजस्वी राजा हुए हैं इनके नाम से सूर्य बंश प्रवृता है अर्क नाम सूर्य का

है इस लिये अर्ककीर्ति का वंश सूर्यवंश कहलाता है इस सूर्यवंश में राजा अर्ककीर्ति के सतयश नामा पुत्र भये इन के बलांक तिनके सुबल तिनके महाबल महा बलके अति बल तिनके अमृत अमृतके सुभद्र तिनके सगर तिनके भद्र तिनके रवितेज तिनके शशी तिनके प्रभुततेज तिनके तेजस्वी तिनके तपबल महा प्रतापी तिनके अति वीर्य तिन के सुवीर्य तिन के उदित पराक्रम तिन के सूर्य तिनके इन्द्रद्युमणि तिनके महेन्द्राजित तिनके प्रभु तिनके विभु तिनके अविध्वंस तिनके वीतभी तिन के वृषभध्वज तिनके गरुड़ांक तिनके मृगांक, इस भांति सूर्य वंश विषे अनेक राजा भए ते संसार के भ्रमण ते भयभीत पुत्रों को राज देय मुनिव्रत के धारक भए महा निग्रन्थ शरीरसे भी निस्पृही यह सूर्यवंशकी उत्पत्ति तुझे कही अब सोमवंशकी उत्पत्ति तुझे कहिये है सो सुन।

ऋषभदेवकी दूसरी राणीके पुत्र बाहुबली तिनके सोमयश तिनके सौम्य तिनके महाबल तिनके सुबल तिनके भुजबली इत्यादि अनेक राजा भए निर्मल है चेष्टा जिनकी मुनिव्रत धार परम धाम को प्राप्त भए, कैएक देव होय मनुष्य जन्म लेकर सिद्ध भए यह सोमवंश की उत्पति कही।

अब विद्या धरन के वंश की उत्पत्ति सुन।

नमि रत्नमाली तिनके रत्नवज्र तिनके रत्न रथ तिन के रत्नचित्र तिनके चन्द्ररथ तिनके वज्र जंघ तिनके वज्रसेन तिनके वज्रदंष्ट्र तिनके वज्रधुज तिनके वज्रध्वज तिनके वज्र तिनके सुवज्र तिन के वज्रभृत तिनके वज्राभ तिनके वज्रबाहु तिनके वज्रांक तिनके वज्र सुन्दर तिनके वज्रास्य तिनके वज्रपाणि तिनके वज्रभानु तिनके वज्रवान तिनके विद्युन्मुख तिनके सुवक्र तिनके विद्युदंष्ट्र और

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसके पुत्र विद्युत्व और विद्युदाभ और विद्युद्वेग और विद्युत्व इत्यादि विद्या धरों के वंश में अनेक राजा भए अपने पुत्रको राज देय जिन दीक्षा धर राग द्वेषका नाश कर सिद्ध पदको प्राप्त भए केएक देवलोक मोह पाशसे बंधे राज विषे मरकर कुगति को गये ।

अब संजयति मुनि के उपसर्गका कारण कहें हैं कि विद्युदंष्ट्र नामा राजा दोऊ श्रेणीका अधिपति विद्याबलसे उद्धत विमानमें बैठा विदेह क्षेत्रमें गया तहां संजयंति स्वामी को ध्यानारूढ़ देखा। जिनका शरीर पर्वतसमान निश्चल है उस पापी ने मुनि को देखकर पूर्व जन्म के विरोधसे उन को उठाकर पंचागिरि पर्वत पर धरे और लोकों को कहा कि इसे मारो पापी जीवोंने लष्टि मुष्टिपाषाणादि अनेक प्रकार से उनको मारा मुनि को शमभाव के प्रसाद से रंच मात्र भी क्लेश न उपजा। दुस्सह उपसर्ग को जीत लोक लोकका प्रकाशक केवल ज्ञान उपजा, सर्वदेव वंदना को आए, धरणीन्द्र भी आए, वह धरणींद्र पूर्व भव में मुनि के भाई थे इस लिये क्रोध कर सर्व विद्याधरों को नाग फांस से बांधे, तब सबन ने बिनती करी कि यह अपराध विद्युदंष्ट्र का है, तब और को छोड़ा और विद्युदंष्ट्र को न छोड़ा, मारणे को उद्यमी भए तब देवों ने प्रार्थना कर के छुड़ाया, छोड़ातो परन्तु विद्या हर ली, तब इसने प्रार्थना करी कि हे प्रभो मुझे विद्या कैसे सिद्ध होयगी, तब धरणीन्द्र ने कहा कि संजयति स्वामी की प्रतिमा के समीप तप क्लेश करनेसे तुम को विद्या सिद्ध होयगी परन्तु चैत्यालयके उलंघन से तथा मुनियों के उलंघन से विद्या का नाश होवेगा इस लिये तुमको तिनकी बन्दना करके आगे गमन करना योग्य है । तब धरणीन्द्र ने संजयति स्वामी को पूछा कि हे प्रभो विद्युद्दंष्ट्र ने आपको उपसर्ग

For Private and Personal Use Only

क्यों किया, भगवान् संजयति स्वामी ने कहा कि मैं चतुर्गति विषे भ्रमण करता सकट नामा ग्राम में दयावान् प्रियवादी हितकार नामा महाजन भया, निष्कपट स्वभाव साधू सेवा में तत्पर सो समाधि मरण कर कुमुदावती नगरी में न्यायमार्गी श्रीवर्धन नामा राजा हुवा, उस ग्राम में एक ब्रह्मण जो अज्ञानतपकर कुदेव हुआ था वहां से चय कर राजा श्रीवर्धन के वह्निशिख नामा पुरोहित भया, वह महा दुष्ट अकार्य का करणे वाला आप को सत्यघोष कहावे परन्तु महा झूठा और परद्रव्य का हरणहारा, उसके कुकर्म को कोई न जाने, जगत् में सत्यवादी कहावे, एक नेमिदत्त सेठ के रत्न हरे, राणी रामदत्ता ने जूवा में पुरोहित की अंगूठी जीती और दासी के हाथ पुरोहित के घर भेजकर रत्न मंगाए और सेठ को दीए, राजा ने पुरोहित को तीव्र दण्ड दीया, वह पुरोहित मर कर एक भवके पश्चात यह विद्याधरों का अधिपति भया और राजा मुनिव्रत धार कर देवभए, कईएक भवके पश्चात यह हम संजयंति भए सो इसने पूर्व भव के प्रसंग से हम को उपसर्ग किया यह कथा सुन नागेन्द्र अपने स्थान को गए ॥

अथानन्तर उस विद्याधर के दृढरथ भए उसके अश्वधरमा पुत्र भए उसके अश्वाय उसके अश्वध्वज उसके पद्मनाभि उसके पद्ममाली उसके पद्मरथ उसके सिंहजाति उसके मृगधर्मा उस के मेघास्त्र उस के सिंहप्रभु उस के सिंहकेतु उसके शशांक उस के चन्द्राहू उस के चन्द्रशेखर उस के इन्द्ररथ उसके चक्रधर्मा उसके चक्रायुध । उसके चक्रध्वज उसके मणिग्रीव उसके मण्यंक उसके मणिभासुर उसके मणिरथ उसके मण्यास उसके विम्बोष्ट उसके लंबिताधर उसके रक्तोष्ठ उसके हरिचन्द्र उसकेपूर्णचन्द्र उसके चालेन्द्र उसके [illegible] उसके [illegible] उसके [illegible] उसके [illegible] उसके [illegible] उसके [illegible] उसके [illegible] उसके

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वज्रचूड़ उसके भूरिचूड़ उसके अर्कचूड़ उसके वन्हिजटी उसके वन्हितेज इस भान्ति अनेक राजा भए। तिन में कईएक पुत्र को राज देय मुनि होय मोक्ष गए कईएक स्वर्ग गए कईएक भोगासक्त होय वैरागी न भए ते नारकी तिरयंच भए इस भांति विद्याधर का वंश कहा । आगे द्वितीय तीर्थंकर जो अजितनाथ स्वामी उनकी उत्पति कहे हैं ॥

जब ऋषभदेव को मुक्ति गए पचासलाख कोटि सागर गए चतुर्थकाल आधा व्यतीत भया जीवों की आयुकाय पराक्रम घटते गए जगत् में काम लोभादिक की प्रवृति बढ़ती भई तब इक्ष्वाकु कुल में ऋषभदेव ही के बंश में अयोध्या नगर में राजा धरणीधर भए उनके पुत्र त्रिदशजय देवों के जीतने वाले उनके इन्दुरेखा राणी उसके जितशत्रु पुत्र भया, सो पोदनापुर के राजा भव्यानन्द उनके अम्भोद माला राणी उसकी पुत्री विजया वह जितशत्रु मे परणी जितशत्रुको राज देयकर राजा त्रिदशजय कैलाश पर्वत पर निर्वाण को प्राप्त भए, राजा जितशत्रु की राणी विजया देवी के श्रीअजितनाथ स्वामी भए उनका जन्माभिषेकादिक का वर्णन ऋषभदेववत् जानना जिनके जन्म होतेही राजा जितशत्रु ने सर्व राजा जीते इसलिये भगवान्का अजित नाम धरा अजितनाथ के सुनयानन्दा आदिक स्त्री भई जिनके रूपकी समानता इन्द्राणी भी न करसके एक दिन भगवान् अजितनाथ,राजलोक सहित प्रभात समय मेंही बनक्रीड़ा को गए, कमलों का बन फूलाहुवा देखा और सूर्यास्त समय उसही बनको सकुचा हुवा देखा सो लक्ष्मीकी इस भांति अनित्यता मानकर परम वैराग्यको प्राप्तभए, माता पितादि सर्व कुटुम्ब से क्षमाभाव कर ऋषभदेवकी भान्ति दीक्षा धरी दस हजार राजा साथ निकसे, भगवानने वेल्लापारणा

For Private and Personal Use Only

अंगीकार करा ब्रह्मदत्त राजाके घर आहार लिया चौदह वर्ष तप करके केवल ज्ञान उपजाया। चौंतीस अतिशय तथा आठ प्रातिहार्य प्रकट भये, भगवान् के नव्वे गणधर भए और लाख मुनिभए॥

अजितनाथके पुत्र विजयसागर जिनकी ज्योति सूर्य समान है उनकी राणी सुमंगला उन के पुत्र सगर द्वितीय चक्रवर्ती भए। नवनिधि चौदह रत्न आदि इनकी विभूति भरत चक्रवर्तीके समान जाननी, उनके समयमें एक वृत्तान्त भया सो हे श्रेणिक तुम सुनो॥ भरत क्षेत्रके विजयार्धकी दक्षिण श्रेणीमें चक्रवाल नगर तहां राजा पूर्णघन विद्याधरोंके अधिपति महा प्रभाव मंडित विद्याबलकर अधिक थे उसने तिलक नगर के राजा सुलोचन की कन्या उत्पलमती बिवाह के वास्ते मांगी राजा सुलोचनने निमित्त ज्ञानी के कहने से उसको न दी और सगर चक्रवर्ती को देनी विचारी, तब पूर्णघन सुलोचन पर चढ़ आए सुलोचन के पुत्र सहस्र नयन अपनी बहिन को लेकर भागे और बनमें छिप रहे। पूर्णघन ने युद्धमें सुलोचन को मार नगर में जाय कन्या ढूंढी परन्तु न पाई तब अपने नगर को चले गये, सहस्र नयन बाप का बध सुन पूर्णमेघ पर क्रोधायमान भए। परन्तु कुछकर नहीं सके गहरे बनमे घुसे रहे, वह बन सिंह व्याघ्र अष्टापदादि से भराहै पश्चात् चक्रवर्ती को एक मायामई अश्व लेय उड़ा सो जिस बनमें सहस्र नयन थे तहां आये। उत्पलमती ने चक्रवर्ती को देखकर भाई को कहा कि चक्रवर्ती आपही यहां पधारें हैं। तब भाई ने प्रसन्न होकर चक्रवर्ती को बहिन परणाई यह उत्पलमती चक्रवर्ती की पटराणी स्त्री रत्न भई और चक्रवर्ती ने कृपा कर सहस्र नयनको दोनों श्रेणी का अधिपति किया। सहस्र नयन ने पूर्णघन पर चढ़कर युद्ध में पूर्णघन को मारा और बाप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का फेर सिंगा चक्रवर्ती छह खण्ड पृथ्वी का राज करें और सहस्रनयन चक्रवर्ती का साला विद्याधर की दोऊ श्रेणी का राज करें। पूर्णमेघ का बेटा मेघवाहन भयकर भागा सहस्रनयन के योधा मारने को साथ दौड़े मेघवाहन समोशरण में श्री अजितनाथकी शरण आया इन्द्र ने भय का कारण पूछा तब मेघवाहन ने कहा हमारे बाप ने सुलोचन को मारा था सो सुलोचन के पुत्र सहस्रनयन ने चक्रवर्ती का बल पाकर हमारे पिता को मारा और हमारे बन्धु क्षय किये और मेरे मारने के उद्यम में है सो मैं मन्दिर में से हंसों के साथ उड़कर श्री भगवान की शरण आया हूं। ऐसा कहकर मनुष्यों के कोठे में बैठा जो सहस्रनयन के योधा इसके मारणे को आये थे वे इसको समोशरण में आया जान पीछे हट गए और सहस्रनयनसे सकल वृत्तान्त कहा तब वह भी समोशरण में आया भगवान के चरणारविन्द के प्रसाद से दोनों निर्वैर होय तिष्ठे। तब गणधरने भगवानसे इनके पिताका चरित्र पूछा भगवान कहे हैं कि जम्बूद्वीपके भारत क्षेत्रमें सद्गति नामा नगर वहां भावनि नामा वणिक उसके आतकी नामा स्त्री और हरिदास नामा पुत्र भावन चार कोटि द्रव्यका धनी था तौ भी लोभ कर व्यापार निमित्त देशान्तरको चला चलते समय पुत्रको सर्व धन सौंपा और द्यूतादिक कुव्यसन न सेवनेकी शिक्षा दीनी हे पुत्र यह द्यूतादि (जूवा) कुव्यसन सर्व दोषका कारण है इनको सर्वथा तजने इत्यादि शिक्षा देकर आप धनतृष्णाके कारण जहाजके द्वारा द्वीपांतर को गया। पिता के गए पीछे पुत्रने सर्व धन वेश्या जूआ और सुरापान इत्यादिक व्यासनमें खोया जब सर्व धन जाता रहा और जुआरीनका देनदार हो गया तब द्रव्यके अर्थ सुरंग लगाय राजा के महलमें चोरी को

For Private and Personal Use Only

गया इस प्रकार राजाके महिल में से द्रव्य लावे और कुव्यसन सेवे । कईएक दिनों में भावन पर देश से आया घर में पुत्रको न देखा तब स्त्री को पूछा स्त्री ने कहा इस सुरंग में होकर राजा के महिल में चोरी को गया है । तब यह पिता पुत्र के मरण की शंका कर उसके लावने को सुरंगमें गया । सो यह तो जावे था और पुत्र आवे था पुत्रने जाना यह कोई बैरी आवे है उसने बैरी जान खड्ग से मारा पीछे स्पर्शकर जाना यह तो मेरा बापहै तब महादुखी होय डरकर भागा और अनेक देश भ्रमण कर मरा पिता पुत्र दोनों कुत्ते भए फिर गीदड़ भए फिर मार्जार भए फेर रीछ भये फिर न्योला भये, फेर भैंसे भये, फिर बलध भये, इतने जन्मों में परस्पर घातकर मरे, फिर विदेह क्षेत्र में पुष्कलावती देशमें मनुष्य भये, उग्र तपकर एकादश स्वर्ग में उत्तर अनुत्तर नामा देव भए वहांसे आयकर जो भावन नामा पिता था वह तो पूर्णमेघ विद्याधर भया और हरिदास नामा पुत्र जो था सो सुलोचन नामा विद्याधर भया इस बैर से पूर्णमेघ ने सुलोचन को मारा । तब गणधर देव ने सहस्रनयन को और मेघवाहन को कहा तुम अपने पितावोंका इस भांति चरित्र जान संसारका बैर तजकर समता भाव धरो और सगर चक्रवर्तीने गणधर देवको पूछा कि हे महाराज मेघवाहन और सहस्रनयन का बैर क्यों भया तब भगवान की दिव्य ध्वनि में आज्ञा भई कि जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्र में पद्मक नामा नगर है तहां आरम्भ नामा गणित शास्त्रका पाठी महा धनवन्त था उसके दो शिष्य एक चन्द्र एक आवली भये इन दोनों में मित्रता थी दोनों धनवान् गुणवान् विख्यात हुये इनके गुरु आरम्भ ने जो अनेक नयचक्रमें अति विचक्षण था मन में विचारा कि कदाचित यह दोनों

मेरा पद भंग कर ऐसा जानकर इन दोनों के चित्त जुदे कर डारे एक दिन चन्द्र गाय के बेचनेको गोपाल के घर गया सो गाय बेचकर वह तो घर आ रहा था आवली को उसी गाय को गोपाल से खरीदकर लावता देखा इस कारण मार्गमें चन्द्र ने आवलीको मारा सो म्लेच्छ भया और चन्द्र मरकर बलद भया मलेच्छ ने बलध को भषा मलेच्छ नरक तिर्यंच योनि में भ्रमण कर मूसा भया और चन्द्र का जीव मार्जार भया, मार्जार ने मूसा भषा फिर ये दोऊ पाप कर्म के योगसे अनेक योनि में भ्रमण कर काशी में संभ्रम देव की दासी के पुत्र दोऊ भाई भए, एकका नाम कूट और एकका नाम कार्पटिक इन दोनों का संभ्रमदेव ने चैत्यालय की टहलको राखा मरकर पुण्यके योग से रूपानन्द और स्वरूपानन्द व्यंतर भये रूपानन्द तो चन्द्रका जीव और स्वरूपानंद आवली का जीव रूपानन्द तो चय कर कलूंबीका पुत्र कलन्धर भया और स्वरूपानन्द पुरोहित का पुत्र पुष्पभूत भया यह दोनों परस्पर मित्र एक हालीके अर्थ बैरको प्राप्त भये और कुलन्धर पुष्पभूत के मारणेको प्रवृता एक वृक्षके तले साधु बिराजते थे उनसे धर्म श्रवणकर कुलन्धर शान्त भया। राजा ने इस को सामंत जान बहुत बढ़ाया पुष्पभूत कुलन्धर को जिन धर्म के प्रसाद से संपत्तिवान देख कर जैनी भया व्रतधर तीसरे स्वर्ग गया और कुलन्धर भी तीसरे स्वर्ग गया स्वर्ग से चयकर दोनों धात की खण्ड के विदेह में अरिजय पिता और जयावती माता के पुत्र भये एकका नाम अमरश्रुत दूसरेका नाम धनश्रुत यह दोनों भाई बड़े योधा सहस्र शिरसके एतबारीत्राकर जगतमें प्रसिद्ध हुवे एकदिन राजा सहस्रशिरस हाथी पकड़ने को बनमें गया दोनों भाई साथ गये बनमें भगवान केवली बिराजे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थे। उन के प्रताप से सिंह मृगादिक जाति बिरोधी जीवों को एक ठौर बैठे देख राजा आश्चर्य को प्राप्तभया, आगे जाकर केवली का दर्शन किया राजा तो मुनिहोय निर्वाण गए और यह दोऊ भाई मुनि होय ग्यारवें स्वर्ग गए वहां से चयकर चन्द्रकाजीव अमरश्रुत तो मेघबाहन भया और आवलीका जीव धनश्रुत सहस्रनयन भया यह इन दोनों के बैरका बृत्तांत है फिर सगर चक्रवर्ती ने भगवान् से पूछा कि हे प्रभो सहस्रनयनसों मेरा जो अतिहित है सो इसमें क्या कारण है तब भगवान ने कहा कि वह आरम्भ नामा गणित शास्त्रका पाठी मुनियोंको आहार दान देकर देवकुरु भोगभूमि गया वहांसे प्रथम स्वर्गका देव होकर पीछे चन्द्रपुर में राजा हरि राणी धरादेवी के प्यारा पुत्र ब्रतकीर्तन भया, मुनि पद धार स्वर्ग गया, और विदेह क्षेत्र में रत्नसंचयपुर में महाघोष पिता चन्द्राणी माताके पयोबल नामा पुत्र होय मुनि ब्रत धार चौथवें स्वर्ग गया वहांसे चयकर भरतक्षेत्र में पृथिवीपुर नगरमें यशोधर राजा और राणी जया के घर जयकीर्त नामा पुत्र भया सो पिता के निकट जिन दीक्षा लेकर विजय बिमान गया वहांसे चयकर तू सगर चक्रवर्ती भया और आरम्भ के भव में आवली शिष्य के साथ तेरा स्नेह था सो अब आवली का जीव सहस्रनयन उससे तेरा अधिक स्नेहहै यह कथा सुन चक्रवर्तीको विशेष धर्मरुचि हुई और मेघबाहन तथा सहस्रनयन दोनों अपने पिताके और अपने पूर्व भव श्रवणकर निर्वैर भए परस्पर मित्रभए और इनकी धर्म बिषे अति रुचि उपजी पूर्व भव दोनोंको याद आए महा श्रद्धावन्त होय भगवान्की स्तुति करते भए, कि हे नाथ आप अनाथन के नाथ हैं यह संसार के प्राणी महा दुःखी हैं उनको धर्मोपदेश देकर उपकार करोहो तुम्हारा किसी से भी कुछ प्रयोजन नहीं तुम निःकारण जगत्के बन्धुहो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुम्हारा रूप उपमा रहित है और अप्रमाण बलके धारण हारे हो इस जगत् में तुम समान और नहीं है तुम पूर्ण परमानन्द हो कृतकृत्य हो, सदा सर्वदर्शी सर्व के बल्लभ हो किसी के चितवनमें नहीं आते हो जाने हैं सर्व पदार्थ के जाननेवाले सब के अन्तर्यामी सर्वज्ञ जगत् के हितु हो हे जिनेन्द्र संसाररूप अन्धकूप में पड़े यह प्राणी इनको धर्मोपदेश रूप हस्तावलंबनही हो इत्यादिक बहुत स्तुति करी और यह दोनों मेघवाहन और सहस्रनयन गदगद वाणी होय अश्रुपातकर भीग गए हैं नेत्र जिनके परम हर्ष को प्राप्त भए औरविधि पूर्वक नमस्कारकर तिष्ठे सिंह वीर्यादिक मुनि इन्द्रादिकदेव,सगरादिक राजा परम आश्चर्य को प्राप्त भए ॥

अथानन्तर भगवान् के समोशरण में राक्षसोंका इन्द्र भीम और सुभीम मेघवाहन से प्रसन्न भए और कहते भए कि हे विद्याधरके बालक मेघवाहन तू धन्यहै जो भगवान् अजितनाथकी शरणमें आया हम तेरेपर अतिप्रसन्न भए हैं हम तेरी स्थिरताका कारण कहे हैं तू सुन इस लवणसमुद्र में अत्यन्त विषम महारमणीक हजारों अन्तर द्वीपहैं लवण समुद्रमें मगरमच्छादिकके समूह बहुतहैं और तिन अंतर द्वीपों केमें कहीं तो गन्धर्व क्रीड़ाकरे हैं कहीं किन्नरोंकेसमूह रमें हैं कहीं यक्षों के समूह कोलाहल करे हैं कहीं किंपुरुष जातिके देव केलि करे हैं उनके मध्यमें राक्षस द्वीपहै जो सातसौ योजन चौड़ा और सात सौ योजन लम्बा है उसके मध्यमें त्रिकूटाचल पर्वत है जो अत्यन्त दुष्प्रवेशहै, शरणकी ठौरहै, पर्वत के शिखर सुमेरु के शिखर समान मनोहर हैं, और पर्वत नव योजन ऊंचा पचास योजन चौड़ा है नाना प्रकारकी रत्नों की ज्योति के समूह कर जड़ित है सुवर्ण मई सुन्दर तट हैं नाना प्रकार की बेलों कर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मण्डित कल्प वृक्षोंकर पूर्ण है उसके तले तीस योजन प्रमाण लंका नामा नगरी है, रत्न और सुवर्ण के महलोंकर अत्यन्त शोभे है जहां मनोहर उद्यान हैं कमलों से मण्डित सरोवर हैं बड़े २ चैत्यालय हैं वह नगरी इन्द्रपुरी समानहै दक्षिण दिशा का मण्डन (भूषण) है, हे विद्याधर! तुम समस्त बांधव वर्ग कर सहित वहां बसकर सुखसे रहो ऐसा कहकर भीम नामा राक्षसोंका इन्द्र उसको रत्नमई हार देताभया वह हार अपनी किरणों से महा उद्योत करे है तथा धरती के बीचमें पाताल लंका जिसमें अलंकारोदय नगर छैयोजन ऊंघा और एकसौ साढे इकतीस योजन और डेढकला चौड़ा यहभी दीया उसनगर में वैरियों का मन भी प्रवेश न करसके स्वर्गसमान महा मनोहर है राक्षसों के इन्द्र ने कहा कदाचित् तुझे परचक्र का भय हो तो इस पाताललंका में सकल वंश सहित सुख सो रहिये, लंका तो राजधानी और पाताललंका भय निवारणका स्थानक है, इस भान्ति भीम सुभीमने पूर्णघन के पुत्र मेघवाहन को कहा, तब मेघवाहन परम हर्ष को प्राप्त भया, भगवान् को नमस्कार कर के उठा, तब राक्षसों के इन्द्र ने राक्षस विद्यादी सो आकाशमार्ग से विमान में चढकर लंकाको चले, तब सर्व भाइयों ने सुना कि मेघवाहन को राक्षसों के इन्द्रने अति प्रसन्न हो कर लंका दी है सो समस्तही बन्धु वर्गों के मन प्रफुल्लित भए जैसे सूर्य के उदय से समस्तही कमल प्रफुल्लित होंय तैसे सर्वही विद्याधर मेघवाहन पै आए, उन से मण्डित मेघवाहन चले कै एकतो राजाके आगे जाय हैं कैएक पीछे कै एक दाहिने कै एक बांये कैएक हाथियों पर चढ़े कै एक तुरंग (घोड़ों) पर चढे कै एक रथों पर चढे जाय हैं कै एक पालकी पर चढ़े जाय हैं और अनेक प्यादेही जाय हैं, जय जय शब्द होरहा है दुन्दुभी बाजे बाजे हैं राजा पर छत्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फिरे है आरचमर ढुरे हैं, अनेक निशान (झंडे) चले जायहैं, अनेक विद्याधर सीस निवावे हैं, इसभांति राजा चलते २ लवणसमुद्र ऊपर आए यह समुद्र आकाश समान विस्तीर्ण और पाताल समान ढूंघा तमाल वन समान श्याम है तरंगों के समूह से भरा है अनेक मगरमछ जिसमें कल्लोलकरे हैं, उस समुद्र को देख राजा हर्षित भए, पर्वत के अधोभाग में कोट और दरवाजे और खाइयोंकर संयुक्त लंका नामा महा पुरी है वहां प्रवेश किया, लंका पुरी में रत्नोंकी ज्योतिसे आकाश सन्ध्या समान अरुण (लाल)हो रहा है कुन्द के पुष्प समान उज्ज्वल ऊंचे भगवान् के चैत्यालयों से मण्डित पुरी शोभे है चैत्यालयोंपर ध्वजा फरग रहे हैं चैत्यालयों को बन्दना कर राजा ने महल मे प्रवेश किया और भी यथा योग्य घरों में तिष्ठे रत्नों की शोभा से उसके मन और नेत्र हरगए।

अथानन्तर किन्नरगीत नामा नगर में रतिमयूख राजा और राणी अनुमती तिन केसुप्रभा नामा कन्या, नेत्र और मन की चुराने वाली, काम का निवास, लक्ष्मी रूप, कुमुदनी के प्रफुल्लित करणे को चन्द्रमा की चांदनी, लावण्य रूप जलकी सरोवरी, आभूषणों का आभूषण, इन्द्रियों को प्रमोद की करण हारी, सो राजा मेघवाहन ने उस को महा उत्साहकर परणी, उसके महारक्षनामा पुत्रभया, जैसे स्वर्ग में इन्द्र इन्द्राणी सहित तिष्ठे तैसे राजा मेघवाहन ने राणी सुप्रभा सहित लंका में बहुत काल राज किया ॥

एक दिन राजा मेघवाहन अजित नाथ स्वामी की बन्दना के लिये समोशरण में गए वहां जब और कथा होचुकी तब सगर ने भगवान् को नमस्कार कर पूछा कि हे प्रभो इस अवसर्पणी काल में धर्म चक्र के स्वामी तुम सारिखे जिनेश्वर कितने भए और कितने होवेंगे, तुम तीनलोक के सुख के देनेवाले

For Private and Personal Use Only

हो, तुम सारिखे पुरुषोंकी उत्पत्ति लोक में आश्चर्य कारिणी है, और चक्र रत्नके स्वामी कितने होवेंगे. तथा वासुदेव बलभद्र कितने होवेंगे, इसभांति सगर ने प्रश्न किये तब भगवान् अपनी ध्वनि से देव दुन्दुभीकी ध्वनिको निराकरण करते हुऐ व्याख्यान करते भए, अर्ध मागधी भाषाके भाषण द्वारे भगवान उनके होंठ न हालें यह बड़ाआश्चर्य है उस दिव्य ध्वनिने श्रोताओंके कानोंको उत्साह उपजा रक्खा है उत्सर्पिणी अवसर्पिणी प्रत्येककालमें चौबीस तीथकर होय हैं, जिस समय मोहरूप अन्धकारसे समस्त जगत् अच्छादितथा, धर्मका विचार नहीं था, और कोई भी राजा नहीं था, उस समय भगवान् ऋषभ देव उपजे उन्होंने कर्म भूमिकी रचना करी तबसे कृतयुग कहाया भगवानने क्रिया के भेदसे तीन वर्ण थापे और उनके पुत्र भरतने विप्र वर्ण थापे भरतका तेजभी ऋषभसमानहै भगवान् ऋषभदेवने जिन दीक्षा धरी और भवतापकर पीड़ित भव्यजीवोंको शमभावरूप जलसे शान्त किया श्रावकके धर्म और यतीके धर्म दोऊ प्रगट कीए। जिनके गुणों के कहनेको जगतमें कोईभी समर्थ नहीं कैलाश के शिखर से आप निर्वाण को पधारे। ऋषभदेव का शरण पाय अनेक साधु सिद्ध भऐ कई एक स्वर्ग के सुखको प्राप्त भये कई एक भद्र परिणामी मनुष्यभवको प्राप्त भए, और कई एक मारीचादिक मिथ्यात्त्व के राग से अत्यन्त उज्ज्वल भगवान के मार्गको अवलोकन करते भए जैसे घुग्घू (उल्लू) सूर्य के प्रकाशको न जाने तैसे कुधर्म को अंगीकारकर कुदेव भए और नरक तिर्यंच गतिको प्राप्त भए भगवान ऋषभको मुक्ति गए पचास लाख कोटि सागर गये तब सर्वार्थ सिद्धसे चय द्वितीय तीर्थंकर हम अजित भए जब धर्मकी ग्लानि होय और मिथ्यादृष्टियोंका अधिकार होय आचार का अभाव होय तब भगवान तीर्थंकर प्रगट होयकर धर्मका उद्योत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करें हैं और भव्य जीव धर्मको पाय सिद्धअस्थानककों प्राप्त होयहैं अब इमको मोक्ष गये पीछे बाईस तीर्थ कर और होंगे, तीन लोक में उद्योत करणे वाले वे सर्व मुझ सारिषे कांति वीर्य विभूति के धनी त्रैलो क्यपूज्य ज्ञान दर्शन रूप होंगे, तिनमें तीन तीर्थंकर १ शान्ति २ कुंथ३ अर चक्रवर्ती पदके भी धारक होवेंगे। सो चौबीसों के नाम सुन ऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनन्दन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ६ सुपार्श्व ७, चन्द्रप्रभ ८, पुष्पदन्त ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८ मल्लि १९, मुनि सुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्वनाथ २३, महावीर २४, यह सर्वही देवाधि देव जिन मार्ग के धुरन्धर होवेंगे, और सर्व के गर्भावतारमें रत्नों की वर्षा होगी सर्व के जन्म कल्यानक सुमेरु पर्वतपर क्षीर सागर के जल से होवेंगे उपमा रहितहैं तेज रूप सुख और बल जिनके ऐसे सर्वही कर्म शत्रु के नाश करण हारे होवेंगे और महावीर स्वामी रूपी सूर्य के अस्त भए पीछे पाखण्ड रूप अज्ञानी चमत्कार करेंगे वह पाखण्डी संसार रूप कूपमें आप पडेंगे और औरों को गेरेंगे चक्रवर्त्तियों में प्रथमतो भरत भए दूसरा तू सगर भया, और तीसरा, मघवा चौथा सनत्कुमार और पांचवां शान्ति छठा कुंथु सातवां अर आठवां सुभूम नवा महापद्म दशवां हरिषेण ग्यारवां जयसेन बारवां ब्रह्मदत्त यह बारह चक्रवर्त्ती और वासुदेव नव और प्रतिवासुदेव ९ बलभद्र नव होवेंगे इनका धर्ममें सावधानचित्त होगा यह अवसर्पणीके महापुरुष के इसीभान्तिउत्सर्पणी में भरत ऐरावत में जानने इस भांति महापुरुषोंकी विभूति और कालकी प्रवृति और कर्मके वशसे संसारका भ्रमण और कर्म रहितोंको मुक्ति का निरुपमसुख यह सर्व कथन मेघवाहनने सुना यह विचक्षण चित्त में विचारता भया कि अफसोस!

For Private and Personal Use Only

जिन कर्मों से यह जीव आताप को प्राप्त होय है उन्हीं कर्मों को मोह मदिरासे उन्मत्त हुआ यह जीव बांधे है यह विषय विषवत् प्राणों के हरण हारे कल्पना मात्र मनोज्ञ हैं। दुःख के उपजावन हारे हैं इन में रति कहां इस जीव ने घन स्त्री कुटम्बादि में अनेक भव राग कीया परन्तु वे परपदार्थ इसके नहीं हुये यह सदा अकेला संसार में परिभ्रमण करे हैं यह सर्व कुटंबादिक तबतकही स्नेह करे हैं जबतक दानकर उनका सन्मान करे है जैसे श्वान के बालक को जब लग टूक डारिये तोलग अपना है अन्तकाल में पुत्र कलत्र बान्धव मित्र धनादिक की साथ कौन गया और यह किसके साथ गए यह भोग काले सर्प के फण समान भयानक हैं नरक के कारण हैं इनमें कौन बुद्धिमान संग करे अहो यह बड़ा आश्चर्य है लक्ष्मी ठगनी अपने आश्रितों को ठगे है इसके समान और दुष्टता कहा जैसे स्वप्न में किसी वस्तुका समागम होय है तैसे कुटम्ब का समागम जानना और जैसे इंद्र धनुष क्षण भंगुर है तैसे परिवार का सुख क्षणभंगुर जानना यह शरीर जल के बुदबुदेवत् असारहे और यह जीतव्य बिजलीके चमत्कारवत् असार चंचल है इसलिये इन सबको तज कर एक धर्मही का सहाय अंगीकार करूं धर्म सदा कल्याण कारीही है कदापि विघ्नकारी नहीं और संसार शरीर भोगादिक चतुरगतिके भ्रमणके कारण हैं महा दुःख रूप हैं ऐसा जानकर उसराजा मेघवाहनने जिसके बकतर महा वैराग्यही है महारक्ष नामा पुत्र को राज्य देकर भगवान् श्रीअजितनाथके निकट दीक्षा धारी राजाके साथ एकसौ दस राजा वैराग्य पाय घर रूप बंदीखानेसे निकसे॥

अथानन्तर मेघवाहन का पुत्र महारक्ष राज पर बैठा सो चन्द्रमा समान दान रूपी किरणनके समूहसे कुटम्ब रूपी समुद्रको पूर्ण करता सन्ता लंका रूपी आकाशमें प्रकाश करता भया, बड़े बड़े

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विद्याधरों के राजा स्वप्न में भी उसकी आज्ञा को पाकर आदर से प्रतिबोध होय कर हाथ जोड नमस्कार करते भये ॥ उस महारक्षके विमलप्रभा राणी होती भई, प्राण समान प्यारी सो सदा राजा की आज्ञा प्रमाण करती भई वह राणी मानों छाया समान पतिकी अनुगामिनी है उसके अमररक्ष उदधिरक्ष भानुरक्ष ये तीन पुत्र भए वह पुत्र नाना प्रकारके शुभकर्म कर पूर्ण जिनका बड़ा बिस्तार अति ऊंचे जगत में प्रसिद्ध मानों तीन लोक ही हैं।

अथानन्तर अजितनाथ स्वामी अनेक भव्य जीवोंको निस्तारकर सम्मेद शिखरसे सिद्धपद को प्राप्त भये सगरके छाणवें हजार राणी इन्द्राणी तुल्य और साठ हजार पुत्र ते कदाचित बन्दना के अर्थ कैलाश पर्वत पर आये भगवानके चैत्यालयोंकी बन्दना कर दण्डरत्न से कैलाशके चौगिरद खाई खोदते भए उनको क्रोधकी दृष्टिसे नागेंद्रने देखा और ये सब भस्म हो गए उनमें से दो आयु कर्म के योगसे बचे एक भीमरथ और दूसरा भगीरथ, तब सबने विचारा जो अचानक यह समा चार चक्रवर्ती को कहेंगे तो चक्रवर्ती तत्काल प्राण तजेंगे, ऐसा जान इनको मिलनेसे और कहनेसे पंडित लोकों ने मना किये, सर्व राजा और मन्त्री जिस विधि आवेथे उसी विधिसे आये बिनयकर अपने अपने स्थानक चक्रवर्ती के पास बैठा तब एक वृद्ध कहता भया कि हे सगर देख इस संसार की अनित्यता जिसको देखकर भव्य जीवोंका मन संसार में नहीं प्रवृते है आगे तुम्हारे समान परा क्रमी राजा भरत भये जिसने छै खण्ड पृथ्वी दासी समान वश करी उसके अर्ककीर्ति पुत्र भये महा पराक्रमी जिनके नाम से सूर्य बंश प्रवृता इस भांति जे अनेक राजा भये वे सर्व कालवश भये और

For Private and Personal Use Only

राजाओं की बात तो दूरही रही स्वर्ग में इन्द्र महा विभव युक्त हैं वे भी क्षण में विलाय जाय हैं और जे भगवान तीर्थंकर तीनों लोक के आनन्द करण हारे हैं वे भी आयुके अन्त होनेपर शरीर को तज निर्वाण पधारे हैं जैसे पक्षी वृक्ष पर रात्रिको आय बसे हैं प्रभात अनेक दिशाको गमन करे हैं तैसे यह प्राणी कुटम्ब रूपी वृक्ष में आय बसे हैं स्थिति पूरी कर अपने कर्म बश चतुर्गति में गमन करे हैं सबसे बलवान महाबली यह काल है जिसने बडे २ बलवान निर्बल किये अहो बड़ा आश्चर्य है बड़े पुरुषों का बिनाश देखकर हमारा हृदय नहीं फट जाय है जीवोंके शरीर सम्पदा और और इष्टका संयोग सर्व इन्द्र धनुष, वा स्वप्न, वा बिजली, वा झागा, वा बुदबुदा समान जानना इस जगत में ऐसा कोई नहीं जो कालसे बचे एक सिद्धही अविनाशी हैं और जो पुरुष पहाड़ को हाथसे चूर्ण कर डारें और समुद्रको शोष जावें वे भी कालके बदन में प्राप्त होय हैं मृत्यु अलंघ्य है यह त्रैलोक्य मृत्युके वश है केवल महा मुनि ही जिन धर्मके प्रसाद से मृत्यु को जीते है जैसे अनेक राजा काल वश भये तैसे हमभी काल वश होंवेगे तीन लोक का यही मार्ग है ऐसा जान कर ज्ञानी पुरुष शोक न करें शोक संसार का कारण है इस भांति वृद्ध पुरुषने कही और इस भांति सर्व सभा के लोगों ने कही उसी समय चक्रवर्ती ने दोऊ बालक देखे तब मनमें बिचारी कि सदा ये साठ हजार भेले होय मेरे पास आवते थे नमस्कार करते थे और आज ये दोनों ही दीन बदन दीखे हैं इस लिये जानियेहै कि और सब काल वश भए और ये सब राजा मुझे अन्योक्ति कर समझावे हैं मेरा दुःख देखनेको असमर्थ है ऐसा जान राजा शोक रूपसर्पका डसा हुआ भी प्राणों

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को न तजता भया, मंत्रियोंके बचनसे शोकको दबाकर संसारको कदली (केला)के गर्भवत् असार जान इंद्रियोंके सुख छोड़ भगीरथ को राज देकर जिन दीक्षा आदरी, यह सम्पूर्ण छै खण्ड पृथ्वी जीर्ण तृण समान जान तजी, भीमरथ सहित श्री अजितनाथ के निकट मुनि होय केवल ज्ञान उपाय सिद्ध पद को प्राप्त भए।

अथानन्तर एक समय सगरके पुत्र भगीरथ श्रुतसागर मुनिको पूछते भए कि हे प्रभो जो हमारे भाई एकही साथ मरणको प्राप्त भए उनमें मैं बचा सो किस कारणसे बचा तब मुनि बोले कि एक समय चतुर्विधि संघ बन्दना निमित्त संमेद शिखरको जाते थे चलते २ अन्तिक ग्राममें आय निकसे तिनको देखकर अन्तिक ग्राम के लोक दुर्वचन बोलते भए, हंसते भये, तहां एक कुम्भार ने उनको मने करा और मुनियों की स्तुति करी तदनंतर उस ग्रामके एक मनुष्य ने चोरी करी राजाने सर्व ग्राम जला दिया उस दिन वह कुंभार किसी ग्राम को गया था वहही बचा वह कुंभार मरकर वणिक भया और और जे ग्राम के मरे थे सो द्विइंद्री कौड़ी भये, कुंभारके जीव महाजनने सर्व कौडीखरीद फिर वह महाजन मर कर राजा भया, और कौडी मरकर गिजाई भई, सो हाथी के पगके तले चूरी गई राजा मुनि होयकर देव भये, देवसे तू भागीरथ भया और ग्राम के लोक कैएक भव लेय सगर के पुत्र भये सो मुनोंके संघ की निन्दा के पाप से जन्म जन्म में कुमौत पाई और तू स्तुति करने से ऐसा भया, यह पूर्वभव सुनकर भगीरथ प्रतिबोधको पायकर मुनिराजका व्रतधर परम पदको प्राप्त भये।

अथानन्तर गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे श्रेणिक यह सगरका चरित्र तो तुझे कहा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है आगे लंकाकी कथा कहिये है सो सुन। महारिक्ष नामा विद्याधर बड़ी संपदा कर पूर्ण लंकाका निःकंटक राज करै सो एक दिन प्रमद नामा उद्यान में राजा राजलोक सहित क्रीड़ा को गये, वह उद्यान कमलों से पूर्ण सरोवरों से अधिक शोभाको धरे है और नाना प्रकार के रत्नों की प्रभावाले ऊंचे पर्वतों से महा रमणीक है और सुगन्धि पुष्पों से फूले हुवेहै जो वृक्षों के समूहसे मंडित और मिष्ट शब्दों के बोलनहारे पक्षियों के समूह से अति सुन्दर है, जहां रत्नों की राशि हैं और अति सघन पत्र पल्लवन कर मंडित लताओं (वेलों)के मंडप से छा रहाहै ऐसे बनमें राजा राज लोकों सहित नाना प्रकारकी क्रीड़ा कर रति के सागर में मग्न हुआ जैसे नंदन बनमें इंद्र क्रीड़ा करै तैसे क्रीड़ा करी अथानन्तर सूर्य के अस्त भये पीछे कमल संकोच को प्राप्त भये उनमें भ्रमर को दबकर मूवा देख राजा के जी में चिन्ता उपजी उस राजा के मोह की मंदता होगई थी और भवसागर से पार होने की इच्छा उपजी थी राजा बिचारे है कि देखो मकरंद के रस में आसक्त यह मूढ़ भौंरा गन्ध से तृप्त न भया इस लिये मुवा तैसेमैं स्त्रियोंके मुख रूप कमल को भ्रमर हुआ मरकर कुगति को प्राप्त होऊंगा जो यह एक नासिका इंद्रिय का लोभी नाश को प्राप्त भया तो मैं तो पंच इंद्रियों का लोभी हूं मेरी क्या बात अथवा यह चौइंद्री जीव अज्ञानी भूलें तो भूले मैं ज्ञान संपन्न विषयों के बश क्यों हुआ शहतकी लपेटी खड्ग की धारा के चाटनेसे सुख कहां जीभ ही के खंड होंय हैं तैसे विषय हैं सेवन में सुख कहां अनन्त दुःखों का उपार्जनही होय है विषफल तुल्य विषय हैं उन से परांग मुख हैं तिनको मैं मन बच काय से नमस्कार करूं हहाय यह बडा कष्ट है जो मैं पापी घने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिन तक इन दुष्ट विषयों से ठगाया गया इन विषयोंका प्रसंग विषम है विषतो एक भव प्राणहरे है विषय अनन्त भव प्राण हरे हैं यह विचार राजामें किया उस समय श्रुतसागर मुनि बनमें आये वह मुनि अपने रूप से चन्द्रमाकी कांति को जीते हैं और दीप्ति से सूर्यको जीते हैं स्थिरता में सुमेरु से अधिक हैं जिनका मन एक धर्म ध्यानमेंही आसक्त है और जीते हैं राग द्वेष दोय जिन्होंने और तजे हैं मन बचन कायके अपराध जिन्हों ने चार कषायोंके जीतनेहारे पांच इंद्रियोंके बश करणहारे छै कायके जीव के दयालु और सप्त भय वर्जित आठ मद रहित नव नयके वेत्ता शीलके नववाडिके धारक दशलक्षण धर्म के स्वरूप परम तप के धरणहारे साधुवों के समूह। सहित स्वामी पधारे सो जीव जंतु रहित पवित्र स्थान देख बनमें तिष्ठे जिनके शरीर की ज्योति का दशों दिशा में उद्योत होगया ॥

अथानन्तर बनपाल के मुख से स्वामी को आया सुन राजा महारिद्धि विद्याधर बन में आए कैसे हैं राजा का मन भक्ति भावसे विनय रूप है राजा आकर मुनि के पांव पड़े मुनिका मुख अति प्रसन्न है और कल्याण के देनहारे हैं चरण कमल उनके राजा समस्त संघको नमस्कार कर समाधान (कुशल) पूछ क्षण एक बैठ भक्ति भावसे धर्मका स्वरूप पूछते भये मुनिके हृदय में शांति भावरूपी चन्द्रमा प्रकाश कर रहाथा सो बचन रूपी किरणसे उद्योत करते संते ब्याख्यान करते भये कि हे राजा धर्म का लक्षण जीव दया भगवान ने कहा है और यह सत्य वचनादि सर्व धर्मही का परिवार है यह जीव कर्म के प्रभाव से जिस गतिमें जायहै उसी शरीर में मोहित होय है इसलिये तीनलोक की सम्पदा जो कोई किसीको देय तौभी वह जीव प्राणको न तजे सब जीवोंको प्राण समान और कुछ प्यारा नहीं सब

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ही जीवनेको इच्छे हैं मरनेको कोई भी न इच्छे बहुत कहनेकर क्या जैसे आपको अपने प्राण प्यारे हैं तैसेही सबको प्यारे हैं इसलिये जो मूरख पर जीवोंके प्राण हरैं हैं ते दुष्टकर्मी नरकमें पड़ें हैं उन समान कोऊ पापी नहीं यह जीव जीवोंके प्राण हर अनेक जन्म कुगतिमें दुःख पावें हैं जैसे लोहका पिण्ड पानी में डूब जाय है तैसे हिंसक जीवन का मन भवसागरमें डूबे हैं जे वचनकर मीठे बोल बोले हैं और हृदय में विषके भरे है इंद्रियों के वश होकर मलीन हैं भले आचारसे रहित स्वेच्छाचारी काम के सेवन हारेहैं ते नरक तिर्यंच गतिमें भ्रमण करे हैं प्रथम तो इस संसार में जीवोंको मनुष्य देह दुर्लभ है फिर उत्तम कुल आर्यक्षेत्र सुन्दरता धनकर पूर्णता विद्या का समागम तत्व का जानना धर्म का आचरण यह अति दुर्लभ है धर्म के प्रसाद से कैएकतो सिद्ध पद पावे हैं कैएक स्वर्ग लोक में सुख पाकर परम्पराय मोक्ष को जाय हैं और कई एक मिथ्या दृष्टि अज्ञान तप कर देव होय स्थावर योनि में आय पड़े हैं कईएक पशु होय हैं कई एक मनुष्य जन्म में आवे हैं माता का गर्भ मल मूत्रकर भराहै कृमियों के समूह करपूर्ण है महा दुर्गंध अत्यन्त दुस्सह उसमें पित्त श्लेष्म के मध्य चर्मके जालमें ढके यह प्राणी जननीके आहार का जो रस ताहि चाटें हैं जिनके सर्व अंग सकुच रहे हैं दुःख के भार कर पीड़े नव महीना उदरमें बसकर योनि के द्वार सें निकसे हैं मनुष्य देह पाय पापी धर्मको भूलें हैं मनुष्यदेह सर्व योनियोंमें उत्तमहै मिथ्या दृष्टि नेम धर्म आचार वर्जित पापी विषयोंको सेवे हैं जे ज्ञान रहित कामके वश पड़े स्त्री के वशी होय हैं ते महा दुःख भोगतेहुये संसार समुद्रमें डूबे हैं इसलिये विषय कषाय न सेवने हिंसाका वचन जिसमें पर जीव को पीड़ा होय सो न बोलना हिंसाही संसारका कारणहै चोरी न करना सांच बोलना स्त्रीकी सङ्गति

For Private and Personal Use Only

न करनी धनकी बांछा न राखनी सर्व पापारम्भ तजमे परोपकार करना पर पीड़ा न करनी यह मुनिकी आज्ञा सुनकर धर्मका स्वरूप जान राजा बैराग्यको प्राप्त भये मुनिको नमस्कार कर अपने पूर्व भव पूछे चार ज्ञान के धारक मुनि श्रुतिसागर संक्षेपताकर पूर्व भव कहते भये कि हे राजन्! पोदनापुर में हित नामा एक मनुष्य उसके माधवी नामा स्त्री उसके प्रीतमनामा तू पुत्रथा और उसी नगरमें राजा उदयाचल राणी अर्हश्री उसका पुत्र हेमरथ राजकरे सो एक दिन जिन मन्दिरमें महा पूजा कराई वह पूजा आनन्दकी करणहारीहैं सो उसके जयजय कार शब्द सुनकर तैनेभी जयजयकार शब्द किया सो यहपुण्य उपार्जा कालपाय मुवा और यक्षोंमें महा यक्ष हुवा एक दिन विदेह क्षेत्र में कांचनपुर नगर के बन में मुनियों को पूर्व भवके शत्रु ने उपसर्ग किया यक्ष ने उसको डराकर भगा दिया और मुनियों की रक्षा करी सो अति पुण्यकी राशि उपार्जी कै एक दिन में आयु पूरी कर यक्ष तड़िदंगद नामा विद्याधरकी श्रीप्रभा स्त्री के उदित नामा पुत्र भया अमर विक्रम विद्याधरों के ईश बन्दनाके निमित्त मुनि के निकट आए थे उनको देखकर निदान किया महा तपकर दूसरे स्वर्ग जाय वहां से चयकर तू मेघबाहनके पुत्र हुवा। हे राजा! तूने सूर्यके रथकी न्याई संसार में भ्रमण किया जिह्वा का लोलुपी स्त्रियोंके वशवर्ती होय अनन्त भव धरे तेरे शरीर इस संसारमें एते व्यतीत भये जो उनको एकत्र करिये तो तीनलोकमें न समावें और सागरों की आयु स्वर्ग में तेरी भई जब स्वर्गही के भोग से तू तृप्ति न भया तो विद्याधरों के अल्प भोग से तू कहा तृप्तिहोयगा और तेरा आयु भी अब आठ दिन का बाकी है इसलिये स्वप्न इन्द्रजाल समान जे भोग उनसे निरबृत्य हो ऐसा सुन अपना मरण जाना तोभी विषादको न प्राप्त भये प्रथमतो

जिन चैत्यालय में बड़ी पूजा कराई पीछे अनन्त संसारके भ्रमणसे भयभीत होकर अपने बडे पुत्र अमररत्त को राजदेय और लघु पुत्र भानुरत्त को युवराज पद दैय आप परिग्रह को त्याग कर तत्व ज्ञानमें मग्न भये पाषाण के थंभ तुल्य निश्चल होय ध्यान में तिष्ठे और लोभ कर रहित भये खान पान का त्याग कर शत्रु मित्र में समान बुद्धिधार निश्चल चित्तकर मौनव्रतके धारक समाधि मरणकर स्वर्गविषे उत्तम देवभये

अथानन्तर किन्नरनादनामा नगरीमें श्रीधर नामा विद्याधर राजा उसके विद्यानामा राणी उसके अरिजयानामा कन्या सो अमररत्त ने परणी और गन्धर्व गीत नगरमें सुरसन्निभ राजा उसके राणी गंधारी की पुत्री गंधर्वा सो भानुरत्तने परणी बडे भाई अमररत्तके दशपुत्र और देवांगना समान छेहपुत्री भई जिनके आभूषण गुणही हैं और लघु भाई भानुरत्तके भी दश पुत्र और छैपुत्रीभई सो उन पुत्रोंने अपने अपने नामसे नगर बसाये वे पुत्र शत्रुओंके जीतनेहारे पृथिवा के रत्तक हैं उन नगरों के नाम सुनो सन्ध्याकार १ सुदेव २ मनोहुलाद ३ मनोहर ४ हंसद्वीप ५ हरि ६ जोध ७ समुद्र ८ कांचन ९ अर्धस्वर्ग १० ए दशनगर तो अमररत्तके पुत्रों ने बसाये और आवर्त नगर १ विघट २ अंभोद ३ उतकट ४ स्फुट ५ रतुग्रह ६ तप ७ तोय ८ आवली ९ रत्नद्वीप १० यह दश नगर भानुरत्तके पुत्रने बसाए कैसे हैं उन नगर में नाना प्रकारके रत्नों से उद्योत होरहा है सुवर्णकी भीति तिनसे दैदीप्यमान वे नगर क्रीड़ा के अर्थी रात्तसोंके निवास होते भये बड़े २ विद्याधर देशांतरोंके बासी वहां आय महा उत्साहकर निवास करते भये

अथानन्तर पुत्रों को राज देय अमररत्त भानुरत्त यह दोनों भाई मुनि होय महा तप कर मोत्त पदको प्राप्त भए, इस भांति राजा मेघवाहन के बंशमें बड़े २ राजा भए वे न्यायवन्त प्रजा पालन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर सकलवस्तुसे विरक्त होय मुनिके व्रत धार कैएक मोक्षको गये कईएक स्वर्गमें देवता भये, उस वंशमें एक राजा रक्ष भए उनके राणी मनोवेगा उसके पुत्र राक्षस नामा राजा भये तिनके नामसे राक्षस बंश कहाया यह विद्याधर मनुष्यहैं राक्षस योनि नहीं, राजा राक्षसके राणी सुप्रभा उसके दो पुत्र भए आदित्यगति नामा बड़ा पुत्र और छोटा बृहत्कीर्ति, यह दोनों चन्द्र सूर्य समान अन्याय रूप अंधकार को दूर करते भये, उन पुत्रों को राज देय राजा राक्षस मुनि होय देवलोक गये राजा आदित्यगति राज्य करै और छोटा भाई युवराज हुवा बड़े भाई की स्त्री सदनपद्मा और छोटे भाईकी स्त्री पुष्पनखा थी आदित्यगति का पुत्र भीमप्रभ भया उसकी हजार राणी देवांगना समान और एकसौ आठ पुत्र भये जो पृथ्वी के स्थम्भ होते भए उनमें बड़े पुत्र को राज्य देय भीमप्रभ वैराग्य को प्राप्त होय परमपद को प्राप्त भए पूर्व राक्षसों के इन्द्र भीमसुभीम ने कृपा कर मेघवाहन को राक्षस द्वीप दिया था सो मेघवाहन के बंश में बड़े २ राजा राक्षस द्वीप के रक्षक भये भीमप्रभका बड़ा पुत्र पूजार्ह सो अपने पुत्र जितभास्कर को राज्य देय मुनि भये और जितभास्कर संपरकीति नामा पुत्र को राज्य देय मुनि भए और संपरकीर्ति सुग्रीव नामा पुत्र को राज्य देय मुनि भये सुग्रीव हरिग्रीव को राज्य देय उग्रतप कर देवलोक गया और हरिग्रीव श्रीग्रीव को राज्य देय वैराग्य को प्राप्त भये और श्रीग्रीव सुमुख नामा पुत्रको राज्य देय मुनि भये अपने बड़ोंहीका मार्ग अंगीकार किया और सुमुख भी सुव्यक्त को राज देय आप परम ऋषि भए और सुव्यक्त अमृतवेग को राज देय वैरागी भये और अमृतवेग भानुगत को राज देय यती भये और वे द्विचिन्तागत को राज देकर निश्चिन्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भये और चिन्तागति भी इंद्र को राज देय मुनींद्र भये इस भांति राचस बंश में अनेक राजा भये तथा राजा इंद्र के इंद्र प्रभु उसके मेघ उसके मृगीदमन उसके पवि उसके इंद्राजित् उसके भानुवर्मा उस के भानुसूर्य, समान तेजस्वी उस के मुरारि उसके त्रिजित, उसके भीम, उसके मोहन, उस के उद्धारक उस के रवि, उसके चाकार उसके बज्रमध्य, उसके प्रमोद, उसके सिंह, उसके विक्रम, उसके चामुराड, उसके मारण, उसके भीष्म, उसके द्रुपवाह, उसके अरिमर्दन, उसके निर्वाणभक्ति, उस के उग्रश्री उसके अर्हद्भक्त, उसके अनुत्तर, उसके गतभ्रम, उसके अनि, उसके चंड, उसके लंक, उसके मयूरवाहन, उसके महाबाहु, उस के मनोम्य, उसके भास्कर प्रभ, उसके ब्रहद्गति, उसके ब्रहदांकत और उसके आरसिंत्रास उसके चन्द्रावर्त, उस के महारव, उसके मेघध्वान, उसके ग्रहचोभ, उस के नचत्रदमन इस भांति कोटिक राजा भए बड़े विद्याधर महाबल मंडित महाकांतिके धारी पराक्रमी परदारा के त्यागी निज स्त्री ही में है संतोष जिनको लंका के स्वामी महा सुंदर अस्त्र शस्त्रके धारक स्वर्ग लोक के आये अनेक राजा भए उन्हों ने अपने पुत्रों को राज देय जगत से उदास होय जिन दीचा धारी केएक तो कर्म काट निर्वाण को गये जो तीन लोक का शिखर है और केएक राजा पुण्य के प्रभाव से प्रथम स्वर्ग को आदि देय सर्वार्थ सिद्धि तक प्राप्त भए इस भांति अनेक राजा व्यतीत भये लंका का अधिपति घनप्रभ उसकी राणी पद्माका पुत्र कीर्तिधवल प्रसिद्ध भया अनेक विद्याधर जिसके आज्ञाकारी जैसे स्वर्गमें इंद्र राज करैं तैसे लंका में कीर्त्तिधवल राज करता भया इस भांति पूर्व भवमें किया जो तप उसके बलसे यह जीव देवगति के तथा मनुष्य गतिके सुख भोग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ता है और सर्व त्याग कर महा व्रत धर आठ कर्म भस्मकर सिद्ध होय है और जे पापी जीव खोटे कर्म में आसक्त हैं ते इसी ही भव में लोक निन्द होय मरकर कुयोनिमें जाय हैं और अनेक प्रकार दुःख भोगवे हैं ऐसा जान पाप रूप अन्धकारके हरणेको सूर्य समान जो शुद्धोपयोग उसको भजो।

गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक राक्षस वंश और विद्याधरों के वंशका वृत्तान्त तो तुमसे कहा अब वानर वंशियोंका कथन सुन स्वर्ग समान जो विजियार्धगिरि उसकी दक्षिण श्रेणीमें मेघपुर नामा नगर ऊंचे महलों से शोभित है, वहां विद्याधरों का राजा अतींद्र पृथ्वी पर प्रसिद्ध भोग सम्पदा मे इन्द्र तुल्य उस के श्रीमती नामा राणी लक्ष्मी समान हुई जिसके मुख की चांदनी से सदा पूर्णमासी समान प्रकाश होय, तिन के श्री कराठ नामा पुत्र हुआ जो शास्त्र में प्रवीण जिस के नेत्र नाम को सुनकर विचक्षण पुरुष हर्षको प्राप्त होय उस के छोटी बहिन महा मनोहर देवी नामा हुई जिसके नेत्र काम के बाण ही हैं।

रत्नपुर नामा नगर अति सुन्दर वहां पुष्पोत्तर नाम राजा विद्याधर महा बलवान उस के पद्मा भा नाम पुत्री देवांगना समान और पद्मोत्तर नामा पुत्र महा गुणवान जिसके देखने से अति आनन्द होय सो राजा पुष्पोत्तर अपने पुत्र के निमित्त राजा अतींद्र की पुत्री देवी की बहुत बार याचना करी परन्तु श्रीकंठ भाई ने अपनी बहिन लंका के धनी कीर्तिधवल को दीनी और पद्मोत्तरको न दीनी यह बात सुन राजा पुष्पोतर ने अति कोप किया और कहा कि देखो हममें कुछ दोष नहीं दारिद्र दोष नहीं मेरा पुत्र कुरूप नहीं और हमारे उनके कुछ वैरभी नहीं तथापि मेरे पुत्रको श्रीकंठ

For Private and Personal Use Only

ने अपनी बहिन न परणाई यह क्या युक्त किया एक दिन श्रीकण्ठ चैत्यालयोंके बन्दनाके निमित्त सुमेरु पर्वत पर विमान में बैठ कर गए विमान पवन समान वेग वाला और अति मनोहर है. सो बन्दना कर आवते थे मार्ग में पुष्पोतर की पुत्री पद्माभा का राग सुना और वीणाका बजावन सुना उसका राग मन और श्रोत्रका हरणहारा है सो राग सुन मन मोहित भया गुरु समीप संगीत गृह में वीणा बजावतीं पद्माभा देखी उसके रूप समुद्र में उसका मन मग्न हो गया मनके काढिवे को असमर्थ भया उसकी ओर देखता रहा और यहभी अति रूपवान सो इसके देखने से वहभी मोहित भई यह दोनों परस्पर प्रेमसूत कर बन्धे सो उसकी मनशा जान श्रीकण्ठ उसको आकाश में ले चला तब परिवार के लोगों ने राजा पुष्पोतर पै पुकार करी कि तुम्हारी पुत्री को श्रीकण्ठ ले गया राजा पुष्पोतर के पुत्र को श्रीकंठने अपनी बाहिन न परणाई थी उससे वह क्रोधरूप थाही अब अपनी पुत्री के हरणे से अत्यन्त कोपित होकर सर्व सेनालेय श्रीकण्ठ के मारणे को पीछे लगा दांतों से होंठों को पीसता क्रोध से जिस के नेत्र लाल होरहे हैं ऐसे महाबली को आवते देख श्रीकंठ डरा और भाज कर अपने बहनेऊ लंका के धनी कीर्तिधवल की शरण आया सो समय पाय बड़ों के शरण जायाही करते हैं राजा कीर्तिधवल श्रीकंठ को देख अपना साला जान बहुत स्नेहसे मिला छाती सों लगाया बहुत सन्मान किया इनमें आपस में कुशल वार्ता होरही थी कि पुष्पोतर सेना सहित आकाश में आए कीर्तिधवल ने उनको दूर से देखा राजा पुष्पोत्तरके संग अनेक विद्याधरों के समूह महा तेजवान हैं खड्ग सेल धनुष बाण इत्यादि शस्त्रों के समूह से आकाश में तेज होय रहा है

ऐसे मायामई तुरङ्ग जिनका वायु के समान तेज है और काली घटा समान मायामई गज चलायमान है घंठा और सूंड जिनकी मायामई सिंह और बड़े २ बिमान उनकर मण्डित आकाश देखा उत्तर दिशा की ओर सेना के समूह देख राजा कीर्तिधवल ने क्रोध सहित हँसकर मन्त्रियों को युद्ध करनेकी आज्ञा दीनी तब श्रीकण्ठ लज्जा से नीचे होगए और श्रीकण्ठ ने कीर्तिधवल से कही कि मेरी स्त्री और मेरे कुटम्बकी तो रक्षा आपकरो और मैं आपके प्रताप से युद्धमें शत्रुओं को जीत आऊंगा तब कीर्तिधवल कहते भए कि यह बात तुमको कहनी अयुक्त है तुम सुख से तिष्ठो युद्ध करनेको हम बहुत हैं जो यह दुर्जन नरमी से शान्त होय तो भलाही है नहींतो इनको मृत्यु के मुखमें देखोगे ऐसा कह अपने स्त्री के भाईको सुखसे अपने महलमें राख पुष्पोत्तरके निकट बड़ी बुद्धि और बड़े वय (उमर) के धारक दूत भेजे वय दूत जाय पुष्पोत्तर सो कहते भए कि हमारे मुखसे तुमको राजा कीर्तिधवल बहुत आदर से कहैं है कि तुम बड़े कुल में उपजे हो तुम्हारी चेष्टा निर्मलहै तुम सर्व शास्त्रके वेता हो जगत् में प्रसिद्ध हो और सबमें वयकर बड़े हो तुमने जो मर्यादाकी रीति देखी है सो किसीने कानों से सुनी नहीं यह श्रीकण्ठ चन्द्रमाकी किरण समान निर्मल कुल में उपजा है, और धनवान है, विनयवान है, सुन्दर है, सर्व कलामें निपुण है, यह कन्या ऐसेही बरको देने योग्य है कन्या के और इसके रूप और कुल समान हैं इसलिये तुम्हारी हमारी सेनाका क्षय कौन अर्थ करावना, यह तो कन्याओं का स्वभावही है कि पराए गृहका सेवन करैं दूत जब तक यह बात कहही रहेथे कि पद्माभा की भेजी सखी पुष्पोत्तर के निकट आई और कहती भई कि तुम्हारी पुत्री ने तुम्हारे चरणारविन्द को नमस्कार कर वीनती करी है कि मैं तो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लज्जासे तुम्हारे समीप कहनेको नहीं आई इसलिये सखीको पठाई है हे पिता इस श्रीकण्ठका अल्प भी अपराध नहीं में कर्मानुभव कर इसके संग आईहूं जो बड़े कुलमें उपजी हैं स्त्री हैं तिनके एकही बर होता है इसलिये इसके सिवाय मेर और पुरुषका त्याग है इस प्रकार सखी ने वीनती करी तब राजा सन्चित होय रहे मनमें विचारी कि मैं सर्ब बातोंमें समर्थहूं युद्धमें लंकाके धनीको जीत श्रीकंठको बांधकर लेजाऊं परन्तु मेरी कन्याही ने इसको बरा तो मैं इसमें क्या करूं ऐसा जान युद्ध न किया और जो कीर्तिधवलके दूत आये थे उनको सनमान कर विदा किया, और जो पुत्रीकी सखी आईथी उसकोभी सन्मानकर विदा करी वे हर्षकर भरेलंका आये और राजा पुष्पोत्तर सर्ब अर्थके बेत्ता पुत्री की वीनतीसे श्रीकण्ठ से क्रोध तज अपने स्थानक को गए ॥

अथानन्तर मार्गशिर शुदी पडवा के दिन श्रीकण्ठ और पद्माभा का विवाह हुवा और कीर्तिधवल ने श्रीकण्ठ सो कहा कि तुम्हारे बैरी विजयार्धमें बहुत हैं इसलिये तुम यहांही समुद्र के मध्य में जो द्वीप है वहां तिष्ठो तुम्हारे मनको जो स्थानक रुचे सो लेवो मेरा मन तुमको छोड़ नहीं सके है और तुमभी मेरी प्रीति के बन्धन तुड़ाय कैसे जावोगे ऐसे श्रीकण्ठ सो कहकर अपने आनन्द नामा मन्त्री से कहा कि तुम महाबुद्धिमान् हो और हमारे दादे के मुह अगिले हो तुमसे सार असार कुछ छाना नहीं है श्रीकण्ठ योग्य जो स्थानक होय सो बतावो तब आनन्द कहते भए कि महाराज आपके सबही स्थानक मनोहर हैं तथापि आपही देखकर जोदृष्टि में रुचे सो लेवें समुद्र के मध्य में बहुत द्वीपहैं कल्पबृश समान बृक्षों से मण्डित जहां नाना प्रकारके रत्नों कर शोभित बडे २ पहाड हैं जहां देव क्रीड़ा करे हैं तिन द्वीपों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में महा रमणीक नगर हैं जहां स्वर्ण रत्नोंके महल हैं सो उनके नाम सुनो संध्याकार सुवेल कांचन हरिपुर जोधन जलधिध्वान हंसद्वीप भरत्तम अर्घस्वर्ग कूटावर्त विघट रोधन अमल कांत स्फुटतट रत्नद्वीप तोयावली सर अलंघन नभोभा क्षेम इत्यादि मनोज्ञ स्थानक हैं जहां देवभी उपद्रव न कर सकें यहांसे उत्तर भाग तीनसौ योजन समुद्र के मध्य वानरद्वीप है जो पृथिवी में प्रसिद्ध है जहां अवांतरद्वीप बहुत रमणीक हैं कैएकतो सूर्य कांति मणियोंकी ज्योतिसे देदीप्यमानहैं और कैएक हरित मणियोंकी कांतिसे ऐसे शोभे हैं मानो उगते हरे तृणों से भूमिव्याप्त होयरहीहै और कईएक श्याम इन्द्र नीलमणिकी कांतिके समूह से ऐसे शोभे हैं मानो सूर्य के भयसे अन्धकार वहां शरण आकर रहाहै और कहीं लाल पद्मराग मणियों के समूह से मानो रक्त कमलोंका बनही शोभे है जहां ऐसी सुगन्ध पवन चले है कि आकाश में उड़ते पक्षीभी सुगन्ध से मग्न होय जाय हैं और वहां वृक्षोंपर आय बैठे हैं और स्फुटिक मणिके मध्य में जो पद्मराग मणि मिलाहै उन से सरोवरमें पङ्कही कमल जाने जायहैं उन मणियोंकी ज्योतिसे कमल के रङ्ग न जाने जाय हैं जहां फूलोंकी बाससे पक्षी उन्मत्त भए ऐसे उन्मत्त शब्दकरेंहैं मानो समीप के द्वीप से अनुराग भरी बात करे हैं जहां औषधियोंकी प्रभा के समूहसे अन्धकार दूर होय है इसलिये अंधेर पक्षमें भी उद्योतही रहे है जहां फल पुष्पों से मण्डित वृक्षों का आकार छत्रसमान है जिनके बड़े २ डाले हैं उनपर पक्षी मिष्ट शब्द कर रहे हैं जहां विना बाहे धान आपसेही उगे हैं वह धान वीर्य और कांतिको विस्तीरणे वाले हैं मंद पवन से हिलते हुवे शोभे हैं उनसे पृथिवी मानों कंचुक (चोला) पहरे है जहां नीलकमल फूल रहे हैं जिनपर भ्रमरोंके समूह गुंजार करे हैं मानो सरोवरही नेत्रोंसे पृथिवी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का बिलास देखे हैं नील कमल तो सरोवरनी के नेत्र भए और भ्रमर भौंहें भए जहां पौढ़े और सांठोंकी विस्तीर्ण बाड़ी हैं वह पवन के हालने से शब्द करे हैं ऐसा सुन्दर बानरद्वीप है उसके मध्यमें किहकुन्दा नामा पर्वत है वह पर्वत रत्न और स्वर्ण की शिला के समूह से शोभायमान है जैसा यह त्रिकूटाचल मनोज्ञ है तैसाही तिहकुन्द पर्वत मनोज्ञ है अपने शिखरों से दिशारूपी कान्ताको स्पर्श करे हैं आनन्द मन्त्री के ऐसे वचन सुनकर राजा कीर्तिधवल बहुत आनन्द रूप भए बानरद्वीप श्रीकण्ठ को दिया तब चैत्र के प्रथम दिन श्रीकण्ठ परिवार सहित बानरद्वीप में गये मार्ग में पृथिवीकी शोभा देखते चले जायहैं वह पृथिवी नीलमणिकी ज्योति से आकाश समान शोभे है और महा ग्राहों के समूह से संयुक्त समुद्र को देख आश्चर्यको प्राप्त भए वानरद्वीप जाय पहुंचे बानरद्वीप मानों दूसरा स्वर्गही है अपने नीझरनों के शब्द से मानों राजा श्रीकण्ठ को बुलावेही है नी झरनेके छांटे आकाशको उछले हैं सो मानो राजा के आनेपर अति हर्षको प्राप्तभये आनन्दकर हंसे हैं नाना प्रकार की मणियों से उपजा जो कान्ति का सुन्दर समूह उससे मानो तोरण के समूह ऊंचे चढ़ रहे हैं राजा बानरद्वीप में उतरे और सर्व ओर चौगिरद अपनी नील कमल समान दृष्टि सर्वत्र विस्तारी छुहारे आंवले कैथ अगर चन्दन पीपरली सहींजणां और कदम्ब आंबचा रोली केला दाड़िम सुपारी इलायची लवंग बौलश्री और सर्व जाति के मेवों से युक्त नाना प्रकारके वृक्षों से द्वीप शोभायमान देखा ऐसी मनोहर भूमि देखी जिसके देखतेहुये और ठौर दृष्टि न जाय जहांवृक्ष सरल और विस्तीर्ण ऊपर छत्रसे बनरहे हैं सघन सुन्दर पल्लव और शाखा फूलनके समूहसे शोभे हैं और महा रसीले स्वादिष्ट मिष्ट फलों से नम्रीभत होयरहे हैं और वृक्ष अति ऊंचे भी नहीं अति नीचेभी

For Private and Personal Use Only

नहीं मानों कल्पवृक्ष के समान शोभे हैं जहां वे फूलों के गुच्छे बन रही हैं जिन पर भ्रमर गुंजार करे हैं मानो यह बेलतो स्त्री है उन के जो पल्लव हैं सो हाथोंकी हथेली हैं और फलों के गुच्छे कुच हैं और भ्रमर नेत्र हैं वृक्षों से लग रहे हैं और ऐसही तो सुन्दर पक्षी बोले हैं और ऐसेही मनोहर भ्रमगा गुंजार करे हैं मानो परस्पर आलाप करे हैं जहां कैएक देश तो स्वर्ग समान कांतिको धरे हैं कैएक कमल समान कैएक वैडूर्य मणि समान है वे देश नाना प्रकार के वृक्षों से मंडित हैं जिनको देख कर स्वर्ग भूमि भी नहीं रुचे है जहां देव क्रीड़ा करे हैं जहां हंस सारिस सूवा, मैना, कबूतर, कमेरी इत्यादि अनेक जाति के पक्षी क्रीड़ा करें हैं जहां जीवों को किसी प्रकार की बाधा नहीं नाना प्रकार के वृक्षों की छाया के मंडप रत्न स्वर्ण के अनेक निवास पुष्पों की अति सुगंधी ऐसे उपबन में सुन्दर शिला के ऊपर राजा जाय बिराजे और सेनाभी सकल बनमें उतरी हंसों, सारिसों मयूरोंके नाना प्रकार के शब्द सुने और फल फूलों की शोभा देखी सरोवरों में मीन केल करते देखे वृक्षों के फूल गिरें हैं और पक्षियों के शब्द होय रहे हैं सो मानों वह बन राजा के आवने से फूलों की वर्षा करे हैं और जयजयकार शब्द करें हैं नाना प्रकार के रत्नों से मंडित पृथ्वी मंडल की शोभा देख देख विद्याधरों का चित बहुत सुखी हुआ और नन्दनवन सारिखा वह बन उस में राजा श्रीकंठ ने क्रीड़ा करते बहुत बानर देखे जिनकी अनेक प्रकार की चेष्टा हैं राजा देखकर मनमें चितवने लगा कि तिर्यंच योनि के यह प्राणी मनुष्य समान लीला करें हैं जिनके हाथ पग सर्व आकार मनुष्य का सा है सो इनकी चेष्टा देख राजा थकित होय रहे निकटवर्ती पुरुषोंसे कहा कि इनको मेरे समीप

लाओ सो राजा की आज्ञा से कैएक बानरों को लाए राजा ने उनको बहुत प्रीतसों राखे और नृत्य करणा सिखाया और उनके सुफेद दांत दाड़िमके फूलों सों रंग रंग तमाशा देखे और उनके मुखमें सोने के तार लगाय लगाय कौतूहल करे वे आपस में परस्पर जूं काढ़े तिनके तमाशे देखे और वे आपस में स्नेह कर वा कलह करें तिनके तमाशे देखे राजा ने ते कपि पुरुषों को रक्षा निमित्त सौंपे और मीठे मीठे भोजन से उनको पोखे उन बानरों को साथ लेकर किहकूं पर्वत पर चढ़े राजा का-चित्त सुन्दर वृक्ष सुन्दर वेलि पानीके नीझरनोंसे हरा गया तहां पर्वतके ऊपर विषमतारहित विस्तीर्ण भूमि देखी वहां किहकुं नामा नगर बसाया जिसमें वैरियोंका मन भी न प्रवेशकर सके चौदह योजन लंबा और चौदह योजन चौड़ा और जो परिक्रमा करिये तो बियालीस योजन कछुइक अधिक होय जाके मणियों के कोट रत्नों के दरवाजे वा रत्नों के महल रत्नों को कोट इतना ऊंचा है कि अपने शिखर से मानों आकाश से ही लग रहा है और दरवाजे ऊंचे मणियों से ऐसे शोभे हैं मानों यह अपनी ज्योति से श्रीभूत हो रहे हैं घरों की देहली पद्मराग मणिकी है सो अत्यन्त लाल हैं मानों यह नगरी नारी स्वरूप है सो तांबूल कर अपने अधर (होंठ) लालकर रही है और दरवाजे मोतियों की माला कर युक्त हैं सो मानों समस्त लोक की सम्पदाको हंसे हैं और महलों के शिखरों पर चन्द्रकांत मणि लग रहा हैं जिससे रात्रि में ऐसा भासे हैं मानों अन्धेरी रात्रि में चन्द्र उग रहा है और नाना प्रकार के रत्नों की प्रभा की पंक्ति से मानों ऊंचे तोरण चढ़ रहे हैं वहां घरोंकी पंक्ति विद्याधरों की बनाई हुई बहुत शोभे हैं घरों के चौक मणियों के हैं और नगर के राज मार्ग बाजार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहुत सीधे हैं उनमें वक्रता नहीं, अति विस्तीर्ण हैं मानों रत्नों के सागर ही हैं सागर जल रूप हैं यह स्थल रूप हैं और मंदिरों के ऊपर लोगोंने कबूतरों के निवास निमित्त नील मणियों के स्थान कर राखे हैं सो कैसे शोभे हैं मानों रत्नोंके तेजसे अन्धकारको नगरसे काढ़ दियाहै सो शरण आयं कर समीप पड़ा है इत्यादि नगर का वर्णन कहां तक करिए इंद्र के नगर समान वह नगर जिस में राजा श्रीकंठ पद्माभा राणी सहित जैसे स्वर्ग विषे शची सहित सुरेश रमेहैं तैसे बहुत काल रमते भए। जे बस्तु भद्रशाल बनमें तथा सौमनस बनमें तथा नन्दनमें न पाइये वह राजाके बनमें पाई जावें एक दिन राजा महल ऊपर विराज रहेथे अष्टानिकाके दिनोंमें इन्द्र चतुरनिकायके देवताओं सहित नन्दीश्वर द्वीपको जाते देखे और देवोंके मुकटोंकी प्रभाके समूहसे आकाश को अनेक रंग रूप ज्योति सहित देखा और बाजा बजाने वालों के समूह से दशों दिशा शब्द रूप देखी। किसी को किसीका शब्द सुनाई न देवे, कैयक देवमाया मई हंसोंपर तथा तुरंगोंपर तथा हथियारों पर और अनेक प्रकार वाहनो पर चढ़े जाते देख देवों के शरीर की सुगंधता से दशो दिशा व्याप्त होय गई तब राजा यह अद्भुत चरित्र देख मनमें विचारा कि नन्दीश्वर द्वीपको देवता जाय हैं। यह राजा भी अपने विद्याधरों सहित नन्दीश्वर द्वीपको जानेकी इच्छा करते भये बिना विवेक बिमानपर चढ़ कर राणी सहित आकाशके पन्थ से चले परन्तु मानुषोतर के आगे इनका बिमान न चल सका देवता चले गए। यह अटक रहे तब राजा ने बहुत विलाप किया मनका उत्साह भंग हो गया कांति औरही हो गई मन में विचारे हैं कि हाय बड़ा कष्टहै हम हीन शक्तिके धनी विद्याधर मनुष्य

For Private and Personal Use Only

अभिमान को धरे सो धिक्कार है हमको। मेरे मनमें यह थी कि नन्दीश्वर द्वीपमें भगवान के अकृत्रिम चैत्यालय हैं उनका मैं भाव सहित दर्शन करूंगा और महा मनोहर नाना प्रकारके पुष्प धूप, गन्ध इत्यादि अष्टद्रव्यों से पूजा करूंगा बारम्बार धरती पर मस्तक लगाय नमस्कार करूंगा इत्यादि मनोरथ किये हुए थे वे पूर्वोपार्जित अशुभ कर्म से मेरे मन्द भागी के भाग्य में न भए मैंने आगे अनेक बार यह बात सुनी थी कि मानुषोत्तर पर्वत को उल्लंघ कर मनुष्य आगे न जाय हैं तथापि अत्यन्त भक्ति रागकर यह बात भूल गया अब ऐसे कर्म करूं जो अन्य जन्ममें नन्दीश्वर द्वीप जाने की मेरी शक्ति हो। यह निश्चय कर वज्रकंठ नामा पुत्रको राज्य देय सर्व परिग्रहको त्याग कर राजा श्रीकंठ मुनि भए। एक दिन वज्रकंठ ने अपने पिताके पूर्व भव पूछनेको अभिलाष किया तब वृद्ध पुरुष वज्रकंठ को कहते भए कि हमको मुनियों ने उनके पूर्व भव ऐसे कहे थे कि पूर्व भव में दो भाई वणिक थे उनमें प्रीति बहुत थी स्त्रियों ने वे जुदे किए उन में छोटा भाई दरिद्री और बड़ा धनवान था सो बड़ा भाई सेठकी संगाति से श्रावक भया और छोटा भाई कुव्यसनी दुःख सों दिन पूरे करे बड़े भाईने छोटे भाईकी यह दशा देख बहुत धन दिया और भाईको उपदेश देय व्रत लिवाए और आप स्त्रीको त्यागकर मुनि होय समाधि मरणकर इंद्र भए और छोटा भाई शांतपरिणामी होय शरीर छोड़ देवहुवा देवसे चयकर श्रीकण्ठ भया बड़े भाईका जीव इन्द्र भयाथा सो छोटे भाईके स्नेहसे अपना स्वरूप दिखावता सन्ता नन्दीश्वर द्वीप गया सो इन्द्रको देख राजा श्रीकण्ठको जाती स्मरण हुवा वह वैरागी भए यह अपने पिताका व्याख्यानसुन राजा वज्रकण्ठ इन्द्रायुधप्रभ पुत्रको राज्यदेय मुनिभए औरइन्द्रायुधप्रभ

श्री इन्द्रमति पत्रको राज्य देय मुनि भए तिनके मेरु मेरु के मन्दिर उनके समीरणगति तिनके रविप्रभ तिनके अमरप्रभ पुत्र हुवा उसने लंकाके धनी की बेटी गुणवती परणी, गुणवती राजा अमरप्रभ के महल में अनेक भांति के चरित्राम देखती भई कहीं तो शुभ सरोवर देखे जिनमें कमल फूलरहे हैं और भ्रमर गुञ्जार करें हैं कहीं नील कमल फूल रहे हैं हंस के युगल क्रीडा कर रहेहैं जिनकी चोंच में कमलके तंतुहैं और क्रौंच सारस इत्यादि अनेक पक्षियों के चित्राम देखे सो प्रसन्न भई और एक ठौर पञ्च प्रकारके रत्नों के चूर्णसे बानरोंके स्वरूप देखे वे विद्याधरों ने चितेर हैं, राणी बानरोंके चित्रामदेख भयभीत होय कांपने लगी, रोमांच होय आए पसेवकी बूंदोंसे माथेका तिलक बिगड़गया, और आंखों के तारे फिरनेलगे राजा अमरप्रभ यह वृत्तान्त देखा घरके चाकरों से बहुत खिझे कि मेरे विवाह में ये चित्राम किसने कराए मेरी प्यारी राणी इनको देख डरी तब बड़े लोगों ने अरज करी कि महाराज इसमें किसीका भी अपराध नहीं, आपने कही जो यह चित्राम कराणेहारेने हमको विपरीत भाव दिखाया सो ऐसा कौनहै जो आप की आज्ञा सिवाय काम करे सबके जीवनमूल आप हो, आप प्रसन्न होयकर हमारी विनती सुनो आगे तुम्हारे वंशमें पृथिवी पर प्रसिद्ध राजा श्रीकण्ठ भए जिनने यह स्वर्ग समान नगर बसाया और नाना प्रकारके कौतूहलका धारणेवाला जो यह देश उसके वह मूलकारण ऐसे होतेभए जैसे कर्मोंका मूलकारण रागादिक प्रपंच,बनके मध्य लतागृहमें सुखसों तिष्ठीहुई किन्नरी जिन के गुण गावें हैं और किन्नर गावें हैं, इन्द्र समान जिनकी शक्ति थी ऐसे वे राजा इन्होंने अपनी स्थिर प्रकृति से लक्ष्मी की चंचलता से उपजा जो अपयश सो दूर किया ॥ राजा श्रीकण्ठ इन बानरों को देखकर आश्चर्य को प्राप्तभए और इन

सहित रमें मीठे २ भोजन इनको दिये और इनके चित्राम कढ़ाए पीछे उनके वंशमें जो राजा भए उनने मङ्गलीक कार्यों में इनके चित्राम बढ़ाए और बानरों से बहुत प्रीति राखी इसलिये पूर्व रीति प्रमाण अब भी लिखे हैं ऐसा कहा तब राजा क्रोध तज प्रसन्न होय आज्ञा करतेभए कि हमारे बड़ोंने मङ्गल कार्य में इनके चित्राम लिखाए तो अब भूमिमे मत डारो जहां मनुष्योंके पाव लगें मैं इनको मुकटपर राखूंगा और ध्वजावों में इनके चिन्ह करावो और महलों के शिखर तथा छत्रों के शिखर पर इन के चिन्ह करावो यह आज्ञा मन्त्रियों को करी सो मन्त्रियों ने उसही भान्ति किया राजाने गुणवती राणी सहित परम सुख भोगते विजयार्धकी दोऊ श्रेणी के जीतने का मन किया बड़ी चतुरङ्ग सेना लेकर विजियार्ध गये, राजा की ध्वजाओं में और मुकटों में कपियों के चिन्ह हैं राजा ने विजियार्ध जायकर दोऊ श्रेणीजीत कर सब राजा वश किये सर्व देश अपनी आज्ञामें किये किसीका भी धन न लिया जो बडे पुरुष हैं तिन की वृती यही है कि राजाओंको नवावें अपनी आज्ञा में करें किसी का धन न हरें सो राजा सब विद्या-धरोंको आज्ञा में कर पीछे किहकूपुर आए विजियार्धके बड़े २ राजा लार आए सर्व विद्यधरों का अधिपति होकर घने दिन तक राज्यकिया लक्ष्मी चंचल थी सो नीतिकी वेड़ी डाल निश्चल करी, तिनके पुत्र कपिकेतु भए जिनके श्रीप्रभा राणी बहुत गुणकी धारणहारी ते राजा कपिकेतु अपने पुत्र विक्रम संपन्न को राज्य देय वैरागी भए और विक्रम सम्पन्न प्रतिवल पुत्रको राज्य देय बैरागी भए यह राज्य लक्ष्मी विषकी वेल के समान जानो बडे पुरुषों के पूर्वोपार्जित पुण्यके प्रभावकर यह लक्ष्मी विनाही यत्न मिलै है परन्तु उनके लक्ष्मी में विशेष प्रीति नहीं लक्ष्मी को तजते खेद नहीं होय है किसी पुण्य के प्रभाव

राज्य लक्ष्मी पाय देवों के सुख भाग फिर बैराग्य को प्राप्त होय कर परमपद को प्राप्त होय हैं मोक्ष का अविनाशी सुख उपकरणादि सामग्री के आधीन नहीं, निरन्तर आत्माधीन है, वह महासुख अंतर रहित है अविनश्वरहे ऐसे सुखको कौन न बांछैं राजा प्रतिबल के गगनानंद पुत्रभए उसके खेचरानन्द उसके गिरिनन्द इसभांति बानरवंशियों के वंशमें अनेक राजा भए वे राज्य तज वैराग्यधर स्वर्ग मोक्षको प्राप्त भए इस वंशके समस्त राजाओंके नाम और प्राक्रम कौन कहसके जिसका जैसा लक्षण होय सो तैसाही कहावे सेवाकरे सो सेवक कहावे धनुषधारै सो धनुषधारी कहावै परकी पीड़ा टालै सो शरणागति प्रतिपाल होय क्षत्री कहावे ब्रह्मचर्य पाले सो ब्राह्मण कहावे जो राजा राज्य तजकर मुनि होय सो मुनि कहावे श्रम कहिये तपधारे सो श्रमण कहावे यह बात प्रगटही है लाठीराखे सो लाठीवाला कहावे तैसे यह विद्याधर ध्वजावों पर बानरों के चिन्ह राखते भएइसलिये बानरवंशी कहाए क्योंकि संस्कृतमें वंश बांसको कहते हैं और कुलकोभी कहते हैं परन्तु यहांवंश शब्द बांस का वाचक है। बानरों के चिन्हकर युक्त वंश बांस वाली जो ध्वजा सो भई बानर वंश उस ध्वजावाले यह राजा बानरवंशीकहलाए भगवान् श्रीबासपूज्य के समय राजा अमरप्रभ भए उनने बानरों के चिन्ह मुकुट ध्वजामें कराए तब इनके कुल में यह रीति चली आई इस भान्ति संक्षेप से बानरवंशीयों की उत्पति कही इसकुलमें महोदधि नामा राजाभए तिन के विद्युत्प्रकाशा नामा राणी भई वह राणी पतीव्रता स्त्रियों के गुणकी निधान है जिसने अपने विनय और अंगसे पति का मन प्रसन्न किया है राजाके सुन्दर सैकड़ों रानी हैं तिनकै यह राणी शिरोभाग्य है महा सौभाग्यवती रूपवती ज्ञानवती है उस राजा के महा प्राक्रमी एकसौ आठ पुत्र भए तिनको राज्य

का भारदे राजा महासुख भोगते भए मुनि सुव्रतनाथ के समय में बानरवंशीयों में यह राजा महोदधि भये और लंका में विद्युतकेश भये। विद्युतकेश के और महोदधि के परम प्रीति भई ये दोऊ सकल प्राणीयों के प्यारे और आपस में एक चित्त देह न्यारी भई तो कहा। विद्युतकेश मुनि भये, यह वृत्तान्त सुन महोदधिभी वैरागी भए। यह कथा सुन राजा श्रेणिकने गौतम स्वामी से पूछाकि हे स्वामी राजा विद्युतकेश किसकारणसेवैरागी भए तबगौतम स्वामीनेकहाकि एकदिनविद्युत केश प्रमद नामा उद्यानमें क्रीड़ा करनेको गये जहां क्रीड़ाके निवास अति सुंदरहैं निर्मलजलके भरेसरो वर तिनमें कमल फूल रहेहैं। सरोवरमें नाव डार राखी हैं बनमें ठौर ठौर हिंडोले हैं सुंदर वृच्छ सुंदर वेल और क्रीडा करनेके लिये सुवर्णके पर्वत जिनके रत्नोंके सिवाण वृच्छ मनोज्ञ फल फूलोंसे मंडित जिनकी पल्लवमें लता अति शोभैहैं और लताओंसे लपटि रहेहैं ऐसे बनमें राजा विद्युतकेश राणियों के समूहमें क्रीड़ा करतेथे वह राणी मनकी हरणहारी पुष्पादिकके चूंटनेमें आसक्तहै जिनके पल्लव समान कोमल सुगंध हस्त मुखकी सुगंधसे भ्रमर जिनपर भ्रमेहैं क्रीड़ाके समय राणी श्रीचन्द्राके कुच एक बानरने नखोंसे बिदारे तब राणी खेदखिन्न भई रुधिर आय गया राजाने राणीको दिलासा देय कर अज्ञान भावसे बानरको बाणसे बांधा बानर घायल होय एक गगनचारण महा मुनिके पास जाय पड़ा वे दयालु बानर को कांपता देख दयाकर पंच नमोकार मन्त्र देते भए सो बानर मरकर उदधि कुमार जातिका भवन बासी देव उपजा यहां बनमें बानरके मरण पीछे राजाके लोक और बानरों को मार रहेथे सो उदधिकुमारने अवधिसे बिचारकर बानरोंको मरते जान मायामई बानरोंकी सेना बनाई

यह बानर ऐसे बने जिनकी दाढ़ बिकराल बदन बिकराल भौंह बिकराल सिंदूर सारिखालाल मुखसों डराने शब्दको करते हुवे आय कैएक हाथमें पर्वत धरे कैएक मूलसे उपारे वृक्षोंको धरे कैएक हाथसे धरती को कूटते हुवे कईएक आकाशमें उछलते हुवे क्रोधके भारकर रौद्रहै अंग जिनका उन्होंने राजा को घेरा कहते भए अरे दुराचारी सम्हार तेरी मृत्यु आईहै तू बानरोंको मारकर अब किसकी शरण जायगा तब विद्युतकेश डरा और जाना कि यह बानरोंका बल नाहीं देवमाया है तब देहकी आशा छोड़ महाभिष्ट वाणी करके बिनती करता भया कि महाराज आज्ञा करो आप कौन हो महादेदीप्यमान प्रचंड शरीर जिनके यह वानरोंकी शक्ति नाहीं आप देव हैं तब राजाको अति विनयवान देख महादधि कुमार बोले। हे राजा। बानर पशु जाति जिनका स्वभावही चंचलहै उनको तैंने स्त्रीके अपराध से हते सो मैं साधुके प्रसादसे देव भया मेरी विभूति तू देख, राजा कांपने लगा हृदय विषय भय उपजा रोमांच होय आए तब महादधि कुमारने कही तू मत डर तब इसने कहा कि जो आप आज्ञा करो सो करूं। तब देव इसको गुरुके निकट ले गया यह देव और राजा यह दोनों मुनिकी प्रदक्षिणा देय नमस्कार कर जाय बैठे। देवने मुनिसे कही कि मैं बानर था सो आपके प्रसादसे देवता भया और राजा विद्युतकेशने मुनिसों पूछा कि मुझे क्या कर्तव्यहै मेरा कल्याण किस तरह होय। तब मुनि चार ज्ञानके धारक तपोधन कहते भए कि हमारे गुरु निकटही हैं उनके समीप चलो अनादि काल का यही धर्म है कि गुरुओं के निकट जाय धर्म सुनिये आचार्यके होते सन्ते जो उनके निकट न जाय और शिष्यही धर्मोपदेश देय तो वह शिष्य नहीं कुमार्गी है आचारसे भ्रष्ट है ऐसा तपोधनने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहा तब देव और विद्याधर चित्तमें चिंतवते भये कि ऐसे महा पुरुष हैं वे भी गुरु आज्ञा बिना उपदेश नहीं करे हैं अहो तपका महातम्य अति अधिक है। मुनिकी आज्ञासे वह देव और विद्याधर मुनि के लार मुनिके गुरुपै गये वहां जायकर तीन प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर गुरुके निकट बैठे महा मुनि की मूर्ति देख देव और विद्याधर आश्चर्यको प्राप्त भये महा मुनि की मूर्ति तपकी राशिकर उपजी जो दीप्ति उसकर देदीप्यमान है देखकर नेत्र कमल फूल गये महा विनयवान होय देव और विद्याधर धर्म का स्वरूप पूछते भये ॥

मुनि जिनका मन प्राणियोंके हितमें सावधान है और रागादिक जो संसारके कारण हैं उनके प्रसंगसे दूरहैं जैसे मेघ गंभीर ध्वनिकर गर्जे और बरसे तैसे महा गंभीर ध्वनिसे जगतके कल्याणके निमित्त परमधर्म रूप अमृत बरसाते भये जब मुनि व्याख्यान करने लगे तब मेघ जैसा नाद जान लताओंके मंडपमें जो मयूर तिष्ठेथे वे नृत्य करते भये मुनि कहते भये अहो देव विद्याधरो तुम चित्त लगाय सुनो तीन भवनको आनन्द करणहारे श्रीजिनराजने जो धर्मका स्वरूप कहाहै सो मैं तुमको कहूंहूं केएक जो प्राणी नीच बुद्धिहैं विचार रहित जड चित्तहैं वे अधर्मही को धर्म जान सेवतेहैं जो मार्गको न जानें सो घने कालमें भी मन बांछित स्थानकको न पहुंचे मन्दमति मिथ्या दृष्टि विषयाभिलाषी जीव हिंसासे उपजा जो अधर्म उसको धर्म जान सेवेहैं वे नरक निगोदके दुःख भोगे हैं जे अज्ञानी खोटे दृष्टान्तोंके समूहसे भरे महापापकेपुंज मिथ्या ग्रन्थोंके अर्थ तिनकर धर्म जान प्राणघात करे हैं वे अनंत संसार भ्रमणकरे हैं जो अधर्म चर्चा करके वृथा बकवाद करे हैं ते दंडोंसे आ-

For Private and Personal Use Only

काशको कूटे है सो कैसे कूटा जाय जो कदाचित् मिथ्या दृष्टियों के कायक्लेशादि तप होय और शब्द ज्ञान भी होय तो भी मुक्ति का कारण नहीं सम्यक दर्शन बिना जो जानपना है सो ज्ञान नहीं है और जो आचारण है सो कुचारित्र है मिथ्या दृष्टियोंका जो तप व्रत है सो पाषाण बराबर है और ज्ञानी पुरुषों के जो तप व्रत हैं सो वैडूर्य मणिसमान हैं धर्मका मूल जीव दया है और दयाका मूल कोमल परिणाम है कोमल परिणाम दुष्टों के कैसे होय और परिग्रह धारी पुरुषों को आरम्भ करनेसे हिंसा अवश्य होय है इस लिये दयाके निमित्त परिग्रहका आरम्भ तजना चाहिये तथा सत्य बचन धर्म है परन्तु जिस सत्यसे पर जीवोंको पीडा होय सो सत्य नहीं झूठही है और चोरी का त्याग करना परनारी तजनी परिग्रह का प्रमाण करना सन्तोष व्रत धरना इंद्रियोंके विषय निवारने कषाय चीण करने देव गुरु धर्मका विनय करना निरन्तर ज्ञानका उपयोग राखना यह सम्यक दृष्टि श्रावकों के व्रत तुझे कहे अबघरके त्यागी मुनियोंके धर्म सुनो सर्व आरंभ का परित्याग दश लचण धर्मका धारण सम्यक दर्शन कर युक्त महा ज्ञान वैराग्यरूप यतीका मार्ग है महा मुनि पंच महाव्रत रूप हाथीके कांधे चढ़े हैं और तीन गुप्ति रूप दृढ़बकतर पहरेहैं और पांच सुमति रूप पयादों से संयुक्त हैं नाना प्रकार तपरूप तीक्ष्ण शस्त्रों से मंडित हैं और चित्तके आनन्द करण हारे हैं ऐसे दिगम्बर मुनिराज काल रूप बैरीको जीतै हैं वह काल रूप बैरी मोह रूप मस्त हाथी पर चढ़ा है और कषाय रूप सामन्तों से मंडित है यतीका धर्म परमनिर्वाणका कारण है महा मंगल रूप है उत्तम पुरुषों के सेवने योग्य है और श्रावक का धर्म तो साचात् स्वर्ग का कारण है और

परम्पराय मोक्ष का कारण है स्वर्ग में देवों के समूह के मध्य तिष्ठता मन वांछित इन्द्रियोंके सुखको भोगे है और मुनि के धर्म से कर्म काट मोक्ष के अतेन्द्रिय सुखको पावे है अतेन्द्रिय सुख सर्व बाधा रहित अनुपम है जिसका अन्त नहीं, अविनाशी है और श्रावकके व्रतसे स्वर्ग जाय तहांसे चय मनुष्य होय मुनिराज के व्रत धर परमपदको पावै है और मिथ्यादृष्टि जीव कदाचित तपकर स्वर्ग जाय तो चयकर एकेन्द्रियादिक योनि के विषे आय प्राप्त होय है अनन्त संसार भ्रमण करै है इसलिये जैनही परम धर्म है और जैनही परम तपहै जैनही उत्कृष्ट मत है जिनराज के वचनही सार हैं जिनशासन के मार्गसे जो जीव मोक्ष प्राप्त होनेको उद्यमीहुवा उसको जो भव धरने पड़ें तो देव विद्याधर राजाके भव तो बिना चाहे सहजही होय हैं जैसे खेती के करनहारेका उद्यम धान्य उपजानेकाहै घास कबाड़ पराल इत्यादि सहज ही होय हैं और जैसे कोऊ पुरुष नगर को चला उसको मार्ग में वृक्षादिक का संगम खेदका निवारण है तैसे शिवपुरी को उद्यमी भये जे महामुनि तिनको इन्द्रादिक पद शुभोपयोग के कारणसे होय हैं मुनि का मन तिनमें नहीं शुद्धोपयोग के प्रभावसे सिद्धि होनेका उपाय है और श्रावक और जैनके धर्म से जो विपरीत मार्ग है सा अधर्म जानना जिससे यह जीव नाना प्रकार कुगति में दुःख भोगे है तिर्यंच योनिमें मारण ताड़ण छेदन भेदन शीत ऊष्ण भूख प्यास इत्यादि नाना प्रकारके दुःख भोगै है और सदा अन्धकार से भरे नरक अत्यन्त उष्ण अत्यंत शीत महा विकराल पवन जहां अग्निके कण बरसै हैं नाना प्रकार के भयङ्कर शब्द जहां नारकियों को घानी में पेले हैं करोतें से चीरे हैं जहां भयकारी शाल्मली वृक्षोंके पत्र चक्र खड्ग सेल समान हैं उनसे तिनके तन खण्ड खण्ड होयहैं। जहां तांबा शीशा गालकर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मदरा के पीवनहारे पापियों को प्यावैं हैं और मास भक्तियोंको तिनही के मांस काट काट उनके मुख में देवे हैं और लोह के तप्त गोले सिण्डासी से मुख फाड़ फाड़ जोरावरी से मुख में देवें हैं और पर दारा सङ्गम करनहारे पापियों को ताती लोहे की पुतलियों से चिपटावैं हैं जहां मायामई सिंह, व्याघ्र, स्याल इत्यादि अनेक प्रकार बाधा करैं हैं और जहां मायामयी दुष्ट पक्षी तीक्षण चोंच से चूंटैं हैं नारकी सागरों की आयु पर्यंत नाना प्रकार के दुःख त्रास मार भोगै हैं मारते मर नाहीं आयु पूर्ण करही मरैं हैं परस्पर अनेक बाधा करैं हैं और जहां मायामयी मक्षिका और मायामई कृमि सूई समान तीक्षण मुख से चूंटैं हैं यह सर्व मायामयी जानने और पशु पक्षी तथा विकलत्रै तहां नाहीं नारकी जीव ही हैं तथा पंच प्रकारके स्थावर सर्वत्रही हैं नरक में जो दुःख जीव भोगे हैं उसके कहिनेको कौन समर्थ है तुम दोऊ कुगति में बहुत भ्रमेहो ऐसा मुनि ने कहा तब यह दोऊ अपना पूर्व भव पूछते भये संयमी मुनि कहे हैं कि तुम मन लगाकर सुनो यह दुःखदाई संसार इसमें तुम मोह से उन्मत्त होकर परस्पर दोष धरते आपस में मरण मारण करते अनेक योनि में प्राप्त भए तिन में एकतो काशी नामा देश में पारधी भया दूजा श्रावस्ती नामा नगरी में राजाका सूर्यदत्त नामा मन्त्री भया सो ग्रह त्यागकर मुनि भया, महा तपकर युक्त अति रूपवान पृथिवी में विहार करै एक दिन काशी के बनमें जीव जंतु रहित पवित्र स्थानक में मुनि विराजे थे और श्रावक श्राविका अनेक दर्शनको आवते थे सो वह पापी पारधी मुनिको देख तीक्ष्ण बचनरूप शस्त्र से मुनिको बींधता भया यह विचारकर कि यह निर्लज्ज मार्ग भ्रष्ट स्नान रहित मलीन मुझको शिकार में जानेको अमंगलरूप भयाहै यह वचन पारधीनेकहे तब मुनिको

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्यान का विघ्न करणहारा संक्लेश भाव उपजा फिर मनमें विचारी कि मैं मुनि हूं मुझे उचित नाहीं कि ऐसा क्रोधकरूं कि एक मुष्टि प्रहारकर इस पापी पारधीको चूर्णकर डारूं मुनिके अष्टम स्वर्ग जायबेका पुण्य उपजा था सो कषाय के योग से क्षीण पुण्य होय मरकर ज्योतिषी देवभया तहांसे चयकर तू विद्युत्केश विद्याधर भया और वह पारधी बहुत संसार भ्रमण कर लंका के प्रमद नामा उद्यानमें बानर भया सो तुमने स्त्री के अर्थ बाण कर मारा सो बहुत अयोग्य किया पशुका अपराध सामंतोंको लेना योग्य नाहीं वह बानर नवकार मन्त्रके प्रभाव से उदधिकुमार देव भया, ऐसा जानकर हे विद्याधरो तुम बैरका त्याग करो जिससे इस संसार में तुम्हारा भ्रमण होय रहाहै जो तुम सिद्धोंके सुख चाहो हो तो राग द्वेष मत करो सिद्धों के सुखों का मनुष्य और देवों से बरणन न होसके अनन्त अपार सुख है जो तुम मोक्षाभिलाषीहो और भले आचार कर युक्तहो तो श्रीमुनि सुव्रतनाथकी शरण लेवो परम भक्तिसे यक्ष इन्द्रादिक देवभी तिनको नमस्कार करे हैं इन्द्र अहमिंद्र लोकपाल सर्व उनके दासों के दासहैं वे त्रिलोक नाथ तिनकी तुम शरण लेय कर परम कल्याण को प्राप्त होवोगे वे भगवान् ईश्वर कहिये समर्थ हैं सर्व अर्थ पूर्ण हैं कृत कृत्य हैं यह जो मुनिके वचन वेई भये सूर्यकी किरण तिनकर विद्युतकेश विद्याधरका मन कमलवत् फूलगया सुकेश नामा पुत्रको राज्य देय मुनि के शिष्य भए राजा महाधीर हैं सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रका आराधन कर उत्तम देव भए किंहकुपुर के स्वामी राजा महोदधि विद्याधर बानर बंशीयों के अधिपति चन्द्रकांत मणियों के महल ऊपर विराजे हुते अमृतरूप सुन्दर चर्चाकर इन्द्र समान सुख भोगते थे तिनपै एक विद्याधर श्वेत वस्त्र पहरे शीघ्र जाय नमस्कार कर कहता भया कि हे प्रभो

For Private and Personal Use Only

राजा विद्युत्केश मुनि होय स्वर्ग सिधारे यह सुनकर राजा महोदधि ने भी भोग भाव से विरक्त होय जैन दीक्षा में बुद्धि धरी और ये वचन कहे कि मैंभी तपोवन को जाऊंगा, ये वचन सुनकर राजलोक मन्दिर में विलाप करते भयेसो विलापकर महल गुंजिउठा उन राजलोकों का शब्द वीण बांसुरी मृदंग की ध्वनि समान है और युवराजभी आयकर राजा से वीनती करते भये कि राजा विदुत्केशका और अपना एक व्यवहार है राजाने बालक पुत्र सुकेशको राज जो दीया है सो तिहारे भरोसे दियाहै सुकेश के राज्यकी दृढ़ता तुमको राखनी उचित है जैसा उनका पुत्र तैसा तिहारा इसलिये कैएक दिन आप बैराग्य न धारें आप नव योबन हो इन्द्र कैसे भोगों से यह निकंटक राज्य भोगो इस भांति युवराज ने वीनती करी और अश्रुपातकी बर्षा करी तौभी राजाके मनमें न आई और मन्त्री महा नयके वेतानेभी अति दीनहोय बीनती करी कि हे नाथहम अनाथहैं जैसे बेल वृक्षों से लगरहे तैसे तुम्हारे चरणसे लगि रहे हैंतुम्हारेमनमें हमारामन तिष्ठे हैसो हमको छोड़िकर जाना योग्य नहीं इस भान्ति बहुत बीनती करी तौभी राजा ने न मानी और राणीने बहुत वीनती करी चरणों में लोटगई बहुत अश्रुपातडारे राणी गुण के समूहसे राजाकी प्यारीथी सो विरक्त भावसे राजाने नीरस देखी तब राणी कहेहै कि हे नाथ हम तुम्हार गुणोंकर बहुत दिनकी बंधी और तुमने हमको बहुत लड़ाई महालक्ष्मी समान हमको राखी अब स्नेह पाश तोड़ कहां जावोहो इत्यादि अनेक बातकरी सो राजाने चित्तमें न धरी और राजाके बड़े २ सामंतोंनेभी बीनती करी कि हे देव इस नवयौवनमें राज छोड़ कहां जावो सबकों मोहसे तजा इत्यादि अनेक स्नेह के वचन कहे राजाने किसीकी न सुनी स्नेह पाश तोड़ सर्व परिग्रहका त्यागकर प्रतिचंद्र पुत्रको राज्य देय आप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपने शरीरसे भी उदास होय दिगंबरी दीक्षा आदरी राजा पूर्ण बुद्धिवान महा धीरवीर पृथ्वी पर चन्द्रमा समान उज्ज्वल है कीर्ति जिसकी ध्यान रूप गजपर चढ़कर तपरूपी तीक्ष्णशस्त्र से कर्म रूप शत्रु को काट सिद्ध पदको प्राप्त भए प्रति चन्द्र भी केएक दिन राज कर अपने पुत्र किहकंध को राज्य देय और छोटे पुत्र अधिक रूढ़ को युवराज पद देय आप दिगम्बर होय शुक्ल ध्यान के प्रभाव से शिवस्थान को प्राप्त भए ॥

राजा किहकन्ध और अधिक रूढ़ दोऊ भाई चांद सूर्य समान औरोंके तेजको दाबकर पृथ्वी पर प्रकाश करते भये उस समय विजियार्ध पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमें रत्नपुर नामा नगर सुरपुर समान वहां राजा अशनिवेग महा पराक्रमी दोऊ श्रेणीके स्वामी जिनकी कीर्ति सबके मनको हरनहारी उनके पुत्र विजयसिंह महा रूपवान थे आदित्यपुरके राजा विद्या मन्दिर विद्याधर उसकी राणी वेगवती उसकी पुत्री श्रीमाला उसके विवाह निमित्त जो स्वयंबर मंडप रचाथा और अनेक विद्याधर आए थे वहां अशनिवेगके पुत्र विजयसिंह भी पधारे श्रीमाला की कांतिसे आकाशमें प्रकाश होय रहा है, सकल विद्याधर सिंहासनोंपर बैठे हैं बड़े २ राजाओंके कुंवर थोड़े २ साथसे तिष्ठे हैं सबकी दृष्टि नील कमलों की पंक्तिकी समान श्रीमालाके ऊपर पड़ी श्रीमालाको किसीसे भी रागद्वेष नहीं मध्यस्थ परिणाम है वे विद्याधर कुमार मदनसे तप्त हैं चित्त जिनका अनेक साविकार चेष्टा करते भए केएक तो माथेका मुकट निकंपथा तोभी उसकोसुन्दर हाथोंसे ठीक करते भए केएक खंजर पास धराथा तोभी करके अग्रभागसे हिलावते भए कटाक्षकर करीहै दृष्टि जिन्होंने और केएकके किनारे मनुष्य चमर ढोरते

For Private and Personal Use Only

भए और वीजना करते हुवे तौभी लीला सहित महा सुन्दर रूप रूमालसे अपने मुखको वयार करते भये और कैएक वामेचरणपर दाहिना पांव मेलते भये राजाओंके पुत्र सुन्दर रूपवान हैं नवयौवन हैं कामकलामें निपुण हैं दृष्टि तो कन्याकी ओर और पगके अंगुष्टसे सिंहासनपर कछू लिखते भये और कैएक महामणियोंके समूहसे युक्त जो सूत्र कटिमें गाढ़ा बंधाही था तौभी उसे संवार गाढ़ा बांधते भये और कैएक चंचल हैं नेत्र जिनके निकटवर्तीयोंसे कोलि कथा करते भए कैएक अपने सुंदर कुटिल केशोंको संभारते भए कैएक जापर भ्रमर गुंजार करे हैं ऐसे कमलको दाहिने हाथ से फिरावते भए मकरन्दकी रजविस्तारते भए इत्यादि अनेक चेष्टा राजाओंके पुत्र स्वयम्बर मंडप में करते भए स्वयम्बर मंडप में बीन बांसुरी मृदंग नगारे इत्यादि अनेक बाजे बज रहेहैं और अनेक मंगलाचरण होय रहेहै बन्दीजनों के समूह सत्पुरुषों के अनेक चरित्र वरणन करे हैं उस स्वयम्बर मंडपमें सुमंगला नामा धाय जिसके एक हाथ में स्वर्ण की छड़ी एक हाथमें बेंतकी छड़ी कन्याको हाथ जोड महा विनय कर कहती भई कन्या नाना प्रकार के मणि भूषणों कर सम्बात् कल्पवेल समान है हे पुत्री यह मार्तंडकुण्डल नामा कुंवर नभष्तिलक के राजा चन्द्र कुण्डल राणी विमला तिनका पुत्र है अपनी कांतिसे सूर्य का भी जीतने हारा अति रमणीक है और गुणोंका मण्डन है इसके साहित रमणे की इच्छा है तो इसको वर यह शस्त्र शास्त्रमें निपुण है तब यह कन्या इसको देख यौवनसे कछु इक चिगा जान आगे चली फिर धाय बोलीहे कन्या यह रत्नपुरके राजा विद्यांग राणी लक्ष्मी तिनका पुत्र विद्या समुद्र घात नामा बहुत विद्याधरोंका अधिपति इसका नाम सुन वैरी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐसा कांपे जैसे पीपलका पत्र पवनसे कांपे महा मनोहर हारोंसे युक्त इसका सुन्दर वक्षस्थल जिस में लक्ष्मी निवास करे है तेरी इच्छा होय तो इसका वर तब इसको सरल दृष्टि कर देख आगे चली फिर वह धाय जो कन्याके अभिप्रायके जाननेहारीहै बोली हे सुते यह इन्द्र सारिखा राजा वज्रशील का कुंवर खेचरभानु वज्रपंजर नगरका अधिपति है इसकी दोऊ भुजाओं में राज्य लक्ष्मी चंचल है तोभी निश्चल तिष्ठे है इसे देखकर और विद्याधर आज्ञा समान भासे हैं यह सूर्य समान भासे हैं एक तो मानकर इसका माथा ऊंचा है ही और रत्नोंके मुकटसे अतिही शोभे है तेरी इच्छा है तो इसके कंठमें माला डार तब यह कन्या कुमुदनी समान खेचरभानुको देख सकुच गई आगे चली तब धाय बोली हे कुमारी यह राजा चन्द्रानन चन्द्रपुरका धनी राजाचित्रांगद राणी पद्मश्रीका पुत्र इस का वक्षस्थल महा सुन्दर चंदनसे चर्चित जैसे कैलाशका तट चन्द्रकिरणसे शोभे तैसे शोभे है उछले है किरणोंके समूह जिसके ऐसा मोतियोंका हार इसके उरमें शोभेहै जैसे कैलाशपर्वतउछलतेहुवेनीझरनों के समूह से शोभे है इसके नामके अक्षरसे वैरियोंका मन परम आनन्दको प्राप्त होय है और दुख आताप करि रहित होय है धाय श्रीमाला से कहे है हे सौम्यदर्शन कहिये सुखकारी है दर्शन जिस जिसका ऐसा जो तू तेरा चित्त इसमें प्रसन्न होय तो जैसे रात्रि चन्द्रमासे संयुक्त होय प्रकाश करे है तैसे इसके संगमकर आल्हाद को प्राप्त हो तब इसमें इसका मन प्रीतिको न प्राप्त भया जैसे चंद्रमा नेत्रों को आनन्दकारी है तथापि कमलों को उस में प्रसन्नता नहीं फिर धाय बोली हे कन्या मन्दर कुंज नगरका स्वामी राजा मेरुकांत राणी श्रीरंभा का पुत्र पुरंदर मानों पृथ्वी पर इन्द्र ही अवतारा

For Private and Personal Use Only

हे मेघ समान है ध्वनि जिसकी और संग्राममें जिसकी दृष्टि शत्रुओंके सहारवेको समर्थ नहीं तो ताके बाण की चोट कौन सहारे देव भी यासों युद्ध करवेको समर्थ नहीं तो मनुष्योंकी तो क्या बात अति उन्नत इसका सिर सो तू पायनपर डार ऐसा कहा तौभी वह इसके मनमें न आया क्योंकि चितकी प्रवृति विचित्र है फिर धाय कहती भई हे पुत्री नाकार्धपुर का रक्षक राजा मनोजव राणी वेगिनी तिनका पुत्र महाबल सभा रूप सरोवर में कमल समान फूल रहा है इसके गुण बहुत हैं गिनने में आवें नहीं यह ऐसा बलवान है जो अपनी भौंह टेढ़ी करवेसे ही पृथ्वी मंडल को वश कर है और विद्या बलसे आकाश में नगर बसावे और सर्व ग्रह नक्षत्रादिक को पृथ्वी तलपर दिखावे चाहे तो एक लोक नवा और बसाय इच्छा करे तो सूर्य को चन्द्रमा समान शीतल कर पर्वतको चूर करडारे पवनको थांभे जलका स्थल करडारे स्थलका जलकर डारे इत्यादि इसके विद्याबल वर्णन किये तथापि इसका मन इसमें अनुरागी न भया और भी अनेक विद्याधर धायने दिखाए सो कन्याने दृष्टि में न धरे तिनको उलंघि आगे चली जैसे चन्द्रमाकी किरण पर्वतको उघंले वह पर्वत श्याम होय जांय तैसे जिन विद्याधरोंको उलंघ यह आगे गई तिनका मुख श्याम हो गया सब विद्याधरों को उलंघ कर इसकी दृष्टि किहकंध कुमार पर गई ताके कंठमें बरमाला डारी तब विजयसिंह विद्याधरकी दृष्टि क्रोध भरी किहकंध और अंध्रक दोऊ भाइयों पर पड़ी विजयसिंह विद्याबल से गर्वितहै सो किहकंध और अंध्रकको कहता भया कि यह विद्याधरोंका समाज तहां तुम बानर किस लिये आए विरूपहै दर्शन तुम्हारा क्षुद्र कहिये तुच्छ हो विनय रहित हो इस अस्थानक में फलों से नम्रभूत जे वृक्ष उनसे

संयुक्त कोई रमणीक बन नहीं और गिरियोंकी सुन्दर गुफा नीझरणों की धरणहारी जहां बानरोंके समूह क्रीड़ा करें सो नहीं, लाल मुखके बानरों तुमको यहां किसने बुलाया जो नीच तुम्हारे बुलावनेको गये। उसका निपात करूं, अपने चाकरों को कही इनको यहां से निकाल देवो यह वृथाही विद्याधर कहावें हैं, यह शब्द सुनकर किहकन्ध अंधूक दोनों भाई बानरध्वज महा क्रोध को प्राप्त भए जैसे हाथियों पर सिंह कोप करे, और इनकी समस्त सेनाके लोक अपने स्वामियों का अपवाद सुन विशेष क्रोधको प्राप्त भए, कैयक सामन्त अपने दहिने हाथ से बावीं भुजाको स्पर्श करतेभये और कैयक क्रोधके आवेश से लाल भए हैं नेत्र जिनके सो मानों प्रलयकालके उल्कापातही हैं महा कोपको प्राप्तभए कैयक पृथिवीविषै दृढ़ बांधी है जड़ जिनकी ऐसे वृक्षों को उखारते भए वृक्ष फल और पल्लवको धारे हैं कैयक थंभ उखाड़ते भये और कैयक सामन्तों के अगले घाव भी क्रोध से फट गए तिनमें से रुधिर की धारा निकसती भई मानों उत्पात के मेघही बरसे हैं कैयक गाजते भए सो दशों दिशा शब्दकर पूरित भई और कैयक योधा सिरके केश विकरालतेभए, मानों रात्रिही होय गई, इत्यादि अपूर्व चेष्टावोंसे बानरबंशी विद्याधरों की सेना समस्त विद्याधरोंके मारनेको उद्यमी भई हाथियोंसे हाथी घोड़ोंसे घोड़े रथोंसे रथ युद्धकरतेभये दोनों सेनामें महायुद्धप्रवरता, आकाशमें देव कौतुक देखतेभये यह युद्धकी वार्ता सुनकर राक्षसबंशी विद्याधरोंके अधिपतिराजा सुकेश लंका के धनी बानरबंशियोंकी सहायताको आए, राजासुकेश किहकन्ध और अन्धूक के परम मित्रहैं मानों इनके मनोरथ पूर्णकरने कोही आए हैं जैसेभरतचक्रवर्तीके समय राजा अकम्पन की पुत्री सुलोचना के निमित्त अर्ककीर्ति जयकुमार का युद्ध भया तैसा यह युद्ध हुवा, यह स्त्रीही युद्ध

का मूलकारणहै विजयसिंहके और राक्षसवंशी वानरवंशियोंके महायुद्धभया उससमय किहकन्धका कन्या लेगया और छोटे भाई अन्धूक ने खड्ग से बिजयसिंह का सिर काटा एक विजयसिंह के बिना उसकी सर्व सेना बिखरगई जैसे एक आत्मा बिना सर्व इन्द्रियों के समूह विघटित जांहि, तब राजा अशनिबेग विजयसिंह का पिता अपने पुत्रका मरण सुनकर मूर्छाको प्राप्त भया अपनी स्त्रियों के नेत्र के जल से सींचा है वक्षस्थल जिसका सो घनी बेर में मूर्छा से प्रबोधको प्राप्त भया पुत्र के बैरसे शत्रुओंपर भयानक आकार किया उस समय उसका आकार लोक देख न सके मानों प्रलयकाल के उत्पात का सूर्य उसके आकार को धरे है सर्व विद्याधरों को लार लेजाकर किहकन्धपुरकोघेरा॥ नगरको घेरा जान दोनों भाइ वानरध्वज सुकेश सहित अशनिवेगसे युद्ध करनेको निकसे परस्पर महा युद्ध भया गदाओंसे शक्तियों से बाणों से पाशों से सेलोंसे षड्गों से महा युद्ध भया तहां पुत्र के बधसे उपजी जो क्रोधरूप अग्नि की ज्वाला उससे प्रज्वलित जो अशनिबेग सो अन्धूकके सनमुख भया तब बड़े भाई किहकन्धने बिचारी कि मेरा भाई अन्धूक तो नव योवन है और यह पापी अशनिबेग महा बलवान है सो मैं भाई की मददकरूं तब किहकन्ध आया और अशनिबेग का पुत्र विद्युद्वाहन किहकन्धके सन्मुख आया सो किहकन्ध के और विद्युद्वाहन के महायुद्ध प्रवरता उस समय अशनिबेगने अन्धूकको मारा सो अन्धक पृथिवी पर पड़ा जैसा प्रभातका चन्द्रमा कांति रहित होय तैसा अन्धूक का शरीर कांति रहित होयगया और किहकन्धने विद्युद्वाहनके वक्षस्थल पर शिलाचलाई सो वह मूर्छित होय गिरा पुनः सचेत होय उसने वही शिला किहकन्ध पर चलाई सो किहकन्ध मूर्छा खाय घूमने लगा सो लंकाके धनी ने सचेत

किया और किहकन्ध को किहकुम्पुर ले आए तब किहकन्ध ने दृष्टि उघाड़ देखा तो भाई नहीं तब निकट वर्तीयों को पूछने लगा मेरा भाई कहां है तब लोक नीचे होयरहे और राजलोक में अन्धक के मरणे का विलापहुवा सो विलाप सुन किहकन्धभी विलाप करने लगा शोकरूप अग्नि से तप्तायमान हुवा है मन जिसका बहुत देर तक भाई के गुणका चितवन करतासंता शोक रूप समुद्र में मग्न भया हाय भाई मेरे होते संते तू मरण को प्राप्तभया मेरीदक्षिणभुजा भंगभई जो मैं एकक्षण तुझे न देखताथा तो महाव्याकुल होता था सो अब तुमबिनप्राणको कैसे राखूंगा अथवा मेरा चित्त वज्रका है जो तेरा मरण सुनकर भी शरीर को नहीं तजे है हे बाल तेरा वह मुलकना और छोटी अवस्थामें महाबीर चेष्टा चितार चितार मुझको महा दुःख उपजे है इत्यादि महा विलापकर भाइ के स्नेहसे किहकन्ध खेद खिन्न भया तब लंकाके धनी सुकेशने तथा और बड़े२ पुरुषोंने किहकन्धको बहुतसमझाया कि धीर पुरुषोंको यह रंज चेष्टा योग्य नहीं यह क्षत्रियों का वीरकुल है सो महा साहस रूप है और इस शोक को पण्डितों ने बड़ा पिशाच कहा है कर्मों के उदय से भाइयोंका वियोग होय है यह शोक निरर्थक है यदि शोक कीए फिर आगम होय तो शोक करिये यह शोक शरीर को शोखे है और पापोंका बन्ध करे है महा मोहका मूल है इसलिये इस बैरी शोक को तजकर प्रसन्न होयकार्य में बुद्धि धारो यह अशनिवेग विद्याधर अति प्रबल बैरी है अपना पीछा छोड़ता नहीं नाशका उपाय चितवे है इसलिये अब जो कर्तव्य होय सो विचारो वैरी बलवान होय तब प्रछन्न (गुप्त) स्थान में कालक्षेप करिये तो शत्रुसे अपमानको नपाइये फिर कैएक दिन में वैरी का बल घटे तब वैरी को दबाइये विभूति सदा एक ठौर नहीं रही है अपनी पाताल

लंका जो बड़ों से आसरे की जगा है सो कुछ काल वहां रहिये जो अपने कुलमें बड़े हैं वे इस स्थानक की बहुत प्रशंसा करें हैं जिसको देखे स्वर्गलोक में भी मन न लगे है इसलिये उठो वह जगा बैरियों से अगम्य है इस भांति राजा किहकन्ध को राजा सुकेशी ने बहुत समझाया तोभी शोक न छाड़ै, तब राणी श्रीमाला को दिखाई सो उसके देखने से शोक निवृत्त भया तब राजा सुकेशी और किहकन्ध समस्त परिवारे सहित पाताल लंकाको चले और अशनिवेगका पुत्र विद्युद्वाहन इनके पीछे लगा अपने भाई विजयसिंह के बैर से महा क्रोधवन्त शत्रु के समूल नाश करनेको उद्यमी भया तब नीति शास्त्रके पाठियों ने जो शुद्ध बुद्धिके पुरुष हैं समझाया कि क्षत्री भागे तो उसके पीछे न लगे और राजा अशनिवेग ने भी विद्युद्वाहन सों कही कि अन्धक ने तुम्हारा भाई हता सो तो मैं अन्धकको रण में मारा इसलिये हे पुत्र इस हठसे निवृत होवो दुःखी पर दयाही करनी उचितहै जिस कायरने अपनी पीठ दिखाई सो जीवतही मृतक है उसका पीछा क्या करना, इस भांति अशनिवेग ने विद्युद्वाहन को समझाया, इतनेमें राक्षसवंशी और वानरवंशी पाताल लंका जाय पहुंचे नगर रत्नों के प्रकाश से शोभायमान है वहां शोक और हर्ष धरते दोऊ निर्भयरहैं एक समय अशनिवेग शरदमें मेघपटलदेख और उनको विलय होते देख विषियों से विरक्तभए चितविषे विचारा यह राज सम्पदा क्षणभंगुरहै मनुष्य जन्म अतिदुर्लभ है सो मैं मुनिव्रत धर अन्तिम कल्याण करूं ऐसा विचार सहस्रारि पुत्रको राज देय आप विद्युद्वाहन सहित मुनि भए और लंका विषे पहले अशनिवेगने निर्घातनामा विद्याधरथाने राखाथा सो अब सहस्रारिकी आज्ञा प्रमाण लंका विषे थाने रहै एक समय निर्घात दिग्विजयको निकसा सो सम्पूर्ण राक्षसद्वीप

में राक्षसों का संचार न देखा सबही घुसरहे हैं सो निश्चल निर्भय लंकामें रहे एकसमय राजा किहकन्ध राणी श्रीमाला सहित सुमेरुपर्वतसे दर्शन कर आवे थे मार्गमें दक्षिण समुद्रके तटपर देवकुरु भोग भूमि समान पृथ्वीमें करनतटनामा बन देखा, देखकर प्रसन्न भए और श्रीमाला राणीसे कहते भए राणीके सुंदर बचन वीणाके स्वर समानहैं देवी तुम यह रमणीक बन देखो जहां वृक्ष फूलों से संयुक्त हैं निर्मल नदी बहेहैं और मेघके आकार समान धरणीमालि नामा पर्वत शोभे है पर्वत के शिखर ऊंचे हैं और कुन्दके पुष्प समान उज्ज्वल जलके नीझरने झरें हैं सो मानो यह पर्वत हंसे ही है और वृक्षोंकी शाखासे पुष्प पड़े हैं सो मानो हमको पुष्पांजली ही देवे हैं और पुष्पोंकी सुगंध से पूर्ण पवनसे हालते जो वृक्ष उनसे मानों यह बन हमको उठकर ताज़ीम ही करे है और वृक्ष बेलोंसे बम्रीभूत होय रहे हैं सो मानो हमको नमस्कार ही करे हैं जैसे गमन करते पुरुषों को स्त्री अपने गुणोंसे मोहितकर आगे जाने न दे है खड़ा करे है तैसे यह बन और पर्वतकी शोभा हमको मोहितकर राखे है आगे जाने न देहै मैं भी इस पर्वतको उलंघ आगे नहीं जाय सकूं इस लिये यहां ही नगर बसाऊंगा जहां भूमिगोचरियोंका गमन नहीं पाताल लंकाकी जगह ऊंडी है वहां मेरा मन खेद खिन्न भया है सो अब यहां रहिनेसे मन प्रसन्न होयगा इस भांति राणी श्रीमाला सो कहकर आप पहाड़से उतरे वहां पहाड़ ऊपर स्वर्ग समान नगर बसाया नगरका किहकंधपुर नाम धरा वहां आप सर्व कुटम्ब सहित निवास किया राजा किहकंध सम्यक दर्शन संयुक्त है और भगवानकी पूजा में सावधानहै सो राजा किहकंधके राणी श्रीमाला के योगसे सूर्यरज और रक्षरज दो पुत्र भए और सूर्यकमला पुत्री भई जिसकी शोभासे सर्व विद्याधर मोहित हुए।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेघपुरका राजा मेरु उसकी राणी मघा पुत्र मृगारिदमन उसने किहकंधकी पुत्री सूर्यकमला देखी सो ऐसा आसक्त भया कि रात दिवस चैन नहीं तब उसके अर्थ वाके कुटम्बके लोगोंने सूर्यकमला याची सो राजा किहकंध ने राणी श्रीमाला से मन्त्रकर अपनी पुत्री सूर्यकमला मृगारिदमनको परणाई सो परणाकर जावेथा मार्गमें कर्ण पर्वतमें वर्णकुण्डल नगर बसाया।

अलंकापुर कहिए पाताल लंका उसमें सुकेश राजा इन्द्राणी नामा राणी उसके तीन पुत्र भये माली सुमाली और माल्यवान बड़े ज्ञानी गुणही हैं आभूषण जिनके अपनी क्रीड़ाओंसे माता पिता का मन हरते भए देवों समान है क्रीड़ा तिनकी तीनों पुत्र बड़े भये महा बलवान सिद्ध भईहैं सर्व विद्या जिनको एक दिन माता पिताने इनको कहा कि तुम क्रीड़ा करनेको किहकंधपुर की तरफ जावो तो दक्षणके समुद्रकी ओर मत जाओ तब ये नमस्कारकर माता पिताको कारण पूछते भए तब पिताने कही हे पुत्रो यह बात कहीवेकी नहीं तब पुत्रोंने बहुत हठकर पूछी तब पिताने कही कि लंकापुरी अपने कुल क्रमसे चलीआवे है श्री अजितनाथ स्वामी दूसरे तीर्थंकरके समयसे लगाय कर अपना इस खंडमें राज है आगे अशनिवेग के और अपने युद्ध भया सो परस्पर बहुत मरे लंका अपनेसे छूटी अशनिवेगने निर्घात विद्याधर थाने राखा सो महा बलवान है और क्रूरहै ताने देश देशमें हलकारे राखे हैं और हमाराछिद्र हेरेहै यह पिताके दुखकी वार्ता सुनकर माली निश्वास नाखता भया और आंखों से आंसू निकसे क्रोधसे भर गया है चित्त जिसका अपनी भुजाओं का बल देखकर पितासों कहता भया कि हे तात एते दिनों तक यह बात हमसे क्यों न कही तुम ने

For Private and Personal Use Only

स्नेहकर हमको ठगे जे शक्तिवंत होयकर बिना काम किये निरर्थक गाजें हैं वह लोकमें लघुता को पावे हैं सो हमको निर्घातपर आज्ञा देवो हमारे यह प्रतिज्ञाहै लंकाको लेकर और काम करें तब माता पिताने महा धीर बीर जान इनको स्नेह दृष्टिसे आज्ञादी तब यह पाताल लंकासे ऐसे निकसे मानों पाताल लोकसे भवनबासी निकसे हैं बैरी ऊपर अति उत्साहसे चले तीनों भाई शस्त्र कला में महा प्रवीणहैं समस्त राक्षसोंकी सेना इनके लार चली त्रिकूटाचल पर्वत दूरसे देखा, देखकर जान लिया कि लंका नीचे बसेहै सो मानों लंका लेहीली मार्ग में निर्घातके कुटंबी जो दैत्य कहावें ऐसे विद्याधर मिले सो युद्ध करके बहुत मरे कैएक पायन परे कैएक स्थान छोड़ भाग गये कैएक बैरी कटक में शरण आए पृथ्वीमें इनकी बड़ी कीर्ति बिस्तरी निर्घात इनका आगमन सुन लंकासे बाहिर निकसा निर्घात युद्धमें महा शूर बीर है छत्रकी छायासे आच्छादित किया है सूर्य जिसने तब दोऊ सेना में महा युद्ध भया मायामई हाथियोंसे घोड़ोंसे विमानोंसे रथोंसे परस्पर युद्ध प्रवरता हाथियों के मद झरनेसे आकाश जलरूप हो गया और हाथियोंके कान वह ही भए ताडके बीजने उनकी पवनसे आकाश मानो पवनरूप हो गया परस्पर शस्त्रों के घात से प्रगटी जो अग्नि उससे मानो आकाश अग्नि रूपही होगया इस भांति बहुत युद्ध भया तब मालीने विचारा कि दीनों के मारने से क्या होय निर्घातही को मारिये यह बिचार निर्घात पर आए ऐसे शब्द कहते भये कहां वह पापी निर्घात कहां वह पापी निर्घात है सो निर्घातको देखकर प्रथम तो तीक्ष्ण बाणोंसे रथसे नीचे डारा फेर वह उठा महा युद्ध किया तब मालीने खड्गसे निर्घातको मारा उसको मारा जानकर उसके वंशके

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आगकर विजियार्ध में अपने २ स्थानकको गये और कैएक कायर होय मालीही की शरण आए माली आदि तीनों भाइयोंने लंकामें प्रवेश किया लंका महा मंगल रूपहै माता पिता आदि समस्त परिवार को लंकामें बुलाया फिर हेमपुरका राजा हेम विद्याधर राणी भोगवती तिनकी पुत्री चन्द्रमती को मालीने परणी चन्द्रमती मनको आनन्द करणहारी है और प्रीतिकूट नगरका राजा प्रीतिकांत राणी प्रीतिमती तिसकी पुत्री प्रीतिसंज्ञका सो सुमालीने परणी और कनकांत नगरका राजा कनक राणी कनकश्री तिसकी पुत्री कनकावली सो माल्यवान ने परणी इनके यह पहली राणी भई और प्रत्येकके हजार २ राणी कछु इक अधिक होती भई मालीने अपने पराक्रमसे विजियार्ध की दोऊ श्रेणी वश करी सर्व विद्याधर इनकी आज्ञा आशीर्वाद की न्याई माथे चढ़ावते भए कैएक दिनोंमें इनके पिता राजा सुकेश माली को राज देय महा मुनि भए और राजा किहकंध अपने पुत्र सूर्यरज को राज देय वैरागी भए ये दोऊ परम मित्र राजा सुकेश और किहकंध समस्त इंद्रियोंके सुखको त्यागकर अनेक भवके पापोंका हरणहारा जो जिनधर्म उसको पायकर सिद्ध स्थान के निवासी भए हे श्रेणिक इस भांति अनेक राजा प्रथम अवस्था में अनेक विलास कर फिर राज तजकर आत्म ध्यान के योग से समस्त पापों को भस्म कर अविनाशी धामको प्राप्त भए ऐसा जानकर हे राजा मोहका नाश कर शांति दशा को प्राप्त हो।

रथनूपुर नगर में राजा सहस्रार राज्य करे उसके राणी मानसुन्दरी रूप और गुणोंमें अति सुन्दर सो गर्भिणी भई अत्यन्त कृश भया है शरीर जिसका शिथिल होय गये हैं सर्व आभूषण जिस

For Private and Personal Use Only

कि तब भरतारने बहुत आदरसों पूछी कि हे प्रिये! तेरे अंग काहेसे क्षीण भएहैं तेरे क्या अभिलाषा है जो अभिलाषा होय सो मैं अबारही समस्त पूर्ण करूं, हे देवी तू मेरे प्राणोंसे भी अधिक प्यारी है इस भांति राजाने कही तब राणी बहुत विनयकर पतिसे बिनती करती भई कि हे देव जिस दिन से बालक मेरे गर्भमें आयाहै उस दिनसे यह मेरी बांछाहै कि इंद्रकी सी संपदा भोगूं सो मैंने लाज तज आपके अनुग्रहसे आपसों अपना मनोरथ कहाहै नातर स्त्रीकी लज्जा प्रधानहै सो मनकी बात कहिवेमें न आवे तब राजा सहस्रारने जो महा विद्याबलकर पूर्ण था क्षणमात्र में इसके मनोरथ पूर्ण किये तब यह सखी महा आनन्द रूप भई सर्व अभिलाषा पूर्ण भई अत्यन्त प्रताप और कांति को धरती भई सूर्य ऊपर होय निसरे वह भी उसका तेज न सहार सके सर्व दिशाओंके राजाओंपर आज्ञा चलाया चाहे नव महीने पूर्ण भए पुत्रका जन्म भया पुत्र समस्त बांधवोंको परम संपदाका कारण है तब राजा सहस्रारने हर्षित होय पुत्रके जन्मका महान उत्सव किया अनेक बाजोंके शब्दसे दशों दिशा शब्द रूप भई और अनेक स्त्री नृत्य करती भई राजाने याचकोंको इच्छा पूर्ण दान दिया ऐसा विचार न किया जो यह देना यह न देना सर्वही दिया हाथी गरजते हुए ऊंची सूंडसे नृत्य करते भए राजा सहस्रारने पुत्रका इन्द्र नाम धरा जिस दिन इन्द्रका जन्म भया उस दिन समस्त बैरियों के घरमें अनेक उत्पात भए अपशकुन भए और भाइयोंके तथा मित्रोंके घरमें महा कल्याणके करन हारे शुभ शकुन भए इन्द्र कुंवरकी बालक्रीड़ा तरुण पुरुषोंकी शक्तिको जीतने हारी सुन्दर कर्मकी करणहारी बैरियोंका गर्व छेदती भई अनुक्रमकर कुंवर यौवनको प्राप्त भया कुंवर अपने तेजकर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीताहै सूर्यका तेज जिसने और कांतिसे जीताहै चन्द्रमा और स्थिरतासे जीताहै पर्वत और विस्तीर्ण है वक्षस्थल जिसका दिग्गजके कुम्भस्थल समान ऊंचेहैं कांधे जिसके और अति दृढ़ सुंदरहैं भुजा दश दिशाकी दाबनहारी और दोऊ जंघा जिसकी महा सुन्दर यौवनरूप महलके थांभनेको थंभे समान होती भई विजियार्ध पर्वत विषे सर्व विद्याधर जिसने सेवक किये जो यह आज्ञा करे सो सर्व करैं यह महा विद्याधर बलकर मंडित इसने अपने यहां सब इन्द्र कैसी रचना करी अपना महल इन्द्र के महल समान बनाया अड़तालीस हजार विवाह किये पटरानी का नाम शची धरा छबीस हजार नट नृत्य करैं सदा इन्द्र कैसा अखाड़ा रहे महा मनोहर अनेकइन्द्र कैसे हाथी घोड़े और चन्द्रमा समान महा उज्ज्वल ऊंचा आकाश के आंगनमें गमन करनेवाला किसीसे निवारा न जाय महा बलवान अष्टदंतन कर शोभित गजराज जिसकी महा सुन्दर सूंड सोपाठ हाथी उसका नाम ऐरावत धरा चतु रनिकायके देव थापे और परम शक्ति युक्त चार लोकपाल थापे सोम १ वरुण २ कुवेर ३ यम ४ और सभाका नाम सुधर्मा वज्रआयुध तीन सभा और उर्वशी मेनका रम्भा इत्यादि हजारां नृत्य कारिणी तिनको अप्सरा संज्ञा ठहराई सेनापतिका नाम हिरण्यकेशी और आठ वसु थापे और अपने लोकों को सामानिक त्रायसत्रंसतादि दश भेद देवसंज्ञा धरी गाने वालोंका नाम नारद १ तुम्बुरु २ विश्वासु ३ यह संज्ञा धरी मंत्रीका नाम बृहस्पति इत्यादि सर्व रीति इन्द्र समान थापी सो यह राजा इन्द्र समान सर्व विद्याधरों का स्वामी पुण्यके उदयसे इन्द्र कैसी सम्पदा का धरन हारा होता भया उस समय लंकामें माली राज करे सो महा मानी जैसे आगे सर्व विद्याधरों पर अमल करे था तैसाही

For Private and Personal Use Only

अबभी करे इन्द्रकी शंका न राखे विजियार्धके समस्तपुरोंमें अपनी आज्ञा राखे सर्व विद्याधरराजावों के राजमें महारत्न सुन्दर हाथी घोड़े मनोहर कन्या मनोहर वस्त्राभरण दोनों श्रेणियोंमें जो सार वस्तु होय सो मंगाय लेय ठौर २ हलकारे फिरा करें अपने भाइयोंके गर्वसे महा गर्ववान पृथ्वी पर एक आपही को बलवान जाने अब इन्द्रके बलसे विद्याधर मालीकी आज्ञा भंग करने लगे सो यह समाचार मालीने सुना तब अपने सर्व भाई और पुत्र और कुटम्ब समस्त राक्षसबंशी और किहकंधके पुत्रादि समस्त बानर बंशी उनको लार लेय विजियार्ध पर्वतके विद्याधरोंपर गमन किया केएक विद्याधर अति ऊंचे बिमानोंपर चढ़ेहे केएक चालते महल समान सुवर्णके रथोंपर चढ़ेहैं केएक काली घटा समान हाथियोंपर चढ़े हैं केएक मन समान शीघ्रगामी घोड़ोंपर चढ़े केएक शार्दूलोंपर चढ़े केएक चीतोंपर चढ़े केएक बलदोंपर चढ़े केएक ऊंटोंपर केएक खचरोंपर केएक भैंसोंपर केएक हंसोंपर केएक स्यालोंपर इत्यादि अनेक मायामई वाहनोंपर चढ़े आकाशका आंगन आछादते हुवे महा देदीप्यमान शरीर धरकर मालीकी लार चढ़े प्रथम पयाणमें अप शकुन भए तब मालीसे छोटा भाई सुमाली कहता भया बडे भाईमें है अनुराग जिसका, हे देव यहांही मुकाम करिये आगे गमन न करिये अथवा लंकामें उलटा चालिये आज अपशकुन बहुत भएहैं सूके वृक्षकी डालीपर एक पगको संकोचे काग तिष्ठा है अत्यन्त आकुलित है चित्त जिसका बारबार पंख हलावे है सूका काठ चोंचमें लिये सूर्यकी ओर देखे है और क्रूर शब्द बोले है अर्थात् हमारा गमन मने करे है और दाहिनी ओर रौद्र स्यालिनी रोमांच धरती हुई भयानक शब्द करे है और सूर्यके बिम्बके मध्य जलेरी में रुधिर झरता देखि

येहै और मस्तक रहित धड़ नजर आवें हैं और महा भयानक बज्रपात होयहै कम्पायाहै समस्त पर्वत जिसने और आकाशमें विखरि रहेहैं केश जिसके ऐसी मायामई स्त्री नजर आवेहै और गर्दभ [गधा] आकाशकी तरफ ऊंची मुखकर खुरके अग्रभागसे धरती को खोदता हुवा कठोर शब्द करे है इत्यादि अपशकुन होय हैं तब राजा माली सुमालीसे हंसकर कहत भए राजा माली अपनी भुजाओंके बल से शत्रुओंको गिनते नहीं अहो बीर बैरियोंको जीतना मनमें बिचार विजय हस्तीपर चढ़े महापुरुष धारताको धरते कैसे पाछेंवाहुड़ें जो शूरबीर दांतोंसे डसेहैं अधर जिन्होंने और टेढ़ीकरी है भौंह जिन्हों ने और विकराल है मुख जिनका और बैरीको डसने वाली है आंख जिन्होंकी तीक्ष्ण बाणोंसे पूर्ण और बाजे हैं अनेक वाजे जिनके और मद भरते हाथियोंपर चढ़े हैं अथवा तुरंगनपर चढ़े हैं महा बीर रसके स्वरूप आश्चर्यकी दृष्टिसे देवों ने देखे जो सामंत वे कैसे पाछे बाहुडैं मैंने इस जन्म में अनेक लीला विलास किये सुमेरु पर्वत की गुफा तहां नन्दन बन आदि मनोहर बन तिनमें देवां गना समान अनेक राणी सहित नाना प्रकारकी क्रीड़ा करी और आकाशमें लगे रहेहैं शिखर जिन के ऐसे रत्नोंके चैत्यालय जिनेन्द्र देवके कराए विधि पूर्वक भाव सहित जिनेन्द्रदेवकी पूजा करी और अर्थी जो याचेसो दिया ऐसे किमिच्छिक दान दिये इस मनुष्य लोकमें देवों कैसे भोग भोगे और अपने यशसे पृथ्वीपर बंश उत्पन्न किया इस लिये इस जन्ममें तो हम सब बातोंमें इच्छा पूर्ण हैं अब जो महा संग्राममें प्राणोंको तजें तो यह शूरबीरोंकी रीतिहीहै परन्तु क्या हम लोकोंसे यह कहावें कि माली कायर हो कर पीछे हटगया अथवा वहांही मुकाम किया यह निन्दाके लोकोंके शब्द धीरवीर कैसे सुनें धीर

बीरों का चित्त क्षत्रिय व्रत में सावधान है भाईको इसभांति कह आप वैताड़के ऊपर सेना सहित क्षण मात्रमें गये सब विद्याधरों पर आज्ञा पत्र भेजे सो कैएक विद्याधरनने न माने उनके पुर ग्राम उजाड़े और उद्यान के वृक्ष उपार डारे, जैसे कमल के बनको मस्त हाथी उखाड़ै तैसे राक्षस जातिके विद्याधर महा क्रोधको प्राप्त भए तब प्रजाके लोग मालीके कटक से डरकर कांपते संते रथनूपुर नगरमें राजा सहस्रार के शरणे गये चरणोंको नमस्कार कर दीन वचन कहते भए कि हे प्रभो सुकेश का पुत्र माली राक्षस कुली समस्त विजियार्धमें आज्ञा चलावे है हमको पीड़ा करे है आप हमारी रक्षाकरो तब सहस्रार ने आज्ञा करी कि हो विद्याधरो मेरा पुत्र इन्द्र है उसके शरण जाय बीनती करो वह तुम्हारी रक्षाकरने को समर्थ है जैसे इन्द्र स्वर्गलोककी रक्षा करे है तैसे यह इन्द्र समस्त विद्याधरों का रक्षक है।

समस्त विद्याधर इन्द्र पै गये हाथ जोड़ नमस्कार कर सर्व वृत्तान्त कहा तब इन्द्र माली ऊपर महा क्रोधायमान होय गर्व कर मुलकते संते सर्वलोकों से कहते भए पास धरा जो बज्रायुध उसकी ओर देख इन्द्रकेनेत्र लाल होगये हैं मैं लोकपाल लोककीरक्षा करूं जो लोकका कण्टक होय ताहि हेरकर मारूं और वह आपही लड़नेको आया तो इस समान और क्या रण के नगारे बजाए वे वादित्र जिन के श्रवण से मस्त हाथी गज बन्धनको उखाड़ें समस्त विद्याधर युद्धका साज कर इन्द्रपै आये बकतर पहरे हाथमें अनेक प्रकारके आयुध महा हर्ष से धरते संते कैएक रथोंपर कैएक घोड़ों पर चढ़े तथा हस्ती ऊंट सिंह व्याघ्र स्याली तथा मृग हंस छेला वलद मींडा इत्यादि मायामयी अनेक वाहनों पर चढ़ आए कैएक विमान में बैठे कैएक मयूरों पर चढ़े कईएक खचरों पर चढ़े अनेक आए इन्द्रने जो लोकपाल थापे हैं वे

अपने अपने गर्व सहित नाना प्रकार के हथियारोंकर युक्त भौंह टेढ़ी किए आए भयानकहैं मुख जिन के पाठवी हस्ती का नाम ऐरावत उसपर इन्द्र चढ़े बकतर पहिरे शिरपर छत्र फिरते हुये रथनूपुर से बाहिर निकसे विद्याधर जो देव कहावैं इनके और लंका के राक्षसों के महायुद्ध प्रवरता है श्रेणिक! ये देव और राक्षस समस्त विद्याधर मनुष्य हैं नमि विनमि के वंशके हैं ऐसा युद्ध प्रवरता जो कायर जीवों से देखा न जाय हाथियों से हाथी घोड़ों से घोड़े पयादों से पयादे लड़े सेल मुद्गर सामान्य चक्र खड्ग गोफण मूसल गदा कनक पाश इत्यादि अनेक आयुधों से युद्ध भया देवोंकी सेना ने कछुएक राक्षसोंका बल घटाया तब बानरवंशी राजा सूर्यरज रक्षरज राक्षसवंशियों के परम मित्र राक्षसों की सेना को दबा देख युद्धको उद्यमी भए सो इनके युद्धसे समस्त इन्द्रकी सेना के लोकदेव जातिके विद्याधर पीछे हटे इनका बल राक्षसकुली विद्याधर लङ्का के लोक देवों से महा युद्ध करने लगे शास्त्रोंके समूहसे आकाश में अन्धेरा कर डारा राक्षस और बानर वंशीयोंसे देवोंका बल हरा देख इन्द्र आप युद्ध करणेको उद्यमी भए समस्त राक्षसवंशी और वानर बंशी मेघरूप होकर इन्द्ररूप पर्वत पर गाजते हुवे शस्त्र की वर्षा करते भए इन्द्र महा योधा कछुभी विषाद नहीं करता भया किसी का बाण आपको लगने न दीया सबके बाण काट डारे और अपने बाण से कपि और राक्षसों को दबाए तब राजा माली लङ्का के धनी अपनी सेनाको इन्द्र के बल से व्याकुल देख इन्द्र से युद्ध करणे को आय उद्यमी भए कैसे हैं राजा माली क्रोध से उपजा जो तेज उससे समस्त आकाश में किया है उद्योत जिन्हों ने॥ इन्द्रके और माली के परस्पर महा युद्ध प्रवरता माली के ललाट पर इन्द्र ने बाण लगाया माली ने उस बाणकी वेदना न गिनी और इन्द्र के

ललाट पर शक्ती लगाई सो इन्द्र के रुधिर झरने लगा और माली उछल कर इन्द्रपै आया तब इंद्र ने महा क्रोध से सूर्यके बिम्ब समान चक्र से माली का सिर काटा माली भूमि में पड़ा तब सुमाली माली को मुवा जान और इन्द्रको महा बलवान जान सर्व परिवार सहित भागा मालीको भाईका अत्यंत दुःख हुवा जब यह राक्षसबंशी और बानरवंशी भागे तब इन्द्र इनके पीछे लगा तब सौम नामा लोक-पाल ने जो स्वामी की भक्ति में तत्पर है इन्द्र से बीनती करी कि हे प्रभो जब मुझसा सेवक शत्रुओं के मारणे को समर्थ है तब आप इनपर क्यों गमन करें सो मुझे आज्ञा देवो शत्रुओं को निमूल करूं, तब इंद्रने आज्ञा करी, यह आज्ञा प्रमाण इनके पीछे लगा और बाणों के पुंज शत्रुओं पर चलाए कपि और राक्षसों की सेना बाणों से बेधी गई जैसे मेघकी धारा से गाय के समूह व्याकुल होवें तैसे इनकी सर्व सेना व्याकुल भई ॥

अथानन्तर अपनी सेना को व्याकुल देख सुमाली का छोटा भाई माल्यवान् बाहुड़ कर सौम पर आया और सौमकी छाती में भिण्डिपाल नामा हथियार मारा वह मूर्च्छित होगया और जबलग वह सावधान होय तब लग राक्षसवंशी और बानरवंशी पाताल लङ्का जा पहुंचे मानों नया जन्म भया, सिंह के मुख से निकले, सौमने सावधान होकर सर्व दिशा शत्रुओं से शून्य देखी बहुत प्रसन्न होय इन्द्र के निकट गया और इन्द्र विजय पाय ऐरावत हस्तीपर चढ़ा लोकपालों से मण्डित शिरपर छत्र फिरते चवर दुरते आगे अप्सरा नृत्य करती बड़े उत्साह से महा विभूति सहित रथनूपुर में आए वह रथनूपुर रत्नमई वस्त्रोंकी ध्वजावों से शोभे हैं ठौर ठौर तोरणों से शोभायमान है जहां फूलन के ढेर होय रहे हैं अनेक

प्रकार सुगंध से देवलोक समान है, सुन्दर नारियां झरोखों में बैठी इन्द्रकी शोभा देखें हैं इन्द्रराज महल में आए अतिविनय से माता पिता के पायन पड़े, माता पिता ने माथे हाथ धरा और इसके गात सपरशे आशीस दीनी इन्द्र बैरियों को जीत अति आनन्दको प्राप्त भया प्रजा के पालनेमें तत्पर इंद्र के समान भोग भोगे विजियार्ध पर्वत तो स्वर्ग समान और राजा इंद्र लोक में इंद्र समान प्रसिद्ध भया ।

गौतम स्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं कि हे श्रेणिक अब लोकपालों की उत्पतित्त सुनो ये लोक स्वर्ग से चयकर विद्याधर भए हैं राजा मकरध्वज राणी अदिति उसका पुत्र सौम नामा लोकपाल महा कांतिधारी सो इन्द्र ने ज्योति पुर नगर में थापा और पूर्व दिशा का लोकपाल किया और राजा मेघरथ राणी वरुणा उनका पुत्र वरुण उसको इंद्रने मेघपुर नगर में थापा और पश्चिम दिशाकालोकपाल किया जिसके पास पाश नामा आयुध जिसका नाम सुनकर शत्रु अति डरें और राजा सूर्य राणी कनकांवली उसका पुत्र कुवेर महा विभूतिवान उसको इन्द्र ने कांचनपुर में थापा और उत्तर दिशा का लोकपाल किया और राजा बालाग्नि विद्याधर राणी श्री प्रभा उसका पुत्र यम नामा महा तेजस्वी उसको किहकंधपुर में थापा और दक्षिण दिशाका लोकपाल किया और असुर नामा नगर ताके निमाली विद्याधर वे असुर ठहराए और यक्षकीर्ति नामा नगर के विद्याधर यक्ष ठहराए और किन्नर नगरके किन्नर गंधर्व नगर के गंधर्व इत्यादिक विद्याधरोंकी देव संज्ञाधरी इन्द्रकी प्रजा देव जैसी क्रीड़ा करे यह राजा इन्द्र मनुष्य योनि में लक्ष्मी का विस्तार पाय लोगों से प्रशंसा पाय आपको इंद्रही मानता भया और कोई स्वर्गलोक है इंद्र है देव हैं यह सर्वबातभूल भया और आपहीको इन्द्र जाना विजियार्धगिरिको स्वर्ग जाना अपने थापे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोकपाल जाने और विद्याधरों को देव जाने इस भांति गर्वको प्राप्त भया कि मेरु से अधिक पृथिवीपर और कोई नहीं मैंही सर्वकी रक्षा करूं यह दोनों श्रेणी का अधिपति होय ऐसा गर्वा कि मैंही इंद्र हूं।

कौतुकमङ्गल नगरका राजा व्योमविंदु पृथिवीपर प्रसिद्ध उसके राणी मन्दवती उसके दो पुत्री भई बड़ी कौशिकी छोटी केकसी कौशिकी राजा विश्रवको परणाई जो यक्षपुर नगरके धनीथे उनके वैश्रवण पुत्र भया अति शुभ लक्षण का धारणहारा कमल सारिषेनेत्र उसको इन्द्रने बुलाकर बहुत सन्मान किया और लंका के थाने राखा और कहा मेरे आगे चार लोकपाल हैं तैसे तू पांचवां महा बलवान है तब वैश्रवण ने विनती करी कि प्रभो जो आज्ञा करो सोही मैं करूं ऐसा कह इन्द्रको प्रणाम कर लंका को चला सो इन्द्रकी आज्ञा प्रमाण लंका के थाने रहै जाको राक्षसों की शंका नहीं जिसकी आज्ञा विद्याधरों के समूह अपने सिरपर धरैं हैं ॥

पाताल लंका में सुमाली के रत्नश्रवा नामा पुत्र भया महा शूरवीर दातार जगत् का प्यारा उदारचित्त मित्रों के उपकार निमित्त हे जीवन जिसका और सेवकों के उपकार निमित्त है प्रभुत्व जिसका पण्डितों के उपकार निमित्त है प्रवीणपणा जिसका भाइयोंके उपकार निमित्तहै लक्ष्मीका पालन जिसके दरिद्रियों के उपकार निमित्त है ऐश्वर्य जिसका साधुओंकी सेवा निमित्त है शरीर जिसका जीवन के कल्याण निमित्तहै बचन जिसका सुकृतके स्मरण निमित्तहै मन जिसका धर्मके अर्थ है आयु जिसका शूरवीरता का मूलहै स्वभाव जिसका सो पिता समान सब जीवोंका दयालु जिसके परस्त्री माता समान पर द्रव्य तृण समान पराया शरीर अपने शरीर समान महा गुणवान जो गुणवंतोंकी गिनती करें तहां

For Private and Personal Use Only

इसको प्रथम गिणे और दोषवन्तों की गिणती में नहीं आवे उसका शरीर अद्भुत परमाणुवों कर रचाहै जैसी शोभाइसमें पाइये तैसी और ठौर दुर्लभहै संभाषणमें मानोंअमृतही सींचे है अर्थियोंको महादान देता भया धर्म अर्थ काम में बुद्धिमान् धर्म का अत्यंत प्रिय निरन्तर धर्महीका यत्न करै, जन्मांतर से धर्मको लिये आया है जिसके बड़ा आभूषण यशही है और गुणही कुटुम्ब है वह धीर वीर बैरियों का भय तजकर विद्या साधने के अर्थ पुष्पक नामा बनमें गया वह बनभूत पिशाचादिक के शब्द से महा भयानक है यहतो वहां विद्या साधे है और राजा व्योमविंदुने अपनी पुत्री केकसी इसकी सेवा करणेको इसके ढिग भेजी सो सेवाकरे हाथ जोड़े रहे आज्ञाकी है अभिलाषा जिसके कैएक दिनों में रत्नश्रवाका नियम समाप्त भया, सिद्धोंको नमस्कार कर मौन छोड़ा केकसी को अकेली देखी कैसी है केकसी सरल हैं नेत्र जिसके नीलकमल समान सुन्दर और लाल कमल समान है मुख जिसका कुन्दके पुष्प समान हैं दन्त और पुष्पोंकी माला समान हैं कोमल सुन्दर भुजा और मूङ्गा समान हैं कोमल मनोहर अधर मौलश्री के पुष्पोंकी सुगन्ध समान है निश्वास जिसके चंपेकी कली समान है रङ्ग जिसका अथवा उस समान चंपक कहां और स्वर्ण कहां मानो लक्ष्मी रत्नश्रवाके रूपमें वश हुई कमलों के निवास को तज सेवा करनेको आई है। चरणारविंद की ओर हैं नेत्र जिसके लज्जा से नम्रीभूत है शरीर जिसका अपने रूप वा लावण्य से कूंपलोंकी शोभाको उलंघती हुई स्वासनकी सुगन्धतासे जिसकेमुखपर भ्रमर गुंजार करे हैं। अति सुकुमार है तनु जिसका और यौवन आवतासा है मानों इसकी अति सुकुमारता के भय से यौवनभी स्पर्शता शंके है। मानो समस्त स्त्रियोंका रूप एकत्रकर बनाई है अद्भुत है सुन्दरता

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिसकी मानों साक्षात् विद्याही शरीर धार कर रत्नश्रवा के तपसे वशी होकर महा कांतिकी धारणहारी आई है तब रत्नश्रवा जिनका स्वभावही दयावान है केकसी को पूछते भए कि तू कौनकी पुत्री है और कौन अर्थ अकेली यूथ से बिछुरी मृगी समान महा वन में रहे है और तेरा क्या नाम है तब यह अत्यन्त माधुर्यता रूप गद गद वाणी से कहती भई कि राजा व्योमबिंदु राणी नन्दवती तिनकी मैं केकसी नामा पुत्री आपकी सेवा करणेको पिता ने राखी है उसी समय रत्नश्रवा को मानस स्तम्भिनी विद्या सिद्ध भई सो विद्याके प्रभावसे उसी बनमें पुष्पांतक नामा नगर बसाया और केकसी को विधि पूर्वक परणा और उसी नगर में रहकर मन वांछित भोग भोगते भए, प्रिया प्रीतम में अद्भुत प्रीति होती भई एक क्षणभी आपस में वियोग सहार न सके यह केकसी रत्नश्रवा के चित्तका बन्धनहोती भई दोनों अत्यन्त रूपवान नव यौवन महा धनवान इनके धर्म के प्रभावसे किसीभी वस्तुकी कमी नहीं यह राणी पतिव्रता पतिकी छाया समान अनुगामिनी होती भई ॥

एकसमय यह राणी रत्न के महल में सुन्दर सेज पर पड़ी हुई थी सेजका वस्त्र क्षीर समुद्रकी तरङ्ग समान उज्ज्वल है और महा कोमल है अनेक सुगन्धकर मण्डित है रत्नों का उद्योग होय रहा है राणी के शरीरकी सुगन्ध से भ्रमर गुञ्जार करैं हैं अपने मनका मोहनहारा जो अपना पति उसके गुणोंको चिंतवती हुई और पुत्रकी उत्पत्ति को वांछती हुई पड़ी थी रात्री के पिछले पहरे महा आश्चर्यके करणहारे शुभ स्वपने देखे फिर प्रभात में अनेक बाजे बाजे शंखोंका शब्द भया मागध बन्दी जन विरद बखानते भए तब राणी सेजसे उठकर प्रभात क्रिया कर महा मङ्गल रूप आभूषण पहर सखियोंकर मण्डित पतिके ढिग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाई, राजा राणी को देख उठे बहुत आदर किया दोऊ एक सिंहासनपर विराजे राणी हाथ जोड़ राजा से विनती करती भई हे नाथ आज रात्री के चतुर्थ पहर में मैंने तीन शुभ स्वपन देखे हैं एक महा बली सिंह गाजता अनेक गजेन्द्रों के कुम्भस्थल विदारता हुवा परम तेजस्वी आकाशसे पृथिवीपर आय मेरे मुख में होकर कुक्षि में आया और सूर्य अपनी किरणों से तिमिरका निवारण करता मेरी गोदमें आय तिष्ठा और चन्द्रमा अखण्ड है मण्डल जिसका सो कुमुदनको प्रफुल्लित करता और तिमिरको हरताहुवा मैंने अपने आगे देखा यह अद्भुत स्वप्न मैंने देखे सो इनके फल क्याहैं तुम सर्व जानने योग्य हो स्त्रियों को पतिकी आज्ञाही प्रमाण है तब यह बात सुन राजा स्वप्नके फलका व्याख्यान करते भये राजा अष्टांग निमित्त के जाननहारे जिन मार्ग में प्रवीण हैं हे प्रिये तेरे तीन पुत्र होंगे जिनकी कीर्ति तीन जगत् में विस्तरैगी बड़े प्राक्रमी कुल के वृद्धि करणेहारे पूर्वोपार्जित पुण्य से महा सम्पदा के भोगनेहारे देवों समान अपनी कांति से जीता है चन्द्रमा अपनी दीप्ति से जीता है सूर्य अपनी गम्भीरता से जीता है समुद्र और अपनी स्थिरतासे जीताहै पर्वत जिन्होंने स्वर्गके अत्यन्त सुख भोग मनुष्यदेह धरेंगे महा बलवान जिनको देवभी न जीत सकैं मनवांछित दानकेदेनेहारे कल्पवृक्षके समान और चक्रवर्तीसमान ऋद्धिजिनकी अपने रूपसे सुन्दर स्त्रियोंके मनहरणहारे अनेक शुभ लक्षणोंकर मंडित उतंग है वक्षस्थल जिनका जिनका नामही श्रवणमात्रसे महा बलवान वैरी भय मानेंगे तिनमें प्रथम पुत्र आठवां प्रतिवासुदेव होयगा महासाहसी शत्रुओंके मुख रूप कमल मुद्रित करणेको चन्द्रमा समान तीनों भाई ऐसे योधा होंगे कि युद्धका नाम सुनकर जिनके हर्षके रोमांच होवें बड़ा भाई कछू इक भयंकर होयगा जिस वस्तु की

For Private and Personal Use Only

हठ पकड़ेगा उसको न छोड़ेगा जिसको इन्द्र भी समझानेको समर्थ नहीं ऐसा पतिका बचन सुनकर राणी परम हर्षको प्राप्त होय विनय सहित भरतारको कहती भई। हे नाथ हम दोऊ जिनमार्ग रूप अमृतके स्वादी कोमल चित्त हमारे पुत्र क्रूरकर्मा कैसे होय। हमारे तो जिन बचनमें तत्पर कोमल परिणामी होना चाहिये अमृतकी बेलपर विष पुष्प कैसे लागे तब राजा कहते भए कि हे सुन्दर मुखी तू हमारे बचन सुन यह प्राणी अपने २ कर्मके अनुसार शरीर धरेहैं इस लिये कर्मही मूल कारणहै हम मूल कारण नहीं हम निमित्त कारणहैं तेरा बडा पुत्र जिनधर्मी तो होयगा परंतु कुछ इक क्रूर परिणामी होयगा और उसके दो लघुवीर महाधीर जिनमार्गमें प्रवीण गुणमें पूर्ण भली चेष्टाके धारणहारे शील के सागर होवेंगे संसार भ्रमणका है भय जिनका धर्ममें अति दृष्टि महा दयावान सत्य बचनके अनु रागी होवेंगे उन दोनोंके ऐसाही सौम्यकर्मका उदयहै, हे कोमल भाषिणी हे दयावती प्राणी जैसा कर्म करेहै तैसाही शरीर धरेहै ऐसा कहकर वे दोनों राजा और राणी जिनेन्द्रकी महा पूजा प्रवरते वे दोनों रात दिवस नियम धर्ममें सावधान हैं ॥

अथानन्तर प्रथमही गर्भमें रावण आए तब माताकी चेष्टा कुछ क्रूर होती भई यह बांछा भई कि बैरियोंके सिरपर पांव धरूं राजा इंद्रके ऊपर आज्ञा चलाऊं बिना कारण भौंह टेढी करणी कठोर बाणी बोलना यह चेष्टा होती भई शरीरमें खेद नहीं दर्पण विद्यमानहै तौभी खड्गमें मुख देखना सखी जनसे खिझ उठना किसीकी शंका न राखनी ऐसा उद्धत चेष्टा होती भई नवमें महीने रावणका जन्म भया जिस समय पुत्रजन्मा उससमय बैरियोंके आसन कम्पायमान भए सूर्य समानहै ज्योति जिसकी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐसा बालक उसको देखकर परिवारके लोकोंके नेत्र थकित होय रहे देव दुन्दुभी बाजे बजाने लगे वैरियोंके घरमें अनेक उत्पात होने लगे माता पिताने पुत्रके जन्मका अति हर्ष किया प्रजाके सर्व भय मिटे पृथ्वीका पालक उत्पन्न भया सेजपर सूधा पड़े अपनी लीलाकर देवोंके समानहै दर्शन जिसका राजा रत्नश्रवाने बहुत दान दिया। आगे इनके बड़े जो राजा मेघवाहन भए उनको राक्षसोंके इन्द्र भीमने हार दियाथा जिसकी हजार नागकुमार देव रक्षा करें वह हार पास धराथा सो प्रथम दिवस ही के बालकने खैंच लिया बालककी मुट्ठीमें हार देख माता आश्चर्य को प्राप्त भई और महा स्नेहसे बालक को छातीसे लगाय लिया और सिर चूंबा और पिताने भी हार सहित बालकको देख मन में विचारी कि यह कोई महा पुरुष है हजार नागकुमार जिसकी सेवा करें ऐसे हार से क्रीड़ा करता है यह सामान्य पुरुष नहीं इसकी शक्ति ऐसी होयगी जो सर्व मनुष्यों को उलंघे आगे चारण मुनि ने मुझे कहाथा कि तेरे पदवीधर पुत्र उत्पन्न होवेंगे सो आप प्रतिवासुदेव शलाका पुरुष प्रगट भए हैं। हारके योगसे दश बदन पिताको नजर आए तब इसका दशानन नाम धरा फिर कुछ कालमें कुम्भकर्ण भए सूर्य समान है तेज जिसका फिर कुछ इक काल में पूर्णमाशी के चंद्रमा समान है बदन जिसका ऐसी चन्द्रनखा बहिन भई फिर विभीषण भए महा सौम्य धर्मात्मा पाप कर्म रहित मानों साक्षात् धर्महीं देह धारी अवतरा है। जिनके गुणोंकी कीर्ति जगत में गाइये है ऐसे दशाननकी बाल क्रीड़ा दुष्टोंको भय रूप होती भई। और दोनों भाइयोंकी क्रीड़ा सौम्य रूप होती भई कुम्भकर्ण और विभीषण दोनोंके मध्य चन्द्रनखा चांद सूर्यके मध्य सन्ध्या समान शोभती भई रावण बाल अवस्थाको उलंघ कर कुमार अवस्था में आया।

एक दिन रावण अपनी माताकी गोदमें तिष्ठेथा अपने दांतोंकी कांतिसे दशों दिशा में उद्योत करता हुआ जिसके सिरपर चूड़ामणि रत्न धराहै उस समय वैश्रवण आकाश मार्गसे जा रहाथा वह रावणके ऊपर होय निकला अपनी कांतिसे प्रकाश करता हुआ विद्याधरोंके समूहसे युक्त महा बलवान विभूतिका धनी मेघ समान अनेक हाथियोंकी घटा मदकी धारा बरसते जिनके विजली समान सांकल चमकै महा शब्द करते आकाश मार्गसे निकसे सो दशोंदिशा शब्दायमान होय गई आकाश सेनासे व्याप्त होगया रावणने ऊंची दृष्टिकर देखा तो बड़ा आडंबर देखकर माताको पूछा यह कौन है और अपने मानसे जगतको तृण समान गिनता महा सेना सहित कहां जायेहै । तब माता कहती भई कि तेरी मासीका बेटा है सर्व विद्या इसको सिद्धहैं महा लक्ष्मीवानहै शत्रुओंका भय उपजावता हुआ पृथ्वी पर विचरे हैं महा तेजवानहै मानो दूसरा सूर्यही है राजा इन्द्रका लोकपाल है इन्द्र ने तुम्हारे दादाका बड़ा भाई माली युद्धमें मारा और तुम्हारे कुलमें चली आई जो लंकापुरी वहां से तुम्हारे दादेको निकासकर इसको रखा है यह लंकाके लिये तेरा पिता निरन्तर अनेक मनोरथ करे है रात दिन चैन नहीं पड़ेहै और मैंभी इस चिन्तामें सूखगई हूं । हे पुत्र स्थान भ्रष्ट होनेसे मरण भला ऐसा दिन कब होय जो तू अपने कुलकी भूमिको प्राप्त होय और तेरी लक्ष्मी हम देखें तेरी विभूति देखकर तेरे पिताका और मेरा मन आनन्दको प्राप्त होय ऐसा दिन कब होयगा जब तेरे यह दोनों भाइयोंकी विभूति सहित तेरी लार इस पृथिवीपर प्रताप युक्त हम देखेंगे तुम्हारे दुश्मन न रहेंगे यह माताके दीनवचन सुन और अश्रुपात डारती देखकर विभीषण बोले प्रगट भयाहै क्रोधरूप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषका अंकुर जिनके, हे माता कहां यह रंक वश्रवण विद्याधर जो देव होय तौभी हमारी दृष्टिमें न आवे तुमने इसका इतना प्रभाव वरणन किया तू वीरप्रसवनीअर्थात् योधावोंकी माताहै महाधीरहै औरजिन मार्ग में प्रवीणहै यह संसारकी क्षणभंगुर माया तेरेसे छानी नहीं काहेको ऐसे दीन वचन कायर स्त्रियोंके समान तू कहैहै क्या तुझे इस रावणकी खबर नहींहै यह श्रीवत्सलक्षणाकर मंडित अद्भुत पराक्रमका धारनहारा महाबली अपारहै चेष्टा जिसकी भस्मसे जैसे अग्नि दबी रहे तैसे मौन गह रहाहै यह समस्त शत्रुओं के भस्म करणेको समर्थहै क्या तेरे विचारमें अबतक नहीं आयाहै यह रावण अपनी चालसे चितको भी जीतेहै और हाथकी चपेटसे पर्वतोंको चूर डारे है इसकी दोनोंभुजा त्रिभुवनरूप मंदिरके स्तंभहैं और प्रताप का राजमार्गहै चक्रवतीरूप वृक्षके अंकुर हैं सो तैंने क्या नहीं जाने इस भांति विभीषणने रावणके गुण वर्णन करे। तब रावण मातासे कहता भया हे माता गर्वके वचन कहने योग्य नहीं परंतु तेरे संदेह के निवारने अर्थमें सत्य वचन कहूंहूं सो सुन जो यह सकल विद्याधर अनेक प्रकार विद्यासे गर्वित दोनों श्रेणियोंके एकत्र होयकर मेरेसे युद्ध करें तौभी मैं सबको एक भुजासे जीतूं।

रावण कहता भया कि हे माता यद्यपि मैं सर्व विद्याधरोंके जीतने को समर्थ हूं तथापि हमारे विद्या धरों के कुल में विद्या का साधन उचित है इसमें कुछ लाज नहीं जैसे मुनिराज तपका आराधन करें तैसे विद्याधर विद्याका आराधन करें सो हमको करणा योग्य है ऐसा कहकर दोनों भाइयों के सहित माता पिता को नमस्कार कर नवकार मन्त्रका उच्चारण कर रावण विद्या साधनेको चले माता पिताने मस्तक चूमा और असीस दीनी, पाया है मङ्गल संस्कार जिन्होंने स्थिर भूत है चित्त जिनका घरसे निकसकर

For Private and Personal Use Only

हर्षरूप होये भीमनामा महावनमें प्रवेश किया । उस वनमें सिंहादि क्रूर जीव नादकर रहेहें विकरालहैं दाढ़ और बदन जिनके और सूते हुवे अजगरोंके निश्वाससे कंपायमानहैं बड़े वृक्ष जहां और नाचेहैं व्यन्तरोंके समूह जहां जिनके पायनसे कंपायमानहै पृथ्वी तल जहां महा गंभीर गुफाओंमें अन्धकारका समूह फैल रहाहै मनुष्योंकी तो क्या बात जहां देव भी गमन न कर सकेहैं जिसकी भयंकरता पृथ्वी में प्रसिद्धहै जहां पर्वत दुर्गम महाअन्धकारको धरे गुफा और कंटकरूप वृक्ष हैं मनुष्योंका संचार नहीं वहां ये तीनों भाई उज्ज्वल धोती दुपट्टा धारे शांति भावको ग्रहणकर सर्व आशा निवृतकर विद्याके अर्थ तप करणेको उद्यमी भए निशंकहै चित्त जिनका पूर्ण चन्द्रमा समान है बदन जिनका विद्याधरोंके शिरोमणि जुदे २ वनमें विराजे डेढ़ दिनमें अष्टाक्षर मंत्रके लक्ष जाप किये सो सर्व काम प्रदा विद्या तीनों भाइयोंको सिद्ध भई मन वांछित अन्न इनको विद्या पहुंचावे क्षुधाकी बाधा इनको न होती भई फिर यह स्थिर चित्तहोय सहस्रकोटि षोड़शाक्षरमंत्रजपते भए उस समय जम्बूद्वीपका अधिपति अनावृति नामा यक्ष स्त्रियों सहित क्रीडा करता आया उसकी देवांगना इन तीनों भाइयोंको महा रूपवान और नवयौवन तपमें सावधान देख कौतुक कर इनके समीप आई कमल समान हैं मुख जिनके भ्रमर समानहैं श्याम सुन्दर केश जिनके कैएक आपसमें बोलीं अहो यह राजकुमार अति कोमल शरीर कांतिधारी वस्त्राभरण सहित कौन अर्थ तप करेहैं इनके शरीरकी कांति भोगों बिना न सोहे कहां इनकी नवयौवन वय और कहां यह भयानक वनमें तप करना। फिर इनके तप के डिगावनके अर्थ कहती भई अहो अल्पबुद्धि तुम्हारा सुंदर रूपवान शरीर भोगका साधनहै योग

का साधन नहीं इस लिये काहेको तपका खेद करो हो उठो घरचलो अब भी कुछ नष्ट गया इत्यादि अनेक वचन कहे परन्तु इनके मनमें एकभी न आई जैसे जलकी बून्द कमलके पत्रपर न ठहरे तब वे आपसमें कहती भई हे सखी ये काष्ट मई हैं सर्व अंग इसके निश्चल दीखेहै ऐसा कहकर क्रोधाय मान होय तत्काल समीप आई इनके विस्तीर्ण हृदयपर कुण्डल मारा तौभी ये चलायमान न भये स्थिर भूतहै चित्त जिनका कायर पुरुष होय सोई प्रतिज्ञा से डिगे देवियों को कहते हुए देखने के अनाव्रत यक्षने हंसकर कहा भो सत्पुरुषो काहे को दुर्धर तप करो हो और किस देवको आराधो हो ऐसा कहा तौभी ये नहीं बोले चित्रामसे होयरहे तब अनाव्रतने क्रोध किया कि जम्बूद्वीपका देव तो मैं हूं मुझको छोड़कर किसको ध्यावै हैं ये मन्दबुद्धिहैं इनको उपद्रव करणेके अर्थ अपने किंकरोंको आज्ञा करी किंकर स्वभावहीसे क्रूरथे और स्वामीके कहेसे उन्होंने औरभी अधिक अनेक उपद्रव किए कैएकतो पर्वत उठाय लाए और इनके समीप पटके तिनके भयंकर शब्द भये कैएक सर्प होय सर्व शरीरसे लिपटगए कैएक नाहर होय मुख फाडकर आये और कैएक शब्द कानमें ऐसे करते भए जिनको सुनकर लोक बहिरे होय जायें मायामई डांस बहुत किये सो इनके शरीरमें आय लागे और मायामई हस्ती दिखाये असराल पवन चलाई मायामई दावानल लगाई इस भांति अनेकउपद्रव किये तौभी यह ध्यानसे न डिगे निश्चल है अन्तःकरण जिनका तब देवोंने मायामई भीलोंकी सेना बनाई अन्धकार समान बिकराल आयुधों को धरे इनको ऐसी माया दिखाई कि पुष्पांतक नगरमें महा युद्धमें रत्नश्रवाको कुटंब सहित बंधा हुआ दिखाया और यह दिखाया कि माता केकसी बिलाप करे है कि हे पुत्रो इन चाण्डाल भीलों

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ने तुम्हारे पिताके साथ महा उपद्रव कियाहै और यह चांडाल मुझे मारैहै पावोंमें बेढ़ी डारी हैं माथेके केश खींचेहैं, हे पुत्रो तुम्हारे आगे मुझे यह म्लेच्छ भील पल्लीमें लिये जायहैं तुम कहतेथे कि जो समस्त विद्या धर एकत्र होय मुझसे लड़ें तौभी न जीता जाऊं सो यह बार्ता तुम मिथ्याही कहतेथे अब तुम्हारे आगे म्लेच्छ चांडाल मुझे केश पकड़े खींचे लिये जायहैं तुम तीनोंही भाई इन म्लेच्छोंसे युद्ध करने समर्थ नहीं मंद पराक्रमी हो हे दशग्रीव तेरा स्तोत्र विभीषण वृथाही करेथा तू तो एक ग्रीवाभी नहीं जो माताकी रक्षा न करे और यह कुंभकर्ण हमारी पुकार कानोंसे नहीं सुनेहै और यह विभीषण कहावैहै सो वृथाहै एक भीलसे लड़ने समर्थभी नहीं और यह म्लेछ तुम्हारी बहिन चंद्रनखाको लिये जायहै सो तुमको लज्जा नहीं आती विद्या जो साधिएहै सो मातापिताकी सेवा अर्थ सो यह विद्या किस काम आवेगा मायामई देवोंने इस प्रकार चेष्टा दिखाई तौभी यह ध्यानसे न डिगे। तब देवोंने एक भयानक माया दिखाई अर्थात् रावणके निकट रत्नश्रवाका सिर कटा दिखाया और रावणके निकट भाइयोंके सिर काटे दिखाए और भाइयोंके निकट रावणका भी सिर कटा दिखाया परंतु रावण तो सुमेरु पर्वत समान अति निश्चलही रहे जो ऐसा ध्यान महा मुनितो अष्ट कर्मकोषको छेदें परंतु कुंभकर्ण विभीषणके कुछ इक व्याकुलता भई परन्तु कुछ विशेष नहीं ॥

रावणको तो अनेक सहस्र विद्या सिद्धि भई जेते मंत्र जपनेके नेम कियेथे वह पूर्ण होनेसे पहिले ही विद्या सिद्ध भई। धर्मके निश्चयसे क्या न होय और ऐसा दृढ़ निश्चयभी पूर्वोपार्जित उज्ज्वल कर्मसे होयहै कर्मही संसारका मूल कारणहै कर्मानुसार यह जीव सुखदुख भोगेहै समयपरउत्तम पात्रोंको विधि

For Private and Personal Use Only

से दानदेना और दयाभावसे सदा सबको देना और अन्त समय समाधिमरण करना और सम्यकज्ञानकी प्राप्ति किसी उत्तम जीवहीको होय है कैएकोंको तो विद्या दस वर्षों में सिद्धि होयहै कैएकको एक मास में कैएकको क्षणमात्रमें यह सब कर्मोंका प्रभाव जानो रात्रिदिन धरतीपर कोई भ्रमण करो अथवा जल में प्रवेश करो तथा पर्वतके मस्तकसे परो अनेक शरीरके कष्ट करो तथापि पुण्यके उदय बिना कार्य सिद्धि नहीं होता जे उत्तम कर्म नहीं करेहै वे वृथा शरीर खोवेहैं इसलिये सर्व आदरसे आचार्यों की सेवा करके पुरुषोंको सदा पुण्यही करना योगहै पुण्य बिना कहांसे सिद्धि होय। पुण्य का प्रभाव देख कि थोड़े ही दिनोंमें और मन्त्र विधि पूर्ण होनेसे पाहिले ही रावण को महा विद्या सिद्धि भई जेजे विद्या सिद्धि भई तिनके संक्षेपता से नाम सुनो नभःसंचारिणी कामदायिनी कामगामिनी दुर्निवारा जगतकंपा प्रगुप्ति भानुमालिनी अणिमा लघिमा क्षोभा मनस्तंभकारिणी संवाहिनी सुरध्वंसीकौमारी वध्य कारणी सुविधाना तमोरूपा दहना विपलोदरी शुभप्रदा रजोरूपा दिनरात्रिविधायिनी बज्रोदरी समाकृष्टि अदर्शिनीअजराअमरा अनवस्तंभिनी तोयस्तंभिनीगिरिदारिणी अवलोकिनी ध्वंसी धीराघोरा भुजंगिनी वीरिनीएकभुवना अवध्यादारुणा मदनासिनी भास्करी भयसंभूतिऐशानि विजिया जया बंधिनी मोचनी बाराही कुटिलाकृति चितोद्भयकरी शांति कौवेरी वशकारिणी योगेश्वरी बलोत्साही चंडा भीति प्रविर्षिणी इत्यादिअनेक महा विद्या रावणको थोड़े ही दिनोंमें सिद्ध भई तथा कुम्भकर्णको पांच विद्या सिद्ध भई उन के नाम सर्वहारिणी अतिसंवर्धिनी जृंभिजी व्योमगामिनी निद्रानी तथा विभीषणको चार विद्या सिद्ध भई सिद्धार्था शत्रु दमनी व्याघाता आकाशगामिनी यह तीनोही भाई विद्याके ईश्वर होते भये और

देवों के उपद्रव से मानों नए जन्म में आए तब यक्षों का पति अनावृत जम्बूद्वीप का स्वामी इनको विद्यायुक्त देखकर बहुत अस्तुति करताभया और दिव्य आभूषण पहराए रावणने विद्याके प्रभावसे स्वयंप्रभनगर बसाया वह नगर पर्वत के शिखर समान ऊंचे महलों की पंक्तिसे शोभायमान है और रत्नमई चैत्यालयों से अति प्रभा को धरे है जहां मोतियोंकी जाली से ऊंचे झरोखे शोभे हैं पद्मराग मणियों के स्तंभ हैं नानाप्रकार के रत्नोंके रङ्गके समूह से जहां इंद्र धनुष होय रहाहै रावण भाइयों सहित उस नगर में विराजे राज महलों के शिखर आकाश में लगरहे हैं विद्याबलकर मण्डित रावण सुख से तिष्ठै जम्बूद्वीप का अधिपति अनावृत देव रावण सो कहता भया कि हे महामते तेरे धीर्य से मैं बहुत प्रसन्नभया और मैं सर्व जम्बूद्वीप का अधिपति हूं तू यथेष्ट वैरियों को जीतताहुआ सर्वत्र विहारकर हे पुत्र मैं प्रसन्न भया और तेरे स्मरणमात्र से निकट आऊंगा तबतुझे कोई भी न जीतसकेगा और बहुत काल भाइयों सहित सुखसो राजकर तेरे विभूति बहुत होवे इस भांति आशीर्वाद देय बारम्बार इसकी स्तुतिकर यक्ष परिवार सहित अपने स्थान को गया समस्त राक्षबंशी विद्याधरों ने सुनो कि रत्नश्रवा का पुत्र रावण महा विद्या संयुक्त भया सो सबको आनन्द भया सर्वही राक्षस बड़े उत्साह सहित रावणके पास आए कैएक राक्षस नृत्य करें हैं कैएक गान करें हैं कैएक शत्रु पक्षको भयकारी गाजैं हैं कैएक ऐसे आनन्द से भरगये हैं कि आनन्द अंग में न समावें है कैएक हंसे कैएक केलि कर रहे हैं सुमाली रावण का दादा और उसका छोटा भाई माल्यवान तथा सूर्य रज रक्ष रज राजा बानरवंशी सबही सुजन आनन्द सहित रावणपै चले अनेक वाहनों पर चढे हर्ष से आवे हैं रत्नश्रवा रावणके पिता पुत्रके स्नेहसे भरगया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है मन जिसका ध्वजावों से आकाशको शोभित करताहुवा परम विभूति सहित महा मन्दिर समान रत्नन के रथ पर चढ़ आया बन्दीजन विरद बाखाने हैं सर्व इकट्ठे होयकर पद्म सङ्गमनामा परवतपर आए रावण सन्मुख गया दादा पिता और सूर्यरज रक्ष रज बड़े हैं सो इनको प्रणाम कर पायन लगा और भाइयों को बगलगिरी कर मिला और सेवक लोगोंको स्नेहकी नजरसे देखा और अपने दादा पिता और सूर्यरज रक्षरज से बहुत विनयकर कुशलक्षेम पूछी फिर उन्होंने रावणसे पूछी रावणको देख गुरुजन ऐसे खुशी जो कहने में न आवे बारम्बार रावणसे सुखवार्ता पूछें और स्वयं प्रभ नगरको देखकर आश्चर्य को प्राप्त भए देवलोक समान यह नगर उसको देख कर राक्षस वंशी और बानरबंशी सबही अति प्रसन्न भए और पिता रत्नश्रवा और माता केकसी पुत्र के गातको स्पर्शते हुये और इसको बारम्बार प्रणाम करता हुवा देखकर बहुत आनन्दको प्राप्त भए दुपहर के समय रावण ने बड़ोंको स्नान करावनेका उद्यमकिया तब सुमाली आदि रत्नों के सिंहासनपर स्नान के अर्थ विराजे सिंहासन पर इनके चरण पल्लव सारिखे कोमल और लाल ऐसे शोभते भए जैसे उदयाचल पर्वत पर सूर्य शोभे फिर स्वर्ण रत्नों के कलशों से स्नान कराया कलश कमल के पत्रों से आछादित हैं और मोतियों की माला से शोभे हैं और महा कांतिको धरे हैं और सुगन्ध जल से भरे हैं जिनकी सुगन्धसे दशों दिशा सुगन्धमई होयरहीहै और जिन पर भ्रमर गुञ्जार कर रहे हैं स्नान करावते जब कलशों का जल डारिए है तब मेघ सारिखे गाजे हैं पहले सुगन्ध द्रव्यों से उबटना लगाया पीछे स्नान कराया स्नान के समय अनेक प्रकारके वादित्र बजे स्नान कराकर दिव्य वस्त्राभूषण पहराए और कुलवन्तनी राणियों मे अनेक मंगलाचरण कीए रावणादि तीनों

For Private and Personal Use Only

भाई देवकुमार सारिखे गुरुवोंका अति विनय कर चरणोंकी बन्दना करते भए तब बड़ों ने बहुत आशीर्वाद-दी हे पुत्रो तुम बहुत काल जीवो और महा सम्पदा भोगो तुम्हारीसी विद्या और में नहीं सुमाली माल्य वान सूर्यरज रचरज और रत्नश्रवा इन्हों ने स्नेह से रावण कुम्भकरण बिभीषण को उरसे लगाया फिर समस्त भाई और समस्त सेवक लोग भली विधि सों भोजन करतेभये रावण ने बड़ोंकी बहुत सेवा करी और सेवक लोगों का बहुत सन्मान किया सबको वस्त्राभूषण दीए सुमाली आदि सर्वही गुरुजन फूल गए हैं नेत्र जिनके रावण से अति प्रसन्न होय पूछते भये हे पुत्रो! तुम बहुत सुखसे हो तब नमस्कार कर यह कहते भये हे प्रभो हम आपके प्रसादसे सदा कुशल रूप हैं फिर बाबा माली की बात चली सो सुमाली शोक के भार से मूर्छा खाय गिरा तब रावण ने शीतोपचार से सचेत किये और समस्त शत्रुवों के समूहके घातरूप सामन्तताके वचन कहकर दादा को बहुत आनन्द रूप किया सुमाली कमलनेत्र रावणको देखकर अति आनन्दरूप भए सुमाली रावणको कहते भए अहो पुत्र तेरा उदार पराक्रम जिसे देख देवता प्रसन्न होय अहो कांति तेरी सूर्यको जीतनेहारी गम्भीरता तेरी समुद्रसे अधिक पराक्रम तेरा सर्व सामन्तों को उलंघे अहो वत्स हमारे राक्षस कुलका तू तिलक प्रगट भयाहै जैसे जम्बूद्वीपका आभूषण सुमेरु है और आकाश के आभूषण चांद सूर्य हैं तैसे हे पुत्र रावण अब हमारे कुलका तू मण्डनहै महा आश्चर्यकी करणहारी चेष्टा तेरी सकल मित्रोंको आनन्द उपजावे है जब तू प्रगटभया तब हमको क्या चिन्ता है आगे अपने वंश में राजा मेघबाहन आदि बड़े बड़े राजा भये वे लंकापुरीका राज करके पुत्रों को राजदेय मुनि होय मोक्ष गये अब हमारे पुण्य से तू भया सर्व राक्षसोंके कष्ट का हरणहारा शत्रुवर्ग

का जीतनेहारा तू महा साहसी हम एक मुख से तेरी प्रशंसा कहांलों करें ते रे गुण देवभी न कह सके यह राक्षसवंशी विद्याधर जीवनेकी आशा छोड़ बैठेथे सो अब सबकी आशा बन्धी तू महाधीर प्रगट भया है एक दिन हम कैलाश पर्व गए थे वहां अवधिज्ञानी मुनिको हमने पूछा कि हे प्रभो लंका में हमारा प्रवेश होयगा के नहीं तब मुनि ने कही कि तुम्हारे पुत्रका पुत्र होयगा उसके प्रभावकर तुम्हारा लंका में प्रवेश होयगा वह पुरुषों में उत्तम होयगा तुम्हारा पुत्र रत्नश्रवा राजा व्योमविन्दुकी पुत्री केकसी को परणेगा उसकी कूक्षि में वह पुरुषोत्तम प्रगट होयगा जो भरतक्षेत्रके तीन खण्ड का भोक्ता होगा महा बलवान विनयवान जिसकी कीर्ति दशों दिशामें विस्तरेगी वह बैरियोंसे अपना वास छुड़ावैगा और वैरीयों के वास दावैगा सो इसमें आश्चर्यनहीं तू महाउत्सवरूप कुलका मण्डन प्रगटाहै तेरासा रूप जगत्में और किसी का नहीं तू अपने अनुपमरूपसे सबके नेत्र और मनको हरै है इत्यादिक शुभ बचनों से सुमाली ने रावण की स्तुतिकरी तब रावण हाथ जोड़ नमस्कार कर सुमाली से कहता भया हे प्रभो तुम्हारे प्रसादसे ऐसाही होवे ऐसे कहकर नमोकार मन्त्र जप पञ्च परमेष्ठियों को नमस्कार किया सिद्धोंका स्मरण किया जिस से सर्व सिद्ध होय उस बालकके प्रभावसे बन्धुवर्ग सर्व राक्षस वंशी और वानरवंशी अपने अपने अस्थानक आय बसे बैरियों का भय न किया इस भांति पूर्व भवके पुण्य से पुरुष लक्ष्मी को प्राप्त होय है अपनी, कीर्तिसे व्याप्तकरीहै दशों दिशा जिसने इस पृथिवीमें बड़ी उमरका अर्थात् बूढ़ाहोना तेजस्विता का कारण नहीं है जैसे अग्नि का कण छोटाही बड़े बनको भस्म करे है और सिंहका बालक छोटाही मस्त हाथियों के कुम्भस्थल विदारे है और चन्द्रमा उगता ही कुमदों को प्रफुल्लित करे है और जगत का संताप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूर करे है और सूर्य उगताही काली घटा समान अन्धकारको दूर करे है इस प्रकार रावण अपनी छोटी उमरमें ही अन्धकार रूपी बैरियोंके दूर करने को सूर्य समान होता भया।

दक्षिणश्रेणीमें असुरसंगीत नामा नगर तहां राजामय विद्याधर बड़े योधा विद्याधरोंमें दैत्य कहावें जैसे रावणके बड़े राक्षस कहावें इंद्रके कुलके देव कहावें ये सब विद्याधर मनुष्य हैं। राजामयकी रानी हेमवती पुत्री मन्दोदरी जिसके सर्व अगोंपांग सुन्दर विशालनेत्र रूप और लावण्यता रूपी जलकी सरोवरी इसको नवयोवन पूर्ण देख पिताको परणावनेकी चिन्ता भई तब अपनी राणी हेमवतीसे पूछा हे प्रिये अपनी पुत्री मन्दोदरी तरुण अवस्थाको प्राप्त भई सो हमको बड़ी चिन्ताहै पुत्रियों के यौवन के आरम्भसे जो संताप रूप अग्नि उपजे उसमें माता पिता कुटंब सहित ईंधनके भावको प्राप्त होय हैं इस लिये तुम कहो यह कन्या किसको परणावें गुण कुलमें कांतिमें इसके समान होय उस को देवें तब राणी कहती भई हे देव हम पुत्रीके जनने और पालनेमें हैं परणावना तुम्हारे आश्रयहै जहां तुम्हारा चित्त प्रसन्न होय तहां देवो जो उत्तम कुलकी बालिकाहैं ते भरतारके अनुसार चालेहैं जब राणी ने यह कहा तब राजाने मंत्रियोंसे पूछा तब किसीने कोई बताया किसीने इंद्र बताया कि वह सब विद्याधरोंका पतिहै उसकी आज्ञा लोपते सर्व विद्याधरडरे हैं तब राजामयने कही मेरी रुचि यहहै जो यह कन्या रावणको दें क्योंकि उसको थोड़ेही दिनोंमें सर्व विद्या सिद्ध भईहैं इस लिये यह कोई बड़ा पुरुषहै जगतको आश्चर्यका कारणहै तब राजाके वचन मारीच आदि सर्व मंत्रियोंने प्रमाण किये वह मंत्री राजाके साथ कार्यमें प्रवीणहैं तब भले ग्रह लग्न देख क्रूर ग्रह टार मारीचको साथ लेय राजा

For Private and Personal Use Only

मय कन्याके परणावनेको कन्याको रावण पै लेचले रावण भीम नामा बनमें चन्द्रहास खड्ग साधने को आएथे और चन्द्रहासकी सिद्धिकर सुमेरुपर्वत के चैत्यालयोंकी बन्दना को गयेथे सो राजामय हलकारों के कहने से भीम नामा बन में आए वह बन मानों काली घटाका समूहही है जहां अति सघन और ऊंचे वृक्ष हैं बन के मध्य एक ऊंचा महल देखा मानों अपने शिखरसे स्वर्गको स्पर्शे है रावणने जो स्वयंप्रभ नामा नवा नगर बसायाथा उसके समीपही यह नगरहै राजामयने विमानसे उतर कर महलके समीप डेरा किया और वादित्रादि सर्व आडंबर छोड़कर कैयक निकटवर्ती लोकों सहित मन्दोदरी को लेय महल पर चढ़े सातवें खण में गए वहां रावणकी बहिन चन्द्रनखा बैठी थी चन्द्र नखा मानों साक्षात बन देवीही मूर्तिवन्ती है चन्द्रनखा ने राजामयको और उसकी पुत्री मन्दोदरी को देखकर बहुत आदर किया बड़े कुलके बालकोंके यह लक्षणही हैं बहुत विनय संयुक्त इनके निकट बैठी तब राजामय चन्द्रनखाको पूछते भए कि हे पुत्री तू कौनहै किस कारण बन में अकेली बसै है तब चन्द्रनखा बहुत विनयसे बोली मेरा बड़ा भाई रावणहै बेला करके उसने चन्द्रहास खड्ग को सिद्ध किया है और अब मुझे खड्गकी रक्षा सौंप सुमेरुपर्वत के चैत्यालयों की बन्दना को गए हैं मैं भगवान चन्द्रप्रभु के चैत्यालय में तिष्ठूं हूं तुम बड़े हित सम्बन्धी हो जो तुम रावणसे मिलने आएहो तो क्षणइक यहां बिराजो इस भांति इनके बात होयही रही थीं कि रावण आकाश मार्गसे आए तेजका समूह नजर आया तब चन्द्रनखाने राजामयसे कही कि अपने तेजसे सूर्यके तेज को हरता हुआ यह रावण आया है रावण को देख राजामय बहुत आदर से खड़े हुए और रावणसे मिले

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और सिंहासनपर बिराजे तब राजामयके मंत्री मारीच तथा बज्रमध्य और बज्रनेत्र और नभस्तड़ित उग्रनक्र मरुध्वज मेधावी सारणशुक ये सबही रावणको देख बहुत प्रसन्न भए और राजामयसे कहते भए हे दैत्येश आपकी बुद्धि अति प्रवीणहै जो मनुष्योंमें महापदार्थ था सो तुम्हारे मनमें बसा इस भांति मयसे कहकर ये मयके मंत्री रावणसे कहते भए हे दशग्रीव हे महाभाग्य आपका अद्भुत रूप और महा पराक्रमहै और तुम अति विनयवान अतिशयके धारी अनुपम वस्तु हो यह राजामय दैत्यों का अधिपति दक्षिणश्रेणी में असुरसंगीत नामा नगरका राजाहै पृथ्वीमें प्रसिद्धहै हे कुमार तुम्हारे निर्मल गुणोंमें अनुरागी हुआ आयाहै तब रावणने इनका बहुत शिष्टाचार किया और पाहुणा गति करी और बहुत मिष्ट बचन कहे सो यह बड़े पुरुषोंके घरकी रीतिही है कि जो अपने द्वार आवे उसका आदर करें रावणने मयके मंत्रियोंसे कहा कि दैत्यनाथने मुझे अपना जान बड़ा अनुग्रह कियाहै तब मयने कही कि हे कुमार तुमको यही योग्यहै जो तुम सारिखे साधु पुरुषहैं उनको सज्जनताही मुख्यहै फिर रावण श्री जिनेश्वरदेवकी पूजा करनेको जिन मंदिरमें गए राजामयको और इसके मंत्रियोंको भी ले गए रावणने बहुत भावसे पूजाकरी खूब भगवानके आगे स्तोत्रपढ़े बारंम्बार हाथ जोड़ नमस्कार किये रोमांच होय आए अष्टांग दण्डवतकर जिन मंदिरसे बाहिर आए रावणका अधिकहै अधिकउदय और महा सुन्दर चेष्टाहै चूडामणिसे शोभे है शिर जिसका चैत्यालयोंसे बाहिर आय राजामय सहित आप सिंहासन पर बिराजे राजासे वैताडके विद्याधरोंकी बात पूछी और मन्दोदरी की ओर दृष्टि गई तो देखकर मन मोहित भया मन्दोदरी सुन्दर लक्षणोंकर पूर्ण सौभाग्य रूपरत्नों की भूमि कमल समान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं चर्ण जिसके स्निग्धहै तनु जिसका लावण्यता रूपी जलकी प्रवाहही है महा लज्जा के योग से नीचीहै दृष्टि जिसकी पुष्पों से अधिक है सुगंधता और सकुमारता जिसकी और कोमल हैं दोऊ भुज लता जिसकी और शंखके कण्ठ समानहै ग्रीवा [गरदन] जिसकी पूर्णमाशीके चन्द्रमा समान है मुख जिसका शुक [तोता] हांसे अति सुन्दर है नासिका जिसकी मानों दोऊ नेत्रोंकी कांति रूपी नदीका यह सेत्त बन्धही है मूंगा और पल्लवसे अधिक लालहैं अधर (होंठ) जिसके और महाज्योति को धरे अति मनोहरहै कपोल जिसका और वीणाका नाद भ्रमरका गुंजार और उन्मत्त कोयलका शब्द से अति सुंदरहै शब्द जिसका और कामकी दूती समान सुंदरहै दृष्टि जिसकी नीलकमल और रक्त कमल और कुमदकोभी जीते ऐसा श्यामता आरक्तता शुक्लताको धरे मानों दशोंदिशामें तीन रंगके कमलोंके समूह ही बिस्तार राखेहैं और अष्टमीके चन्द्रमा समान मनोहरहै ललाट जिसका और लंबे बांके काले सुगन्ध सघन सचीक्कनहैं केश जिसके कमल समानहैं हाथ और पांव। जिसके और हंसनीको और हस्तनी को जीते ऐसी है चाल जिसकी और सिंहनीसे भी अति चीणहै कटि जिसकी मानों साचात लक्ष्मी ही कमलके निवास को तजकर रावण के निकट ईर्षा को धरती हुई आई है ईर्षा क्योंकि मेरे होते हुवे रावण के शरीर को विद्या क्यों स्पर्शे ऐसा अद्भुत रूप को धरण हारी मन्दोदरी रावण के मन और नेत्रों को हरती भई सकल रूपवती स्त्रियों का रूप लावण्य एकत्र कर इस का शरीर शुभ कर्म के उदय से बना है अंग अंग में अद्भुत आभूषण पहरे महा मनोज्ञ मन्दोदरी को अवलोकन कर रावण का हृदय काम बाणसे बींधा गया महा माधुर्यताकर युक्त जो रावण की दृष्टि उसपर गई थी वह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हटकर पीछे आई परन्तु मधुकर मत्तकी नाई घूमने लग गई रावण चित्त में सोचै कि यह उत्तम नारी कौन है श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी सरस्वती इनमें यह कौन है परणी है वा कुमारी है समस्त श्रेष्ठ स्त्रियों की यह शिरोभाग्य है यह मन इन्द्रियोंकी हरणहारी जो मैं परणूं तो मेरा नवयौवन सुफलहै नहीं तो तृणवत् वृथा है ऐसा विचार रावणने किया तब राजामय मन्दोदरी के पिता बड़े प्रवीण इसका अभिप्राय जान मन्दोदरीको निकट बुलाय रावण से कही कि (इसके तुम पतिहो) यह बचन सुन रावण अति प्रसन्न भया मानो अमृतसे गात सींचा गया हर्ष के अंकुरसमान रोमांच होय आए सर्व वस्तु की इनके सामग्री थीही उसी दिन मन्दोदरी का विवाह भया रावण मन्दोदरीको परणकर अति प्रसन्न होय स्वयंप्रभ नगर में गए राजा मयभी पुत्री को परणाय निश्चिंत भए पुत्री के विछोड़ेसे शोक सहित अपने देशको गए रावणने हजारों रानी परणी उन सबकी शिरोमणी मन्दोदरी होती भई मन्दोदरी भरतार के गुणों में हरागया है मन जिसका पतिकी आज्ञा कारणी होतीभई रावण उस सहित जैसे इन्द्र इन्द्राणी सहित रमे तैसे सुमेरु के नन्दन बनादि रमणीक स्थानों में रमते भए मन्दोदरी की सर्व चेष्टा मनोग्य हैं अनेक विद्या जो रावण ने सिद्ध करी हैं उनकी अनेक चेष्टा दिखावते भए एक रावण अनेक रूप धर अनेक स्त्रियों के महलों में कौतहल करे कभी सूर्य की न्याई तपै कभी चन्द्रमाकी नाई चांदनी विस्तार कभी अग्नी की नाई ज्वाला बरषे कभी मेघकी नाई जल धारा श्रवे कभी पवन की न्याई पहाड़ोंको चलावे कभी इन्द्रकीसी लीला करे कभी वह समुद्र कीसी तरंग धरे कभी वह पर्वत समान अचल दशा गहे कभी मस्त हाथी समान चेष्टा करे कभी पवन से अधिक वेगवाला अश्व बनजाय क्षण में

For Private and Personal Use Only

नजीक क्षण में अदृश्य क्षण में दृश्य क्षण में सूक्ष्म क्षण में स्थूल क्षण में भयानक क्षण में मनोहर इस भान्ति रमता भया ॥

एक दिवस रावण मेघवर नामा पर्वत पर गया वहां एक बापिका देखी निर्मल है जल जिसका अनेक जाति के कमलों से रमणीक है और क्रौंच हंस चकवा सारिस इत्यादि अनेक पक्षियों के शब्द होय रहे हैं और मनोहर हैं तट जिसके सुन्दर सिवाणों से शोभित हैं जिसके समीप अर्जुन आदि बड़े बड़े वृक्षोंकी छाया होयरहीहै जहां चंचल मीनकी कलोलसे जलके छांटे उछल रहे हैं वहां रावण आया और अति सुन्दर छै हजार राज कन्या क्रीड़ा करती देखीं कैएक तो जल केलिमें छांटे उछाले हैं कैएक कमलों के बन में घुसीहुई कमन बदनी कमलों की शोभा को जीते हैं भ्रमर कमलों की शोभाको छोड़ इनके मुखपर गुञ्जारकरें हैं कैएक मृदंग बजावें हैं कैएक बीण बजावें हैं यह समस्त कन्या रावण को देखकर जल क्रीड़ाको तज खड़ी होय रहीं रावणभी उनके बीच जाय जल क्रीड़ा करनेलगे तब वेभी जल क्रीड़ा करने लगीं वे सर्व रावण का रूप देख कामबाण कर बींधीगईं सबकी दृष्टि इसको ऐसी लगी कि अन्यत्र न जाय इस के और उनके राग भाव भया प्रथम मिलापकी लज्जा और मदन का प्रगट होना सो तिनका मनहिंडोले में झूलता भया उन कन्याओं में जो मुख्य हैं उनका नाम सुनो राजा सुरसुन्दर राणी सर्वश्री की पुत्री पद्मावती नीलकमल सारिखे हैं नेत्र जिसके राजा बुध रानी मनोवेगा उसकी कन्या अशोकलता मानो साक्षात् अशोककी लताही है और राजा कनक रानी संध्या की पुत्री विद्युतप्रभा जो अपनी प्रभाकर बिजुली की प्रभाको लज्जावंत करे है सुन्दरहै दर्शन जिसका बड़े कुल

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की बेटी सबही अनेक कलाकर प्रवीण उनमें ये मुख्य हैं मानों तीनलोक की सुन्दरताही मूर्ति धर कर विभूति सहित आई हैं सो रावण ने छैः हजार कन्या गन्धर्व विवाह कर परणी वेभी रावणसहित नाना प्रकारकी क्रीड़ा करती भई तब इनकी लारजे खोजे और सहेलीथीं इनके माता पिताओंसे सकल वृत्तांत जाकर कहती भई तब उन राजाओं ने रावण के मारिणेको क्रूरसामन्त भेजे ते भ्रकुटी चढ़ाए होठ डसते आए नाना प्रकारके शस्त्रों की वर्षा करते भए ते सकल अकेले रावण ने क्षणमात्र में जीत लिये वह भागकर कांपते राजा सुरसुन्दर पै गए जायकर हथियार डार दिए और वीनती करते भये कि हे नाथ हमारी आजीवकाको दूर करो अथवा घर लूट लेवो अथवा हाथ पांव छेदो तथा प्राण हरो हम रत्नश्रवा का पुत्र जो रावण उससे लड़ने को समर्थ नहीं वे समस्त छै हजार राजकन्या उसने परणी और उनके मध्य क्रीड़ाकरै है इन्द्र सारिखा सुन्दर चन्द्रमा समान कांतिधारी जिसकी क्रूर दृष्टि देवभी न सहारसकें उसके सामने हम रंक कौन हमने घनेही देखे रथनूपुर का धनी राजा इन्द्र आदि इसकी तुल्य कोऊ नहीं यह परम सुन्दर महा शूरवीर है ऐसे वचन सुन राजा सुरसुन्दर महा क्रोधायमान होय राजा बुध और कनक सहित बड़ी सेना लेय निकसे और भी अनेक राजा इनके संग भए सो आकाश में शस्त्रोंकी कांति से उद्योत करते आए इन सब राजावों को देख कर ये समस्त कन्या भयकर व्याकुल भई और हाथ जोड़ कर रावणसे कहती भई कि हे नाथ हमारे कारण तुम अत्यन्त संशयको प्राप्त भए हम पुण्यहीन हैं अब आप उठकरकहीं शरण लेवो क्योंकि ये प्राण दुर्लभ हैं तिनकी रक्षा करो यह निकटही श्रीभगवन् का मन्दिर है तहां छिपरहो यह क्रूरबैरी तुमको न देख आपही उठ जावेंगे ऐसे दीन वचन स्त्रियों के सुन

For Private and Personal Use Only

और शत्रु का कटक निकट आया देख रावण ने लाल नेत्र कीये और इनसे कहते भए तुम मेरा पराक्रम नहीं जानो हो इसलिए ऐसे कहो हो काक अनेक भेले भए तो क्या गरुड़ को जीतेंगे एक सिंह का बालक अनेक मदोनमत्त हाथियोंके मदको दूर करे है ऐसे रावणके वचन सुन स्त्री हर्षित भई और बीनती करी कि हे प्रभो हमारे पिता और भाई और कुटम्बकी रक्षाकरो तब रावण कहते भये हे प्यारा हो ऐसेही होयगा तुम भय मतकरो धीरता गहो यह बात परस्पर होयहै इतनेमें राजाओंके कटक आए तब रावण विद्याके रचे विमानमें बैठ क्रोधसे उनके सन्मुख भया ते सकल राजा उनके योधाओंके समूह जैसे पर्वतपर मोटी धारा मेघकी बरसे तैसे बाणोंकी वर्षा करते भए रावण विद्याओंके सागरने शिलाओं से सर्व शस्त्र निवारे और कैयक को शिलासेही भयको प्राप्त कीए फिर मनमें विचारी कि इन रंकोंके मारणेसे क्या इनमें जो मुख्य राजा हैं तिनहींको पकड़ लेवों तब इन राजावोंको तामस शस्त्रोंसे मूर्छित कर नाग पाश से बांधलिया तब इन छै हजार स्त्रियों ने बीनती कर छुड़ाए तब रावण ने तिन राजाओंकी बहुत सुश्रूषा करी तुम हमारे परमहितु सम्बन्धी हो तब वे रावणका शूरत्वगुण देख महा विनयवान रूपवान देख बहुत प्रसन्न भए अपनी अपनी पुत्रियोंका पाणिग्रहण कराया तीन दिन तक महा उत्सव प्रवरता वे राजा रावण की आज्ञा लेय अपने अपने अस्थानको गए रावण मन्दोदरीके गुणोंकर मोहित है चित्त जिसका स्वयंप्रभ नगर में आए तब इसको स्त्रियों सहित आया सुनकर कुम्भकरण विभीषण भी सन्मुख गए रावण बहुत उत्साह से स्वयंप्रभ नगरमें आए और सुराजवत् रमते भए।

कुंभपुरका राजा मन्दोदर ताके राणी स्वरूपा इसकी पुत्री तडिन्माला सो कुंभकर्ण जिसका प्रथम

नाम भानुकर्णथा उसने परणी कैसेहैं कुंभकर्ण धर्म विषे आसक्तहै बुद्धि जिनकी और महा योधा हैं अनेक कला गुणमें प्रवीणहैं हे श्रेणिक अन्यमति लोक जो इनकी कीर्ति और भांति कहैहैं कि मांस और लोहूका भक्षण करतेथे छै महीना की निद्रा लेते थे सो नहीं इनका आहार बहुत पवित्र स्वाद रूप सुगन्ध था प्रथम मुनियों को आहार देय और आर्यादिक को आहार देय दुखित भुखित जीव को आहार देय कुटंब सहित योग्य आहार करतेथे मांसादिककी प्रवृति नहीं थी और निद्रा इन को अर्धरात्रि पीछे अलपथी सदा काल धर्ममें लवलीनथा चित्तजिनका। चर्म शरीर जो बड़े पुरुषोंको झूठा कलंक लगावे हैं ते महा पापका बंध करेहैं ऐसा करना योग्य नहीं।

दक्षिणश्रेणीमें ज्योतिप्रभ नामा नगर वहां राजा विशुद्धकमल राक्षामयका वड़ा मित्र उसके राणी नंदन माला पुत्री राजीव सरसी सो बिभीषणने परणी अति सुंदर उस राणी सहित बिभीषण अति कौतूहल करते भए अनेक चेष्टा करते जिनको रतिकेलि करते तृप्ति नहीं कैसे हैं विभीषण देवन समान परम सुंदर है आकार जिनका और राणी लक्ष्मी से भी अधिक सुंदर है लक्ष्मी तो पद्म कहिए कमल उस की निवासिनी है और यह राणी पद्मराग मणिके महलकी निवासिनी है।

अथानन्तर रावण की राणी मन्दोदरी गर्भवती भई सो इसको माता पिताके घर ले गए वहां इन्द्रजीत का जन्म भया इन्द्रजीत का नाम समस्त पृथ्वी विषे प्रसिद्ध हुआ अपने नानाके घर वृद्धि को प्राप्त भया सिंह के बालक की नाई साहसरूप उनमत्त क्रीडा करता भया रावण ने पुत्र सहित मन्दोदरी अपने निकट बुलाई सो आज्ञा प्रमाण आई मन्दोदरी के माता पिता को इनके बिछोडेका

अति दुःख भया रावण पुत्र का मुख देखकर परम आनन्दको प्राप्त भया सुपुत्र समान और प्रीति का स्थान नहीं फिर मन्दोदरी को गर्भ रहा तब माता पिता के घर फेर ले गए तहां मेघनाद का जन्म भया फिर भरतारके पास आई भोगके सागरमें मग्न भईहै मन्दोदरीने अपने गुणोंसे पतिका चित्त वश किया अब ये दोनों बालक इंद्रजीत और मेघनाद सज्जनोंको आनंदके करणहारे सुंदर चरित्रवान तरुण अवस्थाको प्राप्त भए विस्तीर्णहैं नेत्र जिनके जो वृषभ समान पृथ्वीका भार चलावनहारे हैं ॥

वैश्रवण जिन जिन पुरों में राज करे उन हजारों पुरों में कुंभकर्ण धावे करते भए जहां इन्द्रका और वैश्रवण का माल होय सो छीन कर अपनी स्वयंप्रभ नगर में ले आवे इस बातसे वैश्रवण बहुत क्रोधायमान भए बालकोंकी चेष्टा जान सुमाली रावण के दादा के निकट दूत भेजे वैश्रवण इंद्रके जोर से अति गर्वित है सो वैश्रवणका दूत द्वारपालसे मिल सभा में आया और सुमाली से कहता भया हे महाराज वैश्रवण नरेन्द्र ने जो कहा है सो तुम चित्त देय सुनों वैश्रवणने यह कहा है कि तुम पंडित हो कुलीन हो लोक रीति के ज्ञायक हो बडे हो आकार्यके संगसे भयभीत हो औरों को भले मार्गके उपदेशक हो ऐसे जो तुम सो तुम्हारे आगे यह बालक चपलता करें तो क्या तुम अपने पोतावों को मने न करो। तिर्यंच और मनुष्य में यही भेदहै कि मनुष्य तो योग्य अयोग्यको जाने है और तिर्यंच न जाने है यही विवेक की रीति है करने योग्य कार्य करिए न करने योग्य न करिये जो दृढ़चित्त हैं वे पूर्व वृतान्तको नहीं भूलें हैं और बिजुली समान क्षण भंगुर विभूति के होते हुवे भी गर्वको नहीं धरे हैं आगे क्या राजा माली के मरणसे तुम्हारे कुलकी कुशल भई है

अब यह क्या दानाई है जो कुलके मूलनाश का उपाय करतेहो ऐसा जगतमें कोई नहीं जो अपने कुलके मूलनाश को आदरे तुम क्या इन्द्रका प्रताप भूल गए जो ऐसे अनुचित काम करो हो इन्द्र विध्वंस कियेहैं बैरी जिसने समुद्र समान अथाहहै सो तुम मींडकके समान सर्पके मुखमें क्रीड़ा करो हो सर्पका मुख दाढ़ रूपी कंटकसे भरा है और विष रूपी अग्निके कण जिसमें से निकसे हैं अपने पोते पड़ोतों को जो तुम शिक्षा देनेको समर्थ नहीं हो तो मुझे सौंपो मैं इनको तुरंत सीधे करूं और ऐसा न करोगे तो समस्त पुत्र पौत्रादि कुटंब को बेडियोंसे बंधा मलिन स्थानमें रुका देखोगे अनेक भांतिकी पीडा इनको होगी। पताल लंकासे जरा जरा बाहिर निकसेहो अब फिर वहां ही प्रवेश किया चाहोहो इस प्रकार दूतके कठोर बचन रूपी पवन से स्पर्शा है मन रूपी जल जिसका ऐसा रावण रूपी समुद्र अति क्षोभ को प्राप्त भया क्रोधसे शरीरमें पसेव आगया और आंखोंकी आरक्तता से समस्त आकाश लाल हो गया और क्रोध रूपी स्वरके उच्चारण से सर्व दिशा बधिर करते हुवे और हाथियों का मद निवारते हुवे गाजकर ऐसा बोले कि कौन है वैश्रवण और कौन है इन्द्र जो हमारे गोत्रकी परिपाटीसे चलीआई जो लंका उसको दाब रहे हैं जैसे काग अपने मनमें सियाना होय रहे और स्याल आपको अष्टापद माने तैसे वह रंक आप को इन्द्र मान रहा है यह निर्लज्जहै अधम पुरुष है अपने सेवकोंसे इन्द्र कहाया तो क्या इन्द्र हो गया। हे कुदूत हमारे निकट तू ऐसे कठोर बचन कहता हुआ कुछ भय नहीं करता ऐसा कहकर म्यान से खडग काढ़ा आकाश खडग के तेजसे ऐसा व्याप्त होगया जैसे नील कमलों के बन से महा सरोवर व्याप्त होय। तब बिभीषण

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ने बहुत बिनय से रावण से बिनती करी और दूत को मारने न दिया और यह कहा कि हे महाराज यह पराया चाकर है इसका अपराध क्या जो वह कहावे सो यह कहे इसमें पुरुषार्थ नहीं अपनी देह आजीवका निमित्त पालने को बेंची है यह सूआ समानहै। ज्यों दूसरा बुलावे त्यों बोले यह दूत लोग हैं इनके हिरदे में इनका स्वामी पिशाच रूप प्रवेश कर रहाहै उसके अनुसार बचन प्रवरते हैं जैसे वाजिंत्री जिस भांति बादित्र को बजावे उसी भांति बाजे तैसे इनकी देह पराधीन है स्वतंत्र नहीं इस लिये हे कृपानिधे प्रसन्न होवो और दुखी जीवोंपर दया करो हे निष्कपट महाधीर रंकके मारणेसे लोकमें बडी अपकीर्ति होयहै यह खडग तुम्हारा शत्रु लोगों के सिरपर पडेगा दीनके बध करने योग्य नहीं जैसे गरुड गिडोंयों को न मारे तैसे आप अनाथको न मारो इस भांति बिभीषण ने उत्तम बचन रूपी जलसे रावणकी क्रोधाग्नि बुझाई बिभीषण महा सत्पुरुष हैं न्याय के वेताहैं रावणके पायन पड दूतको बचाया और सभाके लोकोंने दूत को बाहिर निकाला।

दूतने जायकर सर्व समाचार वैश्रवणसों कहे रावणके मुखकी अत्यंत कठोर वाणी रूपी इंधनसे वैश्रवण के क्रोधरूपी अग्नि उठी सो चित्तमें न समावे वह मानों सर्व सेवकोंके चित्तको बांटदीनी भावार्थसर्व क्रोधरूप भए रणसंग्रामके बाजे बजाए वैश्रवण सर्व सेनाले युद्धके अर्थ बाहिर निकसे इस वैश्रवणके बंशके विद्याधर यक्ष कहावें सो समस्त यक्षोंको साथ ले राक्षसों पर चले अति झलझलाट करते खडग सेल चक्र बाणादि अनेक आयुधों को धरेहैं अंजन गिरि समान मस्त हाथियों के मद झरे हैं वे मानों नीझरनेही हैं तथा बडे रथ अनेक रत्नोंसे जडे संध्याके बादलके रङ्ग समान मनोहर महा तेजवन्त अपने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेग से पवन को जीते हैं तैसेही तुरंग और पयादयों के समूह समुद्र समान गाजते युद्ध के अर्थ चले देवों के विमान समान सुन्दर विमानोंपर चढ़े विद्याधर राजा वैश्रवण के लार चले और रावण इनके पहिलेही कुम्भकरणादि भाइयों सहित बाहिर निकसे युद्धकी है अभिलाषा रखती हुई दोनों सेनाओं का संग्राम गुञ्ज नामा पर्वत के ऊपर हुवा शस्त्रों के पात से अग्निही अग्नि दिखाई देनेलगी षड्गोंके घात से घोड़ों के हींसिने से पयादों के नादसे हाथियों के गरजिनेसे रथोंके परस्पर शब्द से वादित्रों के बाजने से तथा बाणों के उग्र शब्द से इत्यादि भयानक शब्दों से रणभूमि गाजती भई धरती आकाश शब्दायमान होय रहे हैं वीर रसका राग होय है योधाओं को मद चढ़ रहा है यमके बदन समान चक्र तीक्ष्ण है धारा जिनकी और यम की जीभ समान षड्ग रुधिरकी धारा बर्षावन हारी और यमके रोम समान सेल और यमकी आंगुली समान शर (बाण) और यमकी भुजा समान परिघ (कुहाड़ा) और यमको मुष्टि समान मुदगर इत्यादि अनेक शस्त्रों से परस्पर महा युद्ध प्रवरता कायरों को त्रास और योधाओं को हर्ष उपजा सामन्त सिरके बदले यशरूप धनको लेवे हैं अनेक राक्षस और कपि जगतिके विद्याधर और यक्ष जातिके विद्याधर परस्पर युद्धकर परलोकको प्राप्त भए कुछ इक यक्षोंके आगे राक्षस पीछे हटे तब रावण अपनी सेनाको दबी देख आप रण संग्राम को उद्यमी भए महामनोज्ञ सफेद छत्र रावणके सिरपर फिरै हैं काले मेघ समान चन्द्र मण्डलकी कांति का जीतनेवाला रावण धनुष बाण धारे इन्द्र धनुषसमान अनेक रंगका बकतर पहिरे शिरपर मुकट धरे नाना प्रकार के रत्नों के आभूषण संयुक्त अपनी दीप्ति से आकाश में उद्योत करता आया रावणको देखकर यक्ष जातिके विद्याधर क्षणमात्र में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलषे तेजदूर होगया रणका अभिलाष छोड़ पराङ्मुख भए त्राससे आकुलित भयाहै चित्त जिनका भ्रमर की न्याईं भ्रमते भए तब यक्षोंके अधिपति बड़े बडे योधा एकट्ठे होकर रावणके सन्मुख आए रावण सबके छेदनेको प्रवरता जेसे सिंह उछलकर मस्त हाथियोंके कुम्भस्थल विदारे तैंसे रावण कोपरूपी पवन के प्रेरे अग्नि स्वरूप होकर शत्रुसेना रूपी बनको दाह उपजावते भए ऐसा कोई पुरुष नहीं कोई रथ नहीं कोई अश्व नहीं कोई हाथी नहीं कोई विमान नहीं जो रावणके बाणोंसे न बींधागया हो तब रावणको रणमें देख वैश्रवण भाईपनेका स्नेह जनावता भया और अपने मनमें पछताया जैसे बाहूबल भरतसे लड़ाई कर पछताए थे तैसे वैश्रवण रावणसे विरोध कर पछताया हाय यह संसार दुःखका भाजन है जहां यह प्राणी नाना योनियों में भ्रमण करै है देखो मैं मूर्ख ऐश्वर्य से गर्वित होकर भाई के विध्वंश करने में प्रवरता यह विचारकर वैश्रवण रावणसे कहताभया हे दशानन यह राजलक्ष्मी क्षणभंगुरहै इसके निमित्त क्या पाप करैं मैं तेरी बड़ी मौसी का पुत्रहूं इसलिये भाइयों से अयोग्य व्यवहार करना योग्य नहीं और यह जीव प्राणियोंकी हिंसा करके महा भयानक नरक को प्राप्त होयहै नरक महा दुखसे भराहै जगतके जीव विषयोंकी अभिलाषा में फंसे हैं आंखों की पलक मात्र क्षण जीवना क्या तू न जाने है भोगों के कारण पाप कर्म काहेको करै है तब रावण ने कहा हे वैश्रवण यह धर्म श्रवण का समय नहीं जो मस्त हाथियों पर चढ़ै और खडग हाथ में धारैं सो शत्रुवोंको मारैं तथा आप मरैं बहुत कहने से क्या तू तलवार के मार्ग में तिष्ठ अथवा मेरे पांव पड़ यदि तू धनपालहै तो हमारा भंडारीहो अपना कर्म करते पुरुष लज्जा न करै तब वैश्रवण बोले हे रावण तेरी आयु अल्पहै इसलिये ऐसे क्रूर वचन कहै है अपनी शक्ति प्रमाण

For Private and Personal Use Only

हमारे ऊपर शस्त्रका प्रहार कर तब रावणने कहा तुम बड़े हो प्रथमबार तुम करो तब रावणके ऊपर वैश्रवण ने बाण चलाये जैसे पहाड़ के ऊपर सूर्य किरण डारे वैश्रवण के बाण रावणने अपने बाणों से काटडारे और अपने बाणों से शर मण्डप कर डारा फिर वैश्रवणने अर्धचन्द्र बाणों से रावण का धनुष छेदा और रथ से रहित किया तब रावण ने मेघनादनामा रथपर चढ़कर वैश्रवणसे युद्ध किया उल्कापात समान वज्र दण्डों से वैश्रवण का बगतर चूर डारा और वैश्रवणके सुकोमल हृदय में भिण्डिपाल मारी वह मूर्छा को प्राप्त भया तब उसकी सेना में अत्यन्त शोक भया और राक्षसों के कटक में बहुत हर्ष भया वैश्रवण के लोक वैश्रवण को उठाकर यक्षपुर लेगए और रावण शत्रुवों को जीतकर रणसे निवृते। सुभटका शत्रु के जीतनेही का प्रयोजन है धनादिक का प्रयोजन नहीं।

अथानन्तर वैश्रवण का वैद्यों ने यतन किया सो अच्छा हुवा तब अपने चित्तमें विचारे है कि जैसे पुष्प रहित वृक्ष सींग टूटा बैल कमल विना सरोवर न सोहै तैसे मैं शूरवीरता विना न सोहूं जो सामन्त हैं और क्षत्री वृत्ती का विरद धारै हैं उनका जीतव्य सुभटत्वहीसे शोभे है और तिनको संसारमें पराक्रम ही से सुख है सो मेरे अब नहीं रहा इसलिये अब संसार का त्याग कर मुक्तिका यत्न करूं यह संसार असार है क्षणभंगुर है इसहीसे सत्पुरुष विषय सुखकोनहीं चाहे हैं यह अन्तराय सहित हैं और अल्प हैं दुखी हैं ये प्राणी पूर्व भव में जो अपराध करे है उसका फल इस भवमें पराभव होयहै सुख दुःख का मूल कारण कर्महीं हैं और प्राणी निमित्त मात्रहै इसलिये ज्ञानी तिनसे कोप न करै ज्ञानीसंसारके स्वरूपको भली भांति जानै हैं यह केकसी का पुत्र रावण मेरे कल्याणका निमित्त हुवाहै जिसने मुझे गृह

वास रूप महा फांसी से छुड़ाया और कुम्भकरण मेरा परम मित्रहै जिसने यह संग्रामका कारण मेरे ज्ञान का निमित्त बनाया ऐसा विचार कर वैश्रवण ने दिगम्बरी दीक्षा आदरी परम तपको आराध कर परम धाम पधारे संसार भ्रमण से रहित भए।

रावण अपने कुलका अपमानरूप मैलधोकर सुख अवस्थाको प्राप्तभया समस्त भाइयोंने उसको राक्षसों का शिखर जाना वैश्रवण की असवारी का पुष्पक नामा विमान महा मनोग्य है रत्नों की ज्योति के अंकुरे छुटरहे हैं झरोखेही हैं नेत्र जिसके निर्मल कांतिके धारणहारे महा मुक्ताफलकी झालरोंसे मानों अपने स्वामीके वियोगसे अश्रुपातही डारै हैं और पद्मरागमणियों की प्रभासे आरक्तताको धारे हैं मानो यह वैश्रवण का हृदयही रावण के किये घाव से लाल होरहा है और इन्द्र नील मणियोंकी प्रभा करके अति श्याम सुन्दरता को धरै हैं मानो स्वामी के शोकसे सांउला होयरहा है चैत्यालय बन बापी सरोवर अनेक मन्दिरोंसे मण्डित मानों नगर का आकारही है रावण के हाथ के नाना प्रकारके घाव से मानों घायल होरहा है रावणके मन्दिर समान ऊंचा जो वह विमान उसको रावण के सेवक रावण के समीप लाए वह विमान आकाश का मण्डनही है इस विमान को वैरीके भंग का चिन्ह जान रावणने आदरा और किसीका कुछभी न लिया रावणके किसी वस्तुकी कमी नहीं विद्यामई अनेक विमान हैं तथापि पुष्पक विमान में विशेष अनुराग से चढ़े रत्नश्रवा तथा केकसी माता और समस्त प्रधान सेनापति तथा भाई बेटों सहित आप पुष्पक विमान में आरूढ़ भया और पुरजन नाना प्रकारके बाहनों पर आरूढ़भए पुष्प के मध्य महा कमल बनहैं तहां आप मन्दोदरी आदि समस्त राज लोकों सहित आप बिराजे हैं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रावण की गति अखण्डहै अपनी इच्छासे आश्चर्यकारी आभूषण पहरे है और श्रेष्ठ विद्याधरी चमर ढोरेहैं मलयागिरिके चन्दनादि अनेक सुगन्ध अंगपर लगीहैं चन्द्रमाकी कांति समान उज्ज्वल छत्र फिरे है मानो शत्रुओंके भंगसे जो यश विस्तारा है उस यशसे शोभायमान है। धनुष त्रिशूल खडग सेल पाश इत्यादि अनेक हथियार जिनके हाथमें ऐसे जो सेवक तिनकर संयुक्तहै वे महा भक्ति युक्ति हैं और अद्भुत कर्म के करणहारे है तथा बड़े २ विद्याधर राजा सामन्त शत्रुओंके समूहके क्षय करण हारे अपने गुणों से स्वामी के मनके मोहने वाले महा विभवसे शोभित तिनसे दश मुख मंडित है परम उदार सूर्यका सा तेज धरता पूर्वोपार्जित पुण्यका फल भोगता हुआ दक्षिणके समुद्रकी तरफ जहां लंका है इसी ओर इंद्रकी सी विभूतिसे चला कुंभकर्ण भाई हस्तीपर चढ़े विभीषण रथपर चढ़े अपने लोगों सहित महा विभूतिसे मंडित रावण के पीछे चले राजामय मन्दोदरीके पिता दैत्यजाति के विद्याधरों के अधिपति भाइयों सहित अनेक सामन्तोंसे युक्त तथा मारीच अंवर विद्युतवज्रवज्रोदर बुधवज्राचक्रूर क्रूरनक्रसारनसुनय शुकइत्यादि मंत्रियों सहित महा विभूतिकर मंडित अनेक विद्याधरोंके राजा रावणके संग चले कैएक सिंहोंके रथ चढ़े कैएक अष्टापदों के रथपर चढ़कर बन पर्वत समुद्र की शोभा देखते पृथ्वी पर बिहार किया और समस्त दक्षिण दिशा बश करी।

अथानन्तर एक दिन रास्ते में रावणने अपने दादा सुमालीसे पूछा हे प्रभो हे पूज्य इस पर्वत के मस्तकपर सरोवर नहीं सो कमलोंका बन कैसे फूल रहा है यह आश्चर्य है और कमलों का बन चंचल होताहै यह निश्चलहै इस भांति सुमाली से पूछा कैसा है रावण बिनय करनम्रीभूत है शरीर

For Private and Personal Use Only

जिसका तब सुमाली नमः सिद्धेभ्यः यह मंत्र पढ़कर कहते भए हे पुत्र यह कमलोंके वन नहीं इस पर्वतके शिखर पर पद्मरागमणि मई हरिषेण चक्रवर्तीके कराए हुए चैत्यालयहैं जिनपर निर्मल ध्वजा फरहरे हैं। और नाना प्रकार के तोरणोंसे शोभे हैं हरिषेण महा सज्जन पुरुषोत्तम थे जिनके गुण कहनेमें न आवेंहे पुत्र तू उतरकर पवित्र मन होकर नमस्कारकर तब रावणने बहुत विनयसे जिन मंदिरों को नमस्कार किया और बहुत आश्चर्य को प्राप्त भया और सुमाली से हरिषेण चक्रवर्ति की कथा पूछी हे देव आपने जिसके गुण वर्णन किये उसकी कथा मुझ से कहो तब सुमाली कहे है हे दशानन तैं भली पूछी पाप नाश करनहारा हरिषेण का चरित्र सो सुन। कंपिल्या नगर में राजा सिंहध्वज उनके राणी वप्रा जोमहा गुणवती सौभाग्यवती राजाके अनेक राणीथी परन्तु राणी वप्रा उनमें तिलक थी उसके हरिषेण चक्रवर्ति पुत्र भए चौसठ शुभ लक्षणों से युक्त पाप कर्म के नाशने हारे इनकी माता वप्रा महा धर्मवती सदा अष्टानिका के उत्सवमें रथ यात्रा किया करै इसकी सौकन रानी महालक्ष्मी सौभाग्यके मदसे कहती भई कि पहिले हमारा ब्रह्म रथ नगरमें भ्रमण हुआ करैगा पीछे तुम्हारा। यह बात सुन राणी वप्रा हृदय में खेद भिन्न भई मानों वज्रपातसे पीड़ी गई उसने ऐसा प्रतिज्ञा करी कि हमारे वीतरागका रथ अठाइयों में पहले न निकसेगा तो मैं आहार नहीं करूंगी ऐसा कहकर सर्व कार्य छोड़ दिया शोक से मुख मुरझाय गया अश्रुपात की बून्द आंखोंसे डालती हुई माता को देखकर हरिषेण ने कहा हे माता अब तक तुमने स्वपने मात्र में भी रुदन न किया था अब यह अमंगल कार्य क्यों करो हो तब माता ने सर्व वृतान्त कहा सुनकर हरिषेण ने मनमें

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोची कि क्या करूं एक ओर पिता एक ओर माता मैं बड़े संकटमें पड़ाहूं और मैं माताके अश्रुपात देखनेको समर्थ नहीं हूं सो उदासहो घरसे निकस बनको गए तहां मिष्ट फलोंको भक्षण करते और सरोवरों का निर्मल जल पीते निर्भय बिहार किया इनका सुंदर रूप देखकर निर्दयी पशुभी शांत हो गये ऐसे भव्य जीव किसको प्यारे न हों तहां बनमें भी जब माताका रुदन याद आवै तब इनको ऐसी बाधा उपजे कि बनकी रमणीकता का सुख भूल जावें सो हरिषेण बन में बिहार करते शत मन्यु नामा तापसके आश्रममें गए जहां बनके जीवोंका आश्रय है ।

कालकल्प नामा राजा अति प्रबल जिसका बड़ा तेज और बड़ी फौज उसने आनकर चंपा नगरी घेरी जनमेजय वहांका राजा सो जनमेजय और कालकल्पमें युद्ध भया आगे जनमेजय ने महल में सुरंग बना राखी थी सो उस मार्ग होकर जनमेजयकी माता नागमती अपनी पुत्री मद-नावली सहित निकसी और शतमन्युतापस के आश्रममें आई नागमतीकी पुत्री हरषेणका रूप देख कर कामके बाणोंसे बींधी गई । कामके बाण शरीरमें विकलता के करणहारे हैं यह बात नागमती कहती भई हे पुत्री तू विनयवान होकर सुन कि मुनिने पहिलेही कहा था कि यह कन्या चक्रवर्ती की स्त्रीरत्न होयगी सो यह चक्रवर्ति तेरे वर हैं यह सुनकर अति आसक्त भई तब तापसीने हरिषेण को निकास दिया क्योंकि उसने बिचारी कि कदाचित् इनके संसर्ग होय तो इस बातसे हमारी अकीर्ति होयगी सो चक्रवर्ति इनके आश्रमसे और ठौर गए और तापसी को दीनजान युद्ध न किया परन्तु चित्तमें वह कन्या बसी रही सो इनको भोजनमें और शयनमें किसी प्रकार स्थिरता नहीं जैसे भ्रामरी

For Private and Personal Use Only

विद्यासे कोऊ भूभै तैसे ये पृथ्वीमें भ्रमण करते भए। ग्राम नगर बन उपवन लताओंके मंडपमें इन को कहीं भी चैन नहीं कमलों के बन दावानल समान दीखें और चन्द्रमाकी किरण बज्रकी सुई समान दीखे और केतकी बरछी की अणी समान दीखै पुष्पोंकी सुगन्ध मनको न हरे चित्तमें ऐसा चिंतवते भए जो मैं यह स्त्रीरत्न बरूं तो मैं जायकर माताका भी शोक संताप दूर करूं। नदियों के तटपर और बन में ग्राममें नगरमें पर्वतपर भगवानके चैत्यालय कराऊं यह चिंतवन करते हुवे अनेक देश भ्रमते सिंधुनंदन नगरके समीप आए हरिषेण महा बलवान अति तेजस्वी हैं वहां नगरके बाहिर अनेक स्त्री क्रीड़ाको आई थीं एक अंजनगिरि समान हाथी मद झरता स्त्रियोंके समीप आया महा वतने हेला मारकर स्त्रियोंसे कही कि यह हाथी मेरे बश नहीं तुम शीघ्रही भागो तब वह स्त्रियां हरिषेण के शरणे आई हरिषेण परमदयालुहै महायोधाहैं वह स्त्रियोंको अपने पीछे करके आप हाथी के सन्मुखभए औरमनमें बिचारी कि वहां तो वेतापसदीनथे इसलिये उनसे मैंने युद्धन किया वे मृगसमानथे परंतु यहां यह दुष्टहस्ती मेरे देखतेस्त्री बालादिकको हनै और मैं सहायन करूं सो यह क्षत्रीवृत्ति नहीं यह हस्ती इन बालादिक दीनजनको पीड़ादेनेको समर्थहै जैसेबैलसींगोंसे बंमईको खोदे परंतु पर्वतकोखोदनेको समर्थ नहीं औरकोई बाणसे केलेकेवृक्षको छेदेपरंतु शिलाकोनछेदसके तैसेहीयहहाथीयोधावोंको उड़ायवेसमर्थ नहींतब आपमहावतको कठोर बचनसेकहीकि हस्तीको यहांसे दूरकर तबमहावतनेकही तूभीबड़ाढीठहैहाथीकोमनुष्य जानैहै हाथी आपही मस्त होय रहाहै तेरी मौत आईहै अथवा दुष्ट ग्रह लगाहै तू यहां से बेगभाग, तब आप हंसे और स्त्रियों को तो पीछे कर दिया और आप ऊपरको उछल हाथी के दांतोंपर पगदेय कुम्भस्थल

पर चढ़ और हाथीसे बहुत क्रीड़ा करी कैसे हैं हरिषेण कमल सारिषे हैं नेत्र जिनके और उदार है वक्षस्थल जिनका और दिग्गजों के कुम्भस्थल समानहैं कांधे जिनके और स्तम्भ समान हैं जांघ जिन की तब यह वृत्तान्त सुन सब नगर के लोग देखनेको आए राजा महल ऊपर चढ़ा देखरहाथा सो आश्चर्य को प्राप्त भया अपने परिवारके लोग भेज इनको बुलाया यह हाथी पर चढ़े नगर में आए नगर के नर नारी समस्त इनको देख २ मोहित होय रहे क्षणमात्रमें हाथी को निर्मद किया यह अपने रूपसे समस्त का मन हरते नगर में आए राजाकी सौ कन्या परणी सर्व लोक में हरिषेणकी कथा भई राजासे अधिकार सन्मान पाय सर्व वातों से सुखी है तौभी तपसियों के बनमें जो स्त्री देखी थी उस बिना एक रात्रि वर्षसमान बीते मनमें चितवते भये कि मुझ बिना वह मृगनयनी उस विषम वन में मृगी समान परम आकुलताको प्राप्त होयगी इसलिये मैं उसके निकट शीघ्रही जाऊं यह विचारते रात्रीको निद्रा न आती जो कदाचित अल्प निद्रा आई तौभी स्वप्न में उसीही को देखा कमल सारिखे हैं नेत्र जिसके मानों इनके मनही में बस रही है।

विद्याधर राजा शक्रधनु उसकी पुत्रीजयचन्द्रा उसकीसखी वेगवती वह हरिषेणको रात्रि विषे उठाय कर आकाश में लेचली निद्राक्षय होनेपर आपको आकाश में जाता देख कोपकर उससे कहते भए हे पापिनी हमको कहां लेजाय है यद्यपि यह विद्याबल कर पूर्ण है तौभी इनका क्रोध रूपी मुष्टि बांधे होंठ डसते देखकर डर कर इनसे कहती भई कि हे प्रभु कोई मनुष्य जिस वृक्षकी शाखा पर बैठा हो उसही को काटै तो क्या यह सयानपना है सो मैं तो तुम्हारी हितकारिणी और तुम मुझे हतो यह उचित

नहीं मैं तुमको उसकेपास लेजाऊंहूं जो निरन्तर तुम्हारे मिलापकी अभिलाषिनीहै तब यह मनमें विचारते भए कि यह मिष्टभाषिणीपर पीड़ा कारिणी नहीं है इसकी आकृति मनोहर दीखे है और आज मेरी दाहिनी आंखभी फड़के है इसलिये यह हमारी प्रियाकी सङ्गम कारिणी है फिर इसको पूछा हे भद्रे तू अपने आवने का कारण कह तब वह कहै है कि सूर्योदय नगर में राजा शक्रधनु राणी धी और पुत्री जयचन्द्रा वह गुणरूपी से मदसे महा उनमत्त है कोई पुरुष उसकी दृष्टि में न आवे पिता जहांपरणाया चाहेसो यह माने नहीं मैंने जिस जिस राज पुत्रों के रूप जित्र पटपर लिख दिखाए उनमें कोइ भी उसके चित्त में न रुचे तब मैंने तुम्हारे रूपको चित्राम दिखाया तब वह मोहित भई और मुझको ऐसा कहती भई कि मेरा इस नर से संयोग न होय तो मैं मृत्यु को प्राप्त होऊंगी और अधम नरसे सम्बन्ध न करूंगी तब मैंने उसको धीर्य बन्धाया और ऐसी प्रतिज्ञा करी कि जहां तेरी रुचि है मैं उसे न लाऊं तो अग्नि में प्रवेश करूंगी अति शोकवन्त देख मैंने यह प्रतिज्ञाकरी उसके गुण से मेरा चित्त हरागया है सो पुण्यके प्रभावसे आप मिले मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण भई ऐसा कह सूर्योदय नगरमें लेगई राजा शक्रधनुसे ब्योरा कहा राजाने अपनी पुत्रीका इनसे पाणीग्रहण कराया और वेगवती का बहुत यशमाना इनका विवाह देख परिजन और पुरजन हर्षित भए बर कन्या अद्भुत रूप के निधान हैं इनके बिवाह की वार्त्ता सुन कन्या के मामा के पुत्र गंगाधर महीधर क्रोधायमान भए कि कन्या ने हमको तजकर भूमिगोचरी वरा यह विचारकर युद्धको उद्यमीभए तब राजा शक्रधनु हरिषेण से कहता भया कि मैं युद्ध में जाऊं आप नगरमें तिष्ठो वे दुराचारी विद्याधर युद्धकरनेको आए हैं तब हरिषेण सुसर से कहते भए कि जो पराए

कार्यको उद्यमी होय वह अपने कार्यको कैसे उद्यम न करे इसलिये हे पूज्य मुझे आज्ञाकरो मैं युद्ध करूंगा तब सुसरने अनेक प्रकार निवारण किया पर यह न रहे नाना प्रकार हथियारों से पूर्ण ऐसे रथपर चढ़े जिसमें पवनगामी अश्व जुरें और सूर्य बीर्य सारथी हांकैं इनके पीछे बड़े बड़े विद्याधर चले कई हाथियों पर चढ़े कई अश्वोंपर चढ़े कई रथोंपर चढ़े परस्पर महा युद्ध भया कछुयक शक्रधनु की फौज हटी तब आप हरिषेणयुद्ध करनेको उद्यमी भए सो जिस ओर रथचलाया उसओर घोड़ा हस्ती मनुष्य रथ कोऊ टिकै नहीं सब बाणों कर बींधे गए सब कांपते युद्ध से भागे महा भयभीत कहते भये गंगाधर महीधरने बुरा किया जो ऐसे पुरुषोत्तमसेयुद्ध किया यह साक्षात् सूर्य समान हैं जैसे सूर्य अपनी किरण पसारै तैसे यह बाणोंकी वर्षा करै है अपनी फौज हटी देख गंगाधर महीधरभी भाजे तब इनके क्षणमात्र में रत्नभी उत्पन्न भए दशवां चक्रवर्त्ति महा प्रतापको धरै पृथिवी पर प्रगट भया यद्यपि चक्रवर्त्ति की विभूति पाई परन्तु अपनी स्त्री रत्न जो मदनावली उसके परणवेकी इच्छासे द्वादश योजन परिमाण कटक साथलेराजाओं को निवारते तपस्वियों के बनके समीप आये तपस्वी बनफल लेकर आय मिले पहिले इनका निरादर किया था इससे शंकावान थे सो इनको अति विवेकी पुण्याधिकारी देख हर्षितभए शतमन्युका पुत्र जो जन्मेजय और मदनावलीकी माता नागमती उन्होंने मदनावली को चक्रवर्तिको विधिपूर्वक परणाई तब आप चक्रवर्त्तिविभूति सहित कम्पिल्या नगरमें आए बत्तीस हजार मुकटबन्ध राजाओंने सङ्गआकर माता के चरणार विंदकोहाथजोड़नमस्कार किया माता वप्रा ऐसे पुत्रकोदेख ऐसी हर्षितभई जो गातमें न समावे हर्षकेअश्रुपात करव्याप्त भएहैं लोचनजिसके तबचक्रवर्त्ति ने जब अष्टानिका आई तो भगवान का रथ सूर्य से भी महा

मनोग्य काढ़ा अष्टानिकाकी यात्रा करी मुनि श्रावकों को परम आनन्द भया बहुत जीव जिन धर्म को अंगीकार करते भये सो यह कथा सुमाली ने रावण सों कही हे पुत्र उस चक्रवर्त्ति ने भगवान के मन्दिर पृथिवी पर सर्वत्र पुर ग्रामादि में तथा परवतोंपर तथा नदियोंके तटपर अनेक चैत्यालय रत्नमई स्वर्णमई कराए वे महापुरुष बहुत काल चक्रवर्त्ति की सम्पदा भोग मुनि होय महा तप कर लोक शिखर सिधारे यह हरिषेणका चरित्र रावण सुनकर हर्षित भया सुमालीकी बारम्बार स्तुति करी और जिन मन्दिरोंका दर्शन कर रावण डेरे में आया डेरा सम्मेद शिखर के समीप भया।

रावण को दिगविजय में उद्यमी देख मानो सूर्य भी भय से दृष्टिगोचर अस्त भया, सन्ध्या की ललाई समस्त भूमण्डल में व्याप्त भई मानो रावण के अनुराग से जगत् हर्षित भया फिर सन्ध्या मिटकर रात्रिका अन्धकार फैला मानो अन्धकार प्रकाश के भय से दशमुखके शरण आया पुनः रात्रि व्यतीत भई और प्रभात भया रावण प्रभातकी क्रियाकर सिंहासनपर विराजे अकस्मात एक ध्वनि सुनि मानो वर्षाकालका मेघही गाजा जिस से सकलसेना भयभीत भई कटक के हाथी जिनवृक्षों से बन्धे थे उनको भंग करते भये कनसेरे ऊंचे कर तुरंग हींसते भए तब रावण बोले यह क्या है यह मरणेको हमारे ऊपर कौन आया यह वैश्रवण आया अथवा इन्द्रका प्रेरासोम आया अथवा हमको निश्चल तिष्ठे देख कोई और शत्रुआया तब रावणकी आज्ञा पाय प्रहस्त सेनापति उस ओर देखनेको गया और पर्वत के आकार मदोनमत्त अनेक लीला करता हाथी देखा तब आयकर रावण से वीनती करी कि हे प्रभो मेघ की घटा समान हाथी है इसको इन्द्रभी पकड़नेको समर्थ न भया तब रावण हंसकर बोले

हे प्रहस्त अपनी प्रशंसा करणी योग्य नहीं मैं इस हाथीको एक क्षणमात्रमें वश करूंगा यह कहकर पुष्पक बिमानमें चढ़कर हाथी देखा भले २ लक्षणों से मंडित इन्द्रनीलमणि समान अति सुन्दर जिस का शरीरहै कमल समान आरक्त तालुवा है और महा मनोहर उज्ज्वल दीर्घगोल दांत हैं नेत्र कछु इक पीत हैं पीठ सुन्दर है अगला अंग उतंग है और लम्बी पूछ है और बड़ी सूंड है अत्यन्त स्निग्ध सुन्दर नख हैं गोल कठोर महा सुन्दर कुम्भस्थलहै प्रबल चरणहैं माधूर्यता को लिए महाधीर गंभीर है गर्जना जिसकी और झरते हुवे मदकी सुगन्धता से गुंजार करे हैं भ्रमर जिसपर दुंदुभी बाजों की ध्वनि समान गम्भीर है नाद जिसका और ताड़ वृक्षके पत्र समान कर्ण उनको हलावता मन और नेत्रोंको हरनहारी सुन्दर लीलाको करता रावणने देखा देखकर बहुत प्रसन्न भया हर्षकर रोमांच होय आए तब पुष्पक नामा विमानसे उतर गाढ़ी कमर बांधकर उसके आगे जाय शंख पूरा जिसके शब्द से दशोंदिशा शब्द रूप भई तब शंखका शब्द सुन चितमें क्षोभको पाय हाथी गरजा और दशमुख के सन्मुख आय बलकर गर्वित रावणने अपने उत्तरासनका गेंद बनाय शीघ्रही हाथीकी ओर फैंका रावण गजकेलि में प्रवीण है सो हाथी तो गेंदके सूंघने को लगा और रावण ने झटसे ऊपर उछल कर भ्रंगों की ध्वनिसे शोभित गजके कुम्भस्थल पर हस्ततल मारा हाथी सूंडसे पकडने का उद्यम करने लगा तब रावण अति शीघ्रताकर दोऊ दांतके बीचहोय निकस गए हाथीसे अनेक क्रीड़ाकरी दश मुख हाथीकी पीठपर चढ़ बैठे हाथी बिनयवान शिष्यकी न्याईं खड़ा होय रहा तब आकाशसे रावणपर पुष्पोंकी वर्षा भई और देवोंने जयजयकार शब्द किये और रावणकी सेना बहुत हर्षित भई रावणने हाथी

का त्रैलोक्य मंडन नाम धरा इसको पाय रावण बहुत हर्षित भया रावणने हाथीके लाभका बहुत उत्सव किया और सम्मेद शिखर पर्वतपर जाय यात्रा करी विद्याधरों ने नृत्य किया वह रात्रि वहांही रहे प्रभात हुवा सूर्यउगा सो मानों दिवसने मंगलका कलश रावणको दिखाया कैसाहै दिवस सेवाकी विधि में प्रवीणहै तब रावण डेरामें आय सिंहासनपर बिराजे हाथीकी कथा सभा में कहते भए।

अथानंतर एक विद्याधर आकाशकेमार्ग रावणके निकट आया अत्यंत कंपायमान जिसके पसेवकी बूंद झरेहैं घायल हुआ बहुत खेदखिन्न अश्रुपात डारता जर्जराहै तनु जिसका हाथ जोड़ नमस्कारकर बिनती करता भया हे देव आज दशवां दिनहै राजा सूर्यरज और रक्षरज बानरवंशी विद्याधर तुम्हारे बलसेहीहै बल जिनमें सो आपका प्रताप जान अपनी किहकू नगर लेनेके अर्थ अलंकारनगर जो पताललंका वहांसे उत्साह से निकसे वे दोनों भाई तुम्हारेबलसे महाअभिमान युक्तजगतको तृण समानमानेहैं सोउन्होंने किहकूपुर जाय घेरा वहां इन्द्रका यम नामा दिग्पालथा सो उसके योधा युद्ध करनेको निकसे हाथमें हैं आयुध जिनके बानरवंशियोंके और यमके लोकोंमें महायुद्ध भया परस्पर बहुत लोक मारे गए तब युद्ध का कलकलाट सुन यम आप निकसा कैसाहै यम महा क्रोधकर पूर्ण अतिभयंकर न सहा जायहै तेज जिसका सो यमके आवतेही बानर बंशियोंका बल भागा अनेक आयुधोंसे घायल भए यह कथा कहता २ वह विद्याधर मुर्छाको प्राप्त होगया तब रावणने शीतोपचार कर सावधान किया और पूछा कि आगे क्या भया तब वह विश्राम पाय हाथ जोड़ फिर कहता भया हे नाथ सूर्यरजका छोटा भाई रक्षरज अपने दलको व्याकुल देख आप युद्ध करने लगे सो यमके साथ बहुत देरतक युद्ध किया यम अतिबली

उसने रक्षरजको पकड़ लिया तब सूर्यरज आप युद्ध करने लगे बहुत युद्ध भया यमने आयुध का प्रहार किया सो राजा घायल होय मूर्छित भए तब अपने पक्षके सामंतोंने राजाको उठाय मेला वन में ले जाय शीतोपचार कर सावधान किये यम महा पापीने अपनी यमपना सत्य करते हुए एक बंदी गृह बनायाहै उसका नरक नाम धराहै वहां वैतरनी आदि सर्व विधि बनाई हैं जो जो उसने जीते और पकड़े वे सर्व उस नरकमें बंद किएहैं सो उस नरकमें कैयक तो मर गए कैयक दुःख भोगें हैं वहां उस नरकमें सूर्यरज और रक्षरज येभी दोनों भाई हैं यह वृतान्त मैं देखकर बहुत व्याकुल होय आप के निकट आयाहूं आप उनके रक्षक हो और जीवनमूल हो उनके आपही विश्रामहैं और मेरा नाम शा-खावली है मेरा पिता रणादक्ष माता सुश्रोणी मैं रक्षरजका प्यारा चाकर सो आपको यह वृतान्त कहनेको आयाहूं मैंतो आपकोजतावादेय निश्चिंत भयाअपने पक्षको दुःखअवस्थामेंजान आपको जोकर्तव्य होय सो करो तब रावणने उसे दिलासा दिया और इसके घावका यत्न कराया अब ततकाल सूर्यरज रक्षरजके छुड़ावनेको महाक्रोधकर यमपरचले और मुसकरायकर कहतेभए कहा यमरंक हमसे युद्धकर सकै जो मनुष्य उसने वैतरणी आदि क्लेशके सागरमें डार राखेहैं मैं आजही उनको छुडाऊंगा औरउस पापीने जो नरक बनाय राखाहै उसे विध्वंस करूंगा देखो दुर्जनकी दुष्टता कि जीवोंको ऐसे संताप देहै यह विचारकर आप ही चले प्रहस्त सेनापति आदि अनेक राजा बड़ी सेनासे आगे दौड़े नाना प्रकारके बाहनोंपर चढ़े शस्त्रों के तेजसे आकाशमें उद्योत करते अनेक बादित्रोंके नाद होते महा उत्साहसे चले विद्याधरोंके अधिपति किहकूंपुरके समीप गए सो दूरसे नगरके घरोंकी शोभा देखकर आश्चर्यको प्राप्त भए किहकूंपुरकी दक्षण

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिशामें यम विद्याधरका बनायाहुवा नरक देखा जहां एकऊंडा खाडा खोद राखाहै और नरककीनकल बनाय राखीहै अनेक नरोंके समूह नरकमें राखेहैं तब रावणने उस नरकके रखवारे जे यमके किंकरथे उनको कूटकर काढ़ दिया और सर्व प्राणी सूर्यरज रक्षरज आदि दुख सागरसे निकासे रावण दीननके बंधु दुष्टोंको दंड देनहारे हैं वह सर्व नरक स्थानही दूर किया यह वृतान्त परचक्रके आवनेका सुन यम बडे आडंबरसे सर्व सेना सहित युद्ध करनेको आया मानो समुद्रही क्षोभको प्राप्त भया पर्वत सारिखे अनेक गज मदधारा झरते भयानक शब्द करते अनेक आभुषण युक्त उनपर महा योधा चढ़े और तुरंग पवन सारिखे चंचल जिनकी पूंछ चमर समान हालती अनेक आभूषण पहिरे उनकी पीठ पर महा बाहू सुभट चढ़े और सूर्य के रथ समान अनेक ध्वजाओं की पंक्ति से शोभायमान जिन में बडे बडे सामन्त बगतर पहेंर शस्त्रोंके समूह धार बैठे इत्यादि महा सेना सहित यम आया तब बिभीषण ने यमकी सर्व सेना अपने बाणों से हटाई बिभीषण विषे प्रवीण रथ पर आरूढ़ हैं विभीषणके बाणों से यम किंकर पुकारते हुए भागे यम किंकरों के भागने और नारकियों के छुडाने से महा कूर होकर बिभीषण रथ पर चढ़ धनुष को धारे आया ऊंची है ध्वजा जिस की काले सर्प समान कुटिल केश जिन के भृकुटी चढ़ाए लाल हैं नेत्र जिस के जगत रूप ईंधन के भस्म करण को अग्नि समान आप तुल्य जो बडे बडे सामन्त उन कर मंडित युद्ध करणे को अपने तेज से आकाश में उद्योत करता हुआ आया तब रावण यमको देख विभीषण को निवार आप रण संग्राम में उद्यमी भए यम के प्रताप से सर्व राक्षस सेना भयभीत होय रावण के पीछे आय गए यम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनेक आडम्बर डारै हैं भयानक हैं मुख जिसका रावण भी रथपर आरूढ़ होकर यम के सनमुख भए अपने बाणों के समूह यमपर चलाए इन दोनोंके बाणों से आकाश अछादित भया. कैसे हैं बाण भयानक है शब्द जिनका जैसे मेघों के समूह से आकाश व्याप्त होय तैसे बाणों से आच्छादित होगया रावणने यमके सारथीको प्रहार किया सो सारथी भूमि में पड़ा और एक बाण यमको लगाया सो यम भी रथ से गिरपड़ा तब यम रावणको महा बलवान देख दक्षि दिशा का दिग्पालपणा छोड़ भागा सारे कुटम्बको लेकर परिजन पुरजन सहित रथनूपुर में गया इन्द्र से नमस्कार कर बीनती करताभया हे देव आप कृपाकरो अथवा कोप करो आजीवका राखो तथा हरो तुम्हारी जो वांछा होय सो करो यह यम पणा मुझसे न होय मालीके भाई सुमालीका पोता दशानन महा योधा जिसने पहिले तो वैश्रवण जीता वह तो मुनि होगया और मुझे भी उसने जीता सो मैं भागकर तुम्हारे निकट आयाहूं उसका शरीर वीर रससे बना है यह महात्मा है वह ज्येष्ठ के मध्यान्ह का सूर्य कभी भी न देखा जाय है यह वार्ता सुन कर रथनूपुर का राजा इन्द्र संग्राम को उद्यमी भया तब मन्त्रियों के समूह ने मने कीया मन्त्री वस्तुका यथार्थ रूप जाननेहारे हैं तब इन्द्र समझ कर बैठरहा इन्द्र यमका जमांई है उसने यमको दिलासा दिया कि तुम बड़े योधाहो तुम्हारे योधापनेमें कमीं नहीं परन्तु रावण प्रचण्ड पराक्रमी है इसलिये तुम चिंता न करो यहांही सुख से तिष्ठो ऐसा कहकर इनका बहुत सन्मानकर राजा इन्द्र राजलोकमें गए और काम भोग के समुद्र में मग्न भए कैसे हैं इन्द्र बड़ा है विभूति का मद जिसको रावण के चरित्र के जो जो वृत्तान्त यमने कहे थे वैश्रवण का वैराग्य लेना और अपना भागना वह इन्द्रको ऐश्वर्य के मदमें भूल

गए जैसे अभ्यास बिना विद्या भूलजाय और यमभी इन्द्र का सत्कार पाय और असुर संगीत नगरका राज पाय मान भंगका दुःख भूल गया मनमें विचारने लगा कि मेरी पुत्री महा रूपवन्ती सो तो इन्द्र के प्राणोंसे भी प्यारी है और मेरा और इंद्रका बड़ा सम्बन्ध है सो मेरे क्या कमी है ॥

रावणने किहकन्धपुर तो सूर्यरज को दीया और किहकुपुर रत्तरज को दीया दोनों को सदा के हितु जान बहुत आदर कीया रावण के प्रसाद से बानरवंशी सुखसे तिष्ठे रावण सब राजों का राजा महा लक्ष्मी और कीर्त्ति को धरे दिग्विजय करे बड़े २ राजा दिनप्रति आय आय मिलें सो रावण का कटक रूप समुद्र अनेक राजावों की सेना रूपी नदी से पूरित होता भया और दिन दिन विभव अधिक होतीभई जैसे शुक्लपक्षका चन्द्रमा दिन दिन कलाकर बढ़ता जाय तैसे रावण दिनदिन बढ़ताजाय पुष्पक नामा विमानपर आरूढ़ होय त्रिकूटाचल के शिखर पर आय तिष्ठा कैसा है विमान रत्नों की माला से मण्डित है और ऊंचे शिखरोंकी पंक्तिसे विराजे है जो शीघ्र जहां चाहे वहां जाय ऐसे विमान का स्वामी रावण महा धीर्यता कर मण्डित पुण्यके फलका है उदय जिसके जब रावण त्रिकूटाचल के शिखर सिधारे सब बातों में प्रवीण तब राक्षसोंके समूह नानाप्रकार के वस्त्राभूषण कर मण्डित परम हर्ष को प्राप्त भये सर्व राक्षस रावण को ऐसे मङ्गल वचन गम्भीर शब्द कहतेभये हे देव तुम जयवन्त होवो आनन्द को प्राप्त होवा चिरकाल जीवो वृद्धिको प्राप्त होवो उदयको प्राप्त होवो निरन्तर ऐसे मङ्गल वचन गम्भीर शब्द कर कहते भए कई एक सिंह शारदूलोंपर चढ़े कई एक हाथी घोड़ों पर चढ़े कईएक हंसों पर चढ़े प्रमोदकर फूल रहे हैं नेत्र जिनके देवों कैसा आकार धरे जिनका तेज आकाश विषे फैल रहा

है बन पर्वत अन्तरद्वीप के सर्व विद्याधर राक्षस आए समुद्रको देखकर विस्मयको प्राप्त भए कैसा है समुद्र नहीं दीखे है पार जिसका अति गम्भीर है महामत्स्यादि जलचरों कर भरा है तमाल बन समान श्याम है पर्वत समान ऊंची ऊंची उठे हैं लहर के समूह जिस विषे पाताल समान ऊंचा अनेक नाग नायकों कर भयानक नाना प्रकारके रत्नोंके समूह कर शोभायमान नाना प्रकारकी अद्भुत चेष्टाको धारे।

यद्यपि लंकापुरी अति सुन्दर है तथापि रावणके आनेसे अधिक समारी गई है अति देदीप्यमान रत्नों का कोट है गम्भीर खाई से मण्डितहै कुदके पुष्प समान अति उज्वल स्फटिक मणि के महल हैं जिन में इन्द्र नीलमणियों की जाली शोभे हैं और कहूं इक पद्मराग मणियोंके अरुण महलहैं कहीं एक पुष्पराग मणियों के महल हैं कहीं एक मरकत मणियों के महिल हैं इत्यादि अनेक मणियों के मन्दिरों से लङ्का स्वर्गपुरी समान है नगरी तो सदाही रमणीक है परन्तु धनी के आनेसे अधिक बनी है रावण ने अति हर्षसे लंका में प्रवेश किया रावणको किसी की शंका नहीं पहाड़ समान हाथी तिनकी अधिक शोभावनी है और मन्दिर समान रत्नमई रथ बहुत समारे गए हैं अश्वोंके समूह हींसते चलायमान चमर समान है पूंछ जिनकी और विमान अनेक प्रभा को धरे इत्यादि महा विभूति से रावण आया चन्द्रमा समान उज्वल सिरपर छत्र फिरते अनेक ध्वजा पताका फरहरती बन्दीजन के समूह विरद बखानते महामंगल शब्दहोते वीण बांसुरी शंख इत्यादि अनेकवादित्र बाजते दशोंदिशा और आकाश शब्दायमान हो रहा है इस विधि लंका में पधारे तब लंका के लोग अपने स्वामी का आगमन देख दर्शनके लालसी हाथ में अर्घ लीए पत्रफल पुष्परत्न लीए अनेक सुन्दर वस्त्र आभूषण पहरे राग रंग सहित रावण के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समीप आए वृद्धोंको आगे कर तिनके पीछे जाय नमस्कार कर कहते भए कि हे नाथ लङ्का के लोग अजितनाथ के समय से आपके घरके शुभ चिन्तक हैं सो स्वामीको अति प्रबल देख अति प्रसन्न भए हैं इस प्रकार भांति भांति की आसीस दीनी तब रावणने बहुत दिलासा देकर सीख दीनी सो रावण के गुणगावते अपने अपने घरों को गये ॥

अथानन्तर रावणके महलमें कौतुकयुक्त नगरकी नरनारी अनेक आभूषण पहिरे रावणके देखने की इच्छासे सर्वघरके कार्य छोड़ २ पृथ्वीनाथके देखनेको आई रावण वैश्रवण के जीतनेहारे तथा यम विद्याधर के जीतनेहारे अपने महलमें राजलोक सहित सुखसों तिष्ठे, महल चूड़ामणि समान मनोहर है और भी विद्याधरोंके अधिपति यथायोग्य स्थानकमें आनन्द से तिष्ठे देवन समान हैं चरित्र जिनके ॥

हे श्रेणिक! जो उज्ज्वलकर्मके करणहारे हैं तिनका निर्मलयश पृथिवी विषे होय है नाना प्रकार के रत्नादिक संपदा का समागम होय है और प्रबल शत्रुओंका निर्मूल होय है सकल त्रैलोक्यमें गुण विस्तरे है इस जीवके प्रचण्ड बैरी पांच इंद्रियोंके विषयहैं जो जीवकी बुद्धि हरें हैं और पापोंका बन्ध करें हैं यह इन्द्रियोंके विषय धर्मके प्रसादसे वशीभूत होयहैं और राजाओंके बाहिरले बैरी प्रजाके बाधक ते भी आय पावोंमें पड़े हैं ऐसा मानकर जो धर्मके विरोधी विषयरूप बैरी हैं वे विवेकियोंको वश करनेयोग्य हैं तिनका सेवन सर्वथा न करना। जैसे सूर्यकी किरणोंसे उद्योत होते हुवे भली दृष्टिवाले पुरुष अन्धकारसे व्याप्त औंड़े खाड़ेमें नहीं पड़े हैं तैसे जे भगवान्के मार्गमें प्रवर्ते हैं तिनके पापबुद्धि की प्रवृत्ति नहीं होय है।

किहकन्धपुर में राजा सूर्यरज बानरवंशी तिनकी राणी चन्द्रमालिनी अनेक गुणोंमें पूर्ण तिसके बाली

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्रभए जो सदा उपकारी शीलवान पण्डित प्रवीण धीर लक्ष्मीवान शूरवीर ज्ञानी अनेक कला संयुक्त सम्यक दृष्टि महाबली राजनीति में प्रवीण धीर्यवान दया कर भींगा है चित्त जिनका विद्याके समूह कर मंडित कांतिवंत तेजवंत हैं। ऐसे पुरुष संसारमें बिरलेहीहैं वह समस्त अढाई द्वीपके जिनमंदिरों के दर्शनमें उद्यमी हैं जिन मंदिर अति उत्कृष्ट प्रभा से मंडित हैं बाली तीनों काल अति श्रेष्ठ भक्ति युक्त संशय रहित श्रद्धावंत जम्बूद्वीप के सर्व चैत्यालयों के दर्शन कर आवै महा पराक्रमी शत्रुपक्ष का जीतने हारा नगर के लोगों के नेत्र रूपी कुमुद के प्रफुल्लित करने को चन्द्रमा समान जिसको किसी की शंका नहीं किहकन्धपुर में देवों की न्याई रमै किहकन्धपुर महा रमणीक नाना प्रकारके रत्नमई मंदिरों से मंडित गज तुरंग रथादि से पूर्ण जहां नाना प्रकार का व्यापार है और अनेक सुन्दर हाटों की पंक्तियों से युक्त हैं जहां जैसे स्वर्ग विषे इन्द्र रमै तैसे रमै हैं। अनुक्रम से जिसके छोटा भाई सुग्रीव भया वह भी महाधीर वीर मनोज्ञ रूप कर युक्त महा नीतिवान बिनयवान है ये दोनों ही वीर कुल के आभूषण होते भए जिनका आभूषण बड़ों का विनय है सुग्रीव के पीछे श्री प्रभा बहिन भई जो साक्षात लक्ष्मी रूप में अतुल्य है और किहकन्धपुर में सूर्यरजका छोटा भाई रक्षरज उसकी राणी हरिकांता उसके पुत्र नल और नील होते भए सुजनों को आनन्दके उपजाने हारे महासामन्त रिपुकी शंका रहित मानों किहकंधपुरके मंडन ही हैं इन दोनों भाइयोंके दो दो पुत्र महा गुणवन्त भए राजा सूर्यरज अपने पुत्रोंको योवनवन्त देख मर्यादाके पालनहारे जान आप विषयों को विषमिश्रितअन्न समान जान संसारसे विरक्त भए राजा सूर्यरज महाज्ञानवानहैं बालीको पृथ्वीके

प.सने निमित्त राज दिया और सुग्रीवको युवराजपद दिया अपने स्वजन परजन समान जाने और यह चतुरगति रूप जगत महा दुखकर पीड़ित देख विहतमोह नामा मुनि के शिष्य भए जैसा भगवानने भाषा तैसा चारित्र धारा मुनि सूर्यरजको शरीर से ममत्व नहींहै आकाश सारिखा निर्मल अन्तःकरणहै समस्त परिग्रह रहित पवनकी न्याईं पृथ्वी विषे बिहार करते भए विषय कषाय रहित मुक्ति के अभिलाषी भए बाली के धुवा नामास्त्री महा पतिव्रता गुणों के उदय से सैकड़ों राणियोंमें मुख्य उस संहित अति ऐश्वर्यको धरे राजा बाली बानर बंशियों के मुकट विद्याधरों के अधिपति सुन्दर चरित्रवान देवों कैसे सुख भोगते हुए किहकन्धपुर में राज करें।

रावणकी बहिन चन्द्रनखा जिसके सर्वगात्र मनोहर राजा मेघप्रभका पुत्र खरदूषणने जिस दिन से इसको देखा उस दिनसे कामबाणकर पीड़ित भया इसको हरा चाहेहै। सो एक दिन रावण राजा प्रवर राणी आवली उनकी पुत्री तनुदरी उसके अर्थ एक दिन रावण गए सो खरदूषणने लंका रावण बिना खाली देख चिन्तारहित होय चन्द्रनखा हरी खरदूषण अनेक विद्याका धारक मायाचारमें प्रवीण है दोनों भाई कुंभकर्ण विभीषण बड़े शूरवीर हैं परन्तु मौका पाकर मायाचार से इसने कन्याको हरी तब वे क्या करें उसके पीछे सेना दौड़ने लगी तब कुंभकर्ण विभीषणने यह बिचार कर मनह करी कि खरदूषण पकडा नहीं जावैगा और मारणा योग्य नहीं फिर रावण आए तब यह बार्ता सुनकर अति क्रोध किया यद्यपि मार्गके खेद से शरीर पर पसेव आया हुआ था तथापि तत्काल खरदूषण पर जाने को उद्यमी भए रावण महा मानी है एक खडगही का सहाय लिया और सेनाभी लार न लीनी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह विचारा कि जो महावीर्यवान पराक्रमीहै उनके एक खडगहीका सहाराहै तबमन्दोदरीने हाथ जोड़ बिनती करी हे प्रभू आप प्रगट लौकिकस्थितिके ज्ञाताहो अपनेघरकी कन्या औरको देनी और औरोंकी आप लेनी इनकन्याओंकी उत्पत्ति ऐसीही है और खरदूषण चौदह हजार विद्याधरोंका स्वामी है विद्याधर कभी भी युद्धसे पीछे न हटें वडे बलवानहैं और इस खरदूषणको अनेक सहस्रविद्या सिद्धहैं महागर्ववंतहै आपसमान शूरवीर है यह बार्ता लोकोंसे क्या आपनेनहीं सुनीहै आपके और उसके भयानक युद्ध प्रवर्ते तबभी हारजीतका संदेह ही है और वह कन्याहर लेगयाहै हरणेकेकारण वह कन्या दूषितभई है सोखरदूषणकेमारनेसे वह विधवाहोयगी और सूर्यरजको मुक्तिगए पीछे चंद्रोदर विद्याधर पाताललंकामें थानेथा उसे काढ़कर यह खरदूषण तुम्हारी बहिन सहित पाताललंकामें तिष्ठेहै तुम्हारासंबंधीहै तबरावण बोले हे प्रिये मैं युद्धसे कभी नहीं डरूं परंतु तुम्हारे बचन नहीं उलंघने और बहिन बिधवा नहीं करणी सो हमने क्षमाकरी तब मन्दोदरी प्रसन्न भई ।

कर्मके नियोगसे चंद्रोदर विद्याधर कालको प्राप्त भया तब उसकी स्त्री अनुराधा गर्भिणी बिचारी भयानक बनमें हिरणीकी न्याईं भ्रमै उसने मणिकांत पर्वतपर सुन्दर पुत्र जना शिला ऊपर पुत्रका जन्म भया शिला कोमल पल्लव और पुष्पोंके समूहसे संयुक्तहै अनुक्रमसे बालकबृद्धिको प्राप्त भया यह बन बासिनी माता उदास चित्त पुत्रकी आशासे पुत्रको पाले जब यह पुत्र गर्भमें आया तबहीसे इनके माता पिताको बैरियों से विराधना उपजी इस लिये इसका नाम विराधित धरा यह विराधित राजसम्पदा वर्जित जहां जहां राजाओं के पास जाय वहां वहां इसका आदर न होय सो जैसे सिरका केश स्थानक से छूटा आदर न पावे तैसे जो निज स्थानकसे रहित होय उसका सनमान कहां ते होय सो यह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा का पुत्र खरदूषण का जीतिबे समर्थ नहीं सो चित्त विषे खरदूषण का उपाय चितवता हुआ सावधान रहै और अनेक देशों में भ्रमण करै षट् कुलाचलपर और सुमेरु पर्वत पर तथा रमणीक बनोंमें जो अतिशय स्थानकहैं जहां देवोंका आगमनहै वहां यह बिहार करै और संग्राममें योधा लड़ें तिन के चरित्रआकाश में देवोंके साथ देखे संग्राम गज अश्व रथादिककर पूर्णहै और ध्वजाछत्रादिककर शोभित है इस भांति विराधित कालक्षेप करे और लंका विषे रावण इन्द्रकी न्याईं सुख से तिष्ठे ।

सूर्यरजका पुत्र बाली रावणकी आज्ञा से बिमुख भया बाली अद्भुत कर्मोंकी करनहारी विद्या से मंडित है और महाबली है तब रावण ने बाली पै दूत भेजा महा बुद्धिवान दूत किहकन्धपुरमें जाय कर बाली से कहता भया हे वानरधीश दशमुख ने तुमको आज्ञा करी है सो सुनो दशमुख महाबली महा तेजस्वी महा लक्ष्मीवान महा नीतिवान महा सेना युक्त प्रचण्डन को दण्ड देनहारा महा उदयवान है जिस समान भरत क्षेत्र में दूजा नहीं पृथ्वी के देव और शत्रुओं का मान मर्दन करने हारा है यह आज्ञा करी है कि तुम्हारे पिता सूर्य्यरज को मैंने राजायम बैरी को काढ़ कर किहकंध पुर में थापा था और तुम सदा के हमारे मित्र हो परन्तु आप अब सब उपकार भूलकर हमसों पराङ्मुख होगये हो यह योग्य नहींहै मैं तुम्हारे पितासेभी अधिक प्रीति तुमसे करूंगा तुम शीघ्रही हमारे निकट आवो प्रणाम करो और अपनी बहिन श्रीप्रभा हमको परणावो हमारे सम्बन्ध से तुम को सब सुख होयगा दूतने कही यह रावणकी आज्ञा प्रमाण करो सो बालीके मनमें और बात तो आई परन्तु एक प्रणाम की न आई क्योंकि यह देव गुरु शास्त्र विना और को नमस्कार नहिं करै था यह प्रतिज्ञा

For Private and Personal Use Only

थी तब दूत ने फेर कही कि हे कपिध्वज अधिक कहिने से क्या है मेरे वचन तुम निश्चय करो अल्प लक्ष्मी पाकर गर्व मतकरो यातो दोनों हाथ जोड़ प्रणाम करो या आयुध पकड़ो यातो सेवक होकर स्वामी पर चंवर ढोरो या भागकर दशों दिशामें विचरो या सिर निवावो या खेंचिके धनुष निवावो या रावण की आज्ञा को कर्णका आभूषण करो या धनुषकी पिणच खैंचकर कानों तक लावो यातो मेरे चरणारविन्द की रज माथे चढ़ावो या रण संग्राम में सिरपर टोप धरो यातो बाण छोड़ो या धरती छोड़ो यातो हाथ में वेत दण्ड लेकर सेवा करो या बरछी हाथमें पकड़ो यातो अंजली जोड़ो या सेना जोड़ो या तो मेरे चरणों के नख में मुख देखो या खड्ग रूप दर्पणमें मुख देखो ये कठोर वचन रावणके दूतने बाली से कहे तब बाली का व्याघ्रविलंबी नामा सुभट कहता भया रेकुदूत नीच पुरुष तू ऐसे विवेक के वचन कहै है तू खोटे ग्रहकर ग्रहा है समस्त पृथिवी पर प्रसिद्ध है पराक्रम और गुण जिसका ऐसा बाली देव तूने अबतक कर्णगोचर नहीं किया ऐसा कहकर सुभट ने महा क्रोधायमान होकर दूत के मारणे को खडग पर हाथ धरा तब बाली ने मने कीया कि इस रंक के मारणे से क्या यह तो अपने नाथके कहे प्रमाण वचन बोले है और रावण ऐसे वचन कहावे है सो उसीकी आयु अल्प है तब दूत डरकर शिताब रावण पै गया रावणको सकल वृत्तान्त कहा रावण महा क्रोधको प्राप्त भया दुस्सह तेजवान रावणने बड़ी सेनाकर मण्डित वखतर पहर शीघ्रही कूच किया रावणका शरीर तेजोमय परमाणुवों से रचागयाहै रावण किहकन्धपुर पहुंचे बाली ने परदल का महा भयानक शब्द सुनकर युद्ध के अर्थ बाहिर निकसने का उद्यम किया तब महा बुद्धिमान नीतिवान जे सागर वृद्धादिक मन्त्री उन्हों ने वचनरूपी जलसे शांत

किया कि हे देव निष्कारण युद्ध करनेसे क्या क्षमाकरो आगे अनेक योधा मान करके क्षयभए रणही था प्रिय जिन को अष्टचन्द्र विद्याधर अर्ककीर्त्ति के भुज के आधार जिन के देव सहाई तौभी मेघेश्वर जयकुमारके बाणोंकर क्षय भए रावण की बड़ी सेना है जिसकी ओर कोई देखसके नहीं खड्ग गदा सेल बाण इत्यादि अनेक आयुधों कर भरी है अतुल्य है इसलिये आप संदेहकी तुला जो संग्राम उस के अर्थ न चढ़ो तब बाली ने कही अहो मन्त्री हो अपनी प्रशंसा करनी योग्य नहीं तथापि में तुमको यथार्थ कहूं हूं कि इस रावणको सेना सहित एक क्षणमात्र में बावें हाथकी हथेलीसे चूरडारनेको समर्थ, हूं परन्तु यह भोग क्षणविनश्वर हैं इनके अर्थ ऐसा निर्दय कर्म कौन करै जब क्रोधरूपी अग्नि से मन प्रज्वलित होता है तब निरदय कर्म होता है यह जगत के भोग केलेके थंभ समान असार हैं तिन को पाकर मोहवन्त जीव नरकमें पड़े हैं नरक महादुःखों से भरा है सर्व जीवों को जीतव्य वल्लभ है सो जीवों के समूहको हतकर इन्द्रियोंके भोग सुख प्राप्त होसक्ते हैं ऐसे भोगों में गुण कहां इन्द्रीय सुख साक्षात दुखही हैं ये प्राणी संसार रूपी महाकूप में अरहटकी घड़ी के यन्त्र समान रीती भरी करते रहते हैं यह जीव विकल्प जाल से अत्यन्त दुःखी हैं श्री जिनेंद्रदेवके चरण युगल संसार से तारणे के कारण हैं उनको नमस्कार कर और को कैसे नमस्कार करूं मैंने पहिलेसे ऐसी प्रतिज्ञा करी है कि देव गुरु शास्त्र के सिवाय और को प्रणाम न करूंगा इसलिये मैं अपनी प्रतिज्ञा भंगभी न करूंगा और युद्ध में अनेक प्राणियों का प्रलयभी न करूंगा बल्कि मुक्तिकी देनहारी सर्व संग रहित दिगम्बरी दीक्षा धरूंगा मेरे जो हाथ श्री जिनराजकी पूजा में प्रवरतें दान में प्रवरतें और पृथिवी की रक्षा में प्रवरतें वे मेरे

हाथ कैसे किसीको प्रणाम करें और जो हस्त कमल जोड़कर पराया किंकर होवे उसका क्या ऐश्वर्य और क्या जीतव्य वह तो दीन है ऐसा कहकर सुग्रीवको बुलाया आज्ञा करते भये कि हे बालक सुनो तुम रावणको नमस्कार करो वा न करो अपनी बहिन उसे देवो अथवा मत देवो मेरे कछू प्रयोजन नहीं में संसारके मार्गसे निवृत भया तुमको रुचै सो करो ऐसा कहकर सुग्रीवको राज्य देय आप गुणनकर गरिष्ठ श्रीगगनचन्द्र मुनि पै परमेश्वरी दीक्षा आदरी परमार्थ में लगाया है चित्त जिनने और पायाहै परम उदय जिनने वे बाली योधा परम रिषि होय एक चिद्रूप भाव में रत भए सम्यग्दर्शन है निर्मल जिनके सम्यक् ज्ञान कर यक्त है आत्मा जिनका सम्यक् चारित्रमें तत्पर बारा अनुप्रेक्षाओंका निरंतर विचार करते भये आत्मानुभाव में मग्न मोह जाल रहित सगुणरूपी भूमिपर विहार करतेभये वह गुण भूमि निर्मल आचारी जे मुनि उनकर सेवनीक है बाली मुनि पिता की न्याईं सर्व जीवों पर दयालु बाह्याभ्यन्तर तपसे कर्मकी निर्जरा करते भये वे शान्तबुद्धि तपोनिधि महाऋद्धीके निवास होते भए सुन्दर है दर्शन जिनका ऊंचे ऊंचे गुणस्थान रूपी जे सिवाण तिनके चढ़ने में उद्यमीभये भेदी है अन्तरंग मिथ्या भाव रूपी ग्रन्थि (गांठ) जिनने बाह्याभ्यन्तर परिग्रह रहित जिन सूत्रके द्वारा कृत्य अकृत्य सब जानते भये महा गुणवान महा संवर कर मण्डित कर्मों के समूह को खिपावते भये प्राणोंकी रक्षा मात्र सूत्र प्रमाण अहार लेय हैं और प्राणोंको धर्म के निमित्त धारे हैं और धर्मको मोक्षके अर्थ उपारज हैं भव्य लोकों का आनन्द के करनहार उत्तम हैं आचरण जिन के ऐसे बाली मुनि और मुनियोंको उपमा योग्य होते भये और सुग्रीव रावण को अपनी बहिन परणायकर रावणकी आज्ञा प्रमाण किहकन्धपुरका राज्य करता भया।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पृथिवी विषे जो जो विद्याधरों की कन्या रूपवन्ती थीं रावणने वे समस्त अपने पराक्रम से परणी नित्यालोक नगर में राजा नित्यालोक राणी श्रीदेवी तिनकी रत्नावली नामा पुत्री उसको परण कर रावण लङ्का को आवते थे सो कैलाश पर्वत ऊपर आय निकसे तहां के जिनमन्दिरोंके और बाली मुनि के प्रभावसे पुष्पक विमान आगे चल न सका विमान मनके वेग समान चंचल है जैसे सुमेरुके तटको पाय कर वायु मण्डल थंभे तैसे विमान थंभा तब घण्टादिकका शब्द रहित भया मानो लिखा होय मौनको प्राप्तभया तब रावण विमानको अटका देख मारीच मन्त्री से पूछते भये कि यह विमान कौन कारणसे अटका तब मारीच सर्व वृत्तान्तमें प्रवीण कहताभया हे देव सुनो यह कैलाश पर्वतहै यहां कोई मुनि कायोत्सर्ग तिष्ठै है शिलाके ऊपर रत्नके थंभ समान सूर्य के सन्मुख ग्रीषममें आतापन योग धर तिष्ठे है अपनी कांति से सूर्यकी कांतिको जीतता हुवा विराजे है यह महामुनि धीरवीरहै महाघोर वीर तपको धरै है शीघ्रही मुक्तिको प्राप्त हुवा चाहे है इसलिये उतरकर दर्शनकरो आगेचलो या विमान पीछे फेर कैलाश को छोड़कर और मार्ग होय चलो जो कदाचित हठकर कैलाशके ऊपर होय चलोगे तो विमान खण्ड खण्ड होजायगा यह मारीच के वचन सुनकर राजा यमका जीतनेहारा रावण अपने पराक्रम से गर्वित होकर कैलाश पर्वतको देखता भया पर्वत मानो व्याकरणही है क्योंकि नाना प्रकारके धातुवों से भरा है और सहस्रों गुणों से युक्त नाना प्रकारके सुवर्ण की रचना से रमणीक पद पंक्तियुक्त नाना प्रकार के स्वरों कर पूर्ण है। ऊंचे तीखे शिखरोंके समूह कर शोभायमानहै आकाशसे लगा है निसरते उछलते जे जलके नीझरने तिनकर प्रकट हंसे ही हैं कमल आदि अनेक पुष्पोंकी सुगन्ध सोई

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भई सुरा उससे मस्त जे भ्रमर तिनकी गुञ्जार से अति सुन्दर है नाना प्रकारके वृक्षोंकर भरा है बड़े बड़े शालके जे वृक्ष तिनकर मण्डित जहां छहों ऋतुवोंके फल फूल शोभै हैं अनेक जातिके जीव विचरैं हैं जहां ऐसी ऐसी औषध हैं जिनकी बासनासे सर्पोंके समूह दूर रहैं हैं मनोहर सुगन्धसे मानों वह पर्वत सदा नव योबनहीको धरै है और मानो वह पर्वत पूर्व पुरुष समान ही है विस्तीर्ण जो शिला वेही है हृदय जिसका और शाल वृक्ष वेई महा भुजा और गम्भीर गुफा सोही वदन वह पर्वत शरद ऋतुके मेघ समान निर्मल तट से सुन्दर मानो दुग्धसमान अपनी उज्वल कांतिसे दशों दिशा को स्नानही करावै है कहीं इक गफाओं में सूते जे सिंह तिनकर भयानक है कहीं इक सूते जे अजगर तिनके स्वास रूपी पवन से हाले हैं वृक्ष जहां कहीं इक भ्रमते क्रीड़ा करते जे हिरणोंके समूह तिनकर शोभै है कहीं इक मस्त हाथियों के समूहसे मण्डित है बन जहां कहीं इक फलों के समूह से मानों रोमांच होय रहाहै और कहीं इक बनकी सघनतासे भयानकहै कहीं इक कमलों के बनसे शोभितहै सरोवर जहां कहीं बानरों के समूह वृक्षोंकी शाखोंपर केलि कर रहेहैं और कहीं गैंडान के पगकर छेदेगये हैं जे चन्दनादि सुगंध वृक्ष तिनकर सुगन्ध होयरहा है कहीं बिजली के उद्योत से मिला जो मेघमण्डल उस समान शोभाको धरै हैं कहीं दिवाकर समान जे ज्योति रूप शिखर तिनकर उद्योत रूप कियाहै आकाश जिसने ऐसा जो कैलाश पर्वत उसे देख रावण विमान से उतरा वहां ध्यान रूपी समुद्र में मग्न अपने शरीर के तेज से प्रकाश किया है दशोंदिशा जिनने ऐसे बाली महामुनि देखे दिग्गजकी सूण्ड समान दोऊ भुजा लम्बाए कायोत्सर्ग धर खड़े लिपटि रहे हैं शरीर से सर्प जिनके मानों चन्दनके वृक्षही हैं आतापनि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिला पर निश्चल खड़े प्राणियोंको ऐसे दीखें मानो पाषाणका थम्भही हैं रावण बाली मुनिको देख कर पूर्व बैर चितार पापी क्रोध रूपी अग्निसे प्रज्वलित भया भृकुटी चढ़ाय होंठ डसता कठोर शब्द मुनि को कहताभया अहो यह कहा तप तेरा जो अबभी अभिमान न छूटा मेरा विमान चलता थांभा कहां उत्तम क्षमा रूप वीतराग का धर्म और कहां पापरूप क्रोध कहां तू वृथा खेद करै है अमृत और विष को एक किया चाहे है इसलिये मैं तेरा गर्व दूर करूंगा तुझ सहित कैलाश पर्वतको उखाड़ समुद्रमें डार दूंगा ऐसे कठोर बचन कहकर रावणने विकराल रूप किया सर्व विद्या जे साधी हैं तिनकी अधिष्ठाता देवी चितवन मात्रसे आय ठाढ़ी भई सो विद्याबलकर रावण ने महारूप किया धरतीको भेद पातालमें पैठा महा पाप विषे उद्यमीहै प्रचण्ड क्रोडकर लाल हैं नेत्र जिसके और हुंकार शब्दकर वाचालहै मुख जिसका भुजाओंकर कैलाश पर्वत के उखाड़नेका उद्यम किया तब सिंह हस्ती सर्प हिरण इत्यादि अनेक जीव और अनेक जाति के पक्षी भयकर कोलाहल शब्द करते भये जलके नीझरने टूटगये जल गिरने लगे वृक्षोंके समूह फटगये पर्वतकी शिला और पाषाण पड़ते भये तिनके विकराल शब्दकर दशोंदिशा पूरित भई कैलाश पर्वत चलायमान भया जो देव क्रीड़ा करते थे वह आश्चर्यको प्राप्त भए दशोंदिशा की ओर देखतेभये और जो अप्सरा लतावोंके मण्डप में केलि करतींथीं वह लतावों को छोड़ आकाश में गमन करती भई भगवान बाली ने रावण का करतव्य जान आप धीरवीर क्रोधरहित कछु भी खेद न माना जैसे निश्चल विराजतेथे तैसेही रहे चित्तमें ऐसा विचारकिया कि इस पर्वतपर भगवानके चैत्यालय अति उतंग महा सुन्दरताकर शोभित सर्व रत्नमई भरत चक्रवर्त्तीके कराये हुये हैं जहां निरन्तर भक्ति

For Private and Personal Use Only

पद्म
पुराण
॥१९२॥

संयुक्त सुर असुर विद्याधर पूजाको आवें हैं कभी इस पर्वत के कम्पायमान होनेसे चैत्यालयों का भंग न होजाय ऐसा बिचार अपने चरणका अङ्गुष्ठ ढीलासा दाबा रावण महाभाराक्रांत होय दबा बहु रूप बनाया था सो भंग भया महा दुःख कर व्याकुल नेत्रोंसे रक्त झरनेलगा मुकट टूटगया और माथा भीग गया पर्वत बैठगया रावण के गोड़े छिल गए जंघाभी छिलिगई तत्काल पसेवमें भीग गया और धरती पसेवकर गीली भई रावण के गात्र सकुच गए कछुवा समान होगया तब रोणे लगा इसही कारण से पृथिवी में रावण कहाया अब तक दशानन कहावे था इसके अत्यन्त दीन शब्द सुनकर इसकी राणी अत्यन्त विलाप करतीभई और मन्त्री सेनापति लारके सर्व सुभट पहिले तो भ्रमकर बृथा युद्ध करणे को उद्यमी भयेथे पीछे मुनिका अतिशय जान सर्व आयुध डार दीए मुनिके काय बल ऋद्धिके प्रभाव से देव दुन्दुभी बजाने लगे और कल्पबृक्षों के फूलोंकी वर्षा भई उस पर भ्रमर गुञ्जार करते भये आकाश में देव देवी नृत्य करते भये गीतकी ध्वनि होती भई तब महा मुनि परम दयालु ने अंगुष्ठ ढीला किया रावण ने पर्वत के तले से निकस बाली मुनिके समीप आय नमस्कार कर क्षमा कराई और जाना है तपका बल। योगीश्वरकी बारम्बार स्तुति करता भया हे नाथ तुमने पहिलेही से यह प्रतिज्ञा करी हुईथी कि जो मैं जिनेन्द्र मुनींद्र जिन शासन सिवाय किसीको भी प्रणाम न करूं सो यह सर्व उस सामर्थता का फलहै अहो धन्यहै निश्चय तुम्हारा और धन्य यह तपका बल हे भगवान तुम योग शक्तिसे त्रैलोक्य को अन्यथा करने को समर्थ हो परन्तु उत्तम क्षमा धर्मके योग से सबके दयालु हो किसीपर क्रोध नहीं हे प्रभो जैसी तपकर पूर्ण मुनि को विनाही यत्न परम सामर्थ होय है तैसी इन्द्रादिक के नहीं धन्य है

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुण तुम्हारे धन्य हे रूप तुम्हारा धन्य है कांति तुम्हारी धन्य है आश्चर्यकारी बल तुम्हारा अद्भुत दीप्ति तिहारी अद्भुत शील अद्भुत तप त्रैलोक्य में जे अद्भुत परमाणु हैं तिन से सुकृत का आधार तुम्हारा शरीर बनाहैं जन्महीसे महा बली सर्व सामर्थ के धरनहारे तुम नव यौवन में जगत्की माया को तज कर परम शान्त भाव रूप जो अरहंत की दीक्षा उसको प्राप्त भए हो सो यह अद्भुत कार्य तुम सारिषे सत्पुरुषोंकर ही बने है मुझ पापी ने तुम सारिखे सत्पुरुषों से अविनय किया सो महा पाप का बन्ध किया धिक्कार है मेरे मनवचन कायको मैं पापी मुनिद्रोह में प्रवरता जिन मन्दिरोंका अविनई भया आप सारिखे पुरुषरत्न और मुझ सारिखे दुरबुद्धि सो सुमेरु और सरसोंकासा अन्तरहै मुझमरतेकोआपने आज प्राण दीए आप दयालु हम सारिखे दुर्जन तिन ऊपर क्षमाकरी इस समान और क्या मैं जिनशासनको श्रवण करूं हूं जानूं हूं देखूं हूं कि यह संसार असार है अस्थिर है दुःख भाव है तथापि मैं पापी विषयनसे वैराग्य को नहीं प्राप्त भया धन्य हैं वे पुण्यवान महापुरुष अल्प संसारी मोक्षके पात्र जो तरुण अवस्थाही में विषयों को तजकर मोक्षका मार्ग मुनिव्रत आचरें हैं इस भांति मुनिकी अस्तुति कर तीन प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर अपनी निन्दा कर बहुत लज्जावान होय मुनिके समीप जो जिन मन्दिर थे वहां बन्दना को प्रवेश किया चन्द्रहास खडगको पृथिवी पर रख कर अपनी राणियों कर मण्डित जिनवर का आरचन करता भया भुजा में से नस रूप तांत काढ़ कर बीण समान बजाता भया। भक्ति में पूर्ण है भाव जिसका स्तुतिकर जिनेन्द्र के गुणानुवाद गावता भया हे देवाधिदेव लोकालोक के देखने हारे नमस्कार हो तुमको लोक को उलंघै ऐसा हैं तेज तुम्हारा। हे कृतार्थ हे

For Private and Personal Use Only

महात्मा नमस्कारहो तुमको । तीन लोककर करी है पूजा जिनकी नष्ट किया है मोहका बेग जिन्होंने बचनसे अगोचर गुणोंके समूहके धारनेहारे महा ऐश्वर्यकर मंडित मोक्ष मार्ग के उपदेशक सुखकी उत्कृष्टतामें पूर्ण समस्त कुमार्गसे दूर जीवनको भक्ति और मुक्तिके कारण महाकल्याणके मूल सर्व कर्मके साक्षी ध्यानकर भस्म किएहैं पाप जिन्होंने जन्ममरणोंके दूर करनेहारे समस्तके गुरु आप के कोई गुरु नहीं आप किसीको नवें नहीं और सबकर नमस्कार करने योग्य आदि अन्त रहित समस्त परमार्थके जाननेहारे आपको केवली बिना और न जान सके सर्व रागादिक उपाधिसे शून्य सर्व के उपदेशक द्रव्यार्थके नयसे सब नित्यहै और परमार्थिक नयसे सब अनित्यहैं ऐसा कथन करनेहार किसी एक नयसे द्रव्य गुणका भेद किसी एक नयसे द्रव्य गुणका अभेद ऐसा अनेकांत दिखावनेहारे जिनेश्वर सर्व रूप एकरूप चिद्रूप अरूप जीवनको मुक्तिके देनेहारे ऐसे जो तुम तिनको हमारा बारम्बार नमस्कार हो । श्रीऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चंद्रप्रभ पुष्पदंत शीतल श्रेयांस वासुपूज्य के ताईं बारम्बार नमस्कार हो पाया है आत्म प्रकाश जिन्हों ने बिमल अनंत धर्म शांतिके ताईं नमस्कार हो निरंतर सुखोंके मूल सबको शांतिके करता कुन्थ जिनेन्द्रके ताईं नमस्कार हो अरनाथके ताईं नमस्कार हो मल्लि महेश्वरके ताईं नमस्कार हो मुनि सुव्रतनाथके ताईं जो महाव्रतोंके देनेहारे और अब जो होवेगे नमि नेम पार्श्व वर्द्धमान तिनके ताईं नमस्कारहो और जो पद्मनाभादिक अनागत होवेंगे तिनको नमस्कार और जे निर्वाणादिक अतीत जिन भए तिनको नमस्कार हो सदा सर्वदा साधुओंको नमस्कार और सर्व सिद्धोंको निरंतर नमस्कार । कैसेहैं सिद्ध केवल ज्ञानरूप

केवल दर्शनरूप चायक सम्यक्तरूप इत्यादि अनन्त गुणरूप यह पवित्र अक्षर लंकाके स्वामीने गाए।

रावण द्वारा जिनेन्द्रदेवकी महा स्तुति करनेसे धरणेंद्रका आसन कंपायमान भया। तब अवध ज्ञानसे रावणका वृतान्त जान हर्षसे फूलें हैं नेत्र जिसके सुन्दरहैं मुख जिसका देदीप्यमान मणियों के ऊपर जे मणि उनकी कांति से दूर किया है अन्धकार का समूह जिसने पातालसे शीघ्रही नागों के राजा कैलाश पर आए जिनेन्द्रको नमस्कारकर विधिपूर्वक समस्त मनोज्ञ द्रव्योंसे भगवानकी पूजा कर रावणसे कहते भए हे भव्य तैंने भगवानकी स्तुति बहुत करी और जिन भक्तिके बहुत सुन्दर गीत गाए। सो हमको बहुत हर्ष उपजा हर्षकरके हमारा शरीर आनन्दरूपभया हे राक्षसेश्वर धन्यहै तू जो जिनराज की स्तुति करेहै। तेरे भावसे अवार हमारा आगमन भया है। मैं तेरेसे सन्तुष्ट भया तू बरमांग जो मन वांछित बस्तु तू मांगे सो दूं। जो बस्तु मनुष्योंको दुर्लभ है सो तुम्हें दूं तब रावण कहते भए हे नागराज जिन बन्दना तुल्य और क्या शुभ बस्तु है जो मैं आपसे मांगूं आप सर्व बात समर्थ मनबांछित देनेलायक हैं। तब नागपति बोले हे रावण जिनेन्द्र की बन्दना के तुल्य और कल्याण नहीं। यह जिन भक्ति आराधी हुई मुक्तिके सुख देवै है इस लिये इस तुल्य और कोई पदार्थ न हुआ न होयगा तब रावण ने कही हे महामते जो इससे अधिक और बस्तु नहीं तो मैं क्या याचूं। तब नागपति बोले तैंने जो कहासो सबसत्यहै जिनभक्तिसे सबकुछ सिद्धिहोयहै इसको कुछ दुर्लभ नहीं तुम सारिखे मुझसारिखे और इंद्रसारिखे अनेकपद सर्व जिनभक्तिसेहीहोयहै औरयहतो संसारके सुख अल्पहैं बिनाशीकहैं इनकी क्याबातमोक्षके अविनाशीजो अतेन्द्री सुख वेभीजिनभक्तिसे होयहैं हेरावण

तुम यद्यपि अत्यन्तत्यागीहो महाविनयवान बलवानहो महाऐश्वर्यवानहो गुणकर शोभितहो तथापि मेरा दर्शन तुमको बृथामतहोय मैं तेरेसे प्रार्थना करूंहूं तु कुछ मांगयह मैं जानूंहूं कि तू याचकनहीं परंतु मैं अमोघ विजियानामा शक्ति विद्या तुझे दूंहूं सो हे लंकेश तू ले हमारा स्नेह खंडन मतकर हे रावण किसीकी दशा एकसी कभी नहीं रहती संपतिके अनन्तर विपति और विपतिके अनन्तर संपाति होतीहै जो कदा चित् मनुष्यशरीरहै और तुझपर विपति पड़े तो यह शक्ति तेरे शत्रुकी नाशनेहारी और तेरी रक्षा की करनेहारी होयगी मनुष्योंकी क्या बात इससे देवभी डरेंहैं यह शक्ति अग्नि ज्वालाकर मंडित विस्तीर्ण शक्ति की धारनेहारीहै तब रावण धरणेंद्रकी आज्ञा लोपनेको असमर्थ होता हुआ शक्ति को ग्रहण करताभया क्योंकि किसीसे कुछ लेना अत्यन्त लघुताहै सो इस बातसे रावण प्रसन्न नहीं भया रावण अति उदारचित्त है तब धरणेंद्र से रावणने हाथ जोड़ नमस्कार किया धरणेंद्र आप अपने स्थानक गए। कैसेहैं धरणेंद्र प्रगट है हर्ष जिनके रावण एक मास कैलाशपर रहकर भगवानके चैत्यालयों की महाभक्तिसे पूजाकर और बाली मुनिकी स्तुतिकर अपने स्थानक गए।

बाली मुनिने जो कछुइक मनके क्षोभसे पाप कर्म उपार्जाथा सो गुरुवोंके निकट जाय प्रायश्चित लिया शल्यदूरकर परम सुखी भए। जैसे विष्णुकुमार मुनिने मुनियोंकी रक्षानिमित्त बलिकापराभाव कियाथा और गुरुसे प्रायश्चित लेय परमसुखी भएथे तैसे बाली मुनिने चैत्यालयोंकी और अनेक जीवों की रक्षा निमित्त रावणका पराभव किया कैलाश थांबा फिर गुरुपै प्रायश्चित लेय शल्य मेट परमसुखी भए चारित्रसे गुप्तिसे धर्म से अनुप्रेक्षासे सुमातिसे परीषहोंके सहनेसे महासंवरको पाय कर्मोंकी निर्जरा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करी बाली मुनि केवलज्ञानको प्राप्त भए अष्टकर्मसे रहित होय तीन लोकके शिखर अविनाशी स्थान में अविनाशी अनुपम सुखको प्राप्त भए और रावणने मनमें विचारा कि जो इन्द्रियों को जीते तिन को मैं जीतिबे समर्थ नहीं इस लिये राजाओंको साधुओंकी सेवाही करनी योग्यहै ऐसा जान साधुवों की सेवामें तत्पर होता भया सम्यकदर्शन से मण्डित जिनेश्वर में दृढ़ है भक्ति जिसकी काम भोगमें अतृप्त यथेष्ट सुख से तिष्ठता भया।

ज्योतिपुर नामा नगर वहां राजा अग्निशिख राणी ह्री उनकी पुत्री सुतारा जो सम्पूर्ण स्त्री गुणों से पूर्ण सर्व पृथ्वी में रूप गुण की शोभासे प्रसिद्ध मानों कमलोंका निवास तज साक्षात् लक्ष्मी ही आईहै और राजा चक्रांक उसकी राणी अनुमति तिनका पुत्र साहसगति महादुष्ट एक दिन अपनी इच्छा से भ्रमणकरेथा सो उसने सुताराको देखा देखकर काम शल्यसे अत्यंत दुखी होकर निरंतर सुताराको मन में धरता भया दशा जिसकी उनमत्तहै ऐसा दूत भेज सुताराको याचता भया और सुग्रीव भी बार-म्बार याचता भया वह सुतारा महा मनोहर है। तब राजा अग्निशिख सुताराका पिता दुविधामें पड़ गया कि कन्या किसको देनी तब महाज्ञानी मुनिको पूछी मुनीन्द्रने कहा कि साहसगति की अल्प आयुहै और सुग्रीव को दीर्घ आयु है तब अमृत समान मुनिके बचन सुनकर राजा अग्निशिख सुग्रीवको दीर्घआयु वाला जानकर अपनी पुत्रीका पाणी ग्रहण कराया सुग्रीवका पुण्य विशेष है जो सुताराकी प्राप्ति भई तदनतर सुग्रीव और सुताराके अंग और अंगद दोय पुत्र भए और वह पापी साहसगति निर्लज्ज सुताराकी आशा छोड़े नहीं धिक्कारहै काम चेष्टा को वह कामाग्नि कर दग्ध

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चितविषेऐसा चिंतवेकिवह सुखदायनी कैसे पाऊं कबउसकामुखचन्द्रमासेअधिकमैं निरखूं कबउससहितनंदन वनविषे क्रीड़ा करूंऐसा मिथ्याचिंतवनकरता सन्तापरूपपरवशतिनीसे सुखीनामा विद्याके आराधनेको हिमवतनामा पर्वतपर जायकर अत्यंत विषम गुफा विषे तिष्ठकर विद्याके आराधनेका आरम्भ करने लगा। जैसे दुखी जीव प्यारे मित्रको चितारे तैसे विद्याको चितारता भया ।

अथानन्तर रावण दिग्विजय करनेको निकसा वन पर्वतादिंकर शोभित पृथ्वी देखता और समस्त विद्याधरोंके अधिपति अंतर द्वीपोंके वासियोंको अपने वश करता भया । और तिनको आज्ञाकारीकर तिनहीके देशोंमें थापताभया उस रावणकी आज्ञा अखंडहै और विद्याधरोंमें सिंहसमान बडे २ राजा महापराक्रमी रावणने वश किये तिनको पुत्र समान जान बहुत प्रीति करता भया महंत पुरुषोंका यही धर्महै कि नम्रतामात्रसे ही प्रसन्न होवें राक्षसोंके वंशमें अथवा कपिवंशमें जे प्रचंड राजाथे वे सर्व वश किये बड़ी सेनाकर संयुक्त आकाशके मार्ग गमन करता जो दशमुख पवन समानहै वेग जिसका उसका तेज विद्याधर सहिवेको असमर्थ भए सन्ध्याकार सुवेल हेमा पूर्ण सुयोधन हंसद्वीप वारिहल्लादि इत्यादिद्वीपोंके राजाविद्याधर नमस्कारकर भेंट लेआय मिले सो रावणने मधुरवचनकह बहुत सन्तोषे और बहुत सम्पदाके स्वामी किये । जे विद्याधर बडे २ गढ़ोंके निवासीथे वे रावणके चरणारविन्दको नम्रीभूत होय आय मिले जो सार वस्तु थी सो भेंट करी हे श्रेणिक ! समस्त बलों विषे पुर्वोपार्जित पुण्यका बल प्रबल है उसके उदयकर कौन वश न होय सबही वश होयहैं ।

अथानन्तर रथनूपुर का राजा जो इन्द्र उसके जीतिवे को रावण गमन को प्रवरता सो जहां

For Private and Personal Use Only

पाताल लंका में खरदूषण महयोक है वहां जाय डेरा किया पाताललंका के समीप डेरा भया रात्रिका समयथा खरदूषण शयन करैथा सो चन्द्रनखा रावणकी बहिनने जगाया पाताललंकासे निकसकर रावण के निकट आया रत्नोंके अर्घ देय महा भक्तिसे परम उत्साहकर रावणकी पूजा करी। रावणने भी बहनेऊपना के स्नेहकर खरदूषण का बहुत सत्कार किया जगतमें बहिन बहनेऊसमान और कोऊ स्नेहका पात्र नहीं। खरदूषणने चौदह हजार विद्याधर मनवांछित नाना रूपके धारनहारे रावण को दिखाए रावण खरदूषणकी सेना देख बहुत प्रसन्नभए आप समान सेनापति किया कैसाहै खरदूषण महा शूरवीरहै उसने अपने गुणोंसे सर्व सामन्तोंका चित्त वश कियाहै हिडंब, हैहिडिंब, विकट, त्रिजट, हय माकोट, सुजट, टंक, किहकन्धाधिपति, सुग्रीव, तथा त्रिपुर, मलय, हेमपाल, कोल, वसुन्दर इत्यादिक अनेक राजा नाना प्रकार के वाहनों पर चढ़े नाना प्रकार शस्त्र विद्या विषे प्रवीण अनेक शस्त्रन के अभ्यासी तिनकर युक्त पाताल लंका से खरदूषण रावणके कटक में आया जैसे पाताल लोक से असुर कुमारोंके समूहकर युक्त चमरेन्द्र आवे इस भांति अनेक विद्याधर राजाओंके समूहकर रावण का कटक पूर्ण होताभया जैसे बिजली और इंद्रधनुषकर युक्त मेघमालाओंके समूह तिनकर श्रावणमास पूर्ण होय ऐसे एक हजार ऊपर अधिक अक्षौहिणी दल रावणके होय चुका और दिन दिन बढ़ता जाय है और हजार हजार देवोंकर सेवा योग्य रत्न नानाप्रकार गुणोंके समूहके धारणहारे उनकर युक्त और चन्द्रकिरण समान उज्वल चमर जिसपर ढुरे हैं उज्ज्वल छत्र सिरपर फिरे हैं जिसका रूप सुंदर है महाबाहु महाबली पुष्पक नामा विमानपर चढ़ा सुमेरु समान स्थिर सूर्यसमान ज्योति अपने विमानादि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाहन संपदाकर सूर्यमंडल को आछादित करता हुवा इन्द्रका विध्वंस मनमें विचारकर रावण ने प्रयाण किया। कैसाहै रावण प्रबलहै पराक्रम जिसका मानो आकाशको समुद्र समान करताभया देदीप्य मान जे शस्त्र वेई भई कलोक और हाथी घोड़े प्यादे येही भए जलचर जीव और छत्र भंवर भए और चमर तुरंग भए नानाप्रकारके रत्नोंकी ज्योति फैल रहीहै और चमरोंके दंडमीन भएहैं ऐसीरावणकी विस्तीर्ण सेनाका वरणन कहांलग करिये जिसको देखकर देवभी डरें तो मनुष्योंकी क्या बात इन्द्रजीत मेघनाद कुंभकर्ण विभी षण खरदूषण इत्यादि बहुत सुजन रणमेंप्रवीण सिद्धहैंविद्या जिनको महाप्रकाशवंत शस्त्रशास्त्रविद्यामेंप्रवीण हैं जिनकी कीर्ति बड़ीहै महासेनाकर युक्तदेवताओंकी शोभाको जीतते हुए रावणके संगचले विन्ध्या चल पर्वतके समीप सूर्य अस्त भया मानों रावणके तेजकर विलषा होय तेज रहित भया वहां सेना का निवास भया मानों विंध्याचल ने सेना सिरपर धारी है विद्याके बलसे नाना प्रकारके आश्रयकर लिये फिर अपनी किरणों कर अन्धकार के समूह को दूर करता हुआ चन्द्रमा उदय भया मानों रावण के भयकर रात्री रत्नका दीपक लाई है और मानो निशा स्त्री भई चांदनी कर निर्मल जो आ काश सोई वस्त्र उसको धरे ताराओंके जे समूह तेई सिर विषे फूल गूंथे हैं चंद्रमाहीहै वदन जिसका नाना प्रकारकी कथाकर तथा निद्राकर सेनाके लोकोंने रात्री पूर्ण करी फिर प्रभातके वादित्र बाजे मंगल पाठकर रावण जागे। प्रभात क्रिया करी सूर्यका उदय भया मानों सूर्य भुवन विषे भ्रमणकर किसी ठौर शरण न पाया तब रावण ही के शरणे आया।

अथानन्तर रावण नर्मदाको देखते भए नर्मदाका जल शुद्ध स्फाटिकमणी समानहै और उसके तीर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनेक बनके हाथी रहेहैं सो जलमें केलि करेहैं उसकर शोभायमान हैं और नाना प्रकार के पक्षियों के समूह मधुर गानकरे हैं सो मानों परस्पर संभाषणांही करे हैं फेन कहिए झागके पटल उनकर मंडित है तरंगरूप जे भौंह उनके विलासकर पूर्ण हैं भंवरही हैं नाभि जिसके और चंचल जे मीन वेईहैं नेत्र जिसके और सुन्दर जे पुलिन वेई हैं कटिजिसके नाना प्रकारके पुष्पोंकर संयुक्त निर्मल जलही है वस्त्र जिसका मानों साक्षात सुन्दर स्त्रीही है उसे देखकर रावण बहुत प्रसन्न भए प्रबल जे जलचर उनके समूहकरमंडित है गंभीरहै कहूं एक वेग रूप बहे है कहूं एक मंदरूप बहेहै कहीं एक कुंडलाकार बहे है नाना चेष्टाकर पूर्ण ऐसी नर्मदा को देखकर कौतुक रूप हुआ है मन जिसका सो रावण नदी के तीर उतरा नदी भयानक भी है और सुन्दर भी है।

अथानन्तर माहिष्मती नगरी का राजा सहस्ररश्मि पृथ्वी में महा बलवान मानों सहस्ररश्मि कहिए सूर्य ही है उसके हजारों स्त्री नर्मदा विषे रावण के कटक के ऊपर सहस्ररश्मिने जल यंत्रकर नदी का जल थांभा और नदी के पुलिन विषे नाना प्रकार की क्रीड़ा करी कोई स्त्री मानकर रही थी उसको बहुत शुश्रुषाकर प्रसन्नकरा दर्शन स्पर्शनमान फिर और मानमोचन प्रणाम परस्पर जल केलि हास्य नानाप्रकार पुष्पोंके भूषणोंके शृंगार इत्यादि अनेक स्वरूप क्रीड़ा करी मनोहरहै रूप जिसका जैसे देवियोंसहित इंद्र क्रीड़ाकरे तैसे राजासहस्ररश्मिने क्रीड़ा करी जे पुलिनके बालूरेत विषे रत्नके मोतियों के आभूषण टूटकर पड़ें सो न उठाये जैसे मुरझाई पुष्पोंकी मालाको कोई न उठावे केयक राणी चंदन के लेपकर संयुक्त जल विषे केल करती भई सो जल धवल हो गया केयक केसर के कीच

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर जलको गालेहुये सुवर्ण के समान पीत करती भई कैयक ताम्बूलके रङ्गकर लाल जे अधर तिनके प्रक्षालन कर नीरको अरुण करती भई कैयक आंखों के अंजन धोवनेकर श्याम करती भई सो क्रीड़ा करती जे स्त्री उनके आभूषणोंके सुन्दर शब्द और तीर विषे जे पक्षी उनके सुन्दर शब्द राजाके मनको मोहित करते भये और नदीके निवासकी ओर रावण का कटकथा सो रावण स्नानकर पवित्र वस्त्र पहिर नाना प्रकारके आभूषणोंसे युक्त नदी के रमणीक पुलिन में बालूका चौंतरा बँधाय उसके ऊपर वैडूर्य मणियों के दंड जिसके ऐसा मोतियोंकी झालरी संयुक्त चन्दोवाताण श्रीभगवान अरिहंत देवकी नाना प्रकार पूजा करेथा बहुत भक्ति से पवित्र स्तोत्रों कर स्तुति करेथा सो उपरास का जलका प्रबाह आया सो पूजा में विघ्न भया नानप्रकारकी कलुषता सहित प्रवाह वेग दे आया तब रावण प्रतिमा जीको लेय खड़े भये और क्रोधकर कहते भये जो यह क्या है सो सेवकने खबर दीनी कि हे नाथ यह कोई महा क्रीड़ावन्त पुरुष सुन्दर स्त्रियोंके बीच परम उदयको धरें नाना प्रकारकी लीलाकरे है और सामन्त लोक शास्त्रोंको धरे दूर दूर खड़े हैं नानाप्रकार जलके यन्त्र बांधेथे उनसे यह चेष्टा भई है राजाओं के सेना चाहिये इसलिये उसके सेना तो शोभा मात्रहै और उसके पुरुषार्थ ऐसाहै जो और ठौर दुर्लभहै बड़े २ सामंतों से उसका तेज न सहा जाय और स्वर्गविषे इन्द्र हैं परन्तु यहतो प्रत्यक्षही इन्द्र देखा यह वार्ता सुनकर रावण क्रोधको प्राप्त भये भौंह चढ़गई आंख लाल होगई ढोल बाजने लगे वीररस का राग होने लगा नानाप्रकार के शब्द होय हैं घोड़े हींसे हैं गज गाजे हैं रावण ने अनेक राजाओंको आज्ञा करी कि यह सहस्ररश्मि दुष्टात्माहै इसे पकड़ लावो ऐसी आज्ञाकर आप नदीके तटपर पूजा करनेलगे रत्न सुवर्ण के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्प उनको आदि देय अनेक सुन्दर जे द्रव्य उनसे पूजाकरी और अनेक विद्याधरोंके राजा रावणकी आज्ञा आशिषाकी न्यांई माथे चढ़ाय युद्धको चले राजा सहस्ररश्मिने परदलको आवतादेख स्त्रियोंको कहा कि तुम डरो मत, धीर्य बंधाय आप जलसे निकसी कलकलाट शब्द सुन परदल आया जान माहिष्मती नगरी के योधा सजकर हाथी घोड़े रथों पर चढ़े नानाप्रकारके आयुध धरे स्वामी धर्मके अत्यन्त अनुराग से राजाके ढिग आये जैसे सम्मेद शिखर पर्वतको एकहीकाल छहीं ऋतु आश्रयकरें तैसे समस्तयोधा तत्काल राजापै आए विद्याधरोंकी फौज आवती देखकर सहस्ररश्मिके सामन्त जीतव्यकी आशा छोड़कर घनःयूह रचकर धनीकी आज्ञा विनाही लड़नेको उद्यमी भये जब रावण के योधा युद्ध करनेलगे तब आकाशमें देवनकी वाणी भई कि अहो (यह बड़ी अनीतिहैं ये भूमिगोचरी अल्पबली विद्या बलकर रहित माया युद्ध को कहां जाने इनसे विद्याधर मायायुद्ध करें यह क्या योग्यहै) और विद्याधर घने यह थोड़े ऐसे आकाश विषे देवन के शब्द सुनकर जे विद्याधर सत्पुरुष थे वह लज्जावान होय भूमि में उतरे दोनों सेना में परस्पर युद्ध भया रथोंके, हाथियोंके, घोड़ोंके, असवार तथा पियादे तलवार, बाण, गदा, सेल इत्यादि आयुधों कर परस्पर युद्ध करनेलगे सो बहुत युद्ध भया परस्पर अनेक मारेगये न्याय युद्धभया शस्त्रों के प्रहार कर अग्नि उठी सहस्ररश्मि की सेना रावण की सेना कर कछूइक हटी तब सहस्ररश्मि रथपर चढ़कर युद्धको उद्यमी भए माथे मुकट धरे बक्तर पहरे धनुषको धारें अति तेजको धरे विद्याधरोंके बलको देखकर तुच्छमात्रभी भय न किया तब स्वामीको तेजवन्त देख सेनाके लोग जे हटेथे वे आगे आयकर युद्ध करनेलगे देदीप्यमानहैं शस्त्र जिनके और जे भूलगये हैं घावोंकी वेदना ये रणधीर भूमि

गोचरी राक्षसोंकी सेना में ऐसे पड़े जैसे माते हाथी समुद्रमें प्रवेशकरें और सहस्रूरश्मि अतिक्रोधको करते हुये बाणोंके समूह से जैसे पवन मेघको हटावे तैसे शत्रुवों को हटावतेभये तव द्वारपालने रावणसे कही हे देव देखो इसने तुम्हारी सेना हठाई है यह धनुषका धारी रथपर चढ़ा जगत्को तृणवत देखे है इस के बाणोंकर तुम्हारी सेना एक योजनपीछे हटी है तबरावण सहस्रूरश्मि को देख आप त्रैलोक्य मण्डण हाथी पर सवार चढे रावणको देखकर शत्रु भी डरें वह बाणोंकी वर्षा करते भए सहस्रूरश्मिको रथसे रहितकिया तब सहस्रूरश्मि हाथीपर चढ़कर रावणके सन्मुख आए और बाण छोड़े सो रावणके वक्तरको भेद अंगविषे चुभे तब रावणने बाण देहसे काढ़ डारे सहस्ररश्मिने हंसकर रावणसे कहा अहो रावण तू बड़ा धनुषधारी कहावे है ऐसी विद्या कहांसे सीखा तुझे कौन गुरु मिला पहिले धनुष विद्यासीख फिर हमसे युद्ध करियो ऐसे कठोर शब्दों से रावण क्रोधको प्राप्त भए सहस्ररश्मिके वशमें सेल की दीनी तब सहस्ररश्मि के रुधिरकी धारा चली जिससे नेत्र घूमने लगे पहिले अचेत होगया पीछे सचेत होय आयुध पकड़ने लगा तब रावण उछलकर सहस्ररश्मि पर आय पड़े और जीवता पकड़लिया बांधकर अपने अस्थान लेआए तब सबविद्या-धर आश्चर्यको प्राप्तभये कि सहस्ररश्मि जैसे योधाको रावण पकड़े कैसे हैं रावण धनपति यक्षके जीतनेहारे यमके मानमर्दन करनेहारे कैलाशके कंपावनेहारे सहस्रूरश्मि का यह वृतांतदेख सहस्रूरश्मि जो सूर्यसो भी मानो भयकर अस्ताचलको प्राप्तभया अन्धकार फैलगया भावार्थ रात्रीका समयभया भला बुरा दृष्टिमें न आवे तब चन्द्रमा का बिम्ब उदय भया सो अन्धकार के हरणेको प्रदीप मानों रावण का निर्मलयश ही प्रगटा है युद्धविषे जे जोधा घायलभये थे तिनका वैद्योंसे यत्न कराया और जो मूयेथे तिनको अपने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपने बन्धुवर्ग रणखेत से लेआए उनकी क्रियाकरी रात्रि व्यतीतभई प्रभातके वादित्र बाजनेल गे फिर सूर्य रावणकी वार्ता जानने के अर्थ राग कहिये ललाई को धारताहुवा कम्पायमान उदयभया सहस्रर-श्मिकाका पिताराजा शतबाहु जो मुनिराज भयेथे जिनको जंघाचारण ऋद्धिथी वे बड़ा तपस्वी चन्द्रमा के समान क्रांत सूर्य समान दीप्तिमान मेरुसमान स्थिर समुद्र सारिखे गम्भीर सहस्ररश्मिको पकड़ा सुनकर जीवन की दयाकेकरणहार परमदयालु शांतिचित्त जिनधर्मी जान रावणपै आए। रावण मुनिको आवते देख उठ सामनेजाय पायनपड़े भूमिमें लगगयाहै मस्तकतिनका मुनिको काष्ठके सिंहासनपर विराजमानकर रावण हाथजोड नम्रीभूत होय भूमिविषे बठे। अति विनयवान होय मुनिसेकहते भए हे भगवन् कृपानिधान तुमकृत कृत्य तुम्हारा दर्शन इन्द्रादिक देवोंको दुर्लभ है तुम्हारा आगमन मेरे पवित्र होनेके अर्थ है तब मुनि इसको शलाकापुरुष जान प्रशंसाकर कहतेभयेहे दशमुखतू बड़ाकुलवान् बलवान बिभूतिवान पराभवदेव गुरुधर्मविषे भक्तिभाव युक्त है। हेदीर्घायु शूरबीर क्षत्रियोंकी यही रीतिहै जो आपसेलडे उसका पराभव कर उसेवश करें। सो तुम महाबाहु परम क्षत्री हो तुम से लड़ने को कौन समर्थ है अब दयाकर सहस्ररश्मि को छोड़ो तब रावण मन्त्रयों सहित मुनि को नमस्कार कहते भये। हे नाथ! मैं विद्याधर राजाके बश करने को उद्यमी भया हूं लक्ष्मी कर उन्मत रथुनूपर का राजा इन्द्र उसने मेरे दादे का बड़ा भाई राजा माली युद्धमें मारा है उससे हमारा द्वेष है सो मैं इन्द्र ऊपर जाऊंथा मार्गमें रेवा कहिए नर्मदा उसपर डेराभया सो पुलिन पर वालूके चौतरे पर पूजा करूंथा सोइसने उपरास की और जल यंत्रों की केलिकरीसो जलका वेग निवास को आया। सो मेरी पूजामें विघ्न भया इसलिये यह कार्य कियाहै विनाअपराधमेंद्वेष न करूं और मैं इनके

For Private and Personal Use Only

ऊपरगया तब भी इननेक्षमा न कराई कि प्रमादकर बिनाजाने मैंनेयह कार्यकिया है तुम क्षमा करो उलटा मानके उदयकर मेरेसे युद्धकरनेलगा औरकुबचन कहेइस लियेएसाहुआ जोमैं भूमिगोचरी मनुष्यों कोजीतने समर्थ नभया तोविद्याधरोंको कैसे जीतूंगा कैसेहैं विद्याधरनानाप्रकार की विद्याकर महापराक्रम वन्तहैं इसलिये जोभूमिगोचरी मानीहैं तिनकोप्रथम बसकरूं पीछे विद्याधरों को बस करूं अनुक्रम से जैसे सिवानचढ़ मन्दिरमें आइयेहै इसलिये इनको बसकिया अबछोड़ना न्यायही है फिर आप की आज्ञा समान और क्या । कैसेहो आप महापुण्यके उदयसे होवेहै दर्शन जिनका ऐसे बचन रावणके सुन इंद्र जीतने कही हे नाथ ! आपने बहुत योग्य वचन कहे । ऐसे वचन आप बिना कौन कहे तब रावणने मारीच मंत्रीको आज्ञा करी कि सहस्ररश्मिको छुड़ाय महाराजके निकट लावो । तब मारीचने अधि-कारीको आज्ञाकरी । सो आज्ञप्रमाण जो नांगी तलवारोंके हवालेथा सो लेआये सहस्ररश्मि अपने पिता जो मुनितिनको नमस्कारकर आयबैठे रावणने सहस्ररश्मिका बहुत सत्कारकर बहुत प्रसन्न होय कहा हे महाबल जैसे हम तीनों भाई तैसे चौथा तू। तेरेसहायकर रथनूपुरका राजा इंद्र अमते कहावेहै उसे जीतूंगा और मेरी राणीमन्दोदरी उसकी लहुरी बहिन स्वयंप्रभा सो तुझे परणाऊंगा । तब सहस्ररश्मि बोले धिक्कारहै इस राज्यको यहइन्द्र धनुषसमान क्षणभंगुरहै और इन विषयोंको धिक्कारहै ये देखने मात्र मनोज्ञहै महादुखरूपहै और स्वर्गको धिक्कार अव्रत असंयमरूपहै । और मरणके भाजन इस देहको भी धिक्कार और मोको धिक्कार जो एते काल विषयासक्त होय इतने काल कामादिक बैरियों से ठगाया अबमैं ऐसा करूं जिससे फिर संसारबन विषे भ्रमण न होय । मैं अत्यंत दुःखरूप जो चार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गति तिनमें भ्रमणकरता बहुत थका। अब भवसागरमें जिससे पतन न होय सो करूंगा। तब रावण कहते भए यह मुनिका धर्म वृद्धोंको शोभेहै। हे भव्य तूतो नवयौवनहै तब सहस्रशिमने कहा कालके यह विवेचना नहीं जो वृद्धहीको ग्रसे तरुणको न ग्रसे। काल सर्वभक्षीहै बाल वृद्धयुवा सबहीको ग्रसे है जैसे शरदका मेघक्षणमात्रमें विलायजाय तैसे यह देह तत्कालविनसेहै हे रावण जो इन भोगोंहीके विषे सार होय तो महापुरुषकाहेको तजें उत्तमहै बुद्धिजिनकी ऐसेमेरे यहपिता इन्होंने भोगछोड़ योगआदरा सो योगहीसार है यह कहकर अपने पुत्रको राज्यदेय रावणसे क्षमाकराय पिताके निकट जिन दीक्षा आदरी और राजाअरण्य अयोध्याका धनी सहस्ररश्मिका परममित्रहै सो उनसे पूर्व वचनथा जो हम पहिले दीक्षा धरेंगे तोतुम्हें खबरकरेंगे औरउनने कहीथीहमदीक्षा धरेंगे तो तुम्हें खबरकरेंगे सो उनने वैराग्य के समाचारभेजे भले मनुष्योंने राजा सहस्ररश्मिका वैराग्यहोनेका वृतांत राजाअरण्यसे कहा सो सुन कर पहिलेतो सहस्ररश्मिके गुणस्मरणकर आंसूभर बिलापकिया फिर विषादको मंदकर अपने समीप लोगों से महा बुद्धिमान कहते भए जो रावण वैरीका भेषकर उनका परममित्र भया जो ऐश्वर्यके पिंजरेमें राजा रुकरहे थे विषयोंकर मोहितथा चित जिनका सो पिंजरेसे छुडाय यह मनुष्यरूप पक्षी मायाजाल रूप पिंजरेमें पड़ा है सो परम हितूही छुड़ावेहै माहिषमती नगरीका धनी राजा सहस्ररश्मि धन्यहै जो रावण रूप जहाजको पायकर संसाररूप समुद्रको तिरेगा कृतार्थभया अत्यंत दुखका देनहारा जो राजकाज महापाप उसे तजकर जिनराजका व्रत लेनेको उद्यमी भया और मित्र की प्रशंसाकर आप भी लघु पुत्रको राज्य देय बडे पुत्र सहित राजा अरण्य मुनिभए। हे श्रेणिक कोई एक उत्कृष्टपुण्यका उदय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आवे तब शत्रुका तथा मित्रका कारण पाय जीवको कल्याणकी बुद्धि उपजे और पापकर्मके उदयकर दुर्बुद्धि उपजे जो कोई प्राणीको धर्मके मार्गमें लगावे सोई परममित्रहै और जो भोग सामग्रीमें प्रेरे सो परमबैरीहै अस्पृश्यहै हे श्रेणिक जो भव्यजीव यह राजा सहस्त्ररश्मिकी कथा भावधर सुनेसो मुनिब्रत रूप संपदाको प्राप्त होकर परम निर्मल होंय, जैसा सूर्यके प्रकाशकर तिमिरजाय तैसे जिन बाणी के प्रकाशकर मोह तिमर जाय। अथानन्तर रावणने जेजे पृथ्वी विषे मानी राजा सुने तेते सर्व निवाए अपने बश किए और जो आप मिले तिनपर बहुत कृपा करी अनेक राजाओं से मंडित सुभूत चक्र वर्तीकी न्याईं पृथ्वी में बिहार किया नाना देशके उपजे नाना भेषके धरणहारे नाना प्रकार आभूषण के पहरनेहारे नाना प्रकारकी भाषाके बोलनहारे नाना प्रकारके बाहनोंपर चढ़े नानाप्रकारके मनुष्योंकर मंडित अनेकराजा उनसहित दिग्विजयकरता भया ठौर२ रत्नमई सुबर्णमई अनेक जिनमंदिर कराये औरजीर्ण चैत्यालयोंके जीर्णोद्धार कराया देवाधिदेव जिनेंद्रदेवकी भावसहित पूजाकरी ठौर २ पूजाकराई जो जैनधर्म के द्वेषीदुष्टमनुष्य हिंसकथे तिनको शिक्षादीनी और दरिद्रीयोंको दयाकर धनसे पूर्ण किया और सम्यकदृष्टी श्रावकोंका बहुत आदर किया साधर्मियोंपरहै बहुत वात्सल्यभाव जिसका और जहां मुनि सुने वहां जाय भक्तिकर प्रणामकरे जे सम्यक्त रहित द्रव्यलिंगी मुनि और श्रावकथे तिनकी भी शुश्रूषा करी जैनी मात्रका अनुरागी उत्तर दिशाको दुस्सह प्रताप प्रगट करता बिहार करता भया जैसे उत्तरायणके सूर्यका अधिक प्रताप होय तैसे पुण्यकर्मके प्रभावसे रावणका दिन दिन अधिक तेज होता भया।

अथानंतर रावणने सुना कि राजपुरका राजा बहुत बलवानहै अतिअभिमानको धरता हुवा किसीको

For Private and Personal Use Only

प्रणाम नहीं करेहै और जन्मसे ही दुष्टचित्तहै मिथ्या मार्गकर मोहित है और जीवहिंसा रूप यज्ञ मार्ग विषे प्रवर्ता है। तब यज्ञका कथन सुन राजा श्रेणिकने गौतम स्वामी से कहा। हे प्रभो रावण का कथन तो पीछे कहिये पहले यज्ञकी उत्पति कहो यह कौन वृत्तान्त है जिसमें प्राणी जीव घात रूप घोर कर्ममें प्रवरते हैं॥ तब गणधर ने कहा हे श्रेणिक अयोध्या विषे इक्ष्वाकु वंशीराजा ययाति उसकी राणी सुरकांता और पुत्र वसु था सो जब पढ़ने योग्य भया तब क्षीरकदम्ब ब्राह्मणपै पढ़नेको सौंपा क्षीरकदम्बकी बहू स्वास्तिमती और एक नारद नाम ब्राह्मण देशान्तरी धर्मात्मासो क्षीरकदम्ब पै पढ़े और क्षीरकदम्बका पुत्र पर्वत महापापी सो भी पढ़े क्षीरकदम्ब अति धर्मात्मा सर्व शास्त्रों में प्रवीण शिष्योंको सिद्धान्त तथा क्रियारूप ग्रंथ तथा मन्त्रशास्त्र व्याकरणादि अनेकग्रन्थ पढ़ावें एक दिन नारद वसु और पर्वत इन तीनों सहित क्षीरकदम्ब वनविषे गए वहां चारण मुनि शिष्यों सहित विराजे थे सो एक मुनिने कही चार जीवहैं एक गुरु तीन शिष्य तिनमें एक गुरु एक शिष्य यह दो सुबुद्धिहैं और दो शिष्य कुबुद्धीहैं ऐसे शब्द सुनकर क्षीरकदम्ब संसारसे अत्यंत भयभीत भए शिष्योंकोतो सीष करीनी सो अपने २ घर गए मानों गायके बछडे बंधनसे छुटे और क्षीरकदम्बने दक्षानीक्षा धरा ज शिष्य घर आए तब क्षीरकदम्बकी स्त्री स्वास्तिमती पर्वतको पूछती भई तेरापिता कहां तू अकेलाही घर क्यों आया तब पर्वतने कही हमकोतो सीख दीनी और कहाहम पीछेसे आवेहैं यह वचन सुन स्वस्तिमती वाविकलप उपजा पतिके आगमनकी है वांछा जिसके दिन अस्तभयातोभी न आएतब स्वास्तिमती महाशोकवतीहोय पृथ्वीपर पड़ी और रात्रि विषे चकवीकी न्याई दुखकर पीडित विलाप करती भई

हाय हायमैं मंदभागिनी प्राणनाथ बिना हैतीगेई किसी पापीने उनको मारा अथवा किसी कारणकर देशांतरको उठगए अथवा सर्वशास्त्रविषे प्रवीणथे सो सर्वपरिग्रहका त्यागकर वैराग्यपायमुनिहोगए इस भांत विलापकरते रात्रि पूर्णभई जब प्रभातभई तबपर्वत पिताको ढूंढ़ने गया उद्यानमें नदीके तटपर मुनियों के संघसहित श्रीगुरु विराजे हुएथे उनके समीप विनयसहित पिता बैठादेखातबपीछे जायकरमातासेकहीकि हे मात हमारापिता मुनियों नेमोहाहैसो नग्नहोगयाहै तब स्वस्तिमतीनिश्चयजानकरपतिकेवियोगसेअति दुखीभई हाथोंकर उरस्थलको कूटतीभई और पुकारकर रोवतीभई सो नारद महा धर्मात्मा यह वृत्तान्त सुन कर स्वस्तिमती पै शोकका भरा आया उसे देखकर अत्यन्त रोवनेलगी और सिर कूटती भई शोक विषे अपनेको देखकर शोक अतीव बढ़े है तब नारदने कही हे माता काहेको वृथा शोक करोहो वे धर्मात्मा जीव पुण्याधिकारी सुन्दरहै चेष्टा जिनकी जीतव्यको अस्थिर जान तपकरनेको उद्यमी भएहैं सो निर्मल है बुद्धि जिनकी अब शोक किएसे पीछे घर न आवें या भांति नारदने सम्बोधी तब किंचित शोक मन्दभया घरमें तिष्ठी महा दुखित भरतार की स्तुति भी करे और निन्दा भी करे यह क्षीर कदम्बके वैराग्य का वृत्तान्त सुन राजा ययाति तत्व के वेत्ता वसु पुत्रको राज देय महा मुनिभए वसुका राज्य पृथिवी विषे प्रसिद्ध भया आकाश तुल्य स्फटिक मणि उस के सिंहासन के पाये बनाए उस सिंहासन पर तिष्ठे सो लोक जाने कि राजा सत्यके प्रताप कर आकाश विषे निराधार तिष्ठे है ॥

अथानन्तर हे श्रेणिक एक दिन नारद के और पर्वत के चर्चाभई तब नारदने कही कि भगवान वीतराग देवने धर्म दोय प्रकार प्ररूपा है एक मुनिका दूसरा गृहस्थी का मुनिका महाव्रतरूप है गृहस्थी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का अणुव्रतरूप है जोवहिंसा, असत्य, चोरी, कुशील, परिग्रह इनका सर्वथा त्याग सो पञ्च महाव्रततिनकी पचीस भावना यह मुनिका धर्म है और इन हिंसादिक पापों का किंचित् त्याग सो श्रावक का व्रत है श्रावक के व्रतों में पूजा दान शास्त्र विषे मुख्य कहाहै पूजाका नाम यज्ञ है (अजैर्यष्टव्यं) इस शब्द का अर्थ मुनोंने इसभान्तिकहाहै जो बोनेसे न उगें जिनमें अंकुर शक्ति नहीं ऐसे शालिय तिनका विवाहादिक क्रिया विषे होम करिये यहभी आरम्भी श्रावककी रीतिहै ऐसे नारदके वचन सुन पापी पर्वत बोला अज कहिये छेला (बकरा) तिनका आलम्भन कहिये हिंसन उसका नाम यज्ञ है तब नारद कोपकर पर्वत दुष्टसे कहतेभये हे पर्वत ! ऐसे मत कहे महा भयंकर है बेदना जिस विषे ऐसे नरक में तू पड़ेगा दयाही धर्म है हिंसा पाप है तब पर्वत कहने लगा मेरा तेरा न्याय राजा वसु पै होयगा जो झूठा होयगा उसकी जिह्वाछेदी जायगी इस भांति कहकर पर्वत मातापै गया नारदके और याके जो विवाद भया सो सर्व बृत्तान्त माता से कहा तब माताने कहा कि तू झूठा है तेरा पिता हमने व्याख्यान करता अनेक वार सुना है जो अज बोईहुई न उगे ऐसी पुरानी शालिय तथा पुराने यव तिनका नाम है छेलेका नहीं जीवोंका भी कभी होम किया है तू देशान्तर जाय मांस भक्षणका लोलुपी भया है तैं मानके उदयसे झूठ कहा सो तुझे दुःखका कारण होयगा हेपुत्र निश्चयसेती तेरी जिह्वा छेदी जायगी में पुण्यहीन अभागिनी पति और पुत्र रहित क्या करूंगी इस भांति पुत्रसे कह कर वह पापिन चितारती भई कि राजा वसुके गुरु दक्षिणा हमारी धरोर है ऐसा जान अति आकुल भई वसुके समीप गई राजाने स्वति मतिको देख बहुत विनय किया सुखासन बैठाई हाथ जोड़पूछताभया हे माता तुम दुखित दीखोहो जो तुम आज्ञाकरो सोही करूं

For Private and Personal Use Only

तब स्वस्तिमति कहती भई हे पुत्र मैं महादुःखिनी हूं जो स्त्री अपने पति से रहित होय उसको काहेका सुख संसार में पुत्र दो भांति के हैं एक पेटका जाया एक शास्त्रका पढ़ाया सो इनमें पढ़ाया विशेष है एक समल है दूसरा निर्मल है मेरे धनीके तुम शिष्यहो सो तुम पुत्रसे अधिक हो तुम्हारी लक्ष्मी देखकर मैं धीर्य धरूं हूं तुम कहीथी माता दक्षिणा लेवो मैं कही समय पायलूंगी वह वचन याद करो जे राजा पृथिवी के पालने में उद्यमी हैं वे सत्यही कहे हैं और जे ऋषि जीव दयाके पालनेमें तिष्ठे हैं वेभी सत्यही कहे हैं तू सत्यकर प्रसिद्ध है मोको दक्षिणा देवो इस भांति स्वास्ति मतिने कहा तब राजा विनय कर नम्रीभूत होय कहतेभये हे माता तुम्हारी आज्ञासे जे न करने योग्य कामहैं सोभीमें करूं जो तुम्हारे चित्त में होय सो कहो तब पापिनी ब्राह्मणीने नारद और पर्वत के विवादका सर्व वृत्तान्त कहा और कहा मेरा पुत्र सर्वथा झूठा है परन्तु इसके झूठको तुम सत्य करो मेरे कारण उसका मान भंग न होय तब राजा यह अयोग्य जानतेहुएभी ताकी बात दुर्गतिका कारण प्रमाण करी तब वह राजा को आशीर्वाद देयघरआई बहुत हर्षित भई दूजे दिन प्रभातही नारद पर्वत राजा के समीप आए अनेक लोक कोतु-हल देखनेको आए सामन्त मन्त्री देशके लोग बहुत आय भेलेभए तब सभाके मध्य नारद पर्वत दोनों में बहुत विवाद भया नारद तो कहे अज शब्दका अर्थ अंकुर शक्ति रहित शालियहै और पर्वत कहे पशु है तब राजा वसुको पूछा तुम सत्यवादियों में प्रसिद्ध हो जो क्षीर कदम्ब अध्यापक कहते थे सो कहो तब राजाकुगतिको जानेवाला कहताभया जो पर्वत कहैहै सोई क्षीर कदम्ब कहतेथे ऐसा कहतेही सिंहासनके स्फटिकके पाए टूटगये सिंहासन भूमिमें गिरपड़ा तब नारदने कही हे वसु ! असत्यके प्रभाव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से तेरा सिंहासन डिगा अबभी तुझे सांच कहना योग्यहै तब मोहके मदकर उन्मत्त भया यहही कहता भया जो पर्वत कहे सो सत्य है तब महा पापके भारकर हिंसामार्गके प्रवरतनसे तत्काल सिंहासन समेत धरतीपर में गढ़गया राजा मरकर सातवें नरक गया कैसा है नरक अत्यन्त भयानक है वेदना जहां तब राजा बसुको मूवादेख सभाके लोग बसु और पर्वतको धिकार धिकार कहते भये और महा कलकलाट शब्द भया दया धर्मके उपदेशसे नारदकी बहुत प्रशंसा भई और सब कहते भये (यतोधर्मस्ततोजयः) पापी पर्वत हिंसा के उपदेशसे धिक्कार धिक्कार दण्डको प्राप्तभया पापी पर्वत देशान्तरों में भ्रमणकरता संताहिंसामई शास्त्र की प्रवृतिकरताभया आप पढ़े औरोंको पढ़ावे जैसे पतंग दीपकमें पड़े तैसे कईएक बहिर्मुख जीव कुमार्ग में पड़े अभक्ष्यका भक्षण और न करनेयोग्य कामकरना ऐसा लोकनको उपदेशदिया और कहता भया कि यज्ञही के अर्थ ये पशु बनाये हैं यज्ञ स्वर्ग का कारण है इसलिये जो यज्ञमें हिंसा है सो हिंसा नहीं और सौत्रामणि नाम यज्ञ के विधान कर सुरापान (शराबपीने)काभीदूषणनहीं औरगौ शब्द नामयज्ञ में अगम्यागम्य(परस्त्री सेवन)करेहैं ऐसा पर्वतने लोकों को हिंसादि मार्गका उपदेशदीया असुरमायाकर जीव स्वर्गजाते दिखाये केएक क्रूरजीव कुकर्ममें प्रवर्ते कुगति के अधिकारी भये हेश्रेणिक यह हिंसायज्ञ कीउत्पति काकारण कहा अब रावणका वृतांत सुनो। रावण राजपुरगए जहां राजा मरुत हिंसा कर्म में प्रवीण यज्ञ शाला विषे तिष्ठे था संवर्तनामा ब्राह्मण यज्ञ करावे था वहांपुत्र दारादि सहित अनेक विप्र धनके अर्थी आये थे और अनेक पशु होम निमित्तलायेथेउससमय अष्टम नारद पदवीधर बड़े पुरुष आकाश मार्ग आय निकसे बहुत लोकन का समूह देख आश्चर्य पायचितमेंचितवते भए कि यहनगर किसका है औरयहदर सेना किसकीपड़ी है

For Private and Personal Use Only

और नगरकेसमीप एते लोग किसकारण एकत्र भएहैं ऐसा मनमें विचार आकाशसे भूमि पर उतरे ॥

अथानन्तर यह बातसुन राजाश्रेणिक गौतमस्वामीसे पूछने लगे हे भगवान! यह नारद कौनहै और इसकी उत्पत्तिकिस भांतिहै तब गणधरदेव कहते भए हे श्रेणिक! एक ब्रह्मरुचि नामा ब्राह्मणथा ताके कुरमी नामा स्त्री सो ब्राह्मण तापसके व्रतधर वनमें जाय कंदमूल फल भक्षण करे ब्राह्मणी भी संग रहे उस को गर्भ रहा वहां एक दिन मार्गके वशसे कुछ संयमी महामुनि आए क्षण एक विराजे ब्राह्मणी और ब्राह्मण समीप आय बैठे ब्राह्मणी गर्भिणी पांडुरहे शरीर जिसका गर्भके भारकर दुःखित स्वासलेती मानों सर्पणीही है उसको देखकर मुनिको दया उपजी तिनमेंसे बड़े मुनि बोले देखो यह प्राणी कर्म के वशकर जगत विषे भ्रमेहै धर्मकी बुद्धिकर कुटंबको तजकर संसार सागरके तरणेके अर्थ तो वन विषे आया सो हे तापस तैने क्या दुष्टकर्म किया स्त्री गर्भवती करी तेरे में और गृहस्थीमें क्या भेदहै जैसे वमन किया जो आहार उसे मनुष्य न भखे तैसे विवेकी पुरुष तजे कामादिकोंको फिर न आदरे जो कोई भेषधर और स्त्रीका सेवन करे सो भयानक वनमें स्याली होय अनेक कुजन्म पावे नरक निगोदमें पडेहै जो कोई कुशील सेवता सर्व आरंभोंमें प्रवरतता मदोनमत आपको तपसी मानेहै सो अत्यन्त अज्ञानी है यह काम सेवन ताकर दग्ध दुष्टचित्त जो दुरात्मा आरंभविषे प्रवर्ते उसके तप काहेको कुदृष्टिकर गर्वित भेषधारी विषिया भिलाषी जो कहे मैं तपसीहूं सो मिथ्यावादी है काहेको व्रती सुखसों बैठना सुखसूं सोवना सुखसूं आहार सुखसूं बिहार ओढ़ना बिछावना और आपको साधु माने सो मूर्ख आपको ठगेहै बलता जो घर तहां ते निकसे फिर उसमें कैसे प्रवेश करे और जैसे छिद्र पाय पिंजरेसे निकसा पक्षी फिर आपको कैसे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिंजरमें डारतैसे विरक्त होय फिर कौन इंद्रियोंके बश परंजो इंद्रियोंके बश होय सो लोक विषे निंदा योग्य है आतमकल्याणको न पावेहै सर्व परिग्रहके त्यागी मुनियोंको एकाग्रचित्तकरएक आत्माहीध्याने योग्यहै सो तुम सारिखे आरंभी तिनकर आत्मा कैसे ध्याया जाय प्राणीयों के परिग्रहके प्रसंगकर रागद्वेष उपजेहै रागसे काम उपजेहै द्वेषसे जीव हिंसाहोयहै कामक्रोधकर पीड़ित जो जीव उसके मनको मोह पीडे है मूर्खके कृत्य अकृत्य में विवेक रूप बुद्धि न होय जो अविवेकसे अशुभ कर्म उपारजे है सो घोर संसार में भ्रमे है यह संसग के दोष जानकर ज पंडित हैं वे शीघ्रही वैरागी होय हैं आप को जान विषे बासनासे निवृत होय परमधामको पावे हैं इस भांति परमार्थ रूप उपदेशोंके बचनोंसे महा मुनि मे संबोधा तब ब्राह्मण ब्रह्मरुचि निरमोही होय मुनि भया कुरमी नामा स्त्रीका त्यागकर गुरुके संगही विहार किया गुरुमें है धर्मराग जिस के और वह ब्राह्मणी कुरमी शुद्धहै बुद्धि जिसकी पाप कर्मसे निवृत होय श्रावकके ब्रत आदरे जानाहै रागादिकके बशसे संसारका परिभ्रमण जिसने कुमार्ग का संग छोडा जिनराज की भक्ति में तत्पर होय भरतार रहित अकेली महा सती सिंहनी की न्याई महा बन विषे भूमै दसवें महीने पुत्रका जन्म हुआ तब इसको देखकर वह महासती ज्ञान कियाकी धरणाहारी चित्त विषे चिंतवती भई यह पुत्र परिवार का सम्बन्ध महा अनर्थका मूल मुनिराजने कहा था सो सत्यहै इस लिये मैं अब पुत्रके प्रसंग का परित्यागकर आतम कल्याण करूं और यह पुत्र महा भाग्य है इसके रक्षक देवहैं इसने जे कर्म उपारजे हैं तिनका फल अवश्य भोगेगा बनमें तथा समुद्र में अथवा बैरियोंके बशमें पडाजो प्राणी उसके पूर्वोपार्जित कर्मही रक्षा करेहैं और कोऊ नहीं और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिसकी आयु क्षीण होयहै सो माताकी गोदमें बैठाही मृत्युके वश होयहै ये सर्व संसारी जीव कर्मों के आधीनहैं भगवान सिद्ध परमात्मा कर्म कलंक रहित हैं ऐसा जानाहै तत्वज्ञान जिसने महा निर्मल बुद्धिकर बालकको बनमें तजकर यह ब्राह्मणी विकल्प रूप जो जड़ता उसकर रहित अलोक नगरमें आई जहां इन्द्रमालिनी नामा आर्या अनेक आर्याओंकी गुरुनी थी तिनके समीप आर्या भई सुंदर है चेष्टा जिसकी और आकाशके मार्ग जंभनामा देव जातेथे सो पुण्याधिकारी रुदनादि रहित उन्हों ने वह बालकदेखा दयावान होय उठायलिया बहुत आदरसे पाला अनेक आगम अध्यात्मशास्त्र पढ़ाये सिद्धांत का रहस्य जाननेलगा महापंडितहुआ आकाशगामिनी विद्या सिद्धभई यौवनको प्राप्तभया श्रावकके व्रतधारे शीलव्रत विषेअत्यंतदृढ़ अपने माता पिताजे आर्यिका मुनि भएथे तिनकी बन्दना करे कैसाहै नारद सम्यक दर्शनविषे तत्पर ग्यारमी प्रतिमाके क्षुल्लुक श्रावकके व्रतलेय बिहार किया परंतु कर्मके उदयसे तीव्र वैराग्य नहीं न गृहस्थी न संयमीधर्म प्रियहै और कलहभी प्रियहै वाचालपनेमें प्रीतिहै गायन विद्यामें प्रवीण और राग सुननेमें विशेष अनुराग वालाहै मन जिसका महा प्रभावकर युक्त राजाओंकर पूजित जिस की आज्ञा कोई लोप न सके पुरुष स्त्रियोंमें सदा जिसका सन्मानहै अढाई द्वीप विषे मुनि जिन चैत्या लयोंका दर्शन करे सदा धरती आकाश विषे भ्रमता ही रहे कौतूहल में लगीहै दृष्टि जिसकी देवन कर वृद्धि पाई और देवन समान है महिमा जिसकी विद्याके प्रभाव कर किया है अद्भुत उद्योत जिसने सो पृथ्वी विषे देव ऋषि कहावे सदा सर्वत्र बिहार करे।

अथानन्तर नारद बिहार करते हुए अकस्मात मरुत के यज्ञकी भूमि ऊपर आय निकसेसो बहुत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोकनकी भीड़ देखी और पशु बन्धे देखे तब दया भाव कर संयुक्त होय यज्ञ भूमिमें उतरे वहां जाय कर मरुतसे कहनेलगे हे राजा! जीवनकी हिंसा दुर्गतिकाही द्वारहै तैंने यह महापापका कार्य क्यों रचा है तब मरुत कहताभया यह सम्वर्त ब्राह्मण सर्व शास्त्रोंके अर्थ विषे प्रवीण यज्ञका अधिकारीहै यह सब जानेहै इससे धर्मचर्चा करो यज्ञकर उत्तम फल पाइयेहै तब नारद यज्ञ करावनवारेसे कहते भए अहो मानव तैंने यह क्या कर्म आरम्भाहै यह कर्म सर्वज्ञ जो वीतरागहैं तिन्होंने दुःखका कारण कहाहै तब संवर्तब्राह्मण कोप कर कहताभया अहो अत्यंत मूढ़ता तेरी तू सर्वथा अमिलती बात कहेहै तैंने कोई सर्वज्ञ रागवर्जित वीत राग कहा सो जो सर्वज्ञ वीतराग होय सोवक्ता नहीं और जो वक्ताहै सो सर्वज्ञ वीतराग नहीं और अशुद्ध मलिनजे जीव उनका कहा वचनप्रमाण नहीं और जो अनुपम सर्वज्ञहै सो कोई देखनेमें नहीं आता इस लिये वेद अकृत्रिमहै वेदोक्त मार्ग प्रमाणहै वेद विषे शूद्र बिना तीन वर्णों को यज्ञ कहाहै यह यज्ञ अपूर्व धर्म है स्वर्गके अनुपम सुख देवेहै वेदीके मध्य पशुओंका बध पापका कारण नहीं शास्त्रोंमें कहा जो मार्गसो कल्याणही का कारण है और यह पशुओंकी सृष्टि विधाता ने यज्ञ हीके अर्थ रची है इस लिये यज्ञमें पशुके बधका दोष नहीं ऐसे संवर्त ब्राह्मणके विपरीत बचन सुन नारद कहनेलगे हे विप्र! तैंने यह सर्व अयोग्य रूपही कहाहै कैसा है तू हिंसा मार्गकर दूषित है आत्मा तेरा अब तू ग्रन्थार्थ का यथार्थ भेद सुन तू कहेहै सर्वज्ञ नहीं सो यदि सर्वथा सर्वज्ञ न होय तो शब्द सर्वज्ञ अर्थसर्वज्ञ बुद्धि सर्वज्ञ यह तीन भेद काहे को कहे जो सर्वज्ञ पदार्थ है तो कहने में आवे है जैसे सिंह है तो चित्राम में लिखिये है इस लिये सर्व का देखने हारा सर्व का जानने हारा सर्वज्ञ है सर्वज्ञ न होय तो अमूर्तीक अतेंद्रीय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पदार्थ को कौन जाने इस लिये सर्वज्ञका बचन प्रमाणहे और तैंने कहा जो यज्ञमें पशु का बध दोषकारी नहीं सो पशुको बध समय दुःखहोयहै कि नहीं जो दुःखहोय है तो पाप होय है जैसे पारधी हिंसा करे है सो जीवन को दुःख होय है और उस को पाप होय है और तैंने कही कि बिधाता सर्ब लोकका कर्त्ता है और यह पशुयज्ञ के अर्थ बनाए हैं सो यह कथनप्रमाणनहीं भगवान कृतार्थ उनकोसृष्टि बनानेसे क्या प्रयोजन और कहोगे ऐसी क्रीड़ा है सो क्रीड़ा तो कृतार्थ नहीं बालक समान जानिए और जो सृष्टि रचे तो आप सारखी रचे वह सुखपिण्ड और यह सृष्टि दुःखरूप है, जो कृतार्थ होय सो करतानहीं और कर्त्ता है सो कृतार्थ नहीं जिसके कछू इच्छाहै सो करे जिन के इच्छा है वे ईश्वर नहीं और ईश्वर बिनासमर्थ नहीं इसलिये यह निश्चय भया जिसके इच्छाहै सो करने समर्थ नहीं और जो करनेसमर्थ है उसके इच्छा नहीं इस लिये जिसको तुम बिधाता कर्त्ता मानो हो सो कर्म्मों कर पराधीन तुम सारखाही है और ईश्वरहै सो अमूर्त्तीक है जिस के शरीर नहीं सो शरीर बिना कैसे सृष्टि रचे। और यज्ञ के निमित्त पशु बनाये सो बाहनादि कर्मविषे क्यों प्रवर्ते इसलिये यह निश्चयभया किइस भवसागर में अनादिकालसेइनजीवों ने रागादिभाव कर कर्म उपार्जे हैं तिन कर नाना योनि में भ्रमण करे हैं यह जगत अनादि निधन है किसी का किया नहींसंसारीजीव कर्माधीन हैं और जो तुम यह कहोगे कि कर्म पहले हैं याशरीर पहिले है? सो जैसेबीज और वृक्ष तैसे कर्म और शरीर जानने बीज से वृक्ष है और वृक्ष से बीज है; जिनके कर्म रूप बीज दग्ध भया तिन के शरीररूप वृक्षनहीं और शरीरवृक्षबिना सुख दुखादिफल नहीं इसलिये यहआत्मा मोक्ष अवस्थामें कर्मरहित मन इन्द्रियों से अगोचर अद्भुत परम आनन्दको भोगे है निराकार स्वरूप अविनाशीहै सो वह अविनाशी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पद दया धर्मसे पाइये है तू कोई पुण्यके उदय कर मनुष्य हुवा ब्राह्मणका कुलपाया इसलिये पारधियोंके कर्मसे निवृत्तिहो और जो जीव हिंसासे यह मानव स्वर्ग पावे है तो हिंसा के अनुमोदन से राजा वसु नरक में क्यों पड़े जो कोई चूनका पशु बनायकर भी घात करेहे सोभी नरकका अधिकारी होय है तो साक्षात् पशु घातकी क्या बात अबभी यज्ञ के करण हारे ऐसा शब्द कहे हैं हो वसू उठ स्वग विषे जावो यह कहकर अग्नि में आहुति डारे हैं इस से सिद्ध हुवा कि वसु नरक में गया और स्वर्ग न गया इसलिये हे संवर्तयज्ञ कल्पनासे कछू प्रयोजन नहीं और जो तू यज्ञही करे तो जैसे हमकहें सोकर यह चिदानंद आत्मा सोतो जजमान नाम कहिये यज्ञका करणहारा और यह शरीरहे सो विनयकुण्ड कहिये होमकुण्ड और संतोष है सो पुरोडास कहियेयज्ञकी सामग्री और जो सर्वपरिग्रह सो हवि कहिये होमने योग्य वस्तु और मूर्धज कहिये केश वेई दर्भ कहिये डाभ तिनका उपारना लोंचकरना और जो सर्व जीवोंकी दया सोई दक्षिणा और जिसकाफल सिद्धपद ऐसा जो शुक्लध्यानसोई प्राणायाम और जो सत्यमहाव्रत सोई यूपकहिये यज्ञविषे काष्ठका स्थंभ जिससे पशुको बांधे हैं और यह चंचल मन सोई पशु और तप रूप अग्नि और पांच इन्द्रिय वेई समाधि कहिये ईंधन यह यज्ञ धर्मयज्ञ कहिये है और तुम कहोहो कि यज्ञकर देवोंको तृप्ति कीजियेहै सो देवनके तो मनसा आहार है तिनका शरीर सुगंध है अन्नादिकहीका आहार नहीं तो मांसादिककी कहा बात कैसा है मांस महादुर्गंध जो देखा न जाय पिताका वीर्य माता का लहू उसकर उपजा कृमी की है उत्पत्ति जिसमें महा अभक्ष्य सो मांस देव कैसे भखें और तीन अग्नि या शरीरविषे हैं एक ज्ञानाग्नि दूसरी दर्शनाग्नि तीसरी उदराग्नि सो इन्हींको आचार्य दक्षिणाग्नि गार्हपत्यआहवनीय

कहे हैं और स्वर्गलोकके निवासी देव हाड मांसका भक्षणकरें तो देव काहेके जैसे स्वान स्याल काक तैसे वेभी भये ये वचन नारदनेकहे कैसे हैं नारद देवऋषिहैं अनेकान्तरूप जिनमार्गके प्रकाशिबेको सूर्यसमान महा तेजस्वी देदीप्यमान है शरीर जिनका शास्त्रार्थ ज्ञान के निधान तिनको मन्दबुद्धि संवर्त कहां जीते सो पराभवको प्राप्तभया तब निर्दई क्रोध के भारकर कम्पायमान आशीविष सर्पसमान लाल हैं नेत्रजिसके महा कलकलाटकर अनेक विप्रभेले होय लड़नेको कांछकछ हस्तपादादिकर नारदके मारनेको उद्यमी हुए जैसे दिनमें काक घूघू परआवें सो नारदभी केयकोंको मुक्कासे केयकोंको मुदगरसे केयकोंको कोहनीसे मारतेहुये भ्रमणकरते हुए अपने शरीररूप शस्त्रकर अनेकों को हता बहुत युद्धभया निदान यह बहुत और नारद अकेले सो सर्व गात्रमें अत्यन्त आकुलताको प्राप्तभये पक्षीकीन्याई बधकोंने घेरा आकाशमें उड़नेको असमर्थभए प्राण संदेहको प्राप्तभए उससमय रावणकादूत राजा मरुतपै आयाथा सो नारदको घेरा देख पीछे जाय रावणसे कही हे महाराज जिसके निकट मुझे भेजाथा सो महा दुरजन हैं उसके देखते द्विजोंने अकेले नारदको घेराहै और मारे हैं जैसे कीड़ीदल सर्पको घेरसो मैं यहबात देख न सका सो आपको कहिनेको आयाहूं रावण यह वृतान्त सुन क्रोधको प्राप्तभया पवनसेभी शीघ्रगामी जे वाहन उनपर चढ़ चलनेको उद्यमी हुवा और नंगी तलवारों के धारक जे सामन्त वे अगाऊ दौड़ाए सो एक पलकमें यज्ञशालामें जा पहुंचे सो तत्काल नारदको शत्रुवोंके घेरेसे छुड़ाया और निरदई मनुष्य जो पशुओंको घेर रहेथे सो सकल पशु तत्काल छुड़ाये यज्ञके यूप कहिये स्तंभ तोड़ डारे और यज्ञके करावनहारे विप्र बहुत कूटे यज्ञशाला बखेरडारी राजाको भी पकड़ लिया रावणने द्विजों से बहुत कोपकिया कि मेरे

राजमें जीव घातकरें यह क्या बात सो ऐसे कूटे जो अचेत होय धरतीपर गिरपड़े तब सुभटलोक इनको कहतेभये अहो जैसा दुख तुमको बुरालगे है और सुख भला लगे है तैसा पशुवोंकोभी जानो और जैसा जीतव्य तुमको वल्लभहै तैसा सकल जीवोंको जानों तुमको कूटते कष्टहोयहै तो पशुवोंको विनाशनेसे क्यों न होय तुम पापकाफल सहोगे नरकमें दुखभोगोगे सो घोड़ोंके सवारहाथी रथोंके सवार तथा खेचर भूचर सबही पुरुष हिंसकोंको मारने लगे तब वे विलाप करनेलगे हमको छोड़ो फिरऐसा काम न करेंगे ऐसे दीन वचन कह विलाप करते भये और रावणका तिनपर अत्यन्तक्रोध सो छोड़ें नहीं तब नारद महा दयावान रावणसे कहनेलगे हे राजन्! तेराकल्याण होवे तैंने इन दुष्टोंसे मुझेछुड़ाया अब इनकीभी दयाकर जिनशासन में काहूंको पीड़ा देनी लिखी नहीं सर्व जीवोंको जीतव्य प्रियहै तैंने सिद्धांतमें क्या यह बात न सुनी है कि जो हुंडा सर्पणी काल विषे पाखण्डियोंकी प्रवृति होयहै जबके चौथेकालके आदिमें भगवान ऋषभ प्रगटे तीन जगत्में उच्च जिनको जन्मतेही देव सुमेरुपरवत पर लेगये क्षीर सागरके जल से स्नान कराया वे महाकांतिके धारी ऋषभ जिनका दिव्य चरित्र पापोंका नाशकरनेहारा तीनलोकमें प्रसिद्धहै सो तैंने क्या न सुना वेभगवान जीवोंके दयालु जिनके गुण इन्द्रभी कहनेको समर्थ नहीं वे वीतराग निर्वाण के अधि-कारी इस पृथिवीरूप स्त्रीको तजकर जगत्के कल्याण निमित्त मुनिपदको आदरते भये कैसे हैं प्रभु निर्मल है आत्मा जिनका कैसीहै पृथिवीरूप स्त्री जो विन्ध्याचल पर्वत और हिमाचल पर्वततेई हैं उतंगकुच जिसके और आर्यक्षेत्रहै मुख जिसका सुन्दर नगर वेई चूड़े तिनकरयुक्त है और समुद्र है कटिमेखला जिसकी और जे नीलवन तेई हैं सिरके केशजिसके नाना प्रकारके जेरत्न वेई आभषण हैं ऋषभदेवने मुनिहोयकर

हजारवर्ष तक महा तप किया अचलहै योगजिनका लंबायमानहैं बाहु जिनकीस्वामीके अनुरागकर कच्छादि चारहजार राजावोंने मुनि के धर्म जाने बिना दीक्षाधरी सो परीषह सह न सके तब फलादिक का भक्षण वक्कलादिकका धारणकर तापसी भये ऋषभदेवने हजारवर्षतक तपकर बटवृक्षके तले केवलज्ञान उपजाया। तब इन्द्रादिक देवोंने केवलज्ञान कल्याणकिया समोशरणकी रचनाभई भगवानकी दिव्यध्वनिकर अनेकजीव कृतार्थभए जे कच्छादिक राजा चारित्र भ्रष्ट हुएथे ते धर्ममें दृढ़ होगए मारीचके दीर्घ संसारके योगसे मिथ्या भाव न छूटा और जिस स्थानकमें भगवानको केवलज्ञान उपजा उस स्थानकमें देवोंकर चैत्यालयों की स्थापना भई ऋषभदेवकी प्रतिमा पधराई औरभरत चक्रवर्तीने बिप्रवर्ण थापा सो वह जल विषे तेलकी बून्दवत बिस्तारको प्राप्त भया उन्होंनेयह जगत मिथ्याचारकरमोहित किया लोक अति कुकर्म विषे प्रवर्ते सुकृतका प्रकाश नष्टहोगया जीव साधुओंके अनादरमें तत्परभए आगे सुभूम चक्रवर्तीने नाश को प्राप्त कियेथे तोभी इनका अभाव न हुआ हे दशानन तो तुझकर कैसे अभावको प्राप्त होवेंगे इस लिये तू प्राणियोंकी हिंसासे निवृत होहु काहूकी कभीभी हिंसा कर्तव्य नहीं और जब भगवानके उप देशसे जगत मिथ्या मार्गसे रहित न होय कोई यक जीव सुलटे तो हम सारिखे तुम सारिखोंकर सकल जगतका मिथ्यात्व कैसे जाय कैसेहैं भगवान सर्वके देखनेहारे सर्वके जाननेहारे इसभांति देवार्षिजे नारद तिनके बचन सुनकर केकसी माताकी कुक्षमें उपजा जो रावणसो पुराण कथा सुनकर अति प्रसन्न हुआ और बारम्बार जिनेश्वरदेवको नमस्कार किया नारद और रावण महा पुरुषनकी मनोज्ञ जे कथा उनके कथनकर क्षणएक सुखसे तिष्ठे महा पुरुषोंकी कथामें नानाप्रकारका रस भरा है।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथानन्तर राजा मरुतन हाथ जोड़ धरती से मस्तक लगाय रावणको नमस्कारकर बिनती करता भया हे देव हे लंकेश ! मैं आपका सेवक हूं आप प्रसन्न होवो मैं अज्ञानी ने अज्ञानियों के उपदेश कर हिंसा मार्ग रूप खोटी चेष्टा करी सो आप क्षमा करो जीवों से अज्ञान कर खोटी चेष्टा होयहै अब मुझे धर्मके मार्ग मे लेवो और मेरी पुत्री कनकप्रभा आप परणो जे संसारमें उत्तम पदार्थ हैं तिनके आपही पात्रहो तब रावण प्रसन्न भए कैसे हैं रावण नम्रीभूत होय उसमें दयावानहैं तब रावण ने उसकी पुत्री परणी और तिसको अपना किया सो कनकप्रभा रावणकी अतिबल्लभाभई मरुतने रावणके सामंतलोक बहुतपूजे नानाप्रकारके वस्त्राभूषण हाथी घोड़े रथ दिये कनकप्रभा सहित रावण रमताभया उसके एकवर्ष पर्यंत कृतचित्रनामा पुत्रीभई सो देखनेहारे लोकनको रूपकर आश्चर्यकी उपजावनहारी मानों मूर्तिवंती शोभाहीहै रावणके सामंतमहा शूरवीर तेजस्वी जीतकर उपजाहै उत्साह जिन के संपूर्ण पृथ्वी तलमें भ्रमतेभए तीन खंडमें जोराजा प्रसिद्ध होताथा और बलवान होताथा सो रावण के योधाओंके आगे दीनताको प्राप्त भया सबही राजा वश भए कैसेहैं राजा राज्यके भंगका है भय जिनको विद्याधर लोक भरतक्षेत्रका मध्य भाग देख आश्चर्यको प्राप्त भए मनोज्ञ नदी मनोज्ञ पहाड़ मनोज्ञ वन तिनको देख लोक कहते भए अहो स्वर्ग भी यहांसे अधिक रमणीक नहीं चित्तमें ऐसे उपजे है यहांही वास करिये समुद्र समान विस्तीर्ण सेना जिसकी ऐसा रावण जिससमान और नहीं अहो अद्भुत धैर्य अद्भुत उदारता इस रावणकी यह समस्त विद्याधरोंमें श्रेष्ठ नजर आवेहै इस भांति समस्त लोक प्रशंसा करे हैं जिस देशमें रावण गया तहां तहां लोक सनमुख आय मिलते भए जेजे पृथ्वीमें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजाओंकी सुन्दर पुत्री थी ते रावणने परणी जिस नगरके समीप रावण जाय निकसें उस नगरके नर नारी देखकर आश्चर्यको प्राप्त होवें स्त्री सकल काम छोड़ देखनेको दौड़ी कैयक झरोखोंमें बैठी ऊपर से असीस देय फूल डारें कैसा है रावण मेघसमान श्यामसुंदर कंदूरी समान लालहैं अधर जिसके और मुकट विषे नानाप्रकारकी जे मणि उनकर शोभैहै सीस जिसका मुक्ताफलोंकी ज्योति सोई भया जल उसकर पखाला है चन्द्रमा समान बदन जिसका इंद्रनील मणिसमान श्याम सघन जे केश और सहस्र पत्र कमल समान नेत्र तत्काल खैंचा नम्री भूत हुआ जो धनुष उसके समान वक्र स्याम चिकने भौंह युगल जिसकर शोभित शंखसमान ग्रीवा [गरदन] जिसकी और वृषभसमानकंध जिसके पुष्ट विस्तीर्णवक्ष स्थल जाके दिग्गजकी सूंड समान भुजा जिसके केहरी समान कटि जिसके और कदलीके समान सुंदर जंघा जिसकी कमल समान चरण सम चतुर संस्थानको धरैं महा मनोहर शरीर जिसका न अधिक लंबा न अधिक छोटा न कृश न स्थूल श्री वत्स लक्षणको आदि देय तीस लक्षणोंकर युक्त और अनेकप्रकार रत्नोंकी किरणोंकर देदीप्यमानहै मुकट जिसका और नानाप्रकारकी मणियोंकर मंडित मनोहरहैं कुंडल जिसके बाजूबंदकी दीप्तिकर देदीप्यमान हैं भुजा जिसकी और मोतियों के हारसे शोभे है उर जिस का अर्ध चक्रवर्तीकी विभूतिका भोगनहारा । उसे देख प्रजाके लोक बहुत प्रसन्न भए परस्पर बात करे हैं कि यह दशमुख महा बलवान जीता है वैश्रवण जिसने और जीता है राजायम जिसने कैलाश के उठाने को उद्यमी हुवा और प्राप्त किया है राजा सहस्ररश्मि को वैराग्य जिसने मरुत के यज्ञ का विध्वन्स करनहार महा शूरवीर साहसका धारी हमारे सुकृतके उदयकर इस दिशाको आया यह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केकसी माता का पुत्र इसके रूपका गुण कौन वर्णन करसकै इसका दर्शक लानां को परम उत्सव का कारणहै वहस्त्री पुण्यवती धन्यहै जिसके गर्भसे यह उत्पन्नहुवा और वह पिता धन्यहै जिससे इसने जन्म पाया और वे बन्धु लोक धन्य हैं जिनके कुलमें यह प्रगटा और जे स्त्री इनकी राणी भई तिनके भाग्य कौन कहे इस भांति स्त्री झरोखावों में बैठी बात करे है और रावणकी असवारी चली जायहै जब रावण आय निकसे तब एक महूर्त गांधकी रानी चित्रामकीसी होय रहें उसके रूप सौभाग्यकर हरागया चित्त जिनका स्त्रियोंको और पुरुषोंको रावणकी कथाके सिवाय और कथा न रही, देशों में तथा नगर ग्राम तथा गांव के बाड़े तिनमें जे प्रधान पुरुष हैं वे नाना प्रकारकी भेंठ लेकर आय मिले और हाथ जोड़ नमस्कार कर विनती करते भये हे देव महा विभवके पात्र तुम तुम्हारे घरमें सकल वस्तु विद्यमान हैं हे राजावों के राजा नन्दनादि बनमें जे मनोज्ञ वस्तु पाइये हैं वेभी सकल वस्तु चितवन मात्रसेही तुमको सुलभ हैं ऐसी अपूर्व वस्तु क्या हो जो तुम्हारी भेंट करें तथापि यह न्याय है किरीते हाथों से राजावोंसे न मिलिये इसलिये कछू हम अपनी माफ़िक भेंट करे हैं जैसे भगवान जिनेन्द्र देवकी देव सुवर्णके कमलोंकर पूजा करे हैं तिनको क्या मनुष्य आप योग्य सामग्री कर न पूजे हैं इस भांति नाना प्रकारके देशोंके सामन्त बड़ी ऋद्धिके धारी रावणको पूजतेभये रावण तिनका मिष्ठ वचन सुनकर बहुत सन्मान करताभया रावण पृथिवीको बहुत सुखी देख प्रसन्न भया जेसे कोई अपनी स्त्रीको नाना प्रकार के रत्न आभषण कर मण्डित देख सुखीहोय जहां रावण मार्गके वश जाय निकसे उस देशमें विना बाहे धान स्वमेव उत्पन्न भए पृथिवी अति शोभायमान भई प्रजाके लोक परम आनन्दको धरते संते अनुरागरूपी

For Private and Personal Use Only

जलकर इसकी कीर्त्तिरूपी बेलको सींचतेभये कैसीहै कीर्त्ति निर्मलहै स्वरूप जिसका कृसान लोग ऐसे कहतेभये कि बड़े भाग हमारे जो हमारे देश में रत्नश्रवाका पुत्र रावण आया हम रंकलोग कृषिकर्ममें आसक्त रूखे अंगखोटे वस्त्र हाथ पग करकश क्लेशसे हमारा सुख स्वादरहित एता कालगया अब इसके प्रभावसे हम सम्पदादिकर पूर्ण भए पुण्यका उदय आया सर्व दुःखोंको दूर करणहारा रावणआया जिनजिन देशोंमें यह कल्याण का भरा विचरे वे देश सर्व सम्पदाकर पूर्ण होवें दशमुख दलिद्रियोंका दलिद्र देख न सके जिनको दुःख मेटनेकी शक्ति नहीं तिन भाइयोंकर क्या सिद्धि होय है यहतो सर्व प्राणियोंका बड़ा भाई होताभया यह रावण अपने गुणोंकर लोगोंका अनुराग बढ़ावताभया जिसके राजमें शीत और उष्णभी प्रजाको बाधा न कर सकें तो चोर चुगल बटपरे तथा सिंह गजादिकों की बाधा कहांसे होय जिसके राज्यमें पवनपानी अग्निकी भी प्रजाको बाधा न होय सर्व बात सुखदाईही होती भई ॥

अथानन्तर रावणकों दिग्विजय विषे वर्षाऋतु आई मानो रावणसे आय मिली मानों इन्द्रने श्याम घटारूपी गज भेट भेजी कैसे हैं गज काले मेघ महा नीलाचल समान विजुरी रूप स्वर्ण की सांकल धरे और बुगुलोंकी पंक्ति भई ध्वजा तिनकर शोभितहैं शरीर जिनके इन्द्र धनुषरूप आभूषण पहरे जब वर्षाऋतु आई तब दशोंदिशा में अन्धकार होगया रात्रिदिवस का भेद जाना न पड़े सो यह युक्तही है श्याम होय सो श्यामताही प्रगटकरे मेघभी श्याम और अंधकार भी श्याम पृथिवी विषे मेघकी मोटी धारा अखण्ड बरसतीभई जो माननी नायकाके मनविषे मानका भारथा सो मेघके गर्जनकर क्षणमात्र में विलयगया और मेघकी ध्वनि कर भयको पाई जे मानिनी भामिनी वे स्वयमेवही भरतार से स्नेह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करतीभई जे शीतल कोमल मेघकी धारा वे पंथीन को बाण भावको प्राप्त भई मर्म की विदारनहारी धाराओं के समूह कर भेदागया है हृदय जिनका ऐसे पंथी महाव्याकुल हुये मानों तीक्ष्ण चक्र कर विदारे गये हैं नवीन जो वर्षाका जल उसकर जड़ताको प्राप्तभए पंथी क्षणमात्र में चित्राम कैसे होगये और जानिये कि क्षीर सागर के भरे मेघसो गायन के उदर विषे बैठे हैं इसलिये निरन्तरही दुग्धधारा वर्षे हैं वर्षा के समय किसान कृषिकर्मको प्रवर्ते हैं रावण के प्रभावकर महा धमके धनी होतेभये रापण सबही प्राणियोंको महा उत्साहका कारण होता भया गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं कि हे श्रेणिक जे पुण्याधिकारी हैं तिनके सौभाग्य का वर्णन कहां तक करिये इन्द्रीवर कमल सारिखा श्याम रावण स्त्रियों के चित्तको अभिलाषी करतासंता मानों साक्षात् वर्षा कालका स्वरूपही है गम्भीरहै ध्वनि जिस की जैसा मेघ गाजे तैसा रावण गाजे सो रावणकी आज्ञासे सर्व नरेंद्र आय मिले हाथ जोड़ नमस्कार करते भये जो राजावों की कन्या महा मनोहरथी सो रावणको स्वयमेव बरतीभई वे स्त्री रावण को बरकर अत्यन्त क्रीड़ा करती भई जैसे वर्षा पहाड़को पायकर अति वरसे कैसी है वर्षा पयोधर जे मेघ तिनके समूहकर संयुक्त है और कैसी है स्त्री पयोधर जे कुच तिनकर मण्डित है कैसा है रावण पृथिवी के पालनेको समर्थ है वैश्रवण यक्षका मानमर्दन करनहारा दिग्विजयको चढ़ा समस्त पृथिवीको जीते सो उसे देखकर मानो सूर्य लज्जा और भयकर ब्याकुल होय दबगया भावार्थ वर्षाकाल में सूर्य मेघ पटल कर अच्छादित हुआ और रावणके मुख समान चन्द्रमाभी नाहीं सो मानों लज्जा कर चन्द्रमाभी दब गया क्योंकि वर्षाकाल में चन्द्रमाभी मेघमालाकर आच्छादित होयहै और तारेभी नजर नहीं आवे हैं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो मानो अपना पति जो चन्द्रमा उसे रावण के मुखकर जीता जान भागगए और रावणकी हथेली और पगथली अत्यन्त लाल और रावणकी स्त्रियोंको अत्यन्त लाल जानकर लज्जावान होय कमलों के समूह भी छिप गए मानो यह वर्षा ऋतु स्त्री समान है विजुरी तेई कटिमेखला जो इन्द्र धनुष वह वस्त्राभूषण पयोधर जे मेघ वेही पयोधर कहिये कुच और रावण महा मनोहर केतकी वास तथा पद्मनी स्त्रियों के शरीर की सुगन्ध इत्यादि सर्व सुगन्ध अपने शरीर की सुगन्धता कर जीतता भया जिस के सुगन्ध श्वासरूप पवन के खेंचे भ्रमरों के समूह गुंजार करते भए गंगाका तट जो अतिमनोहर है वहां डेरा कर रावणने वर्षाऋतु पुर्ण करी कैसा है गंगाका तट जहां हरित तृण शोभे हैं नाना प्रकार के पुष्पों की सुगन्धता फैल रही है वड़े बड़े वृक्ष सोभे हैं कैसा है रावण जगत् का वन्धु कहिये हितु है। अति सुख से चातुरमास्य पुर्णकिया। हे श्रेणिक! जे पुण्याधिकारी मनुष्य हैं तिनकानाम श्रवणकर सर्वलोक नमस्कार करे हैं। और सुन्दर स्त्रीों के समुह स्वयमेव आय वरें हैं और ऐश्वर्य के निवास परम प्रगटहोय हैं। उन के तेजकर सुर्य्य भी शीतल होय है। ऐसा जान कर आज्ञामान संशय छोड पुण्य केप्रबन्ध में यत्न करो। इति पद्मपुराण भाषा वचनिका में एकादश ११ पर्व समाप्तम्॥

अथानन्तर रावण मंत्रियोंसे विचार करनेलगा। अहो मंत्रियो! यह अपनी कन्या कृताचित्रा कौन को परनावें इंद्र से संग्राम में जीतनेका निश्चय नहीं इस लिये पुत्री का पाणिग्रहण मंगल कार्य प्रथम करना योग्य है। तब रावण को पुत्री के विवाह की चिंता में तत्पर जान कर राजा हरिवाहन ने अपना पुत्र निकट बुलाया सो हरिवाहन के पुत्र को अति सुन्दराकार विनयवान् देख कर पुत्रीके

For Private and Personal Use Only

परणायवेका मनोरथ किया रावण अपने मन में चितवता भया कि सर्व नीतिशास्त्र विषे प्रवीण अहो मथुरा नगरीका नाथराजाहरिवाहन निरन्तर हमारे गुणकी कीर्ति विषे आसक्त है मन जिसका इसका प्राणों से भी प्यारा मधु नामा पुत्र प्रशंसा योग्य है। महाविनयवान् प्रीति पात्र महारूप वान् अति गुणवान् मेरे निकठ आया तब मंत्री रावण से कहते भए हे देव यह मधु कुमार महापराक्रमी इस के गुण वर्णन में न आवें तथापि कछुयक कहें हैं इस के शरीर में अत्यन्त सुगन्धता है जो सर्वलोक के मनको हरे ऐसा है रूप जिस का इस का मधुनाम यथार्थ है मधु नाम मिष्टान्ह का है सो यह मिष्टवादी है और मधु नाम मकरंदका है सो यह मकरंदसे भी अतिसुगन्ध है और इसके एतेही गुण आपमतजानों असुरन का इन्द्र जो चमरेन्द्र उस ने इस को महा गुणरूप त्रिशूल रत्न दिया है वह त्रिशुलरत्न वैरियों पर डारा बृथा न जावे अत्यन्त देदीप्यमान है आप इस के करतुत कर इस के गुण जानोहीगे बचनोसे कहांलग कहें इसलिये हेदेव इस से सम्बन्ध करने कीबुद्धि करो यह आप से सम्बन्ध कर कृतार्थ होयगा, ऐसा जब मंत्रियोंने कहातबरावणने इसको अपनाजमाईनिश्चयकिया और जमाईयोग्यजो सामिग्रीसोउसको दीनी बडी विभूतिसे रावण ने अपनी पुत्री परणाई सर्वलोक हर्षित भए यह रावण की पुत्री साक्षात् लक्ष्मी महा सुन्दर शरीर पतिके मन और नेत्रोंकी हरनहारी जगत् में जो सुगन्ध नहीं ऐसी सुगन्ध शरीर की धारनहारी इस को पाय कर मधु अति प्रसन्न भया ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक जिनको कौतूहल उपजा वह गौतम स्वामीसे पूछते भए हे नाथ असुरेन्द्र ने मधुको कौन कारण त्रिशूल रत्न दिया दुर्लभ है संगम जिस का तब गौतमस्वामी जिनधर्मी

योंसे है वात्सल्य जिनके त्रिशूल रत्न की प्राप्ति का कारण कहनेलगे। हे श्रेणिक धातकी खण्ड नामा द्वीप वहां ऐरावत् क्षेत्र शतद्वारा नगर वहां दो मित्र होते भए महा प्रेमका है बन्ध जिन के एकका नाम सुमित्र दूसरेका नाम प्रभव सो यह दोनों एक चटशाला में पढ़कर पण्डित भए कईएक दिनों में सुमित्र राजा भया सर्व सामन्तों करसेवित पूर्वोपार्जित पुण्य कर्म के प्रभाव से परम उदय को प्राप्त भया और दूजा मित्र प्रभव सो दलिद्र कुलमें उपजा महादरिद्री सो सुमित्र ने महास्नेह से अपनी बराबर करलिया एक दिनराजा सुमित्र को दुष्ट घोड़ा हरकर बनमें लेगया वहां दुरित दृष्टिनाम भीलोंका राजा सो इस को अपने घर लेगया उसको बनमाला पुत्री परणाई सो वह बनमाला साक्षात् बन लक्ष्मी उसको पाय राजा सुमित्र अति प्रसन्न हुवा एक मास वहां रहा फिर भीलों की सेना लेकर स्त्री सहित शतद्वार नगर में आवे था और प्रभव ढूंढने को निकसा सो मार्ग में स्त्री सहित मित्र को देखा कैसी है वह स्त्री मानों काम की पताका ही है। सोदेखकर यहपापी प्रभव मित्र की भार्या विषे मोहित भया अशुभ कर्म के उदय से नष्ट भई है कृत्य अकृत्य की बुद्धि जिस के प्रभव काम के बाणों कर वींधा हुवा अति आकुलता को प्राप्त भया आहार निद्रादिक सर्व से विस्मरण भया संसार में जेती व्याधी हैं तिन में मदन बड़ी व्याधि है जिस कर परम दुःख पाइये है जैसे सर्व देवन में सूर्य्य प्रधान है तैसे सर्व रोगों के मध्य मदन प्रधान है तब सुमित्र प्रभव को खेद खिन्न देखपूछते भऐ हे मित्र तू खेदखिन्न क्यों है तब यह मित्र को कहनेलगा जो तुम बनमाला परणी उस को देख कर चित्त व्याकुल भया है। यह बात सुन कर राजा सुमित्र मित्र में है अति स्नेह जिस का अपने श्रीप्राण समान मित को अपनी स्त्री के निमित्त दुखी जान स्त्री को मित्र के घर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पठावता भया। और आपआपा छिपाय मित्र के झरोखे में जाय बैठा और देखे कि यह क्या करे जो मेरी स्त्री इस की आज्ञा प्रमाण न करे, तो मैं स्त्री का निग्रह करूं और जो इस की आज्ञा प्रमाण करे तो सहस्रग्राम दूं। बनमाला रात्रि के समय प्रभव के समीप जाय बैठी तब प्रभव पूछता भया हे भद्रे तू कौन है तब इस ने विवाह पर्यन्त सर्व वृतान्त कहा सुन कर प्रभव प्रभारहित हो गया चित्तविषे अतिउदास भया विचारे है हाय हाय मैं यह क्या अशुभ भावनाकरी मित्र की स्त्री माता समान कौन वांछे है मेरी बुद्धि भ्रष्ट भई इस पाप से मैं कब छुटूं बने तो अपना सिर काट डारूं कलंक युक्त जीने कर क्या ? ऐसा बिचार मस्तक काटने के अर्थ म्यांन से खड्ग काढ़ा खड्ग की कान्ति कर दशों दिशा विषे प्रकाश हो गया तब तलवार को कण्ठ के समीप लाया और सुमित्र झरोखे में बैठा था सो कूद कर आय हाथ पकड़ लिया मरते को बचाय लीया छाती से लगाय कर कहनेलगा हे मित्र! आत्मघात का दोष तू न जाने है जे अपने शरीर का अविधि से निपात करे हैं वे शुद्र मर कर नरक में जाय पड़ें हैं अनेक भव अल्प आयु के धारक होय हैं यह आत्मघात निगोद का कारण है। इस भान्ति कहकर मित्र के हाथसे खड्ग छीन लीना और मनोहर बचनकर बहुत सन्तोषा और कहनेलगा कि हे मित्र अब आपसमें परस्पर परममित्रता है सो यह मित्रता परभव में रहे है कि न रहे। यह संसार असार है यह जीव अपने कर्म के उदय कर भिन्न भिन्न गति को प्राप्त होय हैं, इस संसार में कौन किसी का मित्र और कौन किसी का शत्रु है सदा एक दशा न रहे है, यह कहकर दूसरे दिन राजासुमित्र महामुनि भए, पर्याय पूर्णकर दूजे स्वर्ग ईशान इन्द्र भए वहां से चय कर मथुरापुरी में राजा हरिवाहन जिसके राणी माधवी तिन के मधु नामा पुत्र भए

हरिवंश रूप आकाश विषे चन्द्रमा समान भए और अभव्य सम्यक्त बिना अनेक योनियों में भ्रमणकर विश्वावसुकी ज्योतिषमती जो स्त्री उसकेशिखी नामा पुत्रभया, सोद्रव्यलिंगी मुनि होय महा तपकर निदान के योगसे असुरों के अधिपति चमरेंद्र भए तब अवधिज्ञान कर अपने पूर्व भव विचार सुमित्रनामा मित्र के गुण अति निर्मल अपने मनमें धारे, सुमित्र राजा का अतिमनोज्ञ चरित्र चितार कर असुरेंद्र का हृदय प्रीती कर मोहित भया मन में बिचारा कि राजा सुमित्र महा गुणवान् मेरा परम मित्र था सर्व कार्यों में सहाई था उस सहित मैं चटशाला में विद्यापढ़ा मैं दरिद्री था सोउसने आप समानविभूतिवान् किया और मैं पापी दुष्टचित्तने उसकी स्त्री में खोटे भाव किए तो भी उस ने द्वेष न किया स्त्री मेरे घर पठाई मैं मित्रकी स्त्री को माता समान जान अति उदास होय अपना शिर खड्ग से काटने लगा तब उसहीने थांभ लिया और मैंने जिनशासनकी श्रद्धाविना मरकर अनेक दुःख भोगे और जे मोक्षमार्गके प्रवरतन हारेसाधु पुरुष उनकी निन्दा करी सो कुयोनिमें दुःख भोगे और वह मित्र मुनिव्रत अंगीकार कर दूजे स्वर्ग इन्द्रभया वहांसे चयकर मथुरापुरीमें राजा हरिवाहनका पुत्र मधुबाहनहुवाहै और मैं विश्वावसु का पुत्र शिखीनाम द्रव्य लिंगी मुनी होय असुरेंद्र भया यह विचार उपकारका खैंचा परम प्रेमकर भीगा है मन जिसका अपने भवन से निकस कर मध्यलोकमें आया मधुवाहन मित्रसे मिला महा रत्नोंसे मित्र का पूजन किया सहस्रांत नामा त्रिशूल रत्न दिया मधुवाहन चमरेंद्रको देख बहुतप्रसन्नहुवा फिर चमरेन्द्र अपने स्थानकको गया हे श्रेणिक शस्त्र विद्याका अधिपति सिंहोंकाहै वाहन जिसके ऐसा मधुकुंवर हरिवंशका तिलक रावण है श्वसुर जिसका सुखसों तिष्ठे यह मधुका चरित्र जो पुरुष पढ़े सुनें सो कांति को प्राप्त होय और उसके सर्व अर्थ सिद्ध होंय ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथानन्तर मरुत के यज्ञ का नाश करणहारा जो रावण सो लोक विषे अपनाप्रभाव विस्तारताहुवा शत्रुवों को वश करता हुवा अठारहवर्ष विहारकर जैसे स्वर्ग में इन्द्र हर्ष उपजावे तैसे उपजावता भया पृथिवीका पति कैलाश पर्वतके समीप आय ठहरा वहां निर्मल है जल जिसका ऐसी मन्दाकिनी कहिये गङ्गा समुद्र की पटराणी कमलन के मकरन्द कर पीत है जल जिसका ऐसी गंगाके तीर कटकके डेरे कराए और आप कैलाश के कच्छ में क्रीड़ा करता भया गंगाका स्फटिक समान जल निर्मल उसमें खेचर भूचर जलचर क्रीड़ा करते भये जे घोड़े रजमें लोटकर मलिन शरीर भएथे वे गंगामें निहलायजल पान कराय फिर ठिकाने लाय बांधे हाथी सपराए रावण बालीका बृत्तान्त चितार चैत्यालयोंको नमस्कार कर धर्मरूप चेष्टा करता तिष्ठा ॥

अथानन्तर इन्द्रने दुर्लंघिपुर नामा नगरमें नलकूवर नामा लोकपाल थापा था सो रावणको हलकारों के मुख से नजीक आया जान इन्द्र के निकट शीघ्रगामी सेवक भेजे और सर्व बृत्तान्त लिखा कि रावण जगतको जीतता समुद्र रूप सेना को लिए हमारी जगह जीतने के अर्थ निकट आय पड़ा है इस तरफके सर्वलोक कम्पायमान भए हैं सो यह समाचार लेकर नलकूवरके इतवारी मनुष्य इन्द्र के निकट आए इन्द्र भगवानके चैत्यालयोंकी बन्दनाको जाते थे सो मार्गमें इन्द्रको जाय पत्र दिया इन्द्रने बांचकर सर्व रहस्य जानकर पीछे जवाब लिखा कि मैं पांडुकवन के चैत्यालयों की बन्दना कर आऊंहूं इतने तुम बहुत यत्न से रहना तुम अमोघास्त्र कहिये खाली न पड़े ऐसा जो शस्त्र उसके धारक हो और मैंभी शीघ्रही आऊंहूं ऐसी लिखकर बन्दनामें आसक्तहै मन जिसका बैरियोंकी सेनाको न गिनताहुवा

पांडुकबन गया और नलकूवर लोकपाल ने अपने निज वर्गसे मन्त्रकर नगरकी रक्षामें तसर विद्यामय सौ योजन ऊंचा वज्रशाल नामाकोट बनाया प्रदक्षिणाकर तिगुना रावण ने नलकूवर का नगर जानने के अर्थ प्रहस्त नामा सेनापति भेजा सो जायकर पीछे आय रावणसे कहताभया हे देव मायामई कोट कर मण्डित वह नगरहै सो लिया न जाय देखो प्रत्यक्ष दीखेहै सर्व दिशाओंमें भयानक विकराल दाढ़ को धरे सर्पसमान शिखर जिसके और बलता जो सघन बांसन का बन उस समान देखा न जाय ऐसा ज्वालाके समूह कर संयुक्तउठे हैं स्फुलिंगोंकी राशि जिसमें और इसके यंत्र बैताल का रूप धरे विकराल हैं दाढ़ जिनकीएक योजनके मध्यजो मनुष्य आवे उसको निगलेहैं तिन यंत्रविषे प्राप्तभए जे प्राणियोंके समूह तिनका यह शरीर न रहे जन्मांतर में और शरीर धरे ऐसाजानकर आप दीर्घदर्शीहो सो इसनगर के लेनेका उपाय विचारो तब रावण मन्त्रियों से उपाय पूछने लगे सो मन्त्री मायामई कोटके दूर करने का उपाय चितवते भये कैसे हैं मन्त्री नीति शास्त्र में अति प्रवीण हैं।

अथानन्तरनलकूवरकी स्त्री उपरम्भा इन्द्रकी अपसरा जो रम्भा उस समान है गुण और रूप जिसका पृथिवीपर प्रसिद्ध सो रावण को निकट आया सुन अति अभिलाषा करती भई आगे रावण के रूप गुण श्रवणकर अनुरागवती थीही सो रात्रिके विषे अपनी सखी विचित्रमाला को एकांत में ऐसे कहती भई कि हे सुन्दरी मेरे तू प्राण समान सखीहै तुझसमान और नहीं अपना और जिस का एक मन होय उसको सखी कहियेमेरे में और तेरे में भेदनहीं इसलिये हे चतुरे निश्चयसे मेरे कार्यका साधन तू करे तो तुझे अपने जीकी बात कहूं जे सखी हैं वे निश्चयसेती जीतव्य का अवलम्बन होय हैं जब ऐसे राणी

उपरम्भाने कहा तब सखी विचित्रमाला कहतीभई हे देवी एती बात क्या कहो हमतो तुम्हारे आज्ञाकारी जो मन वांछित कार्य कहो सोही करें मैं अपने मुखसे अपनी स्तुति क्या करूं अपनी स्तुतिकरना लोक में अति निन्द्य है बहुत क्या कहूं मोहि तुम मूर्तिमती साक्षात् कार्यकी सिद्धि जानो मेरा विश्वास कर तुम्हारे मनमें जो होय सो कहो हे स्वामिनी हमारे होते तोहि खेद कहा तब उपरम्भा निश्वास लेकर कपोल विषेकर घर मुखमेंसे न निकसते जो वचन उसे बारम्बार प्रेरणा कर बाहिर निकासती भई हे सखी बाल पनेही से लेकर मेरामन रावण में अनुरागी है यें लोक विषे प्रसिद्ध महा सुन्दर उसके गुण अनेक बार सुने हैं सो मैं अन्तरायके उदय कर अबतक रावणके संगमको प्राप्त न भई चित्तमें परम प्रीति धरूंहूं और अप्राप्तिका मेरे निरन्तर पछतावा रहे है हे रूपिणी मैं जानूहूं यह कार्य प्रसंसा योग्य नहीं नारी दूजे नरके संयोग से नरक में पड़े है तथापि मैं मरण को सहिवे समर्थ नहीं इसलिये हे मिष्ट भाषिणी मेरा उपाय शीघ्र कर अब वह मेरे मन का हरणहारा निकट आया है किसी भांति प्रसन्न होय मेरा उस से संयोग करले मैं तेरे पायन पड़ूंहूं ऐसा कहकर वह भामिनी पाय पड़ने लगी तब सखीने सिर थांभ लिया और यह कही कि हे स्वामिनी तुम्हारा कार्य क्षणमात्रमें सिद्ध करूं यह कहकर दूती घरसे निकस जाने है सकल इन बातनकी रीति अति सूक्ष्म श्याम वस्त्र पहरकर आकाशके मार्ग रावणके डेरे में आई राज लोकमें गई द्वारपालोंसे अपने आगमनका वृत्तान्त कहकर रावणके निकट जाय प्रणाम किया आज्ञा पाय बैठकर विनती करती भई हे देव दोषके प्रसंगसे रहित तुम्हारे सकल गुणोंकर यह सकल लोक व्याप्त होरहा है तुमको यही योग्य है अति उदार है विभव तुम्हारा इस पृथ्वीमें सबहीको तुम करोहो तुम सब

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के आनन्द निमित्त अगटभयहो तुम्हारा आकार देखकरयह जानियेहे कि तुम किसीकी प्रार्थना भंग न करोहो तुम बड़े दातार सबके अर्थ पूर्ण करोहो तुम सारिखे महंत पुरुषोंकी जो विभूतिहै सो परउपकारही के अर्थहे सो आप सबको विदा देकर एक क्षण एकांत विराजकर चितलगाय मेरी बात सुनो तो मैं कहूं तब रावणने ऐसाही किया तब उसने उपरंभाका सकल वृतांत कानमें कहातब रावण दोनों हाथकानन पर धर सिर धुन नेत्र संकोच केकसी माताके पुत्र पुरुषोंमें उत्तम सदाआचार परायण कहते भए। हे भद्रे क्या कहीं यह काम पापके बंधका कारण कैसे करनेमें आवे मैं परनारियोंको अंगदान करनेमें दरिद्री हूं ऐसे कर्मोंको धिक्कार होवे तैंने अभिमान तजकर यहबात कही परंतु जिनशासनकी यह आज्ञाहे कि विधवा अथवा धनीकी राणी अथवा कुवारी तथा वेश्या सर्वही परनारी सदा काल सर्वथा तजनी। परनारी रूपवतीहै तो क्या यह कार्य इस लोक और परलोकका विरोधी विवेकी न करें जो दोनों लोक भ्रष्ट करे सो काहेको मनुष्य, हे भद्रे पर पुरुषकर जिसका अंग मर्दित भया ऐसी जो परदारासो उच्छिष्ट भोजनसमानहै ताहि कौन नर अंगीकार करे। यह बात सुन विभीषण महा मंत्री सकलनयके जानने हारे राजविद्यामें श्रेष्ठहै बुद्धि जिनकी रावणको एकांतमें कहतेभए हे देव राजाओंके अनेक चरित्र हैं किसी समय किसी प्रयोजन के अर्थ किंचितमात्र अलीक भी प्रतिपादन करे हैं इस लिये आप इससे अत्यंत रूखी बात मतकहो वह उपरंभावशभई संतीकहुगढ़के लेनेका उपाय कहेगी ऐसे वचन विभीषण के सुनकर रावण राजविद्यामें निपुणमायाचारी विचित्रमाला सखीसे कहते भए हे भद्रे वह मेरेमें मन राखेहै और मेरे बिना अत्यंत दुखी है इस लिये उसके प्राणों की रक्षा मुझे करनी योग्यहै सो आयों

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से न छूटे इसप्रकार पहले उसको लेआवो जीवोंके प्राणोंकी रक्षा यहीधर्म है ऐसा कहकर सखीको सीख दीनी सो जायकर उपरंभाको तत्काल ले आई रावणने इसका बहुत सनमान किया तब वह मदन सेवनकी प्रार्थना करती भई रावणने कही हे देवी दुर्लंघ नगर में मेरी रमणेकी इच्छा है यहां उद्यान में कहां सुख ऐसा करो जो नगर विषे तुम सहित रमूं तब वह कामातुर उसकी कुटिलता को न जान कर स्त्रियोंका मूढ़ स्वभाव होयहै उसने नगरके मायामई कोट भंजनका उपाय आसाल नाम विद्या दीनी। और बहुत आदरसे नानाप्रकारके दिव्यशस्त्र दिये देवोंकर करियेहै रक्षा जिनकी तब विद्या के लाभसे तत्काल मायामई कोट जातारहा जो सदाका कोटथा सोही रहगया तब रावण बड़ीसेनाकर नगर के निकट गया और नगरमें कोलाहल शब्द सुनकर राजा नलको बर क्षोभकोभासभया मायामई कोट को न देखकर विषादमानभया और जानाकिरावणने नगर लिया तथापि महापुरुषार्थको धरताहुआ युद्धकरने को बाहिर निकसा अनेक सामंतों सहित परस्पर शस्त्रनके समूहसे महा संग्रामप्रवरता जहां सूर्य के किरण भी नजर न आवे क्रूर हैं शब्द जहां बिभीषणने शीघ्र हीलातकी दे नलकुवरका रथ तोड़ डाला और नलकुंवरको पकड़ लिया जैसे रावणने सहस्रकिरणको पकडा था तैसे बिभीषणने नलकूंवरको पकडा रावणकी आयुधशालामें सुदर्शनचक्र उपजा उपरंभाको रावणने एकांतमें कही जो तुम विद्यादानसे मेरे गुरु हो और तुमको यह योग्य नहीं जो अपने पतिको छोड़ दूजा पुरुष सेवो और मुझेभी अन्यायमार्ग सेवना योग्य नहीं इस भांति इसको दिलासा करी नलकूंवरको इसके अर्थ छोडा कैसाहै नलकूंवर शस्त्रों से बिदारा गया है बकतर जिसका नहीं लगाहै शरीरके घाव जिसके रावणने उपरंभासे कही इस भर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तार सहित मन वांछित भोगकर काम सेवनमें पुरुषमें क्या भेदहै और अयोग्य कार्य करने से मेरी अकीर्ति होय और मैं ऐसे करूं तो और लोगभी इस मार्गमें प्रवर्तें पृथ्वी विषे अन्यायकी प्रवृति होय और तू राजा आकाशध्वजकी बेटी तेरी माता मृदकांतासो तू बिमलकुल विषे उपजीशीलके राखने योग्य हैं इस भांति रावणने कहा तब उंपरंभा लज्जायमानभई अपने भरतारमें संतोष किया और नलकुंवरभी स्त्रीका व्यभिचार न जान स्त्री सहित रमताभया और रावणसे बहुत सनमानपाया रावणकी यही रीति है के जोआज्ञा न मानेउसका पराभवकरे और जो आज्ञा माने उसका सनमानकरे और युद्धमें मारा जाय सो मारा जावो और पकड़ा आवे ताको छोड़ दे रावण ने संग्राममें शत्रुवों के जीतने से बड़ा यश पायाबड़ी है लक्ष्मी जिस के महासेना कर संयुक्त वैताड परवत के समीप जाय पड़ा ॥

अथानन्तर तब राजा इन्द्र रावण को समीप आया सुन कर अपने उमराव जे विद्याधर देव कहावें तिन समस्त ही से कहता भया हो बिश्वसी आदि देव हो युद्धकी तैय्यारी करो क्यों बिश्राम कररहे हो राक्षसोंका अधपति आया यह कह कर इन्द्र अपने पिता जो श्री सहश्रार तिनके समीप सलाह करने को गया नमस्कारकर बहुत बिनय संयुक्त पृथिवी पर बैठ बापसे पूछी हे देव बैरी प्रबल अनेक शत्रुवों का जीतनहारा निकट आया है सो क्या कर्तव्य है हे तात मैंने काम बहुत बिरुद्ध किया जो यह होताही प्रलय को न प्राप्त किया कांटा उगताही होठन से टूटे और कठोर परे पीछे चुभे रोग होता ही मेटे तो सुख उपजे और रोग की जड बधे तो कटना कठिनहै तैसे क्षत्री शत्रुकी बृद्धि होने न दे इस के निपात का अनेक बेर उद्यम किया परन्तुआपने बृथा मने किया तब मैं क्षमा करी हे प्रभो मैं राज

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नीति के मार्ग से बिनती करूंहूं इसके मारने में असमर्थ नहीं हूं ऐसे गर्भ और क्रोध के भरे पुत्रके वचन सुनकर सहस्रार ने कहाकिहे पुत्र तूशीघ्रता मतकर अपने जेश्रेठमंत्री हैं तिनसे मन्त्र विचारजेबिना विचारे कार्य करें हैं तिनके कार्य निष्फल होय हैं अर्थकी सिद्धिका निमित्त केवल पुरुषार्थ नहींहै। जैसे कृषिकर्म का है प्रयोजन जिसके ऐसा जो किसान उसके मेघकी वृष्टि विना क्या कार्य सिद्धहोय और जैसे चटशाला में शिष्य पढ़े हैं सबही विद्याको चाहे हैं परन्तु कर्म के वश से किसी को विद्या सिद्धि होयहै किसीको सिद्धि न होय है इसलिये केवलपुरुषार्थसेही सिद्धि न होय अबभी रावणसे मिलापकर जब वह अपना भया तब तू पृथिवीका निःकंट राज्य करेगा और अपनी पुत्री रूपवती नामा महा रूपवती रावणको परणाय इसमें दोष नहीं यह राजावोंकी रीतिही है पवित्र है बुद्धि जिनकी ऐसे पिताने इन्द्र को न्याय रूप वार्त्ता कही परन्तु इन्द्रके मनमें न आई क्षणमात्रमें रोसकर लाल नेत्र होगये क्रोधकर पसेव आय गया महा क्रोधरूप वाणी कहताभया हे तात मारने योग्य वह शत्रु उसे कन्या कैसे दीजे ज्यों२ उमर अधिक होय त्यों त्यों बुद्धि क्षय होयहै इसलिये तुम योग्य बात न कही मैं कहो किससे घाटहूं मेरे कौन वस्तुकी कमी है जिससे तुमने ऐसे कायर वचन कहे, जिस सुमेरुके पायन चांद सूर्य लग रहे सो उतंग सुमेरु कैसे और कौन नवे जो वह रावण पुरुषार्थकर अधिक है तो मैंभी उससे अत्यन्त अधिक हूं और देव उसकेअनुकूल हैं तो यह बात निश्चय तुम कैसे जानी और जो कहोगे उसने बहुत बैरी जीते हैं तो अनेक मृगन को हतनेहारा जो सिंह उसे क्या अष्टापद न हने है पिता शस्त्रन के सम्पात कर उपजा है अग्निका समूह जहां ऐसे संग्राममें प्राण त्यागना भलाहै परन्तु काहू से नम्रीभूत होना बड़े पुरुषों को

For Private and Personal Use Only

योग्य नहीं पृथिवी पर मेरी हास्य होय कि यह इन्द्र रावण से नम्रीभूत हुवा पुत्री देकर मिला सो तुमने यहतो विचाराही नहीं और विद्याधर पनेकर हम और वह बराबरहैं परन्तु बुद्धि पराक्रममें वह मेरी बराबर नहीं जेसे सिंह और स्याल दोऊ बनके निवासी हैं परन्तु पराक्रम में सिंह तुल्य स्याल नहीं ऐसे पिता से गर्वके वचन कहे पिताकी बात मानी नहीं पिता से विदा होयकर आयुधशालामेंगये क्षत्रियोंको हथियार बांटे और वक्तर बांटे और सिंधूराग होनेलगे अनेक प्रकारके वादित्र बाजने लगे और सेना में यह शब्द हुवा कि हाथियोंको सजावो घोड़ोंके पलान कसो रथोंके घोड़े जोड़ो खडगबांधो वक्तर पहरो धनुषबाण लो सिर टोप धरो शीघ्रही खंजर लावो इत्यादिक शब्द देवजातिके विद्याधरोंके होतेभये ।

अथानन्तर योधा कोपको प्राप्तभये ढोल बाजनेलगे हाथी गाजनेलगे घोड़े हींसने लगे और धनुषके टंकोर होनेलगे योधावोंके गुञ्जार होनेलगे और बन्दीजन विरद बखानने लगे जगत् शब्दमई होयगया सर्वदिशा तरवार तथा तोमर जातिके शस्त्रकर तथा पांसिन कर ध्वजावोंकर शस्त्रों कर और धनुषों कर आच्छादित भई और सूर्यभी आच्छादित होयगया राजा इन्द्रकी सेनाके जे विद्याधर देव कहावें थे समस्त रथनूपुरसे निकसे सर्व सामग्री धरे युद्धके अनुरागी दरवाजे आय भेले भये परस्पर कहेहैं रथ आगेकर माता हाथी आया है हे महावत हाथी को इस स्थान से परेकर हो घोड़े के सवार कहां खड़ा होरहा है घोड़े को आगे लेआ इस भांति के वचनालाप होते हुवे शीघ्रही देव बाहिर निकसे गाजते आये तामें शामिल भये और राक्षसों के सन्मुख आय रावण के और इन्द्र के युद्ध होनेलगा देवोंने राक्षसोंकी सेना कछूइक हटाई शस्त्रों के जे समूह तिनके प्रहारकर आकाश आच्छादित होगया तब

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रावणके योधा वज्रवेग हस्त, प्रहस्त, मारीच, उदभव, वज्र, वक्र, सुक्र, घोर, सारन, गगनोज्वल, महा जठर, मध्याभ्रक्रूर इत्यादि विद्याधर बड़े योधा राक्षसवंशी नाना प्रकारके वाहनोंपर चढ़े अनेक आयुधोंके धारक देवोंसे लड़ने लगे तिनके प्रभावसे क्षणमात्र में देवोंकी सेना हटी तब इन्द्र के बड़े योधा कोपकर भरेयुद्ध को सन्मुख भए तिनके नाम मेघमाली, तडसंग, ज्वलिताक्ष, अरि, संचर, पावकसिंदन इत्यादि बड़े २ देवोंने शस्त्रों के समूह चलावतेहुए राक्षसोंको दबाया सो कछुइक राक्षसोंकी सेना हटी ज्यों समुद्र में भँवर भ्रमें त्यों राक्षसलोक अपनी सेनामें भ्रमते भए कछु इक शिथिल होगये तब और बड़े बड़े राक्षस इनको धीर्य बँधावते भए महा सामन्त राक्षसवंशी विद्याधर प्राण तजतेभये परन्तु शस्त्र न डारतेभये राजा महेन्द्रसेन बानरवन्शी राक्षसोंके बड़े मित्र उनका पुत्र प्रसन्नकीर्त्तिने बाणोंके प्रहारकर देवन की सेना हटाई राक्षसोंके बलको बड़ा धीर्य बँधा तब अनेकदेव प्रसन्नकीर्तिपर आए सो प्रसन्नकीर्त्तिने अपने बाणोंसे बिदारे जैसे खोटे तापसियोंका मन मन्मथ (काम) विदारे तब और बड़े २ देव आए कपि राक्षस और देवोंके खडग कनक गदा शक्ति धनुष मुद्गर इनकर अति युद्ध भया तब माल्यवान्का बेटा श्रीमाली रावणका काका महा प्रसिद्धपुरुष अपनी सेनाकी मददके अर्थ देवोंपर आया सूर्यसमानहै कांति जिसकी सो उसके बाणोंकी वर्षा से देवोंकी सेना हटगई जैसे महाग्राह समुद्रको झकोले-तैसे देवनकी सेना श्रीमालीने झकोली तब इंद्रके योधा अपनेबलकी रक्षानिमित्त महाक्रोधकेभरे अनेक आयुधोंके धारक शिखिके सरदंडाग्र कनक प्रवर इत्यादि इन्द्रके भानजे बाण वर्षाकर आकाशको आछादते हुए श्रीमालीपर आए सो श्री मालीने अर्धचन्द्र बाणसे उनके शिररूप कमलोंकर पृथिवी आछादितकरी तब इन्द्रने विचारा कि यह श्रीमा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ली मनुष्यों में महायोधा राक्षसवंशियोंका अधिपति माल्यवानका पुत्रहै उसने बड़े २ देव मारे हैं औरये मेरे भानजे मारे इस राक्षसके सन्मुख मेरे देवोंमें कौन आवे यह अतिवीर्यवान महातेजस्वी देखा न जाय इसलिये मैं युद्धकर इसे हटाऊं नातर यह मेरे अनेकदेवोंको हतेगा ऐसा विचार अपने जे देवजातिके विद्याधर श्रीमाली से कम्पायमान भये थे तिनको धीर्य बंधाय आप युद्ध करनेको उद्यमीभया तब इन्द्र का पुत्र जयंत बापके पायन पर बिनती करनेलगाहे देवेंद्र मेरे होते संते आप युद्धकरो तब हमारा जन्म निरर्थक है हमको आपने बाल अवस्थामें अति लडाए अब तुम्हारे ढिग शत्रुवों को युद्ध कर हटाऊं यहपुत्रका धर्म है आप निराकुल विराजिये जो अंकूर नखसे छेदा जाय उसपर फरसी उठावना क्या, ऐसाकहकरपिता कीआज्ञालेय मानों अपने शरीरकर आकाशको ग्रसेगा ऐसाक्रोधायमान होय युद्धके अर्थ श्रीमालीपर आया श्रीमाली इसको युद्धयोग्यजान खुशी हुआ इसके सन्मुख भये ये दोनोंही कुमार परस्पर युद्ध करने लगे धनुष खैंच बाण चलावतेभए इन दोनों कुवरोंका महा युद्ध भया दोनोंही सेनाके लोक इनका युद्ध देखते भए सो इनका युद्ध देख आश्चर्यको प्राप्त भए श्रीमालीने कनक नामा हथियारकर जयंतका रथ तोड़ा और उसको घायल किया सो मूर्छा खाय पड़ा फिर सचेत होय लड़ने लगा श्रीमालीके भिंडमालकी दीनी रथ तोडा और मूर्छितकिया तब देवोंकी सेनामें आनंद भया और राक्षसोंको शोच भया फिर श्रीमाली सचेत भया जयंतके सन्मुख गया दोनोंमें युद्धभया दोनों सुभट राजकुमार युद्ध करते शोभते भए मानों सिंहके बालकहीहैं बड़ीबेरमें इंद्रके पुत्र जयंतनेमाल्यवानका पुत्र जो श्रीमालीउसके गदाकी छातीमें दीनी सो पृथ्वीपर पड़ा वदनकर रुधिर पड़ने लगा तत्काल जैसे सूर्य अस्त होजाय तैसे मा-

For Private and Personal Use Only

शांत होगया श्रीमालीको मारकर इंद्रका पुत्र जयंत शंखनाद करता भया तब राक्षसोंकी सेना भयभीत भई और पीछेहटी माल्यवानके पुत्र श्रीमालीको प्राण रहित देख और जयंतको उद्यत देख रावण के पुत्र इंद्रजीतने अपनी सेनाको धीर्य बंधाया और कोपकर जयंतके सन्मुख आया सो इंद्रजीतने जयंत का बक्तर तोर डारा और अपने बाणोंकर जयंतको जर्जरा किया तब इंद्र जयंतको घायलदेख छेदागया है बक्तर जिसका रुधिरकर लालहोगयाहै शरीर जिसका ऐसा देखकर आप युद्धको उद्यमी भया आकाश को अपने आयुधोंकर आछादित करता हुवा अपने पुत्रकी मददके अर्थ रावणके पुत्रपर आया तब रावण को सुमतिनामा सारथिनेकहा हे देव यह इंद्रआया ऐरावतहाथीपर चढ़ालोकपालोंकर मंडितहाथमें चक्रधरे मुकटके रत्नोंकी प्रभाकर उद्योत करता हुवा उज्वलछत्रकर सूर्यको आछादित करताहुवा चोभको प्राप्त भया ऐसा जो समुद्र उस समान सेनाकर संयुक्त यह इंद्र महाबलवानहै इंद्रजीत कुमार यासूं युद्ध करने समर्थ नहीं इस लिये आप उद्यमी होकर अहंकार युक्त जो यह शत्रु इसे निराकरण करो तब रावण इंद्र को सन्मुख आया देख आगे मालीका मरण यादकर और हाल श्रीमालीके बध कर महा क्रोध रूप भया और शत्रुओंकर अपने पुत्र को बेढ़ा देख आप दौडा पवन समानहै वेग जिसकाऐसे रथमें चढ़ा दोनोंसेना के योधाओंमें परस्पर विषम युद्ध होता भया सुभटोंके रोमांच होयआए परस्पर शस्त्रों के निपात कर अन्धकार होगया रुधिरकी नदी बहने लगी योधा परस्पर पिछानेन परें केवल ऊंचेशब्द कर पिछाने परें अपनें अपने स्वामी के प्रेरे योधा अति युद्ध करते भये गदा शक्ति बरछी मूसल खडग बाण परिघ जाति के शस्त्र कनक जातिके शस्त्रचक्र कहिये सामान्यचक्र बरछी तथा त्रिशूल पाश मुखन्डी जाति केशस्त्र कुहाडा मुदगर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वज्र पाषाण हल दंड कोण जातिके शस्त्र बांसनके वाण और नाना प्रकार के शस्त्र तिन कर परस्पर अति युद्ध भया परस्पर उनके शस्त्र उनोंने काटेउनके उनोंने काटे अतिबिकराल युद्ध होतेपरस्पर शस्त्रोंके घात से अग्नि प्रज्वलित भई रणमें नाना प्रकारके शब्द होय रहे हैं कहीं मारलो मारलो यह शब्द होय रहे हैं कहीं यक रण २ कहीं किंण २ त्रय २ दम दम छम छम पट पट छस छस द्रड़ २ तथा तट २ चट चट घघ घघ इत्यादि शत्रुवों कर उपजे अनेक प्रकारके जे शब्द उनसे रणमन्डल शब्द रूप होगया हाथियों कर हाथी मारेगये घोड़ोंकर घोड़े मारेगये रथों कर रथ तोडेगये पियादयों कर पियादे हतेगए हाथियों की सूंडकर उछलेजेजलके छांटेकर तिन शस्त्र सम्पातकर उपजीथीजो अग्नि सो शान्त भई परस्पर गज युद्धकर हाथियों के दांत टूटपडे गज मोती बिखरगए योधावोंमें परस्परयह आलाप भए हो शूर बीर शस्त्र चला कहां कायर होय रहा है हो भटसिंह हमारे खडग का प्रहार सम्हार हमारेसे युद्ध करयह मूवा तू अबकहा जाय है और कोई सूं कोई कहे है तू यह युद्धकला कहां सीखा तरवार का भी सम्हारना न जाने है और कोई कहे है तु इस रणसे जा आपनी रक्षाकर तूक्या युद्ध करना जाने तेरा शस्त्र मेरेलगा सो मेरी खाज भी न मिटी तैं बृथा ही धनीकी आजीवका अब तक खाई अब तक तैं युद्ध कहीं देखा नहीं कोई ऐसेकहे हैं तू क्यों कांपे है तू थिरताभज मुष्टि दृढ़ राख तेरे हाथ से खड्ग गिरेगा इत्यादि योधावों में परस्पर आलाप होते भए कैसे हैं योधा महा उत्साह रूपहैं जिनको मरनेका भय नहीं अपने अपने स्वामी के आगे सुभट भले दिखाए किसी की एक भुजा शत्रुकी गदा के प्रहार कर टूट गई तोभी एक ही हाथसे युद्धकररहाहै किसी का सिर टूट पड़ा तो धड़हीलडे है योधावों के बाणों से वक्षस्थल बिदारे गए परन्तु मन न चिगे

For Private and Personal Use Only

सामंतोंके सिर पडे परंतु मान न छोडा शूरवीरोंको युद्ध में मरना प्रिय है टरकर जीवना प्रिय नहीं वे चतुर महा धीरवीर महा पराक्रमी महा सुभट यशकी रक्षा करते हुए शत्रोंके घातक प्राण त्याग करते भए परन्तु कायर होकर अपयश न लिया कोई इक सुभट मरता हुवाभी वैरीके मारवेकी अभिलाषा कर क्रोधका भरा वैरीके ऊपर जाय पडा उसको मार आप मुवा कितनेक हाथसे शस्त्र शत्रुके शस्त्रघात कर निपात भए तब वह सामन्त मुष्टिरूप जो मुद्गर उसके घातकर शत्रुको प्राण रहित करता भया कोई एक महा भट शत्रुओं की भुजाओंसे मित्रवत आलिंगन कर मसल डारता भया कोइयक सामंत पर चक्रके योधाओंकी पंक्तिको हणता हुवा अपने पक्षके योधाओंका मार्गशुद्ध करता भया कोईयक जो रणभूमि में परते सन्ते भी वैरियोंको पीठ न दिखावते भए सूधे पडे रावण और इन्द्रके युद्धमें हाथी घोड़े रथ योधा हजारों पड़े पहिले जो रज उठी थी सो मदोन्मत्त हाथियोंके मद झरनेकर तथा सामन्तोंके रुधिर प्रवाहकर दबगई सामन्तोंके आभूषणोंके रत्नोंकी ज्योतिकर आकाशमें इंद्र धनुष होगया कोई एक योधा बांयें हाथकर अपनी आंतां थांभकर खड्ग काढ़ वैरी ऊपर गया महाभयंकर कोईयक योधा अपनी आन्तही कर गाढी कमर बांधहोंठ डसता शत्रु ऊपरगया कोई एक आयुध रहित होय गया तोभी रुधिरका रंगा रोस विषे तत्पर वैरी के माथेमें हस्तका प्रहार करता भया कोई एक रणधीर महाशूरवीर युद्ध का अभिलाषी पाशकर वैरीको बांध कर छोड देता भया रणकर उपजाहै हर्ष जिस के कोई एक न्याय संग्राम में तत्पर वैरी को आयुधरहित देखकर आपभी आयुध डार खडे होय रहे कोई एक अन्तसमय सन्यास धार नमोकार मन्त्रका उच्चारण कर स्वर्ग प्राप्त भए कोई एक योधा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आशी विष सर्प समान भयंकार पड़ता २ प्रतिपक्षी को मारकर मरा कोई एक अर्धसिर छेदा गया उसे बामें हाथमें दाव महा पराक्रमी दौड़कर शत्रूका सिर फाड़ा कोई एक सुभट पृथिवीकी आगल समान जो अपनी भुजा तिनहीकर युद्ध करतेभए कोई एक परम क्षत्रिय धर्मज्ञ शत्रुको मूर्छितभया देख आप पवन झोल सचेत करतेभये इसभांति कायरोंको भयका उपजावन हारा और योधावों को आनन्द का उपजावनहारा महासंग्राम प्रवरता अनेक गज अनेक तुरङ्ग अनेक योधा शस्त्रोंकर हते गए अनेक रथ चूर्ण होगये अनेक हाथियों की सूंड कटगई घोड़ावों के पांव टूटगए पूछ कटगई पियादे काम आयगये रुधिरके प्रवाह कर सर्व दिशा आरक्त होगई एता रण भया सो रावण किंचित्मात्र भी न गिना रण विषे है कौतूहल जिसके ऐसे सुभट भावका धारक रावण सुमति नाम सारथी को कहताभया हे सारथी इस इन्द्रके सन्मुख रथ चलाय और सामान्य मनुष्यों के मारणे कर क्या ये तृण समान सामान्य मनुष्य तिनपर मेरा शस्त्र न चले मेरा मन महा योधावों के ग्रहण में तत्पर है यह क्षुद्र मनुष्य अभिमानसे इन्द्र कहावे है इसे आज मारूं अथवा पकडूं यह विडम्बनाका करनहारा पाखण्ड कररहा है सो तत्काल दूरकरूं देखो इसकी ढीठता आपको इन्द्र कहावेहैं और कल्पनाकर लोकपाल थापे हैं और इन मनुष्योंने विद्याधरों की देव संज्ञा धरी है देखो अल्पसी विभूति पाय मूढ़मति भया है लोक हास्य का भय नहीं जैसे नट सांग धरे तैसे सांग धरा है दुर्बुद्धि आपको भूलगया पिताके वीर्य माताके रुधिरकर मांस हाड़मई शरीर माता के उदर से उपजा वृथा आपको देवेन्द्र माने है विद्याके बलकर इसने यह कल्पना करी है जैसे काग आपको गरुड़ कहावेहै तैसे यह इन्द्र कहावेहै इसभांति जब रावणने कहा तब सुमति सारथी

ने रावणका रथ इन्द्र के सन्मुख किया रावणको देख इन्द्रके सब सुभट भागे रावणसे युद्धकरने को कोई समर्थ नहीं रावण सर्वको दयालु दृष्टिकर कीठसमान देखे रावणके सन्मुख यह इन्द्रही टिका और सब कृत्रिम देव इसका छत्र देख भाज गये जैसे चन्द्रमाके उदयसे अन्धकार जातारहे कैसाहै रावण वैरियोंकर झेला न जाय जैसे जलका प्रवाह ढाहोकर थांभा न जाय और जैसे क्रोध सहित चित्तका वेग मिथ्या दृष्टि तापसियोंकर थांभा न जाय तैसे सामन्तोंकर रावण थांभा न जायइन्द्रभी कैलाशपर्वत समान हाथी पर चढ़ा धनुषको धरे तरकश से तीर काढ़ता रावण के सन्मुख आया कानतक धनुषकोखैंच रावण पर बाणचलाये जैसे पहाड़पर मेघ मोटी धारा वर्षे तेसे रावणपर इन्द्रने बाणोंकीवर्षाकरी रावणने इन्द्रकेबाण आवते २ काट डारे और अपने बाणोंकर शर मण्डप किया सूर्यकी किरणबाणोंसे दृष्टि न आवे ऐसायुद्ध देख नारद आकाशमें नृत्य करताभया कलहदेख उपजे है हर्ष जिसको अब इन्द्र ने जाना कि यह रावण सामान्य शस्त्रकर असाध्यहै तब इन्द्रने अग्निबाण रावणपर चलाया उससे रावणकी सेनाविषेआकुलता उपजी जैसे बांसोंका बन जले और इसकी तड़तड़ात ध्वनिहोय अग्निकी ज्वाला उठे तैसे अग्निबाण प्रज्वलित आया तब रावणने अपनी सेनाको व्याकुल देखकर तत्काल जलबाण चलाया सो मेघमाला उठी पर्वत समान जलकी मोटी धारा बरसनेलगी क्षणमात्रमें अग्नि बाण बुझगया तब इन्द्रने रावणपर तामस बाण चलाया उसकर दशोंदिशा में अन्धकार होगया रावण के कटक विषे किसीको कुछभी न सूझे तब रावणने प्रभास्त्र कहियें प्रकाश बाणचलाया उसकर क्षणमात्रमें सकल अंधकार विलय होगया जैसे जिन शासनके प्रभावकर मिथ्यात्वका मार्ग विलयजाय फिर रावण ने कोपकर इन्द्रपै नागबाण चलाया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो महा काले नाग चलाये मानो भयंकरहे जिह्वा जिनकी इन्द्रके और सकल सेनाके लिपटगये तिन ससर्पोंकर वेढ़ा इन्द्र अति व्याकुल भया जैसे भवसागरमें जीव कर्मजालकर बेढ़ा व्याकुल होयहै तब इंद्र ने गरुड़वाण चितारा सो सुवर्ण समान पीत पंखों के समूह कर आकाश पीत होगया और पंखों की पवन कर रावणका कटक हालनेलगा मानो हिंडोलेही में भूले हैं गरुडके प्रभावकर नाग ऐसे विलाय गए जैसे शुक्लध्यान के प्रभावकर कर्मों के बन्ध विलय हो जांय, तब इन्द्र नागबाण से छूटकर जेठ के सूर्य समान अति दारुण तप तपताभया तब रावणनें त्रैलोक्य मण्डन हाथीको इन्द्र के ऐरावत हाथी पर प्रेरा कैसा है त्रैलोक्य मण्डन सदा मद झरे है और बैरियों का जीतनहारा है इन्द्रने भी ऐरावतको त्रैलोक्य मण्डनपर धकाया दोनों गज महा गर्वके भरे लड़ने लगे झरे हैं मद जिनके क्रूरहैं नेत्र जिनके हाले हैं कर्ण जिनके देदीप्यमान हैं विजुरी समान स्वर्ण की सांकल जिनके हाथी।शरदके मेघ समान अति गाजते परस्पर अति भयङ्कर जो दांत तिनके घातोंकर पृथिवीको शब्दायमान करते चपलहै शरीर जिनका परस्पर सूंडों से अद्भुत संग्राम करते भए ॥

अथानन्तर तब रावणने उछलकर इन्द्र के हाथी के मस्तकपर पग धर अति शीघ्रताकर गज सारथी को पाद प्रहार ते डारा और इन्द्रको वस्त्रसे बांधा और बहुत दिलासा देकर पकड़ अपने गजपर लेआया और रावणके पुत्र इन्द्रजीत ने इन्द्रका पुत्र जयन्त पकड़ा अपने सुभटों को सौंपा और आप इन्द्र के सुभटोंपर दौड़ा तब रावण ने मने किया हे पुत्र अब रणसे निवृत्त होवो क्योंकि समस्त विजियार्ध के जे निवासी तिनका सिर पकड़ लिया है अब समस्त अपने अपने अस्थानक जावो सुखसे जीवोशालिसे

For Private and Personal Use Only

सांवल लिया तब पराक्रका क्या काम जब रावणने ऐसा कहा तब इन्द्रजीत पिताकी आज्ञा से पीछे बाहुडा और सर्व देवों की सेना शरदके मेघसमान भागगई जैसे पवनकर शरदके मेघ विलयजाय रावण की सेना में जीतके वादित्र बाजे ढोल नगारे शंख झांझ इत्यादि अनेक वादित्रों का शब्द भया इंद्र को पकडा देख रावणका सेना अति हर्षितभई रावण लंका में चलनेको उद्यमी भया सूर्यके रथ समान रथ ध्वजावों से शोभित और चंचल तुरङ्ग नृत्य करते हुए और मद झरते हुए नाद करते हाथी तिन पर भ्रमर गुंजार करे हैं इत्यादि महासेना से मंडित राक्षसों का अधिपति रावण लंका के समीप आया तब समस्त बन्धु जन और नगरके रक्षक तथा पुरजन सबही दर्शनके अभिलाषी भेंट ले ले सन्मुख आए और रावण की पूजा करते भए, जे बडे हैं तिनकी रावण ने पूजा करी रावण को सकल नमस्कार करते भए और बड़ों को रावण नमस्कार करता भया कैयकों को कृपा दृष्टि से कैयकों को मंदहास्य से कैयकों को वचनों से रावण प्रसन्न करता भया बुद्धिके बल से जाना है सबका अभिप्राय जिसनेलंका तो सदाही मनोहर है परन्तु रावण बड़ी बिजय कर आया इसलिये अधिक समारीहै ऊंचे रत्नों के तोरण निरमापे मंद मंद पवन कर अनेक वर्ण की ध्वजा फरहरे हैं कुंकुमादि सुगंध मनोज्ञ जल कर सींचा है समस्त पृथिवीतल जहां और सब ऋतु के फूलों से पूरित है राजमार्ग जहां और पंचवर्ण रत्नोंके चूर्ण कर रचे हैं मंगलके मंडन जहां और दरवाजयों पर थांभे हैं पूर्ण कलश कमलोंके पत्र और पल्लब सेढ़के, संपूर्ण नगरी वस्त्राभरण कर शोभित है जैसे देवों सें मंडित इंद्र अमरावती में आवे तैसे विद्याधरों कर वेढा रावण लंका में आया पुष्पक विमान में बैठा देदीप्यमानहै मुकट जिसको महारत्नोंके बाजूबंदपहिरे निर्मल प्रभाकर युक्त मोतियों

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का हार वक्षस्थल पर धारे अनेक पुष्पों के समूह कर विराजित मानों वसंतहीकारूप है सो उसको हर्ष से पूर्ण नगरके नर नारी देखते देखते तृप्त न हुवे असीस देय हैं नाना प्रकार के वादित्रों के शब्द होरहे हैं जय जयकार शब्दहोयहैं आनंद से नृत्यकारिणीनृत्य करेहैं इत्यादिहर्षसंयुक्त रावणने लंकामें प्रवेशकिया, महा उत्साह की भरी लंका उसे देख रावण प्रसन्न भए बंधुजन सेवकजन सबही आनन्द को प्राप्त भए रावण राजमहल में आए देखो भव्यजीवहोकि रथनूपुरकेधनी राजा इन्द्रनेपूर्व पुण्यकेउदयसेसमस्तवैरियोंके समूह जीतकर सर्व सामग्री पूर्ण तिनको तृणवत् जान सर्व को जीतकर दोनों श्रेणी का राज बहुत वर्ष किया और इन्द्र के तुल्य विभूति को प्राप्त भया और जब पुण्य क्षीण भया तब सकल विभूति विलय होगई रावण उसको पकड़कर लंकामें लेआया इसलिये हे श्रेणिक मनुष्य के चपल सुख को धिक्कार होवे यद्यपि स्वर्ग-लोकके देवों का विनाशीक सुख है तथापि आयुपर्यन्त और रूप नहोय और जब दूसरीपर्याय पावे तब और रूप होय और मनुष्य तो एकही पर्याय में अनेक दशाभोगे इसलिये मनुष्य होय जे माया का गर्व करे हैं वे मूर्ख हैं और यह रावण पूर्व पुण्य से प्रबल वैरियों को जीत कर अति वृद्धिको प्राप्त भया। यह जानकर भव्यजीव सकल पाप कर्म का त्याग कर केवल शुभ कर्म ही को अंगीकार करें ॥ इति द्वादश पर्व सम्पूर्णम् ॥

अथानन्तर इन्द्र के सामन्त धनी के दुःख से व्याकुल भए तब इन्द्र का पिता सहस्रार जो उदासीन श्रावक है इससे बीनती कर इन्द्र के छुड़ावने के अर्थ सहस्रार को लेकर लंका में रावण के समीप जाय द्वारपाल से बीनती कर इन्द्रके सकल वृतान्त कहकर रावण के ढिंगगए, रावण ने सहस्रार को उदासीन श्रावक जान कर बहुत विनयकिया, इनको आसन दिया आप सिंहासन से उतर बैठ, सहस्रार रावण को

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवेकी जान कहता भया हे दशानन ! तुम जगजीत हो सो इन्द्रको भी जीता तुमहारी भुजावों की सामर्थ सबने देखा जे बडे राजा हैं वेगर्ववंतोंका गर्व दूरकर फिर कृपा करें, इस लिये अब इन्द्रको छोड़ो यह सहस्रारने कही और जे चारों लोकपाल तिन के मुह से भी यही शब्द निकसा मानो सहस्रार का प्रतिशब्द ही कहते भए तब रावण सहस्रार को तो हाथ जोड़ यही कही जो आप कहोगे सोई होगा और लोकपालों से हंस कर क्रीड़ा रूप कही तुम चारों लोकपाल नगरी में बुहारी देवो कमलों का मकरन्द और तृण कंटक रहित पुरी करो और इंद्रसुगंध जलकर पृथ्वीको सींचे और पांच वर्णके सुगंध मनोहर जो पुष्प तिनसे नगरीको शोभित करो यह बात जब रावणने कही तब लोकपाल तो लज्जावानहोय नीचे होगए और सहस्रार अमृतरूप बचनबोले हे धीर ! तुम जिसको जो आज्ञाकरो सोही वह करे तुम्हारीआज्ञा सर्वोपरि है यदितुम सारिखे गुरुजन पृथ्वीके शिक्षादायक नहीं तो पृथ्वीके लोक अन्यायमार्गमें प्रवरतें यह बचन सुनकर रावणअति प्रसन्नभए और कही हे पूज्य तुम हमारे तात तुल्यहो और इंद्र मेरा चौथा भाई इस को पायकर मैं सकल पृथ्वी कंटकरहित करूंगा इसको इंद्रपद वैसाहीहै और यह लोकपाल ज्योंके त्यों हीहैं और दोनों श्रेणीके राज्यसे और अधिक चाहोसो लेहु मोमें और इसमें कछु भेदनहीं और आपबड़े हो गुरुजनहो जैसे इंद्रको शिक्षादेवो तैसे मुझे देवो तुम्हारी शिक्षा अलंकाररूपहै और आप रथनूपुरमें विराजो अथवा यहां बिराजो दोऊ आपहीकी भूमिहैं ऐसे प्रिय बचनोंसे सहस्रारका मन बहुत संतोषा तब सहस्रार कहनेलगा हे भव्य तुम सारिखे सज्जन पुरुषोंकी उत्पत्ति सर्वलोकको आनंद कारणहै हे चिरंजीव तुम्हारे शूरवीरपनेका आभूषण यह उत्तम विनय समस्त पृथ्वीमें प्रशंसाको प्राप्त भयाहै तुम्हारे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देखनेसे हमारे नेत्र सफल भए धन्य तुम्हारे माता पिता जिनसे तुम्हारी उत्पति भई कुन्दके पुष्प समान उज्वल तुम्हारी कीर्ति तुम समर्थ और क्षमावान दातार और निगर्व ज्ञानी और गुणप्रिय तुम जिन शासनके अधिकारीहो तुमने हमको जो कही यह तुम्हारा घरहै और जैसे इंद्र पुत्र तैसे मैं सो तुम इन बातोंके लायकहो तुम्हारे मुखसे ऐसेही बचन च्वैं तुम महाबाहु दिग्गजकी सूंड समान भुजा तुम्हारी तुम सारिखे पुरुष इस संसारमें विरलेहैं परंतु जन्मभूमि माता समानहै सो छाडी न जाय जन्मभूमि का वियोग चित्तको आकुल करैहै तुम सर्व पृथ्वीके पतिहो परंतु तुमकोभी लंका प्रियहै मित्र बांधव और समस्त प्रजा हमारे देखनेके अभिलाषी आवनेका मार्ग देखेहै इस लिये हम रथनूपुरही जांयगे और चित्त सदा तुम्हारे समीपही है हे दैत्यनके प्यारे तुम बहुतकाल पृथ्वीकी निर्विघ्नरक्षा करो तब रावणने उस ही समय इन्द्रको बुलाया और सहस्रारके लार किया और आप रावण कितनीक दूर तक सहस्रारको पहुंचावने गये और बहुत विनयकर सीख दीनी सहस्रार इन्द्रको लेकर लोकपालों सहित विजयार्धगिरि में आए सर्व राजक्योंका त्योंही है लोकपाल आयकर अपने २ स्थानक बैठे परन्तु मानभंगसे असाता को प्राप्त भए ज्यों २ विजयार्धके लोक इन्द्रके लोकपालोंको और देवोंको देखें त्यों २ यह लज्जा कर नीचे होजांय और इंद्रकेभी न तो रथनुपुरमें प्रीति न राणियोंमें प्रीति न उपवनादिमें प्रीति न लोक पालोंमें प्रीति न कमलोंके मकरंदसे पीत होरहाहै जल जिनका ऐसे जे मनोहर सरोवर तिनमें प्रीति और न किसीकी क्रीड़ा विषे प्रीति यहांतकके अपने शरीरसेभी प्रीति नहीं लज्जाकर पूर्णहै चित्त जिस का सो उसको उदासजान लोक अनेक विधिकर प्रसन्न किया चाहैं और कथाके प्रसंगसे वह बात भुलाया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चाहें परंतु यह भूलें नहीं सर्व लीला बिलास तजे अपने राजमहलके मध्य गंधमादन पर्वतके शिखर समान ऊंचा जो जिनमन्दिर उसके एक थंभके माथेमें रहे कांति रहित होगयाहै शरीर जिसका पंडितों कर मंडित यह बिचार करे है कि धिक्कारहै इस विद्याधर पदके ऐश्वर्यकोजो एक क्षणमात्रमें बिलाय गया जैसे शरद ऋतुके मेघोंके समूह अत्यन्त ऊंचे होवे परन्तु क्षणमात्रमें विलय जाय तैसे वेशस्त्र वे हाथीवे घोड़ा वे तुरंग समस्त तृण समान होगए पूर्व अनेक बेर अद्भुत कार्य के करणहारे अथवा कर्मों की यह विचित्रताहै कौन पुरुष अन्यथा करनेके समर्थ है इस लिये जगतमें कर्म प्रबलहें मैं पूर्व नाना विधि भोग सामग्रीयोंके निपजावनहारे कर्म उपार्जेथे सो अपनाफल देकर खिरि गए जिससे यह दशा वरते है रण संग्राममें शूरवीर सामंतों का मरण होय तो भला जिसकर पृथ्वी में अपयश न होय में जन्म से लेकर शत्रुओंके सिरपर चरण देकर जिया सो मैं इंद्र शत्रु का अनुचर होयकर कैसे राज्य लक्ष्मी भोगूं इस लिए अब संसारके इन्द्रियजनित सुखोंकी अभिलाषा तजकर मोक्षपद की प्राप्ति के कारण जे मुनिव्रत तिनको अंगीकार करूं रावण शत्रुका भेष धर मेरा महामित्र आया जिसने मुझे प्रतिबोध दिया मैं असार सुख के आस्वादों में आसक्त था ऐसा बिचार इन्द्र ने किया उसही समय निरवाण संगम नामा चरण मुनि बिहार करतेहुवे आकाश मार्गसे जातेथे सो चैत्यालयोंके प्रभावकर उनका आगे गमन न हो सका तब वह चैत्यालय जान नीचे उतरे भगवानके प्रतिबिंबका दर्शन किया मुनिचारज्ञान के धारकथे सो उनको राजाइंद्रने उठकर नमस्कारकिया मुनिकेसमीपजाबैठा बहुत देरतक अपनी निन्दा करी सर्व संसारका वृतांत जाननेहारे मुनिने परम अमृतरूप वचनोंसे इंद्रको समाधान किया कि हे इन्द्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैसे अरहटकी घड़ी भरी रीती होयहै और रीती भरी होयहै। तैसे यह संसारकी माया क्षणभंगुर है इस के और प्रकार होनेका आश्चर्य नहीं मुनिकेमुखसे धर्मोपदेश सुन इंद्रने अपने पूर्वभवपूछे तब मुनिकहेहैं कैसे हैं मुनि अनेक गुणोंके समूहसे शोभायमानहैं हे राजा अनादिकालका यह जीव चतुरगति में भ्रमण करेहैं जो अनन्तभव धरे सो केवलज्ञान गम्यहै कैएक भव कहिये हैं सो सुनों शिखापद नामा नगरमें एक मानुषी महा दलिद्रनी जिसका नाम कुलवन्ती सो चीपड़ी अमनोग्य नेत्र नाक चिपटी अनेक व्याधिकी भरी पापकर्म के उदयसे लोगों की जूठखायकर जीवे खोटे वस्त्राभागिनी फाटा अङ्ग महा रूक्ष खोटे केश जहां जाय वहां लोक अनादरें हैं जिसको कहीं सुख नहीं अन्तकाल में शुभमति होय एक महूर्त का अनशन लिया प्राण त्याग कर किंपुरुष देव कै शील धरा नामा किन्नरी भई वहां से चय कर रत्न नगर में गोमुखनामा कलुंबी उसके धरिनी नामा स्त्री उसके सहस्रभाग नामा पुत्र भया सो परम सम्यक्त को पाय कर श्रावक के व्रत आदरे शुक्रनामां नवमा स्वर्ग वहां उत्तम देव भया वहां से चयकर महा विदेह क्षेत्रके रत्न संचयनगर में मणिनामा मन्त्री उसके गुणावली नामा स्त्री उसके सा-मन्तवर्ध नामा पुत्र भया सो पिता के साथ वैराग्य अंगीकार किया अति तीव्र तप किये तत्वार्थ में लगा है चित्त जिसका निर्मल सम्यक्त का धारी कषाय रहित बाईस परीषह सहकर शरीर त्याग नव-ग्रीवक गया अहमिन्द्रके बहुतकाल सुख भोगकर राजा सहस्रार विद्याधरके राणी हृदया सुन्दरी उनके तू इन्द्रनामा पुत्रभया रथनूपुर नगरमें जन्मलिया पूर्वले अभ्यासकर इन्द्रके सुखविषे मन आशक्तभया सो तू विद्याधरोंका अधिपति इन्द्र कहायो अब तू वृथा मनमें खेद करे है जो में विद्यामें अधिकथा सोशत्रु-

For Private and Personal Use Only

वोसे जोतागया सो ह इन्द्र कोई निरबुद्धी कद बोयकर वृथा शालिकी प्रार्थना करे है ये प्राणी जैसे कर्म करें हैं वैसे फलभोगे हैं तैंने भोग का साधन शुभकर्म पूर्व कियाथा सो क्षीणभया कारण विना कार्य की उत्पत्ति न होय इस बातका आश्चर्य क्या तूने इसी जन्म में अशुभ कर्म किये तिनसे यह अपमान रूप फल पाया और रावणतो निमित्तमात्र है तैंने जा आज्ञान चेष्टाकरी सो क्यानहीं जाने है तू ऐश्वर्य मदकर भ्रष्टभया बहुत दिनभये इसलिये तुझे याद नहीं आवे है अब एकाग्रचित्त कर सुन अरिंजयपुर में वह्निवेग नामा विद्याधर राजा उसके राणी वेगवती पुत्री अहिल्या उसका स्वयम्बर मण्डप रचाथा वहां दोनों श्रेणी के विद्याधर अति अभिलाषी होय विभवसे शोभायमान गए और तूभी बड़ी सम्पदा सहित गया और एक चन्द्रावर्तनामा नगरका धनी राजा आनन्दमाल सो भी वहां आया अहिल्याने सबको तजकर उसके कण्ठमें बरमाला डाली कैसीहै अहिल्या सुन्दरहै सर्व अङ्ग जिसका सो आनंदमाल अहिल्याको परणकर जैसे इन्द्र इन्द्राणी सहित स्वर्गलोकमें सुख भोगे तैसे मन वांछित भोगभोगताभया सो जिस दिनसे वह अहिल्या परणा उसदिन से तेरे इससे ईर्षा बढ़ी तैंने उसको अपना बड़ा बैरी जाना कैएक दिन वह घरमें रहा फिर उसको ऐसी बुद्धि उपजी कि यह देह विनाशीकहै इससे मुझे कछू प्रयोजन नहीं अब मैं तपकरूं जिसकर संसारका दुःख दूर होय ये इन्द्रियों के भोग महाठग तिन विषे सुखकी आशा कहां ऐसा मनमें विचारकर वह ज्ञानी अन्तरआत्मा सर्व परिग्रह को तजकर परम तप आचरता भया एकदिन हंसावली नदीके तीर कायोत्सर्गधर तिष्ठेथा सो तैंने देखा ताके देखनेमात्रसेही इन्धनकरबढी है क्रोधरूप अग्नि जिसके सो तैं मूर्खने गर्वकर हांसीकरी अहो आनन्दमाल तू कामभोगमें अति आसक्त

था अहिल्याका रमण अब कहा विरक्त होय पहाड़ सारिखा निश्चल तिष्ठा है तत्वार्थ के चिंतवनमें लगा है अत्यन्त स्थिर मन जिसका इस भांति परम मुनिकी तेंने अवज्ञा करी सो वहतो आत्मसुखविषे मग्न तेरी बात कुछ हृदयमें न धरी उनके निकट उनका भाई कल्याणनामा मुनि तिष्ठेथा उसने तुझे कही यह महामुनि निरपराध तैंने इनकी हांसीकरी सो तेराभी पराभव होगा तब तेरी स्त्री सर्वश्री सम्यग्दृष्टि साधवोंकी पूजा करनहारी उसने नमस्कारकर कल्याण स्वामीको उपशांतकिया जो वह शांत न करती तो तू तत्काल साधुवोंकी कोपाग्नि से भस्म हो जाता तीन लोक में तप समान कोई बलवान् नहीं जैसी साधुवोंकी शक्ति है तैसी इन्द्रादिक देवोंकी शक्तिभी नहीं जो पुरुष साधु लोगोंका निरादर करे हैं वे इस भवमें अत्यन्त दुखपाय नरक निगोदमें पड़े हैं मनकर भी साधुवों का अपमान न करिये जे मुनि जनका अपमान करे हैं सो इस भव और परभव में दुःखी होय हैं जो क्रूरचित्त मुनियों को मारें अथवा पीड़ा करें हैं सो अनन्तकाल दुःख भोगे हैं मुनि अवज्ञा समान और पाप नहीं मन वचन कायकर यह प्राणी जैसे कर्म करे हैं तैसाही फल पावे हैं इस भांति पुण्य पाप कर्मों के फल भले बुरे जीव भोगे हैं ऐसा जानकर धर्ममें बुद्धिकर अपने आत्माको संसार के दुःख से निवृत करो, महा मुनि के मुखसे राजा इन्द्र पूर्व भव सुन आश्चर्यको प्राप्तभया नमस्कारकर मुनि से कहताभया हे भगवान ! तुम्हारे प्रसादसे मैंने उत्तम ज्ञान पाया अब सकल पाप क्षणमात्रमें विलयगये साधुवों के संगसे जगत् में कुछ दुर्लभ नहीं तिनके प्रसादकर अनन्त जन्म विषे न पाया जो आत्म ज्ञान सो पाइये है यह कह कर मुनिको वारम्वार वन्दना करी मुनि आकाशमार्ग विहारकर गये इन्द्र गृहस्थाश्रम से परम वैराग्य

को प्राप्त भया जलके बुद्बुदा समान शरीरको असार जान धम में निश्चय बुद्धि कर अपनी अज्ञान चेष्टाको निंदताहुवा वह महापुरुष अपनी राज विभूति पुत्रको देकर अपने बहुत पुत्रों सहित और लोकपालों सहित तथा अनेक राजावों साहत सर्व कर्मका नाश करनहारी जिनेश्वरी दीक्षा आदरी सर्व परिग्रह का त्याग किया निरमलहै चित्त जिसका प्रथम अवस्था में जैसा शरीर भोगों कर लगाया था तैसाही तपके समूहमें लगाया ऐसा तप औरों से न बने बडे पुरुषों की बड़ी शक्ति है जैसी भोगों में प्रवरते तैसे विशुद्धभाव विषे प्रवर्ते हैं राजा इन्द्र बहुतकाल तपकर शुक्लध्यानके प्रताप से कर्मोंका क्षय करनिर्वाण पधारे गौतम स्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं देखो बड़े पुरुषों के चरित्र आश्चर्यकारी हैं प्रबल पराक्रमके धारक बहुत काल भोगकर वैराग्य लेय अविनाशी सुखको भोगावेहैं इसम कुछ आश्चर्य नहीं समस्त परिग्रहका त्यागकर क्षणमात्रमें ध्यानके बलसे मोटे पापोंका क्षयकरे हैं जैसे बहुत काल से ईंधन की राशि संचय करी सो क्षणमात्र में अग्निके संयोगसे भस्म होयहै ऐसा जान कर हे प्राणी आत्मकल्याण का यत्न करो अन्तःकरण विशुद्ध करो मृत्युके दिन का कुछ निश्चय नहीं ज्ञान रूप सूर्य के प्रताप से अज्ञान तिमिर को हरो। इति तेरहवां पर्व सम्पूर्णम् ॥

अथानन्तररावण विभव और देवेन्द्र सामान भोगोंकर मूढ़है मन जिसका मनवांछित अनेक लीला विलास करता भया यह राजा इन्द्रका पकड़नहारा एकदिन सुमेरु पर्वतके चैत्यालयोंकी वन्दनाकर पीछे आवता था सप्तक्षेत्र षट् कुलाचल तिनकी शोभा देखता नाना प्रकारके वृक्ष नदी सरोवर स्फटिकमणि हूं से निर्मल महा मनोहर अवलोकन करता हुवा सूर्य के भवन समान विमाम में विराजमान महा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभूति से संयुक्त लंका विषे आवनेका है मन जिसका तत्काल मनोहर उतंगनाद सुनताभया तब महा हर्षवान होय मारीच मंत्रीको पूछता भया हे मारीच ! यह सुंदर महानाद किसकाहै और दशोंदिशा काहेसे लाल होरहीहैं तब मारीचने कही हे देव यह केवलीकी गंधकुटीहै और अनेक देव दर्शन को आवेहैं तिनके मनोहर शब्द होय रहेहैं और देवोंके मुकटादि किरणोंकर यह दशोंदिशा रंगरूप होय रहीहैं इस स्वर्णके पर्वतविषे अनंतवीर्य मुनि तिनकोकेवल ज्ञानउपजाहै ये वचन सुनकर रावण बहुत आनंदको प्राप्त भया सम्यक दर्शनकर संयुक्तहै और इंद्रका वश करनहाराहै महाकांतिका धारी आकाशसे केवलीकी वंदना के अर्थ पृथ्वी पर उतरा वंदनाकर स्तुति करी इन्द्रादिक अनेक देव केवली के समीप बैठेथे रावणभी हाथ जोड़ नमस्कारकर अनेक विद्याधरों सहित उचित स्थानकमें तिष्ठा चतुरनिकाय के देव तथा तिर्यंच और अनेक मनुष्य केवलीके समीप तिष्ठेथे उस समय किसी शिष्य ने पूछा हेदेव हे प्रभो अनेकप्राणी धर्म और अधर्मके स्वरूप जाननेकी तथा तिनके फल जाननेकी अभिलाषारखे हे और मुक्तिके कारण जाननाचाहेंहैं सो तुम सबही कहने योग्यहो सो कृपाकर कहो तब भगवानकेवल ज्ञानी अनन्तवीर्यमर्यादि रूप अक्षर जिनमें विस्तीर्ण अर्थ अतिनिपुण शुद्ध संदेह रहितसर्वके हितकारीप्रिय वचन कहतेभए अहो भव्य जीवहो यह जीव चेतनालक्षण अनादिकालका निरंतर अष्ट कर्मोंकर बंधा आछादितहै आत्मशक्ति जिसकी सो चतुरगतिमें भ्रमणकरेहै चौरासी लक्ष योनियोंमें नानाप्रकार इंद्रियोंकर उपजी जो वेदना उसे भोगताहुवा सदाकाल दुःखीहोय रागीद्वेषी मोही हुआ कर्मोंके तीव्रमंद मध्य विपाकसे कुम्हारके चक्रवत पायाहै चतुरगतिका भ्रमण जिसने ज्ञानावर्णी

For Private and Personal Use Only

कर्मकर आच्छादितहै ज्ञान जिसका अतिदुर्लभ मनुष्यदेह पाई तोभी आत्महितको नहींजानेहै रसना का लोलुपीस्पर्श इंद्रीका विषयी पांचही इंद्रीयोंके बशभया अति निन्द्य पापकर्मकर नरकविषे पड़े हैं जैसे पाषाण पानीमें डूबेहै। कैसाहै नरक अनेक प्रकारकर उपजे जे महा दुख तिनका सागरहै महा दुखकारीहै जे पापी क्रूर कर्माधनके लोभी मातापिता भाईपुत्र स्त्रीमित्र इत्यादि सुजन तिनको हनेहैं जगत में निन्द्यहै चित्त जिनका वे नरकमें पड़ेहैंतथा जे गर्भ पातकरेहैं तथा बालक हंल्याकरेहैं वृद्धको हणे हैं अवला[स्त्रियों]की हत्या करे हैं मनुष्योंको पकड़े हैं रोके हैं बांधे हैं मारे हैं पत्ती तथा मृगनको हने हैं जे कुबुद्धि स्थलचर जलचर जीवोंकी हिंसा करेहैंधर्म रहितहै परिणाम जिनका वे महा वेदना रूप जो नरक उस विषे पड़ेहैं और जे पापी शहदके अर्थ मधु माखीयोंका छाता तोड़ेहैंतथा मास अहारी मद्यपानी शहदके भक्षण करनेहारे बनके भस्म करनेहारे तथा ग्रामोंके बालनहारे बन्दीके करणहारे गायनके घेरनहारे पशुघाती महा हिंसक भील अहेड़ी बागरा पारधी इत्यादि पापी महा नरकमें पड़े हैं और जे मिथ्यावादी परदोषके भाषणहारे अभक्षके भक्षण करनेहारे परधनके हरनहारे परदारा के रमनेहारे वेश्यायोंके मित्रहैं वे घोरनरकमें पडे हैं जहां किसीकी शरण नहीं जे पापी मांसका भक्षण करें हैं वे नरकमें प्राप्त होयहैं वहां तिनहीका शरीर काट २ तिनके मुखविषे दीजियेहैं और ताते लोहे के गोले तिनके मुखमें दीजिये हैं और मद्यपान करनेवालोंके मुखमें सीसा गाल २ डारिएहै और परदारा लंपटियोंको तातीलोहेकी पूतलियोंसे आलिंगन करावेहैं जे महापरिग्रहके धारी महाआरम्भी क्रूर है चित्त जिनका प्रचंड कर्मके करनहारेहैं वे सागरां पर्यन्त नरकमें बसेहैं साधुओंके द्वेषी पापी मिथ्यादृष्टि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुटिल कुबुद्धिरोद्रध्यानी मरकर नरकमें प्राप्त होयहैं जहां विक्रीयामई कुहाडे तथा खडग चक्र करोंत और नानाप्रकारके विक्रयामई शस्त्र तिनसे खण्ड २ कीजिएहै फिर शरीर मिल जायहै आयु पर्यन्त दुख भोगेहैं तीक्ष्ण हैं चोंच जिनकी ऐसे मायामई पक्षीते तन विदारें हैं तथा मायामई सिंह व्याघ्र स्वानसर्प अष्टापद ल्याली वीछू तथा और प्राणियोसे नानाप्रकारके दुख पावे हैं नरकके दुःखको कहां लग बरणन करिए और जे मायाचारी प्रपंची विषियाभिलाषी हैं वे प्राणी तिर्यंचगत को प्राप्त होयहैं वहां परस्पर बध और नानाप्रकारके शस्त्रन की घातसे महा दुःख पावेहैं तथा वाहन तथा अति भार का लादना शीत उष्ण क्षुधा तृषादिकर अनेक दुख भोगवेहैं यह जीवभव संकटविषे भ्रमता स्थलविषे जल विषेगिरिविषे तरुविषे और गहनवनविषे अनेक ठौरमूताएकेंद्रीवेइंद्री तेइंद्री चौइंद्रीपंचेंद्रीअनेक पर्यायमेंअनेक जन्ममरण किये जवि अनादि निधनहै इसको आदिअन्त नहीं तिलमात्रभी लोकाकाश विषे ऐसा प्रदेश नहीं जहां संसार भवनविषे इस जीवने जन्ममरण न किएहों और जेप्राणी निगर्व हैं कपटरहितहैं स्वभाव ही कर संतोषी हैं वे मनुष्य देहको पावेहैं सो यह नरदेह परम निर्वाण सुखका कारण उसे पायकर भी जे मोहमदकर उन्मत्तकल्याणमार्गको तजकर क्षणमात्रमें सुखके अर्थ पाप करे हैं ते मूर्ख हैं मनुष्यभी पूर्वकर्मके उदयसे कोई आर्यखंड विषे उपजे हैं कोई म्लेच्छखण्ड विषे उपजे हैं तथा कोई धनाढ्य कोई अत्यन्त दरिद्री होय हैं केई कर्मके प्रेरे अनेक मनोरथ पूर्ण करे हैं केई कष्टसे पराए घरोंमें प्राण पोषण करे हैं केई कुरूप केई रूपवान केई दीर्घ आयु कई अल्प आयु केई लोकोंको वल्लभ केई अभावने केई सभाग केई अभाग केई औरोंको आज्ञा देवें केई औरनके आज्ञाकारी केई यशस्वी केई अपयशी केई शूर केई

कायर केई जल विषे प्रवेश करें केई रणमें प्रवेश करें केई देशांतरमें गमन करें केई कृषि कर्म करें केईव्यापारकरें, कई सेवा करें। इसभान्ति मनुष्य गति में भी सुख दुःख की विचित्रता है,निश्चय विचारिये तो सर्वमति में दुःखही है दुःखही को कल्पना कर सुखमाने हैं और मुनिव्रत तथा श्रावक के व्रतों से तथा अव्रत सम्यक्त से तथा अकाम निर्जरा से, तथा अज्ञान तप से देवगति पावे हैं तिनमें केई बड़ी ऋद्धि के धारी केई अल्प ऋद्धि के धारी आयुकांतिप्रभाव बुद्धि सुखलेश्याकर ऊपरले देव चढ़ते और शरीर के अभिमान कर परिग्रह से घटते देवगति में भी हर्ष विषाद कर कर्म का संग्रह करे हैं। चतुरगति में यह जीव सदा अरहटकी घड़ीके यंत्रसमानभ्रमणकरे है अशुभ संकल्पसेदुःखको पावे हैं। और शुभसंकल्प से सुख को पावे हैं, और दान के प्रभाव से भोग भूमि विषे भोगों को पावे है, जे सर्व परिग्रह रहित मुनिव्रत के धारक हैं सो उत्तम पात्र कहिये और जे अणुव्रत के धारक श्रावक हैं, तथा श्राविका, तथा आर्यिका सो मध्यमपात्र कहिये है और व्रत रहित सम्यक् दृष्टि हैं सो जघन्यपात्र कहिये हैं इन पात्रों को विनय भक्तिकर आहार देना सो पात्रका दान कहिये और बाल वृद्ध अंध पंगु रोगी दुर्बल दुःखित भुखित इनको करुणा कर अन्न जल औषधि वस्त्रादिक दीजिये सो करुणादान कहिये, उत्कृष्ट पात्र के दान कर उत्कृष्ट भोगभूमि और मध्यमपात्र के दान कर मध्य भोगभूमि और जघन्य पात्र के दान कर जघन्यभोग भूमि होयहै, जो नरक निगोदादि दुःखसे रक्षाकरेसो पात्र कहिये। सो सम्यकदृष्टि मुनिराजहैं वे जीवों की रक्षा करे हैं जे सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र कर निर्मल हैं वे परमपात्र कहियेजिन के मान अपमान सुखदुःख तृण कांचन दोनों बराबर हैं तिनको उत्तम पात्र कहिए जिनके राग द्वेष नहीं जे सर्व परिग्रह रहित महा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विबेकी शुभोपयाग रूपहै चित्त जिनका वे ऐसा विचार कर हैं ज गृहस्थ स्त्रासंयुक्त आरंभी परिग्राही हिंसक काम क्रोधादि कर संयुक्त गबवन्त धनाढ्य और आपको पूज्य माने उनको भक्तिसे बहुत धन देना उस विखे क्या फल है और उनसे आप क्या ज्ञान पावें अहो यह बड़ा अज्ञान है कुमारग से ठगे जीव उसे पात्र दान कहे हैं और दुखी जीवोंको करुणादान न करे हैं दुष्ट धनाढ्योंको सर्व अवस्थामें धनदेय हैं सो वृथा धनका नाश करे ह धनवन्तोंको देनेसे क्या प्रयोजन दुःखियों को देना कार्यकारी है धिकारहै उन दुष्टोंको जो लोभके उदयसे खोटे ग्रन्थ बनाय मूढ़ जीवोंको ठगे हैं जे मृषावादके प्रभावसे मांसहू का भक्षण ठहरावें हैं पापी पाखण्डी मांसकाभी त्याग न करें तो और क्या करगे जे क्रूर मांसका भक्षण करे हैं तथा जा मांसकादान करे हैं वे घोर वंदनायुक्त जो नरक उसमें पड़े हैं और जे हिंसाके उपकरण शस्त्रादिक तथा जे बन्धनके उपाय फांसी इत्यादि तिनका दान करे हैं तथा पंचेंद्रिय पशवोंका दान करे हैं और ज इन दानोंकी निरूपणा करे हैं वे सर्बथा निंद्य हैं जो कोई पशुका दान करे और वह पशु बांधने कर मारनेकर ताड़िनेकर दुःखो होय तो देनहारेको दोष लागे और भूमिदानभी हिंसाका कारणहै जहां हिंसा वहां धम नहीं श्रीचैत्यालयके निमित्त भूमिका देना युक्त है और प्रकार नहीं जो जीव घातकर पुण्य चाहे हैं सो पाशाण से दुग्ध चाहे हैं इसलिये इकेइन्द्री आदि पञ्चेन्द्री पर्यन्त सर्व जीवोंको अभय दानदेना और विवेकियोंको ज्ञान दान दना पुस्तकादि देना और औषध अन्न जल वस्त्रादि सबको देना पशुवों को सूखे तृण दन और जैसे समुद्रमें सीप मेघका जल पिया सो मोती होय परणवे है तैसे संसार विषे द्रव्यके याग से सुपात्रांको यव आादि अन्नभी दिये महा फलको फले हैं और जो धनवान होय सुपात्रों

For Private and Personal Use Only

तपस्वी आत्मध्यान में तत्पर ते मुनि उत्तम पात्र कहिये, तिनको भाव कर अपनी शक्ति प्रमाण अन्न जल औषध देनी तथा वन में तिनके रहनेकेनिमित्त वस्तिका करावनी तथा आर्यावों को अन्न जल वस्त्र औषधी देनी श्रावक श्राविका सम्यक्‌दृष्टियों को अन्न जल वस्त्र औषधि इत्यादि सर्वसामग्री देनी बहुत विनय से सो पात्र दान की विधि है, दीन अंधादि दुःखित जीवों को अन्न वस्त्रादि देना बंदी से छुड़ावना यह करुणादान की रीति है यद्यपि यह पात्रदान तुल्य नहीं तथापि योग्य है, पुण्य का कारण है पर उपकार सोही पुण्य है और जैसे भले क्षेत्र में बोया बीज बहुत गुणा होय फले है तैसे शुद्ध चित्त कर पात्रों को दिया दान अधिक फल को फले है, और जे पापी मिथ्या दृष्टि राग द्वेषादि युक्त व्रत क्रिया रहित महामानी वे पात्र नहीं और दीन भी नहीं तिनको देना निष्फल है नरकादिक का कारण है जैसे ऊसर (कल्लर) खेत विषे बाया बीज वृथा जाय है और जैसे एक कूप का जल ईख विषे प्राप्त हुआ मधुरता को लहे है और नींब विषे गया कटुकता को भजे है तथा एक सरोवर का जल गाय ने पिया सो दूध रूप होय परणवे है और सर्प ने पिया विष होय परणवे है तैसे सम्यक दृष्टि पात्रोंको भक्ति कर दिया जो दानसो शुभ फल को फले है और पापी पाखंडीमिथ्यादृष्टिअभिमानी परिग्रही तिनको भक्ति से दियादान अशुभ फल को फले है जे मांसआहारी मद्यपानी कुशील आपको पूज्य माने तिनका सत्कार न करना जिनधर्मियों की सेवा करनी दुःखियों को देख दया करनी और विपरीतियों से मध्यस्थ रहना दया सर्व जीवों पर राखनी किसीको क्लेश न उपजावना और जे जिन धर्म से पराङ्मुख हैं परवादी हैं ते भी धर्म का करना ऐसा कहे हैं परन्तु धर्मका स्वरूप जाने नहीं इसलिये जे विवेकी हैं वे परखकर अङ्गीकार करे हैं कैसे हैं

को श्रेष्ठ वस्तुका दान नहीं करे ह सो निंद्य हैं दान बड़ा धर्म है सो विधि पूर्वक करना और पुण्य पाप विषे भावही प्रधान है जो बिना भाव दान करे हैं सो गिरिके सिरपर बरसे जल समानहैं सो कार्यकारी नहीं क्षेत्रमें बरसे है सो कार्यकारी है जो कोई सर्वज्ञ वीतरागको ध्यावे है और सदा विधिपूर्वक दानकरे है उस के फलको कौन कहसके इसलिये भगवान के प्रतिबिंब तथा जिन मन्दिर जिन पूजा जिन प्रतिष्ठा सिद्ध क्षेत्रोंकी यात्रा चतुरविध संघकी भक्ति शास्त्रों का सर्व देशोंमें प्रचार करना यह धन खर्चनेके सप्त महा क्षेत्र हैं तिन विषे जो धन लगावे सो सफल है तथा करुणादान परोपकार विष लगे सो सफल है और जे आयुधका ग्रहण करे हैं वे द्वेष संयुक्त जानने तिनके राग द्वेषहैं तिनके मोहभी है और जे कामिनीके संगसे आभूषणों का धारणकरे हैं वे रागी जानने और मोह बिना राग दोष होयनहीं सकल दोषोंका मोह कारण है जिनके रागादि कलंकहैं ते संसारी जीवहैं जिनके ये नहीं वे भगवान हैं जे देश काल कामादि के सेवनहारे हैं ते मनुष्य तुल्यहैं तिनमें देवत्व नहीं तिनकी सेवा शिवपुरका कारण नहीं और किसीके पूर्व पुण्य के उदय से शुभ मनोहर फल होय है सो कुदेव सेवाका फल नहीं कुदेवनकी सेवा से संसारिक सुख भी न होय तो शिवसुख कहांसे होय इसलिये कुदेवोंका सेवना बालूको पेल तेलका काढ़ना है और अग्नि के सेवन ते तृषाका बुझावना है जैसे कोई पंगु को पंगु देशान्तर न लेजायसके तैसे कुदेवों के आराधन से परम पदकी प्राप्ति कदाचित न होय भगवान विना और देवोंके सेवनका क्लेशकर सो वृथाहै कुदेवन में देवत्व नहीं और जे कुदेवों के भक्तहैं वे पात्र नहीं लोभकर प्रेरे प्राणी हिंसाकर्म विषे प्रवरते हैं हिंसा का भय नहीं अनेक उपायकर लोकोंसे धन लेयहैं संसारी लोकभी लोभी सो लोभियों प ठगावें हैं इस

लिये सबदोष रहित जिन आज्ञा प्रमाण जो महा दान करे सो महा फल पावे वाणिज्य समान धर्म हैकभी किसी बणजविषे अधिक नफा होय कभी अल्प होय कदापि टोटा होय कदे मूलही जातारहे अल्पसे बहुत फल होजाय बहुतसे अल्प होजाय और जैसे विषका कण सरोवरीमें प्राप्तभया सरोवरी को विषरूप न करे तैसे चैत्यालयादि निमित्त अल्प हिंसा सो धर्मका विघ्न न करेइसलिये गृहस्थी भगवानके मन्दिर करावें कैसे हैं गृहस्थी जिनेन्द्रकी भक्ति विषे तत्पर हैं और व्रत क्रियामें प्रवीण हैं अपनी विभूति प्रमाण जिन मन्दिरकर जल चन्दन धूप दीपादिकर पूजा करनी जे जिन मन्दिरादिमें धन खरचेहैं वे स्वर्गलोक में तथा मनुष्यलोक में अत्यन्त ऊंचे भोग भोग परम पद पावे हैं और जे चतुरविध संघ को भक्तिपूर्वक दान करे हैं वे गुणोंके भाजन हैं इन्द्रादि पद के भोगों को पावे हैं इसलिये जे अपनी शक्ति समान सम्यक्दृष्टिपात्रों को भक्ति स दान करे हैं तथा दुखियोंको दयाभावकर दान करे हैं सो धन सफल है और कुमारग में लगा जो धन सो चोरों से लूटा जानो और आत्मध्यानके योगसे केवलज्ञानकी प्राप्ति होयहै जिनको केवलज्ञान उपजा तिनको निर्वाण पदहै सिद्ध सर्वलोक के शिखर तिष्ठे हैं सर्ववाधा रहित अष्टकर्म से रहित अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन अनन्त सुख अनन्तवीर्यसे संयुक्त शरीर से रहित अमूर्तिक पुरुषाकार जन्म मरणसे रहित अविचल विराजे हैं जिनका संसारविषे आगमन नहीं मन इन्द्रीसे अगोचरहैं ऐसा सिद्धपद धर्मात्मा जीव पावे हैं और पापीजीव लोभरूप पवन से बृद्धिको प्राप्त भई जो दुखरूप अग्नि उसमें बलते सुकृतरूप जल बिना सदा क्लेशको पावे हैं पापरूप अंधकारके मध्य तिष्ठे मिथ्यादर्शनके वशीभूत हैं कोई यक भव्यजीव धर्मरूप सूर्यकी किरणोंसे पाप तिमिरको हर केवलज्ञानको पावे हैं और ये जीव अशुभरूप

लोहके पींजरेमें पड़े आशारूप पाशकर वेढे धर्मरूप बांधवकर छूटे हैं व्याकरणसूसे धर्म शब्दका यही अर्थ हुवा है जो धर्म आचारता हुवा दुर्गतिमें पड़ाते प्राणियोंको थांभे सो धर्म कहिये । उस धर्मका जो लाभ सो लाभ कहिये । जिनशासन विषे जो धर्मका स्वरूप कह्योहै सो संक्षेपसे तुमको कहे हैं धर्मके भेद और धर्मके फलके भेद एकाग्रमन कर सुनों । हिंसासे असत्यसे चोरीसे कुशीलसे धन और परिग्रहके संग्रह से विरक्त होना इन पापोंका त्याग करना सो महाव्रत कहिये । विवेकियोंको उसका धारण करना और भूमि निरखकर चलना हितमित सन्देहरहित बोलना निर्दोष आहार लेना यत्नसे पुस्तकादि उठावना मेलना निर्जंतुभूमि विषे शरीरका मल डारना ये पांच सुमति कहिये । तिनका पालना यत्नकर और मन वचन कायकी जो वृत्ति उसका अभाव उसका नाम तीन गुप्ति कहिये सो परम आदरसे साधुवों को अंगीकार करनी । क्रोधमान मायालोभ ये कषाय जीवके महाशत्रु हैं सो क्षमासे क्रोधको जीतना और मार्दव कहिये निगर्वपरिणाम उससे मानको जीतना और आर्जव कहिये सरल परिणाम निकपटभाव उससे मायाचारको जीतना और संतोषसे लोभको जीतना शास्त्रोक्त धर्मके करनहारे जे मुनि उनको कषायोंका निग्रह करना योग्यहै ये पंच महाव्रत पंच सुमति तीन गुप्ति कषाय निग्रहसो मुनि राजका धर्म है और मुनिका मुख्य धर्म त्यागहै जो सर्व त्यागी होय सोही मुनीहै और रसना स्पर्शन घ्राण चक्षुः श्रोत्र ये प्रसिद्ध पांच इन्द्री तिनका वश करना सो धर्म है और अनशन कहिये उपवास अवमोदर्य कहिये अल्पआहार व्रत परिसंख्या कहिये विषम प्रतिज्ञाका धारना अटपटी बात विचारनी कि इस विधि आहार मिलेगा तो लेवेंगे नातर नहीं और रस परित्याग कहिये रसोंका त्याग विविक्त

शय्यासनकाहियेएकांत बनविषेरहना स्त्री तथा बालक तथानपुंसुकतथा ग्राम्यपशु इनकीसंगातिसाधुवोंको न करनीतथाऔरभीसंसारी जीवोंकी संगति नकरनी मुनिको मुनिहीकी संगतियोग्यहै और कायक्लेश कहिये ग्रीषममें गिरिके शिखर शीतमें नदीके तीर वर्षामें वृक्षके तले तीनों कालके तप करने तथा विषमभूमिमें रहना मासोपवासादि अनेक तप करना ये षटवाह्य तप कहे और आभ्यन्तरषटतप सुनो प्राय-श्चितकाहियेजोकोई मनसे तथाबचनसेतथाकायसे दोषलगासो सरलपरिणामकर श्रीगुरसे प्रकाशकर तपादि दंड लेना औरविनय कहिये देवगुरुशास्त्र साधर्मियोंका विनयकरना तथा दर्शन ज्ञान चारित्रका आचरण सोही इनका विनय और इनके जे धारक तिनका आदर करना आपसे जो गुणाधिकहो उसे देखकर उठ खड़ा होना सन्मुख जाना आप नीचे बैठना उनको ऊंचे बिठाना मिष्ट बचन बोलने दुःखपीडा मेटनी और वैयाव्रत कहिये जे तपसे तप्तायमान हैं रोगसे युक्तहै गात्रजिनका वृद्ध हैं अथवा नव वर्षके जेबालक हैं तिनका नानाप्रकार यत्न करना औषधपथ्य देना उपसर्ग मेटना और स्वाध्याय कहिये जिनशासनका बाचना आम्नायकहिये परिपाटी अनुप्रेक्षा कहिए वारंवारचितारना धर्मोपदेशकहिये धर्मका उपदेश देनाऔर व्युतसर्ग कहिये शरीरका ममत्व तजना तथा एक दिवस आदि वर्ष पर्यंत कायोत्सर्ग धरना और ध्यान कहिए आर्तरौद्र ध्यानका त्यागकर धर्मध्यान शुक्लध्यानका ध्यावना ये छह प्रकारके अभ्यंतर तप कहे गये वाह्याभ्यन्तर द्वादश तप सबही धर्म हैं इस धर्मके प्रभावसे भव्यजीव कर्मका नाश करे हैं और तपके प्रभाव से अद्भुत शक्ति होयहै सर्व मनुष्य और देवोंको जीतनेके समर्थ होयहै विक्रिया शक्तिकर जो चाहै सो करे विक्रियाकेअष्ट भेदहैं अणिमा,महिमा लघिमा,गरिमा,प्राप्ति,प्राकाम्य ईशत्व वशित्वसो महामुनितपो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निधि परम शांतहैं सकल इच्छासे रहितहैं और ऐसी सामर्थ है चाहैं तो सूर्यका आताप निवारैं चंद्रमा की शीतलता निवारैं चाहैं तो जलवृष्टिकर क्षणमात्रमें जगतको पूर्ण करें चाहैं तो भस्म करैं क्रूर दृष्टि कर देखें तो प्राण हरैं कृपादृष्टि कर देखें तो रंकसे राजा करें चाहैं तो रत्न स्वर्ण की वर्षा करें चाहैंतो पाषाणकी वर्षा करें इत्यादि सामर्थ है परन्तु करैं नहीं करें तो चारित्र का नाश होय उन मुनियों के चरणरज कर सर्व रोग जांय मनुष्योंको अद्भुत विभवके कारण तिनके चरण कमलहैं जीव धर्म कर अनन्त शक्तिकों प्राप्त होयहैं धर्मकर कर्मनको हरे हैं और कदाचित कोऊ जन्म लेयतो सौधर्म स्वर्ग आदि सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत जाय स्वर्गविषे इन्द्रपद पावें तथा इन्द्र समान विभूतिके धारक देव होंय जिनके अनेक खणके मंदिर स्वर्णके स्फाटिक मणिके वैडूर्य मणिके थंभ और रत्नमई भीति देदीप्यमान और सुंदर झरोखोंसे शोभायमान पद्मरागमणि आदि नानाप्रकारकी मणिके शिखरहैं जिनके और मोतियों की झालरोंसेशोभित और जिनमहलों में अनेक चित्राम सिंहोंकेगजोंके हंसोंके स्वानोंके हिरणोंकेमयूर कोकि लादिकों के दोनों भीत विषे रत्नमई चित्राम शोभायमान हैं चन्द्रशालादि से युक्त ध्वजाओं की पंक्तिकर शोभित अत्यन्त मनके हरणहारे मंदिर सजे हैं आसनादि से संयुक्त जहां नाना प्रकार के वादित्र बाजे हैं आज्ञाकारी सेवक देव और महा मनोहर देवांगना अद्भुत देव लोक के सुख महा सुंदर सरोवर कमलादिकर संयुक्त कल्पवृक्षोंके बन बिमान आदि विभूतियें यह सभी जीव धर्मके प्रभाव कर पावे हैं और कैसे हैं स्वर्गनिवासी देव अपनी कांतिकर और दीप्ति कर चांद सूर्यको जीते हैं स्वर्गलोक-विषे रात्रि और दिवस नहीं षटऋतु नहीं निद्रा नहीं और देवोंका शरीर माता पितासे उत्पन्ननहीं होता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब अगला देवखिर जाय तबनयाँ देवउतपादिकशय्याविषे उपज है जैसे कोई सूता मनुष्यसेज से जाग उठे तैसें क्षणमात्रमें देवउत्पादिक शय्या विषे प्रकट होयहैं नवयोवनको प्राप्तभया कैसाहैतिनका शरीर सात उपधातु रहित निर्मल रजपसेव औररोगों सेरहित सुगंध पवित्र कोमल परमशोभा युक्त नेत्रोंको प्यारा ऐसा उत्पादिक शुभवैक्रियक देवोंका शरीर होयहै ये प्राणी धर्म से पावे हैं जिनके आभूषणमहा देदीप्यमान जिनकी कांतिके समूहकर दशोंदिशा विषे उद्योत होरहाहै औरतिन देवनकेदेवांगना महासुन्दर हैं कमलों के पत्र समान सुन्दरहैंचरण जिनके और केले के थंभ समानहैं जंघाजिनकी कांचीदाम[तागडी]करशोभित सुन्दर कटि और नितंबजिनके जैसे वजों के घटोका शब्दहोय तैसे कांचीदाम की क्षुद्रघंटिकाका शब्द होय है उगते चन्द्रमा से अधिक कांतिधरे है मनोहर हैं स्तनमंडल जिनका रत्नों के समूह से ज्योति को जीते और चांदनी को जीते ऐसी है प्रभा जिनकी मालतीकी जो माला उससेअति कोमल भुजलता है जिनकी महा अमोलिक वाचाल मणिमई चूड़े उनकर शोभित हैं हाथ जिनके और अशोकवृक्ष की कूंपल समान कोमल अरुण हैं हथेली जिनकी अति सुन्दर करकी अंगुली शंख समान ग्रीवा कोकिल सेभी अति मनोहर कण्ठ अति लाल अति सुन्दर रसके भरे अधर उनकर आच्छादित कुन्दके पुष्प समान दन्त और निर्मल दरपण समान सुन्दर हैं कपाल जिनके लावण्यता कर लिप्त भई हैं सर्वदिशा और अति सुन्दर तीक्ष्ण कामके बाण समान नेत्र सो नेत्रों की कटाक्ष करण परयन्त प्राप्त भई हैं सोई मानो कर्णाभरण भए और पद्मराग मणि आदि अनेक मणियोंके आभूषण और मोतियोंके हार उनसे मंडित और भ्रमर समान श्याम अति सूक्ष्म अति निर्मल अति चिकने अति सघन वक्रता धरे लम्बे केश

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोमल शरीर अति मधुर स्वर अत्यन्त चतुर सर्वउपचारकी जाननहारी महा सौभाग्यवती रूपवती गुणवती मनोहर क्रीड़ाकी करणहारी नंदनादि बनों से उपजी जो सुगन्ध उससे अति सुगन्ध हैं श्वास जिनकेपराये मनका अभिप्राय चेष्टामें जान जांय ऐसी प्रवीण पंचेन्द्रियों के सुखकी उपजावनहारी मनवांछित रूपकी धरणहारी ऐसी स्वर्ग में जे अप्सरा वह धर्म के फल से पाइये हैं और जो इच्छा करें सो चितवत मात्र सर्व सिद्धि होंय इच्छा करेंसोही उपकरणप्राप्त होंय जो चाहें सो सदा संग ही हैं देवांगनावों कर देव मनबांछित सुख भोगे हैं जो देवलोक में सुख हैं तथा मनुष्य लोक में चक्रवर्त्यादिक के सुख हैं सो सर्वधर्म का फल जिनेश्वर देव ने कहा है, और तीन लोक में जो सुख ऐसा नाम धरावे है सो सर्व धर्म से उत्पन्न होय है जे तीर्थंकर तथा चक्रवर्ति बलभद्र कामदेवादि दाता भोक्ता मर्यादाके कर्त्ता निरन्तर हज़ारोंराजावों तथा देवों कर सेइये हैं सो सर्व धर्म का फल है। और जो इन्द्र स्वर्ग लोकका राज्य हज़ारों जे देव मनोहर आभूषण के धरणहारे तिनका प्रभुत्व धरे हैं सो सर्वधर्म का फल है, यह तो सकल शुभोपयोगरूपव्यवहारधर्म के फल कहे और जे महामुनि निश्चयसे रत्नत्रयके धरणहारे मोहरिपुका नाशकर सिद्धपदपावे हैं सो शुद्धोपयोगरूप आत्मीक धर्मका फल है सो मुनिकाधर्म मनुष्य जन्मबिना नहींपाइये है, इसलियेमनुष्यदेहसर्वजन्मविषे श्रेष्ठ है, जैसेमृगकहियेबनकेजीव तिनमेंसिंहऔरपक्षियोंमेंगरुड़ और मनुष्योमेंराजा, देवोंमेंइन्द्र तृणोंमेंशालि वृक्षों में चन्दन और पाषाणों में रत्न श्रेष्ठ हैं तैसे सकल योनियों में मनुष्यजन्म श्रेष्ठ है तीनलोकमें धर्म सार है और धर्म में मुनि का धर्म सार है। सो मुनि का धर्म मनुष्यदेह से ही होय है इसलिये मनुष्य समान और नहीं। अनन्तकाल यह जीव परिभ्रमण करे है उस में मनुष्यजन्म कबही पावे है यह देह महादुर्लभ है। ऐसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुर्लभमनुष्यदेह को पाय जो मूढप्राणी समस्त क्लेशसे रहित करनहारा जो मुनिका धर्म अथवा श्रावक का धर्म नहीं करे है सो बारम्बार दुर्गति विषे भ्रमण करे है। जैसे समुद्रमें गिरा महा गुणों का धरणहारा जो रत्न फिर हाथ आवना दुर्लभ है तैसे भव समुद्र के विषे नष्ट हुआ नरदेह फिर पावना दुर्लभ है. इस मनुष्य देह में शास्त्रोक्त धर्म का साधन कर कोई मुनिव्रत धर सिद्ध होय हैं और केई स्वर्ग निवासी देव तथा अहिमिन्द्र पद पावे हैं परमपरा मोक्ष पावे हैं। इसी भान्ति धर्म अधर्म के फल केवली के मुख से सुनकर सब ही हर्ष को प्राप्त भए। उस समय कमल सारिखे हैं नेत्र जिसके ऐसा कुम्भकरण हाथ जोड़ नमस्कार कर पूछताभया। उपजा है अतिआनन्द जिसके। हे भगवान्! मेरे अब भी तृप्ति न भई इसलिये विस्तार कर धर्मका व्याख्यान विधि पूर्वक मोहे कहो तब भगवान् अनन्तवीर्य कहते भए। हे भव्य! धर्म का विशेष वर्णन सुनो जिससे यह प्राणी संसारके बन्धनसे छूटे सो धर्म दो प्रकारका है एक महाव्रत रूप दूजा अणुव्रत रूप सो महाव्रतरूप यति का धर्म है अणुव्रतरूप श्रावक का धर्म है। यति घरके त्यागी हैं श्रावक गृहवासी हैं तुम प्रथम ही सर्व पापों का नाश करनहारा सर्व परिग्रह के त्यागी जे महामुनि तिनका धर्म सुनो। इस अवसर्पणी काल में अब तक ऋषभ देव से मुनिसुव्रत पर्यन्त बीस तीर्थंकर हो चुके हैं अब चार और होवेंगे इस भान्ति अनन्त भए और अनन्त होवेंगे सो सब का एक मत है यह श्रीमुनिसुव्रतनाथ का समय है। सो अनेक महापुरुष जन्म मरणके दुःख से महा भयभीत भए इस शरीर को एरण्ड की लकड़ी समान असार जान सर्व परिग्रह का त्यग कर मुनिव्रत को प्राप्त भए वे साधु अहिंसा, असत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य परिग्रहत्यागरूप पञ्चमहाव्रत तिनमें रत तत्वज्ञानविषे तत्परपञ्चसमिति के पालनहारे,

For Private and Personal Use Only

तीन गुप्ति के धरनहारे, निर्मलचित्त महापुरुष परमदयालु निजदेह मेंभी निर्ममत्व रागभाव रहित जहां सूर्य्य अस्त होय वहां ही बैठ रहें कोई आश्रय नहीं तिनके कहापरिग्रह होय पाप का उपजावनहारा जो परिग्रह सो तिनके बालके अग्रभाग मात्रभी नहीं, वे महाधीर महामुनिसिंह समान साहसी समस्त प्रबन्ध रहित पवनसारिखे असंगी तिनके रञ्चमात्र भी संग नहीं पृथिवी समान क्षमा, जल सारिखे विमल अग्नि सारिखे कर्मको भस्म कर आकाश सारिखे अलिप्त सर्व सम्बन्ध रहित प्रशंसा योग्य है चेष्टा जिनकी चन्द्र सारिखे सौम्य सूर्य सारिखे तिमिर हरता समुद्र सारिखे गम्भीर पर्वत सारिखे अचल कछुवा समान इन्द्रीयों के संकोचनहारे कषायोंकी तीव्रता रहित अठाईस मूलगुण चौरासीलाख उत्तर गुणों के धारणहारे अठारह हजार शीलके भेद तिनके धारक तपोनिधि मोक्षगामी जिन धर्ममें लवलीन जिन शास्त्रोंके पारगामी और सांख्य पातञ्जल बौद्ध मीमांसक नैयायिक वैशेषिक वेदान्ती इत्यादि पर शास्त्रोंके भी वेत्ता महा बुद्धिमान् सम्यग्दृष्टि यावज्जीव पाप के त्यागी यम नियम के धारनहारे परम संयमी परम शान्त परम त्यागी निगर्व अनेक ऋद्धि संयुक्त महामङ्गलमूर्त्ति जगत्के मण्डन महागुणवान् केईएक तो उसही भवमें कर्मकाट सिद्धहोय कईएक उत्तम देव होय दो तीन भवमें ध्यानाग्निकर समस्त कर्म काष्ठबाल अविनाशी सुखको प्राप्त होय हैं यह यतीका धर्म कहा अब स्नेहरूपी पींजरे में पड़े जे गृहस्थी तिनका द्वादशव्रत रूप जो धर्म सो सुनो पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत और अपनीशक्ति प्रमाण हजारों नियम त्रस घात का त्याग और मृषावादका परिहार परधन का त्याग परदारा परित्याग और परिग्रह का परिणाम तृष्णाका त्याग ये पांच अणुव्रत और हिंसाका प्रमाण देशोंका प्रमाण जहां जिनधर्म का उद्योत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहीं तिन देशनका त्याग अनर्थ दण्ड का त्याग ये तीनगुणव्रत और सामायिक प्रोषधोपवास अतिथि संविभाग भोगोपभोग परिणाम ये चार शिक्षाव्रत ये बारहव्रतहैं अबइन व्रतोंके भेदसुनो जैसे अपना शरीर आप को प्याराहै तैसा सबको प्याराहै ऐसा जान सर्वजीवोंकी दयाकरनी उत्कृष्ट धर्म जीव दयाही भगवान ने कहाहै जे निर्दई जीवहैं तिनके रंचमात्रभी धर्म नहीं और जिसमें परजीवको पीड़ा होय सो वचन न कहना पर वाधाकारी वचन सोई मिथ्या और परउपकाररूप वचन सोई सत्य और जे पापी चोरीकरें पराया धन हरें हैं वे इस भवमें बध बन्धनादि दुखपावे हैं कुमरण से मरे हैं और परभव नरक में पड़े हैं नानाप्रकार के दुःख पावेहैं चोरी दुःखका मूलहै इसलिये बुद्धिमान सर्वथा पराया धन नहीं हरेहैं सो जिसकर दोनोंलोक बिगडें उसे कैसे करें और सर्पणी समान परनारीको जान दूरही से तजो यह पापनी परनारी काम लोभ के वशीभूत पुरुषकी नाश करनहारी है सर्पणी तो एक भवही प्राण हरे हैं और पर नारी अनन्त भव प्राण हरें हैं कुशील के पाप से निगोद में जाय हैं सो अनन्त जन्म मरण करे हैं और इसही भव में मारना ताडनादि अनेक दुःख पावे हैं यह परदारा संगम नरक निगोद के दुस्सह दुःख का देनहारा है जैसे कोई पर पुरुष अपनी स्त्री का पराभव करे तो आप को बहुत बुरा लगे अति दुःख उपजे तैसेही सकल की व्यवस्था जाननी और परिग्रह का परमाण करना बहुत तृष्णा न करनी जो यह जीव इच्छाको न रोके तो महा दुखी होय यह तृष्णाही दुःखका मूल है तृष्णा समान और व्याधि नहीं ॥ इसके ऊपर एक कथा है सो सुनो एक भद्र दूजा कंचन ये दोय पुरुषथे तिनमें भद्रफलादिक का बेचनहारा सो एक दीनार मात्र परिग्रहका प्रमाण करता भया एक दिवस मार्ग में दीनारोंका बटवा पड़ा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देखा उसमें से एक दीनार कौतूहलकर लीनी और दूजा कांचनहै नाम जिसका ताने सर्व बटुवाही उठाय लिया सो दीनार का स्वामी राजा उसने बटवा उठवावतादेख कांचन को पिटाया और गाम मेंसे कढ़ाया और भद्रने एक दीनार लीनीथी सो राजाको बिना मांगे स्वमेव सौंप दीनी राजा ने भद्रका बहुत सन्मान किया ऐसा जानकर बहुत तृष्णा न करनी संतोष धरना ये पांच अणुव्रत कहे और चार दिशा चार विदिशा एक अधः एक ऊर्ध इन दश दिशाका परमाण करना कि इसदिशाको एतीदूर जाऊंगा। आगे न जाऊं फिर अपध्यान कहिये खोटा चिंतवन पापोपदेश कहिये अशुभ कार्य का उपदेश हिंसा दान कहिये विष फांसी लोहा सीसा खडगादि शस्त्र तथा चाबुक इत्यादि जीवनके मारनेके उपकरणतथा जे जाल रस्सा इत्यादि बन्धनके उपाय तिनका व्यापार और श्वान मार्जार चीतादिकका पालना और कुश्रुतिश्रवण कहिये कुशास्त्रका श्रवण प्रमादचर्या कहिये प्रमादसे वृथा छै कायके जीवों की बाधाकरनी ये पांचप्रकारके अनर्थ दण्ड तजने और भोगकहिये आहारादिक उपभोग कहिये स्त्री वस्त्राभूषणादिक तिन का प्रमाण करना अर्थात् उसमें यह विचार जे अभक्ष्य भक्षणादि परदारा सेवनादि अयोग्य विषयहैं तिन का तो सर्वथा त्याग और जे योग्याहार तथा स्वदारासेवनादि तिनका नियमरूप प्रमाण यह भोगोपभोग परिसंख्याव्रत कहिये ये तीन गुणव्रत कहे और समायिक कहिये समताभाव पंचपरमेष्ठी और जिनधर्म जिनवचन जिनप्रतिमा जिनमन्दिर तिनका स्तवन और सर्व जीवोंसे क्षमाभावसो प्रभात मध्यान्ह सायंकाल छैछै घड़ी तथा चार २ घड़ी तथा दोदो घड़ी अवश्य करना और प्रोषधोपवास कहिये दो आठे दो चौदस एकमासमें चार उपवास षोड़श पहर के पोसे संयुक्त अवश्य करने सोलह पहरतक संसारके कार्यका त्यागकरना आत्मचिंतवन

For Private and Personal Use Only

तथा जिन भजन करना और अतिथि संविभाग कहिये अतिथि जे परिग्रह रहित मुनि जिन के तिथिवारका विचार नहीं सो आहारके निमित्त आवें महागुणोंके धारक तिनका विधिपूर्वक अपने वित्तानुसार बहुत आदर से योग्य आहार देना और आयके अन्तमें अनशन ब्रतधर समाधिमरण करना सो संलेषनाब्रत कहिये ये चार शिक्षाब्रत कहे पांच अणुब्रत तीनगुण ब्रत चार शिक्षाब्रत ये बारहब्रत जानने जे जिनधर्मी हैं तिनके मद्यमांस मधु माषण उदंबरादि अयोग्यफल रात्री भोजन बींधा अन्न अनछानाजल परदारा तथा दासी वेश्यासंगम इत्यादि अयोग्य क्रियाका सर्वथा त्यागहै यह श्रावकके धर्म पालकर समाधि मरणकर उत्तम देव होय फिर उत्तम मनुष्य होय सिद्ध पदपावे है और जे शास्त्रोक्त आचारण करनेको असमर्थ हैं न श्रावकके ब्रतपालें न यतिकेपरंतुजिनभाषितकी दृढ श्रद्धाहै तेभीनिकटसंसारी हैं सम्यक्तके प्रसादसे ब्रतको धारणकर शिवपुरको प्राप्तहोयहैं सर्वलाभमें श्रेष्ठजो सम्यक्दर्शनका लाभ उससे ये जीव दुर्गतिके त्राससे छूटे हैं जो प्राणीभावसे श्रीजिनेंद्रदेवको नमस्कार करे हैं सो पुण्याधिकारी पापोंके क्लेशसे निवृत होय हैं और जो प्राणीभाव कर सर्वज्ञदेवको सुमरे हैं उस भव्यजीवके अशुभकर्म कोटभवके उपारजे ततकाल क्षय होयहैं और जो महाभाग्य त्रैलोक्य में सार जो अरिहंतदेव तिनको हृदयमें धारें हैं सो भव कूप में नहीं परे हैं उसके निरन्तर सर्व भाव प्रशस्त हैं और उसको अशुभ स्वप्न न आवें शुभ स्वप्नही आवें और शुभ शकुनही होयहैं और जो उत्तम जन "अर्हतेनमः" यह बचन भावसे कहे हैं उस के शीघ्र ही मलिन कर्मका नाश होयहै इस में संदेह नहीं मुक्ति योग्य प्राणीका चित्त रूप कुमुद परम निर्मल वीतराग जिनचन्द्र की कथारूप जो किरण तिनके प्रसंगसे प्रफुल्लित होयहै और जो विवेकी

अरिहन्त सिद्ध साधुवोंके ताईं नमस्कारकरेहैं सो सर्व जिन धर्मियोंका प्याराहै उसे अल्प संसारी जानना और जो उदारचित्त श्रीभगवानके चैत्यालय कराके जिनबिम्ब पधरावे हैं जिनपूजा करे हैं जिनस्तुति करे हैं उसके इस जगतहीमें कुछ दुर्लभनहीं नरनाथकहिये राजा हो अथवा कुटम्बी कहिये किसाण होवे धनाढ्यहोवे तथा दलिद्रीहोवे जो मनुष्य धर्मसे युक्तहै सो सर्व त्रैलोक्यमें पूज्यहै। जे नर महा विनयवानहैं और कृत्य अकृत्यके विचारमें प्रवीणहैं कियह कार्यकरना यह नकरना ऐसा विवेक धरे हैं वे विवेकी धर्मके संयोगसे गृहस्थियोंमें मुख्यहैं जेजन मधुमांस मद्यआदि अभक्ष्यका संसर्ग नहीं करे हैं तिनहीका जीवन सफल है। और शंका कहिये जिन बचनमें संदेह कांक्षा कहिये इस भवमें और परभवमें भोगोंकी बांछा विचिकित्सा कहिये रोगी वा दुखीको देख घृणा करणी आदर नहीं करना और आत्मज्ञानसे दूर जे परदृष्टि कहिये जिन धर्म से पराङ्मुख मिथ्यामार्गी तिनकी प्रशंसा करनी और अन्यशासन कहिये हिंसामार्ग उसके सेवन हारे जे निर्दयी मिथ्या दृष्टि उनके निकट जाय स्तुति करना ये पंच सम्यक दर्शन के अतीचारहैं तिनके त्यागी जे जन्तु कहिये प्राणी वे गृहस्थियोंमें मुख्य हैं और जो प्रियदर्शन कहिये प्यारा है दर्शन जिसको सुन्दर वस्त्राभरण पहिरे सुगन्ध शरीर पयादा धरतीको देखता निर्विकार जिनमंदिरमें जायहै शुभ कार्योंमें उद्यमी उसके पुण्यका पार नहीं और जो पराए द्रव्यको तृण समान देखे हैं और परजीवको आप समान देखे हैं और परनारीको मातासमान देखे हैं सो धन्य धन्य धन्य हैं और जिसके ये भावहैं कि ऐसा दिन कब होयगा जोमैं जिनेंद्री दीक्षा लेकर महामुनि होय पृथ्वीविषे निर्द्वन्द्व बिहार करूंगा ये कर्म शत्रु अनादिके लगे हैं तिनका क्षयकर

For Private and Personal Use Only

कब शिवपदको प्राप्त होऊंगा इस भांति निरन्तर ध्यानकर निर्मल भयाहै चित्त जिसका उसके कर्म कैसे रहें भयकर भागजांय कैयक विवेकी सात आठ भवमें मुक्ति जायेंहैं कैयक दोतीन भवमें संसार समुद्र के पार होयेहैं कैयक चरमशरीरी उग्रतपकर शुद्धोपयोगके प्रसादसे तदभव मोक्ष होयेहैं जैसे कोई मार्ग का जाननहारा पुरुषशीघ्र चलेतो शीघ्रही स्थानकको जाय पहुंचे और कोई धीरेधीरे चलेतो घने दिन में जाय पहुंचे परंतुमार्गचले सो पहुंचेही और जो मार्गही न जाने और सौसो योजन चले तोभी भ्रमता ही रहे स्थानकको न पहुंचे तैसे मिथ्यादृष्टि उग्रतपकरें तोभी जन्ममरण वर्जित जो अविनाशीपद उसे न प्राप्त होयं संसार बनहीमें भ्रमे नहीं पायाहै मुक्तिका मार्ग जिन्होंने कैसा है संसारबन मोहरूप अंध कारकर आछादितहै और कषायरूप सर्पोंकर भराहै जिस जीवके शील नहीं व्रत नहीं सम्यक्तनहीं त्याग नहीं वैराग्य नहीं सो संसार समुद्रको कैसे तिरे जैसे विन्ध्याचल पर्वतसे चला जो नदीका प्रवाह उस कर पर्वत समान ऊंचे हाथी बहजांय तहां एक सुस्सा क्यों न बहे तैसे जन्म जरा मरणरूप भ्रमणको धरे संसाररूप जो प्रवाह उसविषे जे कुतीर्थी कहिये मिथ्यामार्गी अज्ञान तापसहै वेई डूबे हैं फिर उनके भक्तोंका क्या कहना जैसे शिलाजल विषे तिरणे शक्त नहीं तैसे परिग्रह के धारी कुदृष्टि शरणागतों को तारने समर्थ नहीं औरजे तत्वज्ञानी तपकर पापोंके भस्म करणहारे हलवे होयगएहैं कर्म जिनके वे उपदेश थकी प्राणियोंको तारने समर्थ हैं यह संसार सागर महा भयानक है इसमें यह मनुष्यक्षेत्र रत्नदीप समानहै सो महा कष्टसे पाइयेहै इस लिये बुद्धिवन्तोंको इस रत्नदीप विषे नेमरूप रत्न ग्रहणे अवश्य योग्यहै यह प्राणी इस देहको तजकर परभव विषे जायगा और जैसे कोई मूर्ख तागाके अर्थ

महा मणि को चूर्ण करे तैसे यह जड़बुद्धि विषैके अर्थ धर्मरत्न को चूर्ण करे है और ज्ञानी जीवोंको सदा द्वादश अनुप्रेक्षाका चिन्तवन करणा कि ये शरीरादि सर्व अनित्यहै आत्मा नित्यहै इस संसार में कोई शरणनहीं आपको आपही शरणहै तथा पंच परमेष्ठी का शरणहैं और संसार महा दुख रूप है चतुरगतिविषे किसीठौर सुख नहीं एक सुखका धाम ।सिद्धपदहै यह जीव सदा अकेलाहै इसका कोई संगी नहीं और सर्व द्रव्य जुदे २ हैं कोई किसी से मिले नहीं और यह शरीर महाअशुचि है मल मूत्र का भरा भाजन है आत्मा निर्मल है और मिथ्यात्व अव्रत कषाययोग प्रमादों कर कर्म का आश्रवहोय है और व्रत सुमति गुप्ति दस लक्षण धर्म अनुप्रेक्षा चिन्तवन परीषहजय चारित्र से संवर होयहै आश्रव कारोकना सो संवर और तप कर पूर्वोपार्जित कर्म की निर्जरा होयहै और यह लोक षटद्रव्यात्मक अनादि अकृतिम शास्वत है लोक के शिखर में सिद्धिलोक है लोकालोक का ज्ञायकआत्मा है और जो आत्मस्वभाव सोही धर्म है जीवदयाधर्म है और जगत विषे शुद्धोपयोग दुर्लभहै सोई निर्वाणका कारण है येद्वादश अनुप्रेक्षा विवेकी सदाचिंतवे इसभांत मुनि औरश्रावकके धर्म कहे अपनीशक्तिप्रमाण जो धर्म सेवे उत्कृष्ट मध्यमतथा जघन्य सो सुरलोकादिविषे तैसाहीफल पावें इसभांति केवली ने जब कही तब भानुकर्ण कहिये कुम्भकर्ण ने केवली से पूछा हेनाथ भेदसहित नियम का स्वरूप जानना चाहूं हूं तब भगवान ने कही हेकुम्भकर्ण नियम में औरतपमें भेद नहीं नियम करयुक्त जो प्राणी सो तपस्वी कहिये इसलिये बुद्धिमान नियम विषे सर्वथायत्न करे जेताअधिक नियम करे सोही भला और जो बहुत न बने तो अल्पही नियम करना परन्तुनियम बिना न रहना जैसे बने सुकृतका उपार्जन करना, जैसे मेघ

की बून्द परे हैं तिन बुन्दों कर महानदी का प्रवाह होय जाय है सो समुद्र विषै जाय मिले है तैसे जो पुरुष दिन विषे एक महूर्त मात्र भी आहार का त्याग करे सो एक मास में एक उपवास के फल को प्राप्त होय उस कर स्वर्गविषे बहुतकाल सुख भोगे मनवांछितभोग प्राप्तहोय जो कोई जिनमार्ग की श्रद्धा करता संता यथाशक्ति तपनियम करे तो उस महात्मा के दीर्घ काल स्वर्ग विषसुखहोय औरस्वर्गसेचयकर मनुष्यभव विषे उत्तमभोगपावे है एकअज्ञान तापसी की पुत्रीवनविषेरहे सो महादुःखवंती बदरीफल (बेर) आदि करअजीविका पूर्णकरे उसने सत्संगसे एकमहूर्त मात्रभोजन का नियमलिया उसके प्रभावसेएकदिन राजाने देखी आदरसे परणी बहुतसंपदा पाई औरधर्मविषे बहुतसावधान भईअनेकनियम आदरे सो जो प्राणी कपटरहितहोय जिनवचन कोधारण करे सो निरंतरसुखीहोयपरलोक विषेउत्तमगति पावेंऔरजो दोमुहूर्तदिवस प्रतिभोजन का त्यागकरे उसकेएकमासमेंदोउपवासकाफलहोयतीसमुहूर्तका एकअहो रात्र गिनों औरतीन महूर्तप्रातिदिन अन्न जल का त्याग करे तो एकमासमें तीन उपवास का फलहोयइसी भांति जेता अधिक नियम तेताही अधिक फल नियमके प्रसादसे ये प्राणी स्वर्गमे अद्‌भुत सुखभोगे हैं और स्वर्ग से चय कर अद्‌भुत चेष्टा के धारन हारे मनुष्य होय हैं महा कुलवन्ती महा रूपवन्ती महा गुणवन्ती महालावरय कर लिप्त मोतियों के हार पहरे और मन केहरनहारे जे हाव भाव विलास विभ्रम तिन को धरें जे शीलवन्ती स्त्रीतिन के पति होयहैं औ स्त्री स्वर्ग से चय कर बडे कुल में उपजवडे राजावों की राणी होय हैं, लक्ष्मीसमान है स्वरूप जिनका और जो प्राणी रात्रि भोजनका त्याग करे हैं और जलमात्र नहीं ग्रहे हैं उसके अति पुरय उपजे हैं पुरय कर अधिक प्रताप होय है और जो सम्यक्‌दृष्टि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्रत धारे उसके फलका क्या कहना विशेष फल पावें स्वर्ग विषे रत्नमई विमान वहां अप्सरावों के समूह केमध्यमें बहुत काल धर्मके प्रभावकर तिष्ठे हैं फिर दुर्लभ मनुष्य देही पावें इस लिये सदा धर्मरूप रहना और सदा जिनराजकी उपासना करनी जे धर्म परायण हैं उनको जिनेन्द्रकी आराधनाही परम श्रेष्ठ है कैसे हैं जिनेन्द्रदेव जिनके समोसरणकी भूमि रत्न कंचन निरमापित देव मनुष्य तिर्यंचों कर बन्दनीक हैं जिनेन्द्र देव जिनके आठ प्रातिहार्य चौंतीस अतिशय महा अद्भूत हजारां सूर्य्य समान तेज महा सुन्दर रूप नेत्रोंकोसुखदाता, जो भव्यजीव भगवान को भावकर प्रणामकरें सो विचक्षण थोड़ेहीकाल में संसार समुद्र को तिरें श्रीवीतरागदेव के सिवाय कोई दूसरा जीवोंको कल्याण की प्राप्तिका उपाय नहीं इसलिये जिनेन्द्रचन्द्रहीका सेवन योग्य है और अन्य हजारों मिथ्यामार्ग उवट मार्ग हैं तिनमें प्रमादी जीव भूल कर पड़े हैं तिनके सम्यक्त नहीं और मद्य मांसादिक के सेवन से दया नहीं और जैन विषे परम दयाहै रंचमात्र भी दोषकी प्ररूपणा नहीं और अज्ञानी जीवों के यह बड़ी जड़ता है जो दिवस में आहार का त्याग करें और रात्री में भोजन कर पाप उपार्जें चार पहर दिन अनशन व्रत किया उसका फल रात्री भोजन से जाता रहे महा पापका बन्ध होय रात्रीका भोजन महा अधर्म जिन पापियों ने धर्म कह कल्पा कठोर है चित्त जिनका उनको प्रति बोधना बहुत कठिन है जब सूर्य अस्त होय जीव जन्तु दृष्टि न आवें तब जो पापी विषयों का लालची भोचन करे है सो दुरगति के दुःखको प्राप्ति होय हैं योग्य अयोग्य को नहीं जाने हैं सो अविवेकी पाप बुद्धि अन्धकार के पटल कर आच्छादित भए हैं नेत्र जिसके रात्री को भोजन करे हैं सो मक्षिका कीट केशादिक का भक्षण करे हैं जो रात्री भोजन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करे हैं सा डाकनि राक्षस स्वास मार्जार मूसा आदिक मलिन प्राणियों का उच्छिष्ट आहार कर हैं। बहुत प्रपंच कर क्या सर्वथा यह व्याख्यानहै कि जो रात्री को भोजन करे हैं सो सर्व अशुचिका भोजन करे है सूर्य के अस्त भए पीछे कछु दृष्टि न आवे इसलिये दोय महूर्त दिवस बाकी रहे तबसे लेकर दो महूर्त दिन चढ़े तक विवेकियों को चौविधि आहार न करना अशन पान खाद स्वाद ये चार प्रकार के आहार तजने जे रात्री भोजन करे हैं वे मनुष्य नहीं पशु हैं जो जिन शासनसे विमुख व्रत नियम से रहित राती दिवस भखवेही करेहैं सो परलोकमें कैसे सुखी होंय जो दया रहित जीव जिनेन्द्रकी जिन धर्म की और धर्मात्मावों की निंदा करे हैं सो परभव में महा नरकमें जाय हैं और नरक से निकस कर तिर्यंच तथा मनुष्य होय सो दुरगन्धमुखहोयहैं मांस मद्य मधु निशिभोजन चोरी और परनारी जो सेवे हैं सो दोनों जन्म खोवे हैं जो रात्री भोजन करे हैं सो अल्प आयु हीन व्याधि पीड़ित सुख रहित महा दुखी होय हैं रात्री भोजन के पाप से बहुतकाल जन्म मरण के दुख पावें हैं गर्भवास विषे बसे हैं रात्री भोजी अनाचारी शूकर कूकर गरदभ, मार्जार, स्याली, काग, बन, नरकनिगोद स्थावर त्रस अनेक योनि-योमें बहुतकाल भ्रमण करे हैं हजारों अवसर्पणीकाल और हजारों उत्सर्पणी काल योनियोंमें दुःख भोगे हैं जो कुबुद्धि निशि भोजन करे हैं सो निशाचर कहिये राक्षस समानहैं औरजो भव्यजीव जिनधर्मको पायकर नियमोंमें तिष्ठे हैं सो समस्त पापोंको भस्मकर मोक्ष पदको पावेहैं जे अणुव्रतोंमें परायण रत्नत्रय के धारक श्रावक हैं वे दिवसमेंही भोजन करें दोषरहित योग्य आहार करें जे दयावान रात्रीभोजन न करें वे स्वर्ग में सुख भोगकर वहांसे चयकर चक्रवर्त्तादिक के सुख भोगे हैं शुभ है चेष्टा जिनकी उत्तमव्रत चेष्टा

For Private and Personal Use Only

के धरनहारे सौधर्मादि स्वर्गविषे ऐसे भोग पावे जो मनुष्यों को दुरलभ हैं और देवोंसे मनुष्य होय सिद्ध पद पावें हैं कैसे मनुष्यहोंयचक्रवर्ति कामदेव, बलदेव, महा मण्डलीक महाराजाधिराज महा विभूति के धनी, महागुणवान उदारचित्त दीरघआयु सुन्दररूप जिनधर्म के मर्मी जगत्के हितु अनेक नगर ग्रामादिकों के अधिपति नाना प्रकारके वाहनोंकर मण्डित सर्व लोक के वल्लभ अनेक सामन्तों के स्वामी दुस्सह तेज के धारनहारे ऐसे राजा होय हैं अथवा राजावों के मन्त्री पुरोहित सेनापति राजश्रेष्ठी तथा श्रेष्ठी बड़े उमराव महा सामन्त मनुष्यों में यह पद रात्री भोजन के त्यागी पावे हैं देवोंके इन्द्र भवनवासियों के इन्द्र चक्रके धनी मनुष्यों के इन्द्र महालक्षणों कर सम्पूर्ण दिन भोजी होय हैं सूर्य्य सारिखे प्रतापी चन्द्रमा सारिखे सौम्यदर्शन अस्त को प्राप्त न होय प्रताप जिनका देवों समान भोग जिनके ऐसे तेई होवेंगे जो सूर्य अस्त भए पीछे भोजन न करें और स्त्री रात्री भोजनके पाप से माता पिता भाई कुटम्ब रहित अनाथ कहिये पति रहित अभागिनी शोक दलिद्र कर पूर्ण रूक्षे फटे अधर हस्त पादादि सूका शरीर चिपटी नासिका जो देखे सो ग्लानि करे दुष्ट लक्षण बुरी, मांजरी, आंधी, लूली, गूंगी, बहरी, बावरी, कानी, चीपड़ी दुरगंध स्थूल अधर खोटे कर्ण भूरे ऊंचे बुरे सिरके केश तूंबड़ी के बीज समान दांत कुवरण कुलक्षण कांति रहित कठोर अंग अनेक रोगों की भरी मलिन फटे वस्त्र उच्छिष्ट की भक्षणहारी पराई मंजूरी करणहारी नारी होय है रात्रि भोजनकी करणहारी नारी जो पति पावे तो कुरूप कुशील कोढ़ी बुरे कान बुरा नाक बुरी आंखें चिंतावान धन कुटंब रहित ऐसा पावें रात्री भोजन से बिध्वा बालविधवा महादुखवन्ती जल काष्ठादिक भार के बहनहारी दुख कर भरे है उदर जिसका सर्व

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोग करे हैं अपमान जिसका वचनरूप बसोलोंकर छीला है चित्त जिसका अनेक फोड़ा फुनसी की धरणहारी ऐसी नारी होय हैं और जे नारी शीलवन्ती शान्त है चित्त जिनका दयावन्ती रात्रि भोजन का त्याग करे हैं वे स्वर्ग में मन वांछित भोग पावे हैं उनकी आज्ञा अनेक देव देवी सिरपर धारे हैं हाथ जोड़ सिर निवाय सेवा करे हैं स्वर्गमें मन वांछित भोग कर और महा लक्ष्मीवान ऊंचकुलमें जन्मपावे हैं शुभ लक्षण संपूरण सब गुण मण्डित सर्वकला प्रवीण देखनहारों के मन और नेत्रोंकी हरण हारी अमृत समान बचन बोलें आनन्दकी उपजावनहारी जिनके परिणवेकी अभिलाषा चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव तथा विद्याधरोंके अधिपति राखें विजुरी समान है कांति जिनकी कमल समान है बदन जिनका सुन्दर कुंडलआदि आभूषणकी धरणहारी सुन्दर वस्त्रोंकी पहरनेवाली नरेन्द्रकी राणी दिन भोजनसे होयहैं जिन के मन वांछित अन्न धन होयहैं और अनेक सेवक नाना प्रकारकी सेवा करें जे दयावन्ती रात्रिमें भोजन न करें वे श्रीकांता सुप्रभा सुभद्रा लक्ष्मी तुल्य होवें इसलिये नर अथवा नारी नियमविषे है चित्त जिनका वे निशिभोजनका त्याग करें यह रात्रिभोजन अनेक कष्टका देनहाराहै रात्री भोजनके त्यागमें अति अल्प कष्टहै परन्तु इसके फलसे सुख अति उत्कृष्ट होय है इसलिये विवेकी यह व्रत आदरें अपने कल्याण को कौन न वांछे धर्म तो सुखकी उत्पत्ति का मूल है और अधर्म दुखका मूल है ऐसा जानकर धर्मको भजो अधर्मको तजो यह वार्ता लोकमें समस्त बालगोपाल जाने हैं कि धर्म से सुख होय है और अधर्म से दुःखहोयहै धर्मका महात्म्य देखो जिससे देवलोकके चए उत्तममनुष्य होयहैं जलस्थलके उपजे जे रत्न तिनके स्वामी और जगतकी मायासे उदास परंतु केएकदिनतक महाविभूतिके धनी होय गृहवास भोगे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं जिनकेस्वर्ण रत्नवस्त्रधान्योंकेअनेकभंडारहैं जिनकेविभवकी बड़े २ सामंत नानाप्रकारके आयुधोंकेधारक रचा करें तिनके बहुत हाथी घोड़े रथ पयादे बहुत गाय भैंस अनेक देश ग्रामनगर मनके हरनहारे पांच इंद्रियोंके विषय और हंसनीकीसी चाल चलें अति सुन्दर शुभलक्षण मधुर शब्द नेत्रोंको प्रिय मनोहर चेष्टाकी धरणहारी नानाप्रकार आभूषणकी धरणहारी स्त्री होयहैं। सकल सुखका मूल जो धर्महै उसे केयक मूर्ख जानेही नहीं इसलिये तिनके धर्मका यत्ननहीं और केएकमनुष्य सुनकर जाने हैं कि धर्म भलाहै परंतु पापकर्म के वशसे अकार्य में प्रवरते हैं सुखका उपाय जो धर्म उसे नहीं सेवे हैं और केएक अशुभ कर्मके उपशांत होते उत्तम चेष्टा के धरणहारे श्रीगुरु के निकट जाय धर्म का स्वरूप उद्यमी होय पूछे हैं वे श्रीगुरु के वचन के प्रभाव से वस्तुका रहस्य जानकर श्रेष्ठ आचरणको आचरे हैं यह नियम जे धर्मात्मा बुद्धिमान पापक्रिया से रहित होयकर करें हैं वे महा गुणवन्त स्वर्गोंके अद्भुत सुख भोगे हैं परंपराय मोक्ष पावे हैं जे मुनिराजों को निरंतर आहार देय हैं और जिनके ऐसा नियम है कि मुनिके आहार का समय टार भोजन करें पहिले न करें वे धन्यहैं उनके दर्शन की अभिलाषा देवभी राखे हैं दानके प्रभावसे यह मनुष्य इंद्रका पद पावें अथवा मन वांछित सुखका भोक्ता इंद्रके बराबरके देव होयहैं जैसे वटका बीज अल्प है सो बड़ा वृक्ष होय परणवे है तैसे दान तप अल्पभी महा फलके दाताहैं एकसहस्रभट सुभटने यह व्रतलियाथा कि मुनिके आहारकी बेला उलंघकर भोजन करूंगा सो एक दिन ऋद्धि के धारी मुनि आहार को आए सो निरंतराय आहार भया तबरत्नवृष्टि आदि पंचाश्चर्य सुभट के घर भए वह सहस्रभट धर्मके प्रसाद से कुवेरकांत सेठ भया सब के नेत्रोंको

प्रिय धर्म में जिसकी बुद्धि सदा आसक्तहै पृथ्वी में विख्यात है नाम जिसका उदार पराक्रमी महा धनवान जिसके अनेक सेवक जैसे पूर्णमासी का चन्द्रमा तैसा कांतिधारी परम भोगों का भोक्ता सर्व शास्त्र प्रवीण पूर्व धर्म के प्रभावसे ऐसा भया फिर संसारसे विरक्त होय जिन दीक्षा आदरी संसार को पार भया इसलिये जे साधुके आहारके समयसे पहिले आहार न करनेका नियम धारें हैं वे हरिषेण चक्रवर्तीकी न्याई महा उत्सव को प्राप्त होयहैं हरिषेण चक्रवर्ती भी इसही व्रतके प्रभावसे महा पुण्य को उपार्जन कर अत्यन्त लक्ष्मी का नाथ भया ऐसेही जे सम्यक दृष्टि समाधानके धारी भव्य जीव मुनिके निकट जायकर एकबार भोजनका नियमकरे हैं वे एक भुक्तिके प्रभावकर स्वर्गविमानविषयउपजे हैं जहां सदा प्रकाशहै और रात्रिदिवस नहीं निद्रानहीं वहां सागरांपर्यंत अप्सरावोंकेमध्य रमें हैं मोतियों के हार रत्नोंके कड़े कटिसूत्र मुकुट बाजूबन्द इत्यादि आभूषण पहरें जिनपर छत्र फिरें चमर ढुरें ऐसे देवलोकके सुखभोग चक्रवर्त्यादि पद पावे हैं उत्तमव्रतोंमें आसक्त जे अणुव्रतके धारक श्रावग शरीरको बिनाशीक जानकर शांत भयाहै हृदय जिनका अष्टमी चतुर्दशीका उपवास मन शुद्ध होय पोषह संयुक्त धारें हैं वे सौधर्मादि सोल्हवें स्वर्ग में उपजे हैं फिर मनुष्य होय भवबनको तजे हैं मुनिव्रतके प्रभाव से अहिमिन्द्रपद तथा मुक्तिपद पावे हैं जे व्रत गुणशील तपकर मंडितहैं वे साधु जिनशासनके प्रसाद से सर्व कर्म रहितहोय सिद्धोंका पद पावे हैं। जे तीनोंकालमें जिनेंद्रदेवकी स्तुतिकर मन वचन काय कर नमस्कार करे हैं और सुमेरुपर्वत सारिखे अचल मिथ्या स्वरूप पवनकर नहीं चले हैं गुण रूप गहने पहरें शीलरूप सुगंध लगाएहैं सो कईएक भव उत्तमदेव उत्तम मनुष्यके सुख भोगकर परम स्थानको

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राप्त होयहैं जे इंद्रियोंके विषय इस जीवने जगत्में अनंतकाल भोगे तिन विषयोंसे मोहित भया विरक्त भावको नहीं भजे है यह बड़ा आश्चर्य है जो इन विषयों को विषमिश्रित अन्न समान जानकर पुरुषोत्तम काहिये चक्रवर्ती आदि उत्तम पुरुष भी सेवेहैं। संसारमें भ्रमंत हुवे इस जीवके जो सम्यक्त उपजे और एकभी नियम व्रत साधे तो यह मुक्ति का बीज है और जिन प्राणधारियों के एक भी नियम नहीं वे पशु हैं अथवा फूटे कलशहैं गुण रहित हैं। और जे भव्य जीव संसार समुद्रको तिरा चाहे हैं वे प्रमाद रहित होय गुण और व्रतोंसे पूर्ण सदा नियमरूप रहें जे मनुष्य कुबुद्धि खोटे कर्म नहीं तजे हैं और व्रत नियमको नहीं भजे हैं वे जन्मके अन्धे की न्याईं अनंतकाल भवबनमें भटके हैं इस भांति जे श्रीअनन्तवीर्य केवली वेई भए तीनलोकके चन्द्रमा तिनके वचनरूप किरणके प्रभावसे देव विद्याधर भूमि गोचरी मनुष्य तथा तिर्यंच सर्वही आनंदको प्राप्त भए कई एक उत्तम मानवी मुनि भए तथा श्रावग भए सम्यक्त को प्राप्त भए और कईएक उत्तम तिर्यंच भी सम्यक दृष्टि श्रावग अणुव्रत धारी भए और चतुरनिकायके देवोंमें कईएक सम्यक दृष्टि भए क्योंकि देवों के व्रत नहीं।

अथानन्तर एक धर्मरथ नामा मुनि रावणको कहते भए हे भद्र कहिये भव्यजीव तूभी अपनी शक्ति प्रमाण कछु नियम धारणकर यह धर्मरत्नका दीप है और भगवान केवली महा महेश्वर हैं इस रत्न दीपसे कछु नियम नामा रत्न ग्रहणकर क्यों चिन्ताके भारके वश होय रहाहै महा पुरुषों के त्याग खेद का कारण नहीं जैसे कोई रत्न द्वीपमें प्रवेश करे और उसका मन भ्रमें जो मैं कैसा रत्न लूं तैसे इस का मन आकुलित भया जोमैं कैसाव्रत लूं यह रावण भोगासक्त सो इस के चित्त में यह चिन्ता उपजी

For Private and Personal Use Only

कि मेरे खान पान तो सहजही पवित्रहैं सुगन्ध मनोहर पुष्टक शुभ स्वाद मांसादि मलिन वस्तु क प्रसंग से रहित आहारहै और अहिंसा व्रतआदि श्रावगका एकभी व्रत करिबेसमर्थ नहीं मैंअणुव्रत भी धारवेसमर्थनहीं तो महाव्रतकैसे धारूं माते हाथीसमान चित्तमेरा सर्बवस्तुवों में भ्रमता फिरे है मैंआत्म भाव रूपअंकुस से इस को वसकरवे समर्थ नहीं जे निर्ग्रन्थका बृत धरे हैं वे अग्नि की ज्वाला पीवे हैं और पवन को वस्त्रमें बांधनाचाहें हैंऔर पहाड़को उठावनाचाहें हैं मैं महा शूरबीरभी तपव्रतधरने समर्थ नहींअहो धन्यहैंवेनरोत्तम जो मुनिव्रत धरे हैं मैं एकयह नियम धरूं जो परस्त्री अत्यन्त रूपवतीभी होय तो भी उसे बलात्कार से न छुवूं अथवा सर्वलोक में ऐसी कौन रूपवती नारी है जो मुझे देखकर मनमथ की पीड़ी विकल न होय अथवा ऐसी कौन परस्त्री है जो विवेकी जीवों के मनको वशकरे कैसी है पर स्त्री परपुरुष के संयोग से दुखित है अंग जिसका स्वभाव ही से दुर्गंध विष्टा की राशि में कहां राग उपजे ऐसा मनमे विचार भाव सहित अनन्त वीर्य केवली कोप्रणाम करदेवमनुष्य असुरोंकी साक्षितामें प्रगट ऐसा बचन कहता भया ,हे भगवान इच्छा रहित जो परनारी उसे मैंनसेवुं यहमेरेनियम है और कुम्भकर्ण अर्हन्त सिद्ध साधु केवली भाषित धर्म का शरण अंगीकार कर सुमेरुपर्वत सारिखा है अचल चित्त जिसका सो यह नियम करता भया कि मैं प्रातही उठकर प्रति दिन जिनेंद्र की अभिषेक पूजा स्तुति कर मुनिको विधि पूर्वक आहार देयकर आहार करूंगा अन्यथा नहीं मुनि के आहारकी बेला पहिले सर्वथा भोजन न करूंगा और सर्वसाधुओंकोनमस्कारकर और भी घने नियमलिये और देवकहिये कल्पवासी असुर कहिये भवनत्रिक और विद्याधर मनुष्य हर्ष से प्रफुल्लितहैं नेत्र जिनके। सर्व केवली को नमस्कार कर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपने अपने स्थानक गए रावणभी इन्द्रकीसी लीला धरे प्रबल पराक्रमी लंकाकीओर पयान करता भया और आकाश के मार्ग शीघ्रही लंका में प्रवेश किया कैसाहै रावण समस्त नरनारियों के समूह से किया है गुण वरणन जिसका और कैसी है लंका बस्त्रादि कर बहुत समारी है रावण राजमहल में प्रवेश कर सुखसे तिष्ठतेभए राजमन्दिर सर्व सुखका भराहै। हेश्रेणिक पुण्याधिकारी जीवोंके जब शुभकर्मका उदयहोय है तब नानाप्रकारकी सामग्रीका बिस्तार होयहै गुरुके मुखसे धर्मका उपदेश पाय परमपदके अधिकारी होय हैं ऐसा जान कर जिन श्रुति में उद्यमी है मन जिन का वे बारंबार निजपरका बिचारकर धर्मका सेवन करें विनयकर जिन शास्त्र सुनने वालोंके जोज्ञानहै सो रविसमान प्रकाशको धरे है मोहतिमिर का नाश करे है

इति चौदहवां पर्व सम्पूर्णम् ।

अथानन्तर उसही केवली के निकट हनुमान् ने श्रावक के ब्रत लिये और विभीषण ने भी ब्रत लिए भाव शुद्ध होय ब्रत नियम आदरे जैसा सुमेरु पर्वत का स्थिरपना होय उससे अधिक हनूमान् का शील और सम्यक्त परम निश्चल प्रशंसा योग्य है जब गौतम स्वामी ने हनुमान् का अत्यंत सौभाग्य आदि वर्णन किया तब मगध देशके राजा श्रेणिक हर्षित होय गौतम स्वामी से पूछते भए। हे गणाधीश हनुमान् कैसे लक्षणोंका धरणहारा कौन का पुत्र कहां उपजा में निश्चिय कर उसका चरित्र सुनना चाहूं हूं तब सत्पुरुषों की कथा से उपजा है प्रमोद जिन को ऐसे इन्द्रभूत कहिए गौतम स्वामी अल्हादकारी बचनों से कहते भए हे नृप बिजियार्ध पर्वत की दक्षिणश्रेणी पृथिवीसे दस योजन ऊंची तहां आदित्य पुर नामा मनोहर नगर वहां राजा प्रहलाद राणी केतुमती तिन के पुत्र बायुकुमार जिस का बिस्तीर्ण

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वक्षस्थल लक्ष्मी का निवास सा वायुकुमार को संपूर्ण यौवन धरे देख कर पिता के चित्तमें इनके विवाह की चिन्ता उपजी कैसा है पिता परंपराय संतान के बढ़ावने की है बांछा जिसके अब यह जहां वायुकुमार परणेगा सो कहिएहै। भरतक्षेत्रमें समुद्रसे पुर्व दक्षिण दिशाके मध्यदन्तीनामा पर्वत जिसके ऊंचे शिखर आकाशलगरहे हैं नानाप्रकार वृक्ष औषधि तिन संयुक्त और जलके नीझरनेझरे हैं जहांतहां इंद्र तुल्य राजामहेंद्रविद्याधरउसने महेंद्रपुरनगरवसाया इसराजाकेहृदयवेगा राणीउसके अरिंदमादिसौपुत्रमहागुण वानऔर अंजनीसुंदरीपुत्रीसोमानोंत्रैलोक्यकी सुंदरीजस्त्री तिनकेरूप एकत्रकरबनाईहै नीलकमल सारिखे हैं नेत्र जिसकेकामके बाणसमान तीक्ष्णदूरदर्शी कर्णान्तक कटाक्ष और प्रशंसा योग्यकर पल्लवरक्तकमल समान चरण हस्तीके कुम्भस्थल समान कुच और केहरीसमान कटि सुन्दर नितंब कदलीस्तंभ समान कोमलजंघा शुभलक्षण प्रफुल्लित मालती समान मृदु बाहुयुगल गंधर्वादि सर्व कलाकी जाननहारी मानों साक्षात् सरस्वतीही है और रूपकर लक्ष्मीसमान सर्वगुण मंडित एक दिवस नव यौवनमें कंदुक क्रीड़ा करती भ्रमण करती सखियों सहित रमती पिताने देखी सो जैसे सुलोचनाको देखकर राजा अकंपनको चिन्ता उपजी थी तैसे अंजनीको देख राजा महेन्द्रको चिन्ता उपजी तब इसके बर ढूंढनेमें उद्यमी हुए संसारविषे माता पितावों को कन्या दुखका कारणहै जे बड़े कुलके पुरुषहैं उनको कन्या की ऐसी चिन्ता रहे है यह मेरी कन्या प्रशंसा योग्यपति को प्राप्तहोय और बहुत काल इनका सौभाग्य रहे और कन्या निर्दुषण रहे राजामेंहद्रने अपने मंत्रियों से कहा जो तुम सर्व वस्तु में प्रवीणहो कन्या योग्य श्रेष्ठ वर मुझे बतावो तब अमरसागर मन्त्री ने कहा यह कन्या राक्षसोंका अधीश जो रावण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसे देवो सर्व विद्याधारोंका अधिपति उसका संबंध पाय तुम्हारा प्रभाव समुद्रांत पृथ्वीपर होगा अथवा इंद्रजीत तथा मेघनादको देवो और यह भी तुम्हारे मन में न आवे तो कन्याका स्वयंबर रचो ऐसा कहकर अमरसागर मंत्री तो चुप रहा तब सुमतिनामा मंत्री महा पंडित बोला रावणके तो स्त्री अनेक और महा अहंकारी इसे परनावें तोभी अपने अधिक प्रीति न होय और कन्याकी वय छोटी और रावणकी वय अधिक सो बने नहीं इंद्रजीत तथा मेघनाद को परणावें तो उन दोनोंमें परस्पर बिरोध होय आगे राजा श्रीषेणके पुत्रों में विरोध भया इस लिये यह न करना तब ताराधरायण मंत्री कहने लगा दक्षिणश्रेणि विषे कनकपुरनामा नगरहै वहां राजा हिरण्यप्रभ उसके राणी सुमना पुत्र सौदामिनीप्रभ सो महा यशवन्त कांति धारी नव यौवन नववय अति सुंदररूप सर्व विद्याकलाका पार गामी लोकोंके नेत्रोंको आनन्दकारी अनुपम गुण अपनी चेष्टासे हर्षित कियाहै सकल मंडल जिसने और ऐसा पराक्रमी है जो सर्व विद्याधर एकत्रहोय उससे लडें तोभी उसे न जीतें मानों शक्तिके समूह से निरमाया है। सो यह कन्या उसे दो जैसी कन्या तैसा बर योग्य सम्बन्ध है यह वार्ता सुन कर संदेहपरागनामा मंत्री माथा धुनें आंख मीचकर कहता भया वह सौदामिनीप्रभ महा भव्यहै उस के निरंतर यह बिचारहै कि यह संसार अनित्यहै सो संसारका स्वरूप जान बरस अठारहमें वैराग्य धारेगा विषियाभिलाषी नहीं भोगरूप गज बन्धन तुड़ाय गृहस्थका त्याग करेगा बाह्याभ्यंतर परिग्रह परिहार कर केवलज्ञानको पायमोक्ष जायगा सो उसेपरणावे तो कन्यापति बिना शोभा न पावे जैसे चंद्रमा बिना रात्री नीकी न दीखे कैसाहै चंद्रमा जगतमें प्रकाश करनहारा है इस लिये तुम इंद्रके नगर समान

आदित्यपुरनगरहै रत्नोकर सूर्यसमान देदीप्यमानहै। वहां राजा प्रल्हाद महाभोगी पुरुष चंद्रमा समान कांति का धारी उसके राणी केतुमती कामकी ध्वजा उनके वायुकुमार कहिये पवनंजय नामा पुत्र पराक्रम का समूह रूपवान शीलवान गुणनिधान सर्व कलाका पारगामी शुभशरीर महावीर खोटी चेष्टा से रहित उसके समस्तगुण सर्व लोकों के चित्त में व्याप रहे हैं हम सौ वर्ष में भी न कहसकें इसलिये आप ही उसे देख लो पवनंजय के ऐसे गुण सुन सर्वही हर्षको प्राप्त भए कैसा है पवनंजय देवों के समान है द्युति जिसकी जैसेनिशाकरकीकिरणोंकर कुमुदनी प्रफुल्लित होय तैसे कन्याभी यहवार्ता सुनकर प्रफुल्लितभई ॥

अथानन्तर बसन्तऋतु आई स्त्रियोंके मुख कमल की लावण्यताकी हरणहारी शीतऋतु गई कमलिनी प्रफुल्लित भई नवीन कमलोंके समूह की सुगंध से दशों दिशा सुगंध भई कमलों पर भ्रमर गुंजार करते भए कैसे हैं भ्रमर मकरन्द कहिए पुष्प की सुगन्ध रज उसके अभिलाषी हैं वृक्षों के पल्लव पत्र पुष्पादि नवीन प्रगट भए मानों बसंत के लक्ष्मी के मिलाप से हर्ष के अंकुरे उपजे हैं और आम मौल आए तिन पर भ्रमर भ्रमें हैं लोकों के मन को कामबाण वींधते भए कोकिलावों के शब्द मानिनी नायिकावों के मान को मोचन करते भए बसंतसमयपरस्पर नर नारियों के स्नेह बढ़ताभया हिरण जो हैं सो दूबके अंकुरे उखाड़ हिरणी के मुखमें देता भया सो उस को अमृत समान लगे अधिक प्रीती होती भई और बेल वृक्षों से लपटी, कैसी हैं बेलभ्रमर ही हैं नेत्र जिनके, दक्षिण दिशा की पवन चली सो सबही को सुहावनी लगी पवन के प्रसंग से केसर के समूह पड़े सो मानो बसंतरूपी सिंह के केशों के समूह ही हैं, महा सघन कौर बे जातिके जेवृक्ष तिनपर भ्रमरोंके समूह शब्दकरे हैं मानों वियोगिनी नायिकावोंके मनको खेद उपजावनेको बसंतो

ने भेजे हैं, और अशोक जाति के वृक्षों की नवीन कौंपल लहलहाट करें हैं सो मानों सौभाग्यवती स्त्रियों के रागकी राशि ही शोभे हैं। और बनों में केसू अत्यंत फूलरहे हैं सो मानों वियोगनी नायिका के मन के दाह उपजावनेको अग्निसमान हैं दशोंदिशा में फूलोंकी सुगंध रज जिस को मकरन्द कहिये सो पराग कर ऐसी फैलिरही हैं मानों बसंत जो है सो पटवास कहिए सुगंधचूर्ण और वीरता कहिए महोत्सव करे है एक क्षण भी स्त्री पुरुष परस्पर वियोग को नहीं सहार सकें हैं इस ऋतु में विदेश गमन कैसे रुचे ऐसी राग रूप वसंत ऋतु प्रगट भई उस समय फागुण शुदि अष्टमि से लेकर पूर्णमासी तक अष्टान्हिका के दिन महा मंगल रूप हैं, सो इन्द्रादिक देव शची आदि देवी पूजा के अर्थ नन्दीश्वर द्वीप गये और विद्या-धर पूजा की सामग्री लेकर कैलाश गए श्री ऋषभदेव के निर्वाण कल्याणक से वह पर्वत पूजनीक है सो समस्त परिवार सहित अंजनी के पिता राजा महेन्द्र भी गए वहां भगवान् की पूजा कर स्तुति कर और भाव सहित नमस्कार कर सुवर्ण की शिलापर सुखसे विराजे और राजा प्रल्हाद पवनंजय के पिता भी भरत चक्रवर्ती के कराए जे जिन मंदिर तिनकी वंदना के अर्थ कैलाश पर्वत पर गए सो वंदना कर पर्वत पर विहार करते हुए राजा महेंन्द्र की दृष्टि में आए। सो महेंद्र को देखकर प्रीति रूप है चित्त जिन का प्रफुल्लितभए हैं नेत्र जिनके ऐसे जे प्रल्हाद वे निकट आए तब महेन्द्र उठकर सन्मुख आयकर मिले एक मनोग्य शिलापर दोनों हितसे तिष्ठे परस्पर शरीरादि कुशल पूछनेलगे तब राजा महेन्द्र ने कही हे मित्र मेरे कुशल काहेकी क्योंकि कन्या वरयोग्यभई उसके परणावनेकी चिन्ता से चित्त व्याकुल रहे है जैसी कन्या है तैसा वर चाहिये और बड़ा घर चाहिये कौन को दें यह मन भ्रमें है रावण को परणाइये

तो उसके स्त्री बहुत हैं और आयु अधिक है और जो उसके पुत्रोंमेंदें ता उनमें परस्पर विरोध होय और हेमपुरका राजा कनकद्युति उसका पुत्र सौदामिनीप्रभ कहिये विद्युतप्रभ सो थोड़ेही दिनमें मुक्तिको प्राप्त होयगा यह वार्ता सर्व पृथिवीपर प्रसिद्ध है ज्ञानी मुनोंने कहा है हमनेभी अपने मन्त्रियोंके मुखसे सुना है अब हमारे यह निश्चय भया है कि आपका पुत्र पवनंजय कन्या के बरिबे योग्य है यही मनोरथकर हम यहां आए हैं सो आपके दर्शनकर अति आनन्दभया जिससे कछु विकल्प मिटा तब प्रल्हाद बोले मेरे भी चिंता पुत्रके परणावनेकी है इसलिये मैंभी आपका दर्शनकर और वचन सुन वचनसे अगोचर सुखको प्राप्तभया जो आप आज्ञाकरो सोही प्रमाण मेरे पुत्रका बड़ा भाग्य जो आपने कृपा करी वर कन्याका विवाह मानसरोवरके तटपर ठहरा दोनों सेनामें आनन्दके शब्दभए ज्योतिषियोंने तीनदिनका लग्न थापा।

अथानन्तर पवनंजयकुमार अंजनी के रूपकी अद्भुतता सुनकर तत्काल देखनेको उद्यमी भया तीन दिन रह न सका संगमकी अभिलाषाकर यह कुमार कामके वशहुवा वेगोंकर पूरितभया प्रथमवेग विषयकी चिंतासे व्याकुलभया और दूजेवेग देखनेकी अभिलाषा उपजी तीजे वेग दीर्घउच्छ्वास नाखनेलगा चौथे वेग कामज्वर उपजा मानो चन्दनके अग्नि लगी पांचवेंवेग अङ्ग खेदरूपभया सुगंध पुष्पादिसे अरुचि उपजी छठे वेग भोजन विषसमान बुरा लगा सातवें बेग उसकी कथा की आसक्तता कर विलाप उपजा आठवें बेग उन्मत्त हुवा विभ्रमरूप सर्प कर डसा गीत नृत्यादि अनेक चेष्टा करनेलगा नवमें बेग महामूर्च्छा उपजी दसवें वेग दुःख के भारसे पीड़ितभया यद्यपि यह पवनञ्जय विवेकीथा तथादि अञ्जनी के प्रभावकर विह्वल भया हे श्रेणिक कामको धिक्करहो कैसा है काम मोक्षमार्गका विरोधी है कामके बेगकर पवनञ्जय धीरज

रहित भया कपोलों में हाथ लगाय शोकवान् बैठा पसेवसे टपके हैं कपोल जिसके उष्ण निश्वास कर मुरझाये हैं होंठ जिसके और शरीर कम्पायमान भया बारम्बार जंभाई लेनेलगा और अत्यन्त अभिलाषा रूप शल्यसे चिन्तावान भया स्त्री के ध्यान से इन्द्रिय व्याकुल भए मनोग्य स्थानभी इसको अरुचिकारी लगे चित्त शून्यता धारताभया तजी है समस्त शृंगारादि क्रिया जिसने क्षणमात्र में आभूषण पहिरे क्षणमात्रमें खोलडारे लज्जा रहित भया क्षीण होगया है समस्त अङ्ग जिसका ऐसी चिन्ता धारताभया कि वह समय कब होय जो मैं उस सुन्दरी को अपने पास बैठी देखूं और उसके कमल तुल्य गात्रको स्पर्श करूं वा कामनी के रसकी वार्त्ता करूं उसकी बातही सुन कर मेरी यह दशा भई है न जानिये और क्या होय वह कल्याणरूपिणी जिस हृदय में बसे है उस हृदय में दुःख रूप अग्नि का दाह क्यों हो स्त्री तो निश्चय सेती स्वभावही से कोमल चित्त होय हैं मुझे दुःख देने अर्थ चित्त कठोर क्योंभया यह काम पृथिवी में अनंग कहावे हैं तिसके अङ्ग नहीं सो अंग बिनाही मुझे अंग रहित करे है मारे डाले है जो इसके अंग होय तो न जाने क्या करे मेरी देह में घाव नहीं परन्तु वेदना बहुत है मैं एक जगह बैठाहूं और मन अनेक जगह भ्रमे है ये तीन दिन उसे देखेबिना मुझे कुशलसे न जाय इसलिये उसके देखनेका उपाय करूं जिससे मेरे शांतिहोय सो सर्व कार्यों में मित्र समानजगतमें और आनन्द का कारण कोई नहीं मित्रसे सर्व कार्य सिद्ध होंय ऐसा विचार अपना जो प्रहस्त नामा मित्र सर्व विश्वास का भाजन उसे पवनंजय गद गद बाणी कर कहता भया कैसा है मित्र कनारे हो बैठा है छायाकी मूर्ति ही है अपनाही शरीर मानो विक्रियाकर दूजा होरहाहै उससे इस भान्ति कहीं हे मित्र तू मेरासर्व अभिप्राय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाने है तुझे क्या कहूं परन्तु यह मेरी दुःख अवस्था मुझे वाचाल करे है हे मित्र तुम बिना यह बात कौनसे कही जाय तू समस्त जगतकी रीतिको जाने है जैसे किसान अपना दुःख राजासे कहे और शिष्य गुरुसे कहे और स्त्री पतिसों कहै और रोगी वैद्यसों कहे बालक माता सों कहें सो दुःख से छूटे तैसे बुद्धि मान अपने मित्रसे कहैं इसलिये मैं तुझे कहूंहूं वह राजा महेन्द्र की पुत्री उसके श्रवणही कर कामबाण कर मेरी विकल दशाभई है सो उसके देखे बिना मैं तीनदिन निबाहिबे समर्थ नहीं इसलिये कोई ऐसा यत्न कर जो मैं उसे देखूं उसे देखेबिना मेरे स्थिरता न आवे और मेरी स्थिरतासे तुझे प्रसन्नता होय प्राणियों को सर्वकार्य से जीतव्य वल्लभ है क्योंकि जीतव्य के होतेहुए आत्मलाभ होय है इसभान्ति पवनञ्जय ने कही तब प्रहस्त मित्र हँसे मानों मित्रके मनका अभिप्राय पायकर कार्य सिद्ध का उपाय करते भये हे मित्र बहुत कहनेकर क्या अपनेमांहि भेद नहीं जो करनाहो उसमें ढीलमतकरो इसभांति उनदोनोंके वचनालाप होयहैं इतनेमेंसूर्य मानोंइनके उपकारनिमित्त अस्तभया तबसूर्यके वियोगसे दिशाकाली पड़गई अंधकार फैलगया क्षणमात्रमें नीलवस्त्र पहिरे निशा प्रकटभई तब रात्रिके समयोत्साह सहित मित्र को पवनंजय कहते भए। हेमित्र उठो आवो वहांचलें जहां वह मनकी हरणहारी प्राणवल्लभा तिष्ठै है, तबये दोनोंमित्र विमान में बैठ अकाशके मार्ग चले मानों आकाशरूप समुद्रके मच्छही हैं क्षणमात्रमें जाय अंजनीके सत खणे महल पर चढ़ झरोखों में मोतियों की झालरीके आश्रय छिपकर बैठे, अञ्जनी सुन्दरीको पवनंजय कुमार ने देखा कि पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान है मुख जिसका मुखकी ज्योतिसे दीपक मंद ज्योति होय रहे हैं और श्याम श्वेत अरुण त्रिविध रंग को लिये नेत्र महा सुन्दर हैं मानों काम के बाण ही हैं और कुच ऊंचेमहा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनोहर शृङ्गार रस के भरे कलश ही हैं, नवीन कोंपल समान लाल सुन्दर सुलक्षण हैं हस्त और पांव जिसके और नखों की कांति कर मानों लावण्यता को प्रकट करती शोभे है और शरीर महासुन्दर है अति-नाजुक क्षीण कटि कुचों के भार से मत कदाचित् भग्न हो जाय ऐसी शंका से मानों त्रिवली रूप डोरी से प्रतिबद्ध है। और जिस की जंघा लावण्यता को धरे हैं सो केले से भी अति कोमल मानों काम के मंदिर के स्तंभ ही हैं। सो मानो वह कन्या चांदनी रात्री ही है। मुक्ताफल रूप नक्षत्रोंमें युक्त इंद्रनील कमलसमानहे रूपाजिसका। सो पवनंजय कुमार एकाग्र लगे हैं नेत्र जिसके अंजनी को भले प्रकार देख सुखकी भूमिको प्राप्त भया उसही समय बसंततिलका सखी महाबुद्धिवती अंजना सुन्दरीसे कहती भई कि हे सुरूपे तू धन्यहै जो तेरे पिताने तू वायुकुमारको दीनी वे वायुकुमार महा प्रतापी है तिनके गुण चन्द्रमाकी किरणसमान उज्ज्वलहैं तिनसे समस्त जगत व्याप्त होय रहाहै जिनके गुण सुने अन्य पुरुषोंके गुण मंद भासे हैं जैसे समुद्रमें लहर तिष्ठै तैसे उस योधाके अंग विषे तू तिष्ठेगी कैसी है तू महा मिष्टभाषिणी चन्द्र कांति रत्नोंकी प्रभाको जीते ऐसी कांति तेरी तू रत्नकी धरा रत्ना चल पर्वतके तटमें पड़ी तुम्हारा सम्बन्ध प्रशंसाके योग्य भया इससे सर्वही कुटंबके जन प्रसन्न भए इस भांति जब पतिके गुण सखीने गाए तब वह लाजकी भरी चरणोंके नखकी ओर नीचे देखती भई आनंद जल रूप जलकर हृदय भर गया और पवनंजय कुमारभी हर्षसे फूल गए।

अथानन्तर उस समय एक मिश्रकेशी नामा दूजी सखी होंठ चाबकर चोटी हलायकर बोली अहो परम अज्ञान तेरा यह कहां पवनंजयका सम्बन्ध सराहा जो विद्युतप्रभ कुंवरसे सम्बन्ध होता तो श्रेष्ठ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

था जो पुण्यके योगसे कन्याका विद्युतप्रभ पति होता तो इसका जन्म सफल होता हे बसंतमाला विद्युतप्रभ और पवनंजयमें इतना भेदहै जितना समुद्र और गोष्पदमें भेदहै विद्युतप्रभ की कथा बडे बड़े पुरुषोंके मुखसे सुनी है जैसे मेघके बून्द की संख्या नहीं तैसे उसके गुणों का पार नहीं वह नव यौवन है । महासौम्य विनयवान देदीप्यमान विद्यावान बुद्धिवान बलवान सर्व जगत चाहे दर्शन जिस का सब यही कहें हैं कि यह कन्या उसे देनी थी सो कन्याके बापने सुनी वह थोड़े ही दिनोंमें मुनि होयगा इसलिये संबंध न किया सो भला न किया विद्युत्प्रभका संयोग एक क्षणमात्रही भला और क्षुद्र पुरुषकासंयोग बहुतकालभी किस अर्थ यहवार्तासुनकर पवनंजयक्रोध रूपअग्नि करप्रज्वालितभएक्षणमात्र में औरही छायाहोगई रससेविरसआगए लालआंखे होगई होंठडसकर तलवार म्यानसे काढ़ीऔरप्रहस्तमित्र से कहतेभए इसेहमारीनिन्दा सुहावे है औरयहदासी ऐसेनिंद्यबचन कहे और यहसुने सोइन दोनोंकासिरकाट डारूं विद्युतप्रभ इनके हृदयकाप्यारा है सो कैसेसहाय करेगा यहबचन पवनंजयके सुन प्रहस्तमित्र रोषकर कहता भया हेसखे हेमित्र ऐसे अयोग्य बचन कहनेकर क्या तुम्हारी तलवार बड़ेसामंतोंके सीसपरपडेस्त्रीअबला अवध्यहैइनपर कैसे पडे यहदुष्टदासी इनके अभिप्राय बिना ऐसे कहे हैं तुम आज्ञाकरोतो इसदासी को एकदंड कीचोटसे मारडालूं परन्तुस्त्रीहत्या बालहत्या पशुहत्या दुर्बलमनुष्यकीहत्या इत्यादि शास्त्रमेंबर्जनीयकहीहै ये बचन मित्र के सुनकर पवनंजय क्रोधको भूलगये और मित्रको दासीपरक्रूर देखकर कहते भए । हे मित्र तुमअनेक संग्राम के जीतनेहारे यशके अधिकारी माते हाथियों के कुंभस्थल बिदारनेहारे तुमको दयाही करनी योग्य है और सामान्य पुरुष भी स्त्रीहत्या न करें तो तुम कैसे करो जे बड़े कुल में उपजे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरुष हैं और गुणोंसे प्रसिद्धहैं शूरवीर हैं तिन का यश अयोग्य क्रियासे मलिनहोयहै इसलियेउठो जिस मार्गआए उसही मार्ग चलो जैसे छाने आए थे तैसे ही चले पवनंजय के मन में यह भ्रांति पड़ी कि इस कन्याको विद्युतप्रभही प्रियहै इस लिये उसकी प्रशंसा सुने है हमारी निन्दा सुने है जो इसे न भावे तो दासी काहेको कहै यहरोसधर अपनेकहे स्थानकपहुंचे पवनंजयकुमार अंजनीसे अतिफीके पड़गए चित्त में ऐसे चितवतेभए कि दूजे पुरुषकाहै अनुराग जिसको ऐसी अंजनीसो विकराल नदीकी न्याईं दूरही से तजनी कैसीहै वह अंजनीरूप नदी संदेहरूप जे विषम भ्रमण तिनको धरे है और खोटे भावरूप जे ग्राह तिनसे भरी है और वह नारी बनीसमानहै अज्ञानरूप अंधकारसे भरी इंद्रियरूप जे सर्प तिनको धरे है पंडितोंको कदाचित नसेवनी । खोटे राजाकी सेवा और शत्रुके आश्रय जाना और शिथिल मित्र और अनासक्त स्त्री इनसे सुख कहां देखो जे विवेकी हैं वे इष्टबन्धु तथा सुपुत्र और पतिव्रता नारी इनका भी त्यागकर महाव्रत धरे हैं और शुद्ध पुरुष कुसंगभी नहीं तजे हैं मद्यपानी वैद्य और शिक्षा रहित हाथी और निःकारण वैरी क्रूरजन और हिंसारूप धर्म और मूर्खों से चर्चा और मर्यादाका उलंघना निर्दई देश बालक राजा स्त्रीपर पुरुष अनुरागिनी इनको विवेकी तजें इसभांति चिंतवन करता जो पवनंजयकुमार उसके जैसे दुलहिनसे प्रीति गई तैसे रात्रिगई और पूर्व दिशामें संध्या प्रकट भई मानों पवनंजयने अंजनीका राग छोडा सो भ्रमता फिरे है । (भावार्थ) रागका स्वरूप लालहै और इनसेजो राग मिटा सो उसने संध्याके मिसकर पूर्वदिशामें प्रवेश कियाहै और सूर्यआरक्त ऐसाउगाजैसा स्त्रीके कोपसे पवनंजयकुमार कोपा कैसाहै सूर्यतरुण बिम्बको धरे है और जगतकी चेष्टाका कारणहै तब पवनंजयकुमार

For Private and Personal Use Only

पद्म पुराण ॥२८६॥

प्रहस्त मित्रको कहतेभए अत्यंत अरुचिको धरें अंजनीसे विमुखहै मन जिनका हे मित्र यहां अपने डेरे हैं सो यहांसेउसका स्थानकसमीपहै सो यहां सर्वथा न रहना उसको स्पर्शकर पवनआवे सो मुझे न सुहावे इस लिये उठो अपने नगरचलें ढील करनी उचित नहीं तब मित्रकुमारकी आज्ञा प्रमाण सेनाके लोगों को पयानेकी आज्ञा करताभया समुद्रसमान सेनारथ घोडे हाथी पयादे इनका बहुतशब्दभया कन्याका निवास नजीकही है सो सेनाके पयानके शब्दकन्याके कानमें पडे तब कुमारका कूचजानकर कन्या अतिदुखित भई वे शब्द कानको ऐसे बुरे लगे जैसे वज्रकी शिला कानमें प्रवेशकरे और ऊपरसे मुद्गरकी घात पडे मनमें विचारती भई हायहाय मुझे पूर्वोपार्जित कर्मने महानिधान दियाथा सो छिनायलिया क्या करूं अब क्याहोय मेरेयह मनोरथथा कि इस नरेंद्रके साथक्रीडा करूंगी परंतु औरही भांति दृष्टिआवे है तो अपराध कछु न जान पडे है परंतु यहमेरी वैरिन मिश्रकेशी इसने निन्द्य वचनकहेथे सो कभी कुमार कुमारको यहखबर पहुंची होय और मेरेमें कुमाया करीहोय यह विवेकरहित पापिनी कटुभाषिणी धिक्कार इसे जिसने मेरा प्राणवल्लभ मुझसे कृपारहित किया अब जो मेरे भाग्य होय और मेरा पिता मुझपर कृपा कर प्राणनाथ को पीछा बहोडे और उनकी सुदृष्टि होय तो मेरा जीतव्य है और जो नाथ मेरा परित्याग करे तो मैं आहार को त्याग कर शरीर को तजूंगी ऐसा चिन्तवन करती वह सती मूर्छा खाय धरती पर पड़ी जैसे बेलि की जड उपाड़ी जाय और वह आश्रय से रहित होय कुमलाय जाय तैसे कुमलाय गई तब सर्व सखीजन यह क्या भया ऐसे कहकर अति संभ्रमको प्राप्तभई शीतल क्रियासे इस सचेत किया तब इससे मूर्छाका कारण पूछा सो यह लज्जासे कह न सके निश्चल लोचन होय रही।

अथानन्तर पवनंजयकी सेना के लोक मन में आकुल भए और विचार करते भए कि निःकारणकूच काहे का यह कुमार विवाह करने आया था सो दुलहिन को परण कर क्योंन चले, इसको कोप काहेसे भया इसको कौन ने क्या कहा, सर्व वस्तु की सामग्री है काहू वस्तुकी कमी नहीं इसका सुसरा बड़ा राजा कन्या अति सुन्दरी यह पराङ्मुख क्यों भया तब कैयक हंस से कहते भए इसका नाम पवनंजय है सो अपनी चंचलता से पवनहूं को जीते है और कैयक कहते भए अभी स्त्री का सुख नहीं जाने है इसलिये ऐसी कन्या को छोड़ कर जाने को उद्यमी भयाहे, जो इसके रतिकेलि का राग होय तो जैसे वनहस्ती प्रेम के बंधन से बंधे है तैसे यह बंध जाय, इस भांति सेना के सामंत कहे हैं और पवनंजय शीघ्र गामी वहानपर चढ़ चलने को उद्यमी भए तब कन्या का पिता राजा महेंद्रकुमार का कूच सुन कर अति आकुल भया समस्त भाईयों सहित राजा प्रल्हाद पै आया प्रल्हाद और महेन्द्र दोनों आय कुमार को कहते भए हे कल्याण रूपहमको शोक का करणहारा यह कूच काहे को करियेहै अहो कौनने आपको क्या कहा है शोभायमान तुम कौनको अप्रियहो जो तुमको न रुचे सो सबही को न रुचे तुम्हारे पिताका और हमारा वचन जो सदोष होय तो भी तुमको मानना योग्य है सो तो हम समस्तदोष रहितकहे हैं तुम को अवश्य धारना योग्यहै हे शूरवीर कूच से पीछे फिरो हमारे दोनों के मनवांछित सिद्ध करो। हम तुम्हारे गुरु जन हैं सो तुम सारिखे सत् पुरुषों को गुरुजनों की आज्ञा आनंद का कारण है ऐसा जब राजा महेन्द्र ने और प्रल्हाद ने कहा तब यह कुमार धीरवीर विनय कर नम्री भूत भयाहे मस्तक जिसका जब तातने और ससुरने बहुत आदरसे हाथ पकड़े तब यह कुमार गुरुजनोंकीजो गुरुतासो उलंघनेको असमर्थ भया उनकी आज्ञासेपीछे बाहुडा और

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनमें बिचारी कि इसे परणकर तजदूंगा ताकि दुःखसे जन्म पुराकरे और परकाभी इसेसंयोगन होय सके ॥

अथानन्तर कन्या प्राणवल्लभ को पीछे आया सुन कर हर्षित भई रोमांच होय आए लग्न के समय इनका विवाहमंगल भया जब दूलहे को दुलहिन का करग्रहण कराया सो अशोक के पल्लव समान आरक्त अति कोमल कन्या के कर सो इस विरक्त चित्तके अग्निकी ज्वाला समान लगे विना इच्छा कुमार की दृष्टि कन्या के तनुपर काहू भांति गई सो क्षणमात्र भी न सह सका जैसे कोई विद्युत्पात को न सह सके। कन्याके प्रीति वरके अप्रीति यह इसके भावको न जाने ऐसा जान मानों अग्नि हंसती भई और शब्द करती भई, बडे विधान से इनका विवाह कर सर्वबंधु जन आनन्द को प्राप्त भए मान सरोवर के तट विवाह भया नानाप्रकार वृक्षलता फल पुष्प विराजित जो सुंदर वन वहां परम उत्सवकर एक मास रहे परस्पर दोनों समधियों ने अति हित के बचन आलाप कहे परस्पर स्तुति महिमा करी सन्मान किए पुत्री के पिता ने बहुत दान दिया अपने अपने स्थान को गए ॥

हे श्रेणिकजे वस्तुका स्वरूप नहीं जा ने हैं और विना समझे परायेदोष ग्रहे हैं वे मूर्ख हैं और पराए दोष कर आप ऊपर दोष आयपड़े हैं सो सब पाप कर्म का फल है॥ इति पन्द्रहवां पर्व सम्पूर्णम्

अथानन्तर पवनञ्जयकुमार ने अञ्जनी सुन्दरी को परण कर ऐसी तजी जो कभी बात न बूझे सो वह सुन्दरी पती के असंभाषण से और कृपा दृष्टि कर न देखने से परम दुःख करती भई रात्री में भी निद्रा न लेय निरन्तर अश्रुपातही झरा करें शरीर मलिन होगया पतिसे अति स्नेह धनीका नाम अति सुहावे पवन जावे सोभी अति प्रिय लगे पतिका रूप जो विवाह की वेदी में अवलोकन कियाथा उस

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का मन में ध्यान कर करे और निश्चल लोचन सर्व चेष्टा रहित बटी रहे अन्तरङ्ग ध्यानमें पति का रूप निरूपण कर बाह्यभी दर्शन किया चाहे सो न होय तब शोक कर बैठ रहे चित्र पटमें पतिका चित्राम लिखने का उद्यम करे तब हाथ कांप कर कलम गिरपड़े दुरबल होयगया है समस्त अंग जिसका ढीले होयकर गिर पड़े हैं सर्व आभूषण जिसके दीर्घ उष्ण जे उच्छवास उनकर मुरझायगये हैं कपोल जिस के अंग में वस्त्रके भी भारकर खेदको धरती संती अपने अशुभ कर्मको निंदती माता पिताको बारंबार याद करती संती शून्य भया है हृदय जिसका दुःखकर क्षीण शरीर मूर्छा में आजाय चेष्टा रहित होय जाय अश्रुपात से रुक गया है कण्ठ जिसका दुखकर निकसे हैं वचन जिसके विभ्रमभई संती दैव कहिये पूर्वोपार्जित कर्म उसे उलाहनादेय चन्द्रमाकी किरणोंसे भी जिको अति दाह उपजे और मन्दिरमें गमन करती मूर्छाखाय गिरपड़े और बिकल्पकी मारी ऐसे विचार करे अपने मनहीमें पतिसे बतलावे हैं नाथ तुम्हारे मनोग्य अंग मेरे हृदयमें निरन्तर तिष्ठे मुझे आताप क्यो करें हैं और मैं आपका कछु अपराध नहीं किया निःकारण मेरे पर कोप क्यों करो अब प्रसन्न होवो मैं तुम्हारी भक्तहूं मेरेचितके विषाद को हरो जैसे अन्तरंग दर्शन देवो हो तैसे बहिरंग देवो यह मैं हाथजोड़ बीनती करूं हूं जैसे सूर्यबिना दिनकी शोभा नहीं और चन्द्रमा बिना रात्रीकी शोभा नहीं और दया क्षमा शील संतोषादि गुणबिना विद्याशोभे नहीं तैसे तुम्हारी कृपा बिना मेरी शोभा नहीं इसभांति चित्तविषे बसे जो पति उसे उलाहना देय और बड़ मोतियों समान नेत्रों से आंसुवों की बूंद झरे महा कोमल सेज और अनेक सामग्री सखीजन करें परन्तु उसे कछ न सुहावे चक्रारूढ समान मनमें उपजा है वियोगसे भ्रम जिसको स्नानादि संसकार रहित

For Private and Personal Use Only

कभीभी केश समारे गूथे नहीं केशभी रूषे पड़गये सर्व क्रिया में जड़ मानों पृथिवीहीका रूप होरहीरही है और निरन्तर आंसुवों के प्रवाहसे मानो जलरूपही होयरही है हृदयके दाहके योगसे मानो अग्निरूपही होयरही है और निश्चल चित्तके योगसे मानो वायु रूपही होय रही है और शून्यताके योगसे मानो गगन रूपही होयरही है मोहके योगसे आच्छादित होय रहा है ज्ञान जिसका भूमिपर डार दिये हैं सर्व अंग जिसने बैठ न सके और बैठे तो उठ न सके और उठे तो देहीको थांभ न सके सो सखी जनका हाथपकड़ विहारकरे सो पग डिगजाय और चतुर जे सखीजन तिनसे बोलनेकी इच्छा करे परन्तु बोल न सके और हंसनी कबूतरीआदि गृह पक्षी तिनसे क्रीड़ाकिया चाहे पर कर न सके यह बिचारी सबोंसे न्यारी बैठीरहे पति में लग रहाहै मन और नेत्र जिसकें निःकारण पतिसे अपमान पाया सो एकदिन बरस बराबरजाय यह इसकी अवस्था देख सकल परिवार व्याकुल हुवा सबही चितवतेभए कि इता दुख इसको विना कारण क्यों भया है यह कोई पूर्वोपार्जित पाप कर्म का उदय है पिछले जन्म में इसने किसीके सुख विषे अन्तराय कियाहै सो इसकेभी सुखका अन्तरायभया वायुकुमारतो निमित्त मात्रहै यह बारी भोरी निरदोष इसे परणकर क्यों तजी ऐसी दुलहिन सहित देवों समान भोग क्यों न करे इसने पिताके घर कभी रंचमात्र भी दुख न देखा सो यह कर्मानुभाव कर दुखके भारको प्राप्त भई इसकी सखीजन बिचारे हैं कि क्या उपाय करें हम भाग्य रहित हमारे यत्नसाध्य यह कार्य नहीं यह कोई अशुभकर्मकी चालहै अब ऐसा दिन कबहोयगा वह शुभमुहूर्त शुभ बेला कब होयगा जो वह प्रीतम इस प्रियाको समीप ले बैठेगा और कृपा दृष्टिकर देखेगा मिष्ट बचन बोलेगा यह सबके अभिलाषा लग रही है ।

अथानंतर राजा वरुण उसके रावणसे विरोध पड़ा वरुण महा गर्भवान रावणकी सेवा न करेसो रावण ने दूत भेजा दूतजाय वरुणसे कहताभया दूतधनी की शक्तिकर महाकांति को धरे है अहो विद्याधराधिपते वरुण सर्वका स्वामी जो रावण उसने यह आज्ञा करी है कि आप मुझे प्रणाम करो अथवा युद्धकी तैयारी करो तब वरुणने हंसकर कहीहो दूत कौनहै रावण कहां रहेहै जो मुझे दबावेहै सो मैं इंद्र नहींहूं वह वृथा गर्वित लोकनिन्द्य था मैं वैश्रवण नहीं मैं यमनहीं मैं सहस्त्ररश्मि नहीं मैं मरुत नहीं रावणके देवाधिष्ठित रत्नोंसे महा गर्व उपजाहै उसकी सामर्थ है तो आवो मैं उसे गर्वरहित करूंगा औरतेरी मृत्युनजीकहै जो हमसे ऐसीबात कहे है तब दूतने जायकर रावणसे वृतांतकहा रावण ने कोपकर समुद्रतुल्य सेनासहित जाय वरुणका नगरघेरा और यह प्रतिज्ञाकरी कि मैं इसे देवाधिष्ठित रत्नों बिनाही बश करूंगा मारूं अथवा बांधू तब वरुणके पुत्र राजीव पुण्डरादिक क्रोधायमान होय रावणके कटकपर आए रावणकी सेनाके औरइनके बड़ा युद्ध भया परस्पर शस्त्रोंका समूह छेद डारे हाथी हाथियोंसे घोडे घोड़ोंसे रथ रथोंसे भट भटोंसे महायुद्ध करतेभए बड़े २ सामंतहोंठ डसडसकर लाल नेत्रहैं जिनके वे महा भयानक शब्द करतेभए बडीबेरतक संग्राम भयासो वरुणकी सेना रावणकी सेनासे कछू इक पीछे हटी तब अपनी सेनाको हटी देख वरुणराक्षसोंकी सेनापर आप चलाआयाकालाग्नि समान भयानक तब रावण वरुणको दुर्निवारण भूमिमें सन्मुख आवता देखकरआप युद्ध करनेको उद्यमी भए वरुणके और रावणके आपसमें युद्ध होनेलगा और वरुणके पुत्र खरदूषणसे युद्ध करतेभए कैसे हैं वरुण के पुत्र महाभटोंके प्रलय करनेहारे और अनेक माते हाथियोंके कुम्भस्थल बिदारनहारेसो रावण क्रोध

कर दीसहै मन जिसका महाक्रूर जो भृकुटी तिनसे भयानकहै मुख जिसका कुटिलहै केश जिसके जब लग धनुषके बाण तान वरुणपर चलावे तब लग वरुणके पुत्रोंने रावणके बहनेऊ खरदूषणको पकड़ लिया तब रावणने मनमें बिचारी जो हम वरुणसे युद्धकरें और खरदूषणका मरणहोय तो उचित नहीं इसलिये संग्राम मने किया जे बुद्धिवानहैं वे मंत्रमें चूके नहीं तब मंत्रियोंसे मंत्रकर सब देशोंकेराजा बुलाए शीघ्रगामी पुरुष भेजे सबनको लिखा बड़ी सेनासहित शीघ्रही आवो और राजा प्रल्हादपर भी पत्रलेय मनुष्य आया सो राजा प्रल्हादने स्वामीकी भक्तिकर रावणके सेवकका बहुत सन्मान किया और उठ कर बहुत आदरसे पत्र माथे चढ़ाया और बांचा सो पत्रमें इस भांति लिखाथा कि पातालपुरके समीप कल्याणरूप स्थानकमें तिष्ठता महाक्षेम रूप विद्याधरोंके अधिपतियोंका पति सुमाली का पुत्र जो रत्नश्रवा उसका पुत्र राक्षस बंशरूप आकाश में चन्द्रमा ऐसा जो रावण सो आदित्य नगरके राजा प्रल्हादको आज्ञा करे है कैसाहै प्रल्हाद कल्याण रूप है। न्याय का वेत्ता है देश काल विधान का ज्ञायकहै हमारा बहुत बल्लभहै प्रथमतो तुम्हारे शरीरकी कुशल पूछे है फिरयह समाचारहैकि हमकोसर्व खेचर भूचर प्रणामकरें हैं हाथोंकी अंगुली तिनके नखकी ज्योतिकर सो ज्योतिरूप किएहैं निज सिर के केश जिनने और एक अति दुर्बुद्धि वरुण पाताल नगरमें निवास करे है सो आज्ञासे पराङ्मुखहोय लड़नेको उद्यमी भया है हृदयकी व्यथाकारी विद्याधरोंके समूहसे युक्तहै समुद्रके मध्यद्वीप को पाय कर बहुत दुरात्मा गर्वको प्राप्त भयाहै सो हम उसके ऊपर चढ़कर आएहैं बड़ा युद्धभयावरुणकेपुत्रोंने खरदूषणको जीवता पकड़ाहै सो मंत्रियों ने मंत्र कर खरदूषणके मरणकी शंका से युद्ध मने कियाहै

इसलिये खरदूषन को छुड़ावना और वरुण को जीतना सो तुम अवश्यआइया ढील करो मत तुम सारिखे पुरुष कर्तव्य में न चूकअब सब विचार तुम्हारे आवने पर है यद्यपि सूर्य तेजका पुंज है तथापि अरुण सारिखा सारथी चाहिए तब राजा प्रल्हाद पत्र के समाचार जान मंत्रियों सों मंत्र कर रावण के समीप चलने का उद्यमी भए तब प्रल्हाद का चलता सुनकर पवनंजय कुमार ने हाथ जोड़ गोड़ों से धरती स्पर्श नमस्कार कर विनती करी। हे नाथ! मुझ पुत्र के होते संते तुमको गमन युक्त नहीं पिता जो पुत्र को पाले है सो पुत्र का यही धर्म है कि पिता की सेवा कर जो सेवा न करे तो जानिये पुत्र भया ही नहीं इसलिये आप कूच न करें मुझे आज्ञा करें तब पिता कहते भए हे पुत्र तुम कुमार हो अबतक तुमने कोई खेत देखा नहीं इसलिये तुम यहां रहो मैं जाऊंगा तब पवनंजयकुमार कनकाचल के तट समान जो वक्षस्थल उसे ऊंचा कर तेज के धरणहारे वचन कहते भए हे तात! मेरी शक्ति का लक्षण तुमने देखा नहीं जगत् के दाह में अग्नि के स्फुलिंगे का क्या वीर्य परखना तुम्हारी आज्ञारूप आशिषा कर पवित्र भया है मस्तक मेरा ऐसा जो मैं सो इंद्र को भी जीतने को समर्थ हूं इसमें संदेह नहीं। ऐसा कह कर पिता को नमस्कार कर महाहर्ष संयुक्त उठकर स्नान भोजनादि शरीर की क्रिया करी, और आदर सहित जे कुल में वृद्ध हैं तिन्हों ने असीस दीनी भाव सहित अरिहंत सिद्ध को नमस्कार कर परम कांति को धरताहुवा महामंगल रूप पिता से विदा होने आया सो पिता ने और माता ने मंगल के भय से आंसू न काढ़े आशीर्वाद दिया हे पुत्र! तेरी विजय होय छाती से लगाय मस्तक चूंबा पवनंजयकुमार श्री भगवान् का ध्यान धर मात पिता को प्रणाम कर जे परिवार के लोग पायन पड़े तिनको बहुत धीर्य बंधाय सब से अतिस्नेह कर विदा

भए पहले अपना दाहना पांव आगे धरचले फुरके है दाहिनी भुजा जिनकी और पूर्ण कलश जिनके मुखपर लाल पल्लव तिनपर प्रथमही दृष्टिपड़ी और थम्भसे लगीहुई द्वारेखड़ी जो अञ्जनी सुन्दरी आंसुवों से भीज रहे हैं नेत्र जिसके तांबूलादिरहित धूसरे होय रहे हैं अधर जिसके मानो थंभमें उकरी पूतलीही है कुमारकी दृष्टि सुन्दरीपर पड़ी सो क्षणमात्र में दृष्टि संकोच कोपकर बोले हे दुरीक्षणे कहिये दुःखकारी है दर्शन जिसका इस स्थानक से जावो तेरी दृष्टि उलकापात समान है सो मैं सहार न सकूं अहो बड़े कुल की पुत्री कुलवन्ती तिनमें यह ढीटपणा कि मने किए भी निर्लज्ज उभी रहैं ये पतिके अतिक्रूर वचन सुनें तौभी इसे अति प्रिय लगें जैसे घने दिनके तिसाए पपैये को मेघकी बूंद प्यारी लगे सो पतिके वचन मनकर अमृत समान पीवती भई हाथ जोड़ चरणारविन्द की ओर दृष्टि धर गदगद वाणी कर डिगते डिगते वचन नीठि नीठि कहती भई हे नाथ जव तुम यहां विराजते थे तबभी मैं वियोगिनीही थी परन्तु आप निकट हैं सो इस आशाकर प्राण कष्टसे ठिक रहे ह अब आप दूर पधारे हैं मैं कैसे जीवुंगी मैं तुम्हारे वचनरूप अमृत के आस्वादने की अति आतुर तुम परदेशको गमन करते स्नेहसे दयालुचित्त होयकर वस्ती के पशु पक्षियों कोभी दिलासा करी मनुष्यों की तो क्या बात सबसे अमृत समान वचन कहे मेरा चित्त तुमारे चरणारविन्द में है मैं तुम्हारी अप्राप्तिकर अति दुखी औरोंकी श्रीमुखसे एती दिलासा करी मेरी औरोंके मुखसेही दिलासा कराई होती जब मुझे आपने तजी तब जगत्में शरणनहीं मरणही है तब कुमारने मुख संकोचकर कोपसे कहीमर॥ तब यह सती खेद खिन्न होय धरतीपर गिरपड़ी पवन कुमार इससे कुमायाही में चले बड़ी ऋद्धि सहित हाथीपर असवार होय सामन्तो सहित पयान किया

पहिलेही दिनमें मान सरोवर जाय डेरे भए पुष्ट हैं वाहन जिनके सो विद्याधरों की सेना देवोंकी सेना समान आकाश से उतरतीहुई अति शोभामान दीखतीभई कैसीहै सेना नानाप्रकाके जे वाहन और शस्त्र वेई हैं आभूषण जिसके अपने २ वाहनों के यथायोग्य यत्न कराए स्नान कराए खानपानका यत्न कराया

अथानन्तर विद्याके प्रभावसे मनोहर एक बहुषणा महल बनाया चौड़ा और ऊंचा सो आप मित्र सहित महल ऊपर विराजे संग्रामका उपजाहै अति हर्ष जिनकै झरोखावों की जाली के छिद्रोंसे सरोवर के तट के वृक्षों को देखते थे शीतल मन्द सुगन्ध पवन से वृक्ष मन्द मन्द हालते थे और सरोवर में लहर उठतीथी सरोवर के जीव कछुवा, मीन, मगर, और अनेकप्रकारके जलचर गर्वके धरण हारे तिन की भजावों से किलोल होय रही है उज्ज्वल स्फटिक मणिसमान निर्मल जलहै जिसमें नानाप्रकार के कमल फूलरहे हैं हंस कारंड, क्रौंच, सारस इत्यादि पक्षी सुन्दर शब्दकर रहे हैं जिनके सुनेसे मन और कर्ण हर्ष पावें और भ्रमर गुञ्जार कररहें हैं वहां एक चकवी चकवे बिना अकेली वियोगरूप अग्नि से तप्तायमान अति आकुल नानाप्रकार चेष्टाकी करनेहारी अस्ताचल की ओर सूर्यगया सो उसतरफ लग रहे हैं नेत्र जिके और कमलिनीके पत्रों के छिद्रों में बारम्बार देखे है पांखों को हलावती उठै है और पड़े है और मृणाल कहिये कमलकी नालका तार उसका स्वाद विष समान लगे है अपना प्रतिविम्ब जलमें देखकर जाने है कि यह मेरा पीतम है सो उसे बुलावे है सो प्रतिविम्ब कहां आवे तब अप्राप्ति से परम शोकको प्राप्तभई है कटक आय उतराहै सो नाना देशोंके मनुष्योंके शब्द और हाथी घोड़ा आदि नानाप्रकारके पशुवों के शब्द सुनकर अपने वल्लभ चकवाकी आशाकर भ्रमे है चित्त जिसका अश्रुपात

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहित हैं लोचन जिसके तटके वृक्षपर चढ़कर दशोंदिशा की ओर देखे है पीतमको न देखकर अतिशीघ्र ही भूमि पर आय पड़े हैं पांख हलाय हलाय कमलिनी की जो रज शरीर के लगी है सो दूर करे है सो पवन कुमार ने घनी बेर तक दृष्टि धर चकवी की दशा देखी, दयाकर भीज गया है चित्त जिसका चित्तमें ऐसा विचारा कि पीतम के बियोगकर यह शोक रूपअग्निमेंबले है यह मनोग्य मानसरोवर और चन्द्रमाकी चांदनी चन्दन समान शीतल सो इस बियोगिनी चकवी को दावानल समान है पति बिना इसको कोमल पल्लवभी खड्ग समान भासे हैं चन्द्रमा की किरण भी वज्रसमान भासे हैं स्वर्ग भी नरकरूप होय आचरे है ॥ ऐसा चिंतवन करते इसका मन प्रिया विषे गया और इस मानसरोवर पर ही विवाह भया था सो वे विवाह के स्थानक दृष्टि में पड़े सो इस को अतिशोक के कारण भये मर्म के भेदन हारे दुःसह करोंत समान लगे। चित्त में विचारता भया हायहाय मैंक्रूरचित्त पापी वह निर्दोष वृथा तजी एक रात्रि का बियोग चकवी न सहार सके तो बाईस वर्ष का बियोग वह महासुन्दरी कैसे सहारे कटुक वचन उस की सखी ने कहे थे उससे तो न कहे थे मैं पराएदोष से काहे को उसका परित्यागाकिया धिक्कार है मो सारिखे मूर्ख को जो बिना बिचारे काम करे ऐसे निःकपट प्राणी कोनिःकारण दुखअवस्थाकरी मैं पापाचित्त हूं वज्रसमानहै हृदय मेराजो मैंने एते वर्ष ऐसी प्राणवल्लभा को वियोग दिया अब क्याकरूं पितासेविदा होकरघर से निकसाहूं कैसेपीछेजाऊं बडासंकट पड़ाजो मैं उससे मिलेबिना संग्राममें जाऊंतो वहजीवे नहीं औरउसके अभाव भएमेरा भी अभावहोगा जगतमें जीतव्य समान कोई पदार्थ नहीं इसलिएस- र्वसंदेह का निवारणहारा मेरापरममित्र प्रहस्तावियमान हैं उससे सर्वभेद पूछुंवह सर्वप्रीति की रीतिमें

For Private and Personal Use Only

प्रवीण हैजे विचार कर कार्यकरें हैं वे प्राणी सुखपावें हैं ऐसा पवनकुमार को विचारउपजा सो प्रहस्त. मित्र उसके सुख में सुखी दुख में दुखी इसको चिन्तावान देख पूछता भया कि हे मित्र ! तुम रावण की मदतकरनेको बरुण सारिखेयोधासे लडने को जावोहो सो अतिप्रसन्नता चाहिये तबकार्यकी सिद्धि होय आजतुम्हारा बदनरूपकमल क्यों मुरझायादीखेहै लज्जाको तजकरमुझे कहो तुमको चिन्तावान देखकर मेराव्याकुलभावभयाहै तबपवंनजयनेकहीहेमित्र ! यह वार्ताकिसी औरसे कहनी नहीं परन्तु तू मेरे सर्वरहस्य का भाजन है तुझसे अंतरनहीं यहबात कहते परमलज्जा उपजे है तब प्रहस्त कहते भए जो तुम्हारे चित्तमें होयसो कहो जो तुम आज्ञाकरोगे सो बात और कोई न जानेगा जैसे ताते लोहेपर पड़ी जल की बून्द विलाय जाय प्रगट न दीखे तैसे मुझे कही बात प्रगट न होय तबपवनकुमार बोले हे मित्र ! सुनो मैं कदापिअंजनी सुन्दरी से प्रीति न करी सो अब मेरामनअति व्याकुल है मेरी क्रूरतादेखो एते वर्षपरणे भए सो अबतक बियोग रहा निःकारण अप्रीतिभई सदावहशोककी भरी रही अश्रुपात झरते रहे और चलते समयद्वारेखडी विरह रूपदाहसे मुरझाया गया है मुखरूप कमल जिसका सर्व लावण्य संपदारहित मैने देखी अबउसके दीर्घ नेत्र नीलकमल समान मेरेहृदयको बाणवतभेदे हैं इसलिएऐसा उपायकर जिससे मेरा उससेमिलाप होय हे सज्जन ! जो मिलाप न होयगा तो हमदोनोंहीका मरणहोगा तब प्रहस्तक्षणएक विचारकर बोले तुम माता पिता से आज्ञामांग शत्रुके जीतबेको निकसेहो सो पीछे चलना उचित नहीं ,और अब तक कदापि अंजनी सुन्दरी यादकरी नहीं और यहां बुलावे तो लज्जाउपजे है इसलिये गोप्यचलना और गोप्यही आवना वहां रहनानहीं उनका अवलोकनकर सुख

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संभाषण कर आनन्द रूप शीघ्र ही आवना तब आपका चित्त निश्चल होगा परमउत्साहरूपचलनाशत्रु के जीतने का निश्चय यह ही उपाय है तब मुद्गरनामा सेनापति को कटक रक्षा सौंप कर मेरु की बंदना का मिस कर प्रहस्त मित्र सहित गुप्त ही सुगंधादि सामग्री लेकर आकाश के मार्ग से चले । सूर्य भी अस्त होगया और सांझ का प्रकाश भी हो गया, निशा प्रकट भई अंजनी सुन्दरी के महल पर जाय पहुंचे पवन-कुमार तो बाहिर खडे रहे प्रहस्त खबर देने को भीतर गये दीप का मंद प्रकाश था अंजनी कहती भई कौन है बसंतमाला निकट ही सोती थी सो जगाई वह सब बातों में निपुण उठकर अंजनी का भय निवारण करती भई प्रहस्त ने नमस्कार कर जब पवनंजय के आगम का वृत्तांत कहा, तब सुन्दरी ने प्राणनाथ का समागम स्वप्न समान जाना प्रहस्त को गद्गद बाणी कर कहती भई हे प्रहस्त ! मैं पुण्यहीन पति की कृपाकर वर्जित मेरे ऐसा ही पाप कर्म का उदय आया तू हमसे क्या हंसे है पति से जिसकानिरादर होय उसकी कौन अवज्ञा न करें मैं अभागिनी दुःख अवस्था को प्राप्त भई कहांसे सुख अवस्था होय । तब प्रहस्त ने हाथ जोड़ नमस्कार कर विनती करी हे कल्याणरूपिणी हे पतिव्रते हमारा अपराध क्षमा करो अब सब अशुभ कर्म गए तुम्हारे प्रेम रूप गुण का प्रेरा तेरा प्राणनाथ आया तुमसे अति प्रसन्नभया तिन की प्रसन्नता कर क्यों क्या आनन्द न होय जैसे चन्द्रमा के योग कर रात्रि की अतिमनोग्यताहोय तब अंजनी सुन्दरी क्षण एक नीची होय रही और बसंतमाला ने प्रहस्त सों कही हे भद्र ! मेघ बरसे जब हो भला इसलिये प्राणनाथ इसके महल पधारें सो इनका बड़ाभाग्य और हमारा पुण्यरूप वृक्ष फला यह बात होय ही रहा थी आनन्द के अश्रुपातों कर व्याप्त हो गए हैं नेत्र जिनके सो कुमार पधारे ही मानों करुणारूप सखी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ही पीतम को प्रियाके ढिग लेआई, तब भयभीत हिरणीकेनेत्र समान सुन्दरहैंनेत्र जिसकेऐसी प्रिया पति को देख सन्मुख जाय हाथ जोड़ सीस निवाय पायन पड़ी, तब प्राणबल्लभने अपने करसे सीस उठाया खड़ी करी अमृत समान वचन कहे कि हे देवी! क्लेश का सकल खेद निवृत्त होवे सुन्दरी हाथ जोड़ पति के निकट खड़ी थी पतिने अपने करसे कर पकड़ कर सेज पर बैठाई, तब नमस्कार कर प्रहस्त तो बाहिर गए और वसन्तमाला भी अपने स्थानक जाय बैठी पवनंजय कुमार ने अपने अज्ञान से लज्जावान् हो सुन्दरी से बारम्बार कुशल पूछी और कही हे प्रिए! मैं ने अशुभ कर्म के उदय से जो तुम्हारा बृथा निरादर किया सो क्षमाकरो तब सुन्दरी नीचा मुखकर मन्दमन्द वचन कहतीभई हे नाथ! आपनेपराभव कछू न किया कर्म का ऐसाही उदय था अब आपने कृपाकरी अति स्नेह जताया सो मेरे सर्वमनोरथ सिद्धकिये आपके ध्यान कर संयुक्त हृदय मेरा सो आप सदा हृदयहीमें विराजते आपका अनादर भी आदर समान भासा इस भांति अञ्जनी सुन्दरी ने कहा तब पवनंजयकुमार हाथजोड़ कहतेभए कि हे प्राणप्रिये! मैं बृथा अपराध किया पराए दोषसे तुमको दोष दिया सो तुम सब अपराध हमारा विस्मरण करो मैं अपना अपराध क्षमावने निमित्त तुम्हारे पायन परूहूं तुम हमपर अति प्रसन्नहोवो ऐसा कहकर पवनञ्जयकुमारने अधिक स्नेह जनाया तब अंजनी सुन्दरी महासती पति का एता स्नेह देखकर बहुत प्रसन्न भई और पति को प्रियबचन कहती भई, हे नाथ मैं अति प्रसन्न भईहम तुम्हारे चरणारविंद की रज हैं हमारा इतना विनम तुम को उचित नहीं ऐसा कहकर सुखसे सेजपर विराजमान किये, प्राणनाथकी कृपासे प्रियाका मन अतिप्रसन्न भया और शरीर अतिकांति को धरता भया, दोनों परस्पर अतिस्नेह के भरे एक चित्त भये। सुख रूप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाग्रत रहे निद्रा न लागी पिछले पहिर अल्पनिद्रा आई प्रभातका समय हो आया तब यह पतिव्रता सेज से उतर पति के पाय पलोटने लगी रात्रि व्यतीत भई सो सुख में जानी नहीं प्रातः समय चन्द्रमा की किरण फीकी पड़ गई कुमार आनन्द के भार में भर गए और स्वामी की आज्ञा भूल गए, तब मित्र प्रहस्त ने कुमार के हित विषे है चित्त जिसका ऊंचा शब्द कर बसन्त माला को जगा कर भीतर पठाई और मन्द मन्द आप भी सुगन्ध महल में मित्र के समीप गए और कहते भए हे सुन्दर उठो कहां सोवो हो अब चन्द्रमा भी तुम्हारे मुख की कांति से कांति रहित होगया है यह वचन सुन कर पवनंजय प्रबोध को प्राप्त भए शिथिल है शरीर जिनका जंभाई लेते निद्रा के आवेश कर लाल हैं नेत्र जिन के कानों को बांए हाथ की तर्जनी अंगुली से खुजावते खुले हैं नेत्र जिनके दाहिनी भुजा संकोचकर अरिहंत का नाम लेकर सेजसे उठे प्राणप्यारी आपके जागने से पहिले ही सेजसे उठ उतर कर भूमि विषे विराजती थी लज्जाकर नम्रीभूत हैं नेत्र जिसके उठते ही पीतम की दृष्टि प्रिया पर पड़ी फि प्रहस्त को देख कर, आवोमित्र ऐसा शब्द कहकर सेजसे उठे प्रहस्तने मित्रसे रात्रिकी कुशल पूछी निकटबैठे मित्रनीतिशास्त्र के वेत्ता कुमार से कहते भए हे मित्र अब उठो प्रियाजी का सन्मानफिर आयकर करियो कोई न जाने इस भान्ति कटक में जाय पहुंच अन्यथा लज्जा है रथनूपुर का धनी किन्नरगीतनगर का धनी रावणके निकट गया चाहे है सो तुम्हारी ओर देखे है जो वे आगे आवें तो हम मिल कर चलें और रावण निरंतर मंत्रियों से पूछे है कि पवनंजयकुमार के डेरे कहां हैं और कब आवेंगे इस लिये अब आप शीघ्र ही रावन के निकट पधारो प्रियाजी से विदा मांगो तुमको पिता की और रावण की आज्ञा अवश्य करनीहै कुशल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षेम से कार्य कर शिताबही आवेंगे तब प्राणप्रिया से अधिक से अधिक प्रीति करियो तब पवनंजयनेकही हे मित्र ऐसे ही करना ऐसा कहकर मित्रको तो बाहिर पठाया और आप प्राणवल्लभा से अतिस्नेहकरउरसोलगा-य कहते भए हे प्रिये अब हम जाय हैं तुम उद्वेग मत करियो थोड़े ही दिनों में स्वामी का कामकर हम आवेंगे तुम आनन्दसे रहियो तब अंजनी सुन्दरी हाथ जोड़कर कहती भई हे महाराजकुमार मेरा ऋतुसमयहै सो गर्भ मुझको अवश्य रहेगा और अब तक आपकी कृपा नहीं थी यह सर्व जाने हैं सो माता पिता मेरे कल्याण के निमित्त गर्भ का वृत्तान्त कह आवो तुम दीर्घदर्शी सब प्राणियों में प्रसिद्ध हो ऐसे जब प्रिया ने कहा तब प्राणवल्लभा को कहते भए हे प्यारी मैं मातां पितासे बिदा होय निकसा सो अब उनके निकटजाना बने नहीं लज्जा उपजे है लोकमेरी चेष्टाजान हंसगे इसलिये जब तग तुम्हारागर्भ प्रकाश न पावे उसकेपहिले ही में आवुं हूं तुम चित्त प्रसन्नराखो और कोई कहे तो ये मेरे नाम की मुद्रिका राखो हाथों के कड़े राखो तुमको सबशांतिहोयगी ऐसाकहकर मुद्रिकादई औरबसंतमालाको आज्ञादईइनकीसेवाबहुतनीकेकरियो आप सेजसेउठे प्रियाविषे लगरहाहै प्रेम जिनका कैसीहै सेजसंयोगके योगसे बिखररहे हैं हारके मुक्ता फल जहां और पुरुषोंकी सुगन्ध मकरंदसे भ्रमे हैं भ्रमर जहां क्षीरसागरकी तरंग समान अति उज्ज्वल बिछे हैं पट जहां आप उठकर मित्रके सहित बिमानपर बैठ आकाशके मारग से चले अंजना सुन्दरी ने अमंगलके कारण आंसूनकाढ़े हे श्रेणिक कदाचित इसलोक विषे उत्तम बस्तुके संयोगसे किंचित सुख होयहै सो क्षणभंगुरहै और देहधारियोंके पापके उदयसे दुख होयहै सुख दुख दोनों बिनश्वर हैं इस लिये हर्ष विषाद न करना हो प्राणी हो जीवोंको निरन्तर सुखका देनेहारा दुख रूप अंधकारका दूर

करणहारा जिनवर भाषित धर्म सोई भया सूर्य उसके प्रतापकर मोहतिमिरहरो। इति सोलहवांपर्व संपूर्णम्

अथानन्तर कैयक दिनोंमें महेंद्रकी पुत्री जो अंजनीके गर्भके चिन्ह प्रकट भए कछु इक मुख पांडु वर्ण होगया मानों हनूमान गर्भमें आए सो उनका यशही प्रकट भयाहै मन्द चाल चलने लगी जैसा मदोन्मत दिग्गज विचरे स्तनयुगल अति उन्नतिको प्राप्त भए श्यामलीभूत हैं अग्रभाग जिनके आलससे बचन मन्द मन्द निसरे भौहोंका कंप होता भया इन लक्षणों कर उसे सासू गर्भिणी जान कर पूछती भई तैंने यह कर्म किससे किया तब यह हाथ जोड प्रणामकर पतिके आवनेका समस्त वृतांत कहती भई तब केतुमती सासू क्रोधायमान भई महा निठुर वाणी रूप पाषाण कर पीडती भई हे पापिनी मेरा पुत्र तेरेसे अति विरक्त तेरा आकार भी न देखाचाहे तेरे शब्दको श्रवण विषे धारे नहीं मातापितासे बिदा होयकर रण संग्रामको बाहिर निकसा वह धीर कैसे तेरे मंदिरमें आवे हे निर्लज्जे धिक्कारहै तुझ पापिनीको चंद्रमाकी किरण समान उज्ज्वलबंशको दूषण लगावनहारी यह दोनोंलोक में निन्द्य अशुभ क्रिया तैंने आचारी और तेरी यह सखी बसंतमाला इसने तुझे ऐसी बुद्धिदीनी कुलटाके पास वैश्या रहे तब काहेकी कुशल मुद्रिका और कडे दिखाए तोभी उसने न मानी अत्यन्त कोप कियाएक क्रूर नामा किंकर बुलाया वह नमस्कारकर आय ठाढ़ा तब क्रोध कर केतुमतीने लाल नेत्रकर कहा हे क्रूर सखीसहित इसे गाडी में बैठाय महेंद्रके नगरके निकट छोड़आ तब वह क्रूर केतुमतीकी आज्ञा से सखीसहित अंजनीको गाडीमें बैठायकर महेंद्रके नगरकी ओर लेचला कैसी है अंजनी सुन्दरी अति कांपे है शरीर जिसका महा पवनकर उपडी जो बेल उससमान निराश्रय अति आकुल कांतिरहित दुख

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूप अग्निकर जलगयाहै हृदय जिसका भयकर सासूको कछू उत्तर न दिया सखीके ओर धरे हैं नेत्र जिसने मनकर अपने अशुभ कर्मको बारंबार निन्दती अश्रुधारा नाखती निश्चल नहीं है चित्त जिस का क्रूर इनको लेचला वह क्रूर कर्म में अति प्रवीणहै दिवसके अंतमें महेंद्रनगरके समीप पहुंचायकर नमस्कार कर मधुर बचन कहता भया हे देवी मैं अपनी स्वामिनी की आज्ञासे तुमको दुखका कारण कार्य किया सो क्षमा करो ऐसा कहकर सखीसहित सुन्दरी को गाडी से उतार बिदा होय गाडी लेय स्वामिनी पै जायकर बिनती करी कि आपकी आज्ञा प्रमाण तिनको वहां पहुंचाय आया हूं ।

अथानंतर महापतिव्रता जो अंजनी सुन्दरी उसे दुखके भारसे पीडितदेख सूर्यभी मानो चिन्ताकर मंद होय गई है प्रभा जिसकी अस्त होगया और रुदनकर अत्यन्त लाल हो गएहैं नेत्र जिसके ऐसी अंजनी सो मानों इसके नेत्रकी अरुणताकर पश्चिम दिशा रक्त होगई अन्कार फैल गया रात्रि भई अंजनी के दुःख से निकसे जो आंसू वेई भए मेघ तिन कर मानों दशों दिशा श्याम होय गई और पंछी कोलाहल शब्द करतेभये सो मानो अञ्जनी के दुःखसे दुःखीभए पुकारें हैं वह अञ्जनी अपवादरूप महा दुःखका जो सागर उसमें डूबी क्षुधादिक दुख भूलगई अत्यन्त भयभीत अश्रुपात नाखे रुदनकरे सो बसंतमालासखी धीर्य बंधावे रात्रीको पल्लवका साथरा बिछाय दिया सो इसको निद्रा रंचभी न आई निरन्तर उष्ण अश्रुपात पड़ें सो मानो दाहके भय निद्रा भागगई बसंतमालाने पांव दाबे खेद दूरकिया दिलासा करी दुःखके योगकर एक रात्री वर्ष बराबर बीती प्रभातमें साथरेको तजकर शंका कर अति विह्वल पिता के घर की ओर चली सखी छाया समान संग चली पिता के मन्दिर के द्वार जाय पहुची

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भीतर प्रवेश करती द्वारपालने रोकी दुःखके योगकर औरही रूप होगया सो जानी न पड़ी तब सखी ने सर्व वृत्तान्त कहा सो जानकर शिलाकवाट नामा द्वारपाल ने एक और मनुष्य को द्वारे मेल आप राजा के निकट जाय विनती करी हे महाराज आपकी पुत्री आई है तब राजा के निकट सलन्नकीर्त्ति नामा पुत्र बैठाथा सो राजा ने पुत्रको आज्ञाकरी तुम सन्मुख जाय उसका शीघ्रही प्रवेश करावो और नगरकी शोभा करावो तुमतो पहिले जावो और हमारी असवारी तयार करावो हमभी पीछे से आवैं हैं तब द्वारपालने हाथ जोड़ नमस्कार कर यथार्थ विनती करी तब राजा महेन्द्र लज्जा का कारण सुन कर महा कोपवान भए और पुत्रको आज्ञा करी कि पापिनी को नगर मेंसे काढ़ देवो जिसकी वार्ता सुनकर मेरे कान मानो वज्रकर हतेगए हैं तब एक महोत्साह नामा बड़ा सामन्त राजाका अति वल्लभ सो कहताभया हे नाथ ऐसी आज्ञा करनी उचित नहीं बसन्तमालासे सब ठीक पाडलेवो सासूके तुमती अति क्रूर है और जिनधर्मसे पराङ्मुख है लौकिक सूत्र जो नास्तिक मत उस विषे प्रवीण है इसलिये विना विचारे इसको झूठा दोष लगाया यह धर्मात्मा श्रावकके व्रतकी धारणहारी कल्याण आचार विषे तत्पर उस पापिनी सासू ने निकासी है और तुमभी निकासो तो यह कौनके शरणें जाय जैसे व्याघ्रकी दृष्टिसे मृगी त्रासको प्राप्तभई सन्ती महागहन वनका शरणलेय तैसे यह भोली निःकपट सासू से शंकित भई तुम्हारे शरणे आई है मानो जेठके सूर्य की किरणके सन्ताप से दुखित भई महावृक्ष रूप जो तुम सो तुम्हारे आश्रय आई है यह गरीबिनी विह्वलहै आत्मा जिसका अपवादरूप जो आताप उसकर पीड़ित तुम्हारे आश्रय भी साता न पावे तो कहां पावे मानो स्वर्ग से लक्ष्मीही आई है द्वारपाल नेरोकी सो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्यन्त लज्जा को प्राप्त भई विलखी होय वस्त्र से माथा ढाक द्वारे खड़ी है आपके स्नेहकर सदालाडला है सो तुम दया करो यह निरदोष है मन्दिर मांहि प्रवेश करावो और केतुमतीकी क्रूरता पृथिवी विषे प्रसिद्ध है ऐसे न्याय वचन महोत्साह सामन्त ने कहे सो राजाने कान न धरे जैसे कमलों के पत्रोंमें जल की बूंद न ठहरे तैसे राजाके चित्तमें यह बात न ठहरी राजा सामन्त से कहतेभए यह सखी वसन्तमाला सदा इसके पास रहे और इसीके स्नेह के योगसे कदाचित सत्य न कहे तो हमको निश्चय कैसे आवे इसलिये इसके शीलविषे संदेह है सो इसको नगरसे निकास देवो जब यह बात प्रसिद्ध होयगी तो हमारे निर्मल कुल विषे कलंक आवेगा जे बडे कुलकी बालिका निर्मल हैं और महा विनयवन्ती उत्तम चेष्टा की धारणहारी हैं वे पीहर सासरे सर्वत्र स्तुति करने योग्यहैं जे पुण्याधिकारी बडे पुरुष जन्महीसे निर्मल शील पालें हैं ब्रह्मचर्यको धारण करे हैं और सर्व दोषका मूल जो स्त्री तिनको अंगीकार नहीं करें हैं वे धन्य हैं ब्रह्मचर्यसमान और कोई व्रत नहीं और स्त्री के अङ्गीकारमें यह फल होयहै जो कुपूत बेटा बेटी होंय और उनके अवगुण पृथिवी विषे प्रसिद्ध होंय तो पिता कर धरती में गड जाना होय है सबही कुलको लज्जा उपजे है मेरा मन आज अति दुःखित होयगया है मैं यह बात पूर्व अनेकबार सुनीथी कियह भरतारके अप्रिय है और वह इसे आंखोंसे नहीं देखे है सो उसकर गर्भकी उत्पतिकैसे भई इसलिये यह निश्चयसेती सदोषहै जो कोई इसे मेरे राज्यमें राखेगा सो मेरा शत्रु है ऐसे बचन कहकर राजाने कोपकर जैसे कोई जानेनहीं इसभांति इसको द्वारसे काढ़ दीनी सखीसहित दुखकी भरी अंजनी राजाके निजवर्गके जहां २ आश्रयके अर्थ गई उन्होंने आने न दीनी कपाट दिए क्योंकि जहां बापही क्रोधायमान होय निग-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारण करि वहां कुटम्बकी कैसी आशा वे तो सब राजाके आधीनहैं ऐसा निश्चयकर सबसे उदास होय सखीसे कहती भई आंसूवों के समूह कर भीज गया है अंग जिसका हे प्रिये ! यहां सर्व पाषाण चित्त हैं यहां कैसावास इसलिये बनमें चलें अपमानसे तो मरना भला ऐसाकहकर सखीसहित बनको चली मानो मृगराजसे भयभीत मृगीही है शीतउष्णऔरवातके खेदसे महा दुखकर पीडित बनमें बैठ महा रुदन करती भई हायहाय मैं,मन्दभागिनी दुखदाई जो पूर्वोपार्जित कर्म उससे महा कष्टको प्राप्त भई कौनके शरणे जाऊं कौन मेरी रक्षा करे मैं दुर्भाग्यसागरके मध्य कौन कर्मसे पड़ी नाथ मेरा अशुभ कर्मका प्रेरा कहांसे आया काहेको गर्भ रहा मेरा दोनोंही ठौर निरादर भया मातानेभी मेरी रक्षा न करी सो वह क्याकरे अपनेधनी की आज्ञाकारिणी पतिव्रतावोंका यही धर्म है और नाथ मेरा यह बचन कहगयाथा कि तेरे गर्भकी वृद्धि से पहिले मैं आऊंगा सो हाय नाथदयावान होय वह बचन क्योंभूले और सामूने बिना परखे मेरात्याग करें किया जिनके शीलमें संदेह होय तिनके परखनेके अनेक उपायहैं और पिताको मैं बाल अवस्थामें अति लाडिलीथी निरन्तर गोदमें खिलावते थे सो बिना परखे मेरा निरादर किया उनकी ऐसी बुद्धि उपजी और माताने मुझे गर्भमेंधारी प्रतिपालन किया अब एकबारभी मुखसे न निकाली कि इसके गुण दोषका निश्चयकर लेवें और भाई जो एक माताके उदरसे उत्पन्न भयाथा वहभी मुझे दुखिनी को न राख सका सबही कठोर चित्त हो गये जहां माता पिता भ्रातहीकी यह दशा वहां काका बाबाके दूर भाई तथा प्रधान सामन्त क्या करें और उन सबहीपर क्यादोष मेरा जो कर्म रूप वृक्ष फलासो अवश्य भोगना। इस भांति अंजनी विलाप करे सो सखी भी इसके लार विलाप करें मनसे धीर्य जाता रहा

For Private and Personal Use Only

अत्यन्त दीन मन होय यह ऊंचे स्वर रुदन करे सो मृगी भी इसकी दशा देख आंसू डालने लगी बहुतदेरतक रोनेसे लाल होयगएहैं नेत्र जिसके तब सखी बसंतमाला महाविचक्षण इसे छातीसे लगायकर कहतीभई कि हे स्वामिनी बहुत रोनेसे क्या जो कर्म तैंने उपार्जाहै सो अवश्य भोगनाहै सबही जीवोंके कर्म आगेपीछे लगरहे हैं सो कर्मके उदयमें शोक क्या हेदेवी जे स्वर्गलोकके देव सैकड़ों अप्सराओंके नेत्रों कर निरन्तर अवलोकिये हैं वेभी सुकृतके अन्त होते परम दुःख पावे हैं मनमें चिंतिये कछू और होय जाय कछु और जगतके लोक उद्यममें प्रवरते हैं तिनको पूर्वोपार्जित कर्मका उदयही कारणहै जो हितकारी वस्तु आय प्राप्त भई सो अशुभकर्म के उदयसे विघटजाय और जो वस्तु मनसे अगोचरहै सोभी आय मिले हैं कर्मोंकी गति विचित्रहै इस लिये बाई तू गर्भके खेद से पीडित है वृथा क्लेश मतकरे तू अपना मन दृढकर जो तैंने पूर्व जन्ममें कर्म उपारजे हैं तिनके फल टारे न टरें और तूतो महा बुद्धिमती है तुझे क्या शिक्षाहूं जो तू न जानती होय तो मैं कहूं ऐसा कहकर इस के नेत्रोंके अपने वस्त्रसे आंसु पूछे और कहतीभई हेदेवी यह स्थानक आश्रय रहितहैं इस लिये उठो आगेचलें इस पहाड़के निकट कोईगुफाहोयजहांदुष्टजीवोंका प्रवेश न होय तेरेप्रसूतिका समय आयाहै सो कैएकदिनयत्नसे रहना तब यह गर्भके भारसे आकाशके मार्ग चलनेमें असमर्थहै भूमिपर सखी के संग गमन करती महा कष्टसे पांव धरती भई कैसीहै वनी अनेक अजगरों से भरी दुष्ट जीवों के नाद से अत्यन्त भयानक अति सघन नाना प्रकार के वृक्षों से सूर्य की किरण का भी सञ्चार जहां नहीं सूई के अग्रभाग समान डाभ की अणी अतितीक्ष्ण जहां कंकर बहुत और माते हाथियों के समूह और भीलों के समूह बहुत हैं और बनी का नाम

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मातंगमालिनी है जहां मन की भी गम्यता नहीं तो मनुष्यकी क्या गम्यता सखी आकाशमार्ग से जानेको समर्थ है और यह गर्भ के भार से समर्थ नहीं इस लिये सखी इसके प्रेमके बंधन से बंधी शरीरकी छायासमान लारलार चले है अंजनी बनी को अतिभयानक देखकर कांपे है दिशा भूल गई तब बसन्तमाला इसको अति व्याकुल जानकर हाथ पकड़कर कहती भई हे स्वामिनी तू डरेमत मेरे पीछे २ चली आ। तब यह सखी के कांधे पर हाथ रख चली जाय ज्यों २ डाभ की अणी चुभें त्यों २ अति खेदखिन्न विलाप करती देह को कष्टसे धारती जल के निझरने जे अति तीव्र वेग संयुक्त बहैं तिनको अति कष्ट से उतरती अपने जे सब स्वजन अति निर्दई तिनको अति चितारती अपने अशुभ कर्म को बारंबार निन्दती वेलों को पकड़ भयभीत हिरणी कैसे हैं नेत्र जिसके अंग विषे पसेव को धरती कांटों से वस्त्र लग लग जांय सो छुड़ावती। लहूसे लाल होगए हैं चरण जिसके शोक रूप अग्नि के दाहसे श्यामता को धरती, पत्र भी हाले तो त्रास को प्राप्त होती चलायमान है शरीर जिसका बारंबार विश्राम लेती उसे सखी निरंतर प्रियवाक्य कर धीर्य बंधावे सो धीरेधीरे अंजनी पहाड़ की तलहटी तक आई वहां आंसूभर बैठगई सखी से कहती भई अब मुझमें एकपग धरने की शक्ति नहीं यहांही रहूंगी मरण होय तो होय तब सखी अत्यन्त प्रेम की भरी महा प्रवीण मनोहर बचनों से उसको शांति उपजाय नमस्कार कर कहती भई हे देवी देख यह गुफा नजदीक ही है कृपाकर यहांसे उठकर वहां सुखसे तिष्ठो यहां क्रूर जीव बिचरे हैं तुझे गर्भकी रक्षाकरनी है इसलिए हठ मतकर एसाकहा तबवह आताप की भरी सखी के बचनों से और सघनबन के भय से चलने को उठी तब सखी हस्तालंबन देकर उसको विषमभूमि से निकास कर गफा के द्वारपरलेगई। बिना विचारे गुफा में

For Private and Personal Use Only

बैठने का भय होयसो ये दोनों बाहिर खड़ी विषमपाषाण केउलंघवेकर उपजाहैखेदजिनको इसलिये बैठ गई वहां दृष्टि घर देखा कैसीहै दृष्टि श्याम श्वेत कमल समान प्रभाको धरे सो एक पवित्र शिला पर विराजे चारणमुनि देखे जोपल्यंकासन धरे अनेक ऋद्धिसंयुक्त निश्चलहैं श्वासोच्छ्वास जिनके नासिकाके अग्र-भाग परधरी है दृष्टि जिन्होंने शरीर स्तंभ समान निश्चलहै गोद पर धरा है जो बामा हाथ उसके ऊपर दाहना हाथ समुद्रसमान गंभीर अनेक उपमावों से विराजमान आत्मस्वरूप का जो पर्यायस्वभाव जैसा जिनशा-सन में गाया है तैसा ध्यान करते, समस्त परिग्रह रहित, पवनजैसे असंगी आकाश जैसे निर्मल मानों पहाड़ के शिखर ही हैं सो इन दोनों ने देखे कैसे हैं वे साधु महापराक्रम के धारी महाशान्ति ज्योति रूप है शरीर जिनका । ये दोनों मुनिके समीप गईं सर्व दुःख विस्मरण भया तीन प्रदक्षिणा देय हाथ जोड़ नमस्कार किया, मुनि परमबांधव पाए फूल गए हैं नेत्र जिनके जिससमय जो प्राप्ति होनीहोय सो होय तब ये दोनों हाथ जोड़ बिनती करती भई मुनिके चरणारविन्द की ओर धरे हैं अश्रुपातरहित स्थिर नेत्र जिनके हे भगवन् हे कल्यान रूप हे उत्तम चेष्टा के धरणहारे तुम्हारे शरीर में कुशल है कैसा है तुम्हारा देह सर्व तप व्रत आदि साधनों का मूल कारण है, हे गुणों के सागर ऊपरां ऊपर तप की है वृद्धि जिनके हे महा क्षमावान् शान्ति भाव के धारी मन इन्द्रियों के जीतनेहारे तुम्हारा जो विहार है सो जीवन के कल्याण निमित्तहै तुम सारिखे पुरुष सकल पुरुषोंकोकुशलके कारणहैं सो तुम्हारी कुशल क्या पूछनी परन्तु यह पूछने का आचार है इस लिए पूछिये है ऐसा कह कर विनय से नम्री भूत भया है शरीर जिनका सो चुप होय रहीं और मुनि के दर्शन से सर्वभयरहित भई ॥

अथानन्तर मुनि अमृततुल्य परम शांति वचन कहतेभए हे कल्याणरूपिणी हेपुत्री हमारे कर्मानुसार सब कुशल है ये सर्वही जीव अपने अपने कर्मोका फल भोगे हैं देखो कर्मोंकी विचित्रता यह राजा महेन्द्रकी पुत्री अपराध रहित कुटुम्ब के लोगों ने काढ़ी है सो मुनि बड़े ज्ञानी बिना कहे सर्व बृत्तान्त के जाननहारे तिनको नमस्कार कर बसंतमाला पूछती भई हे नाथ कौन कारण से भरतार इस से बहुत दिन उदास रहे फिर कौन कारण अनुरागी भए और यह महासुख योग्य वनमें कौन कारणसे दुखको प्राप्त भई कौन मन्दभागी इसके गर्भ में आया जिसे इसको जीवनेका शंसय भया तब स्वामी अमित गति तीनज्ञान के धारक सर्ववृत्तान्त यथार्थ कहते भए, यही महापुरुषों की वृति है जो परउपकार करें मुनि बसंतमाला से कहे हैं हे पुत्री इसके गर्भ विषे उत्तम पुरुष आया है सो प्रथम तो जिस कारण से यह अंजनी ऐसे दुःख को प्राप्त भई जो पूर्व भव में पापका आचरणकिया सो सुन। जंबूद्वीप मे भरथ नामा क्षेत्र वहां मन्दिर नमा नगर वहां प्रियनंदी नाम गृहस्थी उसकेजाया नाम स्त्री और दमयन्त नाम पुत्र था सो महासौभाग्य संयुक्त कल्याण रूप जे दया क्षमा शील संषादि गुण वेई हैं आभूषण जिसके एक समय बसन्तऋतुमें नन्दनवन तुल्य जो वन वहां नगर के लोग क्रीडाको गए दमयन्त ने भी अपने मित्रों सहित बहुत क्रीढ़ा करी, अबीरादि सुगंधोंसे सुगन्धितहैशरीर जिसका और कुण्डलादि आभूषणों से शोभायमान सो उसने उसही समयमें महामुनि देखे कैसे हैं मुनि अम्बर कहिये आकाश सोई है अंबर कहिये वस्त्र जिनके तपही है धन जिनका और ध्यान स्वाध्याय आदि जे क्रिया उनमें उद्यमी सो यह दमयंत महा देदीप्यमान क्रीड़ा करते जे अपने मित्र तिनको छोड़ मुनियोंकी मण्डलीमें गया बन्दनाकर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मका व्याख्यान सुन सम्यक्दर्शन ग्रहणकिया श्रावक के व्रत बारे नानाप्रकारके नियम अङ्गीकारकिए एकदिन जे सप्तगुण दाता के और नवधा भक्ति तिन संयुक्त होय साधुवोंको आहार दिया कैएक दिनों में समाधि मरणकर स्वर्ग लोकको प्राप्तभया नियमके और दानके प्रभावसे अद्भुत भोगभोगताभया सैकड़ों देवांगना के नेत्रोंकी कांतिही भई नील कमल तिनकी माला से अर्चित चिरकाल स्वर्गके सुख भोग यह फिर स्वर्गसे चयकर जम्बूद्वीप में मृगांकनामा नगरमें हरिचन्द नाम राजा उसकी प्रियंगुलक्ष्मी राणी उसके सिंहचन्द नामा पुत्र भए अनेक कलागुणोंमें प्रवीण अनेक विवेकियोंके हृदय में बसे वहां भी देवों कैसे भोग किये साधुवोंकी सेवा करी फिर समाधि मरणकर देवलोक गये वहां मन वांछित अति उत्कृष्ट सुख पाए कैसा है वह देव देवियों के जे वदन वेई भए कमल उनके जोबन उनके प्रफुल्लित करनेको सूर्य्य समान है फिर वहां से चयकर इस भरतक्षेत्र में विजियार्ध गिरि पर अहनपुर नगरमें राजा सुकण्ठ राणी कनकोदरी उसके सिंह वाहन नाम पुत्र भए अपने गुणों से सैंचा है समस्त प्राणियों का मन जिसने वहां देवों कैसे भोग भोगे अप्सरा समान स्त्री तिनके मनके चोर भावार्थ अति रूपवान् अतिगुणवान् सो बहुत दिन राज्यक्रिया श्रीविमलनाथजी के समोशरणमें उपजा है आत्मज्ञान और संसारसे वैराग्य जिन को सो लक्ष्मी बाहन नामा पुत्रका राज्य देकर संसारको असार जान लक्ष्मींतिलकमुनि के शिष्य भए श्रीवीतराग देवका भाषा महाव्रतरूप यतिका धर्मअंगीकार किया अनित्यादि द्वादश अनुप्रेक्षाका चिंतबन कर ज्ञान चेतनारूप भए जो तप किसी पुरुष से न बने सो तपकिया रत्नत्रयरूप अपने निज भावों में निश्चिन्तभए परम तत्त्व ज्ञानरूप आत्मा के अनुभवमें मग्नभए तपके प्रभावसे अनेक ऋद्धि उपजी सर्व

For Private and Personal Use Only

पद्म पुराण ॥३१२॥

वात समर्थ जिनके शरीरको स्पर्श पवन आवे सो प्राणियोंके अनेकरोग दुःखहरे परन्तु आपकर्म निर्जरा के कारण बाईस परीषह सहतेभये फिर आयु पूरणकर धर्मध्यानके प्रसादसे ज्योतिष चक्रको उलंघ सातवां लांतव नामा जो स्वर्ग वहां बड़ी ऋद्धिके धारी देव भए चाहे जैसा रूप करें चाहे जहां जांय वचनां से कहनेमें न आवे ऐसे अद्भुत सुख भोगे परन्तु स्वर्गके सुखमें मग्न न भए परमधामकी है इच्छाजिन को वहांसे चयकर इस अंजनी की कुक्षि विषे आए हैं सो महा परम सुख के भाजन हैं फिर देह न धारेंगे अविनाशी सुखकोप्राप्त होवेंगे चरमशरीरी हैं यह तो पुत्र के गर्भ में आवनेका वृतान्त कहा अब हे कल्याण चेष्टिनी इसने जिस कारणसे पतिका विरह और कुटुम्बसे निरादर पाया सो वृतान्त सुन इस अंजनी सुन्दरी ने पूर्व भवमें देवाधिदेव श्री जिनेन्द्र देवकी प्रतिमा पटराणी पदके अभिमानसे सौकन के ऊपर क्रोधकर मंदिरसे बाहिर निकासी उसीसमय एकसमयश्री आर्यिका इसकेघरआहारको आईथीतपकर पृथ्वीपर प्रसिद्धथी सो इसके श्रीजीकी मूर्तिका अविनय देख पारणा न कियापीछे चली और इसको अज्ञान रूपजान महादयावतीहोय उपदेश देतीभई क्योंकि जे साधु जनहैं वे सबका भलाही चाहे हैं जीवोंके समझाने के निमित्त बिनापूछेहीसाधुजन श्रीगुरुकी आज्ञासे धर्मोपदेश देनेको प्रवरते हैं.ऐसा जानकर वह संयमश्रीशील संयम रूपआभूपणकी धरणहारी पटराणीको महामाधुर्य अनुपम वचन कहती भई,हे भोरी सुन तू राजाकी पटराणी है और महारूपवती है राजाका बहुत सन्मान है भोगोंका स्थानक है शरीर तेरा सो पूर्वोपार्जित पुण्य का फल हैइस चतुर्गति में जीव भ्रमे है महा दुःख भोगे है कबहूक अनन्तकाल में पुण्य के योग से मनुष्य देह पावे है हे शोभने यह मनुष्य देह किसी पुण्य के योग से पाई है इसलिये यह निन्द्य

आचरण तू मतकर योग्य क्रिया करने के योग्यहै यह मनुष्यदेह पाय जो सुकृत न करे हैं सो हाथसे रत्न खोवें हैं मन तथा वचन तथा काय से जो शुभक्रियाकासाधन है सोई श्रेष्ठहै और अशुभ क्रियाकासाधनहै सो दुःख का मूल है जे अपने कल्याण के अर्थ सुकृत विषे प्रवरते हैं वेई उत्तम हैं यह लोक महानिंद्य अनाचार का भरा है जे संत संसार सागरसे आप तिरे हैं औरों को तारे हैं भव्य जीवों को धर्म का उपदेश देय हैं उन समान और उत्तम नाहीं वे कृतार्थ हैं उन मुनियों के नाथ सर्व जगत् के नाथधर्म चक्री श्रीअरिहंत देव तिनके प्रतिबिंब का जे अविनय करे हैं वे अज्ञानी अनेक भव में कुगति के महादुःख पावे हैं सो उन दुःखों को कौन बरणन कर सके, यद्यपि श्रीवीतराग देव रागद्वेष रहित हैं जे सेवाकरेंउनसेप्रसन्न नहीं औरजे निंदा करें तिनसे द्वेष नहीं महामध्यम भाव को धरें हैं परन्तु जे जीव सेवा करें वे स्वर्ग मोक्ष पावे हैं जेनिन्दा करें वे नरक निगोद जावें क्योंकि जीवों के शुभ अशुभ परणामों से सुख दुःख की उत्पत्ति होय है जैसे अग्नि के सेवन से शीत का निवारण होय है और खान पान से क्षुधा तृषा की पीड़ा मिटे है तैसे जिनराज के अर्चन से स्वयमेव ही सुख होय है और अविनय से परमदुःख होय है, हे शोभने जे संसार में दुःख दीखे हैं वे सब पाप के फल हैं और जे सुख हैं वे धर्म के फल हैं सो तू पूर्वपुण्य के प्रभाव से महाराजा की पटराणी भई और महासंपतिवती भई और अद्भुत कार्य का करणहारा तेरा पुत्र है अब तू ऐसा कर जो फिर सुख पावे अपना कल्याण कर मेरे बचन से। हे भव्ये! सूर्य्य के और नेत्र के होते संते तू कूप में मतपड़े जो ऐसे कर्म करेगी तो घोर नरक में पड़ेगी देवगुरु शास्त्र का अविनय करना अनंत दुःख का कारण है और ऐसे दोषदेख जो मैं तुझे न संबोधूं तो मुझे प्रमाद का दोष लागे है, इसलिये तेरे कल्याण निमित्त धर्मोपदेश

दिया है जब श्रीआर्यिकाजीने ऐसा कहा तब यह नरकके दुःख से डरी सम्यक्‌दर्शन धारण किया आर्यिकाके वच आदरे श्रीजी की प्रतिमा मन्दिर में पधराई बहुत विधान से अष्ट प्रकारकी पूजा कराई इस भान्ति राणी कनकोदरी को आर्यिका धर्म का उपदेश देय अपने स्थानक को गई और वह कनकोदरी श्रीसर्वज्ञ देव का धर्म आराध कर समाधिमरणकर स्वर्गलोक में गई, वहांमहासुख भोगे स्वर्ग से चयकर राजामहेन्द्रकीराणी जो मनो-वेगा उस के अञ्जनी सुन्दरीनामा तू पुत्री भई सो पुण्यके प्रभावसे राजकुल में उपजी उत्तमवर पाया और जो जिनेन्द्रदेव की प्रतिमा को एक क्षण मन्दिरके बाहिर राखा था उस के पाप से धनी का वियोग और कुटुम्ब से पराभव पाया विवाह के तीन दिन पहिले पवनञ्जय प्रछन्न रूप आए रात्री में तुम्हारे झरोखे में प्रहस्त मित्रकेसहित बैठ थे सो उस समय मिश्रकेशी सखीने विद्युत्प्रभ की स्तुति करी, और पवनञ्जय की नि-न्दा करी उस कारण पवनञ्जय द्वेष को प्राप्त भए फिर युद्ध के अर्थ घर चले मानसरोवर पर डेरा किया वहां चकवीका बिरह देखकर करुणाउपजी सो करुणाही मानो सखीका रूप होय कुमारको सुन्दरी केसमीप लाई तब उससे गर्भ रहा फिर कुमार प्रछन्नही पिताकी आज्ञाके साधिवेके अर्थ रावणके निकट गए ऐसा कहकर फिर मुनि अंजनी से कहते भए महा करुणाभाव कर अमृत रूप वचन गिरते भए हे बालके तू कर्मके उदय से ऐसे दुःखको प्राप्तभई इसलिये फिर ऐसा निंद्यकर्म मत करना संसार समुद्र के तारणहारे जे जिनेन्द्रदेव तिनकी भक्तिकर क्योंकि इस पृथिवी विषे जे सुख हैं वे सब जिन भक्ति के प्रताप से होय हैं ऐसे अपने भव सुनकर अंजनी विस्मयको प्राप्तभई और अपने किये जे कर्म तिनको निन्द्यती अति पश्चाताप करतीभई तब मुनिने कही हे पुत्री अब तू अपनी शक्ति प्रमाण नियमले और

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनधर्मका सेवनकर यतिव्रतियोंकी उपासनाकर तैंने ऐसे कर्म कियेथे जो अधोगतिको जाती परंतु संयम श्री आर्याने कृपाकर धर्मका उपदेशदिया सो हस्तालम्बनदे कुगतिके पतनसे तू परम सुख पावेगो तेरा पुत्र अखंडवीर्य है देवोंसेभी जीता न जाय अब थोड़े ही दिनमें तेरा तेरे भरतार से मिलाप होयगा इसलिये हे भव्य तू अपने चित्त में खेद मतकरे प्रमादरहित जो शुभक्रिया उसमें उद्यमी हो यह मुनिके वचन सुन अञ्जनी सुन्दरी और बसन्तमाला बहुत प्रसन्न भई और बारम्बार मुनिको नमस्कारकिया फूलगये हैं नेत्र कमल जिनके मुनिराज ने इनको धरमोपदेश देय आकाशमार्ग विहारकिया सो निर्मलहै चित्तजिनका ऐसे संयमियोंको यही उचित है कि जो निर्जन स्थानकहो वहां निवासकरें सोभी अल्पही रहें इसप्रकार निज भव सुन अञ्जनी पाप कर्मसे अति डरी और धर्मविषे सावधानभई वह गुफा मुनिके विराजवेसे पवित्रभई सो वहां अञ्जनी बसन्तमाला सहित पुत्रकी प्रसूति समय देखकर रही।

गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं कि हे श्रेणिक अब वह महेन्द्रकी पुत्री गुफामें रहे बसन्तमाला विद्याबलसे पूर्ण विद्याके प्रभावसे खान पान आदि इसके मनबांछितसबं सामग्री करे यह अञ्जनी पतिव्रता पियारहित बनमे अकेली सो मानो सूर्य इसका दुःख देख न सका सो अस्त होनेलगा मानों इसके दुःख से सूर्य की किरणभी मन्द होगई सूर्य अस्त होगया पहाड़ के शिखर और वृक्षोंके अग्रभागमें जो किरणों का उद्योत रहाथा सोभी संकोचलिया सन्ध्याकर क्षण एक आकाश मण्डल लाल होगया सो मानों अब क्रोधका भरा सिंह आवेगा उसके लाल नेत्रोंकी ललाई फैली है फिर होनहार जो उपसग उसकीप्रेरी शीघ्रही अन्धकारका स्वरूप रात्रि प्रकटभई मानों राक्षसनीही रसातलसे निसरी है पक्षी सन्ध्या समय चिगचगाट कर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गहनबनमें शब्द रहित वृक्षोंके अग्रभागपर तिष्ठे मानों रात्रिको श्याम स्वरूप डरावनी देख भयकर चुप होयरहे शिवा कहिये स्यालिनी तिनके भयानक शब्द प्रवरते सो मानो होनहार उपसर्ग के ढोलही बाजे हैं।

अथानंतर गुफाकेमुख सिंहआया कैसाहै सिंह बिदारे है हाथियोंके जे कुम्भस्थल तिनके रुधिरकर लालहो रहे हैं केश जिसके और कालसमान क्रूर भृकुटीको धरे और महाविषम शब्द करता जिसके शब्द कर बन गुंजाररहाहै और प्रलयकालकी अग्निकीज्वालासमानजीभको मुखरूपगुफासेकाढ़ताकैसी है जीभमहाकुटिल है अनेक प्राणियोंकी नाशकरनहारी और जीवोंके खैंचनेको जिसकी अंकुशसमान तीक्षण दाढ़ रोद्र सबको भयंकरहै और जिसके नेत्र अतित्रासके कारण उगता जो प्रलयकालका सूर्य उस समान तेज को धरें दिशाओंके समूहको रंग रूपकरवह सिंह पूंछकी अणीका मस्तक ऊपर धरे नखकी अणीसे बिदारीहै धरती जिसने पहाड़के तटसमान उरस्थल और प्रबलहै जांघ जिसकी मानों वह सिंह मृत्युका स्वरूप दैत्यसमान अनेक प्राणियोंका क्षयकरनहारा अन्तकको भी अन्तकसमान अग्निसे भी अधिक प्रज्वलितऐसे डरावने सिंहको देखकर बनके सब जीव डरे उसके नादकर गुफा गाज उठी सो मानों भयकर पहाड़ रोवने लगा और इसका निठुर शब्द बनके जीवोंके कानोंको ऐसा बुरा लगा मानों भयानक मुद्गरका घातही है जिसके चिरम समान लाल नेत्र सो उसके भयसे हिरण चित्राम कैसे हो रहे और मदोन्मत्त हाथियोंका मद जातारहा सबही पशुगण अपने २ ताईं बचावनेके लिये भयकर कंपायमान वृक्षोंके आसेरे होय रहे नाहरकीध्वनि सुन अंजनीने ऐसे प्रतिज्ञा करी कि जो उपसर्ग से मेरा शरीरजाय तोमेरे अनशन ब्रतहै उप सर्ग टरे भोजनलेना और सखीबसंतमाला खड्गहै हाथमें जिसके कबहूं तो आकाशमें जाय कबहूं भूमिपर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आवे अति व्याकुल भई पक्षियोंकी न्याईं भूमे ये दोनों महा भयवान कंपायमानहै हृदय जिनका तब गुफाका निवासी जो मणिचूल नामा गंधर्वदेव उससे उसकी रत्नचुल नामा स्त्रीमहादयावन्ती कहती भई हे देव देखो ये दोनों स्त्री सिंहसे महा भयभीतहैं और अति विह्वलहैं तुम इनकी रक्षाकरो तब गंधर्वदेव को दया उपजी तत्काल विक्रियाकर अष्टापदका स्वरूप रचा सो सिंहका और अष्टापदका महा भयंकर शब्द होता भया सो अंजनी हृदयमें भगवानका ध्यान धरती भई और बसंतमाला सारसकी न्याईं विलाप करे हाय अंजनी पहिले तो तू धनीके दुर्भागिनी भई फिर किसी इक प्रकार धनीका आगमन भया सो तुझे गर्भ रहासो सासेन बिना समझे घरसे निकासी फिर माता पिताने भी न राखी सो महा भयानक बनमें आई वहां पुण्यके योगसे मुनिका दर्शन भया मुनिने धीर्य बंधाय पूर्वभव कहे धर्मोपदेश देय आकाशके मार्ग गए और तू प्रसूति के अर्थ गुफामें रही सो अब इस सिंहके मुखमें प्रवेश करेगी हाय हाय राजपुत्री निर्जनवनमें मरण प्राप्त होयहै अब इस बनके देवता दयाकर रक्षाकरो मुनीने कहीथी कि तेरा सकलदुंःखगया सो क्या मुनियोंके वचन अन्यथा होयहैं इसभांति विलाप करती बसंतमाला हिंडोले झूलनेकी न्याईं एकस्थल न रहे क्षणमें सुन्दरीके समीप आवे क्षणमें बाहिर जावे ।

अथानंतर वह गुफाका गंधर्वदेव जो अष्टापदका स्वरूपधर आयाथा उसने सिंहके पंजोंकी दीनीतबसिंह भागा और अष्टापदभी सिंहको भगायकर निजस्थानक को गयायह स्वप्नसमान सिंह और अष्टापद के युद्धका चरित्र देख बसंतमाला गुफामें अंजनी सुन्दरी के समीप आई पल्लवों से भी अति कोमल जो हाथ तिन से विश्वासती भई मानों नवा जन्म पाया हित का संभाषण करती भई सो एक वर्ष बराबर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाय है रात्री जिनको ऐसी यह दोनों कभी तो कुटुम्बके निर्दईपने की कथा करें कभी धर्म कथाकरें अष्टापदने सिंहको ऐसे भगाया जैसे हाथी को सिंहभगावे । और सर्पको गरुड़ भगावे औरवहगंधर्वदेव बहुत आनन्दरूप होय गावने लगा सो ऐसा गावता भया कि जो देवोंके भी मनको मोहे तो मनुष्यों की क्या बात अर्धरात्री के समयशब्द रहित होय गए तब यह गावता भया और बारंबार वीण को अतिराग से बजावता भया और भी सारबाजे बजावता भया और मंजीरादिक बजावता भया मृदंगादिक बजावताभया बांसुरी आदि फूकके बाजे बजावता भया और सप्त स्वरों में गाया तिनके नाम निषाद १,ऋषभ२,गांधार३, षड़ज४,मध्यम५,धैवत ६, पञ्चम ७, इनसप्त स्वरों के तीन ग्राम शीघ्र मध्य विलंबित और इक्कीस मूर्छना हैं सो गंधर्वों में जे बड़े देव हैं तिनके समान गान किया इसगानाविद्यामें गंधर्वदेव प्रसिद्धहैं उनंच्चास स्थानक रागकेहैं सो सबही गंधर्व देवजाने हैं सो भगवान श्री जिनेंद्रदेव के गुणसुन्दर अक्षरों में गाएकि मैं श्रीअरिहंत देवको भक्तिकरवंदूहूं कैसे हैं भगवान देव और दैत्योंकर पूजनीकहैं देवकहिये स्वर्गबासी दैत्यकहिए ज्योतिषी विंतर और भवनबासी ये चतुरनिकाय के देव हैं सो भगवान सब देवों के देव हैं, जिनको सुरनर विद्याधर अष्ट द्रव्यों से पूजे हैं फिर कैसे हैं तीन भवन में अति प्रबीन हैं और पवित्र हैं अतिशयजिनके ऐसे जे श्रीमुनि सुव्रतनाथ तिन के चरण युगलमें भक्ति पूर्वक नमस्कार करूं हूं जिनके चरणारबिंद के नखोंकी कांतिइन्द्रके मुकुटकी रत्नोंकी ज्योतिकोप्रकाश करे है, ऐसे गानगंधर्वदेवने गाएसो बसंतमाला अतिप्रसन्न भई ऐसे राग कभीसुने नहीं थे सो विस्मयकर व्याप्त भया है मन जिसका उसगीतकी अतिप्रशंसाकरती भई धन्य यह गीत धन्य यह गीत काहूने अतिमनोहरगाए मेरा हृदय अमृतकरआह्लादितकिया अंजनी

को बसंतमाला कहती भई यहकोई दयावान्देवहै जिसने अष्टापद का रूपकर सिंहको भगाया और हमारी रक्षा करी और यह मनोहर राग इसी ने अपने आनन्द के अर्थ गाए हैं हे देवी हे शोभन हे शीलवंती तेरी दया सबही करें जे भव्य जीवहैं तिनके महाभयंकर बनमें देव मित्र होयहैं इस उपसर्ग के विनाश से निश्चय तेरा पति से मिलाप होगा और तेरे पुत्र अद्भुत पराक्रमी होयगा, मुनिके वचन अन्यथा न होंय, सोमुनिके ध्यान कर जो पवित्र गुफा उस में श्री मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा पधराय दोनो सुगंध द्रव्योंसे पूजा करती भई दोनों के चित्तमें यह बिचार कि प्रसूति सुखसे होय। बसंतमाला नानाभांति अंजनोके चित्तको प्रसन्न करे और कहती भई कि हे देवी मानो यह वन और गिरि तुम्हारे पधारने से परम हर्षको प्राप्त भयाहैसो नीझरने के प्रवाहकरयह पर्वत मानों हंसेही है, और यह वनके वृक्ष फलोंके भार से नम्रीभूत लहलहाटकरे हैं कोमल हैं पल्लव जिनके बिखर रहे हैं फूल जिनके सो मानों हर्ष को प्राप्तभए हैं और जे मयूर सूवा मैना कोकिलादिक मिष्ट शब्दकर रहे हैं सो मानो वन पहाड़ से बचनालाप करे हैं पर्वत नानाप्रकार की जे धातु तिनकी है खान जहां और सघनवृक्षों के जे समूह सोई इस पर्वतरूप राजाके सुन्दर वस्त्र हैं और यहां नानाप्रकार के रत्न हैं सोई इस गिरिके आभूषण भए और इसपर्वत में भली २ गुफा हैं और यहां अनेक जातिके सुगन्धपुष्प हैं और इस पर्वत ऊपर बडेबडे सरोवर हैं तिनमें सुगन्ध कमल फूल रहे हैं तेरा मुख महासुन्दर अनुपम सो चन्द्रमा की और कमल की उपमा को जीते है हेकल्याणरूपणी चिंता के वशमत हो धीर्यधर इस वन में सर्वकल्याण होयगा देवसेवा करेंगे हे पुण्याधिकारी तेरा शरीर निःपाप है हर्षसे पची शब्द करे हैं सो मानों तेरी प्रशन्साही करे हैं यहवृक्ष शीतल मन्दसुगन्धके और पत्रों

के लहलहाट से मानों तेरे विराजने से महाहर्ष को प्राप्त भए नृत्य ही करे हैं अब प्रभातका समय भयाहै पहिले तो आरक्त सन्ध्या भई सो मानों सूर्य ने तेरी सेवा निमित्त पठाई और अब सूर्य भी तेरा दर्शन करने के अर्थ मानों उदय होने को उद्यमी भयाहै यह प्रसन्न करने की बात बसन्तमाला ने जब कही तब अंजनी सुन्दरी कहती भई हे सखीतेरे होते सन्तेमेरे निकटसर्वकुटुम्बहै और यह बन ही तेरे प्रसाद से नगर है जो इसप्राणीको आपदामें सहाय करे है सोही बांधव है और जो बांधव दुःखदाताहै सोही परम शत्रुहै इस भान्ति परस्पर मिष्ट संभाषण करती ये दोनों गुफा में रहें श्रीमुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा का पूजन करें विद्या के प्रभाव से बसंत-माला स्नान पान आदि भली विधि सेती सब सामग्री करे वह गंधर्वदेव सर्व प्रकार इनकी दुष्ट जीवों से रक्षा करे और निरन्तर भक्ति से भगवान् के अनेक गुण नानाप्रकार के राग रचना से गावे ॥

अथानन्तर अंजनी के प्रसूतिका समय आया तब बसंतमालाको कहती भई हे सखी आज मेरे कछु व्याकुलता है तब बसंतमाला बोली हे शोभने तेरे प्रसूति का समय है तू आनन्द को प्राप्त हो तब इसके लिये कोमल पल्लवों की सेज रची उस पर इसके पुत्रका जन्मभया जैसेपूर्वदिशासूर्यकोप्रकटकरेतैसे यह हनूमान् को प्रकट करती भई पुत्र के जन्म से गुफा का अंधकार जाता रहा प्रकाशरूप होय गई मानोंसुवर्णमई ही भई तब अंजनी पुत्रको उरसे लगाय दीनता के बचन कहती भई कि हे पुत्र तूगहनबनमें उत्पन्न भया तेरे जन्मका उत्सव कैसे करूं जो तेरादादे के तथा नानेके घर जन्म होतातो जन्मका बड़ा उत्सव होता, तेरा मुखरूप चन्द्रमा देख कौनको आनन्द न होय में क्याकरूं मन्दभागिनीसर्ववस्तु रहित हूं दैव कहिये पूर्वोपार्जित कर्म ने मुझेऐसी दुःखदायिनी दशाको प्राप्त करी जो मैं कछुकरनेको समर्थ नहींहूं

परन्तु प्राणियों को सर्वंवस्तु से दीर्घआयु होना दुर्लभ है सो हे पुत्र! तू चिरञ्जीवहो तूहै तो मेरे सर्वहै यह प्राणोंका हरणहारा महागहन बन है इसमें जोमैं जीवुं हूं सो तेरेही पुण्यके प्रभावसे ऐसेदीनताके बचन अञ्जनी के मुख से सुनकर बसंतमाला कहतीभई किहे देवी तूकल्याणपूर्णहै ऐसा पुत्रपाया यह सुन्दर लक्षण शुभरूप दीखे है बड़ी ऋद्धिका धारीहोगा तेरे पुत्रके उत्सवसे मानो यह वेलरूप बनितानृत्यकरें हैं चलायमान हैं कोमलपल्लव जिनके औरजो भ्रमर गुंजार करें हैं सो मानो संगीतकरें हैं यह बालक पूर्ण तेज है सोइसके प्रभाव से तेरे सकल कल्याण होगा तू बृथा चिन्तावतीमतहो इसभान्ति इनदोनोंकेवचनालाप होतेभए

अथानन्तर बसन्तमालाने आकाशमें सूर्यके तेज समान प्रकाश रूप एक ऊंचा विमान देखा सो देख कर स्वामिनी से कहा तब वह शंकाकर विलाप करतीभई यह कोई निःकारण बैरी मेरे पुत्र को लेजाय अथवा मेरा कोई भाई है तिनके विलाप सुन विद्याधर ने विमान थांभा दयासंयुक्त आकाशसे उतरा गुफाकेद्वार पर विमानको थांभ महा नीतिवान महा विनयवान शंका को धरता हुवा स्त्री सहित भीतर प्रवेश किया तब बसन्तमालाने देखकर आदरकिया यह शुभ मन विनयसे बैठा और क्षणएक बैठ कर महामिष्ट और गम्भीरवाणी कहकर बसन्तमालाको पूछताभया ऐसे गम्भीरबचन कहताभया मानो मयूरों को हर्षितकरता मेघही गरजा है सुमर्यादा कहिये मर्यादा की धरणहारी यह बाई किसकी बेटी किस से परणी किसकारण से महाबन में रहे है यह बड़ घरकी पुत्री है किसकारण से सर्वकुटुम्ब से रहित भई है अथवा इस लोकमें रागद्वेष रहितजे उत्तमजीव हैं तिनके पूर्व कर्मोंके प्रेरे निःकारणवैरी होयहैं तब बसन्त माला दुःखके भारसे रुकगयाहै कण्ठ जिसका आंसू डारती नीची है दृष्टि जिसकी कष्टकर वचन कहतीभई

हे महानुभाव तुम्हारे वचनही से तुम्हारे मनकी शुद्धता जानी जाय है जैसे दाह के नाशका मूल जो चन्दनका वृक्ष उसकी छायाभी सुन्दर लगे है तुम सारिखे जे गुणवान पुरुषहैं सो शुद्धभाव प्रकट करने के स्थानक हैं आप बड़े हो दयालुहो यदि तुम्हारे इसके दुःख सुननेकी इच्छा है तो सुनो मैं कहूंहूं तुम सारिखे बड़े पुरुषों से कहाहुवा दुःख निवृत्त होयहै तुम दुःखहारी पुरुषहो तुम्हारा यह स्वभावही है कि आपदा विषे सहायकरो सो सुनो यह अंजनी सुन्दरी राजा महेन्द्रकी पुत्री है वह राजा पृथिवीपर प्रसिद्ध महा यशवान नीतिवान निर्मल स्वभाव है और राजा प्रल्हादका पुत्रपवनंजय गुणोंका सागर उसकी प्राणहूंसे प्यारी यह स्त्री है सो पवनंजयएक समय बापकी आज्ञासे आपतो रावणके निकट वरुणसे युद्धके अर्थ विदाहोय चले थे सो मानसरोवरसे रात्रिकोइसकेमहलमें आए और इसकोगर्भरहा सोइसकी सासूका क्रूरस्वभाव दयारहित महामूर्खथाही उसके चित्तमें गर्भका भर्म उपजा तबउसने इसको पिताके घरपठाई यह सर्वदोषरहित महासती शीलवंती निर्विकारहै सो पिताने भी अकीर्तिके भयसे न राखी जे सज्जनपुरुषहैं वे झूठेभी दोषसे डरें हैं यह बड़े कुलकी बालिका सर्व आलंबनरहित इस बनमें मृगीसमान रहे है मैं इसकी सेवा करूंहूं इनके कुल क्रमसे हम आज्ञाकारी सेवकहैं इतबारी हैं और कृपापात्रहैं सो यह आज इस वनमें प्रसूतभई है यह बन नाना उपसर्गका निवासहै न जानिए कैसे इसको सुख होयगा। हे राजन! यह इसका वृतांत संक्षेपसे तुमसे कहा और संपूर्ण दुःख कहांतक कहूं इस भांति स्नेहसे पूरित जो बसंतमालाके हृदयका रागसो अंजनी के तापरूप अग्निसे पिगला और अंग में न समाया सो मानों बसंतमाला के वचन द्वारकर बाहिर निकसा तब वह राजा प्रतिसूर्य हनूरुहनाम द्वीपका स्वामी बसंतमालासे कहताभया हे भव्य मैं राजा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्रभानु और राणी सुन्दरमालिनीका पुत्रहूं अंजनी मेरी भानजी है मैंने बहुत दिनमें देखी सो पिछानी नहीं ऐसा कहकर अंजनीको बालावस्थासे लेकर सकल वृतांत कहकर गद्गद् बाणीकर बचनालाप कर आंसू डालता भया तब पूर्ण वृतान्त कहनेसे अंजनीने इसको मामा जान गले लग बहुत रुदन किया सो मानों सकल दुःख रुदनसहित निकस गया क्योंकि यह जगतकी रीतिहै कि हितु देखेसे अश्रुपात पड़े हैं वह राजाभी रुदन करने लगा और उसकी रानीभी रोवने लगी बसंतमालाने भी अति रुदन किया इन सबके रुदनसे गुफा गुंजार करती भई सो मानों पर्वतने भी रुदन किया जलके जे नीझरने वेई भए अश्रुपात उनसे सब बन शब्दमई होयगया बनके जीव जे मृगादि सोभी रुदन करते भए तब राजा प्रतिसूर्यने जलसे अंजनी का मुख प्रक्षालन कराया और आपभी जलसे मुख प्रक्षाला। बन भी शब्द रहित होगया मानों इनकीबार्ता सुनना चाहै है अंजनी प्रतिसूर्यकी स्त्रीसे क्षेमकुशल पूछती भई सो बड़ोंकी यही रीतिहै कि जो दुःखमें भी कर्तव्यसे चूकें और अंजनी मामा से कहती भई हे पूज्य मेरे पुत्रका समस्त शुभाशुभ वृतांत ज्योतिषियोंसे पूछो तब सांवतसरनामा ज्योतिषी लारथाउस को पूछा तब ज्योतिषीबोला बालकके जन्मकी वेलाबतावोतब वसंतमालाने कहाकिआजअर्धरात्रिगए जन्म भयाहै तबलग्नथापकर बालकके शुभलक्षणजान ज्योतिषी कहता भयाकि यहबालकमुक्तिकाभाजन है फिर जन्म नधरेगा जो तुम्हारे मनमें संदेहहै तोमैं संक्षेपतासे कहूंहूं सो सुनो (१) चैत्रशुदी अष्टमी की

(१) नोट–मूलग्रन्थ में नक्षत्रादि दूसरीप्रकार वर्णन किए हैं परन्तु हम नहीं समझ सके कि यह ग्रह ठीक हैं या मूल ग्रन्थ के ठीक हैं इसकारण हमने भाषाग्रन्थ के मूजबही रक्खा है, मूल ग्रन्थ के माफिक ग्रहादिक को भी ग्रन्थ के अन्त में हम लिखेंगे, बुद्धिमान विचार लेवें ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिथि है और श्रवणनक्षत्रहै और सूर्यमेषका उच्चस्थानक विषेबैठाहै और चन्द्रमाहृष्चकाहै और मकरका मंगलहै और बुधमीनकाहै और बृहस्पति कर्ककाहै सो उच्चहै शुक्र तथा शनैश्चर दोनों मीनकेहैं सूर्य पूर्ण दृष्टिकर शनिको देखे है और मंगल दश विश्वा सूर्यको देखेहै और बृहस्पति पन्द्रह विश्वा सूर्य को देखे है और सूर्य दशविश्वा बृहस्पतिको देखेहै और चन्द्रमाको पूर्ण दृष्टि बृहस्पति देखे है और बृहस्पतिको चन्द्रमा देखे है और बृहस्पति शनिश्चरको पन्द्रह विश्वा देखे है और शनिश्चरबृहस्पति को दस विश्वा देखेहै और बृहस्पति शुक्रको पन्द्रहविश्वा देखे है और शुक्र बृहस्पतिकोपंद्रहविश्वादेखे है इसके सबहीग्रह बलवान बैठे हैं सूर्य और मंगलदोनों इसका अद्भुतराज्यनिरूपणकरे हैं औरबृहस्पति और शनिमुक्तिका देनहारा जो योगीन्द्रपद निर्णयकरेहैं जोएकबृहस्पतिही उच्चस्थान बैठाहोयतो सर्व कल्याणके प्राप्तिका कारणहै और ब्रह्मनामा योगहै और मुहूर्तशुभहै सो अविनाशीसुखकासमागम इसके होयगा इसभांति सबहीग्रह अतिबलवान बैठे हैं सोसर्वदोषरहित यह होयगा ऐसा ज्योतिषीनेजबकहा तब प्रतिसूर्य्यने उसको बहुत दानदिया और भानिजीको अतिहर्ष उपजाया और कहाकि हे वत्से! अबहमसब हनूरुहद्वीपकोचलें वहां बालक का जन्मोत्सव भली भान्ति होयगा, तब अंजनी भगवान् को वन्दनाकर पुत्र को गोदी में लेय गुफा का अधिपति जो वह गंधर्वदेव उससे बारम्बार क्षमा कराय प्रतिसूर्य्य के परिवार सहित गुफा से निकली और बिमानके पास आई उभी रही मानों साक्षात् बनलक्ष्मी ही है कैसा है विमान मोतीयोंके जे हार सोई मानों नीझरने हैं और पवन की प्रेरी क्षुद्रघण्टिका बाजरहीहैंऔर लहलहाट करती जे रत्नों की झालरी तिन से शोभायमान और केलि केबनों से शोभायमान है सूर्य्य के किरण के स्पर्श कर ज्योतिरूप

For Private and Personal Use Only

होय रहा है और नाना प्रकार के रत्नों की प्रभाकर ज्योति का मण्डल पड़ रहा है सो मानों इन्द्रधनुष ही चढ़ा रहा है और नानाप्रकार के वर्णों की सैकड़ों ध्वजा फर हरे हैं और वह विमान कल्पवृक्ष समान मनोहर है नानाप्रकार के रत्नों से निर्मापित नाना रूप को धरे मानो स्वर्ग लोकसे आया है, सो उस विमान में पुत्रसहित अंजनी वसन्तमाला तथा राजा प्रतिसूर्य्य का परिवार सब बैठकर आकाश के मार्ग चले, सो बालक कौतुककर मुलकता सन्ता माताकी गोद में से उछलकर पर्वत ऊपरजापड़ा माता हाहाकार करनेलगी और सर्व लोक राजा प्रतिसूर्य्यके हाहाकार करते भए और राजा प्रतिसूर्य्य बालक के ढूंढ़ने को आकाश से पृथिवी पर आया, अंजनी अतिदीन भई विलाप करे है ऐसे विलाप करे है उस को सुन कर तिर्यंचोंका मन भी करुणा कर कोमल होयगया हायपुत्र यह क्या भया दैव कहिए पूर्वोपार्जित कर्मने क्या किया मुझे रत्न सम्पूर्ण निधान दिखायकर फिर हरलिया पतिके वियोगके दुःखसे व्याकुल जो मैसो मेरे जीवनका आलम्बन जो बालक भयाथा सोभी पूरबोपार्जित कर्मने छिनायलिया सो माता तो यह विलाप करे है और पुत्र पत्थरपर पड़ा सो पत्थरके हजारों खंड होगए और महाशब्द भया प्रति सूर्य देखे तो बालक एक शिलाऊपर सुख से विराजे है अपने अंगूठे आपही चूसे है क्रीड़ा करे है और मुलके है अतिशोभाय मान सूधे पड़े हैं लहलहाट करे हैं कर चरण कमल जिनके सुन्दर है शरीर जिनका वे कामदेव पद के धारक उनको कौनकी उपमा दीजे मन्द मन्द जो पवन उससे लहलहाट करता जो रक्त कमलोंका बन उस समान है प्रभा जिनकी अपने तेजसे पहाड़के खंड खंड किए ऐसे बालकको दूरसे देखकर राजाप्रति सूर्य अति आश्चर्यको प्राप्तभया कैसाहै बालक निःपाप है शरीर जिसका धर्मका स्वरूप तेज का पुंज

ऐसे पुत्रको देख माता बहुत विसमयको प्राप्त भई उठाय सिर चूमा और छाती से लगा लिया तब प्रति सूर्य अंजनी से कहताभया हे बालके यह बालक तेरा सम चतुर संस्थान वज्र वृषभ नाराच संहनन का धारनहारा महा वज्रका स्वरूप है जिसके पड़नेकर पहाड़ चूर्ण होयगया जब इस बालककीही देवों से अधिक अद्भुत शक्ति है तो यौवन अवस्था की शक्ति का क्या कहना यह निश्चय सेती चरमशरीरी है तद्भव मोक्षगामी है फिर देह न धारेगा इसकी यही पर्याय सिद्ध पदका कारण है ऐसा जानकर तीन प्रदक्षिणा देय हाथ जोड़ सिर नवाय अपनी स्त्रियों के समूह सहित बालकको नमस्कार करताभया यह बालक उसकी जे स्त्री तिनके जे नेत्र तेई भए श्यामश्वेत अरुण कमल तिनकी जे माला तिनसे पूजनीक अति रमणीक मन्दमन्द मुलकनका करणहारा सबही नरनारियोंका मनहरे राजाप्रति सूर्य पुत्रसहित अञ्जनी भानजीको विमान में बैठाय अपनेस्थानमें लेआया कैसाहै नगर ध्वजा तोरणों से शोभायमा है राजा आया सुन सर्व नगर के लोक नाना प्रकार के मङ्गल द्रव्यों सहित सन्मुख आए राजा प्रति सूर्य ने राजमहलमें प्रवेश किया वादित्रों के नादसे व्याप्त भई हैं दशों दिशा जहां बालकके जन्मका बड़ा उत्सव विद्याधरों ने किया जैसा स्वर्गलोक विषे इन्द्रकी उत्पत्तिका उत्सव देव करे हैं पर्वतविषे जन्म पाया और विमान से पड़कर पर्वतको चूर्णकिया इससिये बालकका नाम माता और बालकके मामाप्रति सूर्यने श्री शैल ठहराया और हनूरुहद्वीप विषे जन्मोत्सवभया इसलिये हनूमान यह नाम पृथिवीविषे प्रसिद्धभया वह श्रीशैल (हनूमान) हनूरुहपुरमें रमें कैसाहै कुमार देवों समानहै प्रभा जिसकी महाकान्तिवान सबको महा उत्सवरूपहै शरीरकी क्रिया जिसकी सर्वलोकके मन और नेत्रोंका हरनेहारा प्रतिसूर्यके पुर विषे विराजे है।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथानन्तर गणधरदेव राजा श्रेणिकसे कहेहैं हे नृप! प्राणियोंकेपूर्वोपार्जित पुण्यके प्रभावसे गिरोंका चूरण करनहारा महाकठोर जो वज्र सोभी पुष्पसमान कोमलहोय परणवे हैं और महा आतापकी करनहारी जो अग्नि सोभी चन्द्रमा की किरण समान तथा विस्तीर्ण कमलनीके बन समान शीतल होयहै और महा तीक्ष्ण खड्गकी धारा सो महामनोहर कोमल लता समान होयहै ऐसा जानकर जे विवेकी जीवहैं वे पापसे विरक्त होयहैं कैसा है पाप महा दुख देनेमें प्रवीणहै तुम श्रीजिनराजके चरित्रविषे अनुरागी होवो कैसाहै जिन-राजका चरित्र सारभूत जो मोक्षका सुख उसके देनेविषे चतुरहै यह समस्त जगत् निरन्तर जन्म जरा मरण रूप सूर्यके आतापसे तप्तायमानहै उसमें हजारों जे व्याधिहैं सोईकिरणोंका समूहहै॥ इति सतरवांपर्व संपूर्णम्

अथानन्तर गौतमस्वामी राजाश्रेणिकसे कहे हैं हे मगधदेश के मण्डन यह श्रीहनूमानजी के जन्म को बृत्तांत तो तुझे कहा अब हनूमानके पिता पवनंजय का बृत्तान्त सुन पवनंजय पवनकी न्याईं शीघ्रही रावणपै गया और रावणकी आज्ञा पाय वरुणसे युद्ध करता भया सो बहुत देरतक नाना प्रकारके शस्त्रों से वरुण के और पवनंजय के युद्ध भया सो युद्ध विषे वरुण को पवनंजय ने बांध लिया तब उसने जो खरदूषणको बांधाथा सो छुड़ाया और वरुणको रावण के समीप लाया, वरुणने रावणकी सेवा अंगीकार करी रावण पवनंजय से अति प्रसन्न भए तब पवनंजय रावणसे विदा होय अंजनी के स्नेहसे शीघ्र ही घरको चले राजा प्रल्हाद ने सुनी कि पुत्र विजय करआया तब ध्वजा तोरणमालादिकों से नगर शोभित किया तब सबही परिजन पुरजन लोग सनमुख आय नगर के सर्व नर नारी इनके कर्तव्यकी प्रशंसाकरें राजमहल के द्वारे अर्घादिक कर बहुत सन्मान कर भीतर प्रवेश कराया सारभूत मंगलीक बचनों से कुंवर की

For Private and Personal Use Only

सबही ने प्रशंसा करी कुँवर माता पिता को प्रणाम कर सब का मुजरा लेय क्षण एक सभा विषे सबन की शुश्रुषा कर आप अंजनी के महल पधारे, प्रहस्त मित्र लार सो वह महल जैसा जीव रहित शरीर सुन्दर न लागे तैसे अंजनीविना मनोहर न लागे तब मन अप्रसन्न होय गया प्रहस्त से कहते भए हे मित्र यहां वह प्राणप्रिया कमलनयनी नहीं दीखे है सो कहां है यह मन्दिर उस बिना मुझे उद्यान समान भासे है अथवा आकाश समान शून्य भासे है इसलिये तुम वार्ता पूछो वह कहां है तब प्रहस्त बाहिरले लोगों से निश्चय कर सकल वृतान्त कहता भया, तब इनके हृदयको चोभ उपजा माता पितासे विना पूछे मित्रसहित महेन्द्र के नगर में गए, चित्त में उदास जब राजा महेन्द्र के नगर के समीप जाय पहुंचे तब मन में ऐसा जानाजो आजप्रिया का मिलाप होयगा तब मित्र से प्रसन्नहोय कहते भएकिहेमित्रदेखोयह नगर मनोहर दीखे है जहां वह सुन्दर कटाच्च की धरन हारी सुन्दरी विराजेहै, जैसे कैलाश पर्वत के शिखर शोभायमान दीखे हैं तैसे ये महलके शिखर रमणीक दीखेहैं और बनकेवृच्च ऐसे सुन्दरहैं मानों वर्षाकालकी सघनघटा ही हैं ऐसीवार्ता मित्रसे करते हुए नगरकेपास जाय पहुंचे मित्रभी बहुत प्रसन्न करता आया राजा महेंद्रने सुनी कि पवनञ्जय कुमार विजयकर पितासों मिल यहां आएहैं तब नगरकी बडीशोभाकराई औरआपअर्घादिकउपचारलेयसन्मुखआयाबहुतआदरसे कुँवर को नगर में लाएनगरकेलोगोंनेबहुतआदर से गुण वरणन किए कुँवरराज मन्दिर में आए एक महूर्त ससुरके निकटविराजे सबहीका सनमानाकियाऔर यथायोग्यबार्ता करी फिर राजासे आज्ञा लेकर सासूका मुजराकरा फिरप्रियाके महल पधारे। कैसे हैं कुमार कांताके देखने की है अभिलाषा जिन के वहांभीस्त्री को न देखातब अति विरहातुरहोय काहूकोपूछा हे बाल-

के यहांहमारी प्रिया कहां है तबवह बोली हेदेव यहां तुम्हारी प्रिया नहीं तब उसके वचनरूप वज्र से हृदय चूर्ण होगया और कान मानों ताते खारेपानी से सींचेगए जैसा जीवरहित मृतक शरीर होय तैसाहोय गया शोकरूप दाहकर मुरझाया गया है मुखकमल जिसका यह सुसरारके नगरसे निकसकर पृथिवी विषे स्त्री की वार्ता के निमित्त भ्रमता भया मानो वायुकुमार को वायलगी तबप्रहस्त मित्र इसको अति आतुरदेख कर इसके दुखसे अतिदुखी भया और इससे कहता भया हे मित्र क्यों खेद खिन्न होय है अपना चित्तनिराकुल कर यह पृथिवी केतीक है जहां होयगी वहां ठीककर लेवेंगे तबकुमार ने मित्रसे कही तुम आदित्यपुर मेरे पिता पै जावो और सकल वृतान्त कहो जो मुझे प्रियाकी प्राप्ति न होयगी तो मेराजीवना नहींहोयगा मैं सकल पृथिवी पर भ्रमण करूहूं और तुम भी ठीक करो तब मित्र यह वृतान्त कहने को आदित्य नगर में आया पिताको सर्व वृतान्त कहा और पवनकुमार अम्बरगोचर हाथी पर चढ़कर पृथिवी विषे विचरता भया और मन में यह चिन्ता करी कि वह सुन्दरी कमलसमान कोमलशरीर शोकके आतापसे संताप को प्राप्त भई कहांगई मेरा ही है हृदयमें ध्यान जिसके वह गरीबिनी विरहरूप अग्निसे प्रज्वलित विषमवन मे कौन दिशा को गई वह सत्यवादनी निःकपट धर्मकी धरनहारी गर्भका है भारजिसके मत कदापि बसन्त मालासे रहित होयगई होय वह पतिव्रता श्रावकके व्रत पालनहारी राजकुमारी शोककर अन्धहो गएहैंदो- नों नेत्र जिसके और विकटवन विहार करती क्षुधासे पीड़ित अजगर कर युक्तजो अन्ध कूप उसमें ही पड़ीहो अथवा वह गर्भ वती दुष्टपशुवों के भयंकर शब्द सुन प्राणरहित ही होयगई होय वह प्राणों से भी अधिक प्यारी इस भयन्कर अरण्य विषे जल बिनाप्यास कर सूक गए हैं कण्ठ तालु जिसके

रा प्राणों से रहितहोय गई होय, वह भोरी कदाचित् गंगा में उतरीहोय वहां नानाप्रकारके ग्राह सो पानी में वहगई होय, अथवा वह अतिकोमल तनु डाभ की अणी कर विदारेगये होंय चरणजिसके सो एकपेंड भी पग धरने कीशक्ति नहीं थी सो न जानिये क्या दशा भई अथवा दुःख से गर्भपात भया होय औरकदाचित् वह जिन धर्म की सेवनहारी महाविरक्तभाव होय आर्याभई ऐसा चिंतवन करते पवनञ्जयकुमार ने पृथ्वी में भ्रमण किया सो वह प्राणवल्लभा न देखी तब विरह कर पीड़ितसर्व जगत् को शून्य देखता भया, मरण का निश्चय किया, न पर्वत विषे न मनोहर वृक्षों विषे न नदी के तटपर किसी ठौर ही प्राणप्रिया बिना इसका मन न रमता भया, ऐसा विवेकवर्जित भया जो सुन्दरीकी वार्ता वृक्षों को पूछे भ्रमता भ्रमता भूतरवर नामा बन में आया वहां हाथी से उतरा औरजैसेमुनि आत्मा का ध्यान करें तैसेप्रिया काध्यान करे फिर हथयार और बक्तर पृथिवी पर डार दिए औरगजेन्द्र से कहतेभए हेगजराज अब तुम वनस्वच्छन्दविहारी होवो हाथी विनयकर निकट खड़ा है आप कहें हैं हे गजेन्द्र इस नदी के तीरमें शल्लकी वन है उस के जो पल्लव सो चरतेविचरो औरयहां हथनियोंके समूह हैं सो तुमनायक होय विचरो कुंवरने ऐसाकहा परन्तु वह कृतज्ञ धनी के स्नेह विषे प्रवीण कुंवरका संग नहीं छोड़ताभयाजैसे भला भाई भाईका संग न छोड़े कुंवर अतिशोकवन्त ऐसे विकल्प करेकिअति मनोहर जोवह स्त्रीउसे यदि न पाऊं तो इसबन विषे प्राणत्यागकरूं, प्रियाहीमें लगाहै मन जिसका ऐसा जो पवनञ्जय उसे बनविषे रात्री भई सो रात्री के चार पहर चार बर्ष समान बीते नाना प्रकार के विकल्पकर व्याकुल भया ॥ यहां की तो यहकथा और मित्रपिता पै गया सो पिताको सर्व वृतान्त कहा पिता सुनकर परमशोकको प्राप्तभया सबको शोक उपजा और केतुमती माता पुत्रके शोकसे अति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीड़ित होय रोवती हुई प्रहस्तसे कहती भई कि जो तू मेरे पुत्रको अकेला छोड़आया सो भला न किया तब प्रहस्त ने कही मुझे अति आग्रहकर तुम्हारे निकट भेजा सो आया अब वहां जाऊंगा सो माताने कही वह कहां है तब प्रहस्तने कही जहां अंजनी है वहां होयगा तब इसने कही अंजनी कहां है उसने कही मैं न जानूं । हे माता जो बिना विचारे शीघ्रही कामकरें तिनको पश्चाताप होय तुम्हारे पुत्रने ऐसो निश्चय किया कि जोमैं प्रियाको न देखूं तो प्राण त्यागकरूं यह सुनकर माता अति विलाप करतीभई अन्तह्-पुरकी सकल स्त्री रुदन करती भई माता विलाप करे है हाय मैं पापनीने क्या किया जो महासतीको कलंक लगाया जिससे मेरापुत्र जीवनेके शंसय को प्राप्तभया मैं क्रूरभावकी धरनहारी महावक्र मन्द भागिनीने बिनाविचारे कामकिया यह नगर यह कुल और विजियार्ध पर्वत और रावण का कटक पवनंजय विना शोभे नहीं मेरे पुत्र समान और कौन जिसने वरुण जो रावण सेभी असाध्य उसे रणविषे क्षणमात्रमें बांधलिया हाय वत्स विनयके आधार गुरुपूजनमें तत्पर जगत सुन्दर विख्यातगुण तू कहां गया तेरे दुख रूप अग्नि से तप्तायमान जो मैं सो हे पुत्र मातासे वचनालापकर मेरा शोक निवार ऐसे विलाप करती अपना उरस्थल और सिर कूटती जो केतुमती सो उसने सब कुटम्ब शोकरूप किया प्रल्हादभी आंसू डारते भए सर्व परिवारको साथले प्रहस्त को अगवानी कर अपने नगरसे पुत्र को ढूंढने चले दोनों श्रेणियों के सर्वविद्याधर प्रीति सों बुलाए सो परिवार सहित आए सबही आकाश के मार्ग कुंवर को ढूंढे हैं पृथिवी में देखेहैं और गम्भीर बन और लतावोंमें देखे हैं पर्वतों में देखेहैं और प्रतिसूर्यके पासभी प्रल्हादका दूत गया सो सुनकर महा शोकवानभया और अञ्जनीसे कहा सो अंजनी प्रथम दुःखसेभी अधिक दुःखको प्राप्त

For Private and Personal Use Only

भई अश्रुधारासे वदन पखालती रुदन करती भई कि हाय नाथमेरे प्राणोंके आधार मुझमें बांधाहै मन जिन्हों ने सोमुझ जन्मदुखारीको छोड़कर कहांगए क्या मुझसे कोप न छोड़ोहो जो सर्व विद्याधरोंसे अदृश्यहोय रहेहो एकबार एकभी अमृत समान वचन मुझसे बोलो एतेदिन ये प्राण तुम्हारे दर्शनकी बांछाकर राखे हैं अब जो तुम न दीखो तो ये प्राण मेरे किस कामके हैं मेरे यह मनोरथथा कि पतिका समागम होगा सो दैवने मनोरथ भग्न किया मुझ मन्द भागिनीके अर्थ आप कष्ट अवस्थाको प्राप्त भए सो तुम्हारे कष्टकी दशा सुनकर मेरे प्राण पापी क्यों न विनश जांय ऐसेविलाप करती अंजनीको देखकर बसन्तमाला कहती भई हे देवी ऐसे अमंगल वचन मत कहो तुम्हारा धनीसे अवश्य मिलाप होयगा और प्रति सूर्य बहुत दिलासा करताभया कि तेरेपतिको शीघ्रही लावे हैं ऐसा कहकर राजाप्रतिसूर्यने मनसेभी उतावला जो विमान उसमें चढ़कर आकाशसे उतरकर पृथिवी विषे ढूंढा प्रतिसूर्यके लार दोनों श्रेणियोंके विद्याधर और लंकाके लोग यत्नकर ढूंडे हैं देखते देखते भूतरवर नामा अटवी विषे आए वहां अम्बरगोचर नामाहाथी देखा वर्षाकालके सघन मेघ समान है आकार जिसका तब हाथीको देखकर सर्व विद्याधर प्रसन्नभए कि जहां यह हाथी है वहां पवनंजय है पूर्वे हमने यह हाथी अनेक बार देखा है यह हाथी अञ्जनगिरि समान हैं रंग जिसका और कुंदके फूल समान श्वेतहैं दांत जिसके और जैसी चाहिये तैसी सुन्दरहै सूंड जिसकी जबहाथीकेसमीप विद्याधरआए तबउसने निरंकुशदेख डरे और हाथीविद्याधरोंके कटकका शब्द सुन महाक्षोभको प्राप्तभया हाथी महाभयंकर दुर्निवारशीघ्रहै वेगजिसका मदकर भीजरहेहैं कपोल जिसके और हाले हैं और गाजे हैं कान जिसके जिस दिशाको हाथी दौड़े उस दिशासे विद्याधर हटजावें यह हाथी लोगों

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का समूह देख स्वामीकी रक्षाविषे तत्पर मूंडसे बंधी है तलवार जिसके महाभयंकर पवनंजयका समीप न तजे सो विद्याधर त्रासपाय इसके समीप न आवें तब विद्याधरोंने हथनियोंके समूहसे इसे वश किया क्योंकि जेते वशीकरणके उपायहै तिनमें स्त्री समान और कोई उपाय नहीं तबये आगे आय पवनकुमारको देखते भए मानो काठकाहै मौनसे बैठाहै वे यथायोग्य इसका उपचार करतेभए पर यह चिन्तामें लीन सो किसीसों न बोले जैसे ध्यानारूढ़ मुनि किसीसे न बोलें तब पवनंजयके मातापिता आंसू डारते इसके मस्तकको चूमते भए और छातीसे लगावते भए और कहते भए कि हे पुत्र तू ऐसा विनयवान हमको छोड़कर कहां आया महाकोमल सेजपर सोवनहारा तेरा शरीर इस भीम वनविषे कैसे रात्री व्यतीत करी ऐसे वचन कहे तोभी न बोले तब इसे नम्रीभुत और मौनव्रत धरे मरणकाहै निश्चय जिसके ऐसा जानकर समस्त विद्याधर शोकको प्राप्त भए पिता सहित सब विलाप करते भए।

अथानंतर तब प्रतिसूर्य अंजनीका मामा सब विद्याधरोंसे कहताभया कि मैं वायुकुमारसे वचनालाप करूंगा तब वह पवनंजयको छातीसे लगायकर कहता भया हे कुमार मैं समस्त वृतांत कहूंहूं सो सुनो एक महारमणीक संध्याभ्रनामा पर्वत वहां अनंगवीचि नामा मुनिको केवलज्ञान उपजाया सो इन्द्रादिकदेव दर्शनको आएथे और मैंभी गयाथा सो वन्दनाकर आवताथा सो मार्गमें एक पर्वत की गुफाथी उसके ऊपर मेरा विमान आया सो मैंनेस्त्रीके रुदनकी ध्वनि सुनी मानों बीन बाजे है तबमैं वहां गया गुफामें अंजनी देखी मैंने वनके निवासका कारण पूछा तब वसंतमालाने सर्व वृतांत कहा अंजनी शोककरविह्वल रुदनकरे सो मैं धीर्य बंधाया और गुफामें उसके पुत्रका जन्मभया सो गुफा पुत्र

For Private and Personal Use Only

के शरीरकी कांतिकर प्रकाशरूप होयगई मानो सुवर्णकी रची है यह वार्ता सुनकर पवनंजय परम हर्ष को प्राप्त भए और प्रतिसूर्यको पूछतेभए बालक सुखसे है तब प्रतिसूर्यने कही बालकको मैं बिमानमें थापकर हनूरुहद्वीपको जाऊंथा सो मार्गमें बालक एक पर्वतपर पड़ा सो पर्वतके पड़नेका नाम सुन कर पवनंजयने हायहाय ऐसा शब्द कहा तब प्रतिसूर्यने कही सोच मतकरो जो वृतांत भया सो सुनो जिस से सर्व दुखसे निवृति होय बालकको पडा देख मैं विमानसे नीचे उतरा तब क्या देखा पर्वतके खंड २ हो गए और एक शिलापर बालक पड़ाहै और उसकी ज्योति कर दशों दिशा प्रकाशरूप होय रही हैं तब मैंने तीन प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर बालकको उठाय लिया और माताको सौंपा सो माता अति विस्मय को प्राप्त भई पुत्रका श्रीशैलनाम धरा बसंतमाला और पुत्र सहित अंजनीको हनुरुहद्वीप ले गया वहां पुत्रका जन्मोत्सव भया सो बालकका दूजा नाम हनुमान भी है यह तुमको मैंने सकल वृतांतकहा हमारेनगरमें वह पातिव्रता पुत्रसहित आनन्दसे तिष्ठे हैं यह वृतांत सुनकर पवनंजय तत्काल अंजनीके अवलोकनके अभिलाषी हनुरुहद्वीपको चले और सर्वविद्याधरभी इनके संगचलेहनूरुहद्वीपमेंगए सो दोय महीना सबको प्रतिसूर्यने बहुत आदरसे राखा फिर सब प्रसन्नहोय अपने २ स्थानकको गए बहुत दिनों में पाया है स्त्रीका संयोग जिसने सो ऐसा पवनंजय यहांही रहे कैसाहै पवनंजय सुंदर है चेष्टा जिसकी और पुत्रकी चेष्टासे अति सुन्दररूप हनूरुहद्वीपमें देवनकी न्यांई रमते भए हनूमान् नव यौवनको प्राप्त भए मेरुके सिखर समान सुन्दर है सीस जिनका सर्वजीवोंके मनकेहरण हारे होते भए सिद्ध भई है अनेक विद्या जिनको और महा प्रभावरूप विनयवान् बुद्धिमान् महाबली सर्व शास्त्र के अर्थ विषे प्रवीन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परोपकार करनेको चतुर पूर्वभव स्वर्गमें सुख भोग आए अब यहां हनुरुह द्वीप विषेदेवों की न्याईं रमें हैं।

हे श्रेणिकगुरु पूजामें तत्पर श्रीहनूमान् के जन्मका वर्णन और पवनंजय का अंजनीसे मिलाप यह अद्भुत कथा नाना रसकी भरीहै, जे प्राणी भावधर यह कथा पढ़ें पढ़ावें सुनें सुनावें उनकी अशुभ कर्ममें प्रवृत्ति न होय शुभक्रिया के उद्यमी होंय और जो यह कथा भावधर पढ़ें पढ़ावें उनकी परभव में शुभगती विधि दीर्घ आयु होय, और शरीर निरोग सुन्दर होय महापराक्रमी होंय और उनकी बुद्धि करने योग्य कार्यके पारको प्राप्त होय और चन्द्रमा समान निर्मलकीर्ति होय और जिस से स्वर्ग मुक्तिके सुख पाइये ऐसे धर्म की बढ़वारी होय जो लोक में दुर्लभ वस्तु हैं सो सब सुलभ होंय सूर्य समान प्रताप के धारक होंय। इति अठारवां पर्व संपूर्णम्।

अथानंतर राजा वरुण फिर आज्ञालोप भया तब कोप कर उसपर रावण फेर चढ़ा सर्व भूमि गोचरी विद्याधरों को अपने समीप बुलवाया सबके निकट आज्ञा पत्र लेय दूतगए कैसाहै रावण राज्य कार्यों में निपुण है किहकंधापुर के धनी और अलंकारी के धनी रथनू पुर और चक्रवालपुर के धनी तथा वैताढ्य की दोनों श्रेणी के विद्याधर तथा भूमिगोचरी सबही आज्ञा प्रमाण रावणके समीपआए हनूरुह द्वीप में भी प्रतिसूर्य तथा पवनंजय के नाम आज्ञा पत्र लेय दूत आए सो ये दोनों आज्ञा पत्रको माथे चढ़ाय दूत का बहुत सन्मान कर आज्ञा प्रमाण गमनके उद्यमी भए तब हनुमान को राज्याभिषेक देने लगे वादित्रादिक के समूह बाजनेलगे और कलश हैं जिनके हाथमें ऐसे मनुष्य आगे आय ठाढ़े भए तब हनुमान् ने प्रतिसूर्य और पवनंजय से पूछा यह क्या है तब उन्होंने कही हे वत्स हनुरूहद्वीप का प्रतिपालन कर हमदोनो को रावण बुलावें है सो जांय हैं रावण की मदद के अर्थ रावण वरुण पर जाय

For Private and Personal Use Only

है वरुण ने फिर माथा उठाया है महासामंत है उसके बड़ी सेनाहै पुत्र बलवान् हैं।और गढ़ का बल है तब हनूमानविनयकर कहते भए कि मेरे होते तुमको जाना उचितनहीं, तुम मेरे गुरुजनहो तबउन्होंनेकही हे वत्स तू बालकहै अबतक रण देखानहीं तब हनुमान् बोले अनादि कालसे जीवचतुर्गतिविषे भ्रमणकरे है पंचमगति जो मुक्त सो जब तक अज्ञान का उदय है तब तक जीवने पाई नहीं परन्तु भव्य जीव पावेही हैं तैसे हमने अबतक युद्ध कियानहींपरन्तु अबयुद्धकर वरुणकोजीतेहींगे औरविजयकरतुम्हारेपासआवें सो जब उनोंने राखने का घनाही यत्न किया परन्तु ये न रहते जाने तब उन्होंने आज्ञा दई यह स्नान भोजन कर पहिले पहिरही मंलीक द्रव्यों कर भगवान् की पूजा कर अरिहंत सिद्ध को नमस्कार कर माता पिता और मामाकी आज्ञा लेय बड़ों का विनयकर यथा योग्य संभाषण कर सूर्य तुल्य उद्योतरूपजो विमान उसमें चढ़कर शास्त्रके समूह कर संयुक्त जे सामंत उन सहित दशों दिशा में व्याप रहा है यश जिस का लंका की ओर चला सो त्रिकूटाचल के सन्मुख विमान में बैठा जाता ऐसा सोभता भया जैसा मंदराचल के सन्मुखजाता ईशान इन्द्र शोभे है तब बीचिनामा पर्वत पर सूर्य अस्त भया कैसा है पर्वत समुद्रकी लहरों के समूहकर शीतल हैं तट जिसके वहां रात्रि सुखसे पूर्ण करी और करीहै महा योधावोंसे बीररसकी कथा जिसने महा उत्साह से नाना प्रकार के देश द्वीप पर्वतोंको उलंघता समुद्र के तरंगोंसे शीतल जे स्थानक तिनको अवलोकन करता समुद्र में बड़ जलचरों को देखता रावण के कटक में पोंहचा हनूमान् की सेना देख कर बड़े बड़े राक्षस विद्याधर बिस्मय को प्राप्त भए परस्पर वार्ता करे हैं यह बली श्रीशैल हनूमान् भव्य जीवों विषे उत्तम जिसने बाल अवस्था में गिरि को चूर्णकिया ऐसे अपने यश

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रवण करता हनूमान् रावणके निकट गया रावण हनूमान्कोदेखकर सिंहासन से उठे और विनयकिया कैसा है सिंहासन पारिजातादिक कहिये कल्पवृक्षों के फूलों से पूरित है जिसकी सुगंध से भ्रमर गुंजार करे हैं जिसके रत्नोंकी ज्योतिकर आकाश विषे उद्योतहोय रहा है जिसके चारों ही तरफ़ बड़े सामंत हैं ऐसे सिंहासन से उठकर रावणने हनूमान को उर से लगाया कैसाहै हनूमान रावणके विनयकर नम्रभूत हो गया है शरीर जिसका रावण हनूमान को निकट ले बैठा प्रीति कर प्रसन्नहै मुख जिसका परस्पर कुशल पूछी परस्पर रूप सम्पदा देख हर्षित भए दोनों महाभाग्य ऐसेमिले मानो दोय इन्द्र मिले रावण अति स्नेह से पूर्ण है मन जिसका सो कहताभया पवनकुमारने हमसे बहुत स्नेह बढ़ायाजो ऐसा गुणोंका सागरपुत्र हमपर पठाया ऐसे महाबली को पायकर मेरे सर्व मनोरथ सिद्ध होवेंगे ऐसा रूपवान ऐसा तेजस्वी और नहीं जैसा यह योधा सुनाथा तैसाही है इसमें संदेह नहीं यह अनेक शुभ लक्षणोंका भराहै इसके शरीर का आकारही गुणोंको प्रकटकरे है रावणने जब हनूमान के गुण वर्णन किये तब हनूमान नीचा होयरहा लज्जा वन्त पुरुषकी न्याई नम्रीभूत है शरीर जिसका सो संतोंकी यही रीतिहै अब रावणका वरुणसे संग्राम होयगा सो मानों सूर्य भयकर अस्तहोने को उद्यमीभया मन्दहोगई हैं किरण जिसकी सूर्यके अस्त भएपीछे संध्या प्रकट भई फिरगई सो मानों प्राणनाथकी विनयवन्ती पतिव्रता स्त्रीही है और चन्द्रमा रूप तिलक को धरे रात्री रूप स्त्री शोभतीभई फिर प्रभातभया सूर्यकी किरणोंसे पृथिवीपर प्रकाशभया तब रावण समस्त सेना को लेय युद्धका उद्यमी भया हनमान विद्या कर समुद्र को भेद वरुण के नगर में गया वरुण पर जाता हनूमान ऐसी कांतिको धरता भया जैसा सुभूम चक्रवर्ती परशुरामके ऊपर जाता शोभे है रावणका कटक

For Private and Personal Use Only

सहित आया जानकर वरुणकी प्रजा भयभीतभई पातल पुण्डरीक नगरका वह धनी सो नगरमें योधावों के महा,शब्द होतेभए योधा नगर से निकसे मानो वह योधा असुरकुमार देवों के समान हैं और वरुण चमरेन्द्र तुल्य है महा शूरवीर पने में गर्वित और वरुण के सौ पुत्र महा उद्धतयुद्ध करनेको आए नाना प्रकार के शस्त्रों के समूह से रोका है सूर्य का दर्शन जिन्होंने सो वरुण के पुत्रों ने आवतेही रावणका कटक ऐसा व्याकुल किया जैसे,असुरकुमार देव क्षुद्रदेवोंको कम्पायमानकरें चक्र, धनुष, वज्र, सेल, बरछी इत्यादि शस्त्रों के समूह राक्षसों के हाथ से गिरपड़े और वरुण के सौ पुत्रों के आगे राक्षसों का कटक ऐसे भ्रमताभया जैसे बृषमणि का समूह निपातके भय से भ्रमे तब अपने कटकको व्याकुल देख रावण वरुण के पुत्रों पर गया जैसे गजेन्द्र बृक्षोंको उपाड़े तैसे बड़े बड़े योधावों को उपाड़े एक तरफ रावण अकेला एकतरफ वरुण के सौ पुत्र सो यद्यपि उनके बाणों से रावणका शरीर भेदागया तथापि रावण महा योधा ने कछु न गिना जैसे मेघके पटल गाजते वर्षते सूर्य मण्डल को आच्छादित करें तैसे वरुण के पत्रोंने रावणको बेढ़ा और कुम्भकरण इन्द्रजीतसे वरुण लड़ने लगा जब हनूमानने रावण को वरुण केपुत्रोंकर वेध्या के सूला के रंग समान रक्त शरीर देखा तब रथमें असवार होय वरुणके पुत्रों पर दौड़ा कैसा है हनूमान रावणसे प्रीतियुक्त है चित्त जिसका और शत्रुरूप अन्धकार के हरिबे को सूर्य समान है पवनके बेग सेभी शीघ्र वरुणके पुत्रोंपर गया सो हनूमान से वरुण के पुत्र सौही कम्पायमान भए जैसे मेघ के समूह पवन से कम्पायमान होंय और हनूमान वरुण के कटक पर ऐसा पड़ा जैसा माता हाथी कदली के बनमें प्रवेश करे कईयोंको विद्यामई लांगूल पाशकर बांधलिया और कईयोंको मुद्गरके

घातक घायल किया वरुणका समस्त कटक हनूमान से हारा जैसे जिनमार्गी के अनेकांतनयसे मिथ्या दृष्टिहारे हनूमानको अपने कटक में रण क्रीड़ा देख राजा वरुणने कोपकर रक्तनेत्र किये और हनूमान पर आया तब रावण वरुण का हनूमान पर आवता देख आप जाय रोका जैसें नदीके प्रवाहको पर्वत रोके वरुण के और रावणके महा युद्धभया तब उसही समय में वरुण के सा पुत्र हनुमानने बान्ध लिए सो पुत्रों को बान्धे सुनकर वरुण शोककर विह्वलभया विद्याका स्मरण न रहा तव रावणने इसको पकड़लिया सो मानो वरुण सूर्य और इसके पुत्र किरणतिनके रोकनेसे रावण राहु का रूप धारता भया वरुणको कुम्भ-करणके हवाले किया और आप डेरा भवनोन्माद नाम बनमें किया कैसा है वह बन समुद्रकी शीतल पवनसे महाशीतल है सो उसके निवास कर सेनाका रण जनित खेदरहित भया और वरुण को पकड़ा सुन उसकी सेना भाजी पुण्डरीकपुरमें जाय प्रवेश किया देखो पुण्यका प्रभाव जो एक नायकके हारने में सबही हारे और एक नायक के जीतनेसे सबही जीते कुम्भकरण ने कोप कर वरुण के नगर लूटने का विचार किया तब रावणने मने किया यह राजावों का धर्म नहीं कैसे हैं रावण वरुण कर कोमल है चित्त जिनका सो कुम्भकरण को कहते भए हे बालक तैंने यह क्या दुराचारकी बातकही जो अपराधथा सोतो वरुण काथा प्रजाका क्या अपराध दुर्बलको दुःखदेना दुरगति का कारण है और महा अन्याय है ऐसा कहकर कुम्भकरणको प्रशान्त किया और वरुणको बुलाया कैसा है वरुण नीचा है मुख जिसका तब रावण वरुणको कहतेभये हे प्रवीण तुम शोक मत करो कि मैं युद्ध में पकड़ा गया योधावोंकी दोय ही रीति हैं मारे जांय अथवा पकड़े जांय और रणसे भागना यह कायरका कामहै इसलिये तुम हमसे

क्षमाकरो और अपने स्थानक जायकर मित्रबान्धव सहित सकल उपद्रव रहित अपना राज्य सुखसे करो ऐसे मिष्ट वचन रावण के सुनकर वरुण हाथ जोड़ रावण से कहताभया हे बीराधिवीर हेमहाधीर तुम इस लोकमें महापुण्याधिकारी हो तुमसे जो वैरभावकरे सो मूर्ख है अहो स्वामिन् यह तुम्हारा परम धैर्य हजारों स्तोत्रोंसे स्तुति कर योग्यहै तुमने देवाधिष्ठित रत्न बिना मुझे सामान्य शस्त्रोंसे जीता कैसेहो तुम अद्भुत है प्रताप जिनका और इस पवनके पुत्र हनूमानके अद्भुत प्रभावकी क्या महिमा कहूं तुम्हारे पुण्य के प्रभावसे ऐसे ऐसे सत्पुरुष तुम्हारी सेवाकरें हैं हे प्रभो यह पृथ्वी काहूके गोत्रमें अनुक्रमकर नहीं चली आई है यह केवल पराक्रमके बश है शूरवीरही इसके भोक्ता हैं सो आप सर्व योधावोंके शिरोमणिहो सो भूमिका प्रतिपालन करो हे उदारकीर्ति हमारे स्वामी आपही हो हमारे अपराध क्षमा करो । हे नाथ आप जैसी उत्तम क्षमा कहूं न देखी इसलिये आप सारिखे उदार चित्त पुरुषसे सम्बन्ध कर मैं कृतार्थ होऊंगा इसलिये मेरी सत्यवती नामा पुत्री आप परणों इसके परिणवेयोग्य आपही हो इसभांति बिनती कर अति उत्साहसे पुत्री परणाई कैसी है वह सत्यवती सर्वरूप वंतियोंका तिलकहै कमलसमानहै मुख जिसका वरुणने रावणका बहुत सत्कार किया और कईएक प्रयाण रावणके लार गया रावणने अति स्नेहसे सीख दीनी तब रावण अपनी राजधानीमें आया पुत्रीके वियोगसे व्याकुलहै चित्त जिसका कैलास कंप जो रावण उसने हनुमानका अति सन्मानकर अपनी बहिन जो चन्द्रनखा उसकी पुत्री अनंग कुसुमा महा रूपवती सो हनुमान को परणाई सो हनुमान उसको परणकर अति प्रसन्न भए कैसी है अनंगकुसुमा सर्वलोकमें जो प्रसिद्ध गुण तिनकी राजधानी है और कैसी हैं कामके आयुध हैं नेत्र जिस

के और अतिसम्पदा दीनी और कर्ण कुण्डलपुर का राज्य दिया अभिषेक कराया उस नगरमें हनुमान सुखसे विराजे जैसे स्वर्गलोकमें इन्द्रविराजे तथा किहकूंपुरनगरका राजा नल उसकी पुत्री हरमालिनी नामा रूपसम्पदाकर लक्ष्मीको जीतनेहारी सो महा विभूतिसे हनुमानको परणाई तथा किन्नरगीत नगरविषे जे किन्नरजातिके विद्याधर तिनकी सौ पुत्री परणी इसभांतिएक सहस्रराणी परणीपृथ्वी विषे हनुमानका श्रीशैल नाम प्रसिद्धभया क्योंकि पर्वतकी गुफामें जन्म भयाथासो पहाड़पर हनुमानआयनिकसे सो देख अतिप्रसन्नभए रमणीकहै तलहटी जिसकी वह पर्वतभी पृथ्वी विषे प्रसिद्ध भया ।

अथानंतर किहकंधनगर विषे राजा सुग्रीव उसके राणी सुतारा चन्द्रमासमान कांतिको धरे है मुख जिसका और रतिसमानहै रूप जिसका तिनके पुत्री पद्मराग नवीनकमल समानहै रंग जिसका और अनेक गुणोंसे मंडित पृथ्वीपर प्रसिद्ध लक्ष्मी समान सुन्दरहै नेत्र जिसके ज्योतिके मंडलसे मंडितहै मुखकमल जिसका और महा गजराजके कुम्भस्थल समान ऊंचे कठोरहैं स्तन जिसके और सिंह समानहै कटि जिसकी महा विस्तीर्ण और लावण्यता रूप सरोवरमें मग्न है मूर्ति जिसकी जिसे देख चित्त प्रसन्न होय शोभायमानहै चेष्टा जिसकी ऐसी पुत्रीको नवयोवन देख माता पिताको इसके परणायवेकी चिंता भई इसे योग्य वर चाहिये सो माता पिताको रातदिन निद्रा न आवे और दिनमें भोजनकी रुचिगई चिन्ता रूप है चित्त जिनका तब रावण के पुत्र इन्द्रजीत आदि अनेक राजकुमार कुलवान शील-वान तिनके चित्रपट लिखे रूप लिखाय सखियोंके हाथ पुत्री को दिखाए सुन्दरहै कांति जिनकी सो कन्याकी दृष्टिमें कोई न आया अपनी दृष्टि संकोच लीनी और हनुमानका चित्रपट देखा सो उसे देख

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर शोषण, सन्तापन, उच्चाटन, मोहन, वशीकरण कामके यह पंचबाणोंसे बेधी गई तब उसे हनुमान विषे अनुरागिनी जान सर्वजन उसके गुण बरणन करती भई हे कन्या यह पवनंजयका पुत्र जो हनुमान इसके अपारगुण कहां लो कहैं और रूप सोभाग्य तो इस के चित्रपट में तैंने देखे इस लिये इसको वर, माता पिता की चिन्ता निवार कन्या तो चित्रपटको देख मोहित भई थी और सखी जनों ने गुण बरणन किया ही है तब लज्जा कर नीची हो गई और हाथ में क्रीड़ा करने का कमल था उस की चित्रपटकी दी तबसब ने जाना कि यह हनुमान से प्रीतिवन्ती भई तब इस के पिता सुग्रीव ने इस का चित्रपट लिखाय भले मनुष्य के हाथ वायु पुत्र पै भेजा सो सुग्रीव का सेवक श्री नगर में गया और कन्या का चित्रपट हनुमान्को दिखाया सोअंजनी का पुत्र सुताराकी पुत्रीके रूप का चित्रपट देखमोहित भया यह बात सत्यहै के काम के पांच ही बाण हैं परन्तु कन्याके प्रेरेपवनपुत्र के मानो सौ बाण होय लगे चित्तमें चिंतवता भया मैं सहस्र विवाह किए और बड़ीबड़ी ठौर परणा खरदूषण की पुत्री रावणकी भाणजी परणी तथापि जबलग यह पद्मरागा न परणूं तौलग परणाही नहीं ऐसा विचार महाऋद्धिसंयुक्त एकक्षणमें सुग्रीवके पुर में गया सुग्रीव ने सुना जो हनुमान् पधारे तब सुग्रीव अतिहर्षित होय सन्मुखआए बडेउत्साह से नगरमें लेगए सो राजमहल की स्त्री झरोखों की जाली से इन का अद्भुत रूप देख सकल चेष्टा तज आश्चर्य रूप होय गई और सुग्रीव की पुत्री पद्मराग इन के रूपको देखकर थकित हो गई कैसी है कन्या अति सकुमार है शरीर जिस का बड़ी विभूति से पवनपुत्र से पद्मरागा का विवाह भया, जैसा बर तैसी दुलहन सो दोनों अतिहर्ष को प्राप्तभए स्त्रीसहित हनुमान् अपने नगरमें आए राजा सुग्रीव और राणीतारापुत्री के वियोग से कैएक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिन शोक सहित रहे और हनुमान् महा लक्ष्मीवान् समस्त पृथिवी पर प्रसिद्ध है कीर्ति जिस की सो ऐसे पुत्र को देख पवनञ्जय और अञ्जनी महासुखरूप समुद्रमें मग्न भए रावण तीन खण्ड का नाथ और सुग्रीव जैसे पराक्रमी और हनुमान सारिषे महाभट विद्याधरों के अधिपति तिन का नायक लंका नगरी में सुख से रमे समस्त लोक को सुखदाई जैसे स्वर्ग लोक विषे इन्द्र रमें हैं तैसे रमें विस्तीर्ण है कान्ति जिस की महा सुन्दर अठारह हजार राणी तिन के मुखकमल तिन का भ्रमर भया आयु व्यतीत होती न जानी जिसके एक स्त्री कुरूप और आज्ञा रहित होय सो पुरुष उन्मत्त होय रहे हैं जिसके अष्टादश सहस्र पद्मनी पतिव्रता आज्ञा कारणी लक्ष्मी समान होंय उसकेप्रभाव का क्या कहना तीनखण्ड का अधिपति अनुपम है कान्ति जिसकी समस्त विद्याधर और भूमिगोचरी सिर पर धारे हैं आज्ञा जिस की सो सर्व राजाओं ने अर्धचक्री पद का अभिषेक कराया और अपना स्वामी जाना विद्याधरों के अधिपति तिन से पूजनीक हैं चरण कमल जिसके, लक्ष्मी कीर्ति कान्ति परिवार जिस समान और के नहीं मानोयोग्यहैदेहजिस का वह दशमुख राजा चन्द्रमा समान वड़े बड़े पुरुषरूप जे ग्रह तिनसे मण्डित आल्हाद का उपजावन हारा कौनके चित्त को न हरे जिसकेसुदर्शन चक्र सर्व कार्यकी सिद्धि करण हारा देवाधिष्ठित मध्यान्हके सर्यकी किरणोंकेसमानहै किरणोंका समूह जिसमें जबजे उद्धत प्रचंडनृपवर्गआज्ञा न मानें तिनका विध्वंसक अतिदेदीप्यमान नाना प्रकार के रत्नोंकर मंडित शोभता भया और दंडरत्न दुष्टजीवोंको कालसमान भयंकर देदीप्यमान है उग्रतेज जिसका मानों उल्कापात का समूहहीहै सोप्रचंड जिस की आयुध शाला विषे प्रकाश करता भया सो रावण आठमा प्रतिवासुदेव सुन्दर हैकीर्ति जिसकी पूर्वोपार्जित कर्मकेवशसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुलकी परिपाटी कर चली आई जो लंकापुरी उस विषे संसार के अद्भुत सुख भोगता भया कैसा है रावण राक्षस कहावें ऐसे जे विद्याधर तिनके कल का तिलक है और कैसी है लंका किसीप्रकारका प्रजा को नहीं है दुख जहां श्री मुनिसुव्रतनाथ के मुक्तिगएपीछे और नमिनाथ के उपजने से पहिले रावणभयासो बहुत पुरुष जे परमार्थ रहित मूढ़ लोक तिन्होंने उनका कथन और से औराकिया मांस भक्षी ठहराये सो वे मांसाहारी नहीं थे अन्नके आहारी थे एक सीताके हरणका अपराधी बना उसकर मारेगये और परलोक विषे कष्टपाया कैसे हैं श्रीमुनि सुव्रतनाथ का समय सम्यकदर्शन ज्ञान चारित्र की उत्पत्ति का कारण है सो वह समय बीते बहुत वर्षभए इस लिये तत्वज्ञान रहित विषयी जीवोंने बड़े पुरुषों का वर्णन और से और किया पापाचारी शीलव्रत रहितजे मनुष्य सोतिनकी कल्पना जालरूप फांसीकर अविवेकी मन्दभाग्य जेमनुष्य वेई भए मृग सो बांधे गौतमस्वामी कहे हैं ऐसाजान कर हे श्रेणिक तु इन्द्र धरणेंद्र चक्रवर्त्यादि कर वन्दनीक जो जिनराजका शास्त्र सोईरत्नभया उसे अंगीकार कर कैसा है जिनराजका शास्त्र सूर्यसे अधिक है तेज जिसका और कैसा है तू जिन शास्त्रके श्रवणकर जानाहै वस्तुका स्वरूप जिसने और धोया है मिथ्यात्वरूपकर्दम का कलंक जिसने ॥ इति उन्नीसवां पर्वपूर्णभया ॥

अथानंतर राजा श्रेणिक महा विनयवान् निर्मल है बुद्धि जिसकी सो विद्याधरों का सकल वृत्तान्त सुन कर गौतमगणधर के चरणारविन्दको नमस्कार कर आश्चर्य को प्राप्त होता संता कहता भया हे नाथ तुम्हारे प्रसाद से आठवां प्रतिनारायण जो रावण उसकी उत्पत्ति और सकल वृतांत मैंने जाना, तथा राक्षसवंशी औरवानरवंशीजे विद्याधर तिनके कुलकाभेद भलीभान्ति जाना अबमें तीर्थंकरों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के पूर्व भव सहित सकल चरित्र सुना चाहूं हूं कैसा है तिन का चरित्र बुद्धि की निर्मलता का कारण है और आठवें बलभद्रजे श्रीरामचन्द्र, सकल पृथिवी विषे प्रसिद्ध सो कौन बंश विषे उपजे तिन का चरित्र कहो और तीर्थंकरोंके नाम और उनके माता पितादिक के नाम सब सुनने की मेरी इच्छा है सो तुम कहने योग्यहो इस भान्ति जब श्रेणिक ने प्रार्थनाकरी तब गौतम गणधर भगवन्त चरित्रके प्रश्नकरबहुतहर्षित भए कैसेहैं गणधर महाबुद्धिवान् परमार्थ विषेप्रवीण सो कहे हैं कि हे श्रेणिक चौवीस तीर्थंकरोंके पूर्व-भव का कथन पापके विध्वंस का कारण इन्द्रादिक कर नमस्कार करने योग्य तू सुन, ऋषभ १ अजित २ संभव ३ अभिनन्दन ४ सुमति ५ पदमप्रभ ६ सुपार्श्व ७ चन्द्रप्रभ ८ पुष्पदन्त जिसका दूजानाम सुविधिनाथ भी कहीए ९ शीतल १० श्रेयांस ११ वासुपूज्य १२ बिमल १३ अनन्त १४ धर्म १५ शान्ति १६ कुन्थ १७ अर १८ मल्लि १९ मुनिसुव्रत २० नमि २१ नेमि २२ पार्श्व २३ महावीर २४ जिन का अब शासन प्रवरते है ये चौबीस तीर्थंकरों के नाम कहे अब इनकी पूर्वभव की नगरीयों के नाम सुनो। पुण्डरीकनी १ सुसीमा २ क्षेमा ३ रत्नसंचयपुर ४ ऋषभदेवआदिवासुपूज्य पर्यंत की ये चार नगरीपूर्वभव के निवासकी जाननी और महानगर १३ अरिष्टपुर १४ सुभद्रिका १५ पुण्डरीकिनी १६ सुसीमा १७ क्षेमा १८ वीतशोका १९ चम्पा २० कौशांबी २१ नागपुर २२ साकेता २३ छत्राकार २४ ये चौबीस तीर्थंकरोंकी इसभवके पहिले जो देवलोक उस भव पहिले जो मनुष्य भव उसकी स्वर्गपुरी समान राजधानी कही। अब उस भवके नामसुनो बज्रनाभि १ बिमलवाहन २ बिपुलख्याति ३ बिपुलवाहन ४ महाबल ५ अतिबल ६ अपराजित ७ नन्दिषेण ८ पद्म ९ महापद्म १० पद्मोत्तर ११ पंकजगुल्म १२ कमल समानहै मुख जिसका ऐसा नलिनगुल्म १३ पदमासन १४

पदमरथ १५ दृढ़रथ १६ मेघरथ १७ सिंहरथ १८ वैश्रवण १९ श्रीधर्मा २० सुरश्रेठ २१ सिद्धार्थ २२ आनन्द २३ सुनन्द २४ ये तीर्थंकरों के इस भव पाहिले तीजे भवके नाम कहे अब इनके पूर्वभव के पितावों के नाम सुनो, वज्रसेन १ महातेज २ रिपदम ३ स्वयंप्रभ ४ बिमलबाहन ५ सीमंदर ६ पिहताश्रव ७ अरिंदम ८ युगन्धर ९ सर्वजनानन्द १० अभयानन्द ११ वज्रदन्त १२ वज्रनाभि १३ सर्वगुप्ति १४ गुप्तिमान् १५ चिन्तारक्ष १६ बिमलवाहन १७ घनरव १८ धीर १९ संबर २० त्रिलोकीरावि २१ सुनन्द २२ वीतशोक २३ प्रोष्ठिल २४ एपूर्वभवके पिताओंके नामकहे। अबचौवीसो तीर्थंकर जिस२ देवलोक से आये तिनदेव लोकों के नामसुनो। सर्वार्थसिद्धि १ वैजयन्त २ ग्रैवेयक ३ वैजयन्त ४ ऊर्धग्रैवेयक ५ वैजयन्त ६ मध्यग्रैवेक ७ वैजयन्त ८ अपराजित ९ आरणस्वर्ग १० पुष्पोत्तरविमाण ११ कापिष्टस्वर्ग १२ शुक्रस्वर्ग १३ सहस्रारस्वर्ग १४ पुष्पोत्तर १५ पुष्पोत्तर १६ पुष्पोत्तर १७ सर्वार्थसिद्धि १८ विजय १९ अपराजित २० प्राणत २१ वैजयन्त २२ आनत २३ पुष्पोत्तर २४ ये चौवीस तीर्थंकरोंके आवने के स्वर्ग कहे। अब आगे चौवीस तीर्थंकरों की जन्मपुरियें जन्म नक्षत्र माता पिता और वैराग्य के वृक्ष और मोक्ष के स्थानक में कहूं हूं सो सुनो। अयोध्यानगरी पिता नाभिराजा माता मरुदेवी राणी उत्तराषाढ नक्षत्र बटवृक्ष, कैलाश पर्वत प्रथमजिन हे मगधदेशके भूपति ! तुम्है अतीन्द्रि सुखकी प्राप्ति करें १ अयोध्यानगरी जितशत्रु पिता विजिया माता रोहिणी नक्षत्र सप्तछदवृक्ष सम्मेदशिखर अजितनाथ हे श्रेणिक तुम्है मंगल के कारणहोवें २ श्रावस्ती नगरी जितारि पिता सैना माता पूर्वाषाढ़ नक्षत्र शालवृक्ष सम्मेदशिखर संभवनाथ तेरे भव बन्धन हरे ३ अयोध्यापुरी नगरी संवर पिता, सिद्धार्था माता पुनर्वसु नक्षत्र, सालवृक्ष सम्मेदशिखर अभिनन्दन तुम्हेकल्याणके कारण होवें ४। आयोध्यापुरी नगरी मेघप्रभ पिता

सुमङ्गला माता मघा नक्षत्र प्रियंगुबृक्ष सम्मेदशिखर सुमतिनाथ जगत्में महामंगलरूप ते रे सर्वविघ्न हरें ५ कौशांबीनगरी धारणपिता सुसीमामाता, चित्रा नक्षत्र प्रियंगु बृक्ष सम्मेदशिखर पद्मप्रभ ते रे काम क्रोधादि अमंगल हरें ६ काशीपुरी नगरी सुप्रतिष्ठ पिता पृथिवी माता विशाखा नक्षत्र शिरीषबृक्ष सम्मेदशिखर सुपार्श्व नाथ हे राजन् ते रे जन्मजरामृत्यु हरें ७ चन्द्रपुरी नगरी महासेनं पिता लक्ष्मणा माता अनुराधा नक्षत्र नाग-बृक्ष सम्मेदशिखर चन्द्रप्रभ तुझे शान्तिभाव के दाता होवें, ८ काकन्दीनगरी सुग्रीवपिता रामामाता मूलनक्ष-त्र शालबृक्ष सम्मेदशिखर पुष्पदन्त ते रे चित्तको पवित्र करें ९। भद्रिकापुरी नगरी दृढ़रथ पिता सुनन्दा माता पूर्वाषाढ़ नक्षत्र प्लक्षबृक्ष सम्मेदशिखर शीतलनाथ ते रे त्रिविधताप हरें १० सिंहपुरी नगरी विष्णु पिता विष्णु श्री देवी माता श्रवणनक्षत्र तिन्दुक बृक्ष सम्मेदशिखर श्रेयांसनाथ ते रे विषय कषाय हरें ११ चंपापुरी नगरी वासुपूज्य पिता विजया माता शतभिषा नक्षत्र पाठल बृक्ष निर्वाणक्षेत्र चम्पापुरीका बन श्रीवासुपूज्य तुझे निर्वा णप्राप्त करें १२ कपिलानगरी कृतवर्मापिता सुरम्यामाता उत्तराषाढ़ नक्षत्र जंबूबृक्ष सम्मेदशिखर विमलनाथ तुझे रागादि मल रहित करें १३ अयोध्यानगरी सिंहसेनपिता सर्वयशामाता रेवती नक्षत्र पीपलबृक्ष सम्मेदशिखर अनंतनाथ तुझे अन्तररहित करें १४ रत्नपुरी नगरी भानुपिता सुव्रतामातापुष्य नक्षत्र दधिपर्णबृक्षसम्मेदशिखर खर धर्मनाथ तुझे धर्मरूप करें १५ हस्तनागपुरनगर विश्वसेनपिता ऐरामाता भरणीनक्षत्र नन्दीबृक्ष सम्मेदशि शान्तिनाथ तुझे सदा शान्ति करें १६ हस्तनागपुर नगर सूर्य पिता श्रीदेवी माता कृतिका नक्षत्र तिलक बृक्ष सम्मेदशिखर कुंथुनाथ हे राजेन्द्र तेरे पाप हरणके कारण होवें १७ हस्तिनागपुर नगर सुदर्शन पिता मित्रामाता रोहिणी नक्षत्र आम्रबृक्ष सम्मेद शिखर अरनाथ हे श्रेणिक ते रे कर्मरज हरें १८ मिथिलापुरी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नगर। कुंभपिता रक्षतामाता अश्वनी नक्षत्र अशोकवृक्ष सम्मेदशिखर मल्लिनाथ हे राजा तुझे मन शोक रहितकरें १९ कुशाग्रनगर सुमित्रपिता पद्मावतीमाता श्रवणनक्षत्र चम्पकवृक्ष सम्मेदशिखर मुनिसुव्रतनाथ सदा तेर मन विषे बसें २० मिथिलापुरी नगरी विजयपिता वप्रा माता अश्वनी नक्षत्र मौलश्रीवृक्ष सम्मेद शिखर नमिनाथ तुझे धर्मका समागम करें २१ सौरीपुर नगर समुद्रविजय पिता शिवादेवीमाता चित्रानक्षत्र मेषशृंग वृक्ष गिरिनार पर्वत नेमिनाथ तुझे शिवसुखदाता होवें २२ कांशीपुरी नगरी अश्वसेनपिता वामा माताविशाखानक्षत्रधवलवृक्ष सम्मेदशिखर पार्श्वनाथतेरे मनको धीर्य देव २३कुण्डलपुरनगर सिद्धार्थ पिता प्रियकारिणी माता हस्तनक्षत्र शालवृक्ष पावापुर महावीरतुझे परम मंगलकरें आपसमानकरें २४ ऋषभदेव का निर्वाण कल्याण कैलाश १ वासपूज्यका चंपापुर २ नेमिनाथ गिरिनार३महावीरका पावापुर ४ औरोंका सम्मेदशिखरहै शांतिकुंथु अर ये तीनततीर्थंकर चक्रवर्त्तीभीभए और कामदेवभीभए राज्यछोड़ वैराग्यलिया और वासू पूज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर ये पांच तीर्थंकर कुमार अवस्थामेंवैरागीभए राज भी न किया और विहाह भी न किया अन्य तीर्थंकर महामंडलीक राजा भए राजछोड़ वैराग्य लिया और चन्द्रप्रभ पुष्पदन्त ये दोयश्वेतवर्णभए और श्रीसुपार्श्वनाथ प्रियंगुपञ्जरी के रंग समानहरित वर्णभए और पार्श्वनाथ का वर्ण कच्ची शालि समान हरितभया पद्मप्रभका वर्ण कमल समान आरक्त और वासपूज्य का वर्ण केसूके फूलसमानआरक्त और मुनिसुव्रतनाथका वर्ण अञ्जनीगिरिसमानश्याम और नेमिनाथकावर्ण मोरके कंठसमान श्याम और सोलह तीर्थंकरोंके ताता सोनेके समान वर्णभयाहै ये सबही तीर्थंकर इन्द्र धरणेन्द्र चक्रवर्त्यादिकों से पूजने योग्य और स्तुति करने योग्य भएहैं और सबहीका सुमेरुके शिखर पांडुकशिला

For Private and Personal Use Only

पर जन्माभिषेकभया सबहीके पंचकल्याणक प्रकटभये सम्पूरण कल्याणकी प्राप्तिकी कारणहै सेवा जिनकी वे जिनेन्द्र तेरी अविद्या हरें इसभांति गणधर देवने वर्णन किया।

अथानन्तर राजाश्रेणिक नमस्कारकर विनती करतेभए कि हे प्रभू छहों कालकी वर्तमान आयु का प्रमाण कहो और पापकी निवृत्तिका कारण परम तत्व जो आत्मस्वरूप उसका वर्णन वारम्वारकरो और जिस जिनेंद्र के अन्तराल में श्रीरामचन्द्र प्रकटभए सो आपके प्रसादसे मैं सर्व वर्णन सुना चाहूं हूं ऐसा जब श्रेणिक ने प्रश्न किया तब गणधरदेव कहतेभए कैसे हैं गणधरदेव क्षीरसागरके जल समान निर्मल है चित्त जिनका हे श्रेणिक कालनामा द्रव्यहै सो अनन्त समयहै उसकी आदि अन्तनहीं उसकी संख्या कल्पनारूप दृष्टांतसे पल्यसागरादि रूप महामुनि कहेहैं एक महायोजन प्रमाण लंबाचौड़ा डूंगागोलगर्त (गढ़ा) उत्कृष्टि भोगभूमि का तत्कालका जन्माहुवा भेड़काबच्चा उसके रोमके अग्रभागसे भरिए सो गर्त घनागाढ़ा भरिये और सौ वर्षगए एक रोम काढे सो ब्योहारपल्य कहिये सोयह कल्पना दृष्टांतमात्रहै किसी ने ऐसा कियानहीं इससे असंख्यात गुणी उद्धारपल्यहै इससेसंख्यातगुणीअर्धापल्यहै ऐसी दसकोटा कोटि पल्य जांय तब एक सागरकहिये और दस कोटाकोटि सागरजांय तब एक अवसर्पिणी कहिये और दस कोटाकोटि सागरकीएक उत्सर्पिणी और बीसकोटाकोटि सागरका कल्पकाल कहिये जैसेएक मासमें शुक्लपक्ष औरकृष्णपक्ष ये दोय वर्तें तैसे एक कल्पकाल विषे एक अवसर्पणी और एक उत्सर्पणी ये दोय वर्तें इनके प्रत्येक प्रत्येक छहछह कालहैं तिनमें प्रथम सुखमासुखमाकाल चार कोटाकोटि सागरकाहै दूजा सुखमाकाल तीन कोटाकोटि सागरका है तीजा सुखमा दुखमा दो कोटाकोटि सागरकाहै और चौथा दुखमासुखमाकाल

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बयालीसहजार वर्षघाट एक कोटाकोटि सागरका है पंचमा दुःखमा काल इक्कीस हजार वर्ष का है छठा दुःखमा दुःखमा काल सोभी इक्कीस हजार वर्षका है यह अवसर्पणी कालकी रीति कही प्रथमकाल से लेय छठे काल पर्यंत आयुआदि सर्व घटतीभई और इससे उलटी जो उत्सर्पणी उसमें फिर छठेसे लेकर पहिले पर्यन्त आयु काय बल प्राक्रम बढ़ते गये यह कालचक्रकी रचना जाननी ॥

अथानन्तर जब तीजेकाल में पल्यका आठवांभाग बाकी रहा तब चौदहकुलकरभये तिनका कथनपूर्व कर आये हैं चौदहवें नाभिराजा तिनके आदि तीर्थंकर ऋषभदेव पुत्रभये तिनको मोक्षगयेपीछे पचासलाख कोटिसागरगयेश्रीअजितनाथद्वितीयतीर्थंकरभये उनकेपीछेतीसलाखकोटिसागरगयेश्रीसंभवनाथभयेउनपीछे दसलाख कोटि सागर गये श्रीअभिनन्दनभए उन पीछे नवलाख कोटिसागर गये श्रीसुमतिनाथभए उनके पीछे नब्बे हजार कोड़िसागर गए श्रीपद्मप्रभ भए उन पीछे नव हजार कोटिसागर गए श्रीसुपार्श्वनाथ भए उन पीछे नौसौ कोटिसागर गए श्रीचन्द्रप्रभ भए उन पीछे नब्बे कोटिसागर गए श्रीपुष्पदन्त भए उन पीछे नव कोटिसागर गए श्री शीतलनाथ भए उसके पीछे सौसागर घाट कोटिसागर गए श्रेयांसनाथ भए उन पीछे चव्वन सागर गए श्रीवासुपूज्य भए उन पीछे तीस सागर गए श्रीविमलनाथ भये उनके पीछे नव सागर गये श्रीअनन्तनाथ भये उनके पीछे चारसागर गये श्रीधर्मनाथ भये उनके पीछे पौन पल्य घाट तीन सागर गए श्रीशांतिनाथ भए उनके पीछे आध पल्य गए श्रीकुन्थुनाथ भए उनके पीछे छै हजार कोटि वर्ष घाट पाव पल्य गए श्रीअरनाथ भए उनके पीछे पैंसठलाख चौरासी हजार वर्ष घाट हजार कोटि वर्ष गए श्रीमल्लिनाथ भए उनके पीछे चौवन लाख वर्ष गए श्रीमुनि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुव्रतनाथ भए उनके पीछे छहलाख वर्ष गए श्रीनमिनाथ भए उनके पीछे पांच लाख वर्ष गए श्री नेमिनाथ भए उनके पीछे पौने चौरासी हजार वर्ष गए श्री पार्श्वनाथ भए उनके पीछे अढ़ाईसौ वर्ष गए श्री वर्द्धमान भए जबवर्द्धमानस्वामी मोक्षको प्राप्त होवेंगे तब चौथे कालके तीन वर्ष साढ़े आठ महीना बाकी रहेंगे और इतनेही तीजे कालके बाकी रहे थे तब श्री ऋषभदेव मुक्ति पधारे थे ।

अथानंतर धर्मचक्रके अधिपति श्रीवर्द्धमान इन्द्रके मुकटके रत्नोंकी जो ज्योति सोई भयाजल उससे धोएहैंचरणयुगल जिनके सो तिनको मोक्षपधारे पीछे पांचवांकाल लगेगा जिसमें देवोंका आगम नहीं और अतिशयके धारक मुनि नहीं केवलज्ञानकी उत्पति नहीं चक्रवर्ती बलभद्र और नारायणकी उत्पति नहीं तुम सारिखे न्यायवान राजानहीं अनीतिकारी राजा होवेंगे और प्रजाके लोक दुष्ट महाढीठ परधनहरने को उद्यमी होवेंगे शील रहित व्रतरहित महा क्लेश व्याधिके भरे मिथ्यादृष्टि घोरकर्मी होवेंगे और अति वृष्टि अनावृष्टि टिड्डी सूवामूषकअपनीसेनाऔरपराई सेनाये जो सप्त ईतियें तिनका भय सदाहीहोयगा मोह रूप मदिराके माते रागद्वेषके भरे भौंहकी टेढ़ी करनहारे क्रूरदृष्टिपापी महामानी कुटिलजीवहोवेंगे कुवचन के बोलनहारे क्रूरजीव धनके लोभी पृथ्वीपर ऐसे विचरेंगे जैसे रात्री विषे घूघू बिचरें और जैसे पटबीजना चमत्कारकरे तैसे थोड़ेही दिन चमत्कार करेंगे वे मूर्खदुर्जन जिनधर्मसे पराङ्मुख कुधर्म विषे आप प्रवरतेंगे औरोंको प्रवरतावेंगे परोपकार रहित पराए कार्यों में निरुद्यमी आप डूबेंगे औरोंको डबोवेंगे वे दुर्गति गामी आपको महन्त मानेंगे वे क्रूर कर्म मदोन्मत्त अनर्थकर मानाहै हर्ष जिन्होंमे मोहरूप अंधकारसे अंधे कलिकालके प्रभावसे हिंसारूप जे कुशास्त्रवेई भए कुठार तिनसे अज्ञानी जीवरूप वृक्षोंको काटेंगे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचमें कालके आदिमें मनुष्योंका सात हाथका शरीर ऊंचा होयगा और एकसौ बीस वर्षकी उत्कृष्ट आयु होयगी फिर पंचम कालके अन्त दोय हाथका शरीर और बीस वर्षकी आयु उत्कृष्ट रहेगी फिर छठे के अन्त एक हाथका शरीर उत्कृष्ट सोला वर्षकी आयु रहेगी वे छठे काल के मनुष्य महा विरूप मांसाहारी महा दुखी पाप क्रियारत महा रोगी तिर्यंच समान अज्ञानी होवेंगे न कोई सम्बन्ध न कोई व्यवहार न कोई ठाकुर न कोई चाकर न राजा न प्रजा न धन न घर न सुख महादुखी होवेंगे अन्याय काम के सेवनहारे धर्म के आचार से शून्य महा पापके स्वरूप होवेंगे जैसे कृष्णपक्षमें चन्द्रमा की कला घटे और शुक्लपक्ष में बढ़े तैसे अवसर्पणी कालमें घटे उत्सर्पणी में बढ़े और जैसे दक्षिणायण में दिन घटे और उत्तरायणमें बढे तैसे अवसर्पणी दोनों में हानि वृद्धि जाननी।

अथानन्तर हे! श्रेणिक अब तू तीर्थंकरोंके शरीरकी ऊंचाईका कथन सुन प्रथम तीर्थंकरका शरीर पांचसौधनुष ५०० दूजेका साढ़े चारसै धनुष ४५० तीजेका चारसै धनुष ४००, चौथे का साढ़ेतीनसै धनुष ३५० पांचवेंका तीनसै धनुष ३०० छठेका ढाईसो धनुष २५० सातवेंका दो सो धनुष २०० आठवेंका डेढ़सो धनुष १५० नौंवे कासो धनुष १०० दसवेंका नव्वे धनुष ९० ग्यारवेंका अस्सी धनुष ८० बारवें का सत्तर धनुष ७० तेरहवें का साठ धनुष ६० चौदवें का पच्चास धनुष ५० पन्द्रवें का पैंतालीस धनुष ४५ सोलवेंका चालीसधनुष ४० सत्रवें का पैंतीस धनुष ३५ अठारवेंका तीस धनुष ३० उन्नीसवेंका पच्चीस धनुष २५ बीसवेंकावीसधनुष २० इकीसवें का पन्द्रह धनुष १५ बाईसवें का दस धनुष १० तेइसवें का नौ हाथ ९ चौबीसवें का सातहाथ ७ अब आगे इन चौबीस तीर्थंकरों की आयु का प्रमाण कहिये हैं, प्रथमका चौरासी लाखपूर्व (चौरासी

For Private and Personal Use Only

लाख वर्षका एकपूर्वांगऔर चौरासी लाख पूर्वांगका एकपूर्व होयहै) औरदूजेकावहत्तरलाख पूर्व तीजे का साठलाख पूर्व चौथेका पचास लाखपूर्व पांचवेंका चालीस लाखपूर्व छठेका तीसलाख पूर्व सातवेंका बीसलाख पूर्व आठवें का दसलाखपूर्व नवमेंका दोयलाख पूर्व दसवेंका लाखपूर्व ग्यारवेंका चौरासी लाख वर्ष बारवें का बहत्तर लाखवर्ष,तेरवें का साठलाख वर्ष चौदवेंका तीस लाखवर्ष पन्द्रवें का दस लाख वर्ष सोलवेंका लाखवर्ष, सत्रवेंका पचानवें हजार वर्ष, अठारवें का चौरासी हजार वर्ष, उन्नीसवें का पचावन ५५ हजार वर्ष, बीसवें का तीस हजार वर्ष इक्कीसवेंका दस हजार वर्ष बाईसवें का हजार वर्ष तेईसवें का सौ वर्ष चौबीसवें का बहत्तर वर्ष को आयु प्रमान जानना ॥

अथानन्तर ऋषभदेवके पहिलेजेचौदह कुलकरभए तिनके आयुकायका वर्णन करिएहै प्रथम कुलकर की काय अठारहसौ धनुष दूसरे की तेरासे धनुष तीसरेकी आठसे धनुषचौथेकी सातसे पिछत्तर धनुष पांचवें की साढे सातसे धनुष छठे की सवासात से धनुष सातवें की सातसे धनुष आठवें की पौने सातसे धनुष नवमें को साढे छैसे धनुष दसवेंकी सवाछैसे धनुष ग्यारवेंकी छैसे धनुष बारवें की पौने छैसे धनुष तेरवेंकी साढे पांचसे धनुष चौदहवें की सवापांचसे धनुष अब इनकुलकरोंकी आयुका वर्णन करें हैं पहिले की आयु पल्य का दसमा भाग दूजेकी पल्य का सौवा भाग तीजे कीपल्यका हजारवा भाग चौथे की पल्य का दस हजारवां भाग पांचमेंकी पल्यका लाखवां भाग छठे की पल्य का दसलाखवांभाग सातवें की पल्य का कोड़वां भाग आठवें की पल्यका दस कोड़वां भाग नौवमें की पल्यका सोकोड़वांभाग दसवें की पल्य का हजार कोड़वां भाग ग्यारवें की पल्य का दस हजार कोड़वां भाग बारवें की पल्य

का लाख कोड़वां भाग तेरवें की पल्य का दस लाख कोड़वां भाग चौदहवें की कोटि पूर्व की आयुभई ॥

अथानन्तर हे श्रेणिक अब तू बारह जे चक्रवर्ती तिन की वार्ता सुन, प्रथम चक्रवर्ती इस भरत क्षेत्र का अति भरत १ श्री ऋषभदेव के यशावती राणी उनको नन्दाभी कहेहैं उसके पुत्र भया पूर्वभव विषे पुंडरीकनी नगरी विषे पीठ नाम राजकुमार थे वे कुशसेन स्वामी के शिष्य होय मुनिव्रत धर सर्वार्थ सिद्धि गए वहां से चयकर षट् खण्ड का राज्य कर फिर मुनि होय अन्तर्मुहूर्तमें केवल उपजाय निर्वाण को प्राप्त भए फिर पृथिवीपुर नामा नगर विषे राजा विजय तेज यशोधर नामा मुनि के निकट जिनदीक्षा धर विजयनाम विमान गए, वहां से चयकर अयोध्या विषे राजा विजय राणी सुमंगला तिनके पुत्र सगर नाम द्वीतिय चक्रवर्ती भए, वे महा भोगकर इन्द्र समान देव विद्याधरों से धारीये है आज्ञा जिन की वे पुत्रों के शोक से राज्यका त्यागकर अजितनाथके समोशरण में मुनिहोय केवल उपजाय सिद्ध भए और पुन्डरीकनी नामा नगरी विषे एकराजाशशिप्रभ वह विमल स्वामीका शिष्य होय ग्रैवेयकगया वहांसेचयकर श्रावस्ती नगरी में राजा सुमित्रराणी भद्रवती तिनके पुत्र मघवानाम तृतीय चक्रवर्तीभए लक्ष्मीरूप बेलके लिपटने को वृक्ष वे श्रीधर्मनाथके पीछे शान्तिनाथ के उपजनेसे पहिलेभए समाधान रूप जिनमुद्राधार सौधर्म स्वर्ग गए फिरचौथे चक्रवर्तीजो श्रीसनत्कुमारभए तिनकी गौतमस्वामी ने बहुतबड़ाई करी तब राजा श्रेणिक पूछते भए हे प्रभो! वे किस पुण्यसे ऐसे रूपवान् भए तब उनका चरित्र संक्षेपता कर गणधर कहतेभए कैसाहै सनत्कुमार का चरित्र जो सौधर्म में भी कोऊ कहिनेको समर्थनहीं यह जीव जबलग जैनधर्म को नहीं प्राप्त होयहै तबलग तिर्यंच नारकी कुमानुष कुदेव गतिमेंदुःख भोगे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है जीवों ने अनन्त भवकिये सो कहांलोकहिए परन्तु एकै एक भव कहिएहैं। एक गोवधन नामा ग्राम वहां भले भले मनुष्यवसे वहां एक जिनदत्त नामा श्रावक बड़ागृहस्थी जैसे सर्बजलस्थानकोंसे सागर शिरोमणि है और सर्व गिरों में सुमेरु और सर्व ग्रहों विषे सूर्य्य तृणों में इक्षु, वेलों में नागरवेल वृक्षों में हरिचन्दन प्रशंसा योग्यहै तैसे कुलों में श्रावग का कुलसर्वोत्कृष्ट आचारकर पुजनीकहैसुगतिकाकारणहै. सो जिन-दत्त नामा श्रावक गुणरूप आभूषणों से मण्डित श्रावगकेब्रतपाल उत्तम गतिकोगया. औरउसकी स्त्री विनयवती महापतिव्रता श्रावकाके ब्रत पालन हारी सो अपने घरकी जगह में भगवान्काचैत्यालय बनाया सकल द्रव्य वहां लगाये और आर्या होय महातप कर स्वर्गमें प्राप्तभई और उसी ग्राम विषेएक और हेमबाहु नामा गृहस्थी आस्तिकदुराचार से रहित सो विनयवती का कराया जो जिनमन्दिर उसकी भक्ति से यक्ष देव भया सो चतुर्विधि संघ की सेवा में सावधान सम्यक्दृष्टि जिनबन्दना में तत्पर, सो चयकर मनुष्य भया फिर देव फिर मनुष्य इस भांति भव धर महापुरी नगरी में सुप्रभनामा राजा उसके तिलक सुन्दरी रानी गुण रूप आभूषण की मंजूषा उसके धर्मरुचि नामा पुत्र भया, सो राज्य तज सुप्रभनामा पिता जोमुनि उसका शिष्य होय मुनिब्रत अंगीकार करताभया पंच महाब्रत पंच सुमति तीन गुप्त का प्रति पालन आत्म ध्यानी गुरु सेवा में अत्यंत तत्पर अपनी देहीविषे अत्यंत निस्पृह जीव दयाका धारक, मन इन्द्रियों का जीतनेहारा शील के सुमेरु शंकाआदि जे दोष तिनसे अति दूर साधुवोंका वैयाब्र..करनहारा सोसमाधि मरणकर चौथेदेवलोकमें गया वहां सुख भोगता भया वहांसे चयकर नागपुरमें राजा विजयराणी सहदेवी तिनके सनत्कुमार नामापुत्र चौथेचक्रवर्तीभए छहखण्ड पृथिवीविषे जिसकी आज्ञाप्रवर्त्ती सो महारूपवान्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक दिन सौधर्म इन्द्रने इनके रूपकी अति प्रशंसा करी सो रूप देखने को देव आये सो प्रछन्न आय कर चक्रवर्तीका रूप देखा उस समय चक्रववर्त्ति ने कुस्तीका अभ्यास कियाथा सो शरीर रजकर धूसरा होयरहाथा और सुगन्ध उबटना लगाथा और स्नानकी एक धोतीही पहने नानाप्रकारके जे सुगन्धजल तिनसे पूर्ण नानाप्रकार स्नानलिये रत्नोंके कलश तिनके मध्य रत्नोंके आसनपर विराजैथे सो देवरूप को देख आश्चर्यको प्राप्तभए परस्पर कहतेभए जैसा इन्द्रने वर्णनकिया तैसाही है यह मनुष्यकारूप देवों के चित्त को मोहित करनहारा है फिर चक्रवर्ती स्नान कर वस्त्राभरण पहर सिंहासन पर आय विराजे रत्नाचलके शिखर समान है ज्योति जिसकी और वह देव प्रकट होकर द्वारे आय ठाढ़े रहे और द्वारपाल से हाथजोड़ चक्रवर्त्तिको कहलाया कि स्वर्गलोकके देव तिहारा रूप देखने आए हैं सो चक्रवर्त्ति अद्भुत शृङ्गार किये विराजेंहीथे तब देवोंके आनेकर विशेष शोभा करी तिनको बुलाया वे आये चक्रवर्त्तिकारूप देख माथा धुनतेभए और कहतेभये एकक्षण पहिले हमने स्नान के समय जैसा देखाथा तैसा अब नहीं मनुष्योंके शरीरकी शोभा क्षणभंगुर है धिक्कारहै इस असार जगत्की मायाको प्रथम दर्शनमें जो रूप यौवनकी अद्भुतताथी सो क्षणमात्रमें ऐसे विलायगई जैसे बिजुली चमत्कार कर क्षणमात्रमें विलायजाय है येदेवों के वचन सनत्कुमार सुन रूप और लक्ष्मी को क्षणभंगुर जान वीतराग भावधर महामुनि होय महातप करतेभये महा ऋद्धि उपजी तौभी कर्मनिर्जरा निमित्त महारोग की परीषह सहतेभए महा ध्यानारूढ़ होय समाधिमरणकर सनत्कुमार स्वर्ग सिधारे वे शान्तिनाथके पहिले और मघवा तीजा चक्र-वर्त्ति उसके पीछेभये और पुण्डरीकनी नगरीमें राजा मेघरथ वह अपने पिता घनरथके शिष्य मुनिहोय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वार्थ सिद्धको पधारे वहांसे चयकर हस्तनागपुर में राजा विश्वसेन राणी ऐरा तिनके शान्तिनाथ नामा-सोलवें तीर्थंकर और पंचम चक्रवर्त्ति भये जगत्को शान्तिके करणहारे जिनका जन्म कल्याणक सुमेरु पर्वत पर इन्द्रने किया फिर षट्खण्डके भोक्ताभए तृणसमान रज्यको जान तजा मुनिव्रतधर मोक्षगये फिरकुंथु-नाथ छठेचक्रवर्त्ती सतरवें तीर्थंकर और अरनाथ सातवेंचक्रवर्त्ती आठारवें तीर्थंकर वे मुनिहोय निर्वाण पधारे सो इनकावर्णन तीर्थंकरोंके कथनमें पहिले कहाही है और ध्यानपुर नगरमें राजा जनकप्रभ सो विचित्रगुप्त स्वामी के शिष्य मुनिहोय स्वर्ग गये वहांसे चयकर अयोध्यानगरी में राजाकीर्त्तिवीर्य राणी तारा तिनके सुभूमि नामा अष्टम चक्रवर्त्ति भये जिस से यह भूमि शोभायमान भई तिनके पिता का मारणहारा जो परशुराम उसने क्षत्री मारे थे और तिनके सिर थंभनमें चिनायेथे सो सुभूमि अतिथिका भेषकर परशुराम के भोजनको आये परशुरामने निमित्त ज्ञानी के वचनसे दांतपात्र में मेल सुभूमिको दिखाये तब दांत क्षीर का रूप होय परणाये और भोजन का पात्र चक्र होय गया उस कर परशुराम को मारा परशुराम नेक्षत्री मार पृथिवी निःक्षत्री करी सो सुभूमि परशुराम को मार द्विज वर्ग से द्वेष किया पृथ्वी अब्राह्मण करी जैसे परशुरामके राज्यमें क्षत्रीकुल छिपाए हुएथे तैसे इस राज्यमें विप्र अपने कुल छिपाए रहे सो स्वामी अरनाथके मुक्ति गए पीछे और मल्लिनाथके होय वे पहिले सुभूमि भए अतिभोगासक्त निर्दयपरिणामी अव्रती मरकर सातवें नरक गये और वीतशोका नगरीमें राजा चिंत सो सुप्रभस्वामीके शिष्य मुनि होय ब्रह्मस्वर्ग गए वहांसे चयकर हास्तिनागपुर विषे राजा पद्मरथ राणी मयूरी तिनके महापद्म नामा नाम चक्रवर्ती भए षटखंड पृथ्वीके भोक्ता तिनके आठ पुत्री महा रूपवन्ती

For Private and Personal Use Only

सो रूपके अतिशयसे गर्वित तिनके बिवाहकी इच्छा नहीं सो विद्याधर तिनको हरलेगये सो चक्रवर्ती ने छुड़ाय मंगाई ये आठों ही कन्या आर्यिकाके व्रतधर समाधि मरणकर देवलोकमें प्राप्त भई और जे विद्याधर इनको लेगएथे वेभी विरक्त होय मुनिव्रत धर आत्मकल्याण करते भए यह वृतांत देख महा पद्म चक्रवर्ती पद्मनामा पुत्रको राज्य देय विष्णु नामा पुत्र सहित वैरागी भए महा तपकर केवल उप जाय मोक्षको प्राप्त भए यह अरनाथ स्वामीके मुक्तिगए पीछे और मल्लिनाथके उपजनेसे पहिले सुभूमि के पीछे भए और विजयनामा नगर विषे राजा महेंद्रदत वह अभिनन्दन स्वामीके शिष्य मुनि होय महेंद्र स्वर्गकोगए वहांसे चयकर कपिल नगरमें राजा हरिकेतु उसके राणी वप्रा तिनके हरिषेण नामा दसवें चक्रवर्ती भए तिनने सर्व भरतक्षेत्र की पृथ्वी चैत्यालयों कर मंडित करी और मुनि सुव्रतनाथ स्वामी के तीर्थ में मुनि होय सिद्धपदको प्राप्त भये और राजपुरनामा नगर में राजा जो असीकांत थे वह सुधर्म मित्र स्वामीके शिष्य मुनि होय ब्रह्मस्वर्ग गये वहांसे चयकर राजा विजय राणी यशोवती तिनके जयसेननामा ग्यारवें चक्रवर्ती भए वे राज्य तज दिगम्बरी दीक्षाधर रत्नत्रयका आराधनकर सिद्ध पदको प्राप्त भये। यह श्रीमुनिसुव्रतनाथ स्वामी को मुक्ति गए पीछे नमिनाथ स्वामीके अन्तराल में भये और काशीपुरी में राजा सम्भूत वे स्वतन्त्रलिंगस्वामीके शिष्य मुनि होय पद्मयुगल नामा विमान में देव भये वहां से चयकर कपिलनगरमें राजा ब्रह्मरथ राणी चूला तिनके ब्रह्मदत्तनामा बारवें चक्र वर्ती भये वे छै खंड पृथ्वीका राज्यकर मुनिव्रत बिना रौद्रध्यानकर सातवें नरकगये यह श्रीनेमनाथ स्वामीको मुक्ति गये पीछे पार्श्वनाथ स्वामीके अन्तरालमें भये ये बारह चक्रवर्ती बड़े पुरुषहैं छै खंड

पृथ्वीके नाथ जिनकी आज्ञादेव विद्याधर सबही माने हैं हे श्रेणिक यह तुझे पुण्य पापका फल प्रत्यक्ष कहा सोयह कथन सुनकर योग्य कार्य करना अयोग्य काम न करना जैसे बटसारी बिना कोई मार्ग में चले तो सुखसे स्थानक नहीं पहुंचे तैसे सुकृत बिना परलोकमें सुख न पावे कैलाशके शिखरसमान जे ऊंचे महल तिनमें जो निवास करे है सो सर्व पुण्यरूप वृक्षका फलहै और जहां शीत उष्णपवन पानीकी बाधा ऐसी कुटियों में बसेहैं दलिद्ररूप कीचमें फंसे हैं सो सर्व अधर्मरूप वृक्षका फलहै और बिन्ध्याचल पर्वतके शिखरसमान ऊंचे जे गजराज उनपर चढ़कर सेना सहितचले हैं चंवर ढुरे हैं सो सब पुण्यरूप वृक्ष का फलहै जे महातुरंगोंपर चमर ढुरते और अनेक असवार पियादे जिनके चौगिरद्र चले हैं सो सब पुण्य रूप राजाका चरित्रहै और देवोंके बिमानसमान मनोग्य जे रथ तिनपर चढ़कर जे मनुष्य गमन करे हैं सो पुण्यरूप पर्वतके मीठे नीझरने हैं और जो फटे पग और फाटे मैले कपड़े और पियादे फिरे हैं सो सब पाप रूप वृक्षका फलहै और जो अमृत सारिखा अन्न स्वर्णके पात्रमें भोजन करे हैं सो सब धर्म रसायन का फल मुनियोंने कहाहै और जो देवोंका अधिपति इन्द्र और मनुष्योंका अधिपति चक्रवर्ती तिनका पद भव्यजीव पावे हैं सो सब जीवदयारूप बेलका फलहै कैसे हैं भव्यजीवकर्मरूप कुंजरको शार्दूलसमान हैं और राम कहिये बलभद्र केशव कहिये नारायण तिन के पद जो भव्य जीव पावें हैं सो सब धर्मकाफल है

अथानन्तर हे श्रेणिक आगे वासुदेवोंका वर्णन करिये है सो सुनो इस अवसर्पणीकाल के भरतक्षेत्रके नववासुदेव हैं प्रथम ही इनके पूर्वभव की नगरियों के नामसुनोहस्तनागपुर १ अयोध्या २ श्रावस्ती ३ कौशांबी ४ पोदनापुर ५ शैलनगर ६ सिंहपुर ७ कौशांबी ८ हस्तनागपुर ९ ये नवही नगर कैसे हैं सर्वद्रौ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्रव्यके भरे हैं और ईतिभीति रहित हैं अब वासुदेवों के पूर्बभव के नामसुनों विश्वानन्दी १ पर्वत २ धनामित्र ३ सागरदत्त ४ विकट ५ प्रियमित्र ६ मानचेष्टित ७ पुनर्वसु ८ मंगादेव जिसे निर्णामिकभी कहे हैं ९ येनव ही वासुदेवोंके जीव पूर्व भव विषे विरूप दौर्भाग्य राज्यभ्रष्ट होय हैं फिर मुनि होय महातप करे हैं फिरनिदान के योगसे स्वर्ग विषे देव होय वहांसे चयकर बलभद्र के लघुभ्राता वासुदेव होयहैं इसलिये तपसे निदान करना ज्ञानियों को बरजित है निदान नाम भोगाभिलाष का है सो महाभयानक दुख देने को प्रवीण है, आगे वासुदेवोंके पूर्बभव के गुरुवोंके नाम सुनो, जिन पै इन्होंने मुनिव्रत आदरेसंभूत १ सुभद्र २ वसुदर्शन ३ श्रेयांस ४ भूतिसंग ५ वसुभूति ६ घोषसेन ७ परांभोधि ८ द्रुमसेन ९ अब जिस जिस स्वर्ग से आय वासुदेव भए तिन के नाम सुनो, महाशुक्र १ प्राणत २ लांतक ३ सहस्रार ४ ब्रह्म ५ महेंद्र ६ सौधर्म ७ सनत्कुमार ८ महाशुक्र ९ आगे वासुदेवों की जन्मपुरियों के नाम सुनो. पोदनापुर १ द्वापुर २ हस्तनापुर ३ फिर हस्तनागपुर ४ चक्रपुर ५ कुशाग्रपुर ६ मिथिलापुर ७ आयोध्या ८ मथुरा ९ ये वासुदेवों के उत्पत्ति के नगर हैं कैसे हैं नगर समस्त धन धान्य कर पुर्ण महाउत्सव के भरे हैं, आगे वासुदेवों के पिताकेनाम सुनो प्रजापति १ ब्रह्मभूत २ रौद्रनन्द ३ सोम ४ प्रख्यात ५ शिवाकर ६ अग्निनाथ ७ दशरथ ८ वासुदेव ९ और इन नववासुदेवों की मातावोंके नाम सुनों मृगावती १ माधवी २ पृथिवी ३ सीता ४ अंविका ५ लक्ष्मी ६ केशिनी ७ सुमित्रा ८ देवकी ९ ये नवों ही वासुदेवों की नव माता कैसी हैं अतिरूपगुणोंकर मण्डित महा सौभाग्यवती जिनमती हैं आगे नव वासुदेवोंके नाम सुनो त्रिप्रष्ट १ द्विप्रष्ट २ स्वयम्भू ३ पुरुषोत्तम ४ पुरुषसिंह ५ पुण्डरीक ६ दत्त ७ लक्ष्मण ८ कृष्ण ९ आगे नव ही वासुदेवों कीमुख्य पटराणीयों के नाम सुनो

For Private and Personal Use Only

सुप्रभा १ रूपिणी २ प्रभवा ३ मनोहरा ४ सुनेत्रा ५ विमलसुन्दरी ६ अनन्दवती ७ प्रभावती ८ रुक्मणी ९ ये वासुदेवों की मुख्यपटराणी कैसी हैं महागुण कलानिपुण धर्मवती व्रतवती हैं ॥

अथानन्तर नव बलभद्रोंका वर्णन सुनो सो पहिले नवही बलभद्रों की पूर्वजन्मकी पुरियों के नाम सुनों पुण्डरीकनी १ पृथिवी २ आनन्दपुरी ३ नन्दपुरी ४ वीतशोका ५ विजयपुर ६ सुसीमा ७ क्षेमा ८ हस्तनागपुर ९ और बलभद्रों के पूर्वजन्म के नाम सुनो बाल १ मारुतदेव २ नन्दिमित्र ३ महाबल ४ पुरुषपर्भ ५ सुदर्शन ६ वसुधर ७ श्रीचन्द्र ८ शंख ९ अब इनके पूर्व भवके गुरुवोंके नाम सुनो जिनपै इन्होंने जिनदीक्षा आदरी।अमृतार १महासुव्रत २ सुव्रत ३ वृषभ ४ प्रजापाल ५ दम्बर ६ सुधर्म ७ आर्णव ८ विद्रुम ९ अबनव वलदेव जिन २ देवलोकोंसे आए तिनके नामसुनों तीनबलभद्र तो अनुत्तरबिमानसेआए और तीन सहस्रार स्वर्गसे आए दो ब्रह्मस्वर्गसे आए एक महाशुक्रसे आया अवइन नव बलभद्रों कीमातावों के नाम सुनों क्योंकि पिता तो इन बलभद्रों के और नारायणों के एकही होय हैं भद्राभोजा १ सुभद्रा २ सुवेषा ३ सुदर्शना ४ सुप्रभा ५ बिजया ६ वैजयन्ती ७ अपराजिता जिसे कौशिल्या भी कहे हैं ८ रोहिणी ९ नववलभद्र नवनारायण तिनमें पांच बलभद्र पांच नारायण तो श्रेयांसनाथ स्वामी के समय आदि धर्मनाथ स्वामी के समय पर्यन्त भए और छठें अरनाथ स्वामीको मुक्तिगए मल्लिनाथ स्वामी के पहिले भए और नवमें श्री नेमिनाथ के काकाके बेटे भाई महाजिनभक्त अद्भुत क्रियाके धारणहारे भए अबइनके नाम सुनों १ अचल २ विजय ३ भद्र ४सुप्रभ ५ सुदरशन ६नन्दिमित्र[आनन्द]७नान्दिषेण(नन्दन) ८ रामचन्द्र [पद्म] ९ राम [बलभद्र] आगे जिनमहामुनियों पै बलभद्रों ने दीक्षा धरी तिनके नामकहिये

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है सुवर्णकुम्भ १ सत्यकीर्ति २ सुधर्म ३ मृगांक ४ श्रुतिकीर्ति ५ सुमित्र६ भवनश्रुत७ सुव्रत ८ सिद्धार्थ ६ यह बलभद्रों के गुरुवों के नाम कहे महातपके भार कर कर्मनिर्जराके करणहारे तीन लोक में प्रकट है कीर्ति जिनकी नवबलभद्रों के आठ तो कर्मरूप बन को भस्म कर मोक्ष प्राप्त भए कैसा है सन्सार वन आकुलता को प्राप्त भए हैं नाना प्रकार की व्याधि कर पीड़ित प्राणी जहां और वह वन काल रूप जो व्याघ्र उससे अति भयानक है और कैसा है यहबन अनन्त जन्मरूप जे कंटक वृक्ष तिनका है समूह जहां विजय बलभद्र आदि श्री रामचन्द्र पर्यन्त आठ तो सिद्ध भए और रामनामा जो नवमां बलभद्र वह ब्रह्मस्वर्ग में महाऋद्धि के धारी देव भए।

अथानन्तर नारायणोंके शत्रुजे प्रति नारायण तिनकेनाम सुनो अश्वग्रीव १ तारक २ मेरक ३ मधुकैटभ ४ निशुंभ ५ बालि ६ प्रल्हाद ७ रावण ८ जरासिन्ध ६ अब इन प्रतिनारायणोंकीराजधानियोंकेनामसुनो,अलका १ विजयपुर २ नन्दनपुर ३ पृथ्वीपुर ४ हरिपुर ५ सूर्यपुर ६ सिंहपुर ७ लंका ८ राजगृही ६ ये नौही नगर कैसे हैं महा रत्न जड़ित अति देदीप्यमान स्वर्ग लोक समान हैं।

हे श्रेणिक प्रथमही श्री जिनेंद्रदेवका चरित्र तुझे कहा फिर भरत आदि चक्रवर्तियोंका कथन कहा और नारायण बलभद्र तिनका कथन कहा इनके पूर्व जन्म सकल वृतांत कहे और नवही प्रतिनारायण तिनके नाम कहे ये त्रैसठ शलाकाके पुरुषहैं तिनमें कैयक पुरुष तो जिन भाषित तपसे उसही भवमें मोक्षको प्राप्त होयहैं कैयक स्वर्ग प्राप्त होयहैं पीछे मोक्षपावे हैं और कैयक जे वैराग्य नहीं धरे हैं चक्री तथा हरि प्रतिहरिते कैयक भवधर फिर तपकर मोक्षको प्राप्त होयहैं ये संसारके प्राणी नानाप्रकारके जे पाप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिनसे मलीन मोहरूप सागरके भ्रमणमें मग्न महा दुःखरूप चारगति तिनमें भ्रमणकर तप्तायमान सदा व्याकुल होयहैं ऐसा जानकर जे निकट संसारी भव्यजीवहैं वे संसारका भ्रमण नहीं चाहे हैं मोह तिमिरका अन्तकर सूर्य समान केवलज्ञानका प्रकाश करे हैं ॥ इति बीसवां पर्व संपूर्णम् ।

अथानंतर आगे हरिवंशकी उत्पतिका कथन सुनो भगवान दशमतीर्थंकर जे श्रीशीतलनाथ स्वामी तिन के मोक्षगए पीछे कौशांबीनगरीमें एक राजा सुमुख भया और उसही नगरमें एक श्रेष्ठीवीर उसकी स्त्री बन माला सो अज्ञानके उदयसे राजा सुमुखने घरमें राखीफिर विवेकको प्राप्तहोय मुनियोंकोदान दिया सो मरकर विद्याधर और वह बनमाला विद्याधारी भई सो उस विद्याधरने परणी एक दिवस ये दोनों क्रीड़ा करनेको हरि क्षेत्र गये और वह श्रेष्ठीवीर बनमालाका पति विरहरूप अग्निकर दग्धायमान सो तपकर देवलोकको प्राप्त भया एक दिवस अवधिकर वहदेव अपने बैरी सुमुखको हरिक्षेत्रमें क्रीड़ा करता जान क्रोधकर वहांसे भार्या सहित उठाय लाया सो वह इस क्षेत्रमें हरि नामसे प्रसिद्ध भया इसी कारणसे इसका कुलहरिवंश कह- लाया उस हरिके महागिरि नाम पुत्र भया उसके हिमगिरि उसके वसुगिरि उसके इन्द्रगिरि उस के रत्नमाल उसके संभूत उसके भूतदेव इत्यादि सैंकड़ों राजा हरिवंशमें भए ।

अथानन्तर हरिवंशमें कुशाग्रनाम नगर विषे एक राजा सुमित्र जगत विषे प्रसिद्ध भया कैसे हैं राजा सुमित्रभोगोंकर इन्द्र समान कांतिसे जीताहै चन्द्रमा जिसने और दीप्तकर जीताहै सूर्य और प्रताप कर नवाए हैं शत्रु जिसने उसके राणी पद्मावती कमल सारिखे हैं नेत्र जिसके शुभ लक्षणोंसे सम्पूर्ण और पूर्ण भएहैं सकल मनोरथ जिसके सो रात्रि में मनोहर महल में सुखरूप सेजपर सूती थी सो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिछले पहिर सोलह स्वप्न देखे गजराज १ वृषभ २ सिंह ३ लक्ष्मी स्नान करती ४ दोय पुष्पमाल ५ चन्द्रमा ६ सूर्य ७ दो मछ जलमें केलि करते ८ जलका भरा कलश कमल समूहसे मूंहढका ९ सरोवर कमल पूर्ण १० समुद्र ११ सिंहासनरत्न जड़ित १२ स्वर्गलोकसे विमान आकाशसे आवतेदेखे १३ और नाग कुमारके विमान पातालसे निकसते देखे १४ रत्नोंकी राशि १५ निर्धूम अग्नि १६ तब राणी पद्मावती सुबुद्धिवंती जागकर आश्चर्यरूप भया है चित्त जिसका प्रभात क्रियाकर विनय रूप भरतारके निकट आई पतिके सिंहासनपर विराजी फूल रहाहै मुख कमल जिसका महान्यायकी वेत्ता पतिव्रताहाथ जोड नमस्कारकर पतिसे स्वप्नों का फल पूछती भई तब राजा सुमित्र स्वप्नोका फल यथार्थ कहते भए तबही रत्नोंकी वर्षा आकाशसे वरसतीभई साढ़े तीनकोटि रत्न एक सन्ध्यामें वरसे सो त्रिकाल संध्या वर्षा होतीभई पन्द्रह महीनों लग राजाके घर में रत्नधारा वर्षे और जे षट कुमारिका वे समस्त परिवार सहित माताकी सेवा करतीभई और जन्म होतेही भगवान को चीर सागर के जल से इन्द्र लोकपालों सहित सुमेरु पर्वत पर स्नान करावते भए और इन्द्रने भक्तिसे पूजा और अस्तुतिकर नमस्कार करी फिर सुमेरुसे ल्याय माताकी गोदमें पधराए जबसे भगवान माता के गर्भमें आए तबहीसे लोक अणुव्रत रूप महाव्रतमें विशेष प्रवर्ते और माता व्रतरूप होती भई इसलिये पृथिवी पर मुनिसुव्रत कहाए अञ्जन गिरि समान है वर्ण जिनका परन्तु शरीरके तेजसे सूर्यको जीतते भए और कांति से चन्द्रमाको जीतते भए सर्वभोग सामग्री इन्द्रलोक से कुवेर लावे और जैसा आपको मनुष्य भवमें सुख है तैसा अहमिन्द्रोंको नहीं और हाहा हह तंवर नारद विश्वावसु इत्यादि गन्धर्वों की जाति हैं वे सदा निकट गान कराहीकरें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और किन्नरी जातिकी देवांगना तथा स्वर्गकी अप्सरा नृत्य कियाही करें और वीणा बांसुरी मृदंगादि वादित्र नानाविधि के देव बजायाही करें और इन्द्र सदा सेवाकरें और आप महासुन्दर यौवन अवस्था विषे विवाह भी करते भए सो जिनके राणी अद्भुत आवती भई अनेक गुणकला चातुर्यता कर पूर्ण हाव भाव विलास विभ्रम की धरणहारी सो कैयकवर्ष आप राज्यकिया मनवांछित भोग भोगे एकदिवस शरद के मेघ विलय होते देख आप प्रतिबोधको प्राप्तभए तब लोकान्तिकदेवने आय स्तुतिकरी तब सुव्रत नाम पुत्रको राज्यदेय वैरागी भए कैसे हैं भगवान नहीं है किसीभी वस्तु की बांछा जिनके आप वीतरागभाव धर दिव्य स्त्री रूप जो कमलोंका बन वहां से निकसे कैसा है वह सुन्दर स्त्रीरूप कमलोंका बन सुगन्ध से व्याप्त किया है दसों दिशाका समूह जिसने फिर महा दिव्य जे सुगन्धादिक वेई हैंमकरन्द जिसमें और सुगन्धताकर भ्रमें हैं भ्रमरोंके समूह जिसमें और हरित मणि को जे प्रभा तिनके जो पुञ्ज सोई है पत्रों का समूह जिसमें और दन्तों की जो पंक्ति तिनकी जो उज्ज्वल प्रभा सोई है कमल तंतु जिसमें और नानाप्रकार आभूषणों के जे नाद वेई भए पक्षी उनके शब्दों से पूरितहै और स्तनरूप जे चकवे तिन से शोभित हैं और उज्ज्वल कीर्तिरूप जो राजहंस तिनसे मण्डितहैं सो ऐसे अद्भुत विलास तजकर वैराग्य के अर्थ देवों पुनीत पालिकीमें चढ़कर विपुल नाम उद्यान में गए कैसेहैं भगवान मुनिव्रत सर्व राजावों के मुकटमणि हैं सो बन में पालकी से उतर कर अनेक राजावों सहित जिनेश्वरी दीक्षा धरतेभए बेलें पारणा करना यह प्रतिज्ञा आदरी राजगृह नगर में वृषभदत्त महा भक्ति कर श्रेष्ठ अन्न कर पारणा करावतो भया आप भगवान महा शक्ति से पूर्ण क्षुधा की बाधा से पीड़ित नहीं परन्तु आचारांग

For Private and Personal Use Only

सूत्र की आज्ञा प्रमाण अन्तराय रहित भोजन करतेभये बृषभदत्त भगवान को अहार देय कृतार्थ भया भगवान के एक महीना तप कर चम्पा के वृक्ष के तले शुक्लध्यान के प्रताप कर घातिया कर्मोंका नाशकर केवल को प्राप्त भए तब इन्द्र सहित देव आयकर प्रणाम और स्तुति कर धर्म श्रवण करते भए आपने यति श्रावक का धर्म विधिपूर्वक वर्णनकिया धर्म श्रवण कर कई मनुष्य मुनि भए कई मनुष्य श्रावक भए कई तिर्यंच श्रावक के व्रत धरते भये और देवको व्रत नहीं सो कई देव सम्यक्तको प्राप्तहोते भए श्रीमुनिसुव्रतनाथ धर्मतीर्थ का प्रवर्तन कर सुर असुर मनुष्यों से स्तुति करने योग्य अनेक साधुवों सहित पृथिवी पर विहार करतेभए सम्मेदशिखर पर्वत से लोक शिखर को प्राप्तभए यह श्री मुनिसुव्रत नाथ का चरित्र जे प्राणी भाव धर सुनें तिनके समस्त पाप नाश को प्राप्त होंय और ज्ञान सहित तप से परम स्थानको पावें जहां से फेर आगमन न होय ॥

अथानन्तर मुनिसुव्रतनाथके पुत्र राजा सुव्रत बहुतकाल राज्यकर दत्त पुत्रको राज्यदेय जिनदीक्षा धर मोक्षको प्राप्तभये और दत्त के एलावर्धन पुत्रभया उसके श्रीवर्धन उसके श्रीवृक्ष उसके संजययंत उसके कुणिम उसके महारथ उसके पुलोमई इत्यादि अनेक राजा हरिवंश कुलमेंभये तिनमें कैयक मुक्ति को गये कैयक स्वर्गलोक गये इस भांति अनेक राजा भये फिर इसी कुलमें एक राजा वासवकेतु भया मिथिला नगरी का पति उसके विपुला नामा पटराणी सुन्दर हैं नेत्र जिसके सो वह राणी परम लक्ष्मी का स्वरूप उसके जनक नामा पुत्र होतेभये समस्त नयों में प्रवीण वे राज्यपाय प्रजाको ऐसे पालतेभये जैसे पिता पुत्रको पाले गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक ! यह जनककी उत्पत्ति तुझे कहीजनक हरिवंशी हैं

अथानन्तर श्रीऋषभदेवके कुल में राजा वज्रवाहु भए तिन का वर्णन सुन इक्ष्वाकुवंश में श्री ऋषभदेव निर्वाण पधारे फिर तिन के पुत्र भरत भी निर्वाण पधारे सो ऋषभदेव के समय से लेकर मुनिसुव्रतनाथ के समय पर्यन्त वहुत काल वीता उस में असंख्य राजा भए। कैयक तो महा दुर्द्धर तप कर निर्वाण को प्राप्त भए कैयक अहमिंद्र भए, कैयक इन्द्रादिक बडी ऋद्धिके धारी देव भए कैयक पाप के उदय कर नरक में गए हे श्रेणिक इस संसार में अज्ञानी जीव चक्र की न्याई भ्रमण करे हैं, कभी स्वर्ग में भोग पावे हैं तिन में मग्न होय क्रीड़ा करें हैं कैयक पापी जीव नरक निगोद में क्लेश भोगे हैं ये प्राणी पुण्य पाप के उदय से अनादि काल के भ्रमण करे हैं कभी कष्ट उत्सव यदि विचार करके देखिये तो दुःख मेरु समान सुख राई समान है कैयक द्रव्यरहित क्लेश भोगवे हैं कैयक वाल अवस्था में मरण करे हैं। कैयक शोक करे हैं, कैयक रुदन कर हैं कैयक विवाद करे हैं कैयक पढे हैं कईएक पराई रक्षा कर हैं कईएक पापी बाधा करें हैं कैयक गरजे हैं कैयक गान करे हैं कैयक पराई सेवा करे हैं कैयक भार वहे हैं कैयक शयन करे हैं कैयक पराई निन्दा करे हैं कैयक केलि करे हैं कईएक युद्ध से शत्रुओं को जीते हैं, कईएक शत्रु को पकड़ छोड़ देय हैं कईएक कायर युद्ध को देख भागे हैं कईएक शूरवीर पृथिवी का राज्य करे हैं बिलास करे हैं फिर राज्य तज वैराग्य धारे हैं कईएक पापी हिंसा करें हैं परद्रव्यकी बांछा करे हैं पर द्रव्यको हरे हैं दौड़े हैं काट कपट करे हैं वे नरक में पड़े हैं और जे कैयक लज्जा धारे हैं शील पाले हैं करुणाभाव धारे हैं पर द्रव्य तजे हैं वीतराग को भजे हैं संतोष धारे हैं प्राणियों को साता उपजावे हैं वें स्वर्ग पाय परंपराय मोक्ष पावें हैं जे दान करे हैं तप करे हैं अशुभ क्रिया का त्याग करे हैं जिनेन्द्र की

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्चा करे हैं जैनशास्त्र की चर्चा करे हैं सब जीवों से मित्रता करे हैं विवेकियों का विनय करे हैं वे सभ्य उत्तम पद को पावे हैं कईएक क्रोध करे हैं काम सेवे हैं, राग द्वेष मोह के वशी भूत हैं पर जीवों को ठगे हैं वे भव सागर में डूबे हैं, नाना विध नाचे हैं जगत में रागे हैं खेदखिन्न हैं दीर्घशोक करे हैं झगड़ा करे हैं संताप करे हैं असि मसि कृषि वाणिज्यादि व्यापार करें हैं ज्योतिष् वैद्यक यंत्रादि करे हैं शृङ्गारादि शास्त्र रचे हैं वे वृथा पच्च पच्च कर मरे हैं इत्यादि शुभाशुभ कर्म से आत्म धर्म को भूल रहे हैं संसारी जीव चतुर्गति में भ्रमण करे हैं, इस अवसर्पणी काल विषे आयु काय घटती जाय है, श्री मल्लिनाथ के मुक्ति गये पीछे मुनि सुव्रतनाथ के अंतराल में इस क्षेत्र में अयोध्या नगरी विषे एक विजय नामा राजा भया महा शूर वीर प्रताप से संयुक्त प्रजा पालने में प्रवीण जीते हैं समस्त शत्रु जिसने इसके हेमचूलनी नामा पटराणी इस के महा गुणवान् सुरेन्द्रमन्यु नामा पुत्र भए, उसके कीर्ति समा नामा राणी उसके दोय पुत्र भए एक वज्रवाहु दूजा पुरंदर चन्द्रसूर्यसमान है कान्ति जिनकी महा गुणवान् अर्थसंयुक्त हैं नाम जिनके वे दोनों भाई पृथिवी पर सुखसे रमते भए ॥

अथानन्तर हस्तिनागपुर में एक राजा इन्द्रवाहन उसके राणी चूड़ामणी उसके पुत्री मनोदया अति सुन्दरी सो वज्रबाहु कुमारने परणी सो कन्या का भाई उदय सुन्दर बहिन के लेने को आया सो वज्रबाहु कुमार का स्त्री से अति प्रेम था स्त्री अति सुन्दरी सो कुमार स्त्री के लार सासरे चले मार्ग में बसंत का समयथा और वसंतगिरि पर्वत के समीपजाय निकसे ज्योंज्यों वह पहाड़ निकट आवे त्योंत्यों उसकी परम शोभा देख कुमार अति हर्ष को प्राप्त भए पुष्पों की जो मकरन्दता उससे मिली सुगंध पवन सो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुमार के शरीर से स्पर्शी उससे ऐसा सुख भया जैसा बहुत दिन बिछुरे मित्र सों मिले सुख होय कोकिलावों के मिष्ट शब्दों से अति हर्षित भया जैसे जीत का शब्द सुने हर्ष होय पवन से हाले हैं वृक्षों के अग्र भाग सो मानोंपर्वत वज्रबाहु का सनमान ही करें हैं और भ्रमर गुंजार करें हैं सो मानोंवीण का नाद ही होयहै वज्रबाहु का मन प्रसन्न भया वज्रबाहु पहाड़ की शोभा देखे हैं कि यह आम्रवृक्षयह कर्णकार जाति का वृक्ष यह रौद्र जातिका वृक्ष फलों से मंडित यह भयालवृक्ष यह पलाश का वृक्षअग्नि समान देदीप्यमान हैं पुष्प जिसके वृक्षों की शोभा देखते देखते राजकुमार की दृष्टि मुनिराज पर पड़ी देख कर बिचारता भया यह थंभ है अथवा पर्वत का शिखर है अथवा मुनि हैं कायोत्सर्ग धर खड़े जो मुनि तिन में वज्रबाहु का ऐसा विचार भया कैसे हैं मुनि जिनको ठूंठ जान कर जिन के शरीर से मृग खाज खुजावे हैं जब नृप निकट गया तब निश्चय भया कि जो ये महा योगीश्वर विदेह अवस्थाको धरे कायोत्सर्ग ध्यान धरे स्थिर रूप खड़े हैं सूर्य की किरणों से स्पर्शा है मुख कमल जिनका और महासर्प के फण समान देदीप्यमान भुजावों को लंबाय ऊभे हैं सुमेरु का जोतट उस समान सुन्दर है वक्षस्थल जिनका और. दिग्गजों के बांधने के थंभ तिन समान अचल हैं जंघा जिनकी तप से क्षीण शरीर हैं परन्तु कांति से पुष्ट दीखें हैं नासिका के अग्रभाग में लगाए हैं निश्चल सौम्य नेत्र जिन्होंने आत्मा को एकाग्र ध्यावैं हैं ऐसे मुनि को देख कर राजकुमार चितवता भया अहो धन्य हैं ये मुनिमहा शान्ति भाव के धारक जो समस्त परिग्रह को तजकर मोक्षाभिलाषी होय तप करें हैं इनको निर्वाण निकट है, निज कल्याण में लगी है बुद्धि जिनकी पर जीवन को पीड़ा देने से निवृत भया है आत्मा जिनका

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और मुनि पद की क्रिया से मंडित हैं जिनके शत्रु मित्र समानहैं। और रत्न और तृण समान हैं. मान और मत्सर से रहित हे मन जिनका। वश करी हैं पांचों इंद्रियें जिन्होंने निश्चल पर्वत समान वीतराग भावहैं जिनके दर्शे जीवों का कल्याण होय इस मनुष्य देह का फल इन्होंने ही पाया यह विषय कषायों से न ठगाए कैसे हैं विषय कषाय महा क्रूर हैं और मलिनता के कारण हैं में पापी कर्म पाश कर निरन्तर बंधा जैसे चन्दन का वृक्ष सर्पों से वेष्टित होयहै तैसे मैं पापी असावधानचित्त अचेत समान होयरहा धिक्कार है मुझे मैं भोगादि रूप जो महा पर्वत उसके शिखर पर निद्रा करूं हूं सो नीचेही पड़ूंगा जो इस योगीन्द्र की सी अवस्था धरूं तो मेरा जन्म कृतार्थ होय ऐसा चिंतवन करते वज्रबाहुकी दृष्टि मुनिनाथ में अत्यन्त निश्चल भई मानों थंभ से बांधीगई तब उसका उदयसुन्दर साला इस को निश्चल देख मुलकता हुवा इसे हास्यके वचन कहता भया मुनिकी ओर अत्यन्त निश्चल होय निरखोहो सो क्या दिगम्बरीदीक्षा धरोगे तब वज्रबाहु बोले जो हमारा भावथा सो तुमने प्रकट किया अब तुम इसही भावकी वार्ता कहो तब वह इसको रागी जान हास्य रूप बोलाकि तुम दीक्षा धरोगेतो मैंभी धरूंगा परन्तु इस दीक्षासेतुम अत्यन्त उदास होवोगे, तब वज्रबाहु बोले यह तो ऐसे ही भई यहकह कर विवाह के आभूषण उतारडार और हाथी से उतरे तब मृगनयनी स्त्री रोवने लगी। स्थूल मोती समान अश्रुपात डारती भई तब उदय सुन्दर आंसू डारता भया हे देव यह हास्य में कहां विपरीत करो हो तब वज्रबाहु अति मधुरवचन से उसको शान्तता उपजावते हुए कहते भए हे कल्याणरूप तुम समान उपकारी कौन मैं कूपमें पड़ूं था सो तुमने राखा तुमसमान मेरा तीनलोकमें मित्रनहीं। हेउदयसुन्दर जो जन्मा है सो अवश्यमरेगा और जो मूआ

For Private and Personal Use Only

है सा अवश्य जन्मेगा, ये जन्म और मरण अरहट का घड़ी समान हैं तिनमें संसारी जीव निरन्तर भ्रमे हैं यह जीतव्य बिजलीके चमत्कार समानहै तथाजलकी तरंग समान तथादुष्टसर्पका जिव्हा समानचंचल है यह जगत् के जीव दुःखसागर में डुब रहे हैं। यहसंसार के भोग स्वप्न के भोग समान असारहैं जल के बुद्बदा समान काया है सांझके रंग समान यह जगतका स्नेह है औरयह यौवन फूलसमान कुमलाय जायहै यह तुम्हारा हंसनाभी हमको अमृतसमान कल्याणरूपःभया क्या हास्यसे जो औषधको पीएता रोगको न हरे अवश्य हरेही हर तुम हमको मोक्षमार्गके उद्यमके सहाई भए तुम समान हमारे और हितु नहीं मैं संसारके आचारविषे आसक्त होयरहाथा सो वीतराग भावको प्राप्त भया अब मैं जिनदीक्षाधरूं हूं तुम्हारा जा इच्छा होय सो तुम करो ऐसा कहकर सर्व परिवारसे क्षमा कराय वह गुणसागर नामा मुनि तपही है धन जिनके तिनके निकट जाय चरणारविन्दको नमस्कार विनयवान होय कहता भया हे स्वामी तुम्हारे प्रसाद से मेरा मन पवित्रभया अब मैं संसार रूप कीच से निकसा चाहूं हूं तब इसके वचन सुन गुरुने आज्ञा दई तुमको भवसागरसे पार करणहारी यह भगवती दीक्षा है कैसे हैं गरु सप्तम गुणस्थान से छठ गुणस्थान आएहैं यह गुरुकी आज्ञा उर में धार वस्त्रआभषण का त्याग कर पल्लव समान जे अपने कर तिनसे केशोंका लोंचकर पल्यकासन धरता भया इस देहको विनश्वर जान देह से स्नेह तजकर राजपुत्री को और राग अवस्थाको तज मोक्षकी देनहारी जा जिन दीक्षा सो अङ्गी-कार करता भया और उदय सुन्दरको आदिदे छब्बीस राजकुमार जिन दीक्षा धरतेभये कैसे हैं वे कुमार कामदेव समान है रूप जिनका तजे हैं राग द्वेष मद मत्सर जिन्होंने उपजा है वैराग्यका अनुराग जिन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के परम उत्साह के भरे नग्न मुद्रा धरतेभए और वृत्तान्त देख वज्रबाहुकी स्त्री मनोदेवी पति के और भाई के स्नेह से मोहित हुई मोह तज आर्यिका के व्रत धरती भई सर्व वस्त्राभूषण तज कर एक सुफेद साड़ी धारती भई महा तप व्रत आदरे यह वज्रबाहुकी कथा इसका दादा जो राजा विजय उसने सुनी सभा के मध्य बैठाथा सो शोक से पीड़ित होय ऐसे कहता भया यह आश्चर्य देखो कि मेरा पोता नवयौवन विषय विष जान विरक्त होय मुनिभया और मो सारिखा मूर्ख विषयों का लोलुपी वृद्ध अवस्थामें भी भोगोंको न तजताभया सो कुमारने कैसे तजे अथवा वह महाभाग्य जो भोगोंको तृणवत् तजकर मोक्ष के निमित्त शान्त भावों में तिष्ठा मैं मन्दभाग्य जराकर पीड़ितहूं सो इन पापी विषयोंने मुझे चिरकाल ठगा कैसे हैं यह विषय देखनेमें तो अति सुन्दर हैं परन्तु फल इनके अति कटुक हैं मेरे इन्द्रनील मणि समान श्याम जे केशोंकेसमूहथे सो कफकी राशि समान श्वेत होगए जे यौवन अवस्थामें मेरे नेत्र श्यामता श्वेतता अरुणतालिये अति मनोहरथे सो अब ऊंडे पड़गये और मेरा जो शरीर अति देदीप्यमान शोभायमान महाबलवान स्वरूपवानथा सो अब वृद्धअवस्था विषे वर्षासे हता जो चित्राम उससमानहोगया जे धर्म अर्थ काम तरुण अवस्था विषे भलीभांति सधे हैं सो जराकर मण्डित जे प्राणी तिनसे सधने विषम हैं धिक्कारहै मो पापी दुराचारी प्रमादीको जो मैं चेतन थका अचेतन दशा आदरी यह झूठाघर झूठी माया झूठी काया ये झूठे बान्धव झूठा परिवार तिनके स्नेहसे भवसागरके भ्रमणमें भ्रमा ऐसा कहकर सर्वपरिवार से क्षमा कराय छोटा पोता जो पुरन्दर उसे राज्य देय अपने पुत्र सुरेन्द्रमन्यु सहित राजा विजयने वृद्ध अवस्थामें निर्वाणघोष स्वामी के समीप जिनदीक्षा आदरी कैसा है राजा महा उदार है मन जिसका ॥

For Private and Personal Use Only

अथानन्तर पुरन्दर राज्य करेहै उसके पृथिवीमती राणी कीर्त्तिधरनामा पुत्रभया सोगुणोंका सागर पृथिवी विषे विख्यात वह विनयवान अनुक्रमकर यौवनको प्राप्तभया सर्व कुटुम्बको आनन्दबढ़ावताहुवा अपनी सुन्दर चेष्टा से सबको प्रियभया तब राजा पुरन्दरने अपने पुत्रको राजा कौशलकी पुत्री परणाई और इसको राज्यदेय राजा पुरन्दरने गुणही हैं आभषण जिसके चेमङ्कर मुनिके समीप मुनिव्रतधरे कर्म निर्जरा का कारण महा तप आरम्भा ॥

अथानन्तर राजा कीर्त्तिधर कुल क्रम से चला आया जो राज्य उसे पाय जीते सब शत्रु जिसने देवोंसमान उत्तम भोग भोगताहुवा रमताभया एक दिवस राजाकीर्त्तिधर प्रजाका बन्धु जे प्रजाके बाधक शत्रु तिनको भयंकर सिंहासन विषे जैसे इन्द्र बिराजे तैसे बिराजें थे सो सूर्यग्रहण देख चित्तमें चितवते भए कि देखो यह सूर्य जो ज्योतिका मंडलहै सो राहुके बिमानके योगसे श्याम होयगया यह सूर्य प्रताप का स्वामी अंधकारको मेट प्रकाश करे है और जिसके प्रतापसे चन्द्रमाका बिम्ब कांति रहित भासे है और कमलोंके बनको प्रफुल्लित करे है सो राहुके बिमानसे मन्दकांति भासे है उदय होताही सूर्य ज्योति रहित हो गया इसलिये संसारकी दशा अनित्यहै यह जगतके जीव विषयाभिलाषी रंक समान मोह पाश से बन्धे अवश्य कालके मुख में पड़ेंगे ऐसा बिचार कर यह महा भाग्य संसार की अवस्था को क्षणभंगुर जान मन्त्री पुरोहित सेनापति सामन्तोंसे कहता भया कि यह समुद्र पर्यन्त पृथ्वीके राज्य की तुम भली भांति रक्षा करियो मैं मुनिके व्रत धरूंहूं तब सबही बिनती करते भए हे प्रभो तुम बिन यह पृथ्वी हमसे दबे नहीं तुम शत्रुवोंके जीतनहारे हो लोकोंके रक्षकहो तुम्हारी वयभी नवयौवनहै इसलिये

पद्म पुराण ॥३७४॥

यह इंद्र तुल्य राज्य कैयक दिन करो इस राज्यके पति अद्वितीय तुमही हो यह पृथ्वी तुमहीसे शोभा यमानहै तब राजा बोले यह संसार अटवी अतिदीर्घ है इसे देख मुझे अतिभय उपजे है कैसी है यह भवरूप वन अनेक जे दुःख वेई हैं फल जिनके ऐसे कर्मरूप वृक्षोंसे भरी है और जन्म जरा मरण रोग शोक रति अरति इष्टवियोग अनिष्टसंयोगरूप अग्निसे प्रज्वलितहै तब मंत्रीजनों ने राजाके परिणाम विरक्त जान बुझे अंगारों के समूह आय धरे और तिनके मध्य एक वैडूर्यमणि ज्योतिका पुंज अति अमोलिक लाय धरा सो मणिके प्रतापसे कोयला प्रकाशरूप होगए फिर वह मणि उठाय लई तब वह कोइला नीके न लागे तब मंत्रियों ने राजासे बिनती करी हे देव जैसे यह काष्ठके कोयला रत्नों बिना न शोभे हैं तैसे तुम बिन हम सबही न शोभें। हे नाथ तुम बिन प्रजाके लोक अनाथ मारे जायेंगे और लूटे जावेंगे और प्रजाके नष्ट होते धर्मका अभाव होवेगा इस लिये जैसे तुम्हारा पिता तुम को राज्य देय मुनि भयाथा तैसे तुमभी अपने पुत्रको राज्य देय जिन दीक्षा धरियो इसभांति प्रधान पुरुषों ने बिनती करी तब राजाने यह नियम किया कि जो मैं पुत्रका जन्म सुनूं उसही दिन मुनि व्रत धरूं यह प्रतिज्ञाकर इन्द्र समान भोग भोगता भया प्रजाको साता उपजाय राज्य किया जिसके राज्य में किसी भांतिका भी प्रजाको भय न उपजा कैसाहै राजा समाधान रूपहै चित्त जिसका एक समय राणी सहदेवी राजा सहित शयन करती थी सो उसको गर्भ रहा कैसा पुत्र गर्भ में आया सम्पूर्ण गुणोंका पात्र और पृथिवीके प्रतिपालनको समर्थ सो जब पुत्रका जन्म भया तब राणीने पतिके वैरागी होनेके भयसे पुत्रका जन्म प्रकट न किया कैयक दिवस वार्ता गोप राखी जैसे सूर्यके उदयको कोई छिपाय न सके तैसे राजपुत्रका

जन्म कैसे छिपे किसी मनुष्य दरिद्रीने द्रव्यके अर्थके लोभसे राजासे प्रकट किया तब राजाने मुकट आदिसर्व आभूषण उसको अंगसे उतार दिये और घोषशाखा नामा नगर महा रमणीक अतिधनकी उत्पतिका स्थानक सो गांव सहित दिया और पुत्रपंदरह दिनका माताकी गोदमें तिष्ठताथा सो तिलककर उसको राज पद दिया जिससे अयोध्या अति रमणीक होती भई और अयोध्याका नाम कौशलभीहै इस लिये उसका सुकौशल नाम प्रसिद्ध भया कैसाहै सुकौशल सुन्दर है चेष्टा जिसकी सुकौशल को राज्य देय राजा कीर्तिधर घर रूप बन्दीगृहसे निकसकर तपोवनको गये मुनि व्रत आदरे तपसे उपजा जो तेज उससे जैसे मेघपटल से रहित सूर्य शोभे तैसे शोभते भये । इति इक्कीसवां पर्व सम्पूर्णम् ।

अथानन्तर कयक वर्ष में कीर्ति धर मुनि पृथिवी समान है क्षमा जिनके दूर भया है मानमत्सर जिनका और उदार है चित्त जिनका, तपकर शोखा है सर्वअंग जिन्होंने और लोचन ही हैं सर्व आभूषण जिनके प्रलंबित हैं महा बाहु और जूडे प्रमाण धरती देख अधो दृष्टि गमन करे हैं जैसे मत्तगजेन्द्र मन्द मन्द गमन करें तैसे जीवदया के अर्थ धीरा धीरा गमन करे हैं, सर्व विकार रहित महा सावधानी ज्ञानी महा विनयवान् लोभ रहित पंच आचार के पालनहारे जीवदया से विमल है चित्त जिनका स्नेह रूप कर्दम से रहित स्नानादि शरीरसंस्कार से रहित मुनिपदकी शोभा से मंडित सो आहार के निमित्त बहुत दिनों के उपवासे नगर में प्रवेश करते भए तिनको देख कर पापनी सहदेवी उनकी स्त्री मन में विचार करती भई कि कभी इनको देख मेरा पुत्र भी वैराग्य को प्राप्त नहोय तब महाक्रोध कर लाल होय गया है मुख जिसका दुष्टचित्त द्वारपालों से कहती भई, यह यति नग्न महामलिन घर का खोऊ है इसे नगर से बाहिर निकास देवो फिर नगर में

न आवने पावे मेरा पुत्र सुकुमार है भोला है कोमलचित्त है सो उसे देखने न पावे, इसके सिवाय और भी यति हमारे द्वारे आवने न पावें, रे द्वारपालहो इसबातमें चूकपड़ी तो मैं तुम्हारा निग्रह करूंगी जब से यह दया रहित बालक पुत्रको तज कर मुनि भया तब से इस भेष का मेरे आदर नहीं, यह राज्यलक्ष्मी निन्दे है और लोगों को वैराग्यप्राप्तकरे है भोगछुडाय योगसिखावे है, जब राणी ने ऐसे वचन कहे तब वे क्रूर द्वारपाल वेंत की छड़ी है जिनके हाथ में मुनिको मुख से दुरवचन कह कर नगर से निकास दिए और आहार को और भी साधु नगर में आए थे वे भी निकास दिये मत कदाचित् मेरा पुत्र धर्म श्रवणकरे इस भांति कीर्तिधरका अविनय देख राजा सुकौशलकी धाय महाशोक कर रुदन करती भई तब राजा सुकौशल धाय को रोवती देख कहते भए हे माता तेरा अपमान करे ऐसा कौन माता तो मेरी गर्भ धारण मात्रहै और तेरे दुग्ध से मेरा शरीर वृद्धिको प्राप्त भया सो मेरे तू माता से भी अधिक है जो मृत्यु के मुख में प्रवेश किया चाहे सो तोहि दुखावे जो मेरी माता ने भी तेरा अनादर किया होय तो मैं उसका भी अविनय करूं औरों की क्या बात, तब वसंतलता धाय कहती भई, हे राजन् तेरा पिता तुझे बालअवस्था में राज्यदेय संसाररूप कष्टके पींजरेसे भयभीत होय तपोवनकोगये सो वह आज इसनगर में आहार को आए थे सो तुम्हारी माताने द्वारपालोंसे आज्ञा कर नगर से कढाये हेपुत्र वे हमारे सबकेस्वामी सो उनका अविनय मैं देख न सकी इस लिये रुदन करूंहूं और तुम्हारी कृपा कर मेरा अपमान कौन करे और साधुवों को देखकर मेरा पुत्रज्ञान को प्राप्तहोय ऐसा जान मुनोंका प्रवेश नगरसे निकारा सो तुम्हारे गोत्र विषे यह धर्म परम्पराय से चला आया है किजो पुत्र को राज्य देय पिता वैरागी होय हैं और

तुम्हारे घरसे आहार बिना कभी भी साधुपीछे न गए यह वृतान्त सुन राजा सुकौसल मुनिके दर्शन को महलसे उतर चमरछत्र वाहन इत्यादि राज चिन्ह तज कर कमल से भी अति कोमल जो चरण सो उवाणे ही मुनिके दर्शनको दौड़े और लोकों को पूछतेजावें तुमने मुनिको देखेतुमनेमुनिदेखेइसभांतिपरम अभिलाषा संयुक्त अपने पिता जो कीर्तिधर मुनि तिनके समीप गये और इनके पीछे छत्रचमर वारे सब दौंडेही गए महामुनि उद्यान विषे शिला पराविराजे थे तैसे राजा सुकौसल अश्रुपात कर पुर्ण है नेत्र जिसके शुभ है भावना जिसकी हाथजोड़ नमस्कारकर बहुत बिनय से मुनिके आगे खडे जिन द्वार पालोंने द्वारेसेनिकासे थे सो उनसे अतिलज्जावन्त होय महामुनिसों बिनती करते भए हेनाथजैसेकोई पुरुष अग्निप्रज्वलित घरमें सूता होवे उसे कोई मेघके नादसमान ऊंचा शब्द कर जगावे तैसे संसार रूप गृहजन्म मृत्युरूप अग्निसे प्रज्वलित उस विषेमें मोहनिद्रामें सुखशयन करूं था सो मुझे आपने जगाया अब कृपाकर यह तुम्हारी दिगम्बरीदीक्षा मुझे देवो यह कष्ट का सागर इससे मुझे उधारो जब ऐसे वचन मुनि से राजा सुकौशलने कहे तवहीसमस्त सामन्त लोक आए और राणी विचित्र माला गर्भवती थी सो भी अति कष्ट से विषाद सहितसमस्त राजलोक सहित आई इनको दीक्षाके उद्यमी सुन सबही अन्तःपुरके और प्रजाके शोक उपजा तब राजासुकौशल कहते भये इसराणी विचित्रमाला के गर्भ विषे पुत्रहै उसे मैंने राज्यदियाऐसा कहकर निस्पृह भए आशा रूप फांसिको छेद स्नेहरूपजो पींजरा उसेतोड़ स्त्रीरूप बन्धन से छूट जीर्ण तृणवत राजको जानतजा और वस्त्राभूषण सबहीतने बाह्याभ्यन्तर परिग्रहका त्यागकर के केशोंका लोंच किया और पद्मासनधार तिष्ठे कीर्तिधर मुनींद्र इन के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिता तिनके निकट जिनदीक्षा धरी पञ्चमहाव्रत पांचसमति तीनगुप्तिअंगीकारकर सुकौशलमुनिनेगुरुकेसंग बिहार किया कमल समान आरक्तजो चरण तिनसे पृथिवी को शोभायमान करते हुए बिहार करते भए और इन की माता सहदेवी आर्तध्यानकर मर के तिर्यञ्च योनि में नाहरीभई और ए पितापुत्रदोनों मुनि महाबिरक्त जिनको एकस्थानकरहना पिछले पहरादिनसे निर्जन प्रासुक स्थान देख बैठ रहें क्यों कि चतुर्मासिक में साधुवों को बिहार न करना इस लिए चतुर्मासिक जान एक स्थान बैठरहे तबदशों दिशा को श्याम करता सन्ता चातुरमासिक पृथिवी विषे प्रवरता आकाश मेघमालाके समुहसे ऐसाशोभे मानों काजलसे लिपाहै और कहूं एक बगुलावोंकी पंक्ति उड़ती ऐसी सो है मानों कुमुद फूल रहे हैं और ठौर ठौर कमल फूल रहे हैं जिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं मानो वर्षा कालरूप राजा के यशही गावे हैं अंजनगिरि समान महा नील अन्धकार से जगत व्याप्त हो गया मेघके गाजने से मानो चांद सूर्य डर कर छिप गए अखण्ड जलकी धारा से पृथिवी सजल हो गई और तृण उग उठे सो मानों पृथिवी हर्ष के अंकूरे धरे है और जलके प्रवाह से पृथ्वी में नीचा ऊंचा स्थल नजर न आवे और पृथ्वी विषे जल के समूह गाजे हैं और आकाश विषे मेघ गाजे हैं सो मानों ज्येष्ठ का समय जो बैरी उसे जीतकर गाज रहे हैं और धरती नीझरनों से शोभित भई भांति भांति की बनस्पति पृथ्वी विषे उगी उनसे पृथिवी ऐसी शोभे है मानों हरित मणिके बिछोना कर राखे हैं पृथिवी विषे सर्वत्र जलही जल हो रहाहै मानों मेघही जलके भार से टूट पड़े हैं और ठौर २ इन्द्रगोप अर्थात् बीर बहुटी दीखे हैं सो मानों वैराग्य रूप बज्र से चूर्ण भए रागके खण्डही पृथिवी विषे फैल रहे हैं और

For Private and Personal Use Only

बिजलीका तेज सर्व दिशा विषे विचरे हैं मेघ नेत्रकर जलपूरित तथा तृ पूरित स्थानकको देखे है और नानाप्रकारके रंगको धरी हुई इन्द्रधनुषसे मंडित आकाश ऐसा शोभता भया मानों अति ऊंचे तोरणों कर युक्तहै और दोनों पालि ढाहती महाभयानक भ्रमणको धर अतिवेगकर युक्त कलुषतासंयुक्त नदी बहे हैं सो मानों मर्यादा रहित स्वछन्द स्त्रीके स्वरूपको आचरे हैं और मेघके शब्दकर त्रासको प्राप्त भई मृगनयनी विरहिणी वे स्तम्भन स्पर्श करे हैं और महाविव्हल हैं पतिके आवने की आशा विषे लगाएहैं नेत्र जिन्होंने ऐसे वर्षाकाल विषे जीवदयाके पालनहारे महाशांत अनेक निर्ग्रंथ मुनि प्राशुक स्थानकविषे चौमासालेय तिष्ठे और जे गृहस्थी श्रावक साधुसेवा विषे तत्पर वेभी चार महीना गमनका त्याग कर नानाप्रकारके नियमधर तिष्ठे ऐसे मेघकर व्याप्त वर्षाकाल विषे वे पिता पुत्र यथार्थ आचारके आचरने हारे प्रेतवन अर्थात् मसानविषे चार महीना उपवास धर वृक्षके तले विराजे कभी पद्मासन कभी कायोत्सर्ग कभी वीरासन आदि अनेक आसनधर चातुर्मास पूर्ण किया वह प्रेतवन वृक्षोंके अन्धकार कर महागहनहै और सिंह व्याघ्र रीछ स्याल सर्प इत्यादि अनेक दुष्ट जीवोंसे भराहै भयंकर जीवोंको भी भयकारी महा विषमहै गीध सिचाना चील इत्यादि जीवोंकर पूर्ण हो रहाहै अर्धदग्ध मृतकोंका स्थानक महा भयानक विषम भूमि मनुष्योंके सिरके कपाल के समूहकर जहां पृथिवी श्वेत हो रही है और दुष्ट शब्द करते पिशाचों के समूह विचरे हैं और जहां तृणजाल कंटक बहुत हैं सो ये पिता पुत्र दोनों धीरवीर पवित्र मन चार महीना वहां पूर्ण करते भए।

अथानन्तर वर्षा ऋतु गई शरद ऋतु आई सो मानों रात्रि पूर्ण भई प्रभात भया कैसाहै प्रभात

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जगत के प्रकाश करने में प्रवीण है शरद के समय आकास में बादल श्वेत प्रकट भए और सूर्य्य मेघ पटल रहित कांति से प्रकाश मान भया जैसे उत्सर्पणी काल के जो दुःखम काल उस के अन्त में दुखमा सुखमा के आदि ही श्री जिनेन्द्र देव प्रकट होंय और चन्द्रमा रात्री विषे तारावोंके समूह के मध्य शोभता भया जैसे सरोवर के मध्य तरुण राजहंस शोभे और रात्रि में चन्द्रमा की चांदनी कर पृथिवी उज्ज्वल भई सो मानों क्षीर सागर ही पृथिवी में विस्तर रहा है और नदी निर्मल भई कुरिच सारस चकवा आदि पक्षी सुन्दर शब्द करने लगे और सरोवरों में कमल फूले जिन पर भ्रमण गुंजार करे हैं और उडें हैं सो मानों भव्य जीवों ने मिथ्यात्व परिणाम तजे हैं सो उडते फिरे हैं (भावार्थ) मिथ्यात्व का स्वरूप श्याम और भ्रमर का भी स्वरूप श्याम अनेक प्रकार सुगन्ध का है प्रचार जहां ऐसे जे ऊंचे महल तिनके निवासमें रात्रिके समय लोक निज प्रियाओं सहित क्रीड़ा करें हैं शरद् ऋतु में मनुष्यों के समूह महा उत्सव कर प्रवरते हैं सनमान किया है मित्र बान्धवों का जहां और जो स्त्री पीहर गई तिनका सासरे आगमन होय है कातिक शुदी पूर्णमासी के व्यतीत भए पीछे तपोधन जे मुनि वे तीर्थों में विहार करते भए तब ये पिता और पुत्र कीर्ति धर सुकौशल मुनि समाप्त भया है नियम जिनका शास्त्रोक्त ईर्य्या समति सहित पारणा के निमित्त नगर की ओर विहार करते भए और वह सहदेवी सुकौशल की माता मरकर नाहरी भई थी सो पापिनी महा क्रोध से भरी लोहू कर लाल हैं केशों के समूह जिस के विकराल है वदन जिसका तीक्ष्ण हैं दंत जिसके कषाय रूपपीतहैं नेत्र जिसके सिरपर धरा है पूंछ जिसने नखों कर विदारेहैं अनेक जीव जिसने और किएहैं भयंकर शब्द

जिसने मानों मरी ही शरीर धर आई है लहलहाट करे है लाल जीभ का अग्रभाव जिसका मध्यान्हके सूर्य समान आतापकारी सो पापिनी सुकौशल स्वामी को देख कर महावेग से उछल कर आई उसे आवती देख वे दोनों मुनि सुन्दर हैं चरित्र जिनके सर्व आलंब रहित कायोत्सर्ग धर तिष्ठे सो पापिनी सिंहनी सुकौशल स्वामी का शरीर नखों कर विदारती भई गौतम स्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे राजन् ! देख संसार का चरित्र जहां माता पुत्र के शरीर का भक्षण का उद्यम करे है इस उपरान्त और कष्ट कहां जन्मान्तर के स्नेही बांधव कर्मके उदय से बैरी होय परिणमें तब सुमेरु से भी अधिक स्थिर सुकौशल मुनि शुक्ल ध्यान के धरन हारे तिनको केवलज्ञान उपजा अन्तकृत केवली भए तब इन्द्रादिक देवों ने आय इन के देह की कल्पवृक्षादिक पुष्पों से अर्चा करी चतुरनिकाय के सब ही देव आए और नाहरी को कीर्तिधर मुनि धर्मोपदेश वचनों से संबोधते भए हे पापिनी तू सुकौशल की माता सहदेवी थी और पुत्र से तेरा अधिक स्नेह था उस का शरीर तैंने नखों से विदारा तब वह जाति स्मरण होय श्रावग के व्रत धर सन्यास धारण कर शरीर तज स्वर्ग लोक में गई फिर कीर्तिधर मुनि को भी केवल ज्ञान उपजा तब इन के केवल की सुर असुर पूजा कर अपने अपने स्थान को गए यह सुकौशल मुनि का महातम जो कोई पुरुष पढ़े सुनें सो सर्व उपसर्ग से रहित होंय सुख से चिरकाल जीवें ॥

अथानन्तर सुकौशल की राणी विचित्र माला उसके सम्पूर्ण समय पर सुन्दर लक्षणों से मंडित पुत्र होता भया जब पुत्र गर्भ में आया तबही से माता सुवर्ण की कान्ति को धरती भई इस लिये पुत्रका नाम हिरण्यगर्भ पृथिवी पर प्रसिद्ध भया सो हिरण्यगर्भ ऐसा राजा भया मानों अपने गुणों से फिर

ऋषभदेव का समय प्रकट किया सो राजा हरि की पुत्री अमृतवती महा मनोहर उस ने परणी राजा अपने मित्र बांधवों से संयुक्त पूर्णद्रव्य के स्वामी मानों स्वर्ग के पर्वत ही हैं सर्वशास्त्र के पारगामी देवोंसमान उत्कृष्ट भोग भोगते भए, एक समय राजा उदार है चित्त जिन का दर्पण में मुख देखते थे सो भ्रमर समान श्याम केशों के मध्य एक सुफ़ेद केश देखा, तब चित्त में विचारते भए कि यह काल का दूत आया बलात्कार यह जरा शक्ति कांति की नाश करणहारी इस से मेरे आंगोपांग शिथिल होवेंगे यह चन्दन के वृक्ष समान मेरी काया अब जरारूप अग्नि से, जलकर अंगार तुल्य होयगी यह जरा छिद्र हेरे ही है सो समय पाय पिशाचनीकी नयाईं मेरे शरीरमें प्रवेश कर, बाधा करेगी और कालरूप सिंह चिरकाल से मेरे भक्षणका अभिलाषीथा सो अब मेर देहकोबलात्कारसे भषेगा, धन्यहै वह पुरुषजोकर्म भूमिको पाय कर तरुण अवस्था में व्रत रूप जहाज़ विषे चढ़ कर भवसागर को तिरें, ऐसा चिंतवन कर राणी अमृतवती का पुत्र जो नघोष उसे ही राज पर थाप कर विमल मुनि के निकट दिगंबरी दिक्षा धरी, यह नघोष जबसे माता के गर्भ में आया तब ही से कोई पाप का वचन न कहे इसलिये नघोष कहाए पृथिवी पर प्रसिद्ध हैं गुण जिनके तिन गुणों के पुंज तिनके सिंहिका नाम राणी उसे अयोध्या विषे राख उत्तर दिशा के सामंतों को जीतने चढ़े, तब राजा को दूर गया जान दक्षिनदिशा के राजा बड़ी सेना के स्वामी अयोध्या लेने को आए, तब राणी सिंहिका महाप्रतापिनी बड़ी फ़ौज से चढ़ी, सो सर्व वैरियों को रण में जीत कर अयोध्या दृढ़ थाना राख आप अपने सामंतों को ले दक्षिण दिशा जीतने को गई कैसी है राणी शास्त्र विद्या और शस्त्र विद्या का किया है अभ्यास जिसने प्रताप कर दक्षिण दिशा के सामंतों को जीत कर जय शब्द कर पूरित

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीछे अयोध्या आई, और राजा नघोष उत्तरदिशा को जीतकर आए सो स्त्री का पराक्रम सुन कोप को प्राप्त भए, मन में विचारी जे कुलवन्ती स्त्री अखण्डित शील की पालनहारी हैं तिन में एती धीठता न चाहिये, एसा निश्चय कर राणी सिंहिका से उदासचित्त भए, यह पतिव्रता महाशीलवन्ती पवित्र है चेष्टा जिसकी पटराणी के पद से दूर करी सो महादरिद्रता को प्राप्त भई ॥

अथानन्तर राजाके महादाहज्वरका विकार उपजा सो सर्ववैद्य यत्नकरें पर तिनकी औषधि न लागे तब राणी सिंहिका राजा को रोगग्रस्त जान कर व्याकुलचित्त भई और अपनी शुद्धताके अर्थ यह पतिव्रता पुरोहित मंत्री सामन्त सबन को बुलाय कर पुरोहितके हाथ अपने हाथका जलदिया, औरकहीकि यदि मैं मन वचन काय कर पतिव्रता हूं तो इस जलसे सींचा राजा दाहज्वर कर रहित होवे, तब जल सेसींचतेही राजा का ज्वर मिटगया और हिमविषे मग्न जैसा शीतल होय तैसा शीतल होगया मुख से ऐसे मनोहर शब्द कहता भया जैसे वीणा के शब्द होवें और आकाश में यह शब्द होते भए कि यह राणी सिंहिका पतिव्रता महाशीलवन्ती धन्यहै धन्यहै और आकाशसे पुष्पवर्षाभई तब राजाने राणीको महाशीलवन्ती जान फिर पट राणी का पद दिया और बहुत दिन निःकण्टक राज किया फिर अपने बड़ों के चरित्र चित्त विषे धर संसार की माया से निस्पृह होय सिंहका राणीका पुत्र जो सौदास उसे राज्य देय आप धीर वीर मुनिव्रत धरे, जो कार्य परम्पराय इनके बड़े करते आये हैं सो किया सौदास राज करे सो पापी मांस आहारी भया इनके वन्शमें किसी ने यह आहार न किया यह दुराचारी अष्टान्हिकाके दिवसमें भी अभक्ष्य आहार न तजता भया एक दिन रसोईदारसे कहताभया कि मेरे मांस भक्षणका अभिलाष उपजाहै तब तिसने कही हे महाराज !

For Private and Personal Use Only

ये अष्टान्हिका के दिन हैं सब लोक भगवान की पूजा और व्रत नियम में तत्पर हैं पृथिवी पर धर्म का उद्योत होय रहा है इन दिनोंमें ये वस्तु अलभ्य है तब राजा ने कही इस वस्तु बिना मेरा मन रहे नहीं इसलिये जिस उपाय से यह वस्तु मिले सो कर तब रसोईदार यह राजा की दशा देख नगर के बाहिर गया एक मूवा हुवा बालक देखा उसी दिन वह मूवाथा सो उसे वस्त्रमें लपेट वह पापी लेआया स्वादु वस्तुवों से उसे मिलाय पकाय राजा को भोजन दिया सो राजा महादुराचारी अभक्ष्यका भक्षण कर प्रसन्न भया और रसोईदार से एकान्त में पूछता भया कि हे भद्र यह मांस तू कहां से लाया अब तक ऐसा मांस मैंने भक्षण न कियाथा तब रसोईदार अभयदान मांग यथावत् कहता भया तब राजा कहता भया ऐसाही मांस सदा लायाकर तब यह रसोईदार बालकों को लाडू बांटता भया तिन लाडुवों के लालच से बालक निरन्तर आवें सो बालक लाडू लेकर जावें तब जो पीछे रहजाय उसे यह रसोई-दार मार राजाको भक्षण करावे निरन्तर बालक नगर में छीजने लगे तब यह वृत्तान्त लोकों ने जान रसोईदार सहित राजाको देश से निकाल दिया और इसकी राणी कनकप्रभा उसका पुत्र सिंहरथ उसे राज्य दिया तब यह पापी सर्वत्र अनादर हुवा महादुखी पृथिवी पर भ्रमण कियाकरे जे मृतक बालक मसान विषे लोक डार आवें तिनको भषे जैसे सिंह मनुष्यों का भक्षणकरे तैसे यह भक्षणकरे इसलिये इसका नाम सिंहसौदास पृथिवी विषे प्रसिद्धभया फिर यह दक्षिण दिशा को गया वहां मुनिका दर्शन कर धर्म श्रवणकर श्रावकके व्रत धरताभया फिरएक महापुर नगर वहांका राजा मूवा उसके पुत्रनहीं था तब सबने यह विचार किया कि जिसे पाटबन्ध हस्तीजाय कांधे चढ़ायलावे सो राजा होवे तब इसे कांधे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चढ़ाय हस्ती लेगया तब इसको राज्यदिया यह न्याय संयुक्त राज्यकरे और पुत्रके निकट दूत भेजा कि तू मेरी आज्ञा मान तब उसने लिखा कि तू महा निन्द्यहै मैं तुझे नमस्कार न करूं तब यह पुत्रपर चढ़ कर गया इसे आवता सुन लोग भागनेलगे कि यह मनुष्योंको खायगा पुत्र और इसके महायुद्ध भया सो पुत्र को युद्ध में जीत दोनों ठौरका राज्य पुत्रको देकर आप महा वैराग्य को प्राप्त होय तपके अर्थ बनमें गया।

अथानन्तर इसके पुत्र सिंहरथके ब्रह्मरथ पुत्र भया उसके चतुर्मुख उसके हेमरथ उसके सत्यरथ उसके पृथूरथ उसके पयोरथ उसके दृढ़रथ उसके सूर्यरथ उसके मानधाता उसके बीरसेन उसके पृथ्वीमन्यु उसके कमलबन्धु दीप्ति से मानो सूर्यही है समस्त मर्यादा में प्रवीण उसके रविमन्यु उसके बसन्ततिलक उसके कुबेरदत्त उसके कुंथु भक्त सो महाकीर्तिकाधारी उसकेशतरथ उसके द्विरदरथ उसके सिंहदमन उसके हिरण्यकशिपु उसके पुञ्जस्थल उसके ककुस्थल उसके रघु महापराक्रमी यह इक्ष्वाक वंश श्री ऋषभदेवसे प्रवरता सो वंशकी महिमा हे श्रेणिक तुझेकही ऋषभदेवके वंशमें श्रीराम पर्यंत अनेक बड़े बड़े राजा भए वे मुनिब्रत धार मोक्ष गए कै एक अहमिन्द्र भए कै एक स्वर्ग में प्राप्त भए इस वंश में पापी बिरले भए॥

अथानन्तर अयोध्यानगर में राजा रघु के अरण्य पुत्र भया जिसके प्रताप से उद्यान में वस्ती होतीभई उके पृथिवीमती राणी महा गुणवन्ती महा कांति की धरण हारी महा रूपवती महा पतिब्रता उसके दो पुत्र होतेभये महा शुभ लक्षण एक अनन्तरथ दूसरा दशरथ सो राजा सहस्ररश्मि माहिष्मती नगरीका पति उसकी और राजा अरण्य की परम मित्रता होतीभई मानों ये दोनों सौधर्म और ईशानइन्द्र ही हैं जब रावण ने युद्धमें सहस्ररश्मिको जीत और उसने मुनिब्रत धरे सो सहस्ररश्मिके और अरण्यके यह

For Private and Personal Use Only

वचनथा कि जो तुम वैराग्य धारो तब मुझे जतावना और मैं वैराग्य धारूंगा तो तुम्हेजताऊंगा सो उसने जब वैराग्य धारा तब अरण्यको जतावा दिया तब राजा अरण्यने सहस्त्ररश्मिको मुनिहुवा जानकर दशरथपुत्र को राज्य देय आप अनन्तरथ पुत्र सहित अभयसेन मुनि के समीप जिन दीक्षा धारी महातप से कर्मों का नाश कर मोक्षको प्राप्त भए और अनन्तरथ मुनि सर्व परिग्रह रहित पृथिवी पर विहार करतेभए बाईस परीषह के सहन हारे किसी प्रकार उद्वेग को न प्राप्त भए तब इन का अनन्तवीर्य्य नाम पृथिवी पर प्रसिद्ध भया और राजा दशरथ राज्य करे सो महा सुन्दर शरीर नवयौवन विषे अतिशोभायमान होताभया अनेक प्रकार पुष्पों से शोभित मानों पर्वत का उतंग शिखर ही है ॥

अथानन्तर दर्भस्थल नगर का राजा कौशल प्रशंसा योग्य गुणों का धरण हारा उस के राणी अमृतप्रभाकी पुत्री कौशल्या जिसको अपराजिता भी कहे हैं काहे से कियह स्त्री के गुणोंसे शोभायमान कामकी स्त्री रति समान महासुन्दर किसीसे न जीती जाय महारूपवन्ती सो राजा दशरथने परणी फिर एक कमल संकुल नामा बड़ा नगर वहांका राजा सुबन्धुतिलक उसकेराणी मित्रा उसके पुत्री सुमित्रा सर्वगुणोंसे मंडित महारूपवती जिसको नेत्ररूप कमलोंसे देखे मन हर्षितहोय पृथ्वीपर प्रसिद्ध सोभी दशरथने परणी और एक महाराज नाम राजा उसकी पुत्री सुप्रभा रूप लावण्यकी खान जिसे लखे लक्ष्मी लज्जा वान होय सोभी राजा दशरथने परणी और राजा दशरथ सम्यक दर्शनको प्राप्त होते भए और राज्य का परम उदय पाय सो सम्यक दर्शनको रत्नों समान जानते भए और राज्यको तृण समान मानते भए कि जो राज्य न तजे तो यह जीव नरकमें प्राप्त होय राज्य तजे तो स्वर्ग मुक्ति पावे और सम्यक

दर्शनके योगसे निस्संदेह ऊर्धगतिहीहै सो ऐसा जान राजाके सम्यक दर्शनकी दृढ़ता होती भई और जे भगवानके चैत्यालय प्रशंसा योग्य आगे भरत चक्रवर्त्यादिकने कराएथे तिनमें कैयक ठौर कैयक भंग भावको प्राप्त भएथे सो राजा दशरथने तिनकी मरम्मत कराय ऐसे किए मानों नवीनही हैं और इन्द्रोंसे नमस्कार करने योग्य महा रमणीक जे तीर्थंकरोंके कल्याणक स्थानक तिनकी रत्नोंके समूहसे यह राजा पूजा करता भया । गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे भव्यजीव ! दशरथ सारिखे जीवपर भवमें महा धर्मको उपार्जकर अति मनोग्य देवलोककी लक्ष्मी पायकर इसलोकमें नरेन्द्र भएहैं महाराज ऋद्धिके भोक्ता सूर्य समान दशों दिशा विषे है प्रकाश जिनका ॥ इति बाईसवां पर्व संपूर्णम् ।

अथानन्तर एक दिन राजा दशरथ महा तेज प्रताप संयुक्त सभा में विराजते थे कैसे हैं राजा जिनेन्द्र की कथा में आसक्त है मन जिनका और सुरेन्द्र समान है विभव जिनका उस समय अपने शरीर के तेज से आकाश से उद्योत करते नारद आए तब दूर ही से नारद को देखकर राजा उठ कर सनमुख गए बड़े आदर से नारद को ल्याय सिंहासन पर विराजमान किये राजा ने नारद की कुशल पूछी नारद ने कही जिनेंद्रदेव के प्रसादकर कुशलहै फिरनारद ने राजा को कुशल पूछी राजा ने कही देव गुरुधर्म के प्रसाद से कुशल है फिर राजा ने पूछी हे प्रभो आपकौन स्थानक से आए इन दिनों में कहां २ बिहार किया क्यादेखा क्यासुना तुमसे अढाई द्वीप में कोई स्थानक अगोचर नहीं तब नारद कहतेभए कैसे हैं नारद जिनेंद्रचन्द्र के चरित्र देख कर उपजा है परमहर्ष जिनके हे राजन !मैं महा विदेह क्षेत्र विषे गयाथा कैसा है वह क्षेत्र उत्तम जीवों से भरा है जहां ठौर २ श्रीजिनराज के मन्दिर और ठौर २ महामुनि

विराजे हैं जहां धर्मका बड़ा उद्योत है श्री तीर्थंकर देव चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव प्रति वासुदेवादि उपजे हैं वहां श्रीसीमंधर स्वामीका मैंने पुण्डरीकनी नगरी में तपकल्याणक देखा कैसीहै पुण्डरीकनी नगरी नानाप्रकारके रत्नों के जे महल तिनके तेजसे प्रकाशरूप है और सीमंधर स्वामीकेतप कल्याणक विषे नानाप्रकार के देवोंका आगमन भया तिनके भांति २ के विमान ध्वजा और छत्रादि से महाशोभितऔर नानाप्रकारके जेवाहन तिनसे नगरी पूर्ण देखी और जैसा श्रीमुनिसुव्रतनाथका सुमेरुविषे जन्माभिशेष का उत्सव हम सुनें हैं तैसा श्रीसीमंधरस्वामीके जन्माभिशेष का उतसव मैंनें सुना और तप कल्याणक तो मैंनें प्रतचही देखा और नानाप्रकार के रत्नों से जड़ित जिनमंदिर देखे जहां महामनोहर भगवानके वड़ेवड़े बिम्ब बिराजे हैं और बिधि पूर्वक निरंतर पूजा होय है और महा बिदेह से मैं सुमेरु पर्वत आया सूमेरु की प्रदक्षिणाकर सुमेरु के वन वहांभगवान के जे अकृत्रिम चैत्यालय तिन का दर्शन किया हे राजन नन्दनबन के चैत्यालय नाना प्रकार के रत्नों से जड़े अति रमणीक मैंनें देखे जहांस्वर्णके पीत अति देदीप्यमान हैं सुन्दर हैं मोतियों के हार और तोरण जहां जिनमन्दिर वे देखते सूर्यका मन्दिर क्या और चैत्यालयोंकी वैडूर्य माणिमई भीति देखी जिनके गज सिंहादिरूप अनेक चित्राम मढ़े हैं और जहां देव देवी संगीत शास्त्ररूप नृत्यकर रहे हैं और देवारण्यबनमें चैत्यालय तहां मैंने जिन प्रतिमा का दर्शन किया और कुलाचलोंके शिखर विषे जिनेंद्रके चैत्यालय मैंने बंदेदेखे इस भांति नारदने कही तब राजा दशरथ देवेभ्योनमः ऐसा शब्द कहकर हाथ जोड़ सिर निवाय नमस्कार करता भया ।

अथानंतर नारदने राजाको सैनकरी तब राजाने दरबानको कहकर सबको हटाए और एकांत विराजे तब

नारदने कही हे सुकौशल देशके अधिपति चित्तलगाए सुनोतेरे कल्याणकी बात कहूंहूं मैं भगवानका भक्त जहां जिनमंदिर होंय वहां बंदना करूंहूं सो मैं लंकामें गयाथा वहां महा मनोहर श्रीशांतिनाथ का चैत्यालय बन्दा सो एक वार्ता विभीषणादिके मुखसे सुनी कि रावणने बुधिसार निमित्त ज्ञानीको पूछा कि मेरीमृत्यु कौननिमित्तसे है तब निमित्तज्ञानी ने कही दशरथका पुत्र और जनक की पुत्री इनके निमित्त से तेरीमृत्यु है सुनकर रावण सचिन्त भया तब विभीषणने कही आप चिन्ता न करें दोनों को पुत्रपुत्री न होय उस पहिले दोनोंकोमें मारूंगा सो तुम्हारे ठीक करने को विभीषननेहलकारे पठाएथे सो वे तुम्हारास्थान निरूपादि सब ठीक करगए हैं और मेरा विश्वास जान मुझे विभीषणने पूछी कि क्या तुम दशरथ और जनक का स्वरूप नीके जानोहो तब मैंने कही मुझे उनको देखे बहुत दिन हुएहैं अब उन को देख तुमको कहूंगा सो उनका अभिप्राय खोटा देखकर तुमपै आया सो जबतक वह विभीषण तुम्हारे मारनेका उपाय करे उस से पहिले तुम आपा छिपाय कहीं बैठरहो जे सम्यक् दृष्टि जिनधर्मी देव गुरु धर्म के भक्त हैं तिन सब से मेरी प्रीति है तुम सारखों से विशेष है सो तुम योग्य होय सो करो तुम्हारा कल्याण होय। अबमैं राजा जनकसे यह वृत्तान्त कहने को जाऊं हूं तब राजा ने उठ नारद का सत्कार किया नारद आकाशके मार्ग होय मिथिलापुरी की ओर गए जनक को समस्त वृत्तान्त कहा नारदको भव्यजीव जिनधर्मी प्राण से भी प्यारेहैं नारद तो वृत्तान्त कह देशांतर को गए और दोनोंही राजावों कोमरणकी शंका उपजी राजा दशरथ ने अपने मंत्री समुद्रहृदय को बुलाय एकांत में नारद का कहा सकलवृतांत कहा तब राजा के मुख से मंत्री ये महाभय के समाचार सुन कर स्वामी की भक्ति में परायणऔर मंत्र

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शक्ति में महा श्रेष्ठ राजा को कहता भया हे नाथ! जीतव्य के अर्थ सकल करिये है जो त्रिलोकीकाराज्य आवे और जीव जाय तो कौन अर्थ, इसलिये जब लग में तुम्हारे वैरियों का उपाय करूं तब लग तुम अपना रूप छिपाय कर पृथिवी पर विहार करो ऐसा मंत्रीने कहा तब राजा देश भंडार नगर इसको सौंपकर नगर से बाहिर निकसे राजा के गए पीछे मंत्री ने राजा दशरथ के रूप का पुतला बनाया एक चेतना नहीं और सब राजा ही के चिन्ह बनाए लाखादि रस के योग कर उसविषे रुधिर निरमापा और शरीर की कोमलता जैसी प्राणधारी की होय तैसी ही बनाई सो महिल के सातवें खण में सिंहासन विषे विराजमान किया सो समस्त लोकों का नीचे से मुजरा होय ऊपर कोई जाने न पावे, राजा के शरीर में रोग है पृथिवी पर ऐसा प्रसिद्ध किया। एक मंत्री और दूजा पूतलाबनाने वाला यह भेद जाने, इनको भी देख कर ऐसा भ्रम उपजे जो राजा ही है और यही वृतान्त राजा जनक के भया जे कोई पण्डित हैं तिनके बुद्धि एक सी ही है मंत्रियों की बुद्धि सब के ऊपर होय विचरे है। यह दोनों राजा लोकस्थिति के वेत्ता पृथिवी में भागे फिरें आपदा काल विषे जे रीति बताई हैं उस भांति करें जैसे वर्षा काल में चांद सूर्य्यमेघ के जोर से छिप रहें तैसे जनक और दशरथ दोनों छिप रहे॥ यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे मगधदेश के अधिपति वे दोनों बडे राजा महा सुन्दर हैं राजमन्दिर जिनके और महामनोहर देवांगना सारिखी स्त्री जिनके महा भोगों के भोक्ता सो पायन पियादे दलिद्री लोकन की न्यांई कोई नहीं संग जिनके अकेले भ्रमते भए, धिक्कार है संसार के स्वरूप को ऐसा निश्चय कर जो प्राणी स्थावर जंगम सर्व जीवों को अभयदान दें सो आप भी भय से कंपायमान न होय, इस अभयदान समान कोई दान

For Private and Personal Use Only

नहीं जिस ने अभयदान दिया उसने सब ही दिया अभय दान का दाता सत्पुरुषों में मुख्य है ॥

अथानन्तर विभीषण ने दशरथ और जनक के मारनेको सुभट विदाकिये और हलकारे जिनके संग में वे सुभट शस्त्रहैं हाथों में जिनके महा क्रूर छिपे छिपे रातदिन नगरीमें फिरें राजाके महिल अति ऊंचे सो प्रवेश न करसकें इनको दिन बहुत लगे तब विभीषण स्वयमेव आय महिलमें गीत नाद सुन महिल में प्रवेशकिया राजा दशरथ अन्तःपुरके मध्य शयन करता देखा विभीषण तो दूरठाढ़े रहे औरएकविद्युद्विलसित नामा विद्याधर है उसको पठाया कि इसका मस्तक ले आओ सो आय मस्तक काट विभीषणको दिया सो राजलोक रोय उठे विभीषण इनका और जनक का सिर समुद्र विषे डार आप रावण के निकट गया रावण को हर्षित किया इन दोनों राजनकी राणी विलापकरें फिर यह जानकर कि कृत्रिम पूतला था तब यह संतोष कर बैठरही और विभीषण लंकाजाय अशुभकर्म के शान्तिके निमित्त दान पूजादि शुभ क्रिया करता भया और विभीषण के चित्त में ऐसा पश्चाताप उपजा जो देखो मेरे कौन कर्म उदय आया जो भाई के मोहसे वृथा भय मान वापरे रंक भूमिगोचरी मृत्युको प्राप्तकिए जो कदाचित् आशीविष (आशीविष सर्प कहिये जिसेदेखे विष चढ़े) जातिका सर्प होय तोभी क्या गरुड़को प्रहार करसके कहां वह अल्प ऐश्वर्यके स्वामी भूमिगोचरी और कहां इन्द्र समान शूर वीरताका धरणहारा रावण और कहां मूसा कहां केसरी सिंह जिसके अवलोकन से माते गजराजों का मद उतर जाय कैसा है केसरी सिंह पवन समान है वेग जिसका अथवा जिस प्राणी को जिस स्थानक में जिस कारण से जेता दुःख और सुख होना है उसको पाकर उस स्थानक में कर्मों के वशसे अवश्य होय हैं और यह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निमित्तज्ञानी जो कोई यथाथ जाने तो अपना कल्याणही क्यों न करें जिस से मोक्ष के अविनाशी सुख पाइये निमित्त ज्ञानी पराई मृत्यु का निश्चय जान तो अपना मत्यु से निश्चयसे मृत्यु के पहिले आत्मकल्याण क्यों न करें निमित्तज्ञानी के कहिने से मैं मूर्ख भया खोटे मनुष्यों की शिक्षासे जे मन्द बुद्धि हैं वे अकार्य विषे प्रवरते हैं यह लंकापुरी पाताल है जल जिस का ऐसा जो समुद्र उसके मध्य तिष्ठे जो देवनहू को अगम्य वहां विचारे भूमिगोचरियों की कहांसे गम्य होय मैं यह अत्यन्त अयोग्य किया फिर ऐसा काम कबहूं न करूं ऐसी धारणाधार उत्तम दीप्ति से युक्त जैसे सूर्य प्रकाश रूप विचरे. तैसे मनुष्यलोक में रमते भए ॥ इति तेईसमा पर्व पूर्ण भया ॥

अथानन्तर गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक अरण्यके पुत्र दशरथने पृथिवीपर भ्रमण करते केकईको परणा सो कथा महा आश्चर्य का कारण तू सुन उत्तर दिशा विषे एक कौतुकमंगल नामा नगर उसके पर्वत समान ऊंचा कोट वहां राजा शुभमति राजकरे सो वह शुभमति नाममात्रनहीं यथार्थशुभमतिहीहै उसकी राणी पृथुश्री गुण रूप आभरणोंसे मंडित उसके केकई पुत्रीद्रोणमेघपुत्रभए जिनके गुणदशोंदिशामें व्यापरहे केकई अतिसुन्दर सर्वअंग मनोहर अद्भुत लक्षणों की धरणहारी सर्वकलावों की पारगामिनी अति शोभती भई सम्यक्दर्शन से संयुक्त श्राविका के व्रत पालन हारी जिन शासन की वेत्ता महा श्रद्धावन्ती तथा सांख्य पातजंल वैशेषिक वेदांत न्याय मीमांसा चार्वादिक पर शास्त्ररहस्यकी ज्ञाता तथा लौकिक शास्त्र शृंगारादिक तिनका रहस्य जाने नृत्यकलामें अतिनिपुण सर्व भेदोंसे मंडित जो संगीत उसे भली भान्ति जाने उर कंठ सिर इन तीन स्थानकसे स्वर निकसे हैं स्वरोंके सात भेदहैं षडज १ ऋषभ २

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गांधार ३ मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ निषाद ७ सो केकईको सर्वगम्य और तीन प्रकार लय शीघ्र १ मध्य २ विलंबित ३ और चार प्रकारका ताल स्थायी १ संचारी २ आरोहक ३ अवरोहक ४ और तीन प्रकारकी भाषा संस्कृत १ प्राकृत २ शौरसेनी ३ स्थायितालके भूषण चार प्रसंगादि १ प्रसन्नान्त २ मध्य प्रसार ३ प्रसन्नाद्यवसान ४ और संचारी के छह भूषण निवृत १ प्रस्थिल २ बिंदु ३ प्रखोलित ४ तमोमंद ५ प्रसन्न ६ आरोहण का एक प्रसन्नादि भूषण और अवरोहण के दो भूषण प्रसन्नान्त १ कुहर २ येतेरह अलंकार और चारप्रकार वादित्र वे तातरूप सो तांत १ और नामके मढेवे आनद्ध २ और बांसुरी आदि फूकके बाजे वे शुषिर ३ और कांसीके बाजे वे घन ४ ये चारप्रकारके वादित्र जैसे केकई बजावे तैसे और न बजावे गीत नृत्य वादित्र येतीन भेदहैंसो नृत्यमेंतीनों आए औररसकेभेद नव शृंगार १ हास्य २ करुणा ३ वीर ४ अद्भुत ५ भयानक ६ रौद्र ७ बीभत्स ८ शांत ९ तिनके भेद जैसे केकई जाने तैसे और कोई न जाने अक्षर मात्रा और गणितशास्त्रमें निपुण गद्यपद्य सर्व में प्रवीण व्याकरण छन्द अलंकार नाम माल लक्षण शास्त्रतर्क इतिहास और चित्रकलामें अति प्रवीण तथा रत्नपरीक्षा अश्वपरीक्षा नर परीक्षा शस्त्र परीक्षा गज परीक्षा वृक्षपरीक्षा वस्त्रपरीक्षा सुगन्धपरीक्षा सुगन्धादिक द्रव्यका निपजावना इत्यादि सर्व बातोंमें प्रवीण ज्योतिष विद्यामें निपुण बालवृद्ध तरुण मनुष्य तथा घोड़ेहाथी इत्यादि सर्वके इलाज जाने मंत्र औषधादि सर्वमें तत्पर वैद्य विद्यानिधान सर्वकलामें सावधान महाशीलवन्ती महामनोहर युद्ध कलामें अतिप्रवीण शृंगारादि कलामें अतिनिपुण विनयही है आभूषण जिसके कला और गुण और रूप में ऐसी कन्या और नहीं गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक बहुत कहनेसे क्या केकईके गुणोंका वर्णन कहां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तक करिए तब उसके पिताने बिचारा कि ऐसी कन्याके याग्ये बर कौन,स्वयंबरमंडप करिए वहां यह आप ही बरे उसने हरिवाहन आदि अनेक राजा स्वयंबरमंडपमें बुलाए सो विभवकर संयुक्त आए वहां भ्रमते संते जनकसहित दशरथभी आए सो यद्यपि इनकेनिकट रायज्का विभव नहीं तथापि रूप और गुणों से सर्व राजाओंसे अधिकहे सर्वराजा सिंहासनपर बैठे और केकईको द्वारपाली सबनके नाम ग्राम गण कहे हैं सो वह विवेकिनी साधुरूपणी मनुष्योंके लक्षण जाननेवारी प्रथमतो दशरथकी ओर नेत्ररूप नीलकमलकी मालाडारी फिर वह सुंदर बुद्धिकी धरनहारी जैसे राजहंसनी बुगलोंके मध्य बैठेजो राजहंस उसकी ओर जाय तैसे अनेक राजाओंके मध्यबैठाजो दशरथ उसकीओर गई सो भावमालातो पहिलेही डारी थी और द्रव्यरूप जोरत्नमाला सोभी लोकाचारके अर्थ दशरथके गलेमें डारी तबकै एक नृपजे न्यायवंत बैठेथे वे प्रसन्नभए और कहतेभए कि जैसी कन्याथी वैसाही योग्यबर पाया और कैएक विलषे होय अपने देश उठगए औरकैएक जे अति धीठथे वे क्रोधायमान होय युद्धको उद्यमी भए और कहते भए जे बड़े २ बंशके उपजे और महा ऋद्धिके मंडित ऐसे नृप उनको तजकर यह कन्या नहीं जानिये कुल शील जिसका ऐसा यह विदेशी उसे कैसे बरे खोटा है अभिप्राय जिसका ऐसी कन्याहै इसलिये इस विदेशी को यहांसे काढ़कर कन्याके केश पकड़ बलात्कार हरलो ऐसा कहकर वे दुष्ट कैएक युद्धको उद्यमीभए तब राजा शुभमति अतिव्याकुलहोय दशरथको कहताभया हे भव्य मैं इन दुष्टोंको निवारूंहू तुम इस कन्याको रथमें चढ़ाय अन्यत्र जावो जैसा समय देखिये तैसा करिए सर्व राजनीतिमें यहबात मुख्य है इसभांति जब सुसुरने कही तब राजादशरथ अत्यन्त धीरबुधि जिनकी हंसकर कहते भए हे महाराज

For Private and Personal Use Only

आप निश्चिन्तरहो देखो इनसबनको दशोंदिशाको भगाऊं ऐसा कहकर आप रथमें चढ़े और केकईको चढ़ाय लीनी कैसाहै रथ जिसके महा मनोहर अश्वजुड़े हैं कैसेहैं दशरथ मानो रथपर चढ़े शरद ऋतुके सूर्यही हैं और केकई घोड़ोंकी वाघ समारती भई केकई कैसीहै केकई महापुरुषार्थकेस्वरूप को धरे युद्धकी मूर्तिही है पतिसे विनती करती भई हे नाथ! आपकी आज्ञाहोय और जिसकी मृत्यु उदय आईहोय उसहीकी तरफ़ रथ चलाऊं तब राजा कहते भए कि हे प्रिये। गरीबोंके मारनेकर क्या जो इस सर्व सेनाका अधिपति हेमप्रभहै जिसके सिरपर चन्द्रमा सारिखा सुफेदछत्र फिरे है उसीतरफ़ रथ चला हे रणपण्डिते! आज मैं इस अधिपतिहीको मारूंगा जब दशरथने ऐसाकहा तबवह पतिकी आज्ञा प्रमाण उसी की तरफ़रथ चलावती भई कैसा है रथ ऊंचाहै सुफेदछत्र जिसके और रूपहै महाध्वजा जिसकी रथ में ये दोनों दम्पती देवरूप विराजे हैं इनका रथ अग्निसमानहै जे इस रथकी ओर आए वे हजारों पतंग की न्याईं भस्म भए दशरथ के चलाये जे बाण तिनसे अनेक राजा बींधेगए सो क्षणमात्र में भागे तबहेमप्रभजो सबोंका अधिपति था उसके प्रेरे और लज्जावान होय दशरथ से लड़नेको हाथी घोड़ा रथ पयादों से मण्डित आए कियाहै शब्द जिन्होंने तोमरजाति के हथियार बाण चक्र कनकइत्यादि अनेक जाति के शस्त्र अकेले दशरथ पर डारते भए सो बडा आश्चर्य है दशरथ राजा एकरथ का स्वामी था सो युद्धसमय मानों असंख्यातरथ हो गए अपने बाणों से समस्त वैरियोंके बाण काटडाले और आप जे बाणचलाए वे किसी की दृष्टि न आए और शत्रुवों के लगे सो राजा दशरथने हेमप्रभको क्षणमात्र में जीत लियाउस की ध्वजा छेदी छत्र उडाया और रथके अश्व घायल किए रथतोडडाला रथसे नीचे डारदिया तब वह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा हेमप्रभ और रथ पर चढ़ कर भय कर कंपायमान होय अपना यश कमला कर शीघ्रही भागा। दशरथने आपको बचाया स्त्री बचाई अपनेअश्व बचाए वैरियोंके शस्त्र छेदे औरवैरियोंको भगाया एक दशरथ अनन्तरथ जैसे काम करता भया एक दशरथ सिंहसमान उसको देख सर्वयोधा सर्वदिशा को हिरणसमान हो भागे अहो धन्य शक्ति इस कन्याकी ऐसा शब्द सुसुरकी सेना में और शत्रुवों की सेना में सर्वत्र भया और बंदीजन बिरदबखानते भए राजा दशरथने महाप्रतापकोधरे कौतुकमंगल नगरमें केकईसे पाणिग्रहण किया महामङ्गलाचार भया राजा केकईको परणकर अयोध्याआए और जनक भी मिथिलापुर गए फिर इनका जन्मोत्सव और राज्याभिषेक विभूतिसे भया और समस्त भय रहित इन्द्रसमान रमतेभए

अथानन्तर सर्व राणियों के मध्य राजा दशरथ केकई से कहते भए हे चन्द्रवदनी तेरे मनमें जिस वस्तुकी अभिलाषा होय सो मांग जो तू मांगे सोई देऊं हे प्राणप्यारी तेरे से मैं अति प्रसन्न भया हूं जो तू अतिविज्ञान से उस युद्धमें रथको न प्रेरती तो एकसाथ एते बैरी आएथे तिनको मैं कैसे जीतता जब रात्री को अन्धकार जगत् में व्यापरहाहै जो अरुण सारिखा सारथी न होय तो उसे सूर्य कैसे जीते इसी भान्ति केकईके गुण वर्णन राजा ने किए तब वह पतिव्रता लज्जा के भार कर अधोमुख होगई राजा ने फिर कही तब केकई ने वीनती करी हे नाथ मेरा वर आपके धरोहर रहे जिस समय मेरी इच्छा होयगी उस समय लूंगी तब राजा अति प्रसन्न होय कहतेभये हे कमलवदनी मृगनयनी श्वेतता श्यामता आरक्तता ये तीन वर्ण को धरे अद्भुत हैं नेत्र जिसके अद्भुत बुद्धि तेरी है महा नरपतिकी पुत्री अति नयकी वेत्ता सर्वकालकी पारगामिनी सर्व भोगोपभोग की निधि तेरा वर मैं धरोहररारवा तू जब

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो मांगेगी सोहीमें दूंगा और सर्वही राजलोक केकई को देख हर्षको प्राप्त भए और चित्तमें चितवते भए यह अद्भुत बुद्धिनिधान है सो कोई अपूर्व वस्तु मांगेगी अल्पवस्तु क्या मांगे ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी श्रेणिक से कहे हैं हे श्रेणिक लोक का चरित्र में तुझे संक्षेपताकर कहा जो पापी दुराचारी हैं वे नरक निगोद के परम दुःख पावे हैं और जे धर्मात्मा साधु जनहैं वे स्वर्गमोक्ष में महा सुख पावे हैं भगवानकी आज्ञा के अनुसार बडे सत्पुरुषोंके चरित्र तुझे कहे अब श्रीरामचन्द्रजी की उत्पत्तिसुन कैसे हैं श्रीरामचन्द्रजी महा उदार प्रजाके दुखहरणहारे महा न्यायवन्त महाधर्मवन्त महा विवेकी महा शूरवीर महाज्ञानी इक्ष्वाकु वंशकाउद्योत करणहारे बढ़े सत्पुरुषहैं। इति चौवीसवां पर्व संपूर्णम्

अथानन्तर जिसे पराजिता कहे हैं ऐसी जो कौशल्या ,सो रत्नजड़ित महिल विषे महासुन्दर सेज पर सूती थी सो रात्री के पिछले पहिर अतिशय से अद्भुत स्वप्न देखती भई उज्ज्वल हस्ती इन्द्र के ऐरावत हस्ती समान १ और महा केसरी सिंह २ और सूर्य ३ तथा सर्वकला पूर्ण चन्द्रमा ४ ये पुराण पुरुषों के गर्भ में आवने के अद्भुत स्वप्न देख आश्चर्य को प्राप्त भई फिर प्रभातके वादित्रऔर मंगल शब्द सुनकर सेजसे उठी प्रभात क्रियासे हर्षको प्राप्तभया है मन जिसका महा विनयवन्ती सखी जन मण्डित भरतार के समीप जाय सिंहासन पर बैठी कैसी हैं राणी सिंहासन को शोभित करणहारी हाथ जोड़ नम्रीभूत होय मनोहर स्वप्ने जे देखे तिनका वृत्तान्त स्वामी से कहती भई तब समस्त विज्ञान के पारगामी राजा स्वप्नों का फल कहतेभए हे कांते ! परम आश्चर्यका कारण तेरे मोक्षगामी पुत्र अन्तर बाह्य शत्रुओं का जीतनेहारा महा पराक्रमी होयगा रागद्वेष मोहादिक अन्तरंग के शत्रु कहिये और

For Private and Personal Use Only

प्रजाके बाधक दुष्ट भूपति वहिरंगशत्रु कहिये इसभान्ति राजाने कही तब राणी अति हर्षित होय अपने स्थानक गई मन्द मुलकन रूप जो केश उनसे संयुक्त है मुख कमल जिसका और राणी केकई पति सहित श्री जिनेन्द्र के जे चैत्यालय तिनमें भाव संयुक्त महा पूजा करावतीभई सो भगवानकी पूजाके प्रभाव से राजाका सर्व उद्वेग मिटा चित्तमें महा शान्ति होतीभई।

अथानन्तर राणी कौशल्या के श्रीरामका जन्म भया राजा दशरथ ने महा उत्सव किया छत्र चमर सिंहासन टार बहुत द्रव्य याचकों को दिये उगते सूर्य समान है वर्ण राम का कमल समान हैं नेत्र और लक्ष्मी से आलिंगित है वक्षस्थल जिसका इसलिये माता पिता सर्व कुटम्बने इनका नाम पद्मधरा फिर राणी सुमित्रा अति सुन्दर है रूप जिसका सो महा शुभ स्वप्न अवलोकन कर आश्चर्यको प्राप्त होती भई वे स्वप्न कैसे सो सुनो एक बड़ा केहरी सिंहदेखा लक्ष्मी और कीर्ति बहुत आदरसे सुन्दरजल के भरे कलश कमलसे ढके उनसे स्नान करावे हैं और आप सुमित्रा बड़े पहाड़ के मस्तक पर बैठी है और समुद्र परयन्त पृथिवी को देखे है और देदीप्यमानहैं किरणोंके समूह जिसके ऐसा जो सूर्य सो देखा और नाना प्रकारके रत्नों से मण्डित चक्र देखा ये स्वप्न देख प्रभातके मंगलीक शब्दभए तबसेजसे उठकर प्रातक्रियाकर बहुत बिनय संयुक्त पतिके समीपजाय मिष्टवानीसे स्वप्नोंका वृत्तान्तकहती भई तब राजाने कही हे वरानने कहिये सुन्दर है वदन जिसका तेरे पृथिवीपर प्रसिद्धपुत्रहोयगा शत्रुवोंके समूह का नाश करनहारा महातेजस्वी आश्चर्यकारी है चेष्टा जिसकी ऐसा पतिने कहा तब वह पतिव्रता हर्षसे भराहै चित्त जिसका अपने अस्थानकको गई सर्वलोकोंको अपने सेवक जानतीभई फिरइसके परमज्योति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का धारी पुत्र होताभया मानों रत्नोंकी खानमें रत्नही उपजा सो जैसा श्रीराम के जन्मका उत्सव किया था तैसा ही उत्सव भया जिस दिन सुमित्रा के पुत्र का जन्म भया उसी ही दिन रावण के नगर में हज़ारों उत्पात होते भए, और हितुवों के नगर में शुभ शकुन भए इन्दीवर कमल समान श्यामसुन्दर और कांति रूप जल को प्रवाह भले लक्षणों का धरणहारा इस लिये माता पिता ने लक्ष्मण नाम धरा। राम लक्ष्मण दोनों ही बालक महामनोहररूप मूंगा समानहैं लाल होंठ जिनके और लाल कमल समानहैं कर और चरण जिनके माखन से भी अतिकोमल है शरीर का स्पर्श जिनका, और महासुगंध शरीर ये दोनों भाई बाल लीला करते कौन के चित्त को न हरें चन्दन से लिप्त है शरीर जिनका केसर का तिलक किये अति सोहें मानों विजियार्धगिरि और अंजनगिरि ही स्वर्ण के रस से लिप्त हैं, अनेक जन्म का बढ़ा जो स्नेह उससे परम स्नेह रूप चन्द्र सूर्य समानही हैं महलमांही जावें तब तो सर्व स्त्रीजनको अतिप्रिय लगें और बाहिर आवें तब सर्व जनों को प्यारे लगें जब ये वचन बोलें तब मानों जगत् को अमृत कर सीचे हैं, और नेत्रों कर अवलोकन करें तब सब को हर्ष से पूर्ण करें सबन के दरिद्र हरणहारे सबकेहितु सब के अन्तःकरण पोषण हार मानों ये दोनों हर्ष की और शूर वीरताकी मूर्तिही हैं, अयोध्यापुरी में सुख से रमते भए कैसे हैं दोनों कुमार अनेक सुभटकरे हैं सेवा जिनकी जैसे पहिले बलभद्रविजय और वासुदेव त्रिपृष्ठ होते भए तिन समान है चेष्टा जिनकी फिर केकई के दिब्यरूपका धरणहारा महाभाग्य पृथिवी पर प्रसिद्ध भरत नामा पुत्र भया फिर सुप्रभा के सर्व लोक में सुन्दर शत्रुवों का जीतन हारा शत्रुघन ऐसा नाम पुत्र भया, और रामचन्द्र का नाम पद्म तथा बलदेव और लक्ष्मण का नाम हरि और वासुदेव और अर्धचक्री भी कहे हैं,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दशरथ की जो चार राणी सो मानों चार दिशा ही हैं तिन के चारही पुत्र समुद्र समान गंभीरपर्वत समान अचल जगत् के प्यारे, इन चारों ही कुमारों को पिता विद्या पढ़ने के अर्थ योग्य पाठक को सौंपते भए॥

अथानन्तर एक कम्पिल्य नामा नगर अतिसुन्दर वहां एक शिखी नामा ब्राह्मण उसकी इषुनाम स्त्री उसके अरि नामा पुत्र सो महा अविवेकी अविनई माता पिता ने लड़ाया सो महा कुचेष्टा का धरणहारा हजारों उलहनों का पात्र होताभया, यद्यपि द्रव्यका उपार्जन धर्म का संग्रह, विद्या का ग्रहण, उस नगर में ये सब ही बातें सुलभ हैं परन्तु इसको विद्यासिद्ध न भई, तब मातापिता ने विचारी विदेशमें इसे सिद्धि होय तो होय, यह विचार खेद खिन्न होय घर से निकास दिया, सो महादुखी होय केवल वस्त्र याके पास सो यह राजगृह नगरमें गया वहां एक वैवस्वत नामा धनुर्वेद का पाठी महापंडित जिस के हजारों शिष्य विद्या का अभ्यास करें उसके निकट ये अरि यथार्थ धनुष् विद्या का अभ्यास करता भया सो हज़ारों शिष्यों में यह महाप्रवीन होता भया उस नगर का राजा कुशाग्र सो उसके पुत्रभी वैवस्वत के निकट बाणविद्या पढ़ें सो राजा ने सुनी कि एक विदेशी ब्राह्मण का पुत्र आया है जो राजपुत्रोंसेभी अधिक बाणविद्या का अभ्यासी भया तव राजाने मनमें रोष कियो जब यह बात वैवस्वतने सुनो तब अरि को समझाया कि तू राजाके निकट मूर्खहोजा विद्यामत प्रकाशे सो राजानेधनुष् विद्याके गुरुको बुलाया कि मैं तेरे सर्व शिष्यों की विद्या देखूंगा तब सव शिष्यों को लेकर यह गया सबही शिष्योंने यथायोग्य अपनी अपनी बाणविद्या दिखाई निशाने बींधे ब्राह्मण का जोपुत्र उसने ऐसे बाण चलाए कि विद्या रहित जानागया तब राजाने जानी इसकी प्रशंसा किसीने झूठीकही तब वैवस्वतको सब शिष्योंसहित

For Private and Personal Use Only

रुवसतकिया तब अपने अपने घरआए वैवस्वतने अपनी पुत्री अरिको परणाय विदाकियासो रात्रिहीपयाण कर अयोध्या आया राजा दशरथसे मिला अपनी बाणविद्या दिखाई तब राजा प्रसन्न होय अपने चारों पुत्र बाणविद्या सीखनेको इसके निकट राखे वे बाणविद्या विषे अति प्रवीण भए जैसे निर्मल सरोवर में चन्द्रमा की कांति विस्तार को प्राप्त होय तैसे इन में बाणविद्या विस्तार को प्राप्त भई और और भी अनेक विद्या गुरुसंयोग से तिनको सिद्ध भईं जैसे किसी ठौर रत्न मेले होवें और ढकने से ढकेहोवेंसो ढकना उघाड़े प्रकटहोंय तैसे सर्वविद्या प्रकटभई तब राजा अपने पुत्रों की सर्व शास्त्रोंमें अति प्रवीणता देख और पुत्रोंका विनय उदार चेष्टा अवलोकन कर अतिप्रसन्न भया इनके सर्वविद्यावोंके गुरुवोंकीबहुत सनमानता करी राजा दशरथ गुणोंके समूहसे युक्त महाज्ञानी ने जो उनकी वांछाथी उससे भी अधिक संपदा दीनी दानविषे विख्यात है कीर्ति जिनकी केतेक जीव शास्त्रज्ञान को पायकर परम उत्कृष्टताको प्राप्त होय हैं और केयक जैसे के तैसेही रहे हैं और केयक विषम कर्मके योगसे मदसे आंधेहोंयहैं जैसे सूर्यकी किरण स्फटिकगिरि के तट विषे अति प्रकाश को धरे है और स्थानक विषे यथास्थित प्रकाश को धरे है और उल्लुवोंके समूह में अतितिमिर रूपहोय परणवे ॥ इति पच्चीसवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर गोतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे श्रेणिक! अबभामंडल और सीताका कथनसुनोराजा जनक की स्त्री विदेहा उसे गर्भ रहा सो एक देव के यह अभिलाषा हुई कि जो इसके बालक होय सो मैं लेजाऊं। तब श्रेणिकने पूछी हे नाथ उसदेवके ऐसी अभिलाषा काहे से उपजी सो मैं सुना चाहूं हूं तब गोतमस्वामी कहते भए हे राजन्! एक चक्रपुर नामा नगर है वहां चक्रध्वज नामा राजा उसकेराणी

मनस्विनी उनके पुत्री चित्तोत्सवा सो कुंवारी चटशालामेंपढ़े और राजाका पुरोहित धूम्रकेश उसके स्वाहा नामा स्त्री उसका पुत्र पिंगल सोभी चटशालामें पढ़े सो चित्तोत्सवाका और पिंगलका चित्त मिलगया सो इनको विद्या की सिद्धि न भई जिनका मन काम बाणोंसे वेधा जाय तिनको विद्या और धर्मकी प्राप्ति न होयहै प्रथम स्त्री पुरुष का संसर्ग होय फिर प्रीति उपजे प्रीति से परस्पर अनुराग बढ़े फिर विश्वासउपजे उससे बिकार उपजे जैसेहिंसादिकपंच पापोंसे अशुभ कर्म बन्धे तैसे स्त्रीसंग से काम उपजेहै ॥

अथानन्तर वह पापी पिंगल चित्तोत्सवा को हर लेगया जैसे कीर्ति को अपयश हर लेजाय जब वह दूर देशों में हर लेगया तब सब कुटम्ब के लोकों ने जानी अपने प्रमाद के दोष से उसने वह हरी है जैसे अज्ञान सुगतिको हरे तैसे वह पिंगल कन्याको चुरा लेगया परन्तु धनरहित शोभेनहींजैसे लोभी धर्मवर्जित तृष्णासे न सोहे सो यह विदग्ध नगरमें गया वहां अन्य राजावों की गम्यतानहीं सो निर्धन नगरके बाहिर कुटि बनाय कर रहा उस कुटि को किवाड़नहीं और यह ज्ञान विज्ञान रहित तृण काष्ठादिकका विक्रय कर उदर भरे दलिद्र के सागरमें मग्न सो स्त्रीका और आपका उदर महाकठिनता से भरे तिस नगरमेंराजा प्रकाशसिंह और राणी प्रवरावली का पुत्र जो राजा कुण्डलमंडित सो इस स्त्री को देख शोषण सन्तापन उच्चाटन वशीकरण मोहन ये काम के पंच बाण इन से वेध्या गया उस ने रात्रि को दूती पठाई सो चित्तोत्सवा को राजमन्दिर में लेगई जैसे राजा सुमुख के मन्दिर में दूती बन माला को लेगई थी सो कुण्डलमण्डित सुखसे रमें ॥

अथानन्तर वह पिंगल काष्ठ का भार लेकर घर आया सो सुन्दरी को न देखकर अतिकष्ट के

समुद्र में डूबा विरहसे महा दुखित भया किसी जगह सुख को न पावे चक्र विषे आरूढ़ समान इस का चित्त व्याकुल भया हरी गई है भार्या जिस की ऐसा जो यह दीन ब्राह्मण सो राजा पै गया और कहता भया हे राजा ! मेरी स्त्री तेरे राज में चोरी गई जे दरिद्री आर्तिवन्त भयभीत स्त्री वा पुरुष उन को राजा ही शरण हैं, तब राजा धूर्त और उस के मन्त्री भी धूर्त्त सो राजा ने मंत्री को बुलाय झूठमठ कहा इसकी स्त्री चोरीगई है उसे पैदा करो ढील मत करो तब एक सेवक ने नेत्रोंकी सैन मार कर झूठ कहा। हे देव ! मैं इस ब्राह्मणकी स्त्री पोदनापुर के मार्ग में मुशाफिरोंके साथ जाती देखी सो आर्यिकाओं के मध्य तप करणे को उद्यमी है इसलिये हे ब्राह्मण ! तू उसे लाया चाहे तो शीघ्र ही जा, ढील काहे को करे उसका अवार दीक्षाधरने का समय कहां तरुण है शरीर जिसका और महाश्रेष्ठ स्त्री के गुणों से पूर्ण है ऐसा जब झूठकहा तब ब्राह्मणगाढ़ी कमरबांध शीघ्र उसकी ओर दौड़ा, जैसे तेज घोड़ा दौड़े सो पोदनापुर में चैत्यालय तथा उपवनादि बन में सर्वत्र ढूंडी कहूं ठौर न देखी तब पीछे विदग्धनगर में आया सो राजा की आज्ञा से क्रूरमनुष्यों ने गलहठा देय लष्टमुष्टि प्रहार कर दूर किया, ब्राह्मण स्थान भ्रष्टभया क्लेश भोगा अपमान लहा मार खाई एते दुःख भोग कर दूर देशांतर उठ गया, सो प्रिया विना इस को किसी ठौर सुख नहीं जैसे अग्नि में पडा सर्प सूँसै तैसे यह रात दिन सूंसता भया विस्तीर्ण कमलों का बन इसे दावानल समान दीखे और सरोवर अवगाह करता विरहरूप अग्नि से बले इसभान्ति यह महा दुखी पृथिवी पर भ्रमण करे एक दिन नगर से दूर बन में मुनि देखे मुनि जिनकानाम आर्यगुप्ति बड़े आचार्य तिनके निकट जाय हाथ जोड़ नमस्कार कर धर्म श्रवण करता भया, धर्म श्रवण कर इसको वैराग्य

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपजा महासान्तचित्त होय जिनेंद्र के मार्ग की प्रशंसा करता भया मन में विचारे है अहो यह जिनराज का मार्ग परम उत्कृष्ट है मैं अन्धकार में पड़ा था सो यह जिनधर्म का उपदेश मेरे घट में सूर्य समान प्रकाश करता भया मैं अब पापों का नाश करनहारा जो जिन शासन उसका शरण लेऊं, मेरा मन और तनु विरहरूप अग्नि में जरे है सो मैं शीतल करूं, तब गुरु की आज्ञा से वैराग्य को पाय परिग्रह का त्याग कर दिगम्बरी दीक्षा धरता भया, पृथिवी पर विहार करता सर्व संग का परित्यागी नदी पर्वत मसान बन उपवनों में निवास करता तपकर शरीर का शोषण करता भया जिसके मनको वर्षाकाल में अति वर्षा भई तोभी खेद न उपजा और शीतकालमें शीत वायु से जिस का शरीर न कांपा और ग्रीषम ऋतु में सूर्यकी किरणों से व्याकुल न भया इसका मन विरह रूप अग्निकर जला था सो जिनवचन रूप जल की तरंगों से शीतल भया तपकर शरीर अर्धदग्ध वृक्ष के समान होगया अब विदग्धपुर का राजा जो कुंडल मण्डित उसकी कथा सुनो राजा दशरथका पिता अरण्य अयोध्या में राज करे है सो यह कुण्डल मण्डित पापी गढ़के बलकर अरण्यके देश को विराधे जैसे कुशील पुरुष मर्यादा लोप करे तैसे यह उस की प्रजाको बाधा करे राजा अरण्य बड़ाराजा उसके वहुत देश सो इसने केएक देश उजाड़े जैसे दुर्जन गुणों को उजाड़े और राजा के बहुत सामन्त विराधे जैसे कषाई जीवके परिणाम विराधे और योगी कषायों का निग्रह करे तैसे इसने राजासे विरोध कर अपने नाशका उपाय किया सो यद्यपि यह राजा अरण्य के आगे रङ्क है तथापि गढ़ के बल से पकड़ा न जाय जैसे मूसा पहाड़ के नीचे जो विल उस में बैठ जाय तब नाहर क्या करे सो राजा अरण्यको इस चिन्ता से रात दिन चैन न पड़े आहारादिक

For Private and Personal Use Only

शरीर की क्रिया अनादर से करे तब राजा का बालचन्द्र नामा सेनापति सो राजा को चिन्तावान् देख पूछता भया कि हे नाथ ! आपको व्याकुलता का कारण क्या है जब राजाने कुण्डल मंडितका वृत्तांत कहा तब बालचन्द्रने राजा से कही आप निश्चिन्त होवो उस पापी कुण्डल मण्डितको बांधकर आपके निकट ले आऊं तब राजा ने प्रसन्न होय बालचन्द्रको विदा किया चतुरंग सेना से बालचन्द्र सेनापति चढ़ा सो कुंडलमंडित मूर्ख चित्तोत्सवा से आसक्त चित्त सर्व राजचेष्टा रहित महा प्रमाद में लीन था नहीं जाना है लोक का वृत्तान्त जिसने वह कुंडलमंडित नष्ट भया है उद्यम जिसका जो बालचन्द ने जाय कर क्रीड़ामात्र में जैसे मृग को बांधे तैसे बांध लिया और उसके सर्व राज्य में राजा अरण्य का अमल किया और कुंडलमंडित को राजा अरण्य के समीप लाया बालचन्द सेनापति ने राजा अरण्यका सर्व देश बाधा रहित किया राजा सेनापतिसे बहुत हर्षित भया और बहुत बधारा और पारितोषिक दिये और कुंडल मंडित अन्यायमार्ग से राज्यसे भ्रष्टभया हाथी घोड़े रथ पयादे सब गए शरीर मात्र रहगया पयादा फिरे सो महा दुखी पृथिवी पर भ्रमण करता खेद खिन्न भया मनमें बहुत पछतावे जो मैं अन्याय मार्गीने बड़ों से विरोध कर बुरा किया एकदिन यह मुनियों के आश्रम जाय आचार्य को नमस्कार कर भाव सहित धर्म का भेद पूछताभया गोतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे राजन् ! दुखी दरिद्री कुटुम्ब सों रहित व्याधिसे पीड़ित तिनमें किसी एक भव्यजीवके धर्म बुद्धि उपजे है उसने आचार्य से पूछा हे भगवन ! जिसकी मुनि होनेकी शक्ति न होय सो गृहस्थाश्रममें कैसे धर्मका साधन करे आहार भय मैथुन परिग्रह यह चार संज्ञा तिन में तत्पर यह जीव कैसे पापों कर छूटे सो मैं सुना

चाहूं हूं आप कृपाकर कहो तब गुरु कहते भए धर्म जीव दयामई है सब प्राणी अपनी निन्दाकर और गुरुवोंके पास आलोचना कर पापसे छूटे हैं तू अपना कल्याण चाहे है और शुद्ध धर्म की अभिलाषा करे है तो हिंसा का कारण महा घोर कर्म लहू और वीर्य से उपजा ऐसा जो मांस उसका भक्षण सर्वथा तज सबही संसारी जीव मरण से डरे हैं तिन के मांस कर जे अपने शरीर को पोषे हैं वे पापी निस्संदेह नरक में पड़ेंगे जे मांस का भक्षण करे हैं और नित्यस्नान करे हैं तिनका स्नान वृथा है और मूंड मुडाय भेष लिया सो भेष भी वृथा है और तीर्थ यात्रा और अनेक प्रकार के दान उपवासादिक यह मांसाहारी को नरक से नहीं बचासक्के हैं इस जगत् में ये सबही जाति के जीव पूर्व जन्ममें इस जीवके बांधव भए हैं इस लिये जो पापी मांसका भक्षण करे है उसने तो सर्व बांधव भषे जो दुष्ट निर्दई मच्छ मृग पक्षियोंको हने हैं और मिथ्यामार्गमें प्रवरते हैं सो मधु मांसके भक्षण से महा कुगतिमें जावें हैं यह मांस वृक्षों से नहीं उपजे है भूमि से नहीं उपजे है और कमलकी न्याई जल से नहीं निपजे है अथवा अनेक वस्तुओं के योग से जैसे औषधि बने है तैसे मांसकी उत्पात्ति नहीं होय है दुष्ट जीव निर्दयी वा गरीब बड़ा वल्लभ है जीतव्य जिनको ऐसे पक्षी मृग मत्स्यादिक तिनको हनकर मांस उपजावे हैं सो उत्तम जीव दयावान नहीं भषे हैं और जिनके दुग्धसे शरीर वृद्धि को प्राप्त होय ऐसी गाय भैंस छेली तिनके मृतक शरीरको भषे हैं अथवा मार मार कर भषे हैं तथा तिनके पुत्र पोत्रादिकको भषे हैं वे अधर्मी महानीच नरक निगोदके अधिकारी हैं जो दुराचारी मांस भषे हैं उसने माता पिता पुत्र मित्र सहोदर सबही भषे। इस पृथ्वीके तले भवनवासी और व्यन्तर देवोंके

निवास हैं और मध्य लोकमें भी हैं वे दुष्ट कर्म के करनहारे नीच देवहैं जे जीव कषाय सहित तापस होय हैं वे नीच देवों में निपजे हैं पाताल में प्रथमही रत्नप्रभा पृथ्वी ताके छै भाग और पंक भागमें तो भवनवासी और व्यन्तर देवोंके निवास हैं और बहुल भागमें पहिला नरक उस के नीचे छह नरक और हैं । ये सातों नरक छह राजू में हैं और सातवें नरकके नीचे एक राजूमें निगोदादि स्थावर ही हैं त्रस जीव नहीं हैं और निगोदसे तीनों लोक भरे हैं ।

अथानंतर नरकका व्याख्यान सुनो कैसे हैं नारकी जीवमहाक्रूर महाकुशब्दकेबोलनहारे अतिकठोरहै स्पर्श जिनका महा दुरगन्ध अन्धकाररूप नरकमें पड़े हैं उपमारहित जे दुख तिनका भोगनहाराहै शरीर जिनका महाभयंकर नरक जिसे कुम्भीपाक कहिए जहां वेतरणी नदी है और तीक्ष्ण कंटकयुक्त शाल्मली वृक्ष जहां असिपत्रवन तीक्ष्णखडगकी धारासमानहै पत्रजिनके और जहां देदीप्यमान अग्निसे तप्तायमान तीखे लोहे के कीले निरन्तरहैं उन नरकोंमें मधु मांसके भक्षणहारे और जीवोंके मारणहारे निरन्तर दुख भोगेहैं जहां एक आध अंगुल मात्रभी क्षेत्र सुखका कारण नहीं और एक पलकभी नारकियोंको विश्राम नहीं जो चाहें कितहूं भाजकर छिप रहें तो जहां जांय तहांही नारकी मारें और असुरकुमार पापी देव ताप देंय महा प्रज्वलित अंगार तुल्य जो नरककी भूमि उसमें पड़े ऐसे विलाप करें जैसे अग्नि में मत्स्य व्याकुल हुवा विलाप करे और भयसे व्याकुल किसी प्रकार निकसकर अन्य ठौर गया चाहै तो तिनको शीतलता निमित्त और नारकी वेतरणी नदी के जलसे छांटे देय सो वेतरणी महा दुर्गन्ध क्षारजलकी भरी उससे अधिकदाहको प्राप्त होय फिर विश्रामके अर्थ असिपत्रवनमें जांय सो असिपत्रासिर

पर पड़ें मानों चक्रखड्ग गदादिकहैं तिनसे विदारे जावें छिद गएहैं नासिका कर्ण कंध जंघा आदि शरीरके अंग जिनके नरकमें महाविकराल महादुखदाई पवनहै और रुधिरके करण बरसे हैं जहां घानी में पेलिये हैं और क्रूर शब्द होयहैं तीक्ष्णशूलोंसे भेदिये हैं महा विलापके शब्द करे हैं और शाल्मली वृक्षोंसे घसीटिएहैं और महामुद्गरोंके घातसे कूटिएहैं और जब तिसाए होवेहैं तब जलकी प्रार्थना करे हैं तब उन्हें तांबा गलाकर प्यावें हैं उससे देहमहादग्धायमानहोयहै उसकर महादुखी होयहैं और कहे हैं कि हमें तृष्णानहींतोफिरजबरदस्तीसे इनकोपृथ्वीपर पछाड़कर ऊपरपग देय संडासियोंसे मुखफाड़ताता तांबा प्यावे हैं उससे कंठ भी दग्ध होयहै और हृदयभी दग्ध होयहै नारकियों को नारकियों का अनेक प्रकार का परस्पर दुख तथा भवनवासी देवजे असुरकुमार तिनसे करवाया दुख सो कौन बरणन करसके नरक में मद्यमांस के भक्षण से उपजा जो दुख उसे जान कर मद्यमांस का भक्षण सर्वथा तजना ऐसे मुनि के वचन सुन नरक के दुख से डरा है मन जिसका ऐसा जो कुण्डलमण्डित सो बोला हे नाथ! पापी जीव तो नरकही के पात्र हैं और जे विवेकी सम्यकदृष्टि श्रावक के व्रत पाले हैं तिनकी क्यागति है तब मुनि कहते भए जे दृढ़व्रत सम्यक दृष्टि श्रावक के व्रत पाले हैं वे स्वर्ग मोक्ष के पात्र होय हैं और भी जे जीव मद्यमांस शहत का त्याग करेहैं वे भी कुगति से बचे हैं जे अभक्ष्यका त्याग करे हैं सो शुभगति पावे हैं जो उपवासादिक रहित हैं और दानादिक भी नहीं बने है परन्तु मद्यमांस के त्यागी हैं तो भले हैं औरजो कोई शील व्रत मण्डित है और जिनशासनका सेवक है और श्रावक के व्रत पाले है तिसका क्यापूछना सो तो सौधर्मादि स्वर्ग में उपजे ही हैं अहिंसाव्रत धर्मका मूल कहा है अहिंसा मांसादिक के त्यागी के

अत्यन्त निर्मल होय है जे मलेच्छ और चाण्डाल हैं और दयावान होवें हैं वह मधु मांसादिकका त्याग करे हैं सो भी पापों से छूटे हैं पापोंसे छूटा हुआ पुण्यको ग्रहे है और पुण्य के बंधन से देव अथवा मनुष्य होय है और जो सम्यकदृष्टि जीवहैं सो अणुव्रतको धारणकर देवों का इन्द्रहोय परमभोगों को भोगे है फिर मनुष्यहोय मुनिव्रत धर मोक्षपद पावे है ऐसे आचार्य के वचनसुनकर यद्यपि कुंडलमंडित अणुव्रतकेधारने में शक्तिरहित है तो भी सीसनवाय गुरुओंको सविनय नमस्कारकर मद्यमांसकात्याग करताभया, और समीचीन जो सम्यक दर्शन उसका शरण ग्रहा भगवान की प्रतिमाको नमस्कार और गुरुवों को नमस्कार कर देशांतर को गया मनमें ऐसी चिंता भई कि मेरा मामा महापराक्रमी है सो निश्चय सेती मुझे खेदखिन्न जान मेरी सहायता करेगा में फिर राजा होय शत्रुओं को जीतूंगा ऐसी आशा धर दक्षिण दिशा जायवेको उद्यमी भया सो अति खेदखिन्न दुखसे भरा धीरे २ आताथा सो मार्ग में अत्यन्तव्याधि वेदनाकर सम्यक रहित होय मिथ्यात्व गुण ठाने मरणको प्राप्त भया कैसा है मरण नहीं है जगत में उपाय जिसका सो जिस समय कुंडल मंडित के प्राण छूटे सो राजा जनक की स्त्री विदेहा के गर्भ में आया उसी ही समय वेदवती का जीवजो चित्तोत्सवा भई थी सो भी तपके प्रभावसे विदेहाके गर्भ में आई ये दोनों एक गर्भमें आए और वह पिंगल ब्राह्मण जो मुनिकेव्रत धर भवनवासी देवभया था सो अवधि कर अपने तपका फल जान फिर विचारता भयाकि वह चित्तोत्सवा कहां और वह पापी कुंडलमंडित कहां जिस से मैं पूर्व भव में दुख अवस्था को प्राप्तभया अब वे दोनों राजा जनक की स्त्री के गर्भ में आए हैं सो वह तो स्त्रीकीजाति पराधीन थी उस पापी कुंडलमंडित ने अन्याय मार्ग किया सो यह मेरा परम शत्रु है जो गर्भमें विराधना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करूं तो राणी मरणको प्राप्त होय सो इस से मेरा बैर नहीं इस लिये जब यह गर्भसे बाहिर आवे तब मैं इसे दुखदूं ऐसा चितवता हुआ। पूर्व कर्म के बैर से क्रोधायमान जो देव सो कुण्डल मंडित के जीव पर हाथ मसले ऐसा जान कर सर्व जीवन से क्षमा करनी किसी को दुख न देना जो कोई किसी को दुख देय है सो आप को ही दुख सागर में डुबोवे है॥

अथानंतर समय पाय रानी बिदेहाके पुत्र और पुत्रीका युगुल जन्म भया तबवह देवपुत्र को हरता भया सो प्रथम तो क्रोध के योग से उसने ऐसी बिचारी कि मैं इसे शिलापर पटक मारूं फिर बिचारी कि धिक्कार है मुझे मैं ऐसा अनन्तसंसार का कारण पाप चिंतया बालहत्या समान और कोई पापनहीं पूर्वभवमें मैं मुनिव्रत धरेथे सो तृणमात्रका भी बिराधन न किया सर्व आरम्भतजा नानाप्रकार तप किये श्री गुरुके प्रसाद से निर्मल धर्म पाय ऐसी बिभूति को प्राप्त भया अब मैं ऐसा पाप कैसे करूं अल्प मात्र भी पापकर महादुःखकी प्राप्ति होयहै पाप से यह जीव संसार वनबिषे बहुत काल दुख रूप अग्नि में जले है जो दयावान निर्दोषहै जिसकी भावना महासावधानरूप है सो धन्यहै सुगतिनामा रत्न उसके हाथमें है वह देव ऐसा विचारकर दयावान होयकर बालकको आभूषण पहिराय कानन विषे महा देदीप्यमान कुण्डल घाले परणलघ्वीनामा विद्याकर आकाशसे पृथ्वीविषे सुखकी ठौर पधराय आप अपने धाम गया सो रात्रीके समय चन्द्रगतिनामा विद्याधरने इस बालकको आभरणकी ज्योतिकर प्रकाशमान आकाशसे पड़ता देखा तब बिचारी कि यह नक्षत्रपात भया तथा विद्युत्पातभया यह बिचारकर निकट आए देखे तो बालकहै तब हर्षकर बालकको उठाय लिया और अपनी राणी पुष्पवती जो सेजमें सूती

थी उसकी जांघोंके मध्यधर दिया और राजा कहताभया हे राणी उठो उठो तुम्हारे बालक भयाहै बालक महाशोभायमानहै तब राणी सुन्दरहै मुख जिसका ऐसे बालकको देख प्रसन्न भई उसकी ज्योति के समूहकर निद्रा जाती रही महाविस्मयको प्राप्तहोय राजाको पूछती भई हे नाथ यह अद्भुत बालक कौन पुण्यवती स्त्रीने जाया। तब राजाने कही हे प्यारी तैंने जना, तो समान और पुण्यवती कौनहै धन्य है भाग्य तेरा जिसके ऐसा पुत्र भया तब वह राणी कहती भई हे देव मैं तो बांझहूं मेरेपुत्र कहां एक तो मुझे पूर्वोपार्जित कर्मने ठगी फिर तुम क्यों हास्य करोहो तब राजाने कही हे देवी तुम शंका मत करो स्त्रियोंके प्रछन्न (गुप्त) भी गर्भ होयहै तब राणीने कही ऐसेही हो हुं परन्तु इसके यह मनोहर कुंडल कहांसे आए ऐसे भूमंडलमें नहीं तब राजाने कही हे राणी ऐसे विचारकर क्या यह बालक आकाशसे पड़ा और मैं झेला तुझे दिया यह बड़े कुलका पुत्रहै इसके लक्षणोंकर जानिए है यह मोटा पुरुषहै अन्य स्त्रीतो गर्भके भारकर खेदखिन्न भई है परन्तु हे प्रिये तैंने इसे सुखसे पाया और अपनी कुक्षिमें उपजा भी बालक जो मातापिताका भक्षन होय और विवेकी न होय शुभकाम न करेतो उसकर क्या कईएक पुत्र शत्रु समानहोय परणवे हैं इसलिये उदरके पुत्रका क्या विचार तेरेयह पुत्र सुपुत्र होयगा शोभनीकवस्तुमें सन्देह क्या अब तुम इस पुत्रको लेवो और प्रसूतिके घरमें प्रवेशकर और लोकोंको यही जनावना जो राणीके गुप्त गर्भथा सो पुत्रभया तब राणी पतिकी आज्ञा प्रमाण प्रसन्न होय प्रसूतिगृहमें गई प्रभातमें राजाने पुत्रके जन्मका उत्सव किया रथनूपुरमें पुत्रके जन्मका ऐसा उत्सवभया जो सर्व कुटम्ब और नगरके लोग आश्चर्यको प्राप्तभए रत्नोंके कुंडलकी किरणोंकर मंडित

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो यह पुत्र सो मातापिताने इसका नाम प्रभामंडल धरा और पोषनेके निमित्त धायको सौंपा सर्व अंतःपुर की राणी आदि सकल स्त्री तिनके हाथरूप कमलोंका भ्रमर होता भया भावार्थ यह बालक सर्व लोकोंको वल्लभ बालक सुखसे तिष्ठे है यह तो कथा यहांही रही।

अथानंतर मिथिलापुरमें राजा जनककी रानी विदेहा पुत्रको हरा जान विलाप करती भई अति ऊंचे स्वरकर रुदन किया सर्व कुटम्बके लोक शोकसागरमें पडे राणी ऐसे पुकारे मानों शस्त्रकर मारी है हाय पुत्र तुझे कौन लेगया मुझे महा दुःखका करनहारा वह निर्दई कठोर चित्तके हाथ तेरे लेनेपर कैसे पड़े जैसे पश्चिम दिशाकी तरफ सूर्य आय अस्त होय जाय तैसे तूमेरे मंदभागिनीके आयकर अस्तहोय गया मैं भी परभवमें किसीका बालक विछोहाथा सो मैं फलपाया इस लिये कभी भी अशुभ कर्म न करना जो अशुभकर्म है सो दुःखका बीजहैजसे बीज बिना वृक्ष नहीं तैसे अशुभकर्म बिना दुःख नहीं जिसपापीने मेरा पुत्र हरा सो मुझेही क्यों न मार गया अधमुईकर दुःखके सागरमें काहेको डबो गया इसभांति राणीने अति विलाप किया तब राजाजनक आय धीर्य बंधावताभया हे प्रिये तू शोकको मत प्राप्त होवे तेरा पुत्र जीवे है किसीने हराहै सो तू निश्चय सेती देखेगी वृथा काहेको रुदनकरे है पूर्वकर्म के प्रभावकर गई वस्तु कोईतो देखिए कोई न देखिए तू स्थिरताको प्राप्तहो राजा दशरथ मेरा परम मित्र है सो उसको यह वार्ता लिखूं हूं वह और मैं तेरे पुत्रको तलाशकर लावेंगे भले २ प्रवीण मनुष्य तेरे पुत्रके ढूंढ़िबेको पठावेंगे इसभांति कहकर राजाजनकने अपनी स्त्रीको संतोष उपजाय दशरथ पास लेख भेजा सो दशरथ लेखबांच महा शोकवंतभया राजादशरथ और जनक दोनोंने पृथ्वीमें बालकको तलाश

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किया परन्तु कहींभी देखा नहीं तब महाकष्टकर शोकको दाब बैठ रहे ऐसा कोई पुरुष अथवा स्त्री नहीं जो इस बालकके गए आंसुओंकर भरे नेत्र न भया होय सबही शोकके वशहोय रुदन करते भए।

अथानन्तर प्रभामंडलके गएका शोक भुलावनेकों महा मनोहर जानकी बाल लीला करे सर्व बंधूलोकको आनन्द उपजावती भई महा हर्ष को प्राप्त भई जो स्त्रीजन उनकी गोद में तिष्ठती अपने शरीरकी कांतिकर दशों दिशा को प्रकाशरूप करती वृद्धिको प्राप्त भई कैसी है जानकी कमल सारिखे हैं नेत्र जिस के और महासुकंठ प्रसन्न वदन मानों पद्मद्रह के कमल के निवास से साक्षात् श्री देवी ही आई है, उसके शरीररूप क्षेत्र में गुणरूप धान्य निपजतेभए ज्यों ज्यों शरीर बढ़ा त्यों त्यों गुण बढे समस्त लोकों को सुखदाता अत्यंतमनोज्ञ सुन्दरलक्षणों कर संयुक्त है अंग जिस का, सीता कहिए भूमि उस समान क्षमा की धरणहारी इसलिये जगत् में सीता कहाई, वदन कर जीता है चन्द्रमा जिसने पल्लव समान हैं कोमल आरक्त हस्त जिसके, महाश्याम महासुन्दर इन्द्रनील मणि समान हैं केशों के समूह जिसके, और जीती है मदकी भरी हंसनी की चाल जिसने और सुन्दर हैं भों जिसकी और मोलश्री के पुष्प समान मुख की सुगन्ध गुंजार करे हैं भ्रमर जिस पर, अतिकोमल हैं पुष्पमाला समान भुजा जिसकी और केहरी समान है कटि जिसकी और महाश्रेष्ठ रस का भरा जो केलेका थंभ उस समान हैं जंघा जिसकी स्थल कमल समान महामनोहर हैं चरण जिसके और अतिसुन्दर हैं कुचयुग्म जिसका अति शोभायमान है रूप जिसका महाश्रेष्ठ मंदिर के आंगण में महारमणीक सातसे कन्याओंके समूह में शास्त्रोक्त क्रीड़ा करे, जो कदाचित् इन्द्र की पटराणी शची अथवा चक्रवर्ती की पटराणी सुभद्रा इस के अंग की शोभा को

For Private and Personal Use Only

किंचितमात्र भी धरें तो वे अतिमनोग्यरूप भासें औसी यह सीता सब से सुन्दर है, इसको रूप गुण युक्त देख राजा जनक ने विचारा, जैसे रति कामदेव ही को योग्य है तैसे यह कन्या सर्व विज्ञान युक्त दशरथ के बड़े पुत्र जो राम तिनही के योग्य है सूर्य्य की किरण के योग से कमल की शोभा प्रकट होय है ॥

॥ इति छब्बीसवां पर्व पूर्ण भया ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक यह कथा सुनकर गौतमस्वामीको पूछताभया हे प्रभो जनकने रामका क्या माहात्म्य देखा जो अपनी पुत्री देनी विचारी तब गणधर चित्तको आनन्दकारी वचन कहतेभए हे राजन् महा पुण्याधिकारी जो श्रीरामचन्द्र तिनका सुयश सुन जिसकारणसे जनकने रामको अपनी कन्या देनी विचारी। वैताड्यपर्वत के दक्षिण भाग में और कैलाश पर्वत के उत्तर भाग में अनेक अन्तर देश बसे है तिनमें एक अर्धबर्वर देश असंयमी जीवोंका है जहां महा मूढ़ जन निर्दई म्लेच्छ लोकों कर भरा उस में एक मयूरमाला नामा नगर काल के नगर समान महा भयानक वहां अन्तरगत नामा म्लेच्छ राज्य करे सो महा पापी दुष्टोंका नायक महा निर्दई बड़ी सेना से नाना प्रकार के आयुधों कर मण्डित सकल म्लेच्छ संगलेय आर्य देश उजाड़नेको आया सो अनेक देश उजाड़े कैसे हैं म्लेच्छ करुणाभाव रहित प्रचण्ड हैं चित्त जिनके और अत्यन्त है दौड़ जिनकी सो जनक राजाका देश उजाड़नेको उद्यमी भए जैसे टिड्डीदल आवे तैसे म्लेच्छोंके दल आए सबको उपद्रवकरणलगे तब राजा जनकने अयोध्या को शीघ्रही मनुष्य पठाए म्लेच्छके आवने के सब समाचार राजा दशरथ को लिखे सो जनक के जन शीघ्रही जाय सकल वृत्तान्त दशरथ सों कहते भए हे देव जनक वीनती करी है परचक्र भीलोंका आया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो सब पृथिवी उजाड़े है अनेक आर्य देश विध्वंस किये वे पापी प्रजा को एक वर्ण कियाचाहे हैं सो प्रजा नष्टभई तब हमारे जीनेकर क्या अब हमको क्या कर्तव्य है उनसे लड़ाई करना अथवा कोई गढ़ पकड़ तिष्ठें लोगोंको गढ़ में राखें कालिंद्रिभागा नदीकीतरफ विषम म्लेच्छहैं कहांजावें अथवा विपुलाचल की तरफ जावें अथवा सर्व सेना सहित कुंजगिरिकी ओर जावें पर सेना महा भयानक आवे है साधु श्रावक सर्वलोक अति विह्वल हैं वे पापी गौ आदि सब जीवों के भक्षक हैं सो जो आप आज्ञा देवें सो करें यह राज्य भी तुम्हारा और पृथिवी भी तुम्हारी यहांकी प्रतिपालना सब तुमको कर्तव्यहै प्रजा की रक्षा किये धर्मकी रक्षा होय है श्रावक लोक भाव सहित भगवान्‌की पूजा करे हैं नानाप्रकारके व्रत धरे हैं दान करे हैं शील पालें हैं सामायिक करे हैं पोशा परिक्रमणा करे हैं भगवानके बड़े बड़े चैत्यालयों में महाउत्सव होय है विधि पूर्वक अनेक प्रकार महा पूजा होय है अभिषेक होय है विवेकी लोक प्रभा-वना करे हैं और साधु दश लक्षण धर्मकर युक्त आत्मध्यान में आरूढ़ मोक्ष का साधन तपकरे हैं सो प्रजाके नष्ट भए साधु और श्रावक का धर्म लुपे है और प्रजा के होते धर्म अर्थ काम मोक्ष सब सधे हैं जो राजा पर चक्र से पृथिवी की प्रतिपालना करे सो प्रशंसा के योग्य है राजा के प्रजाकी रक्षासे इस लोक परलोकविषे कल्याण की सिद्धि होय है प्रजाबिना राजा नहीं और राजाबिना प्रजानहीं जीवदया मय धर्मका जो पालन करे सो यह लोक परलोक में सुखी होय है धर्म अर्थ काम मोक्ष की प्रवृत्ति लोगों के राजाकी रक्षा से होयहै अन्यथा कैसे होय राजाके भुजबलकी छाया पायकर प्रजा सुखसे रहे है जिस के देशमें धर्मात्मा धर्म सेवन करे हैं दान तप शील पूजादिक करे हैं सो प्रजाकी रक्षाके योगसे छठा अंश

For Private and Personal Use Only

राजाको प्राप्त होय है यह सर्व वृत्तांत राजा दशरथ सुनकर आप चलनेको उद्यमीभए और श्रीरामको बुलाय राज्य देना विचारा वादित्रों के शब्द होतेभए तब मन्त्री आए और सब सेवक आए हाथी घोड़े रथ पयादे सब आय ठाढ़े भए जलके भरे स्वर्णमयी कलश स्नानके निमित्त सेवक लोग भरलाए और शस्त्र बांध कर बड़े बड़े सामन्त लोक आए और नृत्यकारिणी नृत्य करती भई और राजलोक की स्त्रीजन नाना प्रकार के वस्त्र आभूषण पहरे थाल में लेले आई यह राजाभिषेकका आडंबर देखकर राम दशरथ से पूछते भये कि हे प्रभो यह क्या है तब दशरथने कही हे पुत्र तुम इस पृथिवीकी प्रतिपालना करो मैं प्रजा के हित निमित्त शत्रुओं के समूहसे लड़नेजाऊंहूं वे शत्रु देवोंकरभी दुर्जयहैं तब कमलसारिखे नेत्रहैं जिनके ऐसे श्रीराम कहते भए हे तात ऐसे रंकन पर एता परिश्रम कहां वे आपके जायबे लायक नहीं वे पशुसमान दुरात्मा जिनसे संभाषण करनाभी उचित नहीं तिनके सन्मुख युद्धकी अभिलाषाकर आप कहां पधारें उन्दरु (चूहा) के उपद्रव कर हस्ती क्रोध न करे और रूईके भस्मकरनेके अर्थ अग्नि कहां परिश्रम करे उनपर जानेकी हमको आज्ञा करो यही उचितहै ये रामके वचन सुन दशरथ अति हर्षितभये तब रामको उरसे लगाय कर कहते भए हे पद्मकमल समान हैं नेत्र जिसके ऐसे तुम बालक सुकुमार अंग कैसे उन दुष्टोंको जीतोगे यह बात मेरे मनमें न आवे तब राम कहतेभये हे तात क्या तत्कालका उपजा अग्निका कणका मात्रभी विस्तीर्ण वनको भस्म न करे करेही करे छोटी बड़ी अवस्थापर क्या प्रयोजन और जैसे अकेला उगताही बाल सूर्य घोर अंधकार के समूहको हरेही हरे तैसे हम बालकही तिन दुष्टोंको जीतेंही जीतें ये वचन रामके सुनकर राजा दशरथ अतिप्रसन्नभए रोमांच होयआए और बालक पुत्रके भेजने

का कछु इक विषादभी उपजा नेत्र सजल होयगए राजा मनमें विचारे है जो महा पराक्रमी त्यागादि व्रत के धारणहारे क्षत्री तिनकी यही रीति है जो प्रजाकी रक्षा के निमित्त अपने प्राणभी तजने का उद्यम करें अथवा आयुके क्षय विना मरणनहीं यद्यपि गहन रणमें जाय तोभी न मरे ऐसाचितवन करता जो राजा दशरथ उसके चरणकमल युगको नमस्कारकर रामलक्ष्मण बाहिर निसरे सर्व शास्त्र और शस्त्र विद्या में प्रवीण सर्व लक्षणोंकर पूर्ण सबको प्रिय है दर्शन जिनका चतुरंग सेनाकर मण्डित विभूतिकर पूर्ण अपने तेजकर देदीप्यमान दोनों भाई राम लक्ष्मण रथ में आरूढ़ होय जनककी मदतचले सो इनके जायबे पहिले जनक और कनक दोनोंभाई परसेनाका दो योजन अन्तर जान युद्ध करणेकोचढ़े थे सो जनक के महारथी योधा शत्रुवोंके शब्द न सहते संते म्लेच्छों के समूहमें जैसे मेघकी घटामें सूर्यादि ग्रहप्रवेश करें तैसे यह थे सो म्लेच्छोंके और सामंतोंके महायुद्ध भया जिसके देखे और सुने रोमांच होय आवें कैसा संग्राम भया बड़े शस्त्रनका है प्रहार जहां दोनों सेनाके लोक व्याकुलभए कनकको म्लेछका दवाव भया तब जनक भाईकी मदतके निमित्त अतिक्रोधायमान होय दुर्निवार हाथियोंकी घटा प्रेरता भया सो वे बरवर देश के म्लेछ महा भयानक जनकको भी दबावते भये उसी समय राम लक्ष्मण जाय पहूंचे अति अपार महागहन म्लेछ की सेना रामचन्द्र ने देखी, सो श्री रामचन्द्र का उज्ज्वल छत्र देख कर शत्रुवों की सेना कंपायमान भई, जैसे पूर्णमासी के चंद्रमा का उदय देखकर अंधकार का समूह जे चलायमान होय, म्लेछों के बाणों कर जनक का वषतर टूट गया था और जनक खेदखिन्न भया था सो राम ने धीर्यबंधाया जैसे संसारी जीव कर्मों के उदय कर दुःखी होय सो धर्म के प्रभाव कर दुखों से छूट सुखी होय तैसे जनक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राम के प्रभाव कर सुखी भया, चंचल तुरंगों कर युक्त जो रथ उस में आरूढ जो राघव महाउद्योत रूप है शरीर जिनका बषतर पहिरे हार और कुंडल कर मंडित धनुष चढ़ाए और बाण हाथमें सिंहके चिन्ह की है ध्वजा जिनके और जिन पर चमर ढुरे हैं और महामनोहर उज्ज्वल छत्रसिर पर फिरे हैं पृथिवीके रक्षक धीर वीर है मन जिनका ऐसे श्रीरामलोकके वल्लभ प्रजाके पालक शत्रुवों की विस्तीर्ण सेना में प्रवेश करते भए सुभटोंके समूह कर संयुक्त जैसे सूर्य किरणों के समूह कर सोहै तैसे शोभते भए जैसे माता हाथी कदलीबन में बैठा केलोंके समूह का विध्वंस करे तैसे शत्रुवों की सेना का भंगकिया जनक और कनक दोनों भाई बचाए और लक्ष्मण जैसे मेघ बरसें तैसे बाणों की वर्षा करता भया, तीक्ष्ण सामान्य चक्र और शक्ति कनक त्रिशूल कुठार करौत इत्यादि शस्त्रों के समूह लक्ष्मण के भुजावों कर चले उन कर अनेक म्लेछ मुवे जैसे फरसीनकर वृक्ष कटैं वे भील पारधी महाम्लेछ लक्ष्मणके बाणोंकर विदारे गये हैं उरस्थल जिनके कटगई हैं भुजा और ग्रीवा जिनकी हजारां पृथ्वीमें पड़े तब वे पृथ्वी के कंटक तिनकी सेना लक्ष्मण आगे भागी लक्ष्मण सिंहसमान दुर्निवार उसे देखकर जे म्लेछों में शार्दूल समान थे वेभी अतिक्षोभको प्राप्त भए महावादित्रों के शब्द करते और मुखसे भयानक शब्द बोलते और धनुषबाण खड्ग चक्रादि अनेक शस्त्रों को धरे और रक्त वस्त्र पहिरे खंजर जिनके हाथमें नाना वर्ण का है अंगजिनका कैयक काजल समान श्याम कैयक कर्दम समान कैयक ताम्रवर्ण वृक्षों के बकल पहिरे और नानाप्रकार के गेरुवादि रंगातिनकर लिप्त हैं अंग जिनके और नाना प्रकारके वृक्षोंकी मंजरी तिनके हैं छोगा सिरपर जिनके,और कौड़ी सारिखे हैं दांत जिनके और विस्तीर्ण हैं उदर जिनके ऐसे

For Private and Personal Use Only

भासें मानों कुटक जाति के वृत्तही फूलेहैं और कैयक भील भयानक आयुधों को धरेकठोर हैं जंघा जिन की भारी भुजावों के धरणाहारे असुरकुमार देवों सारिखे उनमत्त महा निर्दई पशुमांसके भक्षक महादृढ़ जीव हिंसाविषे उद्यमी जन्महीसे लेकर पापोंके करणाहारे तत्काल खोटे आरम्भन के करणहारे और सूकर भैंसा व्याघ्र ल्याली इत्यादि जीवोंके चिन्हहैं जिनकी ध्वजावों में नानाप्रकार के जे वाहन तिन पर चढ़े पत्रों के छत्र जिनके नानाप्रकार के युद्धके करण हारे अति दौड़ के करणहारे मया प्रचन्ड तुरंग समान चंचल वे भील मेघमाला समान लक्ष्मणरूप पर्वतपर अपने स्वामी रूपपवनके प्रेरेबाण वृष्टि करते भए तबलक्ष्मण तिनके निपात करनेको उद्यमी तिनपर दौडे महाशीघ्र है वेग जिनका जैसे महा राजेंद्र वृक्षोंके समूह पर दौडेसो लक्ष्मण के तेज प्रतापकर वे पापी भागे सो परस्पर पगों कर मसले गए तब उनका अधिपति अन्तरगत अपनी सेना को धीर्य बंधायसकल सेना सहित आप लक्ष्मण के सन्मुख आया महाभयन्कर युद्ध किया लक्ष्मणको रथ रहित किया तब श्रीरामचन्द्रने अपना रथचलाया पवनसमान है वेग जिसका लक्ष्मणके समीपआए लछमण को दूजेरथ पर चढाया और आप जैसे अग्नि वन को भस्म करे तैसे तिनकी अपार सेना को बाण रूप अग्नि कर भस्म करते भए कैयकतो बाणोंसे मारे और कैयककनकनामा शस्त्रसेंविध्वंसे कैयक तोमरनामा आयुधसे हते कैयक सामान्य चक्रनामा शस्त्रसे निपात किए वह म्लेछोंकी सेना महाभयंकर प्रत्येक दिशाको जाती रही छत्रचमर ध्वजा धनुष आदि शस्त्र डारडार भाजे महा पुण्याधिकारी जो राम उसने एक निमिष में म्लेछोंका निराकरण किया जैसे महामुनि क्षणमात्रमें सर्व कषायोंका निपात करें तैसे उसने किया वह पापी अंतरंगत अपारसेना

रूप समुद्रकर आयीथा सो भयखाय दस घोड़ोंके असवारोंसे भागा तब श्रीरामने आज्ञाकरी ये नपुंसक युद्धसे पराङ्मुख होय भागे अब इनके मारनेसे क्या तब लक्ष्मण भाईसहित पीछे बाहुडे वे म्लेछ भय से व्याकुलहोय सह्याचल विन्ध्याचलके वनोंमें छिप गए श्रीरामचन्द्रके भयसे पशु हिंसादिक दुष्ट कर्म को तज बन फलोंका आहार करें जैसे गरुड़से सर्प डरे तैसे श्रीरामसे डरतेभए। लक्ष्मणसहित श्रीराम ने शांतहै स्वरूप जिनका राजा जनकको बहुत प्रसन्न कर विदा किया और आप पिता के समीप अयोध्याको चले सर्व पृथ्वीके लोक आश्चर्यको प्राप्तभए यह सबको परम आनन्द उपजा परम हर्ष मान रोमांचहोय आए। रामके प्रभावसे सब पृथ्वी विभूतिसे शोभायमान भई जैसे चतुर्थकालके आदि ऋषभदेवके समय सम्पदासे शोभायमान भईथी धर्म अर्थ कामकर युक्त जे पुरुष तिनसे जगत ऐसा भासताभया जैसे वर्षाके अवरोधकर वर्जित जे नक्षत्र तिनसे आकाश शोभे। गौतमस्वामी कहे हैं हे राजा श्रेणिक ऐसा रामका माहात्म्य देखकर जनकने अपनी पुत्री सीताको रामको देनी विचारी बहुत कहनेसे क्या जीवोंके संयोग अथवा वियोगका कारणभाव एक कर्म का उदयही है सो वह श्रीराम श्रेष्ठ पुरुष महासौभाग्यवन्त अतिप्रतापी औरनमें न पाइये ऐसे गुणोंकर पृथिवीमें प्रसिद्ध होता भया जैसे किरणोंके समूहकर सूर्य महिमा को प्राप्त होय॥ इति सत्ताईसवां पर्व सम्पूर्णम्।

अथानन्तर ऐसे पराक्रमकर पूर्ण जो राम तिनकी कथा बिना नारद एकक्षणभी न रहे सदा राम कथा करबोही करें कैसाहै नारद रामके यश सुनकर उपजाहै परम आश्चर्य जिसको फिर नारदने सुनी जो जनकने रामको जानकी देनी विचारी कैसी है जानकी सर्व पृथिवीमें प्रकटहै महिमा जिन की

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नारद मनमें चितवताभया । एक बार सीताको देखूं कि वह कैसीहै कैसे लक्षणोंकर शोभायमानहै जो जनकने रामको देनी करी है सो नारद शीलसंयुक्तहै हृदय जिसका सीताके देखने को सीताके घर आया सो सीता दर्पणमें मुख देखती थी सो नारदकी जटा दर्पणमें भासी सो कन्या भयकर व्याकुल भई मनमें चितवती भई हाय माता यह कौनहै भयकर कम्पायमान होय महिलके भीतर गई नारद भी लारही महिलमें जाने लगे तब द्वारपालों ने रोंका सो नारदके और द्वारपालों के कलह हुआ कलहके शब्द सुन खडग के और धनुषके धारक सामन्त दौड़े ही गए कहते भए पकड लो पकड लो यह कौन है । ऐसे तिन शस्त्र धारियों के शब्द सुनकर नारद डरा आकाशमें गमनकर कैलाश पर्वत गया वहां तिष्ठ कर चितवता भया कि मैं महाकष्ट को प्राप्त भयाथा सा मुशकिल से बचा नवां जन्म पाया जैसे पक्षी दावानलसे बाहिर निकसे तैसे मैं वहां से निकसा। सो धीरे धीरे नारदकी कांपनी मिटी और ललाटके पसेव पूंछे केश विखर गएथे वे समार कर बान्धे कांपे हैं हाथ जिसके ज्योंज्यों वह बात याद आवे त्योंत्यों निश्वासनाखे महाक्रोधायमान होय मस्तक हलाय ऐसे विचारता भया कि देखो कन्या की दुष्टता में अदुष्टचित्त सरलस्वभाव रामके अनुरागसे उसके देखनेको गयाथा सो मृत्युसमान अवस्था को प्राप्त भया यह समान दुष्ट मनुष्य मुझे पकड़ने को आए सो भलीभई जो बचा पकड़ा न गया । अब वह पापिनी मेरे आगे कहां बचेगी जहां जहां जाय तहां ही उसे कष्ट में नाखूं मैंबिना बजाये वादित्र नाचूं सो जब वादित्रबाजे तब कैसेटरूं ऐसा विचारकर शीघ्रही वैताड्य की दक्षिण श्रेणि विषे जोरथनू पुर नगर वहां गया महा सुन्दर जो सीता का रूप सो चित्रपट विषे लिख लेगया कैसा है सीता का रूप

महासुन्दर है ऐसा लिखा मानों प्रत्यक्षही है सो उपवन विषे चन्द्रगतिका पुत्र भामण्डल अनेक कुमारों सहित क्रीड़ा करने को आया था सो चित्रपट उस के समीप डार आप छिप रहा सो भामण्डल ने यहतो न जानीकि यह मेरी बहिनका चित्रपटहै परन्तु चित्रपट देख मोहित भया लज्जा और शास्त्रज्ञान और विचारि सब भूल गया लम्बे लम्बे निश्वास नाखे होठ सूक गए गात शिथिल होयगया रात्रि दिवस निद्रा न आवे अनेक मनोहर उपचार कराए तो भी इसे सुख नहीं सुगन्ध पुष्प और सुन्दर आहार इसे विष समान लगें। शीतल जलसेछांटिये तौ भी सन्ताप न मिटे कभी मौन पकड़रहे कभी हंसे कभी विकथा बके कभी उठ खड़ा रहे वृथा उठ चले फिर पीछे आवे ऐसी चेष्टा करे मानों इसे भूत लगा है तब बड़े बड़े बुद्धिमान् इसे कामातुर जान परस्पर बात करते भए कि यह कन्या का रूप किसी ने चित्र पट विषे लिखकर इसके ढिग आय डारा सो यह विक्षिप्त होय गया कदाचित् यह चेष्टानारद ने ही करी होय तब नारदने अपने उपायकर कुमार को व्याकुल जान लोकों की बात सुन कुमार के बन्धूवोंको दर्शन दिया तब तिनने बहुत आदर कर पूछाहे देव कहो यह कौन की कन्याका रूपहै। तुमने कहां देखीक्या यह कोई स्वर्गकी देवांगना का रूपहै अथवा नाग कुमारी का रूप है पृथिवी विषे आई होवेगी सो तुमने देखी तब नारद माथा हलाय कर बोला कि एक मिथिला नाम नगरीहै वहां महासुन्दर राजा इद्र केतु का पुत्र जनक राज्य करे है उसके विदेहा राणी है सो राजा को अति प्रिय है तिन की पुत्री सीताका यह रूपहै ऐसा कह कर फिर नारद भामण्डल से कहते भए हे कुमार तू विषाद मत कर तू विद्याधर राजा का पुत्र है तुझे यह कन्या दुर्लभ नहीं सुलभही है। और तू रूप मात्र ही से क्या अनुरागी भया।

इसमें बहुत गुण हैं इस के हाव भाव बिलासादिक कौन वर्णन कर सके और यही देख तेरा चित बशीभूत हुया सो क्या आश्चर्य है। जिसे देखे बड़े पुरुषों का भी चित्त मोहित होयजाय। मैं तो यह आकारमात्र पट में लिखा है उसकी लावण्यता उस ही विषे है लिखवे में कहां आवे नवयौवन रूपजल कर भरा जो कान्ति रूप समुद्र उस की लहरों विषे वह स्तन रूप कम्भों कर तिरे है और ऐसी स्त्री तुझे टार और कौन को योग्य तेरा और उस का संगम योग्य है इस भान्ति कह कर भामंडलको अति स्नेह उपजाया और आप नारद आकाश में बिहार कर गए भामंडल कामके बाण कर वेध्या अपने चित्तमें विचारता भया कि यदि यह स्त्री रत्न शीघ्रही मुझे न मिले तो मेरा जीवना नहीं देखो यह आश्चर्यहै वह सुन्दरी परमकांति की धरणहारी मेरे हृदय में तिष्ठती हुई अग्निकी ज्वाला समान हृदय को आताप करे है सूर्य है सो तो वाह्य शरीर को आताप करे है और कामदेह सो अन्तर वाह्यदाह उपजावे है सो सूर्यके आताप निवारवेको तो अनेक उपायहै परंतु कामके दाह निवारवेका उपाय नहीं अब मुझे दो अवस्था आय बनीहैं केतो उसका संयोग होय अथवा कामके बाणों कर मेरा मरण होयगा निरन्तर ऐसा विचारता हुवा भामंडल विह्वल होगया सो भोजन तथा शयन सब भूल गया ना महल में ना उपबन में इसे किसी ठौरसाता नहीं यह सब वृत्तान्त कुमार के व्याकुलता का कारण नारदकृत कुमारकी माता जानकर कुमारके पिता से कहतीभई हे नाथ अनर्थका मूल जो नारद उसने एक अत्यन्त रूपवती स्त्री का चित्रपट लाय कर कुमार को दिखाया सो कुमार चित्रपट को देख कर अति विभ्रम चित्त होय गया सो धीर्य नहीं धरे है लज्जा रहित होय गया है बारम्बार चित्रपट को निरखे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है और सीता ऐसे शब्द उच्चारण करे है और नाना प्रकार की अज्ञानचेष्टा करे है मानों इसे वाय लगी है इसलिये तुम शीघ्र ही सीता उपजावने का उपाय विचारो वह भोजनादिक से पराण्मुख होय गया है सो उसके प्राण न छूटें इस पहिले ही यत्न करो । तब यह वार्ता चन्द्रगति सुन कर अति व्याकुल भया अपनी स्त्री सहित आय कर पुत्र को ऐसे कहता भया हे पुत्र तू स्थिरचित्त हो और भोजनादि सर्वक्रिया जैसे पूर्वे करे था तैसे कर जो कन्या तेरे मन में बसी है सो तुझे शीघ्र ही परणाऊंगा, इसभान्ति कहकर पुत्रको शांतता उपजाय राजा चन्द्रगति एकान्त में हर्ष बिषाद और आश्चर्य को धरता संता अपनी स्त्री से कहता भया हे प्रिये विद्याधरों की कन्या अतिरूपवन्ती अनुपम उन को तज कर भूमिगोचरियों का सम्बन्ध हम को कहां उचित, और भूमिगोचरियों के घर हम कैसे जावेंगे और जो कदाचित् हम जाय प्रार्थना करें और वह न दें तो हमारे मुख की प्रभा कहां रहेगी, इसलिये कोई उपाय कर कन्या के पिता को यहां शीघ्र ही ल्यावें और उपाय नहीं, तब भामंडल की माता कहती भई हे नाथ युक्त अथवो अयुक्त तुमही जानों तथापि ये तुम्हारे वचन मुझे प्रिय लगे हैं ॥

अथानन्तर चन्द्रगतिराजाने एक अपने सेवक चपलवेग नामा विद्याधर को आदर सहित बुलाय कर सकल बृत्तान्त उसको कान में कहा और नीके समझाया सो चपलवेग राजा की आज्ञा पाय बहुत हर्षित होय शीघ्र ही मिथिला नगरी को चला, जैसे प्रसन्न भया तरुण हंस सुगंध की भरी जो कमलनी उसकी ओर जाय, यह शीघ्र ही मिथिलानगरी जाय पहुंचा आकास से उतर कर अश्व का भेष धर गांय महिषादि पशुओं को त्रास उपजावता भया, राजा के मंडल में उपद्रव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किया तब लोगों की पुकार आई सो राजा सुनकर नगर के बाहिर निकसा प्रमोद उद्वेग और कौतुक का भरा राजा अश्वको देखता भया कैसा है अश्व नौयौबनहै और उछलता संता अति तेजको धरे मन समान है वेग जिसका सुन्दर हैं लक्षण जिसके और प्रदक्षिणारूप महा आवर्तको धरे है मनोहर है मुख जिसका और महा बलवान् खुरों के अग्रभाग कर मानो मृदंगही बजावे है जिसपर कोई चढ़ न सके और नाशिकाका शब्द करता संता अति शोभायमान है ऐसे अश्व को देखकर राजा हर्षित होय बारम्बार लोकों से कहताभया यह किसीका अश्व बन्धन तुड़ाय आया है तब पण्डितों के समूह राजा से प्रिय वचन कहते भये हे राजन इस तुरंग के समान कोई तुरंगही नहीं औरोंकी तो क्या बात ऐसा अश्व राजाके भी दुर्लभ आपके भी देखनेमें ऐसा अश्व न आया होयगा सूर्य के रथके तुरंगों की अधिक उपमा सुनिएहै सो इस समानतो वेभी न होवेंगे कोई दैवके योगसे आपके निकट ऐसा अश्व आया है सो आप इसे अंगीकार करो आप महापुण्याधिकारी हो तब राजाने अश्वको अंगीकार किया अश्वशाला में ल्याय सुन्दर डोरियों से बांधा और भांति भांतिकी योग सामग्री कर इसके यत्नकिए एक मास इसका यहां हुवा एकदिन सेवकने आय राजाको नमस्कारकर विनती करी हे नाथ एक बनका मतंग गज आयाहै सो उपद्रवकरे है तब राजा बड़े गजपर असवार होयउस हाथीकी ओर गए वह सेवक जिसने हाथीका वृत्तान्त आय कहाथा उसके कहे माग कर राजा ने महाबन में प्रवेश किया सो सरोवरके तट हाथी खड़ा देखा और चाकरों से कहा जो एक तेज तुरंग ल्यावो तब मायामई अश्वको तत्काल लेगए सुन्दर है शरीर जिसका राजा उसपर चढ़े सो वह आकाशमें राजाको लेउड़ा तब सब परिजन पुरजन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हाहाकार कर महा शोकवन्तभए आश्चर्यकर व्याप्त हुवा है मन जिनका तत्काल पीछे नगरमें गए ॥

अथानन्तर वह अश्वके रूप का धारक विद्याधर मन समान है वेग जिसका अनेक नदी पहाड़ बन उपवन नगर ग्राम देश उलंघ कर राजा को रथनूपुर लेगया जब नगर निकट रहा तब एक वृक्षके नीचे आय निकसा सो राजा जनक वृक्षकी डाली पकड़ लूंब रहा वह तुरंग नगरमें गया राजा वृक्षसे उतर विश्रामकर आश्चर्य सहितआगे गया वहां एक स्वर्ण मई ऊंचा कोट देखा और दरवाजा रत्नमई तोरणों कर शोभायमान और महा सुन्दर उपवन देखा उसमें नाना जातिके वृक्ष और बेल फल फूलों कर संपूर्ण देखे उनपर नाना प्रकार के पक्षी शब्द करे हैं और जैसे सांझके बादले होवें तैसे नानारंग के अनेक महिल देखे मानों ये महिल जिन मन्दिर की सेवाही करे हैं तब राजा खड़गको दाहिने हाथ में मेल सिंह समान अति निशंक क्षत्री व्रतमें प्रवीण दरवाजेमेंगया दरवाजेके भीतर नानाजातिके फूलों की बाड़ी और रत्न स्वर्ण के सिवाण जिसके ऐसी वापिका स्फटिकमणि समान उज्ज्वलहै जल जिसका और महा सुगन्ध मनोग्य विस्तीर्ण कुन्द जातिके फूलों के मण्डप देखे चलायमान हैं पल्लवोंके समूह जिनके और संगीत करे हैं भ्रमरों के समूह जिनपर और माधवी लतावोंके समूह फूले देखे महा सुन्दर और आगे प्रसन्न नेत्रोंकर भगवानका मन्दिर देखा कैसा है मन्दिर मोतियों की झालरियों कर शोभित रत्नों के झरोखों कर संयुक्त स्वर्ण मई हजारां महास्तम्भ तिनकर मनोहर और जहां नाना प्रकार के चित्राम सुमेरु के शिखर समान ऊंचे शिखर और वज्रमणि जे हीरा तिनकर वेढ्या है पीठ (फ़रश) जिसका ऐसे जिन मन्दिरको देखकर जनक विचारताभयाकि यह इन्द्रका मन्दिरहै अथवा अहिमिन्द्र का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्दिरहै ऊर्ध्वलोकसे आयाहैअथवा नागेन्द्रका भवन पातालसे आया है अथवा किसी कारणसे सूर्यकी किरणों का समूह पृथिवीमें एकत्र भयाहै अहो उस मित्रविद्याधरने मेरा बड़ा उपकारकिया जो मुझे यहांलेआया। ऐसा स्थानक अबतक देखा नहीं था भला मन्दिर देखा ऐसा चितवन कर महा मनोहर जो जिनमन्दिर उसमें गया फूलगयाहै मुखकमल जिसका श्रीजिनराजका दर्शन किया कैसे हैं श्रीजिनराज स्वर्ण समान है वर्ण जिनका और पूर्णमासी के चन्द्रमा समान है सुन्दर मुख जिनका और पद्मासन विराजमान अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त कनकमई कमलोंकर पूजित और नाना प्रकारके रत्नोंकर जड़ित जे छत्र वे हैं सिर पर जिनके और ऊंचे सिंहासनपर तिष्ठे हैं तब जनक हाथजोड़ सीसनिवाय प्रणाम करताभया हर्षकर रोमांच होय आए भक्तिके अनुरागकर मूर्छा को प्राप्तभया क्षणएकमें सचेत होय भगवानको स्तुति करने लगा अति विश्रामको पाय परम आश्चर्यको धरता संता जनक चैत्यालय में तिष्ठे है ॥

अथानन्तर वह चपलवेग विद्याधर जो अश्व का रूपकर इलको ले आया था सो अश्वका रूप दूर कर राजा चन्द्रगति के पास गया और नमस्कार कर कहताभया कि मैं जनकको ले आयाहूं मनोग्य वन में भगवान् के चैत्यालय में तिष्ठे है, तब राजा सुन कर बहुत हर्ष को प्राप्त भया थोड़े से समीपी लोक लार लेय राजा चन्द्रगति उज्ज्वल है मन जिस का पूजा की सामग्री लेय मनोरथ समान रथ पर आरूढ़ होय चैत्यालय में आया सो राजा जनक चन्द्रगति की सेनाको देख और अनेक वादित्रों का नाद सुन कर कछू इक शंकायमान भया कैएक विद्याधर मायामई सिंहों पर चढ़े हैं कैएक मायामई हाथीयों पर चढ़े हैं कैएक घोडावों पर चढ़े कईएक हंसो पर चढ़े तिन के वीच राजा चन्द्रगति है सो देख कर

For Private and Personal Use Only

जनक विचारता भया कि जो विजियार्ध पर्वत पर विद्याधर बसे हैं ऐसी मैं सुनता हूं सो ये विद्याधर हैं विद्याधरों की सेना के मध्य यह विद्याधरों का अधिपति कोई परम दीप्ति कर शोभे है ऐसा चिंतवन जनक करे है उसही समय वह चन्द्रगति राजा दैत्यजाति के विद्याधरोंका स्वामी चैत्यालय में आय प्राप्त भया महा हर्षवन्त नम्रीभूत है शरीर जिस का, तब जनक उस को देख कर कछू इक भयवान् होय भगवान् के सिंहासनके नीचे बैठ रहा, और उस राजा चन्द्रगति ने भक्ति कर भगवान्के चैत्यालय में जाय प्रणाम कर विधिपूर्वक महा उत्तम पूजा करी और परमस्तुति करता भया फिर सुन्दर हैं स्वर जिस के ऐसी बीणा हाथ में लेकर महाभावना सहित भगवान् के गुण गावता भया सो कैसे गावे है सो सुनो, अहो भव्य जीव हो जिनेंद्र को आराधो, कैसे हैं जिनेंद्रदेव तीन लोक के जीवों को बर दाता और अविनाशी है सुख जिन के और देवों में श्रेष्ठ जे इन्द्रादिक उन कर नमस्कार करने योग्य हैं कैसे हैं वे इन्द्रादिक महा उत्कृष्ट जो पूजा का विधान उस में लगाया है चित्त जिन्होंने अहो उत्तम जन हो श्री ऋषभदेव को मन वचन काय कर निरन्तर भजो कैसे हैं ऋषभदेव महाउत्कृष्ट हैं और शिवदायक हैं जिनके भजे से जन्म जन्म के किए पाप समस्त विलय होय हैं अहो प्राणी हो जिनवरको नमस्कार करो कैसे हैं जिनवर महा अतिशय के धारक हैं कर्मों के नाशक हैं और परमगति जो निर्वाण उस को प्राप्त भए हैं और सर्व सुरासुर नर विद्याधर उन कर पूजित हैं चरण कमल जिनके और क्रोध रूप महाबैरी का भंगकरन हारे हैं मैं भक्तिरूप भया जिनेन्द्र को नमस्कार करूंहूं उत्तमलक्षण कर संयुक्तहै देह जिनकी औरविनय कर नमस्कार करे हैं सर्व मुनियों के समूह जिनको वे भगवान् नमस्कार मात्रही से भक्तों के भय हरेहैं

अहोभव्य जीव हो जिनवर को बारंवार प्रणाम करो वे जिनवर अनुपम गुण को धरे हैं और अनुपमहै काया जिनकी और हते हैं संसारमई सकल कुकर्म जिन्होंने और रागादिकरूपजेमलतिनकररहितमहानिर्मल हैं और ज्ञानावरणादिक रूप जो पट तिनके दूर करनहारे पारकरबेको अति प्रवीणहैं और अत्यन्तपवित्रहैं इसभान्ति राजा चन्द्रगति ने बीण बजाय भगवान की स्तुति करी तब भगवान् के सिंहासन के नीचेसे राजा जनक भय तज कर जिनराज की स्तुति कर निकसा महाशोभायमान तब चन्द्रगति जनकको देख हर्षित भया है मन जिस का सो पूछता भया तुम कौन हो इस निर्जन स्थानक विषे भगवान् के चैत्यालय विषे कहां से आए हो तुम नागों के पति नागेन्द्र हो अथवा विद्याधरों के अधिपति हो हे मित्र ! तुम्हारा नाम क्या है सो कहो तब जनक कहता भया हे विद्याधरों के पति में मिथिला नगरी से आया हूं और मेरा नाम जनक है मायामई तुरंग मुझे लेआया है जब यह समाचार जनक ने कहे तब दोनों प्रतिकर मिले परस्पर कुशल पूछी एक आसन पर बैठ फिर क्षणएक तिष्ठ कर जब दोनों आपस में विश्वास कों प्राप्तभए तब चन्द्रगति और कथाकर जनक को कहते भए हे महाराजमैं बड़ा पुण्यवान जो मुझे मिथिला नगरी के पतिका दर्शन भया तुम्हारी पुत्री महा शुभ लक्षणों कर मण्डित हैं मैं बहुत लोकों के मुख से सुनी है सो मेरे पुत्र भामण्डल को देवो तुम से सम्बन्ध पाय मैं अपना परमउदय मानूंगा तब जनक कहतेभए हे विद्याधराधिपति तुमने जो कही सो सबयोग्यहै परन्तु मैंने मेरी पुत्री राजा दशरथ के बड़े पुत्र जो श्रीरामचन्द्र तिनको देनी करी है तब चन्द्रगति बोले काहे से उनको देनी करी है तब जनक ने कही-जो तुमको सुनिबेका कौतुक है तो सुनो मेरी मिथिलापुरी

रत्नादिक धनकर और गांय आदि पशुवोंकर पूण सो अर्धबबर देश के म्लेच्छ महाभयंकर उन्होंने आय मेरे देशको पीड़ाकरी धनके समूह लूटने लगे और देश में श्रावक और यतिका धर्म मिटने लगा सो मेरे और म्लेच्छों के महा युद्ध भया उस समय राम आयकर मेरी और मेरे भाईकी सहायता करी वे म्लेच्छ जो देवों से भी दुर्जय सो जीते और रामका छोटाभाई लक्ष्मण इन्द्र समान पराक्रमका धरणहारा है और बड़े भाई का सदा आज्ञाकारी है महा विनय कर संयुक्त है वे दोनों भाई आय कर जो म्लेच्छों की सेना को न जीतते तो समस्त पृथिवी म्लेच्छमई होजाती वे म्लेच्छ महा अविवेकी शुभक्रियारहित लोकको पीड़ाकारी महा भयंकर विष समान दारुण उत्पात का स्वरूपही हैं सो रामके प्रसाद कर सब भाज गए पृथिवीका अमंगल मिटगया वे दोनों राजा दशरथ के पुत्र महा दयालु लोकों के हितकारी तिनको पायकर राजा दशरथ सुखसे सुरपति समान राज्य करे है उस दशरथके राज्य में महासंपदावान् लोक बसे हैं और दशरथ महा शूरवीर है जिसके राज्य में पवनभी किसीका कुछ हर न सके तो और कौन हरे राम लक्ष्मणने मेरा ऐसा उपकार किया तब मुझे ऐसी चिन्ता उपजी कि मैं इनका क्या प्रति उपकार करूं रात्रि दिवस मुझे निद्रा न आवती भई जिसने मेरे प्राण राखे प्रजा राखी उस राम समान मेरे कौन मुझसे कभीभी कछु उनकी सेवा न बनी और उन्होंने बड़ा उपकारकिया तब मैं विचारता भया जो अपना उपकार करे और उसकी सेवा कछु न बने तो क्या जीतव्य कृतघ्न का जीतव्य तृणसमान है तब मैंने अपनी पुत्री सीता नवयौवन पूर्ण राम योग्य जान रामको देनी विचारी तब मेरा सोच कछु इक मिटा मैं चिन्तारूप समुद्र में डूबाथा सो पुत्री नावरूपभई सो पुत्री नावरूप मैं सोच समुद्रसे निकसा राम

महा तेजस्वी हैं यह वचन जसकके सुन चन्द्रगतिके निकट वर्ती और विद्याधर मलिनमुख होय कहतेभए अहो तुम्हारी बुद्धि शोभायमान नहीं तुम भूमिगोचरी अपंडित हो कहां वे रंक म्लेच्छ और कहां उनके जीतवेकी बड़ाई इसमें क्या रामका पराक्रम जिसकी एती प्रशंसा तुमने म्लेछोंके जीतवेकर करी रामका जो एता स्तोत्रकिया सो इसमें उलटी निन्दाहै अहो तुम्हारी बातसुने हांसी आवे है जैसे बालकको विषफल ही अमृत भासे और दरिद्रीको बपरी (बेर) फलही नीके लागें और काक सूकेवृक्ष में प्रीतिकरे यह स्वभावही दुर्निवार है अब तुम भूमिगोचरियों का खोटा सम्बन्ध तजकर यह विद्याधरों का इन्द्र राजा चन्द्रगति इससे सम्बन्ध करो कहां देवों समान सम्पदाके धरणहारे विद्याधर और कहां वे रंक भूमिगोचरी सर्वथा अतिदुखित तब जनक बोलेखारा सागर अत्यन्त विस्तीर्ण है परन्तु तृषा हरता नहीं और वापि का थोड़े ही मिष्ट जल से भरी है सो जीवोंकी तृषा हरे है और अन्धकार अत्यन्त विस्तीर्ण है उसकर क्या और दीपक अल्प भीहै परंतु पृथ्वीमें प्रकाश करे है पदार्थोंका प्रकटकरे है और अनेक मातेहाथीजो पराक्रम न करसकेंसो अकेला केसरी सिंहका बालक करे है ऐसे जब राजाजनकने कहा तब वे सर्व विद्याधर कोपवन्त होय अति शब्द कर भूमिगोचरियोंकी निन्दा करतेभए, हो जनक वे भूमिगोचरी विद्याके प्रभावसे रहित सदा खेदखिन्न शूरवीरता रहित आपदावान तुम कहां उनकी स्तुति करोहो पशुओंमें और उनमें भेद क्या तुम में विवेकनहीं इसलिये उनकी कीर्ति करोहो तब जनक कहते भए हाय हाय बड़ाकष्टहै जो मैंने पाप कर्म के उदयकर बड़े पुरुषोंकी निन्दा सुनी तीन भुवनमें विख्यात जे भगवान ऋषभदेव इंद्रादिक देवोंमें पूजनीक तिनका इक्ष्वाकु वंश लोकमें पवित्र सो क्या तुम्हारे श्रवणमें न आया तीनलोकके पूज्य श्री तीर्थंकर

देव और चक्रवर्ती बलभद्र नारायण सो भूमि गोचरियोंमें उपजे तिनको तुम कौन भांति निंदोहो अहो विद्याधरों पंच कल्याणककी प्राप्ति भूमिगोचारियों हीके होयहै विद्याधरों में कदाचित किसीके तुम ने देखी इक्ष्वाकु वंशमें उपजे बडे बडे राजा जो षट खंड पृथिवीके जीतनहारे तिनके चक्रादि महा रत्न बडी ऋद्धिके स्वामी चक्रके धारी इन्द्रादिककर गाई है उदार कीर्ति जिनकी ऐसे गुणोंके सागर कृत कृत्य पुरुष ऋषभदेवके वंश के बडे २ पृथिवीपति वा भूमिमें अनेक भए उसही वंशमें राजा अनरण्य बडे राजा भए तिनके राणी सुमंगला उसके दशरथ पुत्र भए जे क्षत्री धर्म में तत्पर लोकों की रक्षा निमित्त अपना प्राण त्याग करते न शंके जिनकी आज्ञा समस्त लोक सिर पर धरें जिनकी चार पटरानी मानों चारं दिशाही हैं सर्व शोभाको धरें गुणोंकर उज्ज्वल और पांच सौ और रानी मुखकर जीताहै चन्द्रमा जिन्होंने जे नाना प्रकारके शुभ चरित्रों कर पतिका मन हरेहैं और राजा दशरथके राम बडे पुत्र जिनको पद्म कहिये लक्ष्मीकर मंडित है शरीर जिनका दीप्ति कर जीताहै सूर्य और कीर्ति कर जीताहै चन्द्रमा स्थिरताकर जीताहै सुमेरु शोभा कर जीता इन्द्र शूरवीरता कर जीते हैं सर्व सुभट जिन्होने सुन्दरहैं चरित्र जिनके जिनका छोटा भाई लक्ष्मण जिसके शरीरमें लक्ष्मीका निवास जिस के धनुषको देख शत्रु भयकर भाज जावें और तुम विद्याधरोंको उनसे भी अधिक बतावो हो सो काक भीतो आकाशमें गमन करे हैं तिनमें क्या गुणहैं और भूमिगोचरियों में भगवान तीर्थंकर उपजे हैं तिनको इन्द्रादिक देव भूमिमें मस्तक लगाय नमस्कार करे हैं फिर विद्याधरों की क्या बात ऐसे बचन जब जनक ने कहे तब वे विद्याधर एकांतमें तिष्ठकर आपसमें मन्त्रकर जनकको कहते भए हे भूमिगोचरियोंके नाथ

तुम राम लक्ष्मणका एता प्रभावही कहोहो और वृथा गरजगरज बात करो हो सो हमारे उन के बल पराक्रमकी प्रतीति नहीं इसलिये हम कहे हैं सो सुनो एक वज्रावर्त दूजा सागरावर्त ये दो धनुष जिनकी देव सेवा करें हैं सो ये दोनों धनुष वे दोनों भाई चढ़ावें तो हम उनकी शक्ति जानें बहुत कहने से क्या जो वज्रावर्त धनुष राम चढ़ावें तो तुम्हारी कन्या परणे नातर हम बलात्कार कन्याको यहां ले आवेंगे तुम देखतेही रहोगे तब जनकने कही यह बात प्रमाण है तब उन्होंने दोनों धनुष दिखाए सो जनक उन धनुषोंको अति विषम देखकर कछुइक आकुलताको प्राप्त भया फिर वे विद्याधर भाव थकी भगवानकी पूजा स्तुतिकर गदा और हलादि रत्नोंकर संयुक्त धनुषोंकोले और जनककोले मिथिलापुरी आए और चंद्रगति उपवनसे रथनूपुरगया जबराजाजनक मिथिलापुरी आए तब नगरीकी महाशोभा भई मंगलाचार भए और सबजन सन्मुखआए और वे विद्याधरनगर के बाहिर एक आयुध शालाबनाय वहांधनुष धरे और महागर्वको धरते संते तिष्ठे जनकखेद सहित किंचित भोजन खाय चिंता कर व्याकुल उत्साह रहित सेज पर पडे वहां महा नम्रीभूत उत्तम स्त्री बहुत आदर सहित चंद्रमा की किरण समान उज्जल चमरढारती भई राजा अतिदीर्घ निश्वास महा उष्ण अग्निसमान नाखे तब राणी विदेहाने कहा हे नाथ तुमनेकौन स्वर्ग लोक की देवांगना देखी जिसके अनुराग कर ऐसी अवस्था को प्राप्त भए हो सो हमारे जाननेमें वह कामनी गुण रहित निर्दई है जो तुम्हारे आतापविषे करुणा नहीं करेहै हेनाथवह स्थानक हमें बतावो जहांसे उसे ले आवें तुम्हारे दुःख कर मुझेदुःख और सकल लोकों को दुःख होय है तुम ऐसे महा सौभाग्यवन्त उसे क्यों न रुचे वह कोई पाषाण चित्त है उठो राजाओं को जे उचित

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार्य होंय सो करो यह तम्हारा शरीरहै तो सबही मन वांछित कार्य होंगे'इस भान्ति राणी विदेहा जो प्राण हू से प्रिया सो कहती भई तब राजा बोले हे प्रिये हे शोभने हे वल्लभे मुझे खेद औरही है तू वृथा ऐसी बात कही, काहेको अधिक खेद उपजावे है तुझे इस वृतांतकी गम्यता नहीं इसलिये ऐसे कहे है वह मायामई तुरंग मुझे विजियार्ध गिरिमें लेगया वहां रथनूपरके राजा चन्द्रगतिसे मेरा मिलापभया सो उसने कही तुम्हारी पुत्री मेरे पुत्रको देवो तब मैंने कही मेरी पुत्री दशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्रको देनी करी है तब उसने कही जो रामचन्द्र वज्रावर्त धनुष को चढ़ावें तो तुम्हारी पुत्री परणें नातर मेरा पुत्र परणेगा सो मैं तो पराये वश जाय पड़ा तब उनके भय थकी और अशुभकर्म के उदय थकी यह बात प्रमाण करी सो बज्रावर्त और सागरावर्त दोनों धनुष ले विद्याधर यहां आए हैं वे नगर के बाहिर तिष्ठे हैं, सो मैं ऐसे जानूं हूं ये धनुष इन्द्र से भी चढ़ाए न जावें जिनकी ज्वाला दशों दिशा में फैल रही है और मायामई नाग फुंकारें हैं सो नेत्रों से तो देखा न जावे धनुष बिना चढ़ाए ही स्वतः स्वभाव महाभयानक शब्द करे हैं इनको चढ़ायवे की कहां बात, जो कदाचित् श्री रामचन्द्र धनुष को न चढ़ावें तो यह विद्याधर मेरी पुत्री को जोरावरी ले जावेंगे जैसे स्याल के समीप से मांस की डली खग कहिये पक्षी लेजाय सो धनुष के चढ़ायवे का बीस दिन का करार है जो न बना तो वह कन्या को ले जावेंगे, फिर इसका देखना दुर्लभ है, हे श्रेणिक जबराजा जनकने इसभान्ति कही तबराणी विदेहाके नेत्रअश्रुपात्रसे भरआए और पुत्र के हरनेका दुःखभूलगई थी सो याद आया एक तो प्राचीनदुःख और दूसरा आगमी दुःख सो महाशोककर पीडित भई महाशब्द कर पुकारने लगी ऐसा रुदनकिया जो सकल परिवारके मनुष्य विह्वलहोगये राजासे राणी कहे है हे देव मैंने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐसा कौन पाप किया जो पहिले तो पुत्र हरा गया और अब पुत्री हरी जाय है मेरे तो स्नेह का अवलम्बन एक यह शुभ चेष्टित पुत्री ही है मेरे तुम्हारे सर्व कुटम्ब लोकों के यह पुत्री ही आनन्द का कारण है सो मुझपापिनीके एकदुःख नहीं मिटे है और दूजा दुःख आय प्राप्त होय है। इस भान्ति शोक के सागर में पड़ी रुदन करती हुई राणी को राजा धीर्य बंधाय कहतेभए हे राणी रुदन कर क्या क्योंकि जो पूर्व इस जीव ने कर्म उपार्जे हैं उनके उदय अनुसार फले हैं, संसाररूप नाटकका आचार्यजो कर्म सो समस्त प्राणियोंको नचावे है तेरा पुत्रगयासो अपने अशुभके उदयसे गया, अब शुभ कर्म उदयहै तो सकल मंगल ही होवेंगे, ऐसे नाना प्रकारके सार वचनोंकर राजा जनक ने राणी विदेहा को धीर्यबंधाया तब राणी शान्ति को प्राप्तभई॥

अथानन्तर राजा जनक ने नगर के बाहिर धनुषशाला के समीप जाय स्वयम्बर मंडप रचा और सकल राजपुत्रों के बुलायबेको पत्र पठाए सोपत्र बाचबांच सर्व राजपुत्र आए और अयोध्या नगरी को भी दूत भेजे सो माता पिता संयुक्त रामादिक चारों भाई आएराजा जनक ने बहुत आदर कर पूजे सीता परम सुन्दरी सात सै कन्याओं के मध्य महिल के ऊपर तिष्ठे बड़े बडे सामंत रक्षा करें और एक पंडित खोजा जिसने बहुत देखी बहुत सुनी हैं स्वर्ण रूप बेंतकी छड़ी उसकेहाथ में सो ऊंचे शब्दकर कहे है प्रत्येक राजकुमार को दिखावे है हे राजपुत्री यह श्रीरामचन्द्र कमल लोचन राजा दशरथके पुत्र हैं तू नीके देख और यह इनका छोटा भाई लक्ष्मींवान् लक्ष्मण है महाज्योति को धरे और यह इनका भाई महा बाहु भरत है औरयह इससे छोटा शत्रुघन है यह चारों ही भाई गुणों के सागर हैं इनपुत्रों कर राजा दशरथ पृथिवी की भली भान्ति रक्षा करे है जिसके राज्य में भय का अंकुर भी नहीं और यह हरिवाहन महा

For Private and Personal Use Only

बुद्धिमान् काली घटा समान है प्रभा जिसकी और यह चित्ररथ महागुणवान् महासुन्दर है और यह हर्मुख नामा कुमार अति मनोहर महातेजस्वी है यह श्रीसंजय, यह जय, यह भानु, यह सुप्रभ, यह मंदिर, यह बुध, यह विशाल, यह श्रीधर, यह वीर, यह बन्धु, यह भद्रवल, यह मयूरकुमारइत्यादि अनेक राजकुमार महापराक्रमी महासौभाग्यवान् निर्मलवंश के उपजे चन्द्रमासमाननिर्मलहै कान्ति जिनकीमहा गुणवान् भूषणों के धरणहारे परमउत्साह रूप महाविनयवन्त महाज्ञानी महाचतुर आय इकट्ठे भएहैं और यह संकाशपुर का नाथ इसके हस्ती पर्वत समान और तुरंग महाश्रेष्ठ और रथ महासनोग्य और योधा अद्भुत् पराक्रम के धारी और यह सुरपुर का राजा, यह रन्धू पुर का राजा, यह नंदनीकपुरका राजा यह कुन्दपुर का अतिपति यह मगधदेशका राजेन्द्र यह कंपिल्य नगरका नरपति इनमें कैयक इक्ष्वाकुवंशी और कैयक नागवंशी और कैयक सोमवंशी और कैयक उग्रवंशी और कैयक हरिवंशी और कैयक कूरवंशी इत्यादि महा गुणवन्त जे राजा सुनिए हैं वे सर्व तेरेअर्थ आये हैं सो इनके मध्य जो पुरुष वज्रावर्त धनुष् को चढावे उसेतूंवर जो पुरुषों में श्रेष्ठ होयगा उसी से यह कार्य होयगा इस भान्ति सोजे ने कही और राजा जनक ने सब को अनुक्रम से धनुष की ओर पठाए सोगए सुन्दर है रूप जिनका सो सब ही धनुष को देख कंपायमान होते भए धनुष में से सर्व ओर अग्नि की ज्वाला बिजुली समान निकसे और मायामई भयानक सर्प फुंकार करें तब कैयक तो कानों पर हाथधर भागे और कैयक धनुष को देखकरदूर ही कीले से खड़े रहे कांपे हैं समस्त अंग जिनके और मुंद गए हैं नेत्र जिन के और कैयक ज्वर से व्याकुल भए और कईयक धरती पर गिर पड़े और कईयक ऐसे भएजो बोलन सकें और कईक मूर्छाको

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राप्त भए और कईयक धनुष के नागों के स्वास से जैसे वृक्ष का सूका पत्र पवन से उड़ा उड़ा फिरे तैसे उड़ते फिरें और कईयक कहते भए जो अब जीवते घर जावें तो महादान करें सकल जीवों को अभयदान देवें और कईयक ऐसे कहते भए यह रूपवन्ती कन्या है तो क्या इसके निमित्त प्राण तो न देने राजकुमार विचारते भये कि यह कोई मयामयी विद्याधर आया है सो राजावों के पुत्रों को बाधा उपजाई है और कईयक महाभाग्य ऐसे कहते भए अब हमारे स्त्री से प्रयोजन नहीं यह काम महा दुःखदाई है जैसे अनेक साधु अथवा उत्कृष्ट श्रावग शील व्रत धारे हैं तैसे हम भी शील व्रत धारेंगे धर्म ध्यान कर काल व्यतीत करेंगे इस भान्ति सर्व पराङ्मुख भए और श्रीरामचन्द्र धनुष चढ़ावने को उद्यमी उठ कर महा माते हाथीकी न्याईं मनोहर गतिसे चलते जगत् को मोहते धनुष के निकट गए सो धनुष रामके प्रभावसे ज्वाला रहित होगया जैसा सुन्दर देवोपुनीत रत्न है तैसा सौम्य होगया जैसा गुरु के निकट शिष्य होय जाय तब श्रीरामचन्द्र धनुष को हाथ में ले चढ़ाय कर खैंचते भए सो महाप्रचण्ड शब्द भया पृथिवी कंपायमान भई कैसा है धनुष विस्तीर्ण है प्रभा जिसकी जैसा मेघ गाजे तैसा धनुष का शब्द भया मयूरों के समूह मेघ का आगम जान नाचने लगे जिसके तेज के आगे सूर्य ऐसा भासने लगा जैसा अग्नि का कण भासे और स्वर्णमई रजसे आकाश के प्रदेश व्याप्त होगए यह धनुष देवाधिष्ठित है सो आकाश में देव धन्य धन्य शब्द करते भए और पुष्पों की वर्षा होती भई देव नृत्य करते भए तब श्रीराम महादयावन्त धनुष के शब्द से लोकोंको कम्पायमान देख धनुषको उतारते भए लोक ऐसे डरे मानों समुद्र के भ्रमर में आगए हैं तब सीता अपने नेत्रों से श्रीराम को निरखती भई कैसे हैं नेत्र पवन से चंचल जैसा कमलों का

For Private and Personal Use Only

दल होय तिससे अधिक है कांति जिनकी और जैसा काम का वाण तीक्ष्ण होय तैसे तीक्ष्ण हैं। रोमांचकर संयुक्त सीता ने मनकी वृत्ति रूपमाला तो प्रथम देखतेही इनकी ओर प्रेरीथी फिर लोकाचार निमित्त हाथमें रत्नमाला लेकर श्रीराम के गले में डारी लज्जा से नम्रीभूत है मुख जिसका जैसे जिन धर्म के निकट जीव दया तिष्ठे तैसे राम के निकट सीता आय तिष्ठी श्रीराम अति सुन्दर थे सो इसके समीप से अत्यन्त सुन्दर भासते भए इन दोनों के रूपका दृष्टान्त देनेमें न आवे और लक्ष्मण दूजा धनुष सागरावर्त क्षोभको प्राप्त भया जो समुद्र उस समान है शब्द जिसका उसे चढ़ाय खेंचतेभए सो पृथिवी कम्पायमानभई आकाशमें देव जयजयकार शब्द करतेभए और पुष्पवर्षा होतीभई लक्ष्मण ने धनुषको चढ़ाय खेंचकर जब बाण पर दृष्टि धरी तब सब डरे लोकोंको भय रूप देख आप धनुष की पिणच उतार महा विनय संयुक्त राम के निकट आए जैसे ज्ञान के निकट वैराग्य आवे लक्ष्मण का ऐसा पराक्रम देख चन्द्रगतिका पठाया जो चन्द्रवर्द्धन विद्याधर आया था सो उसने अति प्रसन्न होय अष्टादश कन्या विद्यधरोंकी पुत्री लक्ष्मणको दीनी सो श्रीराम लक्ष्मण दोनों धनुष लेय महाविनयवन्त पितापास आए और सीताभी आई और जेते विद्याधर आएथे सो राम लक्ष्मणका प्रतापदेख चन्द्रवर्धन की लार रथनूपुर गए जाकर राजा चन्द्रगति को सर्व वृत्तान्त कहा सो सुन कर चिन्तावान होय तिष्ठे और स्वयम्बर मण्डपमें रामके भाई भरतभी आएथे सो मनमें ऐसा विचारतेभये कि मेरा और रामलक्ष्मण का कुल एक और पिता एक परंतु इनकासा अद्भुत पराक्रम मेरा नहीं यह पुण्याधिकारीहैं इन कैसे पुण्य मैंने न उपार्जे यह सीता साक्षात्लक्ष्मीकमलके भीतरेदल समानहै वर्ण जिसका राम सारिषे पुण्याधिकारी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हीकी स्त्री होय तब केकई इनकी माता सर्वकलामें प्रवीण भरत के चित्त का अभिप्राय जान पति के कान में कहतीभई हे नाथ भरतका मन कछुइक विलषा दीखैहै ऐसा करो जो यह विरक्त न होय इस जनक के भाई कनक के राणी सुप्रभा उसके पुत्री लोकसुन्दरी है सो स्वयम्बर मण्डप की विधि फिर करावो और वह कन्या भरतके कण्ठमें वरमाला डारे तो यह प्रसन्न होय तब दशरथ इसकी बात प्रमाण कर कनकके कान पहूंचाई तब कनक दशरथकी आज्ञा प्रमाणकर जे राजा गयेथे सो पीछे बुलाये यथायोग स्थानपर तिष्ठे सबजे भूपति वेई भये नक्षत्रों के समूह उनमें तिष्ठता जो भरत रूप चन्द्रमा उसे कनक की पुत्री लोक सुन्दरी रूप शुक्लपक्ष की रात्री सो महा अनुराग से वरती भई मनकी अनुरागता रूप मालातो पहिले अवलोकन करतेही डारीथी फिर लोकाचार मात्र सुमन कहिए पुष्प उनकी भरमालाभी कंठ में डारी कैसी है कनककी पुत्री कनक समान है प्रभा जिसकी जैसे सुभद्राने भरतचक्रवर्तीको वराथा तैसे यह दशरथके पुत्र भरत को वरतीभई गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे श्रेणिक कर्मोंकी विचित्रता देख भरत जैसे विरक्त चित्त राज कन्यापर मोहित भये और सब राजा विलखे होय अपने अपने स्थानक गए जिसने जैसा कर्म उपार्जा होय वैसाही फल पावैहै किसीके द्रव्यको दूसरा चाहनेवाला न पावे ॥

अथानन्तर मिथिलापुरीमें सीता और लोकसुन्दरीके विवाहका परमउत्साहभया कैसीहै मिथिलापुरी ध्वजा और तोरणों के समूह से मण्डित है और महा सुगन्ध की भरीहै शंख आदि वादित्रों के समूह से पूरितहै श्रीरामका और भरतका विवाह महा उत्सव सहित भया द्रव्यसे भिक्षुकलोकपूर्णभये जे राजा विवाह का उत्सव देखनेको रहेथे दशरथ और जनक कनक दोनों भाई से अति सन्मान पाय अपने २ स्थानक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को गये राजा दशरथ और राजा दशरथके चारों पुत्र रामकी स्त्री सीता भरतकी स्त्री लोकसुन्दरी महा उत्सवसे अयोध्याके निकट आये कैसे हैं दशरथके पुत्र सकल पृथिवीपर प्रसिद्धहै कीर्ति जिनकी और परमरूप परमगुण सोईभया समुद्र उसमें मग्नहैं और परम रत्नोंके आभूषणसे शोभितहैं शरीर जिनके माता पिताको उपजायाहै महाहर्ष जिन्होंने नानाप्रकारके वाहन उनकर पूर्ण जो सेना सोईभया सागर जहां अनेक प्रकारके वादित्र बाजे हैं जैसे जल निधि गाजे ऐसी सेना सहित राजा मार्ग मार्ग होय महिल पधारे मार्गमें जनक और कनककी पुत्रीको सबही देखे हैं सो देख२ अति हर्षित होयहैं औरकहे हैं इनकी तुल्य श्री और कोई नहीं यह उत्तम शरीरको धरे हैं इनके देखनेको नगरके नर नारी मार्ग में आय इकट्ठेभये तिन से मार्ग अति संकीर्णभया नगरके दरवाजेसे ले राजा महिल परियन्त मनुष्योंका पारनहीं, कियाहै समस्त जनोंने आदर जिनका ऐसे दशरथके पुत्र इनके श्रेष्ठ गुणोंकी ज्यों ज्यों लोक स्तुति करें त्योंत्यों ये नीचे २ हो रहें महासुखके भोगनहारे ये चारोंही भाई अपने २ महिलमें आनन्दसों विराजे यह सब शुभ कर्म का फल विवेकी जन जानकर ऐसे सुकृत करो जिससे सूर्य से अधिक प्रभाव होय। जेते शोभायमान उत्कृष्ट फलहैं वे सर्व धर्मके प्रभावसे हैं और जे महानिन्द्य कटुक फलहैं वे सब पाप कर्म के उदय से हैं इसलिये सुखके अर्थ पाप क्रियाको तजो और शुभक्रिया करो ॥ इति अष्ठाईसवां पर्व सम्पूर्णम् ।

अथानन्तर आषाढ़ शुक्ल अष्टमीसे अष्टान्हिका का महा उत्सवभया राजा दशरथ जिनेन्द्र की महा उत्कृष्ट पूजा करनेको उद्यमीभया राजा धर्ममें अतिसावधानहै राजाकी सर्व राणी पुत्र बांधव तथा सकल कुटम्ब जिन राजके प्रतिबिम्बोंकी महा पूजा करनेको उद्यमी भए केई बहुत आदरसे पंच वर्णके जे रत्न तिन

For Private and Personal Use Only

पद्म
पुराण
॥४४१॥

के चूर्णका मण्डला मांडे हैं केई नानाप्रकारके रत्नोंकी माला बनावे हैं। भक्तिसे पायाहै अधिकार जिन्हों ने और केई एला (इलायची) कर्पूरादि सुगन्ध द्रव्योंसे जलको सुगन्धकरे हैं और केई सुगन्ध जलसे पृथ्वी को छांटे हैं और केई नानाप्रकारके परम सुगन्ध पीसे हैं और केई जिन मन्दिरोंके द्वारोंकी शोभा अति देदीप्यमान वस्त्रोंसे करावे हैं और केई नानाप्रकारकी धातुओंके रंगोंकर चैत्यालयोंकी भीतियोंको मंड वावें हैं इसभांति अयोध्यापुरीके सबही लोक वीतराग देवकी परम भक्तिको धरते हुए अत्यन्त हर्षसे पूर्ण जिन पूजाके उत्साहसे उत्तम पुण्यको उपार्जते भए राजा दशरथ भगवानका अति विभूति से अभिषेक करावता भया। नाना प्रकारके वादित्र बाजते भए। राजा ने अष्ट दिनों के उपवास किए और जिनेंद्र की अष्ट प्रकारके द्रव्यों से महा पूजा करी और नाना प्रकारके सहज पुष्प और कृत्रिम कहिए स्वर्ण रत्नादि के रचे पुष्पों से अर्चा करी जैसे नन्दीश्वर द्वीप में देवों से संयुक्त इन्द्र जिनेंद्र की पूजा करें तैसे राजा दशरथ ने अयोध्यामें करी और राजा ने चारोंही पटरानियों को गन्धोदक पठाया सो रानीके निकट तो तरुण स्त्री ले गई। सो शीघ्र ही पहुंचा वे उठकर समस्त पापों का दूर करनहारा जो गन्धोधक उसे मस्तक और नेत्रों से लगावती भई और राणी सुप्रभा के निकट वृद्ध खोजा ले गया था सो शीघ्र नहीं पहुंचा इस लिये राणी सुप्रभा परम कोपकर शोक को प्राप्त भई मन में चिंतवती भई जो राजाने उन तीन राणियों को गन्धोदक भेजा और मुझे न भेजा सो राजा का क्या दोषहे मैं पूर्व जन्म में पुण्य न उपजाया वे पुण्यवती महासौभाग्यवंती प्रशंसा योग्यहैं जिन को भगवानका गन्धोदक महापवित्र राजाने पठाया अपमानकर दग्ध जो मैं सोमेरे हृदयका ताप और

भांति न मिटे अब मुझे मरणही शरणहै । ऐसा विचार एक विशाखनामा भण्डारी को बुलाय कहती भई हे भाई यह बात तू किसीको मत कहियो मुझे विषसे प्रयोजनहै सो तू शीघ्र लेआ तब प्रथमतो उसने शंकावान होय लानेमें ढीलकरी फिर विचारी कि औषधिके निमित्त मंगाया होगा सो लेनेको गया और राणी शिथिलगात्र मलिनचित्त वस्त्रओढ़ सेजपर पड़ी राजादशरथने अन्तःपुरमें आयकर तीन राणी देखी सुप्रभा न देखी सुप्रभासे राजाका बहुत स्नेह सो इसके महिलमें राजा आय खड़े रहे उस समय जो विष लेने को पठायाथा सो ले आया और कहताभया । हे देवी यह विष ले यह शब्द राजाने सुना तब उसके हाथसे उठाय लिया और आप राणीकी सेज ऊपर बैठगए तब राणी सेज से उतर बैठी राजाने आग्रहकर सेज ऊपर बैठाई और कहते भए हे बल्लभे ऐसा क्रोध काहे से किया जिसकर प्राण तजा चाहेहे सब वस्तुवोंमें से जीतव्य प्रियहै सर्व दुःखोंसे मरणका बड़ा दुःख है । ऐसा तुझे क्या दुःखहै जो विष मंगाया तू मेरे हृदयका सर्वस्व है जिसने तुझे क्लेश उपजायाहो उस को मैं तत्काल तीव्र दंडदूं हे सुन्दरमुखी तू जिनेंद्रका सिद्धान्त जानेहै शुभअशुभ गतिके कारण जानेहै जो विष तथा शस्त्र आदि से अपघात कर मरेहैं वे दुर्गतिमें पड़े हैं ऐसी बुद्धि तोहि क्रोधसे उपजी सो क्रोध को धिक्कार यह क्रोध महा अंधकार है अब तू प्रसन्न हो जे पतिव्रताहैं तिन में वहजौलग प्रीतम के अनुराग के वचन न सुने तौलग ही क्रोध का आवेश है तब सुप्रभा कहती भई हे नाथ तुम पर कोप कहां परन्तु मुझे ऐसादुख भयाजो मरण बिना शांत न होय तबराजाने कही हे राणी तुझेऐसा क्या दुख भया तब राणीने कही भगवानका गंधोदक और राणियोंकोपठाया और मुझे न पठायासो मेरेमें कौनकार्य

कर हीनता जानी अबतक तुमने मेरा कभी भी अनादर न किया अब काहे से अनादर किया यह बात राजा से राणी कहे है उसी समय वृद्ध खोजा गन्धोदक ले आया और कहता भया हे देवी यह भगवान का गन्धोदक नरनाथ ने तुम को पठाया है सो लेवो और उसी समय तीनों राणी आईं और कहती भईं हे मुग्धे पति की तुमपर अति कृपा है तू कोप को क्यों प्राप्त भई देख हमको तो गन्धोदक दासी ले आई और तेरे वृद्ध खोजा ले आया पतिके तोसे प्रेममें न्यूनता नहीं जो पति में अपराध भी होय और वह आय स्नेह की बात करें तो उत्तम स्त्री प्रसन्न ही होय हैं हे शोभने पति से क्रोध करना सुख के विघ्न का कारण है सो कोप उचित नहीं सो उन्होंने जब इस भांति संतोष उपजाया तब सुप्रभाने प्रसन्न होय गंधोदक सीसपर चढ़ाया और नेत्रों को लगाया राजा खोजा से कोप कर कहते भए हे निकृष्ट तैं एती ढाल क्यों लगाई तब वह भय कर कंपायमान होय हाथ जोड़ सीस निवाय कहता भया हे भक्तवत्सल हे देव हे विज्ञानभूषण अत्यन्त वृद्ध अवस्था कर हीनशक्ति जो मैं सो मेरा क्या अपराध मोपर आप क्रोध करो सो मैं क्रोधका पात्र नहीं प्रथम अवस्था में मेरे भुज हाथी के सूंड समान थे उरस्थल प्रबल था और जांघ गजबंधन तुल्य थी और शरीर दृढ़ था अब कर्म के उदय से शरीर अत्यन्त शिथिल होय गया पूर्वे ऊंची नीची धरती राजहंसकी न्याईं उलंघ जाता मन वांछित स्थान जाय पहुंचताथा अब स्थानक से उठा भी नहीं जाय है तुम्हारे पिता के प्रसाद कर में यह शरीर नाना प्रकार लड़ाया था सो अब कुमित्र की न्याईं दुःख का कारण होय गया पूर्व मुझे वैरीयों के विदारने की शक्तिथी सो अब तो लाठी के अवलंबन कर महाकष्टसे फिरूं हूं बलवान् पुरुषों ने खैंचा जो धनुष उस समान वक्रमेरी पीठ हो गई है और मस्तक के केश अस्थिसमान श्वेत होय

गए हैं और मे रे दांत भी गिर गए मानो शरीर का आताप देख न सके हे राजन्! मेरा समस्त उत्साह विलय गया ऐसे शरीर कर कोई दिनजीवुं हूं सो बड़ा आश्चर्य है जरा से अत्यन्त जर्जर मेरा शरीर सांझ सकारे विनस जायगा, मुझे मेरी काया की सुध नहीं तो और सुध कहांसे होय पूर्वे मे रे नेत्रादिक इन्द्रिय विचक्षणता को धरें थे अब नाम मात्र रह गए हैं पांव धरूं किसी ठौर और परे काहू ठौर समस्त पृथिवी तल दृष्टि से श्याम भासे है ऐसी अवस्था होय गई तो बहुत दिनों से राजद्वार की सेवाहै सो नहीं तजसकूं हूं पके फल समान जो मेरा तन उसे काल शीघ्र ही भक्षण करेगा, मुझे मृत्यु का ऐसा भयनहीं जैसा चाकरी चूकने का भयहै और मे रे आपकी आज्ञाहीका अवलंबन है, और अवलंबन नहीं, शरीर की अशक्तिता कर विलंबहोय ताकू मैं क्याकरूं हेनाथमेराशरीर जराके आधीन जान कोपमतकरो कृपाहीकरो, ऐसे वचन खोजे के राजादशरथ सुनकर वामा हाथ कपोल के लगाय चिन्तावान् होय विचारता भया अहो यह जलके बुदबुदासमान असार शरीर क्षणभंगुरहै और यह यौवनबहुत विभ्रमकोधरे संध्या के प्रकाश समान अनित्य है और अज्ञानका कारणहै विजली के चमत्कार समान शरीर और संपदा तिनके अर्थ अत्यंत दुःख के साधन कर्म यह प्राणी करे है, उन्मत्त स्त्री के कटाक्ष समान चंचल सर्प के फण समान विष के भरे, महाताप के समूह के कारण ये भोग ही जीवन को ठगे हैं, इसलिये महाठग हैं येविषय विनाशीक इनसे प्राप्त हुआ जो दुःख सो मूढ़ों को सुखरूप भासे है ये मूढ़ जीव विषयों को अभिलाषा करे हैं और इनको मन वांछित विषय दुष्प्राप्य हैं विषयों के सुख देखने मात्र मनोग्य हैं और इन के फल अतिकटुक हैं ये विषय इन्द्रायण के फल समान हैं संसारी जीवइन का चाहे हैं सो बड़ा अश्चर्य्य है जे उत्तमजन विषयों को विष तुल्य जान कर तजे हैं और तप करे हैं वे धन्य हैं, अनेक

विवेकी जीव पुण्याधिकारी महा उत्साह के धरणहारे जिन शासन के प्रसादसे प्रबोध को प्राप्त भए हैं मैं कब इन विषयों का त्याग कर स्नेहरूप कीच से निकस निर्वृति का कारण जिनेन्द्रका तप आचरूंगा मैं पृथिवी की बहुत सुख से प्रतिपालना करी और भोग भी मन वांछित भोगे और पुत्र भी मेरे महा पराक्रमी उपजे अबभी मैं वैराग्य में विलंब करूं तो यह बड़ी विपरीति है हमारे वंश की यही रीतिहै कि पुत्र को राज्यलक्ष्मी देकर वैराग्य को धारन कर महाधीर तप करनेको वनमें प्रवेश करें ऐसा चिन्तवन कर राजा भोगोंमें उदासचित्त कई एक दिन घर में रहे। हे श्रेणिक जो वस्तु जिस समय जिस क्षेत्रमें जिसकी जिसको जितनी प्राप्त होनी होय सो उससमयउसक्षेत्र में उससे उसको उतनी निश्चय सेती होय ही होय॥

अथानन्तर गौतमस्वामी कहे हैं हे मगध देश के भूपति कैएक दिनों में सर्व प्राणियों के हितू सर्वभूपति नामा मुनि बड़े आचार्य मन पर्य्यय ज्ञानके धारक पृथिवी विषे विहारकरते संघ सहित सरयू नदीके तीर आए कैसे हैं मुनि पिता समान षट् कायके जीवोंके पालक दया विषे लगाई है मन, वचन, कायकी क्रिया जिन्होंने आचार्यकी आज्ञा पाय कईएक मुनि तो गहन वनमें विराजे कईएक पर्वतोंकी गुफावों में कईएक वन के चैत्यालयों में कईएक वृक्षोंके कोडरोंमें इत्यादि ध्यानके योग स्थानोंमें साधु तिष्ठे और आप आचार्य महेन्द्रोदय नामा वनमें एक शिला पर जहां विकलत्रय जीवोंका संचार नहीं और स्त्री नपुंसक बालक ग्राम्यजन पशुवों का संसर्ग नहीं ऐसा जो निरदोष स्थानक वहां नागवृक्ष के नीचे निवास किया महा गम्भीर महा क्षमावान जिनका दर्शन दुर्लभ कर्म खिपावनेके उद्यमी महा उदार है मन जिनका महा मुनि तिनके स्वामी वर्षाकाल पूर्ण करनेको समाधि योग्य धर तिष्ठे कैसा है

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्षाकाल विदेश गमनकरनेवालोंको भयानक है वर्षती जो मेघमाला और चमकती जो विजुरी और गरजती जो कारीघटा तिनकी भयंकर जो ध्वनि उनसे मानो सूर्यको खिझावता हुवा पृथिवीपर प्रकट भया है सूर्य ग्रीष्म ऋतुमें लोकोंको आतापकारीथा सो अब स्थूल मेघकी धाराके अन्धकारसे भयसाय भाज मेघमालामें छिपा चाहे है और पृथिवीतल हरे नाजकी अंकूरोंरूप कंचुकिनकर मंडितहे और महानदियां के प्रवाह बृद्धिको प्राप्तभए हैं ढाहा पाड़ते बहे हैं इस ऋतुवों में जे गमन करे हैं वे अति कम्पायमान होवे हैं और तिनके चित्तमें अनेक प्रकारकी भ्रान्ति उपजे है ऐसी वर्षा ऋतुमें जैनी जन खड़गकी धारा समान कठिन व्रत निरन्तर धारे हैं चारण मुनि और भूमिचारी मुनि चातुर्मासिक में नाना प्रकारके नियम धरते भए वे मुनि हे श्रेणिक ! तेरी रक्षाकरें रागादिक परणति से तुझे निवृत्त करें ॥

अथानन्तर प्रभात समय राजा दशरथ वादित्रों के नादसे जाग्रत भया जैसे सूर्य उदयको प्राप्त होय और प्रात समय कूकड़े बोलने लगे सारिस चकवा सरोवर तथा नदियों के तट पर शब्द करते भये स्त्री पुरुष सेजसे उठे भगवान के जे चैत्यालय तिन में भेरी मृदंग बीणा वादित्रों के नाद होतेभये लोक निद्राको तज जिन पूजनादिक में प्रवरते दीपक मन्द ज्योतिभए चन्द्रमाकी प्रभा मन्दभई कमल फूले कुमुद मुद्रित भये और जैसे जिन सिद्धान्तके ज्ञाताओंके वचनोंसे मिथ्यावादी विलयजांय तैसे सूर्यकी किरणों से ग्रह तारा नक्षत्र छिपगए इसभांति प्रभात समय अत्यन्त निर्मल प्रकटभया तब राजा देह कृत्य क्रियाकर भगवानकीपूजाकर वारम्बारनमस्कारकरताभया और भद्रजातिकीहथिनीपरचढ देवोंसारिखे जे राजा तिनके समूहोंसे सेव्यमान ठौर ठौर मुनियों को और जिनमन्दिरों को नमस्कार करता महेन्द्रोदय बनमें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पृथिवीपतिगया जिसकी विभूति पृथिवीको आनन्द की उपजावनहारी वर्षों पर्यन्त व्याख्यान करिये तो भी न कह सकिए जो मुनि गुण रूप रत्नों का सागर जिस समय इसकी नगरीके समीप आवे उसही समय इसको खबर होय जो मुनि आये हैं तबही यह दर्शन को जाय सो सर्वभूतहित मुनिको आएसुन तिनके निकट केते समीपी लोगों सहित गया हथिनी से उतर अति हर्षका भरा नमस्कार कर महा भक्ति संयुक्त सिद्धांत सम्बन्धी कथा सुनताभया चारों अनुयोगोंकी चरचा धारी और अतीत अनागत वर्तमान के कालके जे महापुरुष तिनके चरित्र सुने लोकालोकका निरूपण और छह द्रव्योंका स्वरूप छह कायके जीवोंका वर्णन छह लेश्याका व्याख्यान और छहों कालका कथन और कुलकरों की उत्पत्ति और अनेक प्रकार क्षत्रियादिकों के वंश और सप्त तत्व नव पदार्थ पञ्चास्तिकायका वर्णन आचार्य के मुख से श्रवणकर सर्व मुनियों को बारम्बार नमस्कारकर राजा धर्मके अनुरागसे पूर्ण नगरमें आये जिन धर्मके गुणोंकी कथा निकटवर्ती राजाओं और मंत्रियोंसे कर और सबको विदाकर महलमें प्रवेश करता भया विस्तीर्ण है विभव जिसके और राणी लक्ष्मी तुल्य परमकांतिकर सम्पूर्ण चंद्रमासमान संपूर्ण सुंदर बदनकी धरणहारी नेत्र और मनकी हरणहारी हाव भाव विलास विभ्रमकर मंडित महा निपुण परमविनय की करनहारीप्यारी वेई भईकमलोंकी पंक्ति तिनकोराजासूर्यसमान प्रफुल्लितकरताभया॥ इति२६वांपर्वसं०

अथानन्तर मेघके आडम्बरकर युक्त जो वर्षाकाल सो गया और आकाश संभारे खड्गके समान निर्मल भया पद्म महोत्पल पुण्डरीक इंदीवरादि अनेक जातिके कमल प्रफुल्लितभए कैसे हैं कमलादि पुष्प विषयी जीवोंको उन्मादके कारणहैं और नदी सरोवरादिमें जल निर्मल भया जैसा मुनिका चित्त निर्मलहोय तैसा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और इंद्रधनुष जाते रहे पृथ्वी कर्दम रहित होय गई शरदऋतु मानों कुमुदोंके प्रफुल्लित होनेसे हंसती हुई प्रकटभई विजुरियोंके चमत्कारकी संभावनाही गई सूर्य तुला राशिपर आया शरदके श्वेत बादरे कहूं २ दृष्टि आवें सो क्षणमात्रमें विलय जांय निशारूप नवोढा स्त्री संध्याके प्रकाशरूप महा सुन्दर लाल अधरोंको धरे चांदनीरूप निर्मल वस्त्रोंको पहरे चन्द्रमारूप है चूडामणि जिसका सो अत्यन्त शोभती भई और वापिका निर्मल जलकी भरी मनुष्यों के मन को प्रमोद उपजावती भई चकवा चकवीके युगल करे हैं केलि जहां और मदोन्मत्त जे सारिस वे शोर करें हैं भ्रमर जहां कमलोंके वनमें भ्रमते जो राजहंस अत्यंत शोभाको धरे हैं सो सीताकी है चिन्ता जिसके ऐसा जो भामंडल उसे यह ऋतु सुहावनी न लगी अग्नि समान भासे है जगत जिसको एक दिन यह भामंडल लज्जाको तजकर पिताके आगे वसंतध्वज नामा जो परममित्र उसे कहता भया कैसा है भामंडल अभिलाषा रूप ग्रहकर पीडित है अंग जिसका मित्रके कहे है हे मित्र तू दीर्घशोची है और परकार्यमें उद्यमी है एतेदिन होगए तुझे मेरी चिन्तानहीं व्याकुलतारूप भ्रमणको धरे जो आशारूप समुद्र उसमें मैं डुबाई मुझे आलंबन क्यों न देवो ऐसे आर्तिध्यानकर युक्त भामंडलके वचन सुन राजसभाके सर्वलोक प्रभा रहित विषाद संयुक्त होगए तब तिनको महा शोककर तप्तायमान देख भामण्डल लज्जासे अधो मुख हो गया तब एक बृहत्केतु नामा विद्याधर कहताभया अब क्या छिपाव राखो कुमारसे सर्व वृतांत यथार्थ कहो जिससे भ्रांति न रहे तब वे सर्व वृतांत भामंडलसे कहते भए कि हे कुमार हम कन्याके पिताको यहांले आए थे कन्याकी उससे याचना करी सो उसनेकही मैं कन्या रामको देनीकरीहै हमारे और उसके वार्ता बहुत भई वह न माने तब वज्रावर्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धनुषका करारभया जोधनुष राम चढ़ावें तो कन्याको परखे नातर हम यहांले आवेंगे और भामण्डलबिवाहेगा सो धनुषलेकर यहांसे विद्याधर मिथिलापुरीगए सो राममहा पुण्याधिकारीने धनुष चढ़ायाही तब स्वयंबर मंडपमें जनककी पुत्री अति गुणवती महा विवेकवती पतिके हृदयकी हरणहारी व्रत नियमकी धरन हारी नव यौवन मंडित दोषों से असंडित सर्व कला पूर्ण शरद ऋतुकी पूर्णमासी के चन्द्रमा समान मुखकी कांतिको धरे लक्ष्मी सारषी शुभलक्षण लावण्यताकर युक्त सीता महासती श्रीरामके कंठ में बरमाला डार बल्लभा होती भई हे कुमार वे धनुष वर्तमान कालके नहीं गदा और हल आदि देवों पुनीत रत्नोंसे युक्त अनेक देव जिनकी सेवा करें कोई जिनको देख न सके सो वज्रावर्त सागरावर्त दोनों धनुषरामलक्ष्मण दोनोंभाई चढावतेभएवहत्रिलोकसुन्दरीरामने परणी अयोध्या ले गएसो अब वहबलात्कार देवोंसे भी न हारी जाय हमारी क्या बात और कदाचित कहोगे रामको परणाये पहले ही क्यों न हरी सो जनक का मित्र रावण का जमाई मधुहै सो हम कैसे हरसकें इस लिये हे कुमार! अब संतोष धरो निर्मलता भजो होनहार होयसो होय इन्द्रादिक भी और भांति न करसकें तब धनुषचढ़ावनेका वृतान्त और राम से सीता का विहाह हो गया सुन भामण्डल अति लज्जावानहोय बिषाद से पूर्ण भया मन में बिचारे है जो मेरा यह विद्याधर का जन्म निरर्थक है जो मैं हीनपुरुषकी न्याई उसे न परण सका ईषा और क्रोधसे मंडितहोय सभा के लोकों को कहता भया कहां तुम्हारा विद्याधरपना तुम भूमिगोचरियों से भी डरो हो मैं आप जायकर भूमि गोचरियों को जीत उस को ले आऊंगा और जे धनुष दे आए तिनका निग्रह करूंगा सो कहकर शस्त्र सज विमान विषे चढ़ आकाश के मार्ग गया अनेक ग्राम नदी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नगर बन उपवन सरोबर पर्वतादि पूर्ण पृथिवी मंडल देखा तब इस की दृष्टि जो अपने पूर्वभवका स्थानक विग्धपुर पहाड़ों के बीचथा वहां पड़ी चित्तमें चितई कि यहनगर मैंनें देखा है इतने में जाति स्मरणहोय मूर्छा आय गई तब मंत्री ब्याकुल होय पिताके निकटले आए चन्दनादि शीतलद्रब्योंसे छांटा तब प्रबोध को प्राप्तभया राजलोक की स्त्री इसेकहती भईं हे कुमार तुमको यह उचितनहीं जो मातापिताके निकट ऐसी लज्जारहित चेष्टाकरो तुमतो बिचक्षण हो बिद्याधरोंकी कन्या देवांगनासे भी अतिसुन्दरहैं वे परणों लोकहासकहा करावो हो तब भामण्डल ने लज्जा और शोकसे मुखनीचा किया और कहताभया धिक्कार है मुझको मैंने महामोहसे बिरुधकार्य्य चिंता जो चांडालादि अत्यन्त नीचकुल हैं तिनके भी यह कर्म न होंय मैंने अशुभ कर्म के उदय से अत्यन्तमलिनपरणाम किये मैं और सीता एकही माताकेउदरसे उपजे हैं सो अब मेरे अशुभकर्म गया तो जथार्थ जानी सो इसके ऐसेबचन सुनकर और शोककर पीड़ितदेख इस का पिता राजा चन्द्रगति गोदमें लेय मुख चूम पूछता भया हे पुत्र यह तैनेकौनभान्ति कही तबकुमार कहताभया। हे तात मेरा चरित्र सुनो पूर्वभवमें मैं इसही भरतक्षेत्रमें विदग्धपुर नगरका कुंडल मंडित राजाथा परमंडलका लूटनेहारा महाविग्रहका करणहारा पृथ्वीपर प्रसिद्ध निजप्रजाका पालक महाविभवकर संयुक्त सो मैं पापीने मायाचारकर एक विप्रकी स्त्री हरी सो वह विप्रतो अतिदुखी होय कहीं चला गया और मैंने राजा अरण्य के देशमें बाधा करी सो अरण्यका सेनापति बालचन्द्र मुझे पकड़कर लेगया और मेरी सर्व सम्पदा हर लीनी मैं शरीरमात्र रह गया कैएक दिन में बन्दीग्रहसे छूटा सो महादुःखित पृथ्वीपर भ्रमण करता मुनियोंके दर्शनको गया महाब्रत अणुब्रतका व्याख्यान सुना तीन लोकपूजा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो सर्वज्ञ वीतराग देव तिनका पवित्र जो मार्ग उसकी श्रद्धाकरी जगतके बांधव जे श्रीगुरु तिनकी आज्ञाकर मैंने मद्यमांसका त्यागरूप व्रत आदरा क्योंकि मेरी शक्ति हीनथी इसलिये विशेषव्रत न लेय सका देखो जिनशासनका अद्भुत महात्म्य जो मैं महापापीथा सो एतेही व्रतसे मैं दुर्गतिमें न गया जिन धर्मके शरणसे जनककी राणी विदेहाके गर्भ में उपजी और सीताभी उपजी सो कन्या सहित मेरा जन्म भया और वह पूर्वभवका विरोधी विप्र जिसकी मैंने स्त्री हरी थी सो भी देव भया और मुझे जन्मतेही जैसे गृद्ध पत्नी मांसकी डली को लेजाय तैसे नक्षत्रोंसे ऊपर आकाशमें ले गया सो पहिले तो उसने विचार किया कि इसको मारूं फिर करुणासे कुंडल पहराय लघुपरण विद्याकर मुझे यत्न सो डारा सो रात्रिमें आकाशसे पड़ता तुमने झेला और दयावान होय अपनी राणीको सौंपा सो मैं तुम्हारे प्रसादसे वृद्धिको प्राप्तभया अनेक विद्याका धारकभया तुमने बहुत लड़ाया और माताने मेरी बहुत प्रतिपालन करी भामंडल ऐसे कहके चुप होरहा सो राजा चन्द्रगति यह वृतांत सुनकर परम प्रबोध को प्राप्तभया और इंद्रियोंके विषयोंकी वासनातज महावैराग्य अंगीकार करनेको उद्यमीभया ग्राम धर्म कहिए स्त्रीसेवन सोई भया वृक्ष उसे सुखफलोंसे रहित जान और संसारको बन्धन जानकर अपना राज्य भामंडलको देय आप सर्व भूतहित स्वामीके समीप शीघ्रही आया वे सर्व भूतहित स्वामी पृथ्वी पर सूर्यसमान प्रसिद्ध गुणरूप किरणोंके समूहकर भव्य जीवोंको आनन्दके करनहारे सो राजा चन्द्रगति विद्याधरने महेन्द्रोदय उद्यानमें आय मुनिकी अर्चनाकरी । फिर नमस्कार स्तुतिकर सीस निवाय हाथ जोड इस भांति कहताभया हे भगवान तुम्हारे प्रसादकर मैं जिनदीक्षा लेय तप किया चाहूं हूं मैं गृहवास से

For Private and Personal Use Only

उदासभया तब मुनि कहतेभए भवसागरसे पार करणहारी यह भगवती दीक्षाहै सो लेओ राजातो वैराग्य को उद्यमीभया और भामंडलके राज्यका उत्सव होता भया ऊंचे स्वर नगारे बाजे नारी गीत गावतीं भई बांसुरी आदि अनेक वादित्रोंके समूह बाजते भए ताल मंजीरा आदि कांसीके वादित्र बाजे ऐसा बन्दीजनोंका शब्द होताभया कि शोभायमान जनक राजाका पुत्र जयवन्त होवे सो महेंद्रोदय उद्यान में ऐसा मनोहर शब्द रात्रिमें भया जिससे अयोध्याके सर्व जन निद्रा रहित होगए फिर प्रातःसमय मुनिराजके मुखसे महाश्रेष्ठ शब्द सुनकर जैनीजन अति हर्षको प्राप्तभए और सीता जनक राजाका पुत्र जयवन्त होवे ऐसी ध्वनि सुनकर मानों अमृतसे सींची गई रोमांच कर संयुक्त भयाहै सर्व अंग जिस का और फरकेहै बांई आंख जिसकी सोमनमें चितवती भई कि यह जो बारम्बार ऊंचा शब्द सुनिए कि जनकराजा का पुत्र जयवन्त होवे सो मेरा पिताभी जनकहै कनकका बड़ा भाई और मेरा भाई जन्मता ही हरा गया था सो वही न होय ऐसा विचारकर भाई के स्नेहरूप जलकर भीज गयाहै मन जिस का सो ऊंचे स्वरकर रुदन करती भई तब राम अभिराम कहिए सुन्दरहै अंग जिसका महा मधुर बचनकर कहतेभए हे प्रिये तू काहेको रुदन करे है जो यह तेरा भाई है तो अब खबर आवे है और जे और है तो हे पंडिते तू क्यों सोच करे है जे विचक्षणहैं वे मुएका हरेका गएका नष्ट हुएका शोक न करें हैं बल्लभे जे कायर हैं और मूर्ख हैं उनके बिषाद होयहै और जे पंडित हैं पराक्रमी हैं तिनके बिषादनहींहोयहै इस भांति रामके और सीताके बचन होवे हैं उसही समय बधाई वारे मंगल शब्दकरते आए सो राजादशरथने महा हर्ष से बहुत आदर से नानाप्रकार के दानकरे और पुत्रकलत्रादिसर्व कुटुंब सहित वनमें गयासो

नगरके बाहिर चारोंतरफ विद्याधरों की सेना सैकड़ों सामतोंसे पूर्ण देखआश्चर्य को प्राप्त भया विद्याधरों ने इन्द्रके नगरतुल्य सेनाका स्थानक क्षणमात्रमें बनाय राखा है जिसके ऊंचाकोट बड़ा दरवाजा जे पताका तोरण तिनसे शोभायमान रत्नोंसे मंडितऐसा निवास देखराजादशरथ जहां बनमेंसाधु विराजें थे वहांगया नमस्कारकर स्तुतिकर राजाचन्द्रगति का वैराग्य देखा विद्याधरोंसहित श्री गुरूकी पूजा करी राजादशरथ सर्व बांधव सहितएक तरफ बैठा और भामंडल सर्व विद्याधरों सहित एकतरफ बैठा विद्याधर और भूमिगोचरी मुनिके पासयति और श्रावकका धर्म श्रवणकरते भए भामंडल पिताके वैराग्य होयवे कर कछुइक शोकवानबैठा तब मुनि कहते भए जो यतिकाधर्म हैसो शूरवीरोंकाहै जिनके गृहवास नहीं महाशान्त दशाहै आनन्दका कारणहै महा दुर्लभहै त्रैलोक्यमें सार है कायरजीवों को भयानक भासे है भव्य जीव मुनिपदको पायकर अविनाशी धामको पावे हैं अथवा इन्द्र अहमिन्द्र पद लहे हैं लोक के शिखर जो सिद्धस्थानक है सो मुनिपद विना नहीं पाइयेहै कैसे हैं मुनि सम्यग्दर्शन कर मण्डित हैं जिन मार्ग से निर्वाण के सुख को प्राप्त होय और चतुर्गतिके दुख से छूटे सोही मार्ग श्रेष्ठ है सो सर्व भूतहित मुनि ने मेघकी गर्जना समानहै ध्वनि जिसकी सर्व जीवोंके चित्तको आनन्द-कारी ऐसे वचन कहे कैसे हैं मुनि समस्त तत्वोंके ज्ञाता सो मुनिके वचनरूप जल संदेह रूप तापके हरता प्राणी जीवों ने कर्ण रूप अञ्जुलियों से पीए कईएक मुनिभए कईएक श्रावकभये महा धर्मानुराग कर युक्त है चित्त जिनका धर्मका व्याख्यान होयचुका तब दशरथ पूछताभया हे नाथ चन्द्रगति विद्या-धरको कौन कारण वैराग्य उपजा और सीता अपने भाई भामण्डल का चरित्र सुननेकी इच्छा करतीहै

कैसी है सीता महा विनयवन्ती है तब मुनि कहते भये हे दशरथ तुम सुनो इन जीवोंकी अपने अपने उपार्जे कर्मों से विचित्रगति है यह भामण्डल पूर्व संसार में अनन्त भ्रमण कर अति दुःखित भया कर्म रूपी पवनका प्रेरा इस भवमें आकाशसे पड़ता राजा चन्द्रगतिको प्राप्तभया सो चन्द्रगतिने अपनीस्त्री पुष्पवतीको सौंपा सो नवयोवन में सीताका चित्रपट देख मोहितभया तब जनकको एक विद्याधर कृत्रिम अश्व होय लेगया यह करार ठहरा जो धनुष चढ़ावे सो कन्या परणे फिर जनकको मिथिलापुर लेय आए और धनुष लाए सो धनुष श्रीरामने चढ़ाया और सीता परणी तब भामण्डल विद्याधरोंके मुख से यह वार्ता सुन क्रोधकर विमान में बैठ आवे था सो मार्ग में पूर्व भव का नगर देखा तब जातिस्मरण हुवा कि मैं कुण्डलमण्डित नामा इस विदग्धपुर का राजा अधर्मी था पिंगल ब्राह्मण की स्त्री हरी फिर मुझे अरण्य के सेनापति ने पकड़ा देश से काढदिया सर्वस्व लूटलिया सो महापुरुष के आश्रय आय मद्य मांस का त्याग किया शुभ परिणामों से मरणकर जनक की राणी विदेहा के गर्भ से उपजा और वह पिंगल ब्राह्मण जिसकी स्त्री हरी सो बन से काष्ठ लाय स्त्री रहित शून्यकुटी देख अति विलाप करता भया कि हे कमल नयनी तेरी राणी प्रभावती सारिषी माता और चक्रध्वज सारिखे पिता तिनको और बड़ी विभूति और बड़ा परिवार उसे तज मोसे प्रीति कर विदेश आई रूखे आहार और फाटे वस्त्र तैंने मेरे अर्थ से आदरे सुन्दर हैं सर्व अंग जिसके अबतू मुझेतज कहां गई इस भांति वियोगरूप अग्निसे दग्धायमान वह पिंगल विप्र पृथिवी पर महा दुःख सहित भ्रमण कर मुनिराज के उपदेशसे मुनिहोय तप अंगीकार करताभया तपके प्रभावसे देव भया सो मनमें चिन्तवताभया कि वह मेरी कान्ता सम्यक्त

रहितथी सो तिर्यंचगतिको गई अथवा मायाचार रहित सरल परणामथी सो मनुष्यणीभई अथवा समाधि मरणकर जिनराजको उरमें धर देवगतिको प्राप्तभई फिर अवधिजोड़ निश्चय किया कि उसको तो कुण्डल मण्डित हर लेगया था सो कुण्डल मंडित को राजा अरण्य का सेनापति बालचन्द्र बांध कर अरण्य के पास लेगया और सबस्व लूट लिया फिर राजा अरण्य ने इसको राज्य से विमुख कर सर्व देश में अपना अमल कर इसको छोड़दिया सो भ्रमणकरता महा दुखी मुनिका दर्शनकर मधु मांसका त्याग करता भया सो प्राण त्यागकर राजा जनककी स्त्री के गर्भ में आया और वह मेरी स्त्री चित्तोत्सवा सो भी राणी के गर्भ में आई है सो वहतो स्त्री की जाति पराधीन उसका तो कुछ अपराध नहीं और वह पापी कुंडलमंडित का जीव इस राणी के गर्भ में है सो गर्भ में दुःख दूं तो राणी दुःख पावे सो उससे तो मेरा बैर नहीं ऐसी वह देव विचार कर राणी विदेहा के गर्भ में कुंडल मंडित का जीव है उसपर हाथ मसलता निरन्तर गर्भकी चौकसी देवे सो जब बालक का जन्म भया तब बालकको हरा और मनमें विचारी कि इसको शिला पर पटक मारूं अथवा मसल डारूं फिर विचारी कि धिक्कार है मुझ को जो पाप चिन्ता बाल हत्या समान पाप नहीं तब देवने बालक को कुंडल पहराय लघु परण नामा विद्या लगाय बालक को आकाश से डारा सो चन्द्रगति ने झेला और राणी पुष्पवती को सौंपा सो भामण्डल ने जातिस्मरण होय सर्व वृत्तान्त चन्द्रगति को कहा कि सीता मेरी बहिन है और राणी विदेहा मेरी माता है और पुष्पवती मेरी प्रतिपालक माता है यह वार्ता सुन विद्या धरों की सभा सर्व आश्चर्य को प्राप्त भई और चन्द्रगति ने भामण्डल को राज्य देय संसार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शरीर और भोगों से उदास होय वैराग्य अंगीकार करना विचारा और भामंडल को कहताभया हे पुत्र तेरे जन्मदाता माता पिता तेरे शोकसे महादुःखी तिष्ठे हैं सो उनको अपना दर्शनदेय तिनके नेत्रोंको आनन्द उपजाय सो स्वामीसर्वभूतहित मुनिराज राजा दशरथ से कहे हैं यह राजा चन्द्रगति संसार का स्वरूप असार जान हमारे निकट आय जिन दीक्षा धरता भया, जो जन्मा है सो निश्चय से मरेगा और जो मूवा है सो अवश्य नया जन्म धरेगा यह संसार की अवस्था जान चन्द्रगति भव भ्रमण से डरा ये मुनि के वचन सुनकर भामण्डल पूछताभया हे प्रभो चन्द्रगति का और पुष्पवती का मुझपर अधिक स्नेह काहे से भया, तब मुनि बोले, ये पूर्वभवके तेरे माता पिताहैं सो सुन ॥ एक दारूनाम ग्राम वहां ब्राह्मण विमुचि उस के अनुकोशा स्त्री और अतिभूत पुत्र उसकी स्त्री सरसा, और एक कयान नामा परदेशी ब्राह्मण सो अपनी माता ऊर्या सहित दारूग्राम में आया सो पापी अतिभूत की स्त्री सरसाको और इनके घरके सारभूत धनको ले भागा सो अतिभूत महादुःखी होय उसके ढूंढनेको पृथिवीपर भटका और इसका पिता के एक दिन पहिले दक्षिणा के अर्थ देशांतर गया था सो घर पुरुषों बिना सूना होगया जो घरमें थोड़ा बहुतधन रहा था सो भी जाता रहा और अतिभूत की माता अनुकोशा सो दलिद्र से महा दुखी यह सब वृतांत विमुचिने सुना कि घरका धनभी गया और पुत्रकी बहू भी गई और पुत्र ढूंढनेको निकसा है सो नजानिये कौन तरफ़ गया तब विमुचि घर आया और अनुकोशाको अति विह्वल देख धीर्य बन्धाया औा कयान की माताऊर्या सो भी महादुःखिनी पुत्रने अन्यायकार्य किया उससे अतिलज्जायमान सो उसकोभी दिलासा करी कि तेरा अपराध नहीं और आप विमुचि पुत्रके ढूंढने को गया सो एक सर्वारिनाम नगरके बनमें एक अवधि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञानी मुनि सो उसने लोकन के मुखसे उनकी प्रशंसा सुनी कि अवधिज्ञान रूप किरणों कर जगत् में प्रकाश करें हैं तब यह मुनि पै गया धन और पुत्र वधू के जानेसे महादुखी थाहीसो मुनिराजकी तपो ऋद्धि देखकर और संसारकी झूठी माया जान तीव्र वैराग्य पाय विमुचि ब्राह्मणमुनि भया और विमुचिकी स्त्री अनुकोशा और कयान की माता ऊर्य्या ये दोनों ब्राह्मणी कमलकान्ता आर्यिकाके निकट आर्यिकाके व्रत धरतीभई सो विमुचि मुनिऔरवे दोनों आर्यिका तीनोंजीव महानिस्पृह धर्मध्यानके प्रसादसे स्वर्गलोकगए कैसाहै वह लोक सदाप्रकाशरूप है, विमुचिका पुत्र अतिभूत हिंसामार्ग का प्रशंसक और संयमी जीवोंका निन्दक सो आर्त्त रौद्रध्यानके योगसे दुर्गति गया और यह कयान भी दुर्गतिगया और वह सरसा अति भूतकी स्त्री जो कयानकी लार निकसीथी सो वलाहक पर्वतकी तलहटीमें मृगीभई, सो व्याघ्रके भय से मृगोंके यूथसे अकेली होय दावानलमें जलमुई, सो जन्मांतर में चित्तोत्सवा भई और वह कयान भव भ्रमणकर ऊंटभया फिर धूम्रकेश कापुत्र पिंगल भया, और वह अतिभूत सरसाका पति भव भ्रमण करता राक्षससरोवर केतीर हंसभया, सो सिचानूने इसका सर्वअंग घायलकिया, सो चैत्यालयके समीप पड़ावहां गुरु शिष्यको भगवान्का स्तोत्र पढ़ावैथे सो इसनेसुना, हंसकी पर्याय छोड़ दसहजार वर्ष की आयु का धारी नगोत्तर नामा पर्वतविषे किन्नर देव भया वहां से चयकर विदग्धपुरका राजा कुंडलमण्डित भया सो पिंगल के पास से चित्तोत्सवा हरी सो उसका सकल वृतांत पूर्वे कहाही है, और वह विमुचि ब्राह्मण जो स्वर्गलोककोगया था सो राजा चन्द्रगति भया, और अनुकोशाब्राह्मणी पुष्पवतीभई और वह कयानके एकलेय पिंगल होय मुनिव्रतधार देवभया सो उसने भामण्डलको होते ही हरा, और वह ऊर्याब्राह्मणी देवलोकसेचयकर

For Private and Personal Use Only

राणी विदेहा भई। यह सकल वृत्तान्त राजा दशरथ सुनकर भामण्डल से मिला और नेत्र अश्रूपातसे भरलीये और संपूर्णसभा यह कथा सुनकरसजलनेत्र होगई और रोमांच होयआए और सीता अपने भाई भामंडल को देख स्नेहकर मिली और रुदन करती भई, कि हे भाई मैं तुझे प्रथमही देखा और श्री राम लक्ष्मण उठ कर भामण्डलसे मिले, मुनिको नमस्कार कर खेचर भूचर सबही बनसे नगरको गए भामण्डल से मन्त्र कर राजा दशरथने जनक राजा के पास विद्याधर पठाया और जनकको आवनेके अर्थ विमान भेजे राजा दशरथ ने भामण्डलका बहुत सन्मान किया और भामण्डलको अतिरमणीक महिल रहिबेको दीए जहां सुन्दर वापी सरोवर उपवनहैं सो वहां भामण्डल सुखसेतिष्ठा, और राजा दशरथने भामण्डलके आवनेका बहुत उत्सव किया याचकों को वांछा से भी अधिक दान दिया, सो दरिद्र से रहित भए. और राजा जनकके निकट पवनसे भी अति शीघ्र विद्याधर गए, जायकर पुत्र के आगमनकी वधाईदी और राजा दशरथका और भामंडलका पत्र दिया सो बांच कर जनक अति आनन्द को प्राप्त भया, रोमांच होय आए, विद्याधर से राजा पूछे है हे भाई यह स्वप्न है या प्रत्यक्ष है तू आ हमसे मिल, ऐसा कहकर राजा मिले और लोचन सजल होय आए जैसा हर्ष पुत्रके मिलने का होय तैसा पत्र लानेवाले से मिलनेका हर्ष भया सम्पूर्ण वस्त्र आभूषण उसे दिए सब कुटुम्ब के लोगोंने भेले होय उत्सव किया, और बारम्बार पुत्रका वृत्तान्त उसे पूछेहैं और सुन सुन तृप्त न होंय विद्याधर ने सकल वृत्तान्त विस्तार से कहा उसी समय राजा जनक सर्व कुटुम्ब सहित विमान में बैठ अयोध्या को चले सो एक निमिष में जाय पहुंचे कैसी है अयोध्या जहां वादित्रों के नाद होय रहे हैं, जनक शीघ्रही विमान से उतर पुत्र से मिला, सुखकर नेत्र मिल गए, क्षण एक मूर्छा आय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गई फिर सचेत होय अश्रुपातके भरे नेत्रों से पुत्र को देखा और हाथ से स्पर्शा और माता विदेहा भी पुत्रको देख मूर्छित होय गई फिर सचेत होय मिली और रुदन करती भई, जिसके रुदन को सुनकर तिर्यचोंको भी दया उपजे हाय पुत्र तू जन्मतही उत्कृष्ट वैरीसे हरागया था तेरे देखनेको चिन्तारूप अग्नि कर मेरा शरीर दग्ध भया था सो तेरे दर्शन रूप जल से सींचा शीतल भया और धन्य है वह राणी पुष्पवती विद्याधरी जिसने तेरी बाललीला देखी और क्रीड़ा कर धूसरा तेरा अङ्ग उरसे लगाया और मुख चूंमा और नवयोवन अवस्था में चन्दन कर लिप्त सुगन्धों से युक्त तेरा शरीर देखा ऐसे शब्द माता विदेहा ने कहे और नेत्रों से अश्रुपात झरे और स्तनों से दुग्ध झरा और विदेहाको परम आनन्द उपजा जैसे जिनशासनकी सेवक देवी आनन्दसहित तिष्ठे तैसे पुत्रको देख सुखसागरमें तिष्ठी एकमास पर्यन्त यह सर्व अयोध्यामें रहे फिर भामंडल श्रीरामसे कहतेभए कि हे देव इस जानकीके तिहारोही शरण है धन्य हैं भाग्य इसके जो तुम सारिखे पति पाए ऐसे कह बहिनको छाती से लगाया और माता विदेहा सीता को उर से लगायकर कहती भई हे पुत्री तू सासू सुसरकी अधिक सेवा करियो और ऐसा करियो कि जो सर्व कुटम्बमें तेरी प्रशंसा होय सो भामंडलने सबको बुलाया जनकका छोटा भाई जो कनक उसे मिथिलापुरीका राज्य सौंपकर जनक और विदेहाको अपनेस्थानकलेगया यह कथा राजाश्रेणिकसेगौतमस्वामी कहे हैं कि हे मगधदेश के अधिपति तू धर्मका माहात्म्य देख जो धर्मके प्रसादसे श्रीरामदेवके सीता सारिखी स्त्री भई गुणरूपकर पूर्ण, जिसके भामंडलसा भाई विद्याधरोंका इन्द्र और देवाधिष्ठितवे धनुष सो रामने चढ़ाये और जिनके लक्ष्मण सा भाई सेवक यह श्रीरामका चरित्र भामंडलके मिलापका वर्णन जो निर्मल चित्तहोय सुनें उसे मन वांछित फलकी सिद्धि होय और नीरोग शरीरहोय सूर्यसमान प्रभाको पावें ॥ इति तीसवांपर्व संपूर्णम् ।

For Private and Personal Use Only

अथ श्रीरामचन्द्र बनवास नामा त्रतीय महा अधिकारः

अथानन्तर राजाश्रेणिक गौतमस्वामीसे पूछतेभए हे प्रभो वे राजादशरथ जगतके हितकारी राजा अरण्यके पुत्र फिर क्या करतेभए और श्रीराम लक्ष्मणका सर्व वृतांत मैं सुना चाहूं हूं सो कृपा करके कहो तुम्हारा यश तीनलोकमें बिस्तर रहाहै । तब मुनियोंके स्वामी महातप तेजके धारनहारे गौतम गणधर कहते भए जैसा यथार्थ कथन श्री सर्वज्ञदेव बीतरागने भाषाहै तैसा हे भव्योत्तम तू सुन ।

जब राजा दशरथ फिर मुनियोंके दर्शनोंको गए तो सर्व भूतहित स्वामीको नमस्कारकर पूछते भए हे स्वामी मैं संसारमें अनन्त जन्मधरे सो कईभवकी वार्ता तुम्हारे प्रसादसे सुनकर संसारका तजा चाहूंहूं तब साधु दशरथको भव सुननेका अभिलाषी जानकर कहते भए हे राजन सब संसारके जीव अनादि कालसे कर्मोंके सम्बन्धसे अनन्त जन्म मरण करते दुःखही भोगते आएहैं । इस जगत मे जीवों के कर्मों की स्थिति उत्कृष्ट मध्यम जघन्य तीन प्रकार की है और मोक्ष सर्वमें उत्तम है जिसे पंचमगति कहे हैं सो अनन्त जीवोंमें कोइ एकके होयहै सबको नहीं वह पंचमगति कल्याण रूपणी है जहां से फिर आगमन नहीं वह अनन्त सुखका स्थानक शुद्ध सिद्धपद इंन्द्रिय विषय रूप रोगोंकर पीड़ित मोहकर अन्ध प्राणी न पावें । जे तत्वार्थश्रद्धानकर रहित वैराग्यसे वहिर्मुख है और हिंसादिकमें है प्रवृति जिनकी तिनको निरन्तर चतुर्गतिका भ्रमणही है । अभव्योंको तो सर्वथा मुक्ति नहीं निरंतर भव भ्रमणही है और भव्यों में कोई एकको निवृत्ति है जहां तक जीव पुद्गल धर्म अधर्म काल हे सो लोकाकाशहै । और जहां अकेला आकाशही है सो अलोकाकाशहै लोकके शिखर सिद्ध विराजे हैं

इस लोकाकाशमें चेतना लक्षण जीव अनन्त हैं उनका बिनाश नहीं संसारी जीव निरन्तर पृथ्वी काय जलकाय अग्निकाय वायुकाय बनस्पतिकाय त्रसकाय ये छै काय तिनमें देह धार भ्रमण करे हैं यह त्रैलोक्य अनादि अनन्त है इसमें स्थावर जंगम जीव अपने २ कर्मोंके समूहकर बन्धे नाना योनियों में भ्रमण करे हैं और जिनराजके धर्मकर अनन्त सिद्ध भए और अनन्त सिद्ध होवेंगे और होय हैं जिन मार्ग टारकर और मार्ग मोक्ष नहीं। और अनन्तकाल व्यतीत भया और अनन्त काल व्यतीत होयगा। कालका अन्त नहीं जो जीव सन्देह रूप कलंककर कलंकी हैं और पापकर पूर्ण हैं और धर्मको नहीं जाने हैं उनके जैनका श्रद्धान कहां से होय और जिनके श्रद्धान नहीं सम्यक्तसे रहित हैं तिनके धर्म कहांसे होय और धर्मरूप वृक्ष बिना मोक्षफल कैसे पावे अज्ञान अनन्त दुखका कारण है जे मिथ्यादृष्टि अधर्ममें अनुरागी हैं और अतिउग्र पाप कर्मरूप कंचुकी (चोला)कर मंडित हैं। रागादि में विषय के भरे हैं तिनका कल्याण कैसे होय दुःख ही भोगवे हैं एक हस्तिनागपुर विषे उपास्तिनामा पुरुष उस की दीपनी नामा स्त्री सो मिथ्याभिमान करपूर्ण जिसके कुछ नियम व्रत नहीं श्रद्धानरहित महाक्रोधवंती अदे-ख सकी कषायरूप विषकी धारणहारी महादुर्भाव निरंतर साधुवोंकी निंदा करणहारी कुशब्द बोलनहारी महाकृपण कुटिल आप किसी को कदेही न देय और जो कोई दान करे उसको मनेकरे धनकी धिरानी और धर्म न जाने इत्यादिक महादोषकी भरी मिथ्यामार्ग की सेवक सो पापकर्मके प्रभावकर भवसागर विषे अनन्तकाल भ्रमणकरती भई और उपास्तिदान के अनुरागकर चन्द्रपुरनगरविषे भद्रनामा मनुष्य उसके धारिणी स्त्री उसके धारणनामा पुत्र भया भाग्यवान बहुत कुटुम्बी उसके नयनसुन्दरी नामा स्त्री सो धारणजे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्धभाव से मुनियों को आहारदान देय अन्तकाल शरीर तजकर धातुकी खण्डद्वीप विषेउत्कृष्ट भोगभूमि में तीन पल्यसुखभोग देव पर्याय तहांसे चयकर पुष्कलावती नगरी विषे राजानन्दीघोष राणी वसुधा उस के नन्दिवर्धन नामा पुत्र भया एक दिन राजा नन्दिघोष यशोधर नामा मुनि के निकट धर्म श्रवण कर नंदिवर्धन को राज्यदेय आप मुनिभया महातप कर स्वर्ग लोकगया और नन्दिवर्धन ने श्रावक के व्रत धारे पञ्चनमोकार के स्मरण विषे तत्पर कोटि पूर्व पर्यन्त महाराज्य पद के सुख भोग कर अन्तकाल समाधि मरण कर पञ्चमें देवलोक गया वहां से चयकर पश्चिम विदेह विषे विजयार्ध पर्वत वहां शशिपुर नाम नगर वहां राजा रत्नमाली उसके राणी विद्युतलता उसके सूर्य जय नामा पुत्र भया एक दिन रत्न माली महा बलवान नाम सिंहपुर का राजा वज्रलोचन तासूयुद्ध करने को गया अनेक दिव्य रथ हाथी घोड़े पियादे महा पराक्रमी सामन्त लार नानाप्रकार वस्त्रों के धारक राजा होठ डसता धनुष चढ़ाय वस्त्र पहिरे रथ विषे आरूढ़ भयानक आकृतिको धरे आग्नेय विद्याधर शत्रुके स्थानक को दग्ध करवेकी है इच्छा जिसके उस समय कोई एक देव तत्काल आयकर कहता भया हे रत्नमाली तैंने यह क्या आरम्भा अब तू क्रोध तज मैं तेरा पूर्व भवका वृत्तान्त कहूं हूं सो सुन भरत क्षेत्र विषे गांधारी नगरी वहां राजा भूति उसके पुरोहित उपमन्यु सो राजा और पुरोहित दोनों पापी मांसभक्षी एक दिन राजा कवलगर्भ स्वामी के मुखसे व्याख्यान सुन यह व्रत लिया कि मैं पाप का आचरण न करूं सो व्रत मन्यु पुरोहितने छुड़ाय दिया एकसमय राजापर परचक्रुवोंकी धाड आई सो राजा और पुरोहित दोनों मारे गए पुरोहितका जीव हाथी भया सो हाथी युद्धमें घायल होय नमोकार मन्त्र का श्रवण कर

For Private and Personal Use Only

उसी गन्धारी नगरी में राजा भूतिकी राणी योजनगन्धा उसके अरिसूदन नामा पुत्र भया सो उस ने कवलगर्भ मुनिका दर्शन कर पूर्व जन्म स्मरण किया तब महावैराग्य उपजा सो मुनिपद आदरा समाधि मरण कर ग्यारवें स्वर्ग में देवभया सो मैं उपमन्यु पुरोहितका जीव और तू राजाभूत मरकर मन्दारण्यमें मृगभया दावानल में जरमूवा मरकर कलिंजनामा नीचपुरुष भया सो महा पापकर दूजे नरक गया सो मैं स्नेहके योगकर नरकमें तुझे संबोधा आयु पूर्णकर नरक से निकस रत्नमाली विद्याधरभया सो तू वे अब नरक के दुःख भूलगया यह वार्ता सुन राजा रत्नमाली सूर्यंजय पुत्र सहित परम बैराग्यको प्राप्त भया दुर्गति के दुख से डरा तिलकसुन्दर स्वामी का शरण लेय पिता पुत्र दोनों मुनिभए सूर्यंजय तपकर दसमें देवलोक देव भया वहांसे चयकर राजा अरण्यका पुत्र दशरथ भया सो सर्व भूतहित मुनि कहे हैं अल्पमात्र भी सुकृतकर उपास्तिक का जीव कैएक भवमें बडके बीजकी न्याई वृद्धिको प्राप्तभया तू राजा दशरथ उपास्ति का जीव है और नन्दिवर्धन के भव विषे तेरा पिता राजानन्दिघोषमुनि होय ग्रैवेक गया सो वहां से चयकर मैं सर्वभूतहित भया और जो राजाभूत का जीव रत्नमाली भयाथा सो स्वर्गसे आय कर यह जनक भया और उपमन्यु पुरोहित का जीव जिसने रत्नमाली को संबोधाथा सो जनकका भाई कनक भया इस संसार में न कोई अपना है न कोई पर है शुभाशुभ कर्मों कर यह जीव जन्म मरण करे हैं यह पूर्वभव का वर्णन सुन राजा दशरथ निसंदेह होय संयम को सन्मुखभया गुरुके चरणों को नमस्कारकर नगरमें प्रवेश किया निर्मलहै अन्तःकरण जिसका मनमें विचारता भया कि यह महामंडलेश्वर पदका राज्य महा सुबुद्धि जे राम तिनको देकर मैं मुनिव्रत अंगीकार करूं राम धर्मात्मा हैं और महा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धीर हैं धीर्यको धरे हैं यह समुद्रांत पृथिवी का राज्यपालवे समर्थ हैं और भाईभी इनके आज्ञाकारी हैं ऐसा राजा दशरथने चितवन किया कैसे हैं राजा मोहसे परांगमुख और मुक्तिके उद्यमी उस समय शरद ऋतु पूर्णभईऔर हिमऋतु का आगम भया कैसी है शरदऋतु कमलही हैं नेत्र जिसके और चन्द्रमाकी चांदनी सोही है उज्ज्वल वस्त्र जिसके सो मानों हिमऋतु के भयकर भागगई ॥

अथानन्तर हिमऋतु प्रकटभई शीत पड़ने लगा वृक्ष दहे और ठंडी पवन कर लोक व्याकुल भए जिस ऋतु में धनरहित प्राणी जीर्ण कुटि में दुख से काल व्यतीत करे हैं कैसे हैं दरिद्री फट गए हैं अधर और चरण जिनके और बाजे हैं दांत जिनके और रूखे हैं केश जिनके और निरन्तर अग्निका है सेवन जिनके और कभी भी उदर भर भोजन न मिले, कठोर है चर्म जिनका। और घर में कुभार्या के वचनरूप शस्त्रों कर विदारा गया है चित्त जिनका। और काष्ठादिक के भार लायवेको कांधे कुठारादिक को धरे बन बन भटके हैं और शाक बोरफलि आदि ऐसे आहार कर पेट भरे हैं और जे पुण्य के उदय कर राजादिक धनाढ्य पुरुष भए हैं वे बडे महलों में तिष्ठे हैं और शीत के निवारण हारे अगर के धूप की सुगन्धिता कर युक्त सुन्दर वस्त्र पहरे हैं और सुवर्ण और रुपादिक के पात्रों में षट् रस संयुक्त सुगन्धि स्निग्ध भोजन करे हैं, केसर और सुगन्धादि कर लिप्त हैं अंग जिनके, और जिनके निकट धूप दान में धूप खेइये हैं। और परिपूर्ण धन कर चिन्तारहित हैं झरोखों में बैठे लोकन को देखे हैं। और जिन के समीप गीत नृत्यादिक विनोद होयवो करे हैं, रत्नों के आभूषण और सुगन्धमालादिक कर मंडित सुन्दरकथा में उद्यमी हैं और जिन के विनयवान् अनेक कला की जानन हारी महारूपवती पतिव्रता स्त्री हैं।

For Private and Personal Use Only

पुण्य के उदय कर ये संसारीजीव देवगति मनुष्यगति के सुख भोगे हैं और पाप के उदय कर नरक तिर्यंच तथा कुमानुष होय दुःख दरिद्र भोगे हैं, ये सर्व लोक अपने अपने उपार्जित जे कर्म तिनके फल भोगे हैं। ऐसे मन में विचार कर राजा दशरथ संसार के वास से अत्यन्त भय को प्राप्तभया निर्वृति के पायबे की है अभिलाषा जिस के, समस्त भोग वस्तुवों से विरक्त भया द्वारपाल को कहता भया। कैसा है द्वारपाल भूमि में थापा है मस्तक और जोड़े हैं हाथ जिस ने नृपति ने उसे आज्ञाकरी कि हे भद्र सामंत मंत्रीपरोहित सेनापति आदि सब को ले आवो, तब वह द्वारपाल द्वारेपर आय दूजे मनुष्य को द्वारपर मेल तिनको आज्ञा प्रमाण बुलावन को गया, तब वे आयकर राजा को प्रणाम कर यथायोग्य स्थान में तिष्ठे विनतीकर कहते भए हे नाथ आज्ञा करो क्या कार्य है तब राजाने कही मैं संसारकात्याग कर निश्चयसेती संयम धरूंगा, तब मंत्री कहतेभए हे प्रभो तुम कोकौन कारण वैराग्य उपजा, तब नृपतिनेकही कि प्रत्यक्ष यह समस्त जगत् सूके तृण की न्याईं मृत्यु रूप अग्निकर जरे है और जो अभव्यन को अलभ्य और भव्यों को लेने योग्य ऐसा सम्यक्त सहित संयम सो भवतापका हरणहारा और शिवसुख का देनहारा है सुर असुर नर विद्याधरों कर पूज्य प्रशंसा योग्यहै, मैंने आज मुनिके मुख से जिनशासन का व्याख्यान सुना, कैसाहै जिन शासन सकलपापोंका वर्जन हाराहै तीन लोक में प्रकट महा सूक्ष्म चर्चाजिसमेंअतिनिर्मल उपमा रहित है सर्व वस्तुओं में सम्यक्तपरम वस्तु है सो सम्यक्तका मूलजिनशासनहै श्रीगुरुओंके चरणारबिंदके प्रसादकर मैं निर्वृत्तिमार्ग में प्रवृता मेरी भव भ्रांति रूप नदी की कथा आज मैं मुनि के मुखसे सुनी और मुझे जाति स्मरण भया सो मेरे अंग देखो त्रास कर कांपे हैं कैसी है मेरी भवभ्रान्तिनदी नानाप्रकारके जे जन्म वेही हैं भ्रमण

जिस में और मोह रूप कीच कर मलिन कुतर्करूप ग्राहों कर पूर्ण महादुःख रूप लहर उठे हैं निरन्तर जिसमें, मिथ्यारूप जल कर भरी मृत्युरूप मगरमच्छों का है भय जिसमें रुदनके महाशब्दको धरे, अधर्म प्रवाह कर बहती अज्ञानरूप पर्वत से निकसी संसार रूप समुद्र में है प्रवेश जिस का सो अब मैं इस भवनदी को उलंघकर शिवपुरी जायवे का उद्यमी भयाहूं तुम मोह के प्रेरे कछु वृथा मत कहो संसार समुद्र तर निर्वाण द्वीप जाते अन्तराय मत करो जैसे सूर्य्य के उदय होते अंधकार न रहे तैसे सम्यक् ज्ञान के होते संशय तिमिर कहांरहे इसलिये मेरे पुत्र को राज्य देवो अब ही पुत्र का अभिषेक करावो मैं तपोबन में प्रवेश करूं हूं ये वचन सुन मंत्री सामंत राजा को वैराग्य का निश्चय जान परमशोक को प्राप्त भए नीचे होय गए हैं मस्तक जिनके और अश्रुपात कर भर गए हैं नेत्र जिन के अंगुरी कर भूमि को कुचरते क्षण मात्र में प्रभारहित होय गए, मौन से तिष्ठे और सकल ही रणवास प्राणनाथ का निर्ग्रन्थ व्रत का निश्चय सुन शोक को प्राप्त भया अनेक विनोद करते थे सो तज कर आंसुओं से लोचन भर लिए, और महारुदन किया और भरत पिता का वैराग्य सुन आप भी प्रतिबोध को प्राप्त भए, चित्त में चितवते भए अहो यह स्नेह का बन्ध छेदना कठिन है हमारा पिता ज्ञान को प्राप्त भया जिनदीक्षा लेने को इच्छे है, अब इनके राज्य की चिन्ता कहां; मुझे तो न किसी को कुछ पूछना न कुछ करना तपोवन में प्रवेश करूंगा संयम धरूंगा। कैसा है संयम संसार के दुःखों का क्षय करणहारा है और मेरे इस देह कर भी क्या कैसा है यह देह व्याधि का घर है और विनश्वर है सो यदि देहही से मेरा सम्बन्ध नहीं तो बांधवों से कैसा सम्बन्ध यह सब अपने अपने कर्म फल के भोगता हैं, यह प्राणी मोह कर अन्धा है

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुःख रूप वन में अकला ही भटके है कैसा है दुःख रूप वन अनेक भव भय रूप वृक्षों से भरा है ॥

अथानन्तर केकई सकल कला की जाननहारी भरतकी यह चेष्टाजान अतिशोकको धरती मनमें चितवे है कि भरतार और पुत्र दोनोंही वैराग्य धारा चाहेहैं कौनउपायकर इनका निवारण करूं इसभांति चिन्ता कर व्याकुलभया है मन जिसका तब उसको राजाने जो वरदीयाथा सो याद आया और शीघ्रही पतिपै जा आये सिंहासनपर बैठी और बीनती करती भई कि हे नाथ सबही स्त्रियों के निकट तुमने मुझे कृपा कर कही थी जोतू मांगे सो में देउ सो अब देवो तुम महा सत्यवादीहो औरदानकर निर्मलकीर्ति तुम्हारी जगत्में विस्तर रही है तब दशरथ कहतेभये हे प्रिये जो तेरी वांछा होय सोही लेहु तब राणी केकई आंसू डारती संती कहताभई हे नाथ हमने ऐसी क्या चूककी जो तुम कठोर चित्तकिया हमको तजाचाहोहो हमारा जीवतो तुम्हारे आधीन है और यह जिनदीक्षा अत्यन्त दुर्धर सो लेयवेको तुम्हारी बुद्धि काहेको प्रवृत्तिहै यह इन्द्र समान जे भोग उनकर लडाया जो तुम्हारा शरीर सो कैसे मुनिपद धारोगे कैसाहै मुनिपद अत्यन्त विषमहै इस भांति जब राणी केकईने कहा तब आप कहतेभए हे कांते समर्थोंको कहां विषम मैंतो निसन्देह मुनिव्रत धरूंगा तेरी अभिलाषा होय सो मांग लेवो तब राणी चिन्तावान होय नीचा मुखकर कहतीभई हे नाथ मेरे पुत्रको राज्य देवो तब दशरथ बोले इसमें क्या सन्देह तैं धरोहर हमारे मेलीथी सो अब लेवो तैंने जो कहा सो हमने प्रमाणकिया अब शोक तज तैंने मुझे ऋण रहित किया तब राम लक्ष्मणको बुलाय दशरथ कहताभया कैसे हैं दोनों भाई महा विनयवान हैं पिताके आज्ञाकारी हैं राजा कहे है हे वत्स यह केकई अनेक कलाकी पारगामिनी इसने पूर्व महा घोर संग्राममें मेरा सारथिपना किया यह अतिचतुर

For Private and Personal Use Only

हे मेरी जीत भई तब मैं तुष्टायमान होय इसे वर दीया कि जो तेरें बांछा होय सो मांग तब इसने वचन मेरे धरोहर मेला अब यह कहे है कि मेरे पुत्रको राज्य देवो सो जो इसके पुत्रको राज्य न देउं तो इसका पुत्र भरत संसार का त्यागकरे और यह पुत्रके शोककर प्राण तजे और मेरी वचन चूकने की अकीर्ति जगत्में विस्तरे और यह काम मर्यादा से विपरीतहै कि जो बड़े पुत्रको छोड़कर छोटे पुत्रको राज्यदेना और भरतको सकल पृथिवीका राज्य दीए तुम लक्ष्मणसहित कहां जावो तुम दोनोंभाई परमत्तत्री तेज के धरणहारे हो इसलिये हे वत्स मैं क्या करूं दोनोही कठिन बात आय बनी हैं मैं अत्यन्तदुःखरूप चिंता के सागर में पड़ा हूं तब श्रीरामचन्द्रजी महा विनयको धरतेभए पिताके चरणारविंदकी ओर हैं नेत्र जिन के और महा सज्जन भावको धरेहैं हे तात तुम अपने वचनको पालो हमारी चिंता तजो जो तुम्हारे वचन चूकने की अपकीर्ति होय और हमारे इन्द्रकी सम्पदा आवे तो कौन अर्थ जो सुपुत्रहैं सो ऐसाही कार्य करे जिसकर माता पिताको रंचमात्रभी शोक न उपजे पुत्रका यही पुत्रपना पंडित कहे हैं जो पिताको पवित्र करे और कष्ट से रक्षा करे पवित्र करणा यह कहावे जो उनको जिनधर्म के सन्मुख करे दशरथ के और राम लक्ष्मणके यह बात होयहै उसी समय भरत महिलसे उतरा मनमें विचारी कि मैं कर्मों को हनूं मुनिव्रत धरूं सो लोकोंके मुखसे हाहाकार शब्दभया तब पिताने विह्वल चित्तहोय भरतो बन जायवे से राखा गोद में ले बैठे छातीसे लगाय लिया मुख चूमा और कहते भए हे पुत्र तू प्रजाका पालन कर मैं तप के अर्थ बनमें जाऊं हूं भरत बोले मैं राज्य न करूं जिन दीक्षा धरूंगा तब राजा कहतेभये हे वत्स कईएकदिन राज्यकरो तुम्हारी नवीन वय है वृद्ध अवस्था में तप करियो तब भरतने कही हे तात

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो मृत्यु है सो बालवृद्ध तरुणको नहीं देखे है सर्वभक्षी है तुम मुझे वृथा काहेको मोह उपजावोहो तब राजाने कही हे पुत्र गृहस्थाश्रममें भी धर्म का संग्रह होयहे कुमानुषों से नहीं बने है तब भरतने कही हे नाथ इन्द्रियोंके वशवर्ति काम क्रोधादिकके भरे गृहस्थनको मुक्ति कहां तब भूपतिनेंकही हे भरत मुनि योंमेंभी सबही तद्भव मुक्ति नहीं होय हैं कईएक होयहैं इसलिये तू कईएक दिन गृहस्तधर्म आराध तब भरतने कही हे देव आपनें जो कही सो सत्यहे परन्तु जो गृहस्थियों का तो यह नियमही है कि गृहस्थमें मुक्ति न होय और मुनियोंमें कोई होय कोई न होय गृहस्थधर्मसे परम्पराय मुक्तिहोय साक्षात नहीं इस लिये यह शक्तिवालोंका काम नहींहे मुझे यह बात न रुचे मैं महाव्रत धरणेकोही अभिलाषी हूं गरुड़ कहां कागोंकी रीति आचरे कुमानुष कामरूप अग्निकी ज्वालाकर परम दाहको प्राप्तभए संते स्पर्शइंद्रियों और जिह्वा इन्द्रियकर अधमकार्य करे हैं तिनको निवृत्ति कहां पापी जीव धर्मसे विमुख भोगनको सेय कर निश्चय सेती महा दुःख दाता जो दुर्गति उसे प्राप्त होय हैं ये भोग दुर्गतिके उपजावनहारे और राखे न रहें क्षणभंगुर इसलिये त्याज्यही हैं ज्योंज्यों कामरूप अग्निमें भोगरूप इंधन डारिये त्योंत्यों अत्यंत तापकीकरणहारीकामाग्नि प्रज्वलितहोयहे इसलिये हे तात तुममुझे आज्ञादेवो जो वनमें जाय विधिपूर्वकतप करूं जिनभाषित तप परम निर्जराका कारणहै इससंसारसे में अतिभयको प्राप्तभयाहूं और हे प्रभो जो घरहीमें कल्याण होय तो तुम काहेको घरतज मुनि हुआ चाहोहो तुम मेरे तातहो सो तातका यही धर्म है कि संसारसमुद्रसे तारे तपकी अनुमोदना करे यह बात विचक्षण पुरुष कहे हैं शरीर स्त्री धन मातापिता भाई सकलको तज यह जीव अकेलाही परलोकको जायहे चिरकाल देवलोकके सुख भोगे तोभी यह तृप्त

मैं भया सो कैसे मनुष्योंके भोगोंकि इच्छाहोय पिता भरतके ये वचन सुनकर बहुत प्रसन्न भया हर्षसे जाकी रोमांच होय आए और कहता भया हे पुत्र तू धन्य है भव्योंमें मुख्य है जिनशासनका रहस्य जान प्रतिबोध को प्राप्त भयाहै तू जो कहे है सो प्रमाण है तथापि हे धीर तैंने अबतक कभी भी मेरी आज्ञाभंग न करी तू विनयवान पुरुषोंमें प्रधान है मेरी बात सुन तेरी माता केकईने युद्धमें मेरा सारथीपना किया वह युद्ध अति विषमथा जिसमें जीवनेकी आशा नहीं थी सो इसके सारथीपनेसे युद्धमें विजय पाई तब मैं तुष्टायमान होय इसको कहा जो तेरी वांछा होय सो मांग तब इसने कहा यह वचन भण्डार रहे जिस दिन मुझे इच्छा होयगी उस दिन मांगूगी सो आज उसने यह मांगी कि मेरे पुत्रको राज्य देवो सो मैं प्रमाण किया अब हे गुणनिधे तू इन्द्रके राज्यसमान यह राज्य निःकंटककर ताकि मेरी प्रतिज्ञा भंगकी कीर्ति जगतमें न होय और यह तेरी माता तेरे शोककर तप्तायमान होय मरणको न पावे कैसी है यह निरन्तर सुखकर लडायाहै शरीर जिसने अस्य कहिए पुत्र उसका यही पुत्रपनाहै कि माता पिताको शोक समुद्रमें न डारे यह बात बुद्धिमान कहे हैं इस भांति राजाने भरतको कहा ॥

अथानन्तर श्रीराम भरतका हाथ पकड़ महा मधुरवचनसे प्रेमकी भरी दृष्टिकर देखते संते कहते भए कि हे भ्रात तातने जैसे वचन तुझे कहे ऐसे और कौन कहने समर्थ जो समुद्रसे रत्नोंकी उत्पति होय सो सरोवरसे कहां अबार तेरी वय तपके योग्य नहीं केयक दिन राज्यकर जिससे पिताकी कीर्ति वचन पालिवेको चन्द्रमासमान निर्मलहोय और तू सारिखे पुत्रके होते संते माता शोककर तप्तायमान मरण को प्राप्त होय यह योग्य नहीं और मैं पर्वत अथवा वनमें ऐसी जगह निवास करूंगा जो कोई न

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाने तू निश्चिंत राज्यकर मैं सकल राज ऋद्धि तज देशसे दूर रहूंगा और पृथ्वी को पीड़ा किसी प्रकार न होयगी इसलिये अब तू दीर्घ सांस मत डारे केयक दिन पिताकी आज्ञामान राज्यकर न्याय सहित पृथ्वीकी रक्षाकर हे निर्मलस्वभाव यह इक्ष्वाकु वंशियोंका कुल उसे तू अत्यन्त शोभायमान कर जैसे चन्द्रमा ग्रह नक्षत्रादिकको शोभायमान करे है भाईका यही भाईपना पंडितों ने कहा है कि भाइयों की रक्षा करे संताप हरे श्रीरामचन्द्र ऐसे वचन कहकर पिताके चरणोंको भाव सहित प्रणाम कर चल पड़े तब पिताको मूर्छा आगई काष्ठके स्तम्भसमान शरीर होगया राम तर्कश बांध धनुष हाथमें लेय माता को नमस्कार कर कहते भए हे माता हम अन्य देशको जांय हैं तुम चिन्ता न करनी तब माता को भी मूर्छा आ गई फिर सचेत होय आंसू डारती संती कहती भई कि हे पुत्र तुम मुझे शोक के समुद्रमें डार कहां जावो हो तुम उत्तम चेष्टाके धरणहारे हो माताके पुत्रही आलंबन है जैसे शाखा के मूल आधार हैं माता रुदन करती विलाप करती भई तब श्रीराम माताकी भक्तिमें तत्पर उसे प्रणाम कर कहते भए हे माता तुम विषाद मत करो मैं दक्षिण दिशामें कोई स्थानककर तुमको निःसन्देह बुलाऊंगा हमारे पिताने माता केकईको वर दिया सो उसके भरतको राज्य दिया अब यहां न रहूं विन्ध्याचलके वनमें अथवा मलयाचलके वनमें तथा समुद्रके समीप स्थानक करूंगा मैं सूर्यसमान यहां रहूं तो भरत चन्द्रमाकी आज्ञा ऐश्वर्य कान्ति न विस्तरे तब माता नम्रीभूत जो पुत्र उसे उससे लगाय रुदन करती संती कहती भई हे पुत्र मुझे तुम्हारे संग ही चलना उचित है तुमको देखे बिना मैं प्राणोंके रखनेको समर्थ नहीं जे कुलवन्ती स्त्री हैं तिनके पिता अथवा पति तथा पुत्र यही आश्रय हैं सो पिता तो काल वश भया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और पति जिनदीक्षा लेयबे को उद्यमी भया है अबतो पुत्रही का अवलंबन है सो तुपभी छोड चलेतो मेरी क्या गति तब राम बोले हे मात मार्ग में पाषाण और कंटक बहुत हैं तुम कैसे पावोंसे चलोगी इस लिये कोई सुखकारस्थान कर असवारी भेज तुमको बुलालूंगा मुझे तुम्हारे चरणों की सौं है तुम्हारे लेने को मैं आऊंगा तुम चिंतामत करो ऐसेकह माता को शांतता उपजाय हंससत हुए फिर पिताके पासगए पितामुर्छित होय गए सो सचेतभया ए पिताको प्रणामकर दूसरी मातावों पै गए सुमित्रा केकई सुप्रभा सब को प्रणाम कर विदा हुए कैसे हैं राम न्यायमेंप्रवीण निराकुल है चित्त जिनका तथा भाई बंधु मंत्री अनेक राजा उमराव परिवार के लोकसबको शुभवचन कह विदाभए सबको बहुत दिलासाकर छातीसे लगाय उनके आंसू पूंछे उन्होंने घनीही विनती करी कि यहांही रहो सो न मानी सामन्त तथा हाथी घोडे रथ सब की ओर कृपा दृष्टि कर देखा फिर बडे २ सामन्त हाथी घोडे भेट लाए सो रामने न राखे सीता अपनेपति को विदेश गमनको उद्यमी देख सुसरा और सासुनको प्रणामकर नाथके संग चली जैसे शचीइन्द्र के संग चले और लक्षमण स्नेहकर पूर्ण रामको विदेश गमन को उद्यमी देख चित्त में क्रोधकर चितवता भया कि हमारे पिता ने स्त्रीके कहे से यह क्या अन्यायकार्य विचारा जो रामकोटार और को राज्य दिया धिक्कार है स्त्रियों को जो अनुचित काम करती शंका न करें, स्वार्थ विषे आसक्त है चित्तजिनका और यह बड़ा भाई महानुभाव पुरुषोत्तम है सो ऐसे परिणाम मुनियोंके होयहैं, और मैं ऐसा सामर्थ हूं जो समस्त दुराचारियों का पराभव कर भरतकोराज्यलक्ष्मी से रहित करूं और राज्य लक्ष्मी श्रीरामकेचरणों में लाऊं परन्तु यह बात उचित नहीं क्रोध महा दुखदाई है जीवों को अन्ध करे है पिता तो दीक्षा को उद्यमी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भया और मैं क्रोध उपजाऊं सो योग्य नहीं और मोहि ऐसे विचार करना योग्य और अयोग्य पिता जाने अथवा बडा भाई जाने जिसमें पिताकी कीर्ति उज्ज्वल होय सो कर्तव्य है । मुझेकिसीको कछु न कहना मैं मौन पकड बडे भाई के संग जाऊंगा कैसा है यह भाई साधु समान है भाव जिसके ऐसा विचार कर कोप तज धनुष बाणलेय समस्त गुरुजनों को प्रणाम कर महाविनय संपन्न राम के संग चला दोनों भाई जैसे देवालय से देवनिकलें तैसे मन्दिर से निकसे और माता पिता सकल परिवार और भरत शत्रुघ्न सहित इनके वियोग से अश्रूपात कर मानों वर्षा ऋतु करते संते रासवे-को चले सो राम लक्ष्मण अतिपिताभक्त सम्बोधने को महापंडित विदेश जायवे ही कहि निश्चय जिनकेसोमातापिताकीबहुत स्तुतिकर बारंबार नमस्कारकरबहुतधीर्य्यबंधायमुशकिलसेपीछेफेरे सो नगरमें हाहाकार भया लोकवार्ताकरे हैं हेमात यह क्या भया यह कौन ने मत उठाया इस नगरी ही का अभाग्यहै अथवा सकलपृथिवीका अभाग्य है हम तो अब यहां न रहेंगे इनके लार चलेंगे ये महासमर्थ हैं और देखो यह सीता नाथ के संग चली है और राम की सेवा करणहारा लक्ष्मण भाई है धन्य है यह जानकी बिनयरूप बस्त्र पहिरे भरतार के संग जाय है नगर की नारी कहे हैं हम सबको शिक्षा देनहारी यह सीतामहापतिव्रता है इस समान और नारी नहीं जे महा पतिव्रता होंय सो इस की उपमा पावें पतिव्रताओं के भरतार ही देव हैं और देखो यह लक्ष्मण माता को रोवती छोड़ बड़े भाई के संग जाय है धन्य इसकीभक्ति धन्यइसकीप्रीति धन्यइसकीशक्ति धन्यइसकी क्षमा धन्य इसकीबिनय की अधिकता इस समान और नहीं और दशरथनेभरतको यहक्याआज्ञाकरीजो तू राज्य लेहु और राम लक्ष्मणको यह क्या बुद्धि उपजी जोअयोध्याको छोड़ चले जिसकालमेंजो होनी होय सोहोय है

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिस के जैसा कर्म उदयहोय तैसीही होय जो भगवान्के ज्ञानमें भासा है सो होय दैवगति दुर्निवार है, यह बात बहुत अनुचित होय है यहां के देवता कहां गए ऐसे लोगों के मुखसे ध्वनि होती भई । सब लोक इनकेलार चलनेको उद्यमी भए घरों से निकसे नगरी का उत्साह जाता रहा शोककर पूर्ण जो लोकतिनके अश्रुपातों कर पृथिवी सजल होय गई जैसे समुद्र की लहर उठें है तैसे लोक उठे राम के संग चले, मने किये भी न रहें राम को भक्ति कर लोक पूजें संभाषण करें सो राम पैंड पैंड में विघ्न मानें इन का भाव चलने का लोक ऐसाचाहें के लार चलें राम का विदेश गमन मानो सूर्य्य देख न सका, सो अस्त होने लगा अस्त समय सूर्य के प्रकाश ने सर्व दिशा तजी जैसे भरत चक्रवर्ती ने मुक्ति के निमित्त राज्य संपदा तजी थी सूर्य के अस्त होते परम राग को धरती संती सन्ध्या सूर्य के पीछे ही चली, जैसे सीता राम के पीछे चले और समस्त विज्ञान का विध्वंस करणहारा अन्धकार जगत् में व्याप्त भया, मानों राम को गमन से तिमिर विस्तरा, लोग लार लागे सोरहें नहीं तब रामने लोकोंके टारिनेको श्री अरनाथ तीर्थंकर के चैत्यालयमें निवासकरना विचारा संसारकेतारणहारे भगवानतिनकाभवनसदाशोभायमान महासुगन्ध अष्ट मंगल द्रव्यों कर मंडित जिसके तीनदरवाजे ऊंचातोरण सो राम लक्ष्मण सीताप्रदक्षिणा देय चैत्यालयमें गए समस्त विधिके वेत्ता दोयदरवाज़ेतक तो लोक चलेगए तीसरे दरवाजे पर द्वारपालने रोकाजैसे मोहिनीकर्म मिथ्या दृष्टियों को शिवपुर जाने से रोके है, राम लक्ष्मण धनुषबाण और बखतर बाहिर मेल भीतर दर्शनको गए कमल समान हैं नेत्र जिनके श्रीअरनाथ का प्रतिबिंब रत्नों केसिंहासनपरविराजमान महाशोभायमान महासौम्यकायोत्सर्गश्रीवत्सलक्षणकर देदीप्यमानहै उरस्थलजिनकाप्रकट हैं समस्तलक्षण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनके संपूर्णचन्द्रमा समानबदन फूले कमलसे नेत्रजाकथन में और चितवनमें न आवे ऐसा है रूपजिनका तिनका दर्शनकर भावसहित नमस्कारकर ये दोनोंभाई परमहर्ष कोप्राप्तभए, कैसे हैं दोनों बुद्धि पराक्रमरूप लज्जा के भरे जिनेंद्र की भक्ति में तत्पर रात्रि को चैत्यालय के- समीप ही रहे, वहां इनको वसे जान कर माता कौशल्यादिक पुत्रों विषे है वात्सल्य जिनका आय कर आंसू डारती बारम्बार उरसों लगावती भई पुत्रोंके दर्शनमें अतृप्त विकल्परूप हिंडोलेमें झूले है चित्त जिनका गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक सर्वशुद्धता में मनकी शुद्धता महा प्रशंसा योग्यहै स्त्रीपुत्रको भी उरसे लगावे और पतिको भी उरसे लगावे परन्तु परणामों का अभिप्राय जुदा २ है दशरथकी चारों ही राणी गुणरूप लावण्यताकर पूर्ण महामिष्टवादिनी पुत्रों से मिल पतिपै गई जायकर कहती भई कैसाहै पति सुमेरुसमान निश्चलहै भाव जिसका राणी कहे हैं हे देव कुलरूप जहाज शोकरूप समुद्रमें डूबे है सो थांभो राम लक्ष्मणको पीछे लावो तब राजा कहते भए यह जगत विकाररूप मेरे आधीन नहीं मेरी इच्छातो यहही है कि सर्व जीवों को सुख होय किसीको भी दुःख न होय जन्म जरा मरणरूप पारधियोंकर कोई जीव पीडा न जाय परंतु ये जीव नानाप्रकारके कर्मों की स्थितिको धरे हैं इस लिये कौन विवेकी वृथा शोककरे। बांधवादिक इष्टपदार्थोंके दर्शनमें प्राणियोंको तृप्ति नहीं तथा धन और जीतव्य इनसे तृप्ति नहीं इंद्रियोंके सुख पूर्ण न होय सकें और आयु पूर्ण होय तब जीव देहको तज और जन्म धरे जैसे पक्षी वृक्षको तज चला जायहै तुम पुत्रोंकी माता हो पुत्रों को ले आवो पुत्रोंके राज्यका उदय देख विश्रामको भजो मनेतोराज्यका अधिकार तजा पाप क्रिया से निवृत्तभया भव भ्रमणसे भयको प्राप्तभया अब मैं मुनिव्रत धरूंगा। हे श्रेणिक इस भांति राजा राणियों

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को कहकर निर्मोहताके निश्चयको प्राप्त भया सकल विषयाभिलाषरूप दोषोंसे रहित सूर्य समान है तेज जिसका सो पृथ्वीमें तप संयमका उद्योत करता भया ॥ इति इकतीसवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर रामलक्ष्मण क्षण एक निद्राकर अर्धरात्रिके समय जब मनुष्यसोयरहेलोकोंका शब्द मिटगया और अंधकार फैलगया उस समय भगवानको नमस्कारकर बखतर पहिर धनुष बाणलेय सीताको बीचमें ले कर चले घर घर दीपकोंका उद्योत होरहाहै कामीजन अनेक चेष्टाकरे हैं ये दोनों भाई महाप्रवीण नगरके द्वार की खिडकीकी ओरसे निकसे दक्षिणदिशाका पंथ लिया रात्रिके अंतमें दौड़कर सामन्तलोक आय मिले राघवके संग चलनेकी है अभिलाषा जिनके दूरसे रामलक्ष्मणको देख महा विनयके भरे असवारी छोड़प्यादे आए चरणारविन्दको नमस्कारकर निकट आय वचनालाप करते भए बहुत सेना आई और जानकीकी बहुत प्रशंसा करते भए कि इसके प्रसादसे हम रामलक्ष्मणको आय मिले यह न होतीतो ये धीरे २ न चलते तोहम कैसे पहुंचते क्योंकि ये दोनों भाई पवनसमान शीघ्रगामी हैं और यह सीता महासती हमारी माताहै इस समान प्रशंसायोग्य पृथ्वीमें और नहीं ये दोनोंभाई नरोत्तम सीताकी चाल प्रमाण मन्द मन्द दो कोस चले खेतोंमें नानाप्रकारके अन्न हरे होय रहेहैं और सरोवरोंमें कमल फूल रहे हैं और वृक्ष महारमणीक दीखेहैं अनेक ग्राम नगरादिमें ठौर २ लोक पूजेहैं भोजनादि सामग्री करी और बड़े बड़े राजावडी फौजसे आय मिले जैसें वर्षाकालमें गंगा यमुनाके प्रवाहमें अनेक नदियोंके प्रवाह आय मिलें केइक सामन्त मार्गके खेदकरइनका निश्चय जान आज्ञपाय पीछे गए और केएक लज्जाकर केएक भयकर केइक भक्तिकर लारप्यादे चले जायं हैं सो राम लक्ष्मण क्रीडा करते परियात्रा नामा अटवी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में पहुंचे । कैसी है अटवी नाहर और हाथियोंके समूहोंकर भरी महा भयानक वृक्षों कर अतिसघन अंधकारकी भरी जिसके मध्य नदी है उसके तट आए जहां भीलोंका निवास है नाना प्रकारके मिष्ट फलहैं आप वहां तिष्ठकर केएक राजावों को विदा किया और केएक पीछे न फिरे राम ने बहुत कहा तो भी संग ही चले सो सकल नदी को महा भयानक देखते भए कैसी है नदी पर्वतों सों निकसती महानील है जल जिसका प्रचण्ड हैं लहर जिसमें महाशब्दायमान अनेकजे ग्राह मगर तिनकर भरी दोऊ ढाहांविदारती कलोलोंके भयकर उडे हैं तीर के पक्षी जहां ऐसीनदी को देखकर सकल सामन्त त्रासकर कंपायमान होय रामलक्ष्मण को कहतेभए हे नाथ कृपाकर हमेंभी पार उतारो हमसेवक भक्तिवंत हमसे प्रसन्न होवो हे माता जानकी लक्ष्मणसे कहो हमको भी पार उतारें इसभांति कहते आंसू डारते अनेक नरपति नाना चेष्टा के करणहारे नदीमें पड़ने लगे तब राम बोले अहो अब तुम पीछे फिरो । यह वन महा भयानक है हमारा तुम्हारा यहांलगही संगथा पिताने भरतको सब का स्वामी किया है सो तुम भक्ति कर तिसको सेवो तब वे कहते भये हे नाथ हमारे स्वामी तुमही हो महा दयावान हो हम पर प्रसन्न होवो हमको मत छोडो तुम बिना यह प्रजा निरधार भई आकुलता रूप कहो कौनकी शरण जाय तुम समान और कौनहै व्याघ्रसिंह और गजेन्द्र सर्पादिककर भरा भयानक जो यह वन उसमें तुम्हारे संग रहेंगे तुम बिना हमें स्वर्गभी सुखकारी नहीं तुम कहो पीछे जावो सो चित्त फिरे नहीं कैसे जावें यह चित्त सब इन्द्रियोंका अधिपति इसही से कहिए है जो अद्भुत वस्तु में अनुराग करे हमारे भोगोंकर क्या घरकर तथा स्त्री कुटम्बादिककर क्या तुम नर रत्नहो तुमको छोड कहां जावें हेप्रभो तुमसे बालक्रीड़ा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में भी हमसे घृणा न करी अब अत्यन्त निठुरता को धारोहो हमारा अपराध क्या तुम्हारे चरण रजकर धरमवृद्धि को प्राप्त भए तुम तो भृत्यवत्सल हो अहो माता जानकी अहो लक्ष्मण धीर हम सीस निवायहाथ जोड़ बीनती करे हैं नाथको हमपर प्रसन्नकरो ये वचन सविनय कहे तब सीता और लक्ष्मण समके चरणोंकी ओर निरख रहे राम बोले अब तुम पीछे जावो यही उत्तरहै सुखसे रहियो ऐसा कहकर दोनों धीर नदी के विषे प्रवेश करते भये श्रीराम सीता का कर गह सुखसे नदीमें लेगए जैसे कमलनी को दिग्गज लेजाय वह असराल नदी राम लक्ष्मण के प्रभावकर नाभि प्रमाण बहने लगी दोनों भाई जल विहार में प्रवीण क्रीड़ा करते चलेगए सीताराम के हाथ गहे ऐसी शोभे मानो साक्षात् लक्ष्मीही कमल दलमें तिष्ठी है राम लक्ष्मण क्षणमात्रमें नदीपार भए वृक्षों के आश्रय आयगए तब लोकों की दृष्टिसे अगोचरभए तब कईएक तो विलाप करते आंसू डारते घरको गए और कईएक राम लक्ष्मणकी ओर धरी है दृष्टि जिन्होंने सो काष्ठ कैसे होयरहे और कईएक मूर्छाखाय धरतीपर पड़े और कईएक ज्ञान कोप्राप्तहोयजिन दीक्षाकोउद्यमीभए परस्पर कहतेभये कि धिक्कारहै इस असार संसारकोऔर धिक्कारहैइन क्षणभंगुर भोगोंको ये काले नागके फण समान भयानक हैं ऐसे शूरवीरोंकी यह अवस्था तो हमारी क्या बात इस शरीरको धिक्कारहैजो पानीके बुद्बुदा समाननिसार जरामरण इष्टवियोग अनिष्टसंयोग इत्यादिकष्ट की भाजनहै धन्यहैं वे महापुरुष भाग्यवन्त उत्तम चेष्टाके धारक जे मरकट (बंदर) की भौंहसमान लक्ष्मी को चंचलजानतजकरदीक्षा धरतेभयेइसभांति अनेक राजाविरक्तदीक्षाकोसन्मुखभये जिन्होनेएक पहाड़कीतलहटीमें सुन्दर वन देखा अनेक वृक्षोंकर मंडित महा सघन नानाप्रकारके पुष्पोंकर शोभित जहां सुगन्धके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोलुपी भ्रमर गुंजार करे हैं वहां महा पवित्रस्थानक में तिष्ठते ध्यानाध्ययन विषे लीन महातप के धारक साधु देखे तिनको नमस्कारकर वे राजा जिननाथका जो चैत्यालय वहां गये उससमय पहाड़ों की तलहटी तथा पहाड़ों के शिखर में अथवा रमणीक बनों में नदीयों के तट विषे नगर ग्रामादिक में जिन मंदिर थ वहां नमस्कार कर एक समुद्र समान गम्भीर मुनियों के गुरु सत्यकेतु आचार्य तिन के निकट गये नमस्कार कर महा शांतरस के भरे आचार्य से वीनती करते भये हे नाथ हमको संसार समुद्र से पार उतारो तब मुनिने कही तुमको भवसे पारउतारन हारी भगवती दीक्षाहै सो अंगीकारकरो यह मुनिकी आज्ञा पायके परम हर्षको प्राप्तभये राजा विदग्धविजय मेरुक्रूर संग्राम लोलुप श्रीनागदमन धीर शत्रुदम धर विनोद कंटक सत्यकठोर प्रियवर्धन इत्यादि निर्ग्रन्थ होते भये उनका गज तुरंग रथादि सकल साज सेवकलोकोंनेजायकर उनके पुत्रादिककोसौंपा तब वे बहुतचिन्तावान् भएफिर समझकर नानाप्रकार के नियम धारतेभए केयक सम्यक दर्शनको अंगीकारकरसंतोषको प्राप्तभए केयक निर्मल जिनेश्वरदेव का धर्म श्रवण कर पापसे पराङ्मुख भए बहुत सामंत रामलक्ष्मण की वार्ता सुन साधुभए केयकश्रावकके अणुव्रत धारतेभए बहुत राणी आर्यिका भई बहुतश्राविकाभई केयक सुभट राम का सर्व वृत्तांत भरत दशरथ पर जाकर कहते भए सो सुनकर दशरथ और भरत बहुतकखेद को प्राप्त भए॥

अथानन्तर राजा दशरथ भरत को राज्याभिषेक कर रामलक्ष्मण जो राम के वियोग कर हृदय व्याकुल भयाथा सो समता में लाय विलाप करता जो अंतःपुरउसे प्रति बोध नगर से वन को गए सर्व भूतहित स्वामीको प्रणामकर बहुत नृपोंसहित जिनदीक्षा आदरी एकाकी विहारी जिन कल्पी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भए परमशुक्लध्यान की है अभिलाषा जिनके तथापि पुत्रके शोककर कभी इक कलुषता उपज आवे सो एक दिन ये विचारा विचारते भए कि संसारके दुःखका मूल यह आसक्ता स्नेह है इसे धिक्कार हो इसीकर कर्म बंधे हैं मैं अनन्तभव धरे तिनमें गर्भ जन्म भी बहुतधरे सो मेरे गर्भ जन्म के अनेक माता पिता भाई पुत्र कहांगए अनेक बारमैं देवलोकके भोग भोगे और अनेक बार नरकके दुःख भोगे तिर्यंचगतिमें मेरा शरीर अनेक बार इन जीवोंने भखा इनका मैं भखा नानारूप जे योनियें तिनविषे मैं बहुतदुःख भोगे और बहुतबार रुदनकिया और रुदनके शब्दसुने और बहुतबार वीणबांसुरी आदि वादित्रोंके नादसुने गीतसुने नृत्य देखे देवलोकविषे मनोहर अप्सराओंके भोगभोगे, अनेक वार मेरा शरीर नरक विषे कुहाड़ों करकाटा गया और अनेकवार मनुष्यगति विषे महा सुगंध महावीर्यका करणहारा षट्रस संयुक्त अन्नआहार किया और अनेक वार नरकविषे गालासीसा औरतांबा नारकीयों ने मारमार मुझे प्याया और अनेकवार सुरनर गतिमें मनके हरणहारे सुंदररूपदेखे और सुंदररूपधारे और अनेकवार नरकविषे महाकुरूपधारे औरनानाप्रकारके त्रास देखे कैयक वार राजपद देवपद में नानाप्रकारकेसुगन्धसूंघे जिन पर भ्रमर गुंजारकरें और कैयक वार नरक की महा दुर्गन्ध सूंघी और अनेक वार मनुष्य तथा देवगति विषे महालीला की धरणहारी वस्त्राभरण मंडित मनकी चोरणहारी जे नारी तिन सों आलिंगन कीया और बहुत वार नरकों विषे जे कूट शाल्मलि वृक्ष तिनके तीक्ष्ण कंटक और प्रज्वलती लोह की पुतलीयों से स्पर्श किया. इस संसारविषे कर्मों के संयोग से मैं क्या क्या न देखा क्या क्या न स्पर्शा क्या क्या न सूंघा क्या क्या न सुना क्या क्या न भखा और पृथ्वीकाय जलकायअग्निकाय वायुकाय वनस्पतिकायत्रसकाय विषे ऐसादेहनहीं जोमैं न धारा, तीनलोक

For Private and Personal Use Only

विषे ऐसा जीव नहीं जिस से मेरे अनेक नाते न भए, ये पुत्र मेरे कईवार पिता भए माता भए शत्रु भए मित्र भए ऐसा स्थानक नहीं जहां मैं न उपजा न मुआ ये देह भोगादिक अनित्य इस जगत विषे कोईशरण नहीं, यह चतुर्गति रूप संसार दुःख का निवास है मैं सदा अकेलाहूं ये षट्द्रव्य परस्पर सबही भिन्न हैं, यह काय अशुचि, मैं पवित्र, ये मिथ्यादि अव्रतादिकर्म आश्रवके कारण हैं, सम्यक्तव्रत संयमादि संवर के कारणहैं तपकर निर्जरा होय है यह लोक नानारूप मेरे स्वरूप से भिन्न इस जगत् में आत्मज्ञान दुर्लभ है, और वस्तु का जो स्वभाव सोई धर्म तथा जीवदयाधर्म सो मैं महाभागसेपाया धन्य ये मुनि जिन के उपदेश से मोक्षमार्ग पाया सो अब पुत्रों की कहां चिन्ता, ऐसा विचार कर दशरथ मुनि निर्मोहदशा को प्राप्त भए जिन देशों में पहिले हाथी चढे चमर दुरते छत्र फिरते थे और महारण संग्राम में उद्धत बैरीयों को जीते तिन देशों में निर्ग्रन्थ दशा धरे बाईस परीषह जीतते शांतिभाव संयुक्त विहार करते भए और कौशल्या तथा सुमित्रा पति के वैरागी भए और पुत्रों के विदेश गए महाशोकवंती भई निरंतर अश्रुपात डारें तिन के दुःख को देख भरत राज्य विभूति को विषसमान मानता भया और केकई तिनको दुखी देख उपजी है करुणा जिस के पुत्र को कहती भई हे पुत्र तैंने राज्य पाया बड़े बडे राजा सेवा करे हैं परन्तु राम लक्ष्मण बिना यह राज्यशोभे नहीं सोवे दोऊभाई महाविनयवान् उनबिना कहां राज्य और कहां सुख और क्या देश की शोभा और क्या तेरी धर्मज्ञता वे दोनों कुमार और वह सीता राजपुत्री सदा सुख के भोगन हारे पाषाणादिककर पूरितजोमार्ग इसविषे वाहन बिना कैसे जांवेंगेऔर तिन गुणसमुद्रों की ये दोनों माता निरंतर रुदन करे हैं सो मरण को प्राप्त हावेंगी इसलिये तुम शीघ्रगामी तुरंगपरचढ़ शितावी जावो उनको

ले आवो उनसहित महासुख से चिरकालराजकरियो और मैं भी तेरे पीछेही उनकेपास आऊंहूं यह माता की आज्ञा सुन बहुतप्रसन्न होय उसकी प्रशंसा कर अति आतुर भरत हज़ार अश्व सहित राम के निकट चलाऔर जे राम के समीप से वापिस आएथे तिनकोसंग लेचला आप तेजतुरंग पर चढ़ा उतावली चाल वन में आया वह नदी असराल वहती थी सो उस में वृक्षों के लठे गेर वेड़े वांध क्षण मात्र में सेना सहित पार उतरे, मार्ग में नर नारियों को पूछते जावें कि तुम ने राम लक्ष्मण कहीं देखे वे कहे हैं यहां से निकट ही हैं सो भरत एकाग्रचित्त चले गए सघनवन में एक सरोवर के तट पर दोनों भाई सीता सहित बैठे देखे समीप धरे हैं धनुष वाण जिन के सीता के साथ वे दोनों भाई घने दिवस में आए और भरत छह दिन में आया रामको दूरसे देख भरत तुरंग से उतरपायपियादाजाय रामके पायनपरा मूर्छित होयगया। तब रामने सचेतकिया भरत हाथजोड़ सिर निवाय राम सेंवीनती करता भया कि हे नाथ राज्य के देयवे कर मेरी क्यों विडम्बना करी तुम सर्व न्याय मार्ग के जाननहारे महा प्रवीण मेरे इस राज्य से क्या प्रयोजन तुम बिना जीवनेकर क्या प्रयोजन तुम महा उत्तम चेष्टाके धरणहारे मेरे प्राणोंके आधारहो उठो अपने नगर चलें हे प्रभो मुझपर कृपाकरो राज्य तुम करो राज्य योग तुमही हो मुझे सुख की अवस्था देवो मैं तुम्हारे सिरपर छत्र फेरता खड़ा रहूंगा और शत्रुघन चमर ढारेगा और लक्ष्मण मन्त्री पद धारेगा मेरी माता पश्चातापरूप अग्निकर जरे है और तुम्हारी माता और लक्ष्मणकी माता महा शोक करे हैं यह बातभरत करेही है और उसही समय शीघ्र रथपर चढ़ी अनेक सामन्तों सहित महा शोककी भरी केकई आई और राम लक्षण को उरसों लगाय बहुत रुदन करती भई रामचन्द्र ने धीर्य्य

बन्धाया तब केकई कहतीभई हे पुत्र उठो अयोध्या चलो राज्य करो तुम,बिन मेरे सकलपुर बन समान है और तुम महा बुद्धिवान हो भरत से सेवा लेवो हम स्त्री जन निकृष्ट बुद्धि हैं मेरा अपराध क्षमाकरो तब राम कहते भये हे मात तुमतो सब बातों में प्रवीण हो तुम क्या न जानो हो क्षत्रियोंका यही विरद है जा वचन न चूकें जो कार्य विचारा उसे और भांति न करें हमारे तात ने जो वचन कहा सो हमको और तुमको निवाहना इस बातमें भरतकी अकीर्ति न होयगी फिर भरत से कहा कि हे भाई तुम चिंता मत करो तू अनाचार से शंके है सो पिता की आज्ञा और हमारी आज्ञा पालने से अनाचार नहीं ऐसे कहकर वन विषे सब राजावों के समीप भरत का श्री रामने राज्याभिषेक किया और केकई को प्रणाम कर बहुत स्तुति कर बारम्बार संभाषण कर भरत को उरसे लगाय बहुत दिलासाकर मुश-किल से विदा किया केकई और भरत राम लक्ष्मण सीता के समीप से पीछे नगरको चले भरत राम की आज्ञा प्रमाण प्रजाका पिता समान हुवा राज्यकरे जिसके राज्यमें सर्व प्रजाको सुख कोई अनाचार नहीं यद्यपि ऐसा निःकंटक राज्य है तोभी भरतको क्षणमात्र राग नहीं तीनों काल श्री अरनाथ की बन्दना करे और मुनियों के मुखसे धर्म श्रवण करे द्युति भट्टारक नामा जे मुनि अनेक मुनि करे हैं सेवा जिनकी तिनके निकट भरतने यह नियम लिया कि रामके दर्शनमात्र सेही मुनिव्रत धरूंगा ॥

अथानन्तर मुनि कहते भये कि हे भरत कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके ऐसे राम जबलग न आवें तबलग तुम गृहस्थ के व्रत धरो जे महात्मा निर्ग्रन्थहैं तिनकाआचरण अति विषमहै सो पहिलेश्रावक के व्रतपालने उससे यतिका धर्म सुखसों सधेहै जब वृद्ध अवस्था आवेगी तब तप करेंगे यह वार्ता कहते अनेक

जडबुद्धि मरणको प्राप्तभए महा अमोलक रत्नसमान यतीका धर्म जिसकी महिमा कहनेमें न आवे उसे जे धारेहैं तिनको उपमा कौनकी देवें यतिके धर्मसे उतरता श्रावकका धर्म है सो जें प्रमादरहित करेहैं वे धन्य हैं यह अणुव्रतभी प्रबोधका दाताहै जैसे रत्नद्वीप में कोई मनुष्य गया और वह जो रत्नलेय सोई देशान्तरमें दुर्लभ है तैसे जिन धर्म नियमरूप रत्नोंका द्वीपहै एसमें जो नियम लेय सोई महाफल का दाताहै जो अहिंसारूप रत्नको अंगीकारकर जिनवरको भक्तिकर अरचे सो सुरनरके सुख भोग मोक्षको प्राप्त होय और जो सत्यव्रतका धारक मिथ्यात्व का परिहारकर भावरूप पुष्पोंकी मालाकर जिनेश्वर को पूजे है उसकी कीर्ति पृथिवी में विस्तरेहै और आज्ञा कोई लोप न सके और जो परधनका त्यागी जिनेन्द्रको उरमें धारे बारम्बार जिनेन्द्रको नमस्कारकरे सो नव निधि चौदह रत्नका स्वामीहोय अक्षयनिधि पावें और जो जिनराजका मार्ग अंगीकारकर परनारीका त्यागकरे सो सबके नेत्रोंको आनन्दकारी मोक्ष लक्ष्मी का वर होय और जो परिग्रह का प्रमाणकर संतोष धर जिनपतिका ध्यानकरे सो लोक पूजित अनन्त महिमाको पावे और आहार दानके पुण्यकर महा सुखी होय उसकी सब सेवाकरें और अभयदान कर निर्भय पद पावे सर्व उपद्रवसे रहित होय और ज्ञानदानकर केवल ज्ञानीहोय सर्वज्ञपद पावे और औषधि दानके प्रभावकर रोगरहित निर्भयपद पावे और जो रात्रीको आहार का त्यागकरे सो एक वर्ष में छह महीना उपवास का फल पावे यद्यपि गृहस्थ पद के आरम्भ में प्रवृते है तोभी शुभगति के सुख पावे जो त्रिकाल जिनदेवकी बन्दनाकरे उसके भाव निर्मल होंय सर्व पापका नाशकरे और जो निर्मलभाव रूप पुष्पोंकर जिननाथको पूजे सो लोकमें पूजनीक होय और जो भोगी पुरुष कमलादि जलके पुष्प

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा केतकी मालती आदि पृथ्वीके सुगन्ध पुष्पोंकर भगवानको अर्चे सो पुष्पविमानको पाय यथेष्ट क्रीड़ा करे और जो जिनराजपै अगर चन्दनादि धूपखेवेसो सुगन्धशरीरका धारक होय और जो गृहस्थी जिन मंदिरमें विवेक सहित दीपोद्योत करे सो देवलोकमें प्रभाव संयुक्त शरीर पावे और जो जिन भवनमें छत्र चमर झालरी पताका दर्पणादि मंगल द्रव्यचढ़ावे और जिनमंदिरको शोभित करै सो आश्चर्यकारी विभूति पावे और जो जल चन्दनादिसे जिन पूजा करे सो देवोंका स्वामीहोय महानिर्मल सुगन्ध शरीर जे देवांगना तिनका वल्लभहोय और जो नीरकर जिनेंद्रका अभिषेक करे सो देवों कर मनुष्योंसे सेवनीक चक्रवर्तीहोय जिसका राज्याभिषेक देव विद्याधर करें और जो दुग्धसे अरहन्त का अभिषेककरे सो क्षीरसागरके जल समान उज्ज्वल विमानमें परम कांति धारक देव होयफिर मनुष्य होय मोक्ष पावे और जो दधिकर सर्वज्ञ बीतरागका अभिषेक करे सो दधिसमान उज्ज्वल यशको पाय कर भवोदधिको तरे और जो घृतकर जिननाथका अभिषेककरे सो स्वर्ग विमानमें महा बलवान देव होय परम्पराय अनन्तवीर्यको धरे और जो ईक्षुरसकर जिननाथका अभिषेक करे सो अमृतका आहारी सुरेश्वरहोय नरेश्वर पदपाय मुनीश्वरहोय अविनश्वर पदपावे अभिषेकके प्रभावकर अनेक भव्य जीव देवोंसे इन्द्रोंसे अभिषेक पावतेभए तिनकी कथा पुराणोंमें प्रसिद्धहै जो भक्तिकर जिनमंदिरमें मयूर पिच्छादिककर बुहारी देय सो पापरूप रजसे रहितहोय परम विभूति आरोग्यता पावे और जो गीत नृत्यवादित्रादिकर जिनमंदिरमें उत्सव करे सो स्वर्गमें परम उत्साहको पावे और जिनेश्वरके चैत्या-लय करावे सो उसके पुण्यकी महिमा कौन कह सके सुरमंदिरके सुख भोग परम्पराय अविनाशी धाम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पावे और जो जिनेंद्रकी प्रतिमा विधि पूर्वक करावेसो सुरनरके सुख भोग परमपद पावे व्रत विधान तप दान इत्यादि शुभ चेष्टाओंसे प्राणी जे शुभ उपार्जे हैं सो समस्त कार्य जिन बिम्ब करावनेके तुल्य नहीं जो जिनबिम्ब करावे सो परंपराय सिद्धपद पावे और जो भव्य जिनमंदिरके शिखर चढ़ावे सो इन्द्र धरणेन्द्र चक्रवर्त्यादिक सुखभोगलोकके शिखर पहुंचे और जो जीर्ण जिनमंदिरोंकी मरम्मत कराये सो कर्मरूप अजीर्णको हर निर्भय नीरोगपदको पावे और जो नवीन चैत्यालय कराय जिनबिम्ब पधराय प्रतिष्ठाकरे सो तीनलोकमें प्रतिष्ठापावे और जे सिद्धक्षेत्रादि तीर्थोंकी यात्रा करें सो मनुष्यजन्म सफल करें और जे जिनप्रतिमाके दर्शनका चिन्तवनकरे उसे एक उपवासका फलहोय और दर्शनके उद्यमका अभि-लाषी होय सो बेलाका फल पावे और जो चैत्यालय जावनेका आरम्भकरे उसे तेलाकाफल होय गमन किए चौलाका फलहोय और कछुएक आगे गए पंच उपवासका फलहोय आधीदूरगए पक्षोपवासका फल होय और चैत्यालयकें दर्शनसे मासोपवासका फलहोय और भावभक्तिकर महास्तुति किएअनंत फल प्राप्तिहोय जिनेंद्रकी भक्तिसमान और उत्तम नहीं और जो जिनसूत्र लिखवाय उसका व्याख्यान करें करावें पढ़ें पढ़ावें सुनें सुनावें शास्त्रोंकी तथा पंडितोंकी भक्तिकरें वे सर्वांगके पाठी होय केवल पद पावें जो चतुर्विध संघकी सेवा करे सो चतुरगतिके दुख हर पंचमगति पावे मुनि कहेहैं कि हे भरत जिनेंद्रकी भक्तिकर कर्म क्षयहोय और कर्मक्षय भए अक्षयपद पावे ये वचन मुनिके सुन राजा भरत ने प्रणाम कर श्रावकका व्रत अंगीकार किया भरत बहुश्रुत अतिधर्मज्ञ महा बिनयवान श्रद्धावान चतुर्विध संघको भक्तिकर और दुखित जीवोंको दयाभावकर दान देताभया सम्यक्दर्शन रत्नको उरमें

For Private and Personal Use Only

धारता भय, औरमहासुन्दर श्रावकके व्रतविषे तत्पर न्याय सहित राज्यकरताभया, भरतगुणोंकासमुद्र उसका प्रताप और अनुराग समस्त पृथिवी बिषे विस्तरता भया, उसके देवांगना समान डेढ़ सौ राणी तिन विषे आसक्त न भया, जल में कमलकी न्यांई अलिप्त रहा, जिसके चितमें निरन्तरयह चिन्ता वरतेकि कवयति के व्रत धरूं तप करू निर्ग्रंथ हुवा पृथिवी में विचरूं धन्य हैं वे पुरुष जे धीर सर्व परिग्रह का त्याग कर तप के बल कर समस्त कर्म को भस्मकर सारभुत जो निर्वाण का सुखउसे पावेहैं, मैं पापी संसार में मग्न प्रत्यक्ष देखूं हूं जो यह समस्त संसारका चरित्र क्षणभंगुर है जो प्रभात देखिये सो मध्यान्ह में नहीं मैं मूढ़ होय रहा हूं जे रंक विषयाभिलाषी संसार में राचे हैं वे खोटी मृत्यु मरेंगे सर्प व्याघ्र गज जल अग्नि शस्त्र विद्युत्पात शूलारोपण असाध्य रोग इत्यादि कुरीतिसे शरीर तजेंगे यह प्राणी अनेक सहस्रों दुख को भोगनहारा संसार मेंभ्रमण करे है बड़ा आश्चर्य है अल्प आयु में प्रमादीहोय रहा है जैसे कोइ मदोन्मत्त क्षारसमुद्र के तट सूता तरंगों के समूह से नडरे तैसे मैं मोह कर उन्मत्त भव भ्रमण से नहीं डरूहूं निर्भय होय रहा हूं हाय हाय हिंसा आरम्भादि अनेक जे पाप तिन कर लिप्त मैं राज्य कर कौन से घोर नरक में जाऊंगा कैसा है नरक बाण खड्ग चक्र के आकार तीक्ष्ण पत्र जिन में ऐसे शाल्मली वृक्ष जहां हैं अथवा अनेक प्रकार तिर्यञ्च गति जिस में जावूंगा देखो जिन शास्त्र सारिखा महाज्ञानरूप शास्त्र उस को पाय कर भी मेरा मन पाप युक्त हो रहा है निस्पृह होय कर यति का धर्म नहीं धारे है सो नजानिये कौन गति जाना है ऐसी कर्मों की नासनहारी जो धर्मरूप चिन्ता उस को निरन्तर प्राप्त हुआ जो राजा भरत सो जैन पुराणादि ग्रन्थों के श्रवण विषे आसक्त सदैव

साधन की कथा में अनुरागी रात्रि दिन धर्म में उद्यमी होता भया ॥ इति बत्तीसवां पर्व सम्पूर्णम् ॥

अथानन्तर श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण सीता जहां एकतापसों का आश्रम है वहां गए अनेक तापस जटिल नानाप्रकारके वृक्षोंके वकल पहिरे अनेक प्रकारका स्वादुफल तिनकर पूर्ण हैं मठजिनके वनविषे वृक्षसमान वहुत मठदेखे विस्तीर्ण पत्रों कर छाए हैं मठ जिनके अथवा घासके फूलों कर आच्छादितहैं निवास जिनके बिना बाहे सहजही उगे जे धान्य वे उनके आंगनमें सूके हैं और मृगभयरहित आंगन में बेठे जुगालेहैं और तिनके निवास विषे सूवा मैंना पढ़े हैं और तिनके मठों के समीप अनेक गुलक्यारी लगाय राखी हैं सो तापसों की कन्या मिष्ट जल कर पूर्ण जे कलश वे थांवलों में डारें हैं श्री रामचन्द्र को आए जान तापस नाना प्रकारके मिष्ट फल सुगन्ध पुष्पामिष्ट जल इत्यादिक सामग्रियों कर बहुत आदरसे पाहुन गति करतेभए मिष्ट वचनका संभाषण कर रहने को कुटी मृदुपल्लवन की शय्या इत्यादि उपचार करते भए वे तापस सहजही सबों का आदर करें हैं इनको महारूपवान अद्भुत पुरुषजान बहुत आदर किया रात्रि को बस कर ये प्रभात उठ चले तब तापस इन की लार चले इनके रूप को देखकर पाषाण भी पिघलें तो मनुष्य की क्या बात वे तापस सूके पत्रों के आहारी इनके रूपको देख अनुरागी होतेभए जे वृद्धतापस हैं वे इनको कहतेभए तुमयहां रहोतो यहसुखका स्थान है और कदापि न रहो तो इस अटवी विषे सावधान रहियो यद्यपि यहबनी जल फल पुष्पादि कर भरी है तथापि विश्वास न करना, नदी वनी नारी ये विश्वास योग्य नहीं, सो तुम तो सब बातों में सावधान ही हो फिर राम लक्ष्मण सीता यहां से आगे चले अनेक तापसिनी इनके देखनेकी अभिलाषाकर बहुत विह्वल भई

धारता भय, औरमहासुन्दर श्रावकके व्रतविषे तत्पर न्याय सहित राज्यकरता भया, भरतगुणोंकासमुद्र उसका प्रताप और अनुराग समस्त पृथिवी विषे विस्तरता भया, उसके देवांगना समान डेढ़ सौ राणी तिन विषे आसक्त न भया, जल में कमलकी न्यांई अलिप्त रहा, जिसके चितमें निरन्तरयह चिन्ता वरतेकि कवयति के व्रत धरूं तप करू निर्ग्रंथ हुवा पृथिवी में विचरूं धन्य हैं वे पुरुष जे धीरे सर्व परिग्रह का त्याग कर तप के बल कर समस्त कर्म को भस्मकर सारभुत जो निर्वाण का सुखउसे पावेहैं, मैं पापी संसार में मग्न प्रत्यक्ष देखूं हूं जो यह समस्त संसार का चरित्र क्षणभंगुर है जो प्रभात देखिये सो मध्यान्ह में नहीं मैं मूढ होय रहा हूं जे रंक विषयाभिलाषी संसार में राचे हैं वे खोटी मृत्यु मरेंगे सर्प व्याघ्र गज जल अग्नि शस्त्र विद्युत्पात शूलारोपण असाध्य रोग इत्यादि कुरीतिसे शरीर तजेंगे यह प्राणी अनेक सहस्रों दुख का भोगनहारा संसार मेंभ्रमण करे है बड़ा आश्चर्य है अल्प आयु में प्रमादीहोय रहा है जैसे कोइ मदोन्मत्त क्षारसमुद्र के तट सूता तरंगों के समूह से नडरे तैसे मैं मोह कर उन्मत्त भव भ्रमण से नहीं डरूहूं निर्भय होय रहा हूं हाय हाय हिन्सा आरम्भादि अनेक जे पाप तिन कर लिप्त में राज्य कर कौन से घोर नरक में जाऊंगा कैसा है नरक बाण खड्ग चक्र के आकार तीक्ष्ण पत्र जिन में ऐसे शाल्मली वृक्ष जहां हैं अथवा अनेक प्रकार तिर्यञ्च गति जिस में जाऊंगा देखो जिन शास्त्र सारिखा महाज्ञानरूप शास्त्र उस को पाय कर भी मेरा मन पाप युक्त हो रहा है निस्पृह होय कर यति का धर्म नहीं धारे है सो नजानिये कौन गति जाना है ऐसी कर्मों की नासनहारी जो धर्मरूप चिन्ता उस को निरन्तर प्राप्त हुआ जो राजा भरत सो जैन पुराणादि ग्रन्थों के श्रवण विषे आसक्त सदैव

साधन की कथा में अनुरागी रात्रि दिन धर्म में उद्यमी होता भया ॥ इति बत्तीसवां पर्व सम्पूर्णम् ॥

अथानन्तर श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण सीता जहां एकतापसों का आश्रम है वहां गए अनेक तापस जटिल नानाप्रकारके वृक्षोंके वकल पहिरे अनेक प्रकारका स्वादुफल तिनकर पूर्ण हैं मठजिनके वनविषे वृक्षसमान बहुत मठ ऐसे विस्तीर्ण पत्रों कर छाए हैं मठ जिनके अथवा घासके फूलों कर आछादितहैं निवास जिनके बिना बाहे सहजही उगे जे धान्य वे उनके आंगनमें सूके हैं और मृगभयरहित आंगन में बेठे जुगालेहैं और तिनके निवास विषे सूवा मैंना पढ़े हैं और तिनके मठों के समीप अनेकगुलक्यारी लगाय राखी हैं सो तापसों की कन्या मिष्ट जल कर पूर्ण जे कलश वे थांवलों में डारें हैं श्री रामचन्द्र को आए जान तापस नाना प्रकारके मिष्ट फल सुगन्धपुष्पमिष्ट जल इत्यादिक सामग्रियों कर बहुत आदरसे पाहुन गति करतेभए मिष्ट वचनका संभाषण कर रहने को कुटी मृदुपल्लवन की शय्या इत्यादि उपचार करते भए वे तापस सहजही सबों का आदर करें हैं इनको महारूपवान अद्भुत पुरुषजान बहुत आदर किया रात्रि को बस कर ये प्रभात उठ चले तब तापस इन की लार चले इनके रूप को देखकर पाषाण भी पिघलें तो मनुष्य की क्या बात वे तापस सूके पत्रों के आहारी इनके रूपको देख अनुरागी होतेभए जे वृद्धतापस हैं ये इनको कहतेभए तुमयहां रहोतो यहसुखका स्थान है और कदापि न रहो तो इस अटवी विषे सावधान रहियो यद्यपि यहबनी जल फल पुष्पादि कर भरी है तथापि विश्वास न करना, नदी वनी नारी ये विश्वास योग्य नहीं, सो तुम तो सब बातों में सावधान ही हो फिर राम लक्ष्मण सीता यहां से आगे चले अनेक तापसिनी इनके देखनेकी अभिलाषाकर बहुत विहल भई

पद्म पुराण ॥४८९॥

हुई दूर लग पत्र पुष्प फल इन्धनादिके मिसकर साथचली आई, कई एक तापसिनी मधुर वचन करइनको कहती भईकितुम हमारे आश्रमबिषे क्यों न रहो हमतुम्हारी सब सेवा करेंगी यहांसे तीनकोसपर ऐसीवनी है जहां महासघनवृक्ष हैं मनुष्योंका नामनहीं अनेक सिंह व्याघ्र दुष्टजीवोंकर भरी जहांईधन और फल फूल के अर्थ तापस भी न आवैं डाभकी तीक्ष्ण अणीयों कर जहांसंचार बन महाभयानक है और चित्रकूट पर्वत अति ऊंचादुर्लंघ्य तिस्तीर्णपडा है तुम ने क्या नहीं सुना है जो चलेजावोहो तबराम कहते भए अहो तापसीनो हो हम अवश्य आगे जावेंगे तुम तुम्हारे स्थान जावो कठिनतासे तिनको पीछे फेरी वे परस्परइनके गुणरूपका बरणन करती अपने स्थानक आई ए महा गहनबनमें प्रवेश करते भए कैसा है वहबन पर्वतके पाषाणोंके समूहकर महाकर्कस औरजे बडे २ जे वृक्ष तिनपर आरूढहैं बेलों के समूह जहां और क्षुधाकर अति क्रोधायमानजे शार्दूल तिनके नखोंकर विदारे गए हैं वृक्षजहां और सिंहोकर हतेगए जे गजराज तिनके रुधिर कर रक्त भए जो मोती सो ठौर २ विखर रहे हैं और माते जे गजराज तिन कर भग्न भएहैं तरुवर जहां और सिंघों की ध्वनि सुन कर भागरहे हैं कुरंग जहां और सूते जे अजगर तिनके श्वासोंकी पवनकर पूर रही हैं गुफा जहां शूरोंके समूहकर कर्दम रूप होरहे हैं सरोवर जहां और महा अरण्य भैंसे उनके सींगनकर भग्न भये हैं बबइयों के स्थान जहां और फणको ऊंचे किये फिरेहैं भयानकसर्प जहां और कांटोंकर बींधाहै पूंछकाअग्रभाग जिनका ऐसी जे सुरहगाय सो खेद खिन्न भई हैं और फैल रहे हैं कटेगी आदि अनेक प्रकार के कंटक जहां और विष पुष्पोंकी रजकी वासनाकर घूमें हैं अनेक प्राणी जहां और गैंडावों के पग कर विदारे गये हैं वृक्षों के पेड़ और भ्रमते

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोझन के समूह तिनकर भग्न भये हैं पल्लवों के समूह जहां और नाना प्रकार के जे पक्षियोंके समूह तिनके जो क्रूर शब्द उनकर बन गूंजरहा है और बन्दरों के समूह तिनके कूदनेकर कम्पायमान हैं वृक्षों की शाखा जहां और तीव्र वेगकों धरें पर्वत से उतरती जे नदी तिनकर पृथिवी में पड़गयाहै दहाना जहां और वृक्षों के पल्लवों कर नहीं दीखे है सूर्य की किरण जहां और नानाप्रकार के फलफूल तिन कर भरा अनेक प्रकारकी फैलरही है सुगन्ध जहां नानाप्रकारकी जे औषधि तिनकरिपूर्ण और बनके जे धान्य तिन कर पूरित कहीं एक नीलकहीं एक पीतकहीं एक रक्त कहीं एक हरित नाना प्रकार वर्णको धरे जो बन उसमें दोनोंवीर प्रवेश करतेभये चित्रकूट पर्वत के महामनोहर जे नीझरने तिनमें क्रीड़ाकरते बनकी अनेक सुन्दरवस्तु देखते परस्पर दोनोंभाई बातकरते बनके मिष्टफल आस्वादन करते किन्नर देवोंके भी मनको हरें ऐसा मनोहर गान करते पुष्पोंके परस्पर आभूषण बनावते सुगन्ध द्रव्य अंगमें लगावते फूलरहे हैं सुन्दर नेत्र जिनके महा स्वछन्द अत्यन्त शोभाके धारणहारे सुरनर नागोंके मनकेहरणहारे नेत्रोंको प्यारे उपवनकी न्याईं भीमबनमें रमतेभए अनेकप्रकारके सुन्दरजे लतामंडप तिनमें विश्रामकरते नानाप्रकारकी कथा करते विनोद करते रहस्य की बातें करते जैसे नन्दन बनमें देव भ्रमण करें तैसे अति रमणीक लीला से बन विहार करते भये ॥

अथानन्तर साढेचार मास में मालव देश में आए सो देश अत्यन्त सुन्दर नानाप्रकारके धान्योंकर शोभित जहां ग्राम पट्टनघने सो केतीक दूर आयकर देखें तो वस्ती नहीं तब एक बटकी छाया में बैठ दोनों भाई परस्पर बतलावतेभये कि काहेसे ये देश ऊजड़ दीखे है नानाप्रकारके क्षेत्र फल रहे हैं और मनुष्यनहीं नानाप्रकारके वृक्ष फल फूलन कर शोभित हैं और पौंडे सांठे के बाट बहुत हैं और सरोवरों में कमल फूल

For Private and Personal Use Only

रहे हैं नानाप्रकारके पक्षी केलिकरे हैं यह देश अति विस्तीर्ण मनुष्यों के संचार विना शोभे नहीं जैसे जिन दीक्षाको धरे मुनि वीतरागभाव रूप परम संयम विना शोभे नहीं ऐसी सुन्दर वार्ता राम लक्ष्मणसे करे हैं वहां अत्यन्त कोमल स्थानक देख रत्न कम्बल बिछाय श्रीराम बैठे निकट धरा है धनुष जिनके और सीता प्रेमरूप जलकी सरोवरी श्रीराममें आसक्त है मन जिसका सो समीप बैठी श्रीरामने लक्ष्मण को आज्ञाकरी तू बट ऊपर चढ़कर देख कहीं वस्तीभी है सो आज्ञाप्रमाण देखताभया और कहताभया किहे देव विजियार्ध पर्वत समान ऊंचे जिनमन्दिर दीखे हैं तिनके शरदके वादले समान शिखर शोभें हैं ध्वजा फरहरे हैं और ग्रामभीबहुत दीखे हैं कूप वापी सरोवरों कर मंडित और विद्याधरोंके नगर समान दीखे हैं खेत फल रहे हैं परन्तु मनुष्यकोई नहीं दीखे है न जानिये लोक परिवार सहित भाजगए हैं अथवा क्रूरकर्म के करनहारे म्लेच्छ बान्धकर लेगए हैं एक दलिद्री मनुष्य आवता दीखे है मृगसमान शीघ्र आवे है रूक्ष हैं केशजिसके और मलकर मंडितहै शरीर जिसका लांबी डाढी कर आच्छादित है उरस्थल और फाटे बस्त्र पहिरे ढरे हैं पसेव जिसके मानो पूर्वजन्मके पापको प्रत्यक्ष दिखावे है तब रामने आज्ञाकरी शीघ्रजाय उसको ले आव तब लक्ष्मण बटसे उतर दलिद्री के पासगए सो लक्ष्मणको देख आश्चर्यको प्राप्तभया कि यह इन्द्र है तथा वरुणहै तथा नागेन्द्रहै तथा नर है किन्नर है चन्द्रमाहै अक सूर्य है अग्नि कुमारहै अक कुवेर है यह कोई महातेज का धारक है ऐसा विचारता संता डर कर मूर्छा खाय भूमि में गिर पड़ा तब लक्ष्मण कहते भए हे भद्र भय मतकर उठ उठ ऐसा कह उठाया और बहुत दिलासा कर श्रीरामके निकटले आये सो दरिद्री पुरुष क्षुधा आदि अनेक दुःखों कर पीडित था, सो राम को देख सब दुःख भूल गया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राम महासुन्दर सौम्य है मुख जिनका कांति के समूह से विराजमान नेत्रों को उत्साह के करणहारे महा विनयवान् सीता समीप बैठी है सो मनुष्य हाथ जोड़ सिर पृथिवी से लगाय नमस्कार करता भया तब आप दया कर कहते भए, तू छाया में जाय बैठ भय न कर तब वह आज्ञा पाय दूर बैठा रघुपति अमृत रूप बचन कर पूछते भए तेरा नाम क्या है और कहां से आया और कौन है तब वह हाथ जोड़ बिनती करता भया हे नाथ मैं कुटंबी हूं मेरा नाम सिरगुप्त है दूर से आऊं हूं तब आप बोले यह देश उजड़ काहे से है तब वह कहता भया ह देव उज्जयिनीनामानगरी उसकापति राजा सिंहोदर प्रसिद्ध प्रतापकर नवाए हैं बड़े बड़े सामंत जिसने देवों समान है विभव जिसका और एक दशांगपुरकापति वज्रकर्ण सो सिंहोदरका सेवक अत्यन्तप्यारा सुभट जिसने स्वामीके बड़े बड़े कार्य किए सो निर्ग्रन्थ मुनिको नमस्कारकर धर्म श्रवण कर उसने यह प्रतिज्ञा करी कि मैं देव गुरु शास्त्र टार और को नमस्कार न करूं साधु के प्रसादकर उसको सम्यक् दर्शन की प्राप्ति भई सो पृथिवी में प्रसिद्ध है आप ने क्या अब तक उसकी वार्ता न सुनी, तब लक्ष्मण राम के अभिप्राय से पूछते भए कि वज्रकर्ण पर कौन भान्ति संतन की कृपा भई तब पंथी कहता भया हे देवराज एक दिन वज्रकर्ण दसारण्य बन में मृगया को गया था जन्म ही से पापी क्रूरकर्म का करणहारा इन्द्रियों कालोलुपी महामूढ़ शुभक्रिया से परांमुख महासूक्ष्म जिन धर्म की चर्चा सो न जाने कामी क्रोधी लोभी हीए अंध भोग सेवन कर उपजा जो गर्व सोई भया पिशाच उसी कर पीडित सो बन में भ्रमण करे सोउसने ग्रीष्म समय में एक शिला पर तिष्ठतासंता सत्पुरुषोंकर पूज्य ऐसा महा मुनि देखा, चार महीना सूर्य की किरण का आताप सहनहारा महातपस्वी पक्षी समान निराश्रय

सिंहसमान निर्भय सोतसायमानजोशिलाउसकरतसशरीर ऐसे दुर्जय तीव्रताप का सहनहारा सज्जन सों ऐसे तपोनिधि साधुको देख वज्रकर्ण तुरंगपर चढ़ा बरछी हाथमेंलिये कालसमान महाक्रूर पूछता भया कैसे हैं साधु गुण रूप रत्नों के सागर परमार्थके वेत्ता पापों के घातक सर्व जीवों के दयालु तपो विभूति कर मंडित तिनको वज्रकर्ण कहताभया हे स्वामी तुम इस निर्जन बन में क्या करो हो ऋषि बोले आत्म कल्याण करे हैं जो पूर्व अनन्त भवविषे न आचरा, तब वज्रकर्ण हंसकर कहताभया इस अवस्थाकर तुमको क्या सुखहै तुमने तपकर रूपलावण्यरहित शरीर किया तुम्हारे अर्थ काम नहीं बस्त्राभरणनहीं कोई सहाई नहीं स्नान सुगंध लपनादि रहित हो, पराए घरों के आहार कर जीविका पूरी करोहो तुम सारीखे मनुष्य क्या आत्महिताकरें, तब उसकोकाम भोगकर अत्यन्तआर्तिवन्तदेखमहादयावान संयमीबोले क्यातेनेमहाघोर नरककीभूमिसुनी हैजोतू उद्यमी होय पापोंविषेप्रीति करे हैनरककी महाभयानकसातभूमिहैं वे महादुर्गन्धमई देखी न जांय स्पर्शी न जांय सुनी नजांय, महातीक्ष्ण लोहके कांटोंकर भरी जहां नारकियों को घानियों मेंपेले हैं अनेक वेदना त्रास होय हैं छुरियों कर तिल २ काटिए हैं और तातेलोहे समान ऊपरले नरकोंका पृथिवी तल और महाशीतल नीचले नरकों का पृथिवी तल उस कर महा पीड़ा उपजे है, जहां महाअन्ध कार महा भयानक रौरवादि गर्त असिपत्र बन महादुर्गन्ध वैतरणी नदी जे पापी माते हाथियोंकी न्याई निरंकुश हैं वे नरक में हजारां भान्ति के दुख देखे हैं हम तुझे पूछे हैं तो सारीषे पापारम्भी विषयातुर कहां आत्म हित करेहैं ये इन्द्रायण के फल समान इन्द्रियोंके सुख तू निरन्तर सेय कर सुख माने है, सो इनमें हित नहीं ये दुर्गति के कारणहैं, आत्माका हित वह करेहै जो जीवों की दया पाले मुनि के व्रत धरे

पद्म
पुराण
॥५०५॥

अथवा श्रावक के व्रत आदरे निमल है चित्त जिस का, जे महाव्रत तथा अणुव्रत नहीं आदरे हैं वे मिथ्यात्व अव्रतके योग से समस्त दुखों के भाजन होयहै, तैंने पूव जन्म में कोई सुकृत किया था उसकर मनुष्य देह पाया अब पाप करेगा तो दुर्गति जायगा ये विचारे निर्बल निरापराध मृगादि पशु अनाथ भूमि ही है शय्या जिन के चंचल नेत्र सदा भय रूप वन के तृणों और जल कर जीवन हारे पूर्व पाप कर अनेक दुखों कर दुखी रात्रि भी निद्रा न करें भयकर महाकायर सो भले मनुष्य ऐसे दीनों को कहा हनें इसलिए जो तू अपना हित चाहे है तो मन वचन काय कर हिंसा तज, जीव दया अंगीकार कर, ऐसे मुनी के श्रेष्ठ वचन सुनकर वज्रकर्ण प्रतिबोधको प्राप्तभया जैसे फलावृक्ष नयजाय तैसे साधुके चरणारबिन्दको नया अश्व से उतर साधुके निकट गया हाथ जोड़प्रणामकर अत्यन्त विनयकी दृष्टिकर चित्तमें साधुकी प्रशंसा करता भया धन्यहै ये मुनि परिग्रहके त्यागी जिनको मुक्तिकी प्राप्तिहोयहै और इस बनके पक्षी और मृगादि पशु प्रशंसा योग्यहैं जे इस समाधि स्वरूप साधुका दर्शनकरे हैं और अति धन्य हूं मैं जो मुझे आज साधुका दर्शनभया ये तीन जगतकर बन्दनीकहै अबमैं पापकर्मसे निवृतभया ये प्रभो ज्ञानस्वरूप नखों कर बन्धु स्नेहमई संसाररूप जो पिंजरा उसे छेदकर सिंहकी न्याईं निकसे ये साधु देखो मनरूप बैरी को वशकर नग्न मुद्राधर शील पाले हैं मैं अतृप्त आत्मा पूर्ण वैराग्यको प्राप्त नहीं भया इसलिये श्रावक के अणुव्रत आदरूं ऐसा विचारकर साधुके समीप श्रावकके व्रत आदरे और अपनामन शांत रस रूप जलसे धोया और यह नियम लियाकि देवादिदेव परमेश्वर परमात्मा जिनेंद्रदेव और तिनके दास महा भाग्य निर्ग्रंथमुनि और जिनवाणी इन बिना औरको नमस्कार न करूं प्रीतिवर्धन नामा वे मुनि तिन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के निकट वज्रकर्णने अणुव्रत आदेर और उपवास धारे मुनिने इसको विस्तारकर धर्मका व्याख्यान कहा जिसकी श्रद्धाकर भव्यजीव संसार पाशसे छुटे एक श्रावकका धर्म एक यतिका धर्म इसमें श्रावक का धर्म गृहालंबन संयुक्त और यतिका धर्म निरालम्बनिरपेक्ष दोनोंधर्मोंकामूल सम्यक्तकी निर्मलता तप और ज्ञानकर युक्त अत्यन्तश्रेष्ठ सो प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोग रूपविषे जिन शासन प्रसिद्धहै यतिकाधर्म अतिकठिन जान अणुव्रत में बुद्धिठहराई और महाव्रतकी महिमा हृदय में धारी जैसे दरिद्रीके हाथमें निधि आवे और वह हर्षको प्राप्त होय तैसे धर्मध्यान को धरता संता आनन्द को प्राप्त भया यहअत्यन्त क्रूर कर्म का करण हारा एक साथही शांति दशा को प्राप्तभया इसबातकर मुनि भी प्रसन्नभए राजानेउसदिन तो उपवास किया दूसरेदिन पारणा कर दिगंबरके चरणारविंद को प्रणाम कर अपने स्थान को गया गुरुके चरणारविंद हृदयमेधारता संता संदेह रहितभया अणुव्रतआराधे चित्त में यह चिंता उपजी कि उज्जैनी का राजा जो सिंहोदर उसका मैं सेवक हूं उसका विनय किए बिनामैंराज्य कैसे करूं तब विचारकर एक मुद्रिका बनाई उसमें श्रीमुनिसुव्रतनाथ जी की प्रतिमापधराय दक्षिणांगुष्ट में पहिरी जब सिंहोदर के निकट जाय तब मुद्रिका में प्रतिमा उसेवारंबार नमस्कार करे सो इसका कोई वैरी था उसने यह छिद्र हेर सिंहोदर से कही कि यह तुम को नमस्कार नहीं करे है जिन प्रतिमा को करे है, तब सिंहोदर पापी कोप को प्राप्त भया और कपटकर वज्रकर्णको दशांग नगर से बुलावता भया, सम्पदाकर उन्मत्त मानी इसके माररिवे को उद्यमी भया सो वज्रकर्ण सरलचित्त सो तुरङ्गपरचढ़ उज्जयिनी जावे को उद्यमी भया, उससमय एकपुरुष ज्वानपुष्ट और उदारहै शरीर जिसका दण्ड जिसके

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हाथमें सो आयकर कहताभया हेराजा जो तू शरीरसे और राज्यभोगसे रहितभया चाहे तो उज्जयनी जावो नातर मत जावो सिंहोदर अति क्रोधको प्राप्त भयाहै तुमनमस्कार नकरोहो इसलियेतुमको माराचाहेहै तु भले जाने सो कर, यह वार्ता सुनकर वज्रकर्ण ने विचारी कोऊ शत्रु मेरेविषे और नृप विषे भेद किया चाहे है उस ने मंत्र कर यह पठाया होय फिर विचारी इस का रहस्य तो लेना तब एकान्त में उसे पूछता भया तू कौनहै और तेरा नाम क्या और कहांसे आया है और यह गोप्य मन्त्रतेंने कैसे जाना तब यह कहता भया कुन्दननगर में महा धनवन्त एक समुद्रसंगम सेठ है उसके यमुना स्त्री उसके वर्षा काल में विजुरी के चमत्कार समय मेरा जन्म भया, इस लिये मेरा विद्युदंग नाम धरा सो मैं अनुक्रम से नव यौवन को प्राप्त होय व्यापार के अर्थ उज्जैनी में गया तहां कामलता वेश्या को देख अनुराग कर व्याकुल भया एक रात्रि उससे संगम किया सो उसी ने प्रीति के बन्धन कर बांध लिया जैसे पारधी मृगको पांसि से बांधे मेरे बाप ने बहुत बर्षों में जो धन उपार्जा था सो में ऐसा कुपूत वेश्या के संग कर षट मास में सब खोया जैसे कमल में भ्रमर आसक्त होय तैसे उस में आसक्त भया, एक दिन वह नगरनायिका अपनी सखी के समीप अपने कुण्डलों की निन्दा करती थी सो मैं सुनी तबउससे पूछी उसने कही धन्य है राणी श्रीधरा महासौभाग्यवती उस के कानों में ऐसे कुण्डल हैं जैसे किसी के नहीं तब मैंने मन में चितई कि यदि मैं राणी के कुण्डल हर कर इसकी आशा पूर्ण न करूं तो मेरे जीने कर क्या तब कुण्डल हरने को मैं अंधेरी रात्री में राज मन्दिर में गया सो राजा सिंहोदर कोप हो रहा था और राणी श्रीधरानिकट बैठी थी सो राणी ने पूछा हे देव आज निद्रा काहे से न आवे है तब राजाने कही हे राणी मैं वज्रकर्णको

For Private and Personal Use Only

छोटे से मोटाकिया औरमुझेसिर न नवावेसोउसेजबतक न मारूं तब तक आकुलता के योग्यसे निद्रा कहां आवे एते मनुष्यों से निद्रा दूरही भागे अपमान से दग्ध और कुटुम्बी निर्धन शत्रुने आय दबाया अरु जीतने समर्थ नहीं और जिसके चित्त में शल्य तथा कायर और संसार से विरक्त इन से निद्रा दूरही रहे है यह वार्ता राजा और रानी की में सुनकर ऐसा होयगया मानो काहू ने मेरे हृदयमें वज्र की दीनी सो कुण्डल लेयबेकी बुद्धि तज यह रहस्य लेय तेरे निकट आय अब तू वहांमतजाइयो कैसा है तू जिन धर्म में उद्यमी है और निरन्तर साधुवोंका सेवकहै अंजनीगिरि पर्वतसे हाथी मदझरें तिन पर चढ़ें योधा बक्तर पहिरे और महा तेजस्वी तुरंगों के असवार चिलते पहिरे महा क्रूर सामन्त तेरे मारनेके अर्थ राजाकी आज्ञासे मार्ग रोके खड़े हैं इसलियेतू कृपाकर अब वहां मतजा में तेरे पायनपरूं हूं मेरा वचन मान और तेरे मनमें प्रतीति नहीं आवे तो देख वह फौज आई धूरके पटल उठे हैं महा शब्द होते आवे हैं यह विद्युदंग के वचन सुन वज्रकर्णपर चक्रको आवते देख इसको परममित्र जान लार लेय अपने गढ़विषे तिष्ठा सिंहोदर के सुभट दरवाजे में आवने न दिये तब सिंहोदर सर्वसेना लार ले चढ़ आया सो गाढ़ाजान अपने कटक के लोक इनके मारनेके डरसे तत्काल गढ़ लेने की बुद्धि न करी गढ़के समीप डेरे कर वज्रकर्ण के समीप दूत भेजा सो अत्यन्त कठोर वचन कहता भया तू जिन शासनके गर्वसे मेरे ऐश्वर्यका कंटकभया जे घर खोवा यति तिन्होंने तुझे बहकाया तू न्याय रहितभयादेश मेरादिया खाय माथा अरहंतको नवावे तू मायाचारी है इसलिये शीघ्रही मेरे समीप आयकर मुझे प्रणाम कर नातर मारा जायगा यह वार्ता दूतने वज्रकर्णसे कही तब वज्रकर्ण ने जो जवाब दिया सो दूतजाय

सिंहोदरसे कहेहै हे नाथ वज्रकर्णकी यह बिनती है कि देश नगर भण्डार हाथी घोड़े सब तुम्हारेहैं सो लेवो मुझे स्त्री सहित धर्म द्वार देय काढ देवो मेरा तुमसे उजर नहीं परन्तुमें यह प्रतिज्ञा करीहै कि जिनेन्द्रमुनि और जिनवाणी इन बिना औरको नमस्कार न करूं सो मेरा प्राणजाय तोभी प्रतिज्ञा भंग न करूं तुम मेरे द्रव्यके स्वामीहो आत्माके स्वामी नहीं यह वार्तासुन सिंहोदर अति क्रोधको प्राप्तभया नगरको चारों तरफसे घेरा और देश उजाड़दिया सो दलिद्री मनुष्य श्रीरामसे कहे हैं हे देव देश उजाड़ने का कारण मैं तुमसे कहा अब मैं जाऊंहूं जहांसे नजदीक मेरा ग्राम है ग्राम सिंहोदरके सेवकोंने जलाया लोगों के विमान तुल्य घरथे सो भस्म भए मेरी तृण काष्ठ कर रची कुटी सोभी भस्म भई मेरे घरमें एक छाज एक माटी का घट एक हांडी यह परिग्रहथा सो लाऊंहूं मेरे खोटी स्त्री उसने क्रूर वचनकह मुझे भेजा है और वह बारम्बार ऐसे कहे है कि सूने गांवमें घरोंके उपकरण बहुत मिलेंगे सो जाकर ले आवो सो मैं जाऊंहूं मेरे बड़े भाग्य जो आपका दर्शनभया स्त्री ने मेरा उपकारकिया जो मुझे भेजा वह वचन सुन श्रीराम महादयावान ने पंथीको दुखी देख अमोलक रत्नोंका हार दिया सो पंथी प्रसन्न होय चरणार विंदको नमस्कार कर हारले अपने घर गया द्रव्यकर राजाओं के तुल्य भया ॥

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मण से कहते भए कि हे भाई यह जेष्ठ का सूर्य अत्यन्त दुस्सह जब अधिक न चढे उससे पहिलेही चलो इस नगरीके समीप निवास करें सीता तृषाकर पीड़ित हैं सो इसे जल पिलावें और आहारकी विधभी शीघ्रही करें ऐसा कहकर वहांसे आगे गमनकिया सो द्रशांगनगर के समीप जहां श्रीचन्द्रप्रभु का चैत्यालय महा उत्तम है वहां आये और श्रीभगवानको प्रणाम कर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुख से तिष्ठे और आहारकी सामग्री निमित्त लक्ष्मण गए सिंहोदर के कटक में प्रवेश करते कटक के रक्षकजो मनुष्य उन्होंने मने किये तब लक्ष्मण ने विचारी कि ये दरिद्री और नीच कुल इनसे मैं क्या विवाद करूं यह विचार नगरकी ओर आए सो नगरके दरवाजोंमें अनेक योधा बैठथे और दरवाजे के ऊपर वज्रकरण तिष्ठाथा महासावधान सो लक्ष्मणको देख लोग कहते भए तुम कौन हो और कहां से कौन अर्थ आएहो तब लक्षणने कही दूरसे आए हैं और आहार निमित्त नगर में जावे हैं तब वज्रकर्ण इनको अति सुन्दर देख आश्चर्यको प्राप्तभया और कहताभया हे नरोत्तम भीतर आजावो तब यह हर्षित होय गढ़में गए वज्रकर्ण बहुत आदरसे मिला और कहताभयो कि भोजन तय्यार है सो आप कृपाकर यहांही भोजनकरो तब लक्ष्मणने कही मेरे गुरुजन बड़े भाई और भावज श्रीचन्द्रप्रभुके चैत्यालय में बैठे हैं तिनको पहिले भोजन कराय फिर मैं भोजन करूंगा तब वज्रकर्णने कही बहुत भलीवात वहां लेजाइये उन योग्य सब सामग्री है सो ले जावें अपने सेवकों हाथ उसने भान्ति भान्तिकी सामग्री पठाई सो लक्ष्मण लिवाय लाए श्रीराम लक्ष्मण और सीता भोजन कर बहुत प्रसन्नभए श्रीराम कहते भए हे लक्ष्मण देखो वज्रकर्ण की बड़ाई जो ऐसा भोजन कोई अपने जमाई को भी न जिमावे सो विना वाकिफ़ी अपने तांई जिमाए पीने की वस्तु महा मनोहर और व्यंजन महामिष्ट यह अमृत तुल्य भोजन जिस कर मार्ग का खेद मिटा और जेठ के आताप की तपत मिटी चान्दनी समान उज्ज्वल दुग्ध महा सुगन्ध जिस पर भ्रमर गुञ्जार करें और सुन्दर घृत सुन्दर दधि मानों कामधेनुके स्तनों से उपजाया दुग्ध उससे निरमाया है ऐसे भोजन ऐसे रस और ठौर दुर्लभ हैं, उस पंथी ने पहिले अपने तांई कही थी कि यह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अणुव्रतका धारी श्रावक है और जिनेन्द्र मुनिन्द्र जिनसूत्र टार और को नमस्कार नहीं करे है सो ऐसा धरमात्मा व्रत शील का धारक अपने आगे शत्रु से पीडित रहे तो अपने पुरुषार्थ से क्या सधा, अपना यही धर्म है जो दुखी का दुख निवारें साधर्मी का तो अवश्य निवारें यह अपराध रहित साधुसेवा में सावधान महाजिनधर्मी उसके लोक जिनधर्मी ऐसे जीवको पीड़ा क्यों उपजे । यह सिंहोदर ऐसा बलवान है जो इसके उपद्रव से वज्रकर्णको भरत भी न वचाय सके इसलिये सो हे लक्ष्मण तुम इसकी शीघ्रही सहायता करो सिंहोदर पै जावो और वज्रकर्णका उपद्रव मिटे सो करो हम तुम को कहा सिखावें जो यूं कहियो यूं कहियो तुम महा बुद्धिवान् हो जैसे महामणि प्रभा सहित प्रकट होय है तैसे तुम महाबुद्धि पराक्रम को धरे प्रकट भए हो, इस भान्ति श्रीराम ने भाई के गुण गाए तब भाई लज्जाकर नीचे मुख होय गए नमस्कार कर कहते भए हे प्रभो जो आप आज्ञा करोगे सोई होयगा महा विनयवान लक्ष्मण राम की आज्ञा प्रमाण धनुष बाण लेय धरती को कंपायमान करते हुए शीघ्र ही सिंहोदर पै गए सिंहोदरके कटक के रखवारे पूछते भए तुम कौन हो लक्ष्मण ने कही मैं राजा भरत का दूतहूं, तब कटक में बैठने दीया अनेक डेरे उलंघ राजद्वार में गया द्वारपाल ने राजा से मिलाया सो महाबलवान सिंहोदरको तृणसमान गिनतासंता कहता भया हे सिंहोदर अयोध्याका अधिपति भरत उसने यह आज्ञा करी है कि वृथा बिरोधकर क्या वज्रकर्ण से मित्रभाव करो तब सिंहोदर कहता भया हे दूत तू राजा भरतको इस भान्ति कहियो किजो अपना सेवक होय और विनयमार्ग से रहित होय उसे स्वामी समझाय सेवा में लावे, इस में विरोध क्या यह वज्रकर्ण दुरात्मा मानी मायाचारी कृतघ्न मित्रों का निन्दक चाकरीचूक आलसी मूढ विनयचार रहित खोटी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिलाषा का धारक महाक्षुद्र सज्जनतारहित है सो इसके ये दोष जब मिटैंगे कि कै तो यह मरण को प्राप्त होय अथवा इसे राज्य रहितकरूं इसलिये तुम कछूमतकहो मेरा सेवक है जो चाहूंगा सो करूंगा तब लक्ष्मण बोले बहुत उत्तरों कर क्या यह परमहितु है इस सेवक का अपराध क्षमा करो ऐसा जब कहा तब सिंहोदर क्रोध कर अपने बहुत सामन्तों को देख गर्व को धरता हुवा उच्च स्वरों से कहता भया यह बज्रकर्ण तो महामानी है ही परन्तु इसके कार्यको आया जो तू सोभी महामानी है तेरा तन और मन मानो पाषाणसे निरमाया है रञ्चमात्रभी नम्रता तो मैं नहीं तू भरतका मूढ़सेवक है जानिये है जो भरतके देशमें तो सारिखे मनुष्य होवेगे जैसे सीजती भरी हांडी में से एक चावल काढ कर नर्म कठोर की परीक्षा कीजिए है तैसे एक तेरे देखनेसें सब की बानिगी जानी जाय है. तब लक्ष्मण क्रोध कर कहते भए मैं तेरी वांकी सूधी करावे को आया हूं तुझेनमस्कार करने को तो न आया, बहुत कहनेसे क्या थोड़े ही में समझ जावो बज्रकर्ण से संधिकर ले नातर मारा जायगा ये वचन सुन सब ही सभा के लोक क्रोध को प्राप्त भए नाना प्रकार के दुर्बचन कहते भए और नाना प्रकार क्रोध की चेष्टाको प्राप्त भए कै एक छूरी लेय कै एक कटार भाला तलवार गहकर इस के मारने को उद्यमी भए हुंकार शब्द करते अनेक सामन्त लक्ष्मण को ऐसे बेढ़ते भए जैसे पर्वत को मच्छर रोकें तैसे रोकते भए, सो यह धीर वीर युद्ध क्रिया विषे पण्डित शीघ्र क्रिया के वेत्ता चरण के घात कर तिन को दूर उड़ा दिए, कै एक गोडों से मारे कै एक कूहनियों से पछाड़े कैएक मुष्टिप्रहार कर चूर्ण कर डारे कैएकों के केश पकड़ पृथिवी पर पाडिमारे कैयकों को परस्पर सिर भिडाय मारे, इस भांन्ति अकेले महाबली लक्ष्मण

ने अनेक योधा विध्वंस किये तब और बहुत सामंत हाथी घोड़ोंपर चढ़े बक्तर पहिरे लक्ष्मण की चौगिरद फिरें नानाप्रकार शस्त्रों के धारक तब लक्ष्मण जैसे सिंह स्यालों को भगावे तैसे तिनको भगावता भया तब सिंहोदर कारीघटा समान हाथीपर चढ़कर अनेक सुभटों सहित लक्ष्मण से लड़नेकोउद्यमी भया अनेक योधा मेघसमान लक्ष्मणरूप चंद्रमाको ढूंढ़ते भए सो सब योधा ऐसे भगाए जैसे पवन आकके डोडों के जे फफूंदे तिनको उड़ावे उस समय महायोधावोंकी कामिनी परस्परवार्ता करे हैं देखो यह एक महा सुभट अनेक योधाओंसे बेढ़ाहै परन्तु यह सबको जीते हैं कोई इसको जीतिवे शक्त नहीं धन्यहै इसके माता पिता इत्यादि अनेक वार्ता सुभटोंकी स्त्री करे हैं और लक्ष्मणने सिंहोदरको कटकसहित चढ़ा देख गजका थंभ उपाड़ा और कटकके सन्मुख गए जैसे अग्नि बनको भस्म करे तैसे कटकके बहुत सुभट विध्वंस किए और जो दशांगनगरके योधा नगरके दरवाजे ऊपर वज्रकर्णके समीप बैठेहुएथे सो फूल गए हैं नेत्र जिनके स्वामीसे कहते भए हे नाथ देखो यह एक पुरुष सिंहोदरके कटकसे लड़े है ध्वजारथ छत्र भग्न कर डारे परम ज्योतिका धारी है खडगसमान है कांति जिसकी समस्त कटकको व्याकुलतारूप भ्रमण में डाराहै सब तरफ सेना भागी जायहै जैसे सिंहसे मृगोंके समूह भागें और भागते हुए सुभट परस्पर बतलावे हैं कि बक्तर उतारधरो हाथी घोड़े छोड़ो गदाखाडे में डार देवो ऊंचे शब्द न करो ऊंचा शब्द सुनकर शस्त्रके धारकदेख यह भयानक पुरुष आय मारेगा अरेभाई यहांसे हाथी लेजावो कहां थांभ राखा है गैलादेव अरे दुष्ट सारथी कहां रथको थांभ राखाहै अरे घोडे आगेकरो यह आया यह आयाइसभांति के बचनालाप करते महाकष्टको प्राप्तभए सुभट संग्राम तज आगे भागे जारहे हैं नपुंसक समान हो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गए यह युद्धमें क्रीडाका करणहारा कोई देवहै तथा विद्याधरहै कालहै अक वायुहै यह महा प्रचंड सब सेनाको जीतकर सिंहोदरको हाथीसे उतार गले में वस्त्र डार बांध लिए जायहै जैसे बलद को बांध धनी अपने घर लेजाय यह वचन बज्रकर्णके योधा बज्रकर्णसे कहताभया तब वह कहते भए हे सुभट हो बहुत चिन्ताकर क्या धर्मके प्रसादसे सब शांति होयगी और दशांग नगरकी स्त्री महलोंके ऊपर बैठी परस्पर वार्ता करे हैं रे सखी देखो इस सुभटकी अद्भुत चेष्टा जो एक पुरुष अकेला नरेन्द्र को बांधे लीए जायहै अहो धन्य इसका रूप धन्य इसकी कांति धन्य इसकी शक्ति यह कोई अतिशयका धारी पुरुशोत्तम है धन्य हैं वे स्त्री जिनका यह जगतीश्वर पति हुआ है तथा होयगा और सिंहोदरकी पटरानी बाल तथा वृद्धोंसहित रोवती हुई लक्ष्मणके पांवो पड़ी और कहती भई हे देव इसे छोड देवो हमे भरतारकी भीख देवो अब जो तुम्हारी आज्ञा होयगी सो यह करेगा तब कहते भए यह आगे बडा वृक्षहै उससे बांध इसे लटकाऊंगा तब इसकी राणी हाथ जोड बहुत विनती करती भई हे प्रभो आप रोस भएहो तो हमें मारो इसे छोडो कृपाकरो प्रीतमका दुःख हमें मत दिखावो जे तुम सारिखे पुरुषोत्तमहै वे स्त्री और बालक बृद्धोंपर करुणाही करे हैं तब आप दयाकर कहते भए तुम चिन्ता न करो आगे भगवानका चैत्यालयहै वहां इसे छोडेंगे ऐसा कह आप चैत्यालयमें गए जाय कर श्रीरामसे कहते भए कि हे देव यह सिंहोदर आयाहै आप कहो सो करें तब सिंहोदर हाथ जोड कांपता श्रीरामके पायन पडा और कहताभया हे देव तुम महाकांतिके धारी परम तेजस्वीहो सुमेरु सारिखे अचल पुरुषोत्तमहो मैं आपका आज्ञाकारी यह राज्य तुम्हारा तुम चाहो जिसे देवो मैं तुम्हारे चरणारविंद

For Private and Personal Use Only

पद्म पुराण ॥५०४॥ की निरन्तर सेवा करूंगा और राणी नमस्कारकर पतिकी भीख मांगती भई और सीतासतीके पायन परी कहती भई हे देवी हे देवी हे शोभने तुम स्त्रियोंकी शिरोमणिहो हमारी करुणाकरो तब श्रीरामसिंहोदरको कहते भए मानो मेघगाजे अहोसिंहोदर तुझे जो वज्रकर्णकहै सो कर इसी बातसे तेरा जीतव्यहै और बात कर नहीं इस भांति सिंहोदरको रामकी आज्ञाभई उसी समयजे वज्रकर्णके हितकारीथे तिनकोभेजवज्रकर्णको बुलाया सो परि...हित चैत्यालयमें आया तीन प्रदक्षिणादेय भगवानको नमस्कारकर चंद्रप्रभु स्वामीकी अत्यन्त स्तुतिकर रोमांचहोय आए फिरवह विनयवान दोनों भाइयोंके पास आया स्तुतिकर शरीरकी आरोग्यता पूंछता भया और सीता जीकी कुशल पूछी तब श्रीराम अत्यन्त मधुर ध्वनि कर वज्रकर्ण को कहते भए हे भव्य तेरी कुशल से हमारे कुशल है इस भांति वज्रकर्णकी और श्रीरामकी वार्ता होयहैं तबही सुन्दर भेष धरे विद्युदंग आया श्रीराम लक्ष्मण की स्तुति कर वज्रकर्ण के समीप बैठा सर्वसभा में विद्युदंग की प्रशंसा भई कि यह वज्रकर्णका परम मित्र है फिर श्री रामचन्द्र प्रसन्न होय वज्रकर्ण से कहते भए तेरी श्रद्धा महाप्रशन्सा योग्य है कुबुद्धियोंके उत्पात कर तेरी बुद्धि रंच मात्र भी न डिगी जैसे पवन के समूह से सुमेरु की चूलिका न डिगे मुझे देखकर तेरा मस्तक न नया सो धन्यहै तेरी सम्यक्तकी दृढ़ता जे शुद्धतत्त्वके अनुभवी पुरुषहैं तिनकी यही रीति है कि जगतकर पूज्य जे जिनेंद्रतिन को प्रणाम करें फिर मस्तक कौन को नवावें मकरंद रसका आस्वादकरणहारा जो भ्रमर सो गर्धब(गधा)कीपूंछपै कैसे गुंजार करे तू बुद्धिमान है धन्यहै निकटभव्य है चन्द्रमासे भी उज्जवलकीर्ति तेरी पृथिवीमें विस्तरी है इस भांति वज्रकर्णके सांचे गुण श्रीरामचन्द्रने वर्णन कीए तब वह लज्जावान्

होय नीचा मुख कर रहा श्री रघुनाथ से कहता भया हे नाथ मो पर यह आपदा तो बहुत पड़ीथी परन्तु तुम सारीखे सज्जन जगतके हितु मेरे सहाई भए मेरे भाग्य से तुम पुरुषोत्तम पधारे इस भांति वज्रकर्ण ने कही तब लक्ष्मण बोले तेरी वांछा जो होय सो करें, तब वज्रकर्ण ने कही तुम सारिखे उपकारी पुरुष पायकर मुझे इस जगत विषे कछु दुर्लभ नहीं मेरी यही बीनती है मैं जिन धर्मी हूं मेरे तृणमात्र को भी पीड़ाकी अभिलाषा नहीं और यह सिंहोदर तो मेरा स्वामी है इसलिये इसे छोडो ये वचन जब वज्रकर्ण ने कहे तब सब के मुख से धन्य धन्य यह ध्वनि होती भई कि देखो यह ऐसा उत्तम पुरुष है द्वेष प्राप्तिभए भी पराया भला ही चाहे है जे सज्जन पुरुष हैं वे दुर्जनों का भी उपकारकरें औरजे आपका उपकार करें उनका तो करें ही करें लक्ष्मणने वज्रकर्णको कही जो तुमकहोगेसो ही होयगा सिंहोदरकोछोड़ा और वज्रकर्णकाऔरसिहोदर का परस्पर हाथ पकड़ाया परम मित्रकीए वज्रकर्णको सिंहोदर का आधा राज्य दिलवायाऔर जोमाललूटाथा सो,भी दिवाया और देश धनसेना आधा२ विभागकरदिया वज्रकर्णके प्रसादकर विद्युदंग सेनापति भया और वज्रकर्ण ने राम लक्ष्मणकी बहुत स्तुति करी अपनी आठपुत्रियों की लक्ष्मण से सगाई करीकैसी हैं वे कन्या महाविनयवन्ती सुन्दर भेष सुन्दर आभूषण को धरें औ राजा सिंहोदर को आदि देय राजाओं की परम कन्या तीन सौ लक्ष्मण को दई सिंहोदर औरवज्रकर्ण लक्ष्मण से कहते भये आप अंगीकार करें तब लक्ष्मण बोले विवाह तो तब करूंगा जब अपने भुजकरराज्य स्थान जमाऊंगा औरश्रीरामतिनसे कहते भये कि हमारे अबतक देश नहीं है तातने राज भरतको दियाहैइसलिये चन्दनगिरीके समीप तथा दक्षिणके समुद्र के समीप स्थानक करेंगे तब अपनी दोनों मातावों को लेने को मैं आऊंगा अथवा लक्ष्मण आवेगा

उस समय तुम्हारी पुत्रियों को भी परण करले आवेगा अब तक हमारे स्थानक नहीं कैसे पाणिग्रहण करें जब इस भांति कही तब वे सब राजकन्या ऐसी होय गईं जैसा जाडे का मारा कमलों का बन होय जाय मनमें विचारतीभई वह दिन कब होयगा जबहमको प्रीतमके संगमरूप रसायनकी प्राप्ति होयगी और जो कदाचित प्राणनाथका विरहभया तो हम प्राणत्याग करेंगे इन सबका मन विरहरूप अग्नि कर जलताभया यह विचारती भई एक ओर महा औंडागर्त औरएक ओर महाभयंकर सिंह क्या करें किधर जावें विरहरूप व्याघ्रको पतिके संगमकी आशासे वशीभूत कर प्राणोंको राखेंगी यह चिन्तवन करती हुई अपने पिताओंकी लार अपने स्थानक गई सिंहोदर वज्रकर्ण आदि सबही नरपति रघुपति की आज्ञालेय घराए वे राजकन्या उत्तम चेष्टाकी धरणहारी माता पितादि कुटंबसे अत्यन्तहे सन्मान जिनका और पतिमें है चित्त जिनका सो नाना विनोद करती पिताके घरमें तिष्ठतीभई और विद्युदंगने अपने माता पिताको कुटंबसहित बहुत विभूतिसे बुलाए तिनके मिलापका परम उत्सव किया और वज्रकर्ण के और सिंहोदरके परस्पर अतिप्रीति बढी और श्रीरामचन्द्रलक्ष्मण अर्धरात्रिको चैत्यालयसे निकलकर चल दिए सो धीरे २ अपनी इच्छा प्रमाण गमनकरे हैं और प्रभातसमय जे लोक चैत्यालयमें आए तो श्रीराम को न देख शून्यहृदय होय अति पश्चाताप करते भए। इति तेतीसवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर रामलक्ष्मण जानकीको धीरे २ चलावते और रमणीक बनमें विश्राम लेते और महा मिष्ट स्वादुफलों का रसपान करते क्रीड़ा करते रसभरी बातें करते सुन्दर चेष्टाके धरणहार चले २ नलकूवर नामा नगर आये कैसाहै नगर नाना प्रकारके रत्नों के जे मंदिर तिनके उतंग शिखरोंकर मनोहर और

सुन्दर उपवनोंकर मंडित जिनमंदिरोंसे शोभित स्वर्गसमान निरंतर उत्सवका भरा लक्ष्मी का निवास है। सो श्रीरामलक्षमण और सीता नलकूवर नामा नगरके परम सुन्दर वनमें आय तिष्ठे कैसाहै वह वन फल पुष्पों से शोभित जहां भ्रमर गुंजार करे हैं और कोयल बोले हैं सो निकट सरोवरीपर लक्षमण जलके निमित्त गए सो उसी सरोवरीपर क्रीडाके निमित्त कल्याणमाला नाम राज्य पुत्री राजकुमार का भेष किये आई थी कैसाहै राजकुमार महारूपवान नेत्रोंका हरणहारा सर्वको प्रिय महा विनयवान कांतिरूप निर्भरनोंके पर्वत श्रेष्ठ हाथीपर चढ़ा सुंदर प्यादे लार जो नगरका राज्य करे सो सरोवरीके तीर लक्षमणको देख मोहितभया कैसाहै लक्षमण नीलकमल समान श्याम सुंदर लक्षणोंका धरणहारा सो राजकुमारने एक मनुष्यको आज्ञाकरी कि इनको लेआवो सो वह मनुष्य जायकर हाथ जोड़ नमस्कारकर कहताभया हे धीर यह राजपुत्र आपसे मिला चाहे है सो पधारिये तब लक्ष्मण राजकुमार के समीप गए सो हाथीसे उतरकर कमल तुल्य जे अपनेकर तिनकर लक्षमणका हाथ पकड तम्बूमें लेगया एक आसनपर दोनों बैठे राजकुमार पूछताभया आप कौनहो कहांसे आये हो तब लक्ष्मणने कही मेरे बडेभाई मेरोबिनाएकक्षण न रहैं सो उनकेनिमित्त अन्नपान सामग्रीकर उनकी आज्ञालेय तुमपर आऊंगा तब सब बात कहूंगा यह बात सुन राजकुमारने कही कि रसोई यहांही तैयारभई है सो यहांही तुम और वे भोजनकरो तब लक्ष्मणकी आज्ञापाय सुन्दर भातदाल नाना विधिव्यंजन नवीनघृत कपूरादि सुगन्ध द्रव्योंसहित दधि दुग्ध और नाना प्रकार पीनेकी वस्तु मिश्रीके स्वाद जिसमें ऐसे लाडू और पूरी सांकली इत्यादि नानाप्रकार भोजनकी सामग्री और वस्त्र आभूषण माला इत्यादि अनेक सुगंध नाना

पद्म पुराण ॥५०८॥

प्रकार तैयार किए और अपना निकटवर्ती जो द्वारपाल उसे भेजा सो जायकर सीतासहित रामको प्रणाम कर कहताभया हे देव इस वस्त्र भवनके विषे तुम्हारा भाई तिष्ठे है और इस नगरके नाथने बहुत आदर से विनती करी है यहां छाया शीतल है और स्थान मनोहर सो आपकृपा कर पधारें तो मार्ग का खेदनिवृत होवे तब आप सीता सहित पधारे जैसे चांदनी सहित चांदउद्योत करे कैसे हैं आप मातेहाथी समानहै चाल जिनकी लक्ष्मण सहित नगरका राजा दूरही से देख उठकर सामने आया सीता सहित राम सिंहासन पर विराजे राजा ने आरती उतार कर अर्घ दिए अतिसन्मान किया आपप्रसन्न होय स्नानकर भोजन किया सुगन्ध लगाई फिर राजाने सबको विदाकिए ए चारहीरहे एकराजा तीनए राजानेसबको कहा किमेरेपिता के पाससे इनकेहाथसमाचार आए हैं सो एकांतकी वार्ता है कोई आवने न पावे जो आवेगा उसे ही मैं मारूंगा बड़े २ सामन्त द्वारे राखएकांत में इनकेआगेलज्जा तज कन्यानेजो राजा का भेषधरा थासो तज अपना स्त्रीपदकारूप प्रकट दिखाया कैसीहै कन्या लज्जाकर नम्रीभूत मुखजिसका और रूपकरमानों स्वर्ग की देवांगना है अथवा नागकुमारी है उसकीकांतिसे समस्त मन्दिर प्रकाशरूप होयगया मानों चन्द्रमा का उदय भया चन्द्रमा किरणोंसे मंडित है इसका मुखलज्जा और मुलकन कर मंडितहै मानों यह राजकन्या साक्षात लक्ष्मीही है कमलों के वनमें से आयतिष्ठी है अपनी लावण्यतारूप सागरमें मानों मन्दिरको गर्क कियाहै जिसकी द्युति आगे रत्न और कंचन द्युतिरहित भासेहैं जिसके स्तन युगुलसे कांतिरूप जलकी तरंगोंसमान त्रिवली शोभेहै और जैसे मेघपटल को भेद निशाकर निकसे तैसे वस्त्रको भेद अंग की ज्योति फैल रहीहै और अत्यन्तचिकने सुगन्ध कारे बांके पतले लम्बेकेश

तिनसे बिराजितहै प्रभारूप बदन जिसका मानों कारीघटामेंविजली के समान चमके है और महा सूक्षम स्निग्ध जो रोमों की पंक्ति उसकर बिराजित मानों नीलमणिसे मंडित सुवर्णकी मूर्तिही है तत्कालनर रूप तज नारी का रूपकर मनोहर नेत्रों की घरनहारी सीता के पांयन लाग समीप जाय बैठी जैसे लक्ष्मी रतिके निकट जाय बैठे सो इसका रूप देख लक्ष्मण काम कर बींधा गया औरही अवस्था होगई नेत्र चलायमान भए तब श्री रामचन्द्र कन्या से पूछते भए तू किसकी पुत्री है और पुरुष का भेष कौन कारण किया तब वह महामिष्ट वादिनी अपना अंग वस्त्र से ढांक कहती भई हे देव मेरा वृत्तान्त सुनो इस नगर का राजा बालखिल्य महा सुबुद्धि सदा आचारवान श्रावक के व्रत धारक महा दयालु जिन धर्मीयों पर वात्सल्य अंग का धारणहारा राजाके पृथिवी राणी उसे गर्भ रहा सो मैं गर्भ में आई और म्लेच्छोंका जो अधिपति उससे संग्राम भया मेरा पिता पकड़ा गया सो मेरा पिता सिंहोदरका सेवकसो सिंहोदरने यह आज्ञाकरी कि जो बालखिल्य के पुत्रहोय सो राज्यका कर्ता होय सो मैं पापिनी पुत्रीभई तब हमारे मन्त्री सुबुद्धि उसने मनसूवाकर राज्य के अर्थ मुझे पुत्र ठहराया सिंहोदरको वीनती लिखी कल्याणमाला मेरा नामधरा और बड़ाउत्सवकिया सो मेरीमाता और मन्त्री ये तो जाने हैं जो यह कन्याहै और सब कुमारही जाने हैं सो एते दिनमें व्यतीतकिये अब पुण्यके प्रभाव से आपका दर्शनभया मेरा पिता बहुत दुःख में तिष्ठे है म्लेच्छोंकी बन्द में है सिंहोदरभी उसे छुड़ायबे समर्थ नहीं और जो द्रव्य देश में उपजे है सो सब म्लेच्छ के जाय है मेरी माता वियोगरूप अग्नि से तप्तायमान जैसे दूज के चन्द्रमा की मूर्ति क्षीणहोय तैसी होयगई है ऐसा कहकर दुःखके भार कर पीड़ित है समस्त गात जिसका सो

मूर्छा खायगई और रुदन करती भई तब श्रीरामचन्द्रने अत्यन्त मधुरवचन कहकर धीर्य बँधाया सीता गोदमें लेय बैठी मुख धोया और लक्ष्मण कहतेभये हे सुन्दरी सोच तज और पुरुषका भेषकर राज्य कर कईएक दिनोंमें म्लेछोंको पकड़ और तेरे पिताको छूटाजान ऐसा कहकर परम हर्षउपजाया सो इनके वचन सुनकर कन्या पिताको छूटाही जानतीभई श्रीरामलक्ष्मण देवोंकी न्याईं तीनदिन यहां बहुत आदरसेरहे फिर रात्रिमें सीता सहित उपवन से निकसकर मोप चलेगए प्रभात समय कन्या जागी तिनको न देख व्याकुलभई और कहतीभई वे महापुरुष मेरा मन हरलेगये मुझपापिनीको नींद आगई सो मोपचलेगए इस भांति विलापकर मनको थांभ हाथीपर चढ़ पुरुषके भेष नगर में गई और राम लक्ष्मण कल्याण माला के विनयकर हरागयाहै चित्त जिनका अनुक्रमसे मेकला नामा नदी पहूंचे नदीउतर क्रीड़ा करते अनेक देशोंको उलंघ विन्ध्याटवीको प्राप्तभए पंथमें जातेहुये गुवालोंने मने कीए कि यह अटवी भयानक है तुम्हारे जाने योग्य नहीं तब आप उनकी बात न मानी चलेहीगए कैसी है वनी कहींएक लताकर मंडित जे शालवृक्षादिक उनसे शोभित है और नानाप्रकार के सुगंध वृक्षोंकर भरी महा सुगन्धरूपहै और कहीं एक दावानलकर जले वृक्ष तिनकर शोभारहित है जैसे कुपुत्रकर कलंकित गोत्र न शोभे ।

अथानन्तर सीता कहती भई कंटकवृक्षके ऊपर बाईं ओर काग बैठा है सो यहतो कलहकी सूचना कर है और दूसरा एक काग चीर वृक्ष पर पैठाहै सो जीत दिखावे है इसलिये एक महूर्त स्थिरताकरो इस मुहूर्त में चले आगे कलहके अन्त जीत है मेरे चित्तमें ऐसा भासे है तब क्षणएक दोनों भाई थंभे फिर चले आगे म्लेछों की सेना दृष्टि पड़ी वे दोनोंभाई निर्भय धनुष्बाणधरे म्लेछों की सेनापर पड़े सो सेना

नाना दिशोंको भाग गई तब अपनी सेना का भंग जान और बहुत म्लेछ बक्तर पहिर आए सो वेभी लीलामात्र में जीते तब वे सब म्लेछ धनुष वाण डार पुकार करते पतिप जाय सारा वृत्तान्त कहतेभए तब वे सब म्लेछ परम क्रोधकर धनुषवाण लीए महा निर्दई बडी सेनासे आये शस्त्रोंके समूहसे संयुक्त वे काकोदन जातिके म्लेछ पृथिवी पर प्रसिद्ध सर्व मांस के भक्षी राजोंकरभी दुर्जय वे कारी घटा समान उमंडि आये तब लक्षमण ने कोपकर धनुष चढ़ाया तब बन कम्पायमान भया वनके जीव कांपने लग गए तब लक्षमण ने धनुष के शर बांधा तब सब म्लेछ डरे बनमें दशों दिश आंधे की न्याई भटकते भए तब महा भयकर पूर्ण म्लेछोंका अधिपति रथसे उतर हाथ जोड़ प्रणामकर पायन पडा अपना सब वृतांत दोनों भाइयों से कहता भया । हे प्रभो ! कौशांबी नाम नगरी है वहां एक विश्वानल नामा ब्राह्मण अग्निहोत्री उसके प्रतिसंध्यानामास्त्री तिन के रौद्रभूतनामा पुत्र सो द्यूतकला में प्रवीण बाल अवस्थाही से क्रूर कर्म का करणहारा सो एक दिन चोरी से पकड़ा गया और सूली देने को उद्यमी भए तब एक दयावान् ने छुड़ाया सो मैं कांपता देश तज यहां आया कर्मानुयोग कर काकोदन जाति के म्लेछों का पति भया महाभ्रष्ट पशु समान व्रत क्रिया रहित तिष्ठू हूं अब तक महासेना के अधिपति बड़े बड़े राजा मेरे सन्मुख युद्ध करने को समर्थ न भए मेरी दृष्टिगोचर न आए सो मैं आप के दर्शन मात्र ही से वशीभूत भया धन्यभाग्य मेरे जो मैंने तुम पुरुषोत्तम देखे अब मुझे जो आज्ञा देवो सो करूं आपका किंकर आपके चरणारविन्द की पावड़ी सिर पर धरूं और यह विन्ध्याचल पर्वत और स्थान निधि कर पूर्ण है, आप यहां राज्य करो मैंतुम्हारा दास ऐसा कहकरम्लेछ मूर्छाखायकर पायनपड़ा जैसेवृक्षनिर्मूलहोयगिरपड़े उसकोविह्वल

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देख श्री रामचन्द्र दयारूप वेल कर वेढे कल्पवृक्ष समान कहते भए उठ उठ डरै मत वालखिल्य को छोड़ तत्काल यहां मंगाय और उसका आज्ञाकारी मंत्री होय कर रहो म्लेछों की क्रिया तज पापकर्म से निवृत हो देश की रक्षा कर इस भान्ति किये से तेरी कुशल है तब उसने कही हे प्रभो! ऐसे ही करूंगा यह वीनती कर आप गया और महारथ का पुत्र जो वालखिल्य उसे छोड़ा बहुत विनय संयुक्त उस के तैलादि मर्दन कर स्नान भोजन कराय आभूषण पहिराय रथपर चढ़ाय श्री रामचन्द्रके समीप लेजाने को उद्यम किया, तब वालखिल्य परम आश्चर्य को प्राप्त होय विचारता भया कहां यह म्लेछ महाशत्रु कुकर्मी अत्यन्त निर्दयी और मेरा एता विनय करे है सो जानिये है कि आज मुझे किसी की भेट देंगे अब मेरा जीवना नहीं यह विचार सो वालखिल्य सचिन्त चला आगे राम लक्ष्मण को देख परम हर्षित भया रथ से उतर आय नमस्कार किया और कहता भया हे नाथ! मेरे पुण्य के योग से आप पधारे मुझे बन्धन से छुड़ाया आप महासुन्दर इन्द्र तुल्य पुरुष हो तब रामने आज्ञा करी तू अपने स्थानको जा कुटुंब से मिल तब वालखिल्य रामको प्रणाम कर रौद्रभूतसहित अपनेनगर गयासोवालखिल्यको आया सुनकर कल्याण माला महाविभूति सहितसन्मुखआया औरनगर में महा उत्साह भया राजाने राजकुमार को उरसे लगाय अपनी असवारी में चढ़ाय नगर में प्रवेश किया राणी पृथिवी के हर्ष से रोमाञ्च होय आये जैसाआगे शरीर सुन्दर था तैसा पति के आये भया सिंहोदर को आदि देय वालखिल्य के हितकारी सब ही प्रसन्न भए और कल्याणमाला पुत्री ने एते दिवस पुरुष का भेष कर राज थाम्भा था सो इस बात का सबको आश्चर्य भया यह कथा राजा श्रेणिकसे गौतम स्वामीकहे हैं हे नराधिप वह रौद्रभूत परद्रव्यका हरणहारा अनेक देशोंका

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कंटक सो श्रीराम के प्रतापसे वालखिल्यका आज्ञाकारी सेवकभया । जब रौद्रभूत वशीभूत भया और म्लेच्छों की विगमभूमि में बालखिल्यकी आज्ञाप्रवर्ती तब सिंहोदरभी शंका मानता भया । और अति स्नेह सहित सन्मानकरताभया बालखिल्य रघुपतिकेप्रसादसे परमविभूतिपाय जैसाशरदऋतुमें सूर्यप्रकाशकरे तैसापृथिवी पर प्रकाश करताभया अपनीराणी सहितदेवों की न्याईरमता भया ॥ इति चौंतीसवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर वे रामलक्ष्मण दोनों सारिखे मनोहर नन्दन बन सारिखा बन उसमें सुखसे बिहार करते एक मनोग्य देशमें आय निकसे जिसके मध्य तापती नदी बहे नानाप्रकारके पक्षियोंके शब्दोंसे सुंदर वहां एक निर्जन बनमें सीता तृषाकर अत्यन्त खेदखिन्न भई तब पतिको कहती भई । हे नाथ तृषासे मेरा कंठ शोष होयहै जैसे अनन्त भवके भ्रमणकर खेदखिन्न हुआ भव्यजीव सम्यक दर्शनको बांछे तैसे मैं तृषासे व्याकुल शीतल जलको बांछूहूं ऐसा कहकर एक वृक्षके नीचे बैठगई तब रामने कही हे देवी हे शुभे तू विषादको मत प्राप्तहोय नजीकही यह आगे ग्राम है जहां सुंदर मंदिरहैं उठ आगे चल इस ग्राममें तुझे शीतल जलकी प्राप्ति होयगी ऐसा जब कहा तब उठकर सीता चली मंद २ गमन करती गजगामिनी उससहित दोनों भाई अरुणानामा ग्राममें आए जहां महाधनवान किसानरहैं जहां एक ब्राह्मण अग्निहोत्री कपिलनामा प्रसिद्ध उसके घरमें आय उतरे उसकी अग्निहोत्रकी शाला में क्षण एक बैठ खेद निवारा कपिलकी ब्राह्मणी जललाई सो सीताने पिया वहां बिराजे हैं और बनसे ब्राह्मण वील तथा छीला वा खेजडा इत्यादि काष्ठका भार बांधे आया दावानल समान प्रज्वलित जिसका मन महाक्रोधी कालकूट विषै समान बचन बोलताभया उल्लूसमानहै मुख जिसका और कर

For Private and Personal Use Only

में कमण्डलु चोटिके गांठ दिए लांबीडाढी यज्ञोपवीत पहिरे उञ्छवृत्ति कहिए अन्नको काटकर ले गए पीछे खेतनमें से अन्न कण बीन लावे इसभांतिहै आजीविका जिसकी सोइनको बैठे देख वक्र मुखकर ब्राह्मणीको दुर्वचन कहताभया हे पापिनी इनको घरमें क्यों प्रवेशदिया मैं आज तोहे गायोंके मठनमें बांधूंगा देख इन निर्लज्ज ढीठ पुरुष धूरकर धूसरोंने मेरा अग्निहोत्रका स्थान मलिन किया यह बचन सुन सीता रामसे कहती भई हे प्रभो इस क्रोधीके घरमें न रहना बनमें चलिये जहां नानाप्रकार के पुष्प फल उनसे मंडित वृक्ष शोभे हैं निर्मल जलके भरे सरोवरहैं तिनमें कमल फूल रहेहैं और मृग अपनी इच्छासे क्रीडा करते हैं यहां ऐसे दुष्ट पुरुषोंके कठोर बचनसुनिये हैं यद्यपियह देशधनसे पूर्ण है और स्वर्ग सारिखा सुन्दरहै परंतु लोग महाकठोरहैं और ग्रामीजनविषेषकठोरहीहोयहैं सो विप्रके रूखे बचन सुन ग्रामके सकललोक आए इन दोनों भाइयोंका देवोंसमान रूप देख मोहित भए ब्राह्मण को एकांत लेयलोक समझावतेभए ये एक रात्रि यहांरहे हैं तेराक्या उजाडहै ये गुणवानविनयवानरूपवान पुरुषोत्तमहैं तब द्विज सबसे लडा और सबसेकहा तुममेरे घरक्यों आए परेजाहु और मूर्ख इनपर क्रोध कर आया जैसे श्वान गजपर आवे इनको कहताभया रे अपवित्रहो मेरेघरसे निकसो इत्यादि कुवचन सुन लक्ष्मण कोपभए उस दुर्जनके पांव ऊंचेकर नाडि नीचेकर भ्रमाया भूमिपर पछाडने लगा तब श्री राम परमदयालुने उसे मने किया हे भाई यह क्या ऐसे दीनके मारने में क्या इसे छोड देवो इस के मारनेसे बडा अपयशहै जिनशासनमें शूरवीरको एते न मारने यति ब्राह्मण गाय पशु स्त्री बालक वृद्ध ये दोष संयुक्तहोय तोभी हनने योग नहीं इसभांति भाईको समझाया विप्र छुडाया और आप लक्ष्मण

को आगेकर सीतासहित कुटीसे निकसे आप जानकीसे कहे हैं हे विप्र धिक्कारहै नीचकी संगतिको जिस करक्रूरबचन सुनिये मन में विकारकाकारणमहापुरुषोंकर त्याज्यमहाविषम बनविषे वृक्षोंके साथ वासभला न नीचोंके साथ और आहारादिक बिना प्राण जावेंतो भले परन्तु दुर्जनके घर क्षणएकरहनायोग नहीं नदियोंके तटपर पर्वतोंकी कंदरामें रहेंगे फिर ऐसे दुष्टके घर न आवेंगे इस भांति दुष्टके संगको निन्दते ग्राम से निकसे राम बनको गए वहां वर्षा समय आय प्राप्त भया । समस्त आकाशको श्याम करता हुवा और अपनी गर्जना कर शब्द रूप करी है पर्वतकी गुफा जिसने ग्रह नक्षत्र ताराओं के समूह को ढांक कर शब्द सहित बिजुरी के उद्योत कर मानों अंबर हंसे है मेघ पटल ग्रीष्मके ताप को निवार कर पंथियोंको बिजुरीरूप अंगुरियोंसे डरावता हुआ गाजे है श्याम मेघआकाशमें अंधकार करता हुआ जल की धाराकर मानों सीताको स्नान करावे है जैसे गज लक्ष्मी को स्नान करावे वे दोनों वीर वन में एक वड़ा बटकावृक्ष जिसके डाहला घरके समान वहांबिराजे सो एक दंभकर्ण नामा यक्ष उस बट में रहताथा सो इनको महा तेजस्वी देख जायकर अपने स्वामीको नमस्कार कर कहताभया हे नाथ कोई स्वर्गसे आएहैं मेरेस्थानकमें तिष्ठेहैं जिन्होंने अपने तेजकर मुझेस्थानसे दूर किया है वहांमैंजायनसकूंहूं यक्षके बचनसुनकर यक्षाधिपति अपनेदेवों सहित बटकावृक्ष जहां रामलक्ष्मणथे वहां आया महाविभव संयुक्त बनक्रीड़ा में आसक्त नूतनहै नाम जिसकासोदूर ही से दोनों भाइयोंको महारूपवानदेख अवधि कर जानता भया कि ये बलभद्र नारायणहैं तबवह इनके प्रभावकर अत्यन्त वात्सल्यरूप भया क्षणमात्र में महामनोग्यनगरी निरमापी ए वहां सुखसे सोते हुएप्रभात सुन्दर गीतोंकेशब्दों करजागे रत्नजडित

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेजपर आपको देखा और मंदिरमहामनोहर वहुत स्वर्णका अति उज्जल और सम्पूर्ण सामग्रीकर पूर्ण और सेवकसुन्दर बहुतआदर के करनहारे नगरमेंरमणीक शब्द कोटदरवाजयों कर शोभायमान वे पुरुषोत्तम महानुभाव तिनका चित्त ऐसे नगरको तत्काल देख आश्चर्यको न प्राप्त भया यह क्षुद्र पुरुषों की चेष्टा है कि अपूर्ववस्तु कोदेख आश्चर्य को प्राप्त होंय। समस्त वस्तु कर मण्डित वह नगर वहांवें सुन्दर चेष्टा के धारक निवास करते भए मानो ये देव ही हैं। यक्षाधिपती ने राम के अर्थ नगरो रचो। इस लिये पृथिवी पर रामपुरी कहाई उस नगरी में सुभट मन्त्री द्वारपाल नगरके लोग अयोध्या समान होते भए। राजा श्रेणिक गौतमस्वामी को पूछेहैं हेप्रभो येतो देवकृतनगरी में विराजे और उसब्राह्मणकीक्या बात सो कहो तब गणधरबोले वहब्राह्मण अन्यदिन दांतला हाथमेंलेय वनमेंगया लकड़ी ढूंढते अकस्मात् ऊंचे नेत्र किये निकटहीसुंदरनगर देखकरआश्चर्यको प्राप्त भया। नानाप्रकारके रंग की ध्वजा उन कर शोभित शरद् के मेघ समान सुंदर महिल देखे और एक राजमहिल महा उज्ज्वल मानो कैलाश का बालक है सोऐसा देखकरमनमें विचारताभया कि यहअटवी मृगों से भरी जहां मैंलकडीलेनेनिरन्तर आवताहुं सोयहां रत्नाचल समान सुन्दर मन्दिरों से संयुक्त नगरी कहां से बसी सरोवर जल भरे कमलों से शोभित दीखे है जो मैं अब तक कभी न देखे, उद्यान महा मनोहर जहां चतुर जन क्रीड़ा करते दीखेहैं और देवालय महा ध्वजावों कर संयुक्त शोभे हैं और हाथी घोड़े गाय भैंस तिन के समूह दृष्टिआवे हैं। घण्टादिक के शब्द होय रहे हैं यह नगरी स्वर्ग से आई है अथवा पातालसे निसरीहै कोई महाभाग्य के निमित्त यह स्वप्न है अक प्रत्यक्ष है अक देवमाया है अक गन्धर्वों का नगर है। अक मैं पित्त कर व्याकुल भया हूं इस के निकटवर्ती जो मैं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो मेरे मृत्यु का चिन्ह दीखे है, ऐसा विचार विषाद को प्राप्त भया। सो एकस्त्री नाना प्रकार केआभरण पहरे देखी उस के निकट जाय पूछतो भया। हे भद्रे यह कौन की पुरी है तब वह कहती भई यह राम की पुरी है तैं ने क्या न सुनी जहां राम राजा जिसके लक्ष्मण भाई, सीता स्त्री और नगर के मध्य यह बडा मन्दिर है शरद् के मेघ समान उज्वल जहां वह पुरुषोत्तम विराजे हैं कैसा है पुरुषोत्तम लोक विषे दुर्लभ है दर्शन जिस का सो उसने मनवांछित द्रव्य के दान से सब दरिद्र लोक राजाओं के समान किये तब ब्राह्मण बोला हे सुन्दरी कौन उपाय कर उसे देखूं सो तू कहो ऐसे काष्ठकाभार डारकर हाथ जोड़ उसके पायन पड़ा। तब वह सुमायानामा यक्षनी कृपा कर कहती भई, हे विप्र इस नगरी के तीन द्वार हैं। जहां देवभी प्रवेश न करसकें बडे बडे योधा रक्षक बैठे हैं रात्रिमें जागे हैं जिनके मुखसिंह गज व्याघ्र तुल्य हैं तिन से भय को मनुष्य प्राप्त होय हैं, यह पूर्व द्वार है जिस के निकट बडे बडे भगवान् के मंदिर हैं मणि के तोरणों से मनोग्य तिन में इन्द्र कर वंदनीक अरिहंत के बिम्ब विराजे हैं और जहां भव्यजीव सामायिक आदि स्तवन करे हैं और जो नमोकारमंत्र भाव सहित पढे हैं सो भीतर प्रवेश कर सके हैं। जो पुरुष अणुव्रत का धारी गुणशील से शोभित है उसको रामपरम प्रीतिकर वांछे हैं। यह वचन यक्षनीके अमृतसमान सुनकर ब्राह्मण परम हर्ष को प्राप्त भया। धन आगम का उपाय पाया यक्षनी की बहुत स्तुति करी रोमांच कर मंडित भया है सर्व अंग जिसका सो चारित्रशूर नामा मुनिके निकट जाय हाथ जोड़ नमस्कार कर श्रावक की क्रिया का भेद पूछता भया। तब मुनिने श्रावक का भेद इसे सुनाया चारों अनुयोग का रहस्य बताया सो ब्राह्मण धर्म का रहस्य जान मुनि की स्तुति करता भया। हे नाथ तुम्हारे उपदेश से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेरे ज्ञान दृष्टि भई जैसे तृषावान को शीतल जल और ग्रीष्म के ताप कर तप्तायमान पंथी को छाया और क्षुधावान को मिष्टान्ह और रोगी को औषधि मिले तैसे कुमार्ग में प्रतिपन्न जो मैं सो मुझे तुम्हारा उपदेश रसायन मिला जैसे समुद्र के मध्य डूबते को जहाज मिले। मैं यह जैन का मार्ग सर्व दुःखों का दूर करणहारा तुम्हारे प्रसाद से पाया जो अविवेकियों को दुर्लभ है तीन लोक में मेरे तुम समान कोऊ हित नहीं जिन कर ऐसा जिनधर्म पाया। ऐसा कहकर मुनि के चरणारविन्द को नमस्कार कर ब्राह्मण अपने घर गया अति हर्षित फूल रहे हैं नेत्र जिस के स्त्री से कहता भया हे प्रिये मैंने आज गुरु के निकट अद्भुत जिनधर्म सुना है जो तेरे बापने अथवा मेरे बापने अथवा पिता के पिताने भी न सुना और हे ब्राह्मणी मैंने एक अद्भुत बन देखा उसमें एक महा मनोग्य नगरी देखी जिसे देखे आश्चर्य उपजे परन्तु मेरे गुरु के उपदेश से आश्चर्य नहीं उपजे है तब ब्राह्मणी ने कही हे विप्र तैं क्या क्या देखा और क्या सुना सो कहो तब ब्राह्मणने कही हे प्रिये मैं हर्ष थकी कहने समर्थ नहीं तब बहुत आदर कर ब्राह्मणीने बारम्बार पूछा तब ब्राह्मण ने कही हे प्रिये मैं काष्ठ के अर्थ वन में गया हुवा था, सो वन में एक महा रमणीक रामपुरी देखी उस नगरी के समीप उद्यान में एक नारी सुन्दरी देखी सो वह कोई देवता होयगी महा मिष्ट वादिनी मैं ने पूछा यह नगरी किस की है तब उसने कही यह रामपुरी है, जहां राजा राम श्रावकों को मन वांछित धन देवे हैं। तब मैं मुनि पै जाय जैन वचन सुने सो मेरा आत्मा बहुत तृप्त भया मिथ्यादृष्टि कर मेरा आत्मा आताप युक्त था सो आताप गया जिस धर्मको पायकर मुनिराज मुक्ति के अभिलाषी सर्व परिग्रह तज महा तप करे हैं सो वह अरिहंत का धर्म त्रैलोक्य में एक महानिधि मैं पाया ये वहिर्मुखजीव

For Private and Personal Use Only

वृथा क्लेश करे हैं मुनि थकी जैसा जिनधर्म का स्वरूप सुना था तैसा ब्राह्मणी को कहा कैसा है ब्राह्मण निर्मल है चित्त जिस का तब ब्राह्मणी सुनकर कहती भई मैंने भी अपने में तुम्हारे प्रसाद से जिन धर्म की रुचि पाई और जैसे कोई विष फल का अर्थी महा निधि पावे, तैसे ही तुम काष्ठादिक के अर्थी धर्म इच्छा से रहित श्रीअरिहंत का धर्म रसायन पाया अबतक तुमने धर्म न जाना अपने आंगन में आए सत्पुरुष तिनका निरादर किया उपवासादिक खेद खिन्न दिगम्बर उनको कभीभी आहार न दिया इन्द्रादिक कर वन्दनीक जे अरिहन्तदेव तिनको तजकर ज्योतिषी व्यन्तरादिकको प्रणाम किया जीव दयारूप जिनधर्म अमृततज अज्ञानके योगसे पापरूप विषका सेवन किया मनुष्यदेह रूप रत्नदीप पाय साधुवों को परखा धर्म रूपरत्न तज विषयरूप कांचका खंडअंगीकार किया जे सर्बभक्षी दिवस रात्रि आहारी, अव्रती, कुशीली तिनकी सेवाकरी भोजनके समय अतिथिआवे और जो निरबुद्धि अपने विभव प्रमाण अन्नपानादि न दे उसके धर्म नहीं अतिथि पदका अर्थ तिथि कहिए उत्सव के दिन तिनविषे उत्सव तज जिसके तिथि कहिए विचार नहीं और सर्बथा निस्पृह घर रहित साधु सो अतिथि कहिये जिनके भाजन नहीं करही पात्र हैं वे निर्ग्रंथ आप तिरें औरों को तारें अपने शरीर में भी निस्पृह किसी वस्तु में जिनका लोभ नहीं निरपरिग्रही मुक्ति के कारण जे दश लक्षण तिन कर शोभित हैं इस भांति ब्राह्मणी ने धर्मका स्वरूष कहा और सुशर्मानामा ब्राह्मणी मिथ्यात्व रहित होती भई जैसे चन्द्रमा के रोहिणी शोभे और बुध के भरणी सोहे तैसे कपिल के सुशर्मा शोभतीभई ब्राह्मण ब्राह्मणीको उसी गुरू के निकट लेआया जिसके निकट आप व्रत लिएथे सो स्त्री कोभी श्रावकाके व्रत

दिवाए कपिलको जिन धर्म के विषय अनुरागी जान और भी अनेक ब्राह्मण शम भाम धारते भए मुनि सुव्रतनाथ का मत पायकर अनेक सुबुद्धि श्रावक श्राविका भए और जे कर्मके भारसे संयुक्तमान कर ऊंचा है मस्तक जिनका वे प्रमादी जीव थोड़ेही आयु में पापकर घोर नरक में जाय हैं कईएक उत्तम ब्राह्मण सर्व संगका परित्यागकर मुनिभए वैराग्यकर पूर्ण मनमें ऐसा विचार किया यह जिनेन्द्र का मार्ग अबतक अन्त जन्म में न पाया महा निर्मल अब पाया ध्यानरूप अग्नि में कर्मरूप सामग्री भाव घृत सहित होमकरेंगे सो जिनके परम वैराग्य उदयभया वे मुनिही भए और कपिल ब्राह्मण महा क्रियावान श्रावक भयो एक दिवस ब्राह्मणीको धर्मकी अभिलाषिनी जान कहता भया हे प्रिये श्रीराम के देखने को रामपुरी क्यों न चलें कैसे हैं राम महा प्रबल पराक्रमी निर्मलहै चेष्टा जिनकी और कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके सर्व जीवों के दयालु भव्य जीवों पर है वात्सल्य जिनका जे प्राणी आशा में तत्पर नित्य उपाय में है मन जिनका दलिद्र रूप समुद्र में मग्न उदर पूर्ण में असमर्थ तिनको दरिद्र रूप समुद्र से पार उतार परम सम्पदा को प्राप्त करे हैं इस भांति कीर्ति तिनकी पृथिवी पर फैलरही है महा आनन्दकी करणहारी इसलिये हे प्रिये उठ भेट लेकर चलें और मैं सुकुमार बालकको कांधे लूंगा ऐसे ब्राह्मणीको कह तैसेही कर दोनों हर्ष के भरे उज्ज्वल भेषकर शोभित रामपुरीको चले। सो उनको मार्ग में भयानक नागकुमार दृष्टि आए फिर विंतर विकराल वदन हडहडांस करते दृष्टि आये इत्यादि भयानक रूप देख ये दोनों निकंप हृदय होयकर इस भांति भगवानकी स्तुति करते भये कि श्रीजिनेश्वरदेव के तांई निरन्तर मन वचन कायकर नमस्कार होवे कैसे हैं जिनेश्वर त्रैलोक्य कर वन्दनीक हैं

संसारकीच से पार उतारे हैं परम कल्याण के देनहारे हैं यह स्तुति पढ़ते ये दोनों चले जावें हैं इनको जिनभक्तजान यक्ष शांत होगये ये दोनों जिनालयमें गए नमस्कारहोवो जिनमन्दिरको ऐसा कह दोनों हाथ जोड़ और चैत्यालयकी प्रदक्षिणा दई और अन्दरजाय स्तोत्र पढ़तेभए हे नाथ महा कुगतिका दाता मिथ्यामार्ग उसे तजकर बहुत दिनमें तुम्हारा शरण गहा चौबीस तीर्थंकर अतीत काल के और चौबीस वर्तमान कालके और चौबीस अनागत कालके तिनको मैं बंदूं हूं और पंचभरत और पांच ऐरावत पंच विदेह ये पन्द्रह कर्म भूमि तिनसे जे तीर्थंकर भये और वरते हैं और अब होवेंगे तिन सबको हमारा नमस्कार होवे जो संसार समुद्रसो तिरें औरतारें ऐसे श्रीमुनि सुव्रतनाथके ताईं नमस्कारहो तीनलोकमें जिनका यश प्रकाशकरैहै इस भांति स्तुतिकर अष्टांग दण्डवतकर ब्राह्मण स्त्री सहित श्रीरामके अवलोकनको गए राम मार्ग में बड़े बड़े मन्दिर महा उद्योतरूप ब्राह्मणीको दिखाए और कहताभया ये कुन्द के पुष्पसमान उज्ज्वल सर्व कामनापूर्ण नगरीके मध्य रामके मन्दिर हैं जिनकी यह नगरी स्वर्गसमान शोभे है इस भांति वार्ता करता ब्राह्मण राज मन्दिर में गया सो दूरही से लक्ष्मण को देख व्याकुलता को प्राप्त भया चित्त में चितारे है वह श्याम सुन्दर नील कमल समान प्रभा जिस की मैं अज्ञानी दुष्ट वचनों से दुःखदया सो मुझे त्रास दीन्ही पापनी जिह्वा महा दुष्टिनी कानन को कटुक वचन भाषे अब क्या करूं कहां जाऊं पृथ्वीके छिद्रमें बैठूं अब मुझे शरण कौनका जो मैं यह जानता अकथे यहांही नगरी बसाए रहे हैं तोभी देशत्यागकर उत्तरदिशाको चला जाता इस भांति विकल्परूपहोय ब्राह्मणीको तज ब्राह्मण भागा सो लक्ष्मणने देखा तब हंसकर रामको कहा वह ब्राह्मण आयाहै और मृगकी न्याईं व्याकुल होय

मुझे देख भागे है तब रामबोले इसको विश्वास उपजाय शीघ्र लावो तब सेवकजन दौड़े दिलासादेय लाए डिगता और कांपता आया निकटआय भयतज दोनों भाइयोंके आगे भेटमेल स्वस्ति ऐसाशब्द कहताभया और अतिस्तवन पढ़ताभया तब राम बोले हे द्विज तैंने हमको अपमानकर अपने घरसे काढ़े थे अब क्यों पूजे है तब विप्र बोला हे देव तुम प्रछन्न महेश्वरहो मैं अज्ञानसे न जाने इसलिए अनादर किया जैसे भस्म से दबी अग्नि जानी न जाय,हे जगन्नाथ! इसलोककी यही रीतिहै। धनवानको पूजिएहै सूर्य शीतऋतु में तापरहित होयहै सो उससे कोई नहीं शंके है अब मैं जाना तुम पुरुषोत्तमहो हे पद्मलोचन! ये लोक द्रव्य को पूजे हैं पुरुषको नहीं पूजे हैं जो अर्थकर युक्तहोय उसे लौकिकजन माने हैं और परम सज्जनहै और धनरहितहै तो उसे निप्रयोजन जनजान न माने हैं तब रामबोले हे विप्र जिसके अर्थ उसके मित्र जिस के अर्थ उसके भाई जिसके अर्थसोई पंडित अर्थबिना न मित्र न सहोदरजो अर्थकरसंयुक्तहै उसके परजनभी निज होयजायहैं और धन वही जो धर्मकरयुक्त और धर्मवही जोदयाकरयुक्त और दयावही जहांमांसभोजन का त्याग जब जीवोंका मांस तजा तब अभक्ष्यका त्याग कहिए उसके और त्याग सहजही होय मांस के त्याग बिना और त्याग शोभे नहीं ये वचन रामके सुन विप्र प्रसन्नभया और कहताभया हे देव जो तुम सारिखे पुरुषोंको महापुरुष पूजिये हैं तिनका भी मूढलोक अनादर करे हैं आगे सनत्कुमार चक्रवर्तीभए बड़ी ऋद्धिके धारी महारूपवान जिनका रूपदेव देखने आए सो मुनि होयकर आहारको ग्रामादिक में गए महाआचार प्रवीणसो निरन्तरायभिक्षा को न प्राप्त होते भए एक दिवस विजयपुर नाम नगर में एक निर्धन मनुष्यके आहार लिया उसकेपंचआश्चर्यभए हे प्रभो मैं मंदभाग्य तुम सारिखे पुरुषों का

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदर न कियासो मेरा मन पश्चाताप रूप अग्निसे तपे है तुम महारूपवान तुमको देखे महा क्रोधी का क्रोध जातारहे और आश्चर्यको प्राप्तहोय ऐसा कहकर सोचकर गृहस्थकपिल रुदनकरताभया तब श्री रामने शुभ बचनसे संतोषा और सुशर्मा ब्राह्मणीको जानकी संतोषती भई फिर राघवकी आज्ञा पाय स्वर्णके कलशोंसे सेवकोंने द्विजको स्त्रीसहित स्नान कराया और आदरसे भोजन कराया नानाप्रकार के वस्त्र और रत्नोंके आभूषण दिए बहुत धन दियासो लेकर कपिल अपने घर आया मनुष्यों को विस्मयका कारणहारा धन इसकेभया यद्यपि इसके घरमें सब उपकार सामग्रीअपूर्व है तथापि इसप्रवीणका परिणाम विरक्त घरमें आसक्त नहीं मनमें विचारताभया आगेमें काष्ठके भारका वहनहारा दरिद्रीथा सो श्रीरामदेवने तृप्त किया इसी ग्राम विषे में सोषत शरीर अभूषितथा सो रामने कुवेर समान किया चिन्ता दुःख सहित किया मेरा घर जीर्ण तृण का जिसके अनेक छिद्रकादि अशुचि पक्षियों की बीट कर लिप्त था अब रामके प्रसादसे अनेक खणके महिलभए बहुत गोधन बहुत धन किसी वस्तु की कमी नहीं हाय २ में दुर्बुद्धि क्या किया वे दोनों भाई चन्द्रमा समान बदन जिनके कमल नेत्र मेरेघर आए थे ग्रीषमके आतापसे तप्तायमान सीतासहितसो मैंने घरसे निकासे इस बातकी मेरे हृदयमेंमहा शल्य है जबलग घरमें बसूहूं तौलग खेदमिटै नहीं इस लिए गृहारम्भका परित्यागकर जिनदीक्षा आदरूं जबयह विचारी तबइसको वैराग्यरूप जानसमस्त कुटुम्ब के लोक और सुशर्माब्राह्मणी रूदनकरते भएतब कपिलसबको शोकसागर में मग्न देख निर्ममत्वबुद्धिकर कहता भया कैसा है कपिल शिव सुखमें है अभिलाषा जिसकी हो प्राणी हो परिवारके स्नेहसे और नाना प्रकार के मनोरथों से यह मूढ़ जीव भव ताप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर जरे हैं तुम क्या नहीं जानो हो ऐसा कह महा विरक्त होय दुःख कर मुर्छित जो स्त्री उसे तज और सर्व कुटुम्ब को तज अठारह हजार गाय और रत्नों कर पूर्ण घर और घर के बालक स्त्री को सौंप आप सर्वारम्भ तज दिगम्बर भया स्वामी अनन्त मति का शिष्य भया कैसे अनन्त मति जगत में प्रसिद्ध तपोनिधि गुण शील के सागर यह कपिल मुनि गुरु की आज्ञा प्रमाण महातप करता भया सुन्दर चारित्र का भार धर परमार्थ में लीन है मन जिसका वैराग्य विभूति कर और साधुपद की शोभा कर मंडित है शरीर जिसका। सो जो विवेकी यह कपिल की कथा पढ़े सुने उसे अनेक उपवासों का फल होय सूर्य समान उसकी प्रभा होय॥ इति पैंतीसवां पर्व सम्पूर्ण भया॥

अथानन्तर वर्षा ऋतु पूर्ण भई कैसी है वर्षा ऋतु श्याम घटा से महा अंधकार रूप जहां मेघ जल असराल बरसे और बिजुरियों के चमत्कार कर भयानक वर्षा ऋतु व्यतीत भई शरद ऋतु प्रगट भई दशों दिशा उज्जल भई तब वह यक्षाधिपति श्रीराम से कहता भया कैसे हैं श्रीराम चलने को है मन जिनका यक्ष कहे है हे देव हमारी सेवामें चूक होय सो क्षमा करो तुम सारिखे पुरुषों की सेवा करने को कौन समर्थ है तब राम कहते भए हे यक्षाधिपते तुम सब बातों के योग्य हो और तुम पराधीन होय हमारी सेवा करी सो क्षमा करियो तब इनके उत्तम भाव बिलोकि अति हर्षित भया नमस्कार कर स्वयंप्रभ नामा हार श्रीराम की भेट किया महा अद्भुत और लक्ष्मण को मणि कुण्डल चांद सूर्य सारिखे भेट किये। और सीता को कुशला नामा चूड़ामणि महा देदीप्यमान दिया और महामनोहर मनवांछित नाद की करनहारी देवो पुनीत वीणा दई ये अपनी इच्छा से चले तब यक्षराज ने पुरी संकोच लई और इनके जायवे का बहुत शोच

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किया। और श्रीरामचन्द्र यक्षकी सेवा से अतिप्रसन्नहोय आगे चलेदेवोंकीन्याई रमते नानाप्रकारकीकथामें आसक्त नाना प्रकार के फलों के रसके भोक्ता पृथिवी पर अपनी इच्छा से भ्रमते, मृगराज तथा गजराजों से भरा जो महाभयानक बन उसे उलंघ विजयपुर नामा नगर आए उससमय सूर्य अस्त भया। अन्धकार फैला आकाश में नक्षत्रों के समूह प्रकट भए, नगरसे उत्तर दिशा की तरफ न अति निकट न अति दूर कायरलोगों को भयानक जो उद्यान वहां विराजे ॥

अथानन्तर नगर का राजा पृथिवीधर जिस के इन्द्राणी नामा राणी स्त्रीके गुणों से मंडित उस के वनमाला नामा पुत्री महासुन्दर सो बालअवस्था ही से लक्ष्मण के गुण सुनअति आसक्त भई फिर सुनी दशरथ ने दीक्षा धरी और कैकेई के वचनसे भरत को राज्य दिया राम लक्ष्मण परदेश निकसे हैं ऐसा विचार उसके पिता ने कन्याको इन्द्रनगर का राजा उसका पुत्र जो बालमित्र महासुन्दर उसे देनी विचारी सो यह वृत्तान्त वनमालाने सुना हृदय में विराजे हैं लक्ष्मण जिसके तब मनमें विचारी कंठफांसी लेय मरणा भला परन्तु अन्य पुरुष का सम्बन्ध शुभ नहीं यह विचार सूर्य से संभाषण करती भई हे भानो अब तुम अस्त होय जावो शीघ्र ही रात्रि को पठावहु अब दिन का एक क्षण मुझे वर्ष समान बीते है सो मानों इसके चिंतवन कर सूर्य अस्त भया कन्या की उपवास है सन्ध्या समय माता पिता की आज्ञा लेयश्रेष्ठ रथमें चढ़ वन यात्रा का बहाना कर रात्रि में वहां आई जहां रामलक्ष्मण तिष्ठे थे सो इसने आनकर उस वनमें जागरण किया जब सकललोक सो गए तब यह मन्द मन्द पैर धरती वनकीमृगी समान देहसे निकस वनमें चली सो यह महासती पद्मनी इसके शरीर की सुगन्धता कर वन सुगन्धित होय गया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तब लक्ष्मण विचारता भया यह कोई राजकुमारी महा श्रेष्ठ मानों ज्योति की मूर्ति ही है सो महाशोक के भार कर पीडित है मन जिसका यह अपघात कर मरण वांछे है सो मैं इसकी चेष्टा छिपकर देखूं ऐसा विचारकर छिपकर वटके वृक्ष तले बैठा मानों कौतुक युक्त देव कल्पवृक्ष के नीचे बैठे उसही वट के तले हंसनी की सी चाल जिसकी और चन्द्रमा समान है वदन जिसका कोमल है अंग जिसका ऐसी वनमाला आई जलसे आला वस्त्रकर फांसी बनाई और मनोहर वाणीकर कहती भई हो इसवृक्ष के निवासी देवता कृपाकर मेरी बात सुनो कदाचित् वनमें विचरता लक्ष्मण आवे तो तुम उसे कहियो जो तुम्हारे विरह से महा दुःखित वनमाला तुम में चित्त लगाय वट के वृक्ष में वस्त्र की फांसा लगाय मरण को प्राप्त भई हमने देखी और तुमकोयह सन्देशा कहाहै कि इस भवमें तो तुम्हारा संयोग मुझे न मिला अब परभव में तुमही पति हूजियो यह वचन कह वृक्षकी शाखा सों फांसी लगाय आप फांसी लेने लगी, उसही समय लक्ष्मण कहताभया हे मुग्धे मेरी भुजाकर आलिंगन योग्य तेरा कण्ठ उसमें फांसी काहेको डारे है हे सुन्दरवदनी परमसुन्दरी मैं लक्ष्मण हूं जैसा तेरे श्रवण में आया है तैसा देख और प्रतीत न आवे तो निश्चय कर लेहु ऐसा कह उसके करसे फांसी हर लीनी जैसे कमल झागोंके समूहको दूर करे तब वह लज्जाकर युक्त प्रेमकी दृष्टि कर लक्ष्मण को देख मोहित भई कैसा है लक्ष्मण जगत् के नेत्रोंका हरणहारा है रूप जिसका परम आश्चर्यको प्राप्त भई चित्त में चितवे है यह कोई मुझपर देवोंने उपकार किया मेरी अवस्था देख दयाको प्राप्त भए जैसा मैं सुनाथा तैसा दैव योग से यह नाथ पाया जिसने मेरे प्राण बचाए ऐसा चिंतवन करती वनमाला लक्ष्मण के मिलाप से अत्यन्त अनुराग को प्राप्त भई

For Private and Personal Use Only

अथानन्तर महा सुगन्ध कोमल सांथरे पर श्रीरामचन्द्र पौढ़े थे सो जागकर लक्ष्मणको न देख जानकी को पूछतेभए हे देवी यहां लक्ष्मण नहीं दीखे है रात्रि के समय मेरे सोवने को पुष्प पल्लवों का कोमल सांथरा बिछाय आप यहांही तिष्ठता था सो अब नहीं दीखे है तब जानकीने कही हे नाथ ऊंचा स्वर कर बुलाय लेवो तब आप शब्द किया हे भाई हे लक्ष्मण हे बालक कहां गया शीघ्र आव तब भाई बोला हे देव आया बनमाला सहित बड़े भाई के निकट आया आधी रात्रीका समय चन्द्रमा का उदयभया कुमद फूले शीतल मन्द सुगन्ध पवन बाजने लगी उस समय बनमाला कोपल समान कोमल कर जोड़ वस्त्र कर वेढ़ा है सर्व अंग जिसने लज्जाकर नम्रीभूत है मुख जिसका जाना है समस्त कर्तव्य जिसने महा विनयको धरती श्रीराम और सीता के चरणारविन्दको वन्दती भई सीता लक्ष्मण को कहती भई हे कुमार तैंने चंद्रमाकी तुल्यता करी तब लक्ष्मण लज्जाकर नीचा होय गया श्रीराम जानकीसे कहतेभए तुम कैसे जानी तब कही हे देव जिस समय चन्द्रमा का उद्योत भया उसही समय कन्या सहित लक्ष्मण आया तब श्रीराम सीता के वचन सुन प्रसन्न भए॥

अथानन्तर बनमाला महा शुभ शील इनको देख आश्चर्यकी भरी प्रसन्न है मुखचन्द्रमा जिसका फूलरहे हैं नेत्र कमल जिसके सीता के समीप बैठी और ये दोनों भाई देवों समान महा सुन्दर निद्रा रहित सुखसे कथा वार्ता करते तिष्ठे हैं और बनमाला की सखी जागकर देखे तो सेज सूनी कन्यानहीं तब भयकर खेदित भई और महा व्याकुल होय रुदन करती भई उसके शब्द कर योधा जागे आयुध लगाय तुरंग त्यद दसों दिशाको दौड़े और पयादे दौड़े बरछी और धनुष है हाथमें जिनके दशों दिशा

दूती राजा का भय और प्रीति कर संयुक्त है मन जिसका ऐसे दोड़े मानो पवन के बालक हैं तब क एक इसतरफ दोड़े आये वनमालाको वनमें राम लक्ष्मणके समीप बैठी देख बहुत हर्षित होय जाय कर राजा पृथिवीधर का बधाई दई और कहतेभये कि हे देव जिनके पावनेका बहुत यत्न करिये तोभी न मिलें वे सहजही आए हैं प्रभो तेरे नगर में महा निधि आई बिना बादल आकाश से वृष्टिभई खेत्रमें बिना बाहे धान उगा तुम्हारा जमाई लक्ष्मण नगर के निकट तिष्ठे है जिसने वनमाला प्राण त्याग करती बचाई और राम तुम्हारे परमहितू सीता सहित विराजे हैं जैसे शची सहित इन्द्र विराजें ये वचन राजा सेवकों के सुनकर महा हर्षित होय क्षण एक मूर्छित होयगया फिर परम आनन्दको प्राप्तहोय सेवकों को बहुत धनदिया और मनमें विचारता भया मेरी पुत्रीका मनोरथ सिद्ध भया जीवों के धनकी प्राप्ति और इष्टका समागम औरभी सुखके कारण पुण्यके योग से होयहैं जो वस्तु सैकड़ों योजन दूर और श्रवण में न आवे सोभी पुण्याधिकारी के क्षणमात्र में प्राप्त होय है और जे प्राणी दुःखके भोक्ता पुण्यहीनहैं तिन के हाथ से इष्टवस्तु विलाय जाय है पर्वत के मस्तक पर तथा बन में सागर में पंथ में पुण्याधिकारियों के इष्ट वस्तु का समागम होयहै ऐसा मन में चिंतवन कर स्त्री से समस्त वृतान्त कहा, स्त्री बारंबार पूछे हैं यह जामे मानोंस्वप्न हीहै, फिर रामके अधरसमान आरक्तसूर्यका उदयभया तब राजा प्रेमका भरा सर्व परिवार सहित हाथी पर चढ़कर परम कांति संयुक्त राम से मिलने चला और वनमाला की माता आठ पुत्रियों सहित पालकी पर चढ़ कर चली सो राजा दूर ही से श्रीराम का स्थानक देख कर फूल गये हैं नेत्र कमल जिसके हाथी से उतर समीप आया श्रीराम और लक्ष्मण से मिला और उसकी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राणी सीता के पायन लागी और कुशल पूछती भई बीन बांसुरी मृदंगादिक के शब्द भए बन्दीजन विरद बखानते भए बड़ा उत्सव भया राजा ने लोकों को बहुत दान दिया नृत्य होता भया दशों दिशा नाद कर शब्दायमान होती भई श्रीराम लक्ष्मण को स्नान भोजन कराया फिर घोडे हाथी रथ उन पर चढ़े अनेक सामंत और हिरण समान कूदते पयादे उन सहित रामलक्ष्मणने हाथी पर चढे हुये पुर में प्रवेश किय, राजाने नगर उछाला महा चतुर मागध विरद बखाने हैं मंगल शब्द करे हैं राम लक्ष्मण ने अमोलिक वस्त्र पहरे हार कर विराजे है वक्षस्थल जिनका, मलियागिरि के चन्दन से लिप्त है अंग जिनका नाना प्रकार के रत्नों की किरणो से इन्द्र धनुष होय रहा है दोनों भाई चांद सूर्य सारिखे, नहीं वरणे जावें हैं गुण जिनके, सौधर्म ईशान सारिखे जानकी सहीत लोकों को आश्चर्य उपजावते राजमन्दिर में पधारे श्रेष्ठ मालाधरें सुगंध कर गुंजार करे हैं भ्रमर जिनपर महा विनयवान् चन्द्रवदन इनको देख लोकमोहित भए कुबेर का सा किया जो वह सुन्दर नगर वहां अपनी इच्छा से परम भोग भोगते भए इस भांति सुकृत में है चित्त जिनका महागहन बन में प्राप्त भए भी परम विलासको अनुभवे हैं सूर्य समान है कांति जिनकी वे पापरूप तिमीर को हरे हैं निज पदार्थ के लाभसे आनन्दरूपहैं ॥ इति छत्तीसवां पर्वसंपूर्णम् ॥

अथानन्तर एक दिन श्री राम सुख से विराजे थे, और पृथिवीधर भी समीप बैठा था उस समय एक पुरुष दूर का चला महा खेद खिन्न आय कर नम्रीभूत होय पत्र देताभया सो राजा पृथिवीधर ने पत्र लेय कर लेखक को सौंपा लेखक ने खोलकर राजा के निकट बांचा उस में इस भान्ति लिखाथा कि इन्द्र समान है उत्कृष्ट प्रभाव जिस का महालक्ष्मीवान् नमे हैं अनेक राजा जि न को श्री नन्द्यवर्त नगर का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वामी महाप्रबल पराक्रमको धारी सुमेरुपर्वतसा अचल प्रसिद्ध शस्त्रशास्त्र में प्रवीण सबराजावोंका राजा महाराजाधिराज प्रताप कर वश किये हैं शत्रु और मोहित करी है सकल पृथिवी जिसने सूर्य्य समान महा बलवान् समस्त कर्तव्यों में कुशल महानीतिवान् गुणों से बिराजमान श्रीमान् पृथिवी का नाथ महाराजेंद्र अति वीर्य सो विजय नगरमें पृथिवीधर को कुशल क्षेम प्रश्नपूर्बक आज्ञा करे है कि जे पृथिवीपर सामन्त हैं वे भण्डार सहित और सर्व सेना सहित मेरे निकट प्रवरते हैं आर्य्य खण्ड के और मलेच्छ खण्ड के चतुरंग सेना सहित नाना प्रकार के शस्त्रों के धरण हारे मेरी आज्ञाको शिरपरधारे हैं अञ्जनगिरिसारिखे आठसै हाथे और पवनके पुत्रसम तीन हजार तुरंग अनेक रथ अनेक पयादे तिंन सहित महा पराक्रमका धारी महा तेजस्वी मेरे गुणों से खैंचा है मन जिसका ऐसा राजा विजय शार्दूल आया है और अंग देशके राजा मृगध्वज रणोर्मि कलभ केशरी यह प्रत्येक पांच पांचहजार तुरंग और छै सौ हाथी और रथ पयादे तिन सहित आये हैं महाउत्साह के धारी महा न्यायमें प्रवीणहै बुद्धि जिन की और पंचालदेशका राजा पौढ् परम प्रतापको धरता न्याय शास्त्र में प्रवीण अनेक प्रचण्ड बलको उत्साह रूप करता हजार हाथी और सातहजार तुरंगों से और रथ पयादों से युक्त हमारे पास आया है और मगध देशका राजा सुकेश बड़ी सेना से आया है अनेक राजावों सहित जैसे सैकड़ों नदीयों के प्रवाहों को लिये रेवाका प्रवाह समुद्र में आवे तैसे उसके संग काली घटा समान आठ हजार हाथी अनेक रथ और तुरंगोंके समूह हैं आप वज्रका आयुध धारे हैं और म्लेछोंके अधिपति सुभद्र मुनिभद्र साधुभद्र नंदन इत्यादि राजा मेरे समीप आये हैं वज्रधर समान और नहीं निवारोजाय पराक्रम जिसका ऐसा राजा सिंह-

For Private and Personal Use Only

वीय आया है और राजा वांम और सिंहरथ ये दोनों हमारे मामा महा बलवान बड़ी सेनासे आएहैं और वत्सदेशका स्वामी मारुदत्त अनेक पयादे अनेक रथ अनेक हाथी अनेक घोड़ोंसे युक्त आयाहै और राजा प्रोष्ठल सौवीर सुमेरु सारिखे अचल प्रबल सेनासे आये हैं ये राजे महा पराक्रमी पृथिवीपर प्रसिद्ध देवों सारिखे दस अक्षोहिणी दल सहित आये हैं इतने राजावों सहित मैं बड़े कटकसे अयोध्याके राजा भरत पर चढ़ाहूं सो तेरे आयवेकी बाट देखूं हूं इसलिये आज्ञापत्र पहुंचते प्रमाण पयानकर शीघ्र आइयो किसी कार्यकर विलम्ब न करियो जैसे किसान वर्षाको चाहे तैसे मैं तेरे आगमन को चाहूंहूं इसभांति पत्र के समाचार लेखकने बांचे तब पृथिवीधर ने कछू कहने का उद्यम किया उससे पहिले लक्ष्मण बोले अरे दूत भरतके और अतिवीर्यके विरोध कौन कारणसे भया तब वह वायुगत नाम दूत कहताभया मैं सब बातोंका मरमी हूं सब चरित्र जानूहूं तब लक्ष्मण बोले हमारे सुनने की इच्छा है उसने कही आपको सुननेकी इच्छा है तो सुनो एक श्रुतिवृद्ध नामा दूत हमारे राजा अतिवीर्यने भरतपर भेजा सो जमकर कहताभया इन्द्र तुल्य राजा अतिवीर्य का मैं दूतहूं प्रणाम करे हैं समस्त नरेन्द्र जिसको न्याय के थापने में महा बुद्धिवान सो पुरुषोंमें सिंह समान जिसके भय से अरि रूप मृग निद्रा नहीं करे हैं इसके यह पृथिवी वनिता समान है कैसी है पृथिवी चार तरफ के समुद्र सोई हैं कटिमेखलाजिसके जैसे परणी स्त्री आज्ञा में होय तैसे समस्त पृथिवी आज्ञा के वश है सो पृथिवी पति महा प्रबल मेरे मुख होय तुमको आज्ञा करे हैं कि हे भरत कि हे भरत शीघ्र आय कर मेरी सेवा करो अथवा अयोध्या तज समुद्रके पार जावो ये वचन सुन शत्रुघन महा क्रोधरूप दावानल समान प्रज्वलित होय कहताभया अरे दूत तुझेऐसे

वचन कहने उचितनहीं वह भरतकी सेवाकरे अक भरत उसकीसेवाकरेऔरभरत अयोध्याका भार मन्त्रीयोंका सौंप पृथिवीके वशकरनेके निमित्त समुद्रके पारजाये अक और भांति जाय और तेरा स्वामी ऐसे गर्वके वचन कहे है सो गर्दभ माते हाथी की न्याईं गाजे है अथवा उसकी मृत्यु निकटहै इसलिए ऐसे वचन कहे है अथवा वायुके वश है राजा दशरथको बैराग्य के योग से तपोवन को गए जान वह दुष्ट ऐसीबात कहे है सो यद्यपि तातकी क्रोध रूप अग्नि मुक्ति की अभिलाषाकर शान्त भई तथापि पिता की अग्नि से हम स्फुलिंग समान निकसे हैं सो अति वीर्य रूप काष्ठको भस्म करने समर्थ हैं हाथी के रुधिररूप कीच कर लाल भए हैं केश जिसके ऐसा जो सिंह सो शांत भया तो उसका बालक हाथियों के निपात करने समर्थ है ये वचन कह शत्रुघन वलता जो वांसों का बन उस समान तड़तड़ात कर महा क्रोधायमान भया और सेवकों को आज्ञा करी कि इस दूत का अपमान कर काढ़ देवो तब आज्ञा प्रमाण सेवकों ने अपराधी को स्वान की न्याईं तिरस्कार कर काढ़दिया सो पुकारता नगरीके बाहिर गया धूलसे धूसराहै अंग जिसका दुरवचनोंसे दग्ध अपने धनी पै जाय पुकारा औरराजा भरत समुद्रसमान गम्भीर परमार्थका जानन हारा अपूर्व दुर्वचन सुन कछू एक कोपको प्राप्त भया भरत शत्रुघन दोनोभाई नगरसे सेना सहित शत्रुपर निकसे और मिथुला नगरीका धनी राजा जनक अपनेभाई कनक सहित बड़ी सेनासे आय मेलाभया और सिंहोदरको आदि दे अनेक राजा भरतसे आय मिले भरत बड़ीसेनासहित नन्द्यावर्तपुर के धनी अति वीर्यपर चढ़ा पिता समान प्रजाकी रक्षा करता संता कैसा है भरत न्यायमें प्रवीण है और राजा अतिवीर्य भी दूत के वच सुन परम क्रोधको प्राप्तभया क्षोभको प्राप्तभया जो समुद्र उसके समान भयानक सर्व सामन्तों

से मंडित भरत के ऊपर जाइबे का उद्यमी भया है यह समाचार सुन श्रीरामचन्द अपनी ललाट दूजके चन्द्रमा समान वक्रकर पृथिवीधरसे कहतेभये कि अतिवीर्य्य को भरतसे ऐसाकरना उचितही है क्योंकि जिस ने पिता समान बड़े भाई का अनादर किया। तब राजा पृथिवीधर ने राम से कही वह दुष्ट है हमप्रबल जान सेवा करे हैं, तब मंत्र कर अतिवीर्य्य को जुवाब लिखा कि मैं कागद के पीछे ही आवूंहूं और दूतको विदा किया फिर श्रीराम से कहताभया अतिवीर्य्य महाप्रचण्डहै इसलियेमें जाउंहूं तब श्रीरामने कही तुम तो यहां ही रहो और मैं तुम्हारे पुत्र को और तुम्हारे जवांई लक्ष्मण को ले अतिवीर्य्य के समीप जावूंगा ऐसा कहकर रथपर चढ़ बड़ी सेना सहित पृथिवीधर के पुत्र को लार लेय सीता और लक्ष्मण सहित नन्द्यावर्त नगरी को चले सोशीघ्र गमनकर नगरके निकट जायपहुंचे वहां पृथिवीधरके पुत्र सहित स्नान भोजन कर राम लक्ष्मण और सीता ये तीनो मंत्र करतेभए जानकी श्रीरामसे कहतीभई। हे नाथ यद्यपि मेरे कहिवे का अधिकार नहीं जैसे सूर्य के प्रकाशहोते नक्षत्र का उद्योत नहीं तथापि हे देव हितकी वांछाकर मैं कछू इककहूंहूं जैसे बांसों से मोती लेना तैंसे हम सारिखों से भी हितकी बातलेनी (कभीयक किसी एक बांस के बीड़ेमें मोती निपजे हैं)। हे नाथ यह अतिवीर्य्य महासेनाका स्वामी क्रूरकर्मी भरतकर कैसे जीता जाय इसलिये इसके जीतने का उपाय शीघ्र चिन्तवना तुमसे और लक्ष्मणसे कोईकार्य असाध्य नहीं तब लक्ष्मणबोले। हेदेवी यह क्याकहो हो आज अथवा प्रभातइस अणुवीर्यको मेरेकर हताहीजानो श्रीरामके चरणारविन्दकी जो रजकर पवित्रहै सिरमेरा मेरे आगे देवभी टिक नहींसकें मनुष्य क्षुद्रवीर्य्य की तो क्याबात जबतक सूर्यअस्त न होय उससे पहिलेही इसक्षुद्रवीर्य को मूवाही देखियो यहलक्ष्मण

के वचन सुन पृथिवीधर का पुत्र भी गर्जनाकर ऐसे ही कहताभया तब श्रीराम भौंहफेर उसे मनेकर लक्षमणसे कहते भए महाधीरवीर है मन जिनका हे भाई जानकीने कही सो युक्त है यह अतिवीर्य बल कर उद्धत है रणसंग्राम में भरतके वशकरने का पात्र नहीं भरत इसके दसवें भाग भी नहीं यह दावा नल समान इसका वह मतंग गज क्याकरे यह होथीयोंसे पूर्ण घोड़ों कर पूर्ण रथपयादेयों से पूर्ण इस को जीतने समर्थ भरतनहीं जैसे केसरीसिंह महाप्रबलहै परन्तु विन्ध्याचल पर्वत के ढाहिबे समर्थ नहीं तैसे भरत इसको जीते नहीं, सेना का प्रलय होवेगा जहां निःकारण संग्राम होय वहां दोनों पक्षों के मनुष्यों का क्षयहोय और यदि इस दुरात्मा अतिवीर्य ने भरतको वशकिया तब रघुवंशयोंके कष्ट का क्या कहना औरइनमें संधिभी सूझैनहीं क्योंकिशत्रुघ्न अतिमानी बालक सोउद्धत वैरीसे दोषकिया यह-न्यायमें उचित नहीं ॥ अन्धेरी रात्रिमें रौद्रभूत सहित शत्रुघनने दूरकेदौरा जाय अतिवीर्यके कटकमें धाढ़ा दिया अनेक योधा मारे बहुतहाथी घोड़ेकाम आए औरपवन सारिखे तेजस्वी हज़ारोंतुरंग औरसातसे अंजनगिरि समानहाथी लेगया सोतैंने क्या लोगोंके मुखसे न सुनी यह समाचार अतिवीर्य्य सुन महा क्रोधको प्राप्तभया और अबमहा सावधानहै रणका अभिलाषी है और भरत महामानी है सो इस से युद्ध छोड़ सन्धि न करे इसलिये तू अतिवीर्य को वशकर तेरीशक्ति सूर्य कोभी तिरस्कार करने समर्थ है और यहांसे भरतभी निकटहै सो हमको आपा न प्रकाशना जे मित्रको न जनावें और उपकार करें वे अद्भुत पुरुष प्रशंसा करने योग्य हैं जैसे रात्रि का मेघ। इसभान्ति मंत्र कर राम को अतिवीर्य्य के पकडने की बुद्धि उपजी रात्रि तो प्रमाद रहित होय समीचीन लोगों से कथाओंकर पूर्ण करी सुखसों

निशा व्यतीत भई प्रात समय दोनों वीरों ने उठ कर प्रात क्रिया कर एक जिनमन्दिर देखा सो उस में प्रवेश कर जिनेन्द्र का दर्शन किया वहां आर्यिकावों का समूह बिराजता था तिन की वन्दना करी और आर्यिकाओं की जो गुरानी वरधर्मा महा शास्त्र की वेत्ता सीता को इस के समीप राखी आप भगवान् की पूजा कर लक्ष्मण सहित नृत्यकारणी स्त्री का भेष कर लीला सहित राज मन्दिर की तरफ चले इंद्र की अप्सरा तुल्य नृत्यकारणी को देख नगर के लोक आश्चर्य कोप्राप्त भए लारलागे ये महा आभूषण पहिरे सर्व लोक के मन और नेत्र हरते राज द्वार गए चौवीसों तीर्थंकरों के गुण गाए पराणों के रहस्य बताए प्रफुल्लितहैं नेत्र जिनके इनकी ध्वनि राजा सुन इन्होंके गुणका खैंचा समीप आया जैसेरस्सी का खैंचा जल के विषे काष्ठ का भार आवे नृत्य कारणी ने नृप के समीप नृत्य किया रेचक कहिये भ्रमण अंग मोड़ना मुलकना, अवलोकना, भौंहों काफेरना मन्द मंद हंसना जंघावहुकर पल्लव तिनका हलावना पृथिवी को स्पर्श शीघ्रही पगों का उठावना राग का दृढ़ करना केश रूप फांस का प्रवर्तन इत्यादि चेष्टा रूप काम बाणों से सकल लोकों को बींधे स्वरों के ग्राम यथा स्थान जोड़ने से और वीण के बजायवे कर सबोंको मोहित किए जहां नृत्यकी खडीरहे वहां सकल भाव के नेत्र चलेजांय, रूपकर सबोंकेनेत्ररवरकर सबों के श्रवण गुणकर सबोंका मनबांध लिया, गौतमस्वामी कहेहैंकि हेश्रेणिक जहां श्रीराम लक्ष्मणनृत्य करें और गावें बजावें वहां देवोंके मनहरे जांय तो मनुष्योंकी क्याबात श्रीऋषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरोंकेयश गाय सकलसभा वशकरी राजाको संगीतकर मोहित देख शृंगार रससे वीररसमें आए आंख फेर भौंहे फेर महा प्रवलतेज रूप होय अतिवीर्यको कहतेभए हे अतिवीर्य तैंने यह क्या दुष्टता आरंभी तुझे यह मंत्र

कौनने दिया तैंने अपने नाशके निमित्त भरतसो विरोध उपजाया जियाचाहै तो महा विनय कर तिन को प्रसन्नकर दासहोय तिनके निकटजावो तेरीराणी बड़े वंशकी उपजी कामक्रीड़ाकी भूमि विधवा न होय तुझे मृत्युको प्राप्तभए सब आभूषण हार शोभारहित होयगी जैसे चन्द्रमाबिना रात्रि शोभारहित होय तेरा चित्त अशुभमें आयाहै सो चित्तको फेर भरतको नमस्कारकर हे नीच इसभांति न करेगा तो अबार ही माराजायगा राजाअनरण्यके पोता और दशरथके पुत्र तिनके जीवते तू कैसे अयोध्याका राज्य चाहे है जैसे सूर्यके प्रकाश होते चन्द्रमाका प्रकाश कैसेहोय जैसे पतंगदीपमें पड़ मूवा चाहेहै तैसे तू मरण चाहे है राजा भरत गरुड़समान महाबली तिनको तू सर्पसमान निर्बल बराबरी करेहै यह वचन भरत की प्रशंसाके और अपनी निन्दाके नृत्यकारिणीके मुखसे सुन सकलसभा सहित अतिवीर्य क्रोधको प्राप्त भया लाल नेत्र किए जैसे समुद्रकी लहर उठे है तैसे सामन्त उठे और राजाने खड़ग हाथमें लिया उसी समय नृत्यकारिणी ने उछल हाथसों खड्ग खोस लिया और सिरके केश पकड़ बांध लिया और नृत्य कारणी अतिवीर्य के पक्षी राजा तिनसो कहती भई जीवनेकी वांछा राखो तो अतिवीर्यका पक्ष छोड भरतपै जावो भरतकी ही सेवा करो तब लोकों के मुखसे ऐसी ध्वनि निकसी महा शोभायमान गुणवान भरत भूप जयवन्त होवे सूर्यसमानहै तेज जिसका न्यायरूप किरणोंके मंडलकर शोभित दशरथ के वंशरूप आकाशमें चन्द्रमासमान लोकको आनन्दकारी जिसका उदय लक्ष्मीरूप कुमुदनी विकास को प्राप्तहोय शत्रुवों के आतापसे रहित परम आश्चर्यको करती हुई अहो यह बडा आश्चर्य जिसकी नृत्यकारणीकी यह चेष्टा जो ऐसे नृपतिको पकड लेय तो भरतकी शक्तिका क्या कहना इन्द्रको भी

जीते हम इस अतिवीर्य सो आए मिले सो भरतमहाराज कोप भए होवेंगे न जानिये क्या करें अथवा वे दयावंत पुरुषहैं जाय मिलें पायन परें कृपाही करेंगे अतिवीर्य के मित्र राजा ऐसा विचार करतेभए और श्रीराम अतिवीर्यको पकड हाथीपर चढ़ जिनमंदिर गए हाथीसे उतर जिनमंदिरमें जाय भगवान की पूजा करी और बरधर्मा आर्यिकाकी बन्दना करी बहुत स्तुति करी रामने अतिवीर्य लक्ष्मणको सौंपा सो लक्ष्मणने केस गह दृढ़ बांधा तब सीताने कही इसे ढीला करो पीडा मत देवो शांतता भज कर्मके उदय से मनुष्य मति हीन होयजायहैं आपदा मनुष्यों में ही होय बडे पुरुषोंको सर्वथा पर की रक्षाही करना सत् पुरुषों को सामान्य पुरुष का भी अनादर न करना यहतो सहस्रराजावोंका शिरोमणिहै इस लिये इसे छोड देवो तुम यह बश किया अब कृपाही करनायोग्यहै राजावोंका यही धर्म है जो प्रबल शत्रुवोंको पकड छोडदें यह अनादि कालकी मर्यादाहै जब इसभांति सीताने कही तब लक्ष्मण हाथ जोड प्रणामकर कहताभया हे देवी तुम्हारी आज्ञासे छोडबेकी क्याबात ऐसा करूं जो देव इसकी सेवा करें लक्ष्मणका क्रोध शांत भया तब अतिवीर्य प्रतिबोध को पाय श्रीरामसों कहता भया हे देव तुमने बहुत भला किया ऐसी निर्मलबुद्धि मेरी अबतक कभीभी न भईथी अब तुम्हारेप्रताप से भई है तब श्रीराम उसे हार मुकटादि रहित देख विश्रामके बचन कहते भए कैसे हैं रघुवीर सौम्यहै आकार जिनका हे मित्र दीनता तज जैसा प्राचीन अवस्थामें धैर्यथा तैसाही धर बडे पुरुषोंकेही संपदा और आपदा दोनों होयहैं और अब तुम्हे कुछ आपदानहीं नंद्यावर्तपुरका राज्य भरतका आज्ञाकारी होय कर कर तब अतिवीर्य ने कही मेरेअबराज्यकी वांछा नहीं मैं राज्यका फलपाया अबमैं औरही अवस्था

धरूंगा समुद्र पर्यन्त पृथिवी का वश करणहारा महामान का धारी जो मैं सो कैसा पराया सेवक होय राज्यकरूं इस में पुरुषार्थ क्या और यह राज्य क्या पदार्थ जिन पुरुषोंने षट खंडका राज्य किया वे भी तृप्त न भए तो मैं पांच ग्रामोंका स्वामी कहां अल्प विभूतिकर तृप्त होऊंगा जन्मातर में किया जो कर्म उसका प्रभाव देखो जो मुझे कांति रहित किया जैसे राहु चन्द्रमा को कांति रहित करे यह मनुष्य देह सारभूत देवों से भी अधिक मैं वृथा खोई नवां जन्म धरनेको कायर मैं सो तुमने प्रतिबोधा अब ऐसी चेष्टा करूं जिस से मुक्ति प्राप्त होय इस भांति कहकर श्रीराम लक्ष्मणको क्षमा कराय वह राजा अति बीर्य केसरीसिंह जैसा है पराक्रम जिसका श्रुतधर नामा मुनीश्वर के समीप हाथ जोड नमस्कार कर कहता भया हे नाथ मैं दिगंबरी दीक्षा वांछूहूं तब आचार्य ने कहा यही बात योग्य है यह दीक्षा से अनन्त सिद्ध भए और होवेंगे तब अतिवीर्य वस्त्र तज केशोंकोलुन्च कर महाव्रत का धारी भया आत्मा के अर्थ विषे मग्न रागादि परिग्रहका त्यागी विधि पूर्वक तपकरता पृथिवीपर विहार करता भया जहां मनुष्यों का संचार नहीं वहां रहे सिंहादि क्रुरजीवोंकरयुक्त जो महागहन वन अथवा गिरि शिखर गुफादि तिनमें निर्भय निवास करे ऐसे अतिवीर्य स्वामीको नमस्कार होवे तजी है समस्त परिग्रह की आशा जिन्होंने और अंगीकार किया है चारित्रका भार जिन्होंने महा शील के धारक नानाप्रकार तपकर शरीरको शोषणहारे प्रशंसा योग्य महामुनि सम्यकदर्शन ज्ञान चारित्र रूपसुन्दर हैं आभूषण और दशोंदिशाही वस्त्र जिनके साधवों के जे मूलगुण उत्तरगुण वेही संपदा कर्म हरिबेको उद्यमी संजमी मुक्तिके वर योगीन्द्र तिनको नमस्कार होवे यह अतिवीर्य मुनि का चारित्र जो सुबुद्धि पढ़ें सुनें सो गुणों की वृद्धि को प्राप्त होंय भानु समान तेजस्वी होंय और संसार के कष्टसे निवृत होंय ॥ इति सैंतिसवां पर्व संपूर्णभया ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथानन्तर श्री रामचन्द्र महा न्याय के वेत्ताने अतिवीर्य का पुत्र जो विजयरथ उसे अभिषेक कराय पिताके पदपर थापा उस ने अपना समस्त वित्त दिखाया सो उसका उसको दिया और उस ने अपनी बहिन रत्नमाला लक्ष्मण को देनी करी सो उन्होंने प्रमाणकरी उसके रूपको देख लक्ष्मण हर्षितभए मानों साक्षात् लक्ष्मीही है फिर श्रीराम लक्ष्मण जिनेंद्रकीपूजाकर पृथिवी धरके विजयपुरनगरमेंवापिस गए और भरतने सुनीकि अतिवीर्य को नृत्यकारिणीने पकडा सो विरक्तहोय दीक्षाधरी शत्रुघनहास्यकरने लगा तब उसेमने कर भरत कहतेभए अहो भाई राजा अतिवीर्य धन्य है जे महादुःख रूप विषयों को तज शान्तिभाव को प्राप्त भए वे महा स्तुति योग्य हैं तिनकी हांसी कहां तपका प्रभाव देखो जो रिपु भी प्रमाण योग्य गुरु होय हैं यहतप देवनको दुर्लभहै इसभान्ति भरतने अतिवीर्य की स्तुति करी उस ही समय अतिवीर्य्यका पुत्रविजयरथआयाअनेक सामन्तोंसहित सो भरत को नमस्कार कर तिष्ठाक्षणिक और कथा कर जो रत्नमाला लक्ष्मणकोदई उसकीबडीबहिन विजयसुन्दरी नानाप्रकार आभूषण की धरण हारी भरत को परणाई और बहुत द्रव्य दिया सो भरत उस की बहिन परण बहुत प्रसन्न भए विजयरथ से बहुत स्नेह किया यही बड़ों की रीत है और भरत महा हर्ष थकी पूर्ण है मन जिस का तेज तुरंग पर चढ़कर अतिवीर्य्य मुनिके दर्शनको चला सो जिस गिरिपर मुनि विराजे थे वहां पहिलेमनुष्यदेखगए थे सा लार हैं तिन को पूछते जांय हैं कहां महामुनि कहां महामुनि, वे कहे हैं आगे विराजे हैं सो जिसगिरिपर मुनिथे वहां जाय पहुंचे कैसाहै गिरि विषम पाषाणोंके समूहसे महाअगम्य और नानाप्रकारके वृक्षोंसे पूर्ण पुष्पोंकी सुगंधकर महासुगन्धित और सिंहादिक क्रूर जीवोंसे भरा सो राजा भरत अश्वसे उतर महाविनय-

वान मुनिके निकटगए कैसे हैं मुनि रागद्वेषरहित शांत भई हैं इंद्रिय जिनकी शिलापर विराजमान निर्भय अकेले जिन कलपी अतिवीर्य मुनींद्र महातपस्वी ध्यानि मुनिपदकी शोभासे संयुक्त तिनको देख भरत आश्चर्यको प्राप्तभया फूलगएहैं नेत्र कमल जिसके रोमांच होयगए हाथ जोड नमस्कारकर साधुके चरणारबिन्दकी पूजाकर महा नम्रीभूत होय मुनिभक्ति विषै है प्रेम जिसका सो स्तुति करता भया हे नाथ परमतत्वके वेत्ता तुमही इसजगत विषै शूरवीरहो जिन्होंनेयह जैनेंद्री दीक्षा महादुर्द्धरधारी जेमहंत पुरुष विशुद्ध कुलमें उत्पन्नभएहैं तिनकी यही चेष्टाहै इस मनुष्य लोकको पाय जो फल बडे पुरुष बांछेहैं सो आपने पाया और हम इस जगतकी मायाकर अत्यन्त दुखी हैं हे प्रभो हमारा अपराध क्षमाकरो तुम कृतार्थ हो पूज्यपदको प्राप्तभए तुमको बारम्बार नमस्कारहो ऐसा कहकर तीन प्रदक्षिणादेय हाथ जोड नमस्कारकर मुनि संबंधी कथा करता २ गिरिसे उतर तुरंगपर चढ हजारों सुभटोंकर संयुक्त अयोध्यामें आया समस्त राजाओं के निकट सभामें कहा कि वे नृत्यकारनी समस्त लोकों के मनको मोहित करनी अपने जीवित विषै भी निर्लोभ प्रबल नृपोंको जीतनहारी कहां गई देखो आश्चर्यकी बात अति वीर्यके निकट मेरी स्तुति करें और उसे पकडें स्त्री वर्गमें ऐसी शक्ति कहांसे होय जानिएहै जिनशासनकर देवियोंने यह चेष्टाकरी ऐसा चिन्तवन करता हुवा प्रसन्न चित्तभया और शत्रुघन नानाप्रकार के धान्यकर मंडित जो धरा उसके देखनेको गया जगतमें व्याप्तहै कीर्ति जिसकी फिर अयोध्या आया परम प्रतापको धरे और राजाभरत अतिवीर्य की पुत्री विजय सुन्दरी सहित सुख भोगता सुखसों तिष्ठे जैसे सुलोचना सहित मेघेश्वर तिष्ठा यह तो कथा यहांही रही आगे श्रीरामलक्ष्मणका वर्णन करे हैं।

अथानंतर वे रामलक्ष्मण सर्वलोकको आनन्दके कारण कईएक दिन पृथ्वीधरके पुरमें रहे जानकीसहित मंत्रकर आगे चलनेको उद्यमीभए तब सुंदर लक्षणकी धरनहारी बनमाला लक्ष्मणसे कहती भई नेत्र सजलहोय गए हे नाथ मैं मंदभागिनी मुझे आपतज जावोहो तो पहिले मरणसे क्यों बचाई तब लक्ष्मण बोले हे प्रिये तू विषाद मतकरे थोडे दिनोंमें तेरे लेनेको आवेंगे हे सुन्दरबदनी जो तेरे लेयवेको शीघ्र न आवें तो हमको वह गति हो जो सम्यकदर्शन रहित मिथ्या दृष्टिकी होयहै हे बल्लभे जो शीघ्रही तेरे निकट न आवें तो हमको वह पापहो जो महामानकर दग्ध साधुवोंके निंदकोंको होयहै हे गजगामिनी हम पिताके बचन पालिवे निमित्त दक्षिणके समुद्रके तीर निसंदेह जायहैं मलयाचलके निकट कोई परम स्थानककर तुझे लेने आवेंगे हे शुभमते तू धीर्य रख इसभांति कहकर अनेक सौगंधकर अति दिलासा देय आप सुमित्रा के नन्दन लक्ष्मण श्रीराम के संग चलने को उद्यमी भए लोकों को सूते जान रात्रि को सीता सहित गोप्य निकसे प्रभात में इनको न देखकर नगर के लोक परम शोकको प्राप्त भए राजा को अति शोक उपजा बनमाला लक्ष्मण बिना घर सूना जानती भई अपना चित्त जिन शासन में लगाय धर्मानुराग रूप तिष्ठी राम लक्ष्मण पृथिवीपर बिहार करते नर नारियोंको मोहते पराक्रमी पृथिवी को आश्चर्य के कारण धीरे धीरे लीला से बिचरे हैं जगत के मन और नेत्रों को अनुराग उपजावते रमे हैं इनको देख लोक विचरे हैं कि यह पुरुषोत्तम कौन पवित्र गोत्र में उपजे हैं धन्य है वह माता जिसकी कुक्षि में ये उपजे और धन्य हैं वे नारी जिनको ये परणे ऐसा रूप देवों को दुर्लभ यह सुन्दर कहां से आए और कहां जायहैं इनके क्या बांछाहै परस्पर स्त्रीजन ऐसीवार्ता करे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं। हे सखी देखो दोनों कमल नेत्र चन्द्रमा सारिखे अद्भुत बदन जिनके और एक नारी नागकुमारी समान अद्भुत देखी। न जानिये वे सुर थे कि नर थे हे मुग्धे महापुरुष बिना उनका दर्शन नहीं अब ता वे दूर गये पीछे फिरो वे नेत्र और मनके चोर जगत् का मन हरते फिरे हैं इत्यादि नर नारियोंके आलाप सुनते सबको मोहित करते वे स्वच्छा विहारी शुद्ध हैं चित्त जिनके नाना देशों में विहार करते क्षेमांजलि नामा नगर में आए उसके निकट कारी घटा समान सघन बन में सुख से तिष्ठे जैसे सौमनस बन में देव तिष्ठें वहां लक्ष्मण ने महासुन्दर अन्न और अनेक व्यंजन तैय्यार किये और दाखों का रस सो श्रीराम साता ने लक्ष्मण सहित भोजन किया ॥

अथानन्तर लक्ष्मण श्रीराम की आज्ञा लेय क्षेमांजलि नाम पुर के देखने को चले महासुन्दर माला पहिरे और पीतांबर धारे सुन्दर है रूप जिनका नाना प्रकार की बेल वृक्ष उनसे युक्त बन और निर्मल जल की भरी नदी और नाना प्रकार के क्रीडागिरि अनेक धातु के भरे और ऊंचे ऊंचे जिन मन्दिर और मनोहर जलके निवाण और नाना प्रकारके लोक उनको देख नगर में प्रवेश किया कैसा है नगर नाना प्रकार के व्यापार कर पूर्ण सो नगरके लोक इनको देख अद्भुत रूप देख परस्पर वार्ता करते भए तिन के शब्द इसने सुने कि इस नगर के राजा के जितपद्मानामा पुत्री है उसे वह परणे जो राजा के हाथ की शक्ति की चोट को खाय जीवता बचे सो कन्या की क्या बात स्वर्ग का राज्य देय तो भी यह बात कोई न करे शक्ति की चोट से प्राण ही जांय तब कन्या कौन अर्थ जगत् में जीतव्य सर्व वस्तु से प्रिय है इसलिये कन्या के अर्थ प्राण कौन देय, यह वचन सुनकर महा कौतुकी

For Private and Personal Use Only

लक्ष्मण किसी को पूछते भए हे भद्र यह जितपद्मा कौन है तब वह कहता भया यह कालकन्या पंडितमाननीय सर्व लोक प्रसिद्ध तुमने क्या न सुनी इसनगर का राजा शत्रुदमन जिसके राणी कनक प्रभा उसके जितपद्मा पुत्री रूपवन्ती गुणवन्ती जिसने बदनकी कांतिसे कमल जीताहै और गात की शोभाकर कमलनी जीती सो इसलिये जितपद्मा कहावे है नवयौवनमंडित सर्वकला पूर्ण अद्भुत आभूषण की धरणहारी उसे पुरुष का नाम रुचे नहीं देवों का दर्शन भी अप्रिय मनुष्यों की तो क्याबात जिसके निकट कोई पुलिंग शब्दका उच्चारण भी न कर सके यहकैलाश के शिखर समान जो उज्ज्वल मंदिर उस में कन्यातिष्ठे है सैकड़ों सहेली जिसकी सेवा करे हैं जो कोई कन्या के पिताके हाथकी शक्तिकी चोटसे बचे उसे कन्या वरे, लक्ष्मण यह वार्ता सुन आश्चर्य को प्राप्त भया और कोप भी उपजा मनमें विचारी महागर्वित दुष्ट चेष्टासंयुक्त यह कन्या उसे देखूं यह चितवन कर राजमार्ग होय विमान समान सुन्दर घर देखता और मदोन्मत्त हाथी कारीघटा समान और तुरंग चञ्चल अवलोकता और नृत्यशाला निरखता राजमन्दिरमें गया कैसा है राजमन्दिर अनेक प्रकारके झरोखोंकर शोभित नाना प्रकार ध्वजावों कर मण्डित शरद के बादर समान उज्ज्वल महामनोहर रचनाकर संयुक्त ऊंचे कोटकर वेष्टित सो लक्ष्मण जाय द्वारपर ठाढ़ा भया इन्द्रके धनुष समान अनेक वर्णका है तोरण जहां सुभटों के समूह अनेक देशों के नानाप्रकार भेट लेय कर आये हैं कोई निकसे है कोई जाय है सामन्तोंकी भीड़ होयरही है लक्ष्मण को द्वार में प्रवेश करता देख द्वारपाल सौम्य वाणी से कहता भया तुम कौनहो और कौनकी आज्ञा से आए हो कौन प्रयोजन राज मन्दिर में प्रवेश करोहो तब कुमारने कही राजाको देखा चाहे हैं तू जाय

राजा से पूछ तब वह द्वारपाल अपनी ठौर दूजे को राख आप राजा सो जाय विनती करताभया है महा राज आपके दर्शन को एक महा रूपवान पुरुष आयाहै द्वारे तिष्ठे है नील कमल समानहै वर्ण जिसका और कमल लोचन महा शोभायमान सौम्य शुभ मूर्ति है तब राजाने प्रधानकी ओर निरख आज्ञा करी आवे तब द्वारपाल लक्षमण को राजाके समीप लेयगया सो समस्त सभा इस को अति सुन्दर देख हर्ष की बृद्धिको प्राप्त भई जैसे चन्द्रमाको देख समुद्रकी शोभा बृद्धिको प्राप्त होय राजा इसको प्रणाम रहित देदीप्यमान विकट स्वरूप देख कछु इक विकारको प्राप्त होय पूछता भया तुम कौन हो कौन अर्थ कहां से यहां आए हो तब लक्षमण वर्षाकाल के मेघ समान शब्द करते भए मैं राजा भरतका सेवकहूं पृथिवी के देखने की अभिलाषा से विचरूं हूं तेरी पुत्री का बृत्तान्त सुन यहां आयाहूं यह तेरी पुत्री महा दुष्ट मारणेवाली गाय है नहीं भग्न भए हैं मान रूपी सींग जिसके यह सर्वलोकोंको दुःखदायनी वर्ते है तब राजा शत्रुदमन ने कही मेरी शक्ति को जो सहार सके सो जितपद्माको बरे तब लक्षमण कहताभया तेरी एक शक्ति से मेरे क्या होय तू अपनी समस्त शक्ति से मेरे पंच शक्ति लगाय इस भान्ति राजाके और लक्षमण के विवाद भया उस समय झरोखा से जितपद्मा लक्षमणको देख मोहित भई और हाथ जोड़ इशारा कर मने करतीभई कि शक्तिकी चोट मत खावो तब आप सैन करतेभए तू डरे मत इस भांति समस्या मेंही धीर्य बंधाया और राजा से कही क्यों कायर होय रहा है शक्ति चलाय अपनी शक्ति हमकोदिखा तब राजाने कही मूवा चाहे है तो झेल महा कोपकर प्रज्वलित अग्निसमान एक शक्ति चलाई सो लक्षमणने दाहिने करमें ग्रही जैसे गरुड सर्पको ग्रहे और दूसरी शक्ति दूसरे हाथ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से गही और तीजी चौथी दोनों कांख में गही सो चारों शक्तियोंको गहे लक्ष्मण ऐसा शोभे है मानो चोदन्ता हस्ती है तब राजाने पांचवीं शक्ति चलाई सो दांतों से गही जैसे मृगराज मृगीको गहे तब देवों के समूह हर्षितहोय पुष्पवृष्टि करते भये और दुंदुभी बाजे बाजतेभए लक्ष्मण राजासे कहतेभए और है तो औरभी चला तब सकल लोक भयकर कंपायमान भए राजा लक्ष्मणका अखंडबल देख आश्चर्यको प्राप्तभया लज्जा कर नीचा होय गया और जितपद्मा लक्ष्मणके रूप और चरित्र कर खेंची थकी आय ठाढ़ीभई वह कन्या सुन्दर वदनी मृगनयनी लक्ष्मण के समीप ऐसी शोभती भई जैसे इन्द्रके समीप शची होय जितपद्मा को देख लक्ष्मण का हृदय प्रसन्न भया महा संग्राम में भी जिसका चित्त स्थिर न होय सो इसके स्नेह से वशीभूत भया लक्ष्मण तत्काल विनयकर नम्रीभूत होय राजा को कहता भया हे माम हम तुम्हारे बालक हैं हमारा अपराध क्षमाकरो जे तुम सारिखे गम्भीर नर हैं वे बालकोंकी अज्ञान चेष्टा कर और कुवचन कर विकारको नहीं प्राप्त होय हैं तब शत्रुदमन अति हर्षित होय हाथी सूंड समान अपनी भुजावोंकर कुमारसे मिला और कहताभया कि हे धीर मैं महा युद्धमें माते हाथियोंको क्षणमात्रमें जीतनहारा सो तैंने जीता और बनके हस्ती पर्वतसमान तिनको मद रहित करनहारा जो मैं सो तुमने मुझे गर्वरहितकिया धन्य तुम्हारा पराक्रम धन्य तुम्हारोरूप धन्यतुम्हारेगुण धन्यतुम्हारी निगर्वता महा विनय वान अद्भुत चरित्र के धरणहारे तुमसे तुमही हो इस भांति राजाने लक्ष्मणके गुण सभा में वर्णन किये तब लक्ष्मण लज्जाकर नीचा होयगया। और राजाकी आज्ञाकर मेघकी ध्वनि समानवादित्रों केशब्द सेवक करते भए और राजाओं के [illegible] नगर के लिये आनन्दकर्ता राजाने लक्ष्मण

से कही हे पुरुषोत्तम मेरी पुत्री का तुम पाणिग्रहणाकया चाहो हो तो करो लक्ष्मणने कही मेरे बडे भाई और भावज नगर के निकट तिष्ठे हैं तिनको पुछो उनकी आज्ञा होय सो तुमको हमको करनी उचित है वे सर्व नीके जाने हैं तब राजा पुत्री को और लक्ष्मण को रथमें चढाय सर्व कुटुम्ब सहित रघुबीर पै चला, सो क्षोभ को प्राप्त हुआ जो समुद्र उसकी गर्जना समान इस की सेना का शब्दसुन कर और धूल के पटल उठते देख कर सीता भयभीत होय कहती भई हे नाथ लक्ष्मणने कुछ उद्धत चेष्टा करी जिससे इस दिशामें उपद्रव दृष्टि आवे है इसलिये सावधान होय जो कुछ करणा होय सो करो, तब आप जानकी को उर से लगाय कहते भए हेदेवी भय मत करो ऐसा कह कर उठे धनुष् उपर दृष्टि धरी तबही मनुष्यों के समूह के आगे स्त्रीजन सुन्दर गान करती देखी फिर निकट हीं आई सुन्दर है अंग जिनके स्त्रियों को गावती और नृत्य करती देख श्रीराम कोविश्वास उपजा सीता सहित सुख से विराज स्त्रीजन सर्व आभूषण मंडित अति मनोहर मंगल द्रव्य हाथ में लिये हर्ष के भरे हैं नेत्र जिनके रथ से उतर कर आई और राजा शत्रुदमन भी बहुत कुटुम्ब सहित श्रीरम के चरणारविन्द को नमस्कार कर बहुतविनयसे बैठा लक्ष्मण और जितपद्मा एक रथ में बैठे आए थे सो उतर कर लक्ष्मण श्रीरामचन्द्र को और जानकी को सीस निवाय प्रणाम कर महा विनयवान् दूर बैठा सो श्रीराम राजा शत्रुदमनसे कुशल प्रश्न वार्ता कर सुख से बिराजे राम के आगमन से राजा ने हर्षित होय नृत्य किया महा भक्ति से नगर में चलने की विनती करी, श्रीराम और सीता और लक्ष्मण एक रथ में विराजेपरम उत्साह से राजाके महल में पधारे मानों वह राजमन्दिर सरोवर ही है स्त्री रूप कमलों से भरा लावण्यरूप जल है जिसमें और शब्द करते

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जे आभूषण वेई हैं सुन्दर पत्नी जहां यहदोनों वीर नवयौवन महा शोभा से पूण केयक दिन सुख से विराजे राजा शत्रु दमन करे है सेवा जिनकी ॥

अथान्तरसर्वलोक के चित्तको आनन्दके करणहारे रामलक्ष्मणमहाधीरवीर सीतासहितअर्धरात्रिको उठचले लक्ष्मण ने प्रियवचनकर जैसे वनमाला को धीर्य बंधायाथा तैसे जितपद्मा को धीर्यबंधायाबहुत दिलासाकर आपश्रीराम के लारभए नगरके सर्व लोक को और नृप को इनके चले जाने से अति चिंता भई धीर्यनरहा यहकथा श्री गौतमस्वामीराजाश्रेणिक से कहे हैं हे मगधाधिपति वे दोनों भाई जन्मांतर के उपार्जे जे पुण्य तिनसे सर्व जीवोंके बल्लभ जहां २ गमन करें तहां २ राजाप्रजासर्व लोक सेवाकरें और यह चाहें कि यह न जावें तो भला । सर्व इंद्रियोंके सुखऔर महा मिष्टअन्नपानादि बिनाहीयत्न इनको सर्वत्र सुलभ जे पृथिवी विषें दुर्लभ वस्तु हैं वेसब इनको प्राप्त होय महाभाग्य भव्य जीव सदा भोगों से उदास हैं ज्ञान के और विषयों के बैर है ज्ञानी ऐसा चितवन करे हैं कि इन भोगों कर प्रयोजन नहीं ये दुष्ट नाश को प्राप्त होंय इस भांति यद्यपि भोगों की सदा निन्दाही करे हैं भोगों से विरक्त ही हैं दीप्ति से जीता है सूर्य जिन्हों ने तथापि पूर्वोपार्जित पुण्यके प्रभावसे पहाड़के शिखरपर निवास करे हैं वहां भी नाना प्रकार सामग्री का संयोग होय है जबलग मुनि पद का उदय नहीं तब लग देवों समान सुख भोगवे हैं ❀ अड़तीसवां पर्व पूर्ण भया ❀ अथानंतर ये दोनो वीर महाधीर सीता सहित बन में आए कैसा है बन नाना प्रकार के वृक्षों कर शोभित अनेक भांति के पुष्पों की सुगन्धिता कर महासुगंध लतावों के मंडपों से युक्त यहां राम लक्ष्मण रमते रमते आए कैसे हैं दोनों समस्त देवो पुनीत सामग्री कर शरीर का है आधार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनके कहूं इक मूगों के रंग समान महा सुंदर वृक्षों की कूपल लेय श्रीराम के कर्णाभरण करें हैं कहूं यक वृक्षों में लग रही जो बेल उस कर हिंडोला बनाय दोनों झोटा देय देय जानकी को झुलावे हैं और आनन्द की कथा कर सीता को विनोद उपजावे हैं कभी सीता राम से कहे है, हेदेव यह वृक्ष क्या मनोग्य दीखें हैं और सीता के सुगंधता कर भ्रमर आय लगे हैं, सो दोनोंउड़ावे हैं इसभांतिनाना प्रकार के बन में धीरे धीरे विहार करते दोनों धीर मनोग्य है चारित्र जिनके जैसे स्वर्गके बन विषे देव रमें तैसे रमते भए, अनेकदेशोंको देखते अनुक्रमकर बंशस्थल नगर आए वे दोनों पुण्याधिकारी तिनको सीता के कारण थोड़ी दूर ही आवने में वहुत दिन लगे सो दीर्घकाल दुःख क्लेश का देनहारा न भया सदा सुख रूप ही रहे नगरके निकट एक बंशधर नामा पर्वत देखा मानो पृथिवी को भेद कर निकसा है जहां बांसों के अति समूह तिनसे मार्ग विषम है ऊंचे शिखरों की छाया से मानों सदा संध्याको धारे है और निझरनों कर मानों हंसे है सो नगर से राजा प्रजा को निकसते देख श्रीरामचन्द्र पूछते भए अहो क्या भयकर नगर तजो हो तब कोई यह कहता भया आज तीसरा दिन है रात्रि के समय इस पहाड़ के शिखर पर ऐसी ध्वनि होय है जो अब तक कभी भी नहीं सुनी पृथिवी कंपायमान होय है और दशों दिशा शब्दायमान होय हैं वृक्षों की जड़ उपड़ जाय हैं सरोवरोंका जल चलायमान होय है उस भयानक शब्द कर सर्व लोकों के कान पीड़ित होय हैं मानों लोहे के मुदगरों कर मारे कोई एक दुष्ट देव जगत् का कटक हमारे मारने के अर्थ उद्यमी होय है इस गिरि पर क्रीडा करे है उसके भयसे संध्या समय लोक भागे हैं प्रभातमें फिर आवे हैं पांच कोस परे जाय रहें हैं जहां उसकी ध्वनि न सुनिये यह वार्ता सुन

सीता राम लक्ष्मण से कहती भई जहां यह सब लोक जाय हैं वहां आप भी चलें जे नीतिशास्त्र के वेत्ता हैं वे देश काल को जान कर पुरुषार्थ करे हैं वे कदाचित् आपदा को नहीं प्राप्त होय हैं तब दोनों धीर हंसकर कहते भए तू भय कर बहुत कायार है सो यह लोकजहांजायहैं वहां तू भी जा प्रभात सब आवेंतब तू भीआइयो हम तो आजइसगिरि परे रहेंगे यह अत्यन्त भयानक कौन की ध्वनि होयहै सो देखेंगे यही निश्चय है यह लोक रंक हैं भयकर पशु बालकों को लेय भागे हैं हमको किसी का भय नहीं तब सीता कहती भई तुम्हारे हठको कौन हरिबे समर्थ तुम्हारा आग्रहदुर्निवार है ऐसा कहकर वह पतिव्रता पति के पीछे चली खिन्न भए हैं चरण जिसके पहाड़के शिखर पर ऐसी शोभे मानों निर्मल चन्द्रकांति ही है श्रीराम के पीछे और लक्ष्मण के आगे सीता कैसी सोहे मानों चन्द्र कांति और इन्द्रनील मणिके मध्यपुष्पराग मणिही है उस पर्वतका आभूषण होती भई राम लक्ष्मण को यह डर है कि कहीं यह गिरिसे गिर न पड़े इसलिये इसका हाथ पकड़ लिएजायहैं वे निर्भय पुरुषोत्तम विषमहैं पाषाण जिसके ऐसे पर्वत को उलंघकर सीतासहित शिखरपरजाय पहुंचे। वहां देशभूषण और कुलभूषण नामादोयमुनि महाध्याना-रूढ दोनों भुज लुबांए कायोत्सर्ग आसनधरे खड़े परमतेजकर युक्तसमुद्र सारिखेगंभीर गिरिसारिखेस्थिर शरीर और आत्मा को भिन्न भिन्न जाननहारे मोह रहित नग्न स्वरूप यथाजातरूपके धरनहारे कान्तिके सागर नवयौवन परमसुन्दर महा संयमी श्रेष्ठ हैं आकार जिन के जिनभाषित धर्म के आराधनहारे तिन को श्रीराम लक्ष्मण देखकर हाथ जोड़ नमस्कार करते भए। और बहुत आश्चर्य को प्राप्त भए चित्त में चिंतवते भए कि संसार के सर्वकार्य असारहैं दुःख के कारण हैं मित्र द्रव्य स्त्री सर्व कुटुम्ब औरइन्द्रियजनित

सुख यह सब दुःख ही हैं एक धर्म ही सुखका कारण है महा भक्तिके भरे दोनों भाई परम हर्ष को धरते विनयसे नम्रीभूत हैं शरीर जिनके मुनियोंके समीप बैठे उसीसमय असुरकेआगमन से महाभयानक शब्द भया मायामई सर्प्प और बिच्छु तिनकर दोनों मुनियों का शरीर वेष्टित होय गया सर्प अति भयानक महाशब्द के करणहारे काजलसमान कारे चलायमान है जिह्वा जिनकी और अनेक वर्णके अतिस्थूल बिच्छु तिनसे मुनियोंके अंग बेढे, देख, राम लक्ष्मण असुरपर कोपको प्राप्त भए। सीता भयकी भरी भरतारके अंगसेलिपट गई तब आप कहतेभए तू भयमतकरै इसको धीर्य बन्धाय दोनों सुभटोंने निकट जाय सांप बिच्छू मुनियों के अंगे से दूर किये चरणारविंदकी पूजाकरी और योगीश्वरों की भक्ति बन्दना करतेभये श्रीराम वीण लेय बजावतेभए और मधुर स्वर से गावतेभए और लक्ष्मण गान करताभया गानमें ये शब्द गाये महा योगीश्वर धीर वीर मन वचन कायकर वन्दनीक हैं मनोग्यहै चेष्टा जिनकी देवोंकरभी पूज्य महा भाग्यवन्त जिन्होंने अरिहंतका धर्म पाया जो उपमो रहित अखंड महा उत्तम तीन भवन में प्रसिद्ध जे महा मुनि जिन धर्म के धुरन्धर ध्यान रूप वज्र दण्डसे महामोह रूप शिलाको चूर्ण करडारें और जे धर्म रहित प्राणियों को अविवेकी जान दयाकर विवेकके मार्ग लावें परम दयालु आप तिरें औरों को तारें इसभांति स्तुति कर दोनों भाई ऐसे गावें जो बनके तिर्यन्चों के भी मन मोहित भए और भक्ति की प्रेरी सीता ऐसा नृत्य करतीभई जैसा सुमेरुके विषे शची नृत्यकरें जाना है समस्त संगीत शास्त्र जिसने सुन्दर लक्षणको धरे अमोलक हार मालादि पहिरे परम लीला कर युक्त दिखाई है प्रकटपणे अद्भुत नृत्यकी कला जिसने सुन्दर हैं बाहुलता जिसकी हाव भावादिमें प्रवीण

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्द मन्द चरणोंको धरती महा लयको लिये गावती गीत अनुसार भावको बतावती अद्भुत नृत्य करती महा शोभायमान भासती भई और असुर कृत उपद्रव को मानो सूर्य देख न सका सो अस्तभया और संध्याभी प्रकठ होय जाती रही आकाश में नक्षत्रों का प्रकाश भया दशों दिशामें अन्धकार फैलगया उस समय असुरकी मायासे महा रौद्र भूतोंके गण हड हउ हँसतेभये महा भयंकर हैं मुख जिनके और राक्षस खोटे शब्द करतेभए और मायामई स्यालनी मुखसे भयानक अग्नि की ज्वाला काढ़ती शब्द बोलती भई और सैकड़ों कलेवर भयकारी नृत्य करतेभये, मस्तक भुजा जंघादि अंगोंकी वृष्टि होती भई और दुर्गन्ध सहित स्थूल बूंद लोहूकी बरसती भई और डाकिनी नग्न स्वरूप लाबें होठ हाडों के आभरण पहिरे क्रूरहै शरीर जिनके हाले हैं स्तन जिनके खड़ग हैं हाथ में जिनके वे दृष्टि मे आवती भई और सिंह व्याघ्रादिक कैसे मुख तप्त लोह समान लोचन हस्त में त्रिशूल धरे होंठ डसते कुटिल हैं भौंह जिनकी कठोर हैं शब्द जिनके ऐसे अनेक पिशाच नृत्य करतेभए पर्वतकी शिला कम्पायमान भई और भूकम्प भया इत्यादि चेष्टा असुरने करा सो महा मुनि शुक्लध्यानमें मग्न न जानतेभए ये चेष्टा देख जानकी भयको प्राप्तभई पतिके अंग से लगगई तब श्रीराम कहतेभए हे देवी भय मतकर सर्व विघ्नके हरणहारे जे मुनिके चर्ण तिनका शरणगहा ऐसा कहकर सीताको मुनिके पांयन मेल आप लक्ष्मणसहित धनुषहाथ में लिये महाबली मेघसमान गरजे धनुष के चढ़ायबेका ऐसा शब्दभया जैसा वज्रपातका शब्दहोय तब वह अग्निप्रभ नामा असुर इन दोनों वीरोंको बलभद्र नारायण जान भागगया उसकी सर्वचेष्टा विलाय गई श्रीराम लक्ष्मणने मुनिका उपसर्ग दूरकिया तत्काल देशभूषण कुलभूषण मुनियों को केवल उपजा

For Private and Personal Use Only

चतुरनिकाय के देव दर्शन को आऐ विधिपूर्वक नमस्कारकर यथा योग्य बैठे केवल ज्ञानके प्रतापसे केवली के निकट रात दिनका भेद न रहे भूमिगोचरी और विद्याधर केवलीकी पूजाकर यथा योग्य बैठे सुर नर विद्याधर सबही धर्मोपदेश श्रवण करते भये रामलक्ष्मणहर्षितचित्त सीता सहित केवलीकी पूजाकर हाथ जोड़ नमस्कारकर पूछतेभये हे भगवान असुरने आपको कौन कारण उपसर्ग किया और तुम दोनों में परस्पर अति स्नेह काहेसे भया तब केवलीकी दिव्यध्वनि होतीभई। पद्मनीनामा नगरीमें राजाविजयपर्वत गुणरूप धान्यके उपजिवेका उत्तमक्षेत्र जिसके धारणीनामा स्त्री और अमृतसुर नामा दूत सर्व शास्त्रोंमें प्रवीण राज काज विषे निपुण लोकरीति को जाने और जिसको गुणही प्रिय उसके उपभोग नामा स्त्री उसकी कुक्षि से उपजे उदित मुदित नामा दोय पुत्र व्यवहार में प्रवीण सो अमृतसुर नामा दूत को राजाने कार्य निमित्त बाहिर भेजा सो वह स्वामी भक्त वसुभूतिमित्र सहित चला वसुभूति पापी इस की स्त्री से आसक्त दुष्टचित्त सो रात्रि में अमृतसुर को खड्ग से मार नगरी में वापिस आया लोगों से कही मुझे वापिस भेज दिया है और उसकी स्त्री उपभोग से यथार्थ वृत्तान्त कहा तब वह कहती भई मेरे दोनों पुत्रों कोभी मार ताकि हम दोनों निश्चिन्त तिष्ठें सो यह वार्ता उदितकी वहूंने सुनी और सर्व वृत्तान्त उदितसे कहा यह वहू सास के चरित्रको पहिले भी जानती थी इसको वसुभूति की वहू ने समाचार कहे थे जो परदारा के सेवन से पतिसे विरक्त थी सो उदित ने सर्व वार्तोंसे सावधान होय मुदितको भी सावधान किया और वसुभूतिका षड्ग देख पिताके मरणका निश्चयकर उदितने वसुभूति को मारा सो पापी मरकर म्लेछकी योनि को प्राप्त भया ब्राह्मणथा सो कुशीलके और हिंसाके दोष से

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चांडालका जन्म पाया एक समय मतिवर्धन नामा आचार्य मुनियोंमें महा तेजस्वी पद्मनी नगरी आए सो बसंततिलकनामा उद्यानमें संघसहित विराजे और आर्यिकावोंकी गुरानी अनुधरा धर्म ध्यान में तत्परसो भी आर्यिकादियोंके संघसहित आई सो नगरके समीप उपवनमें तिष्ठी और जिस बनमें मुनि विराजें थे उसबनके अधिकारी जाय राजासे हाथ जोड़ बिनती करतेभए हेदेव आगेको या पीछे को कहो संघ कौन तरफ जावे तब राजाने कही कि क्याबातहै वे कहतेभए उद्यानमें मुनि आएहैं जो मने करें तो डरें जो नहीं मनेकरें तो तुम कोपकरो यह हमको बड़ा संकटहै स्वर्गके उद्यानसमान यह बनहै अबतक काहूको इसमें आने न दिया परंतु मुनियोंका क्याकरें वे दिगम्बर देवोंकर न निवारे जावें हम सारखेकैसे निवारें तब राजानेकही तुममतमनेकरो जहांसाधु विराजेंसो स्थानकपवित्रहोयहै सो राजा बडी विभूतिसे मुनियोंके दर्शनको गया वे महाभाग्य उद्यानमें बिराजेंथे बनकी रजसे धूसरे हैं अंग जिनके मुक्ति योग्य जो क्रिया उससे युक्त प्रशांतहै हृदय जिनके कैयक कायोत्सर्ग धरे दोनों भुजा लुवांय खडे हैं कैयक पद्मासन धरे विराजे हैं बेला तेला चौला पंच उपवास दस उपवास पक्षमासादि अनेक उपवासों से शोषाहै अंग जिन्होंने पठन पाठनमें सावधान भ्रमर समान मधुरहैं शब्द जिनके शुद्ध स्वरूप विषे लगायाहै चित्त जिन्हों ने सोराजा ऐसे मुनियोंको दूरसे देख गर्व रहितहोय गजसे उतर सावधान होय सर्व मुनियों को नमस्कार कर आचार्य के निकट जाय तीन प्रदक्षिणादेय प्रणामकर पूछता भया हे नाथ जैसी तुम्हारे शरीरमें दीप्ति है तैसे भोग नहीं तब आचार्य कहते भए यह कहां बुद्धि तेरी तू शरीरको स्थिर जाने है यह बुद्धि संसारकी बढ़ावन हारी है जैसे हाथीके कान चपल तैसा

जीतव्य चपलहै यह देह कदलीके थंभसमान असारहै और ऐश्वर्य स्वप्न तुल्यहै घर कुटम्ब पुत्र कलत्र बांधव सब असारहैं ऐसा जानकर इस संसारकी मायामें क्या प्रीति यह संसार दुःखदायकहै यह प्राणी अनेक बार गर्भवासके संकट भोगवे हैं गर्भवास नरक तुल्य महाभयानक दुर्गन्ध कृमिजालकर पूर्ण रक्त श्लेषमादिकका सरोवर महा अशुचि कर्दमका भराहै यह प्राणी मोहरूप अंधकारसे अन्धा भया गर्भवाससे नहीं डरे है धिक्कारहै इस अत्यन्त अपवित्र देहको सर्व अशुभका स्थानक क्षणभंगुर जिसका कोई रक्षक नहीं जीव देहको पोषे वह इसे दुःखदेय सो महाकृतघ्न नसा जाल कर बेढ़ा चर्म से ढका अनेक रोगोंका पुंज राजा के आगमनसे ग्लानिरूप ऐसे देहमें जे प्राणी स्नेह करे हैं वे ज्ञान रहित अविवेकी हैं तिनके कल्याण कहांसे होयहै और इसशरीरविषे इंद्रियचोर बसे हैं वेबलात्कार धर्मरूप धनको हरे हैं यह जीवरूप राजा कुबुद्धिरूप स्त्रीसो रमे हैं और मृत्यु इसको अचानक ग्रसा चाहे है मनरूप माता हाथी विषयरूप बनमें क्रीडा करे है ज्ञानरूप अंकुशसे इसे बशकर वैराग्यरूप थंभ से विवेकी बांधे हैं यह इंद्रियरूप तुरंग मोहरूप पताका को धरे पर स्त्री रूप हरित तृणों में महा लोभको धरते शरीररूप रथको कुमार्गमें पाडे हैं चित्तके प्रेरे चंचलता धरे हैं इसलिये चितको बश करना योग्य है तुम संसार शरीर भोगोंसे विरक्तहोय भक्तिकर जिनराजको बारम्बार नमस्कार करो निरन्तर सुमरो जिससे निश्चयसे संसार समुद्रको तिरो तप संयमरूप बाणोंसे मोहरूप शत्रुको हण लोक के शिखर अविनाशीपुरका अखंड राज्य करो निर्भय निजपुर में निवास करो यह मुनि के मुख से बचन सुन कर राजा विजयपर्वत सुबुद्धि राज्य तज मुनि भया और वे दूतके पुत्र दोनों भाई उदित मुदित जिनवाणी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुन मुनि होय महीपर बिहार करते भए सम्मेद शिखरकी यात्राको जाते थे किसी प्रकार मार्ग भूल वन में जाय पड़े वह वसूभूति विप्रका जीव महारौद्र भील भयाथा उसने देखे अति क्रोधायमान होय कुठार समान कुवचन बोल इनको खडे राखे और मारने को उद्यमी भया तब बडा भाई उदित मुदितसे कहताभया कि हे भ्रात भय मतकरो क्षमा ढालको अंगीकार करो यह मारने को उद्यमी भयाहै सो हमने बहुत दिन तपसे क्षमाका अभ्यास किया है सो अब दृढ़ता राखनी यह वचन सुन मुदित बोला हम जिनमार्ग के सरधानी हमको कहां भय, देह तो विनेश्वर ही है और यह वसुभूति का जीव है जो पिता के वैर से मारा था परस्पर दोनों मुनि ए वार्ताकर शरीर का ममत्वतज कायोत्सर्गधार तिष्ठे वह मारनेको आया सो म्लेछ कहिए भील तिन के पतिने मने किया दो मुनि बचाए यह कथा सुन रामने केवली से प्रश्न किया हे देव उसने बचाए सो उसको प्रीति का कारण क्या तब केवली की दिव्य ध्वनिमें आज्ञाभई एक यक्ष स्थान नामग्राम वहां सुरप और कर्षक दोनोभाई थे एक पक्षीको पारधी जीवता पकड़ उसे ग्राममें लाया सो इन दोनों भाईयोंने द्रव्य देय छुड़ाया सो पक्षी मरकर म्लेछ पति भया और वे सुरप कर्षक दोनों वीर उदित मुदित भये परोपकार कर उसने इनको बचाएजो कोई जिस से नेकी करे है सोवह भी उससे नेकी करे है और जो काहू से बुरी करे है उस से वह भी बुरी करे है यह संसारी जीवों की रीति है इस लिये सबों का उपकार ही करो किसी प्राणी से बैर न करना एक जीवदया ही मोक्ष का मारग है, दया बिना ग्रन्थों के पढ़ने से क्या एक सुकृत ही सुख का कारण सो करना, वे उदित मुदित मुनि उपसर्गसेछूट सम्मेद शिखर की यात्रा को गए और अन्य भी अनेक तीर्थों की यात्राकरी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रत्नत्रय का आराधन कर समाधिसे प्राणतज स्वर्ग लोक गए और वह वसुभूति का जीवजो म्लेच्छभया था सोअनेक कुयोनियोंमें भ्रमणकर मनुष्यदेह पायतापस व्रतधरअज्ञान तपकरमर जोतिषी देवोंके विषे अग्निकेतु नामा क्रूरदेव भया और भरत क्षेत्रकेविषम अरिष्टपुरनगर जहांराजाप्रियव्रतमहा भोगी उसके दो राणी महागुणवती एककनकप्रभा दूजीपद्मावती सो वे उदित मुदितके जीवस्वर्गसे चयकर पद्मावतीराणीके रत्नरथ विचित्ररथनामा पुत्रभए और कनकप्रभाके वह जोतिषीदेव चयकर अनुधरनामा पुत्रभया राजा प्रिय व्रत पुत्रको राज्यदेय भगवानके चैत्यालयमें छह दिनका अनशन धार देह त्याग स्वर्गलोक गए ।

अथानन्तर एक राजाकी पुत्री श्रीप्रभा लक्ष्मी समान सो रत्नरथने परणी उसकी अभिलाषा अनुधर के थी सो रत्नरथसे अनुधरका पूर्व जन्म तो वैरही था फिर नया बैर उपजा सो अनुधर रत्नरथ की पृथ्वी उजाड़ने लगा तब रत्नरथ और विचित्ररथ दोनों भाइयोंने अनुधर को युद्धमें जीत देश से निकास दिया सो देशसे निकासनेसे और पूर्व बैरसे महाक्रोधको प्राप्तहोय जटा और बक्कलका धारी तापसी भया विषवृक्ष समान कषाय विषका भरा और रत्नरथ विचित्ररथ महातेजस्वी चिरकाल राज्य कर मुनि होय तपकर स्वर्गके विषे देवभए महा सुख भोग वहांसे चयकर सिद्धार्थ नगर के विषे राजा क्षेमंकर राणी विमला तिनके महा सुंदर देश भूषण कुलभूषण नामा पुत्र होतेभए सो विद्या पढ़ने के अर्थ घरमें उचित क्रीडा करते तिष्ठे उस समय एक सागरघोष नामा पंडित अनेक देशमें भ्रमणकरता आया सो राजाने पंडितको बहुत आदरसे राखा और ये दोनों पुत्र पढनेको सौंपे सो महा विनयकर संयुक्त सर्व कला सीखी केवल एक विद्या गुरुको जाने या विद्याको जाने और कुटम्बमें काहूको न जाने ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिनके एक विद्याभ्यासही का कार्य विद्यागुरुसे अनेक विद्या पढी सर्वकलाके पारगामी होय पितापै आए सो पिता इनको महाविद्वान सर्व कला निपुण देखकर प्रसन्नभया। पंडितको मनवांछित दान दिया यह कथा केवली रामसे कहे हैं वे देशभूषण कुलभूषण हमहैं सो कुमार अवस्था में हमने सुनी जो पिताने तुम्हारे बिवाहके अर्थ राजकन्या मंगाई हैं। यह वार्ता सुनकर परम विभुति धरे तिन की शोभा देखनेको नगर बाहिर जायवे के उद्यमी भए सो हमारी बहिन कमलोत्सवा कन्या झरोखेमें बैठी नगरकी शोभा देखेथी सो हमतो विद्याके अभ्यासी कभी किसीको न देखा न जाना हम न जाने यह हमारि बहिनहै अपनी मांग जान विकाररूप चित्त किया दोनों भाइयोंके चित्त चले दोनों परस्पर मन में बिचारतेभए इसेमैं परणूं दूजा भाई परणाचाहै तो उसे मारूं सो दोनोंके चितमें विकार भाव और निर्दई भाव भया उसही समय बन्दीजनके मुखसे ऐसा शब्द निकसा कि राजा क्षेमंकर विमला राणीसहित जयवन्त होवे जिसके दोनों पुत्र देवन समान और यह झरोके में बैठी कमलोत्सवा इनकी बहिन सरस्वती समान दोनों वीर महागुणवान और बहिन महागुणवंती ऐसी सन्तान पुण्याधिकारियोंकेही होय है जब यह वार्ता हमने सुनी तब मनमें बिचारी अहो देखो मोह कर्म की दुष्टता जो हमारे बहिनकी अभिलाषा उपजी यह संसार असार महा दुःखका भरा हाय जहां ऐसा भाव उपजे पापके योग से प्राणी नरकजांय वहां महादुःख भोगें यह बिचारकर हमारे ज्ञान उपजा सो वैराग्यको उद्यमी भए। तब माता पिता स्नेहसे व्याकुलभए हमने सबसे ममत्व तज दिगम्बरी दीक्षा आदरी आकाशगामिनी रिद्धि सिद्धभई नानाप्रकारके जिन तीर्थादिमें बिहार किया तपही है धन जिनके और माता पिता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजाक्षेमंकर अगलेभी भवका पिता सो हमारे शोकरूप अग्निकर तप्तायमानहुवा सर्व आहारतजमरण को प्राप्त भया सो गरुडेंन्द्र भया। भवन वासी देवों में गरुड़ कुमार जाति के देव तिन का अधिपति महा सुन्दर महा पराक्रमी महालोचन नाम सो आय कर यह देवों की सभा में बैठा है और वह अनुधर तापसी विहार करता कौमुदी नगरी गया अपने शिष्यों के समूह से बेढ़ा वहां राजा सुमुख उसके राणी रतिवती परम सुन्दरी सैंकड़ों राणियों में प्रधान और उसके एक नृत्यकारनी मद की पताका ही है, अतिसुन्दर रूप अद्भुत चेष्टा की धरणहारी, उसने साधुदत्त मुनि के समीप सम्यक्दर्शन ग्रहा तबसे कुगुरु कुदेव कुधर्म को तृणवत् जाने उसके निकट एक दिन राजा ने कही यह अनुधर तापसी महातप का निवास है। तब मदनाने कही हे नाथ अज्ञानी का कहां तप लोक में पाखण्ड रूप है यह सुनकर राजाने क्रोध किया तू तपस्वी की निन्दा करे है, तब उसने कही आप कोप मत करो थोड़े ही दिन में इसकी चेष्टादृष्टि पडेगी ऐसा कहकर घर जाय अपनी नागदत्ता नामा पुत्री को सिखाय तापसी के आश्रम पठाई, सो वह देवांगना समान परम चेष्टा की धरणहारी महा विभ्रम रूप तापसी को अपना शरीर दिखावती भई, सो इस के अंग उपंग महा सुन्दर निरख कर अज्ञानी तापसी का मन मोहित भया और लोचन चलायमान भए जिस अंग पर नेत्र गए वहां ही मन बन्ध गया काम बाणों से तापसी पीडित भया व्याकुल होय देवांगना समान जो यह कन्या उसके समीप आय पूछता भया, तू कौन है और यहां क्यों आई है सन्ध्या काल में सब ही लघु बृद्ध अपने स्थानक में तिष्ठे हैं। तू महासुकुमार अकेली बनमें क्यों विचरे है, तब वह कन्या मधुर शब्द कर इसका मनहरती सन्ती दीन्ता को लिये बोली चंचलनील कमल समान हैं लोचन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिसके हे नाथ दयावान् शरणागत प्रतिपाल आजमेरी माताने मुझे घरसे निकास दई सो अबमें तुम्हारे भेषकर तुम्हारे स्थानक रहना चाहूं हूं तुम मो सो कृपा करो रात दिन तुम्हारी सेवाकर मेरा यह लोक परलोक सुधरेगा धर्म, अर्थ काम इन में कौन सा पदार्थ है जो तुम में न पाइये तुम परम निधान हो मैं पुण्य के योग से तुमपाये इसभांति कन्याने कही तब इसका मन अनुरागी जान विकल तापसी कामकर प्रज्वलित बोला हे भद्र में क्या कृपा करूं तू कृपा कर प्रसन्न हो मैं जन्म पर्यंत तेरी सेवा करूंगा ऐसा कहकर हाथ चलावने का उद्यम किया तब कन्या अपने हाथ से मने कर आदर सहित कहती भई । हे नाथ मैं कुमारी कन्या तुम को ऐसा करना उचित नहीं, मेरी माता के घर जाय कर पूछो घरभी निकटही है जैसी मो पर तुम्हारी करुणा भई है, तैसे मेरी मा को प्रसन्न करो वह तुम को देवेगी तब जो इच्छा होय सो करियो, यह कन्याके बचन सुन मूढ़तापसी व्याकुल होय तत्काल कन्याकी लार रात्रिको उसकी माताके पास आया, काम कर व्याकुल है सर्व इन्द्रिय जिस की जैसे माता हाथी जल के सरोवर में बढ़े तैसे नृत्यकारिणी के घरमें प्रवेश किया । गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे राजन् कामकर ग्रसाहुवा प्राणी न स्पर्शे न आस्वादे न सूंघे न देखे न सुने न जाने न डरे और न लज्जा करे महा मोहसे निरन्तर कष्टको प्राप्त होय है जैसे अन्धा प्राणी सर्पों के भरे कूप में पडे तैसे कामान्ध जीव स्त्री के विषयरूप विषमकूपमें पड़े सो वह तापसी नृत्यकारिणी के चरणोंमें लोट अति अधीन होय कन्या को याचताभया उसने तापसी को बांध राखा राजाको समस्याथी सो राजा ने आयकर रात्रिको तापसी बन्धा देखा प्रभात तिरस्कार निकास दिया सो अपमान कर लज्जायमान महादुःख को धरताहुवा पृथिवी में भ्रमणकर मूवा अनेक

For Private and Personal Use Only

पद्म
पुराण
॥५६०॥

कुयोनियोंमें जन्म मरण किए फिर कर्मानुयोगकर दरिद्रीके घर उपजा जब यह गर्भ में आया तबही इसका मातानें उसके पिताको क्रूर बचन कहकर कलह किया सो उदास होय विदेश गया और इसका जन्म भया बालक अवस्थाही थी कि तब भीलोंने देश के मनुष्य बन्द किये सो इसकी माताभी बन्दीमें गई सर्व कुटुम्ब रहित यह परमदुखी भया कई एक दिन पीछे तापसी होय अज्ञान तपकर ज्योतिषी देवोंमें अग्निप्रभा नामा देव भया और एक समय अनन्तवीर्य केवलीको धर्म में निपुण जो शिष्य तिन्होंने पूछा कैसे हैं केवली चतुरनिकाय के देव और विद्याधर तथा भूमिगोचरी तिनसे सेवित हे नाथ! मुनिव्रत नाथके मुक्ति गये पीछे तुम केवलीभए अब तुम समान संसारका तारक कौन होयगा तब उन्हों ने कही देश भूषण कुलभूषण होवेंगे केवल ज्ञान और केवल दर्शनके धरणहारे जगत् में सार जिनका उपदेश पायकर लोक संसार समुद्रको तिरेंगे ये वचन अग्निप्रभने सुने सो सुनकर अपने स्थानक गया इन दिनोंमें कुअवधि कर हमको इस पर्वतमें तिष्ठेजान अनन्तवीर्य केवलीका वचन मिथ्या करूं ऐसा गर्वधर पूर्व बैरकर उपद्रव करने को आया सो तुमको बलभद्र नारायण जान भयकर भाजगया हे राम तुम चरम शरीरी तद्भव मोक्षगामी बलभद्र हो और लक्षमण नारायण है उस सहित तुमने सेवाकरी और हमारे घातिया कर्मके क्षयसे केवल ज्ञानउपजा इसप्रकार प्राणीयोंके वैरकाकारण सर्व बैरानुबन्ध है ऐसा जानकर जीवोंके पूर्वभव श्रवणकर हे प्राणीहो रागद्वेष तज निश्चल होवो ऐसे महापवित्र केवलीके वचन सुन सुरनर असुर बारम्बार नमस्कार करतेभये और भव दुःखसे डरे और गरुडेन्द्र परम हर्षित होय केवलीके चरणारविंदको नमस्कार कर महा स्नेहकी दृष्टि बिस्तारता लहलहाट करे हैंमणि कुण्डल जिसके रघुवंशमें उद्योत करणहारे जे राम तिनसों

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहता भया है भव्योत्तम तुम मुनियों की भक्ति करी सो मैं अति प्रसन्न भया ये मेरे पूर्व भव के पुत्र हैं जो तुम मांगो सो मैं देहुं तब श्रीरघुनाथ क्षण एक विचार कर बोले तुम देवन के स्वामी हो कभी हमपै आपदा परे तो चितारियो साधुवोंकी सेवाके प्रसादसे यह फल भया जो तुम सारिखोंसे मिलाप भया तब गरुडेन्द्रनेकही तुम्हारा वचन मैं प्रमाण किया जब तुमको कार्य पड़ेगा तब मैं तुम्हारे निकटहोहूं ऐसा कहा तब अनेक देव मेघकी ध्वनि समान वादित्रोंके नाद करतेभये साधुवोंके पूर्वभव सुन कईएक उत्तम मनुष्य मुनिभये कई एक श्रावकके व्रत धारतेभए वे देशभूषण कुलभूषण केवली जगत् पूज्य सर्व संसार के दुःखसेरहित नगर ग्राम पर्वतादि सर्व स्थानमें विहारकर धर्मका उपदेश देतेभये यह दोनों केवलियों के पूर्व भवका चरित्र जे निर्मल स्वभाव के धारक भव्यजीव श्रवण करें वे सूर्य समान तेजस्वी पाप रूप तिमिरको शीघ्रही हरें॥ इति श्रीउनतालीसवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर केवली के मुख से रामचन्द को चरम शरीरी कहिये तद्भव मोक्षगामी सुनकर सकल राजा जय जय शब्द कहकर प्रणाम करतेभये और वंशस्थलपुरका राजा सुरप्रभ महा निर्मल चित्त राम लक्ष्मण सीताकी भक्ति करता भया महिलों के शिखरकी कांति से उज्वल भयाहै आकाश जहां ऐसा जो नगर वहां चलनेको राजा ने प्रार्थना करी परन्तु राम ने न मानी वंशगिरि के शिखर हिमाचल के शिखर समान सुन्दर जहां नलिनी बन में महा रमणीक विस्तीर्ण शिला वहां आप हंस समान विराजे कैसा है वन? नानाप्रकार के वृक्ष और लताओं कर पूर्ण और नानाप्रकार के पक्षी करेंहैं नादजहां सुगन्ध पवन चले है भान्ति २ के फल पुष्प उनसे शोभित और सरोवरों में कमल फूल रहे हैं स्थानक अति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुन्दर सर्व ऋतु की शोभा जहां बन रही है शुद्ध आरसी के तल समान मनोग्य भूमि पांच वर्ण के रत्नों से शोभित जहां कुंदमौलश्रिरी मालती स्थल कमल जहां अशोकवृक्ष नागवृक्ष इत्यादि अनेक प्रकार के सुगन्ध वृक्ष फूल रहे हैं तिन के मनोहर पल्लव लहलहाट करे हैं वहां राजा की आज्ञा कर महा भक्तिवन्त जे पुरुष उन्होंने श्रीरामको विराजने के निमित्त वस्त्रों के महामनोहर मण्डप बनाये सेवक जन महाचतुर सदा सावधान अति आदर के करण हारे मंगल रूप वाणी के बोलनहारे स्वामीकी भक्ति विषे तत्पर उन्होंने वहुत तरहके चौडे ऊंचे वस्त्रों के मण्डप बनाये नाना प्रकार के चित्राम हैं जिनमें और जिन पर ध्वजा फर हरे हैं मोतियों की माला जिन के लटके हैं क्षुद्र घंटिकाओं के समूह कर युक्त और जहां मणियों की झालर लूंब रही हैं महा देदीप्यमान सूर्यकी सी किरण धरे और पृथिवी पर पूर्ण कलश थापे हे और छत्र चमर सिंहासनादि राज चिन्ह तथा सर्व सामग्री धरे हैं अनेक मंगल द्रव्य हैं ऐसे सुन्दर स्थल विषे सुख सों तिष्टे हैं, जहां जहां रघुनाथ पांव धरें वहां वहां पृथिवी पर राजा अनेक सेवा करें शय्या आसन मणि सुवर्ण के नाना प्रकारके उपकरण और इलायची लवंग ताम्बूल मेवा मिष्ठान्ह तथा श्रेष्ठ वस्त्र अद्भुत आभूषण और महा सुगन्ध नाना प्रकारके भोजन दधि दुग्ध घृत भान्ति भान्ति के अन्न इत्यादि अनुपमवस्तु लावें इस भांति सर्व ठौर सब जन श्रीरामको पूजें वंशगिरिपर श्रीराम लक्ष्मण सीताके रहनेको मण्डप रचे तिनमें किसी ठौर गीत कहीं नृत्य कहीं वाजित्रवाजे हैं कहीं सुकृतकी कथा होयहै और नृत्य कारिणी ऐसा नृत्य करें मानों देवांगनाही हैं कहीं दान बटे हैं ऐसे मन्दिर बनाए जिनका कौन वर्णन करसके जहां सब सामग्री पूर्ण जो याचक आवें सो विमुख न जांय दोनों भाई सर्व आभरणों

For Private and Personal Use Only

से युक्त सुन्दर माला सुन्दर वस्त्र धरें मनवांछित दानके करणहारे महा यशसे मण्डित और सीता परम सौभाग्य की धरणहारी पापके प्रसंग से रहित शास्त्रोक्त रीतिकर रहे, उसकी महिमा कहांतक कहिए। और वंश गिरिपर श्रीरामचन्द्रने जिनेश्वर देवके हजारों अद्भुत चैत्यालय महादृढ़हैं स्तम्भ जिनके योग्य है लम्बाई चौड़ाई ऊंचाई जिनकी और सुन्दर झरोखोंसे शोभित तोरण सहित हैं द्वार जिनके कोट और खाई कर मण्डित सुन्दर ध्वजावोंसे शोभित बन्दना के करणहारे भव्यजीव तिनके मनोहर शब्दसे संयुक्त मृदंग वीण वांसुरी झालरी झांझ मंजीरा शंख भेरी इत्यादि वादित्रों के शब्दकर शोभायमान निरन्तर आरम्भए हैं महा उत्सव जहां ऐसे रामके रचे रमणीक जिन मन्दिर तिनकी पंक्ति शोभतीभई वहां पंच वर्णं के प्रति बिंब जिनेन्द्र सर्व लक्षणोंकर संयुक्त सर्व लोकों से पूज्य विराजते भये एक दिन श्रीराम कमल लोचन लक्ष्मणसे कहतेभये हे भाई यहां अपने ताईं दिन बहुत बीते और सुखसे इस गिरि पर रहे श्रीजिनेश्वरके चैत्यालय बनायवे कर पृथिवी में निर्मल कीर्ति भई और इस वंशस्थलपुर के राजा ने अपनी बहुत सेवा करी अपने मन बहुत प्रसन्न किए अब यहांहींरहें तो कार्यकी सिद्धि नहीं और इन भोगों कर मेरा मनप्रसन्न नहीं ये भोग रोगके समानहैं ऐसाभी जानूंहूं तथापि ये भोगोंके समूह मुझे क्षणमात्र नहीं छोड़ें हैं सो जबतक संयम का उदय नहीं तब तक ये बिना यत्न आय प्राप्त होय हैं इस भवमें जो कर्म यह प्राणी करे है उसका फल पर भव में भोगवे है और पूर्व उपार्जे जे कर्म तिनका फल वर्तमान काल विषे भोगे है इस स्थल में निवास करते अपने सुख संपदा है परन्तु जे दिन जाय हैं वे फेर न आवें नदीका वेग और आयु के दिन और यौवन गए वे फेर न आवें इसलिये करनारवा नाम

नदी के समीप दंडक बन सुनिये है वहां भूमिगोचरियोंकी गम्यता नहीं और वहां भरतकी आज्ञा का भी प्रवेश नहीं वहां समुद्र के तट एक स्थानक बनाय निवास करेंगे यह रामकी आज्ञा सुन लक्ष्मणने विनती करी हे नाथ आप जो आज्ञा करोगे सोई होयगा ऐसाविचार दोनोंवीर महा धीर इन्द्रसारिखेभोग भोग वंशगिरिसे सीता सहित चले राजा सुप्रभ वंशस्थलपुर का पति लार चला सो दूरतक गया आप विदाकिया सो मुश्किलसे पीछे बाहुडा महा शोकवन्तअपने नगरमें आया श्रीरामका विरह कौनकौनको शोकवन्त न करे गौतम स्वामी राजाश्रेणिकसे कहे हैं हे राजन्! वह वंशगिरि बड़ापर्वत जहां अनेक धातु सो रामचन्द्र ने जिन मंदिरोंकी पंक्ति कर महा शोभायमान किया कैसे हैं जिन मन्दिर दिशावोंके समूह को अपनी कांतिसे प्रकाशरूपकरे हैं उस गिरि पर श्रीरामने परम सुन्दर जिन मन्दिर बनाए सो वंशगिरि रामगिरि कहाया इस पृथिवी पर प्रसिद्धभया रवि समान है प्रभा जिसकी ॥ इति चालीसवां पर्व संपूर्णम्

अथानन्तर राजा अरण्य के पोता दशरथ के पुत्र राम लक्ष्मण सीतासहित दक्षिण दिशाके समुद्र को चले कैसे हैं दोनों भाई महा सुख के भोक्ता नगर ग्राम तिनकरभरे जे अनेक देश तिनको उलंघ करे महा बनमें प्रवेश करतेभये जहां अनेक मृगों के समूह हैं और मार्ग सूझे नहीं और उत्तम पुरुषों की वस्ती नहीं जहां विषम स्थानक सो भीलभी विचर न सकें नाना प्रकारके वृक्ष और बेल उन कर भरा महा विषम अति अन्धकार रूप जहां पर्वतोंकी गुफा गम्भीर निझरने झरें हैं उस बनमें जानकी प्रसंग से धीरे धीरे एक एक कोस रोज चले दोनों भाई निर्भय अनेक क्रीड़ाके करणहारे करनरवानदी पहुंचे जिसके तट महा रमणीक प्रचुर तृणोंके समूह और सामानता धरें महाछायाकारी अनेकवृक्ष फल

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्पादिसे शोभित और जिसके समीप पर्वत ऐसे स्थान को देख दोनों भाई वार्ता करते भये यह वन अति सुन्दर ऐसा कह कर रमणीक वृक्ष की छाया में सीता सहित तिष्ठे क्षण एक तिष्ठ कर वहां के रमणीक स्थानक निरख कर जल क्रीड़ा करते भये फिर महा मिष्ट आरोग्य पक्व फल फूलों के आहार बनाए सुख की है कथा जिनके वहां रसोई के उपकरण और वासणमाटी के और बांसों के नाना प्रकार तत्काल बनाए, महा स्वादिष्ट सुन्दर सुगंध आहार वन के धान सीता ने तैय्यार किये भोजन के समय दोनों वीर मुनिके आयवे के अभिलाषी द्वारापेषण को खड़े उस समय दो चारण मुनि आएसुगुप्ति और गुप्ति हैं नाम जिनके ज्योतिःपटल कर संयुक्तहै शरीर जिनका और सुन्दर है दर्शन जिनका मति श्रुति अवधि तीन ज्ञान विराजमान महाव्रत के धारक परमतपस्वी सकलवस्तु की अभिलाषा रहित निर्मल हैं चित्त जिनके मासोपवासी महा धीर वीर शुभचेष्टा के धरणहारे नेत्रोंको आनन्द के करता शास्त्रोक्त आचार कर संयुक्त है शरीर जिनका सोआहार को आए सो दूरसे सीताने देखे तब महा हर्षकेभरे नेत्र जिस के और रोमांच कर संयुक्त है शरीर जिसका पति सो कहती भई हे नरश्रेष्ठ देखो देखो तप करदुर्बल शरीर दिगम्बर कल्याण रूप चारण युगल आए तब रामने कही हे प्रिये हे पंडिते हे सुन्दरमूर्ति वे साधु कहां कहां हैं हे रूप आभरणकी धरणहारी धन्यहैंभाग्य तेरे तैंने निर्ग्रन्थ युगल देखे जिनके दर्शन से जन्म जन्मके पाप जावें भक्तिवन्त प्राणीके परमकल्याण होय जब इसभांति रामने कही तबसीता कहतीभई ये आए ये आए तबही दोनों मुनि राम की दृष्टि परे जीव दयाके पालक ईर्या समति सहित समाधान रूप हैं मन जिनके तब श्रीराम ने सीता सहित सन्मुख जाय नमस्कार कर महाभक्ति युक्त श्रद्धा सहित मुनियों

को आहार दिया आरणी भैंसों का और बन की गायों का दुग्ध और छुहारे गिरी दाष नाना प्रकार के बनके धान्य सुन्दर घी मिष्टान्न इत्यादि मनोहर वस्तु विधिपूर्वक तिनसे मुनियोंको पारणा करावते भए वे मुनि भोजन के स्वादके लोलुपता से रहित निरंतराय आहार करते भए जबराम ने अपनी स्त्री सहित भक्ति कर आहार दिया तब पंचाश्चर्य भए रत्नों की वर्षा पुष्पबृष्टि शीतल मन्दसुगन्ध पवन और दुंदुभी बाजे जयजयकार शब्द सो जिससमय रामके मुनियों का आहार भया उससमय बन में एक गृध्र पक्षी अपनी इच्छा कर वृक्ष पर तिष्ठे था सो अतिशय कर संयुक्त मुनियों को देख अपने पूर्वभव जानता भया कि कोई एक भव पहिलेमें मुनुष्य था सो प्रमादी अविवेक कर जन्म निष्फल खोया तप संयम न किया धिकार मुझ मूढ बुधिको अब मैं पापके उदयसे खोटी योनि में आय पड़ा क्या उपाय करूं मुझे मनुष्य भव में पापी जीवों ने भरमाया वे कहिने के मित्र और महाशत्रु सो उनके संग में धर्म रत्न तजा और गुरुवोंके वचन उलंघ महापाप आचरा मैं मोहकर अन्ध अज्ञान तिमिर कर धर्म न पहिचाना अब अपने कर्म चितार उर में जलूं हूं बहुत चितवन कर क्या दुखके निवारने के अर्थ इन साधुवोंका शरण गहूं ये सर्व सुखके दाता इनसे मेरे परम अर्थकी प्राप्ति निश्चय सेती होयगी इसभान्ति पूर्वभवके चितारनेसे प्रथम तो परम शोकको प्राप्त भयाथा फिर साधुवोंके दर्शनसे तत्काल परम हर्षितहोय अपनी दोनों पांखहलाय आंसुवोंसे भरे हैं नेत्रजिसके महा विनयकर मण्डित पक्षी वृक्षके अग्रभागसे भूमिमें पड़ा सो महा मोटा पक्षी उसके पड़नेके शब्दसे हाथी और सिंहादि बनके जीव भयकर भागगए और सीता भी आकुलचित्त भई कि देखो यह डीठ पक्षी मुनियोंके चरणोंमें कहांसेआयपड़ा कठोर शब्दकर घनाही निवारा परन्तु

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वहपन्ती मुनियोंके चरणोंके धोवनमें आयपड़ा चरणोदकके प्रभावकर क्षणमात्र में उसका शरीर रत्नों की राशिसमान नाना प्रकार के तेजकर मण्डित होय गया पांखतो स्वर्ण की प्रभाको धरते भए दोऊ पाँव वैडूर्य्यमणिसमान होय गये और देह नाना प्रकारके रत्नोंकी छविको धरता भयाऔर चूंच मूंगा समानआरक्त भई तब यहपन्ती आपको और रूपको देखपरम हर्षको प्राप्त भया मधुरनादकर नृत्य करने को उद्यमी भया देवोंके दुन्दुभी समानहै नाद जिसका नेत्रोंसे आनन्दके अश्रुपातडारता शोभता भया जैसा मोर मेहके आगम में नृत्यकरे तैसा मुनिके आगे नृत्य करता भया महामुनि विधि पूर्वक पारणा कर बैडूर्यमणि समान शिलापर विराजे। पद्मराग मणि समानहैं नेत्र जिसके ऐसा पन्ती पांखसंकोच मुनियों के पांओं को प्रणामकर आगे तिष्ठा तब श्रीराम फूलेकमल समान हैं नेत्र जिनके पन्तीको प्रकाश रूप देख आप परम आश्चर्यको प्राप्तभए साधुओंके चरणारविन्दको नमस्कारकर पूछते भए कैसे हैं साधु अठा ईस मूल गुण चौरासीलाख उत्तर गुण वेही हैं आभूषण जिनके बारम्बार पन्तीकी ओर निरख राम मुनि से कहते भए हे भगवान यह पन्तीप्रथम अवस्था विषे महा विडरूप अंगथा सो क्षणमात्रमें सुवर्ण और रत्नोंके समूहकी छबिधरता भया यह अशुचिसर्व मांसका आहारी दुष्ट गृध्रपन्ती आपके चरणोंके निकट तिष्ठकर महाशांतभया सो कौनकारण तब सुगुप्तिनामा मुनि कहतेभए हेराजन पूर्व इस स्थलविषे दंडक नामादेशथा जहां अनेक ग्रामनगर पट्टण संवाहण मटंब घोष खेट करबट द्रोणमुखथे बाडिकरयुक्तसो ग्राम कोटखाई दरवाजोंकरजो मंडितसो नगर और जहां रत्नोंकीखान सो पट्टणपर्वतके ऊपरसो संवाहन औरजिसे पांचसौ ग्रामलगे सो मटंब और गायोंके निवास गुवालोंके आवाससो घोष और जिसके आगे नदीसो खेट

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और जिसके पीछे पर्वतसो कर्वट और समुद्रके समीपसो द्रोणमुख इत्यादि अनेक रचनाकर शोभित वहां कर्णकुंडल नामानगर महामनोहर उसमें इस पक्षीका जीव दंडक नामाराजाथा महा प्रतापी उदय धरे प्रचंड पराक्रम संयुक्त भग्न किये हैं शत्रुरूप कंटक जिसने महामानी बडी सेनाका स्वामीसो इस मूढ ने अधर्मकी श्रद्धाकर पापरूप मिथ्या शास्त्र सेया जैसे कोई घृतका अर्थी जलको मथे इसकी स्त्री दंडियों की सेवकथी तिनसो अतिअनुरागिणीसो उसके संगकर यहभी उसके मार्गको धरताभया स्त्रियोंके वश हुवा पुरुष क्या २ न करे एक दिवस यह नगरके बाहिर निकसासो बनमें कायोत्सर्ग धरे ध्यानारूढ मुनि देखे तब इस निर्दईने मुनिके कंठ विषे मूवा सर्प डारा कैसाथा यह पाषाणसमान कठोरथा चित्त जिस का सो मुनि ध्यान धरे मौनसो तिष्ठे और यह प्रतिज्ञा करी जौंलग मेरे कंठसे कोई सर्प दूर न करि तौलग में हलन चलन नहीं करूं योगरूपही रहूं सो काहूने सर्प दूर न किया मुनि खडेही रहे फिर कैयक दिनोंमें राजा उसी मार्गगया उसही समय किसी भले मनुष्यने सांप काढा और मुनिके पास वह बैठाथा सो राजाने उस मनुष्यसे पूछा कि मुनिके कंठसे सांप किसने काढा और कब काढा तब उसने कही हे नरेंद्र किसी नरकगामीने ध्यानारूढ मुनिके कंठविषे मूवा सर्प डाराथा सो सर्पके संयोग से साधुका शरीर अतिखेद खिन्न भया इनके तो कोई उपाय नहीं आज सर्प मैंने काढाहै तब राजा मुनिको शांत स्वरूप कषायरहित जान प्रणामकर अपने स्थानकगया उस दिनसे मुनियोंकी भक्ति विषे अनुरागीभया और किसीको उपद्रव न करै तब यह वृत्तांत राणीने दंडियोंके मुखसे सुनाकिराजा जिनधर्मका अनुरागीभया तब पापनीने क्रोधकर मुनियोंके मारनेका उपाय किया जे दुष्टजीवहैं वे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपने जीनेका भी यत्न तज पराया अहितकरैं सो पापनीने अपने गुरुको कहा तुम निग्रन्थ मुनि का रूपकर मेरेमहलमें आवो और विकारचेष्टाकरी, तब उसने इसही भांतिकरी सो राजा यह वृतांतजान कर मुनियोंसेकोपभया और मंत्रीआदि दुष्ट मिथ्या दृष्टिसदा मुनियोंकी निन्दाहीकरते अन्यभी और जे क्रूर कर्मी मुनियोंके अहितु थे तिन्होने राजाको भरमाया सो पापी राजा मुनियोंको घानी विषेपेलिवेकी आज्ञा करताभया आश्चर्यसहित सर्व मुनि घानीमें पेले एकसाधु बाहिर्भूमिगया पीछे आवताथा सो किसी दयावानने कहा अनेकमुनि पापी राजाने यंत्रमें पेले हैं तुम भाग जावो तुम्हारा शरी धर्मका साधनहै सो अपने शरीरकी रक्षा करो तब यह समाचार सुन संघके मरणके शोककर चुभी है दुःख रूप शिला जिसके क्षण एक वज्रके स्तंभसमान निश्चल होय रहा फिर न सहा जाय ऐसा क्लेश रूप भया सो मुनिरूप जो पर्वत उसकी समभावरूप गुफासे क्रोधरूप केसरीसिंह निकसा जैसा आरक्त अशोकवृक्ष होय तैसे मुनिके आरक्त नेत्र भए, तेजकर आकाश संध्याके रंगसमान होय गया क्रोध कर तप्तायमान जो मुनि उसके सर्व शरीर विषे पसेवकी बून्द प्रकटभई फिर कालाग्नि समान प्रज्वलित अग्निपूतला निकसा सो धरती आकाश अग्निरूप होय गए, लोक हाहाकार करते मरणको प्राप्त भए जैसे बांसोंका वन बले तैसे देश भस्महोय गया न राजा न अंतहपुर न पुर न ग्राम न पर्वत न नदी न वन न कोई प्राणी कछुभी देशमें नबचा महाज्ञानवैराग्यके योगकर बहुत दिनोंमें मुनिने समभावरूप जो धन उपार्ज्याथा सो तत्कालक्रोधरूप रिपुने हरा दंडक देशका दंडक राजा पापके प्रभावकर प्रलयभया और देश प्रलयभया सो अबयह दंडकवन कहावे है कैयकदिन तो यहां तृणभी न उपजा फिर घनेकालविषे मुनियों

For Private and Personal Use Only

का बिहारभया तिनके प्रभावकर वृत्तादिकभए यह बन देवोंको भी भयंकरहै विद्याधरोंकी क्या बात सिंह व्याघ्र अष्टापदादि अनेक जीवोंसे भरा और नाना प्रकारके पक्षियोंकर शब्दरूपहै और अनेक प्रकार के धान्यसे पूर्णहै वह राजादंडक महा प्रबल शक्तिका धारकथा सो अपराधकर नरक तिर्यंचगति विषे बहुत काल भ्रमणकर यह गृध्र पक्षी भया अब इसके पापकर्मकी निवृत्तिभई हमको देख पूर्वभव स्मरण भया ऐसा जान जिनआज्ञा मान शरीर भोगसे विरक्तहोय धर्म विषे सावधान होना परजीवोंका जो दृष्टांतहै सो अपनी शांतभावकी उत्पतिका कारणहै इस पक्षीको अपनी बिपरीत चेष्टा पूर्वभवकी याद आई है सो कंपायमानहै पक्षीपर दयालुहोय मुनि कहते भए हे भव्य अब तू भयमत करे जिससमय में जैसी होनी होय सो होय रुदन काहेको करे है होनहारके मेटवे समर्थ कोई नहीं अब तू विश्राम को पाय सुखीहोय पश्चाताप तजदेख कहां यहबन और कहां सीतासहित श्रीरामका आवना और कहां हमारा बनचर्याका अवग्रह जो बनमें श्रावगके आहार मिलेगा तो लेवेंगे और कहां तेरा हम को देख प्रतिबोध होना कर्मों की गति विचित्र है कर्मोंकी विचित्रता से जगत की विचित्रता है हम ने जो अनुभया और सुना देखाहै सो कहें हैं पक्षीके प्रतिबोधवेके अर्थ रामका अभिप्राय जान सुगुप्ति मुनि अपना और गुप्तिमुनि दूजा दोनोंका वैराग्यका कारण कहतेभए एक वाराणसी नगरी वहां अचल नामाराजा विख्यात उसके राणी गिरदेवी गुणरूप रत्नोंकर शोभित उसके एकदिन त्रिगुप्तिनामा मुनि शुभ चेष्टाके धरनहारे आहारके अर्थ आए। सो राणीने परमश्रद्धाकर तिनको विधि पूर्वक आहार दिया। जब निरन्तराय आहारहो चुका तब राणीने मुनिको पूछा हे नाथ यहमेरा गृहवाससफल होयगा

या नहीं। भावार्थ मेरेपुत्र होयगा या नहीं तब मुनिबचन गुप्तभेद इसके संदेह निवारणके अर्थ आज्ञा करा तेरेदोय पुत्र विवेकीहोयगें सो हमदोय पुत्र त्रिगुप्ति मुनिकी आज्ञाभए पीछेभए इसलिये सुगुप्ति और गुप्ति हमारे नाम मातापिताने राखे सो हम दोनों राजकुमार लक्ष्मीकर मंडित सर्व कला के पारगामी लोकोंके प्यारे नानाप्रकारकी क्रीडा कर रमते घर में तिष्ठे ॥

अथानन्तरएक और वृतांतभया गन्धवती नामा नगरी वहांके राजाका पुरोहित सोम उसके दोय पुत्र एक सुकेतु दूजा अग्निकेत तिनाविषे अतिप्रीतिसों सुकेतुका विवाहभया बिवाहकर यह चिन्ता भई कि कभी इस स्त्रीके योगकर हम दोनों भाइयोंमें जुदायगी न होय फिर शुभकर्मके योगसे सुकेतु प्रति बोधहोय अनन्तवीर्य स्वामीके समीप मुनिभया और लहुराभाई अग्निकेतु भाईके बियोगकर अत्यंत दुखीहोय बाराणसी विषे उग्रतापसभया तब बडाभाई सुकेतु जो मुनिभयाथा सो छोटे भाईको तापस भया जान सम्बोधिबेके अर्थ आयवेका उद्यमी भया गुरुपै आज्ञा मांगी तब गुरुने कहा तू भाईको संबोधा चाहे है तो यह वृत्तान्त सुन तब इसने कही हे नाथ बृत्तान्त क्या तब गुरुने कही वह तुम सों मत पक्ष का वाद करेगा और तुम्हारे वाद के समय एक कन्या गंगा के तीर तीन स्त्रियों सहित आवेगी। गौर है वर्ण जिसका नानाप्रकार के वस्त्र पहिरे दिनके पिछले पहिर आवेगी तो इन चिन्होंकर जान तू भाई से कहियो इस कन्याका कहा शुभ अशुभ होनहार है सो कहो तब वह विलषाहोय तोसे कहेगा मैंतो न जानूं तुम जाने हो तो कहो तब तू कहियो इस पुर विषे एक प्रवर नामा श्रेष्ठी धनवन्त उसकी यह रुचिरा नामा पुत्री है सो आज से तीसरे दिन मरणकर कम्बर ग्राम में विलास नामा कन्याके पिता का

मामा उसके छोरी होयगी ताहि ल्याली मारेगा सो मरकर गाडर होयगी फिर भैंस, भैंस से उसी विलास के वधरा नामा पुत्री होयगी यह वार्ता गुरुनेकही तव सुकेतु सुनकर गुरुको प्रणामकर तापसियोंके आश्रम आया जिस भांति गुरुने कहीथी उसही भांति तापससों कही और उसी भांति भई। वह विधुरा नामा बिलास की पुत्रीको प्रवरनामा श्रेष्ठी परणे लगा तब अग्निकेतु ने कही यह तेरी रुचिरानामा पुत्री सो मर कर अजा गाडर भैंस होय तेरे मामा के पुत्री भई अब तू इसे परने सो उचित नहीं और विलास कोभी सर्व बृत्तान्त कहा कन्याके पूर्वभव कहे सो सुनकर कन्याको जातिस्मरण भया कुटुम्बसे मोह तज सर्व सभाको कहतीभई यह प्रवर मेरा पूर्व भवका पिता है सो ऐसा कह आर्यिका भई और अग्निकेतु तापस मुनिभया यह वृत्तान्त सुनकर हम दोनों भाइयोंने महा वैराग्यरूप होय अनन्तवीर्य स्वामीके निकट जैनेन्द्रव्रत अङ्गीकार किये मोहके उदयकर प्राणियों के भवबन के भठकावनहारे अनेक अनाचार होय हैं सद्गुरुके प्रभावकर अनाचारका परिहारहोयहै संसार असारहै माता पिता बांधव मित्र स्त्री संतानादिक तथा सुःख दुःखही बिनश्वर हैं ऐसा सुनकर पक्षीभव दुखसे भयभीत भया धर्म ग्रहण की वांच्छा कर वारम्बार शब्द करताभया तब गुरुने कही हे भद्र भय मत करे श्रावकके व्रत लेघो जिसकर फिर दुख की परम्परा न पावे अब तू शांतभाव धर किसी प्राणीको पीड़ा मत करे अहिंसा व्रत धर मृषा वाणी तज सत्य व्रत आदर पर वस्तुका ग्रहण तज परदारा तज तथा सर्वथा ब्रह्मचर्य भज तृष्णा तज सन्तोष भज रात्री भोजनका परिहार कर अभक्ष आहार का परित्याग कर उत्तम चेष्टा का धारक हो और त्रिकाल संध्या में जिनेन्द्र का ध्याम धर हे सुबुद्धि उपवासोदि तपकर नानाप्रकारके नियम अंगीकार कर प्रमाद

रहित होय इन्द्री जीत साधुवों की भक्ति कर देव अरहंत गुरु निर्ग्रंथ दया धर्म में निश्चय कर इस भांति मुनिने आज्ञा करी तब पक्षी बारम्बार नमस्कार कर मुनि के निकट श्रावक के व्रत धारता भया सीताने जानो यह उत्तम श्रावक भया तब हर्षित होय अपने हाथसे बहुत लडाया। उसे बिश्वास उपजाय दोनों मुनि कहतेभये यह पक्षी तपस्वी शांत चित्त भया कहां जायगा गहन बनमें अनेक क्रूर जीव हैं इस सम्यग्दृष्टि पक्षी की तुमने सदा रक्षाकरनी यह गुरुके बचन सुन सीता पक्षी के पालिबेरूप है चित्त जिसका अनुग्रहकर राखा। राजा जनककी पुत्रीकर कमलकर विश्वासती संती कैसी शोभतीभई जैसे गरुड़ की माता गरुड़को पालती शोभे और श्रीराम लक्ष्मण पक्षीको जिनधर्मी जान अ त धर्मानुराग करतेभये और मुनियों को स्तुतिकर नमस्कार करते भये दोनों चारण मुनि आकाश के मार्ग गए सो जाते कैसे शोभतेभये मानो धर्मरूप समुद्रकी कल्लोलही हैं और एक बनका हाथी मदोन्मत्त बनमें उपद्रव करताभया उसको लक्ष्मण वशकर उसपर चढ़ रामपै आए सो गजराज गिरिराज सारिखा उसे देख राम प्रसन्नभए और वह ज्ञानी पक्षी मुनिकी आज्ञा प्रमाण यथाविधि अनुव्रत पालताभया महा भाग्यके योगसे राम लक्ष्मण सीताका उसने समीप पाया इनके लार पृथिवी में विहार करे यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं। हे राजन धर्मका माहात्म्य देखो इसही जन्म में वह विरूप पक्षी अद्भुत रूप होय गया प्रथम अवस्थाविषे अनेक मांसका आहारी दुर्गंध निंद्यपक्षी सुगन्धके भरे कञ्चन कलश समान महासुगन्ध सुन्दर शरीर होय गया, कहूं इक अग्निकी शिखासमान प्रकाशमान और कहूं इक वैडूर्यमणि समान कहूं इक स्वर्ण समान कहूं इक हरित्मणि की प्रभा को धरे शोभता भया राम लक्ष्मण के समीप वह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुन्दर पक्षी श्रावक के व्रत धरे महास्वाद संयुक्त भोजन करता भया। महाभाग्य पक्षी के जो श्रीराम की संगति पाई। रामके अनुग्रह से अनेकचर्चाधार दृढ़व्रती महाश्रद्धानी भया श्रीराम इसे अति लडावें चन्दनकर चर्चित है अंग जिसका स्वर्णकी किंकिणी कर मण्डित रत्नकी किरणों कर शोभित है शरीर जिसका उसके शरीर में रत्न हेमकर उपजी किरणों की जटा इसलिए इस का नाम श्रीराम ने जटायु धरा। राम लक्ष्मण सीता को यह अति प्रिय, जीती है हंस की चाल जिस ने महा सुन्दर मनोहर चेष्टा को धरे राम का मन मोहता भया, उसी बनके और जे पक्षी वे देखकर आश्चर्य को प्राप्त भये यह व्रती तीनों संध्या विषे सीता के साथ भक्तिकर नम्रीभूत हुआ अरहन्त सिद्ध साधुओंकी बन्दना करे। महादया वान् जानकी जटायु पक्षी पर अतिकृपाकर सावधान भई सदा इसकी रक्षा करे। कैसी है जानकी जिनधर्म से है अनुराग जिसका वह पक्षी महा शुद्ध अमृत समान फल और महा पवित्र सोधा अन्न निर्मल छाना जल इत्यादि शुभ वस्तु का आहार करता भया। जब जनक की पुत्री सीता ताल बजावे और रामलक्ष्मण दोनों भाई तालके अनुसार तानलावें तबयह जटायुं पक्षी रवि समानहै कान्ति जिसका परम हर्षित भया ताल और तान के अनुसार नृत्य करे॥ इति इकतालीसवां पर्व संपूर्णम्॥

अथानन्तर पात्र दान के प्रभाव कर राम लक्ष्मण सीता इसलोक में रत्नहेमादि सम्पदाकर युक्त भए। एक सुवर्णमई रत्नजड़ित अनेक रचना कर सुन्दर जिसके मनोहर स्तंभ रमणीक वाड बीच विराजवे का सुन्दर स्थानक और जिसके मोतियोंकी माला लूम्बे सुन्दर झालरी सुगन्ध चन्दन करपूरादि कर मण्डित जोकि सेज़ आसन वादित्र वस्त्र सर्व सुगन्ध कर पूरित ऐसा एक बिमान समान अद्भुत रथ

For Private and Personal Use Only

बनाया जिसके चार हाथी जुपैं उसमें बैठे राम लक्षमण सीता जटायु सहित रमणीक बन में विचरें जिन को किसी का भय नहीं काहू की घात नहीं काहू ठौर एक दिन काहू ठौर पन्द्रह दिन किसी ठौर एक मास क्रीड़ा करें। यहां निवास करें अक यहां निवास करें ऐसी है अभिलाषा जिनके नवीन शिष्य की इच्छा की न्याईं इनकी इच्छा अनेक ठौर विचरती भई। महानिर्मल जे नीझरने तिनको निरखते ऊंची नीची जायगा टार समभूमि निरखते ऊंचे वृक्षों को उलंघ कर धीरे धीरे आगे गए, अपनी स्वेच्छा कर भ्रमण करते ये धीर वीर सिंह समान निर्भय दण्डकबनके मध्य जाय प्राप्त भए कैसा है वह स्थानक कायरों को भयंकर जहां पर्वत विचित्र शिखिरके धारक जहां रमणीक नीझरने झरें जहां से नदी निकसे जिनका मोतियों के हार समान उज्ज्वल जल जहां अनेकवृक्ष बड़ पीपल, बहेड़ा पीलू सरसी बड़े बड़े सरल वृक्ष धवल वृक्ष कदंब तिलक जातिकेवृक्ष लोंदवृक्ष अशोक जम्बूवृक्ष पाटल आम्र आंवला अमिली चम्पा कण्डीरशालि वृक्ष ताडवृक्ष प्रियंगू सप्तछद, तमाल नाग वृक्ष नन्दीवृक्ष अर्जुनजातिके वृक्ष पलाशवृक्ष मलियागिरि चन्दन केसरि भोजवृक्ष हिंगोटवृक्ष काला अगर और सुफेद अगर कुन्द वृक्ष पद्माकवृक्ष कुरंज वृक्ष पारिजात वृक्ष मिजन्यां केतकी केवड़ा महुवा कदली खैर मदनवृक्ष नींबू खजूर छुहारे चारोली नारंगी विजौरा दाड़िम नारयल हरडें कैथ किरमाला विदारीकंद अगथिया करंगज कटालीकूट अजमोद कौंच कंकोल मिर्च लवंग इलायची जायफल जायवित्री चव्य चित्रक सुपारी तांबूलों की बेलि रक्तचन्दन बेत श्यामलता मीठा सींगी हरिद्रा अरलू सहिंजणा कुड़ावृक्ष पद्माख पिस्ता मोलश्री बील वृक्ष द्राक्षा बिदाम शाल्य इत्यादि अनेकजाति के जे वृक्ष तिन कर शोभित है और स्वयमेव उपजे नाना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकार के धान्य और महारस के भरे फल और पौंड़े सांठे इत्यादि अनेक वस्तुओं कर वह बन पूर्ण नानां प्रकार के वृक्ष नाना प्रकार की बेल नाना प्रकार के फल फूल तिन कर बन अति सुन्दर मानों दूजा नन्दनबनही है सो शीतल मन्द सुगन्ध पवनकर कोमल कोपल हालें सो ऐसा सोहे मानों वह बन राम के आयबे कर हर्ष कर नृत्य कर है और सुगन्ध पवन कर उठी जो पुरुषों की रज सो इनके अंग से आय लगे सो मानों अटवी आलिंगन ही करे है और भ्रमर गुञ्जार करे हैं सो मानों श्रीराम के पधारने कर प्रसन्न भया बन गानही करे है, और महा मनोज्ञ गिरोंके नीझरनों के छांटयों के उछरिबे के शब्दकर मानों हंसेही है और भैरुण्ड जाति के पक्षी तथा हंस सारिस कोयल मयूर सिचांण कुरुचि सूवा मैना कपोत भारद्वाज इत्यादि अनेक पक्षियोंके ऊंचेशब्द होयरहे हैं सो मानों श्रीराम लक्ष्मण सीताके आयबेका आदरही करे हैं और मानों वे पक्षी कोमल बाणीकर ऐसा बचन कहे हैं कि महाराज भले ही यहां आवो और सरोवरों में सफेद श्याम अरुण कमल फूल रहे हैं सो मानों श्रीराम के देखने को कौतूहल से कमलरूप नेत्रों कर देखने को प्रवरते हैं और फूलों के भारकर नम्रीभूत जो वृक्ष सो मानो राम को नमे हैं और सुगन्ध पवन चले है सो मानों वह बन रामके आयबे से आनन्द के स्वांस लेय है, सो श्रीराम सुमेरु कैसे सौमनस बन समान बनको देखकर जानकी से कहते भए कैसी है जानकी फूले कमल समान हैं नेत्र जिसकेपति कहे है हे प्रिये देखो यह वृक्ष बेलोंसे लिपटे पुष्पोंके गुच्छोंकर मण्डित मानों गृहस्थसमान ही भासे हैं और प्रियंगु की बेल बौलसरी के वृक्ष से लगी कैसी शोभे है जैसी जीव दया जिन धर्म से एकताको धरे सोहे और यह माधवीलता पवनकर चलायमान जे पल्लव उन कर

For Private and Personal Use Only

समीप के वृक्ष को स्पर्शे हैं जैसे विद्या विनयवानको स्पर्शे है और हे पतिव्रते यह बनका हाथी मदकर आलसरूप हैं नेत्र जिसके सो हथिनी के अनुरागका प्रेरा कमलों के बनमें प्रवेश करे है जैसे अविद्या कहिये मिथ्यापरणति उसका प्रेरा अज्ञानी जीव विषयबासना विषे प्रवेशकरे कैसा है कमलोंका बन विकसि रहेजे कमलदल तिनपर भ्रमर गुंजारकरे हैं और हे दृढ़व्रते यह इंद्रनीलमणि समानश्यामवर्ण सर्पबिलसे निकस कर मयूर को देख भाग कर पीछे बिल में धसे है जैसे विवेक से काम भाग भववन में छिपे और देखो सिंह केसरी महा सिंह साहसरूप चरित्र इस पर्वत की गुफा में तिष्ठा था सो अपने रथ का नाद सुन निद्रा तज गुफा के द्वार आय निर्भय तिष्ठे है और यह बघेरा क्रूर है मुख जिसका गर्व का भरा मांजरे नेत्रों का धारक मस्तक पर धरी है पूंछ जिसने नखों कर वृक्ष की जड़ को कुचरे है और मृगों के समूह दूब के अंकुर तिनके चरिबको चतुर अपने बालकोंको बीच कर मृगियों सहित गमन करे हैं सो नेत्रों कर दूरही से अवलोकन करते अपने तांई दयावन्त जान निर्भय भए बिचरे हैं यह मृग मरण से कायर सो पापी जीवों के भय से अति सावधान हैं तुम को देख अति प्रीति को प्राप्त भए विस्तीर्ण नेत्र कर बारम्बार देखे हैं तुम्हारे से नेत्र इन के नहीं इस लिये आश्चर्य को प्राप्त भए हैं और यह बन का शूकर अपनी दांतली कर भूमि को विदारता गर्वका भरा चला जाय है लग रहा है कर्दम जिसके और हे गजगामिनी इस वन विषे अनेक जातिके गजों की घटा विचरे हैं सो तुम्हारीसी चाल तिनकी नहीं इसलिये तुम्हारी चाल देख अनुरागी भए हैं और ये चीते विचित्र अंग अनेक वर्ण कर शोभे हैं जैसे इन्द्र धनुष अनेक वर्ण कर सोहे है हे कलानिधे यह वन अनेक अष्टापदादि क्रूर जीवों कर भरा है और अति सघन वृक्षों कर भरा है और

नाना प्रकार के तृणों कर पूर्ण है कहीं एक महा सुन्दर है जहां भय रहित मृगों के समूह विचरे हैं कहूं एक महा भयंकर अति गहन है जैसे महाराजों का राज्य अति सुन्दर है तथापि दुष्टोंको भयंकर है और कहीं इक महामदोन्मत्त गजराज वृक्षों को उखाड़े है जैसे मानी पुरुष धर्मरूप वृक्षको उखाडे है कहूं इक नवीन वृक्षों के महासुगंध समूह पर भ्रमर गुंजार करे हैं जैसे दातावों के निकट याचक आवें किसी ठौर बन लाल होय रहा है काहू ठौर श्वेत काहू ठौर पीत काहू ठौर हरित काहू ठौर श्याम काहू ठौर चञ्चल काहू ठौर निश्चल काहू ठौर शब्द सहित काहू ठौर शब्दरहित काहू ठौर गहन काहू ठौर विरले वृक्ष काहू ठौर सुभग काहू ठौर दुर्भग काहू ठौर विरस काहू ठौर सुरस काहू ठौर सम काहू ठौर विषम काहूं ठौर तरुण काहूं ठौर वृक्षवृद्धि इस भांति नाना विधि भासे है यह दण्डक नामा बन विचित्र गति लिये है जैसे कर्मों का प्रपंच विचित्र गति लिये है, हे जनकसुता जो जिन धर्मको प्राप्त भए हैं वेही यहां कर्म प्रपंच से निवृत्त होय निर्वाण को प्राप्त होय हैं जीवदया समान कोई धर्म नहीं जो आप समान पर जीवों को जान सर्व जीवों की दया करें वेई भवसागर से तिरें यह दण्डक नामा पर्वत जिसके शिखर आकाशसों लगरहे हैं उस का नाम यह दण्डक बन कहिये है इस गिरि के ऊंचे शिखर हैं और अनेक धातुकर भरा है जहां अनेक रंगों से आकाश नाना रंग होय रहा है पर्वत में नाना प्रकार की औषधी हैं कैयक ऐसी जड़ी हैं जे दीपक समान प्रकाश रूप अंधकार को हरें तिनको पवन का भय नहीं पवन में प्रज्वलित और इस गिरि से नीझरने झरे हैं जिनका सुन्दर शब्द होय है जिनके छांटों की बून्द मोतियों की प्रभा को धरे हैं इस गिरि के स्थानक कैयक उज्ज्वल कैयक नील कईएक आरक्त दीखे हैं और अत्यंत सुन्दर हैं सूर्य की किरण गिरि के शिखर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के वृक्षों के अग्रभाग में आय पड़े है और पत्र पवनसे चंचल हैं सो अत्यंत सोहे हैं हे सुबुद्धि रूपिणि इस वन में कहूं इक वृक्ष फलों के भार कर नम्रीभूत होय रहे हैं और कहूं इक नाना रंग के जे पुष्प वे ई भए पट तिनकर शोभित हैं और कहूं इक मधुर शब्द बोलनहारे पक्षी तिनसे शोभित हैं हे प्रिये! इस पर्वत से यह क्रौंचरवा नदी जगत् प्रसिद्ध निकसीहै जैसे जिनराजके मुखसे जिनवाणी निकसे, इस नदी का जल ऐसा मिष्ट है जैसी तेरी चेष्टा मिष्ट है, हे सुकेशी इस नदी में पवन से उठे हैं लहर और किनारे के वृक्षोंके पुष्प जलमें पड़े हैं सो अति शोभितहैं कैसी है नदी हंसोंके समूह और भ्रमरोंके पटलोंसे अति उज्ज्वल है और ऊंचे शब्दकर युक्तहै जल जिसका कहूं इक महा विकट पाषाणोंके समूह तिन कर विषमहै और हजारों ग्राह मगर तिनसे अति भयंकरहै और कहूं इक अति वेग कर चला आवे है जल का जो प्रवाह उसकर दुर्निवार है जैसे महा मुनियोंके तपकी चेष्टा दुर्निवार है, कहूं इक शीतल बहे है कहीं इक वेग रूप बहे है, कहीं इक काली शिला कहीं इक श्वेत शिला तिनकी कांतिकर जल नील श्वेत दुरंग होय रहा है, मानो हलधर हरिका स्वरूप ही है कहीं इक रक्त शिलावोंके किरण की समूह कर नदी आरक्त होय रही है जैसे सूर्य के उदयसे पूर्व दिशा आरक्त होय, और कहीं इक हरितपाषाण के समूह कर जल में हरितता भासे है, सो सिवाल की शंका कर पक्षी पीछे होय जाय रहे हैं। हे कांते यहां कमलों के समूह कर मकरंद के लोभी भ्रमर निरन्तर भ्रमण करे हैं, और मकरंद की सुगन्धता कर जल सुगन्ध मय होय रहा है, और मकरन्दके रङ्गोंकर जल सुरङ्ग होय रहाहै, परन्तु तुम्हारे शरीर की सुगन्धता समान मकरन्द की सुगन्धि नहीं, और तुम्हारे रंग समान मकरन्द का रंग नहीं, मानों तुम कमल

For Private and Personal Use Only

बदनी कहावो हो। सो तुम्हारे मुख की सुगन्धता ही से कमल सुगन्धितहैं और ये भ्रमर कमलोंको तज तुम्हारे मुख कमल पर गुंजार कर रहे हैं और इस नदी का जल काहू ठौर पाताल समान गम्भीर है मानों तुम्हारे मनकीसी गम्भीरताको धरे हैं और कहूं इक नीलकमलोंकर तुम्हारे नेत्रोंकी छायाको धरे है और यहां अनेक प्रकारके पक्षियोंके समूह नानाप्रकार क्रीड़ा करे हैं जैसे राजपुत्र अनेक प्रकारकी क्रीड़ा करें हे प्राणप्रिये! इस नदी के पुलिन की बालू रेत अति सुन्दर शोभित है जहां स्त्री सहित खग कहिये विद्याधर अथवा खग कहिये पक्षी आनन्दसों विचरे हैं हे अखण्डव्रते यह नदी अनेकविलासको धरे समुद्र की ओर चली जाय है जैसे उत्तम शीलकी धरणहारी राजाओंकी कन्या भरतारके परणवेको जांय कैसे हैं भरतार महा मनोहर प्रसिद्ध गुणोंके समूहको धरे शुभचेष्टा कर युक्त जगत् में सुन्दरहैं हे दयारूपिनी! इस नदीके किनारे के वृक्ष फल फूलों से युक्त नानाप्रकार पक्षियोंकर मंडित जलकी भरी कारीघटा समान सघन शोभाको धरे हैं इसभांति श्रीरामचन्द्रजी अतिस्नेह के भरे वचन जनकसुतासे कहतेभए परम विचित्र अर्थको धरे तब वह पतिव्रता अति हर्षके समूहसे भरी पतिसे प्रसन्न भई परम आदरसे कहतीभई हे करुणा निधे यह नदी निर्मल है जल जिसका रमणीक हैं तरंग जिसमें हंसादिक पक्षियोंके समूह कर सुन्दर है परन्तु जैसा तुम्हारा चित्त निर्मल है तैसा नदीका जल निर्मलनहीं और जैसे तुम सघन और सुगन्ध हो तैसा बन नहीं और जैसे तुम उच्च और स्थिरहो तैसा गिरि नहीं और जिनका मन तुममें अनुरागी भया है तिनका मन और ठौर जाय नहीं इसभांति राजसुताके अनेक शुभ वचन श्रीराम भाई सहित सुन कर अति प्रसन्न होय इसकी प्रशंसा करतेभये कैसे हैं राम रघुवंश रूप आकाशमें चन्द्रमा समान उद्योतकारी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं नदीके तटपर मनोहर स्थलदेख हाथियोंके रथसे उतरे लक्ष्मण प्रथमही नानास्वादको धरें सुन्दर मिष्टफल लाया और सुगन्ध पुष्प लाया फिर राम सहित जल क्रीडाकर अनुरागी भया कैसाहै लक्ष्मण गुणों की खान है मन जिसका जैसी क्रीड़ा इन्द्र नागेन्द्र चक्रवर्ती करें तैसी राम लक्ष्मणने करी मानों वह नदी श्रीरामरूप कामदेवको देख रतिसमान मनोहररूप धारतीभई कैसी है नदी लहलहाट करतीजे लहर तिनकी माला कहिये पंक्तिउससे मर्दितकिये हैं श्वेत श्याम कमलोंके पत्र जिसने और उठे हैं झाग जिसमें भ्रमररूप है चूड़ा जिसके पक्षियोंके जे शब्द, तिनकर मानो मिष्ट शब्दकरैहैं वचनालाप करेहैं राम जलक्रीड़ाकर कमलों के बनमें छिपरहे फिर शीघ्रही आए जनकसुता से जल केलि करतेभए इनकी चेष्टा देख वन के तिर्यंच भी और तरफसे मन रोक एकाग्र चित्त होय इनकी ओर निरखतेभए कैसेहैं दोनोंवीर कठोरता से रहित है मन जिसका और मनोहर है चेष्टा जिनकी सीता गान करतीभई सो गानके अनुसार रामचन्द्र ताल देतेभए मृदंगसेभी अति सुन्दर राम जलक्रीड़ामें आसक्त और लक्ष्मण चौगिरदा फिरे कैसाहै लक्ष्मण भाईके गुणोंमें आसक्त है बुद्धि जिसकी राम अपनी इच्छा प्रमाण जल क्रीडाकर समीप के मृगों को आनन्द उपजाय जल क्रीड़ा से निवृत्तभए महा प्रसन्न जे बनके मिष्टफल तिनसे क्षुधा निवारण कर लता मंडपमें तिष्ठे जहां सूर्यका आताप नहीं ये देवों सारिखे सुन्दर नानाप्रकार की सुन्दर कथा करते भये सीता सहित अति आनन्दसे तिष्ठे कैसीहै सीता जटायुके मस्तकपर हाथ है जिसका वहां राम लक्ष्मण से कहे हैं हे भ्रात यह नानाप्रकारके वृक्ष स्वादु फलकर संयुक्त और नदी निर्मल जल की भरी और जहां लतावोंके मण्डप और यह दण्डकनामा गिरि अनेक रत्नोंसे पूर्ण यहां अनेक स्थानक क्रीड़ा करने हैं इस गिरिके निकट एक सुन्दर नगर बसावें और यहवन अत्यन्त मनोहर औरोंसे अगोचर यहां नि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वास हर्षका कारण है यहां स्थानककर हे भाई तू दोनों मातावों के लायबे को जा वे अत्यन्त शोक वन्ती हैं सो शीघ्रही लावो अथवा तू यहां रहो और सीता तथा जटायुभी यहांरहे मैं मातावों के ल्या-यबे को जाऊंगा तब लक्ष्मण हाथजोड़ नमस्कारकर कहता भया जो आपकी आज्ञा होयगी सो होयगा तब राम कहतेभए अबतो वर्षा ऋतु आई और ग्रीषम ऋतु गई यह वर्षा ऋतु अति भयंकर है जिसमें समुद्र समान गाजते मेघ घटाओंके समूह विचरे हैं चालते अंजनगिरि समान दशों दिशा में श्यामता होयरहीहै बिजुरी चमके है बगुलावोंकी पंक्ति विचरे हैं और निरन्तर बादलोंसे जल बरसेहै जैसेभगवान के जन्मकल्याण में देवरत्न धारा बरसावें और देख हे भ्राता यह श्याम घटा तेरे रंग समान सुन्दर जलकी बूंद बरसावे हैं जैसे तूदान की धारा बरसावे ये बादर आकाशमें विचरते बिजुरीके चमत्कारकर युक्त बड़े बड़े गिरियोंको अपनी धाराकर आच्छादतेसंते ध्वनि करतेसंते कैसे सोहे हैं जैसे तुमपीतवस्त्र पहिरे अनेक राजावोंको आज्ञाकरते पृथिवीको कृपादृष्टिरूप अमृतकी वृष्टिसे सींचते से हो हे बीर! ये कैयक बादर पवनके वेगसे आकाशविषे भ्रमें हैं जैसे यौवन अवस्थामें असंयमियोंका मन विषय बासनामें भ्रमे, और यह मेघ नाजके खेत छोड़ वृथा पर्वतोंके विषे बरसे हैं जैसे कोई द्रव्यवान पात्रदान और करुणादान तज वेश्यादिक कुमार्गमें धन खोवे, हे लक्ष्मण! इस वर्षाऋतुमें अतिवेगसूं नदी बहे हैं और धरती कीचसों भर रही है और प्रचंड पवन बाजे है भूमिविषे हरित काय फैल रहीहै और त्रसजीव विशेषतासे हैं इस समयमें विवेकियों का विहार नहीं ऐसे बचन श्रीरामचन्द्रके सुनकर सुमित्राका नन्दन लक्ष्मण बोला हे नाथ! जो आप आज्ञा करोगे सो ही मैं करूंगा ऐसी सुन्दर कथा करते दोनों बीर महाधीर सुंदर स्थानकमेंसुखसे वर्षाकालपूर्ण करतेभए कैसा हैवर्षाकाल जिससमय सूर्य नहीं दीखे है ॥ इतितैंतालीसवांपर्व

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ सीताहरण और युद्धनामा चौथा महा अधिकार ।

अथानन्तर वर्षाऋतु व्यतीतभई शरदऋतुका आगमनभया मानों यह शरदऋतु चंद्रमाकी किरण रूप बाणोंसे वर्षारूप बैरीको जीत पृथिवीपर अपना प्रताप विस्तारती भई दिशारूप जे स्त्रियें सो फूल रहे हैं फूल जिनके ऐसे वृक्षोंकी सुगन्धताकर सुगन्धित भई हैं और वर्षा समयमें कारी घटावोंकर जो आकाश श्यामथा सो अब चन्द्रकांतिकर उज्वल शोभताहुवा मानों क्षीरसागरके जलसे धोयाहै और बिजलीरूप स्वर्ण सांकलकर युक्त वर्षाकालरूपी गज पृथिवीरूप लक्ष्मीको स्नानकराय कहीं जातारहा और शरदके योगसे कमल फूले तिनपर भ्रमर गुंजार करते भए हंस क्रीडा करतेभए और नदियोंके जल निर्मल होय गए दोनों किनारे महासुन्दर भासते भए मानों शरदकाल रूप नायिकाको पाय सरितारूप कामिनी कांति को प्राप्त भई हैं और वनवर्षा और पवनकर छूटे कैसे शोभते भए मानों निद्रासे रहित जाग्रत दशा को प्राप्तभएहैं सरोवरोंमें सरोजनियोंपर भ्रमर गुंजार करे हैं और वन विषे वृक्षोंपर पक्षी नाद करे हैं सोमानों परस्पर वार्ताही करे हैं और रजनीरूप नायिका नानाप्रकारके पुष्पोंकी सुगन्धताकर सुगन्धित निर्मल आकाशरूप वस्त्र पहर चन्द्रमारूप तिलकधरे मानों शरदकालरूप नायकपै जायहै । और कामीजनों को काम उपजावती केतकीके पुष्पोंकी रजकर सुगन्ध पवन चले हैं इस भांति शरदऋतु प्रवरती सो लक्ष्मण बड़े भाईकी आज्ञा मांग सिंहसमान महा पराक्रमी वन देखनेको अकेला निकला सो आगे गए एक सुगन्धपवन आई तब लक्ष्मण विचारते भए यह सुगन्ध काहे की है ऐसी अद्भुत सुगन्ध

वृक्षोंकी न होय अथवा मेरेशरीरकी भी ऐसी सुगन्ध नहीं यह सीताजी के अंगकी सुगन्धहोय तथा कोऊ देव आयाहोय ऐसा सन्देह लक्ष्मणको उपजा सो यह कथा राजा श्रेणिक सुन गौतम स्वामी से पूछता भया हे प्रभो जिस सुगन्ध कर वासुदेवको आश्चर्य उपजा सो वह सुगन्ध काहे की तब गौतम गणधर कहते भए कैसे हैं गौतम सन्देहरूप तिमिर दूर करनेको सूर्य हैं सर्वलोककी चेष्टाको जाने हैं पापरूप रजके उड़ावनेको पवनहैं गौतम कहे हैं हे श्रेणिक द्वितीय तीर्थंकर श्रीअजितनाथ तिनके समोशरणमें मेघवाहन विद्याधर रावणका बडा शरणे आया उसे राक्षसों के इंद्र महा भीम ने त्रिकूटाचल पर्वतके समीप राक्षसद्वीप वहां लंका नामा नगरी सो कृपाकर दई और यह रहस्य की बात कही हे विद्याधर सुन भरत क्षेत्रके दक्षिणदिशा की तरफ लवण समुद्रके उत्तरकी ओर पृथिवी के उदर विषे एक अलंकारोदय नामा नगरहैसो अद्भुत स्थानकहै और नानाप्रकाररत्नोंकी किरणों से मंडितहै देवोंको भी आश्चर्य उपजावे तो मनुष्योंकी क्याबात भूमिगोचरियोंकोतो अगम्यही है और विद्याधरोंको भी अतिविषमहै चितवनमें न आवे सर्व गुणोंसे पूर्ण है जहां मणियोंके मंदिरहैं परचक्र से अगोचरहै सो कदाचित तुमको अथवा तेरेसन्तानके राजाओंको लंकामें परचक्रका भय उपजे तो अलंकारोदयपुरमें निर्भय भए तिष्ठियो इसे पताललंका कहे हैं ऐसाकहकर महाभीम बुद्धिमान राक्षसोंके इंद्र ने अनुग्रहकर रावणके बड़ोंको लंका और पाताललंका दई और राक्षस द्वीप दिया सो यहां इनके वंश में अनेक राजाभए बडे २ विवेकी व्रतधारी भए सो रावणके बडे विद्याधर कुल विषे उपजे हैं देव नहीं विद्याधर और देवोंमें भेदहै जैसे तिलक और पर्वत कर्दम और चन्दन पाषाण और रत्नोंमें बडा भेद

देवोंकी शक्ति बडी कांति बडी और विद्याधर तो मनुष्यहैं क्षत्री वैश्य शूद्र यह तीन कुलहैं गर्भवास के खेद भुक्ते हैं विद्या साधनकर आकाशमें विचरे हैं सो अढ़ाई द्वीप पर्यंत गमन करे हैं और देव गर्भ वाससे उपजे नहीं महासुन्दर स्वरूप पवित्र धातु उपधातु कर रहित आंखोंकी पलक लगे नहीं सदा जाग्रत जरारोग रहित नवयौवन तेजस्वी उदार सौभाग्यवन्त महासुखी स्वभावहीसे विद्यावंत अवधि नेत्र चाहें जैसारूप करें स्वेछाचारी देवों विद्याधरोंका कहां संबंध, हे श्रेणिक। ये लंकाके विद्याधरराक्षसद्वीप में बसे इसलिये राक्षस कहाए ये मनुष्य क्षत्री वंश विद्याधरहैं देवभी नहीं राक्षसभी नहीं इनके वंश में लंका विषे अजितनाथके समयसे लेकर मुनिव्रत नाथके समय पर्यंत अनेक सहस्र राजा प्रशंसा करने योग्यभए कई सिद्धभए केई सर्वार्थ सिद्धगए केईस्वर्ग विषे देवभए केईएक पापी नरकगए अब उस वंश में तीन खण्डका अधिपति जो रावणसो राज्य करे है उसकी बहिन चन्द्रनखा रूपसे अनूपमसो महा पराक्रमवन्त खरदूषणने परणी वह चौदह हजार राजोंका शिरोमणि रावणकी सेनामें मुख्यसो दिग्पाल समान अलंकापुर जो पाताललंका वहां थाने रहे हैं उसके संबूक और सुन्दर ये दो पुत्र रावण के भानजे पृथ्वीमें अतिमान्यभए सो गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक माता पिताने संबूको बहुत मने किया तथापि कालका प्रेरा सूर्यहास खड्ग साधिवे के अर्थ महाभयानकवनमें प्रवेश करताभया शास्त्रोक्तआचार को आचरता हुवा सूर्यहास खड्गके साधिवेको उद्यमीभया एकही अन्नका आहारी ब्रह्मचारी यतेन्द्रिय विद्या साधिवेको बांसके बीडमें यह कहकर बैठा, कि जब मेरा पूर्ण साधन होयगा तबही मैं बाहिर आऊंगा उस पहिली कोई बीड में आवेगा और मेरी दृष्टिपड़ेगातो उसे मैं मारूंगा ऐसा कहकर एकांत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बैठा सो कहां बैठा दण्डक बनमें क्रौंचवा नदीके उत्तर तीर बांसके बीडेमें बैठा बारहवर्षसाधन किया खड्ग प्रकटभया सो सातादिनमें यह न लेय तो खड्ग और के हाथ जाय और यह माराजायसो चंद्र नखा निरन्तर पुत्रके निटक भोजनलेय आवती सो खडगको देख प्रसन्नभई और पतिसे जाय कही कि संबुकको सूर्यहास सिद्धभया अब मेरा पुत्र मेरुकी तीन प्रदक्षणाकर आवेगा सो यहतो ऐसे मनोरथ करे और उसबनमें भ्रमता लक्ष्मण आया हजारों देवोंसे रक्षायोग्य खडग स्वभाव सुगन्ध अद्भुत रत्नसो गौतम कहे हैं हे श्रेणिक वह देवोपुनीत खडग महा सुगन्ध दिव्य गंधादिककर जिस कल्पवृक्षोंके पुष्पोंकी माला तिनसे युक्तसो सूर्यहास खडगकी सुगन्ध लक्ष्मणको आई लक्ष्मण आश्चर्यको प्राप्तभया और कार्यतज सीघाशीघ्रही बांसकी ओर आया सिंहसमान निर्भय देखताभया वृक्षोंकरआछादितमहा विषम स्थल जहां बेलोंके समूह अनेक जाल ऊंचे पाषाण वहां मध्यमें समभूमि सुन्दर क्षेत्र श्री विचित्ररथ मुनि का निर्वाण क्षेत्र सुवर्णके कमलोंसे पूजित उसके मध्य एक बांसोंका बीडा उस के ऊपर खडग आय रहा है सो उसकी किरणके समूहसे बांसोंका बीडा प्रकाशरूपहोयरहाहै सो लक्षमण ने आश्चर्य को पाय निसंक होय खड्ग लिया और उस की तीक्षणता जानने के अर्थ बांस के बीडापर वाहिया सो संबूक सहित बांस का बीड़ा कट गया और खडग के रक्षकसहस्रों देव लक्षमणके हाथ में खडग आया जान कहते भए तुम हमारे स्वामी हो ऐसा कह नमस्कार कर पूजते भए ॥

अथानन्तर लक्षमण को बहुत बेर लगी जान रामचन्द्र सीता से कहतेभए लक्षमण कहां गया हे भद्र जटायु तू उड़ कर देख लक्षमण आवे है तब सीता बोली हे नाथ वह लक्षमण आया केसर कर

For Private and Personal Use Only

चरचा है अंग जिसका नानाप्रकार की माला और सुन्दर वस्त्र पहिरे और एक खडग अदभुत लिये आवे है सो खड्ग से ऐसा सोहे है जैसा केसरी सिंह से पर्वत शोभे तब रामने आश्चर्यको प्राप्तभया है मन जिनका अति हर्षित होय लक्ष्मण को उठकर उर से लगाय लिया, सकल बृतान्तपूछा तब लक्ष्मणने सर्व बात कही आप भाई सहित सुख से बिराजे नाना प्रकार की कथा करें और संबूक की माता चन्द्रनखा प्रतिदिन एक ही अन्न भोजन लावती थी सो आगे आयकरदेखेतो बांसका बीड़ाकटा पडा है, तब बिचारती भई कि मेरे पुत्र ने भला न किया, जहां इतने दिनरहा और बिद्यासिद्धि भई ताहीं बीड़ेको काटा सो योग्य नहीं था अब अटवी छोड़ कहां गया इत उत देखे तो अस्त होता जोसूर्यउसके मंडल समान कुण्डल सहित सिर पड़ा है और धड़ जुदा पडा है देख कर उसे मूर्छा आय गई मूर्छा ने इसका परम उपकार किया नातर पुत्र के मरण से यह कहां जीवे, फिर केतीक बेर में इसे चेत भया तब हाहाकार कर उठी पुत्र का कटा मस्तक देख शोक कर अतिविलाप किया नेत्र आंसुओं से भर गए अकेली बनमें करची कीन्यांई पुकारती भई हा पुत्र बारह वर्ष और चार दिन यहां व्यतीत भए तैसे तीन दिन और भी क्यों न निकस गए तुझे मरण कहां से आया हाय पापी काल तेरा मैं क्या बिगाड़ा जो नेत्रोंकी निधि पुत्र मेरा तत्काल विनाशा मैं पापिनी परभव में किसीका बालक हता था सो मेरा बालक हता गया, हे पुत्र आर्ति का मेटनहारा एक बचन तो मुखसे कह हे बत्स आ अपना मनोहर रूप मुझे दिखा ऐसी माया रूप अमङ्गल क्रीडा करना तुझे उचित नहीं अबतक तैंने माताकी आज्ञा कबहूं न लोपी अब निःकारण यह बिनयलोप कार्य करना तुझे योग्य नहीं इत्यादिक कविल्प कर विचारती भई निःसन्देह मेरा पुत्र

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परलोकको प्राप्त भया विचारा कुछ और ही था और भया कुछ और ही यह बात विचार में न थी सो भई हे पुत्र जो तू जीवता और सूर्यहास खड्ग सिद्ध होता तो जैसे चंद्रहास के धारक रावण के सन्मुख कोई नहीं आय सके है तैसे तेरे सन्मुख कोई नहीं आय सकता मानों चंद्रहास ने मेरे भाई के हाथमें स्थानक किया सो अपना विरोधी सूर्यहास ताहि तेरे हाथ में न देख सका भयानक बन में अकेला निर्दोष नियम का धारी उसे मारने को जिसके हाथ चले सो ऐसा पापी खोटा बैरी कौन है जिस दुष्टने तुझे हता अब वह कहां जीवता जायगा इसभांति बिलाप करती पुत्रका मस्तक गोदमें लेय चूमती भई मूंगा समान आरक्त हैं नेत्र जिसके फिर शोक तज क्रोधरूप होय शत्रु के मारने को दौड़ी सो चली चली वहां आई जहां दोनों भाई विराजें थे दोनों महारूपवान् मनमोहिबे के कारण तिनको देख इसका प्रबल क्रोध जातारहा, तत्काल राग उपजा मनमें चितवती भई इन दोनों में जो मुझे इच्छे ताहि मैं सेवूं यह विचार तत्काल कामातुर भई जैसे कमलों के बन में हंसनी मोहित होय और महाहृदयमें भैंस अनुरागिनी होय और हरे धान के खेत में हिरणी अभिलाषिणी होय तैसे इनमें यह आसक्त भई सो एक पुन्नागबृक्ष के नीचे बैठी रुदन करे अतिदीन शब्द उचारे बनकी रजकर धूसरा होयरहा है अंग जिसका उसे देखकर रामकी रमणी सीता अति दयालुचित्त उठकर उसके समीप आय कहती भई। तू शोकमत कर हाथ पकड़ उसे शुभ वचन कह धीर्य्य बन्धाय रामके निकट लाई तब राम उसे कहते भए तू कौनहै यह दुष्ट जीवों का भरा बन इसमें अकेली क्यों विचरे है तब वह कमल सरीखे हैं नेत्र जिसके और भ्रमर की गुंजार समानहैं वचनजिसके सो कहती भई हे पुरुषोत्तम मेरी माता तो मरणको प्राप्तभई सो मोको गम्य नहीं मैं बालक थी फिर उसके

शोक कर पिता भी परलोक में गया सा मैं पूर्वले पाप से कुटुम्ब रहित दण्डक बनमें आई मेरे मरण की अभिलाषा सो इस भकानक बनमें किसी दुष्ट जीवने न भषी बहुत दिनों से इस बनमें भटक रही हूं आज मेरे कोई पापकर्म का नाश भया सो आप का दर्शन भया अब मेरे प्राण न छूटें ता पहिले मुझे कृपाकर इच्छो जो कन्या कुलवन्ती शीलवन्ती होय उसे कौन न इच्छे सबही इच्छें यह इसके लज्जारहित वचन सुनकर दोनों भाई नरोत्तम परस्पर अवलोकन कर मौन से तिष्ठे कैसे हैं दोनों सर्वशास्त्रों के अर्थ का जो ज्ञान सोई भया जल उससे धोयाहै मन जिनका कृत्य अकृत्य के विवेकमें प्रवीण तब वह इनका चित्त निष्काम जान विश्वास नास कहती भई मैं जावूं तब राम लक्ष्मण बोले जोतेरी इच्छा होय सो कर तब वह चली गई उसके गए पीछे राम लक्ष्मण सीता आश्चर्य को प्राप्त भए और वह क्रोधायमान होय शीघ्र पतिके समीप गई और लक्ष्मण मनमें विचारता भया कि यह कौनकी पुत्री कौन देशमें उपजी समूहसे बिछुरी मृगी समान यहां कहांसे आई हे श्रेणिक यह कार्य कर्तव्य यह न कर्तव्य इसका परिपाक शुभ वा अशुभ ऐसाविचार अविवेकी न जानें अज्ञानरूप तिमिरसे आछादितहै बुद्धि जिनकी और प्रवीण बुद्धि महाविवेकी अविवेकसे रहित हैं सो इसलोकमें ज्ञानरूप सूर्यके प्रकाशकर योग्य अयोग्य को जान अयोग्य के त्यागी होय योग्य क्रिया में प्रवृत्ते हैं॥ इति चवालीसवां पर्व संपूर्णम्॥

अथानन्तर जैसे हृदका तट फूट जाय और जल का प्रवाह विस्तार को प्राप्त होय तैसे खरदूषण की स्त्री का राम लक्ष्मण से राग उपजाथा सो उनकी अवांछा से विर्ध्वस भया तब शोकका प्रवाह प्रकट भया अतिव्याकुल होय नाना प्रकार बिलाप करतीभई अरतिरूप अग्निकर तप्तायमान है अंग जिसका

जैसे बछडे बिना गाय बिलापकरे तैसे शोककरती भई भरे हैं नेत्रोंसे आंसू जिसके सो बिलाप करतीपतिने देखी नष्ट भयाहै धीर्य जिसका और धूरकर धूसरा है अंग जिसका बिखर रहे हैं केशों के समूह जिसके और शिथिल होय रही है कटी मेखला जिसकी और नखोंसे विदारी हैं वक्षस्थल कुच और जंघा जिस की सो रुधिरसे आरक्त है और आवरण रहित लावण्यता रहित और फट गई है, चोली जिसकी जैसे माते हार्थाने कमलनीको दलमली होय तैसी इसे देख पति धीर्य बन्धाय पूछताभया हे कांते कौन दुष्ट ने तू ऐसी अवस्थाको प्राप्तकरी सो कहो वह कौन है जिसे आज आठवां चन्द्रमा है अथवा मरण उसके निकट आयाहै वह मूढ़ पहाड़ के शिखरपर चढ़ सोवे है सूर्य से क्रीड़ा करे है अन्धकूपमें पड़े है दैव उससे रूसा है मेरी क्रोध रूप अग्निमें पतंगकी नांई पड़ेगा धिक्कार उस पापी अविवेकीको वह पशुसमान अप-वित्र अनीती यह लोक परलोक भ्रष्टे जिसने तू दुखाईतूबडवानलकी शिखा समानहै रुदन मतकर और स्त्रियोंसारखी तू नहीं बड़े वंशकी पुत्री बड़े घर परणी आई है अबही उस दुराचारी को हस्त तले हण परलोक को प्राप्त करूंगा जैसे सिंह उनमत्तहाथीको हणे इसभांति जब पतिने कही तब चन्द्रनखा महा कष्ट थकी रुदन तज गद गद वाणीसे कहतीभई जुलफोंकर आछादित हैं कपोल जिसकी हे नाथ में पुत्रके देखने को बनमें नित्य जातीथी सो आज पुत्रका मस्तक कटा भूमिमें पड़ा देखा और रुधिरकी धारा कर बांसों का बीड़ा आरक्त देखा किसी पापी ने मेरे पुत्र को मार खडग रत्न लिया कैसा है खडग देवोंकर सेवने योग्य सो मैं अनेक दुखोंका भाजन भाग्य रहित पुत्रका मस्तक गोदमें लेय विलाप करतीभई सो जिस पापीने संबूक को माराथा उसने मुझसे अनीति विचारी भुजावोंसे पकड़ी में कही मुझे छांड़ सो पापी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नीचकुली छाड़े नहीं नखोंसे दांतोंसे विदारी निर्जन बनमें मैं अकेली वह बलवान पुरुष मैं अबला तथापि पूर्व पुण्यसे शील बचाय महा कष्टसे में यहां आई सर्व विद्याधरोंका स्वामी तीनखण्डका अधिपति तीन लोकमें प्रसिद्ध रावण किसीसे न जीता जाय सो मेराभाई और तुम खरदूषण नामा महाराज दैत्यजाति के जे विद्याधर तिनके अधिपति मेरेभरतार तथापि मैं दैवयोगसे इस अवस्थाको प्राप्तभई ऐसे चन्द्रनखा के वचन सुन महा क्रोधकर तत्काल जहां पुत्रका शरीर मृतक पड़ाथा वहांगया सो मूवादेख कर अति खेद खिन्न भया पूर्व अवस्थामें पुत्रपूर्णमासी के चन्द्रमा समानथा सो महाभयानक भासता भया खर-दूषणने अपने घर आय अपने कुटम्बसे मन्त्रकिया तब कैएक मन्त्री कर्कशचित्तथे वे कहते भयेहेदेव जिसने खडग रत्नलिया और पुत्रहता ताहि जो ढीला छोड़ोगे तो न जानिये क्याकरे सो उसका शीघ्र यत्नकरो और कैएक विवेकी कहतेभए हे नाथ यहलघुकार्य नहीं सर्व सामन्त एकत्रकरो और रावणपैभी पत्र पठावो जिनके हाथ सूर्यहास खडग आया वे समान्य पुरुष नहीं इस लिये सर्व सामन्त एकत्रकर जो विचार करना होय सो करो शीघ्रता न करो तब रावणके निकट तो तत्काल दूत पठाया दूत शीघ्रगामी और तरुण सो तत्काल रावण पै गया रावण का उत्तर पीछा आवे उसके पहिले खरदूषण अपने पुत्र के मरणकर महा द्वेषका भरा सामन्तों से कहताभया वे रंक विद्यावल रहित भूमिगोचरी हमारी विद्या धरोंकी सेनारूप समुद्रके तिरनेको समर्थ नहीं धिक्कार हमारे सूरापन को जो और का सहारा चाहें हैं हमारी भुजाहैं वेही सहाई हैं और दूजा कौन ऐसा कहकर महा अभिमान को धरे शीघ्रही मन्दिरसे निकसा आकाश मार्ग गमन किया तेजरूप है मुख जिसका सो उसको सर्वथा युद्धको सन्मुख जान

For Private and Personal Use Only

चौदह हजार राजा संगचले सो दण्डक वनमें आए उनकी सेनाके वादित्रोंके शब्द समुद्रके शब्दसमान सीता सुनकर भयको प्राप्तभई हे नाथ क्या है कहां है ऐसे शब्द कह पतिके अंग सें लगी जैसे कल्प बेल कल्प वृक्षसे लगे तब आप कहतेभए हे प्रिये भय मतकर इसे धीर्य बंधाय विचारते भए यह दुर्धर शब्द सिंहका है अक मेघ का अक समुद्रका ह अकदुष्ट पक्षियोंका है सब आकाश पूरगयाहै तब सीता से कहतेभये हे प्रिये ये दुष्टपक्षीहैं जे मनुष्य और पशुवोंको लेजाएहैं धनुषके टंकोर से इनको भगादूं उतनेहीमें शत्रू की सैंना निकटआई नानाप्रकारकेआयुधोंकर युक्तसुभट दृष्टिपरे जैस पवनके प्रे रे मेघघटावोंके समूहविचरें तेस विद्याधर विचारतेभए तब श्रीरामने विचारी ये नन्दीश्वर द्वीपको भगवानकी पूजाके अर्थ देव जायहैं अथवा बांसोंके बीडे में काहू मनुष्यको हतकर लक्षमण खडग रत्न लाया और वह कन्या वन आईथीसो कुशीलीस्त्रीथी उसने ये अपनेकुटम्बकेसामन्त प्रेरे हैं इसलिय अबपरसेना समीपआएनिश्चिंत रहना उचितनहीं धनुषकी ओर दृष्टिधरी और बक्तर पहिरनेकी तैयारी करी तब लक्षमण हाथजोड़सिर निवाय विनतीकरताभया हे देव मेरेहोते आपको एतापरिश्रम करनाउचित नहीं आप राजपुत्रीकीरक्षा करो मैं शत्रुओंके सन्मुख जाऊं हूं सो जो कदाचित भीड़ पडेगी तोमैं सिंहनाद करूंगा तब आप मेरी सहाय करियो ऐसा कहकर बक्तर पहर शस्त्रधार लक्षमण शत्रुओंके सन्मुख युद्धको चला सो वे विद्या धर लक्षमणको उत्तम आकारका धारनहारा वीराधिवीर श्रेष्ठपुरुष देख जैसे मेघपर्वतको बेढ़े तैसे बेढ़तेभए शक्ति मुदगर सामान्य चक्र वरछी बाण इत्यादि शस्त्रोंकी वर्षा करते भए सो अकेला लक्षमण सर्व विद्याधरोंके चलाए बाण अपनेशस्त्रोंसे निवारताभया और आपविद्याधरोंकीओर आकाशमेंवज्रदण्ड

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाण चलावताभया यह कथा गौतमस्वामी राजाश्रेणिकसे कहे हैं हे राजन अकेला लक्ष्मण विद्याधरों की सेनाको बाणोंसे ऐसा रोकता भया जैसे संयमी साधु आत्मज्ञानकर विषय वासनाको रोके लक्ष्मणके शस्त्रों से विद्याधरों के सिर रत्नों के आभरणकर मण्डित कुण्डलोंसे शोभित आकाशसे धरतीपर परें मानों अम्बर रूप सरोवर के कमलही हैं योधावों सहित पर्वत समान हाथी पड़े और अश्वों सहित सामन्त पड़े भयानक शब्द करते होंठ डसते ऊर्ध्वगामी बाणोंकर वासुदेव वहन सहित योधावोंको पीड़ता भया ॥

अथानन्तर पुष्पकविमानमें बैठा रावण आया सम्बूकके मारणहारे पुरुषोंपर उपजाहै महाक्रोध जिसको सो मार्गमें रामकेसमीप सीता महा सतीको तिष्ठतीदेखताभया सो देखकर महा मोहको प्राप्तभया कैसीहै सीता जिसे देखे रतिका रूपभी इस समान न भासे मानो साक्षात् लक्ष्मीही है चन्द्रमा समान सुन्दर वदन निफन्याँ के फूल समान अधर केसरी की कटि समान कटि लहलहाट करते चंचल कमलपत्र समान लोचन और महा गजराज के कुम्भस्थल के शिखर समान कुच नवयौवन सर्व गुणों कर पूर्ण कांति के समूह से संयुक्तहै शरीर जिसका मानों कामके धनुषकी पिणचही है और नेत्र जिसके कामके बाणही हैं मानों नाम कर्मरूप चतेरे ने अपनी चपलता निवारनेके निमित्त स्थिरता कर सुख से जैसी चाहिये तैसी बनाई है जिसको देख रावणकी बुद्धि हरीगई महारूपके अतिशयको धरे जो सीता उसके अवलोकनसे संबूक के मारवे वारेपर जो क्रोध था सो जातारहा और सीतापर राग भाव उपजा चित्तकी विचित्रगतिहै मन में चितवताभया इस बिना मेरा जीतव्य कहां और जो विभूति मेरे घरमें उससे क्या यह अद्भुतरूप अनुपम महासुन्दर नवयौवन मुझे खरदूषणकी सेनामें आया कोई न जाने उस पहिले इसे हरकर घर लेजाऊं मेरी

For Private and Personal Use Only

कीर्ति चन्द्रमा समान निर्मल सकल लोकमें विस्तररही है सो छिपकर लेजाने में मलिन न होय हे श्रेणिक अर्थीदोषको न गिने इसलिये गोप्य लेजाइवेका यत्न किया इस लोकमें लोभ समान और अनर्थ नहीं और लोभमें परस्त्री के लोभ समान महा अनर्थ नहीं रावणने अवलोकनी विद्या से वृत्तान्त पूछा सो वाके कहेसे इनका नाम कुल सब जाने लक्ष्मण अनेकसे लड़नहारा एक युद्धमें गया और यह रामहै यह इसकी स्त्री सीताहै और जब लक्ष्मण गया तब रामसे ऐसा कहगयाहै जो मोपै भीड़ पड़ेगी तब मैं सिंहनाद करूंगा तब तुम मेरी सहाय करियो सो वह सिंहनाद मैं करूं तब यह राम धनुषबाण लेय भाई पै जावेंगे और मैं सीता लेजाऊंगा जैसे पक्षी मांसकी डली को लेजाय और खरदूषणका पुत्र तो इनने माराही था और उसकी स्त्रीका अपमान किया सो वह शक्ति आदि शस्त्रोंकर दोनों भाइयोंको मारेहीगा जैसे महा प्रबल नदीका प्रवाह दोनों ढाहे पाड़े नदीके प्रबाहकी शक्ति छिपी नहीं है तैसे खरदूषणकी शक्ति काहू से छिपी नहीं सबकोई जाने हैं ऐसा विचारकर मूढ़मति कामकर पीड़ित रावण मरणके अर्थ सीताके हरण का उपाय करताभया। जैसे दुरबुद्धि बालक विषके लेनेका उपाय करे ॥

अथानन्तर उधरतो लक्ष्मण और कटकसहित खरदूषण दोनोंमें महायुद्ध होयरहाहै शस्त्रोंका प्रवाह होय रहाहै और इधर रावणने कटककर सिंहनादकिया उसमें बारम्बार राम राम यह शब्दकिया तब रामने जाना कि यह सिंहनाद लक्ष्मण ने किया सुन कर व्याकुल चित्त भए जानी भाईपै भीड़ पडी तब रामने जानकीको कहा हे प्रिये भय मत करे क्षणएक तिष्ठ ऐसे कह निर्मल पुष्पोंमें छिपाई और जटायु को कहा हे मित्र यह स्त्री अबलाजाति है इसकी रक्षाकरियो तुम हमारे परम मित्रहो धर्मी हो ऐसा कहकर आप

धनुषबाण लेयचले सो अपशकुन भए सो न गिने महासती को अकेली बनमें छोड शीघ्रही भाई पै गए महारणमें भाईके आगे जाय ठाढ़े रहे उससमय रावण सीता के उठायवेको आया जैसा माताहाथी कमलिनी को लेने आवे काम रूप दाहकर प्रज्वलितहै मन जिसका भूलगई है समस्त धर्मकी बुद्धिजिसकी सीताको उठाय पुष्पक विमानमें धरनेलगा तब जटायु पक्षी स्वामीकी स्त्रीको हरतीदेख क्रोधरूद अग्निकर प्रज्वलित भयाउठकर अति वेगसे रावणपर पडा तीक्ष्ण नखोंकी अणी और चूंचसे रावण का उरस्थल रुधिर संयुक्त किया और अपनी कठोर पावोंसे रावणके वस्त्र फाडे रावणका सर्वशरीर खेदखिन्नकिया तब रावणने जानी यह सीताको छुडावेगा झंझट करेगा इतनेसे इसका धनी आन पहूंचेगा सो इसे मनोहर वस्तु का अवरोधक जान महा क्रोधकर हाथकी चपेटसे मारा सो अति कठोर हाथकी घातसे पक्षी विह्वलहोय पुकारताहुवो पृथिवी में पडा मूर्छाको प्राप्तभया तब रावण जनकसुताको पुष्पक विमानमें धर अपने स्थानकको लेचला हेश्रेणिक यद्यपि रावण जाने है यह कार्य योग्य नहीं तथापि काम के वशीभूत हुआ सर्व विचार भूल गया सीता महासती आप को परपुरुष कर हरी जान रामके अनुराग से भीज रहा है चित्त जिस का महा शोकवन्ती होय अरतिरूप विलाप करती भई, तब रावण इसे निज भरतार में अनुरक्त जान रुदन करती देख कछू एक उदास होय विचारता भया जो यह निरन्तर रोवे है और बिरह कर व्याकुल है अपने भरतारके गुण गावे है अन्यपुरुष के संयोग का अभिलाष नहीं, सो स्त्री अबध्य है इसलिये मैं मार न सकूं और कोई मेरी आज्ञा उलंघेतो उसे मारूं और मैं साधुवों के निकट व्रत लिया था जो परस्त्री मुझे न इच्छे उसे मैं न सेऊं सो मुझे यह व्रतदृढ़ राखना इसे कोई उपायकर प्रसन्नकरूं उपायकिये प्रसन्न होयगी

जैसे क्रोधवन्त राजा शीघ्र ही प्रसन्न न किया जाय तैसे हठवन्ती स्त्री भी वश न करी जाय जो कछु वस्तु है सो यत्नसे सिद्ध होयहै मनवांछित विद्या परलोककी क्रिया और मनभावना स्त्री ये यत्नसे सिद्ध होय यह विचारकर रावण सीता के प्रसन्न होने का समय हेरे कैसा है रावण मरण आया है निकट जिसके ॥

अथानन्तर श्रीरामने वाणरूप जलकी धारा कर पूर्ण जो रणमण्डल उसमें प्रवेश किया सो लक्ष्मण देख कर कहता भया हाय हाय एते दूर आप क्यों आए हे देव जानकी को अकेली वन में मेल आए यह वन अनेक विग्रहका भरा है तब रामने कही मैं तेरा सिंहनाद सुनं शीघ्रआया तब लक्ष्मणने कही आप भली न करी अब शीघ्र जहां जानकी है वहां जावो तब रामने जानी वीरतो महाधीर है इसे शत्रु का भय नहीं इसको कही तू परम ऊत्साह रूप है बलवान् बैरी को जीत ऐसा कह कर आप सीता की उपजी है शंका जिनको सो चञ्चलचित्त होय जानकीकी तरफ़चले क्षणमात्र में आय देखें तो जानकी नहीं तब प्रथम तो विचारी कदाचित् मैं सुरति भङ्गभया हूं फिर निर्धारणकर देखें तो सीतानहीं तब आप हाय सीता ऐसा कह मूर्छा खाय धरती पर पडे सो धरती रामके मिलाप से कैसी होती भई जैसे भरतारके मिलाप से भार्य्या सोहै फिर सचेत होय वृक्षोंकी ओर दृष्टि धर प्रेमके भरे अत्यंत आकुल होय कहते भए हे देवी त कहां गई क्यों न बोले हो बहुत हास्यकर क्या वृक्षोंके आश्रय बैठी होय तो शीघ्र ही आवो कोप कर क्या मैं तो शीघ्र ही तुम्हारे निकट आया हेप्राणवल्लभे यहतुम्हारा कोप हमें दुखका कारणहै इसभांति विलाप करते फिरे हैं सो एक नीची भूमिमें जटायु को कण्ठगति प्राण देखा तब आप पक्षी को देख अत्यन्त खेदखिन्न होय इसके समीप बैठे नमोकारमंत्र दिया और दर्शन ज्ञान चारित्र तप ये चार आराधना सुनाई अरिहंत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिद्ध साधु केवली प्रणीत धर्मका शरण लिवाया पत्नी श्रावकके व्रतका धरणहारा श्रीरामके अनुग्रहसे समाधि मरण कर स्वर्ग के विषे देव भया परंपराय मोक्ष जायगा, पक्षीके मरणके पीछे आप यद्यपि ज्ञानरूपहैं तथापि चारित्र मोहके वश होय महा शोकवन्त अकेले वनमें प्रिया के वियोगके दाह कर मूर्छा खाय पड़े, फिर सचेत होय महा व्याकुल महासती सीता को ढूंढते फिरें निराश भए दीन वचन कहें जैसे भूतके आवेश कर युक्त पुरुष वृथा अलाप करे छिद्र पाय महाभीम वनमें काहू पापीने जानकी हरी सो बहुत विपरीत करी मुझे मारा अब जो कोई मुझे प्रिया मिलावे और मेरा शोकहरे उससमान मेरा परम बांधवनहीं हो वन के वृक्ष हो तुम जनकसुता देखी चंपा के पुष्प समान रंग कमल दल लोचन सुकुमार चरण निर्मल स्वभाव उत्तम चाल चित्तकी उत्सव करणहारी कमलके मकरंद समान सुगन्ध मुखका स्वांस स्त्रियोंके मध्य श्रेष्ठ तुमने पूर्व देखीहोय तो कहो इसभांति वनके वृक्षोंसे पूछे हैं सो वे एकेन्द्री वृक्ष कहां उत्तर देवें तब राम सीताके गुणोंसे हराहै मन जिनका फिर मूर्छाखाय धरतीपर पड़े फिर सचेतहोय महा क्रोधायमान वज्रा वर्त धनुषहाथमें लिया फिणच चढ़ाई टंकोर किया सो दशोंदिशा शब्दायमानभई सिंहोंको भयका उपजावनहारा नरसिंहने धनुषका नाद किया सो सिंह भागगए और गजोंके मद उतरगए तब धनुष उतार अत्यन्त विषादको प्राप्तहोय बैठकर अपनी भूलका सोच करतेभए, हाय हाय मैं मिथ्या सिंहनाद के श्रवणकर विश्वासमान वृथा जाय प्रिया खोई जैसे मूढजीव कुश्रुतका श्रवण सुन विश्वासमान अविवेकी होय शुभगतिको खोवे सो मूढके खोयबेका आश्चर्य नहीं परन्तु मैं धर्मबुद्धि वीतराग के मार्ग का श्रद्धानी असमझहोय असुरकी मायामें मोहित हुवा यह आश्चर्यकी बातहै जैसे इस भव वनमें अत्यंत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुर्लभ मनुष्यकी देह महापुण्य कर्मकर पाई उसे वृथा खोवे सो फिर कब पावे और त्रैलोक्य में दुर्लभ महारत्न ताहि समुद्रमें डारे फिर कहां पावे तैसे वनितारूप अमृत मेरेहाथसे गया फिर कौन उपायसे पाइये इस निर्जन वनमें कौनको दोषदूं मैं उसे तजकर भाईपै गया सो कदाचित कोपकर आर्याभई होय इस अरण्य वनमें मनुष्य नहीं कौनको जाय पूछें जो हमको स्त्रीकी वार्ता कहे ऐसा कोई इसलोक में दयावान श्रेष्ठ पुरुषहै जो मुझे सीता दिखावे वह महासती शीलवन्ती सर्व पापरहित मेरेहृदयको वल्लभ मेरा मनरूप मंदिर उसके विरहरूप अग्निसे जरे है सो उसकी वार्ता रूप जलको दानकर कौन बुझावे ऐसा कहकर परम उदास धरती की ओर है दृष्टि जिनकी बारम्बार कछु इक विचारकर निश्चल होय तिष्ठे एक चकवीका शब्द निकटही सुना सो सुनकर उसकी ओर निरखा फिर विचारी इसगिरि का तट अत्यंतसुगंधहोय रहाहै सो इसही ओर गई होय अथवा यह कमलोंका वनहै यहां कौतूहलके अर्थ गईहोय आगे इसने यह वन देखाथा सो स्थानक मनोहरहै नानाप्रकारके पुष्पोंकर पूर्णहै कदाचित वहां क्षणमात्र गईहोय सो यह विचार आप वहां गए वहांभी सीताको न देखा चकवी देखी तब विचारी वह पतिव्रता मेरेविना अकेली कहां जाय फिर व्याकुलताको प्राप्तहोय जायकर पर्वतसे पूछते भए। हे गिरिराज तू अनेकधातुओंसे भराहै मैं राजा दशरथका पुत्र रामचन्द्र तुझे पूछूंहूं कमल सारिखेनेत्र जिसके सो सीतामेरे मनकी प्यारी हंसगामिनी सुन्दर स्तनोंके भारसे नम्रीभूतहै अंग जिसका किंदूरीसमान अधर सुन्दर नितंबसो तुमकहूं देखी वहकहांहै तब पहाड़क्या जवाबदेय इनके शब्दसे गूंजा। तब आप जानी कछु इसने शब्द कहा जानिएहै इसने न देखी वह महासती काल प्राप्तभई यह नदी प्रचंड तरंगों

For Private and Personal Use Only

की धरणहारी अत्यन्त वेगको धरे अविवेकवन्ती इसने मेरी कांता हरी जैसे पापकी इच्छा विद्याको हरे अथवा कोई क्रूर सिंह क्षुधातुर भख गयाहोय वह धर्मात्मा साधुवर्गोंकी सेवक सिंहादिक के देखते ही नखादि के स्पर्श बिनाही प्राण देय। मेरा भाई भयानक रणमें संग्राममें है सो जीवनेका संशय है यह संसार असारहै और सर्व जीवराशि संशय रूपही हैं अहो यह बडा आश्चर्यहै जो मैं संसार का स्वरूप जानूंहूं और दुखसे शून्यहोय रहाहूं। एक दुख पूरा नहीं परे है और दूजा और आवे है इसलिये जानिए है कि यह संसारदुखका सागरही है जैसे खोडे पगको खंडित करना और दाहे मारेको भस्मकरना और डिगे को गर्तमें डारना रामचंद्रजीने वनमें भ्रमणकर मृगसिंहादिक अनेक जन्तु देखे परंतु सीता न देखी तब अपने आश्रम आय अत्यन्त दीनवदन धनुष उतार पृथिवीमें तिष्ठे बारम्बार अनेक विकल्प करते क्षण एकनिश्चलहोय मुखसे पुकारतेभए। हे श्रेणिक ऐसे महा पुरुषोंका भी पूर्वोपार्जित अशुभके उदय से दुख होयहै ऐसा जानकर अहो भव्यजीव हो सदा जिनवरके धर्ममें बुद्धि लगावो संसारसे ममता तजो जे पुरुष संसारके विकारसे पराङ्मुखहोय और जिन वचनको नहीं आराधे वे संसारके विषे शरणरहित पापरूप वृक्षके कटुक फल भोगवे हैं कर्मरूप शत्रुके आतापसे खेद खिन्न हैं ॥ इति पैंतालीसवां पर्व संपूर्णम्

अथानन्तर लक्ष्मणके समीप युद्ध में खरदूषणका शत्रु विराधित नामा विद्याधर अपने मंत्रीऔरशूरवीरों सहित शस्त्रोंकर पूर्ण आया सो लक्ष्मणको अकेला युद्धकरता देख महा नरोत्तम जान अपने स्वार्थकी सिद्धि इनसे जान प्रसन्न भया महा तेजकर देदीप्यमान शोभताभया वाहन से उतर गोड़े धरती लगाय हाथ जोड़ सीसन्निवाय अति नम्रीभूत होय परम विनय से कहता भया हे नाथ मैं आप का भक्त हूं कछु इक मेरी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीनती सुनो तुम सारिख दुख का क्षय करनहारे हो उसने आधी कही आप सारी समझगए उस के मस्तकपर हाथ धर कहते भए तूं डर मत हमारे पीछे खड़ा रह तब वह नमस्कार कर अति आश्चर्य को प्राप्त होय कहता भया हे प्रभो यह खरदूषण शत्रु महाशक्ति को धरे है इसे आप निवारो और सेना के योधावों से मैं लड़ूंगा ऐसा कह खरदूषणके योद्धाओं से विराधित लड़ने लगा दौड़ कर तिनके कटक पर पड़ा अपनी सेना सहित झलझलाट करे हैं आयुधों के समूह विराधित तिन से प्रगट कहता भया मैं राजा चन्द्रोदय का पुत्र विराधित घने दिनों में पिता का वैर लेने आया हूं युद्ध का अभिलाषी अब तुम कहां जावो हो जे युद्ध में प्रवीण हो तो खड़े रहो, मैं ऐसा भयंकर फल दूंगा जैसा यम देय ऐसा कहा तब तिन योद्धावोंके और इन केमहासंग्राम भया अनेक सुभट दोनों सेना के मारे गए पियादे प्यादेयों से घोड़ों के असवार घोड़ों के असवारों से हाथीयों केअसवार हाथीयों के असवारों से रथी रथीयों से परस्पर हर्षित होय युद्ध करते भए। वह उसे बुलावे वह उसे बुलावे इस भान्ति परस्पर युद्ध कर दशों दिशा को बाणों से आच्छादित करते भए॥

अथानंतर लक्ष्मण और खरदूषण का महायुद्ध भया जैसा इन्द्र और असुरेन्द्रके युद्ध होय उस समय खरदूषण क्रोध कर मण्डित लक्ष्मणसे लाल नेत्र कर कहता भया। मेरा पुत्र निर्वैर सो तैंने हणा और हे चपल तैंने कांता के कुचमर्दन किये सो मेरी दृष्टि से कहां जायगा आज तीक्ष्ण बाणों से तेरे प्राण हरूंगा जैसे कर्म किए हैं तिनका फल भोगवेगा, हे क्षुद्र निर्लज्ज पर स्त्री संग लोलुपी मेरे सन्मुख आय कर परलोक जा। तब उस के कठोर बचनों से प्रज्वलित भयाहैमन जिसका सो लक्ष्मण बचन कर सकल आकाश को पूरताहुवा कहता भया। अरे क्षुद्र वृथा क्यों गाजे है जहां तेरा पुत्र गया वहां तुझे पठाऊंगा ऐसा कहकर आकाश के विषे

For Private and Personal Use Only

तिष्ठता जो खरदूषण उसे लक्ष्मणने रथरहित किया और उसका धनुषतोड़ा और ध्वजाउड़ायदई औरप्रभा रहित किया तब वह क्रोधकर भरा पृथिवीके विषे पड़ा जैसे क्षीणपुण्य भए देव स्वर्ग से पड़े फिर महा सुभट खडगलेय लक्ष्मणपर आया तब लक्ष्मण सूर्यहास खडगलेय उसके सन्मुख भया इन दोनों में नानाप्रकार महायुद्ध भया देव पुष्पवृष्टि करते भए, और धन्य २ शब्द करतेभए फिर महा युद्धके विषे सूर्यहास खडगकर लक्ष्मणने खरदूषणका सिर काटा सो निर्जीव होय खरदूषण पृथिवी पर पड़ा मानों स्वर्गसे देव गिरा सूर्यसमानहै तेज जिसका मानों रत्न पर्वतका शिखर दिग्गजने ढाहा।

अथानन्तर खरदूषणका सेनापति दूषण विराधितको रथ रहित करनेको आरम्भताभया तब लक्ष्मण ने बाणसे मर्मस्थलको घायल किया सो घूमताभूमिमें पड़ा और लक्ष्मणने खरदूषणका सकल समुदाय और कटक और पाताल लंकापुरी विराधितको दीनी और लक्ष्मण अतिस्नेहका भरा जहां राम तिष्ठे हैं वहां आया आनकर देखे तो आप भूमिमें पड़े हैं और स्थानकमें सीता नहीं तब लक्ष्मणने कही हे नाथ उठो कहां सोवो हो जानकी कहां गई, तब राम उठकर लक्ष्मणको घावरहित देख कछु इक हर्षको प्राप्तभए। लक्ष्मणको उरसे लगाया और कहतेभए। हे भाई मैं न जानूं जानकी कहां गई कोई हर लेयगया अथवा सिंह भषगया बहुत हेरी सो न पाई अति सुकुमार शरीर उदवेगकर विलयगई तब लक्ष्मण विषादरूप होय क्रोधकर कहताभया। हे देव सोचके प्रबन्ध कर क्या यह निश्चय करो कोई दुष्ट दैत्य हर लेगयाहै जहां तिष्ठे है सो लावेंगे आप संदेह न करो नानाप्रकारके प्रिय वचनों से रामको धीर्य बंधाय और निर्मलजलसे सुबुद्धिने रामका मुख धुवाया इसी समय विशेष शब्द सुन राम ने

पूछा यह शब्द काहेका है तब लक्ष्मणने कही हे नाथ यह चन्द्रोदय विद्याधरका पुत्र विराधित इसने रणमें मेरा बहुत उपकार किया सो आपके निकट आयाहै इसकी सेनाका शब्दहै इस भांति दोनों वीरवार्त्ता करे हैं और वह बड़ी सेनासहित हाथ जोड नमस्कारकर जयजय शब्द कहे अपने मंत्रियों सहित बिनती करताभया आप हमारे स्वामी हो हम सेवक हैं जो कार्य होय उसकी आज्ञा देवो तब लक्ष्मण कहता भया हे मित्र किसी दुराचारी ने मेरेप्रभुकी स्त्री हरी है इस बिना रामचन्द्र जो शोक के वशी होय कदाचित प्राणको तजें तो मैंभी अग्नि में प्रवेश करूंगा उनके प्राणोंके आधार मेरेप्राण हैं यह तू निश्चय जान इस लिये यह कार्य कर्तव्य है भले जान सो कर तब यह बात सुन वह अति दुखितहोय नीचा मुख कर रहा और मन में बिचारता भया एते दिन मोहि स्थानक भ्रष्ट हुए भए नाना प्रकार बन विहार किया और इन्होंने मेरा शत्रु हना स्थानक दिया इनकी यह दशाहै मैं जो २ विकल्प करूंहूं सो योंही वृथा जायहैं यह समस्त जगत कर्माधीनहै तथापि मैं कछू उद्यम कर इनका कार्य सिद्ध करूं ऐसा विचार अपने मंत्रियों से कहा पुरुषोत्तम की स्त्री रत्न पृथिवीपर जहां होय तहां जल स्थल आकाशपुर बन गिरि ग्रामादिक में यत्नकर हेरो यह कार्यभए मन वांछित फल पावोगे ऐसी राजा विराधित की आज्ञा सुन यश के अर्थी सर्व दिशाको विद्याधर दौड़े ।

अथानन्तर एक रत्नजटी विद्याधर अर्कंटी का पुत्र सो आकाश मार्ग में जाताथा उस ने सीता के रुदन की हाय राम हाय लक्ष्मणयहध्वनि समुद्र के ऊपर आकाश में सुनी तब रत्नजटी वहां आय देखे तो रावणके विमान में सीता बैठी बिलाप करे है तब सीताको विलाप करती देख रत्नजटी क्रोधका भरा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रावण सों कहता भया हे पापी दुष्ट विद्याधर ऐसा अपराध कर कहां जायगा यहभामण्डल की बहन है रामदेव की राणी है मैं भामंडल का सेवक हूं हे दुर्बुद्धि जिया चाहे तो इसे छोड तबरावण अति क्रोध कर युद्ध को उद्यमी भया फिर विचारी कदाचित युद्धके होते अति विह्वल जो सीतासो मरजावेतो भला नहीं इस लिये यद्यपि यह विद्याधर रंक है तथापि उपाय स मारना ऐसाविचार रावण महाबलीने रत्न जटी की विद्याहर लीनी सो रत्नजटी आकाश से पृथिवीपर पड़ा मन्त्रके प्रभावसे धीरा २ स्फुलिंगेकीन्याई समुद्र के मध्य कंपद्वीपमें आय पड़ा आयुकर्मके योग्यसे जीवता बचा जैसे वणिक का जहाजफटजाय और जीवता बचे सो रत्नजटी विद्याखोय जीवता बचा सो विद्या तो जातीरही जिसकर विमान में वैठ घर पहुंचे सो अत्यन्त स्वासलेता कम्बूपर्वतपर चढादिशा का अवलोकन करताभया समुद्रकी शीतल पवनकर खेद मिटा सो वनफल खाय कम्बूपर्वतपर रहे और जे विराधितके सेवक विद्याधर सब दिशाको नानाभेष कर दौड़े थे वे सीताको न देख पीछे आये सो उनका मलिन मुख देखरामने जानी सीता इनकी दृष्टिनआई तब राम दीर्घ स्वांस नांख कहते भए हे भले विद्याधर हो तुमने हमारे कार्य के अर्थ अपनी शक्ति प्रमाण अति यत्न किया परन्तुहमारे अशुभ का उदय इस लिए अबतुम सुखसे अपने स्थानक जावो हाथ से बड़वानल में गया रत्न फिर कहां दीखे कर्म का फल है सो अवश्य भोगना हमारा तुम्हारा निवारा न निवरे हम कुटम्बसे छूटे वनमें पैठे तोभी कर्मशत्रुको दया न उपजी इसलिये हमनेजानी हमारे असाता का उदय है सीता भी गई इससमान और दुखक्या होयगा इसभान्ति कहकर राम रोवनेलगे, महाधीर नरों के अधिपति तब बिराधित धीर्य बंधायवे विषे पंडित नमस्कार कर हाथ जोड़ कहता भया हे देव आप एता बिषाद क्यों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करो थोड़े ही दिन में आप जनक सुता को देखोगे, कैसी है जनकसुता निःपाप है देह जिसकी हे प्रभो यह शोकमहा शत्रु है शरीरका नासकरें औरवस्तुकी क्याबात इसलिये आप धीर्य अंगीकार करो यह धीर्य ही महापुरुषों का सर्वस्व है आप सारीखे पुरुष विवेक के निवास हैं धीर्यवन्त प्राणी अनेक कल्याण देख और आतुर अत्यन्त कष्ट करे तो भी इष्टवस्तुको न देखे और यह समय विषादका नहीं आप मन लगाय सुनों विद्याधरों का महाराजा खरदूषण मारा सो अब इसका पारिपाक विषम है सुग्रीव किहकंधापुर का धनी और इन्द्रजीत कुम्भकर्ण त्रिशिर अक्षोभ भीम क्रूरकर्मा महोदर इनको आदि दे अनेक विद्याधर महा योधा बलवन्त इस के परममित्र हैं सो इस के मरण के दुःख से क्रोध को प्राप्त भए होंगे ये समस्त नाना प्रकार युद्ध में प्रवीण हैं हजारां ठौर रण में कीर्ति पाय चुके हैं और वैताड़ पर्वत के अनेक विद्याधर खरदूषण के मित्रहैं और पवनञ्जय का पुत्र हनूमान् जाहि लखे सुभट दूर हो टरें उस के सन्मुख देव भी न आवें सो खरदूषणका जमाई है इसलिये वह भी इसके मरणका रोष करेगा इसलिये यहां बन में न रहना अलंकारोदय नगर जो पाताललंका उसमें विराजिये और भामंडल को सीता के समाचार पठाइये वह नगर महादुर्गम है वहां निश्चल होय कार्य का उपाय सर्वथा करेंगे इसभान्ति बिराधित ने विनती करी तब दोनों भाई चार घोड़ों का रथ तापर चढ़कर पाताललंका को चले सो दोनों पुरुषोत्तम सीता बिना न शोभते भए जैसे सम्यक्‌दृष्टि बिना ज्ञान चारित्र न सोहैं चतुरंग सेना रूप सागर से मंडित दण्डक बन से चले, विराधित आगाऊ गया वहां चन्द्रनखा का पुत्र सुन्दर सो लड़ने को नगर के बाहर निकसा उसने युद्ध किया सो उसको जीत नगर में प्रवेशकिया देवोंके नगर समान वह नगर रत्नमई

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वहां खरदूषण के मंदिर में विराजे सो महा मनोहर सुरमन्दिर समान वह मन्दिर वहां सीता बिना रंचमात्र भी विश्राम को न पावते भए सीता में है मन राम का सो राम को प्रियाके समीप कर बन भी मनोग्य भासता था अब कांताके वियोगकर दग्ध जो राम तिनको नगर मन्दिर विन्ध्याचलके बनसमान भासैं।

अथानन्तर खरदूषण के मन्दिर में जिनमन्दिर देखकर रघुनाथने प्रवेश किया वहां अरिहंत की प्रतिमा देख रत्नमई पुष्पोंकर अर्चा करी क्षण एक सीता का संताप भूल गये जहां जहां भगवान् के चैत्यालय थे वहां वहां दर्शन किया प्रशान्त भई है दुःख की लहर जिनके रामचन्द्र खरदूषण के महल में तिष्ठे हैं और सुन्दर अपनी माता चन्द्रनखा सहित पिता और भाई के शोक कर महाशोक सहित लंका गया। यहपरिग्रह विनाशीकहै और महादुःख का कारणहै विघ्न कर युक्त है इसलिये हे भव्यजीव हो तिन विषे इच्छा निवारो यद्यपि जीवोंके पूर्व कर्म के सम्बन्ध से परिग्रह की अभिलाषा होय है तथापि साधुजन के उपदेश से यह तृष्णा निवृत्त होयहै जैसे सूर्य के उदयसे रात्रिनिवृत्त होयहै॥ इति छयालीसवां पर्व संपूर्णम्॥

अथानन्तर रावण सीता को लेय ऊंचे शिखरपर तिष्ठा धीरे धीरे चालता भया जैसे आकाश में सूर्य चले शोककर तप्तायमान जो सीता उसका मुख कमल कुमलाय मान देख रतिके राग कर मूढ़ भयाहै मन जिसका ऐसा जो रावण सो सीता के चौगिर्द फिरे और दीनवचन कहे. हे देवी काम के बाणकर मैं हता जाऊं हूं सो तुझे मनुष्य की हत्या होयगी हे सुन्दरी यह तेरा मुखरूप कमल सर्वथा कोप संयुक्त है तो भी मनोग्य से अधिक मनोग्य भासे है प्रसन्न होय एक वेर मेरी ओर दृष्टिधर देख तेरे नेत्रों की कांति रूप जल कर मोहि स्नान कराय और जो कृपा दृष्टि कर नहीं निहार तो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपने चरण कमल से मेरा मस्तक तोड़ हाय हाय तेरी क्रीड़ा के बन में अशोक वृक्ष ही क्यों न भया जो तेरे चरण कमल की पगथली की घात अत्यन्त प्रशंसा योग्य सो मुझे सुलभ होती भावार्थ-अशोक वृक्ष स्त्री के पगथली के घात से फूले। हे कृशोदरी विमानके शिखर पर तिष्ठी सर्व दिशा देख मैं सूर्य के ऊपर आकाश में आया हूं मेरु कुलाचल और समुद्र सहित पृथिवी देख मानों काहू सिलावटने रची है ऐसे वचन रावणने कहे तब वह महासती शीलका सुमेरु पटके अन्तर अरुचि के अक्षर कहती भई हे अधम दूर रहो मेरे अंग का स्पर्श मत करे और ऐसे निन्द्य वचन कभी मत कहे रे पापी अल्प आयु कुगति गामी अपयशी तेरे यह दुराचार तुझे ही भयकारी हैं परदारा की अभिलाषा करता त महा दुःख पावेगा जैसे कोई भस्म कर दबी अग्नि पर पांव धरे तो जरे तैसे तू इन कर्मोंसे बहुतपछतावेगा तू महामोहरूप कीचसे मलिन चित्त है सो तुझे धर्मका उपदेश देना बृथा है जैसे अन्ध के निकट नृत्य करे हे क्षुद्र जे पर स्त्रीकी अभिलाषा करे हैं वे इच्छामात्रही पाप को बांधकर नरक में महा कष्टको भोगे हैं इत्यादि रुक्ष वचन सीता ने रावण से कहे तथापि कामकर हता है चित्त जिसका सो अविवेक से पीछा न भया और खरदूषणको जे मदद गएथे परम हितु शुक हस्त प्रहस्तादिक वे खरदूषण के मूबे पीछे उदास होय लंका आए सो रावण काहूकी ओर देखे नहीं जानकी को नानाप्रकार के वचनकर प्रसन्न करे सो वह कहां प्रसन्न होय जैसे अग्नि की ज्वाला को कोई पीय न सके और नाग के माथे की मणिको न लेयसके तैसे सीताको कोई मोह न उपजायसके फिर रावण ने हाथ जोड़ सीस निवाय नमस्कार कर नानाप्रकार के दीनताके बचन कहे सो सीताने इस

के वचन कछू न सुने फिर मन्त्री आदि सन्मुख आए सर्व दिशा से सामन्त आए राक्षसोंका पतिजो रावण सो अनेक लोकोंकर मण्डित होताभया लोक जयजयकार शब्द करतेभए मनोहर गीत नृत्य वादित्र होतेभये रावणने इन्द्र की न्यांई लंकामें प्रवेश किया सीता चित्तमें चितवतीभई ऐसा राजा अमर्यादा की रीति करे तब पृथिवी कौनके शरण रहे जब रामचन्द्रकी कुशल क्षेम की वार्ता मैं न सुनूं तबलग खान पानका मेरे त्याग है रावण देवारण्य नामा उपवन स्वर्गसमान परम सुन्दर जहां कल्पवृक्ष समान वृक्ष वहां सीताको मेलकर अपने मन्दिर गया उसही समय खरदूषण के मरण के समाचार आए सो महा शोककर रावणकी अठारा हजार राणी ऊंचे स्वरकर विलाप करतीभई और चन्द्रनखा रावणकी गोद में लोटकर अति रुदन करतीभई हाय मैं अभागिनी हतीगई मेरा धनी मारा गया मेहके झरने समान रुदनकिया अश्रूपात का प्रवाह बहा पति और पुत्र दोनोंके मरणके शोकरूप अग्नि कर दग्धायमानहै हृदय जिसका सो इसे विलाप करती देख इसका भाई रावण कहताभया हे वत्से रोयबेकर क्या इस जगत् के प्रसिद्ध चरित्रको क्या न जाने है विना काल कोई वज्रसे भी हता न मरे और जब मृत्युकाल आवे तब सहजही मरजाय कहां ये भूमिगोचरी राम और कहां तेरा भरतार विद्याधर दैत्यों का अधिपति खरदूषण ताहि वे मार यह कालही का कारण है अब जिसने तेरा पति मारा ताको मैं मारूंगा इस भांति बहिनको धीर्य बंधाय कहताभया अबतू भगवानका अर्चनकर श्राविका के व्रत धार चन्द्रनखा को ऐसा कह कर रावणमहल में गया सर्पकी न्यांई निश्वास नाखता सेजपर पड़ा वहां पटराणी मन्दोदरी आय कर भरतार को व्याकुल देख कहतीभई हे नाथ खरदूषणके मरणकर अति व्याकुलभएहो सो तुम्हारे सुभटकुल

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में यह बात उचित नहीं जे शूरवीर हैं तिनके मोटी आपदा में विषाद नहीं तुम वीराधिवीर क्षत्री हो तुम्हारे कुलमें तुम्हारेपुरुष और तुम्हारे मित्र रण संग्राम में अनेक क्षयभये सो कौन२का शोककरोगो तुमने कभी किसीका शोक न किया अब खरदूषणका एता सोच क्यों करो हो पूर्वे इन्द्रके संग्राम विषे तुम्हारा काका श्रीमाली मरणको प्राप्तभया और अनेक बांधव रण में हते गए तुम काहू का कभी शोक न किया आज ऐसा सोच दृढ़ क्यों पड़ा है जैसा पूर्व कभी हमारी दृष्टि न पड़ा तब रावण निश्वास नाख बोला हे सुन्दरी सुन मेरे अन्तःकरण का रहस्य तुझे कहूं तू मेरे प्राणों की स्वामिनी है और सदामेरी बांछापूर्ण करैहै जो तू मेरा जीतव्य चाहे है तोकोप मतकरमैं कहूं सो कर सर्ववस्तु का मूल प्राण हैं तब मन्दोदरीने कही जो आप कहो सो मैं करूं तब रावण इसकी सलाह लेय विलखाहोय कहताभया हेप्रिये एक सीतानामा स्त्री स्त्रियोंकी सृष्टिमें ऐसी और नहीं सो वह मुझे न इच्छे तो मेरा जीवना नहीं मेरी लावण्यतारूप यौवन माधुर्यता सुन्दरता सुन्दरीको पायकर सफल होय तब मन्दोदरी इसकी दशा कष्टरूप जान हंस कर दान्तों की कान्तिरूप चान्दनी को प्रकाशती सन्ती कहती भई हे नाथ यह बड़ाआश्चर्य है तुम सारीखे प्रार्थनाकरे और वह तुम को न इच्छे सो मन्दभागिनी है इससंसार में ऐसी कौनपरम सुन्दरी है जिस का मन तुम्हारे देखे खण्डित न होय और मन मोहित न होय अथवा वह सीता कोई परम उदय रूप अद्भुत त्रैलोक्य सुन्दरी है जिस को तुम इच्छो हो और वह तुम को नहीं इच्छे है ये तुम्हारे कर हस्ती की सुण्ड समान रत्नजड़ित बाजूओं से युक्त उन से उर से लगाय बलात्कारे क्यों न सेवो तब रावण ने कहीउस सर्वांग सुन्दरीको मैं बलात्कार नहीं गहूं उसका कारण सुन अनन्तवीर्यकेवलीके निकट

For Private and Personal Use Only

मैं एकव्रत लिया है वे भगवान देव इन्द्रादिक कर वन्दनीक ऐसा व्याख्यान करते भए कि इस संसारमें भ्रमण करते जीव परम दुखी तिनके पापों थकी निवृत्ति निर्वाणका कारण है एक भी नियम महा फलको देय है और जिन के एक भी व्रत नहीं वे नर जर्जरे कलश समान निर्गुण हैं जिनके मोक्ष का कारण कोई नियम नहीं तिन मनुष्यों में और पशुओं में कछू अन्तर नहीं इस लिये अपनी शक्ति प्रमाण पापों को तजो सुकृतरूप धन को अंगीकारकरो जाते जन्मके आंधेकी न्याईं संसाररूप अन्धकूप में न परो इस भान्ति भगवान के मुखरूप कमलसे निकसे वचनरूप अमृत सो पीयकर कै यक मनुष्य तो मुनिभए कै यक अल्प शक्ति अणुव्रतका धारणकर श्रावकभए कर्मके सम्बन्धसे सब की एकतुल्य शक्ति नहीं वहां भगवान केवली के समीप एक साधु मोसे कृपाकर कहते भए हे दशानन कछु नियम तुमभी लेहु तू दया धर्मरूप रत्न नदी में आया है सो गुण रूप रत्न के विन खाली न जाय ऐसा कहा तब मैं प्रणामकर देव असुर विद्याधर मुनि सबकी साक्षी व्रत लिया कि जो परनारी मुझे न इच्छे ताहि मैं बलात्कार न सेऊं हे प्राणप्रिये मैं विचारी मोसे रूपवान नर को देखके ऐसी कौन नारी है जो मान करे इस लिये मैं बलात्कार न सेऊं राजाओं की यही रीति है जो वचन कहें सो निवाहें अन्यथा महादोष लागे सो मैं इस लिये प्राण तजूं तो पहिले सीता को प्रसन्न करो घरके भस्म भए पीछे कुवां खोदना वृथा है तब मन्दोदरी रावणको विह्वल जान कहती भई हे नाथ तुम्हारी आज्ञाप्रमाण ही होयगा ऐसा कह देवारमण नामा उद्यान में गई और उसकी आज्ञा पाय रावण की अठारह हजार राणी गई मन्दोदरी जायकर सीता को इस भान्ति कहती भई हे सुन्दरि हर्ष के स्थानक में कहां विषाद कर रही है जिस स्त्री के रावण पति

सो जगत में धन्य है सर्व विद्याधरों का अधिपति सुरपति का जीतनहारा तीन लोक में सुन्दर उसे क्यों न इच्छे निर्जन बन के निवासी निर्धन शक्ति हीन भूमि गोचरी तिनके अर्थ कहा दुःख करे है सर्व लोक में श्रेष्ठ उसे अंगीकार कर क्यों न सुख करे अपने सुख का साधन कर इस में दोष क्या जो कछु करिये है सोअपने सुखको निमित्त करियेहै और मेरा कहाजोन करेगी तो जो कुछतेरा होनहारहै सोहोगा रावण महा बलवान् है कदाचित् प्रार्थनाभंग से कोप करे तो तेरा इस बात में अकारज ही है और राम लक्ष्मण तेरे सहाई हैं सो रावण केक्रोध किए उन का भी जीवना नहीं इसलिये शीघ्र ही विद्याधरोंकाजो ईश्वर उसे अंगीकार कर जिस के प्रसादसे परम ऐश्वर्यको पाय कर देवन कैसे सुख भोगु जबऐसा कहा तब जानकी अश्रुपात कर पूर्ण हैं नेत्र जिसके गदगद बाणी कर कहती भई हे नारी यह बचन तैंने सब ही विरुद्ध कहे तू पतिब्रता कहावे है पतिब्रतावों के मुखसे ऐसे बचन कैसे निकसें यह शरीर मेरा छिदजावे भिदजवे हता जावे परन्तु अन्यपुरुष को मैं न इच्छुं रूप कर सनत्कुमार समान होवे अथवा इंद्र समानहोवे तोमेरे कौन अर्थ मैं सर्वथा अन्य पुरुष को न इच्छुं तुम सब अठारह हजार राणी भेली होय कर आई हो सो तुम्हारा कहा मैं न करूं तुम्हारी इच्छा होय सो करो उसही समय रावण आया मदन के आताप से पीड़ित जैसे तृषातुर माता हाथी गंगाके तीर आवे तैसे सीता के समीप आय मधुर बाणी कर आदर से कहता भया हे देवी तू भय मत करे मैं तेरा भक्त हूं, हे सुन्दरि चित लगाय एक विनती सुन मैं तीन लोक में कौन बस्तु कर हीन जो तू मुझे न इच्छे, ऐसा कह कर स्पर्श की इच्छा करता भया तब सीता क्रोध कर कहती भई पापी परे जा मेराअंग मत स्पर्शो तब रावण कहता भया कोप और अभिमान तज प्रसन्नहो शची इंद्राणी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समान दिव्य भोगोंकी स्वामिनी हो तब सीता बोली, कुशीले पुरुषका बिभव मलसमानहै और शीलवंत हैं तिन के दरिद्र ही आभूषण हैं जे उत्तम वंश में उपजे हैं तिनके शीलकी हानिसे दोनोंलोक बिगरेहैं इसलिये मेरे तो मरणही शरण है तू पर स्त्रीकी अभिलाषा राखे है सो तेरा जीतव्य बृथा है जो शील पालता जीवे है उसही का जीतब्य सफल है इस भांति जब सीता ने तिरस्कारकिया तब रावणक्रोध कर मायाकी प्रबृत्ति करताभया राणी अठारा हजार सब चलीगई और रावण के भयसे सूर्य अस्तहोय गया मद झरती मायामई हाथियोंकी घटा आई यद्यपि सीता भयभीत भई तथापि रावणके शरण न गई फिर अग्नि के स्फुलिंगे बरसते भए और हलहलाट करें हैं जीभि जिनकी ऐसे सर्प आए तथापि सीता रावणके शरण न गई फिर महा क्रूर वानर फारेहैं मुख जिन्होंने उछल उछल आए अति भयानक शब्द करतेभए तथापि सीता रावण के शरण न गई और अग्निकी ज्वाला समान चपल जिह्वा जिनकी ऐसे मायामई अजगर तिन्होंने भय उपजाया सो तथापि सीता रावण के शरण न गई फिर अन्धकार समान श्याम ऊंचे ब्यंतर हुङ्कार शब्द करतेआए भय उपजावतेभये तथापि सीता रावणके शरण न गई इसभांति नानाप्रकार की चेष्टाकर रावणने उपसर्ग किये तथापि सीता न डरी रात्रि पूर्णभई जिन मन्दिरोंमें वादित्रोंके शब्द होतेभए द्वारों के कपाट उघरे मानों लोकों के लोचनही उघरे प्रात सन्ध्या कर पूर्व दिशा आरक्त भई मानों कुंकुम के रंगसे रंगीही है निशा का अन्धकार सर्ब दूर कर चन्द्रमा को प्रभा रहित कर सूर्य का उदय भया कमल फूले पक्षी बिचरने लगे प्रभात भया तब प्रात क्रिया कर विभीषणादि रावण के भाई खरदूषण के शोक कर रावण पै आए सो नीचा मुख किये आंसू डारते भूमि में तिष्ठे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उस समय पटके अन्तर शोक की भरी जो सीता उसके रुदनके शब्द विभीषणने सुने और सुन कर कहता भया यह कौन स्त्री रुदन करे है अपने स्वामी से बिछुरी है इसका शोक संयुक्त शब्द दुखको प्रकट दिखावे है ये विभीषण के शब्द सुन सीता अधिक रोवने लगी सज्जन को देख शोक बढ़ेही है विभीषण पूछताभया हे बहिन तू कौनहै तब सीता कहतीभई मैं राजा जनककीपुत्री भामण्डलकी बहिन रामकी राणी दशरथ मेरा सुसरा लक्ष्मण मेरा देवर सो खरदूषणसे लड़नेगया उसकेपीछे मेरा स्वामी भाई की मददगया मैं बनमें अकेली रही सो छिद्र देख इस दुष्टचित्तने हरी सो मेरा भरतार मो बिना प्राणतजे गा इसलिये हे भाई मुझे मेरे भरतार पै शीघ्रही पठावो ये वचन सीताके सुन विभीषण रावणसे विनय कर कहता भया हे देव यह परनारी अग्निकी ज्वाला है आशी विष सर्पके फण समान भयंकरहै आप काहेको लाए अब शीघ्रही पठाय देवो हे स्वामी मैं बाल बृद्ध हूं परन्तु मेरी विनती सुनो मुझे आपने अज्ञा करी थी कि उचित वर्ता हमसो कहाकरो इसलिये आप की आज्ञा से मैं कहूंहूं तुम्हारी कीर्ति रूप बेलिके समूहकर सर्व दिशा व्याप्त होय रही हैं ऐसा न होय जो अपयशरूप अग्नि कर यह कीर्ति लता भस्म होय यह पर दाराका अभिलाषी अयुक्त अति भयंकर महानिन्द दोनों लोकका नाशकरण हारा जिससे जगत् में लज्जा उपजे उत्तम जनों से धिक्कार शब्द पाइयेहै जे उत्तम जन हैं तिनके हृदय को अप्रिय ऐसा अनीतिकार्य कदाचित न कर्तव्य आप सकल वार्ता जानोहो सब मर्यादा आपही से रहें आप विद्याधरोंके महेश्वर यह बलता अंगारा काहेको हृदयमें लगावो जो पापबुद्धि परनारी सेवे हैं सो नरक में प्रवेश करे हैं जैसे लोहे का ताता गोला जलमें प्रवेश करे तैसे पापी नारकमें पड़े हैं ये वचन

For Private and Personal Use Only

विभीषणके सुनकर रावण बोले हे भाई पृथिवी पर जो सुन्दर वस्तुहै उसका मैं स्वामी हूं सब मेरीही वस्तु हैं पर वस्तु कहांसे आई ऐसा कहकर और बात करनेलगा फिर महानीतिका धारी मारीच मन्त्री चण एक पीछे कहताभया देखो यह मोह कर्मकी चेष्टा रावण जैसा विवेकी सर्व रीतिको जाने ऐसे कर्मकरे सर्वथा जे सुबुद्धि पुरुष हैं तिनको प्रभातही उठकर अपनी कुशल अकुशल चितवनी विवेक से न चूकना इस भांति निरपेक्ष भया महा बुद्धिमान् मारीच कहता भया तब रावण ने कछू पाछा जवाब न दिया उठ खड़ा रहा त्रैलोक्य मण्डन हाथी पर चढ़ सब सामन्तन सहित उपवन से नगरको चला बरछी, खड्ग, तोमर, चक्र, छत्र ध्वजा आदि अनेक वस्तु हैं हाथोंमें जिनके ऐसे पुरुष आगे चले जायहैं अनेक प्रकार शब्द होयहैं चंचलहै ग्रीवा जिनकी ऐसे हजारां तुरंगों पर चढ़े सुभट चलेजायहैं और कारी घटा समान मद झरते गाजते गजराज चलेजायहैं और नानाप्रकारकी चेष्टाकरते पयादे चलेजाय हैं हजारो वादित्र बाजे इस भांतिसे रावणने लंका में प्रवेश किया रावण के चक्रवर्ती की संपदा तथापि सीता तृणसेभी जघन्य जाने सीताका मन निष्कलंक यह लुभायबे को समर्थ न भया जैसे जल में कमल अलिप्त रहे तैसे सीता अलिप्त रहे सर्व ऋतु के पुष्पों से शोभित नाना प्रकार के वृक्ष और लतावों से पूर्ण ऐसा प्रमद नामा वन वहां सीता राखी वह वन नन्दन समान सुन्दर जिसे लखे नेत्र प्रसन्न होंय फुल्लगिरि के ऊपर यह वन सो देखे पीछे और ठौर दृष्टि न लगे जिसे लखे देवों का मन उन्माद को प्राप्त होय मनुष्योंकी क्या बात वह फुल्लगिरि सप्तवन से वेष्टित सोहे जैसे भद्रशालादि वनकर सुमेरु सोहे है ।

हे श्रेणिक सातही वन अद्भुतहैं उनके नाम सुन प्रकीर्णक, जनानन्द, सुखसेव्य, समुच्चय, चारणप्रिय, निबोध

प्रमद तिनमें प्रकीणक पृथिवी पर उसके ऊपर जनानन्द जहां चतुर जन क्रीड़ा करें और तीजा सुखसेव्य अतिमनोग्य सुन्दर वृक्ष और बेल कारी घटा समान सघन सरोवर सरिता वापिका अतिमनोहर और समुच्चय में सूर्य का आताप नहीं वृक्ष ऊंचे कहूं ठौर स्त्री क्रीड़ा कर कहूं ठौर पुरुष और चारणप्रिय बनमें चारण मुनि ध्यान करें और निबोध ज्ञान का निवास सबों के ऊपर अति सुन्दर प्रमद नामा बन उस के ऊपर जहां तांबूल को बेल केतिकियों के बीडे जहां स्नानक्रीड़ा करने को उचित रमणीक वापिका कमलों कर शोभित हैं और अनेक खणके महल और जहां नारंगी बिजोरा नारियल छुहारे ताड़ वृक्ष इत्यादि अनेक जाति के वृक्ष सर्व ही वृक्ष पुष्पों के गुच्छों कर शोभे हैं जिनपर भ्रमर गुञ्जार करे हैं और जहां बेलों के पल्लव मन्द पवन कर हले हैं जिस बन में सघनवृक्ष समस्त ऋतुवों के फल फूलोंकर युक्त कारी घटा समान सघन हैं मोरों के युगल कर शोभित है उस बन की बिभूति मनोहर बापी सहस्रदल कमलहै मुख जिनके सो नील कमल नेत्रों कर निरखे हैं और सरोवर में मन्द मन्द पवनकर कल्लोलउठे हैं सो मानों सरोवरी नृत्य ही करे हैं और कोयल बोले हैं सो मानों वचनालाप ही करे हैं और राज हंसनीयों के समूहकर मानों सरोवर हँसेही हैं बहुत कहिबे कर क्या वह प्रमदनामा उद्यान सर्व उत्सव का मूल भोगों का निवास नन्दनबन से भी अधिक उस बन में एक अशोकमालिनी नामा वापी कमलादि कर शोभित जिसके मणि स्वर्ण के सिवाण विचित्र आकार को धरे द्वार जिसके और मनोहर महल जिस के सुन्दर झरोखे तिनकर शोभित जहां नीझरने झरे हैं वहां अशोकवृक्ष के तले सीता राखी कैसी है सीता श्रीराम जी के वियोग कर महाशोक को धरे है जैसे इन्द्र से बिछुरी इन्द्राणी, रावण की आज्ञा से

अनेक स्त्री विद्याधरी खड़ी ही रहे नाना प्रकार के वस्त्र सुगन्ध आभूषण जिनके हाथमें भान्ति भान्ति की चेष्टा कर सीको प्रसन्न किया चाहें दिव्यगीत दिव्यनृत्य दिव्यवादित्र अमृत सारिखे दिव्यवचन उन कर सीता को हर्षित किया चाहें परन्तु यह कहां हर्षितहोय जैसे मोक्ष संपदाको अभव्य जीव सिद्ध न कर सके तैसे रावण की दूती सीता को प्रसन्न न कर सकीं। ऊपर ऊपर रावण दूती भेजे कामरूप दावानल की प्रज्वलित उसकर व्याकुल महाउन्मत्त भांति भांति अनुराग के वचन सीता को कह पठावे यह कछू जवाब नहीं देय दूती जाय रावण सो कहै हे देव वह तो आहार पानी तज बैठी है तुमको कैसे इच्छे वह काहू सो बात न करे निश्चल अंगकर तिष्ठे है हमारी ओर दृष्टिही नहीं धरे अमृत सेभी अति स्वादु दुग्धादि कर मिश्रित वहुत भांति नाना प्रकार के व्यञ्जन उसके मुख आगेधरे हैं सो स्पर्शेनहीं। यह दूतियों की बात सुन रावणखेद खिन्न होय मदनाग्निकी ज्वाला करे व्याप्त है अंग जिसका महा आरतरूप चिन्ता के सागर में डूबा कबहूं निश्वास नांषे कबहूं सोच करे सूक गया है मुख जिसका कभीकछु इकगावे कामरूप अग्नि कर दग्ध भयाहै हृदय जिसका कछुइकविचार निश्चल होयरहे अपना अंग भूमिमें डार देय फिर उठे सूनासा होयरहे बिनासमझे उठचले फिरपीछे आवे जैसे हस्तीसूण्ड पटके तैसेभूमिमेंहाथ पटकेसीता को बारबार चितारता आंखोंसे आंसू डारें कबहूं शब्द कर बुलावेकभी हुंकार शब्द करे कभी चुप होयरेह कभीवृथावकवादकेरकभी सीता२ बार २ बके कभी नीचा मुखकरनखोंसे धरती कुचरेकभी हाथ अपने हिय लगावे कभी बाहू ऊंचाकरे कभी सेजपर पड़े कभी उठबैठे कभी कमल हिये लगावे कभी दूर डारदेय कभी शृंगारकी काव्य पढ़े कभी आकाशकी ओर देखे कभी हाथसे हाथ मसले, कभी पगसे पृथिवी

हमो निश्वासरूप अग्निकर अधरश्याम होयगए कभी कह २ शब्दकरे कभी अपने केश बखेरे कभी बांधे कभी जंभाईलेय कभी मुखपर अंचल डारे कभी वस्त्रसन पहिरलेय सीताके चित्राम बनावे कभी अश्रु पातकर आर्द्र करे, दीनभया हाहाकार शब्दकरे मदन प्रहकर पीडित अनेक चेष्टा करे आशारूप इंधन कर प्रज्वलित जो कामरूप अग्नि उसकर उसका हृदयजरे और शरीर जले कभी मनमें चितवे कि मैं कौन अवस्थाको प्राप्तभया जिसकर अपना शरीरभी नहीं धार सकूंहूं मैं अनेक गढ़ और सागरके मध्य तिष्ठे बड़े बड़े विद्याधर युद्धविषे हजारों जीते और लोक विषे प्रसिद्ध जो इंद्र नामा विद्याधरसो बन्दीगृह विषे डारा अनेक युद्ध विषे जीते राजाओंके समूह अब मोहकर उन्मत्तभया मैं प्रमादके वश प्रवर्तो हूं गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे राजन रावणतो कामके वश भया और विभीषण महा बुद्धिमान मन्त्र विषे निपुण सब मंत्रियोंको इकट्ठाकर मंत्र विचारै कैसाहै विभीषण रावणके राज्यका भार जिसके सिरपर पड़ा है समस्त शास्त्रोंके ज्ञानरूप जलकर धोयाहै मनरूप मैल जिसने रावणके उस समान और हितु नहीं विभीषणको सर्वथा रावणके हितहीका चितवनहै सो मंत्रियोंसे कहताभया अहो वृद्धाहो राजाकी तो यह दशा अब अपने तांई क्या कर्तव्य सो कहो तब विभीषण के वचन सुन संभिन्नमति मंत्री कहता भया हम क्या करें सर्वकार्य बिगडा रावणकी दाहिनी भुजा खरदूषणथा सो मुवा और विराधित क्या पदार्थ सो स्यालसे सिंहभया लक्ष्मणके युद्ध विषे सहाई भया और वानरवंशी जेते वस रहे हैं इनका आकार तो कछु औरही और इनके चित्तमें कछु और ही जैसे सर्प ऊपरसो नरम माही विष और पवनका पुत्र जो हनुमान सो खरदूषणकी पुत्री अनंग-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुसमाका पतिसो सुग्रीवकी पुत्री परणाहे सुग्रीवकी पक्ष विशेषहै यह बचन संभिन्नमतिके सुन पंचमुख मंत्री मुसकाय बोला तुम खरदूषणके मरणकर सोच किया सो शूरबीरों की यही रीतिहै संग्राम विषे शरीर तजैं और एक खरदूषणके मरणकर रावणका क्या घट गया जैसे पवनके योगसे समुद्र से एक जलकी कणिका गई तो समुद्रका क्या न्यून भया और तुम औरोंकी प्रशंसा करो हो सो मेरे चित्तमें लज्जा उपजे है कहां रावण जगतका स्वामी और कहां वे बनवासी भूमिगोचरी लक्ष्मणके हाथ सूर्यहास खडग आया तो क्या और विराधित आय मिला तो क्या जैसे पहाड विषमहै और सिंहकर संयुक्तहै तोभी क्या दावानल नदहै सर्वथा दहै तब सहस्रमति मंत्री माथा हलाय कहताभया कहां ये अर्थहीन बातें कहो हो जिसमें स्वामीका हितहोय सो करना दूसरा स्वल्पहै और हम बडे हैं यह विचार बुद्धिमानका नहीं समयपाय एक अग्निका कणका सकलमंडलको दहै और अश्वग्रीव के महा सेनाथी और सर्व पृथिवी विषे प्रसिद्ध हुवाथा सो छोटेसे त्रिपृष्टिनेरणमें मारलिया इसलिये और यत्नतजलंका की रक्षाको यत्न करो। नगरीपरम दुर्गमकरो कोई प्रवेश न करसके महाभयानक मायामई यंत्रसर्व दिशों में बिस्तारो और नगरमें परचक्रका मनुष्य न आवने पावे और लोक को धीर्य बंधावो और सब उपाय कर रक्षा करो जिसकर रावण सुखको प्राप्तहोय और मधुर बचनकर नाना बस्तुओंकी भेटकर सीताको प्रसन्न करो जैसे दुग्ध पायवेसे नागनीं प्रसन्न करिये और बानर बंशी योधाओंकी नगर के बाहिर चौकी राखो ऐसे किए कोऊ परचक्रका धनी न आय सके और यहांकी बात परचक्रमें न जाय इस भांति गढ़का यत्न कीये तब कौन जाने सीता कौन ने हरी और कहां है सीता बिना राम निश्चय सेती

For Private and Personal Use Only

प्राण तजेगा जिसकी स्त्री जाय सो कैसे जीवे, और राम मूवा तब अकेला लक्ष्मण क्या करेगा अथवा राम के शोक कर लक्ष्मण अवश्य मरे न जीवे जैसे दीपक के गए प्रकाश न रहे और यह दोनों भाई मूए तब अपराधरूप समुद्र में डूबा जो विराधित सो क्या करेगा और सुग्रीव का रूप कर विद्याधर उस के घर में आया है सो रावण टार सुग्रीव का दुःख कौन हरे मायामई यंत्र की रखवारी सुग्रीव को सौंपी जिससे वह प्रसन्नहोय रावण इसके शत्रु का नाश करे लंका की रक्षाका उपाय मायामई यंत्र कर करना। यह मंत्र कर हर्षित होय सब अपने अपने घर गए विभीषण ने मायामई यंत्र कर लंका का यत्न किया और अधःऊर्धतिर्यक् सेकोऊ न आयसके नानाप्रकार कीविद्याकरलंका अगम्यकरी। गौत्तमगणधर कहै हैं हेश्रेणिक संसारी जीव सर्व ही लौकिक कार्य में प्रवृते हैं व्याकुलचित्त हैं और जे व्याकुलता रहित निर्मलचित्त हैं तिनको जिन वचन के अभ्यास टाल और कर्तव्य नहीं और जो जिनेश्वर ने भाषा है सो पुरुषार्थ बिना सिद्ध नहीं और भले भवितव्यके बिना पुरुषार्थ की सिद्धि नहीं, इसलिये जे भवजीव हैं वे सर्वथा संसारसे विरक्त होय मोक्षका यत्नकरो नर नारक देव तिर्यंच ये चार ही गति दुःखरूपहैं अनादि काल से ये प्राणी कर्मके उदयकर युक्त रागादि में प्रवृते हैं इसलिये इनके चित्तमें कल्यानरूप वचन न आवें अशुभ का उदय मेट शुभ की प्रवृति करे तब शोकरूप अग्नि कर तप्तायमान न होय ॥ इति सैंतालीसवां पर्व ॥

अथानन्तर किहकंधापुर का स्वामी जो सुग्रीव सो उसका रूप बनाय विद्याधर इसके पुरमें आया और सुग्रीव कांता के विरहकर दुखी भ्रमता संता वहांआया जहां खरदूषण की सेनाके सामंत मूए पड़े थे बिखरे रथ मूए हाथी मूए घोडे छिन्न भिन्न होय रहे हैं शरीर जिनके कैयक राजावों का दाह होय है

कैयक ससके हैं कईएकोंकी भुजा कटगई हैं कईओं की जंघा कटगई हैं । कईओं की आंत गिरपड़ा हैं कईओंके मस्तक पड़े हैं कइयोंको स्यालभषे हैं कइयोंको पच्ची चूंथे हैं कयकोंके परवार रोवे हैं कईयकोंको टांगि राखे हैं यह रण खेतका वृतांत देख सुग्रीवकिसी को पूछता भया तब उसने कही खरदूषण मारा गया तब सुग्रीवने खरदूषण का मरण सुन अति दु:ख किया मनमें चितवे है बड़ा अनर्थ भया वह महाबलवान् था जिससे मेरा सर्वदुःख निवृत्त होता सो कालरूप दिग्गजने मेरा आशारूप वृत्त तोड़ा मैं हीनपुण्य अब मेरा दुःख कैसे शांत होय यद्यपि बिना उद्यम जीव को सुख नहीं ताते दुःखदूर करबे का उद्यम अंगीकार करूं तब हनूमान पै गया हनूमान दोनों का समानरूप देख पीछे गया तब सुग्रीवने विचारी कौन उपायकरूं जिससे चित्तकी प्रसन्नता होय जैसे नवा चांद निरषे हर्ष होय जो रावणके शरणे जाऊं तो रावण मेरा और शत्रुका एकरूप जान शायद मुझे ही मारे अथवा दोनों को मार स्त्री हर लेय वह कामांध है कामांधका विश्वासनहीं । मंत्रदोष अपमान दान पुण्य वित्त शूरवीरता कुशील मनका दाह यहसब मित्र को नकहिए जोकहें खतापावें इसलिये जिसने संग्राममें खरदूषण को मारा उसहीके शरणे जाऊं वह मेरा दुःख हरे और जिसपै दुःख पड़ा होय सो दुखी के दुःख को जाने जिनकी तुल्य अवस्थाहोय तिनही में स्नेह होय सीता के वियोग का सीतापति ही को दुःख उपजा है ऐसा विचार कर विराधितके निकट अति प्रीतिकर दूत पठाया सो दूत जाय सुग्रीव के आगम का वृत्तांत विराधित से कहता भया सो विराधित सुन कर मनमें हर्षित भया विचारी बड़ा आश्चय है सुग्रीव जैसे महाराज मुझ से प्रीति करने को इच्छा करें सो बड़ोंके आश्रय से क्या न होय मैं श्रीरामलक्ष्मणका आश्रय किया इसलिये सुग्रीव से पुरुष मोसे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दम किया चाहे हैं सुग्रीव आया मेघकी गाज समान वादित्रों के शब्द होते आए सो पाताल लंकाके लोग सुनकर व्याकुल भए तब लक्ष्मण ने विराधित से पूछा वादित्रों का शब्द कौनका सुनिये है तब अनुराधा का पुत्र विराधित कहता भया हे नाथ यह वानर वंशियोंका अधिपति प्रेमका भरा तुम्हारे निकट आया है किहकंधापुर के राजा सूर्यरज के पुत्र पृथिवी पर प्रसिद्ध बड़ा बाली छोटा सुग्रीव सो बाली ने तो रावणको सिर न नवाया सुग्रीवको राज्य देय बैरागी भया सर्व परिग्रह तजे सुग्रीव निहकंटक राज्य करे उसके सुतारा स्त्री जैसे शची संयुक्त इन्द्र रमें तैसे सुग्रीव सुतारा सहितरमें जिसके अंगदनामा पुत्रगुण रत्नों कर शोभायमान जिसकी पृथिवीपर कीर्ति फैलरही है यह बात विराधित कहे है और सुग्रीव आयाही राम और सुग्रीव मिले रामको देख फूलगया है मुख कमल जिसका सुवर्णके आंगनमें बैठे अमृतसमान बाणी कर योग्य संभाषण करते भये सुग्रीव के संग जे वृद्ध विद्याधर हैं वे रामसो कहतेभए हे देव यह राजा सुग्रीव किहकंधापुरका पति महा बली गुणवान सत्पुरुषोंको प्रिय सो कोई एक दुष्ट विद्याधर माया कर इनका रूप बनाय इनको स्त्री सुतारा और राज्य लेयवे का उद्यमी भया है ये वचन सुन राम मन में चितवते भए यह कोई मुझसेभी अधिक दुखियाहे इसके बैठेही दूजापुरुष इसके घरमें आय घसाहै इसकेराज्य विभवहै परन्तु कोई शत्रुको निवारिवेसमर्थ नहीं लक्ष्मण ने समस्त कारण सुग्रीवके मन्त्री जामवंतको पूछा जामवंत सुग्रीव के मन तुल्य है तब वह मुख्य मन्त्री महा विनय संयुक्त कहता भया हे नाथ कामकी फांसी कर बेढ़ा वह पापी सुतारा के रूपपर मोहित भया मायामई सुग्रीवका रूप बनाय राजमन्दिर आया सो सुताराके महिल में गया सुतारा महा सती अपने सेवकोंसे कहतीभई यह कोई दुष्ट विद्याधर विद्यासे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेरे पतिका रूप बनाय आयाहै पापकर पूर्ण सो इसका आदर सत्कार कोई मतकरो वह पापी शंकारहित जायकर सुग्रीवके सिंहासनपर बैठा और उसही समय सुग्रीव भी आया और अपने लोकोंको चिंतावान देखे तब विचारी मेरे घरमें काहेका विषाद है लोक मलिन बदन ठौर ठौर भेले होय रहे हैं कदाचित् अंगद मेरुके चैत्यालयों की वन्दना के अर्थ सुमेरु गया न आयाहोय अथवा राणीने काहूपर रोस किया होय अथवा जन्म जरामरण कर भयभीत विभीषण वैराग्य को प्राप्त भया होय उसका सोच होय ऐसा विचारकर द्वारे आया रत्नमई द्वार गीत गान रहित देखा लोक सचिंत देखे मनमें विचारी यह मनुष्य औरही होगये। मन्दिर के भीतर स्त्री जनोंके मध्य अपना सा रूपकिए दुष्ट विद्याधर बैठा देखा दिव्य हार पहिरे सुन्दर वस्त्र मुकट की कांति में प्रकाश रूप तब सुग्रीव क्रोध कर गाजा जैसे वर्षाकाल का मेघ गाजे और नेत्रोंकी आरक्तासे दशोंदिशा आरक्त होय गई जैसी सांझफूले तब वह पाप कृत्रिम सुग्रीव भी गाजा जैसे माता हाथी मदकर विहल होय तैसा काम करविहल सुग्रीव सों लड़नेको उठा दोऊ होंठ डसते भ्रकुटी चढ़ाय युद्धको उद्यमी भए तब श्रीसमचन्द्रादि मन्त्रियोंने मनेकिए और सुतारा पटराणी प्रकट कहती भई यह कोई दुष्ट विद्याधर मेरे पतिका रूप बनाय आया है देह और बल और वपसोंकी कांति से तुल्य भया है परन्तु मेर भरतार में महापुरुषोंके लक्षण हैं सो इसमें नहीं जैसे तुरंग और खरकी तुल्यता नहीं तैसे मेरे पतिकी और इसकी तुल्यता नहीं इस भांति राणी सुतारा के वचन सुनकरभी कैएक मन्त्रियोंने न मानी जैसे निर्धनका वचन धनवान न माने सादृश्यरूपदेखकर हरागयाहै चित्तजिनका सो सब मन्त्रियोंने भेले होय मन्त्रकिया पंडितोंको इतनोंके वचनोंका विश्वास न करना बालक

अतिवृद्ध, स्त्री, मद्यपायी वेश्यासक्त इनके बचन प्रमाण नहीं और स्त्रियों को शीलकी शुद्धि राखनी शील की शुद्धि बिना गोत्रकी शुद्धि नहीं स्त्रीयोंको शील ही प्रयोजन है इसलिये राज लोकमें दोनों ही न जानेंपावें बाहिर रहें तब इनका पुत्र अंगद तो माताके बचनसे इनकी पक्ष आया और जांबूनद कहेहै हम भी इन्हीं के संग रहें और इनका पुत्र सो शत्रु मई सुग्रीव की पक्ष अंगद है और सात अक्षोहणी दल इनके है औरसात उसपैहै नगरकी दक्षिणकेओर वह राखा उत्तरकी ओर यह राखे और बालीकापुत्र चंद्ररश्मि उसने यह प्रतिज्ञाकरी जो सुतारा के महिल आवेगा उसे ही खड्ग कर मारूंगा तब यह सांचा सुग्रीव स्त्री के बिरह कर व्याकुल शोक के निवारवे निमित्त खरदूषण पै गया सो खरदूषण तो लक्ष्मण के खडग कर हतागया फिर यह हनूमान पै गया जाय प्रार्थना करी मैं दुःख कर पीड़ित हूं मेरी सहाय करो मेरारूप कर कोई पापी मेरे घर में बैठा है सो मोहि महाबाधा है जायकर उसे मारी तब सुग्रीव के बचन सुन हनूमान् बड़वानल समान क्रोधकर प्रज्वलित होय अपने मंत्रियों सहित अप्रतीघात नामा विमान में बैठ किहकंधपुर आया सोहनूमान को आया सुन वह मायामई सुग्रीव हाथी चढ़ लड़िबे को आया सो हनूमान दोनों का सादृश्य रूप देख आश्चर्य्य को प्राप्त भया मनमें चितवता भया ये दोनों समान रूप सुग्रीवहीहैं इनमें से कौन को मारूं कछु विशेश जांना नपड़े बिना जानेसुग्रीवही को मारूं तो बड़ा अनर्थ होय। एक मुहूर्त अपने मंत्रियों से बिचारकर उदासीन होय हनूमानपीछा निजपुर गया सो हनूमानको गए सुन सुग्रीव बहुत व्याकुल भया मन में विचारताभया हजारों बिद्या और माया तिन से मण्डित महाबली महाप्रताप रूप बायुपुत्र सो भी सन्देहको प्राप्त भया सोबड़ा कष्ट अब कौन सहाय करे अतिव्याकुल होय दुःख निवारने अर्थ स्त्रीके

बियोगरूप दावानल कर तप्तायमान आपके शरण आया है आप शरणागत प्रतिपालक हैं यहसुग्रीव अनेक गुणोंकर शोभितहै हे रघुनाथ प्रसन्नहोय इसे अपनाकरो तुमसारखे पुरुषों काशरीर पर दुःखका नाशक है ऐसे जाबूनन्दके बचन सुन रामलक्ष्मण और विराधित कहते भए, धिक्कारहोवे परदारा रतपापी जीवों को रामने बिचारी मेरा और इसका दुःखसमानहै सो यह मेरा मित्रहोयगा मैं इसका उपकार करूं और यह पीछे मेरा उपकार करेगा नहींतो मैं निर्ग्रंथी मुनिहोय मोक्षका साधन करूंगा ऐसा बिचारकर रामसुग्रीव से कहते भए, हे सुग्रीव मैं सर्वथा तुझे मित्र किया जो तेरा स्वरूप बनाय आयाहै उसे जीत तेरा राज्य तुझे निहकंटक कराय दूंगा और तेरी स्त्री तोहि मिलायदूंगा और तेराकाम होय पीछे तूं सीता की सुध हमें आनदेना कि कहांहै तब सुग्रीव कहताभया हे प्रभो मेरा कार्यभए पीछे जो सातदिनमें सीताकी सुध न लाऊं तो अग्निमें प्रवेश करूं यह बात सुन राम प्रसन्नभए जैसे चन्द्रमाकी किरणसे कुमद प्रफुल्लित होय। रामकामुखरूप कमल फूलगया सुग्रीवके अमृतरूप बचनसे रोमांच खडे होयआए जिनराजके चैत्यालयमें दोनों धर्म मित्रभए यह बचन किया परस्पर कोई द्रोह न करे॥ अथानन्तर रामलक्ष्मण रथपर चढ़ अनेक सामन्तों सहित सुग्रीव के साथ किहकन्धपुर आए नगरके समीप डेराकर सुग्रीवने मायामयी सुग्रीव पै दूत भेजा सो दूतको उसने खेद दिया और मायामई सुग्रीव रथमें बैठ बडी सेना सहित युद्धके निमित्त निकसा सो दोनों सुग्रीव परस्पर लडे मायामई सुग्रीव और सांचे सुग्रीवके नानाप्रकार का युद्ध भया अन्धकार होय गया दोनोंही खेद को प्राप्तभए, घनी बेरमें मायामई सुग्रीवने सांचे सुग्रीव के गदाकी दीनीसो गिरपडा तब वह मायामई सुग्रीव इसको मूया जान हर्षित होय नगरमें गया और

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सांचा सुग्रीव मूर्छितहोय पडा सो परिवारके लोक डेरामें लाये तब सचेत होय रामसों कहता भया हे प्रभो मेरा चोर हाथमें आया हुआ सो नगरमें क्यों जाने दिया तब राम कही तेरा और उसका रूप देखकर हम भेद न जाना इस लिये सो तेरा शत्रु न हता कदाचित बिना जाने तेराही नाश होय तो योग्य नहीं तू हमारा परममित्रहै तेरे और हमारे जिन मंदिरमें वचन हुआ है ॥

अथानन्तर रामने मायामई सुग्रीवको फिर युद्धके निमित्त बुलायासो वह बलवान क्रोधरूप अग्नि कर जलता आया राम सन्मुखभए वह समुद्र तुल्य अनेक शस्त्रोंके धारक सुभट वेई भए मार उनकर पूर्ण उस समय लक्ष्मणने सांचा सुग्रीव पकड राखा कि कभी स्त्रीके वैरसे शत्रुके सन्मुख नआए और श्रीरामको देखकर मायामई सुग्रीवके शरीर में जो वैताली विद्याथी सो ताको पूछकर उसके शरीरमें से निकसी तब सुग्रीवका आकार मिट वह साहसगति विद्याधर इन्द्रनीलके पर्वतसमान भासता भया जैसे सांपकी कांचली दूर होय तैसे सुग्रीवका रूप दूर होगया तब जो आधी सेना बानरबंशियोंकी इसके साथथी सो उस से जुदी उसके सन्मुखहोय युद्धको उद्यमी भई सब बानर बंशी एकहोय नानाप्रकारके आयुधों से साहसगतिसों युद्ध करते भए सो साहसगति महा तेजस्वी प्रबलशक्तिका स्वामी सब बानर बंशियों को दशोंदिशाको भगाता भया जैसे पवन धूलको उड़ावे फिर, साहसगति धनुष बाण लेय राम पै आया सो मेघमंडल समान बाणोंकी वर्षा करता भया उद्धतहै पराक्रम जिसका साहसगतिके और श्रीरामके महायुद्ध भया प्रबलहै पराक्रम जिनका ऐसे राम रणक्रीडामें प्रवीण क्षुद्रबाणोंसे साहसगति का बक्तर तोडतेभए और तीक्ष्ण बाणोंसे साहसगतिका शरीर चालिनी समान कर डारासो प्राणरहित

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होय भूमिमें पडा सबोंने निरख निश्चय किया जो यह प्राणरहित है तब सुग्रीव रामलक्ष्मणकी महा स्तुति कर इनको नगर में लाया नगर की शोभाकरी सुग्रीवको सुताराका संयोगभया सो भोगसागर में मग्न होय गया रात दिनकी सुध नहीं सुतारा बहुत दिनोंमें देखीसो मोहित होगया और नन्दनवन की शोभा को उलंघे है ऐसाआनन्द नामावन वहां श्रीरामकोराखे उसवनकी रमणीकताका वर्णन कौनकर सके जहां महामनोग्य श्रीचन्द्रप्रभुका चैत्यालयवहां राम लक्ष्मणने पूजाकरी और विराधित को आदि दे सर्व कटक का डेरा वनमेंभया खेदरहित तिष्ठे सुग्रीवकी तेरह पुत्री रामचन्द्र के गुण श्रवण कर अति अनुराग भरी वरिवेकी बुद्धि करती भईं चन्द्रमा समान है मुख जिनका तिनके नाम सुनों चन्द्राभा, हृदयावली हृदयधर्म्मा, अनुधरी, श्रीकांता, सुन्दरी सुरवती देवांगना समानहै विभ्रम जिसका मनोवाहनी मनमें बसन हारी चारुश्री मदनोत्सवा गुणवती अनेक गुणोंकर शोभित और पद्मावती फूलेकमल समान है मुख जिसका तथा जिनमती सदा जिनपूजा में तत्पर ए त्रयोदश कन्या लेकर सुग्रीवरामपै आया नमस्कार करकहतामया हे नाथ ये इच्छाकर आपको बरेंहैं हे लोकेश इन कन्यावोंकेपति होवो इनका चित्तजन्महीसे यह भया जो हम विद्याधरों को न वरें आपके गुण श्रवणकर अनुरागरूप भईहैं यह कहकर रामको परणाई ये कन्या अति लज्जा की भरी नम्रीभूत हैं मुखजिनके रामका आश्रय करती भईं महासुन्दर नव यौवन जिनके गुण वर्णनमें नआवें विजुरी समान सुवर्णसमान कमल के गर्भ समान शरीर की कांति जिनकी उस कर आकाश में उद्योत भया वे बिनय रूप लावण्यता कर मंडित राम के समीप तिष्ठीं सुन्दर है चेष्टा जिनकी यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे मगधाधिपति पुरुषों में सूर्य्य

For Private and Personal Use Only

समानश्रीराम सारिखे पुरुष तिनका चित्त विषय बासना से विरक्त है परन्तु पूर्व जन्म के सम्बन्ध से कई एक दिन विरक्त रूप गृह में रह फिर त्याग करेंगे ॥ इतिश्री अठतालीसवांपर्व संमपूर्णम् ॥

अथानन्तर वे सुग्रीव की कन्या रामका मनमोहने के कारण अनेकप्रकारकी चेष्टाकरतीभई मानों देवलोक ही से उतरी हैं वीणादिक का बजावना मनोहर गीतका गावना इत्यादि अनेक सुन्दर लीला करती भई तथापि रामचन्द्रका मन न मोहा सर्वप्रकार के विस्तीर्ण विभव प्राप्त भए परन्तु रामने भोगों में मन न किया सीता विषे अत्यन्त चित्त समस्त चेष्टा रहित महाआदर से सीता को ध्यावते तिष्ठे जैसे मुनिराज मुक्ति को ध्यावे वे विद्याधर की पुत्री गान करें सो उन की ध्वनि न सुनें और देवांगना समान तिनका रूप सो न देखें राम को सर्व दिशा जानकी मई भासे और कछु भासे नहीं और कथानकरें ए सुग्रीव की पुत्री परणी सो पास बैठी तिनको हे जनकसुते ऐसा कह बतलावें काक से प्रीति कर पूछे अरे काक तू देश २ भ्रमण करे है तैंने जानकी भी देखी और सरोवरोंमें कमलफूल रहे हैं तिनकेमकरन्द कर जलसुगन्ध होय रहा है वह चकवा चकवीके युगल कलोल करते देख चितारे सीताबिन रामको सर्व शोभा फीकी लगे सीता के शरीर के संयोग की शंका से पवन से आलिंगन करें कदाचित् पवन सीता जीके निकट से आई होय जिस भूमि में सीता जी तिष्ठे हैं उस भूमि को धन्य गिनें और सीता बिना चन्द्रमा की चादनी को अग्नि समान जाने मन में चितवें कदाचित् सीतो मेरे वियोग रूप अग्नि से भस्म भई होय और मन्द मन्द पवन कर लताओं को हालती देख जाने हैं यह जानकी ही है, और वेल पत्र हालते देख जाने जानकी के वस्त्र फरहरे हैं, और भ्रमर संयुक्त फूल देख जानें जानकी के लोचन ही हैं, और

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोंपल देख जानें जानकी के करपल्लव ही हैं अरश्वेत श्याम आरक्त तीनोंजाति के कमलदेख जानें सीता के नेत्र तीन रंग को धरे हैं और पुष्पों के गुच्छे देख जाने जानकी जी के शोभायमान स्तनही हैं और कदलीके स्तंभोंविषे जंघाओंकी शोभा जाने औरलालकमलों मे चरणोकी शोभाजाने संपूर्णशोभा जानकीरूपहीजाने

अथानन्तर सुग्रीव सुताराके महिलमें ही रहा राम पै आये बहुत दिन भए तब रामने विचारी उसने साता नदेखी मेरे वियोगकर तप्तायमान भई वह शीलवन्ती मरगई इसलिये सुग्रीव मेरेपास नहीं आवे अथवा वह अपना राज्य पाय निश्चिन्त भया हमारा दुःख भूल गया यह चितवनकर राम की आंखों से आंसू पडे तब लक्ष्मण राम को सचिन्त देख कोप कर लाल भए हैं नेत्र जिन के आकुलित है मन जिन का नांगी तलवार हाथ में लेय सुग्रीव ऊपर चले सो नगर कम्पायमान भया सम्पूर्ण राज्य के अधिकारी तिन को उलंघ सुग्रीव के महल में जाय उस को कहा रे पापी अपने परमेश्वर राम तो स्त्री के दुःख से दुखी और तू दुर्बुद्धि स्त्री सहित सुख करे, रे विद्याधर वायस विषय लुब्ध दुष्ट जहां रघुनाथने तेरा शत्रु पठाया है वहां मैं तोहे पठाऊंगा इस भांति क्रोध के उग्र वचन लक्ष्मण ने जब कहे तब सुग्रीव हाथ जोड़ नमस्कारकर लक्ष्मण का क्रोध शान्त करताभया सुग्रीव कहे है हे देव मेरी भूल माफकरो मैं करार भूलगया हम सारिखे क्षुद्र मनुष्योंके खोटी चेष्टा होयहै और सुग्रीवकी संपूर्ण स्त्री कांपती हुई लक्ष्मणको अर्घदेय आरती करती भई हाथ जोड़ नमस्कारकर पतिकी भिक्षा मांगती भई तब आप उत्तम पुरुष तिनको दीन जान कृपाकरते भए यह महन्त पुरुष प्रणाममात्रही से प्रसन्न होंय और दुर्जन महा दान लेकरभी प्रसन्न न होंय लक्ष्मण ने सुग्रीव को प्रतिज्ञा चिताय उपकार किया जैसे यक्षदत्तको माता का स्मरण कराय मुनि

For Private and Personal Use Only

उपकार करतेभए यह वार्तासुन राजा श्रेणिक गौतमस्वामीसे पूछतेहैं हे नाथ यच्चदत्तका वृत्तान्त मैं नीका जाना चाहूंहूं तब गौतम स्वामी कहतेभए हे श्रेणिक! एक कौंचपुर नगर वहां राजा यच राणी राजिलता उसके पुत्र यच्चदत्त सो एकदिन एक स्त्रीको नगरके बाहर कुटीमें तिष्ठती देख कामबाणं कर पीड़ित भया उसकी ओर चला रात्री में तब ऐन नामा इसको मना करतेभए यह यच्चदत्त खड़गहै जिसके हाथमें सो विजुरी के उद्योग से मुनिको देखकर तिनके निकट जाय विनय संयुक्त पूछताभया हे भगवान काहेको मुझे मनेकिया तब मुनिने कही जिसको देखे तू कामवश भयाहै सो स्त्री तेरी माताहै इस लिये यद्यपि सूत्रमें रात्रिको बोलना उचित नहीं तथापि करुणाकर अशुभ कार्य से मनेकिया तब यशदत्तने पूछा हे स्वामी यह मेरी माता कैसे है तब मुनिनेकही सुन ऐ मृत्यकावती नगरी वहां कणिकनामा वणिक उस के भूनामा स्त्री उसके बन्धुदत्त नामा पुत्र उसकी स्त्री मित्रवती लतादत्त की पुत्री सो स्त्री को छाने गर्भ राख बन्धुदत्त जहाज बैठ देशान्तर गया इसको गए पीछे इसकी स्त्री के गर्भ जान सासू सुसरने दुराचारणी जान घरसे निकाल दई सो उत्पलका दासीको लारलेय बड़े सारथीकी लार पिताके घर चली सो उत्पलकाको सर्पने डसी बनमें मुई और यह मित्रवती शीलमात्रही है सहाय जिसके सो कौंचपुर में आई महाशोक की भरी उसके उपवनमें पुत्रका जन्म भया तब यहतो सरोवर में वस्त्र धोयने गई और पुत्ररत्नकंबलमें वेढ़ा सो कंबल संयुक्त पुत्रको स्वान लेयगया सो किसीने छुड़ाया राजायच्चदत्तको दिया उसके राणी राजलता अपुत्रवती सो राजाने पुत्रराणीको सौंपा उसका यच्चदत्त नाम धरा सो तू और वह तेरी माता वस्त्र धोय आई तुझे न देख विलाप करती भई एक देवपुजारी ने उसे दयाकर धैर्य बंधाया

तू मेरी बहिन है ऐसा कह राखी सो यह मित्रवति सहाय रहित लज्जाकर अकीर्तिके भय थकी बापके घर न गई अत्यन्त शीलकी भरी जिन धर्ममें तत्पर दरिद्रीकी कुटि विषै रहे सो तैं भ्रमण करती देख कुभाव किया और इसका पति बन्धुदत्त रत्न कंबल देगयाथा उसमें तोहि लपेट सो सरोवरगईथी सोरत्न कम्बल राजाके घरमें है और वह बालक तू है इस भांति मुनिने कही तब यह मुनिको नमस्कारकर खडग हाथ में लिये राजा पै गया और कहता भया इस खडग कर तेरा सिर काटूंगा नातर मेरे जन्म का वृत्तांत कहो तब राजाने यथावत बृत्तान्त कहा और वह रत्न कम्बल दिखाया सो लेयकर संयुक्तथा तब यह यक्ष दत्त अपनीमाताकुटी में तिष्ठेथी उससे मिला और अपना बधुदत्त पिता उसको बुलाया महा उत्सव और महा विभवकर मण्डित माता पितासे मिला यह यक्षदत्तकी कथा गौतमस्वामीने राजा श्रेणिकसे कही जैसे यशदत्तको मुनिने माताका बृत्तान्त जनाया तैसे लक्ष्मणने सुग्रीवको प्रतिज्ञा विस्मरण होयगया था सो जनाया सुग्रीव लक्ष्मण के संग शीघ्रही रामचन्द्रपै आया नमस्कारकिया और अपने सब विद्या धर सेवक महाकुलके उपजे बुलाए जो इस बृत्तान्तको जानतेथे और स्वामी कार्यमें तत्पर तिनको समझाय कर कहा सो सर्वेही सुनो रामने मेरा बड़ा उपकार किया अब सीताकी खबर इनको लाय दो इसलिये तुम सब दिशावोंको जाओ और सीता कहां है यह खबर लावो समस्त पृथिवी परे जलस्थल आकाश में हरो जम्बूद्वीप लवण समुद्र घात की खण्ड कुलाचल बन सुमेरु नानाप्रकार के विद्याधरों के नगर समस्त अस्थानक सर्वदिशा ढूंडो ॥

अथानन्तरये सब विद्याधर सुग्रीव की आज्ञा सिरपर धर कर हर्षित भए सर्वही दिशा को शीघ्र

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ही दौड़े सबही विचारें हम पहिली सुध लावें ता सों राजा अति प्रसन्न होय और भामण्डल कोभी खबर पठाई कि सीता हरी गई उसकी सुध लेवो तब भामण्डल बहिन के दुःख कर अतिही दुखी भया हेरने का उद्यम किया और सुग्रीव आपभी ढूंढने को निकसा सो जोतिष चक्र के ऊपर होय बिमान में बैठा देखता भया विद्याधरों के नगर सर्व देखे सो समुद्र के मध्य जम्बूद्वीप देखा वहां महेंद्र पर्वतपर आकाशसे सुग्रीव उतरा वहां रत्नजटी तिष्ठेथा सो ढरा जैसे गरुडसे सर्प डरे फिर विमान नजीक आया तब रत्नजटीनेजानी कि यह सुग्रीव है लंकापति ने क्रोधकर मुझपर भेजा सो मुझे मारेगा हायमैं समुद्रमें क्यों न डूब मूया या अन्तर द्वीप में मारा जाऊंगा विद्या तो रावण मेरी हर लेय गया था अब प्राण हरने यह पठाया, मेरी यह वाञ्छा थी जैसे तैसे भामण्डल पर पहुंचूं तो सर्वकार्य होंय सो न पहुंच सका यह चितवन करे है इतनेमें ही सुग्रीव आया मानोंदूसरा सूर्य ही है द्वीप को उद्योत करता आया सो इस को बन की रंजकर धूसरा देख दया कर पूछता भया हे रत्नजटी पहिले तू विद्या कर संयुक्त था अब हे भाई तेरी क्या अवस्था भई इसभान्ति सुग्रीव ने दयाकर पूछा सो रत्नजटी अत्यन्त कम्पायमान कछु कह न सके तब सुग्रीव ने कहा भय मत कर अपना वृत्तान्त कह बारम्बार धैर्य्य बन्धाया तब रत्नजटी नमस्कार कर कहता भया रावण दुष्ट सीताको हरण कर लेजाता था सो उसके और मेरे परस्पर विरोध भया मेरी विद्या छेद डारी अब मैं विद्यारहित जीवत में सन्देह चिन्तावान् तिष्ठा था सो हे कपिवंश के तिलक मेरे भाग से तुम आए ये वचन रत्नजटी के सुन सुग्रीव हर्षित होय उसे संग लेय अपने नगर में श्रीराम पै लाया सो रत्नजटी रामलक्ष्मण सों सबकेसमीप हाथ जोड़ नमस्कारकर कहता भया हे देव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीता महासती है उसको दुष्ट निर्दई लंकापति रावण हर लेय गया सो रुदन करती बिलाप करती विमानमें बैठी मृगी समान व्याकुल मैं देखी वह बलवान् बलात्कार लिएजाता था सो मैंने क्रोधकर कही यह महासती मेरे स्वामी भामण्डल की बहिन है तू छोड़ दे सो उसने कोपकर मेरी विद्या छेदी वह महाप्रबल जिसने युद्ध में इन्द्र को जीता पकड़ लिया और कैलाश उठाया तीन खण्ड का स्वामी सागरांत पृथिवी जिसकी दासी जो देवों से भी न जीता जाय सोउसे मैं कैसे जीतूं उसने मुझे विद्यारहित किया यह सकल बृत्तांत रामदेव ने सुनकर उस को उरसे लगाया और बारम्बार उसे पूछते भए फिर राम पूछते भए हे विद्याधरो कहो लंका कितनी दूर है तब वे विद्याधर निश्चल होयरहे नीचा मुख किया मुख की छाया औरही होगई कछु जुवाब न दिया, तब रामने उनका अभिप्राय जाना कि यह हृदय में रावणसे भयरूप हैं मन्दहृष्टि कर तिनकी ओर निहारे तब वे जानते भए हमको आप कायर जानें तब लज्जावान् होय हाथ जोड़ सिर निवाय कहते भए हे देव जिसके नाम सुने हमको भय उपजे है उसकी बात हम कैसेकहें कहां हम अल्प शक्तिके धनी औरकहां वह लंकाका ईश्वर इसलिये तुमयह हठछोडो अब वस्तुगई जानो अथवा सुनो होतो हम सबबृत्तान्त कहें सो नीके उरमें धारो, लवणसमुद्रके विषेराक्षस द्वीप प्रसिद्धहै अद्भुत सम्पदा का भरा सो सातसौ योजन चौड़ाहै और प्रदक्षिणाकर किञ्चित् अधिक इकीस सौ योजन उसकी परिधिहै उसके मध्यसुमेरु तुल्यत्रिकूटाचल पर्वतहै सो नवयोजनऊंचा पचास योजनके विस्तार नाना प्रकारके मणि और सुवर्ण कर मण्डित आगे मेघवाहन को राक्षसोंके इन्द्र ने दिया था उस त्रिकुटाचल के शिखर पर लंका नाम नगरी शोभायमान रत्नमई जहां विमान समान घर

For Private and Personal Use Only

और अनेक क्रीडा करने के निवास तीस योजन के विस्तार लंकापुरी महाकोट खाईकर मण्डित मानों दूजी वसुधारा ही है और लंकाके चौगिरद बड़े बडे रमणीक स्थानकहैं अतिमनोहर मणि सुवर्णमई जहां राक्षसों के स्थानक हैं तिनमें रावण के बन्धुजन बसे हैं सन्ध्याकार सुवेल कांचन ल्हादन योधन हंस हर सागर घोष अर्धस्वर्ग इत्यादि मनोहर स्थानक बन उपवन आदिसे शोभित देवलोकसमानहै जिन विषे भ्रात, पुत्र, मित्र, स्त्री बांधव सेवक जन सहित लंकापति रमे है सो उस विद्याधरोंके सहित क्रीड़ा करता देख लोकोंको ऐसी शंका उपजे है कि मानों देवोंसहित इन्द्रही रमे है जिसका महाबली बिभीषण सा भाई जो औरोंसे युद्धमें न जीता जाय उस समान बुद्धि देवोंमें नहीं और उस समान मनुष्य नहीं उस एकही से रावणका राज्य पूर्ण है और रावणका भाई कुम्भकर्ण त्रिशूलका धारक जिसका युद्ध में टेढी भौंहें देवभी देख सकें नहीं तो मनुष्योंकी क्याबात और रावणका पुत्र इन्द्रजीत पृथ्वी विषे प्रसिद्धहै और जिनके बडे २ सामन्त सेवकहैं नाना प्रकार विद्याके धारक शत्रुओं के जीतनहारे और जिसका छत्र पूर्ण चन्द्रमा समान जिसे देखकर बैरी गर्वको तजे हैं जिसने सदा रण संग्राममें जीत ही जीत सुभटपनेका विरद प्रकट कियाहै सो रावणके छत्रको देख तिनका सर्व गर्व जाता रहै और रावणका चित्रपट देखे अथवा नाम सुने शत्रु भयको प्राप्तहोय जो ऐसा रावण उससे युद्ध कौन कर सके इसलिये यह कथाही न करना और बात करो। यह बात विद्याधरोंके मुखसे सुनकर लक्ष्मण बोला मानों मेघ गाजा तुम एती प्रशंसा करो हो सो सब मिथ्याहै जो वह बलवानथा तो अपना नाम छिपाय स्त्रीको चुराकर क्यों लेगया वह पाखण्डी अतिकायर अज्ञानी पापी नीच राक्षस उसके रंच

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मात्र भी शूरता नहीं और राम कहते भए बहुत कहनेसे क्या सीताकी सुधही कठिनथी अब सुध आई तब सीता आय चुकी और तुम कही और बात करो और चिन्तवन करो सो हमारे और कछु बात नहीं और कछू चितवन नहीं। सीताको लावना यही उपायहै। रामके बचन सुनकर वृद्धविद्याधर क्षण एक विचारकर बोले, हे देव शोक तजो हमारे स्वामी होवो और अनेक विद्याधरोंकी पुत्री गुणोंकर देवांगनासमान उनके भरतार होवो और समस्तदुःखकी बुद्धि छोडो तब राम कहते भए हमारे और स्त्रियों का प्रयोजन नहीं जो शचीसमान स्त्रीहोय तोभी हमारे अभिलाषानहीं जो तुम्हारी हममें प्रीतिहैतो सीता हमें शीघ्रही दिखावो तब जांबूनन्द कहताभया, हेप्रभो इसहठको तजो एक क्षुद्र पुरुषने कृत्रिममयूरका हठ किया उसकी न्याई स्त्रीका हठकर दुखीमतहोवो यह कथा सुनो। एकवेणातटग्राम वहां सर्व रुचि नामा गृहस्थी उसके विनयदत्त नामा पुत्र उसकी माता गुणपूर्णा और विनयदत्तका कुमित्र विशालभूत जो पापी विनयदत्तकी स्त्रीसों आसक्तभया स्त्रीके बचनसे विनयदत्तको कपटसे बनमें लेगया सो एक वृक्षके ऊपर बांध वह दुष्ट घर चला आया कोई विनयदत्तके समाचार पूछे तोउसे कछुमिथ्या उत्तरदेय सांचा होय रहे और जहां विनयदत्त बन्धाथा वहां एक क्षुद्रनामा पुरुषआया वृक्षके तले बैठा वृक्ष महासघन विनयदत्त कुरलावताथा सो क्षुद्रदेखे तो दृढ़ बन्धनकर मनुष्य वृक्षकी शाखाके अग्रभाग बन्धाहै तब क्षुद्र दयाकर ऊपर चढ़ा विनयदत्तको बन्धनसे निवृतकिया विनयदत्त द्रव्यवानसो क्षुद्रको उपकारी जान अपने घर लेगया भाईसे भी अधिक हितराखे विनयदत्तके घर उत्साहभया और वह शिलाभूत कुमित्र दूर भागगया क्षुद्र विनयदत्तका परममित्र भया सो क्षुद्रका एक क्रीड़ा करनेका कागजका मयूर सो पवनकर उडा राज

For Private and Personal Use Only

पुत्रके घर जाय पड़ा सो उसने उठाकर रखलिया। उस निमितसे क्षुद्र महाशोककर मित्रको कहताभया मुझे जीवता इच्छे है तो मेरा वही मयूर लाओ विनयदत्तने कही मैं तुझे रत्नमई मयूरकराय दूं और सांचेमोर मंगायदूं वह पत्रमई मयूरपवनसे उड़गया सो राजपुत्रने राखा मैं कैसे लाऊं तब क्षुद्रने कही मैं वही लेउं रत्नोंके न लेउं न सांचे लूं विनयदत्त कहे जो चाहो सो लो वह मेरेहाथ नहीं क्षुद्र बारम्बार वही मांगे सो कहतो मूढ़थातुम पुरुषोत्तमहोय ऐसे क्यों भूलो वह पत्रोंकामयूर राजपुत्रकेहाथगया विनयदत्त कैसे लावे इसलिए अनेक विद्याधरोंकी पुत्री सुवर्णसमान वर्ण जिनका श्वेत श्याम आरक्त तीनवर्णकोधरेहैं नेत्र कमल जिनके सुन्दर पीवर स्तन जिनके कदली समान जंघा जिनकी और मुखकी कांतिकर शरदकी पूर्णमासी के चन्द्रमा को जीते मनोहर गुणोंकी धरणहारी तिनके पति होवो हे रघुनाथ महा भाग्य हमपर कृपाकरो यह दुःख का बढ़ावनहारा शोक सन्ताप छोड़ो तब लक्ष्मण बोले । हे जाम्बूनन्द तैंने यह दृष्टांत यथार्थ न दिया हम कहे हैं सो सुनो एक कुसुमपुर नामा नगर वहां एक प्रभवनामा गृहस्थ जिन के यमुना नामा स्त्री उस के धनपाल बन्धुपाल गृहपाल पशुपालक्षेत्र पाल सो यह पांचों ही पुत्र यथार्थ गुणों के धारक धनके कमाउ कुटुम्ब के पालने में उद्यमी सदा लौकिक धन्धे करें क्षणमात्र आलस नहीं और इन से छोटा आत्मश्रेयनामा कुमार सो पुण्य के योग से देवों कैसे भोग भोगे सो इस को माता पिता और बड़े भाई कटुक वचन कहें एक दिन यह मानी नगर बाहिर भ्रमे था सो कोमल शरीर खेदको प्राप्त भया उद्यम करने को असमर्थ सो आप का मरण बांछता था उस समय उस के पूर्व पुण्य कर्म के उदय से एकराज पुत्र इसे कहता भया, हे मनुष्य मैं पृथुस्थान नगर के राजा का पुत्र भानुकुमार

हूं सो देशान्तर भ्रमण को गया था सो अनेक देश देखे पृथिवीपर भ्रमण करता दैवयोग से कर्म्म पुर गया सो एक निमित्तज्ञानी पुरुष की संगति में रहा उस ने मुझे दुखी जान करुणाकर यह मंत्रमई लोह का कडा दिया और कही यह सर्व रोग का नाशक है बुद्धिवर्द्धन है ग्रह सर्प पिशाचादिक का वश करण हाराहै इत्यादि अनेक गुण हैं सो तू राख ऐसा कह मुझे दिया और अब मेरे राज्य का उदय आया मैं राज्य करने को अपने नगर जावुं हूं यह कडा मैं तुझे दूहूं तू मरे मत जो बस्तु आप पै आई अपना कार्य्य कर किसी को दे देने से बड़ा फल है सो लोक में ऐसे पुरुषों को मनुष्य पूजे हैं आत्मश्रेय को ऐसा कह राजकुमार अपना कडा देय अपने नगर गया औरयह कड़ा ले अपने घर आया उस ही दिन उस नगर के राजा की राणी को सर्प ने डसा था सो चेष्टा रहित होयगई उसे मृतक जान जरायवे को लाएथे सो आत्मश्रेय ने मंत्रमई लोहके कड़ेके प्रसाद से विष रहित करी तब राजाने अतिदान देय बहुत सत्कार किया आत्मश्रेय के कड़े के प्रसाद से महाभोग सामग्री भई सब भाइयों में मुख्य ठहरा पुण्यकर्म्म के प्रभाव से पृथिवी पर प्रसिद्ध भया एक दिन कड़े को वस्त्र में बांध सरोवर गया सो गोह आय कड़े को लेय महावृक्ष के तले ऊंडा बिल है उस में बैठ गई बिल शिलों से आच्छादित सो गोह बिल में बैठी भयानक शब्द करे आत्मश्रेय ने जाना कड़े को गोह बिलमें लेगई गर्जना करे है तब आत्मश्रेय वृक्षको जडसे उखाड़ शिला दूर कर गोह का बिल चूर कर डाला बहुत धन लिया सो राम तो आत्मश्रेय हैं सीता कडे समान हैं लंका बिल समान है रावण गोह समान इसलिये हे विद्याधरो तुम निर्भय होवो ये लक्ष्मण के वचन जाम्बूनन्द के बचनों को खण्डन करनहारे सुनकर विद्याधर आश्चर्यको प्राप्त भए ॥

अथानन्तर जांबुनन्द आदि सब रामसे कहते भए हे देव ! अनन्तवीर्य योगींद्रको रावणने नमस्कार कर अपने मृत्युका कारण पूछा तब अनन्तवीर्यकी आज्ञाभई जो कोटिशिलाको उठावेगा उससे तेरी मृत्युहै तब ये सर्वज्ञके वचन सुन रावणने विचारी ऐसा कौन पुरुषहै जो कोटि शिलाको उठावे यह वचन विद्याधरोंके सुन लक्ष्मण बोले मैं अबही यात्राको वहां चलूंगा तब सबही प्रमाद तज इनके लार भए जाम्बूनन्द महाबुद्धि, सुग्रीव, विराधित अर्कमाली नल, नील इत्यादि नाम पुरुष विमान विषै राम लक्ष्मणको चढाय कोटिशिला की ओर चले अंधेरी रात्रि मैं सो शीघ्र ही जाय पहुंचे शिलाके समीप उतरे शिला महा मनोहर सुर नर असुरों से नमस्कार करने योग्य ये सर्व दिशा में सामन्तों को रखवारे राख शिला की यात्रा को गए हाथ जोड़ सीस निवाय नमस्कार किया सुगन्ध कमलों से तथा अन्य पुष्पों से शिलाकी अर्चा करी चन्दनकर चरची सो शिला कैसी शोभती भई मानों साक्षात शची ही है उससे जे सिद्ध भए तिनको नमस्कार कर हाथ जोड भक्तिकर शिलाकी तीन प्रदक्षिणा दई सब विधिमें प्रवीणहैं तब लक्ष्मण कमर बांध महा विनय को धरता हुवा नमोकार मंत्रमें तत्पर महा भक्ति स्तुति करनेको उद्यमी भया और सुग्रीवादि बानर बंशी सबही जयजयकार शब्दकर महा स्तोत्र पढ़तेभए एकाग्रचित्तकर सिद्धोंकी स्तुतिकरे हैं कि भगवान सिद्धत्रैलोक्यके शिखरपर विराजे हैं वह लोकशिखर महादेदीप्यमानहै और वे सिद्धस्वरूप मात्र सत्ताकर अविनश्वरहैं तिनका फिर जन्म नहीं अनंत वीर्यकर संयुक्त अपने स्वभावमें लीन महासमीचीनता युक्त समस्त कर्मरहित संसार समुद्रके पार कल्याण मूर्ति आनन्द पिंड केवलज्ञान केवलदर्शन के आधार पुरुषाकार परम सूक्ष्म अमूर्ति अगुरु लघु असंख्यात

प्रदेशी अनंत गुणरूप सर्वको एकसमयमें जाने सब सिद्धसमान कृतकृत्य जिनके कोई कार्य करना नहीं सर्वथा शुद्धभाव सर्वद्रव्य सर्वक्षेत्र सर्वकाल सर्वभावके ज्ञाता निरंजन आत्मज्ञानरूप शुक्ल ध्यान अग्निकर अष्टकर्म बनके भस्मकरणहारे और महा प्रकाशरूप प्रतापके पुंज जिनको इन्द्र धरणेंद्र चक्रवर्त्यादि पृथिवी के नाथ सबही सेवें महास्तुतिकर वे भगवान संसारके प्रपंचसे रहित अपने आनन्दस्वभाव तिनमई अनंत सिद्धभए और अनंत होवेंगे अढाईद्वीपके विषे मोक्ष का मार्ग प्रवर्ते है एकसौ साठ महाविदेह और पांच भरत पांच ऐरावत एकसौ सत्तर क्षेत्र तिनके आर्यखण्ड विषे जे सिद्धभए और होवेंगे उन सब को हमारा नमस्कार हो इस भरतक्षेत्रके विषे यह कोटिशिला यहांसे सिद्ध शिलाको प्राप्तभए वे हम को कल्याणके कर्ता होवें जीवोंको महा मंगलरूप, इस भांति चिरकाल स्तुतिकर चित्तमें सिद्धों का ध्यान कर सबही लक्ष्मणको आशीर्वाद देते भए. इस कोटिशिलासे जे सिद्ध भए वे सर्व तुम्हारा विघ्न हरें अरिहंत सिद्ध साधु जिनशासन ये सर्व तुमको मंगलके करता होहु इसभांति शब्द करते भए और लक्ष्मण सिद्धोंका ध्यान कर शिलाको गोडे प्रमाण उठावता भया अनेक आभूषण पहिरे भुजबंधनकर शोभायमान है भुजा जिसकी सो भुजाओंसे कोटिशिला उठाई तब आकाशमें देव जयजय शब्द करते भए सुग्रीवादिक आश्चर्यको प्राप्तभए कोटिशिलाकी यात्राकर फिर सम्मेद शिखरगए और कैलाशकी यात्रा कर भरत क्षेत्रके सर्व तीर्थ वंदे प्रदक्षिणा करी सांझ समय विमान बैठ जयजयकार करते हुए रामलक्ष्मण लार किहकंधपुर आए आप अपने स्थानक सुखसे शयन किया फिर प्रभात भया सब एकत्र होय परस्पर वार्ता करतेभए देखो अब थोडेही दिनमें इनदोनों भाइयोंका निष्कंटक राज्य होयगा ये परम

शक्ति को धरे हैं वह निर्वाण शिला इनोंनेउठाई सोयह सामान्य मनुष्य नहीं यह लक्ष्मण रावण को निसंदेह मारेगा, तब कैयक कहतेभए रावणने कैलास उठाया सो वाहूका परक्रम घाटनहीं तब और कहते गए ताने कैलास विद्याके बलसे उठाया सो आश्चर्य नहीं तब कैयक कहतेभए काहेको विवाद करो जगत्के कल्याण अर्थ इनका उनका हितकराय देवो इस समान और नहीं रावणसे प्रार्थनाकर सीता लाय रामको सोपो युद्ध से क्या प्रयोजन आगे तारकमेरुमहा बलवान् भए सो संग्राममें मारेगए वे तीनखंड के अधिपति महा भाग्य महापराक्रमी थे और और भी अनेक राजा रणमें हतेगए इसलिये साम कहिये परस्पर मित्रता श्रेष्ठ है तब ये विद्या की विधिमें प्रवीण परस्पर मंत्रकर श्रीराम पै आए अतिभक्ति से नमस्कारकर रामके समीप नमस्कार कर बैठे कैसे शोभते भए जैसे इन्द्रके समीप देव सोहैं कैसे हैं राम नेत्रों को आनन्द के कारण सो कहते भए अब तुम क्यों ढील करो हो, मोबिना जानकी लंकामें महादुःखसे तिष्ठै है इसलिये दीर्घ सोच छांड अबारही लंका की तरफ गमन का उद्यम करो तब जे सुग्रीवके जांबूनंदादि मंत्री राजनीति में प्रवीन हैं वे रामसे बीनती करते भए हे देव हमारे ढीलनहीं परन्तु यह निश्चय कहो सीताके ल्यायबे हीं का प्रयोजन है अक राक्षसों सों युद्ध करना है यह सामान्य युद्धनहीं विजय पावना कठिनहै वह भरत क्षेत्रके तीन खंडका निष्कंटक से राज करे है द्वीप समुद्रोंके विषे रावण प्रसिद्धहै जासे धातुकी खंडद्वीप के शंका माने जंबूद्वीपमें जिसकी अधिक महिमा अद्भुतकार्य का करणहारा सबके उरका शल्यहै सो युद्ध योग्य नहीं इसलिये रणकी बुद्धिछोड़ हम जोकहें हैं सो करो । हे देव उसे युद्धसन्मुख करिवेमें जगतको महाक्लेश उपजे है प्राणियोंके समूह का विध्वंस होयहै समस्त उत्तम क्रिया जगत् से जाय हैं इसलिये

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभीषण रावण का भाई सो पापकर्म रहित श्रावकव्रत का धारकहै रावण उसके वचनको उलंघे नहीं तिन दोनों भाईयोंमें अंतराय रहित परम प्रीतिहै सो विभीषण चातुर्यता से समझावेगा और रावण भी अपयशसे शंकेगा लज्जाकर सीता को पठाय देगा इसलिये विचारकर रावण पै ऐसा पुरुषभेजना जोवात करनेमें प्रवीण होय और राज नीति में कुशल होय अनेक नय जाने और रावणका कृपापात्र होय ऐसा हेरो तब महोदधि नामा विद्याधर कहता भया तुम कछू सुनीहै लंकाकी चौगिरद मायामई यंत्र रचा है सो आकाशके मार्ग से जायसके नहीं पृथिवी के मार्गसे जायसके लंका अगम्यहै महाभयानक देखा न जाय ऐसा मायामई यंत्र बनायाहै सो इतने बैठे हैं तिनमें तो ऐसाकोऊ नहीं जो लंकामें प्रवेश करे इसलिये पवनंजयका पुत्र श्रीशैल जिसे हनूमान कहे हैं सो महाविद्यावान बलवान पराक्रमी प्रतापरूपहै उसे याचो वह रावणका परममित्र है और पुरुषोत्तम है सो रावणको समझाय विघ्न टारेगा तब यह बात सबने प्रमाण करी हनूमान के निकट श्रीभूतनामा दूत शीघ्र पठाया गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे सज्जन महाबुद्धिवान होय और महाशक्ति को धरे होय और उपायकरें तो भी होनहार होय सोही होय जैसे उदयकाल में सूर्यका उदय होय ही तैसे जो होनहार सो होयही ॥ इति उनतालीसवां पर्वसंपूर्णम् ॥

अथानन्तर श्रीभूतनामा दूत पवनके वेगसे शीघ्रही आकाश के मार्गसो लक्ष्मी का निवास जो श्रीपुरनगर अनेक जिन भवन तिनकर शोभित वहां गया जहां मन्दिर सुवर्ण रत्नमई सो तिनकी माला कर मण्डित कुन्दके पुष्प समान उज्वल सुन्दर झरोखोंसे शोभित मनोहर पवनकर रमणीकसो दूत नगर की शोभा और नगर के अपूर्व लोग देख आश्चर्यको प्राप्तभया फिर इन्द्र के महिल समान राजमन्दिर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वहांकी अद्भुत रचना देख थकित होय रहा हनूमान खरदूषणकी बेटी अनंगकुसमा रावण की भानजा उसके खरदूषणका शोक कर्म के उदयसे जो शुभ अशुभ आवे उसे कोई निंवारिबे शक्त नहीं मनुष्यों की क्या शक्ति देवोंसे अन्यथाभी न होय दूतने द्वारेआय अपने आगमका वृत्तांत कहा सो अनंगकुसमा की नर्मदया नामा द्वारपाली दूतको भीतर लेयगई अनंगकुसमा ने सकल वृत्तांत पूछा सो श्रीभूत ने नमस्कारकर विस्तारसे कहा दण्डकवनमें श्रीराम लछमणका आवन सम्बूकका बध खरदूषणसे युद्ध फिर भले भले सुभटों सहित खरदूषणका मरण यह वार्तासुन अनंगकुससा मूर्छाको प्राप्तभई तब चन्दन के जल से सींच सचेतकरी अनंग कुसमा अश्रुपात डारती विलापकरतीभई हाय पिता हाय भाई तुम कहां गए एक बार मुझे दर्शन देवो वचनालाप करो महा भयानक वनमें भूमिगोचरियों ने तुमको कैसे हते इसभांति पिता और भाई के दुःखसे चन्द्रनखाकी पुत्री दुखी भई सो महा कष्टसे सखियोंने शांतिता को प्राप्तकरी और जे प्रवीण उत्तम जनथे उन्होंने बहुत संबोधी तब यह जिनमार्गमें प्रवीण समस्त संसार के स्वरूपको जान लोकाचारकी रीति प्रमाण पिताके मरणकी क्रिया करतीभई फिर दूतको हनूमान महा शोक के भरे सकल वृत्तान्त पूछतेभये तब सकल वृत्तान्त कहा सो हनूमान खरदूषणके मरणसे अति क्रोध को प्राप्तभया भौंह टेढ़ी होयगई मुख और नेत्र आरक्तभये तब दूतने कोप निवारने के निमित्त मधुर स्वरों से वीनतीकरी हे देव किहकंधपुर के स्वामी सुग्रीव तिनको दुख उपजा सोतो आप जानोही हो साहसगति विद्याधर सुग्रीवका रूपबनाय आया उससे पीड़ितभया सुग्रीव श्रीरामके शरण गया राम सुग्रीव का दुख दूर करवे निमित्त किहकंधापुर आए प्रथमतो सुग्रीव और उसके युद्धभया सो सुग्रीव से वह जीता न गया

For Private and Personal Use Only

फिर श्रीरामके और उसके युद्धभया सो रामको देख वैतालीविद्या भागगई तब वह साहसगति सुग्रीव के रूपसे रहित जैसाथा सो होयगया महायुद्ध में रामने उसे मारा सुग्रीव का दुःख दूर किया यह बात सुन हनूमानका क्रोध दूरभया मुखकमल फूल हर्षित होय कहते भये अहो श्रीरामने हमारा बड़ा उपकार किया सुग्रीवका कुल अकीर्तिरूप सागरमें डूबे था सो शीघ्रही उधारा सुवर्णके कलश समान सुग्रीव का गोत्र सो अपयशरूप ऊंडे कूप में डूबता था श्रीराम सन्मतिके धारकने गुणरूप हस्तकर काढ़ा इसभांति हनूमान ने बहुत प्रशंसाकरी और सुख के सागर में मग्नभए और हनूमानकी दूजी स्त्री सुग्रीवकी पुत्री पद्मरागा पिताके शोकका अभाव सुन हर्षित भई उसके बड़ा उत्साह भया दान पूजा आदि अनेक शुभ कार्य किए हनूमानके घरमें अनंगकुसमाके घर खरदूषणका शोकभया और पद्मरागा के सुग्रीव का हर्ष भया इसभांति विषमताको प्राप्त भए घरके लोग तिनको समाधान कर हनूमान किहकंधापुरको सन्मुख भए महा ऋधिकर युक्त बड़ी सेनासे हनूमान चला आकाशमें अधिक शोभाभई महा रत्नमई हनूमान विमान उसकी किरणों से सूर्यकी प्रभामंद होय गई हनूमानको चालता सुन अनेक राजा लारभए जैसे इन्द्रकी लार बड़े बड़े देव गमन करें आगे पीछे दाहिनी बांई ओर अनेक राजा चले जायहैं विद्याधरों के शब्द से आकाश शब्दमई होय गया आकाशगामी अश्व और गज तिनके समूहों से आकाश चित्रास्वरूप होयगया महा तुरंगोंसे संयुक्त ध्वजावों कर शोभितसुन्दर रथ उनसे आकाश शोभायमान भासताभया और उज्ज्वल छत्रों के समूह कर शोभित आकाश ऐसा भासे मानों कुमदोंकाहीबन है और गम्भीर दुन्दुभी शब्द उनकर दशोंदिशा ध्वनिरूप होयगई मानो मेघ गाजे है और अनेक वर्ण के आभूषण,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिनकी ज्योति के समूहसे आकाश नाना रंग रूपहोयगया काहू चतुर रंगरेका रंगा वस्त्र है हनूमान के वादित्रों का नाद सुन कपिवंशी हर्षित भए जैसे मेघकी ध्वनि सुन मोर हर्षित होंय सुग्रीव ने सबनगर की शोभा कराई हाट बाजार उजाले मंदिरों पर ध्वजा चढ़ाई रत्नों के तोरणोंसे द्वार शोभित किए हनूमान के सब सन्मुख गए सबका पूज्य देवोंकी न्याईं नगरमें प्रवेश किया सुग्रीव के मंदिर आए सुग्रीव ने बहुत आदर किया और श्रीराम का समस्तवृत्तांत कहा तब ही सुग्रीवादिक हनूमान सहित परमहर्ष को धरते श्रीरामके निकट आए सो हनूमान रामको देखताभया महासुन्दर सूक्ष्म स्निग्धश्याम सुगन्ध वक्र लंबे महामनोहर हैं केश जिनके सो लक्ष्मीरूपवल इनकर मंडित महा सुकुमारअंग जिनका सूर्यसमान प्रतापी चन्द्रसमान कांति धारी अपनी कांति से प्रकाश के करणा हारे नेत्रों को आनन्द के कारण महामनोहर अतिप्रवीण आश्चर्यकारी कार्यके करणहारे मानो स्वर्गलोक से देवहीं आए हैं देदीप्यमान निर्मल स्वर्ण के कमल के गर्भ समान है प्रभा जिनकी सुन्दर नेत्र सुन्दर श्रवण सुन्दर नासिका सर्वांग सुन्दर मानों साक्षात् कामदेव ही हैं कमल नयन नवयौवनचढ़े धनुषसमान भौंह जिन की पूर्णमासी के चन्द्रमा समान बदन महामनोहर मूंगा समान लालहोंठ कुन्द के पुष्प समान उज्वल दंत शंखसमान कंठ मृगेन्द्र समान साहस सुन्दरकटि सुंदर वक्षस्थल महाबाहु श्रीवत्सलक्षण दक्षणावर्त गंभीरनाभि आरक्तकमल समान कर चरण महाकोमल गोल पुष्ट दोऊ जंघा और कछुवे की पीठ समान चरण के अग्रभाग महाकांति को धरे अरुण नख अतुल बल महायोधा महा गंभीर महा उदार समचतुर संस्थान वज्र वृषभ नाराच संहनन मानों सर्व जगत्रय की सुन्दरता एकत्र कर बनाए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं महा प्रभाव संयुक्त परन्तु सीता के बियोग से ब्याकुल चित्त मानों शची रहित इंद्र बिराजे हैं अथवा रोहिणी रहित चन्द्रमा तिष्ठे हैं रूप सौभाग्य कर मंडित सर्व शास्त्रों के बेत्ता महाशूर बीर जिनकी सर्वत्र कीर्ति फैलरहीहै महा बुद्धिमान् गुणवान ऐसे श्रीराम तिनको देखकर हनूमान आश्चर्यको प्राप्तभया तिनके शरीर की कांति हनूमान पर जायपड़ी प्रभाव देखकर वशीभूत हुवा पवन का पुत्र मनमें विचारता भया ये श्रीराम दशरथ के पुत्र भाई लक्ष्मण लोकश्रेष्ठ इनका आज्ञाकारी संग्राम में जिनके चंद्रमा समान उज्ज्वल छत्र देख साहसगति की विद्या वैताली ताके शरीर से निकस गई और इन्द्र भी मैंने देखा है परन्तु इनको देखकर परम आनन्द संयुक्त हृदय मेरा नम्रीभूत भया इसभान्ति आश्चर्य को प्राप्त भया अंजनी का पुत्र श्रीराम कमललोचन तिनके दर्शनकोआगे आया और लक्ष्मण ने पहिलेही रामसे कहराखी थी सो हनूमान को दूर ही से देख उठे उरसे लगाय मिले परस्पर अतिस्नेह भया हनूमान अति विनयकर बैठा आप श्रीराम सिंहासन पर बिराजे भुज बन्धसे शोभितहै भुजा जिनकी महा निर्मल नीलाम्बर मण्डित राजन के चूड़ामणि महा सुन्दर हार पहिरे ऐसे सोहैं मानों नक्षत्रों सहित चन्द्रमाही है और दिव्य पीतांबर धारे हार कुण्डल कर्पूरादि संयुक्त सुमित्राके पुत्र श्रीलक्ष्मण कैसे सोहैं हैं मानों बिजुरी सहित मेघही है और बानर वंशियों का मुकट देवों समान पराक्रम जिसका राजा सुग्रीव कैसा सो मानों लोकपाल ही है और लक्ष्मण के पीछे बैठा विराधित विद्याधर कैसा सोहे मानों लक्ष्मण नरसिंह काहे चक्ररत्न ही है रामके समीप हनूमान कैसा शोभता भया जैसा पूर्णचन्द्र के समीप बुध सोहे और सुग्रीव के दोयपुत्र एक अंगज दूजा अंगद सो सुगन्धमाला और वस्त्र आभूषणादिकर मण्डित ऐसे सोहैं

For Private and Personal Use Only

मानों यम कुवेर ही हैं और नल नील और सैकड़ों राजा श्रीराम की सभामें ऐसे सोहैं जैसे इन्द्र की सभामें बैठ देव सोहैं अनेक प्रकारकी सुगन्ध और आभूषणों का उद्योत उससे सभा ऐसी सोहै मानों इन्द्रकी सभा है तब हनूमान आश्चर्य को पाय अतिप्रीति को प्राप्तभया श्रीरामको कहताभया। हे देव शास्त्र में ऐसा कहाहै प्रशंसा परोक्ष करिये प्रत्यक्ष न करिये परन्तु आपके गुणोंसे यह मन वशीभूत भया। प्रत्यक्ष स्तुति करे है और यह रीति है कि आप जिनके आश्रय होय तिनके गुण वर्णन करे सो जैसी महिमा आपकी हमने सुनी थी तैसी प्रत्यक्ष देखी आप जीवों के दयालु महा पराक्रमी परम हित गुणों के समूह जिनके निर्मल यशकर जगत् शोभायमानहै। हे नाथ सीताके स्वयम्बरविधान में हजारों देव जिसकी रक्षाकरें ऐसा वज्रावर्त धनुष आपने चढ़ाया सो हमने सब पराक्रम सुने जिनका पिता दशरथ माता कौशल्या भाई लक्ष्मण भरत शत्रुघन स्त्री का भाई भामंडल सो राम जगोत्पति तुम धन्य हो तुम्हारी शक्ति धन्य तुम्हारा रूप धन्य सागरावर्त धनुष का धारक लक्ष्मण सो सदा आज्ञाकारी धन्य यह धीर्य धन्य यह त्याग जो पिताके वचन पालिवे अर्थ राज्यका त्यागकर महा भयानक वनमें प्रवेश किया और आपने हमारा जैसा उपकार किया तैसा इन्द्र न करे सुग्रीव का रूप कर साहसगति आयाथा सो आपने कपिवंशका कलंक दूर किया आपके दर्शनकर वैताली विद्या साहसगतिके शरीर से निकस गई आपने युद्धमें उसे हता सोआपनेतो हमारा बड़ा उपकार किया अब हम क्यासेवा करें शास्त्रकी यह आज्ञा है जो आप सो उपकार करे और उसकी सेवा न करे उसको भावशुद्धतानहीं और जो कृतघ्न उपकार भूले सो न्याय धर्म से वहिर्मुख हैं पापियों में महापापी हैं और अपराधीयों से निर्दई हैं सो उससे

सत्पुरुष संभाषण न करें इसलिये हम अपना शरीरभी तज कर तिहारे काम को उद्यमीहैं मैं जाय लंका पतिको समझाय तुम्हारी स्त्री तुम्हारे लाऊंगा हे राघव महा बाहू सीता का मुखरूपकमल पूर्णमासी के चंद्रमा समान कांति का पुंज आप निस्संदेह शीघ्रही सीताको देखोगे तब जांबूनन्दमंत्री हनूमान कोपरम हितके बचन कहता भया हेवत्स वायु-पुत्र हमारे सबनके एक तू ही आश्रयहै सावधान लंका को जाना और किसी सो कदाचित् बिरोध नकरना तब हनूमान् ने कहो आप की आज्ञा प्रमाण ही होयगा ॥

अथानंतर हनूमान लंका को चलिबे को उद्यमी भया तब राम अति प्रीति को प्राप्तभए एकांत में कहते भए हे वायु पुत्रसीताको ऐसे कहियो, कि हेमहासती तुम्हारे बियोगसे राम का मन एकक्षणभी सातारूप नहीं और राम ने योंकही ज्यों लग तुम पराए वशहो त्योंलग हम अपनापुरुषार्थ नहीं जानेहैं और तुम महानिर्मल शील से पूर्णहो और हमारे वियोग से प्राणतजा चाहोहो सो प्राण तजो मत अपना चित्त समाधान रूप राखो बिबेकी जीवों को आर्त्त रौद्र से प्राण न तजने मनुष्यदेह अतिदुर्लभ है उस में जिनेन्द्र का धर्म दुर्लभ है उस में समाधि मरण दुर्लभ है जो समाधि मरण न होय तो यह मनुष्य देह तुषवत् असार है और यह मेरे हाथ की मुद्रिका जाकर उसे विश्वास उपजे सो ले जावो और उन का चूड़ामणि महा प्रभा रूप हमपै लेआइयो तब हनमान् ने कही जो आप आज्ञा करोगे सो ही होयगा, ऐसा कहकर हाथजोड़ नमस्कार कर फिर् लक्ष्मण से नम्रीभूत होय बाहिर निकसा बिभूति कर परिपूर्ण अपने तेजसे सर्व दिशा को उद्योत करता सुग्रीव के मंदिर आया और सुग्रीव से कही जौलग मेरा आवना न होय तौ लग तुम बहुत सावधान यहांहीरहियो इसभांति कहकर सुन्दर हैं शिखर जिसके ऐसा जो विमान उसपर चढा

ऐसा शोभता भया जैसा सुमेरुके ऊपर जिनमंदिर शोभे परमज्योति से मंडित उज्वल छत्रकर शोभित हंससमान उज्ज्वल चमर जिसपर ढुरे हैं और पवन समान अश्व चालते पर्वत समान गज और देवोंकी सेना समान सेना उसके संयुक्त इस भांति महा विभूतिसे युक्त आकाश गमन करता रामादिक सर्वने देखा गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे राजन यह जगत नाना प्रकारके जीवों से भरा है तिन में जो कोई परमार्थके निमित्त उद्यम करे हैं सो प्रशंसा योग्य हैं और स्वार्थ से जगतही भरा है जे पराया उपकार करें वे कृतज्ञ हैं प्रशंसायोग्य है और जे निःकारण उपकार करें हैं उन के तुल्य इन्द्रचन्द्र कुबेर भी नहीं और जे पापी कृतघ्नी पराया उपकार लोपे हैं वे नरक निगो के पात्र हैं और लोक निन्द्य हैं ॥ ॥ इति पचासवांपर्व संपूर्णम् ॥

अथान्तर अंजनी का पुत्र आकाशमें गमन करता परम उदय को धरे कैसा शोभता भया मानों वाहिन समान जानकी उसे लायवेको भाई जाय है कैसे हनुमान श्री रामकी आज्ञा विषे प्रवर्ते हैं महा विनय रूप ज्ञानवंत शुद्ध भाव रामके कामका चित्त में उत्साह सो दिशा मंडल अवलोकते लंकाके मार्गमें राजा महेंद्रका नगर देखतेभए मानों इन्द्रका नगरहै पवर्तके शिखरपर नगरबसे हैं जहां चन्द्रमा समान उज्ज्वलमंदिरहै सो नगर दूरही से नजर आया तब हनूमानने देखके मनमें चितया यह दुर्बुद्धि महेन्द्रका नगरहै वह यहां तिष्ठे है, मेरी माता को जिसने संताप उपजायाथा पिता होयकर पुत्रका ऐसा अपमानकरे जो इसने नगरमें न राखी तब माता वनमें गई जहां अनन्तगति मुनितिष्ठेथे तिनने अमृतरूप वचनकहकर संतोषानकरी सोमेरा उद्यानविषे जन्मभया जहांकोई बंधुनहीं मेरीमाता शरणेआवे औरयह न

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राले यह क्षत्रीका धर्म नहीं इसलिये इसका गर्व हरूं तब कोधकर रणके नगारे बजाए और ढोल बाजते भए शंखोंकी ध्वनिभई योधावोंके आयुध झलकने लगे राजामहेंद्र परचक्र आया सुनकर सर्व सेना सहित बाहिर निकसा दोनों सेनामें महा युद्धभया महेंद्र रथमें चढ़ा माथे छत्र फिरता धनुष चढाय हनूमानपर आया सो हनूमानने तीनबाणोंसे उसका धनुष छेदा जैसे योगीश्वर तीन गुप्तिकर मानको छेदें फिर महेंद्रने दूजा धनुष लेनेका उद्यम किया उसके पहिले बाणोंसे रथसे घोड़े छूटाय दिए सो रथ के समीप भ्रमें जैसे मनके प्रेरे इन्द्रिय विषयोंमें भ्रमे फिर महेंद्रका पुत्र विमानमें बैठ हनूमानपर आया सो हनूमानके और उसके बाणचक्र कनक इत्यादि अनेक आयुधोंसे परस्पर महा युद्ध भया हनूमानने अपनी विद्यासे उसके शस्त्र निवारे जैसे योगीश्वर आत्मचिंतवनकर परीषहके समूहको निवारें उस ने अनेक शस्त्र चलाये सो हनूमानके एकभी न लगा जैसे मुनिको कामका एकभी बाण न लगे जैसे तृणों के समूह अग्निमें भस्म होंय तैसे महेंद्रके पुत्रके सर्व शस्त्र हनूमानपर विफलगए और हनुमान ने उसे पकड़ा जैसे सर्पको गरुड पकडे तब राजा महेंद्र महारथी पुत्रको पकड़ा देख महा क्रोधाय-मान भया हनूमानपर आया जैसे साहसगति रामपर आयाथा हनूमानभी महा धनुषधारी सूर्यके रथ समान रथपर चढा मनोहर है उरमें हार जिसके शूरवीरोंमें महाशूरवीर नानाके सन्मुख भया सो दोनों में करोत कुठार खड्ग बाण आदि अनेक शस्त्रोंसे पवन और मेघ की न्याई महा युद्ध भया दोनों सिंह समान महाउद्धत महाकोपके भरे बलवन्त अग्निके कणसमान रक्तनेत्र दोनों अजगरसमान भयानक शब्द करते परस्पर शस्त्र चलावते गर्वहास संयुक्त प्रकटैं हैं शब्द जिनके परस्पर ऐसे शब्द करें हैं धिक्कार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेरेशूरानेंको तू क्या युद्धकरना जाने इत्यादि बचन परस्पर कहतेभए दोनों विद्याबलसे युक्त परम युद्ध करते बारम्बार अपने लोगोंकरहू हाकार जयजयकारादि शब्द करावतेभए राजा महेंद्र महा विक्रिशक्ति का धारक कोधकर प्रज्वालितहै शरीर जिसका सो हनुमानपर आयुधों के समूह डारता भया भुशुंडी फरसी बाण शतघ्नी मुदगर गदा पर्वतों के शिखर शालिवृक्ष बटवृक्ष इत्यादि अनेक आयुध हनुमान पर महेंद्रने चलाए सो हनुमान व्याकुलताको न प्राप्तभया जैसे गिरिराज महा मेघके समूहसे कंपाय मान न होय जेते महेंद्रने बाण चलाए सो हनूमानने उलका विद्याके प्रभावसे सब चूर डारे फिर आपने रथसे उछल महेंद्रके रथ में जाय पडे दिग्गजकी सूंड समान अपने जे हाथ तिनसे महेंद्र को पकड लिया और अपने रथमें आय शूरवीरोंसे पायाहै जीतका शब्द जिन्होंने सबही लोक प्रशंसा करते भए राजामहेंद्र हनुमानको महाबलबान परम उदयरूप देख महा सौम्य वाणीकर प्रशंसा करता भया हे पुत्र तेरी महिमा जो हमने सुनी थी सो प्रत्यक्ष देखी मेरा पुत्र प्रसन्नकीर्ति जो अब कालूने कदे न जीता रथनूपुरका स्वामी राजाइन्द्र उससेभी न जीतागया विजियार्धगिरिके निवासी विद्याधर तिन में महाप्रभाव संयुक्त संग्राममहिमाको धरे मेरापुत्रसो तैंने जीता और पकडा धन्य पराक्रमते रामहावीर्यको धरे तेरे समान और पुरुष नहीं और अनुपमरूप तेरा और संग्राम में अद्भुत पराक्रम, हेपुत्रहनूमान तैंने हमारे सब कुल उद्योतकिए तू चरमशरीरी अवश्य योगीश्वर होयगा विनयआदि गुणोंसे युक्त परम तेज की राशि कल्याणमूर्ति कल्पवृक्ष प्रकटभयाहै तू जगतका गुरु कुलका आश्रय और दुःखरूप सूर्यकर जे तसाय-मानहैं तिनको मेघसमान इस भांति नाना महेन्द्रने अति प्रशंसा करी और आंख भर आई और रोमांच

For Private and Personal Use Only

होयआए मस्तक चूमा छाती से लगाया तब हनूमान नमस्कारकर हाथजोड़ अति विनयकर क्षमा करावते भए एकक्षणमें औरही होयगए हनूमान कहे हैं हे नाथ मैं बाल बुद्धिकर जो तुम्हारा अविनय कियासो क्षमा करो और श्रीरामका किहकंधापुर आवनेका सकल वृत्तान्त कहा आप लंका के तरफ जावनेका वृत्तान्त कहा और कही में लंका होय कार्य कर आऊंहूं तुम किहकंधापुर जावो रामकी सेवाकरो ऐसा कहकर हनूमान आकाशके मार्ग लंकाको चले जैसे स्वर्गलोक को देव जाय और राजा महेंद्र राणी सहित तथा अपने प्रसन्नकीर्त्ति पुत्र सहित अंजनीपुत्रीके गया अंजनीको माता पिता और भाई का मिलाप भया सो अति हर्षित भई फिर महेंद्र किहकंधापुर आए सो राजा सुग्रीव विराधित आदि सन्मुख गए श्रीराम के निकट लाए राम बहुत आदरसे मिले जे राम सारिखे महंत पुरुष महातेज प्रतापरूप निर्मल चित्त हैं और जिन्होंने पूर्व जन्ममें दानव्रत तप आदि पुण्य उपार्जे हैं तिनकी देव विद्याधर भूमिगोचरी सबही सेवाकरें हैं जे गर्ववन्त बलवन्त पुरुष हैं वे सब उनके वश होवें इसलिये सर्वप्रकार अपने मनको जीत सत्कर्ममें यत्नकरो, हे भव्यजीव हो उस सत्कर्म के फलकर सूर्यसमान दीप्तको प्राप्त होवो ॥

अथानन्तर हनूमान आकाश में विमान में बैठे जाय हैं और मार्ग में दधिमुख नामा द्वीप आया जिसमें दधिमुख नामा नगर जहां दधि समान उज्ज्वल मन्दिर सुन्दर सुवरण के तोरण काली घटासमान सघन उद्यान पुरुषों से युक्त स्फटिक मणि समान उज्ज्वल जलकी भरी वापिका सोपानों कर शोभित कमलादिक कर भरी गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे राजन् इस नगरसे दूर वन वहां तृण बेल वृक्ष कांटों के समूह सूके वृक्ष दुष्ट सिंहादिक जीवों के नाद महा भयानक प्रचण्ड पवन जिससे वृक्ष

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिरगिर पडें सूक गये हैं सरोवर जहां और गृध्र उल्लूआदि दुष्ट पक्षी विचरें उस बनमें दोयचारण मुनि अष्टदिनका कायोत्सर्ग धरेखड़े और वहां से चारकोस तीन कन्या मानो मनोग्य नेत्र जिनके जटाधरे सफेद वस्त्र पहरे विधि पूर्वक महातपकर निर्मलहै चित्त जिनको मानों वे कन्या तीनलोककी आभूषणहीहैं

अथानन्तर बन में अग्नि लगी सो दोनों मुनि धीरवीर वृक्षकी न्याई खड़े समस्त बन दावानल कर जरे वे दोनों निरग्रन्थ योग युक्त मोक्षाभिलाषी रागादिक के त्यागी प्रशान्त बदन शान्त चित्त निष्पाप अवांछक नासा दृष्टि लूंवे हैं भुजा जिनकी कायोत्सर्ग धरे जिनके जीवना मरना तुल्य शत्रु मित्र समान कांचन पाषाण समान सो दोनों मुनि जरते देख हनूमान कम्पायमान भया वात्सल्य गुण कर मंडित महा भक्ति संयुक्त वैयाव्रत करिबेको उद्यमी भया, समुद्रका जल लेयकर मूसलाधार मेह बरसाया क्षणमात्रमें पृथिवी जलरूप होयगई वह अग्नि उस जलसे हनूमानने ऐसे बुझाई जैसे मुनि क्षमा भावरूप जल से क्रोधरूप अग्निको बुझावें मुनियों का उपसर्ग दूर कर तिनकी पूजा करताभया और वे तीनों कन्या विद्या साधतीथी सो दावानलके दाह कर व्याकुलताका कारण भयाथा सो हनूमान के मेहकर बन का उपद्रव मिटा सो विद्यासिद्धिभई सुमेरुकी तीन प्रदक्षिणा कर मुनों के निकट आयकर नमस्कार करतीभई और हनूमानकी स्तुति करती भई अहो तात धन्य तुम्हारी जिनेश्वर में भक्ति तुम किसी तरफ जातेथे सो साधुवों की रक्षा करी हमारे कारण से बनमें उपद्रव भया सो मुनि ध्यानारूढ़ ध्यान से डिगे तब हनूमान ने पूछी तुम कौन और निर्जन स्थानक में कौन कारण रहो हो तब सबों में बडी बहिन कहती भई यह दधिमुख नामा नगर जहां राजा गन्धर्व उसकी हम तीन पुत्री बड़ी चन्द्र

For Private and Personal Use Only

रेखा दूजी विद्युत्प्रभा तीजी तरंगमाला सर्वगोत्रको वल्लभ सो जेते विजियार्ध विद्याधर राजकुमार हैं वे सब हमारे विवाहके अर्थ हमारे पितासे याचना करते भये और एक दुष्ट अंगारक सो अति अभिलाषी निरन्तर कामके दाह कर आताप रूप तिष्ठे एकदिन हमारे पिता ने अष्टांग निमित्तके वेत्ता जे मुनि तिन को पूछी हे भगवान मेरी पुत्रियों का वर कौन होयगा तब मुनिने कही जो रणसंग्राम में साहसगति को मारेगा सो तेरी पुत्रियों का वर होयगा तब मुनिके अमोघ वचन सुनकर हमारे पिताने विचारी विजियार्ध की उत्तरश्रेणी में श्रेष्ठ जो साहसगति उसे कौन मारसके जो उसे मारे सो मनुष्य इस लोक में इन्द्र समान है और मुनि के बचन अन्यथा नहीं सो हमारे माता पिता और सकल कुटम्ब मुनि के बचन पर दृढ़ भए और अंगारक निरन्तर हमारे पितासे याचनाकरे सो पिताहमको न देय तब वह अति चिन्तावान दुःख रूप वैर को प्राप्त भया और हमारे यही मनोरथ उपजा जो वह दिन कब होय हम सहसगति के हनिबेवारे को देखें सो मनोगामिनी नामविद्या साधिवे को इस भयानक बनमें आई सो हमको बारवां दिन और मुनियों को आठमा दिन है आज अंगारकने हम को देख क्रोध कर बन में अग्नि लगाई जो छह वर्ष कछु इक अधिक दिनों में विद्या सिद्ध होय हमको उपसर्ग से भय न करबे कर बारहही दिन में विद्या सिद्धभई इस आपदा में हे महाभाग जो तुम सहाय न करते तो हमारा अग्नि कर नाश होता और मुनि भस्म होते इसलिये तुम धन्य धन्य हो तब हनूमान कहतेभये तुम्हारा उद्यम सफलभया जिनके निश्चय होय तिनको सिद्धहोयही धन्य निर्मल बुद्धि तुम्हारी बड़े स्थानक में मनोरथ धन्य तुम्हारा भाग्य ऐसा कहकर श्रीराम के किहकंधपुर आवने का सकल वृत्तान्त कहा और अपने रामकी आज्ञा प्रमाण लंका

जायबेका बृत्तान्त कहा उसही समय बनके दाह शांति होयबे का और मुनि उपसर्ग दूर होनेका वृत्तांत राजा गन्धर्व सुन हनूमान पै आया विद्याधरों के योग से वह बन नन्दन बन जैसा शोभता भया और राजा गन्धर्व हनूमान के मुख से श्रीरामका किहकंधापुर विराजने का बृत्तान्त सुन अपनी पुत्रियों सहित श्रीराम के निकट आया पुत्री महा विभूति कर राम को परणाई राम महा विवेकी ये विद्याधरों की पुत्री और महाराज विभूति कर युक्त हैं तथापि सीता बिना दशोंदिशा शून्य देखतेभए समस्त पृथिवी गुणवान जीवोंसे शोभित होय है और गुणवन्तों विना नगर गहन बन तुल्य भासे है कैसे हैं गुणवान जीव महा मनोहर है चेष्टा जिनकी और अति सुन्दर हैं भाव जिनके ये प्राणी पूर्वोपार्जित कर्मके फलसे सुख दुःख भोगवेहैं इसलिये जो सुखके अर्थी हैं वे जिनरूप सूर्यसे प्रकाशाजो पवित्रजिनमार्ग उसमें प्रवृते हैं। इति ५१ सं०

अथानन्तर महा प्रताप कर पूर्ण महाबली हनूमान जैसे सुमेरुको सोम जाय तैसे त्रिकूटाचल को चला सो आकाश में जाती जो हनूमानकी सेना उसका महा धनुषके आकार मायामई यंत्रकर निरोध भया तब हनूमान ने अपने समीपी लोकों से पूछा जो मेरी सेना कौन कारण आगे चल न सके यहां गर्व का पर्वत असुरों का नाथ चमरेन्द्र है अथवा इन्द्र है तथा इस पर्वत के शिखर पर जिन मन्दिर हैं अथवा चरमशरीरी मुनि हैं तब हनूमान के ये वचन सुनकर पृथुमति मन्त्री कहता भया हे देव यह क्रूरता संयुक्त मायामई यन्त्र है तब आप दृष्टि धर देखा कोटमें प्रवेश कठिन जाना मानों यहकोट विरक्त स्त्री के मन समान दुःख प्रवेश है अनेक आकारको धरे वक्रता से पूर्ण महा भयानक सर्व भक्षी पूतली जहां देवभी प्रवेश न करसकें जाज्वल्यमान तीक्ष्णहैं अग्र भाग जिनके ऐसे करोतोंके समूहकर मण्डित

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिह्वा के अग्रभाग से रुधिर को उगलते ऐसे हजारों सर्प तिन के भयायक फण वे विकराल शब्दकरे हैं और विष रूप अग्नि के कण बरसे हैं विषरूप धूमका अन्धकार होयरहा है जो कोई मूर्ख सामन्तपणा के मानसे उद्धतभया प्रवेशकरे उने मायामई सर्प ऐसे निगलें जैसे सरप मेंडकको निगलें लंका के कोट का मंडल जोतिष चक्र से भी ऊंचा सर्व दिशों में दुलंघ और देखा न जाय प्रलयकाल के मेघ समान भयानक शब्द कर संयुक्त और हिंसारूप ग्रन्थोंकी न्याईं अत्यन्त पापकर्मियों से निरमाया उसे देख कर हनूमान विचारताभया यह मायामईकोट राक्षसोंके नाथने रचाहै सो अपनी विद्याकी चातुर्यता दिखाई है और अब मैं विद्याबल से इसे उपाड़ता हुवा राक्षसों का मद हरूं जैसे आत्मध्यानी मुनि मोह मद को हरे तब हनूमान युद्धमें मनकर समुद्र समान जो अपनी सेना सो आकाशमें राखी और आप विद्या मई वक्तर पहिर हाथमें गदालेकर मायामई पूतली के मुख में प्रवेश किया जैसे राहु के मुख में चन्द्रमा प्रवेश करे और वा मायामई पूतली की कुक्षि सोई भई पर्वत की गुफा अन्धकार कर भरी सो आप नरसिंहरूप तीक्ष्ण नखोंकर विदारी और गदाके घातसे कोट चूरण किया जैसे शुक्लध्यानीमुनि निर्मल भावोंसे घातिया कर्मकी स्थिति चूरणकरे ॥

अथानन्तर यह विद्या महाभयंकर भंग को प्राप्तभई तब मेघकी ध्वनि समान ध्वनिभई विद्याभाग गई कोट विघट गया जैसे जिनेन्द्र के स्तोत्र से पाप कर्म विघट जाय तब प्रलयकाल के मेघ समान भयंकर शब्द भया मायामई कोट विखरा देख कोट का अधिकारी वज्रमुख महा क्रोधायमान होय शीघ्र ही रथपर चढ़ हनूमान पर विना विचारे मारने को दौड़ा जैसे सिंह अग्नि की ओर दौड़े जब

उसे आया देख पवनका पुत्र महायोधा युद्ध करिवेको उद्यमी भया तब दोनों सेनाके योधा प्रचण्ड नानाप्रकारके बाहनों पर चढ़े अनेक प्रकारके आयुध धरे परस्पर लड़नेलगे बहुत कहनेसे क्या स्वामी के कार्य ऐसा युद्ध भया जैसा मानके और मार्दवके युद्धहोय अपने २ स्वामीके दृष्टिमें योधा गाज २ युद्ध करते भए। जीवत विषे नहीं है स्नेह जिनके, फिर हनूमानके सुभटोंकर बज्रमुखके योधा क्षणमात्र में दशोंदिशा भाजे और हनूमानने सूर्यसे भी अधिकहै ज्योति जिसकी ऐसे चक्र शस्त्रोंसे बज्रमुख का सिर पृथ्वीपर डारा यह सामान्य चक्रहै चक्री अर्धचक्रियोंके सुदर्शनचक्र होयहै युद्ध विषे पिता का मरण देख लंकासुन्दरी बज्रमुखकी पुत्री पिताका जो शोक उपजाथा उसे कष्टसे निवार क्रोधरूप विष की भरी तेज तुरंग जुपे हैं जिसके ऐसे रथपर चढ़ी कुंडलोंके उद्योतसे प्रकाशरूप है मुख जिसका बक्र हैं भौंह जिसकी उल्कापातका स्वरूप सूर्यमंडल समान तेज धरती क्रोधके बश कर लालहैं नेत्र जिस के क्रूराकार डसे हैं किंदूरीसमान होंठ जिसने मानों क्रोधायमान शचीही है सो हनूमान पर दौड़ी और कहती भई रे दुष्ट मैं तुझे देखा यदि तेरे में शक्तिहै तो मोसे युद्धकर जो क्रोधायमानरावण न करै सो मैं करूंगी हे पापी तुझे यममन्दिर पठाऊंगी तू दिशाको भूल अनिष्टस्थानको प्राप्त भया ऐसे शब्द कहती वह शीघ्रही आई सो आवतीका हनुमानने छत्र उडाय दिया तब उसने बाणोंसे इनका धनुष तोड डारा और शक्तिलेय चलावे उसे पहिले हनूमान बीचही शक्तिको तोड डारी तब वह विद्याबलकर गंभीर बज्रदंडसमान बाण और फरसी बरछी चक्र शतघ्नी मूसल शिला इत्यादि वायुपुत्रके रथपर बरसावती भई जैसे मेघमाला पर्वतपर जलकी मूसल धारा बरसावे नानाप्रकार के आयुधोंके समूहसे उसने हनु

मान को बेढ़ा जैसे मेघपटल सूर्यको आछादे तब हनूमान विद्याकी सर्व विधिमें प्रवीण महा पराक्रमी उसने शस्त्रोंके समूह अपने शस्त्रोंसे आप तक न आवने दिए तोमरादिक बाणोंसे तोमरादिक बाण निवारे और शक्तिसे शक्ति निवारी इसभांति परस्पर अतियुद्ध भया इसके बाण उसने निवारे उसके बाण इसने निवारे बहुत बेरतक युद्धभया कोई नहीं हारे सो गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं। हे राजन हनूमानको लंकासुन्दरी बाणशक्ति इत्यादि अनेक आयुधोंसे न जीतती भई और काम के बाणोंकर पीडित भई कैसे हैं कामके बाण मर्म के बिदारनहारे कैसी है लंकासुन्दरी साक्षात लक्ष्मी समान रूपवन्ती कमल लोचन सौभाग्य गुणोंसे गर्वितसो हनूमानके हृदयमें प्रवेश करती भई जिस के कर्ण पर्यंत बाणरूप तीक्षण कटाक्ष नेत्ररूप धनुषसे चढे ज्ञानधीर्य के हरणहारे महा सुन्दर दुर्द्धर मनके भेदनहारे प्रवीण अपनी लावण्यतासे हरी है और सुन्दरताई जिन्होंने तब हनूमान मोहितहोय मनमें चितवताभया जो यह मनोहर आकार महाललित बाहिर तो विद्याबाण और सामान्य बाण तिनकर मोहि भेदे है और आभ्यन्तर मेरेमनको कामके बाणोंसे बींधे है यह मोहि बाह्याभ्यंतर हणे है तनमनको पीडे है इस युद्धविषे इसके बाणोंसे मृत्युहोय तो भली परन्तु इसके बिना स्वर्ग में भी जीवना भला नहीं इसभांति पवनपुत्र मोहितभया और वह लंकासुन्दरीभी इसके रूपको देख मोहित भई क्रूरतारहित करुणा विषे आयाहै चित्त जिसका तब जो हनूमानके मारिवेको शक्ति हाथमें लीनी थी सो शीघ्रही हाथसे भूमिमें डारदई हनुमान पर न चलाई कैसे हैं हनूमान प्रफुल्लितहै तन और मन जिनका और कमल दलसमानहैं नेत्र जिनके और पूर्णमासीके चन्द्रमासमानहै मुख जिनका नवयौवन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुकटविषे वानरका चिन्हसो तातकामदेव हैं। लंकासुन्दरी मनमें चितवतीभई कि इसने मेरा पिता मारा सो बड़ा अपराध किया यद्यपि द्वेषी है तथापि अनूपमरूपकर मेरेमनको हरे है जो इस सहित कामभोग न सेऊं तो मेरा जन्म निष्फल है तब विह्वल होय एक पत्र जिसमें अपना नाम सो बाण को लगाय चलाया तामें ये समाचार थे हे नाथ देवों के समूह कर न जीती जाऊं ऐसी मैं सो तुमने काम के बाणों से जीती, यह पत्र बांच हनूमान प्रसन्न होय रथ से उतरे जायकर उस से मिले जैसे काम रति से मिले वह प्रशांतवैर भई संती आंसू डारती तातके मरण कर शोकरत तब हनूमान कहते भए हे चन्द्रवदनी रुदन मत करे तेरे शोक की निवृति होवे तेरे पिता परम क्षत्री महाशूरवीर तिनकी यही रीति जो स्वामी कार्य के अर्थ युद्ध में प्राण तजें और तुम शास्त्र में प्रवीण हो सो सब नीके जानो हो, इस राज्य में यह प्राणी कर्मों के उदयकर पिता पुत्र बांधवादिक सबको हणे है इसलिये तुमआर्तिध्यान तजो ये सकलप्राणी अपना उपार्जा कर्म भोगवे हैं निश्चय मरण का कारण आयुका अन्त है और पर जीव निमित्त मात्र हैं, इनवचनों से लंकासुन्दरी शोक रहित भई इस सहित कैसी सोहती भई जैसे पूर्णचन्द्र से निशा सोहै प्रेम के समूह कर पूर्ण दोनों मिलकर संग्राम का खेद विस्मरण होयगए दोनों का चित्त परस्पर प्रीति रूप होय गया तब आकाश में स्तम्भनी विद्याकर कटक थांभा और सुन्दर मायामई नगर बसाया जैसी सांझ की आरक्तता होय उस समान लाल देवनके नगर समान मनोहर उसमें राजमहल अत्यन्त सुन्दर सो हाथी घोड़े विमान रथों पर चढे बड़े बड़े राजा नगर में प्रवेश करते भए नगर ध्वजावोंकी पंक्ति कर शोभित सो यथायोग्य नगर में तिष्ठे महा उत्साहसे संयुक्त रात्रि में शूरवीरों के युद्धका वर्णन जैसा भया तैसा सामंत करते भए हनूमान का लंकासुन्दरी के संग रमता भया॥

For Private and Personal Use Only

अथानन्तर प्रभात ही हनूमान चलने को उद्यमी भए तब लंकासुन्दरी महा प्रेम की भरी ऐसे कहती भई हे कंत तुम्हारे पराक्रम न सहे जांय ऐसे अनेक मनुष्यों के मुख रावणने सुने होवेंगे सो सुनकर अतिखेद खिन्न भया होयगा इसलिये तुम लंका काहे को जावो, तब हनूमान ने उसे सकल वृतान्त कहा कि रामने वानरवंशियों का उपकार किया सो सबों का प्रेरा रामके प्रति उपकार निमित्त जाऊं हूं हे प्रिये रामकी सीता से मिलाप कराऊं राक्षसों का इन्द्र अन्याय मार्गसे हर ले गयाहै, सो सर्वथा मैं लाऊंगा तब उसने कही तुम्हारा और रावण का वह स्नेह नहीं स्नेह नष्ट भया सो जैसे स्नेह कहिये तैल उसके नष्ट होयबे से दीपक की शिखा नहीं रहे है तैसे स्नेह नष्ट होयबे से संबन्धका व्यवहार नहीं रहे है अबतक तुम्हारा यह व्यवहार था तुम जब लंका आवते तब नगर उछालते गली गली में हर्ष होता मन्दिर ध्वजावों की पंक्ति से शोभित होते जैसे स्वर्ग में देव प्रवेश करें तैसे तुम प्रवेश करते, अब रावण प्रचण्ड दशानन तुम में द्वेषरूप है सो निःसंदेह तुमको पकड़ेगा इसलिये जब तुम्हारे उनके संधि होय तब मिलना योग्यहै तब हनूमान बोले हे विचक्षणे जाय कर उसका अभिप्राय जाना चाहूं हूं और वह सीतासती जगत् में प्रसिद्ध है और रूप कर अद्वितीय है जिसे देखकर रावणका सुमेरुसमान अचल मन चला है वह महापतिव्रता हमारे नाथ की स्त्री हमारी माता समान उसका दर्शन किया चाहूं हूं इसभांति हनूमान ने कही और सब सेना लंकासुन्दरी के समीप राखी और आप उस विवेकिनी से विदा होयकर लंका को सन्मुख भए। यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं। हे राजन्! इस लोक में यह आश्चर्य है जो प्राणी क्षणमात्र में एक रस को छोड कर दूजे रस में आ जाय

कभी विरस को छोड कर रस में आ जाय कबहूं रस को छोड कर विरस में आ जाय यह जगत यह कर्म की अद्भुत चेष्टा है संसारी सर्व जीव कर्म्मों के आधीन हैं। जैसे सूर्य दक्षणायन से उत्तरायण आवे तैसे प्राणी एक अवस्था से दूजी अवस्था में आवे ॥ इतिबावनवां पर्व समाप्तम् ॥

अथानन्तर गोतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक वह पवनका पुत्र महाप्रभावक उदयकर संयुक्त थोडे ही सेवकों सहित निःशंक लंका में प्रवेश करता भया प्रथमही विभीषणके मंदिर में गया विभीषण ने बहुत सन्मान किया फिर क्षणएक तिष्ठ कर परस्पर वार्ता कर हनूमान कहता भया कि रावण आधे भरतक्षेत्र का पति सर्व का स्वामी उसे यह कहां उचित जो दलिद्र मनुष्य की न्याईं चोरी कर परस्त्री लावे जे राजा हैं सो मर्यादाके मूल हैं जैसे नदीका मूल पर्वत राजाही अनाचारी होयतो सर्व लोक में अन्याय की प्रवृति होय ऐसे चरित्रकिए राजा की सर्वलोक में निन्दा होय इस लिए जगत के कल्याण निमित्त रावण को शीघ्रही कहो न्यायको न उलंघे यह कहो हे नाथ जगतमें अपयश का कारण यह कर्म है जिससे लोक नष्ट होंय सो न करना तुम्हारे कुल का निर्मल चरित्र केवल पृथिवी परही प्रशंसा योग्य नहीं स्वर्ग में भी देव हाथ जोड़ नमस्कार कर तुम्हारे बड़ों की प्रशंशा करे हैं तुम्हारा यश सर्वत्र प्रसिद्ध है तब विभीषण कहता भया मैं बहुत बार भाई को समझाया परन्तु मानें नहीं और जिस दिन से सीता ले आया उस दिनसे हमसे बात भी न करे तथापि तुम्हारे बचन से मैं फिर दबायकर कहूंगा परन्तु यह हठ उस से छूटना कठिन है और आज ग्यारवां दिन है सीता निराहार है जलभी नहींलेय है तौभी रावण को दया नहीं उपजी इस काम से विरक्त नहीं होय है ए बात सुनकर हनूमान को

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अति दया उपजी प्रमदनामा उद्यान जहां सीता विराजे है वहां हनुमान गया उस बनकी सुन्दरता देखता भया नवीनजे बेलों के समूह तिनसे पूर्ण और तिनके लाल पल्लवसोहे हैं मानों सुन्दर स्त्रीके कर पल्लव ही हैं और पुष्पोंके गुच्छों पर भ्रमर गुंजार करें हैं और फलों से शाखा नम्रीभुत होय रही हैं और पवन से हालें हैं कमलों कर जहां सरोवर शोभित हैं और देदीप्य मान बेलोंसे वृक्ष वेष्ठित हैं मानों वह बन देवबन समान है अथवा भोगभूमि समान है पुष्पोंकी मकरन्दसे मंडित मानों साक्षात नंदन बनहै अनेंक अद्भुत ताकर पूर्ण हनूमान कमल लोचनबनकी लीला देखता संता सीता के दर्शन निमित्त आगे गया चारों तरफ बन में अवलोकन किया सो दूर ही से सीता को देखी सम्यक दर्शन सहित महा सती उसे देख कर हनूमान मनमें चितवता भया यह राम देवकी परम सुन्दरी महा सती निर्धूम अग्नि समान असुवन से भर रहे हैं नेत्र जिसके सोच सहित बैठी मुख से हाथ लगाए सिरके केश बिखर रहे हैं कृशहै शरीर जिसका सो देखकर हनूमान बिचारताभया । धन्य रूप इस माताका लोक विषे जीते हैं सर्वलोक जिसने मानों यह कमलसे निकस लक्ष्मीही विराजे है दुखके समुद्रमें डूब रही है तोभी इस समान और कोई नारी नहीं मैं जैसेहोय तैसे इसे श्रीरामसे मिलाऊं इसके और रामके काज अपना तनदूं इसका और रामका विरह न देखूं यह चितवनकर अपना रूप फेर मन्द २ पांव धरता हनूमान आगे जाय श्रीरामकी मुद्रिका सीताके पास डारी सो शीघ्रही उसे देख रोमांचहोय आएऔर कछू इक मुख हर्षितभया सो समीप बैठीथी जो नारी वे इसकी प्रसन्नताके समाचार जायकर रावणको कहती भई सो वह तुष्टायमानहोय इनको वस्त्ररत्नादिक देताभया और सीताको प्रसन्न बदन जान कार्य

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की सिद्धि चिंतताभया सो मन्दोदरीको सर्व अन्तःपुर सहित सीतापै पठाई सो अपने नाथके बचन से सर्व अन्तःपुर सहित सीतापै आई सो सीताको मन्दोदरी कहती भई । हे बाले आज तू प्रसन्न भई सुनी सो तैंने हमपर बड़ी कृपाकरी अब लोकका स्वामी रावण उसे अंगीकारकर जैसे देवलोककी लक्ष्मी इन्द्रको भजे ये बचन सुन सीता कोपकर मन्दोदरीसे कहती भई हे खेचरी आजमेरे पतिकी वार्ता आई है मेरेपति आनन्दसेहैं इसलिये मोहि हर्ष उपजा है तब मन्दोदरीने जानी इसे अन्न जल किये ग्यारह दिनभए सो वायसे बके है तब सीता मुद्रिका ल्यावनहारे से कहती भई, हे भाई मैं इस समुद्रके अंतर्द्वीप विषे भयानक बनमें पड़ीहूं सो कोऊ उत्तमजीव मेरा भाई समान अतिवात्सल्य धंरणहारा मेरेपति की मुद्रिकालेय आयाहै सो प्रकट दर्शनदेवे तब हनुमान महाभव्य जीव सीताका अभिप्रायजान मनमें बिचा- रता भया जो पहिले पराया उपकार बिचार फिर अतिकायरहोय छिपरहे सो अधमपुरुषहै और जे पर जीवको आपदा विषे खेद खिन्न देख पराई सहायकरे तिन दयावन्तोंका जन्म सफलहै तबसमस्त रावण की स्त्री मन्दोदरी आदि देखे हैं और दूरही से सीताको देख हाथजोड सीस निवाय नमस्कार करता भया कैसाहै हनुमान महानिःशंक कांतिकर चन्द्रमासमान दीप्तिकर सूर्य समान वस्त्र आभरणकर मंडित रूपकर अतुल्य मुकटमें बानरका चिन्ह चन्दनकर चर्चित है सर्व अंग जिसका महा बलवान बज्र- ऋषभ नाराच संहनन सुन्दर केश रक्त होंठ कुंडलके उद्योत से महा प्रकाशरूप मनोहर मुख महा गुणवान महाप्रताप संयुक्त सीता के निकट आवता कैसा सोभता भया मानों भामंडल भाई लेयवे को आयाहै प्रथमही अपना कुल गोत्र माता पिताका नाम सुनाय कर फिर अपना नाम कहकर फिर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री रामने जो कहाथा सो सर्व कहा और हाथजोड़ बिनतीकरी हे साधर्मनी स्वर्गविमानसमान महल में श्रीराम विराजे हैं परन्तु तुम्हारे विरहरूप समुद्रमें मग्न काहू ठौर रतिको नहीं पावे हैं समस्त भोगोप भोग तजे मौन धरे तुम्हारा ध्यान करे हैं जैसे मुनि शुद्धताको ध्यावे एकाग्रचित तिष्ठे हैं वे बीणाकानाद और सुन्दर स्त्रियोंके गीत कदापि नहीं सुने हैं और सदा तुम्हारीही कथाकरे हैं तुम्हारे देखने अर्थ केवल प्राणों को धरे हैं यह वचन हनुमानके सुन सीता आनन्दको प्राप्त भई फिर सजल नेत्रहोय कहती भई (सीताके निकट हनुमान महा विनयवान हाथ जोड़ खड़ा है) जानकी बोली हे भाई मैं दुखके सागर में पड़ीहूं अशुभके उदयसे युक्तपतिके समाचार सुन तुष्टायमानभई तुझे क्या दूं तब हनूमान प्रणाम कर कहता भया हे जगत पूज्ये तुम्हारे दर्शनही से मोहि महा लाभ भया तब सीता मोती समान आंसुओं की बूंद नाखती हनूमान से पूछती भई हे भाई यह मगर ग्राह आदि अनेक जलचरों कर भरा महाभयानक समुद्र उसे उलंघ कर तू कैसे आया और सांच कहो मेरा प्राणनाथ तैंने कहां देखा और लक्ष्मण युद्धमें गयाथा सो कुशल क्षेमसे है और मेरा नाथ कदाचित तुझे यह संदेशा कहकर परलोक प्राप्तहुवा होय अथवा जिनमार्ग में महाप्रवीण सकल परिग्रह का त्याग कर तप करता होय अथवा मेरे वियोग से शरीर शिथिल होयगया होय और अंगुरी से मुद्रिका गिरपड़ी होय यह मेरे विकल्प है, अब तक मेरे प्रभु का तोसों परिचय न था सो कौन भांति मित्रता भई सो सब मुझसे विशेषता कर कहो तब हनूमान हाथ जोड़ सिर निवाय कहता भया हे देवि सूर्यहास खड्ग लक्ष्मण को सिद्ध भया और चन्द्रनखा ने धनीपै जाय धनीको क्रोध उपजाया सो खरदूषण दण्डक वनमें युद्धकरने को आया और लक्ष्मण उस

से युद्धकरने को गए सो तो सब वृतान्त तुम जानो हो फिर रावण आया और आप श्रीराम के पास विराजती थी सो रावण यद्यपि सर्वशास्त्र का वेत्ता था और धर्म अधर्म का स्वरूप जाने था परन्तु आप को देखकर अविवेकी होय गया समस्त नीति भूलगया बुद्धि जाती रही तुम्हारे हरिनेके कारण कपट कर सिंहनाद किया सो सुनकर राम लक्ष्मणपै गए और यह पापी तुमको हर ले आया फिर लक्ष्मण ने रामसे कही तुम क्यों आएशीघ्र जानकीपै जावो तब आप स्थानक आए तुमको न देखकर महाखेद खिन्न भए तुम्हारे ढूंढने के कारण वनमें बहुत भ्रमें फिर जटायु को मरते देखा तब उसे नमोकार मन्त्र दिया और चार आराधना सुनाय सन्यास देय पक्षी का परलोक सुधारा फिर तुम्हारे विरह से महादुखी सोच से परे और लक्ष्मण खरदूषण को हन राम पै आया धीर्य बंधाया और चन्द्रोदय का पुत्र विराधित लक्ष्मणसे युद्धही में आय मिला था फिर सुग्रीव रामपै आया और साहसगति विद्याधर जो सुग्रीव का रूप कर सुग्रीवकी स्त्रीका अर्थी भया था सो रामकोदेख साहसगतिकी विद्या जाती रही सुग्रीवका रूप मिटगया और साहसगति रामसेलड़ा सो साहसगतिको रामने मारा सुग्रीवका उपकार किया तब सबने मुझेबुलाय रामसे मिलाया अबमैं श्रीरामका पठाया तुम्हारे छुड़ायबे अर्थ यहां आया हूं परस्पर युद्ध करना निःप्रयोजनहै कार्य की सिद्धि सर्वथा नयकर करनी और लंकापुरीका नाथ दयावान् है विनयवान्है धर्म अर्थ काम का वेत्ता है कोमल हृदयहै सौम्यहै वक्रतारहितहै सत्यवादी महाधीरवीर है सो मेरा वचन मानेगा तोहि रामपै पठावेगा उसकी कीर्ति महा निर्मल पृथिवी पर प्रसिद्ध है और यह लोकापवाद से डरे है तब सीता हर्षित होय हनूमान से कहती भई कि हे कपिध्वज तो सरीसे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पराक्रमी धीरवीर विनयवान् मेरे पतिके निकट केतेक हैं तब मन्दोदरी कहती भई। हे जानकी तैंने यह क्या समझकर कही तू इसे न जाने है इसलिये ऐसा पूछे है इस सरीखे भरतक्षेत्रमें कौनहैं इस क्षेत्र में यह एक ही है यह महासुभट युद्ध में कइबार रावण का सहाई भयाहै यह पवनका पुत्र अंजनी का सुत रावणका भानजा जंमाईहै चन्द्रनखाकीपुत्री अनंगकुसमा परणाहै इस एकने अनेकजीतेहैं सदा लोक इसके दर्शन को वांछे हैं चन्द्रमा की किरणवत् इसकी कीर्ति जगत्में फैल रही है लंकाका धनी इसे भाइयों से भी अधिक गिने है यह हनूमान पृथिवी पर प्रसिद्ध गुणोंकर पूर्ण है परन्तु यहबड़ा आश्चर्य है कि भूमिगोचरियों कादूत होय आयाहै तब हनूमानने कही तुम राजामय की पुत्री और रावणकी पटराणी दूती होय कर आई हो जिस पति के प्रसादसे देवोंके से सुख भोगे उसे अकार्य में प्रवृत्ततें मने नहीं करौ हो और ऐसे कार्यकी अनुमोदना करो हो अपना वल्लभ विष का भरा भोजनकरे उसको नहीं निवारोहो जो अपना भला बुरा न जाने उसका जीतव्य पशु समान और तुम्हारा सौभाग्यरूप सब से अधिक और पति परस्त्री रत भया उसकी दूतीपना करो हो तुम सब बातों में प्रवीण परम बुद्धिमतीथी सो प्राकृत जीवों समान अविधि कार्यकरो हो तुम अर्धचक्री की महिषी कहिये पटराणी हो सो अब मैं तुमको महिषी कहिये भैंस समान जानूं हूं यह समाचार हनूमान के मुखसे सुन मन्दोदरी क्रोध रूप होय बोली अहो तू दोषरूप है तेरा वाचालपना निरर्थक है जो कदाचित रावण यह बात जाने कि यह राम का दूत होय सीतापै आयाहै तो जो काहूसे न करे ऐसी तोसे करे और जिसने रावणका बहनेऊ चन्द्रनखा का पति मारा उसके सुग्रीवादिक सेवक भए रावणकी सेवा छोड़ी सो वे मन्द बुद्धि हैं ये रंक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्या करेंगे इनकी मृत्यु निकट आई है इसलिये भूमिगोचरी के सेवक भये हैं वे अतिमूढ़ निर्लज्ज तुच्छवृत्ति कृतघ्नी वृथा गर्वरूप होय मृत्यु के समीप तिष्ठे हैं ये वचन मन्दोदरी के सुनकर सीता क्रोधरूप होय कहती भई हे मन्दोदरी तू मन्दबुद्धि है जो वृथा ऐसे कहे है तैं मेरा पति अद्भुत पराक्रमका धनी क्या नहीं सुना है शूरवीर और पण्डितोंकी गोष्ठी में मेरा पति मुख्य गाइये है जिसके वज्रावर्त धनुषका शब्द रण संग्राम में सुनकर महा रणधीर योधा धीर्य नहीं धरे हैं भयसे कम्पायमान होय कर दूर भागे हैं और जिसका लक्ष्मण छोटाभाई लक्ष्मीका निवास शत्रु पक्ष के क्षय करनेको समर्थ जाके देखतेही शत्रु दूर भागजावें बहुत कहिनेसे क्या मेरा पति राम लक्ष्मण सहित समुद्र तरकर शीघ्रही आवे है सो युद्धमें थोड़े ही दिनों में तू अपने पतिको मूवा देखेगी मेरा पति प्रबल पराक्रम का धारी है तू पापी भरतार की आज्ञा रूप दूती होय आई है सो शिताबही विधवा होयगी और बहुत रुदन करेगी ये वचन सीताके मुखसे सुनकर मन्दोदरी राजा मयकी पुत्री अति क्रोधको प्राप्तभई अठारा हजार राणी हाथोंकर सीता के मारबे को उद्यमी भई और क्रूर वचन कहती सीता पर आई तब हनूमान बीच आन कर तिनको थांभी जैसे पहाड़ नदीके प्रवाह को थांभे वे सब सीताको दुःखका कारण वेदनारूप होय हनिबे को उद्यमी भई थी सो हनूमानने वैद्य रूप होय निवारी तब ये सब मन्दोदरीआदि रावणकी राणी मान भंग होय रावणपै गई क्रूर हैं चित्त जिनके तिनको गये पीछे हनूमान सीता से नमस्कारकर आहार के निमित्त विनती करता भया हे देवि यह सागरांत पृथिवी श्रीरामचन्द्रकी है इसलिये यहांका अन्न उनहीका है वैरियोंका न जानों इस भांति हनूमान ने सम्बोधी और प्रतिज्ञा भी यही थी कि जो पति के समाचार सुनूं तब भोजनकरूं

For Private and Personal Use Only

पद्म
पुराण
॥६६५॥

सो समाचार आएही तब सीता सब आचार में विचक्षण महा साधनी शीलवन्ती देशकाल की जानने वारी आहार लेना अंगीकार करतीभई तब हनूमान ने एक ईरा नामकी स्त्री कुलपालिकाको आज्ञाकरी कि शीघ्रही श्रेष्ठ अन्न लावो और हनूमान विभीषणकेगया उसीके भोजन किया और उससे कही सीता को भोजन की तयारी कराय आया हूं और ईरा जहां डेरे थे वहां गई सो चार महूर्त में सर्व सामग्री लेकर आई दर्पणसमान पृथिवीको चन्दन से लीपा और महा सुगन्ध विस्तीर्ण निर्मल सामग्री और सुवर्णादिक के भाजन में भोजन धराय लाई कैएक पात्र घृत के भरे हैं कैएक चावलोंसे भरे हैं चावल कुन्दके पुष्प समान उज्ज्वल और कैएक पात्र दाल सो भरे हैं और अनेक रस नानाप्रकार के व्यंजन दूध दही महा स्वाद रूप भांति भांति आहार सो सीता बहुत क्रिया संयुक्त रसोई कर ईराआदि समीप वर्तियोंको यहां ही न्यौते हनूमान से भाई का भाव कर अति वात्सल्य किया महा श्रद्धा संयुक्त है अन्तःकरण जिसका ऐसी सीता महा पतिव्रता भगवानको नमस्कारकर अपना नियम समाप्तकर त्रिविध पात्रों के भोजन करावनेका अभिलाषकर महा सुन्दर श्रीराम तिनको हृदयमें धार पवित्र है अंग जिसका दिन में शुद्ध आहार करतीभई सूर्यका उद्योत होय तबही पवित्र मनोहर पुण्यका बढ़ावन हारा आहार योग्य है रात्रिको योग्य नहीं, सीता भोजन कर चुकी और कछु इक विश्रामको प्राप्त भई तब हनूमान ने नमस्कार कर विनती करी हे पतिव्रते हे पवित्रे हे गुण भूषणे मेरे कांधे चढ़ो और समुद्र उलंघ क्षण-मात्र में रामके निकट ले जाऊं तुम्हारे ध्यानमें तत्पर महा विभव संयुक्त जे राम तिनको शीघ्रही देखो तुम्हारे मिलापकर सबहीको आनन्दहो तब सीता रुदन करती हुई कहती भई हे भाई पतिकी आज्ञाबिना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेरा गमन योग्य नहीं जो पूछे कि विना बुलाए क्यों आई तो मैं क्या उत्तर दूंगी इसलिये रावणने उपद्रव तो सुना होयगा सो अब तुम जावो तोहि यहां विलंब उचित नहीं मेरे प्राणनाथ के समीप जाय मेरी तरफ से हाथ जोड़ नमस्कार कर मेरे मुखके वचन इसभांति कहियो हे देव एकदिन मो सहित आपने चारण मुनिकी बन्दना करी महा स्तुतिकर और निर्मलजलकी भरी सरोवरी कमलोंकर शोभित जहां जल क्रीडा करी उस समय महा भयंकर एक बनका हाथी आया सो वह हाथी महाप्रबल आपने क्षण मात्रमें वशकर सुन्दर क्रीडा करी हाथी गर्व रहित निश्चल किया और एकदिन नन्दन बन समान वन विषे मैं वृक्षकी शाखाको नवावती क्रीडा करती थी सो भ्रमर मेरे शरीरको आय लगे सो आपने अतिशीघ्रता कर मुझे भुजासे उठाय लई और आकुलता रहित करी और एकादिन सूर्यके उद्योत समय में आपके समीप सरोवरके तट तिष्ठती थी तब आप शिक्षा देयबेके काज कछूइक मिसकर कोमल कमलनालकी मेरे मधरसी दोनों और एकदिन पर्वतपर अनेक जातिके वृक्ष देख मैं आपको पूछा हे प्रभो यह कौन जातिके वृक्षहैं महामनोहर तब प्रसन्न मुखकर कही हे देवि ये नन्दनी वृक्षहैं और एकदिन करणकुण्डल नामा नदीके तीर आप विराजे थे और मैंभी थी उस समय मध्यान्ह समय चारणमुनि आए सो तुम उठकर महाभक्तिकर मुनिको आहार दिया वहां पंचाश्चर्य भए रत्नवर्षा कल्प वृक्षों के पुष्पोंकी वर्षा सुगन्धजलकी वर्षा शीतल मन्द सुगन्ध पवन दुन्दुभी बाजे और आकाश विषे देवों ने यह ध्वनि करी धन्य ये पात्र धन्य ये दाता धन्य दान, यें सब रहस्यकी बात कही और चूडा मणि सिरसे उतार दिया जो इसके दिखानेसे उनको विश्वास आवेगा और यह कहियो मैं जानूं हूं आप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की कृपा मोपै अत्यन्तहै तथापि तुम अपने प्राण यत्नसे राखियो तुम्हारेसे मेरा वियोग भया अब तुम्हारे यत्नसे मिलाप होयगा ऐसा कह सीता रुदन करतीभई तब हनूमान ने धीर्य बंधाया और कही हे माता जो तुम आज्ञा करोगी सोही होयगा और शीघ्रही स्वामी सो मिलाप होयगा यह कह हनूमानसीता से विदा भया और सीता ने पतिकी मुद्रिका अंगुरी में पहिर ऐसा सुख माना मानों पति का समागम भया और बन की नागरी हनूमान को देख कर आश्चर्यको प्राप्त भई और परस्पर ऐसी वात करतीभई यह कोई साक्षात् कामदेव है अथवा देव है सो बनकी शोभा देखवे को आया है तिन में कोई एक काम कर व्याकुल होय बीन वजावती भई किन्नरी देवीयों कैसे हैं स्वर जिनके कोई यक चन्द्रवदनी व में हस्तविषे दर्पण राख और इसका प्रतिबिम्ब दर्पणमें देखतीभई देखकर आसक्त भई इस भांति समस्त स्त्रियों को संभ्रम उपजाय हार माला सुन्दर वस्त्र धरे है देदीप्यमान अग्निकुमार देववत् सोहताभया॥

अथानन्तर इनके बनमें आवनेकी वार्ता रावणने सुनी तब क्रोधरूपहोय रावणने महा निर्दई किंकर युद्धमें जे प्रवीण थे वे पठाए और तिनको यह आज्ञाकरी कि मेरी क्रीड़ाका जो पुष्पोद्यान वहां मेराकोई एक द्रोही आया है सो अवश्य मार डारियो तब ये जायकर बनके रक्षकोंको कहतेभए हो बनके रक्षकहो तुम क्या प्रमादरूप होयरहे हो कोई उद्यान में दुष्ट विद्याधर आयाहै सो शीघ्रही मारना अथवा पकड़ना यह महा अविनयी है वह कौनहै कहां है ऐसे किंकरों के मुखसे ध्वनि निकसी सो हनूमान ने सुनी और धनुषके धरणहारे शक्तिके धरणहारे गदाके धरणहारे खड्ग बरछीके धरणहारे अनेकलोग आवते हनूमानने देखे तब पवन का पूत सिंह से भी अधिकहै पराक्रम जिसकामुकटमें रत्न जड़ित बानरका चिन्ह उसकर

प्रकाश कियाहै आकाश जिसने आप उनको अपना रूप दिखाया उगते सूर्य समान क्रोधरूप होंठ डसता लाल नेत्र तब इसके भयसे सब किंकर भागे तब और क्रूर सुभट आए शक्ति तोमर खड्ग चक्र गदा धनुष इत्यादि आयुध कर में धरे और अनेक शस्त्र चलावते आए तब अंजनी का पुत्र शस्त्र रहित था सो बनके जे वृक्ष ऊंचे ऊंचे थे उनकेसमूह उपाड़े और पर्वतोंकी शिला उपाड़ी सो रावणके सुभटों पर अपनी भुजोंकर वृक्ष और शिला चलाई मानों कालही है सो बहुत सामंत मारे कैसीहै हनूमानकी भुजा महा भयंकर जो सर्प उसके फण समानहै आकार जिनका शालवृक्ष पीपल बड़ चम्पा नीम अशोक कदम्ब कुन्द नाग अर्जुन धव आम्र लोध कटहल बड़े बड़े वृक्ष उपाड़ उपाड़ अनेक योधा मारे कैयक शिलावोंसे मारे कैयक मुक्कों और लातोंसे पीसडारे समुद्र समान रावणके सुभटोंकी सेना क्षणमात्रमें वखेरडारी कैयक मारे कैयक भागे हे श्रेणिक मृगोंके जीतवेको मृगराजका कौन सहाई होय और शरीर बलहीन होय तो घनोंकी सहायकर क्या उस बनके सबही भवन और वापिका और विमान सारिखे उत्तममंदिर सबचूरडारे केवल भूमिरहित बनके मन्दिर और वृक्ष विध्वंस किये सोमार्ग होय गया जैसे समुद्र सूकजाय और मार्ग होयजाय फोरि डारीहै हाटों कपिोंकि और मारेहैं अनेक किंकर सो बाजारऐसा होय गया मानों संग्रामकी भूमिहै उतंग जे तोरणासो पडे हैं और ध्वजावों की पंक्ति पडी सो आकाश से मानों इन्द्रधनुष पड़ाहै और अपनी जंघोंसे अनेक वर्ण रत्नों के महिल ढाहे सो अनेक वर्णके रत्नों की रजकर मानों आकाश में हजारों इन्द्र धनुष चढ़े हैं और पायनकी लातन से पर्वत समान ऊंचे घर फोर डारे तिन का भयानक शब्द होता भया और कई यक तो हाथोंसे मारे और कई एक पगों से मारे और छाती से और

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कांधे से इस भांति रावणके हजारों सुभट मारे सो नगर में हाहाकार भया और रत्नों के माहिल गिर पड़े तिनका शब्द भया और हाथियों के थंभ उपार डारे और घोड़े पवनमंडल पानों की न्याई उडे२ फिरेहैं और वापी फोर डारी सो कीचड़ रहगया समस्त लंका व्याकुल भई मानों चाक चढ़ाई है लंका रूप सरोवर राक्षसरूप मीनों से भरा सो हनूमानरूप हाथी ने गाह डारा तब मेघ वाहन बक्तर पहिर बड़ी फौज लेय आया और उसके पीछेही इन्द्र जीत आया सो हनूमान उनसे युद्ध करनेलगा लंकाकी वाह्यभूति में महायुद्ध भया जैसा खरदूषण के और लक्ष्मण के युद्धभया था और हनूमान चार घोड़ों के रथपर चढ़ धनुषबाण लेय राक्षसोंकी सेना पर दौड़ा तब इन्द्रजीत ने बहुत बेरतक युद्ध कर हनूमान को नागफांससे पकड़ा और नगरमें लेआया सो इसके आयवेसे पहिलेही रावण के निकट हनूमान की पुकार होय रहीथी अनेक लोग नाना प्रकार कर पुकारकर रहेथे कि सुग्रीवका बुलाया यह अपने नगर से किहकंधापुर आया रामसो मिला और वहां से इस ओर आया सो महेन्द्र का जीता और साधवों के उपसर्ग निवारे दधिमुखकी कन्या रामपै पठाई और बज्रमई कोट विध्वंसा बज्रमुखको मारा और उसकी पुत्री लंका सुन्दरी अभिलाषवन्तीभई और उससंग रमा और पुष्पनामा बन विध्वंसा और बनपालक विह्वल करे और बहुत सुभट मारे औरघटरूप जे स्तन तिनकर सींच सींच मालियों की स्त्रियों ने पुत्रोंकी नांई जे वृक्ष बढ़ाएथे वे उपारडारे और वृक्षों से बेल दूरकरी सो विधवा स्त्रियोंकी नांई भूमिमें पड़ी तिनके पल्लव सूक गए और फल फूलों से नम्रीभूत नानाप्रकारके वृक्ष मसान कैसे वृक्ष करडारे सो यह अपराध सुन रावण अति कोप भयाथा इतनेमें इन्द्रजीत हनमानको लेकर आया सो रावणने इसको लोह की सांकलों

For Private and Personal Use Only

पद्म पराण ॥६७०॥

से बंधाया और कहताभया कि यह पापी निर्लज्ज दुराचारी है अब इसके देखनेकर क्या यह नाना अपराध का करणहारा ऐसे दुष्टको क्यों न मारिये तब सभाके लोक सबही माथा धुनकर कहतेभए हेहनूमान जिसके प्रसादकर पृथिवीमें तू प्रभुताको प्राप्तभया ऐसे स्वामीके प्रतिकूल होय भूमिगोचरीका दूतभया रावण की ऐसीकृपा पीठ पीछे डारदई ऐसे स्वामीको तज जे भिखारी निर्धन पृथिवीमें भ्रमतेफिरें वे दोनों वीर तिन का तू सेवकभया और रावणने कहा कि तू पवन का पुत्रनहीं किसी औरकर उपजाहै तेरी चेष्टाअकुलीनकी प्रत्यक्ष दीखे है जे जार जात हैं तिन के चिन्ह अंगमें नहीं दीखे हैं अब अनाचारको आचरें तब जानिए यह जारजात है कहां केसरी सिंहका बालक स्यालका आश्रयकरे नीचका आश्रयकर कुलवन्त पुरुष न जीवें अब तू राजद्वार का द्रोही है निग्रह करने योग्यहै तब हनूमान यह वचनसुन हंसा और कहताभया न जानिए कौन का निग्रह होय इस दुर्बुद्धिकर तेरी मृत्यु नजीक आईहै कैएक दिनमें दृष्टिपरेगी लक्ष्मणसहित श्रीराम बड़ी सेना से आवे हैं सो किसीसे रोके न जांय जैसे पर्वतोंकर मेघ न रुके और जैसे नानाप्रकार के अमृत समान आहार कर तृप्त न भया और विष की एक बूंद भखें नाश को प्राप्त होय तैसे हजारों स्त्रियों कर तू तृप्तायमान न होय और पर स्त्रीकी तृष्णाकर नाशको प्राप्त होयगा जो शुभ और अशुभ कर प्रेरी बुद्धि होनहार माफिक होयहै सो इन्द्रादि कर भी अन्यथा न होय दुरबुद्धिमें सैकड़ों प्रिय वचन कर उपदेश दीजिए तौभी न लगें जैसा भवितव्य होय सोही होय विनाशकाल आवे तब बुद्धिका नाश होय जैसेकोई प्रमादी विषका भरा सुगन्ध मधुर जल पीवे तो मरणको पावे तैसे हे रावण तू परस्त्रीका लोलुपी नाश को प्राप्त होयगा तू गुरु परिजन बृद्धमित्र प्रिय बांधव मन्त्री सब के वचन उलंघकर पापकर्म में प्रवृता

पद्म पुराण ॥६७१॥

हैसो दुराचार रूप समुद्र में काम रूप भ्रमर के मध्य आय नरक के दुःख भोगेगा हे रावण तू रत्नश्रवा राजाके कुल क्षय नीच पुत्र भया तुझसे राक्षस बंशियोंका क्षय होयगा आगे तेरे बंशमें बडे बड़े मर्यादाके पालनहारे पृथिवी में पूज्य स्वर्ग मुक्तिके गमन करणहारे भए. और तू उनके कुलमें पुलाक कहिए न्यून पुरुष भया दुर्बुद्धिको मित्रको मित्रलोक सुबुद्धिकी बात कहे सो न माने इसलिये दुर्बुद्धिको कहना निरर्थक है जब हनूमानने यह वचन कहे तब रावण क्रोधकर आरक्त होय दुर्वचन कहता भया यह पापी मृत्यु से नहीं डरे है वाचालहै इसलियेशीघ्रही इसके हाथ पांवग्रीवा साकलोंसे बांधकर और कुवचनकहते ग्राममें फेरो क्रूर किंकरखार और घर घर यह वचन कहो यहभूमिगोचरियों को दूत आयाहै इसे देखो और स्वान बालक खारसो नगरकी लुगाई धिक्कारदेवें औरबालक धूल उडावें और स्वानभोंकें सर्व नगरीमें इसभांति इसे फेरो दुःख देवो तब वे रावणकी आज्ञा प्रमाण कुवचन बोलते ले निकसे सो यह बन्धन तुड़ाय ऊंचा चला जैसे यति मोह फांस तोड़ मोक्षपुरी को जाय आकाशसे उछल अपने पगों की लातों कर लंका का बड़ा द्वार ढाया तथा और छोटे दरवाजे ढाहे इन्द्रके महिल तुल्य रावणके महिल हनूमान के चरणों के घातसे विखर गए जिनके बड़े बडे स्तंभ थे और महलके आस पास रत्न सुवर्णका कोट था सो चूर डारा जैसे बज्रपातके मारे पर्वत चूर्ण होजांय तैसे रावणके घर हनूमान रूप बज्र के मारे चूर्ण होयगए यह हनूमान के पराक्रम सुन सीताने प्रमोद किया और हनूमान को बन्धा सुन विषाद किया था तब वज्रोदर पास बैठी थी उसने कही हे देवी वृथा काहेको रुदन करे यह सांकल तुड़ाय आकाश में चला जाय है सो देख तब सीता अतिप्रसन्न भई और चित्तमें चितवती भई यह हनमान मेरे समाचार

पति पै जाय कहेगा सो असीस देती भई और पुष्पांजलि नाखती भई कि तू कल्याणसे पहुंचियो समस्त ग्रहं तुझे सुखदाई होंय तेरे बिघ्न सकल नाशको प्राप्त होंय तू चिरंजीव हो इसभान्ति परोक्ष असीस देती भई जे पुण्याधिकारी हनूमान सारिखेपुरुष हैं वे अद्भुत आश्चर्यको उपजावेहैं कैसे हैं वेपुरुष जिन्होंने पूर्व जन्म में उत्कृष्ट तप ब्रत आचरे हैं और सकल भव में बिस्तरे है ऐसी कीर्ति के धारक हैं और जो कार्य किसीसे न बने सो करबे समर्थ हैं और चिंतवनमें न आवे ऐसा जोआश्चर्य उसे उपजावें हैं इसलिये सर्व तजकर जे पंडित जन हैं वे धर्म को भजो और जे नीचकर्म हैं वे खोटे फलके दाता हैं इसलिये अशुभकर्म तजो और परम सुखका आस्वाद तामें आसक्त जेप्राणी सुन्दर लीलाके धारक वे सूर्य के तेजको जीते ऐसे होय हैं ॥ इति त्रेपनवां पर्व सपूर्णम् ॥

अथानन्तर हनूमान अपने कटक में आय किहकंधापुर को आया लंकापुरी में विध्न कर आया ध्वजा छत्रादि नगरी की मनोग्यता हर आके किहकिंधापुर के लोग हनूमानको आया जान बाहिर निकसे नगर में उत्साह भया यह धीर उदार है पराक्रम जिसका नगर में प्रवेश करता भया सो नगर के नर नारियों को इसके देखनेका अति संभ्रमभया अपना जहां निवास वहां जाय सेनाके यथा योग्यडेरे कराए राजा सुग्रीवने सब बृतान्त पूछा सो उसे कहा फिर रामके समीप गए राम यह चितवन कर रहे हैं कि हनुमान आयाहै सो यह कहेगा कि तुम्हारी प्रिया सुखसे जीवे है हनुमानने उसही समय आय राम को देखा महाक्षीण वियोगरूप अग्निसे तप्तायमान जैसे हाथी दावानलकर व्याकुलहोय महाशोकरूप गर्त में पड़े तिनको नमस्कारकर हाथ जोड हर्षितबदन होय सीता की वार्ता कहता भया जेते रहस्य के

समाचारकहेथे वहसब वरणनकिये और शिरकाचूडामणिसौंपनिश्चितभया।चिन्ताकरवदनकीऔरही छाया होय रही है आंसू पडे हैं सो रामभी इसे देखकर रुदन करने लगगए और उठकर मिले श्री राम यों पूछे हैं हे हनुमान सत्यकहो मेरीस्त्री जीवे है तब हनूमान नमस्कारकरकहताभया । हेनाथ जीवे है आप का ध्यान करे है हे पृथ्वीपते आप सुखी होवो आपके विरहकर वह सत्यवती निरन्तर रुदन करे है नेत्रों के जलकर चतुरमास कर राखाहै, गुणके समूहकी नदी सीता ताके केश बिखर रहे हैं अत्यन्त दुखी है और बारम्बार निश्वास नाखती चिंताके सागरमें डूबरही है स्वभावहीसे दुर्बल शरीरहै और अब विशेष दुर्बल होगई है रावणकीस्त्री आराधे हैं परन्तु उनसे संभाषणकरे नहीं निरंतर तुम्हाराही ध्यानकरे है शरीर का संस्कार सब तज बैठी है हे देव तुम्हारी राणी बहुत दुःखसे जीवे है अब तुमको जो करनाहोय सोकरो अथानन्तर हनुमानके ये बचन सुन श्रीराम चिन्तावानभए मुखकमल कुमलायगया दीर्घ निश्वास नाखतेभए और अपने जीतव्यको अनेक प्रकार निंदतेभए तब लक्ष्मणने धीर्य बंधाया हे महा बुद्धि क्या सोच करोहो कर्तव्यमें मनधरो और लक्ष्मण सुग्रीवसे कहताभया हे किहकन्धाधिपते तू दीर्घ सूत्री है अब सीताके भाई भामंडलको शीघ्रही बुलावो रावणकी नगरी हमको अवश्यही जाना है कै तो जहाजोंकर समुद्र तिरे अथवा भुजावोंसे ये बात सुन सिंहनादनामा विद्याधर बोला आप चतुर महाप्रवीण होयकर ऐसी बात मत कहो और हमतो आपके संगहैं परन्तु ऐसा करना जिसमें सबका हित होय हनूमानने जाय लंकाके बन विध्वंसे और लंकामें उपद्रव किया सो रावण क्रोधभयाहै सो हमारी तो मृत्यु आई है तब जामवन्त बोला तू नाहरहोय कर मृगकी न्याई कहा कायर होयहै अब रावणभी

भयरूपहै और वह अन्यायमार्गी है उसकी मृत्यु निकटआई है और अपनी सेनामें भी बडे २ योधा विद्याधर महारथी हैं विद्या विभवसे पूर्ण हैं हजारों आश्चर्यके कार्य जिन्होंने कियेहैं तिनके नाम घनगति एकभूत गजस्वन, क्रूरकेलि, किलभीम कुंड, गोरवि अंगद. नल नील तडिद्वक्र मंदर अशॅनी अर्णव, चन्द्रज्योति, मृगेंद्र, बज्रदृष्टि, दिवाकर, और उल्काविद्या लांगूलविद्या दिव्यशस्त्र विषे प्रवीण जिनके पुरुषार्थ में विघ्न नहीं ऐसे हनूमान महाविद्यावान और भामण्डलविद्याधरोंका ईश्वर महेंद्रकेतु अति उग्रहै पराक्रम जिसका प्रसन्नकीर्ति उपवाति और उसके पुत्र महा बलवान तथा राजा सुग्रीवके अनेक सामन्त महा बलवानहैं परम तेजके धारक वरतेहैं अनेक कार्यके करणहारे आज्ञाके पालनहारे ये बचन सुनकर विद्याधर लक्ष्मणकी ओर देखतेभए और श्रीरामको देखा सो सौम्यतारहित महा विकरालरूप देखा और भृकुटि चढ़ी महा भयंकर मानों कालके धनुषही हैं श्रीरामलक्ष्मण लंकाकी दिशा क्रोधके भरे लाल नेत्रकर चौंके मानों राक्षसोंके क्षय करनेके कारणही हैं फिर वही दृष्टि धनुषकी ओर धरी, और दोनों भाइयोंका मुख महाक्रोधरूप होय गया कोपकर मंडितभए शिरके केश ढीलेहोय गए मानों कमलके स्वरूपही हैं जगतको तामसरूप तमकर व्याप्तकिया चाहे हैं ऐसा दोनों भाइयोंका मुख ज्योतिके मंडल मध्य देख सब विद्याधर गमनको उद्यमीभए संभ्रमरूप है चित जिनका राघव का अभिप्राय जानकर सुग्रीव हनूमानादि सर्व नाना प्रकार के आयुध और संपदा कर मंडित चलने को उद्यमी भए राम लक्ष्मण दोनों भाइयों के प्रयाण होने के वादित्रों के समूह के नादकर पूरित करी है दशोंदिशा सो मार्गसिरबदी पंचमी के दिन सूर्यके उदय समय महा उत्साह सहित भले २ शकुन भए

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उससमय प्रयाण करतेभए क्याक्या शकुन भए वे कहिये हैं निर्धूम अग्नि की ज्वाला दक्षिणावर्त देखी और मनोहर शब्द करते मोर और वस्त्राभरणकर संयुक्त सौभाग्यवती नारी सुगन्ध पवन निग्रंथ मुनि छत्र तुरंगोंका गम्भीर हींसना घंटा का शब्द दहीका भरा कलश काग पांख फैलाए मधुर शब्द करता भेरी और शांख का शब्द और तुम्हारी जय होवे सिद्धि होवे नन्दो बधो ऐसे वचन इत्यादि शुभ शकुन भए राजा सुग्रीव श्रीराम के संग चलते भए सुग्रीवके ठौर २ सुविद्याधरों के समूह आए कैसाहै सुग्रीव शुक्लपक्षके चन्द्रमा समान है प्रकाश जिसका नानाप्रकार के विमान नानाप्रकारकी ध्वजा नानाप्रकार के वाहन नाना प्रकार के आयुध उन सहित बड़े बड़े विद्याधर आकाश में जाते शोभते भए राजा सुग्रीव हनूमानशल्य दुर्मर्षण नलनील काल सुषेणकुमुद इत्यादि अनेक राजा श्रीरामके लारभए तिनके ध्वजावों पर देदीप्यमान रत्नमई वानरोंके चिन्ह मानो आकाशके ग्रसबेको प्रवरते हैं और विराधितकी ध्वजा पर नाहरका चिन्ह नीझरने समान देदीप्यमान और जाम्बुकी ध्वजापर वृक्ष और सिंहरव की ध्वजा में व्याघ्र और मेघकांतकी ध्वजा में हाथीका चिन्ह इत्यादि राजावोंकीध्वजा में नानाप्रकार के चिन्ह इनमें भूतनाद महा तेजस्वी लोकपाल समान सो फौज का अग्रेसरभया और लोकपाल समान हनूमान भूतनाद के पीछे सामन्तों के चक्र सहित परम तेजको धरे लंकापर चढ़े सो अति हर्षके भरे शोभते भये जैसे पूर्व रावण के बड़े सुकेशी के पुत्र माली लंका पर चढ़े थे और अमल किया था तैसे श्रीराम चढ़े श्रीरामके सन्मुख विराधित बैठा और पीछे जामवंत बैठा बांई भुजा सुषेण बैठा दाहिनी भुजा सुग्रीव बैठा सो एक निमिष में बेलंधरपुर पहुंचे वहांका समुद्र नाम राजा सो उसके और नलके परम

युद्धभया सो समुद्रके बहुत लोक मारेगए और नलने समुद्रको बांधा फिर श्रीरामसे मिलाया और वहांही डेराभए श्रीरामने समुद्रपर कृपाकरी उसकाराज्य उसको दिया सो राजासमुद्रने अति हर्षित होय अपनी कन्या सत्यश्री कमला गुणमाली रत्नचड़ा स्त्रियों के गुणकर मण्डित देवांगना समान सो लक्षमण से परणाई वहां एक रात्रीरहे फिर यहांसे प्रयाणकर सुबेल पर्वतपर सुबेल नगरगए वहां राजा सुबेल नाम विद्याधर उसको संग्राम में जीत रामके अनुचर विद्याधर क्रीड़ा करतेभए तैसे नन्दन बन में देव क्रीड़ा करें वहां अक्षय नाम वन में आनन्द से रात्रि पूर्णकरी फिर प्रयाणकर लंका जायवे को उद्यमी भए कैसी है लंका ऊंचे कोट से युक्त सुवर्ण के मन्दिरोंकर पूर्ण कैलाशके शिखर समान है आकार जिनके और नाना प्रकारके रत्नों के उद्योतकर प्रकाशरूप और कमलोंके जे बन तिनसे युक्त वापी सरोवरादिक कर शोभित नाना प्रकार रत्नोंके ऊंचे जे चैत्यालय तिनकर मण्डित महा पवित्र इन्द्रकी नगरी समान ऐसी लंकाको दूरसे देखकर समस्त विद्याधर रामके अनुचर आश्चर्य को प्राप्तभए और हंसद्वीप में डेरे किये वहां हंसपुर नगर राजा हंसरथ उसे युद्ध में जीत हंसपुरमें क्रीड़ा करते भए वहांसे भामण्डल पर फिर दूत भेजा और भामण्डल के आयवे की बांछा कर वहां निवास किया जिस जिस देश में पुण्या-धिकारी गमन करें वहां वहां शत्रुओंको जीत महा भोग उपभोग को भजें इन पुण्याधिकारी उद्यमवन्तों से कोई परे नहीं है सब आज्ञाकारी हैं जो जो उनके मनमें अभिलाषा होय सो सब इनकी मूठीमें है इस लिये सर्व उपायकर त्रैलोक्य में सार ऐसा जो जिनराजका धर्म सो प्रशंसा योग्यहै जो कोई जग जीत भयाचाहे वह जिनधर्मको आराधो ये भोग क्षणभंगुर हैं इनकी कहा बात यह वीतरागका धर्म निर्वाण

देनेहारा है और कोई जन्म लेय तो इन्द्र चक्रवर्त्यादिक पदका देनहारा है उस धर्मका प्रभावसे ये भव्य जीव सूर्यसे भी अधिक प्रकाशको धरे हैं ॥ इति चौवनवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर रामका कटक समीप आया जान प्रलयकाल के तरंग समान लंका क्षोभ को प्राप्तभई और रावण कोपरूप भया और सामन्त लोक रणकथा करते भए जैसा समुद्रका शब्द होय तैसे वादित्रों के नादभए सर्व दिशा शब्दायमान भई और रण भेरी के नाद से सुभट महा हर्ष को प्राप्त भए सब साजबाज सज स्वामी के हितु स्वामी के निकट आए तिनके नाम मारीच अमलचन्द्र भास्कर सिंहप्रभ हस्त प्रहस्त इत्यादि अनेक योधा आयुधों से पूर्ण स्वामी के समीप आए ॥

अथानन्तर लंकापति महायोधा संग्रामके निमित्त उद्यमीभया तब विभीषण रावणपै आए प्रणामकर शास्त्र मार्गके अनुसार अति प्रशंसायोग्य सबको सुखदाई आगामी कालमें कल्याणरूप वर्तमान कल्याण रूप ऐसे वचन विभीषण रावण से कहता भया कैसा है विभीषण शास्त्र में प्रवीण महा चतुर नय प्रमाण का वेत्ता भाई को शान्त वचन कहता भया हे प्रभो तुम्हारी कीर्ति कुन्द के पुष्प समान उज्ज्वल महाविस्तीर्ण महाश्रेष्ठ इन्द्र समान पृथिवी पर विस्तर रही है सो परस्त्री के निमित्त यह कीर्ति क्षण-मात्र में क्षय होयगी जैसे सांझ के बादल की रेखा इसलिये। हे स्वामी! हे परमेश्वर हम पर प्रसन्न होवो शीघ्र ही सीता को रामके समीप पठावो इसमें दोष नहीं केवल गुणही हैं सुखरूप समुद्र में आप निश्चय तिष्ठो हे बिचक्षण जे न्याय रूप महा भोग हैं वे सब तुम्हारे स्वाधीन हैं और श्रीराम यहां आए हैं सो बड़े पुरुष हैं तुम्हारी तुल्य हैं सो जानकी तिनको पठाय देवो सर्वथा प्रकार अपनी वस्तु ही प्रशंसा

योग्य है पर वस्तु प्रशंसा योग्य नहीं यह वचन विभीषण के सुन इन्द्रजीत रावण का पुत्र पिता के चित्त की वृति जान बिभीषण को कहता भया अत्यन्त मान का भरा और जिनशासनसे बिमुख हे साधो तुमको कौनने पूछा और कौन ने अधिकार दिया जिससे इसभान्ति उन्मत्त की नाईं वचन कहो हो तुम अत्यन्त कायर हो और दीन लोकन की नांई युद्ध से डरो हो तो अपने घरके बिवरणमें बैठो कहा ऐसी बातों से ऐसी दुर्लभ स्त्रीरत्न पायकर मूढों की न्याईं कौन तजे तुम काहेको वृथा वचन कहो जिस स्त्री के अर्थ सुभट पुरुष संग्राम में तीक्षण खड्ग की धारा से महा शत्रुवों को जीत कर वीर लक्ष्मण भुजोंकर उपार्जें हैं तिनके कायरता कहां कैसाहे संग्राम मानों हाथियों के समूहसे जहां अंधकार होय रह्यहे और नाना प्रकार के शब्दों के समूह चले हैं जहां अति भयानक है यह वचन इन्द्रजीत के सुनकर इन्द्रजीत को तिरस्कार करता संता बिभीषण बोला रे पापी अन्यायमार्गी क्या तू पुत्र नामा शत्रु है तुझे शीत वाय उपजी है अपना हित नहीं जाने है शीत वायु का पीड़ा और उपाय छांड शीतल जलमें प्रवेश करे तो अपने प्राण खोवे और घरमें आग लगी और तू अग्नि में सूके ईंधन डारे तो कुशल कहां से होय अहो मोह रूप ग्राहकर तू पीडितहे तेरी चेष्टा विपरीतहे यह स्वर्ण मई लंका जहां देवविमान से घर लक्ष्मणके तीक्षण बाणोंसे चूर्ण न होहि जाहिं तापहिले जनकसुता पतिव्रता को राम पै पठावो सर्व लोक के कल्याण के अर्थ शीघ्रही सीता का अर्पण योग्य है तेरे बापकुबुद्धि ने यह सीता नहीं आनी है राक्षसरूप सर्पों का विल यह जो लंका उसमें विषनाशक जड़ी आनी है सुमित्रा का पुत्र लक्ष्मण सोई भया क्रोधायमान सिंह उसे तुम गज समान निवारिबे समर्थ नहीं जिस के हाथ

सागरावर्त धनुष और आदित्य मुख अमोघवाण और जिन के भामंडल सा सहाई सो लोकों से कैसे जीता जाय और बड़े बड़े विद्याधरों के अधिपति जिनसे जाय मिले महेन्द्र मलय हनूमान सुग्रीव त्रिपुर इत्यादि अनेक राजा और रत्नद्वीप का पति वेलंधर का पति सन्ध्या हरद्वीप हैहयद्वीप आकाशतिलक कैलीकिल दधिवक्र और महाबलवान् विद्या के विभव से पूर्ण अनेक विद्याधर आयमिले इसभान्तिके कठोर वचन कहता जो बिभीषण उसपर महा क्रोधायमान होय खड्ग काढ़ रावण मारने को उद्यमी भया तब बिभीषण ने भी महाक्रोधके वशहोय रावणसे युद्ध करनेको वज्रमई स्तम्भ उपाड़ा ये दोनोंभाई उग्रतेज के धारक युद्धको उद्यमी भए सो मंत्रीयों ने समझाय मने किए बिभीषण अपने घरगया रावण अपने महिल गया फिर रावणने कुम्भकर्ण इन्द्रजीत को कठोरचित्त होय कहा कि यह बिभीषण मेरे अहित में तत्पर है और दुरात्मा है इसे मेरी नगरीसे निकासो इस अनर्थीके रहिवेसे क्या, मेरा अंगही मोसे प्रतिकूल होय तो मोहि न रुचे जो यह लंकामें रहे और मैं इसे न मारूं तो मैं रावण नहीं ऐसी वार्ता बिभीषण सुनकर कहामैं भी क्या रत्नश्रवा का पुत्र नहीं ऐसा कह लंका से निकसा महासामंतों सहित तीस अक्षौहिणीदल लेयकर रामपै चला (तीस अक्षौहणी केतकभए उसकावर्णन) छहलाख छप्पनहजार एकसौ हाथी और एतेही रथ और उगणीसलाख अडसठहजार तीनसौ तुरंग और बत्तीसलाख अस्सी हजार पांच से पयादा विद्युतघन इन्द्रवज्र इन्द्रप्रचण्ड चपल उद्धत एक्क अशनि संघातकाल महाकाल ये विभीषण संबंधी परम सामन्त अपने कुटम्ब और सब समुदायसहित नानाप्रकार शस्त्रोंसे मंडित रामकी सेनाकी तरफ चले नानाप्रकारके वाहनोंकर युक्त आकाशको आछादितकर सर्व परिवारसहित बिभीषण हंसद्वीप आया सो

उसद्वीपके समीप मनोग्यस्थल देख जनके तीर सेनासहित तिष्ठा जैसे नंदाश्वरद्वीपके विषे देव तिष्ठे विभीषणकोआयासुन वानरबंशियोंकी सेना कंपायमानभई जैसे शीतकालमें दालिद्री कांपे लक्ष्मणने सागरावर्त धनुष और सूर्यहासखडग की तरफ दृष्टिधरी और रामने बज्रावर्त धनुष हाथ लिया और सब मंत्री भेले होय मंत्र करतेभए जैसे सिंहसे गज डरे तैसे विभीषणसे वानरवंशी डरे उसही समय विभीषणने श्रीरामके निकट विचक्षण द्वारपाल भेजासो रामपै आय नमस्कारकर मधुरवचन कहताभया हे देव इन दोनों भाइयोंमें जब से रावण सीतालाया तबहीसे विरोधपडा और आज सर्वथा विगडगई इसलिये आपके पायनआयाहै आप के चरणारविन्दको नमस्कार पूर्वक विनतीकरे है कैसाहै विभीषण धर्म कार्यविषे उद्यमीहै यह प्रार्थना करी है कि आप शरणागत प्रतिपालहो मैं तुम्हाराभक्त शरणे आया हूं जो आज्ञाहोय सो ही करूं आप कृपा करने योग्यहैं यह द्वारपालके बचन सुन रामने मंत्रियोंसे मंत्र किया तब रामसे सुमतकांत मंत्री कहताभया कदाचित रावणने कपटकर भेजाहोय तो इसका विश्वास क्या राजावोंकी अनेक चेष्टाहैं और कदाचित कोई बातकर आपसमें कलुषहोय फिर मिलिजांय कुल और जल इनके मिलनेका आश्चर्य नहीं तब महाबुद्धिवान मतिसमुद्र बोला इनमें विरोध तो भया यह बात सबके मुख से सुनिए है और विभीषण महा धर्मात्मा नीतिवान है शास्त्ररूप जलसे धोयाहै चित्त जिसका महा दयावानहै दीनलोकोंपर अनुग्रह करे है और मित्रता में दृढ़है और भाईपनेकी बात कहो सो भाईपनेका कारण नहीं कर्मका उदय जीवोंके जुदा २ होयहैं इन कर्मोंके प्रभावकर इसजगत में जीवों की विचित्रताहै इस प्रस्ताव में अब एक कथाहै सो सुनो एकगिरि एकगोभूत ये दोऊ भाई ब्राह्मणथे सो एक राजा सूर्यमेघथा उस के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राणी मतिक्रिया उसने दोनोंको पुण्यकी बांछाकर भातमें छिपाय सुवर्णदिया सो गिरि कपटीने भात में स्वर्णजान गोभूतको छलकर मारा दोनोंका स्वर्ण हर लिया सो लोभसे प्रीतिभंग होयहै और भी कथा सुनो कौशांबी नगरीमें एक ब्रहदन नामा ग्रहस्थी उसके पुराविंदा नामा स्त्री उसके पुत्र अहिदेव महीदेव सो इनका पिता मूवा तब ये दोऊ भाई धनके उपारजने निमित्त समुद्रमें जहाजमें बैठ गए सो सर्व द्रव्यदेय एक रत्नमोल लिया सो वह रत्नको जो भाई हाथमें लेय उसके ये भावहोंय कि मैं दूजे भाईको मारूं सो परस्पर दोऊ भाइयोंके खोटे भावभए तब घरआय वह रत्न माताको सौंपा सो माताके ये भावभए कि दोनों पुत्रोंको विषदेय मारूं तब माता और दोनों भाइयोंने उसरत्नसे विरक्त होय कालिंद्री नदीमें डारा सो रत्नको मछली निगलगई सो मछलीको धीवरने पकरी और अहिदेव महीदेवहीके बेची सो अहिदेवमहीदेवकी बहिन मछलीको विदारतीथी सो रत्न निकसा तब इसकेये भावभए कि माताको और दोऊ भाइयोंको मारूं तब इसने सकल वृतांतकहा कि इस रत्नके योगसे मेरे ऐसे भाव होयहैं जो तुमको मारूं तब रत्नको चूर डारा माता बहिन और दोऊ भाई संसारके भाव से विरक्त होय जिनदीक्षा धरतेभए इस लिए द्रव्यके लोभसे भाइयोंमें भी वैर होय है और ज्ञान के उदयकर वैर मिटै है और गिरने तो लोभ के उदय से गोभूतको मारा और अहिदेवके महिदेवके वैर मिट गया सो महा बुद्धि विभीषणका द्वारपाल आयाहै उसको मधुरवचनोंसे विभीषण को बुलाओ तब द्वारपालसो स्नेह जनाया और विभीषणको अति आदरसे बुलाया विभीषण रामके समीप आयासो राम विभीषणका अतिआदर कर मिले विभीषण बिनती करता भयाहे देव हे प्रभो निश्चयकर मेरे इस जन्ममें

तुमही प्रभो हो श्रीजिननाथ तो इसजन्म परभवके स्वामी और रघुनाथ इसलोक के स्वामी इसभांति प्रतिज्ञा करी तब श्रीरामकहते भये तुझे निःसंदेह लंकाका धनीकरूंगा सेनामें विभीषणके आवने का उत्साह भया।

अथानन्तर भामंडलभी आया कैसाहै भामंडल अनेक विद्या सिद्ध भई हैं जिसको सर्व विजियार्ध का अधिपति जब भामंडल आया तब राम लक्ष्मण आदि सकल हर्षितभए भामंडलका अति सन्मान किया आठ दिन हंसद्वीप में रहे फिर लंका को सन्मुख भए नानाप्रकार के अनेक रथ और पवन से भी अधिक तेज को धरे बहुत तुरंग औरमेघमाला से गयंदो के समूह और अनेकसुभटों सहित श्री राम ने लंकाको पयानं किया समस्त विद्याधरसामंत आकाशको आछादते हुए रामके संग चले सबमें अग्रेसर वानरवंशी भए जहां रण क्षेत्र थापा है वहां गए संग्राम भूमि बीसयोजन चौड़ाहै और लंबाई का विस्तार विशेष है वह युद्धभूमि मानों मृत्यु की भूमि है इस सेना के हाथीगाजे और अश्व हिंसे विद्याधरों के वाहन सिंह हैं उन के शब्द हुए और वादित्र वाजे तब सुनकर रावण अति हर्षको प्राप्त भया मनमें विचारी बहुत दिन में मेरे रणका उत्साह भया समस्त सामंतों को आज्ञा भई कि युद्धके उद्यमी होवो सो समस्तही सामंत आज्ञा प्रमाण आनन्द से युद्ध को उद्यमी भए कैसा है रावण युद्ध में है हर्ष जिसको जिसनेकभीभी सामंतों को अप्रसन्न न किए सदा प्रसन्नही राखे सो अब युद्ध के समय सबही एक चित्त भए भास्कर नामापुर,तथापयोदपुर,कांचनपुर,व्योमवल्लभपुर,गंधर्वगीतपुर,शिवमंदिर , कंपनपुर सूर्योदयपुर अमृतपुर,शोभासिंहपुर,नृत्यगीतपुर' लक्ष्मीगीतपुर,किन्नरपुर बहुनागपुर,महाशैलपुर चक्रपुर , स्वर्णपुर सीमंतपुर मलयानंदपुर श्रीगृहपुर श्रीमनोहरपुर रिपुंजयपुर शशिस्थानपुर मार्तंडप्रभपुर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशालपुर ज्योतिदंडपुर परिष्योधपुर अश्वपूर रत्नपुर इत्यादि अनेक नगरोंके स्वामी बड़े २ विद्याधर मंत्रियोंसहित महा प्रीतिके भरे रावण पै आए सो रावण राजावोंका सन्मान करता भया जैसे इन्द्र देवोंका करै है शस्त्र वाहन बक्तर आदि युद्ध की सामग्री सब राजावों को देता भया चारहजार अक्षौहणी रावणके होती भई और दोहजार अक्षौहणी रामके होती भईसो कौनभांति हजार अक्षौहणीदल तो भामंडलका और हजार सुग्रीवादिकका सर्वभांतिसुग्रीव और भामंडलये दोऊमुख्य अपने मंत्रियों सहित तिनसों मंत्रकर राम लक्ष्मण युद्ध को उद्यमी भए अनेक वंश के उतजे अनेक आचरनके धरनहारे नानाजातियों से युक्त नाना प्रकारगुण कियासे प्रसिद्ध नानाप्रकार भाषा के बोलनहारे विद्याधर राम श्री रावण पै भेलेभए गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे राजन पुण्य के प्रभाव से मोटे पुरुषों के वैरी भी अपने मित्र होय हैं और पुण्यहीनों के चिरकाल के सेवक और अति विश्वासके भाजन वेभी विनाश काल में शत्रु रूप होय परणवे हैं इस असार संसारमें जीवोंकी विचित्रगतिहै सोविचित्रगति जानकर यह चिंतवन करना कि मेरे भाई सदासुखदाई नहीं तथा मित्र बांधव सबही सुखदाई नहीं कभी मित्र शत्रु होजांय कभी शत्रु मित्र हो जांय ऐसे विवेकरूप सूर्यके उदयसे उरमें प्रकाशकर बुद्धिवंतोंको सदा धर्मही चिंतवना। इतिपचावनवां पर्व।

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतम स्वामीको पूछताभया, हे प्रभो अक्षौहिणीका परिमाण आप कहो तब गौतमका दूजा नाम इन्द्रभूतहै सो इंद्रभूत कहतेभए, हे मगधाधिपति अक्षौहिणीका प्रमाण तुझे संक्षेप से कहे हैं सो सुन आगम में आठभेद कहे हैं वे सुनो प्रथम भेद पति दूजा भेद सेना तीजा भेद सेनामुख चौथा गुल्म पांचमा वाहिनी छठाप्रतना सातवां चमू आठवां अनीकिनी सो अब इनके यथार्थ भेद सुन

For Private and Personal Use Only

एकरथ एकगज पांच पयादे तीनतुरंग इसका नामपत्तिहै और तीनरथ तीनगज पंद्रह पयादे नव तुरंग इसको सेनाकहिये औरनव रथ नव गज पैंतालीस पयादा सत्ताईस तुरंग इसे सेना मुख कहिये और सत्ताइस रथ सत्ताईस गज एकसोपैंतीस पयादा इक्कासी अश्व इसे गुल्म कहिये और इक्यासीरथ इक्यासी गज चारसे पांच पयादे दोसोतैंतालीस अश्व इसे वाहिनी कहिये और दोयसै तियालीस रथ दोयसै तियालीस गज बारासौ पंद्रह पयादे सातसौ उनतीस घोडे इसे प्रतिनाकहिये और सातसौ गुणतीस रथ सातसै गुणतीसगज छत्तीससैपैंतालीसपयादे इक्कीससौसतासी तुरंग इसेचमू कहिये और इक्कीससै सतासीरथ इक्कीससौ सत्यासीगज दसहजार नौसैपैंतीसपयादे और पैंसठसौ इकसठ तुरंग इसे अनीकिनी कहिये सो पत्तिसे लेय अनीकिनीतक आठ भेदभए सोयहांलों तो तिगुने २ बढ़े और दश अनीकिनीकी एक अक्षौहिणी होयहै उसका वरणन रथ इक्कीसहजार आठसौ सत्तर और गज इक्कीसहजार आठसै सत्तर पियादे एकलाख नौहजार तीनसे पचास और घोड़े पैंसठहजार छैसोदस यह एक अक्षौहिणी का प्रमाणभया ऐसी चारहजार अक्षौहिणीकर युक्त जो रावण उसे अति बलवान जानकर भी किह कन्धापुरके स्वामी सुग्रीवकी सेना श्रीरामके प्रसादसे निर्भय रावणके सन्मुख होती भई श्रीराम की सेनाको अतिनिकट आए हुए नाना पक्षको धरें जो लोक सो परस्पर इस भांति वार्ता करते भए देखो रावणरूप चन्द्रमा विमानरूप जे नक्षत्र तिनके समूहका स्वामी और शास्त्रमें प्रवीण सो पर स्त्रीकी इच्छारूप जे बादल तिनसे आछादितभयाहै जिसके महाकांतिकी धरणहारी अठारह हजार राणी तिनसे तो तृप्त न भया और देखो एक सीताके अर्थ शोकसे व्याप्त भयाहै अब देखिये राक्षस

वंशी और बानरवंशी इनमें कौनका क्षयहोय रामकी सेनामें पवनका पुत्र हनूमान महा भयंकर देदीप्यमान जो शूरता सोई भई उष्णकिरण उनसे सूर्य तुल्य है इस भांति कैयक तो रामके पक्ष के योधाओंके यश वर्णन करते भए और कैयक समुद्रसेभी अतिगंभीर जो रावणकी सेना उसका वर्णन करतेभए और कैयक जो दण्डकवनमें खरदूषणका और लक्षमणका युद्धभयाथा उसका वर्णन करतेभए और कहते भए चन्द्रोदय का पुत्र विराधित सा है शरीर तुल्य जिनके ऐसे लक्ष्मण तिन्होंने खरदूषण हता अति बल के स्वामी लक्षमण तिनका बल क्या तुमने न जाना कैयक ऐसे कहते भए और कैयक कहते भए कि राम लक्षमण की क्या बात वे तो बडे पुरुष हैं एक हनूमानने केते काम किये मन्दोदरीका तिरस्कार कर सीता को धीर्य बंधाया और रावणकी सेना जीत लंकामें विघ्न किया कोटदरवाजे ढाहे इसभान्ति नाना प्रकारके वचन कहतेभए तब एक सुवक्रनामा विद्याधर हँसकर कहता भया कि कहां समुद्र समान रावण की सेना औरकहां गाय के खोजसमान बानरबंशियों का बल जो रावण इन्द्रको पकड़ लाया और सबों का जीतनहारा सो बानरबंशियों से कैसे जीता जाय सर्व तेजस्वीयोंके सिरपरतिष्ठे हैमनुष्योंमें चक्रवर्ति के नामको सुने कौन धीर्य धरे और जिसके भाई कुम्भकरण महाबलवान त्रिशूलका धारक युद्धमें प्रलय कालकी अग्निसमान भासे है सो जगतमें प्रबल पराक्रम का धारक कौनसे जीताजाय चन्द्रमा समान जिसके छत्रको देखकर शत्रुवोंकी सेना रूप अंधकार नाश को प्राप्त होय है सो उदार तेजका धनी उसके आगे कौन ठहर सके जो जीतव्य की बांछा तजे सोही उसके सन्मुख होय इसभान्ति अनेक प्रकार के राग द्वेषरूप वचन सेनाके लोग परस्पर कहते भए दोनों सेना में नाना प्रकारकी वार्ता लोकों के मुख

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होती भई, जीवोंके भाव नानाप्रकार के हैं राग द्वेष के प्रभावसे जीव निजकर्म उपार्जें हैं सो जैसा उदय होय है तैसे ही कार्य में प्रवृते हैं जैसे सूर्य का उदय उद्यमी जीवों को नाना कार्य में प्रवृतावे है तैसे कर्म का उदय जीवों के नाना प्रकार के भाव उपजावे है ॥ इति छप्पनवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर पर सेनाके समीपको न सह सके ऐसे मनुष्य वे शूरापने के प्रकट होने से अति प्रसन्न होय लड़ने को उद्यमीभए योधा अपने घरोंसे विदा होय सिंह सारिखे लंकासे निकसे कोईयक सुभट की नारी रणसंग्राम का वृतान्त जान अपने भरतार के उरसे लग ऐसे कहती भई हे नाथ तुम्हारे कुल की यही रीति है जो रणसंग्राम से पीछे न होंय और जो कदाचित् तुम युद्ध से पीछे होवोगे तो मैं सुनतेही प्राणत्याग करूंगी योधाओं के किंकरोंकी स्त्रियें कायरों की स्त्रियों को धिक्कार शब्द कहें इस समान और कष्ट क्या जो तुम छाती घाव खाय भले दिखाय पीछे आवोगे तो घाव ही आभूषणहै और टूटगया है बक्तर और करें हैं अनेक योधा स्तुति इसभान्ति तुमको मैं देखूंगी तो अपना जन्मधन्य गिनूंगी और सुवर्ण के कमलोंसे जिनेश्वर की पूजा कराऊंगी जे महायोधा रणमें सन्मुख होय मरणको प्राप्त होंय तिनका ही मरण धन्यहै और जे युद्धसे परांमुख होंय धिक्कार शब्दसे मलिन भए जीवे हैं तिनके जीवने से क्या और कोईयक सुभटानी पति से लिपट इसभान्ति कहती भई जो तुम भले दिखाय कर आवोगे तो हमारे पति हो और भागकर आवोगे तो हमारे तुम्हारे सम्बन्ध नहीं और कोईयक स्त्री अपने पतिसे कहती भई हे प्रभो तुम्हारे पुराने घाव अब बिघट गए इसलिये नवे घाव लगे शरीर अति शोभे वह दिन होय जो तुम वीरलक्ष्मीके वर प्रफुल्लित वदन हमारे आवो और हम तुमको हर्षसंयुक्त

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देखें तुम्हारी हार हम क्रीड़ा में भी न देखसकें तो युद्धमें हार कैसे देख सकें और कोई एक कहतीभई कि हे देव जैसे हम प्रेमकर तुम्हारा बदन कमल स्पर्श करे हैं तैसे वक्षस्थल में लगे घाव हम देखे तब अति हर्ष पावें और कैएक रौताणी अति नवोढ़ा हैं परन्तु संग्राम मेंपतिको उद्यमी देख प्रौढ़ा के भाव को प्राप्त भई और कोई एक मानवती घने दिनों से मान कर रही थी सो पतिको रणमें उद्यमी जान मान तज पति के गले लगी और अति स्नेह जनाया रणयोग्य शिक्षा देती भई और कोई एक कमल-नयनी भरतार के वदनको ऊंचा कर स्नेहकी दृष्टिकर देखती भई और युद्ध में दृढ़ करतीभई और कोई एक सामन्तनी पतिके वक्षस्थल में अपने नखका चिन्हकर होनहार शस्त्रों के घावनको मानो स्थानक करती भई इस भांति उपजी है चेष्टा जिनकेऐसी राणी रौताणी अपने प्रीतमोंसे नानाप्रकार के स्नेहकर वीर रसमें दृढ़ करती भई तब महा संग्रामके करणहारे योधा तिन से कहतेभए हे प्राणवल्लभे नर वेई हैं जे रण में प्रशंसा पावें तथा युद्ध के सन्मुख जीव तजें तिनकी शत्रु कीर्तिकरें हाथियों के दांतों में पग देय शत्रुवोंके घाव कर तिनकी शत्रु कीर्तिकरें पुण्य के उदय विना ऐसा सुभटपना नहीं हाथियों के कुंभस्थल विदारणहारे नरसिंह तिनको जो हर्ष होय है सो कहिवेको कौन समर्थ है हे प्राण प्रियेक्षत्री का यही धर्म है जो कायरोंको न मारें शरणागतको न मारें न मारिवे देंय जो पीठ देय उसपर चोट न करें जिसपै आयुध न होय उससों युद्ध न करें सो वालवृद्ध दीनको तजकर हम योधावों के मस्तक पर पड़ेंगे तुम हर्षित रहियो हम युद्धमें विजयकर तुमसे आय मिलेंगे इसभांति अनेक वचनोंकर अपनी अपनी रौताणियोंको धीर्य बंधाय योधा संग्राम के उद्यमी घरसे रणभूमिको निकसे कोई एक सुभटानी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चलते पतिके कण्ठ में दोनों भुजासे लिपटगई और हिंदती भई जैसे गजेन्द्र के कंठ में कमलनी लटके और कोई एक रौताणी बक्तर पहिरे पति के अंगसे लग अंगका स्पर्श न पाया सो खेद खिन्न होती भई और कोई एक अर्द्धबाहुलिका कहिए पेंअे सो बल्लभ के अंग से लगी देख ईर्षा के रससे स्पर्श करती भई कि हम टार इनके दूजी इनके उर से कौन लगे यह जान लोचन संकोचे तब पतिप्रिया को अप्रसन्न जान कहतेभए हे प्रिये यह आधा बक्तर है स्त्री बाची शब्द नहीं तब पुरुषका शब्दसुन हर्ष को प्राप्तभई कोईएक अपने पतिको ताम्बूल चबावतीभई और आप तांबूल चाबती भई कोई एक पति ने रुखसत करी तौभी कैतोक दूर पतिके पीछे पीछे जातीभई पतिके रणकी अभिलाषा सो इनकी ओर निहारें नहीं और रणकी भेरी बाजी सो योधाओं का चित्त रणभूमि में और स्त्रियों से विदाहोना सो दोनों कारणमय योधावोंका चित्त मानों हिंडोले हींदताभया रौतानियोंको तज रावल चले तिन रौतानियोंने आंसू न डारे आंसू अमंगल हैं और कैएक योधा युद्ध में जायबेकी शीघ्रताकर बक्तरभी न पहिर सके जो हथियार हाथ आया सोही लेकर गर्वके भरे निकसे रणभेरी सुन उपजा है हर्ष जिनको शरीर पुष्ट होय गया सो बक्तर अंग में न आवे और कइएक योधावोंके रणभेरी का शब्दसुन हर्ष उपजा सो पुराने घाव फटगए तिनमेंसे रुधिर निकसताभया और किसीने नवा बक्तर बनाय पहिरा सो हर्षके होने से टूटगया सो मानों नया बक्तर पुराने बक्तरके भावको प्राप्तभया और काहूके सिरका टोप ढीला होय गया सोप्राण बल्लभा दृढ़कर देती भई और कोईएक सुभट संग्राम का लालसी उसके स्त्री सुगन्ध लगायवेकी अभिलाषा करती भई सो सुगन्धमें चित्त न दिया युद्धको निकसा और वे स्त्रियां व्याकुलतारूप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपनी २ सेजपर पड़रही प्रथमही लंकासे हस्त प्रहस्त राजा युद्धको निकसे कैसे हैं दोनों सर्व में मुख्य जो कीर्ति सोई भया अमृत उसके आस्वाद में लालसी और हाथियों के रथ पर चढ़े नहीं सहसके हैं बैरियोंका शब्द और महा प्रताप के धारक शूरबीर सो रावणको विना पूछेही निकसे यद्यपि स्वामीकी आज्ञा करी विना कार्य करना दोष है तथापि धनी के कार्य को विना आज्ञा जायतो दोष नहीं गुणके भावको भजेहै मारीच सिंह जघन्य स्वयंभू शंभू प्रथम विस्तीर्ण बलसे मंडित शुक और सारस चांद सूर्य सारिखे गज और बीभत्स तथा वज्राक्ष वज्रभूति गम्भीरनाद नक्र मकर वजघोष उग्रनाद सुन्दनिकुम्भ कुंभ संध्याक्ष विभ्रमक्रूर माल्यवान खरनिश्चर जम्बूस्वामी शिखीवीर उद्धक महा बल यह सामंत नाहरोंके रथचढ़े निकसे और वज्रोदर शक्रप्रभ कृतान्त विगटोधर महामणिअर्सोणगोषचन्द्र चन्द्रनख मृत्युभीषण वज्रोदर धूम्राक्ष मुदित विद्युज्जिह्व महा मारीच कनक क्रोधनु क्षोभणद्धन्ध उद्दाम डिंडी डिंडम डिंभव प्रचंड डमर चंड कुंड हालाहल इत्यादि अनेक राजा व्याघ्रों के रथ चढ़े निकसे वह कहे मैं आगे रहूं वह कहे मैं आगे रहूं शत्रु के विध्वंस करने को है प्रवृत बुद्धि जिनकी विद्या कौशिक विद्याविख्याक सर्पबाहू महाद्युति शंख प्रशंख राजभिन्न अंजनप्रभ पुष्पकुर महारक्त घटाश्र पुष्पखेचर अनंगकुसम कामवर्त्त स्मरायण कामाग्नि कामराशि कनकप्रभ शशिमुख सौम्यवक्र महाकाम हैमगौर यह पवन सारिखे तेज तुरंगों के रथ चढ़े निकसे और कदंब विटप भीमनाद भयानाद भयानक शार्दूल सिंह वलांग विद्युदंग ल्हादन चपल चाल चंचल इत्यादि हाथियों के रथ चढ़े निकसे गौतम स्वामी राजा श्रेणिक से कहेहैं हे मगधाधिपति कहां लग सामंतों के नाम कहें सब में अग्रेसर अढाई कोड़ि निर्मलबंश के उपजे राक्षसों के कुमार

For Private and Personal Use Only

देवकुमारतुल्य पराक्रमी प्रसिद्ध हैं यश जिनके सकल गुणों के मंडन युद्ध को निकसे महा बलवान मेघवाहन कुमार इंद्र के समान रावण का पुत्र अतिप्रिय इंद्रजीत सोभी निकसा जयंतसमान धीरबुद्धि कुम्भकरण सूर्य के विमान तुल्य ज्योतिप्रभव नामा विमान उस में आरूढ़ त्रिशूल का आयुध धरे निकसा और रावण भी सुमेरु के शिखर तुल्य पुष्पकनाम अपने विमान पर चढ़ इंद्र तुल्य पराक्रम जिसका सेना कर आकाश भूमि को आछादित करताहुवा दैदीप्यमान आयुधों को धरे सूर्य समान ज्योति जिस की सो भी अनेक सामंतों सहित लंका से बाहिर निकसा वे सामंत शीघ्रगामी बहुरूप के धरणहारे बाहनों पर चढ़े कैयकों के रथ कैयकों के तुरंग कैयकों के हाथी कैयकों के सिंह तथा शूरसांभर बलध भैंसा उष्ट्र मीढ़ा मृग अष्टापद इत्यादि स्थल के जीव और मगर मच्छ आदि अनेक जल के जीव और नाना प्रकार के पत्ती तिन का रूप धरे देव रूपी बाहन तिन पर चढ़े अनेक योधा रावण के साथी निकसे भामंडल और सुग्रीव पर रावण का अतिक्रोध सो राक्षसवंशी इस से युद्ध को उद्यमी भए रावण को पयान करते अनेक अपशकुन भए तिनका वर्णन सुनो दाहिनी तरफ शल्यकी कहिए सेह मंडल को बांधे भयानक शब्द करतीपूयण का निवारण करे है और गृद्ध पत्ती भयंकर अपशब्द करते आकाश में भ्रमते मानों रावण का क्षय ही कहे हैं और अन्य भी अनेक अपशकुन भए स्थलके जीव आकाशके जीव अति व्याकुलभए क्रूरशब्द करते भए रुदन करते भये सो यद्यपि राक्षसों के समूह सबही पंडितहैं शास्त्रका विचार जानै हैं तथापि शूरवीरताके गर्व से मूढ़ भये महा सेनासहित संग्राम के अर्थी निकसे कर्मके उदयसे जीवोंका जब काल आवे है तब अवश्य

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐसाही कारणहोय है कालको इन्द्रभी निवारिवे शक्ति नहीं औरोंकी क्याबात वे राक्षसवंशी योधा बड़े २ बलवान युद्धमें रियाहै चित्त जिन्होंने अनेक बाहनोंपर चढ़े नानाप्रकारके आयुद्ध धरें अनेक अपशकुनभए तोभी न गिने निर्भयभए रामकी सेनाके सन्मुखआए । इति सत्तावनवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर समुद्रसमान रावणकी सेनाको देख नल नील हनुमान जामवन्त आदि अनेक विद्याधर रामके हित रामके कार्य को तत्पर महा उदार शूरवीर अनेक प्रकार हाथियोंके रथ चढ़े कटकसे निकसे जयमित्र चन्द्रप्रभ रतिवर्द्धन कुमुदावर्त महेंद्र भानुमंडल अनुधर दृढ़रथ प्रीति कंठ महा बल समुन्नतबल सर्व ज्योति सर्वप्रिय बल सर्वसा सर्व शरभभर आभ्रष्टि निर्विष्ठ संत्रास विघ्न सूदन नाद बरबर कलोट पालन मंडल संग्राम चपल इत्यादि विद्याधर नाहरोंके रथ चढ़े निकसे विस्तीर्ण है तेज जिनका नानाप्रकारके आयुद्ध धरे और महासामंत पनाका स्वरूप लिये प्रस्तार हिमवान गंगप्रिय लव इत्यादि सुभट हाथियोंके रथ चढे निकसे दुप्रेष्ट पूर्णचन्द्र विधि सागर घोष प्रियविग्रह स्कंध चंदन पादप चंद्रकिरण और प्रतिघात महा भैरवकीर्तन दुष्ट सिंह कटि कुष्ट समाधि बहुल हल इंद्रायुध गतत्रास संकट प्रहार ये नाहरों के रथ चढे निकसे विद्युतकर्ण बल शील सुपक्षरचनघन संमेद विचल साल काल क्षत्रवर अंगज विकाल लाल ककाली भंग भंगोर्मि: उराचित उतरंग तिलक कील सुषेण चरल करत बली भीमरव धर्म मनोहर मुख सुख प्रमत मर्द कमतसार रत्नजटी शिवभूषण दूषणकौल विघट विराधित मनूरण खनिक्षेम वेला आक्षेपी महाधर नक्षत्र लुब्ध संग्राम विजयजय नक्षत्रमाल क्षोद अति विजय इत्यादि घोड़ों के रथ चढ़े निकसे कैसे हैं रथ मनोरथ समान शीघ्रवेगको धरे और विद्युतवाहन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरूत्राह स्थाणु मेघ बाहन रविसारा प्रचंडालि इत्यादि नानाप्रकार के वाहनोंपर चढ़े युद्धकी श्रद्धाको धरे हनुमानके संगनिकसे और विभीषण रावणका भाई रत्नप्रभ नामा विमानपर चढ़ा श्रीरामका पक्षी अति शोभताभया और युधावर्त बसंत कांत कौमुदि नन्दन भूरि कोलाहल हेड भावित साधु वत्सल अर्ध-चन्द्र जिन प्रेमसागर सागर उरंग मनोग्य जिन जिनपति इत्यादि योधा नाना वर्णके विमानोंपर चढ़े महाप्रबल सन्नाह कहिये बखतर पहिरे युद्धको निकसे रामचन्द्र लक्ष्मण सुग्रीव हनुमान ये हंस विमान चढ़े जिनके आकाश विषे शोभते भए रामके सुभट महा मेघमाला मानिंद नानाप्रकारके वाहनचढ़े लंका के सुभटोंसे लड़नेको उद्यमी भए प्रलयकालके मेघ समान भयंकर शब्द शंख आदि वादित्रोंके शब्द होतेभए झंझा भेरी मृदंग कंपाल धुधुमंदय आमलातके हक्कार दुंदुकांन ऊरदरहेमगुंज काहल वीणा इत्यादि अनेक बाजे बाजते भए और सिंहोंके तथा हाथियोंके घोड़ोंके भैंसोंके रथोंके ऊंटों मृगों पक्षियों के शब्द होतेभए तिनसे दशोंदिशा व्याप्तभई जब राम रावणकी सेनाका संघट्टभया तब लोक समस्त जीवनेके संदेहको प्राप्तभए पृथ्वी कंपायमानभई पहाड़ कांपे योधा गर्वके भरे निगर्वसे निकसे दोनों कटक अतिप्रबल लाखेनमें न आवें इन दोनों सेनामें युद्ध होनेलगा सामान्य चक्र करौंत कुठार सेल खडग गदा शक्ति बाण भिंडिपाल इत्यादि अनेक आयुधोंसे परस्पर युद्ध होताभया योधा हेलाकर योधावोंको बुलावतभए कैसे हैं योधा शस्त्रोंसे शोभितहैं भुजा जिनकी और युद्धकाहै सर्वसाज जिनके ऐसे योधावोंपर पड़तेभए अतिवेगसे दौड़े परसेनामें प्रवेश करतेभए परस्पर अतियुद्ध भया लंका के योधाओंने बानरवंशी योधा दबाये जैसे सिंह गजोंको दबावें फिर बानरवंशियोंके प्रबल योधा अपने

For Private and Personal Use Only

योधावोंका भंग देखकर राक्षसोंके योधावोंको हणतेभए और अपने योधावोंको धीर्य बंधाया वानर वंशियोंके आगे लंकाके लोकों को चिगते देखवडे २ स्वामी भक्त रावणके अनुरागी महाबलसे मंडित हाथियों के चिन्हकी है ध्वजा जिनके हाथियोंके रथ चढे महायोधा हस्त प्रहस्त वानरवंशियों पर दौडे और अपने लोगों का धीर्य बंधाया हो सामंत हो भय मत करो हस्त प्रहस्त दोनों महा तेजस्वी वानर वंशियोंके योधावोंको भगावते भए तब वानरवंशियों के नायक महा प्रतापी हाथियों के रथ चढे महा शूर वीर परमतेज के धारक सुग्रीवके काकाके पुत्र नल नील महा भयंकर क्रोधायमान होय नानाप्रकार केशस्त्रों से युद्ध करने को उद्यमी भए अनेक प्रकारशस्त्रों से घनीवेर युद्ध भया दोनों तरफके अनेक योधा मुवे नल ने उछल कर हस्त को हता और नीलने प्रहस्त को हता जबयह दोनों पडे तब राक्षसोंकी सेना पराङ्मुख भई गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे मगधाधिपति सेनाके लोक सेनापतिको जबलग देखें तब लग ही ठहरें और सेनापति के नाश भए सेना विखरजाय जैसे मालके टूटे अरहटकी घडी विखर जाय और सिर विना शरीर भी न रहे यद्यपि पुण्याधिकारी बडेराजा सब बातमें पूर्ण हैं तथापि विना प्रधान कार्यकी सिद्धि नहीं प्रधान पुरुषोंका संबंध कर मनवांछित कार्यकी सिद्धि होयहै और प्रधान पुरुषोंके संबंध विना मंदता को भजे हैं जैसे राहु के योगसे सूर्यको आछादित भए किरणोंकासमूह मन्दहोय हैं। इतिअठावन पर्वपूर्णम्।

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतम स्वामीने पूछताभया हे प्रभो हस्त प्रहस्त जैसे सामंत महा विद्या में प्रवीण थे बडा आश्चर्य है नल नील ने कैसे मारे इनके पूर्वभव का विरोधहै अक इसही भव का तब गण धर देव कहते भए हे राजन कर्मोंसे बंधे जीवों की नाना गति है पूर्व कर्मके प्रभाव से जीवों की यही

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रीति है जिसने जिसको मारा सो वहभी उसका मारनहाराहै और जिसने जिसको छुडाया सो उसका छुडावन हारा है इस लोकमें यही मर्यादाहै एक कुशस्थल नामा नगर वहां दोय भाई निर्धन एक माता के पुत्र इंधक और पल्लव ब्राह्मण खेती का कर्म करें पुत्र स्त्री आदि जिनके कुटुम्ब बहुत स्वभावहीसे दया वान साधुवों की निंदासे परांमुख सो एक जैनी मित्र के प्रसंग से दानादि धर्मके धारक भए और एक दूजा निर्धन युगुल सो महा निर्दई मिथ्यामार्गी थे राजा के दान बटासो विप्रों में परस्पर कलह भया सो इंधकपल्लव को इन दुष्टों ने मारा सो दान के प्रसाद से मध्यभोग भूमि में उपजे दोय पल्य की आयु पाय मूए सो देव भए और वे क्रूर इनके मारणहारे अधर्म परणामों से मूवे सो कालिंजर नामा वन में सूस्या भए मिथ्या दृष्टि साधुवोंके निंदक पापी कपटी तिनकी यही गति है फिर तिर्यंचगति में चिरकाल भ्रमण कर मनुष्य भए सो तापसी भए बढ़ी है जटा जिनके फल पत्रादिक के आहारी तीव्र तपकर शरीर कृश किया कुज्ञान के अधिकारी दोनों मूए सो विजियार्धकी दक्षिण श्रेणि में अरिंजयपुर वहां का राजा अग्निकुमार राणी अश्विनी ताके ये दोय पुत्र जगत् प्रसिद्ध रावण के सेनापति भए और वे दोनों भाई इंधक और पल्लव देवलोक से चयकर मनुष्य भए फिर श्रावग के व्रतपाल स्वर्ग में उत्तम देव भए और स्वर्ग से चय किहकंधपुर में नल नील दोनों भाई भए पहिले हस्त प्रहस्त के जीवने नल नीलके जीव मारे थे सो नल नील ने हस्त प्रहस्त मारे जो काहू को मारे है सो उससे मारा जाय है और जो काहू को पाले है सो उससे पालिए है और जो जासू उदासीन रहे है सो भी तासू उदासीन रहे जिसेदेख निःकारण क्रोध उपजे सो जानिए परभव का शत्रु है और जिसे देख चित्त हर्षित होय सो निस्संदेह पर भवकामित्र है जो जल में

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जहाज फटजाय है और मगरमच्छादि बाधा करे हैं और थल में म्लेच्छ बाधा करे हैं सो सब पाप का फल है पहाड़ समान माते हाथी और नाना प्रकार के आयुध धरे अनेक योधा और महातेज को धरे अनेक तुरंग और बक्तर पहिरे बड़े बडे सामंत इत्यादि जो अपार सेना से युक्त जो राजा और निःप्रमाद तौ भी पुण्य के उदयविना युद्ध में शरीरकी रक्षा न होयसके और जहां तहां तिष्ठता और जिसके कोऊ सहाई नहीं उसकी तप और दान रक्षा करें न देव सहाईनबांधवसहाई औरप्रत्यक्ष देखिए है धनवान् शूरवीर कुटम्ब का धनी सर्व कुटम्ब के मध्यमरण करे है कोऊ रक्षा करने समर्थ नहीं पात्रदान से ब्रत और शील और सम्यक्त और जीवों की रक्षा होय है दयादानसे जिसने धर्म न उपार्जा और बहुत काल जीया चाहे सो कैसेबने इन जीवों के कर्म तपविना न विनसें ऐसा जानकर जे पंडित हैं तिनको बैरीयों पर भी क्षमा करनी क्षमा समान और तप नहीं जे विचक्षण पुरुष हैं वे ऐसी बुद्धि न धरें कि यह दुष्ट विगाड़ करे है इस जीव का उपकार और बिगाड़ केवल कर्माधीनहै कर्मही सुःख दुःख का कारणहै। ऐसा जानकर जे विचक्षण पुरुष हैं वे बाह्य सुःख दुःख का निमित्तकारण अन्य पुरुषों पर राग द्वेषभाव न धरें अंधकार से आच्छादित जो पंथ उसमें नेत्रवान् पृथिवीपर पड़े सर्प पर पग धरे और सूर्यके प्रकाशसे मार्ग प्रकटहोय तब नेत्रवान् सुखसे गमनकरे तैसे जोंलग मिथ्यात्वरूप अंधकारसे मार्ग नहीं अवलोके तौलग नरकादि विवरमें पड़ें और जब ज्ञानसूर्य का उद्योत होय तब सुखसे अविनाशापुर जाय पहुंचे ॥ इति उनसठवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर हस्त प्रहस्त, नल नील ने हते सुन बहुत योधा क्रोधकर युद्धको उद्यमी भए मारीच सिंह जघन स्वयंभू शंभू उर्जित शुक सारण चन्द्र अर्क जगत्वीभत्स निस्वन ज्वर उग्र क्रमकर वज्राक्ष

आत्मनिष्ठुर गंभीरनाद संनदसंबंध वाहू अनुसिदन इत्यादि राक्षस पक्षके योधा वानर वंशीयों की सेना को क्षोभ उपजावते भए। तिन को प्रबल जान वानर वंशीयों के योधा युद्ध को उद्यमी भए मन्दन मदनाङ्कुर संताप प्रक्षित आक्रोशनन्दन दुरित अनघ पुष्पास्त्र विघ्न प्रीयंकर इत्यादि अनेक वानरवंशी योधा राक्षसों से लड़ते भए उसने याको ऊंचे स्वर से बुलाया याने उसको बुलाया इनके परस्पर संग्राम भया नाना प्रकारके शस्त्रों से आकाश व्याप्त होय गया संताप तो मारीच से लड़ता भया और अप्रथित सिंहज घन से और विघ्न उद्यान से और आक्रोश सारण से नंदन से इन समान योधावों में अद्भुत युद्ध भया तब मारीच ने संतापका निपात किया और नन्दनने ज्वर के वक्षस्थल में बर्छा दई और सिंहकटि ने प्रथिति के और उद्दामकीर्ति ने विघ्न को हणा उस समय सूर्यअस्त भया अपने अपने पति को प्राणरहित भए सुन इनकी स्त्री शोकके सागर में मग्न भई सो उनको रात्रि दीर्घ होतीभई दूजे दिन महा क्रोध के भरे सामन्त युद्ध को उद्यमी भए वज्राक्ष और क्षुभितार मृगेन्द्र दमन और विधि शंभू और स्वयम्भू चन्द्रार्क और वज्रोदर इत्यादि राक्षस पक्षके बड़े २ सामन्त और वानर वंशियोंके सामन्त परस्पर जन्मान्तर के उपार्जित वैर तिनसे महा क्रोधरूप होय युद्ध करते भए अपने जीवनमें निस्पृह संक्रोधने महाक्रोधकर क्षिपितार को महा ऊंचे स्वरकर बुलाया और बाहुबलीने मृगादि दमनको बुलाया और वितापीने विधिको बुलाया इत्यादि योधा परस्पर युद्ध करतेभए और योधा अनेक मूए शार्दूलने वज्रोदरको घायल किया और वज्रोदरने शार्दूलको घायलकिया और क्षिपितार संक्रोध को मारताभया और शंभू ने विशालद्युति मारा और स्वयंभूने विजयको लोहयष्टि से मारा और विधि ने

वितापी को गदासे मारा वहुत कष्टसे इस भांति योधावों ने युद्ध में अनेक योधा हते सो बहुत बेर तक युद्धभया राजा सुग्रीव अपनी सेनाका राक्षसोंकी सेना से खेद खिन्न देख आप महा क्रोधका भरा युद्ध करनेको उद्यमी भया तब अंजनीका पुत्र हनूमान हाथियों के रथपर चढ़ा राक्षसोंसे युद्ध करता भया सो राक्षसों के सामन्तों के समूह पवन पुत्रको देखकर जैसे नाहरको देख गायडरे तैसे डरतेभए और राक्षस परस्पर वात करतेभए कि यह हनूमान वानरध्वज आया सो आज घनोंकी स्त्रियोंको विधवा करेगा तब इसके सन्मुख माली आया उसे आया देख हनूमान धनुषमें वाण तान सन्मुखभए तिनमें महायुद्धभया मन्त्री मन्त्रियोंसे लड़नेलगे रथी रथियोंसे लड़नेलगे घोड़ों के असवार घोड़ोंके असवारोंसे लड़तेभए हाथियों के असवार हाथियोंके असवारोंसे लड़ते भए सो हनूमानकी शक्तिसे माली परांगमुखभया तब वज्रोदर महा पराक्रमीहनूमानपर दौड़ा युद्ध करताभया चिरकाल युद्धभय सो हनूमानने वज्रोदरको रथ रहित कियातब वह और दूजे रथपर चढ़ हनूमानपर दौड़ा तब हनूमानने फिर उसको रथरहितकिया तब फिर पवनसे भी अधिकहै वेग जिसका ऐसे रथपर चढ़ हनूमानपर दौड़ा तब हनूमानने उसे हना सो प्राणरहित भया तब हनूमानके सन्मुख महा बलवान् रावणका पुत्र जम्बूमाली आया सो आयताही हनूमान की ध्वजा छेद करताभया तब हनूमानने क्रोधमे जम्बूमालीका वक्तरभेदा धनुष तोड़ डारा जैसे तृणको तोड़े तब मंदोदरी का पुत्र नवां वक्तर पहिर हनूमानके वक्षस्थल में तीक्ष्ण वाणोंसे घाव करता भया सो हनूमान ने ऐसा जाना मानों नवीन कमलकी नालिका का स्पर्श भया कैसाहै हनूमान पर्वत समान निश्चल है बुद्धि जिसकी फिर हनूमानने चन्द्रवक्र नामा वाण चलाया सो जम्बूमाली के रथके अनेक सिंह जुते थे सो

पद्म पुराण ॥६९८॥

छुटगए उनहीके कटक में पड़े तिनकी विकराल दाढ़ विकराल वदन भयंकरनेत्र तिनसे सकलसेना विह्वल भई मानो सेनारूप समुद्र में वे सिंह कल्लोलरूपभए उछलते फिरे हैं अथवा दुष्ट जलचर जीवों समान विचरे हैं अथवा सेनारूप मेघमें विजली समान चमके हैं अथवा संग्रामही भया संसार चक्र उसमें सेना के लोक वेई भए जीव तिनको ये रथके छुटे सिंह कर्मरूप होय महादुखी करे हैं इनसे सर्व सेना दुखरूप भई तुरंग गज रथ पियादे सब ही विह्वल भए रणका उद्यमतज दशोंदिशा को भाजे तब पवनका पुत्र सबों को पेल रावण तक जायपहुंचा दूरसे रावण को देखा सिंहों के रथ चढ़ा हनूमान धनुष वाण लेय रावण पर गया रावण सिंहों से सेना को भयरूप देख और हनूमानको काल समान महा दुर्द्धरजान आप युद्ध करने को उद्यमी भया तब महोदर रावण को प्रणाम कर हनूमानपर महाक्रोध से इससे लड़नेको आया सो इसके और हनूमानके महायुद्ध भया उस समयमें वे सिंह योधावोंने वश किये सो सिंहोंको वशीभूत भए देख महाक्रोधकर समस्त राक्षस हनूमान पर पड़े तब अञ्जनी का पुत्र महाभट पुण्याधिकारी तिन सबको अनेक बाणोंसे थांभता भया और अनेक राक्षसोंने अनेकबाण हनूमान पर चलाए परन्तु हनूमानको चलायमान न करते भए जैसे दुर्जन अनेक कुवचन रूप बाण संयमीके लगावे परन्तु तिनके एक न लगे तैसे हनूमान के राक्षसोंका एक बाणभी न लगा अनेक राक्षसोंसे अकेला हनूमानको वेढ़ा देख वानरवंशी विद्याधर युद्ध के निमित्त उद्यमी भए सुषेण नल नील प्रीतंकर विराधित सन्तासत हरिकटसूर्य ज्योति महाबल जांबूनन्द के पुत्र केई नाहरों के रथ केई गजोंके रथ केई तुरंगों के रथ चढ़े रावण की सेना पर दौड़े सो वानरवंशियोंने रावणकी सेना सब दिशा में विध्वंस करी जैसे क्षुधादि परीषह तुच्छव्रतियोंके व्रतों को

भंग करे तब रावण अपनी सेनाको व्याकुल देख आप युद्ध करनेको उद्यमी भया तब कुम्भकर्ण रावणको नमस्कारकर आप युद्धको चला तब इसे महाप्रबल योधा रणमें अग्रगामी जान सुषेण आदि सब ही वानरवंशी व्याकुल भए जब वे चंद्ररश्मि जयस्कंध चन्द्राहु रतिवर्धन अंग अंगद सम्मेद कुमुद कशमंडल वलिचंड तरंग सार रत्नजटी जय वेलक्षिपी वसंत कोलाहल इत्यादि अनेक योधा रामके पक्षी कुम्भकर्ण से युद्ध करने लगे सो कुम्भकर्ण सब को अपनी निद्रानामा विद्या से निद्राके वश किए जैसे दर्शनावर्णीय कर्म दर्शनके प्रकाश को रोके तैसे कुम्भकर्ण की विद्या वानरवंशियों के नेत्रों के प्रकाश को रोकती भई सबही कपिध्वज निद्रा से घूमनेलगे और तिनके हाथोंसे हथियार गिरपडे, तब इन सबोंको निद्रावश अचेतन समान देख सुग्रीवने प्रतिबोधनी विद्या प्रकाशी सो सब वानरवंशी प्रतिबोध भए और हनूमानादिक युद्धको प्रवर्ते वानरवंशियोंके बलमें उत्साह भया और युद्धमें उद्यमीभए और राक्षसोंकी सेनादबी तब रावण आप युद्ध को उद्यमी भए तब बड़ा बेटा इन्द्रजीत हाथ जोड़ सिरनिवाय बीनती करता भया हे तात हे नाथ यदिमेरे होते आप युद्धको प्रवर्तें तो हमारा जन्म निष्फलहै जो तृण नखहीसे उपड़ आवे उसपर फरसी उठावना कहां इसलिये आप निश्चिन्त होवें मैं आपकी आज्ञा प्रमाण करूंगा ऐसा कहकर महा हर्षित भया पर्वत समान त्रैलोक्य कंटक नामा गजेन्द्रपर चढ़ युद्ध को उद्यमी भया कैसाहै गजेन्द्र इन्द्रके गज समान और इन्द्रजीतको अतिप्रिय अपना सब साज लेय मंत्रियों सहित ऋद्धि से इन्द्रसमान रावणका पुत्र कपियोंपर क्रूरभया सो महाबल का स्वामी मानी आवत प्रमाणही वानरवंशियोंका बल अनेक प्रकारआयुधोंसे जोपूर्ण था सो सब विह्वल किया सुग्रीवकी सेनामें ऐसा सुभट

कोई न रहा जो इन्द्रजीत के बाणों से घायल न भया लोक जानते भए कि यह इन्द्रजीत कुमार नहीं अग्निकुमारों का इन्द्र है अथवासूर्य है सुग्रीव और भामण्डल ये दोनों अपनी सेनाका इन्द्रजीत कर दबी देख युद्धको उद्यमी भए इनके योधा इन्द्रजीतके योधों से और ये दोनों इन्द्रजीत से युद्ध करने लगे सो परस्पर योधा योधावोंको हंकार हंकार बुलावते भए शस्त्रों से आकाशमें अन्धकार होय गया योधावों के जीवनेकी आशा नहीं गजसे गज रथसे रथ तुरंगसे तुरंग सामन्तोंसे सामन्त उत्साहकर युद्ध करते भए अपने अपने नाथ के अनुराग में योधा परस्पर अनेक आयुधों से प्रहार करतेभए उस समय इन्द्रजीत सुग्रीवको समीप आया देख ऊंचे स्वरकर अपूर्व शस्त्ररूप दुर्वचनों से छेदताभया अरे वानरवंशी पापी स्वामि द्रोही रावणसे स्वामीको तज स्वामीके शत्रूका किंकरभया अब मुझसे कहां जायगा तेरे शिरको तीक्ष्ण बाणों से तत्काल छेदूंगा वे दोनोंभाई भूमिगोचरी तेरी रक्षाकरें तब सुग्रीव कहताभया ऐसे वृथा गर्वके वचन कर क्या तू मानशिखर पर चढ़ा है सो अबारही तेरा मान भंग करूंगा जब ऐसा कहा तब इन्द्रजीतने कोपकर धनुष चढ़ाय बाण चलाया और सुग्रीवने इन्द्रजीतपर चलाया दोनों महा योधा परस्पर बाणोंसे लड़तेभए आकाश बाणोंसे आछादित होयगया मेघवाहनने भामण्डलको हंकारा सो दोनों भिड़े और विराधित और वज्रनक्र युद्ध करतेभए सो विराधितने वज्रनक्रके उरस्थल में चक्रनामा शस्त्रकी दई औरं वज्रनक्रने विराधितके दई शूरवीर घाव पाय शत्रुके घाव न करें तो लज्जा है चक्रोंसे वक्तर पीसेगए तिनके अग्निकी कणका उछली सो मानों आकाशसे उलकावोंके समूह पड़े हैं लंकानाथके पुत्रने सुग्रीवपै अनेक शस्त्र चलाए लंकेश्वर के पुत्र संग्राममें अचल हैं जिस समान दूजा योधा नहीं तब सुग्रीवने बजूदंड से

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीत के शस्त्र निराकरण किए जिनके पुण्य का उदय है तिनका घात न होय फिर क्रोधकर इन्द्रजीत हाथी से उतर सिंगोंके रथ चढ़ा समाधानरूप है बुद्धि जिसकी नाना प्रकारके दिव्य शस्त्र और सामान्य शस्त्र इनमें प्रवीण सुग्रीवपर मेघ बाण चलाया सो संपूर्ण दिशा जल रूप होय गई तब सुग्रीव ने पवन बाण चलाया सो मेघ बाण बिलाय गया और इन्द्रजीत का छत्र उड़ाया और ध्वजा उड़ाई और मेघवाहन ने भामंडल पर अग्नि बाण चलाया सो भामण्डलका धनुष भस्म होयगया और सेना में अग्नि प्रज्वलित भई तब भामण्डल ने मेघवाहन पर मेघबाण चलाया सो अग्निबाण विलयगया और अपनी सेना की रक्षा करी फिर मेघवाहन ने भामण्डल को रथरहित किया तब भामण्डल दूजेरथचढ युद्ध करने लगा मेघ बाहन ने तामसबाण चलाया सो भामण्डलकी सेना में अन्धकार होय गया अपना पराया कुछ सूझै नहीं मानों मूर्छा को प्राप्त भए तब मेघवाहन ने भामण्डल को नागपाश से पकड़ा मायामई सर्प सर्व अंग में लिपट गए जैसे चन्दन के वृक्ष के नाग लिपट जावें कैसे हैं नाग भयंकर हैं जे फण तिन कर महा विकराल भामण्डल पृथिवीपर पड़ा और इसही भान्ति इन्द्र जीतने सुग्रीवको नागपाश कर पकड़ा सो धरती पर पड़ा तबविभीषणजो विद्याबल में महाप्रवीण श्रीरामलक्ष्मण से दोनों हाथजोड़ सीसनिवाय कहता भया हे राम महाबाहो लक्ष्मण महावीर इन्द्रजीत के बाणोंसे व्याप्त सब दिशा देखो धरती आकाश बाणों से आच्छादित है उल्कापातके स्वरूप नाग बाण तिन से सुग्रीव और भामण्डल दोनों भूमि विषे बंधे पड़े हैं मन्दोदरी के दोनों पुत्रों ने अपने दोनोंमहाभट पकड़े अपनीसेनाकेजे दोनों मूलथे वे पकडेगए तबहमारेजीवनेसे क्या इनबिना सेना शिथल होयगई है देखोदशों दिशा को लोक भागे हैं औरकुम्भकर्ण ने महायुद्धकर हनूमान् को पकड़ा है

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुम्भकरणके बाणों से हनूमान जरजरे भए छत्रउड़गये ध्वजाउड़गई धनुषटूटा बक्तर टूटा रावणके पुत्रइन्द्रजीत और मेघवाहनयुद्धविषे लगरहे हैं अबवे आयकरसुग्रीव भामण्डल कोलेजांयगे सोवे न लेजावें उसपहिले आप उन को लेआवें वे दोनों चेष्टारहित हैं सो मैं उनके लेवनेको जाऊं हूं और आप भामण्डल सुग्रीवकी सेना निर्नाथ होयगई है सो उसे थांभो इस भान्ति विभीषण राम लक्ष्मण से कहे है उस ही समय सुग्रीव का पुत्र अंगद छानेछाने कुंभकर्ण पर गया औरउसका उत्तरासनवस्त्र परे किया सो लज्जाके मारकर व्याकुल भया वस्त्र को थांभे तौलग हनूमान इसकी भुजाफांस से निकस गया जैसे नवा पकडा पत्ती पिंजरेसे निकसजाय हनूमान नवीन जन्मको धरे और अंगद दोनों एकविमानबैठे ऐसे शोभतेभए मानों देवही हैं और अंगदका भाईअंग और चन्द्रोदयका पुत्र विराधित इनसहितलक्ष्मण सुग्रीवकी और भामंडलकी सेना को धैर्य बंधाय थांभतेभए और विभीषण इन्द्रजीत मेघबाहनपर गया सो विभीषणको आवता देखइन्द्रजीतमनमें विचारता भया जो न्यायविचारिए तो हमारे पितामें और इसमेंक्या भेदहै इसलिए इसके सन्मुख लडना उचितनहीं सो इसके सन्मुख खडा न रहना यही योग्यहै और ये दोनों भामंडल सुग्रीव नागपाशमें बंधे सो निःसन्देह मृत्यु को प्राप्त भए और काकासे भाजिए तो दोषनहीं ऐसा विचार दोनों भाई महा अभिमानी न्याय के वेत्ता विभीषण से टरिगए और विभीषण त्रिशूलका है आयुध जिसके रथ से उतर सुग्रीव भामंडल के समीप गया सो दोनोंको नागपाशसे मूर्छित देख खेद खिन्न होता भयातब लक्ष्मण ने राम से कही हे नाथए दोनों विद्याधरों के अधिपति महासेनाके स्वामी महा शक्ति के धनी भामंडल सुग्रीव रावण के पुत्रों ने शक्ति रहित कीए मूर्छित होय पडेहैं सो इन बगैर आप रावण को कैसे जीतेंगे तब राम को

For Private and Personal Use Only

पुण्य के उदय से गरुड़ेंद्र ने वर दिया था सो चितार लक्ष्मणसे राम कहते भए हे भाई वशंस्थल गिरि पर देशभूषण कुलभूषण मुनिका उपसर्ग निवारा उससमय गरुडेंद्रने वर दियाथा ऐसा कह महा लोचन रामने गरुडेंद्र को चितारा सो सुख अवस्था में तिष्ठेथा सो सिंहासन कंपायमान भया तब अवधि कर राम लक्ष्मण को काम जान चिंता वेग नामा देव को दोय विद्या देय पठाया सो आय कर बहुत आदरसे रामलक्ष्मणसे मिला और दोनों विद्या तिनको दई, श्रीराम को सिंहवाहिनी विद्यादई और लक्ष्मणको गरुडवाहिनी विद्या दई तब यह दोनों धीर विद्यालेय चिन्तावेगको बहुत सन्मान कर जिनेन्द्रकी पूजा करतेभए और गरुडेंद्रकी बहुत प्रशंसाकरी वह देव इनको जलबाण अग्नि बाण पवनबाण इत्यादि अनेक दिव्य शस्त्र देताभया और चांद सूर्य सारिखे दोनों भाइयोंको छत्र दिए और चमर दिए नानाप्रकारके रत्न दिए कांतिके समूह और विद्युद्वक्र नाम गदा लक्ष्मणको दई और हल मूसल दुष्टोंको भयके कारण रामको दिये इसभांति वह देव इनको देवोपुनीत शस्त्र देय और सैकडों आशिष देय अपने स्थानकगया, यह सर्व धर्मका फल जानो जो समयमें योग्य वस्तुकी प्राप्तिहोय विधि पूर्वक निर्दोष धर्म आराधाहोय उसके ये अनुपम फलहैं जिनके पायके दुःखकी निवृत्ति होय महा कार्यके धनी आप कुशलरूप और औरोंको कुशलकरें मनुष्यलोककी सम्पदाकी क्याबात पुण्याधिकारियों को देवलोक की वस्तुभी सुलभ होयहै इसलिये निरन्तर पुण्यकरो अहो प्राणि हो जो सुख चाहो तो सर्व प्राणियों को सुख देवो जिस धर्मके प्रसादसे सूर्य समान तेजके धारक होवो और आश्चर्यकारी वस्तुओं का संयोग होय ॥ इति श्री साठवां पर्व संपूर्णम् ।

अथानन्तर रामलक्ष्मण दोनों वीर तेजके मंडलमें मध्यवर्ती लक्ष्मीके निवास श्रीवत्स लक्षणको धरे महामनोज्ञ कवच पहिरे सिंहवाहन गरुडवाहन पर चढ़े महासुन्दर सेना सागर के मध्यसिंहकी और गरुडकी ध्वजाधरें परचक्रके क्षय करनेको उद्यमी महासमर्थ सुभटोंके ईश्वर संग्राम भूमिकेमध्य प्रवेश करतेभए आगे आगे लक्ष्मण चला जाय है दिव्य शस्त्र के तेजसे सूर्य के तेज को आच्छादित करता हुआ हनूमान आदि बडेबडे योधा वानरवंशी तिन कर मंडित वर्णनमें न आवे ऐसा देखा कैसा रूप धरे १२सूर्य्य कीसी ज्योतीलिये लक्ष्मण को विभीषणने देखा सो जगतको आश्चर्य उपजावे ऐसे तेज कर मण्डित सो गरुडवाहन के प्रताप कर नागपाश का बन्धन भामण्डल सुग्रीव का दूर भया गरुड से पक्षों की पवन क्षीर सागर के जल को क्षोभ रूप करे उस से वे सर्प विलाये गये जैसे साधुवों के प्रताप से कुभाव मिट जाय गरुड के पक्षन की कांति कर लोक ऐसे होय गए मानों सुवर्ण के रस कर निरमापे हैं तब भामण्डल सुग्रीव नागपाश से छूट विश्राम को प्राप्त भए मानों सुख निद्रा लेय जागे अधिक शोभते भए तब इन कोदेख श्रीवृक्ष प्रथादिक सब विद्याधर विस्मय को प्राप्तभए और सब ही श्री राम लक्ष्मण की पूजाकरवेनती करते भए हे नाथ आज की सी विभूति हम अब तक कभी न देखी वाहन वस्त्र सम्पदा छत्र ध्वजा में अद्भुत शोभा दीखे है तब श्रीराम ने जब से अयोध्या से चले तब से लेय सर्व बृत्तांत कहा कुलभूषण देशभूषण का उपसर्ग दूर किया सो सब बृत्तांत कहा तिन्हों को केवल उपजा और कही हमसे गरुडेन्द्रतुष्टायमान भया सो अवार उसका चिन्तवनकिया उसमें यहविद्या की प्राप्ति भई तब वे यह कथा सुन परम हर्ष को प्राप्त भए और कहते भए इस ही भव में साधु सेवा से परम

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यश पाइए है और अति उदार चेष्टा होय है और पुण्य की विधि प्राप्ति होयहै और जैसा साधु सेवा से कल्याण होय वैसा न माता न पिता न मित्र न भाई कोई जीवोंको न करे साधु या प्राणी सेवाकी प्रशंसा में लगाया है चित्त जिन्होंने जिनेंद्र के मार्ग की उन्नति में उपजी है श्रद्धा जिन के वे राजा बलभद्र नारायण का आश्रय से महा विभूतिसे शोभते भए भव्य जीवरूप कमल तिनको प्रफुल्लित करन हारी यह पवित्र कथा उसे सुनकर ये सर्व ही हर्षके समुद्र में मग्न भए और श्री राम लक्ष्मण की सेवामें अति प्रीति करते भए और भामंडल सुग्रीव मूर्छा रूपनिद्रासे रहित भएहैं नेत्र कमल जिन के श्रीभगवानकी पूजा करते भए वे विद्याधर श्रेष्ठ देवों सारिखे सर्वथा प्रकार धर्ममें श्रद्धा करते भए जो पुण्याधिकारी जीवहैं सो इस लोकमें परम उत्सवके योगको प्राप्तहोयहैं यह प्राणी अपने स्वार्थ से संसार में महिमा नहीं पावे है केवल परमार्थ से महिमा होय है, जैसा सूर्य पर पदार्थको प्रकाशवे से शोभा पावे है ॥ इति इकसठवां पर्व संपूर्णम्

अथानन्तर श्रीरामके पक्षके योधा महापराक्रमी रणरीतिके वेत्ता शूरवीर युद्धको उद्यमीभए वानरवंशियों की सेनासे आकाश व्याप्तभया और शंख आदि वादित्रोंके शब्द और गजोंकी गर्जना और तुरंगोंके हींसिवे का शब्द सुनकर कैलाशका उठावनाहारा जो रावण अति प्रचंडहै बुद्धि जिसकी महामानी देवन सारीखी है विभूति जिसके महाप्रतापी बलवान सेनारूप समुद्रकर संयुक्त शस्त्रोंके तेजकर पृथ्वीमें प्रकाश करता पुत्र भ्रातादिक सहित लंकासे निकसा युद्धको उद्यमी भया दोनों सेनाके योधा बखतर पहिर संग्राम के अभिलाषी नानाप्रकार वाहनोंपै आरूढ़ अनेक आयुधोंके धरणहारे पूर्वोपार्जित कर्म से महाक्रोधरूप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परस्पर युद्ध होते भए चक्र कौ कुठार अंकुश वाण खड्ग लौहयष्टि वज्र मुद्गर कनक परिघ इत्यादि अनेक आयुधोंसे परस्पर युद्धभया घोड़ेके असवार घोडेके असवारोंसे लड़ने लगे हाथियोंके असवार हाथियों के असवारोंसे रथोंके रथीयोंसे महाधीर लडने लगे सिंहोंके असवार सिंहोंके असवारोंसे पयादे पयादों से भिड़तेभए बहुत बेरमें कपिध्वजोंकी सेना राक्षसोंके योधावोंसे दबी तब नल नील संग्राम करने लगे सो इनके युद्धसे राक्षसोंकी सेना चिगी तब लंकेश्वरके योधा समुद्रकी कल्लोल सारिखे चंचल अपनी सेनाको कंपायमान देख विद्युद्वचन मारीच चन्द्रार्क सुखसारण कृतांत मृत्यु भूतनाद संक्रोधन इत्यादि महा सामन्त अपनी सेना को धीर्य बंधायकर कपिध्वजों की सेनाको दबावतेभए तब मर्कटवंशी योधा अपनी सेनाको चिगी जान हजारां युद्धको उठे, सो उठतेही नाना प्रकार के आयुधों से राक्षसों की सेनाको हणते भए अति उदार है चेष्टा जिनकी तब रावण अपनी सेना रूप समुद्र को कपिध्वज रूप प्रलय कालकी अग्निसे सूकता देख आप कोप कर युद्ध करनेको उद्यमी भया सो रावणरूप प्रलय कालकी पवनसे वानर वंशी सूके पात उडने लगे तब विभीषण महायोधा वानर वंशियों को धीर्य बंधाय तिनकी रक्षा करबे को आप रावणसे युद्धको सन्मुख भया तब रावण लहुरे भाईको युद्ध में उद्यमी देख क्रोधकर निरादर वचन कहता भया रे बालक तू लघु भ्राता है सो मारबे योग्य नहीं मेरे सन्मुख से दूर हो मैं तुझे देखे प्रसन्न नहीं तब विभीषण ने रावणसे कही कालके योग से तू मेरी दृष्टि पडा तब मोपै कहां जायगा तब रावण अतिक्रोध से कहता भया रेपुरुषत्वरहित क्लिष्ट भ्रष्ट पापिष्ट कुचेष्टि नरकाधिकार तोको तो सारिखे दीनको मारे मुझे हर्ष नहीं तू निर्बलरंक अवध्य हैं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और तों सारिखा मूर्ख और कौन जो विद्याधरों की सन्तानमें होयकर भूमिगोचरियोंका आश्रय करे जैसे कोई दुर्बुद्धि पापकर्म के उदयसे जिन धर्म को तज मिथ्यात्वका सेवनकरें तब विभीषण बोला है रावण बहुत कहनेसे क्या तेरेकल्याण की बात तुझे कहूंहूं सो सुन एती भई तोभी कुछ बिगडा नहीं जो तू अपना कल्याण चाहे है तो रामसे प्रीतिकर सीता रामको सौंप और अभिमानतज रामको प्रसन्न से स्त्री के निमित्त अपने कुलको कलंक मत लगावे अथवा तू मेरे वचन नहीं माने है सो जानिये है तेरी मृत्यु नजीक आई है समस्त बलवन्तों में मोह महा बलवानहै तू मोहसे उन्मतभयाहै ये वचन भाई केसुनकर रावण अतिक्रोधरूप भया तीक्ष्णबाण लेय विभीषणपर दौडा औरभी रथ घोडे हाथीयों के असवार स्वामी भक्तिमें तत्पर महा युद्धकरतेभए। विभीषणनेभी रावणको आवतादेख अर्धचन्द्र बाण से रावण की ध्वजा उडाई और रावण ने क्रोधसे बाण चलाया सो विभीषण का धनुष तोडा और हाथ से बाण गिरा तब विभीषण ने दूजा धनुष लेय बाण चलाया सो रावणका धनुष तोडा, इसभांति दोनों भाई महायोधा परस्पर जोर से युद्ध करतेभए और अनेक सामन्तों का क्षयभया तब इन्द्रजीत महायोधा पिता भक्त पिता की पक्ष विभीषण पर आया तब उसे लक्ष्मणने रोका जैसे पर्वत सागरको रोके, और श्रीरामने कुम्भकर्ण को घेरा और सिंहकटिसे नील और सम्भूसे नल और स्वयंभूसे दुर्मती और घटोदर से दुर्मुख शक्रासन से दुष्ट चन्द्रनख से काली भिन्नाजन से स्कन्ध विघ्न से विराधित और मय से अंगद और कुम्भकर्णका पुत्र जो कुम्भ उससे हनूमान का पुत्र और सुमालीसे सुग्रीव और केतुसे भामण्डल कामसे दृढरथ क्षोभसे बुध इत्यादि बड़े बड़े राजा परस्परयुद्ध करतेभए और समस्तही योधा परस्पर रणरचते भए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह वाहि बुलावे बराबरके सुभट कोईकहे हैं मेरा शस्त्र आवे है उसे तू झेल कोई कहे है तू हम से युद्ध योग्य नहीं बालक है बृद्ध है रोगी है निर्बल है तू जा फलाने सुभट युद्ध योग्य है सो आवो इसभांति के वचनालाप होय रहे हैं कोई कहे है याही छेदो इसे भेदो कोई कहे है बाण चलावो कोई कहे है मारलेवोपकड़लेवोबांधलेवो ग्रहणकरो छोड़ो चूर्णकरो घावलगे ताहि सहो घावदेहु आगेहोवो मूर्छित मत होवो सावधान होवो तू कहा डरे है मैं तुझे न मारूं कायरोंको न मारना भागोंको न मारना पडेको न मारना आयुधरहित पर चोट न करनी तथारोगसे असा मूर्छित दीन बाल वृद्ध यति ब्रती स्त्री शरणागत तपस्वी पागल पशु पक्षी इत्यादिको सुभट न मारें यह सामन्तोंकी बृतिहे कोई अपने वंशियोंको भागतेदेख धिक्कार शब्द कहे हैं और कहै हैं तू कायर है नष्टहे मतिकांपे कहां जाय है धीरा रहो अपने समूहमें खडा रहु तोसूं क्या होयहे तोसूं कोन डरे तू काहेका क्षत्री शूर और कायरोंके परखनेका यह समयहै मीठामीठा अन्न तो बहुत खाते यथेष्टभोजन करते अब युद्धमें पीछे क्यों होवो इसभान्ति धीरों की गर्जना और वादित्रों का वाजना तिनसे दशों दिशा शब्द रूप भई और तुरंगोंके खुरकी रजसे अंधकार होयगया चक्र शक्ति गदा लोहयष्टि कनक इत्यादि शस्त्रोंसे युद्धभया मानों ये शस्त्र कालकी डाढही हैं लोग घायलभए दोनों सेना ऐसी दीखें मानों लाल अशोकका बनहै अथवा केसूका बनहै और अथवा पारि भद्र जातिके बृक्षोंका बनहै कोई योधा अपने बषतरको टूटा देख दूजा बषतर पहरताभया जैसे साधु ब्रत में दूषण उपजा देख फिर पीछे दोष स्थापनाकरे और कोई दांतोंसे तरवार थाम्भ कमर गाढ़ी कर फिर युद्धको प्रबृत्ता कोई यक सामन्त माते हाथियों के दांतोंके अग्रभागसे बिदारा गयाहै वक्षस्थल जिसका

For Private and Personal Use Only

सो हाथी के चालतेजे कान वेई भए बीजना उस से मानों हवा से सुख रूपकर रहे हैं और कोईयक सुभट निराकुल बुद्धि हुया हाथीके दांतों पर दोनों भुजा पसार सोवे है मानों स्वामी कार्यरूप समुद्रसे उतरा और कैयक योधा युद्धसे रुधिर का नालावहावतेभए जैसे पर्वतमें गेरुकी खानसे लाल नीझरने बहैं और कैयक योधा पृथिवीमें साम्हने मूहसे पडे होठ डसते शस्त्र जिनके करमें टेढी भौंह विकराल वदन इसरीति से प्राण तजे हैं और कैएक भव्यजीव महा संग्रामसे अत्यन्त घायल होय कषायका त्याग कर सन्यास धर अविनाशी पदका ध्यान करते देहको तज उत्तम लोकको पावे हैं कैएक धीरवीर हाथीयों के दांतोंको हाथसे पकड़कर ही देह रुधिरकी छटा शरीरसे पडे है शस्त्रहैं हाथोंमें जिनके और कैएक काम आयगए तिनके समस्त गिरपड़े और सैंकडां धड नाचे हैं कैएक शस्त्र रहित भए और घावों से जरजरे भए तृषातुर होय जल पीवने को बैठ हैं जीवतकी आशा नहीं ऐसे भयंकर संग्रामके होते परस्पर अनेक योधावोंका क्षया भया इन्द्रजीत तीक्षण वाणोंसे लक्ष्मणको अच्छादने लगा और लक्षमण उसको सो इन्द्रजीत ने लक्षमण पर तामस वाण चलाया सो अन्धकार होयगया तब लक्ष्मणने सूर्यवाण चलाया उस से अन्धकार दूरभया फिर इन्द्रजीत ने आशीमें जातिके नाग वाण चलाए सो लक्षमण और लक्ष्मणका रथ नागोंसे वेष्टित होनेलगा तब लक्ष्मण ने गरुडवाण के योगसे नागवाण का निराकरण किया जैसे योगी महातप से पूर्वोपार्जित पापोंके समूहको निराकरणकरें और लक्ष्मणने इन्द्रजीतको रथरहित किया कैसाहै इन्द्रजीत मन्त्रियोंके मध्य तिष्ठे है और हाथियों की घटावों से वेष्टित है सो इन्द्रजीत दूजे रथपर अपनी सेनाको वचन से कृपाकर रक्षा करता सन्ता लक्षमणपर तप्त वाण चलावता भया उसे लक्ष्मण

ने अपनी विद्या से निवार इन्द्रजीतपर आशीविष जातिका नाग वाण चलाया सो इन्द्रजीत नागवाण से अचेत होय भूमि में पड़ा जैसे भामण्डल पड़ाथा और रामने कुम्भकरण को रथ रहित किया फिर कुम्भकरण ने सूर्यवाण रामपर चलाया सो रामने उसका बाण निराकरण कर नागवाणकर उसे बेढ़ा सो कुम्भरणभी नागों का बेढ़ा थका धरतीपर पड़ा । यह कथा गौतमगणधर राजा श्रेणिक से कहे हैं हे श्रेणिक बड़ा आश्चर्य है वे नागवाण धनुषके लगे उल्कापात स्वरूप होय जाय हैं और शत्रुवोंके शरीरके लग नागरूपहोय उसको बेढे हैं यह दिव्य शस्त्र देवो पुनीत हैं मनवांछित रूप करे हैं एक क्षणमें वाण एक क्षणमें दण्ड क्षण एक में पाशरूप होय परणवे हैं जैसे कर्म पाशकर जीव बंधे तैसे नागपाशकर कुम्भकरण बंधा सो राम की आज्ञापाय भामण्डलने अपने रथमें रखा कुम्भकरणको रामने भामण्डलके हवाले किया और इन्द्रजीतको लक्ष्मणने पकड़ा सो विराधितके हवाले किया सो विराधितने अपने रथमें राखा खेद खिन्न है शरीर जिसका उस समय युद्धमें रावण बिभीषण को कहताभया कि यदि तू आपको योधा माने है तो एक मेरा घात सह जिससे रणकी खाज बुझै यह रावणने कही कैसा है बिभीषण कोपकर रावण के सन्मुख है और विकराल करी है रणक्रीड़ा जिसने रावणने कोपकर बिभीषणपर त्रिशूल चलाया कैसा है त्रिशूल प्रज्वलित अग्निके स्फुलिंगोंकर प्रकाश किया है आकाश में जिसने सो त्रिशूल लक्ष्मणने बिभीषणतक आवने न दिया अपने वाणकर बीचही भस्मकिया तब रावण अपने त्रिशूलको भस्मकिया देख अति क्रोधायमान भया और नागेंद्रकी दई शक्ति महा दारुण सो ग्रही और आगे देखे तो इन्दीवर कहिये नीलकमल उस समान श्याम सुन्दर महा देदीप्यमान पुरुषोत्तम गरुडध्वज लक्ष्मण खडे हैं तब

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काली घटा समान गम्भीर उदारहै शब्द जिसका ऐसा दशमुख सो लक्ष्मणसे ऊंचे स्वरकर कहताभया मानों ताडनाही करे है तेरा बल कहां जो मृत्युके कारण मेरे शस्त्र तू झेले तू औरों की ज्यों मुझे मत जाने हे दुर्बुद्धि लक्ष्मण जो मूवा चाहे है तो मेरा यह शस्त्र झेल तब लक्ष्मणयद्यपि चिरकालका संग्राम कर अति खेद खिन्न भया है तथापि विभीषणको पीछेकर आप आगे होय रावणकी तरफ दौड़े तब रावणने महा क्रोधसे लक्ष्मणपर शक्ति चलाई कैसीहै शक्ति निकसे हैं तारावों के आकार स्फुलिंगावों के समूह जिससे सो लक्ष्मण का वक्षस्थल महा पर्वतके तट समान उस शक्तिसे विदारागया कैसी है शक्ति महा दिव्य अति देदीप्यमान अमोघजोपा कहिए वृथा नहीं है लगना जिसका सो शक्ति लक्ष्मणके अंगसों लग कैसी सोहती भई मानो प्रेमकी भरी वधूही है सो लक्ष्मण शक्तिके प्रहार कर पराधीन भयाहै शरीर जिसका सो भूमि पर पड़ा जैसे वज्रका मारा पहाड़ परे सो उसे भूमि पर पड़ा देख श्रीराम कमल लोचन शोकको दबाय शत्रुके घात करिबे निमित्त उद्यमी भए सिंहोंके रथ चढ़े क्रोध के भरे शत्रुको तत्कालही रथ रहित किया तब रावण और रथ चढ़ा तब रामने रावण का धनुष तोड़ा फिर रावण दूजा धनुष लेय तितने राम ने रावण का दूजा रथभी तोड़ा सो राम के बाणों से विह्वल हुआ रावण धनुष बाण लेय असमर्थ भया तीव्र बाणों से राम रावण का रथ तोड़ डारें वह फिर रथ चढ़े सो अत्यन्त खेद खिन्नभया छेदाहै धनुष और बक्तर जिसका सो छहबार रामने रथरहित किया तथापि रावण अद्भुतपराक्रम का धारी राम कर हता न गया तब राम आश्चर्य्य पाय रावण से कहते भए तू अल्पआयु नहीं कोईयक दिन आयुबाकी है सो मेरे बाणोंसे न मूवा मेरी भुजावोंसे चलाए बाण महातीक्ष्ण तिनसे पहाड़ भी भिद जाय मनुष्यों

For Private and Personal Use Only

कीतो क्या बात तथापि आयु कर्मने तुझे बचाया अब मैं तुझे कहूं सो सुन हे विद्याधरों के अधिपति मेरा भाई संग्राम में शक्ति से तैंने हना सो इस की मृत्यु कियाकर मैं तुझसे प्रभात ही युद्ध करूंगा तब रावण ने कही ऐसे ही करो, यह कह रावण इन्द्र तुल्य पराक्रमी लंका में गया कैसा है रावण प्रार्थनाभंग करिवे को असमर्थ है, रावण मन में बिचारै है इन दोनों भाइयों में एक यह मेरा शत्रु अति प्रबल था सो तो मैं हता यह बिचार कछुइक हर्षित होय मंदिर में गया, कैयकनो योधा युद्ध से जीवते आए तिनको देखता भया कैसा है रावण भाइयों में है वात्सल्य जिस के फिरसुनी इन्द्रजीत मेघनाद पकड़े गए और भाई कुम्भकर्ण पकड़ा गया सो इस बृतांत से रावण अतिखेद खिन्न भया तिनके जीवने की आशा नहीं, यह कथा गौतमगणधर राजा श्रेणिक से कहे हैं हे भव्योत्तम अनेक रूप अपने उपार्जे कर्मों के कारण से जीवों के नाना प्रकार की साता आसाता होय हैं, देख इस जगत् में नानाप्रकार के कर्म तिन के उदय कर जीवों के नाना प्रकार के शुभाशुभ होय हैं और नाना प्रकार के फल होय हैं कैयक तो कर्म के उदय से रण में नाश को प्राप्त होय हैं और कैइक बैरियों को जीत अपने स्थानक को प्राप्त होय हैं और किसी की विस्तीर्ण शक्ति विफल होय जाय है और बंधन को पावे है सो जैसे सूर्य्य पदार्थों के प्रकाशने में प्रवीण है तैसे कर्म जीवों को नाना प्रकार के फल देने में प्रवीण है॥ इति बासठवां पर्ब पूर्ण भया ॥

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मण के शोकसे व्याकुल भए जहां लक्ष्मण पड़ा था वहांआय पृथिवी मंडल का मंडन जो भाई उसे चेष्टा रहित शक्ति से आलिंगित देख मूर्छित होय पड़े, फिर घनी बेर में सचेत होयकर महाशोक से संयुक्त दःखरूप अग्नि से प्रज्वलित अत्यंत बिलाप करते भए, हा बत्स कर्म

पद्म पुराण ॥७१३॥

के योग कर तेरी यह दारुण अवस्था भई आप दुर्लंघ्य समुद्र तर यहां आए, तू मेरीभक्ति में सदा सावधान मेरे कार्य निमित्त सदा उद्यमी शीघ्र ही मेरे से वचनालापकर कहां मौन धर तिष्ठे है तू न जाने मेरे में तेरे वियोगको एक चणमात्र भी सहिनेकी सक्ति नहीं उठ मेरे उरसे लग तेरा विनय कहांगया तेरे भुज गज के सूंड समान दीर्घ भुजवन्धनों से शोभित सो ये क्रियारहित प्रयोजन रहित होयगए भाव मात्र ही रहगए और तू माता पिता ने मोहि धरोहर सौंपा था सो अबमैं महानिर्लज्ज तिनको क्या उत्तर दूंगा अत्यन्त प्रेम के भरे अति अभिलाषी राम हा लक्ष्मण हा लक्ष्मण ऐसा जगत्में हितु तो समान नहीं इसभान्ति के वचन कहते भए लोक समस्त देखे हैं और महादीन भया भाई सों कहे हैं तू सुभटों में रत्न है तो बिना मैं कैसे जीऊंगा मैं अपना जीतव्य पुरुषार्थ तेरे बिना विफल मानूं हूं, पापों के उदय का चरित्र मैं ने प्रत्यक्ष देखा मुझे तेरे बिना सीतासे क्या और अन्य पदार्थों से क्या जिस सीताके निमित्त तेरे सारीखे भाई को निर्दय शक्तिसे पृथिवीपर पड़ा देखूं हूं सो तुम समान भाई कहां काम अर्थ पुरुषों को सब सुलभ हैं और और सम्बन्धी पृथिवी पर जहां जाईये वहां सब मिलें परन्तु माता पिता और भाई न मिलें हे सुग्रीव तैंने अपना मित्रपणा मुझे अति दिखाया अब तुम अपने स्थानक जावो और हे भामंडल तुम भी जावो अब मैं सीता की भी आशा तजी और जीवने की भी आशा तजी, अब मैं भाई के साथ निसंदेह अग्नि में प्रवेश करूंगा हे बिभीषण मुझे सीता का भी सोच नहीं और भाई का सोच नहीं परन्तु तुम्हारा उपकार हमसे कुछ न बना सो यह मेरे मनमें महाबाधा है जे उत्तमपुरुष हैं वे पहिले ही उपकार करें और जे मध्यम पुरुष हैं वे उपकार पीछे उपकार करें और जो पीछे भी न करें वे अधम

पुरुष हैं सो तुम उत्तम पुरुष हो हमारा प्रथम उपकार किया ऐसे भाई से विरोधकर हम पै आए, और हमसे तुम्हारा कुछ उपकार न बना इसलिये मैं अति आताप रूपहूं हो भामंडल सुग्रीव चिता रचो मैं भाई के साथ अग्निमें प्रवेश करूंगा तुम जोयोग्य होय सो करियो यह कहकर लक्ष्मणको रामस्पर्शने लगे तब जाबूनन्द महा बुद्धिमान् मने करता भया हे देव यह दिव्यास्त्रसे मूर्छित भया है तुम्हारा भाई सो स्पर्श मतकरो यह अच्छा होजायगा ऐसे होय है तुम धीरता को धरो कायरता तजो आपदा में उपाय ही कार्यकारी हैं यह विलाप उपाय नहीं तुम सुभट जनहो तुमको विलाप उचित नहीं यह विलाप करना क्षुद्र लोगों का कामहै इसलिये अपना चित धीरकरो कोई यक उपाय अब ही बने है यह तुम्हारा भाई नारायणहै सो अवश्य जीवेगा अबार इसकी मृत्यु नहीं यह कह सर्व विद्याधर विषादीभए और लक्ष्मण के अंगसे शक्ति निकसनेका उपायअपने मनमें सबही चितवते भए यह दिव्यशक्तिहै इसे औषधोंसेकोई निवारबे समर्थ नहीं और कदापि सूर्य उगा तो लक्ष्मण का जीवना कठिन है यह विद्याधर बारम्बार विचारते हुंए उपजी है चिन्ता जिनके सो कमरबंध आदिक सब दूर कर आध निमिष में धरती शुद्ध कर कपड़े के डेरे खड़े किए और कटक के सात चोंकी बिठाई सो बडे, बडे योधा बक्तर पहिरे धनुषबाण धारे बहुत सावधानी से चौकी बैठे प्रथम चौकी नील बैठे धनुषबाण हाथ में धरे हैं और दूजी चौकी नल बैठे गदा करमें लिये और तीजी चौकी बिभीषण बैठे महा उदार मन त्रिशूल थांभे और कल्पवृक्षों की माला रत्नों के आभूषण पहरे ईशानइन्द्र समान और चौथी चौकी तरकश बांधे कुमुद बैठे महा साहस धरे पांचवी चौकी बरछी संभार सुषेण बैठे महा प्रतापी और छठी चौकी महा दृढ़

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुज आप सुग्रीव इन्द्र सारिखा शोभायमान भिंडिपाल लिये बैठे सातवीं चौकी महा शस्त्रका निकन्दक तरवार सम्हाले आप भामंडल बैठा पूर्व के द्वार अष्टपादकी ध्वजा जाके ऐसा सोहताभया मानों महाबली अष्टपादही है और पश्चिमके द्वार जाम्बुकुमार विराजताभया और उत्तरके द्वार मन्त्रियों के समूह सहित बालीका पुत्र महा बलवान चन्द्ररश्मि बैठा इस भांति विद्याधर चौकी बैठे सो कैसे सोहतेभए जैसे आकाश में नक्षत्र मंडल संभालते और वानरवंशी महाभट वे सब दक्षिण दिशा की तरफ चौकी बैठे इस भांति चौकी का यत्नकर विद्याधर तिष्ठे लक्ष्मणके जीने में है संदेह जिनके प्रबल है शोक जिनको जीवों के कर्म रूप सूर्यके उदयसे ...जका प्रकाश होय है ताहि न मनुष्य न देव न नाग न असुर कोईभी निवारने समर्थ नहीं यह जीव अपना उपार्जा कर्म आपही भोगवे है ॥ इति त्रेसठवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर रावण लक्ष्मणका निश्चयसे मरण जान और अपने भाई दोनों पुत्रोंको बुद्धिमें मरण रूपही जान अत्यन्त दुःखी भया रावण विलाप करे है हाय भाई कुम्भकरण परम उदार अत्यन्त हितु कहा एसी बन्धन अवस्था को प्राप्त भए हाय इन्द्रजीत मेघनाद महा पराक्रम के धारी हो मेरी भुजा समान दृढ़ कर्म के योग से बंधको प्राप्तभए ऐसी अवस्था अबतक न भई मैं शत्रु का भाई हना है सो न जानिये शत्रु व्याकुलभया क्या करे तुम सारिखे उत्तम पुरुष मेरे परम वल्लभ परम अवस्था को प्राप्त भए इस समान मोकों अति कष्ट कहां ऐसे रावण गोप्य भाई और पुत्रोंका शोक करताभया और जानकी लक्ष्मण के शक्ति लगी सुन अति रुदन करतीभई हाय लक्ष्मण विनयमान गुणभूप तू मोमन्द भागिनी के निमित्त ऐसी अवस्थाको प्राप्तभया मैं तुझे ऐसी अवस्थामें भी देखा चाहूं हूं सो दैव योगसे देखने

For Private and Personal Use Only

नहीं पाऊं हूं तो सारिखे योधा को पापी शत्रुने हना सो कहां मरे मरणका संदेह न किया तो समान पुरुष इस संसारमें और नहीं जो बड़े भाई की सेवा में आसक्त है चित्त जिनका समस्त कुटुम्ब को तज भाई के साथ निकसा और समुद्र तर यहां आया ऐसी अवस्थको प्राप्तभया तुझे मैं फिर देखूं कैसा है तू बाल क्रीड़ा में प्रवीण और महा विनयवान महा मिष्ट वाक्य वा अद्भुतकार्यका करणहारा ऐसादिनभी होयगा जो तुझे मैं देखूं सर्व देव सर्बथा प्रकार तेरी सहाय करें हैं हे सर्वलोक के मन के हरण हारे तू शक्ति की शल्य से रहित होय इस भांति महा कष्ट से शोकरूप जानकी विलापकरे उस भावों से अति प्रीति रूप जे विद्याधरी तिन ने धीर्य बंधाय शांत चित्त करी हे देवि तेरे देवर का अबतक मरने का निश्चय नहीं इस लिये तू रुदन मत करे और महा धीर सामन्तों की यही गति है और इस पृथिवी पर उपाय भी नाना प्रकार के हैं ऐसे विद्याधारियों के वचन सुन सीता किंचित निराकुलभई अब गौतम स्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे राजन् अब जो लक्ष्मणका वृतान्त भया सो सुना एक योधा सुन्दर है मूर्ति जिसकी सो डेरोंके द्वार पर प्रवेश करता भामण्डल ने देखा और पूछा कि त कौन और कहां से आया और कौन अर्थ यहां प्रवेश करें है यहां ठहरो आगे मत जावो तब वह कहताभया मुझे महीने ऊपर कई दिन गए हैं मेरे अभिलाषा राम के दर्शन की है सो राम का दर्शन करूंगा और जो तुम लक्ष्मण के जीवने की बांछा करोहो तो मैं जीवने का उपाय कहूंगा जब उसने ऐसा कहा तब भामंडल अति प्रसन्नहोय द्वारे आप समान और सुभट मेल ताहिलार लेय श्रीराम पै आया सो विद्याधर श्रीराम से नमस्कार कर कहता भया हे देव तुम खेद मत करो लक्ष्मण कुमार निश्चय सेती जीवेगा देवगीत

नामा नगर वहां राजा शशिमण्डल राणी सुप्रभा तिनका पुत्र मैं चन्द्रप्रीतम सो एक दिन आकाश में विचरताथा सो राजा वेलधिचका पुत्र सहस्राविजय सो उससे मेरा यह वैर कि मैं उसकी मांग परणा सो वह मेरा शत्रु उसके और मेरे महा युद्धभया सो उसने चण्डरवा नाम शक्ति मेरे लगाई सो मैं आकाश से अयोध्या के महेन्द्रनामा उद्यान में पड़ा सो मुझे पड़ता देख अयोध्या के धनी राजा भरत आय ठाढे भए शक्ति से विदारा मेरा वक्षस्थल देख वे महा दयावान उत्तम पुरुष जीवदाता मुझे चन्दनके जलकर छांटा सो शक्ति निकसगई मेरा जैसा रूपथा वैसा होयगया और कुछ अधिक भया वा नरेंद्र भरतने मुझे नवां जन्म दिया जिस से तुम्हारा दर्शनभया यह वचनसुन श्रीरामचन्द्र पूछतेभये कि उस गन्धोदक की उत्पत्ति तू जाने है तब उसने कही हे देव जानूं हूं तुम सुनो मैं राजा भरतको पूछी और उसने मुझे कही सो कि यह हमारा समस्त देश रोगों से पीड़ित भया सो किसी इलाज से अच्छा न होय पृथिवी कौन रोग उपजे सो सुनो उरोघात महा दाह ज्वर लाला परिश्रम सवशूल और छिरद सोई फोरे इत्यादि अनेक रोग सर्वदेश के प्राणियों को भए, मानो क्रोध से रोगों की धाड़ ही देश में आई और राजाद्रोण मेघ प्रजा सहित नीरोग तब मैं उसको बुलाया और कही हे माम तुम जैसे नीरोग हो तैसा शीघ्र मुझे और मेरी प्रजा को करो तब राजा द्रोणमेघने जिसकी सुगन्धता से दशोंदिशा सुगन्ध होय उस जलसे मुझे सींचा सो मैं चंगा भया और उस जलसे मेरा राज लोक भी चंगा और नगर तथा देश चंगा भया, सर्व रोग निवृत भए सो हजारों रोगों की करणहारी अत्यन्त दुस्सह वायु मर्मकीभेदन हारी उस जलसे जाती रही तब मैंने द्रोणमेघ को पूछा यह जल कहां का है जिससे सर्वरोग का विनाश होय तब द्रोणमेघ ने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कही हे राजन् मेरे विशिल्यानामा पुत्री सर्वविद्यामें प्रवीण महागुणवती सो जब गर्भ में आई तबमेरे देश में अनेक व्याधि थी सो पुत्री के गर्भ में आवते ही सर्व रोग गए, पुत्री जिनशासन विषे प्रवीण है भगवान् की पूजा में तत्पर है सर्व कुटम्ब की पूजनीक हैं उसके स्नान का यह जल है उस के शरीर की सुगन्धता से जल महासुगन्ध है क्षणमात्र में सर्व रोग का विनाश करे है, ये वचन द्रोणमेघ के सुनकर मैं आश्चर्य को प्राप्त भया उस के नगर में जाय उस की पुत्री की स्तुति करी, और नगरी से निकस सत्वहित नामा मुनि को प्रणाम कर पूछा हे प्रभो द्रोणमेघ की पुत्री विशल्या का चरित्र कहो तब चार ज्ञान के धारक मुनि महावात्सल्य के धरणहारे कहतेभए हे भरत महाविदेहक्षेत्र में स्वर्गसमान पुंडरीक देश वहां त्रिभुवनानन्द नामा नगर वहां चक्रधर नाम चक्रवर्ती राजा राज्य करे उसके पुत्री अनंगसरा गुण ही हैं आभूषण जिसके स्त्रियों में उस समान रूपअद्भुत और का नहीं सो एकप्रतिष्ठित पुर का धनी राजा पुनर्वसु विद्याधर चक्रवर्तीका सामन्तसो कन्याको देख काम बाणकर पीडितहोय विमानमें बैठाय लेय गया सो चक्रवर्तीने कोधायमानहोय किंकर भेजे सो उससे युद्ध करते भए उसका विमान चूर डारा तब उस ने व्याकुलहोय कन्या आकाशसे डारी सो शरदके चन्द्रमाकी ज्योतिसमान पुनर्वसुकी परणलघुविद्या कर अटवीमें आय पडी सो अटवी दुष्ट जीवोंसे महा भयानक जिसका नाम श्वापद रौरव जहां विद्याधरोंका भी प्रवेश नहीं वृक्षोंके समूहसे महा अंधकाररूप नानाप्रकारकी बेलोंसे बेढे नाना प्रकारके ऊंचे वृक्षों की सघनतासे जहां सूर्यकी किरणका भी प्रवेश नहीं और चीता व्याघ्र सिंह अष्टापद गैंडा रीछ इत्यादि अनेक वनचर विचरें और नीची ऊंची विषमभूमि जहां बडे २ गर्त (गढे) सो यह चक्रवर्तीकी कन्या अनंग

For Private and Personal Use Only

सरा बालक अकेली उस बनमें महाभयकर युक्त अति खेदखिन्न होती भई नदी के तीरै जाय दिशा अवलोकन कर माता पिताको चितार रुदन करतीभई हायमैं चक्रवर्तीकी पुत्री मेरा पिता इन्द्रसमान उसके मैं अति लाडली दैवयोगसे इस अवस्थाको प्राप्तभई अब क्या करूं इस बनका ओड नहीं यह बनको देख दुःख उपजे हाय पिता महापराक्रमी सकल लोक प्रसिद्ध मैं इस बनमें असहाय पड़ी मेरी दया कौन करे हाय माता एसे महा दुःखसे मुझे गर्भमें राखी अब काहे से मेरी दया न करो हाय मेरे परिवारके उत्तम मनुष्यहो एक क्षणमात्र मुझे न छोडते सो अब तज दीनी और मैं होती ही क्यों न मरगई काहेसें दुःखकी भूमिका भई चाही मृत्यु भी न मिले क्या करूं कहां जाऊं मैं पापिनी कैसे तिष्ठूं यह स्वप्नहै कि साक्षातहै इस भांति चिरकाल विलाप कर महा विह्वल भई ऐसे विलाप किए जिनको सुन महादुष्ट पशुका भी चित्त कोमल होय यह दीनचित्त क्षुधा तृषासे दग्ध शोकके सागरमें मग्न फल पत्रादिकसे कीनी है आजीविका जिसने कर्मके योगसे उस बनमें कई शीतकाल पूर्णकिए कैसे हैं शीतकाल कमलोंके बनकी शोभाका जो सर्वस्व उसके हरणहारे और जिन ने अनेक ग्रीष्मके आताप सहेकैसे हैं ग्रीष्मके आताप सूके हैं जलोंकेसमूह और जले हैं दावानलोंसे अनेक न अनेक वृक्ष और जरे हैं मरे हैं अनेक जन्तु जहां और जिसने उसबनमें वर्षाकालभी बहुत व्यतीत किए जिससमय जलधाराके अंधकारसे दबगई है सूर्यकी ज्योति और उसका शरीर वर्षाका धोया चित्राम के समान होयगया कांतिरहित दुर्बल बिखरे केश मलयुक्त शरीर लावण्यरहित ऐसाहोय गया जैसा सूर्य के प्रकाशसे चन्द्रमाकी कलाका प्रकाश क्षीणहोय जाय कैथका बन फलोंसे नम्रीभूत वहां बैठी पिता

को चितार इस भांतिके बचन कहकर रुदनकरे कि मैं चक्रवर्तीके तो जन्मपाया और पूर्व जन्मके पापकर बनमें ऐसी दुख अवस्थाको प्राप्तभई इस भांति आंसुवोंकी वर्षा कर चतुर्मासिक किया और जे वृक्षोंसे टूटे फल सूक जांय तिनका भक्षणकरें और बेला तेला आदि अनेक उपवासोंसे क्षीण होय गया है शरीर जिसका सो केवल फल और जलसे पारणा करतीभई और एकही बार जल उसही समय फल यह चक्रवर्तीकी पुत्री पुष्पोंकी सेजपर सोवती और अपने केशभी जिसको चुभते सो विषम भूमिपर खेद सहित शयन करतीभई और पिताके अनेक गुणीजन रागकरते तिनके शब्द सुन प्रबोधको पावती सो अब स्याल आदि अनेक बनजरोंके भयानक शब्दसे रात्रि व्यतीत करती भई इसभांति तीन हजार वर्ष तप किया सूके फल तथा सूके पत्र और पवित्रजल आहार किये और महावैराग्यको प्राप्त होय खान पानका त्यागकर धीरता धर संलेषणा मरण आरम्भा एक सौ हाथ भूमि पांवों से परे न जाऊं यह नियम धार तिष्ठी, आयु में छह दिन बाकी थे और एक अरहदास नामा विद्याधर सुमेरु की बन्दना कर के जावे था सो आय निकसा सो चक्रवर्ती की पुत्रीको देख पिताके स्थानक लेजाना बिचारा संलेषणा केयोग से कन्याने मने किया तब अरहदास शीघ्र ही चक्रवर्ती पर जाय चक्रवर्ती को लेय कन्या पै आया सो जिस समय चक्रवर्ती आया उस समय एक स्थूल अजगर कन्या को भखेथा सो कन्याने पिताको देख अजगरको अभयदान दिवाया और आप समाधि धारण कर शरीर तज तीजे स्वर्ग गई पिता पुत्रीकी यह अवस्था देखकर बाईस हजार पुत्रों सहित वैराग्यको प्राप्तहोय मुनि भया, कन्याने अजगरसे क्षमाकर अजगर को पीड़ा न होने दई सो ऐसी दृढ़ता उसही से बने और वह पुनर्वसु विद्याधर अनंगसरा को देखता भया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो न पाई तब खेदखिन्न होय द्रुमसेन मुनिके निकट मुनिहोय महा तप किया सो स्वर्गमें देव होय महासुन्दर लक्ष्मणभया, और वह अनंगसरा चक्रवर्तीकी पुत्री स्वर्गलोकसे चयकर द्रोणमेघके विशल्या भई और पुनर्वसुने उसके निमित्त निदान कियाथा, सो अब लक्ष्मण इसे बरेगा यह विशल्या इस नगरके इस देशमें तथा भरतक्षेत्रमें महा गुणवन्ती है पूर्वभवके तपके प्रभावसे महा पवित्रहै उसके स्नान का यह जलहै सो सकल विकारको हरे है इसने उपसर्ग सहा महातप किया उसका फलहै उसके स्नान के जलसे जो तेरे देशमें वायु विषम विकार उपजाथा सो नाशभया ये मुनिके वचन सुन भरतने मुनि से पूछी हे प्रभो मेरेदेशमें सर्वलोकोंको रोगविकार कौन कारणसे उपजा तब मुनिने कही गजपुर नगर से एकव्यापारी महाधनवंत विन्ध्यनामा सो रासभ(गधा)ऊंट भैंसा लादेअयोध्यामेंआया और ग्यारह महीना अयोध्यामें रहा उसके एक भैंसा सो बहुत बोझके लादनेसे घायलभया तीव्र रोगके भारसे पीडित इस नगरमें मूवा सो अकाम निर्जराके योगसे अश्वकेतु नामा वायुकुमार देव भया जिसका वाय्वावर्त नाम सो अवधि ज्ञानसे पूर्व भवको चितारा कि पूर्वभव विषेमें भैंसाथा सो पीठ कट रहीथी और महा रोगोंसे पीडित मार्ग विषे कीचमें पडाथा सो लोकमेरे सिरपर पांव देय २ गए यह लोक महानिर्दई अब मैं देव भया सो मैं इनका निग्रह न करूं तो मैं देव काहेका, ऐसा विचार अयोध्या नगरमें और सुकोशल देश में वायु रोग विस्तारा सो समस्त रोग विशल्याके चरणोदकके प्रभावसे विलय गया बलवानसे अधिक बलवानहै सो यह पूर्ण कथा मुनिने भरतसे कही और भरतने मो से कही सो मैं समस्त तुम को कही विशल्याका स्नान जलशीघ्रहीमंगावो लक्ष्मणके जीवनेका अन्य यत्न नहीं इसभांति विद्याधरने

For Private and Personal Use Only

श्रीरामसे कही सो सुनकर प्रसन्न भए। गौतमस्वामी कहे हैं कि हेश्रेणिक जे पुण्याधिकारी हैं तिनको पुण्यके उदय से अनेक उपाय सिद्ध होयहैं॥ इति श्री चौसठवां पर्व संपूर्णम्

अथानतर ये विद्याधरके बचन सुनकर राम ने समस्त विद्याधरों सहित उसकी अति प्रशंसा करी और हनूमान भामंडल तथा अंगद इनको मंत्रकर अयोध्याकी तरफ विदा किये। ये क्षणमात्र में गए जहां महाप्रतापी भरत विराजे हैं सो भरत शयन करते थे तिनको रागसे जगावनेका उद्यम किया सो भरत जागते भए तब ये मिले सीताका हरण रावणसे युद्ध और लक्ष्मणके शक्तिका लगना ये समाचार सुन भरको शोक और क्रोध उपजा और उसी समय युद्ध की भेरी दिवाईसो संपूर्ण अयोध्या के लोग व्याकुल भए और विचार करते भए यह राज मंदिर में कहा कलकलाट शब्दहै आधीरात के समय क्या अतिवीर्यका पुत्र आय पड़ा कोईयक सुभट अपनी स्त्रीसहित सोताथा उसेतज बक्तर पहिरे और खडग हाथमें समारा और कोयक मृगनैनी भोरे बालकको गोदमेंलेय औरकुचोंपर हाथधर दिशावलोकन करती भई और कोई एक स्त्री निद्रा रहित भई सोते कन्थ को जगावती भई और कोई एक भरतजीका सेवक जान कर अपनी स्त्रीको कहता भया हे प्रिये कहां सोवे है आज अयोध्यामें कछु भला नहीं राजमंदिर में प्रकाश होरहा है और रथ, हाथी, घोड़े, प्यादे, राजद्वार की तरफ जाय हैं जो सयाने मनुष्य थे वे सब सावधान होय उठ खड़े हुये और कईएक पुरुष स्त्रीसे कहते भए ये सुवर्ण कलश और मणि रत्नों के पिटारे तहखानों में और सुन्दर वस्त्रों की पेटी भूमि ग्रह में धरो और भी द्रब्य ठिकाने धरो और शत्रुघन भाई निद्रा तज हाथी चढ़ मंत्रियों सहित शस्त्रधारक योधावों को लेय राजद्वार आया औरभी अनेक राजा

राजद्वार आए सो भरत सबको युद्धका आदेश देय उद्यमी भया तब भामण्डल हनूमान अंगद भरतको नमस्कार कर कहतेभये हे देव लङ्का पुरी यहांसे दूरहै और बीच समुद्र है तब भरतने कही क्या करना तब उन्हों ने विशिल्या का वृत्तान्त कहा हे प्रभो राजा द्रोणमेघकी पुत्री विशिल्या उसके स्नानका उदक देवो शीघ्र ही कृपा करो जो हम लेजायें सूर्यका उदय भए लक्ष्मण का जीवना कठिन है तब भरत ने कही उस के स्नानका जल क्या उसीको लेजावो मुझे मुनिने कहीथी यह विशल्या लक्ष्मणकी स्त्री होयगी तब द्रोण मेघ के निकट एक निज मनुष्य उसी समय पठाया सो द्रोणमेघने लक्ष्मण के शक्ति लगी सुन अति कोप किया औइ युद्ध को उद्यमी भया और उसके पुत्र मन्त्रियों सहित युद्धको उद्यमी भए तब भरत और माता केकईने आप द्रोणमेघके जायकर उसको समझाय विशिल्याका पठावना ठहराया तब भामण्डल हनूमान अंगद विशिल्याको बिमान में बैठाय एक हजार अधिक राजाकी कन्या सहित लेय राम कटक में आए एक क्षणमात्र में संग्रामभमिआयपहूंचे विमानसे कन्या उतारा ऊपर चमर ढुरे हैं कन्या कमल सारिखे नेत्र सो हाथी घोड़े बड़े बड़े योधावों को देखतीभई ज्यों ज्यों विशिल्या कटकमें प्रवेश करे त्यों त्यों लक्ष्मणके शरीरमें साता होती भई वह शक्ति देवरूपिणी लक्षमण के अंग से निकसी ज्योतिके समूहसे युक्त मानो दुष्ट स्त्री घरसे निकसी देदीप्यमान अग्निके स्फुलिंगों के समूह आकाशमें उछलते सो वह शक्ति हनूमान ने पकड़ी दिव्य स्त्रीका रूपधरे तब हनूमान को हाथ जोड़ कहतीभई हे नाथ प्रसन्न होवो मुझेछोड़ो मेरा अपराध नहीं हमारी यहीरिति है कि हमको जो साधे हम उसके वशीभूत हैं मैं अमोघविजिया नामा शक्ति विद्या तीन लोकमें प्रसिद्ध हूं सो कैलाशपर्वत में बालमुनि प्रतिमा जोगधरे तिष्ठे थे और रावणने भगवान् के चैत्यालय में

गान किया और अपने हाथोंकी नस बजाई और जिनेन्द्र के चरित्र गाये तब धरणेंद्र का आसन कंपायमान भया सो धरणींन्द्र परम हर्ष धर आए रावण सो अति प्रसन्न होय मुझे दई मो रावण याचना में कायर मुझे न इच्छे तब धरणेन्द्र ने हठकर दई सो मैं महा विकराल स्वरूप जिसके लगूं उसके प्राण हरूं कोई मुझे निवारवे समर्थ नहीं एक इस विशल्या सुन्दरी को टार मैं देवों की जीतन हारी सो मैं इसके दर्शन ही से भाग जाऊं, इसके प्रभाव कर मैं शक्ति रहित भई तप का ऐसा प्रभाव है जो चाहे तो सूर्य्य को शीतल करे और चन्द्रमा को उष्ण करे इसने पूर्व जन्म में अति उग्रतप किए मिझना के फूल समान इसका सुकुमार शरीर सो इसने तप में लगाया ऐसा उग्रतप किया जो मुनो से भी न बने, मेरे मन में संसार विषे यही सार भासे है जो ऐसे तप प्राणी करें वर्षा शीतल आताप और महा दुस्सह पवन तिनसे यह सुमेरु की चूलिका समान न कांपी धन्य रूप इसका धन्य याका साहस धन्य इसका धर्म विषे दृढ़मन इसकासा तप और स्त्रीजन करने समर्थ नहीं सर्वथा जिनेन्द्र चन्द्र के मत के अनुसार जे तपको धारण करे हैं वे तीनलोक को जीते हैं अथवा इसबात का क्या आश्चर्य जिस तपसे मोक्ष पाईये उससे और क्या कठिन। मैं पराए आधीन जो मुझे चलावे उसके शत्रु का मैं नाश करूं सो इस ने मुझे जीती अब मैं अपने स्थान क जाऊं हूं सो तुम तो मेरा अपराध क्षमा करो इसभांति शक्तीदेवीने कहा तब तत्वका जाननहारा हनूमान् उसे विदा कर अपनी सेना में आया और द्रोणमेघ की पुत्री विशिल्या अति लज्जा की भरी राम के चरणारबिन्द को नमस्कार कर हाथ जोड़ ठाढ़ी भई विद्याधर लोक प्रशंसा करते भए और नमस्कार करते भए और आशीर्वाद देते भए जैसे इन्द्र के समीप शची जाय तिष्ठे तैसे वह विशिल्या

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुलक्षणा महा भागवती सखियों के वचन से लक्ष्मण के समीप तिष्ठी वह नव यौवन जिसके मृगी कैसे नेत्र, पूर्णमासी के चन्द्रमा समान मुख जिस का और महा अनुराग की भरी उदार मन पृथिवी विषे सुख से सूते जो लक्ष्मण तिन को एकान्त में स्पर्श कर और अपने सुकुमार कर कमल सुन्दर तिन से पतिके पांव पलोटने लगी और मलयागिरि चन्दन से पतिका सर्व अंग लिप्त किया और इसकी लार हजार कन्या आई थीं तिन ने इसके करसे चन्दन लेय विद्याधरों के शरीर छांटे सो सब घायल आछे भए और इन्द्रजीत कुम्भकर्ण मेघनाद घायल भए थे सो उनकोभी चन्दनके लेप से नीके किये सो परम आनन्द को प्राप्त भए जैसे कर्म रोग रहित सिद्धपरमेष्ठी परम आनन्द को पावें और भी जे योधा घायल भए थे हाथीघोड़े पियादे सो सब नीके भए घावोंकी शल्यजाती रही सब कटक अच्छा भया और लक्ष्मण जैसे सूता जागे तैसे जागे बीण के नाद सुन अति प्रसन्नभए और लक्ष्मण मोहशय्या छोडतेभए स्वांस लिए आंख उघड़ी उठ कर क्रोध के भरे दशों दिशा निरख ऐसे वचन कहते भए कहां गया रावण कहां गया वो रावण ये वचन सुन राम अति हर्षित भए फूल गए हैं नेत्र कमल जिन के महा आनन्द के भरे बड़े भाई रोमांच भया है शरीर में जिन के और अपनी भुजावों से भाई से मिलते भए और कहते भए हे भाई वह पापी तुझे शक्ति से अचेत कर आपको कृतार्थ मान घरगया और इस राजकन्या के प्रसाद से त नाका भया और जाम्वन्तको आदिदेय सबविद्याधरों ने शक्तिके लागवे आदि निकसवे पर्यन्त सर्व वृत्तान्त कहा औ लक्ष्मण ने विशिल्या अनुराग को दृष्टिकर देखी कैसी है विशिल्या श्वेतश्याम आरक्त तीन वर्ण कमल तिन समान हैं नेत्र जिस के और शरद की पूर्णोंके चन्द्रमा समान है मुख जिस का और कोमल

For Private and Personal Use Only

शरीर क्षीण कटि दिग्गज के कुम्भस्थल समान स्तन हैं जाके नव यौवन मानो साक्षात् मूर्तिवन्ती काम की क्रीड़ा ही है मानों तीनलोक की शोभा एकत्रकर नाम कर्म ने इसे रची है उसे लक्ष्मण देख आश्चर्य को प्राप्त होय मनमें विचारता भया यह लक्ष्मी है अक इन्द्र की इन्द्राणी है अथवा चन्द्र की कान्ति है यह विचार करे है और विशिल्या की लारकी स्त्री कहती भई हे स्वामी तुम्हारे बिवाह का उत्साह हम देखा चाहे हैं तब लक्ष्मण मुलके और विशिल्या का पाणिग्रहण किया और विशिल्या की सर्व जगत्में कीर्ति विस्तरी, इसभांति जे उत्तम पुरुष हैं और पूर्वजन्म में महा शुभ चेष्टा करी है तिन को मनोग्य वस्तु का सम्बन्ध होय है और चांद सूर्य कीसी उनकी कांति होय है ॥ इति पैंसठवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथान्तर लक्ष्मण का बिशिल्यासे बिवाह और शक्तिका निकासना यहसब समाचार रावणने हलकारों के मुख सुने और सुनकर मुलिक कर मंद बुद्धि कर कहता भया शक्ति निकसीतो क्या और बिशिल्या ब्याही तो क्या तब मारीच आदि मन्त्री मंत्र में प्रवीण कहते भए हे देव तुम्हारे कल्याणकी बात यथार्थ कहेंगे तुम कोप करो अथवा प्रसन्न होवो सिंह बाहनी गरुड़बाहनी विद्या रामलक्ष्मणको यत्न बिना सिद्ध भई सो तुमदेखी और तुम्हारे दोनों पुत्र और भाई कुम्भकर्णको तिन्होंने बांध लिए सो तुम देखे और तुम्हारी दिब्य शक्ति सो निरर्थक भई तुम्हारे शत्रु महाप्रबल हैं उनसे जो कदाचित तुम जीतेभी तो भ्रात पुत्रों का निश्चय नाश है इसलिये ऐसा जानकर हमपर कृपा करो हमारी बिनती अबतक आप ने कदापि भंग न करी इस लिये सीता को तजो और जो तुम्हारे धर्म बुद्धि सदा रही है सो राखो सर्व लोक को कुशल होय राघवसे संधि करो यहबात करनेमें दोष नहीं महा गुण है तुम हीसे सर्व लोकमें मर्यादा

चले हैं धर्मकी उत्पत्ति तुम से है जैसे समुद्रसे रत्नोंकी उत्पत्ति होय ऐसा कहकर बडे मंत्री हाथ जोड़ नमस्कार करते भए और हाथ जोड बिनती करते भए सबने यह मंत्र किया कि एक सामंत वा दूत विद्या में प्रवीण सन्धि के अर्थ राम पै पठाइये सो एक बुद्धिसे शुक्रसमान महा तेजस्वी प्रतापवान मिष्ट वादी उसे बुलाया सो मंत्रियों ने महासुन्दर महाअमृत औषधी समान बचन कहे परन्तु रावणने नेत्र की समस्या कर मंत्रियोंका अर्थ दूषितकर डाला जैसे कोई विषसे महाऔषधि को विषरूप कर डारे तैसे रावण संधिकी बात विग्रहरूप जताई सो दूत स्वामीको नमस्कार कर जायवेको उद्यमी भया कैसा है दूत बुद्धि के गर्व से लोकको गोपद समान निरखे है आकाशके मार्ग जाता रामके कटकको भयानक देख दूतको भय न उपजा इसके बादित्र सुन बानरबंशियोंकी सेना चोभको प्राप्त भई रावणके आगम की शंका करी जब नजीक आया तब जानी यह रावण नहीं कोई और पुरुष है तब बानरबंशियोंकी सेनाको बिश्वास उपजा दूत द्वारेआय पहूंचा तब द्वारपालने भामण्डल से कही भामण्डलने रामसे बिनतीकर केतेक लोकों सहित निकट बुलाया और उसकी सेना कटकमें उतरी रामसे नमस्कारकर दूत बचन कहता भया हे रघुचन्द्र मेरे वचनोंसे मेरे स्वामीने तुमको कुछकहा है याते चित्त लगाय सुनो युद्धकर कछु प्रयोजन नहीं आगे युद्धके अभिमानी बहुत नाशको प्राप्तभए इस लिये प्रीतिही योग्य है युद्ध से लोकोंका त्तय होय है और महा दोषउपजे हैं अपवाद होयहै आगे संग्राम की रुचिकर राजा दुर्वर्तक शंख धवलांग असुरसम्बरादिक अनेक राजा नाशको प्राप्त भए इसलियेमेरे सहित तुम को प्रीति ही योग्य है अहो जैसे सिंह महापर्वत की गुफा को पाय कर सुखी होय है तैसे अपने मिलाप से सुख

होय है, मैं रावण जगत् प्रसिद्ध क्या तुमने न सुना जिस ने इन्द्रसे राजा बन्दी गृह में किए जैसे कोई स्त्रियों को और सामान्यलोकोंको पकड़े तैसे इन्द्र पकड़ा और जिस की आज्ञा सुर असुरोंकर न रोकी जाय पाताल में न जल में न आकाश विषे आज्ञा को कोई न रोक सके नानाप्रकारके अनेक युद्धों का जीतनहारा वीर लक्ष्मी जाको वरे ऐसा मैं सो तुमको सागरांत पृथिवी विद्याधरोंसे मण्डित दूहूं और लंकाके दोयभागकर बांट दूहूं ॥

भावार्थ। समस्त राज्य और आधीलंका दूहूं तुममेरा भाई और दोनोंपुत्र मोपे पठावो और साता मुझे देवो जिस से सब कुशलहोय और जो तुम यों न करोगे तो जो मेरे पुत्र भाई बन्धमें हैं तिनको तो बलात्कार छुटाय लूंगा और तुम को कुशल नहीं, तब राम बोले मुझे राज्य से प्रयोजन नहीं और और स्त्रियों सेप्रयोजन नहीं सीता हमारे पठावो हम तुम्हारे दोनों पुत्र और भाई को पठावें और तुम्हारी लंका तुम्हार ही रहो और समस्त राज तुमही करो मैं सीता सहित दुष्टजीवों से संयुक्त जो बन उस में सुख से विचरूंगा हे दूत तू लंका के धनी स जाय कहो इसही बात में तुम्हरा कल्याण है, और भान्ति नहीं ऐसे श्रीराम केसर्व पूज्य वचन सुख साता कर संयुक्त तिन को सुनकर दूत कहता भया हे नृपति तुम राज काज में समझते नहीं मैं तुम को फिर कल्याण की बात कहूं हूं तुम निर्भय होय समुद्र उलंघ आए हो सो नीके न करी और यह जानकी की आशा तुम को भली नहीं यदि लंकेश्वर कोप भया तब जानकी की क्या बात तुम्हारा जीवना भी कठिन है और राजनीति में ऐसा कहा है जे बुद्धिमान् हैं तिन को निरन्तर अपने शरीर की रक्षाकरनी स्त्री और धन इन पर दृष्टि न धरनी और जोगरुड़ेन्द्र ने सिंहवाहन गरुड़वाहन तुम पै भेजे तो क्या और तुम छलछिद्रकर मेरे पुत्र और सहोदर बांधे तोक्या जोंलग मैं जीवूं हूं तों लग इनबातोंका गर्व तुम को

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बृथाहै जो तुम युद्ध करोगे तो न जानकीका नतिहारा जीवन इसलियेदोनों मत खोवो सीता का हठ छोड़ो और रावण ने यह कही है जे बड़े बड़े राजा विद्याधर इन्द्र तुल्य पराक्रम जिन के सो समस्त शस्त्र विषे प्रवीण अनेक युद्धों के जीतन हारे वे मैं नाश को प्राप्तकिएहैं तिनके कैलाशपर्वतके शिखर हाड़न के समूह देखो जब ऐसा दूतने कहा तबभामण्डल क्रोधायमान भया ज्वाला समान महा विकराल मुख उसकी ज्योतिसे प्रकाश किया है आकाश विषय जिसने भामण्डलने कही रे पापी दूत स्याल चातुर्यता रहित दुर्बुद्धि बृथा शंका रहित क्या भाषे है सीता की क्या वार्ता सीता तो राम लेहींगे यदि श्रीराम कोपे तब रावण राक्षस कुचेष्टित पशु कहां ऐसा कह उसके मारबे को खड्ग सम्हारा तब लक्षमणने हाथ पकड़े और मनेकिया कैसे हैं लक्षमण नीतिही है नेत्र जिनके भामण्डल के क्रोधसे रक्तनेत्र होयगए वक्रहोय गए जैसी सांझ की लाली होय तैसा लालबदन होयगया तब मन्त्रियोंने योग उपदेश कह समता को प्राप्त किया जैसे विषका भरा सर्प मन्त्रसे वश कीजे है, हे नरेन्द्र क्रोध तजा यह दीन तुम्हारे क्रोध योग्य नहीं यह तो पराया किंकर है जो वह कहावे सो कहे इसके मारने से क्या स्त्री, बालक, दूत, पशु, पक्षी, ब्रद्ध, रोगी, सोता, आयुध रहित, शरणागत, तपस्वी गाय, ये सर्वथा अवध्य हैं जैसे सिंह कारी घटा समान गाजते गज तिनका मर्दन करने हारा सो मींडकों पर कोप न करे तैसे तुमसे नृपति दूतपर कोप न करें यहतो उसके शब्दानुसार है जैसे (छाया पुरुष है छाया पुरुषकी अनुगामिनीहै) और सूवाको ज्यों पढ़ावे तैसे पढ़े और यंत्र को ज्यों बजावें त्यों बजे तैसे यह दीन वह बकावे त्यों बके ऐसे शब्द लक्षमण ने कहे तब सीता का भाई भामण्डल शांतचित्तभया श्रीराम दूतको प्रकटकहतेभए रे मूढ़दूत तू शीघ्रहीजा और रावणको ऐसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहियो तू ऐसे मूढ़ मंत्रियोंका बहकाया खोटे उपायकर आपा ठगावेगा तू अपनी बुद्धिकर विचार किसी कुबुद्धिको पूछे मत सीताका प्रसंग तज सर्व पृथिवीका इन्द्र हो पुष्पक विमान में बैठा जैसे भ्रमे था तैसे विभव सहित भ्रमायह मिथ्या हठ छोड़ दे चन्द्रोंकी बात मत सुनों करने योग कार्यमें चित्त धर जो सुखकी प्राप्ति होय ये वचन कह श्रीराम तो चुप होय रहे और और पुरुषोंने दूतको फिर बात न करनेदई निकाल दीया दूत राम के अनुचरों ने तीक्षण बाण रूप वचनों से बींधा और अति निरादर किया तब रावणके निकट गया मन में पीड़ा थका सो रावण सों कहताभया हे नाथ मैं तुम्हारे आदेश प्रमाण रामसों कहा जो या पृथिवी नाना देशों से पूर्ण समुद्रांत महा रत्नोंकी भरी विद्याधरोंके समस्त पट्टन सहित मैं तुमको दूंहूं और बड़े २ हाथी रथ तुरंग दूंहूं और यह पुष्पक विमान लेवो जो देवोंसे न निवारा जाय इसमें बैठ विचरो और तीन हजार कन्या मैं अपने परवार की तुमको परणाय दूं और सिंहासन सूर्य्य समान और चन्द्रमा समान छत्र वेलेहु और निःकंटक राज करो एती बात मुझे प्रमाण हैं जो तुम्हारी आज्ञा कर सीता मोहि इच्छे यह धरा और राज लेवो और मैं अल्प विभूति राख वैंतही के सिंहासन पर बैठा रहूंगा विचक्षण हैं तो एक वचन मेरा मान सीता मोहि देवो ए वचन मैं बार बार कहे सो रघुनन्दन सीता का हठ न छोड़े केवल उसके सीताका अनुरागहै और वस्तुकी इच्छा नहीं है देव जैसे मुनि महा शांत चित्त अठाईस मूल गुणों की क्रिया न तजें वह क्रिया मुनिव्रतका मूलहैं तैसे राम सीताको न तजें सीता ही रामके सर्वस्व है कैसी है त्रैलोक्यमें ऐसी सुन्दरी नहीं और रामने तुमसे यह कही है कि हे दशानन ऐसे सर्वलोक निंद्य वचन तुमसे पुरुषों को कहना योग्य नहीं ऐसे वचन पापी कहे हैं उनकी जीभ के सौ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टक क्यों न होंय मेरे इस सीता बिना इन्द्र के भोगों से कार्य नहीं यह सर्व पृथिवी तू भोग मैं बनबास ही करूंगा और तू पर दारा हरकर मरनेको उद्यमी भया है तो मैं अपनी स्त्रीके अर्थ क्यों न मरूंगा और मुझे तीनहजार कन्या देहै सो मेरे अर्थ नहीं मैं बनके फल और पत्रादिकही भोजन करूंगा और सीता सहित बन में विहार करूंगा और कपिध्वजों का स्वामी सुग्रीव उसने हंसकर मोह कही जो कहा तेरा स्वामी आग्रहरूप ग्रहके वश भयाहै कोई वायु का विकार उपजा है जो ऐसी विपरीत वार्त्ता रंक हुवा बकै है और क्या लंका में कोऊ वैद्य नहीं अरु मन्त्र वादी नहीं वायके तेलादिक कर यत्न क्यों न करे नातर संग्राममें लक्ष्मण सर्वरोग निवारेगा। भावार्थमारेगा। तब यह वचनसुन मैं क्रोधरूप अग्निकर प्रज्वलित और सुग्रीवसे कही रे वानरध्वज तू ऐसे बकै है जैसे गज के लार स्वान बकै तू राम के गर्व से मूवा चाहे है जो चक्रवर्त्ति कि निन्दा के वचन कहै है सो मेरे और सुग्रीवके बहुत बात भई और मैं राम सों कहा हे राम तुम महा रण में रावण का पराक्रम न देखा कोऊ तुम्हारे पुण्य के योग से बहु बार विकराल चमा में आये हैं वह कैलाश को उठावनहारा तीन जगत् में प्रसिद्ध प्रतापी तुम से हित किया चाहे है और राज्य देय है उस समान और क्या तुम अपनी भुजासे दशमुख रूपसमुद्रको कैसे तरोगे कैसा है दशमुख रूपसमुद्र प्रचंड सेनासोई भई तरंगों की माला तिनसे पूर्ण है और शस्त्ररूप जलचरों के समूह से भरा है हे राम तुम कैसे रावणरूप भयंकर बन में प्रवेश करोगे, कैसा है रावणरूप बन दुर्गम कहिए जिस विषे प्रवेश करना कठिन है और व्याल कहिए दुष्टगज वेईभए नाग तिनसे पूर्ण है और सेनारूप वृक्षों के समूह से महा विषम है, हे राम जैसे कमल पत्रकी पवनसे सुमेरु न डिगे और सूर्य की किरणों

For Private and Personal Use Only

हाथ धर अधो मुख होय कछुएक चिन्ता रूप तिष्ठा अपने मनमें विचारे हैं जो शत्रु को युद्ध में जीतूं हंतो भ्रात पुत्रों की अकुशल दीखे है और जो कदाचित् बैरियों के कटक में मैं रति हावकर कुमारोंको ले आऊं तो इस शूरता में न्यूनता है रतिहाव क्षत्रियों के योग्य नहीं क्याकरूं कैसे मुझे सुखहोय यह विचार करते रावण को यह बुद्धि उपजी जो मैं बहुरूपणी विद्यासाधूं कैसीहै बहुरूपणी जो कदाचित देव युद्धकर तो भी न जीती जाय, ऐसा विचार कर सर्वसेवकों को आज्ञा करी श्री शांतिनाथ के मन्दिरमें समीचीन तोरणादिकों से अति शोभा करो सो सर्व चैत्यालयों में विशेष पूजा करो सर्व भार पूजा प्रभावना का मन्दोदरी के सिरपर धरा गौतम गणधर कहे हैं हे श्रेणिक वह श्री मुनिसुव्रत नाथ बीसमां तीर्थंकर का समय उस समय इस भरतक्षेत्र में सर्वठौर जिन मन्दिर थे यह पृथिवी जिनमन्दिरों से मण्डित थी चतुर विध संघकी विशेष प्रवृति राजाश्रेष्ठि ग्रामपति और प्रजाके लोग सकल जैनी थे सो महा रमणीक जिन मंदिर रचते जिनमंदिर जिनशासनके भक्त जो देव तिनसे शोभायमान वे देव धर्मकी रक्षामें प्रवीण शुभ कार्यके करणहारे उससमय पृथ्वी भव्यजीवोंसे भरी ऐसी सोहती मानो स्वर्ग विमानही है ठौर २ ध्वजा ठौर २ प्रभावना ठौर २ दान हेमगधाधिपति पर्वत पर्वतविषे गांव २ विषे नगर २ विषे वन वन विषे पट्टन पट्टन विषे मंदिर मंदिर विषे जिनमंदिरथे महा शोभाकर संयुक्त शरदके पूनोंकी चन्द्रमासमान उज्ज्वल गीतोंकी ध्वनिसे मनोहर नानाप्रकारके वादित्रोंके शब्दकर मानों समुद्र गाजे है और तीनों सन्ध्या वंदना को लोग आवें सो साधुवोंके अंगसे पूर्ण नानाप्रकारके वादित्रोंके शब्दकर मानों समूह कालके आश्चर्यकर संयुक्त नानाप्रकारके चित्रामको धरे अगर चंदनकाधूप और पुष्पोंकी सुगन्धताकर महासुगंध

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मई महा विभूतिकर युक्त नानाप्रकारके वर्णके वर्णकर शोभित महा विस्तीर्ण महा उतंग महा ध्वजावों से विराजित तिनमें रत्नमई तथा स्वर्णमई पंचवर्णकी प्रतिमा विराजें विद्याधरोंके स्थानोंमें अति सुन्दर जिनमंदिरोंके शिखर तिनसे शोभा होय रही है उस समय नानाप्रकारके रत्नमई उपवनादिसे शोभित जे जिनभवन उनसे यह जगत व्याप्तथा और इन्द्रके नगरसमान लंकाका अंतर बाहिर जिनेंद्रके मंदिरोंसे मनोग्य था सो रावणने विशेष शोभा कराई और आप रावण अठारह हजार राणी वेई भई कमलोंके वन तिनको प्रफुल्लित कर्ता वर्षाके मेघसमानहै स्वरूप जिसका महा नागसमान भुजा जिसकी पूर्ण मासीके चन्द्रमासमान बदन सुन्दर गुडहरके फूलसमान लाल होंठ विस्तीर्ण नेत्र स्त्रियोंका मन हरण हारा लक्ष्मणसमान श्यामसुन्दर दिव्यरूपका धरणहारा सो अपने मंदिरोंमें तथा सर्वत्र विषे जिनमंदिर की शोभा करावताभया कैसाहै रावणका घरलग रहे हैं लोगोंके नेत्र जहां और जिनमंदिरोंकी पंक्ति उस से मंडित नानाप्रकारके रत्नमई मंदिरके मध्य उतंग श्रीशान्तिनाथका चैत्यालय जहां भगवान शांति नाथ जिनकी प्रतिमा विराजे जे भव्यजीवहैं वे सकललोक चरित्रको असार अशाश्वता जानकर धर्म विषे बुद्धिधर जिनमंदिरोंकी महिमाकरो कैसे हैं जिनमंदिर जगतकर बन्दनीकहैं और इन्द्रके मुकट के विषे लगे जे रत्न तिनकी ज्योतिको अपने चरणोंके नखोंकी ज्योतिकर बढावनहारे हैं धनपावनेका यही फल जो धर्म करिये सो गृहस्थका धर्म दान पूजारूप और यतिका धर्मशांत भावरूप इस जगतविषे यह जिनधर्म मनवांछित फलका देनहाराहै जैसे सूर्यके प्रकाशकर नेत्रों के धारक पदार्थोंका अवलोकन करे है तैसे जिनधर्मके प्रकाशसे भव्यजीव निजभावका अवलोकन करे हैं ॥ इतिसतसठवांपर्वसंपूर्णम् ॥

For Private and Personal Use Only

अथानन्तर फाल्गुणशुदी अष्टमीसे लेय पूर्णमासी पर्यंत सिद्धिचक्रका व्रतहै जिसे अष्टाह्निका कहे हैं सो इन आठ दिनोंमें लंकाके लोग और लशकरके लोग नियम ग्रहणको उद्यमी भए सर्व सेना के उत्तम लोक मनमें यह धारना करते भए कि यह आठ दिन धर्म के हैं सो इन दिनों में न युद्ध करें न और आरम्भ करें यथा शक्ति कल्याणके अर्थ भगवानकी पूजा करेंगे और उपवासादि नियम करेंगे इन दिनों में देवभी पूजा प्रभावना में तत्पर होय हैं क्षीरसागर के जे सुवर्णके कलश जलसे भरे थे तिनसे देव भगवानका अभिषेककरे हैं कैसाहै जल सत्पुरुषोंके यशसमान उज्ज्वल और औरभी जे मनुष्यादि हैं तिनको भी अपनी शक्ति प्रमाण पूजा अभिषेक करना इन्द्रादिक देव नन्दीश्वरद्वीप जायकर जिनेश्वरका अर्चनकरे हैं तो क्या ये मनुष्य अपनी शक्ति प्रमाण यहां के चैत्यालयों का पूजन न करें ? करेंहीं करें देव स्वर्ण रत्नोंके कलशोंसे करें हैं और मनुष्य अपनी संपदा प्रमाण करें महानिर्धन मनुष्य होय तो पलाश पत्रोंके पुटहीसे अभिषेक करें देव रत्न स्वर्णके कमलोंसे पूजाकरें हैं निर्धन मनुष्य चित्तही रूप कमलोंसे पूजा करेंहैं लंकाके लोक यह विचारकर भगवानके चैत्या लयों का उत्साह सहित ध्वजा पताकादिसे शोभित करते भए वस्त्र स्वर्ण रत्नादिकर अति शोभा करी रत्नों की रज और कनकरज तिनके मंडल मांडे और देवालयोंके द्वार अति सिंगारे और मणि सुवर्णके कलश कमलों से ढके दधिदुग्ध घृतादिसे पूर्ण मोतियोंकी माला है कंठमें जिनके रत्नोंकी कांतिसे शोभित जिन बिम्बोंके अभिषेकके अर्थ भक्तिवंत लोक लाये जहां भोगी पुरुषोंके घरमें सैकड़ों हजारों मणिसुवर्णोंके कलशहैं नंदनवनके पुष्प और लंका के बनों के नाना प्रकार के पुष्प कर्णि

कार अति मुक्त कदंब सहकार चंपक पारिजात मंदार जिनकी सुगन्धता से भ्रमरों के समूह गुंजार करें हैं और मणि सुवर्णादिक के कमल तिन से पूजा करतेभए और ढोल मृदंग ताल शंख इत्यादि अनेक वादित्रों के नाद होते भए लंकापुर के निवासी बैर तज आनन्द रूप होय आठ दिन में भगवान की अति महिमा से पूजा करते भए, जैसे नन्दीश्वर द्वीप में देव पूजा के उद्यमी होंय तैसे लंका के लोक लंका में पूजा के उद्यमीभए और रावण विस्तीर्ण प्रतापका धारक श्री शांतिनाथ के मंदिरमें जाय पवित्र होय भक्तिकर महामनोहर पूजा करताभया जैसे पहिले प्रतिवासुदेव करें, गौतम गणधर कहे हैं हेश्रेणिक जे महाविभवकर युक्त भगवानके भक्त महाविभूतिवंत अतिमाहिमासे प्रभुका पूजन करें हैं तिनके पुण्यके समूहका व्याख्यान कौन करसके वे उत्तम पुरुष देवगति के सुख भोग फिर चक्रवर्तियों के भोग पावें फिर राजतज जैनमतके व्रतधार महातप कर परम मुक्तिपावें कैसा है तप सूर्य्य से भी अधिक है तेज जिसका ॥ ॥ इति अड़सठवांपर्व सम्पूर्णम ॥

अथानन्तर महाशांतिका कारण श्रीशांतिनाथका मंदिर कैलाशके शिखर और शरदके मेघ समान उज्वल महा देदीप्य मान मंदिरोंकी पंक्तिसे मंडित जैसे जम्बूद्वीप के मध्य महाउतंग सुमेरु पर्वत सोहै तैसे रावण के मंदिरके मध्य जिनमंदिर सोहता भया वहां रावण जाय विद्या केसाधनेमें आसक्तहै चित्त जिसका और स्थिरहै निश्चय जिसका परम अद्भुत पूजा करताभया भगवानका अभिषेक कर अनेक वादित्र बजावता अति मनोहर द्रव्यों से महासुगंध धूपकर नानाप्रकार की सामग्री से शांत चित्तभया शांतिनाथ की पूजा करता भया मानों दूजा इन्द्रहीहै शुक्ल वस्त्र पहिरे महासुन्दर जे भुज बंध उनसे शोभितहै भुजा

जिसकी सिरके केश भली भांति बांध उनपर मुकुट धर उसपर चूड़ामणि लहलहाट करती महाज्योति को धरे रावणदोनों हाथजोड़े गोड़ोंसे धरतीको स्पर्शता मन बचन कायसे शांतिनाथको प्रणामकरता भया श्री शांतिनाथके सन्मुख निर्मल भूमिमें खड़ा अत्यन्त शोभताभया कैसी है भूमि पद्मराग मणि की है फर्श ।जिस में और रावणके स्फटिकमणिकी माला हाथ में और उरमें धरे कैसा सोहता भया मानों बक पंक्तिसे संयुक्त कारी घटाका समूहही है वह राक्षसोंका अधिपति महाधीर विद्याका साधन आरंभता भया जब शांतिनाथके चैत्यालय गया उस पहिले मंदोदरी को यह आज्ञा करी कि तुम मंत्रियों को और कोटपालको बुलायकर यह घोषणा नगरमें फेरियो कि सर्वलोक दयाविषे तत्पर नियम धर्म के धारक होवें समस्त व्यापारतज जिनेंद्रकी पूजाकरो और अर्थी लोगोंको मनवांछित धन देवो अहंकार तजो जौलग मेरा नियम न पूरा होय तौलग समस्त लोग श्रद्धाविषे तत्पर संयमरूप रहोजो कदाचित कोई बाधा करे तो निश्चय सेती सहियो महाबलवान होय सो बलका गर्व न करियो इन दिवसों में जो कोऊ क्रोधकर विकार करेगा सो अवश्य सज़ा पावेगा जो मेरे पिता समान पूज्य होय और इन दिनों में कषाय करे, कलह करे उसेमें मारूं जो पुरुष समाधिमरणसे युक्त न होयसो संसार समुद्रको न तिरे जैसे अंधपुरुष पदार्थोंको न परखे तैसे अविवेकी धर्मको न निरखें इसलिए सब विवेक रूप रहियो कोऊ पाप क्रिया न करनेपावे, यहआज्ञा मंदोदरीको कर रावण जिनमंदिर गए और मंदोदरी मंत्रियोंको और यमदंडनामा कोटपालको द्वारे बुलायपतिकी आज्ञा प्रमाण आज्ञा करती भई तब सबने कहा जो आज्ञाहोयगी सोही करेंगे यहकह आज्ञा सिरपर धर घर गये और संशय रहित नियम धर्मके उद्यमी

होय नृपकी आज्ञा प्रमाण करते भए समस्त प्रजाके लोग जिनपूजामें अनुरागी होते भये और समस्त कार्य तजे सूर्यकी कांति से भी अधिक है कांति जिनकी ऐसे जे जिनमंदिर तिनमें तिष्ठे निर्मल भावकर युक्त संयम नियम का साधन करते भये ॥ इति उनत्तरवां पर्व समाप्तम् ॥

अथानन्तर श्री राम के कटक में हलकारों के मुख यह समाचार आए कि रावण बहु रूपणी विद्या के साधने को उद्यमी भया श्री शांतिनाथ के मंदिर में विद्या साधे है चौबीस दिन में यह बहु रूपणी विद्या सिद्ध होयगी यह विद्या ऐसी प्रबल है जो देवोंका भी मद हरे सो समस्त कपिध्वजों ने यह विचार किया कि जोवह नियममें बैठा विद्यासाधे है सो उसको क्रोध उपजावें ताकि यहविद्या सिद्ध न होय इसलिये रावणको कोप उपजावने का यत्न करना, यदि उसको विद्या सिद्ध होय तो इन्द्रादिक देवों से भी न जीता जाय हम सारिखे रंकों की क्या बात, तब विभीषण ने कही की कोप उपजावने का उपाय करो शीघ्र ही करो तब सब ने मन्त्र कर राम से कही कि लंका लेने का यह समय है रावणके कार्यमें विघ्न करिए और अपने को जो करना होय सो करिए तब कपिध्वजों के यह वचन सुन श्री रामचन्द्र महाधीर महा पुरुषों की है चेष्टा जिनकी सो कहते भए हो विद्याधर हो तुम महामूढ़ता के वचन कहो हो क्षत्रियों के कुल का यह धर्म नहीं जो ऐसे कार्य करें अपने कुल की यह रीति है जो भय से भाजे उसका बध न करना तो जे नियमधारी जिनमन्दिर में बैठे हैं तिनसे उपद्रव कैसे करिए यह नीचों के कर्म हैं सो कुलवंतों को योग्य नहीं यह अन्याय प्रवृति क्षत्रियों की नहीं कैसे हैं क्षत्री महामान्यभाव और शस्त्र कर्म में प्रवीण यह वचन राम के सुन सबने विचार किया कि हमारा प्रभु श्रीराम महा धर्म धारी है उत्तम भाव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का धारक है सो इनको कदाचित भी अधर्म विषे प्रवृति न होयगी तब लक्ष्मण की जानमें इन विद्याधरों ने अपने कुमार उपद्रव को विदा किए और सुग्रीवादिक बडे बडे पुरुष आठ दिन का नियम धर तिष्ठे और पूर्णचन्द्रमा समान बदन जिनके कमल समान नेत्र नाना लक्षण के धरणहारे सिंह व्याघ्र बराह गज अष्टापद इनसे युक्त जे रथ तिन पर बैठे तथा बिमानों पर बैठे परम आयुधों को धरें कपियों के कुमार रावणको कोप उपजायबे का है अभिप्राय जिनके मानों यह असुरकुमार देवही हैं प्रीतंकर दृढ़रथ चन्द्राह्न रतिवर्धन वातायन गुरुभार सूर्यज्योति महारथ समन्तबल नन्दन सर्वदृष्ट सिंह सर्वप्रिय नल नील सागर घोषपुत्र सहित पूर्ण चन्द्रमा स्कंध चन्द्र मारीच जांबव संकट समाधि बहुल सिंह कट इन्द्रामणि बल तुरंग सब इत्यादि अनेक कुमार तुरंगों के रथ चढे और अन्य कैयक सिंह बाराह गज व्याघ्र इत्यादि मनसे भी चञ्चल बाहनों पर चढे पयादों के पटल तिनके मध्य महा तेज को धरे नाना प्रकारके चिन्ह तिनसे युक्त हैं छत्र जिनके और नाना प्रकार की ध्वजा फरहरे हैं जिनके महा गंभीर शब्द करते दशों दिशा को आछादित करते लंकापुरी में प्रवेश करतेभए मन में विचार करतेभए बड़ा आश्चर्य है कि लंका के लोक निश्चिन्त तिष्ठे हैं जानिये है कछू संग्राम का भय नहीं अहो लंकेश्वर का बड़ाधीर्य महागंभीरता देखो कि कुम्भकर्ण से भाई और इन्द्रजीत मेघनाद से पुत्र पकड़े गए हैं तौभी चिन्ता नहीं और अक्षादिक अनेक योधा युद्ध में हते गए हस्त प्रहस्त सेनापति मारे गए तथापि लंकपति को शंका नहीं, ऐसा चिंतवन करते परस्पर वार्ता करते नगर में बैठे तथा बिभीषण का पुत्र सुभूषण कपिकुमारों को कहता भया तुम भय तज लंका में प्रवेश करो बाल बृद्ध स्त्रियों को तो कुछ न कहना और सबको व्याकुल करेंगे तब इस

For Private and Personal Use Only

का वचन मान विद्याधरकुमार महा ऊद्धत कलहप्रिय आशीविष समान प्रचण्ड व्रतरहित चपल चञ्चल लंका में उपद्रव करते भए तिनके महाभयानक शब्द सुन लोक अति व्याकुलभए और रावणके महलमें भी व्याकुलता भई जैसे तीव्र पवन से समुद्र चोभ को प्राप्त होय तैसे लंका कपिकुमारों से उद्वेग को प्राप्त भई रावण के महिल में राज लोकों को चिन्ता उपजी कैसा है रावण का मन्दिर रत्नों की कांति कर देदीप्यमान है और जहां मृदंगादिक के मंगल शब्द होवे हैं जहां निरन्तर स्त्री जन नृत्य करे हैं और जिनपूजा में उद्यमी राज कन्या धर्म मार्ग में आरूढ़ सो शत्रु सेना के क्रूर शब्द सुन आकुलता उपजी स्त्रियों के आभूषणों के शब्द होते भए मानों बीण बाजे हैं सब मन में विचारती भई न जानिए क्या होय इसभांति समस्त नगरी के लोग व्याकुलता को प्राप्त भए विह्वल भए तब मन्दोदरी का पिता राजा मय विद्याधरों में दैत्य कहावे सो सब सेना सहित बक्तर पहिर आयुध धार महा पराक्रमी युद्धके अर्थ उद्यमी होय राजद्वार आया जैसे इन्द्र के भवन हिरण्यकेशी देव आवे तब मन्दोदरी पिता से कहती भई हे तात जिस समय लंकेश्वर जिन मंदिर पधारे उस समय आज्ञा करी कि सब लोक संवररूप रहियो कोई कषाय मत करियो इसलिये तुम कषाय मत करो ये दिन धर्म ध्यानके हैं सो धर्म सेवो और भांति करोगे तो स्वामीकी आज्ञा भंग होयगी और तुम भला फल न पावोगे, ये वचन पुत्रीके सुन राजा मय उद्धतता तज महा शांत होय शस्त्र डारतेभये जैसे अस्त समय सूर्य किरणोंको तजे मणियोंके कुण्डलों से मंडित और हार कर शोभे हैं वक्षस्थल जिसका अपने जिनमन्दिर में प्रवेश करता भया और ये वानर वंशी विद्याधरों के कुमारोंने निज मर्यादा तज नगरका कोट भंग किया वज्रके कपाट तोड़ दरवाजा तोड़

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो इनको देख नगरके वासियोंको अति भय उपजा घरघर में ये बात होय है भाजकर कहां जाइये ये आए बाहिर खड़े मत रहो भीतर पैसो हाय मात ये क्या भया, हे तात देखो, हे भ्रात हमारी रक्षा करो हे आर्य पुत्र महाभय उपजा है ठिकाने रहो इस भांति नगरी के लोक व्याकुलता के वचन कहते भए लोक भाग रावण के महिलमें आये अपने वस्त्र हाथों में सम्हाले अति विह्वल बालकों को गोद में लिये स्त्री जन कांपती भागी जाय हैं कैएक गिर पड़ी सो गोडे फूट गये कैएक चली जाय हैं हार टूट गए सो बड़े २ मोती बिखरे हैं जैसे मेघमाला शीघ्र जाय तैसे जाय है त्रासको पाइ जो हिरणी उस समान हैं नेत्र जिनके और ढीले होयगये हैं केशोंके बन्ध जिनके और कोई भयकर प्रीतम के उरसे लिपट गई इस भांति लोकों को उद्वेग रूप महा भयभीत देख जिन शासन के देव श्रीशान्तिनाथ के मन्दिरके सेवक अपने पक्षके पालनेको उद्यमी करुणावन्त जिन शासनके प्रभाव करनेको उद्यमी भए महा भैरव आकारधरे शांतिनाथके मंदिरसे निकसे नाना भेष धरे विकराल हैं दाढ़ जिनकी भयकर है मुख जिनका मध्यान्हके सूर्य समान तेज हैं नेत्र जिनके होंठ डसते दीर्घ है काया जिनकी नाना वर्ण भयंकर शब्द महा विषम भेष को धरे विकराल स्वरूप तिनको देखकर वानरवंशियों के पुत्र महा भयसे अत्यन्त विह्वल भए वे देव क्षण में सिंह क्षण में अग्नि क्षण में मेघ क्षण में हाथी क्षण में सर्प क्षण में वायु क्षण में वृक्ष क्षण में पर्वत सो इनसे कपिकुमारों को पीडित देख कटकके देव मदत करतेभए देवोंमें परस्पर युद्धभया लंका के देव कटकके देवोंसे और कपिकुमार लंकाके सन्मुख भए तब यक्षोंके स्वामी पूर्णभद्र मणिभद्र महा क्रोध को प्राप्तभए दोनों यक्षेश्वर परस्पर वार्ता करते भए देखो ये निर्दई कपियोंके पुत्र महा विकार को

For Private and Personal Use Only

प्राप्तभएहैं रावण तो निराहार होय देहविषे भी निस्पृह सर्वजगतका कार्यतज पोसेबैठाहै सो ऐसेशांत चित्तको यह छिद्रपाय पापी पीड़ा चाहेहैं, सो यह योधावों की चेष्टा नहीं यह वचन पूर्णभद्रके सुन माणिभद्र बोला अहो पूर्णभद्र रावणका इंद्रभी पराभव करिवे समर्थ नहीं रावण सुन्दर लक्षणोंसे पूर्ण शांत स्वभावहै तब पूर्णभद्रने कही जो लंकाको विघ्न उपजाहै सो आपा दूर करेंगे यह कहकर दोनों धीर सम्यक्दृष्टि जिनधर्मी यक्षोंके ईश्वर युद्धको उद्यमी भए सो बानरवंशियोंके कुमार और उनके पक्षी देव सब भागे, ये दोनों यक्षेश्वर महा वायु चलाय पाषाण बरसावतेभए और प्रलय कालके मेघ समान गाजतेभए तिनकी जांघोकी पवनकर कपिदल सूके पानकी न्याई उडे तत्काल भागगए तिन के लारही ये दोनों यक्षेश्वर रामके निकट उलहना देनेको आए सो पूर्णभद्र सुबुद्धि रामकी स्तुति कर कहते भए राजादशरथ महा धर्मात्मा तिनके तुम पुत्र और अयोग्य कार्यके त्यागी सदा योग्यकार्यों में उद्यमी शास्त्र समुद्रके पारगामी शुभ गुणोंसे सकलमें ऊंच तुम्हारी सेना लंकाके लोकोंको उपद्रव करे यह कहांकी बात जो जिसका द्रव्य हरे सो उसका प्राणहरे है यह धन जीवोंके बाह्य प्राणहैं अमोलिक हीरे वैडूर्य मणि मूंगा मोती पद्मराग मणि इत्यादि अनेक रत्नोंसे भरी लंका उद्वेगको प्राप्त करी तब यह वचन पूर्णभद्रके सुन रामका सेवक गरुड़केतु कहिये लक्ष्मण नीलकमलसमान सो तेजसे विविध रूप वचन कहताभया ये श्रीरघुचन्द्र तिनके राणी सीता प्राणसेभी प्यारी शीलरूप आभूषणकी धरणहारी वह दुरात्मा रावण छलकर हर लेगया उसका पक्ष तुम कहा करो, हेयक्षेन्द्र हमने तुम्हारा क्या अप- राध किया और उसने क्या उपकार किया जो तुम भृकुटी बांकीकर और सन्ध्याकी ललाई समान

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अरुण नेत्रकर उलहना देनेको आए सो योग्य नहीं एती वार्ता लक्ष्मणने कही और राजा सुग्रीव अति भयरूप होय पूर्णभद्रको अर्घ देय कहताभया, हे यक्षेन्द्र क्रोध तजो और हम लंकामें कछु उपद्रव न करें परन्तु यह वार्ता है रावण बहुरूपिणी विद्या साधे है सो जो कदाचित उसको विद्या सिद्ध होय तो उसके सन्मुख कोई ठहर न सके जैसे जिनधर्मके पाठकके सन्मुखवादी न टिके इसालिये वह क्षमावन्तहोय विद्या साधे है सो उसका क्रोध उपजावेंगे जो विद्या साध न सके जैसे मिथ्या दृष्टि मोक्षको साध न सके, तब पूर्णभद्र बोले ऐसेही करो परन्तु लंकाके एक जीर्ण तृणको भी बाधा न कर सकोगे और तुम रावणके अंगका बाधा मतकरो और अन्य बातोंसे क्रोध उपजावो परन्तु रावण अतिदृढ़है उसे क्रोध उपजना कठिनहै ऐसे कहवे दोनों यक्षेन्द्र भव्यजीवों में है वात्सल्य जिनका प्रसन्नहै नेत्र जिनके मुनियोंके समूहों के भक्त वैयाव्रतमें उद्यमी जिनधर्मी अपने स्थानक गए रामको उलहना देने आए थे सो लक्ष्मणके बचनों से लज्जावान भए समभाव कर अपने स्थानक गए सो जाय तिष्ठे गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक! जौंलग निर्दोषता होय तौंलग परस्पर अति प्रीतिहोय और सदोषता भए प्रीति भंग होय जैसे सूर्य उत्पात सहित होय तो नीका न लगे ॥ इति सत्तरवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर पूर्णभद्र मणिभद्रको शांतभाव जान सुग्रीवका पुत्र अंगद उसने लंकामे प्रवेश किया सो अंगद किहकंध कांड नामा हाथीपर चढ़ा मोतियोंकी माला कर शोभित उज्ज्वल चमरों से युक्त ऐसा सोहता भया जैसा मेघमाला में पूर्णमासीका चन्द्रमा सोहे, अति उदार महा सामन्त तथा स्कंध इन्द्र नील आदि बड़ी ऋद्धिकर मंडित तुरंगों पर चढ़े कुमार गमनको उद्यमी भए और अनेक पयादे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चन्दनसे चर्चित हैं अंग जिनके तांबूलों से लाल अधर कांधे ऊपर खडग धरे सुन्दर वस्त्र पहिरे स्वर्णके आभूषण से शोभित सुन्दर चेष्टा धरे आगे पीछे अलग बगल पयादे चले जांय हैं वीणा बांसुरी मृदंगादि वादित्र बाजे हैं नृत्य होता जायहै कपिवंशियोंके कुमार लंका में ऐसे गए जैसे स्वर्ग पुरी में असुरकुमार प्रवेश करें अंगदको लंकामें प्रवेश करता देख स्त्रीजन परस्पर वार्ता करती भई देखो यह अंगदरूप चन्द्रमा दशमुखकी नगरीमें निर्भय भया चला जायहै इसने क्या आरम्भा आगे अब क्या होयगा इस भांति लोक बात करें हैं ये चले चले रावणके मंदिरमें गए सो मणियोंका चौक देख इन्होंने जानी ये सरोवरहै सो त्रासको प्राप्तभए फिर निश्चय देख मणियोंका चौक जाना तब आगे गए सुमेरुकी गुफासमान महा रत्नों से निर्मापित मंदिरका द्वार देखा मणियोंके तोरणोंसे देदीप्य-मान वहां अंजन पर्वत सारिखे इन्द्र नील मणियोंके गज देख महास्कंध कुम्भस्थल जिनके स्थुलदंत अत्यन्त मनोग्य और तिनके मस्तक पर सिंहों के छावा जिनके सिर पर पूछ हाथियों के कुम्भस्थल पर सिंह विकराल वदन तीक्ष्ण दाढ़ डरावने केश तिनको देख पयादे डरे जानिए सांचेही हैं. तब भयकर भागे अतिविह्वल भए अंगद ने नीके समझाए तब आगे चले रावण के महिल में कपि वंशी ऐसे जावें जैसे सिंहोंके स्थान में मृग जांय अनेक द्वार उलंघ आगे जाने को असमर्थ भए घरोंकी रचना गहन सो ऐसे भटके जैसे जन्म का अंधा भ्रमें स्फटिकमणि के महिल वहां आकाशकी आशंका से भ्रमको प्राप्त भए और इन्द्र नीलमणि की भीति सो अन्धकार स्वरूप भासे मस्तक में शिला की लागी सो आकुल होय भूमि में पड़े वेदना से व्याकुल हैं नेत्र जिनके किसीएक प्रकार मार्ग उलंघकर आगे गए जहां स्फटिक मणिकी

For Private and Personal Use Only

भीति सो घनों के गोड़े फूटे ललाट फूटे दुखी भए तब उलटे फिरे सो मार्ग न पावें आगे एक रत्न मई स्त्री देखी साक्षात् स्त्रीजान उसे पूछतेभए सो क्या कहे तबमहाशंका के भरे आगे गए विह्वलहोय स्फटिक मणिकी भूमिमें पड़े आगे शान्तिनाथके मन्दिरका शिखर नजर आया परन्तु जायसकें नहीं स्फटिककी भीति आडा तब वह स्त्री दृष्टिपरीथी त्यों एक रत्नमई द्वारपाल दृष्टिपड़ा हेमरूप बैंतकी छड़ी जिसके हाथमें उसे कही श्रीशान्तिनाथ के मन्दिरका मार्ग बताओ सो क्या बतावे तब उसे हाथ से कूटा सो कूटनहारे की अंगुरी चूर्ण होयगई फिर आगेगए जाना यह इन्द्रनीलमणि का द्वारा है शान्तिनाथ के चैत्यालयमें जाने की बुद्धि करी कुटिल हैं भाव जिनके आगे एक वचन बोलता मनुष्य देखा उसके केश पकड़े और कही तू हमारे आगे आगे चल शान्तिनाथ का मन्दिर दिखाय, जब वह अग्रगामी भया तब ये निराकुल भए श्री शान्तिनाथ के मन्दिर जाय पहुंचे पुष्पांजलि चढाय जय जय शब्द कीए स्फटिक के थम्भों के ऊपर बड़ा विस्तार देखा सो आश्चर्य को प्राप्तभए मनमें विचारते भए जैसे चक्रवर्ती के मन्दिर में जिनमन्दिर होय तैसे हैं अंगद पहिलेही वाहनादिक तज भीतर गया ललाटपर दोनों हाथ धर नमस्कार कर तीन प्रदक्षिणा देय स्तोत्र पाठ करता भया सेना लारथी सो बाहिरले चौक में छाड़ी कैसा है अंगद फूल रहे हैं नेत्र जिस-के रत्नों के चित्राम से मण्डल लिखा सोलह स्वप्ने का भाव देख कर नमस्कार क्रिया मण्डिप की आदि भीति में वह धीर भगवान को नमस्कार कर शातिनाथ के मन्दिर में गया अति हर्षका भरा भगवानको बन्दना करता भया फिर देखे तो सन्मुख रावण पद्मासन धरे तिष्ठे है इन्द्र नीलमणि की किरणों के समूह समान है प्रभा जिसकी भगवान् के सन्मुख कैसा बैठा है जैसे सूर्य के सन्मुख राहु बैठा होय विद्या को

ध्यावे जैसे भरत जिन दीक्षा को ध्यावे सो रावण को अंगद कहता भया हे रावण कहो अब तेरी क्या बात तोसे ऐसी करूं जैसी यम न करे तैंने कहा पाखंड रोपा भगवान के सन्मुख यह पाखंड कहां धिक्कार तुझे पाप कर्मीको बृथा शुभक्रिया का आरंभ किया है ऐसा कहकर उसको उत्तरासन उतार' और इसकी राणीयोंको इसके आगे कूटता भया कठोर वचन कहता भया और रावणके पास पुष्पपड़े थे सो उठाय लीये और स्वर्ण के कमलोंसे भगवानकी पूजाकरी हाथमेंसे स्फटिककी माला छीन लई सो मणियां बिखर गई फिर मणियें चुन माला परोय रावण के हाथ में दई फिर छिनाय लई फिर परोय गले में डाली फिर मस्तक पर मेली फिर रावण का राजलोक मोई भया,कमलों का वन उसमें ग्रीषम कर तप्तायमान जो बनको हाथी उसकी न्याई प्रवेश किया और निःशंक भया राजलोक में उपद्रव करताभया जैसे चंचल घोड़ा कूदता फिरे तैसे चपलता से परिभ्रमण किया काहू के कंठ में कपड़े का रस्सा बनाय बांधा और काहू के कण्ठ में उतरासन डार थंभ में बांध फिर छोड़ दई काहू को पकड़ अपने मनुष्यों से कही इसे बेच आवो उसने हंसकर कही पांच दीनारों को बेच आया इस भांति अनेक चेष्टा करी काहू के कानों में घुंघुरू घाले और केशों में कटिमेखला पहिराई काहू के मस्तक का चूड़ामणि उतार चरणों में पहिराया और काहूको परस्पर केशों से बांधी और काहू के केशों में शब्द करते मोर बैठाये इस भांति जैसे सांड़ गायों के समूह में प्रवेश करे और तिनको व्याकुल करे तैसे रावण के समीप सब राज लोकों को क्लेश उपजाया और अंगद क्रोधसे रावण को कहता भया, हे अधम राक्षस तैंने कपट कर सीता हरी अब हम तेरे देखते तेरी समस्त स्त्रियों को हरे हैं तो में शक्ति होय तो यत्न से ऐसा कह कर इसके

आगे मन्दोदरी को पकड़ ल्याया जैसे मृगराज मृगी को पकड़ ल्यावे कंपाय मान हैं नेत्र जिसके चोटी पकड़ रावण के निकट खींचता भया जैसे भरत राज लक्ष्मी को खींचे और रावण को कहताभया देख यह पटरानी तेरे जीव से भी प्यारी मन्दोदरी गुणवन्ती उसे हम हर लेजांय हैं यह सुग्रीव के चमर ग्राहिणी चेरी होयगी सो मन्दोदरी आंखों से आंसू डारती भई और विलाप करने लगी रावण के पायन में प्रवेश करे कभी भुजों में प्रवेश करे और भरतार सों कहती भई हे नाथ मेरी रक्षा करो ऐसी दशा मेरी कहां न देखो हो तुम क्या और ही होय गए तुम रावण हो अक औरही हो अहो जैसी निरग्रन्थ मुनिकी वीतरागता होय तैसी तुम वीतरागता पकड़ी सो ऐसे दुख में यह अवस्था क्या धिक्कार तुम्हारे बलको जो इस पापी का सिर खडग सो न काटो तुम महा बलवान चांद सूर्य समान पुरुषोंका पराभव न सहो सो ऐसे रंक का कैसे सहो हे लंकेश्वर ध्यान में चित्त लगाया न काहूकी सुनो न देखो अर्घ पर्यंकासन धर बैठें अहंकार तज दिया जैसा सुमेरु का शिखर अचल होय तैसे अचल होय तिष्ठे सर्व इन्द्रियों की क्रिया तजी विद्या के आराधन में तत्पर निश्चल शरीर महा धीर ऐसे तिष्ठे हो मानों काष्ठ के हो अथवा चित्राम के हो जैसे राम सीता को चिन्तवें तैसे तुम विद्या को चितवो हो स्थिरता से सुमेरु के तुल्य भए हो जब इस भान्ति मन्दोदरी रावण से कहती भई उसही समय बहुरूपिणी विद्यादशों दिशा में उद्योत करती जय जय कार शब्द उचारती रावण के समीप आय ठाडी रही, और कहती भई हे देव आज्ञा विषे उद्यमी मैं तुम को सिद्ध भई मुझे आदेश देवो एकचक्री अर्धचक्री को टार जो तुम्हारी आज्ञा से बिमुख होय उसे बश करूं इस लोक में तुम्हारी आज्ञाकारणी हूं हम सारिखों की यही रीती है

जो हम चक्रवर्तीयों से समर्थ नहीं जो तू कह तो सर्वदैत्यों को जीतूं देवों को वश करूं जो तोसे अप्रिय होय उसे वशीभूत करूं और विद्याधर तो मेरे तृण समान हैं यह विद्या के वचन सुन रावण योग पूर्ण से ज्योति का धारक उदार चेष्टा का धरण हारा शान्तिनाथ के चैत्यालय की प्रदक्षिणा करता भया उस ही समय अंगद मन्दोदरी को छोड आकाश गमन से राम के समीप आया कैसा है अंगद सूर्य्य समान है तेज जिसका ॥ ॥ इकहत्तरिमा पर्व सम्पूर्णम् ॥

अथानन्तर रावणकी अट्ठारह हजार स्त्री रावणके पास एक साथ सर्व ही रुदन करतीभई सुन्दर हैं दर्शन जिन के हे स्वामिन् सर्व विद्याधरों के अधीश तुम हमारे प्रभु सो तुम के होते सन्ते मूर्ख अंगद ने आयकर हमारा अपमान किया तुम परम तेजके धारक सूर्य्य समान सो ध्यानारूढ़थे और विद्याधर आज्ञा समान, सो तुम्हारे मूह अगिला छोहरा सुग्रीव का पुत्र पापी हम को उपद्रव करे, सुन कर तिनके वचन रावण सब की दिलासा करता भया और कहता भया हे प्रिये! वह पापी ऐसी चेष्टा करे है सो मृत्यु के पाश से बंधा है तुम दुख तजो जैसे सदा आनन्द रूप रहो हो उसी भान्ति रहो मैं सुग्रीव को निर्ग्रीव कहिए मस्तक रहित भूमि पर प्रभात ही करूंगा और वे दोनों भाई राम लक्ष्मण भूमिगोचरी कीट समान हैंतिन पर क्या कोप, ये दुष्टविद्याधर सब इन पै मेले भए हैं तिन का क्षय करूंगा, हे प्रिये मेरी भौंह टेढी करनेही में शत्रु विलाय जांय और अब तो बहुरूपणी महाविद्या सिद्धभई मोसे शत्रु कहां जीवें इस भांति सर्व स्त्रियों को महा धीर्य बंधाय मन में जानता भया मैं शत्रु हते भगवानके मंदिर से बाहिर निकसा नाना प्रकार के वादित्र वाजते भए गीत नृत्य होते भए रावण का अभिषेक भया कामदेव समान

है रूप जिसका स्वर्ण रत्नों के कलशों से स्त्री स्नान करावती भई कैसी हैं स्त्री कांति रूप चांदनीसे मंडित है शरीर जिनका चंद्रमा समान वदन और सुफेद मणियों के कलशों से स्नान करावें सो अद्भुत ज्योति भासती भई और कई एक स्त्री कमल समान कांति को धरें मानों सांझ फूलरही है और उगते सूर्य समान सुवर्ण के कलश तिनसे स्नान करावें सो मानों सांझ ही जल बरसे हैं और कई एक स्त्री हरित मणि के कलशो से स्नान करावती अतिहर्ष को भरी शोभे हैं मानों साक्षात् लक्ष्मी ही हैं कमल पत्र हैं कलशों के मुख और कैयक केलेके गोभ समान कोमल महासुगंध शरीर जिन पर भ्रमर गुंजार करे हें वे नानाप्रकारके सुगन्ध उबटना से रावणको नानाप्रकार के रत्नों कर जड़ित सिंहासन पर स्नान करावती भई सो रावण ने स्नान कर आभूषण पहिरे महा सावधान भावों कर पर्ण शांतिनाथ के मन्दिर में गया वहां अरहन्तदेव की पूजा कर स्तुति करताभया बारम्बार नमस्कार करता भया फिर भोजनशालामें आया चार प्रकारका उत्तम आहार किया अशन पान स्वाद्य खाद्य फिर भोजन कर विद्याकी परख निमित्त क्रीड़ा भूमि में गया वहां विद्यासे अनेक रूप किये नानाप्रकारके अद्भुत कर्म विद्याधरों से बनें सो बहुरूपिणी विद्यासे कीए अपने हाथकी घात कर भूकम्प किया राम के कटक में कपियोंको ऐसा भय उपजा मानो मृत्यु आई और रावणको मन्त्री कहते भए हे नाथ तुम टार राघवका जीतनहारा और नहीं राम महा योधा हैं और क्रोधवान होवें तब क्या कहना, सो उसके सन्मुख तुम हीं आवो और कोई रणमें रामके सन्मुख आवनेको समर्थ नहीं ॥

अथानन्तर रावणने बहुरूपिणी विद्या से मायामई कटक बनाया और आप उद्यान में जहां सीता

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिष्ठे वहां गया मन्त्रियों से मण्डित जैसे देवों से संयुक्त इन्द्र होय, सो सूर्य समान कांतिकर युक्त आवता भया तब उसको आवता देख विद्याधरी सीता सों कहती भई हे शुभे महा ज्योतिवन्त रावण पुष्पक विमान से उतर कर आया जैसे ग्रीषम ऋतु में सूर्य की किरण से आतापको पाता गजेन्द्र सरोवरी के ओर आवे तैसे कामरूप अग्नि से ताप रूप भया आवे है यह प्रमद नामा उद्यान पुष्पों की शोभा से शोभित जहां भ्रमर गुंजार करे हैं तब सीता बहुरूपिणी विद्याकर संयुक्त रावणको देख कर भयभीतभई मनमें विचारे है इसके बलका पार नहीं सो राम लक्ष्मण इसको धीरे धीरे जीतेंगे मैं मन्दभागिनी रामको अथवा लक्ष्मण को अथवा अपने भाई भामंडलको मत हना सुनूं यह विचार कर व्याकुल है चित्त जिसका कांपती चिन्ता रूप तिष्ठे है वहां रावण आया सो कहताभया हे देवी मैं पापी ने कपटकर तुझे हरा सो यह बात क्षत्री कुलमें उत्पन्न भए हैं जे धीर अति वीर तिनको सर्वथा उचित नहीं परन्तु कर्मकी गति ऐसी है मोहकर्म बलवान है और मैं पूर्व अनन्तवीर्य स्वामीके समीप व्रत लिया था कि जो परनारी मुझे न इच्छे उसे मैं न ग्रहूं उर्वशी रंभा अथवा और मनोहर होय तो भी मेरे प्रयोजन नहीं यह प्रतिज्ञा पालते हुए मैं तेरी कृपाही की अभिलाषा करी परन्तु बलात्कार रमी नहीं हे जगत विषे उत्तम सुन्दरी अब मेरी भुजों कर चलाए जे बाण तिनसे तेरे अवलम्बन रामलक्ष्मण भिदे ही जान और तू मेरे संग पुष्पक विमानमें बैठी आनन्दसे विहार कर सुमेरुके शिखर चैत्य वृक्ष अनेक वन उपवन नदी सरोवर अवलोकन करती विहारकर तब सीता दोनों हाथ कानोंपर धर गदगद वाणीसे दीन शब्द कहतीभई हे दशानन तू बडे कुल विषे उपजा है तो यह करियो जो कदाचित संग्राममें तेरे और मेरे

वल्लभके शस्त्र प्रहारहोय तो पहिले यह संदेशा कहे बगैर मेरे कंथको मत हतियोंयह कहियो हे पद्म भामंडल की बहिन ने तुमको यह कहा है जो तुम्हारे वियोगसे महाशोक के भारकर महा दुःखी हूं मेरे प्राण तुम्हारे जीवे ही तकहैं मेरी दशा यह भई है जैसे पवनकी हती दीपककी शिखा हे राजर्षि दशरथ के पुत्र जनककी पुत्री ने तुमको बारम्बार स्तुतिकर यह कही है तुम्हारे दर्शनकी अभिलाषाकर यह प्राण टिक रहे हैं ऐसा कहकर मूर्छितहोय भूमिमें पडी जैसे माते हाथीसे भग्न करी कल्प वृक्ष की बेल गिर पडे यह अवस्था महासतीकी देख रावणका मन कोमल भया परम दुःखीभया यह चिन्ता करताभया अहो कर्मोंकेयोगकर इनका निःसंदेह स्नेह है इनके स्नेहकाच्चयनहीं और धिक्कार मोको मैं अति अयोग्य कार्य किया जो ऐसे स्नेहवान युगलका वियोग किया पापाचारी महानीच जन समान मैं निःकारण अपयशरूप मलसे लिप्तभया शुद्ध चन्द्रमासमान गोत्र हमारा मैं मलिन किया मेरे समान दुरात्मामेरे वंश में न भया ऐसा कार्य काहूने न किया सो मैंने किया जे पुरुषोंमें इन्द्र हैं वे नारीको तुच्छ गिने हैं यह स्त्री साक्षात विषफल तुल्य है क्लेशकी उत्पत्तिका स्थानक सर्पके मस्तककी मणि समान और महा मोहका कारण प्रथमतो स्त्री मात्रही निषिद्ध हैं और पर स्त्रीकी क्या बात सर्वथा त्याज्यही हैं पर स्त्री नदी समान कुटिल महा भयंकर धर्म अर्थ की नाश करणहारी सदा सन्तों को त्याज्यही हैं मैं महा पापकी खान अब तक यह सीता मुझे देवांगनासे भी अति प्रिय भासती थी सो अब विषके कुम्भ तुल्य भासे है यह तो केवल राम अनुरागिनी है अबलग यह न इच्छती थी परन्तु मेरे अभिलाषा थी अब जीर्ण तृणवत भासे है यहतो केवल रामसे तन्मय है मोसे कदाचित न मिले मेरा भाई महा पण्डित

विभीषण सब जानताथा सो मुझे बहुत समझाया मेरा मन विकारको प्राप्त भया सो न मानी उससे द्वेष किया जब विभीषणके वचनों से मैत्रीभाव करता तो नीके था अब महा युद्ध भया अनेक हतेगए अब कैसी मित्रता यह मित्रता सुभटोंको योग्य नहीं और युद्ध करके फिर दया पालनी यह बने नहीं अहो मैं सामान्य मनुष्य की न्याईं संकट में पड़ा हूं जो कदाचित् जानकी रामपै पठावों तो लोग मुझे असमर्थ जानें और युद्ध करिये तो महा हिंसा होय कोई ऐसे हैं जिनके दया नहीं केवल क्रूरता रूप हैं वे भी काल क्षेपकरें हैं और कईएक दयावान हैं संसार कार्यसे रहित हैं वे सुखसे जीवें हैं मैं मानी युद्धाभिलाषी और कछू करुणाभाव नहीं सो हम सारिखे महा दुखी हैं और रामके सिंहवाहन और लक्ष्मण के गरुड़ वाहन विद्या सो इनकर महा उद्योत हैं सो इनको शस्त्र रहित करूं और जीवते पकड़ूं फिर बहुत धन दूं और सीता दूं तो मेरी बड़ी कीर्ति होय और मुझे पाप न होय यह न्याय है इसलिये यही करूं ऐसा मन में धार महा विभव संयुक्त रावण राजलोक में गया जैसे माता हाथी कमलों के वनमें जाय फिर अंगदने बहुत अनीति करी इस बात से अति क्रोध किया और लाल नेत्र होय आए रावण होंठ डसता वचन कहताभया वह पापी सुग्रीव नहीं दुर्ग्रीव है उसे निग्रीव कहिये मस्तकरहित करूंगा उसके पुत्र अंगद सहित चन्द्रहास षड्ग कर दोय टूक करूंगा और तमो मण्डल को लोग भामण्डल कहें हैं सो वह महा दुष्ट है उसे दृढ़ बंधन से बांध लोह के मुदगरों से कूट मारूंगा और हनूमान को तीक्ष्ण करोंत की धार से काठ के युगल में बान्ध विदराऊंगा वह महा अनीति है एक राम न्याय मार्गी है उसे छोडूंगा और समस्त अन्याय मार्गी हैं तिनको शस्त्रों से चूरडारूंगा ऐसा विचार कर रावण तिष्ठा । और उत्पात सैकड़ों होने लगे सूर्य का

मण्डल आयुध समान तीक्ष्ण दृष्टि पड़ा और पूर्णमासीका चन्द्रमा अस्त होय गया आसन पर भूकम्प भया, दशों दिशा कंपायमान भई उल्कापात भए शृगाली (गीदड़ी) विरसशब्द बोलती भई तुरंग नाड हिलाय विरस विरूप हींसतेभए, हाथी रूक्ष शब्द करतेभए सूण्ड से धरती कूटते भए, यक्षों की मूर्ति के अश्रुपात पड़े वृक्षमल से गिर पड़े सूर्य के सन्मुख काग कटुक शब्द करतेभए ढीले पक्ष किये महा व्याकुल भए. और सरोवर जलकर भरे थे वे शोषको प्राप्त भए और गिरियों के शिखर गिरपडे और रुधिरकी वर्षा भई थोडे ही दिनमें जानिए है लंकेश्वर की मृत्यु होय ऐसे अपशकुन और प्रकार नहीं जब पुण्यक्षीण होय तब इन्द्र भी न बचें पुरुष में पौरुष पुण्य के उदय कर होय है जो कछू प्राप्त होना होय सोई पाइये है हीन अधिक नहीं प्राणीयों के शूरवीरता सुकृत के बल कर है देखो रावण नीति शस्त्र के विषे प्रवीण समस्त लौकिक नीति रीति जाने जैन व्याकरण का पाठी महा गुणोंसे मंडित सो कर्मों से प्रेरा हुवा अनीति मार्ग को प्राप्त भया मूढ़ बुद्धि भया लोक में मरण उपरांत कोई दुःख नहीं सो इसको अत्यन्त गर्व कर विचार नहीं नक्षत्रोंके बलसे रहित और ग्रह सबही क्रूर आये सो यह अविवेकी रण क्षेत्रका अभिलाषी होताभया प्रताप के भंगका है भय जिसको और महा शूर वीरता के रससे युक्त यद्यपि अनेक शास्त्रों का अभ्यास किया है तथापि युक्त अयुक्त को न देखे. गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे मगधाधिपति रावण महा मानी अपने मनमें विचारे है सो सुन सुग्रीव भामण्डलादिक समस्त को जीत और कुम्भकरण इन्द्रजीत मेघनादको छुड़ाय लंकामें लाऊंगा फिर वानरवंशियोंका वंश और भामंडलका भूमंडल से पराभवकरूंगा और भूमिगोचरियोंको भूमिमें न रहने दूंगा और शुद्ध विद्याधरों को धरा में थापूंगा

तब तीनलोक के नाथ तीर्थंकर देव और चक्रायुध बलभद्र नारायण हम सारिषे विद्याधरों के कुलही में उपजेंगे ऐसा वृथा विचार करता भया हे मगधेश्वर जिस मनुष्यने जैसे संचित कर्म किए होंय तैसा ही फल भोगवे ऐसे न होय तो शास्त्रोंके पाठी कैसे भूलें शास्त्र हैं सो सूर्य समान हैं उसके प्रकाश होते अन्धकार कैसे रहे परन्तु जे घूघू समान मनुष्यहैं तिनको प्रकाश न होय ॥ इतिबहत्तरमां पर्वसंपूर्णम्

अथानन्तर दूजे दिन प्रभातही रावण महा देदीप्यमान स्थान मंडप में तिष्ठा सूर्य के उदय होते हुए सभामें कुबेर बरुण ईशान यम सोम समान जे बड़े २ राजा उन से सेवनीक जैसे देवोंसे मंडित इन्द्र विराजे तैसे राजावों से मंडित सिंहासनपर विराजा परम कांतिको धरे जैसे ग्रहोंसे युक्त चन्द्रमा सोहे अत्यन्त सुगन्ध मनोग्य बस्त्र पुष्पमाला और महा मनोहर गज मोतियों के हार तिनसे शोभे है उरस्थल जिसका महा सौभाग्य रूप सौम्यदर्शन सभा को देखकर चिंता करता भया जो भाई कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनाद यह नहीं दीखे हैं सो उन विना यह सभा सोहे नहीं और पुरुष कुमुदरूप बहुत हैं पर वे पुरुष कमल रूप नहीं सो यद्यपि रावण महा रूपवान सुन्दर बदन है और फूल रहेहैं नेत्र कमल जिसके महा मनोग्य तथापि पुत्र भाई की चिंता से कुमलाया बदन नजर आवता भया और महा क्रोध स्वरूप कुटिल हैं भृकुटी जिसकी मानोंक्रोधका भरा आशीविष सर्पही है महा भयंकर होंठ डसे महा विकराल स्वरूप मंत्री देखकर डरे आज ऐसा कौन से कोप है यह व्याकुलता भई तब हाथजोड़ सीसभूमि में लगाय राजामय उग्र शुक लोकाक्ष सारण इत्यादि धरतीकी ओर निरषते चलायमानहैं कुण्डल जिनके बिनती करते भए हे नाथ तुम्हारे निकटवर्ती योधा सबही यह प्रार्थना करे हैं प्रसन्न होवो और कैलाश के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिखर तुल्य ऊंचे महल जिनके मणियों की भीति मणियोंके झरोखा तिनमें तिष्ठती भ्रमररूप हैं नेत्र जिनके ऐसी सब राणियों साहित मंदोदरी सो इसे देखती भई कैसा देखा लाल हैं नेत्र जिसके प्रतापका भरा उसे देखकर मोहित भयाहै मन जिसका फिर रावण उठकर आयुधशालामें गया कैसी है आयुधशाला अनेक दिव्यशस्त्र और सामान्य शस्त्र तिनसे भरी अमोघबाण और चक्रादिक अमोघ रत्न कर भरी जैसे वज्रशाला में इन्द्रजाय जिससमय रावण आयुधशाला में गया उस समय अपसकुन भए प्रथम ही छींक भई सो शकुनशास्त्र में पूर्वदिशा को छींक होय तो मृत्यु और अग्नि कोण में शोक दक्षिण में हानि नैऋतमें शुभ पश्चिममें मिष्ट आहार वायुकोणमें सर्वसंपदा उत्तरविषेकलह ईशानविषेधनागम आकाश विषे सर्व संहार पाताल विषे सर्व संपदा ये दशों दिशा विषे छींकके फल कहे सो रावणको मृतुकी छींक भई फिर आगे मार्ग रोके महा नाग निरखा और हा शब्द ही शब्द धिक शब्द कहां जाय है यह वचन होते भए और पवनकर छत्रके वैडूर्य मणि का दण्डभग्न भया और उतरासन गिर पड़ा काग दाहिनाबोला इत्यादि और भी अपशकुनभए वे युद्ध में निवारते भए वचनकर कर्मकर निवारते भए जे नाना प्रकार के शकुन शास्त्र विषे प्रवीण पुरुषथे वे अत्यन्त आकुल भए और मंदोदरी शुकसारण इत्यादि बडे बडे मंत्रियों से कहती भई तुम स्वामी को कल्याणकी बात क्यों न कहो हो अब तक क्या अपनी और उनकी चेष्टा न देखी कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनाद से बंधनमें आए वे लोकपाल समान महा तेजके धारक अद्भुत कार्यके करणहारे तब नमस्कार कर मंत्री मंदोदरी से कहते भए हे स्वामिनी रावण महामानी यमराजसा क्रूर आपही आप प्रधानहै ऐसा इस लोकमें कोई नहीं जिसके वचन रावण माने

For Private and Personal Use Only

जो कुछ होनहारहै उसे प्रमाण बुद्धि उपजे है बुद्धि कर्मानुसारणी है सो इंद्रादिककर तथा देवोंके समूह कर और भांति न होय सम्पूर्ण न्यायशास्त्र और धर्म शास्त्र तुम्हारा पति सब जाने है परन्तु मोह कर उन्मत्तभयाहै हम बहुत प्रकार कहा सो काहू प्रकार माने नहीं जो हठ पकड़ाहै सो छाड़े नहीं जैसे वर्षाकालके समागम विषे महा प्रवाहकर संयुक्त जो नदी उसका तिरना कठिनहै तैसे कर्मोंका प्रेरा जो जीव उसका सम्बोधना कठिन है यद्यपि स्वामीका स्वभाव उसका दुर्निवारहै तथापि तुम्हारा कहा करे तो करे सो तुम हितकी बात कहो इसमें दोष नहीं यह मंत्रियोंने कही तब पटराणी साक्षात लक्ष्मीसमान निर्मल है चित्त जिसका सो कम्पायमान पतिके समीप जायबेको उद्यमी भई महा निर्मल जल समान वस्त्र पहिरे जैसे रति कामके समीप जाय तैसे चली सिरपर छत्र फिरे है अनेक सहेली चमर ढारे हैं जैसे अनेक देवियोंकर युक्त इन्द्राणी इन्द्रपै जाय तैसे यह सुन्दरबदनकी धरणहारी पतिपै गई निश्वास नाखती पांय डिगते शिथिलहोय गई कटि मेखला जिसकी भरतारके कार्य विषे सावधान अनुराग की भरी उसे स्नेहकी दृष्टिकर देखती भई आपका चित्त शस्त्रोंमें और बक्तरमें तिनको आदरसे स्पर्शै है सो मन्दोदरीसे कहतेभए हे मनोहरे हंसनी समान चालकी चलनहारी हे देवी ऐसा क्या प्रयोजन है जो तुम शीघ्रतासे आवोहो हे प्रिय मेरा मन काहेको हरो हो जैसे स्वप्न विषे निधान तब वह पतिव्रता पूर्ण चन्द्रमासमान है बदन जिसका फूले कमलसे नेत्र स्वतः स्वभाव उत्तम चेष्टाकी धरणहारी मनोहर जे कटाक्ष वेई भए बाण सो पतिकी ओर चलावनहारी, महा विचक्षण मदनका निवासहै अंग जिस का महामधुर शब्दकी बोलनहारी स्वर्णके कुम्भसमान हैं स्तन जिसके तिनके भारकर नयगया है उदर

जिसका दाडिमके बीज समान दांत मूंगासमान लालअधर अत्यन्त सुकुमार अतिसुन्दरी भरतार की कृपा भूमि सो नाथको प्रणामकर कहती भई हे देव मुझे भर्तार की भीख देवो आप महादयावन्त धर्मात्माओंसे अधिक स्नेहवन्त मैं तुम्हारे वियोगरूप नदी विषे डूबूंहूं सो महाराज मुझे निकासो कैसी है नदी दुःखरूप जलकी भरी संकल्प विकल्परूप लहरकर पूर्ण है, हेमहाबुद्धे कुटुम्बरूप आकाशविषेसूर्यसमान प्रकाशके कर्ता एक मेरी बिनती सुनों तुम्हारा कुलरूप कमलोंका वन महा विस्तीर्ण प्रलय हुआ चाहैह सो क्यों न राखो हे प्रभो तुम मुझे पटराणी का पद दिया सो मेरे कठोर बचनोंकी क्षमा करो जे अपनेहितू हैं तिनका बचन औषध समान ग्राह्यहै परिणाम सुखदाई विरोध रहित स्वभावरूप आनन्दकारी है मैं यह कहूं हूं तुम काहेको संदेहकी तुला चढ़ो हो यह तुला चढिवे की नहीं काहेको आप संताप करो हो और हम सब को संतापरूप करो हो अबभी क्या गया तुम्हारा सब राज तुम सकल पृथिवी के स्वामी और तुम्हारे भाई पुत्रों को बुलाय लेहु तुम अपना चित्त कुमार्ग से निवारो अपना मन वश करो तुम्हारा मनोरथ अत्यन्त अकार्य विषे प्रवरता है सो इंद्रिय रूप तरल तुरंगों को विवेक रूप दृढ़ लगामकर वश करो इंद्रियों के अर्थ कुमार्ग विषे मनको कौन प्राप्त करे तुम अपवाद का देन हारा जो उद्यम उसविषे कहा प्रवर्तो जैसे अष्टापद अपनी छाया कूपविषे देख क्रोध कर कूप विषे पड़े तैसे तुम आप ही क्लेश उपजाय आपदामें पड़ो हो, यह क्लेश का कारणजो अपयशरूप वृक्ष उसे तज कर सुख से तिष्ठो केलि के थंभ समान असार यह विषय उसे कहां चाहो हो यह तुम्हारा कुल समुद्रसमान गंभीर प्रशंसा योग्य उसे सोभित करो यह भूमि गोचरीकी स्त्री बड़े कुलवन्तों को सिरवायु समान है उसे तजो हेस्वामी जे सामंत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सामंत सों युद्ध करे हैं वे मन विषे यह निश्चय करे हैं हम मरेंगे अथवा उनको मारेंगे हे नाथ तुम कौन अर्थ मरो हो पराई नारीके नारके अर्थक्यामरणा इस मरिणे में यशनहीं और उनको मारो तुम्हारीजीत होय तोभी यश नहीं क्षत्री मरे हैं यश के अर्थ इसलिये सीता सम्बन्धी हठ को छोड़ो और जो बड़ेबड़े व्रत हैं तिन की महिमा तो क्या कहनी एक यह परदारा परित्याग ही पुरुष के होय तो दोनों जन्म सुधरें शीलवन्त पुरुष भवसागर तिरें जो सर्वथा स्त्री का त्याग करेंसोतो अतिश्रेष्ठही हैं काजल समान कालिमाकी उपजावन हारी यह परनारी तिनविषे जे लोलुपी उनविषे मेरुसमान गुण होंय तो भी तृण समान लघु होय जांय जो चक्रवर्ती का पुत्र होय और देव जिसकी पक्षहोय और पर स्त्री के संगरूप कीचविषेडूबे तो महा अपयशको प्राप्त होय जो मूढमति परस्त्री से रति करे हैसो पापी आशीविष भुजंगनी से रमे है, तुम्हारा कुल अत्यन्त निर्मल सोअपयशकर मलिन मतकरो, दुर्बुद्धितजो जेमहा बलवान्थे, औरदूसरोंको निर्बलजानते थे अर्ककीर्ति अशन घोषादिक अनेकनाशको प्राप्त हुए सोहे सुमुख तुम कहा नसुने ये बचन मन्दोदरी के सुनरावण कमल नयन कारी घटा समान है वर्णजिसका मलियागिरचन्दन कर लिप्त मन्दोदरीसे कहता भया हे कांते तू काहे को कायर भई मैं अर्ककीर्ति नहीं जो जय कुमार से हारा और मैं अशनघोष नहीं जो अमिततेज से हारा और और भी नहीं मैं दशमुख हूं तू काहेको कायरताकी बातकहेहै मैं शत्रुरूपवृक्षोंके समूहको दावानल रूपहूं सीता कदाचित् नदूं, हे मन्दमानसे तू भयमत करे, इस कथा कर तुझे क्या, तोको सीता की रक्षा सौंपी है सो रक्षा भली भांति कर और जो रक्षा करिवे को समर्थ नहींतो शीघ्र मोहि सौंप देवो, तब मन्दोदरी कहती भई तुम उससे रति सुख वांछो हो इसलिये यह कहो हो मोहि सौंप देवो सोयहनिर्लज्जता की बात

For Private and Personal Use Only

कुलवन्तों को उचित नहीं. फिर कहती भई तुमने सीता का क्या महात्म्य देखा जो उसे बाम्बार बांछो हो वह ऐसी गुणवन्ती नहीं ज्ञाता नहीं, रूपवंतियों का तिलक नहीं, कलाविषे प्रवीण नहीं, मनमोहनी नहीं पतिके छांदे चलने वारी नहीं, उस सहित रतिविषे बुद्धि करो हो सो हे कंत यह क्या बार्ता अपनी लघुता होय है सो तुम नहीं जानो हो मैं अपने मुख अपनी प्रशंसा क्या करूं अपने मुख अपने गुण कहे गुणोंकी गौणता होय है. और पराए मुख सुने प्रशंसा होय है, इसलिये मैं क्या कहूं तुम सब नीके जानो हो विचारी सीता कहां लक्ष्मी भी मेरे तुल्य नहीं इसलिये सीता की अभिलाषा तजो मेरा निरादर कर तुम भूमिगोचरणी को इच्छो हो सो मन्दमति हो जैसे बालबुद्धि वैडूर्य मणि को तज और कांच को इच्छे उसका कछू दिव्यरूप नहीं तुम्हारे मन में क्या रुचोयह ग्राम्यजनको नारी समान अल्प मति उसकी क्या अभिलाषा और मुझे आज्ञा देवो सोई रूपधरूं तुम्हारे चितकी हरणहारी मैं लक्ष्मीका रूपधरूं और आज्ञा करो तो शची इन्द्राणीका रूपधरूं कहो तो रतिका रूपधरूं हे देव तुम इच्छा करो सोई रूपकरूं यह वार्ता मंदोदरीकी सुन रावणने नीचा मुख किया और लज्जावान भया फिर मंदोदरी कहती भई तुम परस्त्री आसक्त होय अपनी आत्मा लघु किया विषय रूप आमिष को आसक्ती है जिसके सो पापका भाजन है धिक्कार है ऐसी तुद्र चेष्टा को यह वचन सुन रावण मंदोदरी से कहता भया हे चन्द्रवदनी कमल लोचनी तुम यह कही जो कहो जैसा रूप फिर धरूं सो औरोंके रूप से तुम्हारा रूप क्या घटती है तुम्हारा स्वतः स्भावही रूप मुझे अति वल्लभ है अहो उत्तम मेरे और स्त्रियों कर कहां तब हर्षित चित्त होय कहती भई हे देव सूर्य को दीपका उद्योत कहां दिखाइये, मै जो हितके वचन आप को कहे सो औरोंको पूछ देखो मैं स्त्री हूं मेरेमें ऐसी बुद्धि नहीं शास्त्र मे यह कही है जो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धनी सबही नय जाने हैं परन्तु दैव योग थकी प्रमादरूपभया होय तो जे हितु हैं वे समझावें जैसे विष्णुकुमार स्वामी को विक्रियाऋद्धि का विस्मरण भया तो औरों के कहे कर जाना, यह पुरुष यह स्त्री ऐसा विकल्प मन्द बुद्धियोंके होयहै जे बुद्धिमान् हैं वे हितकारी वचन सबही का मानलेय. आपका कृपाभाव मो ऊपर है तो मैं कहूं हूं तुम पर स्त्री का प्रेम तजो मैं जानकी को लेकर राम पै जाऊं और राम को तुम्हारे पास ल्याऊं, और कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनाद को लाऊं अनेक जीवों की हिंसा कर क्या ऐसे वचन मन्दोदरी ने कहे तबरावण अतिक्रोधकर कहताभया शीघ्रही जावो जावो जहांतेरा मुख न देखूं तहां जावो अहो तू आप को वृथा पंडित माने है आपकी ऊंचता तज परपक्ष की प्रशंसा में प्रवरती तू दीनचित्त है योधावों की माता तेरे इन्द्रजीत मेघनाद कैसे पुत्र और मेरी पटराणी राजामय की पुत्री तोमें एती कायरता कहांसे आई ऐसाकहा तबमन्दोदरी बोली हेपतिसुनो जो ज्ञानियोंके मुखबलभद्र नारायणप्रतिनारायणका जन्मसुनिये है पहिला बलभद्र विजयनारायण त्रिपृष्ठ प्रतिनारायण अश्वग्रीव, दूजा बलभद्र अचल नारायण द्विपृष्ठ प्रतिहरि तारक इसभांति अबतक सात बलभद्र नारायण होय चुके सो इनके शत्रु प्रतिनारायण इन्हों ने हते अब तुम्हारे समय यह बलभद्र नारायण भए हैं और तुम प्रतिवासुदेव हो आगे प्रतिवासुदेव हठकर हतेगए तैसे तुम नाश को इच्छो हो जे बुद्धिमान् हैं तिनको यही कार्य करणा जो या लोक परलोक में सुखहोय और दुःख के अंकुरे की उत्पति न होयसो करनी यहजीव चिरकाल विषय से तृप्त न भया तीन लोक में ऐसा कौन है जो विषयों से तृप्त होय तुम पाप कर मोहित भए हो सो वृथा है और उचित तो यह है तुमने बहुतकाल भोग किए अब मुनिव्रतधरो अथवा श्रावगके व्रतधर दुखों का नाश करो अणुव्रत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूप खड्गकर दीप्त है अंग जिसका नियम रूप छत्रकर शोभित सम्यकदर्शनरूप बक्तर पहिरे शील रूप ध्वजा कर शोभित अनित्यादि बारह भावना अथवा मैं भावना आदि चारतेई चन्दन तिनर चर्चित है अंग जिसका और ज्ञानरूप धनुषको धरे बशकिया है इंद्रियों का बल जिसने, शुभध्यान और प्रताप कर युक्त मर्यादा रूप अंकुशकर संयुक्त निश्चलरूप हाथीपर चढ़ा जिनभक्तिकी है महाभक्ति जिसक दुर्गतिरूप कुनदी सो महा कुटिल परमरूप है वेग जिसका अतिदुःसह सो पंडितों कर तिरिये है, उस तिरकर सुखी होवो और हिमवान् सुमेरु पर्वत में जिनालय को पूजते संते मेरे सहित ढाई द्वीप में विहार कर अष्टादश सहस्र स्त्रियों के हस्त कमल पल्लव उनकर लडाया संता सुमेरु पर्वत के बन विषे क्रीडा कर, और गंगाकेतट पर क्रीडाकर और और भी मनवांछित प्रदेशों में रमणीक क्षेत्रों में हे नरेन्द्र सुख से विहार कर, इस युद्ध कर कछू प्रयोजन नहीं प्रसन्न होवो मेरा वचन मान कैसा है मेरा वचन, सर्वथा सुख का कारण है यह लोकापवाद मतकरावो अपयशरूपसमुद्रमें काहेको डूबो हो यह अपवाद विषतुल्य महानिन्द्य परम अनर्थ का कारण भला नहीं दुर्जन लोक सहज ही परनिन्दा करें सो ऐसी बात सुनकर तो करेहीं करें. इसभांति के शुभ वचन कह यह महासती हाथ जोड़ पति का परम हित बांछित पतिके पायन पड़ी तब रावण मन्दोदरी को उठाय कर कहता भया तू निःकारण क्यों भय को प्राप्त भई है सुन्दरवदनी मुझ से अधिक इस संसार में कोई नहीं. तू स्त्रीपर्याय के स्वभाव से बृथा काहे को भय करे है तैंने कही जो यह बलदेव नारायण हैं सो नाम नारायण और नामबलदेव भया तो क्या, नामभएकार्य की सिद्धिनहीं, नाम नाहरभया तो क्या नाहरके पराक्रमभए नाहर होय कोई मनुष्य

For Private and Personal Use Only

सिद्ध नाम कहाया तो क्या सिद्ध भया, हे कांते तू कहा कायरता की वार्ता करे रथनुपुर का राजा इन्द्र कहावता सो क्या इन्द्र भया जैसे यहसो नारायण नहीं इस भांति रावण प्रतिनारायण ऐसे प्रबल वचन स्त्री को कह महा प्रतापी क्रीड़ाभवन में मन्दोदरी सहित गया जैसे इन्द्र इन्द्राणीसहित क्रीड़ागृहमें जाय सांझ के समयय सांझ फूली. सूर्य अस्त समय किरण संकोचने लगा जैसे संयमी कषायों को संकोचे सूर्य आसक्त होय अस्तको प्राप्त भया कमल मुद्रित भए चकवा चकवी वियोग के भय कर दीन वचन रटते भए मानो सूर्य को बुलावे हैं और सूर्यके अस्त होयवेकर ग्रह नक्षत्रोंकी सेना आकाश में विस्तरी मानों चन्द्रमाने पठाई रात्रि के समय रत्नदीपों का उद्योत भया दीपों की प्रभा कर लंका नगरी ऐसी शोभती भइ मानों सुमेरु की शिखाही है, कोई वल्लभा वल्लभ से मिलकर ऐसे कहतीभई एक रात्रितो तुम सहित व्यतीत करगे फिर देखए क्या होय और कोई एक प्रिया नाना प्रकारके पुष्पों की सुगंधता के मकरन्द कर उन्मत्त भई स्वामी के अंग में मानो महा कोमल पुष्पों की बृष्टि ही पड़ी कोई नारी कमल तुल्य हैं चरण जिसके और कठिन हैं कुच जिसके महा सुन्दरशरीर की धरणहारी सुन्दरपति के समीप गई, और कोई सुन्दरी आभूषणोंको पहरती ऐसी शोभतीभई मानों स्वर्ण रत्नोंका कृतार्थ करे है॥ भावार्थ–उस समान ज्योति रत्न स्वर्णोंमें नहीं । रात्रि समय विद्याकर विद्याधरी मन वांछित क्रीड़ाकरते भए घर घर में भोग भूमिकी सी रचना होती भई महा सुन्दर गीत और वीण बांसुरियोंका शब्द तिन करलंका हर्षित भई मानो वचनालापही करे है और ताम्बूल सुगन्ध मल्यादिक भोग और स्त्री आदि उपभोग सो भोगोपभोगोंकर लोग देवोंकी न्याई रमतेभए और कैएक उन्मत्तभई स्त्रियोंको नाना प्रकार

रमावतेभये और कईयक नारी अपने वदन की प्रतिबिम्ब रत्नोंकी भीतिमें देखकर जानतीभई कि कोई दूजी स्त्री मन्दिरमें आईहै सो ईर्षा कर नील कमल से पति को ताडना करती भई, स्त्रियोंके मुख की सुगन्धता कर केसर सुगन्ध होय गया और कैयक योगकर नारियों के नेत्र लाल होय गए और कोईयक नायिका नवोढ़ा थी और प्रीतमने अमल खवाय उन्मत्तकरी सो मन्मथ कर्ममें प्रवीण प्रौढ़ाके भावको प्राप्तभई लज्जा रूप सखीको दूरकर उन्मत्ततारूप सखीने क्रीड़ा में अत्यन्त तत्परकरी और घूमें हैं नेत्र जिसके और स्खलितहैं वचन जिसके स्त्री पुरुषोंकी चेष्टा उन्मत्तताकर विकटरूप होतीभई नर नारियोंके अधर मूंगा समान शोभायमास दीखते भये, नर नारी मदोन्मत्त भये सो न कहनेकी बात कहते भये और न करनेका बात करतेभये लज्जा छुटगई चन्द्रमा के उदय कर मदनकी बृद्धि भई ऐसाही तो इन का योबन ऐसेहो सुन्दर मन्दिर और ऐसाही अमल का जोर सो सबही उन्मत्तता चेष्टाका कारण आय प्राप्त भया, ऐसी निशा में प्रभातमें होनहार है युद्ध जिनके सो संभोगका योग उत्सवरूप होता भया, और राक्षसोंका इन्द्र सुन्दरहै चेष्टा जिसकी सो समस्तही राजलोकको रमावताभया वारम्वार मन्दोदरी से स्नेह जनावता भया इसका वदन रूप चन्द्र निरखते रावणके लोचन तृप्त न भये मन्दोदरी रावणसे कहती भई में एक क्षणमात्र भी तुमको न तजूंगी हे मनोहर सदा तुम्हारे संगही रहूंगी जैसे बेल बाहुबल के सर्वअंगसे लगी तैसे रहूंगी आप युद्ध में विजय कर वेगही आवो, मैं रत्नोंको चूर्ण कर चौक पूरूंगी और तुम्हारे अर्घपाद्य करूंगी प्रभुकी महामख पूजा कराऊंगी प्रेमकर कायरहै चित्त जिसका अत्यन्तप्रेम के वचन कहते निशा व्यतीतभई और कूकड़ा बोले नक्षत्रोंकी ज्योती मिटी संध्यालालभई और भगवान

के चैत्यालयों में महा मनोहर गीत ध्वनि होती भई और सूर्य्य लोक का लोचन उदय को सन्मुख भया अपनी किरणों कर सर्व दिशा विषे उद्योत करता सन्ता प्रलय काल के अग्नि मण्डल समान है आकार जिसका प्रभात समय भया तब सब राणी पति को छोडती उदास भई, तब रावण ने सब को दिलासा करी गम्भीर वादित्र बाजे शंखों के शब्द भए, रावण की आज्ञा कर जे युद्ध विषे विचक्षण हैं महाभट महा अहंकार को धरते परम उद्धत अति हर्ष के भरे नगर से निकसे तुरंग हस्ती रथों पर चढे खड्ग धनूष गदा बरछी इत्यादि अनेक आयुधोंको धरे, जिन पर चमर ढुरते छत्र फिरते. महा शोभायमान देवों जैसे स्वरूप वान् महा प्रतापीविद्याधरों के अधिपति योधा शीघ्र कार्य के करण हारे श्रेष्ठ ऋद्धि के धारक युद्ध को उद्यमी भए, उस दिन नगर की स्त्री कमलनयनी करुणा भाव कर दुख रूप होती भई, सो तिन को निरखे दुर्जन का चित भी दयाल होय, कोई यक सुभट घर से युद्ध को निकसा और स्त्री लार लगी आवें हैं, उसे कहता भया हे मुग्धे घर जावो हम सुख से जाय हैं और कोई एक स्त्री भरतार चले हैं तिन को पीछे से जाय कहतीभईहे कन्त तुम्हारा उत्तरासन लेवो तब पति सन्मुखहोय लेते भए कैसी हैमृगनयनीपतिकेमुख देखबे की है लालसा जिस के और कोई एक प्राणवल्लभा पति को दृष्टि से अगोचर होते संते सखियों सहित मूर्छा खायपडी. और कोई एक पति से पाछी आय मौन गह सेज पर पडी, मानों काठ की पूतली ही है और कोई यक शूरवीर श्रावक के व्रत का धारकपीठ पीछे अपनी स्त्री को देखताभया और आगे देवांगनाओं को देखताभया ॥ भावार्थ । जे सामन्त अणुव्रत के धारक हैंवेदेवलोक के अधिकारी हैं। और जे सामन्त पहिले पूर्ण मासी के चन्द्रमा समान सौम्यवदन थे वें युद्ध के आगमन विषे कालसमान क्रूरआकार होय गए सिर पर टोप धरे बक्तर पहिरे शस्त्र लीए तेज भासते भए ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथानन्तर चतुरंग सेना संयुक्त धनुष छत्रादिक कर पूर्ण मारीच महा तेजको धरे युद्ध का अभिलाषी आय प्राप्त भया फिर विमलचन्द्र आया महाधनुप धारी और सुनन्द आनन्द नन्द इत्यादि हजारों राजा आए सो विद्या कर निरमापित दिव्यरथ तिन पर चढे अग्नि कैसी प्रभा को धरे मानों अग्निकुमारदेव ही हैं कैयक तीक्ष्ण शस्त्रों कर सम्पूर्ण हिमवान पर्वत समान जे हाथी उनकर सब दिशावोंको आछादते हुए आए जैसे विजुरीसे संयुक्त मेघमाला आवे और कैयक श्रेष्ठ तुरंगों पर चढे पांचों हथियारों कर संयुक्त शीघ्रही ज्योतिष लोकको उलंघ आवतेभए नाना प्रकारके वडे बडे बादित्र और तुरंगोंका हींसना गजोंका गर्जना पयादों के शब्द योधायोंके सिंहनाद बन्दीजनोंके जय जय शब्द और गुणी जनों के गीत वीर रसके भरे इत्यादि औरभी अनेक शब्द भले भए धरती आकाश शब्दायमानभए जैसे प्रलय कालके मेघपटल होवे तैसे निकसे मनुष्य हाथी घोडे रथ पियादे परस्पर अत्यंत विभूति कर देदीप्यमान बडी भुजावों से बखतर पहिरे उतंग हैं उरस्थल जिनके विजयके अभिलाषी और पयादे खड्ग सम्हालें हैं महा चंचल आगे २ चले जाय हैं स्वामी के हर्ष उपजावनहारे तिनके समूहकर आकाश पृथ्वी और सर्व दिशा व्याप्त भई ऐसे उपाय करते भी इस जीवके पूर्व कर्मका जैसा उदय है तैसाही होयहै यह प्राणी अनेक चेष्टा करे है परन्तु अन्यथा न होय जैसा भावितव्य है तैसा ही होय है सूर्य्य भी और प्रकार करने समर्थ नहीं ॥ इति तिहत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥

अथानन्तर लंकेश्वर मन्दोदरीसे कहताभया हे प्रिये नजानिये फिर तुम्हारा दर्शन होय वा न होय तब मन्दोदरी कहती भई हे नाथ सदा वृद्धिको प्राप्त होवो शत्रुवोंको जीत शीघ्रही आय हमको देखोगे

For Private and Personal Use Only

और संग्रामसे जीत आवोगे ऐसा कहा और हजारां स्त्रियोंकर अवलोका संता राक्षसों का नाथ मंदिर से बाहिर गया महा विकटताको धरे विद्याकर निरमापा ऐंद्रीनामा रथ उसे देखताभया जिसके हजार हाथी जुरें मानों कारी घटाका मेघही है वे हाथी मदोन्मत्त झरे हैं मद जिनके मोतियोंकी माला तिन कर पूर्ण महा घंटाके नादकर युक्त ऐरावतसमान नानाप्रकारके रंगोंसे शोभित जिनका जीतना कठिन और विनयके धाम अत्यन्त गर्जनाकर शोभित ऐसे सोहते भए मानों कारी घटाके समूहही हैं मनोहर है प्रभा जिनकी ऐसे हाथियों के रथ चढा रावण सोहताभया भुजबन्ध कर शोभायमान हैं भुजा जिसकी मानों साक्षात् इन्द्रही है विस्तीर्ण हैं नेत्र जिसके अनुपमहै आकार जिसका और तजकर सकल लोकमें श्रेष्ठ १० हजार आप समान विद्याधर तिनके मंडलकर युक्तरणमें आया सोवे महा बलवानदेवों सारिखे अभिप्रायके वेत्ता रावणको आया देख सुग्रीव हनूमान क्रोधको प्राप्तभए और जब रावण चढा तब अत्यन्त अपशकुनभए भयानक शब्दभए और आकाश विषे गृध्र भ्रमतेभए आछादित कियाहै सूर्यका प्रकाश जिन्होंने सो ये क्षयके सूचक अपशकुनभए परंतु रावणके सुभट न मानतेभए युद्धको आएही और श्रीरामचंद्र अपनी सेना विषे तिष्ठते सो लोकोंसे पूछतेभए हे लोको इस नगरीके समीप यह कौन पर्वत है तब सुषेणादिक तो तत्कालही जवाब न देय सके और जांबूवादिक कहतेभए यह बहुरूपिणी विद्या से रचा पद्मनागनामा रथहै घनेयोंको मृत्युका कारण अंगदने नगरमें जायकर रावणको क्रोध उपजाया सो अब बहुरूपिणी विद्या सिद्धभई हमसे महाशत्रुता लिएहै सो तिनके वचन सुनकर लक्ष्मण सारथीसे कहताभया मेरा रथ शीघ्रही चलाय तब सारथीने रथ चलाया और जैसे समुद्र गाजे ऐसे वादित्र बाजे

वादित्रोंकेनाद सुनकर योधा विकटहै चेष्टा जिनकी लक्ष्मणके समीप आए कोई एक रामकेकटकका सुभट अपनी स्त्रीको कहताभया हे प्रिये शोकतज पीछे जावो मैं लंकेश्वरको जीत तुम्हारे समीप आऊंगा इस भांति गर्वकर प्रचण्ड जे योधा वे अपनी अपनी स्त्रियोंको धीर्य बंधाय अन्तःपुरसे निकसे परस्पर स्पर्धा करते वेगसे प्रेरे हैं वाहन रथादिक जिन्होंने ऐसे महायोधा शस्त्रके धारक युद्धको उद्यमीभए भूत-स्वननामा विद्याधरोंका अधिपति महाहाथियोंके रथ चढा निकसा गम्भीर है शब्द जिसका इस विधि और भी विद्याधरोंके अधिपति हर्ष सहित रामके सुभट क्रूरहैं आकार जिनके क्रोधायमान होय रावणके योधावोंसे जैसा समुद्रगाजे तैसे गाजते गंगाकी उतंग लहर समान उछलते युद्धके अभिलाषी भए रामलक्ष्मण डेरावोंसे निकसे कैसे हैं दोनों भाई पृथिवी में व्याप्त हैं अनेक यश जिनके क्रूर आकारको धरे सिंहोंके रथ चढ बषतर पहिरे महाबलवान उगते सूर्यसमान श्री राम शोभते भए और लक्ष्मण गरुडकी है ध्वजा जिसके और गरुडके रथ चढा कारी घटा समानहै रंग जिसका अपनी श्यामताकर श्यामकारी हैं दशोंदिशा जिसने मुकटको धरे कुण्डल पहिरे धनुष चढाय बखतर पहिरे बाण लिये जैसा सांझके समय अंजनगिरि सोहे तैसे शोभताभया। गौतमस्वामी कहे हैं। हे श्रेणिक बडे २ विद्याधर नाना प्रकार के वाहन और विमानोंपर चढे युद्ध करिवेको कटकसे निकसे जब श्रीराम चढे तब अनेक शुभशकुन आनंद के उपजावनहारे भए रामको चढा जान रावण शीघ्रही महा दावानल समान है आकार जिसका युद्धको उद्यमी भया दोनोंही कटकके योधा जे महासामंत तिनपर आकाशसे गंधर्व और अप्सरा पुष्पवृष्टि करती भई अंजनगिरिसे हाथी महावतों के प्रेरे मदोन्मत चले पियादों कर

पद्म पुराण ॥७६८॥

वेढ़े और सूर्यके रथ समान रथ चञ्चल हैं तुरंग जिनके सारथीयों कर युक्त जिन पर महा योधा चढ़े युद्ध को प्रवर्ते, और घोड़ों पर चढ़े सामन्त गम्भीर हैं नाद जिनके परम तेजको धरे गाजते भए और अश्व हींसते भए परम हर्षके भरे देदीप्य मान हैं आयुध जिनके और पयाद गर्वके भरे पृथिवी विषे उछलते भए खड्गखेट बरछी है हाथमें जिनके युद्धकी पृथिवी विषे प्रवेश करते भए परस्पर अस्पर्धा करे हैं दौड़े हैं हने हैं योधावोंमें परस्पर अनेक आयुधों कर तथा लाठी मूकी लोह यष्टियों कर युद्ध भया परस्पर केश ग्रहण भया खड्ग कर विदारा गया है शरीर जिनका कैयक बाणोंकर बींधे गये तथापि योधा युद्धको आगेही भए मारे हैं प्रहार करें हैं गाजेहैं घोड़े व्याकुल भये भ्रमें है कैयक आसन खाली होय गए असवार मारे गए मुष्टियुद्ध गदा युद्ध भया, कैयक बाणोंसे बहुत मारे गये कैयक खडग कर कैयक सेलोंकर घाव खाय फिर शत्रु को घायल करते भए कैयक मन बांछित भोगो कर इंद्रियोंको रमावते सो युद्ध विषे इंद्रियें इनको छोडती भईं जैसे कार्य परे कुमित्र तजे कैयक के आंतन के ढेर हो गये तथापि खेद न मानते भये शत्रुओं पर जाय पडे और शत्रु सहित आप प्राणान्त भये डसे हैं होठ जिन्होंनें जे राजकुमार देव कुमार सारिखे सुकुमार रत्नोंके महिलोंके शिखर विषे क्रीडा करते महा भोगी पुरुष स्त्रियोंके स्तनकर रमाये संते वे खडग चक्र कनक इत्यादि आयुधोंकर विदारे संते संग्रामकी भूमि में पडे विरूप आकार तिन के गृध पक्षी और स्याल भखेहैं और जैसे रंग महिल मे रंगकी भरी रामा नखों कर चिन्ह करती और निकट आवती तैसे स्यालनी नख दन्तों कर चिन्ह करे हैं और समीप आवें हैं फिर श्वासके प्रकाश कर जीवते जान वे डर जांय हैं जैसे डाकनी मंत्रवादीसे दूर जांय और सामंतों को जीवते जान पक्षिणी डर

कर उड़ जाती भई जैसे दुष्टनारी चलायमान हैं नेत्र जिसके पतिके समीपसे जाती रहे, जीवोंके शुभा शुभ प्रकृति का उदय युद्धविषे लखिये है दोनों बराबर और कोई की हार होय कोई की जीत होय और कबहूंक अल्प सेना का स्वामी महा सेनाके स्वामी को जीते और कोई एक सुकृत के सामर्थ से बहुतों को जीते और कोई बहुत भी पापके उदयसे हार जाय जिन जीवोंने पूर्व भवमें तप किया वे राज्य के अधिकारी होय विजयको पावें हैं और जिन्होंने तप न किया अथवा तप भंग किया तिनकी हार होय है, गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे श्रेणिक यह धर्म मर्म की रक्षा करैहै और दुर्जयको जीते है धर्मही बड़ा सहाई है बड़ा पक्ष धर्मका है धर्म सब ठौर रक्षा करे है घोड़ों कर युक्त रथ पर्वत समान हाथी पवन समान तुरंग असुर कुमार से पयादे इत्यादि सामग्री पूर्ण हैं परन्तु पूर्वपुण्य के उदय बिना कोई राखवे समर्थ नहीं एक पुण्याधिकारीही शत्रुवों को जीते है, इस भांति राम रावण के युद्धकी प्रवृत्त में योधावों कर योधा हते गए तिनकर रण खेत भर गया अवकाश नहीं आयुधों कर योधा उछले हैं परे हैं सो आकाश ऐसा दृष्टि पड़ता भया मानों उत्पात के बादलों कर मंडित है ॥

अथानन्तर मारीच चन्द्रनिकर बज्राक्ष शुकसारण और भी राक्षसोंके अधीश तिन्होंने रामका कटक दबाया तब हनूमान चन्द्रमारीच नील कुमुद भूत स्वन इत्यादि रामपक्ष के योधा तिन्होंने राक्षसोंकी सेना दबाई तब रावणके योधा कुन्द कुम्भनिकुम्भ विक्रम क्रमाण जंबूमाली काकबली सूर्यार मकरध्वज अशनि-रथ इत्यादि राक्षसोंके बड़े २ राजा शीघ्रही युद्धको उठे तब भूधर अचल सम्मेद निकाल कुटिल अंगद सुखेण कालचन्द्र उर्मितरंग इत्यादि बानरवंशी योधा तिनके सन्मुखभए उनही समान उस समय कोई सुभटप्रति पक्षी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुभट विनोदृष्टि न पड़ा भावार्थ-दोनोंपक्षके योधा परस्पर महायुद्धकरतेभए और अंजनीका पुत्र हाथियोंके रथ परचढ़कर रणमें क्रीड़ा करता भया जैसे कमलोंकर भरे सरोवर में महा गज क्रीड़ाकरे गौतम गणधर कहे हैं हे श्रेणिक उस हनूमान शूरबीर ने राक्षसों की बड़ी सेना चलायमान करी उसे रुचा जो किया तब राजा मय विद्याधर दैत्य बंशी मन्दोदरी का बाप क्रोधके प्रसंगकर लाल हैं नेत्र जिसके सो हनूमान के सन्मुख आया तब वह हनूमान कमल समान हैं नेत्र जिसके बाण बृष्टि करताभया सो मयका रथ चकचूर किया तब बह दूजे रथ चढ़कर युद्धको उद्यमी भया तब हनमान ने फिर रथ तोड़ डाला तब मय को विह्वलदेख रावणने बहुरूपिणी विद्या कर प्रज्वलितोत्तमरथ शीघ्रही भेजा सो राजा मय ने उस रथ में चढ़ कर हनुमान से युद्धकिया और हनूमान का रथ तोड़ा तब हनमान को दबा देख भामंडल मदद आया सो मयने बाण वर्षाकर भामंडल का भी रथ तोड़ा तब राजा सुग्रीव इनके मदद आए सो मयने उसक शस्त्र रहित किया और भूमि में डारा तब इनकी मदद विभीषण आया सो विभीषण के और मय के अत्यन्त युद्ध भया परस्पर बाण चले सो मयने विभीषण का बषतर तोड डारा सो अशोक बृक्ष के पुष्प समान लाल होय तैसी लाल रूप रुधिर की धारा विभीषणके पड़ी तब बानर बंशियों की सेना चलायमान भई और राम युद्ध को उद्यमी भए विद्यामई सिंहों के रथ चढे शीघ्रही मय पर आए और बानर बंशियों को कहते भए तुम भय मत करो रावण की सेना बिजुरी सहित कारी घटा समान उस में उगते सूर्य समान श्रीराम प्रवेश करते भए और पर सेनाका विध्वंस करनेको उद्यमी भए तब हनूमान भामंडल सुग्रीव विभीषण को धीर्य उपजा और बानरबंशियों की सेना युद्ध करनेको उद्यमी भई रामका बल पाय

For Private and Personal Use Only

रामके सेवकों का भय मिटा परस्पर दोनों सेनाके योधात्रों में शस्त्रों का प्रहार भया, सो देख देख देव आश्चर्यको प्राप्त भए और दोनों सेना में अंधकार होयगया प्रकाशरहित लोक दृष्टि न पड़े, श्रीराम राजा मयको बाणों कर अत्यन्त आछादते भए थोडे ही खेद कर मय को विह्वल किया जैसे इन्द्र चमरेन्द्र को करे तब राम के बाणों कर मयको विह्वल देख, रावण काल समान क्रोधकर राम पर धाया तब लक्ष्मण रामकी ओर रावण को आवता देख महातेज कर कहते भए हो विद्याधर तू किधर जाय है मैं तुझे आज देखा खड़ा रहो खड़ारहो हे रंक पापी चोर परस्त्रीरूप दीपकके पतंग अधमपुरुष दुराचारी आज मैं तोसों ऐसी करूं जैसी काल न करे, हे कुमानुष श्रीराघवदेव समस्त पृथिवीके पति तिन्होंने मुझे आज्ञाकरी है कि इस चोरको सजा देवो, तब दशमुख महाक्रोध कर लक्ष्मणसे कहता भया रे मूढ़ तैंने कहां लोकप्रसिद्ध मेरा प्रताप न सुना इस पृथिवीमें जे सुखकारी सारवस्तु हैं सो सब मेरी हैं मैं राजा पृथिवीपति जो उत्कृष्ट वस्तु सो मेरी, घंटा गज के कंठ में सोहे स्वानके न सोहे है तैसे योग्यवस्तु मेरे घर सोहे और के नहीं तू मनुष्यमात्र वृथा विलाप करे तेरी क्या शक्ति तू दीन मेरे समान नहीं मैं रंक से क्या युद्धकरूं तू अशुभ के उदयसे मोसे युद्ध किया चाहे है सो जीवने से उदास भया है मूवा चाहे है। तब लक्ष्मण बोले तू जैसा पृथिवीपति है तैसा मैं नीकेजानूं हूं आजतेरागाजनापूर्ण करूंगा जब ऐसा लक्ष्मणनेकहा तब रावणने अपने बाण लक्ष्मणपर चलाए, और लक्ष्मणने रावणपर चलाए, जैसेवर्षाकामेघ जलवृष्टिकर गिरिको आछादित करे तैसे बाणवृष्टिकर उसने उसको वेढाऔर उसने उसको वेढासो रावणकेबाणलक्ष्मणनेवज्रदंडकरबीचही तोड़ डारे आप तक आवने न दीए, बाणों के समूह छेदे भेदे तोडे फाडे चूरकर डारे, सो धरती आकाश बाण

खंडोंकर भस्मगए लक्ष्मण ने रावणको सामान्य शस्त्रों से विह्वल कीया तब रावणने जानी यह सामान्य शस्त्रों से जीता न जाय तब लक्ष्मण पर रावणने मेघबाण चलाया सो धरती आकाश जलरूप होय गए तब लक्ष्मणने पवनबाण चलाया क्षणमात्रमें मेघबाण विलयकीया, फिर दशमुखने अग्निबाण चलाया सो दशों दिशा प्रज्ज्वलित भई तब लक्ष्मणने वरुणशस्त्र चलाया सो एक निमिषमें अग्निबाण नाशको प्राप्तभया फिर लक्ष्मणने पापबाण चलाया सो धर्मबाणकर रावणने निवारा फिर लक्ष्मणने इंधनबाण चलाया सो रावणने अग्निबाण कर भस्मकिया फिर लक्ष्मणने तिमिरबाण चलाया सो अंधकार होय गया आकाश वृक्षों के समूहकर आच्छादित भया कैसे हैं वृक्ष आसारफलों कोवरसावें हैं आसारपुष्पों के पटल छाय गए तब रावणने सूर्य्यबाण कर तिमिरबाण निवारा और लक्ष्मणपर नागबाण चलाया अनेक नाग चले बिकराल हैं फण जिनके तब लक्ष्मणने गरुड़बाण कर नागबाण निवारा, गरुड़की पांखोंकर आकाश स्वर्ण की प्रभारूप प्रतिभासता भया, फिर राम के भाई ने रावण पर सर्पबाण चलाया प्रलयकाल के मेघ समान है शब्द जिसका और विषरूप अग्नि के कणोंकर महाविषम तब रावण ने मयूरबाण कर सर्प बाण निवारा और लक्ष्मण पर विघ्नबाण चलाया सो विघ्नबाण दुर्निवार उस का उपाय सिद्धिबाण सो लक्ष्मण को याद न आया तब वज्रदण्ड आदि अनेक शस्त्र चलाए रावण भी सामान्य शस्त्रों से युद्ध करता भया, दोनों योधावोंमें समान युद्ध भया जैसा त्रिपृष्ठ औरअश्वग्रीवके युद्ध भया था. तैसा लक्ष्मण रावण के भया जैसा पूर्वोपार्जित कर्म का उदय होय तैसा ही फल होय तैसी ही क्रिया करे जे महा क्रोध के वश हैं और जो कार्यआरंभा उसविषे उद्यमी हैं वे नर तीव्र शस्त्र को न गिनें और अग्नि को न गिनें सूर्य्य को न गिने वायु को न गिने ॥ इति चौहत्तरवां पर्व समपूर्णम् ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे भव्योत्तम दोनोंही सेना विषे तृषावंतों को शीतल मिष्टजल प्याइये है और क्षुधावन्तों को अमृत समान आहार दीजिए है और खेदवन्तोंको मलया गिरि चन्दन से छिडकिये है ताडवृक्ष के बीजने से पवन करिये है बरफके वारिसे छांटिये है तथा और भी उपचार अनेक कीजिए है अपना पराया कोई होवे सब के यत्न कीजिए हैं यही संग्रामकी रीतिहै दश दिन युद्ध करते भए दोनों ही महावीर अभंग चित्त रावण लक्ष्मण दोनों समान जैसा वह तैसा वह सो यक्ष गंधर्व किन्नर अप्सरा आश्चर्य को प्राप्त भए और दोनों का यश करते भए दोनों पर पुष्प वर्षा करी और एक चन्द्रवर्धन नामा विद्याधर उसकी आठ पुत्री सो आकाश विषे विमान में बैठी देखें तिनको कौतूहल से अप्सरा पूछती भई तुम देवायो सारिखी कौन हो तुम्हारी लक्षमण में अधिक भक्ति दीखे है और तुम सुन्दर सुकमार शरीर हो तब वे लज्या सहित कहती भई तुमको कौतूहल है तो सुनो जबसीता का स्वयम्बर हुआ तब हमारा पिता हम सहित वहां आया था, वहां लक्षमण को देख हम को देनी करी और हमारा भी मन लक्षमण में मोहित भया, सो अब यह संग्राम विषे वर्ते है न जानिए क्या होय यह मनुष्यों में चन्द्रमा समान प्राणनाथहै जो इसकी दशा सो हमारी ऐसे इनके मनोहर शब्द सुनकर लक्षमण ऊपर को चौंके, तब वे आठों ही कन्या इनके देखबेकर परम हर्षको प्राप्त भई और कहती भई हेनाथ सर्वथा तुम्हारा कार्य सिद्ध होवे तब लक्षमण को विघ्नबाण का उपाय सिद्धबाण याद आया, और प्रसन्न बदन भया सिद्धबाण चलाय विघ्नबाण विलय किया और आप महाप्रताप रूप युद्ध को उद्यमी भया जो जो शस्त्र रावण चलावे सो सो राम का बीर महा धीर शस्त्रों विषे प्रवीण छेद डारे, और आप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाणों के समूह कर सर्व दिशा पूर्ण करी जैसे मेघपटल कर पर्वत आच्छादित होय रावण बहुरूपिणी विद्या के बल कर रणक्रीडा करता भया लक्ष्मण ने रावण का एक सीस छेदा, तब दोय सीस भए दोय छेदे तब चार भए और दोय भुजा छेदी तबचार भई और चार छेदी तब आठभई इस भांति ज्यों ज्यों छेदी त्यों त्यों दुगुनी भई और सीस दुगुणे भये हजारों सिर और हजारों भुजा भई रावण के कर हाथी के सूंड समान भुज बन्धन कर शोभित और सिर मुकटों कर मंडित तिन कर रणक्षेत्र पूर्ण भया, मानो रावण रूप समुद्र महाभयंकर उसके हजारों सिर वेई भए ग्राह और हजारों भुजा वेईभईतरंग तिनकर बढ़ता भया और रावणरूप मेघ जिसके बाहुरूप विजुरी और प्रचण्डहै शब्द और सिर ही भए शिखर उन कर सोहता भया. रावण अकेला ही महासेना समान भया, अनेक मस्तक तिन के समूह जिन पर छत्र फिरें मानों यह विचार लक्ष्मणने इसे बहुरूप किया कि आगे में अकेले अनेकों से युद्ध किया, अब इस अकेले से क्या युद्ध करूं इसलिये याहि बहुशरीरकिया रावणप्रज्वलित बनसमान भासताभया, रत्नों के आभूषण और शस्त्रों की किरणों के समूह कर प्रदीप्त रावण लक्ष्मण को हजारों भुजों कर बाण शक्ति खड्ग बरछी सामान्य चक्र इत्यादि शस्त्रोंकी वर्षाकर आछादता भया सो सब बाण लक्ष्मणने छेदे और महाक्रोध रूप होय सूर्य समान तेज रूप बाणों कर रावणके आछादने को उद्यमी भया एक दोय तीन चार पांच छह दस बीस शत सहस्र दश सहस्र मायामई रावण के सिर लक्ष्मणने छेदे हजारों सिर हजारों भुजा भूमि में पडे सो रणभूमि उनकर आछादित भई ऐसी सोहे मानों सर्पों के फणों सहित कमलों के बन हैं, भुजों सहित सिर पडे वे उल्कापात से भासें जेते रावणके बहुरूपिणी विद्या कर सिर और भुज भए तेते सब

सुमित्राके पुत्र लक्ष्मण ने छेदे. जैसे महामुनि कर्मों के समूह को छेदें, रुधिर की धारा निरन्तर पड़ी तिनकर आकाश में मानों सांझ फूली, दोय भुजाका धारक लक्ष्मण उसने रावणकी असंख्यात भुजाविफल करी, कैसे हैं लक्ष्मण महा प्रभाव कर युक्त हैं रावण पसेव के समूह कर भरगया है अंग जिस का स्वास कर संयुक्त है मुख जिसका यद्यपि महाबलवान् था तथापि व्याकुलचित्त भया। गौतमस्वामी कहै हैं हे श्रेणिक बहुरूपिणी विद्याके बलकर रावणने महा भयंकर युद्ध किया, पर लक्ष्मणके आगे बहुरूपिणी विद्या का बल न चला तब रावण मायाचार तज सहज रूप होय क्रोधका भरा युद्ध करता भया अनेक दिव्यास्त्रों कर और सामान्य शस्त्रों कर युद्ध किया परन्तु वासुदेव को जीत न सका। तब प्रलय-काल के सूर्य समान है प्रभा जिसकी परपक्ष का क्षय करणहारा जो चक्ररत्न उसे चितारा केसा है चक्ररत्न अप्रमाण प्रभाके समूह को धरे मोतियोंकी झालरियोंकर मंडित महा देदीप्यमान दिव्य वज्रमई महा अद्भुत नाना प्रकार के रत्नों कर मंडित है अंग जिसका दिव्यमाला और सुगन्ध कर लिप्त अग्नि के समूह तुल्य धारावों के समूहकर महा प्रकाशवन्त वैडूर्य मणि के सहस्र आरे जिन कर युक्त जिस का दर्शन सहा न जाय, सदा हजार यक्ष जिसकी रक्षा करें महा क्रोध का भरा जैसा काल का मुख होय उस समान वह चक्र चितवते ही कर में आया, जिसकी ज्योति कर जोतिषदेवों की प्रभा मन्द होय गई और सूर्य की कांति ऐसा होय गई मानों चित्राम का सूर्य है और अप्सरा विश्वासु तुंवरु नारद इत्यादि गंधर्वों के भेद आकाश में रणका कौतुक देखते थे सो भयकर परे गए, और लक्ष्मण अत्यन्त धीर शत्रु को चक्र संयुक्त देख कहता भया, हे अधम नर इसे क्या लेरहा है जैसे कृपण कौडीको लेरहे

तेरी शक्ति है तो प्रहार कर ऐसा कहा तब वह महा क्रोधायमान होय दांतों कर डसे हैं होंठ जिसने लाल हैं नेत्र जिसके चक्रको फेर लक्ष्मण पर चलाया कैसा है चक्र मेघ मंडल समान है शब्द जिसका और महा शीघ्रता को लिये प्रलयकाल के सूर्य समान मनुष्यों को जीतव्य के संशय का कारण उसे सन्मुख आवता देख लक्ष्मण वज्रमई है मुख जिनका ऐसे बाणों कर चक्रके निवारिवेको उद्यमी भया और श्री राम वज्रावर्त धनुष चढ़ाय अमोघ बाणोंकर चक्रके निवारिवेको उद्यमी भए और हल मूशलनको भ्रमावते चक्रके सन्मुख भए और सुग्रीव गदाको फिराय चक्र के सन्मुख भए और भामंडल खड्ग को लेकर निवारिवेको उद्यमी भए और विभीषण त्रिशूल ले ठाढे भए और हनूमान उल्का मुद्गर लांगूल कनकादि लेकर उद्यमी भए और अंगद पारद नामा शस्त्र लेकर ठाढ़े भए और अंगदका भाई अंगकुठार लेकर महा तेज रूप खड़े और भी दूसरे श्रेष्ठ विद्याधर अनेक आयुधों कर युक्त सब एक होय कर जीवने को आशा तज चक्र के निवारिवे को उद्यमी भए परन्तु चक्रको निवार न सके कैसा है चक्र देवकरे हैं सेवा जिसकी उसने आयकर लक्ष्मणकी तीन प्रदक्षिणा देय अपना स्वरूप विनय रूप कर लक्ष्मण के कर में तिष्ठा, सुखदाई शान्त है आकार जिसका। यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिक से कहे है हे मगधाधिपति राम लक्ष्मणका महाऋद्धिको धरे यह महात्म्य तुझे संक्षेप से कहा कैसा है इनका महात्म्य जिसे सुने परम आश्चर्य उपजे और लोकमें श्रेष्ठ हैं कै एक के पुण्य के उदय कर परम विभूति होय है और कैएक पुण्यके क्षयकर नाश होय है जैसे सूर्य का अस्त होय है चन्द्रमा का उदय होय है तैसे लक्ष्मण के पुण्यका उदय जानना ॥

॥ इति पचहत्तरवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर लक्षमण के हाथ में महासुन्दर चक्ररत्न आया देख सुग्रीव भामंडलादि विद्याधरों के अधिपति अति हर्षित भए और परस्पर कहते भये आगे भगवान अनन्तवीर्य केवली ने आज्ञा करी थी जो लक्षमण आठवां वासुदेव है और राम आठवां बलदेव है सो यह महा ज्योति चक्रपाणि भया अति उत्तम शरीर का धारक इस के बलका कौन वर्णन करसके, और यह श्रीराम बलदेव जिसके रथको महा तेजवन्त सिंह चलावें जिसने राजामय को पकड़ा और हल मूसल महा रत्न देदीप्यमान जिसके करमें सोहें ये बलभद्र नारायण दोनों भाई पुरुषोत्तम प्रकट भये पुण्य के प्रभाव कर परमप्रेमके भरे लक्षमण के हाथमें सुदर्शन चक्रको देख राक्षसोंका अधिपति चित्तमें चितारे है कि भगवान अनन्तवीर्यने आज्ञाकरी थी सोई भई निश्चय सेती कर्मरूप पवन का प्रेरा यह समय आया, जिसका छत्र देख विद्याधर डरते और महासेना पर की भागजाती पर सेनाकी ध्वजा और छत्र मेरे प्रतापसे बहे बहे फिरते और हिमाचल विन्ध्याचल हैं स्तन जिसके समुद्र हैं वस्त्र जिसके ऐसी यह पृथिवी मेरी दासी समान आज्ञाकारिणी थी ऐसा मैं रावण सो रणमें भूमिगोचरियों ने जीता, यह अद्भुत बात है कष्टकी अवस्था आय प्राप्त भई, धिकार इस राज्य लक्षमी को कुलटा स्त्री समान है चेष्टा जिसकी पूज्य पुरुष इस पापनी को तत्तकाल तजें यह इन्द्रीयों के भोग इन्द्रायण के फल समान इनका परिपाक विरस है अनन्त दुःख सम्बन्ध के कारण साधुवों कर निन्द्यहैं त्याज्य हैं पृथिवी में उत्तम पुरुष भरत चक्रवर्त्यादि भये वे धन्य हैं जिन्होंने निः कंटक छह खंड पृथिवीका राज्य किया और विष के मिले अन्नकी न्याईं राज्यको तज जिनेन्द्रव्रत धारे रत्नत्रय को आराधन कर परम पद को प्राप्त भए मैं रंक विषियाभिलाषी मोह बलवान ने मुझे

जीता यह मोह संसार भ्रमणका कारण धिक्कार मुझे जो मोह के वश हाय ऐसी चेष्टा करी रावणतो यह चिंतवनकरे है और आयाहै चक्र जिसके ऐसा जो लक्ष्मण महा तेजका धारक सो विभीषणकी ओर निरख रावण से कहता भया हेविद्याधर अबभी कछू न गया है जानकीको लाय श्री रामदेव को सौंपदे और यह बचन कह कि श्रीरामके प्रसादकर जीवुं हूं हमको तेरा कछु चाहिये नहीं तेरी राज्यलक्ष्मी तेरेही रहो तब रावण मंदहास्यकर कहताभया हे रंक तेरेवृथा गर्व उपजाहै अबारही अपने पराक्रम तुझे दिखावूंहूं हे अधम नर मैं तुझे जो अवस्था दिखाऊं सो भोग, मैं रावण पृथ्वीपति विद्याधर तू भूमिगोचरी रंक,तब लक्ष्मण बोले बहुत कहिनेसे क्या मैं नारायण सर्वथा तेरा मारणहारा उपजा, तब रावणने कही इच्छा मात्रही नारायण हूजिये है तो जो तू चाहे सो क्यों न हो इन्द्रहो, तू कुपुत्र पिताने देशसे बाहिर किया महा दुखी दलिद्री बनचारी भिखारी निर्लज्ज तेरी बासुदेव पदवी हमने जानी तेरेमनमें मत्सर है सो मैं तेरे मनोरथ भंग करूंगा यह घेघलीसमान चक्रहै जिससे गर्वा है सो रंकोंकी यही रीतिहै खलिका टूकपाय मनमें उत्सव करे बहुत कहिवेसे क्या ये पापी विद्याधर तुझसे मिले हैं तिन सहित और इस चक्रसहित बाहन सहित तेरा नाशकर तुझे पातालको प्राप्त करूंगा,ये रावणके बचन सुनकर लक्ष्मणने कोपकर चक्रको भ्रमाय रावणपर चलाया वज्रपातके शब्दसमान भयंकरहै शब्द जिसका और प्रलयकालके सूर्यसमान तेजको धरे चक्र रावणपर आया तब रावण बाणोंसे चक्रके निवारबेको उद्यमी भया, फिर प्रचंड दण्ड कर और शीघ्रगामी वज्र बाणकर चक्रके निवारबे का यत्न किया तथापि रावणका पुण्य क्षीण भया सो चक्र न रुका नजीक आया तब रावण चन्द्रहास खडग लेकर चक्रके समीप आया चक्रके खडगकी दई

सो अग्निके कणोंसे आकाश प्रज्वलित भया खडगका जोर चक्रपर न चला, सन्मुख तिष्ठता जो रावण महाशूरवीर राक्षसोंका इन्द्र उसका चक्रने उरस्थल भेदा सो पुराय क्षयकर अंजनगिरिसमान रावण भूमिमें पडा, मानों स्वर्गसे देव चया, अथवा रतिका पति पृथिवीमें पडा ऐसा सोहताभया मानों बीररसका स्वरूपही है चढ रही हैं भौंह जिसकी डसे हैं होंठ जिसने स्वामीको पडा देख समुद्र समान था शब्द जिसका ऐसी सेना भागिवेको उद्यमी भई, ध्वजा छत्र वहे वहे फिर समस्त लोक रावण के विह्वलभए विलाप करते भागे जाय हैं कोई कहे हैं रथको दूरकर मार्ग देहु पीछेसे हाथी आवे है कोई कहे है विमानको एक तरफकर अरे पृथिवीका पति पडा अनर्थ भया महा भयकर कंपायमान वह उस पर पडे वह उसपर पडे तब सबको शरण रहित देख भामंडलसुग्रीव हनूमान रामकी आज्ञासे कहतेभए भयमत करो भय मत करो धीर्य बंधाया और वस्त्र फेरे काहूको भय नहीं तब अमृतसमान कानोंको प्रिय ऐसे बचन सुन सेनाको विश्वास उपजा। यह कथा गौतम गणधर राजा श्रेणिक सो कहे हैं हे राजन रावण ऐसी महा विभूतिको भोग समुद्र पर्यन्त पृथिवीका राज्यकर पुण्यपूर्ण भए अन्तदशाको प्राप्तभया। इस लिये ऐसी लक्ष्मीको धिक्कार है यह राज्य लक्ष्मी महा चंचल पापका स्वरूप सुकृतके समागम का आशाकर वर्जित ऐसा मन में विचार कर हो बुद्धिजन हो तपही है धन जिनके ऐसे मुनि होवो। कैसे हैं मुनि तपोधन सूर्य से अधिकहै तेज जिनका मोह तिमिरको हरे हैं ॥ इति छहत्तरवां पर्वसंपूर्णम् ॥

अथानन्तर विभीषण ने बड़े भाईको पड़ा देख महा दुःख का भरा अपने घात के अर्थ छुरी विषे हाथ लगाया सो इसको मरणकी करणहारी मूर्छा आयगई चेष्टाकर रहित शरीर हो गया फिर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सचेत होय महादाहका भरा मारने को उद्यमी भया तब श्रीरामने रथसे उतर हाथ पकड़कर उरसे लगाया धीर्य बंधाया फिर मूर्छा खाय पड़ा अचेत होय गया श्रीरामने सचेत किया तब सचेतहोय विलाप करता भया। जिसका विलाप सुने करुणा उपजे, हाय भाई उदार क्रियावन्त सामंतोंके पति महाशूरवीर रण धीर शरणागत पालक महामनोहर ऐसी अवस्थाको क्यों प्राप्तभए मैं हितके बचन कहे सो क्यों न माने यह क्या अवस्थाभई जो मैं तुमको चक्र के विदारे पृथिवी विषे परे देखूं हूं देव विद्याधरोंके महेश्वर हे लंकेश्वर भोगोंके भोक्ता पृथ्वी में कहा पौढे महा भोगोंकर लडायाहै शरीर जिनका यह सेज आपके शयन करने योग्य नहीं, हे नाथ उठो सुन्दर बचनके वक्ता मैं तुम्हारा बालक मुझे कृपाके बचन कहो, हे गुणाकर कृपाधार मैं शोक के समुद्र विषे डूबुं हूं सो मुझे हस्तालंबन कर क्यों न निकालो इस भांति विभीषण विलाप करे है डार दिये हैं शस्त्र और बक्तर भूमिमें जिसने ॥

अथानन्तर रावणके मरणके समाचार रणवासमें पहुंचे सो राणियां सर्व अश्रुपातकी धाराकर पृथ्वी तल को सींचती भई और सबही अन्तःपुर शोककर व्याकुल भया सकल राणी रण भूमिमें आई गिरती पड़ती गिरती परती डिगेहैं चरण जिनके वे नारी पतिको चेतनारहित देख शीघ्रही पृथिवीविषे पडी कैसा है पति पृथ्वी की चूड़ामणिहै मन्दोदरी, रंभा, चन्द्रानना, चन्द्रमंडला, प्रवरा, उर्वशी महा देवी, सुंदरी कमलानना, रूपिणी, रुक्मणा, शीला, रत्नमाला, तनूदरी, श्रीकांता, श्रीमती, भद्रा, कनक, प्रभा, मृगावती, श्रीमाला मानवी, लक्ष्मी, अनन्दा, अनंगसुन्दरी, वसुन्धरा, तडिन्माला, पद्मा पद्मावती, सुखादेवी, कांति प्रीति, संध्यावली, सुभा, प्रभावती, मनोवेगा, रतिकांता, मनोवती, इत्यादि अष्टादशसहस्र राणी अपने २

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिवारसहित और सखियों सहित महाशोककी भरी रुदनकरती भई कैयक मोहकी भरी मूर्छाको प्राप्तभई सो चन्दनके जल कर छांटी कुमलाई कमलनी समान भासती भई कैयक पतिके अंगसे अत्यन्त लिपटकर परी अंजनगिरि सो लगी संध्या की द्युतिको धरती भई कैयक मूर्छासे सचेत होय उरस्थल कूटती भई पति के समीप मानों मेघ के निकट विजुरी ही चमके है कैयक पति का बदन अपने अंग में लेय कर विह्वल होय मूर्छाको प्राप्त भई कोईयक विलापकरे हैं हाय नाथ मैं तुम्हारे विरहसेअति कायर मुझे तजकर तुम कहां गए तुम्हारे जन दुःखसागर मे डूवे हैं सो क्यों न देखो तुम महाबली महा सुन्दरी परम ज्योतिके धारक विभूति कर इन्द्र समान मानों भरतक्षेत्र के भूपति पुरुषोत्तम महाराजा के राजा मनोरम विद्याधरों के महेश्वर कौन अर्थ पृथिवीमें पौढ़े उठो हे कांत करुणानिधे स्वजनवत्सल एक अमृत समान वचन हमसे कहो, हे प्राणेश्वर प्राणवल्लभ हम अपराध रहित तुमसे अनुरक्त चित्त हमपर तुम क्यों कोप भए हमसे बोलो ही नहीं जैसे पाहिले हास्य कथा करते तैसे क्यों न करो तुम्हारा मुखरूपी चन्द्र कांतिरूप चांदनी कर मनोहर प्रसन्नतारूप जैसे पूर्व हमे दिखावते थे तैसे हमें दिखावो और यह तुम्हारा वक्षस्थल स्त्रियों की क्रीड़ा का स्थानक महासुन्दर उसविषे चक्र की धाराने कैसे पगधरा और विद्रुम समान तुम्हारे ये लालअधर अब क्रीड़ारूप उत्तरके देनेको क्यों न स्फुटायमान होयहैं अबतक बहुत देरलगाई क्रोध कबहूं न किया अब प्रसन्नहोवो, हम मान करती तो आप प्रसन्न करते मनावते इन्द्रजीत मेघवाहन स्वर्गलोक से चयकर तुम्हारे उपजे सो यहांभी स्वर्गलोक कैसे भोगभोगें अब दोनों बन्धन में हैं और कुम्भकर्ण बन्धनमें है सो महापुण्याधिकारी सुभट महागुणवन्त श्रीरामचन्द्र तिनसे प्रीतिकर भाईपुत्रको

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छुडावो हे प्राणवल्लभ प्राणनाथ उठो हमसे हितकी बात करो हे देव बहुत सोवना क्या राजावों को राजनीति विषे सावधान रहना सो आप राज्य काज विषे प्रवर्तो हे सुन्दर हे प्राण प्रिय हमारे अंग विरह रूप अग्नि कर अत्यन्त जरे हैं सो स्नेहरूप जलकर बुझावो हे स्नेहियों के प्यारे तुम्हारा यह बदन कमल औरही अवस्थाको प्राप्त भया है सो इसे देख हमारे हृदयके सौ टूक क्यों न हो जावें यह हमारा पापी हृदय वज्रकाहै दुःखकाभाजन जो तुम्हारीयह अवस्था जानकर विनस न जाय है यह हृदय महा निर्दई है हाय विधाता हम तेरा क्या बुराकिया जो तैने निर्दई होयकर हमारे सिरपर ऐसा दुःख डारा हे प्रीतम जब हम मान करती तब तुम उरसे लगाय हमारा मान दूर करते और वचन रूप अमृत हम को प्यावते महा प्रेम जनावते हमारा प्रेमरूप कोप उसके दूर करवेके अर्थ हमारे पांयन पडते सो हमारा हृदय वशीभूत होय जाता अत्यन्त मनोहर क्रीडा करते, हे राजेश्वर हमसे प्रीतिकारी परम आनन्दकी करणहारी वे क्रीडा हमको याद आवें हैं सो हमारा हृदय अत्यन्त दाह को प्राप्त होय है इसलिये अब उठो हम तुम्हारे पायों पडे हैं नमस्कार करें हैं जो अपने प्रिय जन होंय तिनसे बहुत कोप न करिये प्रीति विषे कोप न सोहे हे श्रेणिक इस भांति रावण की राणी ये विलाप करती भईं जिनका विलाप सुन कर कौन का हृदय द्रवी भूत न होय ॥

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मण भामण्डल सुग्रीवादिक सहित अति स्नेहके भरे विभीषणको उर से लगाय आंसू डारते महाकरुणावन्त धीर्य बन्धावने विषे प्रवीण ऐसे वचन कहते भए लोक वृतांतमें पंडित हे राजन बहुत रोयवे कर क्या अब विषाद तजो यह कर्मकी चेष्टा तुम कहा प्रत्यक्ष नहीं जानोंहो

पूर्वकर्मके प्रभावकर प्रमोदको धरते जे प्राणी तिनके अवश्य कष्टकी प्राप्ति होय है उसका शोक कहां और तुम्हारा भाई सदा जगतके हितविषे सावधान परम प्रीति का भाजन समाधान रूप बुद्धि जिसकी राजकार्यविषे प्रवीण प्रजाका पालक सर्वशास्त्रोंके अर्थकर धोयाहै चित्त जिसने सो बलवान मोह कर दारुण अवस्थाको प्राप्तभया और विनाशको प्राप्तभया जब जीवोंका विनाश काल आवे तवबुद्धि अज्ञान रूप होय जायहै ऐसे शुभ वचन श्रीरामने कहे फिरभामंडल अति माधुर्यताको धरे वचन कहते भये हे विभीषण महाराज तुम्हारा बाई रावण महाउदार चित्त भयंकर रणविषे युद्ध करता संता वीर मरणकर परलोक को प्राप्तभया जिसका नाम न गया उसका कछु ही न गया वे धन्यहैं जिन सुभटता कर प्राण तजे वे महापराक्रमके धारक वीर तिनका कहा शोक एक राजाअरिंदमकी कथा सुनो॥ अक्षयकुमार नामा नगर वहां राजा अरिंदम जिसके महाविभूति सो एक दिन काहू तरफ से अपने मंदिर शीघ्रगामी घोडे चढ़ाअकस्मात आया सो राणी को शृंगार रूप देख और महल की अत्यन्त शोभादेख राणी को पूछा तुमहमारा आगम कैसे जाना तब राणीने कही कीर्तिधरनामा मुनि अवधिज्ञानी आज आहार को आए थे तिनको मैंने पूछा राजा कब आवेंगे सो उन्हों ने कही राजा आज अचानक आवेंगे यह बात सुन राजा मुनिपै गया और इर्षाकर पूछता भया हे मुनि तुमको ज्ञान है तो कहो मेरे चित्तमें क्या है तब मुनिने कही तेरे चित्तमें यह है कि मैं कब मरूंगा सो तू आजसे सातमें दिन वज्रपात से मरेगा और विष्टामें कीट होयगा, यह मुनिके वचन सुन राजा अरिंदम घर जाय अपने पुत्र प्रीतंकर को कहता भया मैं मर कर विष्टाके घर में स्थूल कीट होवूंगा ऐसा मेरा रंगरूप होयगा सो तू तत्काल मार डारियो ये वचन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्रको कहे आप सातवे दिन मरकर विष्टा में कीड़ा भया सो प्रीत्यंकर कीट के हनिबेको गया सो कीट मरने के भयकर विष्टामें पैठिगया तब प्रीत्यंकर मुनिपै जाय पूछता भया हे प्रभो मेरे पिताने कही थी जो मैं मलमें कीट होवंगा सो तू हनियो अब वह कीट मरिबेसे डरे है और भागे है तब मुनि ने कही तू विषाद मतकरे यह जीव जिसगति में जाय है वहां ही रम रहे है इसलियतू आत्मकल्याण कर जिसकर पापोंसे छूटे और यह जीव सबही अपने अपने कर्मका फल भोगवे हैं कोई काहूका नहीं यह संसार का स्वरूप महादुख का कारण जान प्रीत्यंकर मनि भया सर्व वांछा तजी, इसलिये हे बिभीषण यह नानाप्रकार जगत्की अवस्था तुम कहा नं जानो हो तुम्हारा भाई महा शूरवीर दैव योगसे नारायणने हता संग्राम के सन्मुख महा प्रधान पुरुष उसका सोचक्या तुम अपना चित कल्याणमें लगावो यह शोक दुखका कारण उसे तजो यह वचन और प्रीत्यंकरकी कथा भामण्डलके मुखसेविभीषणनेसुनी. कैसी है प्रीत्यंकर मुनिकी कथा प्रतिबोध देबे में प्रवीण और नाना स्वभावकर संयुक्त और उत्तम पुरुषोंकर कहिबे योग्य सो सर्व विद्याधरों ने प्रशंसा करी सुनकर बिभीषण रूप सूर्य शोकरूप मेघपटल से रहित भया लोकोत्तर आचार का जानने वाला ॥ इति सतत्तरवांपर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर श्री रामचन्द्र भामण्डल सुग्रीवादि सबसे कहते भए, जो पण्डितों के बैर बैरी के मरण पर्यन्तही है अब लंकेश्वर परलोक को प्राप्त भए सो यह महानर थे इनका उत्तम शरीर अग्नि संस्कार करिए तब सबों ने प्रमाण करी और बिभीषण सहित रामलक्षमण जहां मन्दोदरी आदिअठारह हजार राणीयों सहित जैसे कुरुचिपुकारे तैसे विलाप करती थी सो वाहनसे उतर समस्तविद्याधरों सहित दोनों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीर वहांगए सो रामलक्षमण को देख अति विलाप करती भई तोड़ डारे हैं सर्व आभषण जिन्होंने और धूलकर धूसरा हैं अंग जिनका तब श्रीराम महा दयावन्त नानाप्रकार के शुभ वचनों कर सर्व राणीयों को दिलासा करी धीर्य बन्धाया और आप सब विद्याधरों को लेकर रावण के लोकाचारकोगए कपूरअगर मलियागिरि चन्दन इत्यादि नानाप्रकार के सुगन्ध द्रव्योंकर पद्मसरोवर पर प्रतिहरिका दाह भया फिर सरोवर के तीर श्रीराम तिष्ठे कैसे हैं राम महा कृपालु है चित्त जिन का गृहस्थाश्रम में ऐसे परिणाम कोई विरले के होय हैं फिर आज्ञा करी कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनाद को सब सामन्तों सहित छोड़ो तब कैयक विद्याधर कहते भए वे महाक्रूर चित्त हैं और शत्रु हैं छोड़बे योग्य नहीं बन्धन ही में मरें तब श्रीराम कहते भए यह क्षत्रीयों का धर्म नहीं जिनशासन में क्षत्रीयों की कथा क्या तुमने नहीं सुनी है सूते को बन्धे को डरते को दन्त में तृण लेते को भागे को बाल बृद्ध स्त्री को न हने यह क्षत्री का धर्म शास्त्रों में प्रसिद्ध है तब सब ने कही आप जो आज्ञा करो सो प्रमाण है, रामकी आज्ञा प्रमाण बड़े २ योधा नाना प्रकार के आयुधों को धरे तिन के ल्यायबे को गए कुम्भकरण इन्द्रजीत मेघनाद मारीच तथा मन्दोदरी का पिता राजा मय इत्यादि पुरुषों को स्थूल बन्धन सहित सावधान योधा लिए आवे हैं सो माते हाथी समान चले आवे हैं. तिनको देख वानरवंशी योधा परस्पर बात करते भए जो कदाचित इन्द्रजीत मेघनाद कुम्भकर्ण रावणकी चिता जरती देख क्रोध करें तो कपिवंशियों में इनके सन्मुख लड़ने को कोई समर्थ नहीं जो कपिवंशी जहां बैठा था वहां से उठ न सका और भामंडलने अपने सब योधावों से कहा जो इन्द्रजीत मेघनाद को यहां तक बंधेही अति यत्न से लाइयो अबार विभीषण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का भी विश्वास नहीं है जो कदाचित् भाई भतीजों को निर्धन देख भाईको बैर चितारे सो इसको विकार उपज आवे भाई के दुःख से बहुत तप्तायमान है यह विचार भामंडलादिक तिन को अति यत्न से राम लक्ष्मण के निकट लाए सो वे महाविरक्त राग द्वेष रहित जिनके मुनि होयवे के भाव महा सौम्य दृष्टिकर भूमि निरखते आवें शुभ हैं आनन जिन के वे महा धीर यह विचारे हैं कि इस असार संसार सागर में कोई सारता का लवलेश नहीं एक धर्मही सर्व जीवनका बांधव है सोई सारहै ये मनमें विचारे हैं जो आज बंधन से छूटे तो दिगम्बर होय पाणिपात्र आहार करें यह प्रतिज्ञा धरते राम के समीप आए इन्द्रजीत कुम्भकर्णादिक बिभीषण की ओर आए तिष्ठे यथा योग्य परस्पर संभाषण किया फिर कुम्भकर्णादिक श्री राम लक्ष्मण से कहते भए अहो तुम्हारे परम धीर्य परम गंभीरता अद्भुत चेष्टा देवों कर भी न जीताजाय ऐसा राक्षसों का इन्द्र रावण मृत्युको प्राप्त किया पंडितों के अति श्रेष्ठ गुण का धारक शत्रुभी प्रशंसा योग्य है तब श्रीराम लक्ष्मण इन को बहुत शंतता उपजाय अति मनोहर वचन कहते भए तुम पहिले महा भोगरूप जैसे तिष्ठते तैसे तिष्ठो तब वह महा विरक्त कहतेभये अब इन भोगों से हमारे कुछ प्रयोजन नहीं यह विषसमान महा दारुण महा मोह के कारण महा भयंकर महा नरक निगोदादि दुःखदाई जिन कर कबहूं जीव के साता नहीं जे विचक्षण हैं वे भोग सम्बन्ध को कभी न वांछे राम लक्ष्मण ने घनाही कहा तथापि तिनका चित्त भोगासक्त न भया जैसे रात्रि में दृष्टि अन्धकार रूप होय और सर्य के प्रकाश कर वही दृष्टि प्रकाश रूप होय जाय तैसेही कुम्भकर्णादिक की दृष्टि पहिले भोगासक्त थी सो ज्ञान के प्रकाश कर भोगों से विरक्त भई श्रीरामने तिन के बन्धन

For Private and Personal Use Only

छुड़ाय और इन सबों सहित पद्म सरोवर में स्नान किया कैसा है सरोवर महा सुगन्ध है जल जिसका उस सरोवर में स्नान कर कपि और राक्षस सब अपने अपने स्थानक गए ॥

अथानन्तर कैयक सरोवर के तीर बैठे विस्मय कर व्याप्तहै चित्त जिनका शूरवीरोंकी कथा करते भए कैयक क्रूर कर्मको उलाहना देतेभए कैयक हथियार डारतेभए कैयकरावणके गुणोंकर पूर्णहे चित्त जिनका सो पुकार कर रुदन करते भए कैयक कर्मोंकी विचित्र गति का वर्णन करतेभए और कैयकसंसारवनको निन्दते भए कैसाहै संसार वन जाथकीनिकसना अतिकठिनहै कैयक भोगविषेअरुचिको प्राप्तभएराज्यलक्ष्मीकोमहा चंचल निरर्थकजानते भएऔरकैयक उत्तम बुद्धिअकार्य कीनिन्दा करते भए कैयक रावणकी गर्व की भरीकथा करते भए कैयक श्रीराम के गुण गावते भए कैयक लक्ष्मण की शक्ति का गुण वर्णन करते भए, कैयक सुकृत के फल की प्रशंसा करते भए निर्मल है चित्त जिनका, घरघर मृतकों की क्रिया होती भई, बाल वृद्ध सब के मुख यही कथा लंका विषे सर्व लोक रावण के शोक कर अश्रुपात डारते चतुर्मास्यकरतेभए शोक कर द्रवीभूत भया है हृदय जिनका, सकल लोकों के नेत्रों से जल के प्रवाह बहे सो पृथिवी जल रूप होय गई और तत्वोंकी गौणता दृष्टि पड़ी मानो नेत्रों के जलके भयकर आताप घुसकर लोकों के हृदय में पैठा सर्वलोकों के मुख से यह शब्द निकसे धिक्कार धिक्कार अहो बड़ा कष्ट भया हायहाय यहक्या अद्भुत् भया इसभांति लोक विलापकरे हैं औरआंसुडारें हैं कैयक भूमिमें शय्याकरते भए मौनधार मुख नीचा करते भये निश्चलहै शरीर जिनका मानोंकाष्ठकेहैं कैयक शस्त्रोंको तोड डारतेभए कैयकोंने आभूषण डार दिए और स्त्री के मुखकमल से दृष्टि संकोची कैयक अति दीर्घ उष्ण निस्वासनाषे हैं सो कलुष होय गए अधर जिनके

मानों दुःख के अंकुरे हैं और कैयक संसारके भोगों से विरक्त होय मनविषे जिनदीक्षा को उद्यमकरते भए ॥

अथानन्तर पिछले पहिर महासंघ सहित अनन्तवीर्य नामा मुनि लंका के कुसुमायुध नामा बन विषे छप्पन हजार मुनि सहित आए जैसे तारावों कर मंडित चन्द्रमा सोहे तैसे मुनियों कर मंडित सोहते भए, जो ये मुनि रावणके जीवते आवते तो रावणमारा न जाता लक्ष्मणके औररावणके विशेष प्रीति होती जहां ऋद्धिधारी मुनि तिष्ठें वहां सर्व मंगल होवें औरकेवली विराजेंवहां चारों ही दशाओंमें दोय सा योजन पृथिवी स्वर्ग तुल्य निरुपद्रव होय और जीवन के बैरभाव मिट जावें जैसे आकाश विषे अमूर्तत्व अवकाशप्रदानता निर्लेपता और पवन में सर्वोर्यता, निसंगता, अग्नि में उष्णता, जल में निर्मलता पृथवी में सहनशीलता तैसेसुते स्वभाव महामुनि के लोक को आनन्द दायकता होय है सो अनेक अदभुत गुणों केधारक महामुनि तिन सहित स्वामी विराजे, गौतमस्वामी कहे हैं, हे श्रेणिक तिनके गुण कौन वर्णन कर सके जैसे स्वर्ण का कुम्भ अमृत का भरा अति सोहे तैसे महा मुनि अनेक ऋद्धि के भरे सोहते भए निर्जंतु स्थानक वहां एक शिला उसऊपर शुक्ल ध्यान धर तिष्ठे सो उसही रात्रि विषे केवलज्ञान उपजा जिनके परम अद्भुत गुण वर्णन किए पापों का नाश होय तब भुवनवासी असुर कुमार नागकुमार गरुडकुमार विद्युतकुमार अग्नि कुमार पवनकुमार मेघकुमार दिक्कुमार दीपकुमार उदधिकुमार ये दश प्रकार तथा अष्ट प्रकार विंतर किन्नर किंपुरुष महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच, तथा पंच प्रकार ज्योतिषी सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र और सोलह स्वर्गके सर्वही स्वर्गवासी ये चतुरनिकाय के देव सोधर्म इन्द्रादिक सहित धातुकी खंडद्वीप के विषे श्रीतीर्थंकर देव का जन्म भया था सो सुमेरु पर्वत विषे क्षीर सागरके जल कर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्नान कराए जन्म कल्यानक का उत्सव कर प्रभुको माता पिताको सौंप वहां उत्सव सहित तांडव नृत्य कर प्रभुकी बारम्बार स्तुति करते भये कैसे हैं प्रभु बाल अवस्था को धरे हैं परन्तु बाल अवस्थाकी अज्ञान चेष्टा से रहित हैं वहां जन्म कल्याणकका समय साधकर सब देव लंकामें अनन्तवीर्य केवलीके दर्शनको आए कैएक विमान चढ़े आए कैएक राजहंसों पर चढ़ आए और कई एक अश्व सिंह व्याघ्रादिक अनेक वाहनों पर चढ़े आये ढोल मृदंग नगारे वीण बांसुरी झांझ मंजीरे शंख इत्यादि नाना प्रकार के वादित्र बजावते मनोहर गान करते आकाश मंडलको आच्छादते केवली के निकट महा भक्तिरूप अर्ध रात्रि के समय आये तिनकी विमानोंकी ज्योति कर प्रकाश होय गया और वादित्रों के शब्दकर दशों दिशा व्याप्त होय गईं राम लक्ष्मण यह वृत्तान्त जान हर्ष को प्राप्त भये समस्त वानरवंशी और राक्षस वंशी विद्याधर इन्द्रजीत कुम्भकर्ण मेघनाद आदि सर्व रामलक्ष्मणके संग केवलीके दर्शनके लिये जायवे को उद्यमी भये श्रीराम लक्ष्मण हाथी चढ़े और कईएक राजा रथपर चढ़े कईएक तुरंगोंपर चढ़े छत्रचमर ध्वजाकर शोभायमान महा भक्ति कर संयुक्त देवों सारिखे महा सुगन्धहैं शरीर जिनके अति उदार अपने वाहनों से उतर महा भक्ति कर प्रणाम करते स्तोत्र पाठ पढ़ते केवली के निकट आये अष्टांग दण्डवत् कर भूमि में तिष्ठे धर्म श्रवणकी है अभिलाषा जिनके केवली के मुखसे धर्म श्रवण करते भये दिव्यध्वनि में यह कथनभया कि ये प्राणी अष्ट कर्म से बंधे महा दुखके कर्म पर चढ़े चतुर्गति में भ्रमण करे हैं आर्त रौद्र ध्यान कर युक्त नाना प्रकार के शुभाशुभ कर्मोंको धरे हैं महा मोहिनी कर्मने ये जीव बुद्धि रहित किये इसलिये सदा हिंसा करे हैं असत्य वचन कहे हैं पराये मर्मछेदका वचन कहे हैं परनिन्दा करे हैं पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्रव्य हरे हैं पर स्त्रीका सेवन करे हैं प्रमाण रहित परिग्रहको अंगीकार करे हैं सदा है महालोभ जिनके वे कैसे हैं महा निन्द्यकर्म कर शरीर तज अधोलोक विषे जाय हैं वहां महा दुखके कारण सप्त नरक तिनके नाम रत्नप्रभा, शर्करा, बालुका, पंकप्रभा धूमप्रभा, तम महातम सदा महा दुःख के कारण सप्त नरक अन्धकार कर युक्त दुर्गंध सूंघा नाजावे देखा न जाय स्पर्शा न जाय महाभयंकर महा विकरालहै भूमि जिनकी सदा रुदन दुर्वचन त्रास नानाप्रकार के छेदन भेदन तिनकर सदा पीडित नारकी खोटे कर्मसे पापबन्ध कर बहुत काल सागरों पर्यंत महा तीव्र दुख भोगवे हैं ऐसा जान पण्डित विवेकी पाप बन्धसे रहितहोय धर्ममें चित्त धरो कैसे हैं विवेकी व्रत नियमके धरणहारे निःकपटस्वभाव अनेक गुणोंकर मंडित वे नानाप्रकारके तपकर स्वर्ग लोकको प्राप्त होय हैं फिर मनुष्य देह पाय मोक्ष प्राप्त होय हैं और जे धर्मकी अभिलाषासे रहित हैं वे कल्याणके मार्ग से रहित बारम्बार जन्म मरण करते महादुखी संसारमें भ्रमण करे हैं जे भव्यजीव सर्वज्ञ बीतरागके वचन कर धर्म में तिष्ठे हैं वे मोक्षमार्गी शील सत्य शौच सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्रकर जबलग अष्ट कर्मका नाश न करें तबलग इन्द्र अहमिंद्र पदके उत्तम सुखको भोगवे हैं नानाप्रकारके अद्भुतसुख भोग वहां से चय कर महाराजाधिराज होय फिर ज्ञान पाय जिनमुद्राधरमहातपकर केवलज्ञानउपाय अष्ट कर्म रहित सिद्धहोय हैं, अनन्तअविनाशीआत्मिकस्वभाव मयीपरमआनंद भोगवे हैं यह व्याख्यान सुन इन्द्रजीत मेघनाद अपनेपूर्वभव पूछते भए सो केवलीकहे हैं एक कौशांबी नामा नगरी वहां दो भाई दलिद्रीएकका नामप्रथम दूजे का नाम पश्चिम एकदिनविहार करते भवदत्तनामा मुनिवहां आये सो ये दोनोंभाईधर्मश्रवण कर ग्यारमी प्रतिमा के धारक क्षुल्लक श्रावकभएसो मुनिकेदर्शनको कौशांबीनगरीका राजाइन्द्रनाम राजा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आया सो मुनि महाज्ञानी राजाकोदेख जाना इसके मिथ्यादर्शन दुर्निवार हैं और उन्ही समयनन्दीनामा श्रेष्ठी महाजिनभक्त मुनि के दर्शनको आया उसका राजा ने आदर किया उसको देख प्रथम और पश्चिम दोनों भाईयों में से छोटे भाई पश्चिम ने निदान कीया जो मैं इस धर्मके प्रसाद कर नन्दी सेठके पुत्रहोऊं सो बडे भाई ने और गुरु ने बहुत सम्बोधा जो जिनशासन में निदान महानिन्द्य है सो यह न समझा कुबुद्धि निदानकर दुखित भया मरण कर नन्दी के इन्दुमुखी नामा स्त्री उसके गर्भमें आया सो गर्भमें आवते ही बड़े बडे राजावों के स्थानकमें कोटका निपात दरवाजों का निपात इत्यादि नानाप्रकार के चिन्ह होते भए, तब बड़े बडे राजा इसको नानाप्रकार के निमित कर महानर जान जन्म ही से अति आदर संयुक्त दूत भेज भेज द्रव्य पठाय सेवते भए, यह बडा भया इसका नाम रतिवर्धन सो सबराजा इसको सेवें कौशांबीनगरी का राजा इंदु भी सेवा करे नित्य आय प्रणाम करे इसभांति यह रतिवर्धन महाविभूति कर संयुक्त भया और बड़ा भाई प्रथम मर कर स्वर्ग लोक गया, सो छोटे भाई के जीव को संबोधवे के अर्थ क्षुल्लक का स्वरूप धर आया सो यह मदोन्मत्त राजाम दकर अन्धा होय रहा सो क्षुल्लकको दुष्ट लोकोंकर द्वारमें पैठने न दिया तब देवने क्षुल्लकका रूप दूरकर रतिवर्धनका रूप किया तत्काल उसका नगर उजाड़ उद्यान कर दीया और कहता भया अब तेरी कहां वार्ता तब वह पांयनपर पड स्तुति करता भया. तब उसको सकल वृत्तांत कहा जो आपां दोनों भाई थे मैं बड़ा तू छोटा सो क्षुल्लकके व्रतधारे सो तैंने नन्दीसेठ को देख निदान कीया सो मरकर नन्दी के घर उपजा राजविभूति पाई और यैं स्वर्ग में देव भया यह सब वार्ता सुन रतिवर्धन को सम्यक्त उपजा मुनि भया और नन्दीको आदि दे अनेक राजा रतिवर्धन के संग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुनि भए रतिवधन तपकर जहां भाई का जीव देवथा वहां ही देव भया फिर दोनों भाई स्वर्गसे चयकर राजकुमार भए एकका नाम उर्व दूजेका नाम उर्वस, राजा नरेन्द्र राणी विजिया के पुत्र फिर जिनधर्म का आराधनकर स्वर्गमें देव भए वहांसे चयकर तुम दोनों भाई रावणके राणी मन्दोदरी उसके इन्द्रजीत मेघनाद पुत्र भए और नन्दी सेठके स्त्री इन्दुमुखी रतिवर्धन की माता सो जन्मांतरमें मन्दोदरी भई पूर्व जन्म में स्नेह था सो अबभी माता का पुत्रसे अतिस्नेह भया कैसी है मन्दोदरी जिनधर्म में आसक्त है चित्त जिसका यह अपने पूर्व भव सुन दोनों भाई संसार की मायासे विरक्त भए उपजा है महा वैराग्य जिनको जैनेश्वरी दीक्षा आदरी और कुम्भकर्ण मारीच राजा मय और भी बड़े बड़े राजा संसारसे महा विरक्त होय मुनि भए तजे हैं विषय कषाय जिन्होंने विद्याधरोंके राजकी विभूति तृणवत् तजी महा योगीश्वर हो अनेक ऋद्धिके धारक भए पृथिवी में विहार करते भव्यों को प्रतिबोधते भए, श्री मुनि सुव्रतनाथ के मुक्तिगए पीछे तिनके तीर्थ में यह बड़े बड़े महा पुरुष भए परम तपके धारक अनेक ऋद्धि संयुक्त वह भव्य जीवों को बारम्बार वन्दिवे योग्य हैं, और मन्दोदरी पति और पुत्रोंके विरह कर अतिव्याकुल भई महा शोककर मूर्छा को प्राप्त भई फिर सचेत होय कुरचिकी न्याईं विलाप करती भई दुखरूप समुद्र में मग्न होय हाय पुत्र इन्द्रजीत मेघनाद यह क्या उद्यम किया मैं तुम्हारी माता अतिदीन उसे क्यों तजी यह तुमको कहां योग्य कि दुखकर तप्तायमान जो माता उसका समाधान किये वगैर उठगए हाय पुत्र हो तुम कैसे मुनिव्रत धारोगे तुम देवों सारिखे महाभोगी शरीर को लडावन हारे कठोर भूमिपर कैसे शयन करोगे समस्त विभव तजा समस्त विद्या तजी केवल अध्यात्म विद्या में तत्पर भए और राजा मय

For Private and Personal Use Only

मुनि भया उसका शोककरे है हाय पिता यहकहा क्या जगत्को तज मुनिरूप धरा तुम मोसे तत्काल ऐसा स्नेह क्यों तजा मैं तुम्हारी बालक मोसे दया क्यों न करी बालअवस्था में मोपर तुम्हारी अति कृपा थी मैं पिता और पुत्र और पति सबसे रहित भई स्त्रीके यही रक्षक हैं अब मैं कौनके शरण जाऊं मैं पुण्यहीन महा दुखको प्राप्त भई इस भांति मन्दोदरी रुदन करे उसका रुदन सुन सबही को दया उपजे अश्रुपातकर चतुर्मास्यकर दिया उसे शशिकांता आर्यिका उत्तम बचनकर उपदेश देती भई हे मूर्खणी कहा रोवे है इस संसार चक्रमें जीवोंने अनन्त भवधरे तिनमें नारकी और देवोंके तो सन्तान नहीं और मनुष्यों और तिर्यंचोंके है सो तैंने चतुर्गति भ्रमण करते मनुष्य तिर्यंचोंके भी अनन्त जन्मधरे तिनमें तेरेअनन्त पिता पुत्र बांधव भए जिनका जन्म २ में रुदन किया अब कहां विलाप करे है निश्चलता भज यह संसार असारहै एक जिनधर्मही सारहै तू जिनधर्मका आराधन कर दुखसे निवृति होय ऐसे प्रतिबोधके कारण आर्यिका के मनोहर बचन सुन मन्दोदरी महा विरक्त भई उत्तम हैं गुण जिसमें समस्त परिग्रह तज कर एक शुक्ल वस्त्र धारकर आर्यिका भई कैसी है मन्दोदरी मन बचनकाय कर निर्मलजो जिनशासन उस में अनुरागिणी है और चन्द्रनखा रावणकी बहिन भी इसही आर्यिकाके निकट दीक्षाधर आर्यिका भई जिस दिन मन्दोदरी आर्यकाभई उसदिन अडतालीस हजार आर्यिकाभई इतिअठत्तरवां पर्व संपूर्णम्॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे राजन ! अब श्रीरामलक्ष्मणका विभूति सहित लंका में प्रवेश भया सो सुन महाविमानों के समूह और हाथियोंकी घटा औरश्रेष्ठ तुरंगोंके समूह और मंदिर समान रथ और विद्याधरोंके समूह और हजारां देव तिनकर युक्त दोनों भाई महाज्योति

को धरे लंकामें प्रवेश करते भए तिनको देख लोक अति हर्षित भए जन्मान्तरके धर्मके फल प्रत्यक्ष देखते भए राजमार्ग में जाते श्रीराम लक्ष्मण तिनको देख नगरके नर और नारियोंको अपूर्व आनंद भया फूल रहे हैं मुख जिनके स्त्री झरोखावों में बैठी जालियों में होय देखे हैं कमलसमानहैं मुख जिन के महाकौतुक कर युक्त परस्पर वार्ता करे हैं हे सखी देखो यह राम राजादशरथ का पुत्रगुणरूप रत्नों की राशि पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है बदन जिसका कमल समानहैं नेत्र जिसके अद्भुत पुण्यकर यह पद पायाहै अतिप्रशंसा योग्यहै आकार जिनका धन्यहैं वह कन्या जिन्होंने ऐसे बर पाए जाने यहबर पाए उसने कीर्तिका थंभ लोक विषे थापा जिसने जन्मान्तरमें धर्म आचरा होय सोही ऐसा नाथ पावे उससमान और नारी कौन जिसका यश अत्यन्त राजा जनककी पुत्री महाकल्याण रूपणी जन्मांतरमें महा पुण्य उपार्जे हैं इसलिये ऐसे पति जैसे शची इंद्रके तैसे सीता रामके और यह लक्ष्मण वासुदेव चक्रपाणि शोभे है जिसने असुरेन्द्रसमान रावण रणमेंहता नीलकमलसमान कांतिजिसकी और गौर कांतिकर संयुक्त जो बलदेव श्रीरामचन्द्र तिनसहित ऐसे सोहे जैसे प्रयाग विषे गंगा यमुनाके प्रवाहका मिलाप सो है और यह राजा चन्द्रोदय का पुत्र विराधितहै जिसने लक्ष्मणसे प्रथम मिलापकर विस्तीर्ण विभूति पाई और यह राजा सुग्रीव किहकंधापुर का धनी महा पराक्रमी जिसने श्रीराम देवसे परम प्रीति जनाई और यह सीताका भाई भामंडल राजा जनक का पुत्र चन्द्रगति विद्याधरने पाला सो विद्याधरोंका इंद्र है और यह अंगदकुमार राजा सुग्रीवका पुत्र जो रावणको बहुरूपिणी विद्या साधते विघ्न का उद्यमी भया और हे सखि यह हनूमान महासुन्दर उतंग हाथियोंके रथ चढा पवनकर हाले है वानरके चिन्ह

की ध्वजा जिसके जिसे देख रणभूमिमें शत्रु पलाय जांय सो राजा पवनका पुत्र अंजनीके उदर विषे उपजा जिसने लंकाके कोट दरवाजे ढाहे हैं ऐसी वार्ता परस्पर स्त्री जन करे हैं तिनके वचनरूप पुष्पों की मालाकर पूजित जो रामसो राजमार्ग होय आगे गए एक चमर ढारती जो स्त्री उसे पूछा को हमारे विरहके दुःखकर तप्तायमान जो भामंडलकी बहिन सो कहां तिष्ठे है तब वह रत्नोंके चूडाकी ज्योति कर प्रकाश रूपहै भुजा जिसकी सो आंगुरिकर समस्याकर स्थानक दिखावती भई हे देव यह पुष्पप्रकीर्ण नामा गिरि निझरनावों के जलकर मानों हास्यहीकरे है वहां नन्दनवन समान महा मनोहर बन उस विषे राजा जनककी पुत्री कीर्तिशील है परिवार जिसके सो तिष्ठे है इसभांति रामजीसे चमर ढारती स्त्री कहती भई और सीताके समीप जो उर्मिका नाम सखी सब सखियोंमें प्रीतिकी भजनहारी सो आंगुरी पसार सीताको कहती भई हे देवि यह चन्द्रमा समानहै छत्र जिनका और चांद सूर्य समान हैं कुंडल जिनके और शरद के नीझरने समान है हार जिन के सो पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र तुम्हारे वल्लभ आए तुम्हारे वियोगकर मुख विषे अत्यन्त खेदको धरे हैं हे कमलनेत्र जैसे दिग्गज आवें तैसे आवे हैं यह वार्ता सुन सीताने प्रथम तो स्वप्न समान वृतांत जाना फिर आप अतिआनंदको धरे जैसे मेघपटलसे चन्द्र निकसे तैसे हाथीसे उतर आए जैसे रोहिणीके निकट चन्द्रमा आवे तैसे आए तब सीता नाथको निकट आया जान अति हर्षकी भरी उठकर सन्मुख आई कैसी है सीता धूरकर धूसर हैं अंग और केश बिखर रहे हैं श्याम पडगएहैं होठ जिसके स्वभाव कर कृशथी और पतिके वियोगकर अत्यंत कृश भई अब पति के दर्शन कर उपजा है अतिहर्ष जिसको प्राण की आशा बंधी, मानों स्नेह की

भरा शरीर की कांति कर पति से मिलाप ही करे है और मानों नेत्रों की ज्योतिरूप जलकर पतिको स्नानही करावे है और क्षणमात्र में बढ़ गई है शरीर की लावण्यता रूप संपदा और हर्ष के भरे निश्वास कर मानों अनुराग के भरे बीज बोवे है कैसी है सीता रामके नेत्रों को विश्रामकी भूमि और पल्लवसमान जे हस्त तिन कर जीते हैं लक्ष्मीके करकमल जिसने सौभाग्य रूप रत्नों की खान संपूर्ण चंद्रमा समानहै वदन जिसका चंद्र कलंकी यह निःकलंक विजुरी समान है कांति जिसकी वह चंचल यह निश्चल, प्रफुल्लित कमल समान हैं नेत्र जिसके मुखरूप चंद्रकी चंद्रिका कर अतिशोभाको प्राप्त भई है यह अद्भुत् वार्ता है कि कमल तो चंद्रकीज्योति करमुद्रित होय हैं और इस के नेत्र कमल मुख चंद्रमा की ज्योति कर प्रकाश रूपहैं कलु-षता रहित उन्मत्त हैं,स्तन जिसके मानों कामके कलशही हैं सरल हैचित्त जिसकासो कौशल्याका पुत्र राणी विदेहा की पुत्री को निकट आवती देख कथन में न आवे ऐसे हर्ष को प्राप्त भया, और यह रति समान सुन्दरी रमण को आवता देख विनय कर हाथ जोड़ खडी अश्रुपात कर भरे हैं नेत्र जिसके जैसे शची इंद्र के निकट आवे रति काम के निकट आवे दया जिनधर्म के निकट आवे सुभद्रा भरत के निकट आवे तैसे ही सीता सती रामके समीप आई सो घने दिनोंका वियोग उसकर खेदखिन्न रामने मनोरथके सैकडों कर पाया है नवीन संगम जिसने सो महा ज्योतिका धरणहारा सजलहैं नेत्र जिसके भुज बंधन कर शोभित जे भुजा उनकर प्राण प्रिया से मिलता भया उसे उरसे लगाय सुख के सागरमें मग्न भया उर से जुदी न कर सके मानों विरह से डरे है और वह निर्मल चित्तकी धरणहारी प्रीतम के कंठ विषे अपनी भुज पासि हार ऐसी सोहती भई जैसे कल्पवृक्षों से लपटी कल्प बेलि सोहे, भयाहै रोमांच दोनों के अंग विषे परस्पर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिलाप कर दोनोंही अति सोहते भये देवोंके युगुल समान हैं जैसे देव देवांगना सोहैं तैसे सोहतेभये सीता और रामका समागम देख देव प्रसन्न भये सो आकाशसे दोनों पर पुष्पों की वर्षा करते भये सुगंध जलकी वर्षा करतेभए और ऐसे वचन मुखसे उचारतेभए अहो अनुपम है शील सीताका शुभ है चित्त सीता धन्य है इस की अचलता गंभीरता धन्य है व्रत शील की मनोग्यता भी धन्य है निर्मलपन जिस का धन्य है सतियों में उत्कृष्टता की जाने मन कर भी द्वितीय पुरुष न इच्छा शुद्ध है नियम व्रत जिसका इस भांति देवोंने प्रशंसा करी उसही समय अतिभक्ति का भरा लक्ष्मण आय सीता के पायन पड़ा विनय कर संयुक्त सीता अश्रुपात डारती ताहि उरसों लगाय कहती भई हे वत्स महा ज्ञानी मुनि कहते जो यह वासुदेव पद का धारक है सो तू प्रकट भया और अर्धचक्री पद का राज तेरे आया निरग्रन्थ के वचन अन्यथा न होंय और यह तेरे बड़े भाई बलदेव पुरुषोत्तम जिन्होंने विरह रूप अग्नि में जरती जो मैं सो निकासी फिर चंद्रमा समान है ज्योति जिसकी ऐसा भाई भामंडल बहिन के समीप आया उसे देख अतिमोह कर मिली कैसा है भाई महा विनयवान् है और सुग्रीव वा हनूमान् नल नील अंगद विराधित चंद्र सुषेण जांबव इत्यादि बड़े बड़े विद्याधर अपना नाम सुनाय वंदना और स्तुति करतेभए नाना प्रकारके वस्त्र आभूषण कल्पवृक्षोंके पुष्पों की माला सीता के चरण के समीप स्वर्ण के पात्र में मेल भेट करते भए और स्तुति करते भए हे देवि तुम तीनलोक विषे प्रसिद्ध हो महा उदारता को धरो हो गुण संपदा कर सब में बड़ी हो देवों कर स्तुति करने योग्य हो और मंगल रूप है दर्शन तुम्हारा जैसे सूर्य की प्रभा सूर्य सहित प्रकाश करे तैसे तुम श्रीरामचन्द्र सहित जयवन्त होवो ॥

वन्नासीवां पर्व समपूर्णम् ॥

For Private and Personal Use Only

अथानन्तर सीता के मिलाप रूप सूर्य के उदय कर फूल गया है मुख कमल जिनका ऐसे जो राम सो अपने हाथ कर सीता का हाथ गह उठे ऐरावत गज समान जो गज उस पर सीता सहित आरो हण किया मेघ समान वह गज उस की पीठ पर जानकी रूप रोहिणी कर युक्त राम रूप चन्द्रमा सोहते भए समाधान रूप है बुद्धि जिनकी दोनों अतिप्रीति के भरे प्राणीयों के समूहको आनंदके करता बड़े बड़े अनुरागी विद्याधर लार लक्षमण लार स्वर्ग विमान तुल्य रावण का महल वहां श्रीराम पधारे रावणके महिल के मध्य श्रीशांतिनाथ का मंदिर अति सुन्दर जहां स्वर्ण के हजारों थंभ नाना प्रकार के रत्नोंकर मंडित मंदिर की मनोहर भीति जैसे महाविदेह के मध्य सुमेरु सोहे तैसे रावण के मंदिर में शांतिनाथ का मंदिर सोहे जिसको देख नेत्र मोहित होय जांय जहां घंटा बाजे हैं ध्वजा फरहरे हैं महा मनोहर वह शांतिनाथ का मन्दिर बरणन में न आवे श्रीराम हाथी से उतर नागेंद्र समान है पराक्रम जिनका प्रसन्न हैं नेत्र महालक्ष्मीवान जानकी सहित किंचित्काल कायोत्सर्ग की प्रतिज्ञाकरी प्रलंबितहैं भुजा जिनकी महा प्रशांत हृदय सामायिक को अंगीकार कर हाथ जोड़ शांतिनाथ स्वामी का स्तोत्र समस्त अशुभ कर्म का नाशक पढ़ते भए हे प्रभो तुम्हारे गर्भावतार में सर्वलोक में शांति भई महा कांति की करणहारी सर्वरोग हरणहारी और सकल जीवन को आनन्द उपजे और तुम्हारे जन्मकल्याणकमें इन्द्रादिक देव महा हर्षित होय आए क्षीर सागर के जल कर सुमेरु पर्वत पर तुम्हारा जन्माभिषेक भया और तुमने चक्रवर्त्ती पद धर जगत् का राज्य किया बाह्यशत्रु बाह्यचक्रसे जीते और मुनि होय माहिले मोह रागा-दिक शत्रु ध्यानकर जीते केवल बोध लहा जन्म जरा मरणसे रहित जो शिवपुर कहिये मोक्ष उसकातुम

अविनाशी राज्य किया कर्म रूप वैरी ज्ञान शस्त्रसे निराकरण किए कैसे हैं कर्म शत्रु सदा भव भ्रमण के कारण और जन्म जरा मरण भय रूप आयुधोंकर युक्त सदा शिवपुर पंथके निरोधक वैसाहे वह शिवपुर उपमा रहित नित्य शुद्ध जहां परभाव का आश्रय नहीं केवल निज भावका आश्रय है अत्यन्त दुर्लभ सो तुम आप निर्वाणरूप औरोंको निर्वाणपद सुलभ करोहो सर्व जगतको शांतिके कारणहो हे श्री शांतिनाथ मन वचन काय कर नमस्कार तुमको हे जिनेश हे महेश अत्यन्त शांति दिशाको प्राप्तभए हो स्थावर जंगम सर्वजीवोंके नाथहो जो तुम्हारे शरण आवे तिसके रक्षक हो समाधि बोध के देनहारे तुम एक परमेश्वर सबन के गुरु सबके बांधव हो मोक्ष मार्ग के प्ररूपणहारे सर्व इंद्रादिक देवों कर पूज्य धर्म तीर्थके कर्ताहो तुम्हारे प्रसाद कर सर्व दुख से रहित जो परम स्थानक ताहि मुनिराज पावे हैं हे देवाधिदेव नमस्कारहै तुमकोसर्व कर्म विलयकियाहे हे कृतकृत्य नमस्कार तुमको पायाहै परम शांति पद जिन्हों ने तीनलोक को शांतिके कारण सकल स्थावर जंगम जीवोंके नाथ शरणागत पालक समाधि बोध के दाता महा कांतिके धारक हो हे प्रभो तुमही गुरु तुमही बांधव तुमही मोक्षमार्ग के नियंता परमेश्वर इन्द्रादिक देवोंकर पूज्य धर्म तीर्थक कर्ता जिनकर भव्य जीवोंको सुख होय सर्व दुखके हरणहारे कर्मोंके अन्तक नमस्कार तुमको हेलब्ध लभ्य नमस्कार तुमको लब्ध लभ्य कहिये पाया है पायबे योग्य पद जिन्होंने महा शांत स्वभावमें विराजमान सर्व दोष रहित हे भगवान कृपाकरो वह अखंड अविनाशी पद हमें देवो इत्यादि महास्तोत्र पढ़ते कमल नयन श्रीराम प्रदक्षिणा देकर बन्दना करतेभए महा विवेकी पुण्यकर्म में सदा प्रवीण और रामके पीछे नम्रीभूत है अंग जिसका दोनोंकर जोड़े महा समाधान रूप जानकी स्तुति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करती भई श्रीरामके शब्द महा दुन्दुभी समान और जानकी महामिष्ट कोमल बीण समान बोलती भई और विशल्या सहित लक्ष्मण स्तुति करतेभए,और भामण्डल सुग्रीव तथा हनूमान मंगलस्तोत्र पढ़तेभए जोडे हैं कर कमलजिन्होंने और जिनराजमें पूर्ण है भक्ति जिनकी महा गान करते मृदंगादि बजावते महा ध्वनि करते भए मयूर मेघकी ध्वनि जान नृत्य करते भए बारम्बार स्तुति प्रणाम कर जिनमन्दिर में यथायोग्य तिष्ठे उससमान राजा विभीषण अपने दादा सुमाली और तिनके लघुवीर माल्यवान् और सुमाली के पुत्र रत्नश्रवा रावणके पिता तिनको आदि दे अपने बडे तिनका समाधान करता भया, कैसा है विभीषण संसार की अनित्यताके उपदेश में अत्यन्त प्रवीण सो बड़ों को कहता भया हे तात यह सकल जीव अपने उपार्जे कर्मों को भोगे हैं इसलिये शोक करना वृथा है और अपना चित्त समाधान करो आप जिन आगम के वेत्ता महा शांतचित्त और विचक्षणहो औरों को उपदेश देयवे योग्य आपको हम क्या कहें जो प्राणी उपजा है सो अवश्यमरणको प्राप्तहोय है औरयौवन पुष्पोंकी सुगंधतासमानक्षणमात्रमें औररूपहोय है और लक्ष्मी पल्लवकी शोभासमानशीघ्रही औररूप होयहै औरविजुरीके चमत्कारसमानयहजीतव्यहै औरपानी के बुदबुदासमानबंधूका समागमहै और सांझकेबादरकेरंगसमान यह भोगहैं जो यहजीवपरमार्थकन्यकरमरण न करेतो हमभवांतरसे तुम्हारेवंशमें कैसे आवते हे तातअपनाही शरीरविनाशीकहैतोहितुजन का अत्यंत शोक काहे को करिए शोककरना मूढ़ता है सत्यपुरुषों को शोक से दूर करिबे अर्थ संसारका स्वरूप विचारणा योग्य है, देखे सुने अनुभवे जे पदार्थ वे उत्तम पुरुषों को शोक उपजावे हैं परन्तु विशेष शोक न करना क्षणमात्र भया तो भया इस शोककर बांधवका मिलापनहीं बुद्धिभ्रष्ट होय है इसलियेशोक न करना

For Private and Personal Use Only

यह विचारणा इस संसार असारमें कौनकौन न भए ऐसा जान शोक तजना अपनी शक्ति प्रमाण जिन धर्म का सेवन करना यह बीतराग का मार्ग संसार सागरका पार करणहारा है सो जिनशासन में चित्त धर आत्म कल्याण करना इत्यादि मनोहर मधुर वचनोंकर विभीषण ने अपने बड़ों को समाधान किया फिर अपने निवास गया अपनी विदग्ध नामा पटराणी समस्त व्यवहार में प्रवीण हजारों राणियों में मुख्य उसे श्रीरामके नौतिबेको भेजी सो आयकर सीता सहित रामको और लक्ष्मणको नमस्कार कर कहती भई हे देव मेरे पतिका घर आपके चरणारबिन्द के प्रसंगकर पवित्र करो आप अनुग्रह करिबे योग्य हो इसभांति राणी बिनती करे है तबही विभीषण आया अतिआदर से कहता भया हे देव उठिये मेरा घर पवित्र करिए तब आप इसके लार ही इसके घर जायबे को उद्यमी भए नानाप्रकार के बाहन कारी घटा समान गज अति उत्तंग और पवनसमान चंचल तुरंग और मंदिर समान रथ इत्यादि नाना प्रकारके जे बाहन तिनपर आरूढ अनेक राजा तिन सहित विभीषणके घर पधारे समस्त राजमार्ग सामंतों कर आच्छादित भया विभीषण ने नगर उछाला मेघकी ध्वनि समान वादित्र बाजते भए, शंखों के शब्द कर गिरि की गुफा नाद करती भई झंझा भेरी मृदंग ढोल हजारों बाजते भए लपाक काहल धुन्धु अनेक बाजे और दुन्दभी बाजे दशों दिशा वादित्रों के नादकर पूरीगईं ऐसेही तो वादित्रों के शब्द और ऐसेही नानाप्रकार के बाहनोंके शब्द ऐसेही सामंतों के अट्टहास तिनकर दशों दिशा पूरित भईं कैयक सिंह शार्दूल पर चढे हैं कैयक केशरी सिंहों पर चढे हैं कैयक रथों पर चढ़े हैं कैयक हाथियों पर कैयक तुरंगोंपर चढ़े हैं नाना प्रकार के विद्यामई तथा समान बाहन तिनपरचढे चले नृत्यकारिणीनृत्य करे

हैं नट भाट अनेक कला अनेक चेष्टा करे हैं अति सुन्दर नृत्य होय है बन्दीजन विरद बखाने हैं ऊंचे स्वर से स्तुति करे हैं, और शरदकी पूर्णमासी के चन्द्रमा समान उज्ज्वल छत्रों के मंडल कर अंबर छाय रहा है नाना प्रकार के आयुधों की कांति कर सूर्य की किरण दब गई है, नगर के सकल नर नारी रूप कमलनी के बन को आनन्द उपजावते भानु समान श्री राम बिभीषणके घर गए। गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक उस समय की बिभूति कही न जाय महाशुभ लच्चण जैसी देवों के शोभा होय तैसी भई विभीषण ने अर्घ पाद्य किये अति शोभा करी श्री शांतिनाथ के मंदिर से लेय अपने महिलतक महा मनोग्यपांडवा किये आप श्रीराम हाथीसे उतर सीता और लक्ष्मण सहित विभीषण के घरमें प्रवेश करते भये विभीषणके महिल के मध्य पद्मप्रभु जिनेंद्रका मंदिर रत्नोंके तोरणोंकर मंडित कनकमई उसके चौगिर्द अनेक मंदिर जैसे पर्वतों के मध्य समेरु सोहे तैसे पद्मप्रभुका मंदिर सोहे सुवर्णके हजारों थम्भ तिनके ऊपर अतिऊंचे देदीप्यमान अति विस्तार संयुक्त जिनमंदिर सोहें नानाप्रकारकी मणियोंके समूहकर मंडित अनेक रचनाको धरे अति सुंदर पद्मराग मणिमई पद्मप्रभु जिनेंद्रकी प्रतिमा अति अनुपम विराजे जिसकी कांतिकर मणियोंकी भूमि विषे मानों कमलोंका बन फूल रहाहै सो रामलक्ष्मण सीतासहित बंदनाकर स्तुतिकर यथा योग्य तिष्ठे ॥

अथानन्तर विद्याधरोंकी स्त्रियें रामलक्ष्मण सीताके स्नानकी तयारी करावती भई अनेक प्रकार के सुगन्ध तेल तिनके उबटना किये नासिका को सुगंध और देहीको अनुकूल पूर्व दिशाकी और स्नान की चौकी पर विराजे बड़ी ऋद्धिकर स्नानको प्रवरते सुवर्ण के मरकत मणिके हीरावों के स्फटिक मणिके इंद्रनीलमणिके कलश सुगंध जलके भरे तिनकर स्नानभया, नाना प्रकारके वादित्र बाजे गीत

गान भए, जब स्नान होय चुका तब महापवित्र वस्त्र आभूषण पहिरे फिर पद्मप्रभुके चैत्यालय जाय वन्दना करी विभीषणने रामकी मिजमानी करी उसका विस्तार कहां लग कहिए, दुग्ध दही घी शर्वत की वावड़ी भरवाई पक्वान और अन्नके पर्वत किए और जे अद्भुत वस्तु नन्दनादि बन में पाइये वे मंगाई मनको आनन्दकारी नासिकाको सुगन्ध नेत्रोंको प्रिय अतिस्वादको धरे जिह्वाको वल्लभ षट रसोंसहित भोजनकी तयारी करी सामग्री तो सर्व सुन्दरही थी और सीताके मिलापकर रामको अति प्रिय लगी रामके चित्तकी प्रसन्नता कथनमें न आवे जब इष्टका संयोग होय तब पांचों इंद्रियोंके सर्वही भोग प्यारे लगें नातर नहीं, जब अपने प्रीतमका संयोग होय तब भोजन भली भांति रुचे सुगंधरुचे सुंदर वस्त्र का देखनारुचे रागका सुननारुचे कोमलस्पर्शरुचे मित्रके संयोगकर सब मनोहरलगें, और जब मित्रका वियोग होय तब स्वर्गतुल्य विषयभी नरकतुल्य भासे और प्रियके समागम विषे महा विषमबन स्वर्गतुल्य भासे महा सुन्दर अमृतसारिखे रस और अनेक वर्णके अद्भुत भक्ष्य तिनकर रामलक्ष्मण सीताको तृप्त किये अद्भुत भोजन क्रिया भई भूमिगोचरी विद्याधर परिवार सहित अति सनमानकर जिमाए, चंदनादि सुगंधके लेप किये तिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं और भद्रसाल नंदनादिक वनके पुष्पों से शोभित किये और महा सुन्दर कोमल महीन वस्त्र पहिराए नानाप्रकारके रत्नोंके आभूषण दिए कैसे हैं आभूषण जिनके रत्नों की ज्योतिके समूहकर दशोंदिशा में प्रकाश होरहा है जेते रामकी सेनाके लोक थे वे सब विभीषण ने सनमान कर प्रसन्न किये सबके मनोरथ पूर्ण किये रात्रि और दिवस सब बिभीषण ही का यश करें अहो यह विभीषण राक्षसवंश का आभूषणहै जिसने राम लक्ष्मणकी बड़ी सेवा करी यह महा प्रशंसा

योग्यहै मोटा पुरुष है यह प्रभावका धारकजगत विषे उतंगताको प्राप्तभया।जिसके राम लक्ष्मण मंदिर में पधारे, इस भांति विभीषणके गुण ग्रहण विषे तत्पर विद्याधर होते भए सर्व लोक सुख से तिष्ठे राम लक्ष्मण सीता और विभीषण की कथा पृथ्वी विषे प्रवरती ॥

अथानन्तर विभीषणादिक सकल विद्याधर राम लक्ष्मण का अभिषेक करने को विनयकर उद्यमी भए तब श्रीराम लक्ष्मणने कही अयोध्या विषे हमारे पिताने भाई भरतको अभिषेक कराया सो भरत ही हमारे प्रभु हैं तब सबने कही आपको यही योग्य है परन्तु अब आप त्रिखंडी भए तो यह मंगल स्नान योग्यही है इसमें क्या दोष है और ऐसी सुनने में आवे है भरत महा धीर है और मन वचनकाय कर आपकी सेवामें प्रवरते है विक्रियाको नहीं प्राप्त होयहै ऐसा कह सबने रामलक्ष्मण का अभिषेक सकिय जगत विषे बलभद्र नारायणकी अति प्रशंसा भई जैसे स्वर्ग विषे इंद्र प्रतिइंद्र की महिमा हो तैसे लंका विषे राम लक्ष्मणकी महिमा भई इंद्रके नगर समान वह नगर महा भोगोंकर पूर्ण वहां राम लक्ष्मणकी आज्ञा से विभीषण राज्य करे है नदी सरोवरों के तीर और देशपुर ग्रामादिमें विद्याधर राम लक्ष्मणही का यश गावते भए विद्याकर युक्त अद्भुत आभूषण पहिरे सुन्दर वस्त्र मनोहर हार सुगंधादिकके विलेपन उनकर युक्त क्रीड़ा करते भए जैसे स्वर्ग विषे देव क्रीड़ा करे और श्रीरामचंद्र सीता का मुख देखतें तृप्ति को न प्राप्तभए कैसा है सीताका मुख सूर्यके किरणकर प्रफुल्लित भया जो कमल उस समानहै प्रभा जिसकी अत्यन्त मनकी हरणहारी जो सीता उस सहित राम निरंतर रमणीय भूमि विषे रमते भए और लक्ष्मण विशल्या सहित रतिको प्राप्त भए मन बांछित सकल वस्तु का है समागम

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनके उन दोनों भाइयोंके बहुत दिन भोगोपभोग युक्त सुख से एक दिवस समान गए, एक दिन लक्ष्मण सुन्दर लक्षणोंका धरणहारा विराधित को अपनी जे स्त्री तिनके लेयबे अर्थ पत्र लिख बड़ी ऋद्धिसे पठावता भया सो जायकर कन्यावोंके पितावोंको पत्र देताभया माता पितावोंने बहुत हर्षित होय कन्यावों को पठाई सो बडी विभूति सो आई देशांग नगरके स्वामी बज्रकर्णकी पुत्री रूपवती महा रूपकी धरणहारी और कूबर स्थानक नाथ बालखिल्यकी पुत्री कल्याणमाला परम सुन्दरी और पृथ्वी पुर नगरके राजा पृथ्वीधर की पुत्री बनमाला गुणरूपकर प्रसिद्ध और खेमाजलके राजा जितशत्रु की पुत्री जितपद्मा और उज्जैन नगरी के राजा सिंहोदरकी पुत्री यह सब लक्ष्मणके समीप आई विराधित ले लाया जन्मांतरके पूर्ण पुण्य दया दान मन इंद्रियोंको बशकरना शील संयम गुरुभक्ति महा उत्तम तप इनशुभ कर्मों कर लक्ष्मण सा पतिपाइये इन पतिब्रतावोंने पूर्व महातप किये थे रात्रि भोजन तथा चतुर्विधि संघकी सेवा करी इसालिए बासुदेव पतिपाये उनको लक्ष्मणही बर योग्य और लक्ष्मण के ऐसेही स्त्री योग्य तिनकर लक्ष्मणको और लक्ष्मणकर तिनको अति सुख होताभया परस्पर सुखीभये गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे श्रेणिक जगतविषे ऐसी संपदा नहीं ऐसी शोभा नहीं ऐसा भोग नहीं ऐसी लीला नहीं ऐसी कला नहीं जो इनके न भई रामलक्ष्मण और इनकी राणी तिनकीकथा कहां लग कहैं और कहांकमल कहांचन्द्र इन के मुखकी उपमा पावे और कहां लक्ष्मी और कहांरति इनकी राणियों की उपमा पावें रामलक्ष्मणकी ऐसी संपदा देखविद्याधरोंके समूहको परम आश्चर्य होताभया चन्द्रवर्धनकीपुत्री और अनेक राजावोंकी कन्या तिनसे श्रीराम लक्ष्मणका अति उत्सवसे विवाह होताभया सर्व लोकको

For Private and Personal Use Only

आनन्द के करणहारे दे दोनों भाई महा भोगोंके भोगता मन वांछित सुख भोगते भये इंद्र प्रतींद्र समान आनन्द कर पूर्ण लंका विषे रमते भये सीता विषे है अत्यन्त राग जिनका ऐसे श्रीराम तिन्होंने छहवर्ष लंका में व्यतीत किये सुखके सागरमें मग्न सुन्दर चेष्टाके धरणहारे श्रीरामचन्द्र सकलदुःख भूलगए ॥

अथानन्तर इंद्रजीतमुनि सर्व पापोंके हरनहारे अनेकऋद्धिसहितविराजमान पृथिवी विषे बिहार करते भये वैराग्यरूप पवनकर प्रेरी ध्यानरूप अग्निकर कर्मरूपवन भस्मकिये कैसा है ध्यानरूप अग्नि क्षायक सम्यक्तरूप अरण्यकी लकडी उसकर करीहै और मेघबाहन मुनिभी विषयरूपईधनको अग्नि समान आत्म ध्यानकर भस्मकरते भये केवलज्ञानको प्राप्तभये केवलज्ञान जीवका निजस्वभावहै और कुम्भकर्ण मुनि सम्यक दर्शन ज्ञानचारित्र के धारक शुक्ल लेश्या कर निर्मल जो शुक्लध्यान उसके प्रभावकर केवलज्ञान को प्राप्त भये लोक और अलोक इनको अवलोकन करते मोहरज रहित इंद्रजीत कुम्भकर्ण केवलीआयु पूर्णकर अनेक मुनियों सहित नर्मदाके तीर सिद्धपद को प्राप्त भये सुरअसुर मनुष्योंके अधिपतियोंकर गाइये है उत्तम कीर्ति जिनकी शुद्ध शीलके धारणहारे महादेदीप्यमान जगत बंधु समस्त ज्ञेयकेज्ञाता जिनके ज्ञान समुद्रमें लोकालोक गायके खुर समान भासे संसारका क्लेश महा विषम उसके जालसे निकसे जिसस्थानक गए फिरयत्न नहीं वहां प्राप्त भये उपमा रहित निर्विघ्न अखंडसुखको प्राप्त भये जे कुंभकर्णादिक अनेक सिद्ध भये वे जिनसासनके श्रोतावों को आरोग्य पद देवें नाश किये हैं कर्म शत्रु जिन्होंने वे जिनस्थानकों से सिद्धभए हैं वे स्थानक अद्यपि देखिये हैं वे तीर्थ भव्योंकर बंदवेयोग्य हैं बिंध्याचलकी बनी विषे इंद्रजीत मेघनाद तिष्ठेसो तीर्थ मेघरवकहावें है और जम्बूमाली महा बलवान

तूणीमत नामापर्वत विषे अहिमिंद्र पदकोप्राप्त भए सो पर्वत नानाप्रकारके वृक्ष और लतावो कर मंडित अनेक पक्षियोंके समूह कर तथा नानाप्रकारके बनचरों कर भरा अहो भव्यजीव हो जीवदया आदि अनेक गुणों कर पूर्ण ऐसाजो जिनधर्म उसके सेवनसे कछू दुर्लभ नहीं जिनधर्मके प्रसादसे सिद्धपद अहिमिंद्रपद इत्यादिकपदसबही सुलभहैं जम्बूमालीका जीव अहिमिंद्र पदसे ऐरावतक्षेत्र विषे मनुष्य होये केवल उपाय सिद्धपद को प्राप्त होवेंगे और मंदोदरीका पिता चारण मुनि होय महा ज्योतिको धरे अढ़ाईद्वीप विषे कैलाश आदि निर्वाण क्षेत्रोंकी और चैत्यालयोंकी वंदना करते भये देवोंका है आगमन जहां सो मय महामुनि रत्नत्रय रूप आभूषण कर मंडित महाधीर्य धारी पृथिवी विषे विहार करें और मारीच मंत्री महा मुनि स्वर्ग विषे बडी ऋद्धिके धारी देव भये जिनका जैसा तप तैसा फल पाया सीताके दृढ़व्रत कर पतिकामिलाप भया जिस को रावण डिगाय न सका सीताका अतुलधीर्य अदभुतरूप महानिर्मल बुद्धि भरतारविषे अधिकस्नेह जो कहने में न आवे सीता महा गुणों कर पूर्णशील के प्रसादसे जगतविषे प्रशंसा योग्य भई कैसीहै सीता एक निजपति विषे है संतोष जिसके भवसागर की तरणहारी परंपराय मोक्षकी पात्र जिसकी साधु प्रशंशा करें गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक जो स्त्री विवाहही नहीं करे बालब्रह्मचर्य धरे सो तो महाभाग्यही है और पतिव्रता का व्रत आदरे मनवचनकायकर परपुरुषका त्याग करे तो यहव्रत भी परम रत्न हैं स्त्री को स्वर्ग और परंपराय मोक्ष देयवे को समर्थ है शीलव्रत समान और व्रत नहीं शील भवसागर की नाव है राजामय मंदोदरीका पितराज्य अवस्था में मायाचारी था और कठोर परणामी था, तथापि जिन धर्म के प्रसादसे राग द्वेष रहित हो अनेक ऋद्धि

का धारक मुनि भया यह कथा सुन राजा श्रेणिक गौतमस्वामीको पूछतेभए हे नाथ मैं इन्द्रजीतादिक का महात्म्य सबसुना अब राजा मयका महात्म्य सुना चाहूं हूं और हे प्रभो जो इस पृथिवी में पतिव्रता शीलवन्ती स्त्री हैं निज भरतारमें अनुरक्तहैं वे निश्चयसे स्वर्ग मोक्षकी अधिकारिणी हैं तिनकी महिमा मुझे विस्तार से कहो, तब गणधर कहते भए जे निश्चयकर सीता समान पतिव्रता शीलको धारणकरेंहैं वे अल्प भव में मोक्ष होय हैं,पतिव्रता स्वर्गही जाय परम्पराय मोक्ष पावें, अनेक गुणोंकर पूर्ण। हे राजन् जे मन वचन काय कर शीलवन्ती हैं चित्तकी वृत्ति जिन्होंने रोकी है वे धन्य हैं घोड़ों में हाथियों में लोहेन में पाषाण में वस्त्रों में काष्ठों में जल में वृक्षोंमें वेलों में स्त्रियों में पुरुषों में बड़ा अन्तर है सबही नारियों में पतिव्रता न पाइये और सबही पुरुषों मेंविवेकी नहीं जे शील रूप अंकुश कर मन रूप माते हाथी को वश करें वे पतिव्रता हैं पतिव्रता सबही कुलमें होय हैं और वृथा पतिव्रताका अभिमान कीया तो क्या जे जिन धर्मसे वहिरमुख हैं वे मन रूप माते हाथीको वश करबे समर्थ नहीं वीतराग की आणीकर निर्मल भया है चित्त जिनका वेई मनरूप हस्तीको विवेक रूप अंकुश से वशीभूत कर दया शील के मार्ग में चलायबे समर्थ हैं। हे श्रेणिक एक अभिमाना नाम स्त्री उसकी संक्षेपसे कथा कहिएहै सो सुन यह प्राचीन कथा प्रसिद्ध है एक ध्यानग्रामनामा ग्राम वहां नोदन नामा ब्राह्मण उसके अभिमाना नामास्त्री सो अग्निनामा ब्राह्मणकी पुत्री माननी नाम माता के उदर में उपजी सो अति अभिमान की धरण हारी सो नोदन नामा ब्राह्मण क्षुधाकर पीड़ित होय अभिमाना को तजदई सो गज वन में कररूह नाम राजाको प्राप्त भई, वह राजा पुष्प प्रकीर्ण नगरका स्वामी लंपट सो ब्राह्मणी को रूपवन्ती जान

पद्म पुराण ८०६॥

लेगया स्नेह कर घर में राखी एक दिन रति में उसने राजा के मस्तक में चरण की लात दई प्रात समय सभा में राजाने पंडतों से पूछा जिसने मेरा सिर पांव कर हता होय उसका क्या करना तब मूर्ख पंडित कहते भए हे देव उसका पांव छेदना अथवा प्राणहरने उससमय एक हेमांक नामा ब्राह्मण राजा के अभिप्राय का वेत्ता कहताभया उसके पांवकी आभूषणादि कर पूजा करिये तब राजाने हेमांक को पूछी हे पंडित तुमने रहस्य कैसे जाना तब उसने कही स्त्री के दन्तों के तुम्हारे अधरोंमें चिन्ह दीखे इस लिये यह जानी स्त्री के पांवकी लगी तब राजाने हेमांकको अभिप्राय का वेत्ता जान अपना निकट कृपापात्र किया बड़ी ऋद्धि दई सो हेमांकके घरके पास एक मित्र यशा नामा विधवा ब्राह्मणी महादुःख अमोघ सर नाम ब्राह्मणकी स्त्री है सो रहे सो अपने पुत्र को शिक्षा देती थी भरतार के गुण चितार चितार कहती थी हे पुत्र बाल अवस्था में जो विद्याका अभ्यास करे सो हेमांककी न्याईं महा विभूति को प्राप्त होयइस हेमांक ने बाल अवस्थामें विद्याका अभ्यास किया सो अब इसकी कीर्ति देख और तेरा बाप धनुष बाण विद्यामें अति प्रवीण थे उसके तुम सुपुत्र भये आंसू डार माता ने यह वचन कहे उसके वचन सुन माताको धीर्य बंधाया महा अभिमान का धारक यह श्रीवर्धित नामा पुत्र विद्यासीखने केअर्थ व्याघ्रपुर नगरगया सो गुरुके निकट शस्त्र शास्त्रसर्व विद्या सीखी और इस नगरके राजा सुकांतकी शीला नामा पुत्री उसे ले निकसा तब कन्या का भाई सिंहचन्द्र इस ऊपर चढ़ा सो इस अकेले ने शस्त्र विद्या के प्रभाव कर सिंहचन्द्र को जीता और स्त्री सहित माता के निकट आया माता को हर्ष उपजाया शस्त्र कला कर इस की पृथिवी विषे प्रसिद्ध कीर्ति भई सो शस्त्र के बल कर पोदनापुर के राजा राजाकरूह

को जीत कर लिया और व्याघ्रपुर का राजा शीला का पिता मरण को प्राप्त भया उसका पुत्र सिंहचन्द्र शत्रुवोंने दबाया सो सुरंग के मार्ग होय अपनी राणी को ले निकसा राज्यभ्रष्ट भया पोदनापुर विषे अपनी बहिन का निवास जान तंबोली के लार पानों की झोली सिर पर धर स्त्री सहित पोदनपुर के समीप आया रात्रि को पोदनपुर के वन में रहा, इस की स्त्री सर्प ने डसी तब यह उसे कांधे धर जहां मय महामुनि विराजे थे वे वज्र के थंभ समान महानिश्चल कायोत्सर्ग धरे अनेक ऋद्धि के धारक तिनको भी सर्व औषधी ऋद्धि उपजी थी सो तिन के चरणारविंद के समीप सिंहचन्द्र ने अपनी राणीडारीसो तिनके ऋद्धि के प्रभाव कर राणी निर्विष भई स्त्रीसहित मुनि के समीप तिष्ठे था उस मुनि के दर्शन विनयदत्त नाम श्रावक आया उसे सिंहचन्द्र मिला और अपना सब वृतान्त कहा तब उसने जाय कर पोदनापुरके राजा श्रीवर्धित को कहा जो तुम्हारी स्त्री का भाई सिंहचन्द्र आया है तब वह शत्रु जान युद्ध को उद्यमी भया तब विनयदत्तने यथावत् वृतांत कहा जो तुम्हारे शरण आया है, तब उसे बहुत प्रीतिउपजी औरमहाविभूति से सिंहचन्द्र के सन्मुख आया दोनों मिले अति हर्ष उपजा फिर श्रीवर्धित मय मुनि को पूछता भया हे भगवन् मैं मेरे और अपने स्वजनों के पूर्व भव सुना चाहू हूं तब मुनि कहते भए एक शोभपुर नामा नगर वहां भद्राचार्य दिगंबरने चौमासे में निवास किया सो अमलनामा नगर का राजा निरंतर आचार्य के दर्शनको आवे सो एक दिवस एक कोढिनी स्त्री उसकी दुर्गंध आई सो राजा पांवपयादाही भाग अपने घर गया उसकी दुर्गंध सह न सका और वह कोढणीने चैत्यालय दर्शन कर भद्राचार्य के समीप श्राविका के व्रत धारे, समाधि मरण कर देवलोक गई वहां से चयकर तेरी स्त्री शीला भई और वह राजा अमल

पद्म पुराण ॥८११॥

अपने पुत्र को राज्यभार सौंप आप श्रावकके व्रत धारे आठ ग्राम पुत्र पै ले संतोष धरा शरीर तज देव लोक गया वहां से चय कर तू श्रीवर्द्धित भया, अब तेरी माता के भव सुन एक विदेशी क्षुधा कर पीडित ग्राम में आय भोजन मांगता भया सो जब भोजन न मिला तब महा कोपकर कहता भया कि मैं तुम्हारा ग्राम बालूंगा ऐसे कटुक शब्द कह निकसा दैवयोगसे ग्राममें आगलगी सो ग्राम के लोगों ने जानी इस ने लगाई तब क्रोधायमान होय दौडे और उस ल्याय अग्नि में जराया सो महा दुःखकर राजा की रसोवणि भई मर कर नरक विषे घोरवेदना पाई वहां से निकस तेरी माता मित्र यशा भई और पोदनापुर विषे एक गोवाणिज गृहस्थ मर कर तेरी स्त्री का भाई सिंहचन्द्र भया और वह भुजपत्रा उस की स्त्री रतिवर्धनी भई पूर्व जन्म विषे पशुओं पै बोझ लादे थे सो इस भव विषे भार वहे, ये सर्व के पूर्व जन्म कह कर मय महा मुनि आकाश मार्ग विहार करगए और पोदनापुरका राजा श्रीवर्धित सिंहचन्द्र सहित नगर में गया, गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक यह संसार की विचित्र गति है कोईयक तो निर्धन से राजा हो जाय और कोई यक राजा से निर्धन हो जाय है श्रीवर्धित ब्राह्मण का पुत्र सो राजा होयगया और सिंहचन्द्रराजाका पुत्र सो राज्य भ्रष्ट होय श्रीवर्धित के समीप आया एक गुरुके निकट प्राणी धर्मका श्रवण करे तिन में कोई समाधि मरणकर सुगति पावे कोई कुमरण कर दुर्गति पावे कोई रत्नों के भरे जहाज सहित समुद्र उलंघ सुखसे स्थानक पहुंचे कोई समुद्र में डूबे किसी को चोर लूट लेय जावें ऐसा जगत्का स्वरूप विचित्र गति जान जे विवेकी हैं वे दया दान विनय वैराग्य जप तप इन्द्रियों का निरोध शांतता आत्मध्यान तथा शास्त्राध्ययनकर आत्म कल्याण करे ऐसे मय मुनिके

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वचन सुन राजा श्रीवर्धित और पोदनापुरके बहुत लोक शांतचित्त होय जिनधर्मका आराधन करतेभए यह मधु मुनिका महात्म्य जे चित्तलगाय पढ़ें सुनें तिनको वैरियोंकी पीड़ा न होय सिंहव्याघ्रादि न हतें सर्पादि न डसें

अथानन्तर लक्ष्मणके बड़े भाई श्रीरामचन्द्र स्वर्ग लोक समान लक्ष्मी को मध्यलोक में भोगते भये चन्द्र सूर्य समानहै कांति जिनकी और इनकी माता कौशल्या भर्तार और पुत्रके वियोगरूप अग्नि की ज्वाला कर शोकको प्राप्त भया है शरीर जिसका महिल के सातवें खण बैठी सखियों कर मंडित अतिउदास आंसुवों कर पूर्ण हैं नेत्र जिसके जैसे गायको बच्छेका वियोग होय और वह व्याकुल होय उस समान पुत्र के स्नेह में तत्पर तीव्र शोक के सागर में मग्न दशों दिशा की ओरदेखे महिलके शिखर में तिष्ठता जो काग उसे कहे है हे वायस मेरा पुत्र राम आवे तो तुझे खीरका भोजन दूं ऐसे वचन कहकर विलाप करे अश्रुपात कर कियाहै चातुर्यमास्य जिसने हाय वत्सतू कहांगया मैं तुझे निरन्तर सुख से लडाया था तेरे विदेश भ्रमणकी प्रीति कहां से उपजी कहां पल्लव समान तेरे चरण कोमल कठोर पंथ में पीड़ा न पावे महा गहन बन विषे कौन वृक्ष के तले विश्राम करता होयगा मैं मन्द भागिनी अत्यन्त दुःखी मुझे तज कर तू भाई लक्ष्मण सहित किस दिशाको गया इसभांति माता विलाप करे उस समय नारद ऋषि आकाश के मार्गमें आए पृथिवीमें प्रसिद्ध सदा अढाई द्वीप में भ्रमतेही रहें सिर पर जटा शुक्ल वस्त्र पहिरे उसको समीप आवताजान कौशल्याने उठकर सन्मुख जाय नारदका आदरसहित सिंहासन बिछाय सन्मान किया तब नारद उसे अश्रु पात सहित शोकवन्ती देख पूछतेभएहे कल्याणरूपिणी तुम ऐसी दुःख रूप क्यों तुमको दुःखका कारण क्या सुकौशल महाराज की पुत्री, लोक विषे प्रसिद्ध

For Private and Personal Use Only

राजा दशरथ की राणी, प्रशंसा योग्य श्रीरामचन्द्र मनुष्यों में रत्न तिनकी माता, महा सुन्दर लक्षण की धरण हारी तुम को कौन ने रुसाई जो तुम्हारी आज्ञा नमाने सो दुरात्मा है अबारही उसका राजा दशरथ निग्रह करें तब नारदको माता कहती भई हे देवर्षे तुम हमारे घरका वृतांत नहीं जानो हो इसलिये कहो हो और तुम्हारा जैसा वात्सल्य इस घरसेथा सो तुम विस्तीर्ण किया कठोर चित्त होयगए अब यहां आवना ही तजा अब तुम बातही न बूझो हे भ्रमणप्रिय बहुत दिनमें आए तब नारदने कही हे माता धातुकी खंड द्वीपमें पूर्व विदेह क्षेत्र वहां सुरेंद्र रमणनामा नगर वहां भगवान तीर्थंकर देवका जन्म कल्याणक भया सो इन्द्रादिक देव आए भगवानको सुमेरुगिरि लेगए अद्भुत विभूतिकर जन्माभिषेक किया सो देवाधिदेव सर्व पापके नाशनहारे तिनका अभिषेक मैं देखा जिसे देखे धर्मकी बढ़वारी होय वहां देवों ने आनन्द से नृत्य किया श्री जिनेंद्र के दर्शन विषे अनुराग रूपहै बुद्धि मेरी सो महामन हर धातकी खंड विषे तेईस वर्ष मैंने सुखमे व्यतीत किये तुम मेरी मातासमान सो तुमको चितार इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में आया अब कोइयक दिन इस मंडलही में रहूंगा अब मोहि सब वृतांत कहो तुम्हारे दर्शन को आया हूं तब कौशल्याने सर्व वृतांत कहा भामंडलका यहां आवना और विद्याधरों का यहां आवना और भामंडलको विद्याधरों का राज्य और राजादशरथका अनेक राजावों सहित वैराग्य और रामचन्द्रका सीता सहित और लक्ष्मणके लार विदेशका गमन फिर सीताका वियोग सुग्रीवादिकका राम से मिलाप रावणसे युद्ध लंकेशकी शक्तिका लक्ष्मणके लगना फिर द्रोणमेघ की कन्याका वहां गमन एती खबरतो हमको है फिर क्या भया सो खबर नहीं, ऐसा कह महादुःखित होय अश्रुपात डारती भई

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और विलाप किया हाय हाय पुत्र तू कहां गया शीघ्र आव मोसे वचन कहो, मैं शोकके सागरमें मग्न उसे निकास मैं पुण्यहीन तेरेमुख देखे बिना महा दुःखरूप अग्निसे दाहको प्राप्तभई मुझैसाता देवो और सीता बाला पापी रावण उसे बंदीगृहमें डारी महा दुःखसे तिष्ठती होयगी निर्दई रावण ने लक्ष्मणके शक्ति लगाई सो न जानिए जीवे है के नहीं हाय दोनों दुर्लभ पुत्र हो, हाय सीता तू पतिव्रता क्यों दुःखको प्राप्तभई यह वृतांत कौशल्या के मुख सुन नारद अति खेदखिन्न भया बीण धरतीमें डारदई और अचेत होयगया फिर सचेत होय कहता भया हे माता तुम शोक तजो मैं शीघ्रही तुम्हारे पुत्रोंकी वार्ता चेम कुशल की लाऊंहूं मेरे सब बातमें समर्थ है यह प्रतिज्ञाकर नारद बीणाको उठाय कांधे धरी आकाश मार्ग गमन किया पवन समान है वेगजिसका अनेक देश देखतालंका की ओर चला सो लंकाके समीपजाय विचारी राम लक्ष्मणकी वार्ता कौन भांति जानिवेमे आवे जो रामलक्ष्मण की वार्तापूछिए तो रावणके लोकों से विरोध होय इस लिये रावणकी वार्ता पूछिये तो योग्य है रावण की वार्ता कर उनकी वार्ता जानी जायगी यह विचार नारद पद्म सरोवर गया वहां अंतःपुर सहित अंगद क्रीडा करता था उसके सेवकोंको रावणकी कुशल पूछी वे किंकर सुनकर क्रोधरूप होय कहतेभए यह दुष्टतापस रावण का मिलापी है इसको अंगदके समीप लेगए जो रावणकी कुशलपूछेहै नारदने कहीमेरा रावणसे कछुप्रयो-जन नहीं तब किंकरों ने कही तेराकछु प्रयोजन नहीं तो रावणकी कुशल क्यों पूछेथा तब अंगदने हंसकर कही इस तापसको पद्मनाभिके निकटलेजावो सो नारदको खींचकर लेचले नारद विचारेहै न जानिये कौन पद्मनाभिहै कौशल्याका पुत्र होयतो मोसे ऐसी क्यों होय ये मुझे कहां लेजायहैं मैं संशयमें पडाहूं जिन

For Private and Personal Use Only

शासनके भक्त देव मेरी सहाय करो, अंगदके किंकर इसे विभीषणके मंदिर श्रीराम विराजेथे वहां लेगए श्रीराम दूर से देख इसे नारद जान सिंहासनसे उठ अति आदर किया और किंकरोंसे कही इन से दूर जावो नारद श्रीराम लक्ष्मणको देख अति हर्षित भया आशीर्वाद देकर इनके समीप बैठा तब राम बोले अहो क्षुल्लक कहां सेआए बहुतदिनों में आएहो नीके हो तब नारदने कहा तुम्हारी माताकष्ट के सागर में मग्न है सो वार्ता कहिवे को तुम्हारे निकट शीघ्र ही आया हूं कौशल्या माता महासती जिनमती निरंतर अश्रूपात डारे है और तुम बिना महा दुखी है जैसे सिंही अपने बालक बिना व्याकुल होय तैसे अति व्याकुल भई विलाप करे है जिसका विलाप सुन पाषाण भी द्रवाभूत होय तुमसे पुत्र माता के आज्ञाकारी और तुम होते माता ऐसी कष्टरूपरहे यह आश्चर्य की बात, वह महागुणवती सांझ सकारे में प्राण रहित होयगी जो तुमताहि न देखोगे तो तुम्हारे वियोग रूप सूर्यकर सूक जायगी इसलिये मोपे कृपा करो उठो उसे शीघ्र ही देखो इस संसार में माता समान पदार्थ नहीं तुम्हारी दोनों मातावों के दुख करके केकई सुप्रभा सबही दुखी हैं कौशल्या सुमित्रा दोनों मरण तुल्य होय रही हैं आहार नींद सब गई रात दिन आंसू डारे हैं तिनकी स्थिरता तुम्हारे दर्शन ही से होय जैसे कुरुचि विलाप करे तैसे विलाप करे हैं और सिर और उर हाथों से कूटे हैं दोनों ही माता तुम्हारे वियोग रूप अग्नि की ज्वाला कर जरे हैं तुम्हारे दर्शन रूप अमृत की धारकर उनका आताप निवारो ऐसे नारद के वचन सुन दोनों भाई मातावोंके दुख कर अति दुखी भए शस्त्र डार दीए और रुदन करनेलगे तब सकल विद्याधरोंने धीर्य बंधाया राम लक्ष्मण नारदसे कहतेभए अहो नारद तुमने हमारा बड़ा उपकार किया हम दुराचारी माताको भूलगए सो तुम

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्मरण कराया तुम समान हमारे और वल्लभ नहीं वही मनुष्य महा पुण्यवान् हैं जो माता के विनय में तिष्ठे हैं दास भए माता की सेवा करें जे माता का उपकार विस्मरण करे हैं वे महा कृतघ्न हैं इसभांति माता के स्नेह कर व्याकुल भया है चित्त जिनका दोनों भाई नारदकी अति प्रशंसा करते भए ॥

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मण ने उसी समयअति विभ्रम चित्त होय विभीषण को बुलाया और भामंडल सुग्रीवादि पास बैठ हैं दोनों भाई विभीषण से कहते भए हे राजन् इन्द्र के भवन समान तेरा भवन वहां हम दिन जाते न जाने अब हमारे माता के दर्शन की अति वांछा है हमारे अंग अति ताप रूप हैं सो माता के दर्शन रूप अमृतकर शांतता को प्राप्त होवें अब अयोध्या नगरी के देखबे को हमारा मन प्रवरता है वह अयोध्या भी हमारी दूजी माता है तब विभीषण कहता भया हे स्वामिन जो आज्ञा करोगे सो ही होयगा अवार ही अयोध्या को दूत पठावें जो तुम्हारी शुभवार्ता मातावों को कहें और तुम्हारे आगम की वार्ता कहें जो मातावों के सुख होय और तुमकृपाकर षोडश दिन यहांही विराजो हे शरणागत प्रतिपाल मोसे कृपाकरो ऐसा कह अपना मस्तकराम के चरण तले धरा तब राम लक्ष्मणने प्रमाण करी ॥

अथानन्तर भले भले विद्याधर अयोध्याको पठाए सो दोनों माता महिलपर चढ़ी दक्षिण दिशा की ओर देख रही थीं सो दूरसे विद्याधरों को देख कौशल्या सुमित्रा से कहती भई हे सुमित्रे देख दोय यह विद्याधर पवनके प्रेरे मेघ तुल्य शीघ्र आवे हैं सो हे श्रावके अवश्य कल्याण की वार्ता कहेंगे यह दोनों भाइयों के भेजे आवे हैं तब सुमित्राने कहीतुमजोकहो हो सो ही होय यह वार्ता दोनों मातावों में होयहै तब ही विद्याधर पुष्पों की वर्षा करते आकाश से उतरे अतिहर्ष के भरे भरतके निकट आए राजा भरत अति

प्रमादका भरा इनका बहुतसन्मानकरताभया, औरयहप्रणामकरअपनेयोग्यआसनपरबैठे, अतिसुन्दरहै चित्त जिनका यथावत बृतांत कहतेभए, हे प्रभो राम लक्ष्मणने रावण को हता विभीषणको लंकाका राज्य दीया श्रीराम को बलभद्रपद और लक्ष्मण को नारायणपद प्राप्त भया, चक्ररत्न हाथ में आया तिन दोनों भाइयों के तीन खंड का परम उत्कृष्ट स्वामित्व भया, रावण के पुत्र इन्द्रजीत मेघनाद भाई कुम्भकर्ण जो बंदीगृह में थे सो श्रीराम ने छोड़े उन्होंने जिन दीक्षाधरनिर्वाण पद पाया और गरुडेन्द्र श्रीराम लक्ष्मण से देशभूषण कुलभूषण मुनि के उपसर्ग निवारिवेकर प्रसन्नभए थे सोजबरावण से युद्धभया उसहीसमय सिंह बाण और गरुडबाण दिये, इसभांति राम लक्ष्मण के प्रताप के समाचार सुन भरत भूप अतिप्रसन्न भए तांबूल सुगंधादिक तिन को दिये और इनको लेकर दोनों माताओं के समीप भरत गया, राम लक्ष्मण की माता पुत्रों की विभूति की वार्ता विद्याधरों के मुख से सुन आनंद को प्राप्त भई उसही समय आकाश के मार्ग हजारों बाहन विद्यामई स्वर्ण रत्नादिक के भरे आए और मेघमाला समान विद्याधरों के समूह अयोध्यामें आये जैसे देवों के समूह आवें वे आकाश विषेतिष्ठे नगर विषे नाना रत्नमई बृष्टि करते भए रत्नों के उद्योत कर दशों दिशा विषे प्रकाश भया अयोध्याविषे एक एक गृहस्थके घर पर्वत समान सुवर्ण रत्नों की राशि करी अयोध्या के निवासी समस्त लोक ऐसे अति लक्ष्मीवान किए मानों स्वर्ग के देव ही हैं और नगर में यह घोषणा फेरी कि जिसके जिस वस्तु की इच्छा होय सो लेवो तब सब लोक आय कर कहते भए हमारे घर में अटूट भण्डार भरे हैं किसी वस्तु का बांछा नहीं अयोध्या में दरिद्रता का नाश भया, राम लक्ष्मण के प्रताप रूप सूर्य कर फूल गए हैं मुख कमल जिन के ऐसे अयोध्या के नर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नारी प्रशंसा करते भए और अनेक शिलावट विद्याधर महाचतुर आय कर रत्न स्वर्ण मई मन्दिर बनावते भए और भगवान् के चैत्यालय महामनोग्य अनेक बनाये मानों विन्ध्याचल के शिखर ही हैं हजारों स्तम्भों कर मंडित नाना प्रकार के मंडप रचे और रत्नों कर जडित उन के द्वार रचे जिन मंदिरों पर ध्वजाओं की पंक्ति फरहरें हैं तोरणों के समूह तिन कर शोभायमान जिनमंदिर रचे गिरों के शिखर समान ऊंचे तिन में महा उत्सव होते भए अनेक आश्चर्य कर भरी अयोध्या होती भई लंका की शोभा को जीतनहारी संगीत की ध्वनी कर दशों दिशा शब्दायमान भई कारी घटा समान वन उपवन सहोते भए जिन में नाना प्रकार के फल फूल तिन पर भ्रमर गुंजार करें हैं समस्त दिशाओं विषे वन उपवन ऐसे सोहते भए मानों नन्दन वन ही है अयोध्या नगरी बारह योजन लम्बी नव योजन चौड़ी अतिशोभायमान भासती भई सोलह दिनमें विद्याधर शिलावटों ने ऐसी बनाई जिसका सौ वर्ष तक वर्णनभी न कीया जाय जहां वापीयों के रत्न स्वर्णके सिवान और सरोवरों के रत्नके तट जिनमें कमल फूलरहे हैं ग्रीष्मविषे सदा भर पूर ही रहें जिनके तट भगवान के मंदिर और वृक्षों की पंक्ति अति शोभा को धरे स्वर्गपुरी समान नगरी निरमापी सो बलभद्र नारायण लंका से अयोध्या की ओर गमनको उद्यमी भए गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक जिसदिनसे नारदकेमुखसे राम लक्ष्मणने माताओं की वार्ता सुनी उसी दिनसे सब बात भूल गए दोनों माताओं ही का ध्यान करते भये पूर्व जन्म के पुण्य कर ऐसे पुत्र पाइए पुण्यके प्रभावकर सर्व वस्तुकी सिद्धि होवे है पुण्यकर क्या न होय इसलिये हे प्राणीहो पुण्य में तत्पर होवो जिसकर शोकरूप सूर्यका आताप न होय ॥

इति इक्यासीवां पर्व संपूर्णम् ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथानन्तर सूर्य के उदय होतेही बलभद्र नारायण पुष्पक नामा विमान में चढ़कर अयोध्या को गमन करते भए नानाप्रकार के वाहनों पर आरूढ़ विद्याधरों के अधिपति राम लक्ष्मण की सेवा में तत्पर परिवार सहित संग चले छत्र और ध्वजाओंकर रोकी है सूर्य की प्रभा जिन्होंने आकाशमें गमन करते दूर से पृथिवीको देखते जाय हैं पृथिवी गिरि नगर वन उपवनादिककर शोभित लवण समुद्र को उलंघकर विद्याधर हर्ष के भरे लीला सहित गमन करते आगे आए कैसाहै लवण समुद्र नानाप्रकार के जलचरजीवोंके समूहकर भरा है रामके समीप सीता सती अनेक गुणोंकर पूर्ण मानों साक्षात लक्ष्मीही है सो सुमेरु पर्वतको देखकर रामको पूछतीभई हे नाथ यह जंबूद्वीपके मध्य अत्यन्त मनोज्ञ स्वर्ण कमल समान क्या दीखे है तब राम कहतेभए हे देवी यह सुमेरु पर्वत है जहां देवाधिदेव श्रीमुनि सुव्रतनाथका जन्माभिषेक इन्द्रादिक देवों ने किया कैसे हैं देव भगवान् के पांचो कल्यानकमें जिनके अति हर्ष है यह सुमेरु रत्न मई ऊंचे शिखरोंकर शोभित जगत् में प्रसिद्ध है और फिर आगे आयकर कहते भये यह दंडक वन है जहां लंकापति ने तुमको हरा और अपना अकाज किया इस वनमें चारण मुनिको हमने पारणा करायाथा इसके मध्य यह सुन्दर नदीहै और हे सुलोचने यह वंशस्थल पर्वत जहां देश भूषण कुलभूषण का दर्शन किया उसी समय मुनोंको केवल उपजा और हे सौभाग्यवती कल्याणरूपिणि यह बालखिल्य का नगर जहां लक्ष्मणने कल्याणमाला पाई और यह दशांग नगर जहां रूपवतीका पिता वज्रकर्ण परम श्रावक राज्य करे फिर जानकी पृथिवी पतिको पूछती भई हे कान्ते यह नगरी कौन जहां विमान समान घर इन्द्रपुरी से अधिक शोभा अबतक यह पुरी मैंने कभीभी न देखी ऐसे जानकीके वचन सुन जानकी

For Private and Personal Use Only

नाथ अवलोकन कर कहतेभये हे प्रिये यह अयोध्यापुरी विद्याधर सिलावटोंने बनाई है लंकापुरीकी ज्योति को जीतन हारी फिर आगे आए तब रामका विमान सूर्यके विमान समान देख भरत महा हस्ती परचढ़ अति आनन्द के भरे इन्द्र समान परम विभूति कर युक्त सन्मुख आए सर्वदिशा विमानोंकर आछादित देखी भरतको आवता देख राम लक्ष्मणने पुष्पक बिमान भमि में उतारा भरत गजसे उपर निकटआया स्नेहका भरा दोनों भाइयों को प्रणाम कर अर्घपाद्य करता भया और ये दोनों भाई विमान से उतर भरत से मिले उरसे लगाय लीया परस्पर कुशल वार्तापूछी फिर भरतको पुष्पक विमानमें चढ़ाय लीया। और अयोध्यामें प्रवेश किया अयोध्या रामके आगमन कर अति सिंगारी है और नाना प्रकारकी ध्वजा फर हरे हैं नाना प्रकारके विमान और नानाप्रकारके रथ अनेक हाथी अनेक घोडेतिनकर मार्ग में अवकाश नहीं अनेक प्रकार वादित्रों के समूह बाजते भये शंख झांझ भेरी ढोल धूकल इत्यादि वादित्रोंका कहां लग वर्णन करिये महा मधुर शब्द होतेभये ऐसेही वादित्रों के शब्द ऐसीही तुरंगोंकी हींस ऐसीही गजों की गर्जना सामन्तोंके अट्टहास मायामई सिंह व्याघ्रादिकके शब्द ऐसेही वीणबांसुरीवोंके शब्द तिनकर दशों दिशा व्याप्तभई बन्दीजन बिरद बखाने हैं नृत्यकारिणी नृत्य करें हैं भांड नकल करें हैं नट कला करें हैं सूर्यके रथ समान रथ तिनके चित्राकार विद्याधर मनुष्य पशुवोंके नाना शब्द सो कहां लग वर्णन करिए विद्याधरोंके अधिपतियोंने परमशोभा करी दोनों भाई महा मनोहर अयोध्या विषे प्रवेश करते भए अयोध्या नगरी स्वर्गपुरी समान रामलक्ष्मण इंद्र प्रतीन्द्रसमान समस्त विद्याधर देव समान तिनका कहां लग वर्णन करिए श्रीरामचन्द्रको देख प्रजारूप समुद्र विषे आनन्दकी ध्वनि बढती भई भले २

पुरुष अर्घ्यपाद्य करते भए सोई तरंग भई पैंड पैंड विषे जगतकर पूज्यमान दोनों वीर महाधीर तिनको समस्त जन आशीर्वाद देते भए हे देव जयवन्त होवो वृद्धिको प्राप्त होवो चिरंजीव होवो नादो विरदो इसभांति असीस देतेभए और अति ऊंचे विमानसमान मंदिर तिनके शिखर विषे तिष्ठती सुंदरी फूल गएहैं नेत्रकमल जिनके वे मोतियोंके अक्षत डारती भई, सम्पूर्ण पूर्णमासीके चन्द्रमा समान राम कमल नेत्र और वर्षाकी घटा समान लक्ष्मण शुभ लक्षण तिनके देखवेको नर नारी आवते भए और समस्त कार्य तजे झरोखों में बैठी नारी जन निरखे हैं सो मानों कमलोंके वन फूल रहे हैं और स्त्रियों के परस्पर संघट्टकर मोतियोंके हार टूटे सो मानों मोतियोंकी वर्षा होयहै स्त्रियों के मुख से ऐसी ध्वनि निकसी ये श्रीराम जिनके समीप राजा जनककी पुत्री सीता बैठी इसकी माता राणी विदेहाहै और श्री रामने साहसगति विद्याधर मारा वह सुग्रीवका आकारधर आयाथा विद्याधरोंमें दैत्य कहावे और यह लक्ष्मण रामका लघुवीर इंद्र तुल्य पराक्रम जिसने लंकेश्वरको चक्रकर हता, और यह सुग्रीव जिसने राम से मित्रता करी और यह भामंडल सीता भाई जिसको जन्म से ही देव हर लेगया फिर दया कर छोड़ा सो राजा चन्द्रगति के पला आकाश से वन विषे गिरा राजाने लेकर राणी पुष्पवती को सौंपा देवोंने काननमें कुंडल पहराकर आकाश से डाला सो कुंडलकी ज्योतिकर चन्द्रसमान भासा इस लिये भामण्डल नाम धरा और यह राजा चन्द्रोदय का पुत्र विराधित और यह पवनका पुत्र हनूमान कपिध्वज इस भांति आश्चर्य कर युक्त नगरकी नारी वार्ता करती भई॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण राजमहिल में पधारे सो मन्दिर के शिखर तिष्ठती दोनों माता

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्रों के समीप किये तत्पर जिनके स्तन से दुग्ध झरे महा गुणों की धरणहारी कौशिल्या सुमित्रा और केकई सुप्रभा चारों माता मंगल किये उद्यमी पुत्रों के समीप आईं. राम लक्ष्मण पुष्पक विमान से उतर मातावों को मिले मातावों को देख हर्ष को प्राप्त भए कमल समान हैं नेत्र दोनों भाई लोकपाल समान हाथ जोड़ नम्रीभूत होय अपनी स्त्रियों सहित माताको प्रणाम करते भए वे चारों ही माता अनेकप्रकार असीस देती भईं तिनकी असीस कल्याण की करणहारी है और चारों ही माता राम लक्ष्मण को उर से लगाय परम सुख को प्राप्त भई उन का सुख वे ही जाने कहिवे में न आवे वारम्वार उर से लगाय सिर पर हाथ धरती भई आनंद के अश्रुपात कर पूर्ण हैं नेत्र जिन के परस्पर माता पुत्र कुशल क्षेम सुख दुःख की वार्ता पूछ परम संतोष को प्राप्त भए. माता मनोरथ करती थी सो हे श्रेणिक वांछासे अधिक मनोरथ पूर्ण भए वे माता योधावोंकी जननहारी साधुवोंकी भक्त जिन धर्म में अनुरक्त सुन्दर चित्त चेष्टाओं की सहू सैकड़ों तिन को देख चारों हीं अति हर्षित भईं अपने योधा पुत्र तिनके प्रभाव कर पूर्ण पुण्यके उदय कर अति महिमासंयुक्त जगत्में पूज्य भई राम लक्ष्मण का सागरां पर्यंत कंटक रहित पृथिवी में एक छत्र राज्य भया सकल यथेष्ट आज्ञा करते भए राम लक्ष्मण का अयोध्या में आगमन और मातावों से तथा भाइयों से मिलाप यह अध्याय जो पढ़े सुने शुद्ध है बुद्धि जिसकी सो पुरुष मनवांछित संपदा को पावे पूर्ण पुण्य उपार्जे शुभमति एक ही नियम दृढ़ होय भावन की शुद्धता से करे तो अतिप्रताप को प्राप्त होय पृथिवी में सूर्य समान प्रकाश को करे इसलिये अव्रत तज व्रत नियमादिक धारण करो ॥ इति बयासीवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक नमस्कार कर गौतम गणधर को पूछता भया, हे देव श्रीराम लक्ष्मण

For Private and Personal Use Only

की लक्ष्मी का विस्तार सुनने की मेरे अभिलाषा है तब गौतमस्वामी कहते भए हे श्रेणिक राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न इनका वर्णन कौन कर सके तथापि संक्षेप से कहे हैं राम लक्ष्मण के विभव का वर्णन हाथी घर के बियालीस लाख और रथ एतेही घोड़े नौ कोटि, पयादे ब्यालीस कोटि और तीन खंड के देव विद्याधर सेवक रामके रत्न चार हल मूशल रत्नमाला गदा और लक्ष्मणके सात शंख चक्र गदा खड्ग दण्ड नागशय्या कौस्तुभमणि राम लक्ष्मण दोनों ही वीर महाधीर धनुषधारी और तिनका घर लक्ष्मी का निवास इन्द्र के भवन तुल्य ऊंचे दरवाजे और चतुरशाख नामा कोट महापर्वत के शिखर समान ऊंचा और वैजयन्तीनामा सभा महामनोग्य और प्रसाद कुटुम्बनामा अत्यंतउत्तंग दशोंदिशाके अवलोकन का गृह औरविन्ध्याचलपर्वतसारिखा वर्धमानक नामा नृत्य देखवेका गृह और अनेक सामग्री सहितकार्य करने का गृह और कूकड़े के अंडे समान महाअद्भुत शीतकाल में सोवने का गर्भगृह और ग्रीष्म में दुपहरी के विराजवे का धारा मंडपगृह, इक थंभा महा मनोहर और राणीयों के घर रत्नमई महासुन्दर दोनों भाइयों की सोयवेकी शय्या जिनके सिंहों के आकार पाए पद्मराग मणि के अतिसुन्दर अम्भोदकाण्ड नामा बिजुरी कैसा चमत्कारधरे, वर्षा ऋतु में पौढवे का महिल और महाश्रेष्ठ उगते सूर्य समान सिंहासन और चन्द्रमा तुल्य उज्ज्वल चमर, और निशाकर समान उज्ज्वल छत्र और महा सुन्दर विषमोचक नाम पावड़ी तिनके प्रभाव से सुखसे आकाश में गमन करें और अमोलिक वस्त्र और महादिव्य आभरण अभेद्य बक्तर महा मनोहर मणियों के कुण्डल और अमोघगदा खड्ग कनक बाण अनेक शस्त्र महा सुन्दर महारण के जीतने हारे और पचास लाख हल कोटि से अधिक गाय अक्षय भण्डार और अयोध्या

आदि अनेक नगर जिनमें न्याय की प्रवृति प्रजा सब सुखी संपदा कर पूर्ण और महा मनोहर बन उपवन नाना प्रकार फल पुष्पों कर शोभित और महा सुन्दर स्वर्ण रत्नमई सिवाणों कर शोभित क्रीड़ा करवे योग्य वापिका और पुर तथा ग्रामों में लोकअति सुखी जहां महिल अति सुन्दर और किसाणों को किसी भांति का दुःख नहीं जिनकेगाय भैंसोंके समूह सर्व भांतिकेसुख और लोकपालों जैसे सामन्त और इन्द्र तुल्यविभव के धरण हारे महा तेजवन्त अनेक राजा सेवक और राम के स्त्री आठ हजार और लक्ष्मणके स्त्री देवांगना समान सोलह हजार जिनके समस्त सामग्री समस्त उपकरण मनवांछित सुखके देनहारी श्रीरामने भगवान् के हजारां चैत्यालय कराये जैसे हरिषेण चक्रवर्तीने कराये थे वे भव्यजीव सदा पूजित महा ऋद्धिके निवास देशग्राम नगर वनगृहगली सर्व ठौर २ जिनमंदिर करावतेभये सदासर्वत धर्मकी कथालोक अति सुखी सुकौशलदेशके मध्य इन्द्रपुरी तुल्य अयोध्याजहां अति उतंग जिनमंदिर जिनका वर्णन किया न जाय और क्रीडा करवे के पर्वत मानों देवोंके क्रीड़ा करवे के पर्वतहैं प्रकाशकर मंडित मानों शरदके बादरही हैं अयोध्या का कोट अति उतंग समुद्रकी वेदिका तुल्य महाशिखर कर शोभित स्वर्ण रत्नोंका समूह अपनी किरणों कर प्रकाश कियाहै आकाश विषे जिसने जिसकी शोभा मनसे भी अगोचर निश्चयसेती यह अयोध्या नगरी पवित्र मनुष्योंकर भरी सदाही मनोग्यथी अब श्रीरामचन्द्र ने अति शोभित करी जैसे कोई स्वर्ग सुनिये है जहां महासंपदा है सो मानों रामलक्ष्मण स्वर्गसे आये सो मानों सर्व संपदाले आए आगे अयोध्या थी इसलिये रामके पधारे अति शोभायमान भई पुण्य हीन जीवों को जहांका निवास दुर्लभ अपने शरीरकर तथा शुभ लोकोंकर तथा स्त्री धनादि कर रामचन्द्र ने स्वर्ग तुल्य करी, सर्व ठौर

रामका यश परन्तु सीताके पूर्व कर्म के दोषकर मूढ़ लोग यह अपवाद करें देखो विद्याधरोंका नाथ रावण उसने सीता हरी सो राम फिर ल्याय और गृहमें राखी यह कहां योग्य राम महा ज्ञानी बड़ेकुलीन चक्री महा शूरवीर तिन के घरमें जो यह रीति तो और लोकों की क्या बात इस भांति सब जन वार्ता करें॥

अथानन्तर स्वर्ग लोक को लज्जा उपजावे ऐसी अयोध्यापुरी वहां भरत इन्द्रसमान भोगोंकर भी रति न मानते भए, अनेक स्त्रीयों के प्राण वल्लभ सो निरन्तर राज्यलक्ष्मी से उदास सदा भोगों की निंदा ही करें। भरत का मन्दिर अनेक मन्दिरों कर मण्डित नाना प्रकारकेरत्नों कर निर्मापित मोतियों की माला कर शोभित फल रहे हैं वृक्ष जहां अनेक आश्चर्य का भरा सब ऋतु के विलास कर युक्त जहां वीण मृदंगादिक अनेक वादित्र बाजे देवांगनासमान अतिसुन्दर स्त्रीजनों कर पूर्ण जिस के चौगिरद मदोन्मत्त हाथी गाजें श्रेष्ठ तुरंग हींसे गीत नृत्य वादित्रों कर महामनोहर रत्नों के उद्योत कर प्रकाश रूप महा रमणीक क्रीडा का स्थानक जहां देवों को रुचि उपजे परन्तु भरत संसार से भयभीत अति उदास उसे वहां रुचि नहीं जैसे पारधी कर भयभीत जो मृग सो किसी ठौर विश्राम न लहे भरत ऐसा विचार करे कि मैं यह मनुष्य देह महाकष्ट से पाई सो पानीकेबदबदावत क्षणभंगर और यह यौवन भागों केपुञ्ज समान अतिअसार दोषों का भरा और ये भोग अति विरस इन में सुख नहीं यह जीतव्य स्वप्न समान और कुटुम्बका सम्बन्ध जैसे वृक्षोंपर पक्षियों का मिलाप रात्रि को होय प्रभात ही दशों दिशा को उड़ जावें ऐसा जान जो मोक्ष को कारण धर्म न करे सो जरा कर जर्जरा होय शोक रूप अग्नि कर जरे यह नवयौवन मदों को वल्लभ इस लिये कौन विवेकी राग करे कदाचित न करे यह आपबाद के समूह का

निवास सन्ध्याके उद्योत समान विनश्वर और यह शरीररूपी यन्त्र नाना व्याधिके समूहका घर पिताके वीर्य माता के रुधिर से उपजा इसविषे कहां रति, जैसे इन्धन कर अग्नि तृप्त न होय और समुद्र जल से तृप्त न होय तैसे जीव इन्द्रीयों के विषयों कर तृप्त न होय यह विषय अनादि से अनन्तकाल सेवे परन्तु तृप्तिकारी नहीं यह मूढ़ जीव काम में आसक्त अपना भलाबुरा न जाने पतंग समान विषय रूप अग्नि में पड़ पापी महाभयंकर दुःख को प्राप्त होय यह स्त्रियों के कुच मांस के पिण्ड महाबीभत्स गलगंड समान तिन में कहां रति, और स्त्रियों का मुख रूप बिल दंतरूप कीड़ों कर भरा तांबूल के रस कर लाल छुरी के घाव समान उसमें कहां शोभा और स्त्रियोंकीचेष्टा वायुविकार समान विरूप उन्माद कर उपजी उसमें कहां प्रीति और भोग रोग समान हैं महा खेद रूप दुःख के निवास इन में कहां बिलास और यह गीत वादित्रों के नाद रुदन समान तिन में कहां प्रीति, रुदन कर भी महल गुमटगाजें और गान कर भी गाजें। नारियों का शरीर मल मूत्रादि कर पूर्ण चर्म कर वेष्टित इस के सेवन में कहां सुख होय विष्टा के कुम्भ तिनका संयोग अतिबीभत्स अति लज्जा कारी महा दुःखरूप नारियों के भोग उन में मूढ़ सुख माने देवों के भोग इच्छा मात्र उत्पन्न तिन कर भी जीव तृप्त न भया तो मनुष्यों के भोगों कर कहां तृप्त होय, जैसे डाभकी अणीपर ओसकी बूंद जो उसकर कहां तृषा बुझे और जैसे इंधन का बेचनहारा सिर पर भार लाय दुखी होय तैसे राज्यके भार का धरणहारा दुखी होय, हमारे बड़ों में एक राजा सौदास उत्तम भोजन कर तृप्त न भया और पापी अभक्ष्य का आहार कर राज्य भ्रष्ट भया जैसे गंगा के प्रवाह में मांस का लोभी काग मृतक हाथी के शरीर को चूथता तृप्त न भया समुद्र में डूब

मुवा , तैसे यह विषियाभिलाषी भवसमुद्र में डूबे हैं यह लोक मींडक समान मोह रूप कीच में मग्न लोभरूप सर्प के ग्रसे नरक में पड़े हैं ऐसे चितवन करते शांतचित्त भरत को कैयकदिवसअति विरस से बीते जैसे सिंह महा समर्थ पींजरे में पड़ा खेदखिन्न रहे, उसके बन में जायबे की इच्छा तैसे भरत महा राज के महाव्रत धारिबे की इच्छा, सो घर में सदा उदास ही रहे महाव्रत सर्व दुःख का नाशक, एक दिवस वह शांतचित्त घर तजिबे को उद्यमी भया तब केकई के कहे से राम लक्ष्मणने थांभा, और महा स्नेह कर कहते भए हे भाई पिता बैरागयको प्राप्तभए तब तुझे पृथिवी का राज्यदिया सिंहासन पर बैठाया सो तू हमारा सर्व रघुवंशियों का स्वामी है, लोक का पालन कर यह सुदर्शनचक्र यह देव और विद्याधर तेरी आज्ञा में हैं इस धरा को नारी समान भोग मैं तेरे सिर पर चन्द्रमा समान उज्वल छत्र लिये खड़ा रहूं, और भाई शत्रुघन चमर ढारे और लक्ष्मण सा सुंदर तेरे मंत्री और तू हमारा वचन न मानेगा तोमैं फिर विदेश उठजाऊंगा मृगों की न्याई वन उपवन में रहूंगा, मैं तो राक्षसों का तिलक जो रावण उसे जीत तेरे दर्शनके अर्थ आया अब तू निःकंटकराज्य कर पीछे तेरे साथ मैं भी मुनिव्रत आदरूंगा इसभांति महा शुभचित्त श्रीराम भाई भरत से कहते भए, तब भरत महानिस्पृह विषय रूप विषसेअतिविरक्तकहता भया हे देव मैं राज्य संपदा तुरत ही तजा चाहूं हूं जिसको तज कर शूरवीर पुरुष मोक्ष प्राप्त भए हे नरेन्द्र अर्थ काम महा दुःख के कारण जीवों के शत्रु महापुरुषों कर निन्द्य हैं तिनको मूढ़ जन सेवें हैं, हे हलायुध यह क्षणभंगुर भोग तिन में मेरी तृष्णा नहीं यद्यपि स्वर्ग लोक समान भोग तुम्हारे प्रसाद कर अपने घर में हैं तथापि मुझे रुचि नहीं यह संसार सागर महा भयानक है जहां मृत्य रूप पातालकुण्ड

महा विषम है और जन्म रूप कल्लोल उठे हैं और राग द्वेषरूप नाना प्रकार के भयंकर जलचर हैं और रति अरति रूप क्षार जल कर पूर्ण हैं जहां शुभ अशुभ रूप चोर विचरे हैं सो मैं मुनिव्रत रूप जहाजमें बैठकर संसार समुद्रको तिरा चाहूं हूं हे राजेन्द्र मैं नानाप्रकार योनि विषे अनन्त काल जन्म मरण किए नरक निगोद विषे अनंत कष्ट सहे गर्भ वासादि विषे खेद खिन्नभया, यह वचन भरतके सुन बड़े २ राजा आंखोंसे आंसू डारते भए महाआश्चर्यको प्राप्तहोय गद्गद वाणी से कहते भए हे महाराज पिताका वचन पालो कैयक दिन राज्य करो और तुम इसराज्य लक्ष्मीको चंचल जान उदास भए हो तो कैयक दिन पीछे मुनि हूजियो अबार तो तुम्हारे बडे भाई आएहैं तिनको साता देवो तब भरत ने कही मैं तो पिताके वचन प्रमाण बहुत दिन राज्य संपदा भोगी प्रजाके दुःख हरे पुत्रकी न्याई प्रजा का पालन किया दान पूजा आदि गृहस्थके धर्म आदरे साधुवोंकी सेवा करो अब जो पिताने किया सो मैं किया चाहूं हूं अब तुम इस वस्तुके अनुमोदना क्यों न करो प्रशंसा योग्य वस्तु विषे कहां विवादहै, हे श्रीरामहेलच्छमण तुमने महाभयंकर युद्धमेंशत्रुवोंको जीत अगले बलभद्रवासुदेवकीन्याईं लच्छमी उपार्जी सो तुम्हारी लच्छमी और मनुष्यों कैसी नहीं तथापि राज लक्ष्मी मुझे न रुचे तृप्ति न करे जैसे गंगादि नदियों समुद्रको तृप्त न करे इस लिये मैं तत्वज्ञानके मार्ग विषे प्रवर्तूंगा ऐसा कहकर अत्यन्त विरक्तहोय राम लच्छमणको बिना पूछेही वैराग्य को उठा जैसे आगे भरतचक्रवर्ती उठे। यह मनोहर चालका चलनहारा मुनिराजके निकट जायवेको उद्यमी भया तब अतिस्नेह कर लच्छमणने थांभा भरतका करपल्लव ग्रह लच्छमण खड़ा उसही समय माता केकई आंसू डारती आई और रामकी आज्ञासे दोनों भाइयोंकी राणी सबही

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आई लक्ष्मीसमान है रूप जिनके और पवनकर चंचल जो कमल उस समानहैं नेत्र जिनके, आय भरत को थांभती भई तिनके नाम सीता उर्वशी, भानुमती, विशल्यासुंदरी, रौद्री, रत्नवती, लक्ष्मी, गुणमती, बंधुमती, सुभद्रा, कुबेरा, नलकूवरा कल्याणमाला, चन्द्रनी, मदनोत्सवा, मनोरमा, प्रियनन्दा, चन्द्रकांता, कलावती, रत्नस्थली, सरस्वती, श्रीकांता, गुणसागरा, पद्मावती, इत्यादि सर्व आई जिनकेरूपगुणका वर्णन किया न जाय मनको हरें आकारजिनके दिव्य वस्त्र और आभूषण पहिरे वडेकुलमें उपजी सत्यवादनी शीलवंती पुण्यकी भूमिका समस्त कला विषे निपुण सो भरतके चौगिर्द खडी मानो चारोंओर कमलोंका बनही फूलरहा है भरतका चित्तराज संपदाविषे लगायनेको उद्यमी अति आदर कर भरतको मनोहर वचन कहती भई कि हे देवर हमारा कहा मानों कृपा करो आवोसरोवरों विषे जलक्रीड़ा करो और चिंता तजो जिसबातकर तुम्हारे वड़े भाइयोंको खेद न होय सो करो और तुम्हारी माताको खेदनहोयसो करो और हमतुम्हारीभावज हैं सो हमारी बीनती अवश्य मानिये तुम विवेकी विनयवानहो ऐसा कह भरतको सरोवर परले गईं भरत का चित्तजलक्रीड़ासे विरक्त यहसबसरोवर में पैठीं वह बिनयकरसंयुक्त सरोवरके तीरऊभा ऐसासोहेमानों गिरिराज ही है और वे स्निग्ध सुगंध सुन्दर वस्तुवो कर इसके शरीरके विलेपन करती भई और नाना प्रकार जल केलि करती भई यहउत्तम चेष्टाका धारक काहूपर जल न डारता भया फिर निर्मल जल से स्नान कर सरोवर के तीर जे जिन मंदिर वहां भगवान की पूजा करता भया उस समय त्रैलोक्य मंडन हाथी कारी घटा समान है आकार जिसका सो गजबंधन तुडाय भयंकर शब्द करता निज आवास थकी निकसा अपने मद झरवे कर चौमासे कैसा दिनकरता संता मेघगर्जना समान उसकी गाज सुन कर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अयोध्यापुरी के लोग भय कर कंपायमान भये और अन्य हाथीयों के महावत अपनें अपनें हाथी को ले दूर भागे और त्रैलोक्यमंडन गिरि समान नगर का दरवाजा भंग कर जहां भरत पूजा करते थे वहां आया तब राम लक्ष्मण की समस्त राणी भयकर कंपायमान होय भरत के शरण आई, और हाथी भरत के नजीक आया तब समस्त लोक हाहाकार करते भए और इसकी माता महा विह्वल भई विलाप करता भई पुत्र के स्नेह विषे तत्पर महा शंकावान भई और राम लक्ष्मण गज बंधन विषे प्रवीण गजके पकडने को उद्यमी भए गजराज महा प्रबल समान्यजनोंसे देखा न जाय महा भयंकर शब्द करता अति तेजवान नाग फांसि कर भी रोका न जाय और महा शोभायमान कमल नयन भरत निर्भय स्त्रियों के आगे तिनके बचायवे को खडे सो हाथी भरत को देख कर पूर्व भव चितार शांतचित्त भया अपनी सूण्ड शिथिल कर महा विनयवान भया भरत के आगे ऊभा भरत इसको मधुर बाणी कर कहते भये अहो गज तू कौन कारण क्रोध को प्राप्त भया ऐसे भरत के वचन सुन अत्यंत शांतचित्त निश्चल भया सौम्य है मुख जिसका ऊभा भरत की ओर देखे है भरत महाशूरवीर शरणागत प्रतिपालक ऐसे सोहैं जैसे स्वर्ग विषे देव सोहैं हाथी को जन्मान्तर का ज्ञान भया सो समस्त विकार से रहित होयगया दीर्घनिश्वास डार हाथी मन में विचारे है यह भरत मेरा परममित्र है छठे स्वर्ग विषे हम दोनों एकत्र थे यह तो पुण्य के प्रसाद कर वहां से चयकर उत्तम पुरुष भया और मैंने कर्म के योग से तिर्यंच की योनि पाई कार्य अकार्य के विवेक से रहित महानिंद्य पशुका जन्म है मैं कौन योग से हाथी भया धिक्कार इस जन्म को अब वृथा क्या शोच ऐसा उपाय करूं जिससे आतमकल्याण होय और फिर संसार भ्रमण न करूं शोच कीए क्या

For Private and Personal Use Only

अब सर्वथा प्रकार उद्यमी होय भव दुखसे छूटिवे का उपाय करूं चितारे हैं पूर्व भवजिसने गजेन्द्र अत्यंत विरक्त पाप चेष्टा से पराङ्मुख होय पुण्यके उपार्जन में एकाग्र चित्त भया। यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे राजन पूर्वे जीवनेअशुभ कर्म कीए वे संतापकोउपजावें इसलिये हे प्राणी हो अशुभ कर्मको तज दुर्गति के गमन से छूटो जैसे सूर्य्य होते नेत्रवान मार्ग विषे न अटकें तैसे जिन धर्म के होते विवेकी कुमार्ग में नपड़ें प्रथम अधर्मको तज धर्म को आदरें फिर शुभा शुभ से निवृत्त होय आत्म धर्म से निर्वाण को प्राप्त होवें ॥ इति त्रियासीवां पर्व शम्पूर्णम् ॥

अथानन्तर वह गजराज महा विनयवान धर्म ध्यान का चितवन करता रामलक्षमण ने देखा और धीरे धीरे इसके समीप आए कारी घटा समान है आकार जिसका सो मिष्ट वचन बोल पकड़ा और निकटवर्ती लोकों को आज्ञा कर गजको सर्व आभूषण पहिराये हाथी शांत चित्त भया तबनगरके लोगों की आकुलता मिटी हाथी ऐसा प्रबल जिसकी प्रचंड गति विद्याधरों के अधिपति से न रुके, समस्त नगर में लोक हाथी की वार्ता करें यह त्रैलोक्य मंडन रावण का पाट हस्ती है इसके बल समान और नांही रामलक्षमण ने पकड़ा विकार चेष्टा को प्राप्त भया था अब शांतचित भया सो लोकों के महा पुण्य का उदय है, और इनै जीवोंकी दीर्घ आयु भरत और सीता विशल्या हाथी पर चढ़े बड़ी विभूति से नगरमें आये और अद्भुत वस्त्राभरणसे शोभित समस्त राणी नाना प्रकार के बाहनों पर चढ़ी भरत को ले नगरमें आई, और शत्रुघ्न भाई अश्व पर आरुढ़ महा विभूति सहित महा तेजस्वी भरतके हाथी के आगे नाना प्रकार के वादित्रों के शब्द होते नंदन बन समान बनसे नगर में आए, जैसे देव सुरपुरमें आवें, भरत हाथी

से उतर भोजन शालामें गए साधुओं को भोजन देय मित्र बांधवादि सहित भोजन किया, और भावजों को भोजन कराया फिर लोक अपने अपने स्थान को गए समस्त लोक आश्चर्य को प्राप्त भए, हाथी रूठा फिर भरतके समीप खडा होय रहा सो सबों को आश्चर्य उपजा गौतमगणधर राजा श्रेणिकसे कहे हैं कि हे राजन हाथीके समस्त महावत रामलक्ष्मण पै आए प्रणामकर कहते भए कि हे देव आज गजराज को चौथा दिन है कछू खाय न पीवे न निद्रा करे सर्व चेष्टा तज निश्चल ऊभा है जिस दिन क्रोध किया था और शांत भया उसही दिन से ध्याना रूढ निश्चल बरते है हम नाना प्रकार के स्तोत्रों कर स्तुति करे हैं अनेक प्रिय बचन कहे हैं तथापि आहार पानी न लेय है हमारे बचन कान न धरे अपनी सूण्ड को दांतों में लिये मुद्रित लोचन ऊभाहै मानों चित्राम का गज है जिसे देखे लोकों को ऐसा भ्रमहोय है कि यह कृत्रिम गजहै अथवा सांचा गजहै हम प्रियबचन कहकर आहार दिया चाहे हैं सो न लेय नानाप्रकार के गजोंके योग्य सुन्दर आहार उसे न रुचे चिन्तावान सा ऊभा है निश्वास डारे है समस्त शास्त्रों के वेत्ता महा पंडित प्रसिद्ध गज वैद्यों के भी हाथ हाथी का रोग न आया गंधर्व नानाप्रकारके गीत गावें हैं सो न सुने और नृत्यकारिणी नृत्य करे हैं सो न देखे पहिले नृत्य देखेथा गीत सुनेथा अनेक चेष्टा करेथा सो सब तजी नाना प्रकारके कौतुक होयहैं सो दृष्टि न धरे मंत्र विद्या औषधादिक अनेकउपाय किए सो न लगे आहारविहार निद्रा जल पानादिक सबतजे हम अति बिनती करे हैं सो न माने जैसे रूठे मित्रको अनेक प्रकार मनाइये सो न माने न जानिए इस हाथी के चित्तमें क्याहै काहू बस्तुसे काहू प्रकार रीझे नहीं काहू बस्तुपर लुभावे नहीं खिजाया संता

क्रोध न करे चित्राम कैसा खड़ा है यह त्रैलोक्यमंडन हाथी समस्त सेना का शृंगार है जो आप को उपाय करना होय सो करो हम हाथी का सब वृतांत आप से निवेदन किया, तब राम लक्ष्मण गजराज की चेष्टा सुन अति चिन्तावान् भए मनमें विचारे हैं यह गजबंधन तुड़ाय निसरा कौन प्रकार क्षमा को प्राप्त भया और आहारपानी क्यों न लेय दोनों भाई हाथी का शोच करते भए ॥ ८४वां पर्व पूर्ण भया ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे नराधिपति उस ही समय अनेक मुनियों सहित देशभूषण कुलभूषण केवली जिनका वंशस्थल गिरि ऊपर राम लक्ष्मणने उपसर्ग निवारा था और जिन की सेवा करनेकर गरुडेन्द्र ने राम लक्ष्मणसे प्रसन्न होय उनको अनेक दिव्यशस्त्रदिए जिनकर युद्ध में विजयपाई वे भगवान्केवली सुरअसुरोंकर पूज्य लोक प्रसिद्ध अयोध्याके नन्दन वन समान महेन्द्रोदय नामा वन में महा संघ सहित आय विराजे, तबराम लक्ष्मण भरत शत्रुघन दर्शनके अर्थ प्रभातही हाथीयोंपर चढ़ जायवे को उद्यमी भए और उपजा है जाति स्मरण जिसको ऐसा जोत्रैलोक्यमण्डन हाथी सो आगे आगे चला जाय है जहां वे दोनों केवली कल्याण के पर्वत तिष्ठे हैं वहां यह देवों समान शुभचित्त नरोत्तम गए और कौशल्या सुमित्रा केकई सुप्रभा यह चारों ही माता साधु भक्ति में तत्पर जिनशासन की सेवक स्वर्ग निवासिनी देवीयों समान सैकड़ों राणीयों के युक्त चली और सुग्रीवादि समस्त विद्याधर महा विभूति संयुक्त चले केवली का स्थानक दूर ही से देख रामादिक हाथी से उतर आगे गए, दोनों हाथ जोड़प्रणामकर पूजा करी, आप योग्यभूमिमें विनयसे बैठे तिनके वचन समाधानचित्तहोय सुनतेभए, वेवचनवैराग्य केमूलरागा-दिककेनाशक क्योंकिरागादिक संसारकेकारणऔरसम्यक्दर्शन ज्ञानचारित्रमोक्षके कारणहैं केवलीकी दिव्य

ध्वनिमेंयहव्याख्यानभया कि अणुव्रतरूपश्रावकका धर्मऔरमहाव्रतरूपयतिकाधर्म यह दोनों ही कल्याण के कारण हैं यतिका धर्म साक्षात्‌निर्वाणकाकारण और श्रावकका धर्मपरम्पराय मोक्षका कारणहै ग्रहस्थका धर्म अल्पारम्भ अल्प परिग्रह को लीए कछू सुगमहैऔर यति का धर्म निरारम्भ निपरिग्रह अति कठिन महा शूर वीरों हीसे सधे है यह लोक अनादिनिधन जिसकी आदिअन्त नहीं इसमें यह प्राणी लोभकर मोहित नाना प्रकार कुयोनि में महादुःखको पावे हैं संसार का तारक धर्म ही है, यह धर्म नामा परम मित्र जीवों का महा हितु है जिस धर्म का मूल जीवदया की महिमा कहिवे में न आवे इसके प्रसादसे प्राणी मनवांछित सुख पावे हैं धर्मही पूज्य है जे धर्मका साधन करे वे ही पण्डित हैं यह दया मूल धर्म महाकल्याण को कारण जिनशासन विना अन्यत्र नहीं जो प्राणी जिनप्रणीत धर्म को लगें वे त्रैलोक्य के अग्र जो परम धाम है वहां प्राप्त भए यह जिनधर्म परम दुर्लभ है, इसधर्मका मुख्यफलतो मोक्षही है और गौण फल स्वर्ग में इन्द्रपद और पाताल में नागेन्द्रपद पृथिवी में चक्रवर्त्यादि नरेन्द्रपद यह फल हैं इसभान्ति केवलीनेधर्म का निरूपण कीया, तव प्रस्ताव पाय लक्ष्मण पूछते भए हे प्रभो त्रैलोक्यमण्डन हाथी गजबंधन उपाड़ क्रोधको प्राप्त भया फिर तत्काल शान्त भाव को प्राप्त भया सो कौन कारण, तव केवलीदेशभूषण कहते भए, प्रथम तो यह लोकों की भीड़ देख मदोन्मत्तता थकी क्षोभ को प्राप्त भया फिर भरत को देख पूर्वभव चितार शान्तभाव को प्राप्त भया चतुर्थ काल के आदि इस अयोध्या में नाभिराजा के मरु देवी के गर्भ में भगवान् ऋषभ उपजे पूर्व भव में षोडश कारण भावना भाय त्रैलोक्य को आनन्द का कारण तीर्थंकर पद उपार्जे पृथिवी में प्रकट भए, इन्द्रादिक देवोंने जिनके गर्भ और जन्मकल्याणक कीए

सो भगवान् पुरुषोत्तम तीन लोक कर नमस्कार करवे योग्य पृथिवी रूप पत्नी के पति भए कैसी है पृथिवी रूप पत्नी विन्ध्याचल गिरि वेई हैं स्तन जिस के और समुद्र है कटिमेखला जिस की सो बहुत दिनपृथिवी का राज्यकीया तिनके गुण केवली बिना और कोई जानवे समर्थ नहीं जिनका ऐश्वर्य देख इन्द्रादिक देव आश्चर्य को प्राप्त भए एक समय नीलांजसा नामा अप्सरा नृत्य करती थी सो विलायगई उसे देख प्रतिबुद्धभए वे भगवान् स्वयं बुद्धमहामहेश्वर तिन की लोकांतिक देवों ने स्तुति करी वे जगत् गुरु भरत पुत्रको राज्य देय वैरागी भए इन्द्रादिक देवों ने तप कल्याणक किया, तिलक नामा उद्यानमें महाव्रत धरे तब से यह स्थानक प्रयाग कहाया भगवान् ने एक हजार वर्ष तपकिया सुमेरुसमान अचल सर्वपरिग्रह के त्यागी महातप करते भए तिनके संग चारहजार राजा निकसे, वे परीषह न सह सकनेकर व्रत भ्रष्टभये स्वेच्छा विहारी होय वन फलादिक भखते भए तिनके मध्यमारीच दण्डीका भेषधारता भया उस के प्रसंग से सूर्योदय चन्द्रोदय राजा सुप्रभ के पुत्र के राणी प्रल्हादना की कुक्षि विषे उपजे वे भी चारित्रभ्रष्ट भए मारीच के मार्ग लगे कुधर्म के आचरण से चतुर्गतिसंसार में भ्रमें अनेक भवों में जन्म मरण किए फिर चन्द्रोदय का जीव कर्म के उदय से नागपुरनामा नगर में राजा हरिपति के राणी मनोलता के गर्भ विषे उपजा कुलंकर नाम कहाया फिर राज्यपाया और सूर्योदय का जीव अनेक भव भ्रमण कर उस ही नगर विषे विश्व नामा ब्राह्मण जिस के अग्निकुण्ड नामा स्त्री उस के श्रुतिरति नामा पुत्र भया सो पुरोहित पूर्व जनम के स्नेह से राजा कुलंकर को अतिप्रिय भया, एक दिन राजा कुलंकर तापसियों के समीप जाय था सो मार्ग विषे अभिनन्दन नामा मुनि का दर्शन भया वे मुनि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवधिज्ञानी सर्व लोक के हितु तिन्हों ने राजा से कही तेरा दादा सर्प भया सो तपस्वियों के काष्ठ मध्य तिष्ठे है सो तापसी काष्ठ विदारेंगे सो तू रक्षाकरियो तब यह वहां गया जो मुनिने कहीथी त्योंही दृष्टि पड़ी इसने सर्प बचाया और तापसियों का मार्ग हिंसा रूप जाना तिन से उदास भया मुनिव्रत धरिबे का उद्यम किया तब श्रुतिरति पुरोहित पापकर्मीने कही हे राजन् तुम्हारे कुल विषे वेदोक्त धर्म चला आयाहै और तापसही तुम्हारे गुरू हैं इसलिये तू राजा हरिपतिका पुत्रहै तो वेदमार्ग का ही आचरण कर जिनमार्ग मत आचरे पुत्रको राज्यदेय वेदोक्त विधिकर तू तापस का व्रतधर मैं तेरे साथ तप धरूंगा, इसभांति पापी पुरोहित मूढ़मति ने कुलंकर का मन जिनशासनसे फेरा और कुलंकरकी स्त्री श्रीदामा सो पापिनी परपुरुषा सक्त उसने विचारी कि मेरी कुक्रिया राजाने जानी इस लियतप धारे हैं सो न जानिये तपधरे कै न धरे कदाचित मोहि मारे इसलिये मैंही उसे मारूं तब उसने विषदेयकर राजा और पुरोहित दोनों मारे सो मरकर निकुञ्जिया नामा वन विषे पशुघात के पापसे दोनों सुआ भये फिर मींडकभये मूसाभए मोरभए सर्पभए कूकरभये कर्मरूपपवनके प्रेरे तिर्यंचयोनिमें भ्रमे फिर पुरोहित श्रुति रतिका जीवहस्ती भया और राजा कुलंकरका जीव मींडक भया सो हाथीके पगतले दबकरमुवा,फिर मींडकभयासो सूकेसरोवरमें कागनेभषा सो कूकड़ाभया हाथीमर मार्जार भया उसनेकुक्कुट भषा कुलंकरका जीव तीनजन्म कूकड़ा भयासो पुरोहित के जीव मार्जारनेभषा फिरये दोनों मूसामार्जार मच्छभए सो धीवरने जाल में पकड़ कुहाड़ेनसेकाटे सो मुवे दोनों मरकर राजग्रही नगर विषे बव्हासनामा ब्राह्मण उसकी उल्का नाम स्त्री के पुत्रभये पुरोहित के जीवकानाम विनोद राजाकुलंकरके जीव का नाम रमण सो महादरिद्री और विद्या रहित तब रमण ने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विचारी देशांतर जाय विद्या पढ़ूं तब घरसे निकसा पृथिवी विषे भ्रमता चारों वेद और वेदोंके अंगपढा फिर राजग्रही नगरी आय पहूंचा भाईके दर्शन की अभिलाषा सो नगरके बाहिर सूर्यअस्त होयगया आकाशविषे मेघपटल के योगसे अति अंधकार भया सो जीर्ण उद्यानके मध्य एक यक्ष के मंदिरवहां बैठा और इस के भाई विनोदकी समिधा नामा स्त्री सो महा कुशीली एक अशोकदत्त नामा पुरुषसे आसक्त सो ताने यक्षके मंदिर का संकेत कियाथा सो अशोकदत्तको तो मार्गमें कोटपाल के किंकरने पकड़ा और विनोद खडग हाथमें लिए अशोकदत्तके मारवेको यक्षके मंन्दिर आया सो जार के भुलेसे खडग से भाई रमणको मारा अंधकारमें दृष्टि न पडा सो रमण मुवा विनोद घर गया फिर विनोद भी मुवा सो दोनों अनेक भव धारतेभए फिर विनोदका जीवतो सालवन बनमें आरणभैंसा भया और रमणका जीवअंन्धा रीछ भया सो दोनों दावानलमें जरे मरकर गिरिवन विषे भील भए फिर मरकर हिरण भए सो भीलने जीवते पकडे दोनों अति सुन्दर सो तीसरा नारायण स्वयंभूति श्रीविमल नाथजी के दर्शन जायकर पीछा आवेथा उसने दोनों हिरण लिये और जिन मंदिरके समीप राखे सो राजद्वारसे इनकोमनवांछित आहारामिले और मुनियोंके दर्शनकरे जिनवाणीका श्रवणकरें तिनमें रमणका जीव जो मृगथा सो समाधि मरणकर स्वर्गलोग गया और विनोदका जीव जो मृगथा वह आर्तध्यानसे तिर्यंचगतिमें भ्रमा फिर जंबूद्वीपके भरत क्षेत्र में कंपिल्या नगर वहां धनदत्त नाम वणिक बाईस कोटि दीनारका स्वामी भया चार टांक स्वर्णकी एक दीनार होय है ता वणिकके वाणी नाम स्त्री उसके गर्भ में दूजे भाई रमणका जीव मृग पर्यायसे देव भयाथा सो भूषणनाम पुत्रभया निमित्तज्ञानीने इसके पिता

पद्म पुराण ॥८३८॥

से कहा कि यह सर्वथा जिन दीक्षा धरेगा सुनकर पिता चिन्तावान भया पिताका पुत्रसे अधिक प्रेम इस को घरहीमें राखे बाहिर निकसने न देय सब सामग्री इसके घरमें विद्यमान यह भूषण सुंदर स्त्रियों शोभाय मान वस्त्र आहार नाना प्रकारके सुगन्धादि विलेपन कर घरमें सुखसे रहे इसको सूर्यके उदय अस्त की गम्य नहीं इसके पिताने सैकड़ों मनोरथकर यह पुत्र आया और एकही पुत्रसो पूर्वजन्मके स्नेहसे पिता के प्राणसे भी प्यारा पितातो विनोदका जीव और पुत्र रमणका जीव आगे दोनों भाई थे सो इस जन्म में पिता पुत्र भये संसारकी विचित्रगति है ये प्राणी नटवत नृत्य करे हैं संसारका चरित्र स्वप्नके राज्य समान असारहै एक समय यह धनदत्तका पुत्र भूषण प्रभात समय दुदुंभी शब्द सुन आकाशमें देवोंका आगमन देख प्रति बुद्ध भया यह स्वभावही से कोमलचित्त धर्मके आचार में तत्पर महाहर्ष का भरा दोनों हाथ जोड़ नमस्कार करता, श्रीधर केवलीकी बन्दना को शीघ्रही जाय था सो सिवाण से उतर ते सर्पने डसा देह तज महेन्द्र नाम जो चौथा स्वर्ग वहां देव भया वहां से चयकर पहुकर द्वीप विषे चन्द्रादित्य नामा नगर वहां राजा प्रकाशयश उसके राणी माधवी उसके जगद्युतिनामा पुत्र भया यौवन के उदयमें राज्यलक्ष्मी पाई परंतु संसारसे अतिउदास राज विषे चित्त नहीं सो इसके वृद्ध मन्त्रियों ने कही यह राज्य तुम्हारे कुलक्रमसे चला आवे है सो पालो तुम्हारे राज्य से प्रजा सुख रूप होयगी सो मंत्रियों के हठसे यह राज्य करे राजा विषे तिष्ठता यह साधूवों की सेवा करे सो मुनि दानके प्रभावसे देवकुरु भोग भूमि गया वहांसे ईशान नाम दूजास्वर्ग वहांदेव भया चार सागर दोयपल्ल देवलोक के सुख भोगे देवांगनावों कर मंडित नाना प्रकारके भोग भोग वहां से चयासो जम्बू द्वीप के पश्चिम

विदेह मध्य अचल नामा चक्रवर्ती के रत्न नामराणी के अभिराम नामापुत्र भया सो महा गुणों का समूह अति सुन्दर जिसे देखे सर्वलोक को आनन्दहोय सो बाल अवस्था ही से अति विरक्त जिनदीक्षा धारा चाहे और पिता चाहे यह घरमें रहे तीनहजार राणी इसे परणाई सो वे नानाप्रकारके चरित्र करें परन्तु यह विषय सुखको विष समान गिने केवल मुनि होयवेकी इच्छा अतिशांत चित्त परन्तु पिता घरसें निकसने न देय यह महा भाग्य महाशीलवान महागुणवान महात्यागी स्त्रियोंका अनुराग नहीं इसको वे स्त्री भांति भांति के वचन कर अनुराग उपजावें अति यत्न कर सेवा करें परन्तु इसको संसार की मायागर्त रूपभासे जैसे गर्त में पड़ा जो गज उसे पकड़नहारे मनुष्य नानाभांति ललचावें तथापि गजको गर्त न रुचे ऐसे इसे जगत की माया न रुचे यहपरमशांतिचित्त पिताके निरोधसे अति उदासभया घरमें रहे तिनस्त्रियों के मध्य प्राप्त हुवा तीव्र असि धारा व्रतपाले स्त्रीयोंके मध्यरहना और शीलपालना तिनसें संसर्ग न करना उसका नाम असिधारा व्रत कहिए मोतियों के हार बाजूबंद मुकटादि अनेक आभूषण पंहिरे तथापि आभूषणसे अनुराग नहीं यहमहा भाग्यसिंहासन पर बैठा निरंतर स्त्रियोंको जिनधर्मकी प्रशंसा का उपदेश देय त्रैलोक्य विषे जिनधर्म समान और धर्म नहीं ये जीव अनादिकाल से संसार बन विषे भ्रमण करे हैं सो कोई पुण्य कर्मके योगसे जीवोंको मनुष्य देहकी प्राप्ति होयहै यहबात जानता संता कौनमनुष्य संसार कूपमें पड़े अथवा कौन विवेकी विषको पीवे अथवागिरिके शिखर पर कौन बुद्धि-वान निंद्रा करे अथवामणिकी बांछा कर कौन पंडित नागका मस्तक हाथ से स्पर्शे बिनाशीक ये काम भोग तिन विषे ज्ञानी को कैसे अनुराग उपजे एक जिनधर्मका अनुराग ही महा प्रशंसा योग्यमोक्षके

सुखका कारण है यह जीवों का जीतव्य अत्यन्तचंचल इस विषे स्थिरता कहांजो अवांछिक निस्पृह चित्त हैं तिनके राज्य काज और इंद्रियों के भोगों से कौन कामइत्यादिक परमार्थिक उपदेश रूपइस की वाणी सुनकर स्त्री भी शांतचित्त भई नानाप्रकारके नियम धारती भई यह शीलवान तिनको भी शील विषे दृढ़चित्त करताभया यह राजकुमार अपने शरीर विषे भी रागरहित एकांतरउपवास अथवा बेला तेला आदि अनेक उपवासों कर कर्म कलंक खिपावता भया नानाप्रकारके तपकर शरीरको शोखता भया जैसे ग्रीषमका सूर्य जलको शोखे समाधानरूप है मनजिसका मन इंद्रियोंके जीतवे को समर्थ यह सम्यक दृष्टि निश्चलचित्त महाधीर बीर चौसठ हजार वर्षलग दुर्धर तपकरता भया फिर समाधि मरण कर पंचनमोकार स्मरण करता देहत्याग कर छठा जो ब्रह्मातरे स्वर्ग वहां महाऋद्धि का धारक देवभया और जो भूषणके भवमें इसका पिता धनदत्त सेठया विनोद ब्राह्मणका जीव सो मोह के योगसे अनेक कुयोनियों में भ्रमण कर जम्बू द्वीप भरत क्षेत्र वहां वादम नाम नगर उस विषे अग्निमुख नामा ब्राह्मण उसके शकुना नामा स्त्री मृदुमतिनामा पुत्रभया सो नामतो मृदुमति परन्तुकठोर चित्तअतिदुष्ट सहाजुवारी अविनयी अनेक अपराधों का भरा दुराचारी सो लोकों के उराहने से माता पिता ने घर से निकासा सो पृथिवी में परिभ्रमण करता पोदनापुर गया, किसी के घर तृषातुर पानी पीवने को पैठा सो एक ब्राह्मणी आंसू डारती हुई इसे शीतलजल प्यावती भई, यह शीतल मिष्टजलसे तृप्त हो ब्राह्मणी को पूछता भया तू कौन कारण रुदन करे है तब उसने कही तेरे आकारएक मेरा पुत्र था सो मैं कठोरचित्तहोय क्रोधकर घरसे निकासा सो तैंने भ्रमण करते कहूं देखा होय तो कहो, नील कमल समान तो सारिखा ही

है, तब यह आंसू डार कहता भया हे मात तू रुदन तज वह मैं ही हूं तुझे देखे बहुत दिन भए इसलिये मुझे नहीं पहिचाने है तू विश्वास गह मैं तेरा पुत्र हूं तब वह पुत्र जान राखती भई, और मोह के योग से उसके स्तनों से दुग्ध झरा, यह मृदुमति तेजस्वी रूपवान् स्त्रीयों के मन का हरणहारा धूर्तों का शिरोमणि जुवा में सदाजीते बहुतचतुर अनेककला जाने कामभोग में आसक्त, एक वसंतमाला नामा वेश्या सो उसके अति बल्लभ और इसके माता पिता ने यह काढा था सोइसके पीछे वे अतिलक्ष्मीकोप्राप्त भए पिता कुण्डलादिक अनेक भूषण कर मण्डित और माता कांचीदामादिक अनेक आभरणों कर शोभित सुख से तिष्ठे और एक दिन यह मृदमति संसाक नगर में राजमंदिर में चोरी को गया सो राजा नन्दीवर्धन शशंकमुख स्वामी के मुखधर्मोपदेश सुन विरक्तचित्त भया था सो अपनी राणी से कहे था कि हे देवी मैं मोक्ष सुखका देनहारा मुनि के मुख परम धर्म सुना, ऐ इन्द्रियों के विषय विषसमान दारुण हैं इनके फल नरक निगोद हैं सो मैं जिनेश्वरी दीक्षा धरूंगा तुम शोक मत करियो. इसभांति स्त्रीको शिक्षा देता था सो मृदुमति चोरने यह वचन सुन अपने मनमें विचारी देखो यह राजऋद्धि तज मुनिव्रत धारे है और मैं पापी चोरी कर पराया द्रव्य हरूं हूं, धिकार मोको ऐसे विचार कर निर्मलचित्त होय सांसारिक विषय भोगों से उदासचित्त भया स्वामी चन्द्रमुख के समीप सर्व परिग्रह का त्यागकर जिनदीक्षा आदरी शास्त्रोक्त महादुर्धर तप करतो महाक्षमावान् महाप्राशुक आहार लेता भयो ॥

अथानन्तर दुर्गनाम गिरि के शिखर एक गुणनिधि नाम मुनि चार महीने के उपवास घर तिष्ठे थे वे सुर असुर मनुष्यों कर स्तुति करिबे योग्य महाऋद्धि धारी चारणमुनि थे सो चौमासे का नियम

पूर्ण कर आकाश के मार्ग होय किसी तरफ चले गए, और यह मृदुमति मुनि आहार के निमित्त दुर्ग नामा गिरि के समीप अलोक नामनगर वहां आहार को आया, जूडा प्रमाण भूमि को निरखता जाय था सो नगर के लोकों ने जानी यह वे ही मुनि हैं जो चार महीना गिरि के शिखर रहे यह जान कर अतिभक्ति कर पूजा करी और इसे अति मनोहर आहार दिया नगर के लोकोंने बहुत स्तुति करी इसने जानी गिरिपर चार महीना रहे तिनके भरोसे मेरी अधिक प्रशंसा होय है सो मान का भरा मौन पकड़ रहा, लोकों से यह न कही कि मैं और ही हूं और वे मुनि और थे, और गुरु के निकट मायाशल्य दूर न करी, प्रायश्चित न लिया इसलिये तिर्यंचगति का कारणभया तप बहुत किये थे सो पर्याय पूरी कर छठे देव लोक जहां अभिराम का जीव देव भया था वहां ही यह गया, पूर्वजन्म के स्नेहकर उसके इसके अतिस्नेह भया दोनों ही सामान ऋद्धि के धारक अनेक देवांगनावों कर मंडित सुख के सागर में मग्न दोनों ही सागरों पर्यंत सुख से रमें सो अभिराम का जीव तो भरत भया और यह मृदुमति का जीव स्वर्ग से चय मायाचार के दोषसे इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में उतंग हैं शिखर जिसके ऐसा जो निकुञ्ज नामा गिरि उसमें महा गहन शल्लकी नामा वन वहां मेघकी घटा समान श्याम अतिसुन्दर गजराज भया, समुद्र की गाज समान है गर्जना जिसकी और पवन समान है शीघ्र गमन जिसका महा भयंकर आकार को धरे, अति मदोन्मत्त चन्द्रमा समान उज्ज्वल हैं दांत जिसके, गजराजों के गुणों कर मंडित विजियादिक महा हस्ती तिनके वंश विषे उपजा महाकान्तिका धारक, ऐरावत समान अतिस्वछंद सिंह व्याघ्रादिक का हननहारा महावृक्षों का उपरनहारा पर्वतों के शिखर का ढाहनहारा विद्याधरों कर न

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रहा जाय तो भूमिगोचरियों की क्या बात, जाकी बास से सिंहादिक निवास तज भाग जावें ऐसा प्रबल गजराज गिर के बन विषे नाना प्रकार पल्लव का आहार करता मानसरोवर विषे क्रीडा करता अनेक गजों सहित विचरे कभी कैलाश विषे विलास करे कभी गंगा के मनोहर द्रहों विषे क्रीडा करे और अनेक बन गिरि नदी सरोवरों विषे सुन्दर क्रीडा करे और हजारों हथिनियों सहित रमे, अनेक हाथियों के समूह का शिरोमणि यथेष्ट विचारता ऐसा सोहे जैसा पक्षियोंके समूह कर गरुड सोहे मेघ समानगर्जता मद के नीझरने तिनके झरने का पर्वत सो एक दिन लंकेश्वर ने देखा, सो विद्या के पराक्रम कर महाउग्र उसने यह नीठि नीठि वश किया इसका त्रैलोक्यमंडन नाम धरा सुन्दर हैं लक्षण जिसके जैसे स्वर्ग विषे चिरकाल अनेक अप्सराओं सहित क्रीडा करी तैसे हाथियों की पर्याय में हजारों हथिनियों से क्रीडा करता भया यह कथा देशभूषण केवली राम लक्ष्मण से कहेहैं कि ये जीव सर्व योनि विषे रति मान लेय है निश्चय विचारिये तो सर्व ही गति दुःख रूप हैं अभिराम का जीव भरत और मृदुमति का जीव गज सूर्य्योदय चन्द्रोदय के जन्म से लेकर अनेक भव के मिलापी हैं इसलिये भरत को देख पूर्व भव चितार गज उपशांतचित्त भया और भरत भोगों से पराङ्मुख दूर भया है मोह जिसका अब मुनिपद लिया चाहे है इस ही भव से निर्वाण प्राप्त होवेंगे फिर भव न धरेंगे श्री ऋषभदेव के समय यह दोनों सूर्योदय चन्द्रदय नामा भाई थे, मारीच के भरमाए मिथ्यातत्व का सेवन कर बहुत काल संसार वषे भ्रमण कीया, त्रस स्थावर योनि में भ्रमे चन्द्रोदय का जीव कैयक भव पीछे राजा कुलंकर फिर कैयक भव पैछे रमण ब्राह्मण फिर कैयक भव धर, समाधि मरण करणहारा मृग भया, फिर स्वर्ग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषे देव, फिर भूषण नामा बैश्यका पुत्र फिर स्वर्ग फिर जगद्युति नाम राजा वहां से भोग भूमि फिर दूजे स्वर्ग देव, वहां से चय कर महाविदेह क्षेत्र विषे चक्रवर्ती का पुत्र अभिराम भया, वहां से छठे स्वर्ग देव, देव से भरत नरेन्द्र सो चरम शरीरी हैं फिर देह न धारेंगे, और सूर्योदय का जीव बहुत काल भ्रमण कर राजा कुलंकर का श्रुतिनामा पुरोहित भया फिर अनेक जन्म लेय विनोदनामा बिप्र भया, फिर अनेक जन्म लेय आर्तिध्यान से मरण हारा मृगभया फिर अनेक जन्म भ्रमण कर भूषण का पि॰। धनदत्त नामा वणिक फिर अनेक जन्म धर मृदुमतिनामा मुनि उस ने अपनी प्रशंसा सुन राग किया मायाचार शल्य दूर न करी तप के प्रभाव से छठे स्वर्ग देव भया वहांसेचयकरत्रैलोक्य मंडन हाथी अबश्रावगकेब्रतधर देवहोयगा ये भी निकटभव्य हैइसभांति जीवोंकीगति आगति जान और इन्द्रीयों के सुख विनाशिक जान इस विषम संसार बनको तजकरज्ञानी जीवधर्म विषे रमो, जे प्राणीमनुष्यदेह पाय जिनभाषित धर्म नहींकरेहैं वेअनन्त काल संसार भ्रमण करेगें आत्माकल्याणसेदूर हैं इसलिये जिनवर के मुखसे निकसा दयामईधम मोक्षप्राप्त करने को समर्थ इस के तुल्य और नहीं मोह तिमिरका दूरकरणहारा जीती है सूर्यकी कान्तिजिसने सो मन वचन कायकर अंगीकार करो जिससे निर्मल परम पद पावो ॥ इति पच्चासिवां भव शम्पूर्णम् ॥

अथानन्तर श्रीदेशभूषण केवलीके बचन महापवित्र मोह अन्धकारकेहरणहारे संसार सागर के तारण हारे नानाप्रकारके दुखके नाशक उनमें भरत और हाथीके अनेक भवका वर्णन सुनकर राम लक्ष्मण आदि सकल भव्यजन आश्चर्यको प्राप्त भये, सकल सभा चेष्टारहित चित्राम कैसी होय गई और भरत नरेन्द्र देवेन्द्र समानहै प्रभा जिसकी अविनाशी पदके अर्थ मुनि होयवेकी है इच्छा जिस के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवोंके चरणमें नम्रीभूत है सीस जिसका महा शांत चित्त परम वैराग्य को प्राप्त हुवा तत्काल उठ कर हाथ जोड केवली को प्रणामकर महा मनोहर बचन कहता भया हे नाथ मैं संसार बनमें अनन्त काल भ्रमण करता नाना प्रकार कुयोनियों में संकट सहता दुखी भया अब मैं संसार भ्रमणसे थका मुझे मुक्तिका कारण तुम्हारी दिगम्बरी दीक्षा देवो यह आशारूप चतुर्गति नदी मरणरूप उग्रतरंग को धरे उसमें मैं डूबूं हूं सो मुझे हस्तालम्बन दे निकासो ऐसा कह केवलीकी आज्ञाप्रमाण तजाहै समस्त परिग्रहजिसने अपने हाथोंसे सिरके केश लोंचकिये परमसम्यक्ती महाव्रतको अंगीकार जिनदीक्षाधर दिगम्बर भया, तब आकाशमें देव धन्य २ शब्द कहतेभए और कल्पवृक्षोंके फूलोंकी वर्षाकरते भए, हजारसे अधिक राजा भरतके अनुरागसे राजऋद्धि तज जिनेंद्री दीक्षा धरते भये और कैयक अल्पशक्ति थे वे अणुव्रतधर श्रावक भये, और माता केकई पुत्रका वैराग्य सुन आंसुवोंकी वर्षा करती भई व्याकुलचित होय दौड़ी सो भूमिमें पडी महामोहको प्राप्तभई पुत्रकी प्रीतिकर मृतकसमान होय गयाहै शरीर जिस का सो चन्दनादिकके जलसे छांटी तोभी सचेत न भई घनीवेरमें सचेतभई जैसे वत्स बिना गाय पुकारे तैसे बिलाप करती भई, हाय पुत्र महा विनयवान गुणोंकी खान मनको आल्हादका कारण हाय तू कहां गया, हे अंगज मेरा अंग शोकके सागरमें डूबे है सो थांभ तो सारिखे पुत्र बिना मैं दुःखके सागरमें मग्न शोककी भरी कैसे जीऊंगी हाय हाय यह क्या भया इसभांति विलाप करती माता श्री राम लक्ष्मण ने संबोधकर विश्रामको प्राप्तकरी अति सुन्दर बचनोंसे धीर्य बंधाया हे मात भरत महा विवेकी ज्ञानवान है तुम शोकतजो हम क्या तुम्हारे पुत्र नहीं तुम्हारे आज्ञाकारी किंकर हैं और कौशल्या सुमित्रा सुप्रभा नबहुत

For Private and Personal Use Only

संबोधी तब शोकरहितहोय प्रतिबोधको प्राप्तभई शुद्ध है मन जिसका अपने अज्ञान की बहुत निन्दा करती भई, धिक्कार इस स्त्री पर्यायको यह पर्याय महादोषोंकी खानहै अत्यन्त अशुचि वीभत्स नगर की मोरी समान अब ऐसा उपाय करूं जिससे स्त्री पर्याय न धरूं, संसार समुद्रको तिरूं यह महा ज्ञान वान सदाही जिनशासनकी भक्तिवन्त थी अब महा वैराग्यको प्राप्त होय पृथ्वी मती आर्यिका के समीप आर्यिका भई एक श्वेतवस्त्र धारा और सर्व परिग्रह तज निर्मलसम्यक्तको धरती सर्व आरम्भ टारती भई इसके साथ तीनसै आर्यकाभई यह विवेकी परिग्रह तजकर वैराग्य धार ऐसी सोहती भई जैसी कलंक रहित चन्द्रमाकी कला मेघपटल रहित सोहे श्री देशभूषण केवली के वचन सुन अनेक मुनि भये अनेक आर्यिका भई तिन कर पृथ्वी ऐसी सोहती भई जैसे कमलों कर सरोवरी सोहे और अनेक नर नारी पवित्र हैं चित्त जिनके तिन्होंने नाना प्रकारके नियम धर्म रूप श्राविकाके व्रत धारे, यह युक्त ही है कि सूर्य के प्रकाश कर नेत्रवान् वस्तुका अवलोकन करे ही करे ॥ इति छियासीवां पर्व पूर्ण भया ॥

अथानन्तर त्रैलोक्यमण्डन हाथी अतिप्रशांतचित्त केवली के निकट श्रावक के व्रत धरता भया सम्यक् दर्शन संयुक्त महाज्ञानी शुभक्रिया में उद्यमी हाथी धर्म में तत्पर होता भया, पंद्रह पंद्रह दिन के उपवास तथा मासोपवास करता भया सूके पत्रों कर पारणा करता भया हाथी संसार से भयभीत उत्तम चेष्टा में परायण लोकोंकर पूज्य महा विशुद्धताको धरे पृथिवी में विहार करता भया कभी पक्षोपवास कभी मासोपवास के पारणे ग्रामादिक में जाय तो श्रावक उसे अतिभक्तिसे शुद्ध अन्न शुद्धजल कर पारणा करवावते भए, क्षीण होय गया है शरीर जिसका वैराग्यरूप खूंटे से बंधा महाउग्रतप करता भया

यमनियम रूप है अंकुश जिसकै वह फिर महाउग्रतपका करणहारा गजशनैः शनैः आहारकात्याग कर अंत संलेषणाधरशरीर तज छठे स्वर्गदेवहोता भया, अनेकदेवांगनाकरयुक्तहारकुण्डलादिक आभूषणोंकर मण्डित पुण्य के प्रभावसे देवगति के सुख भोगता भया, छठे स्वर्गही से आया था और छठेही स्वर्ग गया परंपराय मोक्ष पावेगा, और भरत महामुनि महातपके धारक पृथिवीके गुरु निर्ग्रंथ जिनके शरीरकाभी ममत्वनहीं वेमहा धीर जहां पिछिला दिन रहे वहां ही बैठरहैं जिनको एक स्थान न रहना, पवन सारिखे असंगी पृथिवीसमान क्षमा को धरे, जल समाननिर्मल, अग्नि समान कर्म काष्ठके भस्मकरनहारे औरआकाश समान अलेपचार आराधनामें उद्यमी तेराप्रकारचारित्र पालते विहारकरतेभए निर्ममत्वस्नेहके बंधनसे रहित मृगेंद्र सारिखे निर्भय समुद्र समान गंभीर सुमेरु समान निश्चल यथाजातरूप के धारक सत्य का वस्त्र पहरे क्षमा रूप खड्ग को धरे वाईस परीषह के जीतनहारे महातपस्वी समान हैं शत्रु मित्र जाके और समान हैं सुख दुख जिनके और समान हैं तृणरत्न जिनके महा उत्कृष्ट मुनि शास्त्रोक्त मार्गचलते भए तप के प्रभाव कर अनेक ऋद्धि उपजी सूई समान तीक्ष्ण तृणकी सली पावों में चुभें हैं परन्तु उनकों कछु सुध नहीं और शत्रुवोंके स्थानक में उपसर्ग सहिबे निमित्त विहार करतेभए तपके संयमके प्रभावकर शुक्ल ध्यान उपजा शुक्लध्यान के बलकर मोह का नाश कर ज्ञानावर्ण दर्शनावर्ण अंतराय कर्महर लोकालोक का प्रकाश करण हारा केवलज्ञान प्रकट भया फिर घातिया कर्म भी दूर कर सिद्धपद को प्राप्त भये जहां से फिर संसार विषे भ्रमण नहीं, यह केकइ के पुत्र भरत का चरित्र जो भक्ति कर पढ़े सुने सो सर्व क्लेशसेरहित होय यश कीर्ति बल विभूति आरोग्यता को पावे और स्वर्ग मोक्षपावे यह परम चरित्र महा उज्वल

श्रेष्ठ गणोंकर युक्त भव्यजीव सुनों जिससे शीघ्र ही सूर्य्य से अधिक तेज के धारक होवो ॥ इति सतासीवां पर्व

अथानंतर भरत के साथ जे राजा महाधीर वीर अपने शरीर विषे भी जिनका अनुराग नहीं घर से निकस जैनेश्वरी दिक्षा धर दुर्लभ वस्तु को प्राप्त भये तिनमें कैयकन के नाम कहिये हैं हे श्रेणिक तू सुन सिद्धार्थ, रतिवर्धन, मेघरथ, जांबूनंद, शल्य, शशांक, निरसनंदन, नंद, आनंद, सुमति, सदाश्रय, महाबुद्धि सूर्य्य, इंद्र ध्वज, जनवल्लभ, श्रुतधर, सुचंद्र, पृथिवीधर, अलक सुमति, अक्रोध, कुण्डर, सत्यवाहन हरिवाग मित्र धर्ममित्र, पूर्णचंद्र प्रभाकर, नघोष, सुनंद, शांति, प्रियधर्मा इत्यादि एक हजारसे अधिक राजा वैराग्य धारते भये विशुद्धकुल विषे उपजे सदा आचार विषे ततपर पृथिवी विषे प्रसिद्ध है शुभ चेष्टा जिनकी ये महाभाग्य हाथी घोड़े रथ पयादे स्वर्ण रत्न रणवास सर्वतज कर पंच महाव्रत धारते भये, राज्य को तृणवत तजा महा-शांत नानाप्रकार योगीश्वरऋधिके धारक भए आत्मध्यान के ध्याता कैयक तो मोक्ष गए कैयक अहमिंद्र भए कैयक उत्कृष्ट देव भए भरत चक्रवर्ती सारिखे दशरथके पुत्र भरत तिनको घर से निकसे पीछे लक्ष्मण तिनके गुण चितार चितार अतिशोकवंत भया अपना राज्यशून्य गिनता भया शोक कर व्याकुल है चित्त जिस्का, अति विषादरूप आंसू डारता भया दीर्घ निश्वास नाखता भया नील कमल समान है कांति जिस की सो कुमलाय गया, विराधित की भुजावों पर हाथ धरे उसके सहारे बैठा मंद मंद वचन कहे, वे भरत महाराज गुण हो हैं आभूषण जाके सो कहां गए जिन तरुण अवस्था में शरीर से प्रीति छाडी इन्द्र समान राज और हम सब उनके सेवक वे रघुवंश के तिलक समस्त विभूति तजकर मोक्ष के अर्थी महादुद्धर मुनिका धर्म धारते भए शरीर तो अतिकोमल कैसे परीषह सहेंगे धन्य वे और श्रीराम महा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञानवान् कहते भए' भरत की महिमा कही न जाय जिनका चित्त कभी संसार में न रचा जो शुद्धबुद्धि है तो उनकी ही है और जन्म कृतार्थ है तो उनका ही है, जे विष के भरे अन्न की न्याई राज्य को तज कर जिनदीक्षा धरते भए वे पूज्य प्रशंसायोग्य परमयोगी उनका वर्णन देवेंद्र भी न करसके तो औरों की क्या शक्ति वे राजा दशरथ के पुत्र केकईके नंदन तिनकी महिमा हम से न कही जाय इसभांति भरतके गुण गावते एक महूर्त सभा में तिष्ठे समस्त राजा भरत ही के गुण गाया करें, फिर श्रीराम लक्ष्मण दोनों भाई भरत के अनुराग कर अति उद्वेग रूप उठे सब राजा अपने अपने स्थानक गए घर घर भरत की चर्चा सब ही लोक आश्चर्य को प्राप्त भए यह तो उनकी यौवन अवस्था और यह राज्यऐसे भाई सब सामिग्री पूर्ण ऐसे ही पुरुष तजें सोई परम पदको प्राप्त होवे इसभांति सब ही प्रशंसा करते भए ॥

अथानन्तर दूजे दिन सब राजा मंत्रकर रामपै आए नमस्कारकर अतिप्रीतिसे वचनकहतेभए, हे नाथ जो हम असमझहैं तो आपकेऔर बुद्धिवन्तहैं तो आपकेहम पर कृपाकर एक बीनती सुनो हे प्रभो हमसब भूमि गोचरी औरविद्याधर आपका राज्याभिषेककरें, जैसे स्वर्ग में इन्द्रका होय हमारेनेत्रऔरहृदय सफल होवें तुम्हारे अभिषेककेसुख कर पृथिवी सुखरूप होय, तबराम कहते भए तुम लक्ष्मणका राज्याभिषेक करो वह पृथिवी का स्तंभ भूधर है समस्त राजावों का गुरु वासुदेव राजावों का राजा सत्य गुण ऐश्वर्य का स्वामी सदा मेरे चरणों को नमे इस उपरांत मेरे राज्य कहां तब वे समस्त श्रीराम की अतिप्रशंसा कर जय जयकार शब्द कर लक्ष्मणपै गए और सब वृत्तांत कहा तब लक्ष्मण सबों को साथलेय रामपै आया और राम आइ नमस्कार कर कहता भया कि हे धीर इसराज्य के स्वामी आपही हो मैंतो आपका आज्ञा

For Private and Personal Use Only

कारी अनुचर हूं तब रामने कहा, हे वत्स तुम चक्र के धारा नारायण हो इसलिये राज्याभिषेक तुम्हाराही योग्य है, सो इत्यादि वार्तालाप से दोनों का राज्याभिषेक ठहरा फिर जैसी मेघ की ध्वनि होय तैसी वादित्रों की ध्वनि होती भई दुन्दुभी वाजे नगारे ढोल मृदंग वीण तमूरे झालरझांझ मजीरे बांसुरीशंख इत्यादि वादित्र वाजे और नानाप्रकारके मंगल गीत नृत्य होते भए, याचकों को मनवांछित दानदीए सवों को अति हर्ष भया दोनों भाई एक सिंहासन पर विराजे स्वर्ण रत्नो के कलश जिनके मुख कमलोंसे ढके पवित्र जलसे भरे तिनकर विधि पूर्वक अभिषेक भया, दोनों भाई मुकट भुजबन्ध हारकेयूर कुण्डलादिक कर मण्डित मनोग्य वस्तु पाहरे सुगन्धकर चर्चित तिष्ठे विद्याधर भूमिगोचरी तथा तीन खण्डके देव जय जय शब्द कर कहते भए यह बलभद्र श्रीराम हलमूसल के धारक और यह वासुदेव श्रीलक्ष्मण चक्रके धारक जयवन्त होवे दोनों राजेन्द्रोंका अभिषेक कर विद्याधर बड़े उत्साहसे सीता और विशल्याका अभिषेक करावते भए, सीता रामकी राणी और विशिल्या लक्ष्मणकी तिनका अभिषेक विधि पूर्वक होता भया।

अथानन्तर बिभीषणको लंका दई सुग्रीवको किहकंधापुर हनूमानको श्रीनगर और हनूरुह द्वीप दिया विराधितको नागलोकसमान अलंकापुर दिया, नलनीलको किकंधूपुर दिया समुद्रकी लहरोंके समूह कर महाकौतुक रूप और भामंडलको बैताडकी दक्षिणश्रेणी विषे रथनूपुर दिया समस्त विद्याधरोंका अधिपति किया और रत्नजटीको देवोपुनीत नगर दिया औरभी यथा योग्य सबों को स्थान दिये अपने पुण्यके उदय योग्य सबही रामलक्ष्मण के प्रतापसे राज्य पावते भए। रामकी आज्ञाकर यथा योग्य स्थानकमें तिष्ठे। जे भव्यजीव पुण्य के प्रभावका जगतमें प्रसिद्ध फल जान धर्म में रतिकरे हैं वे मनुष्य सूर्य से अधिक ज्योति को पावे हैं॥ इति अठासीवां पर्व संपूर्णम्॥

For Private and Personal Use Only

अथानन्तर राम लक्ष्मण महाप्रीतिसे भाई शत्रुघ्न से कहते भए जो तुमको रुचे सो देश लेवो जो तुम आधी अयोध्या चाहो तो आधी अयोध्या लेवो अथवा राजगृह अथवा पोदनापुर अथवा पौंड्रसुन्दर इत्यादि सैकड़ा राजधानी हैं। तिन में जो नीकी सो तुम्हारी तब शत्रुघ्न कहता भया मुझे मथुरा का राज्य देवो, तब राम बोले हे भ्रातः वहां राजा मधुका राज्य है और वह रावणका जमाई है अनेक युद्धों का जीतनहारा उस को चमरेन्द्र ने त्रिशूल रत्न दिया है सो ज्येष्ठ के सूर्य समान दुस्सह है और देवोंसे दुर्निवार है उसकी चिन्ता हमारे भी निरन्तर रहेहै वह राजा मधु हरिवंशियों के कुल रूपी आकाश विषे सूर्य समान प्रतापी है जिसने वंशमें उद्योत किया है और जिसका लवणार्णव नामा पुत्र विद्याधरों से भी असाध्य पिता पुत्र दोनों महाशूरवीर हैं इसलिये मथुरा टार और राज्य चाहो सोही लेवो तब शत्रुघ्न कहता भया बहुत कहिबेसे क्या मुझे मथुराही देवो जो मैं मधुके छात्ते की न्याईं मधुको रण संग्राम में न तोडलूं तो दशरथका पुत्र नहीं जैसे सिंहोंके समूह को अष्टापद तोड़ डारे तैसे उसके कटक सहित उसे न चूर डारूं तो मैं तुम्हारा भाई नहीं, जो मधुको मृत्य प्राप्त न करूं तो मैं सुप्रभाको कुक्षि में उपजाही नहीं इस भांति प्रचंड तेजका धरणहारा शत्रुघ्न कहता भया तब समस्त विद्याधरोंके अधिपति आश्चर्यको प्राप्त भए और शत्रुघ्नकी बहुत प्रशंसा करतेभए तब शत्रुघ्न मथुरा जायबेको उद्यमी भया तब श्रीराम कहतेभए हे भाई मैं एक याचना करूंहूं सो मुझे दक्षिणा देवो तब शत्रुघ्न कहताभया सबके दाता आपहो सब आपके याचक हैं आप याचो से वस्तु क्या मेरे प्राणही के नाथ आप हो तो और वस्तुकी क्या बात एक मधु से युद्ध तो मैं न तजूं और कहो सोही

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करूं तब श्रीरामने कही हे वत्स तू मधुसे युद्ध करे तो जिससमय उसके हाथ त्रिशूलरत्न न होय उससमय करियो तब शत्रुघ्नने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा ऐसाकह भगवानकीपूजाकर नमोकार मन्त्र जप सिद्धोंको नमस्कारकर भोजन शालामेंजाय भोजनकर माताकेनिकटआय आज्ञामांगी तब माता अति स्नेहसे इसके मस्तकपर हाथधर कहती भई हे वत्स तू तीक्षण बाणोंकर शत्रुवोंके समूहको जीत वहयोधा की माता अपने योधापुत्रसे कहती भई हे पुत्र अबतक संग्राममें शत्रुवों ने तेरी पीठ नहीं देखी है और अब भी न देखेंगे तू रण जीत आवेगा तब मैं स्वर्ण के कमलों कर श्री जिनेन्द्रकी पूजा कराऊंगी वे भगवान त्रैलोक्य मंगलके कर्ता आप महा मंगल रूप सुर असुरोंकर नमस्कार करबे योग्य रागादिक के जीतन हारे तुझे मंगल करें वे परमेश्वर पुरुषोत्तम अरहन्त भगवन्त जिनने अत्यन्त दुर्जय मोह रिपु जीता वे तुझे कल्याणके दायकहोवें जे सर्वज्ञत्रिकाल दर्शी स्वयं बुद्धितिनके प्रसाद से तेरी विजय होवे जे केवल ज्ञानकर लोकालोकको हथेलीमें आवला की न्याईं देखेहैं वे तुझे मंगलरूपहोवें हे वत्स वेसिद्धपरमेष्ठी अष्टकर्म से रहित अष्टगुण आदि अनन्त गुणोंकर विराजमान लोकके शिखर तिष्ठे वे सिद्ध तुझे सिद्धि के कर्ता होवें और आचार्य भव्यजीवों के परम आधार तेरे विघ्न हरें जे कमल समान अलिप्त सूर्य समान तिमिर हर्ता और चन्द्रमा समान आल्हाद के कर्ता भूमि समान क्षमावान सुमेरु समान अचल समुद्र समान गंभीर आकाश समान अखंड इत्यादि अनेक गुणोंकर मंडित हैं और उपाध्याय जिनशासन के पारगामी तुझे कल्याण के कर्ता होवें और कर्म शत्रुवों के जीतवेको महा शूरवीर बारह प्रकार तपकर जे निर्वाणको साधे हैं वे साधु तुझे महावीर्य के दाता होवें इसभांति विघ्न की हरणहारी मंगल की करणहारी माता आशीश

For Private and Personal Use Only

देती सो शत्रुघ्न माथे चढ़ाय माताको प्रणामकर बाहिर निकसा स्वर्णकी सांकलोंकर मंडित जो गज उस पर चढ़ा ऐसा सोहता भया जैसे मेघमाला ऊपर चन्द्रमा सोहे और नाना प्रकार के वाहनों पर आरूढ़ अनेक राजा सँग चले सो तिन कर ऐसा सोहता भया जैसा देवों कर मण्डित देवेंद्र सोहे. राम लक्ष्मण को भाई से अधिक प्रीति सो तीन मंज्जिल भाई के संग गये, तब भाई कहता भया। हे पूज्य पुरुषोत्तम पीछे अयोध्या जावो मेरी चिन्ता न करो मैं आप के प्रसाद से शत्रुवों को निस्सन्देह जीतूं गा तब लक्ष्मण ने समुद्रावर्त नामा धनुष दिया प्रज्वलित हैं मुख जिन के पवन सारिखे वेग को धरे ऐसे बाण दिये और कृतान्तवक्रको लारदिया और लक्ष्मण सहित रामपीछेअयोध्या आये परन्तुभाईकीचिन्ताविशेष ॥

अथानन्तर शत्रुघ्न महाधीर बीर बड़ी सेना कर संयुक्त मथुरा की तरफ गया अनुक्रम से यमुना नदी के तीर जाय डेरे दिये जहां मन्त्री महासूक्ष्मबुद्धि मन्त्र करते भये देखो, इस बालक शत्रुघ्न की बुद्धि जो मधु के जीतवे की बांछा करी है। यह नयवर्जित केवल अभिमान कर प्रवर्ता है, जिस मधुने पूर्व राजा मान्धाता रणमें जीता सो मधु देवोंकर विद्याधरोंसे न जीता जाय, उसे यह कैसे जीतेगा राजा मधु सागर समान है उछलंत पियादे वेई भये उतंग लहर और शत्रुवों के समूह वेई भये ग्राह तिनकर पूर्ण ऐसे मधुसमुद्र शत्रुघ्नको भुजावोंकर तिरा चाहे है सो कैसे तिरेगा, तथा मधुभूपति भयानक बन समानहै उस विषे प्रवेशकर कौन जीवता निसरे कैसा है राजा मधु रूप बन पयादोंके समूह वेई हैंवृक्ष जहां और माते हाथियोंकर महाभयंकर और घोड़ोंके समूह वेई हैं मृग जहां, ये बचन मंत्रियों के सुन कृतांतवक्र कहता भया। तुम साहस छोड़ ऐसे कायरताके बचन क्यों कहो हो यद्यपि वह राजा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मधु चमरेंद्र कर दिया जो अमोघ त्रिशूल उसकर अति गर्वितहै। तथापि उस मधुको शत्रुघन सुन्दर जीतेगा जैसे हाथी महाबलवानहै और सूंडकर वृक्षोंको उपाडे है मद करे है तथापि उसे सिंह जीते हैं यह शत्रुघन लक्ष्मी और प्रताप कर मंडितहै महाबलवानहै शूरवीरहै महा पंडित प्रवीणहै और इसके बड़ाई श्रीरामलक्ष्मणहैं और आप सबही भले २ मनुष्य इसके संग हैं इस लिये यह शत्रुघ्न अवश्य शत्रु को जीतेगा जब ऐसे बचन कृतांतवक्रने कहे तब सबही प्रसन्नभए और पहिलेही मंत्रीजनोंने जो मथुरामें हलकारे पठाये थे वे आयकर सर्व वृतांत शत्रुघ्नको कहते भए। हे देव मथुरानगरीकी पूर्व दिशाकी ओर अत्यंत मनोग्य उपबनहै वहां रणवास सहित राजा मधु रमे है राजाके जयन्ती नाम पटराणी हैं उस सहित बनक्रीड़ा करे है जैसे स्पर्श इंद्रिय के वश भया गजराज बन्धनमें पड़े है, तैसे राजा मोहित भया विषयों के बन्धनमें पडाहै, महा कामी आज छठा दिनहै कि सर्व राज्यकाज तज प्रमादके वश भया बनमें तिष्ठे है कामान्ध मूर्ख तुम्हारे आगमको नहीं जाने है, और तुम उसके जीतवेकी बांछा करो हो इसको उसे सुध नहीं और मंत्रियोंने बहुत समझाया सो काहूकी बात धारे नहीं, जैसे मूढ रोगी वैद्यकी औषध न धारे इस समय मथुरा हाथ आवे तो आवे और कदाचित मधुपुरीमें धसा तो समुद्रसमान अथाहहै, ये बचन हलकारोंके मुखसे शत्रुघ्न सुनकर कार्यमें प्रवीण उसही समय बलवान योधावोंके सहित दौड कर मथुरा गया, अर्धरात्रिके समय सर्वलोक प्रमादी थे और नगरी राजा रहितथी, सो शत्रुघन नगरमें जाय पैठा जैसे योगी कर्मनाश कर सिद्धपुरीमें प्रवेशकरे, तैसे शत्रुघन द्वारको चरकर मथुरामें प्रवेश करता भया मथुरा महामनोग्यहै तब बन्दीजनोंके शब्द होते भये जो राजा दशरथका पुत्र शत्रुघन जयवंत होवे ये

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्द सुनकर नगरीके लोक परचक्रका आगम जान अति व्याकुलभए, जैसे लंकामें अंगदके प्रवेशसे अतिव्याकुलता भईथी तैसे मथुरामें व्याकुलताभई। कईएक कायर हृदयकी धरनहारी स्त्रीथीं तिन के भयकर गर्भपात होयगये, और कैयक महाशूरवीर कलकलाट शब्द सुनतत्काल सिंहकी न्याई उठे, शत्रुघन राजमंदिरगया आयुधशाला अपने हाथकरलीनी औरस्त्री बालक आदिजे नगरीके लोक अतित्रासकोप्राप्त भये थे तिन को महामधुर वचन कर धीर्य बन्धाया कि यह श्रीराम का रज्य है यहां किसी कोदुःखनहीं तब नगरी के लोग त्रासरहित भये और शत्रुघ्नको मथुरा विषे आया सुन राजा मधु महाकोप कर उपवन से नगर को आया सो मथुरा विषे शत्रुघ्न के सुभटों की रक्षा कर प्रवेश न कर सका जैसे मुनिके हृदय में मोह प्रवेश न कर सके, नाना प्रकार के उपाय कर प्रवेश न पाया और त्रिशूल से भी रहित भया तथापि महा अभिमानी मधुने शत्रुघन से संधि न करी यद्ध ही को उद्यमी भया. तब शत्रुघन के योधा युद्ध को निकसे दोनों सेना समुद्र समान तिनमें परस्पर युद्ध भया, रथों के तथा हाथियों के तथा घोड़ों के असवार परस्पर युद्ध करते भए और परस्पर पयादे भिड़े नानाप्रकार के आयुधों के धारक महासमर्थ नाना प्रकार आयुधों कर युद्ध करते भए उस समय पर सेनाके गर्बको न सहता संता कृतांतवक्र सेनापति पर सेना में प्रवेश करता भया नहीं निवारी जाय गति जिसकी वहां गए क्रीड़ाकरे है जैसे स्वयम्भू रमणउद्यान में इन्द्र क्रीड़ा करे, तब मधुका पुत्र लवणार्णवकुमार इसे देख युद्धके अर्थ आया अपने बाणों रूप मेघ कर कृतांतवक्र रूप पर्वत को आच्छादित करता भया, और कृतांतवक्र भी आशी विष तुल्य बाणों कर उसके बाण छेदता भया, और धरती आकाश को अपने बाणों कर व्याप्त करता

भया, दोनों महायोधा सिंह समान बलवान् गजों पर चढ़े क्रोध सहित युद्ध करते भए, उसने उस को रथ रहित किया और उसने उसको, फिर कृतांतवक्र ने लवणार्णव के वक्षस्थल में बाण लगाया और उस कावषतर भेदा तब लवणार्णव कृतांतवक्र ऊपर तोमर जानिका शस्त्र चलावता भया क्रोध कर लाल हैं नेत्र जिस के दोनों घायल भए. रुधिर कर रंग रहे हैं वस्त्र जिन के, महा सुभटता के स्वरूप दोनों क्रोध कर उद्धत फूले केसू के वृक्ष समान सोहते भए, गदा खड्ग चक्र इत्यादि अनेक आयुधोंकर परस्पर दोनों महा भयंकर युद्ध करते भए बल उन्माद विषाद के भरे बहुत बेर लग युद्ध भया, कृतांतवक्र ने लवणार्णव के वक्षस्थल में घाव किया, सो पृथिवी में पड़ा जैसे पुण्य के क्षय से स्वर्गवासी देव मध्य लोक में आय पड़ें. लवणार्णव प्राणान्त भया, तब पुत्रको पड़ा देख मधु कृतांतवक्र पर दौड़ा तब शत्रुघ्न ने मधु को रोका, जैसे नदी के प्रवाह को पर्वत रोके मधु महा दुस्सह शोक और कोप का भरा युद्ध करता भया सो आशी विष की दृष्टि समान मधु की दृष्टि शत्रुघ्न की सेना के लोक न सहार सकते भए जैसे उग्र पवन के योग से पत्रों के समूह चलायमान होंय तैसे लोक चलायमान भए फिर शत्रुघ्न को मधु के सन-मुख जाता देख धीर्य को प्राप्त भए शत्रु के भयकर लोक तबलगही डरें जबलग अपने स्वामी को प्रबल न देखें और स्वामी को प्रसन्न बदन देख धीर्य को प्राप्त होंय शत्रुघ्न उत्तम रथ पर आरूढ़ मनोग्य धनुष हाथ में सुन्दर हारकर शोभे है वक्षस्थल जिसका सिर पर मुकट धरे मनोहर कुण्डल पहिरे शरद के सूर्य समान महातेजस्वी अखण्डित है गति जिसकी शत्रु के सन्मुख जाता अति सोहता भया जैसे गजराज पर जाता मृगराज सोहे, और जैसे अग्नि सूके पत्रों को जलावे तैसे मधु के अनेक योधा क्षणमात्र में

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विध्वंश किए शत्रुघन के सनमुख मधुका कोई योधा न ठहरसका जैसेजिनशासन के पंडित स्यादवादी तिन के सन्मुख एकांतवादी न ठहिर सके जो मनुष्य शत्रुघन से युद्ध किया चाहे हैं सो तत्काल विनासको पावें जैसे सिंहके आगे मृग मधुकी समस्त सेनाके लोक अति व्याकुल होय मधुके शरणआये सो मधु महा सुभट शत्रुघनको सनमुख आवतादेख शत्रुघनके रथकी ध्वजा छेदी और शत्रुघनने बाणों कर उसके रथके अश्व हते तबमधु पर्वत समान जो बरुणेंद्र गज उसपर चढ़ा क्रोधकर प्रज्वलित है शरीरजिसका शत्रुघन को निरंतर बाणों कर आछादने लगाजैसे महामेघ सूर्यको आछादे सो शत्रघ्न महा शूरवीरने उसके बाणछेद डारे और मधुका बखतर भेदा जैसेअपने घर कोई पाहुनाआवे औरउस की भले मनुष्य भलीभांति पाहुन गतिकरे तैसे शत्रघ्न मधुकी रणविषे शस्त्रोंकर पाहुणगातिकरताभया

अथानन्तर मधुमहा विवेकी शत्रुघनको दुर्जयजान आपको त्रिशूल आयुधसे रहित जान पुत्रकी मृतु देख और अपनी आयुभी अल्पजान मुनियोंके वचन चितारता भया अहोजगतका समस्तही आरंभ महा हिंसारूप दुखका देनहारा सर्वथा ताज्यहै यह क्षण भंगुर संसारका चारित्र उसमें मूढजनराचे इस विषे धर्मही प्रशंसायोग्य है और अधर्मकाकारण अशुभ कर्म प्रशंशा योग्यनहीं महा निंद्य यह पाप कर्म नरक निगोद का कारण है जो दुर्लभ मनुष्य देह को पाय धर्म विषे बुद्धि नहीं धरे है सो प्राणी मोह कर्म कर ठगाया अनन्त भव भ्रमणकरे हैं मैं पापी ने संसार असार को सार जाना क्षण भंगुर शरीर को ध्रुवजाना, आत्म हित न किया प्रमाद विषे प्रवरता रोग समान ये इन्द्रीयों के भोग भले जान भोगे, जब मैं स्वाधीन था तब मुझे सुबुधि न आई, अब अन्तकाल आया अब क्या करूं घरको आग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लगी उससमयतलाव सुदवाना कौन अर्थ और सर्पने डसा उस समय देशान्तर से मन्त्राधीसबुलवाना और दूरदेशसे मणिऔषधी मंगावनाकौन अर्थ इसलिये अवसर्वचिंता तज निराकुलहोय अपनामनसमाधानमें ल्याऊं यहविचार वह धीरवीरघावकर पूर्णहाथी चढाही भावमुनि होताभया, अरहन्तसिद्ध आचार्यउपाध्याय साधुवों को मनकरवचनकर कायकरबारं बार नमस्कार कर और अरहंत सिद्ध साधु तथा केवली प्रणीत धर्म यही मंगल हैं यही उत्तम हैं इन हीं कामेरे शरणहै अढाईद्वीप विषे पन्द्रहकर्म भूमि तिनविषे भगवान् अरहन्त देव होय हैं वे त्रैलोक्यनाथ मेरे हृदय में तिष्ठो मैं बारम्बार नमस्कार करूं हूं अब मैं यावज्जीव सर्व पाप योग तजे चारों आहार तजे, जे पूर्व पाप उपार्जे थे तिन की निन्दा करूं हूं और सकल वस्तु का प्रत्याख्यान करूं हूं अनादि काल से इस संसार वन में जो कर्म उपार्जे थे मेरे दुःखकृत मिथ्या होवो ॥

भावार्थ–मुझे फल मत देवें, अब मैं तत्वज्ञान में तिष्ठा तजवे योग्य जो रागादिक तिन को तजूं हूं और लेयबे योग्य जो निजभाव तिनको लेऊं हूं ज्ञान दर्शन मेरे स्वभावही हैं सो मोसे अभेद्यहैं और जे शरीरादिक समस्त पर पदार्थ कर्म के संयोग कर उपजे वे मोसे न्यारे हैं देह त्याग के समय संसारी लोक भूमि का तथा तृण कासांथरा करे हैं सो सांथरा नहीं यह जीव ही पाप बुद्धि रहित होय तब अपना आप ही सांथरा है ऐसा विचारकर राजा मधु ने दोनों प्रकारके परिग्रह भावोंसे तजे और हाथी की पीठ पर बैठा ही सिर के केश लोंच करताभया, शरीर घावों कर अतिव्याप्त है तथापि महा दुर्धरधीर्य को धरकर अध्यात्म योग में आरूढ होय काया का ममत्व तजता भया, विशुद्ध है बुद्धि जिसकी । तब शत्रुघ्न मधु की परम शान्त दशा देख नमस्कार करता भया और कहताभया हे साधो मो अपराधी का अपराध क्षमाकरो, देवां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की अप्सरा मधु का संग्राम देखनेको आई थी आकाश मे कल्पवृक्षों के पुष्पों की वर्षा करती भई मधु का वीर रस और शांत रस देख देव भी आश्चर्य को प्राप्त भए फिर मधु महा धीर एक क्षणमात्र में समाधि मरण कर महासुखके सागर में तीजे सनत्कुमार स्वर्ग में उत्कृष्ट देव भया, और शत्रुघ्नमधु की स्तुति करता महा विवेकी मथुरामें प्रवेशकरता भया जैसे हस्तिनागपुर में जयकुमार प्रवेश करता सोहता भया तैसा शत्रुघन मधुपुरी में प्रवेश करता सोहता भया, गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे नराधिपति प्राणियों के इस संसारमें कर्मों के प्रसंग कर नाना अवस्था होय हैं इसलिये उत्तमजन सदा अशुभ कर्म तज कर शुभकर्म करो जिसके प्रभाव कर सूर्य समानकांतकोप्राप्तहोवो ॥ इति नवासीवांपर्व पूर्णभया ॥

अथानन्तर सुरकुमारों के इन्द्र जो चमरेन्द्र महाप्रचंड तिन का दीया जो त्रिशूलरत्न मधु के था उसके अधिष्ठाता देव त्रिशूल को लेकर चमरेन्द्र के पास गए, अतिखेद खिन्न महा लज्जावान् होय मधु के मरण का वृतांत असुरेन्द्रसे कहते भए तिनकी मधुसे अति मित्रता सो पातालसे निकस कर महाक्रोधके भरे मथुरा आयवेको उद्यमी भए उस समय गरुडेन्द्र निकट आए कि हे दैत्येन्द्र कौन तरफगमन को उद्यमी भए हो तब चमरेन्द्र ने कही जिसने मेरा मित्र मधु मारा है उसेकष्ट देवेको उद्यमी भया हूं तब गरुडेन्द्र ने कही क्या विशिल्या का महात्म्य तुमने न सुनाहै तब चमरेन्द्र ने कही वह अद्भुत अवस्था विशिल्याकी कुमार अवस्था में ही थी और अब तो निर्विषभुजंगी समान है जौलग विशिल्या ने वासुदेव का आश्रय न किया था तौलग ब्रह्मचर्य के प्रसाद से असाधारण शक्ति थी, अब वह शक्ति विशिल्या में नहीं जे निरतिचारवाल ब्रह्मचर्य धारें तिनके गुणों की महिमा कहिवे में न आवे, शील के प्रसाद कर सुर असुर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशल्याद सब डरें जौलग शीलरूप खड्ग को धारे तौलग सबकर जीता न जाय महा दुर्जय है अब विशिल्या पतिव्रता है ब्रह्मचारिणी नहीं इसलिये वह शक्ति नहीं मद्य मांस मैथुन यह महा पापहैं इनके सेवन से शक्ति का नाश होय है जिनकी ब्रतशील नियम रूप कोटभग्न न भया तिनको कोई विघ्न करवे समर्थ नहीं एक कालाग्नि नामरुद्र महा भयंकर भया सो हे गरुडेन्द्र तुम सुना ही होयगा फिर वह स्त्री से आसक्त होय नाश को प्राप्त भया इसलिये विषय का सेवन विषसे भी विषम है परम ऐश्वर्य का कारण एक अखंड ब्रह्मचर्य है अब मैं मित्रके शत्रु पर जाऊंगा तुम तुम्हारे स्थानक जावो। ऐसा गरुडेंद्र से कहकर चमरेन्द्र मथुरा आए, मित्रके मरण कर कोपरूप मथुरा में वही उत्सव देखाजोमधु के समयथा तब असुरेंद्रने विचारी ये लोक महादुष्टकृतघ्न हैं देशकाधनी पुत्र सहित मरगया है और औरआयबैठा है इनको सोक चाहिये कि हर्ष, जिसके भुजका छाया पाय बहुत काल सुखसे बसे उस मधु की मृत्यु का दुःख इनको क्यों न भया ये महाकृतघ्न हैं सो कृतघ्नका मुख न देखिये लोकोंकर शूरवीरसेवायोग्य शूरवीरोंकर परिडत सेवा योग्य हैं सो परिडत कौन जोपराया गुण जाने सो ये कृतघ्न महा मूर्ख हैं ऐसा विचार कर मथुरा के लोकों पर चमरेन्द्र कोपा इन लोकों का नाश करूं यह मथुरापुरी इस देश सहित क्षय करूं। महा क्रोध के वश होय असुरेन्द्र लोकों को दुस्सह उपसर्ग करता भया, अनेक रोग लोगों को लगाये प्रलय काल की अग्नि समान निर्दयी होय लोक रूपवन को भस्म करवे को उद्यमी भया, जो जहां ऊभा था सोवहां ही मर गया, और बैठाथा सोबैठा ही रहा, सूता था सो सूताही रहा, मरी पड़ी लोंक को उपसर्ग देख मित्र देव देवता के भयसे शत्रुघ्न अयोध्या आया सो जीत कर महा शूरवीर भाई आया बलभद्र नारायन अति हर्षित

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भये और शत्रुघ्न की माता सुप्रभा भगवान् की अद्भुत पूजा करावती भई, और दुखी जीवों को करुणा कर और धर्मात्मा जीवों का अति विनय कर अनेक प्रकार दान देती भई, यद्यपि अयोध्या महा सुन्दर है स्वर्ण रत्नों के मन्दिरों कर मण्डित है कामधेनुसमान सर्व कामनापूरणहारीदेवपुरी समान पुरी है तथापि शत्रुघ्न का जीव मथुरा से अतिआसक्त सो अयोध्या में अनुरागी न होता भया जैसे कैयक दिन सीता विना राम उदास रहे. तैसे शत्रुघ्न मथुरा बिना अयोध्या में उदास रहे जीवों को सुन्दर वस्तु का संयोग स्वप्न समान क्षणभंगुर है परम दाह को उपजावे है ज्येष्ठके सूर्यसे भी अधिक आतापकारी है। इति ९०वां पर्व

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतमस्वामी से पूछता भया हे भगवान् कौन कारण कर शत्रुघ्न मथुरा ही को याचता भया अयोध्या से उसे मथुरा का निवास अधिक क्यों रुचा, अनेक राजधानी स्वर्ग लोक समान सो न वांछी और मथुरा ही वांछी ऐसी मथुरा से क्यों प्रीति, तब गौतमस्वामी ज्ञान के समुद्र सकल सभारूप नक्षत्रों के चन्द्रमा कहते भये, हे श्रेणिक इस शत्रुघन के अनेक भव मथुरा में भये इसालय इस का मधु-पुरी से अधिक स्नेह भया। यह जीव कर्मों के सम्बन्ध से अनादि काल का संसार में बसे है सो अनन्त भव धरे यह शत्रुघन का जीव अनन्त भव भ्रमण कर मथुरा विषे एक यमनदेव नामा मनुष्य भया महाक्रूर धर्म से विमुख सो मर कर शूकर खर काग ये जन्म धर अजा पुत्र भया सो अग्नि में जल मूवा, भैंसा जलके लाद ने का भया सो छैवार भैंसा होय दुख से मूवा नीचकुल विषे निर्धन मनुष्य भया, हे श्रेणिक महापापी तो नरक को प्राप्त होय हैं, और पुण्यवान् जीव स्वर्ग विषे देव होय हैं और शुभाशुभ मिश्रित कर मनुष्य होय हैं फिर यह कुलन्धरनामा ब्राह्मण भया रूपवान और शीलरहित सो एक

समय नगरका स्वामी दिग्विजय निमित्त देशांतर गया उसकी ललिता नाम राणी महलके झरोखा विषे तिष्ठे थी सो पापिनी इस दुराचारी विप्रको देख काम बाण करवेधी गई सो इसे महलमें बुलाया एक आसनपर राणी और यह बैठेथे उसही समय राजा दूरका चला अचानक आया और इसे ही महल में देखा सो राणीने मायाचार कर कही जो यह बन्दीजनहै भिक्षुकहै तथापि राजाने नमानी राजाके किंकर उसे पकड़कर नृपकी आज्ञासे आठो अंग दूर करवे के अर्थ नगरके बाहिर ले जाते थे सो कल्याणनामा साधू ने देख कही जो तू मुनिहोय तो तुझे छुडावें तब इसने मुनि होना कबूल किया तब किंकरों से छुडाया सो मुनिहोय महातप कर स्वर्गमें ऋजु बिमानका स्वामी देव भया है श्रेणिक धर्मसे क्या न होय।

अथानन्तर मथुरामें राजा चन्द्रभद्र उसके राणी धरा उस के भाई सूर्य देव अग्निदेव यमुना देव और आठ पुत्र तिनके नाम श्रीमुख सुन्मुख सुमुख इन्द्रमुख प्रमुख उग्रमुख अर्कमुख परमुख और राजा चन्द्रभद्र के दूजी राणी कनक प्रभा उस के वह कुलन्धर नामा ब्राह्मण का जीव स्वर्ग विषे देव होय वहांसे चयकर अचल नाम पुत्र भया सो कलावान और गुणों कर पूर्ण सर्व लोकके मनका हरणहारा देव कुमार तुल्य क्रीडा विषे उद्यमी होता भया।

अथानन्तर एक अंकनामा मनुष्य धर्मकी अनुमोदनाकर श्रावस्ती नगरी विषे एक कंपनाम पुरुष उसके अंगिका नामा स्त्री उसके अपनामा पुत्र भया सो अविनयी तब कंपते अपको घरसे निकास दिया सो महादुखी भूमिमें भ्रमण कर और अचलनामा कुमार पिताका अतिवल्लभ सो अचलकुमारकी बडी माता धरा उसके तीन भाई और आठ पुत्र तिन्होंने एकांतमें अचलके मारणेका मंत्र किया सो

यह बार्ता अचल कुमारकी माताने जानी तब पुत्रको भगाय दिया सो तिलक बनमें उसके पावमें कांटा लगा सो कंपका पुत्र आप काष्ठका भरा लेकर आवे था सो अचलकुमारको कांटेके दुखसे करुणावन्त देखा तब अपने काष्ठका भार मेल छूरीसे कुमारका कांटा काढ़ कुमारको दिखाया सो कुमार अति प्रसन्न भया और आपको कहा तू मेरा अचलकुमार नाम याद रखियो और मुझे भूपति सुने वहां मेरे निकट आइयो इस भांति कह अपको बिदा किया सो अप गया और राजपुत्र महादुखी कौशांबी नगरीके विषे आया महापराक्रमी सो बाणविद्याकागुरु जो विशिषाचार्य उसेजीतकर प्रतिष्ठा पाई सो राजाने अचलकुमारको नगर में ल्यायकर अपनी इन्द्रदत्ता नाम पुत्रीपरणाई अनुक्रमकर पुण्यके प्रभावसे राजपाया सो अंगदेश आदि अनेक देशोंको जीतकर महाप्रतापी मथुरा आया नगरके बाहिर डेरा दिये बडी सेना साथ सब सामन्तों ने सुनी कि यहराजा चन्द्रभद्रकापुत्र अचलकुमारहै सो सब आय मिले राजा चन्द्रभद्र अकेला रहगया तबराणी धराके भाइ सूर्यदेव अग्निदेव यमुनादेव इनको संधि करने भेजे सो ये जायकर कुमार को देख विलखे होय भागे और धराके आठपुत्र भी भागगए अचलकुमारकी माता आय पुत्रको लेगई पितासे मिलाय पिताने इसको राज्य दिया एकदिन राजा अचलकुमार नटोंका नृत देखेथा उससमय अपआया जिसने इसका बनमें कांटा काढाथा सो उसे दरवान धक्का देयकाढे थे सो राजाने मनेकिए और अप को बुलाया बहुत कृपाकरी और जो उसकी जन्मभूमि श्रावस्ती नगरीथी सो उसे दई और येदोनों परमामित्र भेलेही रहें एकदिवस महासंपदाके भरे उद्यानमें क्रीड़ाको गयेथे सो यशसमुद्र आचार्य को देख कर दोनों मित्र मुनिभये सम्यकदृष्टि परम संयमको आराध समाधिमरणकर स्वर्ग विषे उत्कृष्ट देवभये वहां

से चयकर अचलकुमार का जीव राजा दशरथ के यह शत्रुघन पुत्रभया अनेक भव के सम्बन्ध से इसकी मथुरासे अधिक प्रीति भई गौतमस्वामी कहेहैं हे श्रेणिक वृक्षकी छाया जो प्राणी बैठा होयतो उस वृक्षसे प्रीति होय है जहांअनेक भव धरे वहां की क्या बात संसारी जीवों की ऐसी अवस्था है और वह अपका जीव स्वर्ग से चयकर कृतांतवक्र सेनापति भया इसभांति धर्मके प्रसादसेये दोनों मित्र संपदा को प्राप्त भये औरजे धर्मसे रहित हैं तिनके कभी भी सुख नहीं अनेक भवके उपार्जे दुखरूप मल तिनके धोयवेको धर्मका सेवन ही योग्यहै और जल के तीर्थो में मनका मैल नहीं धुवेहै धर्म के प्रसाद से शत्रुघन का जीव सुखी भया ऐसा जान कर विवेकी जीवधर्म विषे उद्यमी होवो धर्म को सुन कर जिन की आत्मकल्याण में प्रीति नहीं होय है तिनका श्रवण वृथा है जैसे जो नेत्रवान सूर्यके उदयमें कूपमें पड़े तो उसके नेत्र वृथा हैं ॥ इति इक्याणवांपर्वसंपूर्णम् ॥

अथानन्तर आकाश में गमन करण हारे सप्तचारण ऋषि सप्त सूर्य समान है कांति जिनकी सो विहार करते निर्ग्रंथ मुनींद्र मथुरापुरी आये तिनके नाम सुरमन्यु श्रीमन्यु श्रीनिश्चय सर्वसुन्दर जय वान विनयलाल सजयमित्र ये सर्व ही महाचारित्र के पात्र अति सुन्दर राजा श्री नन्दनराणी धरणी सुन्दरी के पुत्र पृथिवी में प्रसिद्ध पिता सहित प्रीतंकर स्वामी का केवल ज्ञान देख प्रतिबोध को प्राप्त भयेथे पिता और प्रीतंकर केवली के निकट मुनि भये और एक महीने का बालक तुंवरुनामा पुत्र उस को राज्य दीया पिता श्रीनन्दनतो केवली भया और ये सातों महामुनि चारण ऋद्धि आदि अनेक ऋद्धि के धारक श्रुतकेवली भये सो चातुर्मासिकमें मथुराके वनमें वटके वृक्ष तले आय विराजे तिन के तपके

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रभावकर चमरेंद्रकी प्रेरी मेरी दूरभई जैसे श्वशुरको देखकर व्यभिचारणी नारी दूर भागे मथुराका समस्त मंडल सुखरूप भया बिनावाहे धान्य सहजही उगे समस्त रोगोंसे रहित मथुरापुरी ऐसी शोभती भई जैसे नई वधू पतिको देखकर प्रसन्नहोय, वह महामुनि रसपर त्यागादि तप और बेला तेला पचोपवासादि अनेक तपके धारक जिनको चार महीना चौमासे रहना तो मथुरा के बनमें और चारणऋद्धि के प्रभावसे चाहे जहां आहार कर आवें सो एक निमिष मात्रमें आकाशके मार्ग होय पोदनापुर पारणाकर आये कभी विजयपुरकर आवें उत्तम श्रावकके घर पात्र भोजनकर संयम निमित्त शरीरको राखें कर्म के खिपायवेको उद्यमी एक दिन वे धीरवीर महाशांति भावके धारक जूडा प्रमाण धरती देख बिहार कर ईर्या समितिके पालनहारे आहार के समय आयोध्या आये शुद्ध भिक्षाके लेनहारे प्रलंबितहैं महा भुजा जिनकी अर्हद्दत्त सेठके घर आये प्राप्त भए तब अर्हद्दत्तने बिचारी वर्षाकालमें मुनिका बिहार नहीं ये चौमासा पहिलि तो यहां आये नहीं और मैं यहां जे जे साधु विराजे हैं गुफामें नदीके तीर वृक्ष तले शून्य स्थानके विषे बनके चैत्यालयोंमें जहां जहां चौमासी साधु तिष्ठे हैं वे मैंसर्व बंदे यहतो अबतक देखे नहीं ये आचांग सूत्रकी आज्ञासे पराङ्मुख इच्छा बिहारी हैं वर्षाकालमें भी भ्रमते फिरे हैं जिन आज्ञा पराङ्मुख ज्ञान रहित निराचारी आचार्यकी आम्नायसे रहित हैं जिन आज्ञा पालक होय तो वर्षा में बिहार क्यों करें, सो यहतो उठ गया और इसके पुत्रकी वधूने अति भक्तिकर प्राशुक आहार दिया सो मुनि आहार लेय भगवानके चैत्यालय आये जहां द्युतिभट्टारक विराजते थे ये सप्तर्षि ऋद्धिके प्रभावकर धरतीसे चार अंगुल अलिप्त चले आये और चैत्यालयमें धरतीपर पग धरते आये आचार्य उठ खड़े भये

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिआदरसे इनको नमस्कार किया और जे द्युतिभट्टारकके शिष्यथे तिन सबने नमस्कार किया फिर ये सप्त तो जिन वन्दनाकर आकाश के मार्ग पीछे मथुरा गये इनके गये पीछे अर्हदत्त सेठ चैत्यालय में आया तब द्युतिभट्टारकने कही सप्तर्षि महा योगीश्वर चारण मुनि यहां आये थे तुमनेभी वह वंदे हैं वे महा पुरुष महातप के धारक हैं चार महीना मथुरा निवास किया है और चाहे जहां आहार लेजांय आज अयोध्यामें आहार लिया चैत्यालय दर्शन कर गये हमसे धर्मचर्चा करी वे महा तपोधन गगनगामी शुभ चेष्टा के धरणहारे परम उदार वे मुनि वन्दिवे योग्य हैं तब वह श्रावकों में अग्रणी आचार्य के मुख से चारण मुनों की महिमा सुनकर खेदखिन्न होय पश्चाताव करता भया धिक्कार मुझे मैं सम्यक दर्शन रहित वस्तु का स्वरूप न पिछाना मैं अत्याचारी मिथ्या दृष्टि मो समान और अधर्मी कौन वे महा मुनि मेरे मंदिर आहारको आये और मैं नवधा भक्तिकर आहार न दिया जो साधु को देख सन्मान न करें और भक्तिकर अन्न जल न देय सो मिथ्यादृष्टि हैं मैं पापी पापात्मा पापका भाजन महा निन्द्य मो समान और अज्ञानी कौन मैं जिनवाणी से विमुख अब मैं जौलग उनका दर्शन न करूं तौलग मेरे मनका दाह न मिटे, चारण मुनों की तो यही रीती है चौमासे निवास तो एक स्थान करें और आहार अनेक नगरों में कर आवें चारण ऋधिके प्रभाव कर उनके अंग से जीवों को बाधा न होय ॥

अथानन्तर कार्त्तिक की पूनो नजीक जान सेठ अर्हदत्त महासम्यक्दृष्टि नृपतुल्य विभूति जिस के अयोध्या से मथुरा को सर्वकुटम्ब सहित सप्त ऋषि के पूजन निमित्त चला, जाना है मुनों का माहात्म्य जिसने और अपनी बारम्बार निन्दाकरे है रथ हाथी पियादे तुरंगों के असवार इत्यादि बड़ीसेना सहित

For Private and Personal Use Only

योगीश्वरों की पूजा को शीघ्र ही चला, बड़ी विभूति कर युक्त शुभ ध्यान में तत्पर कातिक शुदी सप्तमी के दिन मुनों के चरणों में जाय पहुंचा वह उत्तम सम्यक्त का धारक विधिपूर्वक मुनिवन्दनाकर मथुरा में अतिशोभा करावता भया मथुरा स्वर्ग समान सोहती भई यहवृतांतसुनशत्रुघन शीघ्रहीमहा तुरंगचढ़ा सप्त ऋषियों के निकट आया औरशत्रुघन की माता सुप्रभा भी मुनियों की भक्ति कर पुत्रके पीछे ही आई और शत्रुघन नमस्कारकरमुनियोंकेमुख धर्म श्रवणकरता भया, मुनि कहते भए हेनृपयह संसार असार है वीतराग कामार्गसार है जहां श्रावकके बारहव्रतकहे, मुनिकेअठाईस मूल गुणकहे मुनोंको निर्दोष आहारलेनाअकृत अकारित रागरहित प्राशुकआहार विधिपूर्वक लीये योगीश्वरों के तपकी वृधकारी होय तब वह शत्रुघन कहता भया हे देव आपके आये इस नगर से मरी गई रोग गए दुर्भिक्ष गया सर्व विघ्न गए सुभिक्ष भया सब साता भई प्रजा के दुख गए सर्व समृद्धि भई जैसे सूर्य के उदय से कमलनी फूले, कोई दिन आप यहां ही तिष्ठो तब मुनि कहते भए हे शत्रुघन जिन आज्ञा सिवाय अधिक रहना उचित नहीं यह चतुर्थकाल धर्म के उद्योत का कारण है इस में मुनिन्द्र का धर्म भव्य जीव धारे हैं जिनआज्ञा पाले हैं महा मुनियोंके केवल ज्ञान प्रकट होय है मुनिसुब्रतनाथ तो मुक्त भए अब नमि, नेमि, पार्श्व, महावीर चार तीर्थंकर और होवेंगे फिर पञ्चमकाल जिसे दुखमा काल कहिये सो धर्म की न्यूनता रूप प्रवरतेगा, उस समय पाखण्डी जीवों कर जिनशासन अतिऊंचा है तोभी आछादित होयगा, जैसे रजकर सूर्यका बिम्ब आछादित होय पाखंडी निर्दई दया धर्मकोलोप कर हिन्साका मार्गप्रवर्तनकरेंगे उससमय मसान समान ग्राम और प्रेत समान लोक कुचेष्टा के करणहारे होवगे महाकुधर्म में प्रवीण क्रूर चोर पाखंडी दुष्टजीव

तिनकर पृथिवी पीड़ित होयगी किसाण दुखी होवेंगे प्रजानिर्धन होयगी महा हिंसकजीव परजीवों केघातक होवेंगे निरन्तर हिंसाकी बढ़वारी होयगी पुत्र मातापिताकीआज्ञासे विमुखहोवेंगेऔरमाता पिताभीस्नेहरहित होवगे और कलिकाल में राजा लुटेरे होवेंगे कोई सुखी नजर न आवेगा कहिवे के सुखी वे पापचित्त दुर्गति की दायक कुकथा कर परस्पर पाप उपजावेंगे। हे शत्रुघन कलिकाल में कषाय की बहुलता होवेगी और अतिशय समस्त विलय जावेंगे चारण मुनि देवविद्याधरों का आवना न होयगा अज्ञानी लोक नग्नमुद्राके धारक मुनियोंको देख निन्दा करेंगे मलिनचित्त मूढ़जन अयोग्यको योग्य जानेंगे जैसे पतंग दीपक की शिखा में पड़े तैसे अज्ञानी पाप पन्थ में पड़ दुर्गति के दुख भोगेंगे और जे महा शांत स्वभाव तिन की दुष्ट निन्दा करेंगे विषयी जीवों को भक्ति कर पूजेंगे दीन अनाथ जीवों को दयाभाव कर कोई न देवेगा और मायाचारी दुराचारियों को लोक देवेंगे सो वृथा जायगा जैसे शिला में बीज बोय निरन्तर सींचे तोभी कुछ कार्य्य कारी नहीं तैसे कुशील पुरुषों को विनय भक्तिकर दीया कल्याण कारी नहीं, जो कोई मुनियोंकी अवज्ञाकरे है और मिथामार्गीयों को भक्तिकरपूजे है सोमलयागिरिचन्दन को तज कर कंटकवृक्ष को अंगीकार करे है ऐसा जानकर हे वत्स तू दान पूजाकर जन्म कृतार्थ कर गृहस्थी को दान पूजा ही कल्याणकारी है और समस्त मथुरा के लोकधर्म में तत्पर होवो, दया पालो साधर्मीयों से वात्सल्य धारो, जिनशासन की प्रभावना करो घर घर जिनबिंब थापो पूजा अभिषेक की प्रवृति करो जिसकर सबशांति हो, जो जिनधर्म का आराधन न करेगा और जिस के घरमें जिन पूजा न होगी दान न होवेगा उसे आपदा पीडेगी जैसे मृग को व्याघ्री भषे तैसे धर्म रहित को मरी भषेगी, अंगुष्ठप्रमाण भी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनेन्द्र की प्रतिमा जिसके विराजेगी उस के घर में से मरी युं भाजेगी जैसे गरुड के भय से नागिनी भागे ये बचन मुनियों के सुन शत्रुघन ने कही हे प्रभो जो आप आज्ञा करी त्योंहीलोक धर्म में प्रवर्तेंगे ॥

अथानन्तर मुनि आकाश मार्ग विहार कर अनेक निर्वाण भूमि वन्द कर सीता के घर अहार को आये, कैसे हैं मुनि तप ही है धन जिन के सीता महा हर्ष को प्राप्त होय श्रद्धा आदि गुणो कर मण्डित परम अन्न कर विधि पूर्वक पारणा करावती भई, मुनि आहार लेय आकाश के मार्ग विहार कर गये शत्रुघन ने नगरी के बाहिर और भीतर अनेक जिनमन्दिर कराए घर घर जिनप्रतिमा पधराई नगरी सर्व उपद्रव रहित भई, बन उपबन फल पुष्पादिक कर शोभित भए. वापिका सरोवर कमलों कर मंडित सोहती भई पक्षीशब्द करते भये कैलाशके तटसमान उज्वल मंदिर नेत्रोंको आनन्दकारी विमान तुल्य सोहते भये और सर्व किसाण लोक संपदा कर भरे सुख निवास करतभये गिरिके शिखर समान ऊंचे अनाजोंके ढेर गावोंमें सोहते भये स्वर्ण रत्नादिककी पृथिवीमें विस्तीर्णता होती भई सकललोक सुखी रामके राज्यमें देवों समान अतुल विभूति के धारक धर्म अर्थ कामविषे तत्परहोते भये शत्रुघ्न मथुरामें राज्य करे रामके प्रतापसे अनेक राजाओं पर आज्ञा करता सोहे जैसे देवों विषे बरुण सोहे इसभांति मथुरा पुरीका ऋद्धिका धारी मुनियोंके प्रतापकर उपद्रवदूरहोता भया जो यहअध्यायबांचे सुनेसो पुरुषशुभ नाम शुभगोत्र शुभसाता बेदनीका बंध करे जो साधुवोंकी भक्ति विषे अनुरागी होय और साधुवों का समागम चाहे वह मनवांछित फल को प्राप्त होय इस साधुवोंके संग को पायकर धर्मको आराधकर प्राणी सूर्यसे भी अधिक दीप्ति को प्राप्त होवें हैं ॥ इति बानवें पर्व सम्पूर्णम् ॥

For Private and Personal Use Only

अथानन्तर विजियार्ध की दक्षिण श्रेणी विषै रत्नपुरनामा नगर वहां राजा रत्नरथ उस की राणी पूर्णचन्द्रानना उसके पुत्री मनोरमा महारूपवंती उसे योवनवती देखराजा वर ढूंढवे की बुद्धि कर व्याकुल भया मंत्रियोंमे मंत्र किया कि यह कुमारी कौनको परणाऊं इस भांति राजा को चिंतासंयुक्त कईएक दिन गये एक दिन राजाकी सभामें नारद आया राजाने बहुत सन्मान किया नारद सबही लौलिक रीतियोंमें प्रवीण उसे राजा ने पुत्रीके विवाहनेका वृतांत पूछा तब नारदने कही रामका भाई लक्षमण महा सुन्दर है जगत में मुख्य है चक्र के प्रभाव कर नवाए हैं समस्त नरेंद्र जिसने ऐसी कन्या उसके हृदय में आनन्ददायिनी होवे जैसे कुमुदनी के बन को चांदनी आनन्द दायनी होवे जबइस भांति नारदने कही तब रत्नरथके पुत्र हरिवेग मनोवेग वायुवेगादिक महामानी स्वजनोंके घातकर उपजाहै बैर जिन के प्रलयकाल की अग्नि समान प्रज्वलित होय कहते भये जो हमारा शत्रु जिसे हम मारा चाहैं उसे कन्या कैसे देवें यह नारद दुराचारी है, इसे यहां से काढो, ऐसे वचन राजा पुत्रों के सुन किंकर नारद पर दौड़े तब नारद आकाश मार्ग विहार कर शीघ्र ही अयोध्या लक्ष्मण पै आया अनेक देशान्तर की वार्त्ता कह रत्नरथ की पुत्री मनोरमा का चित्राम दिखाया, सो वह कन्या तीनलोक की सुन्दरीयों का रूप एकत्र कर मानों बनाई है। सो लक्ष्मण चित्रपट देख अतिमोहित होय कामके वश भया यद्यपि महा धीर वीर है तथापि वशीभूत होय गया, मन मेंविचारता भया जो यह स्त्रीरत्न मुझे न प्राप्त होय तो मेरा राज्य निष्फल और जीतव्यवृथा लक्ष्मण नारदसे कहताभया हे भगवान् आपने मेरे गुणकीर्त्तन किये और उन दुष्टोंने आप से विरोध कीया, सो वे पापी प्रचण्डमानी महा क्षुद्र दुरात्मा कार्य के विचार से

रहित हैं उनका मान मैं दूर करूंगा आप समाधान में चित्त लावो तुम्हारे चरण मेरे सिर पर हैं और उन दुष्टों को तुम्हारे पायन पाऊंगा ऐसा कह कर विराधित विद्याधर को बुलाया और कही रत्नपुर ऊपर हमारी शीघ्र ही तयारी है इसलिये पत्र लिख सर्व विद्याधरों को बुलावो रण का सरंजाम करावो, तब विराधित ने सबों को पत्र पठाये वे महासेना सहित शीघ्र ही आये लक्ष्मण राम सहित सब नृपों को ले कर रत्नपुर को तरफ चले जैसे लोकपालों सहित इन्द्र चले, जीत जिस के सन्मुख है नाना प्रकार के शस्त्रोंके समूह कर आच्छादित करी है सूर्य्य कीकिरण जिसने सो रत्नपुर जाय पहुंचे उज्वल छत्रकरशोभित तबराजा रत्नरथ परचक्र आया जान अपनी समस्त सेना सहित युद्ध को निकसा महा तेज कर सो चक्र करोत कुठार बाण खड्ग बरछी पाश गदादि आयुधों कर तिनके परस्पर महा युद्ध भया, अप्सरों के समुह युद्ध देख योधाओं पर पुष्प वृष्टि करते भए लक्ष्मण पर सेना रूप समुद्र के सोखिने को बडवानल समान आप युद्ध करने को उद्यमी भया, परचक्र के योधा रूप जलचरों के चयका कारण सो लक्ष्मण के भय कर रथों के तुरंगों के हाथीयों के असवार सब दशोंदिशाओंको भागे और इन्द्रसमान है शक्ति जिन की ऐसे श्रीराम और सुग्रीव हनुमान् इत्यादिक सब ही युद्ध को प्रवरते इन योधाओं कर विद्याधरोंकी सेना ऐसेभागी जैसेपवन कर मेघ पटल विलायजावें तबरत्नरथ और रत्नरथ के पुत्रोंकोभागते देख नारद ने परमहर्षितहोय ताली देय हंसकर कही अरे रत्नरथ के पुत्रहो तुम महाचपल दुराचारा मन्दबुद्धि लक्ष्मणके गुणोंकी उच्चता न सह सके सो अब आप मानको पाय क्यों भागोहो तब उन्होंने कुछ जवाब नहीं दिया उसीसमय मनोरमा कन्या अनेक सखियों सहित रथपर चढ कर महा प्रेमकीभरी लक्ष्मण के समीप आई जैसे इन्द्राणी इन्द्रकेसमीप आवे उसे देखकर

लक्ष्मण क्रोधरहित भये, भ्रकुटी चढ़ रही थी सो शीतल बदन भये कन्या आनन्दकी उपजावनहारी तब राजा रत्नरथ अपने पुत्रों सहित मान तज नानाप्रकार की भेंट ले कर श्री राम लक्ष्मण के समीप आया राजादेश कालकी विधिको जाने है और देखा है अपना और इन का पुरुषार्थ जिसने तब नारद सबके बीच रत्नरथकोकहते भये हे रत्नरथ अब तेरी क्यावार्ता तू रत्नरथ है के रजरथ है बृथा मान करेथा सो नारायण बलदेवों से कहांमान और ताली बजाय रत्नरथके पुत्रों से हँसकरकहता भया हो रत्नरथके पुत्र हो यह वासुदेव जिनको तुम अपने घर में उद्धत चेष्टा रूप होय मनमें आया सो ही कही अब पायन क्यों पड़ो हो तब वे कहते भए हे नारद तुम्हारा कोप भी गुणकरे जो तुम हमसे कोप कीया तो बड़े पुरुषों का सम्बन्ध भया, इनका सम्बन्ध दुर्लभ है इसभांति क्षणमात्र वार्ता कर सब नगर में गए श्रीराम को श्रीदामा परणाई रति समान है रूप जिसका उसे पायकर राम आनन्दमे रमते भए और मनोरमा लक्ष्मणको परणाई सो साक्षात् मनोरमा ही है, इसभांति पुण्य के प्रभाव कर अद्भुत वस्तु की प्राप्ति होय है इसलिये भव्य जीव सूर्य से अधिक प्रकाश रूप जो वीतराग का मार्ग उसेजानकर दया धर्म की आराधना करो ॥ इति त्राणवां पर्व पूर्ण भया ॥

अथानन्तर और भी जे वीजयार्धकी दक्षिणश्रेणी में विद्याधर थे वे सब लक्ष्मणने युद्धकर जीते कैसा है युद्ध जहां नानाप्रकारके शस्त्रों के प्रहारकर और सेनाके संघट्टकर अन्धकार होयरहा है गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक वे विद्याधर अत्यन्त दुस्सह महाविष धर समान थे सो सब राम लक्ष्मण के प्रतापकर मान रूप विषसेरहित होय गए. इसके सेवक भए तिनकी राजधानी देवों की पुरी समान तिनके नाम केयक तुझे कहूं हूं रविप्रभ घनप्रभ कांचनप्रभ मेघप्रभ शिवमन्दिर गंधर्वगीत अमृतपुर लक्ष्मीधरप्रभ

किन्नरपुर मेघकूट मर्त्य गीत चक्रपुर रथनूपुर बहुरव श्रीमलय श्रीगृह अरिंजय भास्करप्रभ ज्योतिपुर चन्द्रपुर गंधार, मलय सिंहपुर श्रीविजयपुर भद्रपुर यक्षपुर तिलक स्थानक इत्यादि बड़े बड़े नगर सो सब लक्ष्मण ने वशमें किए सब पृथिवी को जीत, सात रत्न कर सहित लक्ष्मण नारायण के पद का भोक्ता होता भया, सप्तरत्नों के नाम चक्र शंख धनुष शक्ति गदा खड्ग कोस्तुभ मणि और राम के चार हल मुशल रत्नमाला गदा इसभांति दोनों भाई अभेद भाव पृथिवी का राज्य करें, तब श्रेणिक गौतम स्वामी को पूछता भया हे भगवान् तुम्हारे प्रसाद से मैं राम लक्ष्मण का महात्म विधिपूर्वक सुना अब लवण अंकुश की उत्पनि और लक्षमणके पुत्रों का वर्णन सुना चाहूं हूं सो आप कहो। तब गौम गणधर कहते भए हे राजन् मैं कहूं हूं सुन राम लक्षमण जगत् में प्रधान पुरुष निःकंटक राज्य भोगते भए तिन के दिन पक्ष मास वर्ष महा सुखमे व्यतीतहोंय जिनके बड़े कुलकी उपजी देवांगना समानस्त्रीलक्ष्मण के सोलहहजार तिनमें आठ पटराणी कीर्ति समान लक्ष्मी समान रति समान गुणवती शीलवती अनेक कला में निपुण महा सौम्य सुन्दराकार तिनके नाम प्रथम पटराणी राजा द्रोणमेघकी पुत्री विशिल्या दूजी रूपवती जिस समान और रूपवान नहीं तीजी वनमाला चौथी कल्याणमाला पांचमी रतिमाला छठी जितपद्मा जिसने अपने मुख की शोभाकर कमल जीते सातमी भगवती आठमी मनोरमा और रामके राणी आठहजार देवांगना समान तिनमें चार पटराणी जगत् में प्रसिद्ध कीर्ति जिन में प्रथम जानकी दूजी प्रभावती तीजी रतिप्रभा चौथी श्रीदामा इन सबों के मध्य सीता सुन्दर लक्षण ऐसी सोहे ज्यों तारावों में चन्द्रकला और लक्षमण के पुत्र अढाईसे तिनमें कैयकोंके नाम कहूं हूं सो सुन वृषभधरण चन्द्र

शरभ मकरध्वज हरिनाग श्रीधर मदन यह महाप्रसिद्ध सुन्दर चेष्टा के धारक जिनके गुणों कर सब लोकों के मन अनुरागी और विशिल्या का पुत्र श्रीधर अयोध्या में ऐसा सोहे जैसा आकाश में चन्द्रमा और रूपवती का पुत्र पृथिवीतिलक सो पृथिवी में प्रसिद्ध और कल्याणमाला का पुत्र महा कल्याण का भाजन मंगल और पद्मावती का पुत्र विमलप्रभ और वनमाला का पुत्र अर्जुनप्रभ और अतिवीर्य की पुत्री का पुत्र श्री केशी और भगवतीका पुत्र सत्यकेसी और मनोरमाका पुत्र सुपार्श्वकीर्ति ये सबही महा बलवान पराक्रमके धारक शस्त्र शास्त्र विद्यामें प्रवीण इन सब भाइयों में परस्पर अधिक प्रीति जैसे नख मांस में दृढ कभी भी जुदे न होवें, तैसे भाई जुदे नहीं योग्यहै चेष्टा जिनकी परस्पर प्रेमके भरे वह उसके हृदयमें तिष्ठे वह उसके हृदयमें तिष्ठे. जैसे स्वर्गमें देव रमें तैसे ये कुमार अयोध्यापुरीमें रमते भये, जे प्राणी पुण्याधिकारी हैं पूर्व पुण्य उपार्जे हैं महाशुभ चित्तहैं तिनके जन्मसे लेकर सकल मनोहर वस्तु ही आय मिले हैं रघुवंशियों के साढे चारकोटि कुमार महामनोग्य चेष्टाके धारक नगरके वन उपवनादि में महा मनोग्य चेष्टासहित देवों समान रमते भये और राम लक्ष्मणके सोलह हजार मुकटबन्ध राजा सूर्यसे भी अधिक तेजके धारक सेवक होते भये। इति श्रीपद्मपुराण चतुर्थ महाअधिकार समाप्त हुवा।

अथ लवणांकुशके वृतान्तमें पांचवां महा अधिकार।

अथानन्तर रामलक्ष्मण के दिन अति आनन्दसे व्यतीत होयहैं धर्म अर्थ काम ये तीनों इनके अविरुद्ध होते भये, एक समय सीता सुखसे विमानसमान जो महिल उसमें शरदके मेघसमान उज्ज्वल सेज में सोवती थी सो पिछले पहिर वह कमलनयनी दोयस्वप्ने देखती भई फिर दिव्यवादित्रोंके नादसुन प्रात

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोचको प्रातभई निर्मल प्रभातभए स्नानादि देह क्रियाकर सखियोंसहित स्वामी पै गई जायकर पूछती भई हे नाथ मैं आज रात्रिमें स्वप्ने देखे तिनका फल कहो दो उत्कृष्ट अष्टापद शरदके चन्द्रमासमान उज्ज्वल और चोभको प्राप्त भया जो समुद्र उसके शब्द समान जिनके शब्द कैलाशके शिखरसमान सुन्दर सर्व आभरणों कर मंडित महा मनोहरहैं केश जिनके और उज्ज्वलहैं दाढ जिनकी सो मेरेमुख में पैठे और पुष्पक बिमानके शिखरसे प्रबल पवनके झकोरकर मैं पृथ्वी विषे पड़ी तब श्री रामचन्द्र कहतेभये हे सुन्दरि दोय अष्टापद मुखमें पैसे देखे ताके ताके फलकर तेरे दोय पुत्र होंयगे और पुष्पक विमान से पृथिवी में पडना प्रशस्त नहीं सो कछु चिंता न करो दान के प्रभाव से क्रूर ग्रह शान्त होवेंगे ॥

अथानन्तर वसन्तसमयरूपी राजा आया तिलक जाति के वृक्ष फूले सोई उसके बषतर और नीम जाति के वृक्ष फूले वेई गजराज तिनपर आरूढ़ और आंब मोर आये सो मानो बनन्तका धनुष और कमल फूले सो बसन्तके बाण और केसरा फूले वेई रतिराजके तरकश और भ्रमर गुंजार करे हैं सो मानो निर्मल श्लोकोंकर बसन्त नृप का यश गावे हैं और कदम्ब फूले तिनकी सुगन्ध पवन आवे है सोई मानों वसन्त नृप के निश्वास भये और मालतीके फूल फूले सो मानो वसन्त भूप शीतकालादिक अपने शत्रुवोंको हंसे है और कोयल मिष्ट बाणी बोले है सो मानों वसन्तराजाके वचन हैं इस भांति वसंत समय नृपति कीसी लीला धरे आया वसन्त की लीला लोकों को कामका उद्वेग उपजावनहारी है फिर यह वसन्त मानों सिंहही है आकोट जाति वृक्षादि के फूल वेई हैं नख जिसके और कुरवक जाति के वृक्षों के फूल वेई दाढ़ जिसके और महारक्त अशोकके पुष्प वेईहैं नेत्र जिसके और चंचलपवन वेई हैं जिव्हा जिसकी ऐसा बसंत

केसरी आय प्राप्तभया लोकों के मनकी वृत्ति सोई भई गुफा उन में पैठा महेंद्रनामा उद्यान नंदनवन समान सदाही सुन्दरहै सो बसंत समय अति सुन्दर होताभया नानाप्रकारके पुष्पोंकी पाखुडी और नाना प्रकारकी कूपल दक्षिणदिशि की पवनकर हालती भई सोमानों उन्मत्तभई घूमे है और वापिका कमलादिक कर आच्छादित और पक्षियों के समूहनाद करे हैं और लोक सिवाणोंपर तथा तीरपर बैठे हैं और हंस सारस चकवा कौंच मनोहर शब्दकरे हैं और कारंड बोल रहे हैं इत्यादि मनोहर पक्षियोंके मनोहर शब्दरागी पुरुषोंको राग उपजावें हैं पक्षी जलविषे पडे हैं और उठे हैं तिनकर निर्मल जल कल्लोल रूप होय रहा है जलतो कमलादिक कर भरा है और स्थल जो हैं सो स्थलपद्मादिक पुष्पोंकर भरे हैं और आकाश पुष्पोंकी मकरन्दकर मंडित होय रहाहै गुलोंके गुच्छे और लता वृक्ष अनेकप्रकारके फूल रहे हैं वनस्पति की परमशोभा होयरही है उससमय सीता कछु गर्भके भारकर दुर्बलशरीर भई तब राम पूछते भये हे कांते तेरे जो अभिलाषा होय सो पूर्ण करूं तब सीता कहती भई हेनाथ अनेक चैत्यालयों के दर्शन करवेकी मेरे वांछा है भगवानके प्रतिबिंब पांचोंवर्ण के लोक विषे मंगलरूप तिनको नमस्कारकरवेको मेरा मनोरथ है स्वर्ण रत्नमई पुष्पोंकर जिनेंद्रको पूजूं यह मेरे महाश्रद्धा है और क्या वांछूं ये वचन सुनकरराम हर्षित भये फूलगया है मुखकमल जिनका राजलोक में बिराजते थे सो द्वारपाली को बुलाय आज्ञाकरी कि हेभद्रे मंत्रियों को आज्ञा पहुंचावो कि समस्त चैत्यालयों में प्रभावना करें और महेंद्रोदयनाम उद्यानमें जे चैत्यालयहैं तिनकी शोभा करावें और सर्व लोकको आज्ञापहुंचावो कि जिन मंदिरोंमें पूजा प्रभावनाआदि अति उत्सवकरें और तोरणध्वजा घंटा झालरी चंदोवा सायवान महामनोहर

वस्त्रों के बनावें तथा सुन्दर समस्त उपकरण देहुरा चढ़ावें लोक समस्त पृथिवी विषे जिन पूजाकरें और कैलाश सम्मेद शिखर पावांपुर चंपापुर गिरनार शत्रुंजय मांगी तुंगी आदि निर्वाण क्षेत्रों विषे विशेष शोभा करावो कल्याण रूप दोहुला सीता को उपजा है सो पृथिवी विषे जिन पूजाकी प्रवृत्ति करो हम सीतासहित धर्म क्षेत्रोंमें विहार करेंगे यह रामकी आज्ञा सुन वह द्वारपाली अपनी ठौर औरको राखकर जाय मंत्रियोंको आज्ञा पहुंचावती भई और वे स्वामीकी आज्ञा प्रमाण अपने किंकरों को आज्ञा करते भए सर्व चैत्यालयों में शोभा कराई और महा पर्वतोंकी गुफाओंके द्वार पूर्ण कलश थापे मोतियों के हारों कर शोभित और विशाल स्वर्णनकी भीतिमें मणियोंके चित्राम रचे महेंद्रोदय नाम उद्यानकी शोभा नंदन वनकी शोभा समानकर अत्यन्त निर्मल शुद्ध मणियोंके दर्पण थंभमें थापे और झरोखाओंके मुख विषे निर्मल मोतियों के हार लटकाये सो जल नीझरना समान सोहे हैं और पांच प्रकारके रत्नों को चूर्ण कर भूमि मंडित करी और सहस्रदल कमल तथा नानाप्रकारके कमल तिनकर शोभा करी और पांच वर्ण के मणियों के दंड तिनमें महा सुन्दर वस्त्रों की ध्वजा लगाय मंदिरों के शिखर पर चढ़ाई, और नाना प्रकारके पुष्पोंकी माला जिनपर भ्रमर गुंजार करें ठौर २ लुंबाई हैं और विशालवादित्रशाला नाट्यशाला अनेक रची हैं तिनकर वन अति शोभे है मानों नंदन वनही है तब श्रीरामचन्द्र इन्द्रसमान सब नगरके लोकोंकर युक्त समस्त राजलोकों सहित वनमें पधारे सीता और आप गजपर आरूढ़ कैसे सोहें जैसे शची सहित इन्द्र ऐरावत गजपर चढ सोहै और लक्ष्मण भी परम ऋद्धिको धरे वनमें जाते भए और और भी सब लोक आनन्दसे वनमें गये, और सबोंके अन्न

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पान बनही में भया जहां महा मनोग्य लताओंके मंडप और केलिके वृक्ष वहां राणी तिष्ठी और और भी लोक यथायोग्य सुखसे बनमें तिष्ठे, राम हाथीसे उतरकर निर्मल जलका भरा जो सरोवर नानाप्रकार के कमलोंकर संयुक्त उस बनमें रमते भए जैसे इन्द्र क्षीर सागरमें रमे वहां क्रीड़ाकर जलसे बाहिर आय दिव्य सामग्री कर विधि पूर्वक सीतासहित जिनेन्द्रकी पूजाकरतेभए, राम महासुन्दर और बनलक्ष्मी समान जे वल्लभा तिनकर मंडित ऐसे सोहते भये मानों मूर्तिवंतही हैं आठहजार राणी देवांगना समान तिन सहित राम ऐसे सोहैं मानों ये तारावोंकर मंडित चन्द्रही हैं अमृत का आहार और सुगंध का विलेपन मनोहर सेजमनोहर आसन नानाप्रकारके सुगध माल्यादिक स्पर्श रसगंधरूपशब्द पांचों इंद्रियों के विषय अति मनोहर रामको प्राप्त भए जिनमंदिर विषे भलीविधिसें नृत्यपूजाकरी पूजा प्रभावना में रामके अति अनुराग होता भया सूर्यसे भी अधिक तेजके धारक राम देवांगनासमान सुन्दरजे दारा तिन सहित केयक दिन सुख से बन में तिष्ठे ॥ इति पिचाणवा पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर प्रजा के लोक राम के दर्शन की अभिलाषा कर बनही में आये तैसं तिसाये पुरुष सरोवर पै आवें, तब बाहिर ले दरवान ने लोकों के आवने का वृत्तांत द्वारपालीयों से कहा वे द्वारपाली भीतर राजलोक में रामसे जायकर कहती भई कि हे प्रभो प्रजाकेलोकआप के दर्शनको आये हैं और सीता की दाहिनी आंख फुरकी तब सीता विचारती भई यह आंखमुझे क्याकहे है कछू दुःखका आगमन बतावे है आगे अशभ के उदय कर समुद्र के मध्य में दुख पाये तो भी दुष्ट कर्म संतुष्ट न भया क्या और भी दुख दीया चाहे है जो इस जीवने रागद्वेषके योग कर कर्म उपार्जे हैं तिन का फल ये प्राणी अवश्य पावे हैं

For Private and Personal Use Only

किसी से भी निवारा नजाय तब सीता चिन्तावती होय और राणीयों से कहती भई मेरी दाहनी आंख फुर्कने का फल कहो तब एक अनुमतिनामा राणी महाप्रबीण कहती भई हे देवि इस जीव ने जे कर्म शुभ अथवा अशुभ उपार्जे हैं वे इस जीव के भले बुरे फल के दाता हैं कर्मही को काल कहिये और विधि कहिये और देव कहिये इश्वर भी कहिये, सब संसारी जीव कर्मों के आधीन हैं सिद्ध परमेष्ठी कर्मों से रहित हैं फिर गुणदोष की ज्ञाताराणी गुणमाला सीता को रुदन करती देख धीर्य बन्धाय कहती भई हे देवी तुम पति के सर्वों से श्रेष्ठ हो तुमको किस प्रकारका दुख नहीं और और राणी कहती भई बहुत विचारकर क्या शांतिकर्म करो जिनेन्द्रका अभिषेक और पूजा करावो और किम इछक दान देवो जिस की जो इच्छा होय सो लेजावो दान पूजा कर अशुभ का निवारण होय है इस लिये शुभ कार्य कर अशुभ को निवारो इसभांति इन्होंने कही तब सीता प्रसन्नभई और कही योग्य है दान पूजा अभिषेक और तप ये अशुभ के नाशक हैं दान धर्म विघ्न का नाशक वैरका नाशक है पुण्यका और यश का मूलकारण है यह विचार कर भद्रकलश नामा भंडारी को बुलायकर कही मेरे प्रसूति होय तौं लग किमिछादान निरन्तर देवो तब भद्रकलशनेकही जो आप आज्ञा करोगी सोही होयगा यह कहकर भंडारी गया और जिनपूजादि शुभक्रिया विषे प्रवरता जितने भगवान् के चैत्यालय हैं तिनमें नानाप्रकार के उपकरण चढाये और सब चैत्यालयों में अनेक प्रकार के वादित्र बजवाये मानों मेघ ही गाजे हैं और भगवान् के चरित्र पुराण आदिकग्रंथ जिनमन्दिरों में पधराय और त्रैलोक्य के पाट समोसरणकेपाट द्वीपसमुद्रांतके पाट प्रभुके मन्दिरों में पधराये औरदूध दही, घृत, जल मिष्टान्नकेभरे कलश अभिषेक कोपठाये और सब खोजाओंमेंप्रधान जोखोजासो वस्त्राभूषण

पहरे हाथीचढा नगरमें घोषणाफेरे जिसको जो इच्छा होयसोही लेवोइस भांति विधि पूर्वक दान पूजा उत्सव कराये, लोक पूजा दानतप आदि विषे प्रवर्ते पाप बुद्धि रहित समाधानकोप्राप्त भये सीता शांतचित्तधर्ममाग में अनरक्तभई और श्रीरामचन्द्र मण्डप में आयतिष्ठे, द्वारपाल ने जे नगरी के लोक आये थे वे राम से मिलाये स्वर्ण रत्न कर निर्मापित अद्भुत सभा को देख प्रजा के लोक चकित हो गये, हृदयको आनन्द के उपजावनहारेराम तिनकोदेखकर नेत्र प्रसन्नभये प्रजाकेलोक हाथजोड़ नमस्कारकरते भये कांपैहैतनजिनका और डरेहै मन जिनका तब रामकहते भये, हेलोको तुम्हारेआगमकाकारणकहोतब विजयसुराजी मधुमानव सुलोधरकाश्यपपिंगलकालपेमइत्यादिनगरकेमुखिया मनुष्य निश्चलहोयचरणोंकी तरफ चौंके गलगयाहैगर्व जिनका राजतेज के प्रताप करकछु कहि न सकें यद्यपिचिरकालमेंसोच सोचकहाचाहेंतथापिइनके मुख रूप मंदिर सेवाणी रूप विधु ननिकसे तबराम ने बहुत दिलासाकरकहीतुमकौन अर्थआयेहो सोकहोइस भांति कही तौभी वे चित्राम कैसे होय रहे कछु न कहें लज्जारूप फांस कर बंधा है कंठ जिनका और चलायमान हैं नेत्र जिनकेजैसे हिरणके बालक व्याकुलचित्त देखें तैसे देखेंतब तिनमें मुख्य विजयनाम पुरुष चलायमान है शब्द जिसका सो कहता भया हे देव अभयदानका प्रसाद होय तब रामने कही तुम काहू बात का भय मत करो तुम्हारे चित्तमेंजोहोय सो कहो तुम्हारा दुःख दूर कर तुमको साता उपजाऊंगा तुम्हारेऔगन न लूंगा गुणही लूंगाजैसे मिले हुएदूधजल तिनमें जलको टार हँसदूधही पीवे है श्रीरामने अभयदान दीया तोभी अतिकष्ट से विचारविचार धीरे स्वरकर विजय हाथ जोड़ सिर निवाय कहता भया कि हे नाथनरोत्तम एक बीनती सुनो अब सकल प्रजा मर्यादारहित प्रवर्ते है यह लोक स्वभाव ही से कुटिल हैं और एक दृष्टांत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकट पावें तब इनको अकार्य करने में कहां भय, जैसे बानर सहजही चपलहै और महाचपल जो यंत्रपिंजरा उसपर चढ़ा तब क्या कहना निर्बलों की यौवनवंत स्त्री पापी बलवंत छिद्र पाय बलात्कार हरे हैं और कोईयक शीलवंती विरहकर पराये घर अत्यंत दुखी होयहैं तिनको कोईयक सहाय पाय अपने घर लेआवे हैं सो धर्म की मर्यादा जाय है, यह न जाय सो यत्न करो प्रजा के हितकी वांछा करो जिस विधि प्रजाका दुख टरेसोकरो इस मनुष्य लोकमें तुम बडे राजा हो तुम समान और कौन तुमही जो प्रजाकी रक्षा न करोगे तो कौन करेगा नदीयों के तट तथा वन उपवन कूप वापिका सरोवरों के तीर ग्राम ग्राममें घर घरमें सभामें एक यही अपवाद की कथा है और नहीं कि श्रीराम राजा दशरथके पुत्र सर्व शस्त्रमें प्रवीण स रावण सीता को हर लेगया ताहि घर में लेआये तब औरों को कहा दोष है जो बडे पुरुषकरें सो सब जगत् को प्रमाण जिस रीति राजा प्रवर्ते उसही रीति प्रजा प्रवर्ते "यथा राजा तथा प्रजा" यह वचन है इस भांति दुष्ट चित्त निरंकुशभए पृथिवी में अपवाद करे हैं तिनका निग्रह करो हे देव आप मर्यादाके प्रवर्तक पुरुषोत्तम हो एक यही अपवाद तुम्हारेराज्यमें न होतातो तुम्हाराराजो राज्यइन्द्र सेभीअधिकहैयह वचनविजय के सुनकर क्षणएक रामचन्द्र विषादरूप मुद्गर के मारे चलायमानचित्त होयगए चित्तमें चितवते भए यह कौन कष्ट पड़ा मेरा यशरूप कमलोंका बन अपयशरूपअग्नि कर जलने लगा है जिससीताके निमित्त में विरह का कष्ट सहा सो मेरे कुलरूप चन्द्रमा को मलिन करे है अयोध्या में मैं सुखके निमित्त आया और सुग्रीव हनूमानादिक से मेरे सुभटसो मेरे गोत्ररूप कुमुदनीको यह सीता मलिन करेहै जिसके निमित्त मैंने समुद्र तिर रणसंग्राम कर रिपुको जीता सो जानकी मेरे कुलरूप दर्पण को कलुषकरे है और लोक

For Private and Personal Use Only

कहे हैं सो सांच है दुष्ट पुरुषके घरमें तिष्ठी सीता मैं क्यों लाया और सीता से मेरा अतिप्रेम जिसे क्षण मात्र न देखूं तो विरहकर आकुलता लहूं और वह पतिव्रता मोसे अनुरक्त उसे कैसे तजूं जो सदा मेरे नेत्र और उरमें वसे महागुणवती निर्दोष सीता सती उसे कैसे तजूं अथवा स्त्रियों के चित्त की चेष्टा कौन जाने जिनमें सब दोषों का नायक मन्मथ वसे है धिक्कार स्त्री के जन्मको सर्वदोषोंकी खान आताप का कारण निर्मल कुल में उपजे पुरुषों को कर्दम समान मलिनता का कारण है, और जैसे कीच में फसा मनुष्य तथा पशु निकस न सके तैसे स्त्री के रागरूप पंकमें फसा प्राणी निकस न सके. यह स्त्री समस्त बलका नाश करणहारी है और रागका आश्रय है और बुद्धि को भ्रष्ट करे है और आपदावे को खाई समान है निर्वाण सुखकी विघ्न करण हारी ज्ञान की उत्पत्ति को निवारण हारी भव भ्रमण का कारण है भस्म से दबी अग्नि समान दाहक है डांभ की सूई समान तीक्ष्ण है देखवे मात्र मनोग्य परन्तु अपवाद का कारण ऐसी सीता उसे मैं दुःख दूर करवे निमित्त तजूं जैसे सर्प कांचिली को तजे फिर चितवे हैं जिसकर मेरा हृदय तीव्रस्नेहके बंधनकर वशीभूत सो कैसे तजीजाय, यद्यपिमैं स्थिरहूं तथापि यहजानकी निकटवर्तिनी अग्नि कीज्वाला समान मेरे मन को आताप उपजावे है और यह दूर रही भी मेरे मन को मोह उपजावे जैसे चन्द्ररेखा दूरही से कुमुदनी को विकसित करे, एक ओर लोकापवाद का भय और एक ओर सीता के दुर्निवार स्नेह का भय और राग कर विकल्प के सागर में पड़ा हूं और सीता सर्वथा प्रकार देवांगना से भी श्रेष्ठ महापतिव्रता सती शीलरूपिणी मोसे सदा एकचित उसे कैसे तजूं और जो न तजूं तो अपकीर्ति प्रगट होय है इस पृथिवी में मोसमान और दीन नहीं स्नेह और अपवाद का भय उसविषे लगा है

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन जिसका दोनोंकी मित्रताका तीव्र विस्तार वेगकर वशीभूतजो रामसो अपवादरूप तीव्रकष्टको प्राप्त भये सिंहकी है ध्वजा जिसके ऐसे राम तिनको दोनों बातोंकी अति आकुलतारूप चिंता असाताका कारण दुस्सह आताप उपजावती भई जैसे जेष्टके मध्यानका सूर्यदुस्सहदाह उपजावे॥ इति छयानवां पर्व

अथानन्तर श्रीराम एकाग्र चित्तकर द्वारपालको लक्ष्मणके बुलावनेकी आज्ञा करतेभये सो द्वारपाल लक्ष्मण पैगया आज्ञा प्रमाण तिनको कही, लक्ष्मण द्वारपालके बचन सुनकर तत्काल तेजतुरंगपर चढ रामके निकट आया हाथ जोड नमस्कार कर सिंहासनके नीचे पृथिवीपर बैठा रामके चरणोंकी ओरहै दृष्टि जिसकी राम उठकर आधे सिंहासन परलेबैठे, शत्रुघन आदि सबही राजा और विराधित आदि सब ही विद्याधर यथा योग्य बैठे पुरोहित श्रेष्ठी मन्त्री सेनापति सब ही सभा में तिष्ठे तब क्षण एक विश्राम कर रामचन्द्र ने लक्ष्मणसे लोकापवादका बृत्तांत कहा, सुनकर लक्ष्मण क्रोधकर लालनेत्रभये और योधावों आज्ञाकरी अबारमें उन दुर्जनोंके अंत करवेको जाऊंगा पृथिवीको मृषावाद रहित करूंगा जेमिथ्या वचन कहेहैं तिनकी जिव्हा छेद करूंगा उपमा रहितजो शील व्रतकी धारणहारी सीता उसकी जेनिन्दा करें हैं तिनका क्षय करूंगा इसभांति लक्ष्मण महाक्रोध रूपभये नेत्र अरुण होयगये तब श्री राम इन बचनों से शांतकरतेभये कि हे सौम्ययह पृथिवीसागरपर्यंत उसकी श्रीऋषभदेवने रक्षाकरी फिरभरतने प्रतिपालना करी और इक्ष्वाकुवंशके तिलकभये जिनकी पीठरणमें रिपुओंने न देखी जिन की कीर्ति रूप चांदनी से यह जगत् शोभित है सोअपने वंशमें अनेक यशके उपजावन हारे भये अबमें क्षणभंगुर पाप रूप रागके निमित्त यशको कैसे मलिनकरूं, अल्पभी अकीर्ति जो न टारिये तोबृद्धिको प्राप्त होय और उन

नीतिवान् पुरुषोंकी कीर्ति इन्द्रादिक देवोंसे गाईयेहै ये भोग विनाशिक तिन से क्या जिनसे अकीर्ति रूप अग्नि कीर्तिरूप वनको बाले यद्यपि सीता सती शीलवन्ती निर्मलचित्त है तथापि इस को घर में राखे मेरा अपवाद न मिटे यह अपवाद शस्त्रादिक से हता न जाय यद्यपि सूर्यकमलोंके वनका प्रफुल्लित करणहारा है अतितिमिरका हरण हारहै तथापि रात्रिके होते सूर्य अस्त होय है तैसे अपवाद रूप रज महा विस्तारको प्राप्तभई तेजस्वी पुरुषों की कांति की हानी करे है सो यह रज निवारनी चाहिये हैं हे भ्रातः चन्द्रमा समान निर्मल गोत्र हमारा अकीतिरूप मेघमालासे आछादा जायहै सो न आछादाजाय येही मेरे यत्न है जैसे सूके इन्धनके समूह में लगी आग जलसे बुझाये बिना बृद्धिको प्राप्त होयहै तैसे अकीर्ति रूप अग्नि पृथिवी में विस्तरेहै सो निवारे बिना न मिटे यह तीर्थंकर देवोंका कुल महा उज्ज्वल प्रकाश रूपहै इसको कलंक न लगे सो उपाय करो यद्यपि सीता महा निर्दोष शीलवन्तीहै तथापि मैं तजुंगा अपनी कीर्ति मलिन न करूंगा। तब लक्षमण कहताभया कैसाहै लक्षमण रामके स्नेह में तत्परहै बुद्धि जिसकी हे देव सीता को शोक उपजावना योग्य नहीं लोक तो मुनियों काभी उपवादकरे हैं जिनधर्म काअपवादकरे हैं, तो क्या लोकापवादसे धर्म तजिये है तैसे लोकापवाद मात्रसे जानकी कैसे तजियेजो सब सतियोंके सीस विराजे है काहू प्रकार निंदाके योग्य नहीं और पापी जीव शीलवन्त प्राणीयोंकी निंदा करे हैं क्या तिनके बचनसे शीलवन्तों को दोष लागेहै वे निर्दोषही हैं. येलोक अविवेकीहैं इनके बचन पे परमार्थ नहीं विषकर दूषित हैं नेत्र जिनके वे चन्द्रमा को श्यामरूप देखेहैं परन्तु चन्द्रमा श्वेत ही है श्याम नहीं तैसे लोकों के कहे निकलंकीयों को कलंक नहीं लगेहै जे शील से पूर्ण हैं तिनको अपना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्मा ही साची है पर जीवोंका प्रयोजन नहीं नीच जनों के अपवादसे पण्डित विवेकी क्रोध को न प्राप्त होवें जैसे स्वानों के भौंकने से गजेन्द्र नहीं कोप करे हैं ये लोक विचित्रगतिहैं तरंग समान हे चेष्टा जिनकी परदोष कथवे में आसक्त सो इन दुष्टों का स्वयमेवही निग्रह होयगा जैसे कोई अज्ञानी शिला को उपाड कर चन्द्रमा की ओर वगाय उसे मारा चाहे सो सहज ही आप निस्सन्देह नाशको प्राप्तहोय है जो दुष्ट पराये गुणोंको न सहसकें और सदा पराई निंदाकरें हैं, सो पाप कर्मी निश्चय सेती दुर्गती को प्राप्त होयहैं, जब ऐसे वचन लक्ष्मणने कहे तब श्रीरामचन्द्र कहते भए हे लक्ष्मण तू कहे है सो सब सत्य है तेरी बुद्धि रागद्वेष रहित अति मध्यस्थ महाशोभायमान है, परन्तु जे शुद्ध न्याय मार्गी मनुष्य हैं वे लोक विरुद्ध कार्य को तजे हैं जिसकी दशोंदिशा में अकीर्ति रूप दावानला की ज्वाला प्रज्वलित है उसको जगत् में क्या सुख और क्या उसका जीतव्य अनर्थ का करणहारा जो अर्थ उसकर क्या और विषकर संयुक्त जो औषधि उसकर क्या और जो बलवान् होय जीवों की रक्षा न करे शरणागत पालक न होय उसके बलकर क्या और जिसकर आत्मकल्याण न होय उस आचरणकर क्या चारित्र सोई जो आत्म हित करे और जो अध्यात्मगोचर आत्मा को न जाने उसके ज्ञानकर क्या और जिसकी कीर्ति रूपवधू अपवाद रूप बलवान् हरे उसका जन्म प्रशस्त नहीं ऐसे जीवने से मरण भला लोकापवाद की वाततों दूर ही रहो मुझे यह महा दोष है जो पर पुरुष ने हरी सीता में फिर घर में लाया राक्षस के भवन में उद्यान वहां यह बहुत दिन रही और उसने दूती पठाय मनवांछित प्रार्थना करी और समीप आय दुष्ट दृष्टिकर देखी और मनमें आये सो वचन कहे ऐसी सीता में घर में ल्याया इस समान और लज्जा क्या

For Private and Personal Use Only

सो मूढ़ों से क्या न होय इस संसार की माया में मैं भी मूढ भया इसभांति कहकर आज्ञा करी के शीघ्र ही कृतांतवक्र सेनापति को बुलावो, यद्यपि दो बालकों के गर्भसहित सीता है तौभी इसे तत्काल मेरे घर से निकासो यह आज्ञा करी तब लक्ष्मण हाथ जोड़ नमस्कार कर कहता भया हे देव सीता को तजना योग्य नहीं यह राजा जनक की पुत्री महा शीलवती जिनधर्मणी कोमल चरण कमल जिसके महा सुकुमार भोरी सदा सुखिया अकेली कहां जायगी, गर्भ के भारकर संयुक्त परम खेद को धरे यह राज पुत्र तुम्हारे तजे कौन के शरण जायगी और आपने देखने की कही सो देखनेकर कहां दोषभया जैसे जिनराजके निकट चढाया द्रव्य निर्माल्य होयहै उसे देखिये है परन्तु देखे दोष नहीं और अयोग्य अभक्ष्य वस्तु आंखों से देखिए हैं परन्तु देखे दोष नहीं अंगीकार कीये दोष है इसलिये हे नाथ मोपर प्रसन्न होवो मेरी बीनती मानो महा निर्दोष सीता सती तुममें एकाग्रहै चित्त जिसका उसे न तजो तब राम अत्यन्त विरक्त होय कोपमें आगए और अप्रसन्न होय कही लक्ष्मण अब कछू न कहना मैं यह अवश्य निश्चय किया शुभ होवे अथवा अशुभ होवे निर्मानुष बन जहां मनुष्य का नाम नहीं सुनिये वहां द्वितीय सहाय रहित अकेली सीता को तजो अपने कर्म के योगकर जीवो अथवा मरो एक क्षणमात्र भी मेरे देश में अथवा नगरमें तथा कोई के मन्दिर में मत रहो वह मेरी अपकीर्तिकी करणहारी है, कृतांतवक्र को बुलाया सो चार घोड़ों का रथ चढ़ा बड़ी सेना सहित जिसका बन्दीजन विरद बखाने हैं लोक जय जयकार करे हैं सो राजमार्ग होय आया जिसपर छत्र फिरता और धनुष चढाये बषतर पहिरे कुण्डल पहिरे उसे इस विधि आवता देख नगर के नर नारी अनेक विकल्प की वार्ता करते भए आज यह सेनापति शीघ्र दौड़ा जाय है सो कौन पर

विदा होयगा आप कौन पर कोप भए हैं, आज कोई का कछू विगाड़ है। ज्येष्ठ के सूर्य समान ज्योति जिस की काल समान भयंकर शस्त्रों के समूह के मध्य चला जाय है सो आज न जानिये कौन पर कोपा है, इस भांति नगर के नर नारी बात करे हैं और सेनापति राम देव के समीप आया स्वामी को सीस निवाय नमस्कार कर कहता भया। हे देव जो आज्ञा होय सो ही करूं तब रामने कही, शीघ्रही सीताको ले जावो और मार्गविषे जिनमंदिरोंका दर्शन कराय समेद शिखर और निर्वाण भूमि तथा मार्गके चैत्यालय वहां दर्शन कराय इसकी आशा पूर्णकर और सिंहनादनामा अटवी जहां मनुष्यका नाम नहीं वहां अकेली मेल उठ आवो तब उसने कही जो आज्ञा होयगी सोही होयगी कछूवितर्क न करी और जानकीपै जाय कही हे माता उठो रथमें चढो चैत्यालयोंके दर्शनकी बांछा है सो करो इसभांति सेनापतिने मधुरस्वरकर हर्ष उपजाया तब सीता रथचढ़ी, चढते समय भगवान को नमस्कार किया और यह शब्द कहा जो चतुर्विध संघ जयवन्त होवे श्रीरामचन्द्र महाजिनधर्मी उत्तम आचरण विषे तत्पर सो जयवन्त होवे और मेरे प्रमादसे असुन्दर चेष्टाभई होवे सो जिनधर्मके अधिष्ठाता देव क्षमा करो और सखी जन लार भई तिनसे कही तुम सुखसे तिष्ठो मैं शीघ्रही जिन चैत्यालयों के दर्शनकर आऊं हूं इसभांति तिनसे कह और सिद्धोंको नमस्कारकर सीता आनन्दसे रथ चढी सो रत्न स्वर्णका रथ उसपर चढी ऐसी सोहती भई जैसी विमान चढ़ी देवांगना सोहे, वह रथ कृतांतवक्रने चलाया सो ऐसा शीघ्र चलायाजैसा भरत चक्रवर्तीका चलाया बाण चले सो चलते समय सीताको अपशकुन भय सूके वृक्षपर काग बैठा विरस शब्द करता भया और माथा धुनता भया और सन्मुख स्त्री महाशोक

की भरी सिरके बाल बखेरे रुदन करती भई इत्यादि अनेक अपशकुन भए तो पणिसीता।जिन भक्तिमें अनुरागिणी निश्चलचित्त चली गई अपशकुन न गिने पहाड़ोंके शिखर कंदरा अनेक बन उपवन उलंघ कर शीघ्रही रथ दूर गया गरुडसमान बेग जिनका ऐसे अश्वोंकर युक्त सुफेद ध्वजाकर विराजित सूर्य के रथ समान रथ शीघ्र चला मनोरथ समान वह रथ तापर चढी रामकी राणी इन्द्राणीसमान सो अति सोहती भई कृतान्तवक्र सारथीने मार्ग में सीताको नाना प्रकारकी भूमि दिखाई ग्राम नगर बन और कमल से फल रहे हैं सरोवर नानाप्रकार के पुष्प नानाप्रकारके बृक्ष कईएक सघन बृक्षोंकर बन अन्धकार रूप है। जैसे अन्धेरी रात्रि मेघमालाकर मण्डित महा अन्धकार रूप भासे कछू नजर न आवे कईएक बिरले बृक्ष हैं सघनता नहीं वहां कैसी भासे है जैसी पंचमकालमें भरत ऐरावत क्षेत्रोंकी पृथिवी बिरले सत्पुरुषों कर सोहे और कछूक बनी पतझड़ होयगई है सो पात्ररहित पुष्प फलादि रहितहैं छाया रहित कैसी दीखे जैसे बड़ कुलकी स्त्री विधवा। भावार्थ--विधवाभी पत्र रूपी पुष्प फलादि रहित हैं और आभरण तथा सुन्दर वस्त्रादि रहित और कान्ति रहित हैं शोभा रहित हैं तैसी बनी दीखे है और कई एक बन में सुन्दर माधुरी लता आम्र के बृक्ष से लगी ऐसी सोहे हैं जैसी चपल बेश आम्र से लगी अशोक की वांच्छा करे है और कैयक दावानल कर बृक्ष जर गये हैं सो नहीं सोहे हैं जैसे हृदय क्रोधरूप दावानल कर जरा न सोहे और कहीं एक सुन्दर पल्लवोंके समूह मन्द पवनकर हालते सोहे हैं मानो बसन्तराजके आयबेकरबन पंक्ति रूप नारी आनन्दसे नृतही करे है और कहीं एकभीलों के समूह तिनके ज कलकलाट शब्दकर मृगदूर भागगए हैं और पक्षी उड़गये हैं और कहीं एक बनी अल्प है जल जिनमें ऐसी नदी तिनकर

कैसी भासे है जैसी संताप की भरी बिरहनी नायिका असुवन कर भरे नेत्र संयुक्त भासे और कहीं एक बनी नानापक्षियों के नादकर मनोहर शब्द करे है और कहूंएक निर्मल नीझरनावोंके नादकर शब्दकरती तीव्रहास्य करे है और कहूंइक मकरंद विषे अति लुब्ध जे भ्रमर तिनके गुञ्जार कर मानों बनी बसंत नृप की अस्तुतिही करे है और कहूं इक बनी फलोंकर नम्रीभूत भई शोभा को धरे है जैसे सफल पुरुष दातार नम्रीभूत भये सोहे हैं और कहूंइक वायुकर हालते जे वृक्ष तिनकी शाखा हाले हैं और पल्लव हाले हैं और पुष्प पड़े हैं सो मानों पुष्पवृष्टि ही करें हैं इत्यादि रीतिको धरे बनी अनेक क्रूरजीवोंकर भरी उसे देखती सीता चली जाय है राममें है चित्त जिसका मधुरशब्द सुनकर विचारती भई मानो रामके दुंदुभी बाजेही बाजे हैं इस भांति चितवती सीता आगे गंगा को देखती भई कैसी है गंगा अति सुन्दर है शब्द जिसमें और जिसके मध्य अनेक जलचर जीव मीन मकर ग्राहादिक बिचरेहैं तिनके बिचरवे कर उद्धत लहर उठे हैं इसलिये कंपायमान भयेहैं कमल जिसमें और मूलसे उपाड़ें हैं तीरके उतंगवृक्ष जिसने और उखाड़े हैं पर्वतोंके पाषाणोंके समूह जिसने समुद्रकी ओर चली जाय है अति गंभीर है उज्वल फूलोंकर शोभे है झागोंके समूह उठे हैं और भ्रमते जे भवर तिनकर महा भयानक है और दोनों ढाहावों पर बैठे पक्षी शब्द करे हैं सो परम तेज के धारक रथके तुरंग उस नदी को तिरपार भये पवन समानहै बेग जिनका जैसे साधुसंसार समुद्रके पारहोय नदीके पार जायसेना पति यद्यपि मेरुसमान अचल चित्त था तथापि दया के योग से अति बिषाद को प्राप्त भया महा दुखका भरा कछू कह न सके आंखों से आंसू निकल आये रथको थांभ ऊंचे स्वर कर रुदन करने लगा

होला और मना है अंग जिनका जातो रहो है कान्ति जिसकी तब सीता सती कहती भई। हे कृतान्तवक्र तू काहेको महा दुखीकी न्याईं रोवे है आज जिनवन्दनाके उत्सवका दिन तू हर्ष में विषाद क्यों करेहै इसनिर्जन बनमें क्यों रोवे है तब वह अति रुदनकर यथावत वृतांतकहताभया वह बचन विष समान अग्नि समान शस्त्रसमानहैं हे मातः दुर्जनोंके बचनोंसे राम अकीर्तिके भयसे जो न तजाजाय तुम्हारा स्नेह उसे तजकर चैत्यालयोंके दर्शनकी तुम्हारे अभिलाषा उपजी थी सो तुमको चैत्यालयोंके और निर्वाण क्षेत्रों के दर्शन कराय भयानक बनमें तजी है हे देवी जैसे यति रागपरणतिको तजे तैसे रामने तुमको तजी है, और लक्ष्मणने जो कहिबेकी हदथी सो कही कछू कमी न राखी तुम्हारे अर्थ अनेक न्याय के शब्द कहे, परन्तु रामने हठ न छोड़ी। हे स्वामिनि राम तुमसे नीराग भए अब तुमको धर्मही शरण है सो इस संसारमें न माता, न पिता, न भ्राता, न कुटुम्ब एक धर्मही जीवका सहाई है अब तुमको यह मृगोंका भरा बनही आश्रयहै, ये बचन सुनकर सीता वज्रपातकी मारी कैसी होय गई हृदय में दुखके भारकर मूर्छाको प्राप्त भई फिर सचेतहोय गदगद बाणीसे कहती भई शीघ्रही मुझे प्राण नाथ से मिला तब उसने कही हे मातः नगरी दूर रही और रामका दर्शन दूर तब अश्रुपातरूप जलकी धारासे मुखकमल प्रक्षालती हुई कहतीभई कि हे सेनापति तूमेरेबचनरामसेकहियोकिमेरेत्यागकाविषाद आप न करणा परम धीर्यको अवलंब कर सदा प्रजाकी रक्षा करियो जैसे पिता पुत्रकी रक्षा करे आप महा न्यायवन्तहो और समस्त कलाके पारगामी हो राजाको प्रजाही आनन्दका कारणहै राजा वही जिसे प्रजा शरदकी पुनों के चन्द्रमा की न्याईं चाहे और यह संसार असारहै महाभयंकर दखरूपहै

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिस सम्यकदर्शन कर भव्यजीव संसारसे मुक्त होवे हैं सो तुम्हारे आराधिवे योग्यहै तुम राजासे सम्यक दर्शनको विशेषभला जानियो वह राज्य तो विनाशीक हैं और सम्यक दर्शन अविनाशी सुखका दाता है यदि अभव्यजीव निन्दा करें तो उनकी निन्दाके भयसे हे पुरुषोत्तम सम्यक्दर्शनको कदाचित न तजना यह अत्यन्त दुर्लभहै जैसे हाथमें आया रत्न समुद्र विषे डालिये तो फिर कौन उपायसे हाथ आवे। और अमृत फल अंधकूपमें डारा फिर कैसे मिले जैसे अमृतफलको डाल बालकपश्चातापकरेतैसेसम्यक्दर्शनसे रहितहुवा जीव विषादकरे है यह जगतदुर्निवारहै जगतकामुख बंद करवेको कौन समर्थ जिसकेमुखमें जो आवेसोहीकहेइसलियेजगतकीबातसुनकरजो योग्यहोयसोकरियोलोकगडलिकाप्रवाहहैसोअपनेहृदय में हे गुणभूषण लौकिक वार्ता न धरणी और दानसे प्रीतिके योगकर जनोंको प्रसन्न राखना और विमल स्वभावकर मित्रोंको बश करना और साधु तथा आर्यिका आहारको जावें तिनकोप्रासुक अन्नसे अतिभक्ति कर निरंतर आहार देना और चतुर्विध संघकी सेवा करनी मन बचन कायकर मुनोंकी प्रणाम पूजन अर्चनादिकर शुभ कर्म उपार्जन करना और क्रोधको क्षमाकर मानको निगर्वताकर मायाको निष्कपटता कर लोभको संतोष कर जीतना आप सर्व शास्त्रविषे प्रवीणहो सो हम तुमको उपदेश देने को समर्थ नहीं क्योंकि हम स्त्रीजनहैं आपकी कृपा के योगसे कभी कोई परिहास्यकर अविनय भरा बचन कहा हो तो क्षमा करियो ऐसा कहकर रथसे उतरी और तृणपाषाणकर भरी जो पृथ्वी उसमें अचेतहोय मूर्छा खाय पड़ी सो जानकी भूमि में पड़ी ऐसी सोहती भई मानों रत्नोंकी राशिही पडी है कृतांतवक्र सीताको चेष्टारहित मूर्छित देख महादुखीभया और चित्तमें चितवताभया हाय यह महा भयानक वन

For Private and Personal Use Only

अनेक दुष्ट जीवों कर भरा जहां जे महाधीर शूरवीर होंय तिनके भी जीवनेकी आशा नहीं तो यह कैसे जीवेगी इसके प्राण बचने कठिन हैं इस महासती माताको मैं अकेली बन में तजकर जाऊं हूं सो मुझ समान निर्दई कौन मुझे किसीप्रकार भी किसी ठौर शांति नहीं एकतरफ स्वामीकी आज्ञा और एकतरफ ऐसी निर्दयता मैं पापी दुखके भवण में पड़ा हूं धिक्कार पराई सेवाको जगत में निंद्य पराधीनता जोस्वामी कहे सो न करना जैसे यंत्रको यंत्री बजावे त्योंही बाजे सो पराया सेवक यंत्र तुल्यहै और चाकरसे कूकर भला जो स्वाधीन आजीवका पूर्ण करे है जैसे पिशाचके बश पुरुषज्यों वह बकावे त्यों बक तैसे नरेंद्र के वश नर वहजो आज्ञा करें सो करे चाकरक्या न करे और क्या न कहे और जैसे चित्रामका धनुष निष्प्रयोजन गुण कहिये फिणच को धरे है सदा नम्रीभूत है तैसे पर किंकर निःप्रयोजन गुणको धरेहै सदा नम्रीभूत है धिक्कार किंकरका जीवना पराईसेवा करनी तेज रहित होना है जैसे निर्माल्य वस्तु निंद्यहै तैसे पर किंकरता निंद्यहै धिग् २ पराधीनके प्राण धारणको यह पराधीन पराया किंकर टीकली समान है जेसे टीकली पर तंत्र होय कूपका जीव कहिए जल हरे है तैसे यह परतंत्र होय पराए प्राण हरे है कभी भी चाकर का जन्म मत होवे पराया चाकर काठकी पूतली समानहै ज्यों स्वामी नचावे त्यों नाचे उच्चता उज्वलता लज्जा और कांति तिनसेपर किंकर रहित है जैसे विमान पराएआधीन है चलाया चाले थभाया थमें ऊंचाचलावे तो ऊंचाचढ़े नीचाउतारे तो नीचा उतरे धिक्कार पराधीनके जीतव्यको जो निर्मल अपनेमांसका बेचनहारा महालघु अपने आधीन नहीं सदा परतंत्र धिक्कार किंकर के प्राणधारणको मैं पराई चाकरीकरी और परवश भया तो ऐसे पापकर्म कोकरूं हूं, जो इसनिर्दोष महासतीको

अकेली भयानक बनमें तजकर जाऊं हूं। हे श्रेणिक जैसे कोई धर्मकी बुद्धि को तजे तसे वह सीताको बन में तजकर अयोध्या को सन्मुख भया अति लज्जावान् होयकर चला और सीता इसके गए पीछे केतीक वार में मूर्छासे सचेत होय महा दुखकी भरी यूथ भ्रष्ट मृगी की न्याईं विलाप करतीभई सो इसके रुदन कर मानों सबही बनस्पति रुदन करे हैं बृक्षों के पुष्प पडे हैं सोई मानो आंसू भए स्वतः स्वभाव महा रमणीक इसके स्वर तिनकर विलाप करता भई महा शोक की भरी हाय कमलनयन राम नरोत्तम मेरा रक्षा करो मुझ से वचनालाप करो, और तुम तो निरन्तर उत्तम चेष्टा के धारक हो महागुणवंत शांतचित्त हो तुम्हारा लेशमात्र भी दोष नहीं तुम तो पुरुषोत्तमहो. मैं पूर्वभवमें जो अशुभकर्मकीएथेतिनके फल पाये जैसा करना तैसा भोगना क्या करे भर्तार और क्या करे पुत्र तथा माता पिता बांधव क्याकरे अपना कर्म अपने उदय आवे सो अवश्य भोगना मैं मन्दभागिनी पूर्वजन्म में अशुभ कर्म कीये उसके फलसे इस निर्जन बनमें दुःख को प्राप्त भई, मैं पूर्वभवमें किसीका अपवाद कीया परनिंदा करीहोगी उसके पापकर यह कष्ट पाया तथा पूर्वभव में गुरों के समीप व्रत लेकर भग्न कीये उसका यह फल पाया अथवा विषफल समान जो दुर्वचन तिनकर किसीका अपमान कीया उससे यह फल पाये अथवा मैं परभवमें कमलोंके बन में तिष्ठताचकवा चकवीका युगल विछोड़ा इसलिये मुझे स्वामी का वियोग भया. अथवामैं परभव में कुचेष्टा कर हंस हंसनी का युगल विछोड़ा जे कमलों कर मण्डित सरोवर में निवास करणहार और बड़े बड़े पुरुषोंको जिनकी चालकी उपमा दोजे और जिनके वचन अति सुन्दर जिनके चरण चोंच लोचन कमल समान अरुण सो मैं बिछोडे उनके दोषकरऐसी दुःख अवस्था को प्राप्त भई अथवा मैं पापिनी कबूतर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कबूतरीके युगल बिछोड़े हैं जिनके लाल नेत्र आर्धाचिरम समान और परस्पर जिन में अतिस्नेह और कृष्णागुरु समान जिनका रंग अथवा श्याम घटा समान अथवा धूम समान धूसरे आरंभी हैं मुख मे क्रीड़ा जिन्होंने और कंठ में तिष्ठे है मनोहर शब्द जिनके सो मैं पापिनी जुदे कीये अथवा भले स्थानकमे बुरे स्थानक में मेले अथवा बांधे मारे ताके पापकर असंभाव्य दुःख मुझे प्राप्त भया अथवा वसंत के समय फूले वृक्ष तिन में केलि करते कोकिल कोकिली के युगल महामिष्ट शब्द के करन हारे परस्पर भिन्न भिन्न कीये, उस का यह फल है अथवा ज्ञानी जीवों के वंदिबे योग्य महाव्रती जितेन्द्रिय महा मुनि तिन की निन्दा करी, अथवा पूजा दान में विघ्न कीया, और परोपकार में अन्तराय किए हिंसादिक पाप किए, ग्रामदाह, बनदाह स्त्री बालक पशुहत्यादि पाप कीए तिन के यह फल हैं अन छाना पानी पिया रात्री को भोजन किया बीधा अन्न भषा अभक्ष्य वस्तु का भक्षण कीया न करिबे योग्य काम किए तिन के यह फल हैं मैं बलभद्र की पटराणी स्वर्ग समान महल की निवासिनी हजारां सहेली मेरी सेवा की करन हारी सो अब पाप के उदय से निर्जन वन में दुख के सागर में डूबी कैसे तिष्ठूं। रत्नों के मन्दिर में महा रमणीक वस्त्र तिनकर शोभित सुन्दर सेजपर शयन करण हारी मैं कहां पड़ी हूं सर्व सामग्री कर पूर्ण महा रमणीक महल में रहणहारी मैं अब कैसे अकेली बन का निवास करूंगी महा मनोहर बीण बांसुरी मृदंगादिक के मधुर स्वर तिनकर सुख निद्रा की लेन हारी मैं कैसे भयंकर शब्द कर भयानक बन में अकेली तिष्ठूंगी, राम देव की पटराणी अपयश रूपी दावानल कर जरी महा दुःखिनी एकाकी नीपापिनी कष्टका कारण जो यह बन जहां अनेक जातिके कीट

For Private and Personal Use Only

और करकस डोभकी अणी और कांकरान से भरी पृथिवी इस में कैसे शयन करूंगी ऐसी अवस्था भा पायकर जो मेरे प्राण न जांय तो ये प्राणही वज्र के हैं अहो ऐसी सवस्था पायकर मेरे हृदय के सौ टूक न होय हैं सो यह वज्रका हृदय है क्या करूं कहां जाऊं कौन से क्या कहूं कौन के आश्रय तिष्टूं हाय गुणसमुद्र राम मुझे क्यों तजी, हे महा भक्त लक्ष्मण मेरी क्यों न सहायकरी हाय पिता जनक हाय माता विदेहा यह क्या भया अहो विद्याधरोंके स्वामी भामण्डल मैं दुख के भवन में पड़ी कैसे तिष्टूं मैं ऐसी पापिनी जो मो सहित पति ने परम संपदा कर जिनेन्द्रका दर्शन अर्चन चितया था सो मुझे इस वनी में डारी। हे श्रेणिक इस भांति सीता सती विलाप करे है और राजा वज्रजंघ पुण्डरीक पुरका स्वामी हाथी पकड़वे निमित्तवन में आयाथा सो हाथी पकड़ बड़ी विभूति से पीछे जायथा सो उसकी सेनाके प्यादे शूरवीर कटारी आदि नानाप्रकारके शस्त्र धरे कमर बांधे आय निकसे सो इसके रुदन के मनोहर शब्द सुनकर शंशयको और भयको प्राप्त भये एक पैंडभी न जायसके, और तुरंगों के सवार भी उसका रुदन सुन खड़े होय रहे उनको यह अशंका उपजी कि इस बन में अनेक दुष्ट जीव वहां यह सुन्दर स्त्री के रुदनका नाद कहां होय है मृग सुसा रोझ सांप रीछ ल्याली बघेरा आरणे भैंसे चीता गैंडा शार्दूल अष्टापद वन शूकर गज तिनकर विकराल यहबन उस विषे यह चन्द्रकला समान महामनोग्य कौन रोवे है यह कोई देवांगना सौधर्म स्वर्गसे पृथिवी में आई है यह विचारकर सेना के लोक आश्चर्य को प्राप्त होय खड़े रहे और वहसेना समुद्र समान जिसमें तुरंगही मगर और पयादे मीन और हाथी ग्राह हैं समुद्रभीगाजे और सेनाभी गाजे है और समुद्र में लहर उठे हैं सेनामें सूर्य की किरणकर शस्त्रोंकी जोतउठे है समुद्र भी भयंकर

है सेना भी भयंकर है सो सकल सेना निश्चल होय रही ॥ इति सात्तनवां पर्वसम्पूर्णम् ॥

अथानन्तर जैसी महाविद्याकी थांभी गंगा थंभी रहे तैसे सेनाको थंभीदेख राजा वज्रजंघ निकटवर्ती पुरुषों को पूछताभया कि सेनाके थंभने का कारणक्या है तबवह निश्चयकर राजपुत्रीके समाचारकहते भए उससे पहिले राजाने भी रुदनके शब्दसुने सुनकर कहता भया जिसका यह मनोहर रुदनकाशब्द सुनिये है सो करो कौन है तब कई एक अग्रेसर होय जाय कर पूछते भये हे देवि तू कौन है और इस निर्जन बन में क्यों रुदन करे है तो समान कोऊ और नहीं तूदेवी है अक नाग कुमारी है अक कोई उत्तम नारी है तू महा कल्याण रूपिणी उत्तम शरीर की धरणहारी तुझे यह शोक कहां हमको यह बड़ा कौतुक है तब यह शस्त्र धारक पुरुषों को देख प्राप्त भई कांपे है शरीर जिसका सो भयकर उनको अपने अपने आभरण उतारकर देने लगी तब वे स्वामीके भयकर यह कहते भये हे देवी तू क्यों डरे है शोक का तज धीरता भज आभूषण हमको काहे को देवे है तेरे ये आभषण तेरेही रहो ये तुझे योग्य हैं हे माता तू विह्वल क्यों होय है, विश्वाश गह यह राजा वज्रजंघ पृथिवी में प्रसिद्ध महा नरोत्तम राजनीति कर युक्त है और सम्यक्दर्शन रूप रत्न भषण कर शोभित है कैसाहै सम्यग्दर्शन जिस समान और रत्न नहीं अविनाशी है अमोलिक है किसीसे हरा न जाय महा सुखका दायक शंकादिक मल रहित सुमेरु सारिखा निश्चल है हे माता जिसके सम्यग्दर्शन होवे उसके गुण हम कहांलग वर्णनकरें यह राजा जिनमार्गके रहस्यका ज्ञाता शरणागत प्रतिपालक है परोपकार में प्रवीण महा दयावान महा निर्मल पवित्रात्मा निंद्य कर्मसे निवृत्त लोकों का पिता समान रक्षक, महा दातार जीवों की रक्षा में सावधान दीन अनाथ

दुर्बल देह धारीयों को माता समान पाले है सिद्धि कार्य का करण हारा शत्रुरूप पर्वतों को बज्र समान है शास्त्र विद्या का अभ्यासी परधन का त्यागी पर स्त्री को माता बहिन बेटी समान माने है अन्याय मार्ग को अजगर सहित अन्धकूप समान जाने है धर्म में परम अनुरागी संसार के भ्रमण से भय भीत सत्यवादी जितेन्द्रिय है इसके समस्त गुण जो मुख से कहा चाहे सो भुजावों से समुद्र को तिरा चाहे है, ये बात बज्र जंघ के सेवक कहे हैं, इतने में ही राजा आप आया हाथी से उतर बहुत विनय कर सहज हो है शुद्ध दृष्टि जिसकी सो सीता से कहता भया हे बहिन वह बज्र समान कठोर महा असमझ है जो तुझे ऐसे बन में तजे और तुझे तजते जिस का हृदय न फट जाय हे पुण्यरूपिणि अपनी अवस्था का कारण कहो, विश्वास को भज भय मत करे और गर्भ का खेद मत करे तब यह शोक से पीडित चित्त फिर रुदन करतीभई राजाने बहुत धीर्य बंधाया तब यहहंस की न्यांई आंसू डार गद् गद् बाणीसे कहती भई हे राजन् मो मन्दभागनी की कथा अत्यन्तदीर्घ है यदि तुम सुना चाहो हो तो चित्त लगाय सुनो मैं राजा जनककी पुत्री भामण्डलकी बहिन राजादशरथके पुत्रकी बधू सीता मेरानाम रामकी राणी राजा दशरथने केकईको वरदान दीयाथा सो भरतको राज्यदेकर राजातो बैरागी भये और राम लक्ष्मण बनको गये सो मैं पतिके संग बनमें रही, रावण कपटसे मुझे हरले गया ग्यारवें दिन मैंने पतिकी वार्त्ता सुनभोजन किया पति सुग्रीवके घररहे फिर अनेक विद्याधरोंको एकत्रकर आकाशके मार्गहोय समुद्रको उलंघ लंकागये, रावणको युद्धमें जीत मुझे ल्याये फिर राज्यरूप कीचको तज भरत तो बैरागी भये कैसे हैं भरत जैसे ऋषभदेवके भरत चक्रवर्ती तिनसमानहै उपमा जिनकी सो भरत तो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्म कलंक रहित परमधाम को प्राप्तभये और केकई शोकरूप अग्नि से आताप का प्राप्त भई फिर वीतराग का मार्ग सार जानकर आर्यिका होय महा तप से स्त्रीलिंग छेद स्वर्ग में देवभई मनुष्य होय मोक्ष पावेगी रामलक्ष्मण अयोध्यामें इन्द्र समान राज्य करें सो लोक दुष्टचित्त निश्शंक होय अपवाद करतेभये कि रावण हरकर सीता को लेगया फिर राम ल्याय घरमें राखी सो राम महा विवेकी धर्म शास्त्र के वेत्ता न्यायवन्त ऐसी रीति क्यों आचरें जिस रीति आचरें उसी रीति प्रजा प्रवरते सो लोक मर्यादा रहित होने लगे, कहें रामही के घर यह रीति तो हम को क्या दोष और मैं गर्भ सहित दुर्बल शरीर यह चितवन करती थी कि जिनेन्द्र के चैत्यालयों की अर्चना करूंगी और भरतार भी मुझ सहित जिनेंद्र के निर्वाण स्थानक और अतिशय स्थानक तिन की वन्दना करने को भाव सहित उद्यमी भये थे और मुझे ऐसे कहते थे कि प्रथम तो हम कैलाश जाय श्री ऋषभदेव का निर्वाण क्षेत्र वन्देंगे फिर और निर्वाण क्षेत्रों को वन्द कर अयोध्या में ऋषभ आदि तीर्थंकर देवों का जन्म कल्याणक है सो अयोध्या की यात्रा करेंगे जेते भगवान् के चैत्यालय हैं तिन का दर्शन करेंगे कंपिल्या नगरी में विमलनाथ का दर्शन करेंगे और रत्नपुर में धर्मनाथ का दर्शन करेंगे कैसे हैं धर्मनाथ धर्म का स्वरूप जीवोंको यथार्थ उपदेशेंहैं फिर श्रावस्ती नगरीमें संभव नाथका दर्शन करेंगे औरचम्पापुरमें वासुपुज्ज का और कांकंदापुर में पुष्पदन्तका चन्द्रपुरी में चन्द्र प्रभका कौशांबीपुरी में पद्मप्रभका भद्रकपुर में शीतलनाथ का और मिथिलापुरी में मल्लिनाथ स्वामी का दर्शन करेंगे और वाणारसी में सुपार्श्वनाथ स्वामी का दर्शन करेंगे और सिंहपुर में श्रेयांसनाथका और हस्तनागपुर में शांति कुन्थु अरहनाथ का पूजन करेंगे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और हे देवि कुशाग्रनगर में श्रीमुनिसुव्रतनाथ का दर्शन करेंगे जिनका धर्मचक्र अब प्रवर्ते है और और भी जे भगवान् के अतिशय स्थानक महापवित्र हैं पृथिवी में प्रसिद्ध हैं वहां पूजा करेंगे, भगवान् के चैत्य और चैत्यालय सुरअसुर औरगन्धर्वों कर स्तुति करवे योग्य हैं नमस्कार योग्य हैं तिन सबों की बन्दना हम करेंगे, और पुष्पक विमान में चढ़ सुमेरु के शिखर पर जे चैत्यालय हैं तिनका दर्शन कर भद्रशाल बन नन्दन बन सौमनस बन वहां जिनेन्द्र की अर्चा कर और कृत्रिम अकृत्रिम अढाई द्वीप में जेते चैत्यालय हैं तिन की बन्दना कर हम अयोध्या आवेंगे, हे प्रिये भावसहित एकबार भी नमस्कार श्री अरहंतदेव को करें तो अनेक पापों से छूटे है, हे कांते धन्य तेरा भाग्य जो गर्भ के प्रादुर्भाव में तेरे जिन बन्दना की वांछा उपजी मेरे भी मनमें यही है तो सहित महापवित्र जिनमन्दिरों का दर्शन करूं हे प्रिये पहिले भोगभूमि में धर्म की प्रवृत्ति न थी लोक असमर्थ थे सो भगवान ऋषभ देवने भव्यों को मोक्ष मार्ग का उपदेश दिया जिन को संसार भ्रमण का भय होय तिनको भव्य कहिये, कैसे हैं भगवान् ऋषभ प्रजा के पति जगत् में श्रेष्ठ त्रैलोक्य कर बन्दवे योग्य नानाप्रकार अतिशय कर संयुक्त सुरनर असुरों को आश्चर्य कारी वे भगवान भव्यों को जीवादिक तत्वों का उपदेश देय अनेकों को तार निर्वाण पधारे सम्यक्तादि अष्ट गुण मण्डित सिद्ध भए जिनका चैत्यालय सर्व रत्नमई भरत चक्रवर्त्ती ने कैलाश पर कराया और पांचसै धनुष की रत्नमई प्रतिमा सूर्य्य से भी अधिक तेज को धरे मन्दिर में पधराई सो विराजे हैं जिसकी अबभी देव विद्याधर गंधर्व किन्नर नाग दैत्य पूजा करे हैं जहां अप्सरा नृत्य करे हैं जो प्रभु स्वयंभू सर्वगति निर्मल त्रैलोक्य पूज्य जिसका अन्त नहीं अनंतरूप अनन्त ज्ञान विराजमान परमात्मा सिद्ध

शिव आदिनाथ ऋषभदेव तिन की कैलाश पर्वत पर हम चलकर पूजा कर स्तुति करेंगे। वह दिन कब होयगा इसभांति मुझसे कृपा कर वार्ता करते थे और उसही समय नगर के लोक भेले होय आय लोकापवाद की दावानल सेभी दुस्सह वार्ता रामसे कही सो राम बडे विचार के कर्ता चित्तमें यह चिताई यहलोक स्वभाव ही कर वक्र हैं सो और भांति अपवाद न मिटे इस लोकापवाद से प्रियजन को तजना भला अथवा मरणा भला लोकोपवाद से यश का नाश होय कल्पान्त काल पर्यंत अपयश जगत्में रहे सो भला नहीं ऐसा विचार महाप्रवीण मेरा पति उसने लोकापवाद के भयसे मुझे महाआरण्यवन में तजा मैं दोषरहित सो पति नीके, और लक्ष्मण ने बहुत कहा सो न माना, मेरे ऐसा ही कर्म का उदय जे विशुद्ध कुलमें उपजे क्षत्री शुभचित्त सर्व शास्त्रों के ज्ञाता तिनकी यही रीति है और किसी से न डरें एक लोकापवाद से डरें यह अपने निकासने का वृतांत कह फिर रुदन करनेलगी शोकरूप अग्निकर तप्तायमानहै चित्त जिसका। सो इस को रुदनकरती और रजकर धसरा है अंग जिसका महादीन दुखी देख राजा वज्रजंघ उत्तम धर्मका धरणहारा अति उद्वेग को प्राप्त भया और इसको जनक की पुत्री जान समीप आय बहुत आदर से धीर्य बन्धाया, और कहता भया हे शुभमते तू जिनशासनमें प्रवीण है शोक कर रुदन मत करे, यह आर्तध्यान दुखका बढावन हारा है, हे जानकी इस लोक की स्थिति न जाने है तू महा सुज्ञान अन्यत्व अशरण एकत्व अन्य इत्यादि द्वादश अनुप्रेक्षा की चिंतवन करणहारी तेरा पति सम्यक् दृष्टि और तू सम्यक् सहित विवेकवन्ती है मिथ्या दृष्टिजीवों की न्याईं कहा बारम्बार शोक करे तू जिन वाणीकी श्रोता अनेक बार महा मुनियोंके मुख श्रुतिके अर्थ सुने निरन्तर ज्ञान भावनाका धरणहारी

तुझे शोक उचित नहीं अहो इस संसारमें भ्रमता यह मूढ प्राणी उसने मोक्षमार्गको न जाना इससे क्या क्या दुख न पाये इसको अनिष्टसंयोग इष्टवियोग अनेक बार भये यह अनादिकाल से भवसागर के मध्य क्लेश रूप भ्रमणमें पडा है इस जीवने तिर्यंच योनि विषे जलचर नभचरके शरीर धर वर्षा शीत आतप आदि अनेक दुख पाये और मनुष्य देह विषे अपवाद विरह रुदन क्लेशादि अनेक दुख भोगे और नरकमें शीत उष्ण छेदन भेदन शूलारोहण परस्पर घात महा दुर्गंध क्षारकुण्ड विषे निपात अनेक रोग अनेक दुख लहे और कभी अज्ञान तपकर अल्प ऋद्धिका धारक देवभी भया वहांभी उत्कृष्ट ऋद्धिके धारक देवोंको देख दुखी भया, और मरणसमान महादुखीहोय विलापकर मूवा और कभीमहा तपकर इन्द्रतुल्य उत्कृष्ट देव भया तोभी विषियानुरागकर दुखीही भया इसभांति चतुर्गति विषे भ्रमण करते इस जीवने भवबनमें आधि व्याधि संयोग वियोग रोग शोक जन्म मृत्यु दुख दाह दारिद्रहीनता नानाप्रकार की वांछा विकल्पता कर शोच सन्ताप रूप होय अनन्त दुख पाये, अधोलोक मध्यलोक ऊर्ध्व लोकमें ऐसा स्थानक नहीं जहां इस जीवने जन्म मरण न किये, अपने कर्मरूप पवनके प्रसंग से भवसागरमें भ्रमण करता जो यह जीव उसने मनुष्य देह में स्त्री का शरीर पाया वहां अनेक दुख भोगे तेरे शुभ कर्मके उदयकर राम सारिखे सुन्दर पति भये, जिनके सदा शुभका उपार्जनसो पुण्य के उदय कर पतिसहित महा सुख भोगे और अशुभके उदयसे दुस्सह दुखको प्राप्त भई. लंका द्वीप विषे रावण हर लेगया वहां पतिकी वार्ता न सुन ग्यारह दिनतक भोजनबिना रही और जबतक पतिका दर्शन न भया तबतक आभूषण सुगन्ध लेपनादि रहित रही फिर शत्रुको हत पतिले आये तब पुण्यके उदय

से सुखको प्राप्त भई फिर अशुभका उदय आया तब बिना दोष गर्भवतीको पतिने लोकापवादके भय से घरसे निकासी लोकापवाद रूप सर्पके डसेते कर पति अचेत चित्त भया सो बिना समझे भयंकर बन में तजी उत्तम प्राणी पुण्यरूप पुष्पोंका घर उसे जो पापी दुर्वचनरूप अग्निकर बाले हैं सो आपही दोष रूप दहनकर दाह दाहको प्राप्त होय हैं हे देवि तू परम उत्कृष्ट पतिव्रता महासती हैं प्रशंसायोग्य है चेष्टा जिसकी जिसके गर्भाधानमें चैत्यालयों के दर्शन की बांछा उपजी अबभी तेरे पुण्यही का उदय है तू महा शीलवती जिनमति है तेरे शीलके प्रसाद कर इस निर्जन वन में हाथी के निमित्त मेरा आवना भया मैं वज्रजंघ पुण्डरीकपुर का अधिपति राजा द्विरदवाय सोमवंशी महाशुभ आचरण के धारक तिन के सुबन्धू महिषी नामा राणी उसका मैं पुत्र तू मेरे धर्म के विधान कर बड़ी बहिन है पुण्डरीकपुर चलो शोक तजो। हे बहिन! शोक से कछू कार्य सिद्ध नहीं वहां पुण्डरीकपुर से राम तुझे ढूंढ कृपाकर बुलावेंगे। राम भी तेरे वियोग से पश्चाताप कर अति व्याकुल हैं, अपने प्रमाद कर अमोलिक महा गुणवान रत्न नष्ट भया, उसे विवेकी महा आदर से ढूंढे ही इस लिये हे पतिव्रते निसंदेह राम तुझे आदरसे बुलावेंगे इस भांति उस धर्मात्माने सीताको शांतता उपजाई तब सीता धीर्य को प्राप्त भई मानों भाई भामंडल ही मिला तब उसकी अति प्रशंसा करती भई तू मेरा अति उत्कृष्ट भाई है महा यशवन्त शूरवीर बुद्धिमान शान्त चित्त साधर्मियों पर वात्सल्य का करणहारा उत्तम जीव है। गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक राजा वज्रजंघ अधिगम सम्यग्दृष्टि, अधिगम कहिये गुरूपदेशकर पाया है सम्यक्त जिसने और ज्ञानी है परम तत्त्व का स्वरूप जानन हारा पवित्रहै आत्माजिसकी साधु

समान हैं जिसके व्रत गुणशील कर संयुक्त मोक्षमार्ग का उद्यमी सो ऐसे सत्पुरुषोंके चरित्र दोष रहित पर उपकारकर युक्त कौनका शोक न निवारें कैसे हैं सत्पुरुष जिनमतमें अति निश्चलहै चित्त जिनका सीता कहे है हे भव्रजंघ तू मेरे पूर्व भवका सहोदरहै सो जो इस भव में तैने सांचा भाईपना जनाया मेरा शोक संताप रूप तिमिर हरा सूर्यसमान तू पवित्र आत्मा है ॥ इति अठानवेवां पर्वसम्पूर्णम् ॥

अथानन्तर वज्रजंघ ने सीताके चढवेको क्षणमात्र में अद्भुत पालकी मगाई सो सीता उसपरआरूढ़ भई पालकी विमानसमान महा मनोग्य समीचीन प्रमाणकर युक्त सुन्दर हैं थंम जिसके श्रेष्ट दर्पण थंभो में जडे हैं और मोतियों की झालरी कर पालकी मंडित है और चन्द्रमा समान उज्वल चमर तिनकर शोभित है मोतियोंके हार जल के बुदबुदे समान शोभे हैं और बिचित्र जे बस्रातिनकर मंडितहै चित्राम कर शोभितहै सुन्दर है झरोखा जिसमें ऐसी सुखपालपर चढ परम ऋद्धि कर युक्त बड़ी सेना मध्य सीता चली जायहै आश्चर्य को प्राप्त भई कर्मोंकी बिचित्रताको चितवे है तीनदिनमें भयंकर बनको उलंघ पुराडरीकपुर के देशमें आई उत्तमहै चेष्टा जिसकी सब देशके लोक माताको आय मिले ग्राम २ में भेट करें कैसा है वज्रजंघका देश समस्त जातिके अन्नकर जहां समस्त पृथिवी आछादित होय रही और कूकड़ाउडान नजीक हैं ग्रामजहां रत्नोंकी खान स्वर्ण रूपादिककी खान सुरपुर जैसे पुरसो देखती थकी सीता हर्षको प्राप्त भई बन उपबनकी शोभा देखती चली जायहै ग्राम के महंत भेट कर नाना प्रकार स्तुति करें हैं हे बगवति हे माता आपके दर्शन कर हम पाप रहित भये कृतार्थ भये और बारंबार बन्दना करते भये अर्घ पाद्य किये और अनेक राजा देवों समान आय मिले सो नानाप्रकार

भेट करते भये इस भांति सीता सती पैंड २ पर राजा प्रजावों कर पूजी संती चली जाय है वज्रजंघ का देश अति सुखी ठौर २ बन उपबनादि कर शोभित ठौर २ चैत्यालय देख अति हर्षित भई मन में बिचारे है जहां राजा धर्मात्मा होय वहां प्रजा सुखी होय ही अनुक्रम कर पुण्डरीक पुर के समीप आए सो राजा की आज्ञा से सीता का आगमन सुन नगरके सब लोक सन्मुख आए और भेटकरते भए नगर की अति शोभा करी सुगंध कर पृथिवी छांटी गली बाजार सब सिंगारे और इन्द्र धनुष समान तोरण चढ़ाए और द्वारों में पूर्ण कलश थापे जिनके मुख सुन्दरपल्लव युक्त हैं और मंदिरों पर ध्वजा चढ़ी और घर घर मंगल गावे हैं मानों वह नगर आनन्द कर नृत्यही करे है नगरके दरवाजे पर तथा कोटके कांगरे पर लोक खड़े देखे हैं हर्ष की वृद्धि होय रही है नगर के बाहिर और भीतर राजद्वार तक सीता के दर्शनको लोक खड़े हैं चलायमान जे लोकोंके समूह तिनकर नगर यद्यपि स्थावर है तथापि जानिए जंगम होयरहा है। नानाप्रकार के वादित्र बाजें हैं तिनके नादकर दशों दिशा शब्दायमान होयरही है शंखबाजे हैं बन्दीजन बिरद बखाने हैं समस्त नगरके लोक आश्चर्यको प्राप्त भये देखे हैं और सीता ने नगर में प्रवेश किया जैसे लक्ष्मी देव लोकमें प्रवेश करे वज्रजंघके मंदिर में अति सुन्दर जिनमंदिर है सर्व राज लोक की स्त्री जन सीता के सन्मुख आई सीतापालकी से उतर जिनमंदिर में गई कैसा है जिनमंदिर महा सुन्दर उपबन कर बेष्ठित है और वापिका सरोवरी तिन कर शोभित है सुमेरुके शिखर समान सुन्दर स्वर्ण मई है जैसे भाई भामंडल सीताका सन्मान करे तैसे बज्रजंघ आदर करता भया बज्रजंघ के समस्त परिवार के लोक और राज लोक की

समस्त राणी सीताकी सेवा करें और ऐसे मनोहर शब्द निरन्तर कहे हैं हे देवते हे पूज्य हे स्वामिनी हे ईशानने सदा जयवन्त हो बहुत दिन जीवो आनन्दको प्राप्त होवो वृद्धिको प्राप्त होवो आज्ञा करो इस भांति स्तुति करें और जो आज्ञा करे सो सीस चढ़ावें अति हर्षसे दौरकर सेवा करें और हाथ जोड़ सीस निवाय नमस्कार करें वहां सीता अति आनंदसे जिन धर्मकी कथा करती तिष्ठे और जो सामंतों की भेट आवे और राजा भेट करें सो जानकी धर्मकार्य में लगावे यहतो यहां धर्मका आराधन करे है।

अथानन्तर वह कृतांतवक्र सेनापति तप्तायमानहै चित्त जिसका रथके तुरंगखेदको प्राप्त भएथे तिन को खेदरहित करता हुवा श्रीरामचन्द्रके समीप आया इसको आवता सुन अनेक राजा सन्मुख आए सो कृतांतवक्र आयकर श्रीरामचंद्रके चरणों को नमस्कार कर कहताभया हे प्रभो मैं आज्ञा प्रमाण सीता को भयानक बन में मेलकर आया हूं उसके गर्भमात्रही सहाई है हे देव वह नाना प्रकारके भयंकर जीवों के अति घोर शब्दकर महा भयकारी है और जैसा बैताल कहिये प्रेतों का वन उसका आकार देखा न जाय तैसे सघन वृक्षोंके समूह कर अन्धकार रूपहै जहां स्वतः स्वभाव आरणे भैंसे और सिंह द्वेषकर सदा युद्धकरें हैं और जहां घूघू बसे हैं सो विरूप शब्दकरें हैं और गुफावोंमें सिंह गुंजार करें हैं सो गुफा गुंजार रही हैं और महाभयंकर अजगर शब्द करें हैं और चीतावोंकर हते गये हैं मृग जहां कालको भी विकराल ऐसा वह बन उस विषे हे प्रभो सीता अश्रुपात करती महादीन बदन आपको जो शब्द करतीभई सो सुनो, आप आत्मकल्याण चाहो हो तो जैसे मुझे तजी तैसे जिनेंद्रकी भक्ति न तजनी जैसे लोकोंके अपवाद कर मोसे अतिअनुरागथा तौभी तजी तैसे किसीके कहनेसे जिनशासनकी श्रद्धा

न तजनी लोक बिना बिचारे निर्दोषियोंका दोष लगावें हैं तैसे मुझे लगाया सो आप न्यायकरोसो अपनी बुद्धिसे बिचार यथार्थ करना किसीके कहे से काहूको झूठा दोष न लगावना और सम्यकदर्शनसे विमुख मिथ्यादृष्टि जिनधर्मरूप रत्नका अपवाद करे हैं सो उनके अपवादके भयसे सम्यकदर्शन की शुद्धता न तजनी वीतरागका मार्ग उरमें दृढ धारणा मेरेतजने का इस भवमें किंचित मात्र दुख है और सम्यक दर्शनकी हानिसे जन्म २ में दुखहै इस जीवको लोकमें निधि रत्न स्त्री वाहन राज्य सबही सुलभ हैं एक सम्यकदर्शन रत्नही महादुर्लभ है राजमें पापकर नरकमें पड़ना है एक ऊर्धगमन सम्यकदर्शन के प्रतापही से है जिसने अपनी आत्मा सम्यकदर्शनरूप आभूषण कर मंडित किया सो कृतार्थ भया। ये शब्द जानकी ने कहे हैं जिसको सुनकर कौन के धर्म बुद्धि न उपजे है देव एक तो वह सीता स्वभावही कर कायर और महाभयंकर बनके दुष्ट जीवोंसे कैसे जीवेगी जहां महा भयानक सर्पों के समूह और अल्पजल ऐसे सरोवर तिनमें माते हाथी कर्दम करे हैं और जहां मृगोंके हमूस मृग तृष्णा विषे जल जान वृथा दौड़ व्याकुलहोय हैं जैसे संसार की माया विषे रागकर रागी जीव दुखीहोय और जहां कौञ्चिकी रज के संग कर मर्कट अति चंचल होय रहे हैं और जहां तृष्णासे सिंह व्याघ्र स्यालीयों के समूह तिनकी रसना रूप पल्लव लहलहाट करे हैं, और चिरम समान लाल नेत्र जिस के ऐसे क्रोधायमान भुजंग फुङ्कार करे हैं और जहां तीव्र पवन के संचार कर क्षणमात्रमें वृक्षों के पत्रों के ढेर होय हैं और महा अजगर तिनकी विषरूप अग्नि कर अनेक वृक्ष भस्म होय गये हैं, और माते हाथियों की महा भयंकर गर्जना उसकर वह बन अति विकराल है और बनके शूकरों की सेनाकर सरोवर मलिन

जल होय रहे हैं, और जहां ठौरठौर भूमि में कांटे और सांठे और सांपों की बमी और कंकर पत्थर तिनकर भूमि महा संकटरूप है और डाभ की अणी सूईसे भी अति पैनी हैं और सूके पान फूल पवनकर उडे उडे फिरें हैं जैसे महाअरण्य में, हे देव जानकी कैसे जीवेगी, मैं ऐसा जानूं हूं क्षणमात्र भी वह प्राण राखिवेको समर्थ नहीं, हे श्रेणिक सेनापति के यह वचन सुन श्रीरामअति विषाद को प्राप्त भए कैसे हैं वचनजिनकर निर्दईका भी मन द्रवीभूत होय श्रीरामचन्द्र चितवते भए देखो मैं मूढचित्तने दुष्टों के वचनोंकर अत्यन्त निंद्य कार्य कीया कहां वह राजपुत्री और कहां वह भयंकर बन यह विचार कर मर्छा को प्राप्त भये फिर शीतोपचार कर सचेत होय विलाप करते भए सीता में है चित्त जिनका, हाय श्वेत श्याम रक्त तीन वर्ण के कमल समान नेत्रोंकी धरणहारी, हाय निर्मल गुणों की खान मुखकर जीता है चन्द्रमा जिसने, कमलकी किरण समान कोमल, हाय जानकी मोसे वचनालाप कर, तू जाने ही है कि मेरा चित्त तो विना अतिकायर है हे उपमारहित शीलव्रत की धरणहारी मेरे मन की हरणहारी, हितकारी हैं आलाप जिसके हे पाप वर्जिते निरपराध मेरे मन की निवासनी तू कौन अवस्थाको प्राप्त भई होगी, हे देवि वह महा भयंकर बनक्रूरजीवों कर भरा उस में सर्वसामग्री रहित कैसे तिष्ठेगी हे मो में आसक्त चकोरनेत्र लावण्य रूप जल की सरोवरी महालज्जावती विनयवती तू कहां गई, तेरे श्वास की सुगन्ध कर मुख पर गुञ्जार करते जे भ्रमरतिन को हस्त कमल कर निवारती अति खेदको प्राप्त होयगी, तू यूथ से बिछुरी मृगी की न्यांई अकेली भयंकर बनमें कहां जायगी जो बन चितवन करते भी दुस्सह उस में तू अकेली कैसे तिष्ठेगी कमल के गर्भ समान कोमल तेरे चरण महासुन्दर लक्षण के धरणहारे कर्कश भूमि का स्पर्शकैसे सहेंगे और बनके

पद्म
पराण
।६०८।

भील महा म्लेच्छ कृत्य अकृत्यके भेद से रहित है मन जिनका सो तुझे पकड़ भयंकर पल्ली में लेगये होवेंगे सो पहिले दुख से भी यह अत्यंतदुख है तू भयानक बन में मोविना महादुःखको प्राप्त भई होयगी अथवा तू खेदखिन्न महा अन्धेरी रात्री में बनकी रजकर मण्डित कहीं पड़ी होयगी सो कदाचित् तुझे हाथियों ने दाबी होय तो इस समान और अनथ कहां और गृध्र रीछ सिंह व्याघ्र अष्टापद इत्यादि दुष्ट जीवोंकर भराजो बन उस में कैसे निवास करेगी जहां मार्ग नहीं विकराल दाढ के धरणहारे व्याघ्र महा क्षुधातुर तिन ऐसी अवस्था को प्राप्त करी होयगी जो कहिवे में न आवे अथवा अग्निकी ज्वाला के समूहकर जलताजो बनउसमें अशुभ स्थानक को प्राप्तभई होयगी, अथवा सूर्य्यकी अत्यंतदुस्सह किरण तिनके आतापकर लाखकी न्यांई पिगलगई होयगी, छायामें जायवे की नहीं है शक्ति जिसकी अथवा शोभायमान शील की धरणहारी मो निर्दई में मन कर हृदय फटकर मृत्युको प्राप्तभई होयगी पहिले जैसे रत्नजटीने मोहे सीताके कुशल की वार्ता आय कही थी तैसे कोई अबभी कहे, हाय प्रिये पतिव्रते विवेकवती सुखरूपिणी त कहां गई कहां तिष्ठेगी क्या करेगी अहो कृतांतवक्र कह क्या तैंने सचमुच बन ही में डारी, जो कहुं शुभठौर मेली होय तो तेरे मुखरूप चन्द्रसे अमृतरूप वचन खिरें जबऐसा कहातब सेनापतिने लज्जाके भारकर नीचा मुखकिया प्रभा रहित हो गया कछू कह न सके अति व्याकुल भया मौन गह रहा तब रामने जानी सत्यही यह सीता को भयंकर बन में डार आया तब मूर्छाको प्राप्त होय रामगिरे बहुत बेरमें नीठि २ सचेतभए तब लक्षमण आए अंतःकरण विषे सोच को धरे कहते भए हे देव क्यों व्याकुल भये हो धीर्यको अंगीकार करो जो पूर्वकर्म उपार्जा उसका फल आय प्राप्तभया और सकल लोक को अशुभके उदयकर दुःख

प्राप्तभया केवल सीताही को दुख न भया सुख अथवा दुख जो प्राप्त होना होय सो स्वयमेव ही किसी निमित्त से आय प्राप्त होय है हे प्रभो जो कोई किसी को आकाश में ले जाय अथवा क्रूरजीवों के भरे वन में डारे अथवा गिरि के शिखरधरे तो भी पूर्व पुण्य कर प्राणी की रक्षा होय है सब ही प्रजा दुख कर तप्तायमान है आंसुवोंके प्रवाहकर मानों हृदय गल गया है सोई झरे है यह वचन कह लक्ष्मण भी अत्यन्त व्याकुल होय रुदन करने लगा जैसा दाह का मारा कमल होय तैसा होयगया है मुखकमल जिसका हाय माता तू कहांगई दुष्टजनों के वचनरूप अग्निकर प्रज्वलित है शरीर जिसका हे गुणरूप धान्य के उपजनेकी भूमि बारह अनुप्रेक्षा के चितवनकी करण हारी हे शीलरूप पर्वतकी पृथिवी हे सीते सौम्यस्वभाव की धारक हे विवेकनी दुष्टोंके वचन सोई भये तुषार तिनकर दाहा गया है हृदय कमल जिसका राजहंस श्री राम तिनके प्रसन्न करनेको मानसरोवर समान सुभद्रा सारिखी कल्याणरूप सर्व आचार में प्रवीण परिवारके लोकों को मूर्तिवन्त सुखकी आशिषा हे श्रेष्ठे तू कहां गई जैसे सूर्यबिना आकाशकी शोभा कहां और चन्द्रमा बिना निशाकी शोभा कहां तैसे हे माता तो बिना अयोध्याकी शोभा कहां इस भान्ति लक्ष्मण विलाप कर रामसे कहे हैं हे देव समस्त नगर बीण बांसुरी मृदंगादिकी ध्वनि कर रहित भया है और अहर्निश रुदनकी ध्वनि कर पूर्ण है गलीगली में बन उपबन में नदियोंके तट में चौहटे में हाट हाट में घर घर में समस्त लोक रुदन करे हैं तिनके अश्रुपातकी धारा कर कीच होय रहा है, मानों अयोध्या में वर्षा कालही फिर आया है समस्त लोक आंसू डारते गद्गद् वाणी कर कष्ट से वचन उचारते जानकी प्रत्यक्ष नहीं है परोक्षही है तौभी एकाग्रचित भये गुण कीर्तिरूप पुष्पों के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समह कर पूजे हैं. वह सीता पतिव्रता समस्त सतीयों के सिर पर बिराजे है गुणोंकर महा उज्वल उस के यहां आवने की अभिलाषो सबों के है यह सब लोक माता ने ऐसे पाले हैं जैसे जननी पुत्रको पाले सो सबही महा शोककर गुण चितार चितार रुदन करे हैं ऐसा कौनहै जिसके जानकीका शोक न होय इसलिये हे प्रभो तुम सब बातों में प्रवीणहो अब पश्चात्ताप तजो पश्चात्ताप मे कछु कार्यकी सिद्धि नहीं जो आपका चित्त प्रसन्नहै तो सीताको हेरकर बुलाय लेंगे और उनको पुण्य के प्रभाव कर कोई विघ्न नहीं आप धीर्य अवलंबन करबे योग्य हो इस भांति लक्ष्मण के वचनकर रामचन्द्र प्रसन्न भये कछु एक शोक तज करतव्य में मन धरा भद्रकलश भंडारीको बुलायकर कही तुम सीताको आज्ञासे जिस विधि किम इच्छा दान करतेथे तैसेही दियाकरो सीताके नाम से दान बटे तब भंडारी ने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा नव महहीने अर्थियोंको किम इच्छा दान बटिवो कीया, रामके आठहजार स्त्री तिनकर सेवमान तौभी एक क्षणमात्र भी मन कर सीता को न विसारता भया सीता सीता यह अलाप सदा होता भया, सीता के गुणोंकर मोहा है मन जिसका सर्बदिशा सीतामई देखताभया स्वप्न विषे सीताको इस भांति देख तर्वत की गुफा में पड़ी है पृथिवी की रज कर मंडित है और नेत्रों के अश्रुपात कर चौमासा कर राखा है महा शोक कर व्याप्त है इस भांति स्वप्न में अवलोकन करता भया सीताकार शब्द करता राम ऐसा चितवन करे है देखो सीता सुन्दर चेष्टा की धरण हारी दूर देशान्तर में तिष्ठेहै तौभी मेरे चित्तसे दूर न होय है वह साधुवी शीलवन्ती मेरे हित में सदा उद्यमी इसभांति सदा चितारबो करे और लक्ष्मण के उपदेशकर और सूत्रसिद्धांत के श्रवण कर कछू इक राम का शोक क्षीण भया

For Private and Personal Use Only

धीर्यको धारि धर्म ध्यान में तत्पर होता भया । यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं वे दोनों भाई महा न्यायवन्त अखंड प्रीतिके धारक प्रशंसायोग्य गुणोंके समुद्र रामके हल मूशलका आयुध लक्ष्मणके चक्रायुध समुद्र पर्यंत पृथिवीको भली भांति पालते सन्ते सौधर्म ईशान इन्द्र सारिखे शोभते भये वे दोनों धीर स्वर्ग समान जो अयोध्या उसमें देवों समान ऋद्धि भोगते महा कांतिके धारक पुरुषोत्तम पुरुषों के इन्द्र देवेंद्र समान राज्य करतेभये सुकृतके उदयसे सकल प्राणीयोंको अनन्द देयवेमें चतुर सुन्दर चरित्र जिनके सुखसागर में मग्न सूर्यसमान तेजस्वी पृथिवी में प्रकाश करतेभये ॥ इति निन्यानवां पर्व सम्पूर्णम्

अथानन्तर गौतमस्वामी कहे हैं हे नराधिप रामलक्ष्मण तो अयोध्या विषे तिष्ठे हैं और अब लवणांकुश का वृतांत कहे हैं सो सुन अयोध्याके सबही लोक सीताके शोकसे पांडुता को प्राप्त भये और दुर्बल होय गये और पुण्डरीकपुर में सीता गर्भके भारकर कछू एक पांडुता को प्राप्त भई और दुर्बल भई मानों सकल प्रजा महापवित्र उज्ज्वल इसके गुण वरणन करे हैं सो गुणों की उज्ज्वलता कर श्वेत होय गई है और कुचों की बीटली श्यामताको प्राप्त भई सो मानों माताके कुच पुत्रोंके पान करिवे के पयके घटहैं सो मुद्रित कर राखे हैं और दृष्टि क्षीरसागर समान उज्ज्वल अत्यन्त माधुर्यता को प्राप्त भई और सर्वमंगलके समूहका आधार जिसका शरीर सर्वमंगल का स्थानक जो निर्मल रत्नमई आंगण उस विषे मन्द मन्द विचरे सो चरणोंके प्रतिबिम्ब ऐसे भासें मानों पृथ्वी कमलोंसे सीता की सेवाही करे है और रात्रि विषे चन्द्रमा इसके मंदिर ऊपर आय निकसे सो ऐसा भासे मानों सुफेद छत्रही है और सुगंध के महलमें सुंदर सेज ऊपर सूती ऐसा स्वप्न देखती भई कि महागजेंद्र कमलों के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घुट विषे जल भरकर अभिषेक करावे है और वारम्वार सखीजनोंके मुख जयजयकार शब्द सुनकर जाग्रत होय है परिवार के लोक समस्त आज्ञारूप प्रवर्ते हैं क्रीड़ा विषे भी यह आज्ञाभंग न सह सके सब आज्ञाकारी भए शीघ्रही आज्ञा प्रमाण करे हैं तोभी सबों पर तेज करे है काहे से कि तेजस्वी पुत्र गर्भ विषे तिष्ठे हैं और मणियों के दर्पण निकट हैं तो भी खड्ग काढ खड्ग में मुख देखेहै और वीणावांसुरी मृदंगादि अनेक वादित्रों के नाद होय हैं सो न रुचें और धनुष के चढ़ायवे की ध्वनि रुचे है और सिंहोंके पिंजरे देखे जिसके नेत्र प्रसन्न होंय और जिसका मस्तक जिनेंद्र टार और को न नमें ॥

अथानन्तर नव महीना पूर्णभये श्रावण शुदी पूर्णमासीके दिन श्रवण नक्षत्रके विषे वह मंगल रूपिणी सर्वलक्षण पूर्ण शरदकी पूनोंके चंद्रमा समान बदन जिसका सुखसे पुत्र युगल जनतीभई सो पुत्रोंके जन्म में पुंडरीकपुरकी सकल प्रजा अतिहर्षित भई मानों नगरी नाच उठी ढोल नगारे आदि अनेक प्रकार के वादित्र बाजने लगे शंखोंके शब्द भये राजा बज्रजंघ ने अतिउत्साह किया बहुत संपदा याचकों को दई और एक का नाम अनंगलवण दूजे का नाम मदनांकुश ये यथार्थ नाम धरे फिर ये बालक वृद्धि को प्राप्त भए माता के हृदय को अति आनन्द के उपजावन हारे महाधीरशूरवीरता केअंकुर उपजे, सरसों के दाणे इनके रक्षा के निमित्त इनके मस्तक डारे सो ऐसे सोहते भए मानों प्रतापरूप अग्नि के कणही हैं जिनका शरीर ताये सुवर्ण समान अति देदीप्यमान सहजस्वभाव तेजकर अतिसोहता भया और जिन के नख दर्पणसमान भासते भए प्रथम बालअवस्था में अव्यक्त शब्द बोलें सो सर्वलोक के मनको हरें और इनकी मंद मुलकनि महामनोग्य पुष्पों के विगसने समान लोकन के हृदय को मोहती भई और

जैसे पुष्पों की सुगन्धता भ्रमरों के समूह का अनुरागी करे तैसे इनकी वासना सब के मनको अनुरागरूप करती भई यह दोनों माता का दूध पान कर पुष्ट भए और जिनका मुख महासुन्दर सुफेद दांतों कर अति सोहता भया मानों यह दांत दुग्ध समान उज्ज्वल हास्यरस समान शोभायमान दीखे हैं, धायकी आंगुरी पकडे आंगन में पांव धरते कौन का मन न हरते भए जानकी ऐसे सुन्दर क्रीड़ा के करणहारे कुमारों को देखकर समस्त दुःख भूलगई। बालक बडे भए अति मनोहर सहज ही सुन्दर हैं नेत्र जिनके विद्या पढ़ने योग्य भए तब इनके पुण्य के योगकर एकसिद्धार्थनामा क्षुल्लकशुद्धात्मापृथिवी में प्रसिद्ध वज्रजंघके मंदिर आया सो महाविद्या के प्रभाव कर त्रिकाल संध्या में सुमेरुगिरि के चैत्यालय बंद आवे प्रशांतबदन साधु समान है भावना जिसके और खंडितवस्त्र मात्र है परिग्रह जिस के उत्तम अणुव्रत का धारक नानाप्रकार के गुणों कर शोभायमान, जिनशासनके रहस्य का वेत्ता समस्त कालरूप समुद्रका पारगामी तपकर मंडित अति सोहे सो आहारके निमित्त भ्रमता संता जहां जानकी तिष्ठै थी वहां आया सीता महासती मानों जिनशासन की देवी पद्मावती ही है सो क्षुल्लक को देख अति आदर से उठकर सन्मुख जाय इच्छाकार करती भई और उत्तम अन्नपान से तृप्तकिया सीता जिनधर्मियों को अपनेभाईसमानजाने है सो क्षुल्लक अष्टांग निमित्त ज्ञानके वेत्ता दोनों कुमारोंको देखकर अति संतुष्ट होयकर सीता से कहता भया हेदेवि तुम सोच न करो जिसके ऐसे देवकुमार समान प्रशस्त पुत्र उसे कहां चिंता।

अथानन्तर यद्यदि क्षुल्लक महाविरक्त चित्त है तथापि दोनों कुमारों के अनुराग से कैयक दिन तिन के निकट रहा थोड़े दिनों में कुमारोंको शस्त्रविद्या में निपुण किया सो कुमार ज्ञान विज्ञान में पूर्ण सर्व

पद्म
पुरा०
॥९१४॥

कलाके धारक गुणोंके समूह दिव्यास्त्रके चलायवे और शत्रुओं के दिव्यास्त्र आवें तिन के निराकरण करवे की विद्या में प्रवीण होते भए, महापुरुष के प्रभाव से परमशोभा को धारें महालक्ष्मीवान् दूर भए हैं मतिश्रुति आवरण जिनके मानों उघडे. निधि के कलश ही हैं शिष्य बुद्धिवान् होय तब गुरुको पढायवेका कछू खेद नहीं जैसे मंत्री बुद्धिवान् होय तब राजा को राज्यकार्य का कछु खेद नहीं और जैसे नेत्रवान पुरुषों को सूर्य्य के प्रभावकर घट पटादिक पदार्थ सुख सो भासे तैसे गुरु के प्रभावकर बुद्धिवंत को शब्द अर्थ सुखसे भासें जैसे हंसों को मानसरोवरमें आवते कछु खेद नहीं तैसे विवेकवान् विनयवान् बुद्धिवान् को गुरुभक्ति के प्रभाव से ज्ञान में आवते परिश्रम नहीं सुख से अतिगुणों की बृद्धि होय है और बुद्धिवान शिष्य को उपदेश देय गुरु कृतार्थ होय है और कुबुद्धि को उपदेश देना बृथा है ऐसा सूर्य्य का उद्योत घूघूओं को बृथा है यह दोनों भाई देदीप्यमान है यश जिनका अति सुन्दर महाप्रतापी सूर्य्यकी न्याईं जिनकी ओर कोऊ विलोक न सके, दोनों भाई चन्द्र सूर्य्य समान दोनों में अग्नि और पवन समान प्रीति मानोंवह दोनों ही हिमाचल विंध्याचलसमान हैं वज्र बृषभनाराचसंहनन जिनके सर्व तेजस्वीयों के जीतवे को समर्थ सब राजावोंका उदय औरअस्तजिनके आधीनहोयगा महाधर्म्मात्माधर्म के धोरी अत्यन्तरमणीक जगत्को सुख के कारण सब जिनकी आज्ञा में, राजा ही आज्ञाकारी तो औरों की क्या बात किसी को आज्ञा रहित न देख सकें अपनेही पावों के नखों में अपनाही प्रतिबिम्बदेख न सकें तो और कौंनसें नम्रीभूत होंय और जिनको अपने नख और केशों का भंग न रुचे तो अपनी आज्ञाका भंग कैसे रुचे, और अपने सिरपर चूड़ामणि धरिये और सिरपर छत्र फिरे और सूर्य्य ऊपर होय आय जिनसे सोभी न सहार सकें तो

पद्म पुराण। ९१५

औरोंकी उंचता कैसे सहारे, मेघका धनुष चढ़ा देख कोपकरें तो शत्रुके धनुषकी प्रबलता कैसे देखसकें चित्रामके नृप न नमें तौभी सहार न सकें तो साक्षात् नृपोंका गर्व कब देखसकें, और सूर्य्य नित्य उदयअस्त होय उसे अल्प तेजस्वी गिनें औरपवन महाबलवानहै परन्तु चंचल सो उसेबलवान न गिनें जो चलायमान सो बलवान काहे का जो स्थिरभूत अचल सो बलवान और हिमवान पर्वत उच्च है स्थिरभूतहै परंतु जड और कठोर कंटक सहित है इस लिए प्रशंसा योग्य न गिने और समुद्र गंभीर है रत्नों की खान है परन्तु खार और जल चर जीवोंको धरे और शंखों कर युक्त इस लिये समुद्र को तुच्छ गिनें येमहा गुणोंके निवास अति अनुपम जेते प्रबल राजा थे तेज रहित होय इन की सेवा करते भये ये महा- राजावों के राजा सदा प्रसन्न बदन मुख से अमृत बचन बोलें सबों कर सेवने योग्य जे दूरवर्ती दुष्ट भूपाल थे वे अपने तेज कर मलिन बदन किये सब मुरझाय गए इनका तेज ये जब जनमें तब से इन के साथही उपजा है शस्त्रों के धारण कर जिन के कर और उदर श्यामता को धरे हैं औरमानों अनेक राजावों के प्रताप रूप अग्नि के बुझायवे से श्याम हैं समस्त दिशा रूप स्त्री बशी भूत कर देने वाली भई महाधीर धनुष के धारक तिन के सब आज्ञा कारी भये जैसा लवण तैसा ही अंकुश दोनों भइयों में कोई कमी नहीं ऐसा शब्द पृथिवीमें सबके मुख ये दोनों नवयौवन महासुन्दर अद्- भुत चेष्टा के धरणहारे पृथिवी में प्रसिद्ध समस्त लोकोंकर स्तुति करबे योग्य जिनके देखवे की सब के अभिलाषा पुण्य परमाणुवोंकर रचाहै पिंड जिनका सुखका कारणहै दर्शन जिनका स्त्रियोंके मुखरूप कुमुद तिनके प्रफुल्लित करने को शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान सोहते भए माताके हृदयको आनंद

के जंगम मंदिर ये कुमार सूर्यसमान कमलनेत्र देव कुमार सारिखे श्री वत्सलक्षण कर मंडित है वक्ष स्थल जिनका अनंतपराक्रम के धारक संसार समुद्र के तट आये चरम शरीरी परस्पर महाप्रेमके पात्र सदा धर्मके मार्ग में तिष्ठे हैं देवों का और मनुष्यों का मन हरे हैं।

भावार्थ जो धर्मात्मा होय सो किसी का कुछ न हरें ये धर्मात्मा परधन परस्त्री तो न हरे परंतु पराया मन हरें। इनको देख सबों का मन प्रसन्न होय ये गुणों की हद को प्राप्त भये हैं। गुण नाम डोरेका भी है सो हदपर गांठको प्राप्त होयहै और इनके उरमें गांठ नहीं महा निःकपटहै अपने तेज कर सूर्यके जीते हैं और कांतिकर चंद्रमाको जीते हैं और पराक्रमकर इंद्रको औरगंभीरताकर समुद्रकोस्थिरता कर सुमेरुको और क्षमाकर पृथ्वीको और शूरवीरताकर सिंहको चालकर हंसको जीते हैं और महाजलमें मकर ग्राह नक्रादिक जलचरोंसे क्रीड़ा करेहैं और माते हाथियोंसे तथा सिंह अष्टा पदोंसे क्रीडा करते खेद न गिने और महा सम्यक दृष्टि उत्तम स्वभाव अति उदार उज्ज्वल भाव जिनसे कोई युद्धकर न सके महा युद्ध विषे उद्यमी जे कुमार मारिखे मधु कैटभ सारिखे इन्द्रजीत मेघनाद सारिखे योधा जिनमार्गी गुरु-सेवामें तत्पर जिनेश्वरकी कथा विषे रत जिनका नाम सुन शत्रुवोंको त्रास उपजे, यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहते भये हे राजन वे दोनों वीर महाधीर गुणरूप रत्नके पर्वत महा ज्ञानवान लक्षनिधान शोभा कांति कीर्तिके निवास चित्तरूप माते हाथी के वशकरबेको अंकुश महाराज रूप मंदिर के दृढ़ स्तम्भ पृथ्वीके सूर्य उत्तम आचरणके धारक लवण अंकुश नरपति विचित्र कार्यके करणहारे पुंडरीक नगरमें यथेष्ट देवोंकी न्याई रमें महा उत्तम पुरुष जिनके निकट जिनका तेज लख सूर्यभी लज्जावान

होय जैसे बलभद्रनारायण अयोध्यामें रमें तैसे यह पुण्डरीकपुरमें रमे हैं ॥ इति सौवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर अति उदार क्रिया विषे योग्य अतिसुंदर तिनको देखकर वज्रजंघ इनके परणायबे विषे उद्यमी भया, तब अपनी शशिचूला नाम पुत्री लक्षमा राणीके उदरमें उपजी सो बत्तीस कन्या सहित मदन लवणको देनी विचारी और अंकुश कुमारका भी विवाह साथही करना सो अंकुश योग्य कन्या ढूंढिबे को चिन्तावान भया फिर मनमें विचारी पृथ्वीपुर नगरका राजा पृथु उसके राणी अमृतवती उस की पुत्री कनकमाला चन्द्रमाकी किरण समान निर्मल अपने रूपकर लक्ष्मीको जीते है वह मेरी पुत्री शशिचूलासमान है यह विचार तापै दूत भेजा सो दूत विचक्षण पृथ्वीपुर जाय पृथुसे कही जौलग दूतने कन्या याचनके शब्द न कहे तौलग इसका अति सनमान किया और जब इसने याचनेका वृतांत कहा तब वह क्रोधायमान भया और कहता भया तू पराधीन है और पराई कहे है तुम दूत लोग जल के धोरा समान हो जिस दिश चलावे ताही दिश चलो तुममें तेज नहीं बुद्धि नहीं जो ऐसे पापके वचन कहे उसका निग्रह करूं परन्तु पराया प्रेरा यंत्रसमान है यंत्री बजावें त्यों बाजे इसलिये तू हनिबे योग्य नहीं है दूत १ कुल २ शील ३ धन ४ रूप ५ समानता ६ बल ७ वय ८ देश ९ विद्या ये नवगुण वरके कहे हैं तिनमें कुल मुख्य है सो जिन का कुलही न जानिये तिनको कन्या कैसे दीजे इसलिये ऐसी निर्लज्जबात कहे सो राजा नीतिसे प्रतिकूल है सो कुमारी तो मैं न दूं और कुकहिये खोटी मारी कहिये मृत्यु सो दूं इसभांति दूत को विदा किया सो दूत ने आयकर वज्रजंघ को व्योरा कहा सो वज्रजंघ आपही चढ़कर आधी दूर आय डेरा किये और बड़े मनुष्यों को भेजा फिर पृथुसे कन्या यांची उसने न दई तब राजा वज्रजंघ पृथुका देश उजाड़ने लगा और

देशका रक्षक राजा व्याघ्ररथ उसे युद्धमें जीत बांध लिया तब राजा पृथुने सुनी कि व्याघ्ररथको राजा बज्रजंघ ने बांधा और मेरा देश उजाड़े है तब पृथुने अपना परममित्र पोदना पुरका पति परम सेना से बुलाया तब बज्रजंघने पुण्डरीकपुर से अपने पुत्र बुलाये तब पिताकी आज्ञा से पुत्र शीघ्रही चालिवे को उद्यमी भये नगरमें राजपुत्रों ने कूचका नगारा बजाया सबसामंत बख्तरपहिरे आयुधसजकर युद्ध के चलने को उद्यमी भये नगरमें अति कोलाहल भया पुंडरीकपुरमें जैसा समुद्रगाजे ऐसा शब्दभया तब सामंतों के शब्दसुन लवण और अंकुश निकटवर्ती को पूछतेभए यहकोलाहल शब्द किसका है तब किसीने कही अंकुशकुमारके परणायवे निमित्त बज्रजंघ राजाने राजा पृथुकी पुत्री यांचीथी सो उसनेनदई तब राजा युद्धको चढे और अब राजाने अपनी सहायताके अर्थ अपने पुत्रोंको बुलाया है और सेना बुलाई है सो यह सेनाका शब्द है यहसमाचार सुन कर दोनों भाई आप युद्धके अर्थ अति शीघ्रही जायवेको उद्यमी भये कैसे हैं कुमार आज्ञा भंग को नहीं सह सके हैं तब बज्रजंघ के पुत्र इनको मने करते भये और सर्व राज लोक मने करते भये तौभी इन्होंने न मानी तब सीता पुत्रोंके स्नेहकर द्रवीभूत हुवा है मनजिसका सो पुत्रोंको कहती भई तुम बालक हो तुम्हारा युद्धका समय नहीं तब कुमार कहते भए हे माता तू यह क्या कही बडा भया और कायरभया तो क्या यह पृथिवी योधावोंकर भोगवे यो-ग्य है और अग्निका कण छोटाही होय है और महाबनको भस्म करे है इस भांति कुमारों ने कही तब माता इनको सुभट जान आंखोंसे हर्ष और शोक के किंचितमात्र अश्रुपात आन चुपहोय रही दोनों वीर महा धीर स्नान भोजन कर आभूषण पहिर मन वचनकाय कर सिद्धोंको नमस्कारकर फिरमाता

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को प्रणामकर समस्त बिधि बिषे प्रवीण घर से बाहिर आए तब भले भले शकुन भये दोनोरथ चढ सम्पूर्ण शस्त्रों कर युक्त शीघ्रगामी तुरंग जोड़ पृथुपरचले महा सेनाकर मंडित धनुषबाणही हैं सहाय जिनके महा पराक्रमी परम उदारचित्त संग्रामके अग्रेसर पांच दिवसमें बज्रजंघ पै जाय पहुंचे तब राजापृथु शत्रुवोंकी बडी सेनाआई सुन आपभी बडीसेनासहित नगर से निकसा जिसके भाई मित्र पुत्र मामाके पुत्र सबही परम प्रीति पात्र और सूक्ष्म देश अंगदेश बंगदेश मगधदेश आदिअनेक देशों के बडे २ राजा तिन सहित रथ तुरंग हाथी पयादे बडे कटक सहित बज्रजंघ पर आया तब बज्रजंघके सामन्त परसेनाके शब्द सुन युद्धको उद्यमी भये दोनों सेना समीपभई तब दोनो भाई लवणांकुशमहा उत्साहरूप परसेना में प्रवेश करते भये वेदोनों योधामहा कोपको प्राप्तभय अतिशीघ्रहै परावर्त जिनका पर सेना रूप समुद्रमें क्रीडा करते सब ओर परसेना का निपात करते भये जैसे बिजली का चमत्कार इस ओर चमक उस ओर चमक उठे तैसे सब ओर मार मार करते भये शत्रुवों से न सहा जाय पराक्रम जिनका धनुष् पकडते बाण चलाते दृष्टि न पड़े और बाणों कर हते अनेक दृष्टि पड़ें नाना प्रकार के क्रूर बाण तिन कर वाहन सहित परसेना के अनेक योधा पीड़े पृथिवी दुर्गम्य होय गई एक निमिष में पृथुकी सेना भागी जैसे सिंहके त्राससे मदोन्मत्त गजों के समूह भागें एक क्षणमात्रमें पृथुकी सेनारूपनदी लवणांकुशरूपसूर्य तिनकेबाणरूपकिरणोंसे शोकको प्राप्तभईकैयकमारेपड कैयकभयसे पीडित होय भागे, जैसे आक से फूल उडे उडे फिरें राजा पृथु सहायरहित खिन्न होय भागने को उद्यमी भया तब दोनों भाई कहते भये हेपृथु हम आज्ञात कुल शील हमारा कुल कोई जाने नहीं तिनपै भागना न

लज्जावान् न होय है तू खडा रहो हमारा कुल शील तुझे बाणों से बतावें, तब पृथु भागता हुताथा सो पीछा फिर हाथ जोड़ नमस्कार कर स्तुति करता भया तुम महा धीरवीर हो मेरी अज्ञानता जनित दोष क्षमा करो मैं मूर्ख तुम्हारामाहात्म्य अब तक न जानाथा महा धीरवीरोंका कुलइससामंतताही से जानाजाय है कछु बाणीके कहेसेनजाना जाय है सोअबमैंनिसंदेहभया। बनके दाहकोसमर्थ जो अग्नि सो तेजहीसे जानी जायहै सो आप परम धीर महाकुल में उपजे हमारे स्वामी हो महाभाग्यके योग्य तुम्हारा दर्शन भया तुम सबको मन वांछित सुख के दाता हो इस भांति पृथु ने प्रशंसाकरी तब दोनों भाई नीचे होय गये और क्रोध मिटगया शांतमन और शांतमुख होय गये वज्रजंघ कुमारों के समीप आया और सब राजे आये कुमारों के और पृथुके प्रीति भई जे उत्तम पुरुष हैं वे प्रणाम मात्र हीसे प्रसन्नताको प्राप्त होय हैं जैसे नदी का प्रवाह नम्रीभूत जे बेल तिनको न उपाडे और जे महावृक्ष नम्रीभत नहीं तिनको उपाडे फिर राजा वज्रजंघ को और दोनों कुमारों को पृथु, नगर में लेगया दोनों कुमार आनंद के कारण मदनांकुश को अपनी कन्या कनकमाला महाविभूतिसहित पृथुने परणाई एक रात्री यहां रहे फिर यह दोनों भाई विचक्षण दिगविजय करवे को निकसे सुह्यदेश मगध देश अंगदेश बंगदेश जीत पोदनापुर के राजाको आदि दे अनेक राजा संग लेय लोकाक्ष नगर गए उस तरफ के बहुत देश जीतेकुवेरकांत नामा राजा अतिमानी उसे ऐसा वशकीया जैसे गरुड नागको जीते सत्यार्थपने से दिन दिन इनके सेनावढी हजारों राजा वश भए और सेवा करनेलगे फिर लंपाक देशगए वहां करण नामा राजा अतिप्रबल उसे जीतकर विजय, स्थलकोगए वहांके राजा सौभाई तिनको अवलोकन मात्रही जीत, गंगा उतर कैलाश की उत्तर दिश

गए, वहां के राजा नाना प्रकारकी भेट ले आए मिले झषकुंतल नामादेश, तथा सालायं, नंदि नंदन स्यघल शलभ अनल भीम, भूतरव, इत्यादि अनेक देशाधिपतियों को वशकर सिंधु नदी के पारगये समुद्र के तट के राजा अनेकों को नमाये अनेक नगर अनेक पेट अनेक अटंव अनेकदेश वश कीये भीरु देश यवन कच्छ चारव त्रजट नट सक्र केरल नेपाल मालव, अरल सर्वरत्रिशिर पार शैलगोशील कुसीनर सूरपार कमनर्त विधि शूरसेन वाह्लीक उलक कोशल गांधार सौवीर अंध्र, काल, कलिंग इत्यादि अनेक देश वशकीये कैसे हैं देश जिनमें नाना प्रकारकी भाषा और वस्त्रोंका भिन्न भिन्न पहराव और जुदे जुदे गुण नानाप्रकार के रत्न अनेक जाति के वृक्ष जिनमें और प्रकार स्वर्ण आदि धनके भरे कैयक देशों के राजाप्रताप ही से आय मिले कैयक युद्ध में जीत वशकीये, कैयक भाग गए वडे, बड़े राजा देशपति अति अनुरागी होय लवणांकुश के आज्ञाकारी होते भए इनकी आज्ञा प्रमाण पृथिवी में विचरे वे दोनों भाई पुरुषोत्तम पृथिवी को जीत हजारां राजावों के शिरोमणि होते भए सबों को वशकर लार लीए नानाप्रकार की सुन्दर कथा करते सबका मन हरते पुण्डरीकपुर को उद्यमीभए वज्रजंघ लारही है अतिहर्षकेभरेअनेकराजावोंकी अनेकप्रकारभेटआई सोमहाविभूतिकोलीयेअतिसेनाकर मंडितपुण्डरीकपुरके समीप आए सीता सतखणे महिल चढ़ी देखे है राजलोक की अनेकराणी समीप हैं और उत्तम सिंहासन पर तिष्ठे हैं दूर से अति सेनाकी रजके पटल उठे देख सखीजनको पूछतीभई यह दिशामें रजका उड़ाव कैसा है तब तिन्होंने कही हे देवि सेनाकी रज है जैसे जलमें मकर किलोल करें तैसे सेनाविखे अश्व उछलतेआवे हैं हे स्वामिनियेदोनोंकुमार पृथिवी वशकर आए इसभांति सखीजन कहे हैं और वधाईदेन

द्वारे आए नगर की अतिशोभा भइ लाकों क अति आनंद भया निर्मल ध्वजा चढ़ाई समस्त नगर सुगन्धकर छांटा और वस्त्र आभूषणों कर शोभित कीया दरवाजेपर कलश थापेसो कलश पल्लवों से ढके और ठौर ठौर बंदनमाला शोभायमान दीखतीभई और हाट बाजार टवरादि वस्त्रकर शोभित भए जैसी श्रीराम लक्ष्मणके आए अयोध्या की शोभा भई थी तैसीही पुण्डरीकपुर की शोभा कुमारोंके आएसे भई जिस दिन महाविभूतिसे प्रवेशकिया उसदिन नगरके लोगोंको जो हर्षभया सो कहिवेमें न आवे दोनोंपुत्र कृत्य अकृत्य तिनको देखकर सीता आनंद के सागरमें मग्नभई दोनोंवीर महाधीर आयकर हाथजोड़ माताको नमस्कार करते भये सेनाकी रजकर धूसराहै अंग जिसका, सीताने पुत्रको उरसे लगाय माथे हाथ धरामाता को अति आनन्द उपजाय दोनों कुमार चांद सूर्यकी न्याई लोकमें प्रकाश करते भये ॥ इति एकसौ एकपर्व

अथानन्तर ये उत्तममानव परम ऐश्वर्य के धारक प्रवल राजावों पर आज्ञा करते सुखसे तिष्ठें एक दिन नारद ने कृतान्तवक्र को पूछा कि तू सीताको कहां मेल आया, तब उसने कही कि सिंहनाद अटवी में मेली सो यह सुनकर अति व्याकुल होय ढूंडता फिरे था सो दोनों कुमार वनक्रीड़ा करते देखे तब नारद इनके समीप आया कुमार उठकर सन्मान करतेभये नारद इनको विनयवान देख बहुत हर्षित भया और असीस दई जैसे राम लक्ष्मण नर नाथ के लक्ष्मी है तैसी तुम्हारे होवो तब ये पूछते भये कि हे देव राम लक्ष्मण कौन हैं, और कौन कुल में उपजे हैं, और क्या उनमें गुण हैं और कैसा तिनका आचरण है तब नारद क्षण एक मौन पकड़ कहते भये हे दोनों कुमरो कोई मनुष्य भुजावोंकर पर्वतको उखाड़े अथवा समुद्रको तिरे तौभी राम लक्ष्मण के गुण कह न सके अनेक वदनों कर दीर्घ काल तक

तिनके गुण वर्णन करे तौभी राम लक्ष्मण के गुण कह न सके अनेक वदनोंकर दीर्घ काल तक तिन के गण वर्णन करे तौभी न कर सके, तथापि मैं तुम्हारे वचन से किंचित्मात्र वर्णन करूं हूं तिनके गुण पुण्य के बढ़ावनहारे हैं अयोध्यापुरी में राजा दशरथ होते भये दुराचाररूप इन्धन के भस्म करवे को अग्नि समान, और इक्ष्वाकु वंश रूप आकाश में चन्द्रमा महा तेजोमय सूर्य समान सकल पृथिवी विषे प्रकाश करतें अयोध्या विषे तिष्ठे वे पुरुषरूप पर्वत तिनसे कीर्तिरूप नदी निकसी, सो सकलजगत का आनन्द उपजावती समुद्र पर्यन्त विस्तारको धरती भई उस दशरथ भूपतिके राज्य भारके धुरन्धरही चार पुत्र महागुणवान भये एक राम दूजा लक्ष्मण तीजा भरत चौथा शत्रुघ्न तिनमे राम अति मनोहर सर्वशास्त्रके ज्ञाता पृथ्वी विषे प्रसिद्ध सो छोटे भाई लक्ष्मणसहित और जनक की पुत्रीजो सीता उससहित पिताकी आज्ञा पालवे निमित्त अयोध्याको तज पृथ्वी विषे विहार करते दण्डक बन में प्रवेश करते भये। सो स्थानक महाविषम जहां विद्याधरोंकी गम्यता नहीं खरदूषणसे संग्राम भया रावणने सिंहनाद किया उसे सुन कर लक्ष्मणकी सहाय करने को राम गया पीछेसे सीताको रावण हरलेगया तब राम पै सुग्रीव हनुमान् विराधित आदि अनेक विद्याधर मेले भये राम के गुणों के अनुराग से वशीभूतहै हृदय जिनका सब विद्याधरों को लेकर राम लंकाको गये रावण को जीत सीता को लेय अयोध्या आये स्वर्ग पुरी समान अयोध्या विद्याधरों ने बनाई वहां राम लक्ष्मण पुरुषोत्तम नागेंद्र समान सुखसे राज्यकरें राम को तुम अब तक कैसे न जाना जिसके लक्ष्मणसा भाई उसके हाथ सुदर्शन चक्र सो आयुध जिसके एकएक रत्नकी हजार हजार देव सेवाकरें ऐसे सातरत्न लक्ष्मणके और चाररत्न रामके जिसने प्रजा के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हित निमित्त जानकी तजी उस रामको सकललोक जाने ऐसा कोई पृथ्वीमें नहीं जो रामको न जाने इस पृथ्वी की कहां बात स्वर्ग विषे देवोंके समूह रामके गुण वर्णन करें हैं तब अंकुशने कही हे प्रभो रामने जानकी क्यों तजी सो वृतांत मैं सुना चाहूं हूं तब सीताके गुणोंकर धर्मानुरागहै चित्त जिसका ऐसा नारदसो आंसू डार कहताभया हे कुमार हो वह सीता सती महा निर्मल कुल विषे उपजी शीलवंती गुणवन्ती पतिव्रता श्रावकके आचार विषे प्रवीण रामकी आठहजार राणी तिनकी शिरोमणि लक्ष्मी कीर्ति धृति लज्जा तिनको अपनी पवित्रतासे जीतकर साक्षात जिनवाणी तुल्य सो कोई पूर्वोपार्जित पापके प्रभावकर मूढलोक अपवाद करते भये इसलिये रामने दुखितहोय निर्जनबनमें तजी खोटे लोक तिनकी वाणी सोई भई जेठ सूर्यकी किरण उसकर तप्तायमान वह सती कष्टको प्राप्त भई महा सुकुमार जिसमें अल्प भी खेद न सहारा पड़े मालती की माला दीपके आतापकर मुरझाय सो दावानल का दाह कैसे सहार सके, महा भीमबन जिसमें अनेक दुष्ट जीव वहां सीता कैसे प्राणोंको धरे, दुष्टजीवकी जिह्वा भुजंग समान निरपराध प्राणियों को क्यों डसे शुभ जीवोंकी निन्दा करते दुष्टोंकी जीभ के सौ टूक क्यों न होवें वह महासती पतिव्रतावोंकी शिरोमणि पटुता आदि अनेक गुणोंकर प्रशंसायोग्य अत्यन्त निर्मल महा सती उसकी जो लोक निंदा करें सो इस भव और परभव विषे दुखको प्राप्तहोय ऐसा कहकर शोकके भारकर मौनगह रहा विशेष कछू कह न सका सुनकर अंकुश बोले हे स्वामिन भयंकर बनविषे रामने सीताको तजते भला न किया यह कुलवन्तोंकी रीति नहीं है लोकापवाद निवारनेके और अनेक उपाय हैं ऐसा अविवेकका कार्य ज्ञानवन्त क्यों करें अंकुशने तो यही कही और अनंग लवणबोला यहांसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अयोध्या केतीक दूर तब नारद ने कही यहां से एकसौ साठ योजनहै जहां राम विराजे हैं तब दोनों कुमार बोले हम रामलक्ष्मण पर जावेंगे इस पृथ्वी में ऐसा कौन जिसकी हमारे आगे प्रबलता, नारद सों यह कह और वज्रजंघ से कही हे मामा सूक्ष देश सिंधु देश कलिंग देश इत्यादि देशों के राजावों को आज्ञापत्र पठावहु जो संग्राम का सब सरंजाम लेकर शीघ्रही आवें हमारा अयोध्या की तरफ कूच है और हाथी समारो मदोन्मत्त केते और निर्मद केते और घोडे बायु समान है बेग जिनका सो संग लेकर और जे योधा रणसंग्राम में विख्यात कभी पीठ न दिखावें तिनको लार लेवो, सब शस्त्र सम्हारो बक्तरों की मरम्मत करावो और युद्ध के नगारे दिवावो ढोल बजावो शंखों के शब्द करावो सब सामन्तों को युद्ध का विचार प्रगट करो यह आज्ञा कर दोनों वीर मन में युद्धका निश्चय कर तिष्ठे मानों दोनों भाई इन्द्र ही हैं देवों समान जे देशपति राजा तिनको एकत्र करिबे को उद्यमी भए तब राम लक्ष्मण पर कुमारों की असवारी सुन सीता रुदन करती भई. और सीता के समीप नारदको सिद्धार्थ कहता भया यह अशोभनकार्य तुम क्यों आरम्भा रण में उद्यम करिबे का है उत्साह जिनके ऐसे तुमसो पिता और पुत्रों में क्यों विरोध का उद्यम किया अब काहू भांति यह विरोध निवारो कुटुम्ब भेद करना उचित नहीं तब नारदने कही मैं तो ऐसा कछू जान्या नहीं इन विनय किया मैं असीस दई कि तुम राम लक्ष्मणसे होवो इन्होंनेसुन कर पूछी राम लक्ष्मण कौन ? मैं सब वृतांत कहा अबभी तुम भय न करो सब नीकेही होयगा अपना मन निश्चल करो. कुमारोंने सुनी कि माता रुदन करे है तब दोनों पुत्र माताके पासआए कहते भए हे मातः तुम रुदन क्यों करो हो सो कारण कहो तुम्हारी आज्ञा को कौन लोपे अरु सुन्दर वचन

For Private and Personal Use Only

कौनने कहे उसदुष्ट के प्राण हरें ऐसा कौन है जो सर्पकी जीभ से क्रीडा करे, ऐसा कौन मनुष्य और कौन देव जो तुमको असाता उपजावे हे मातः तुम कौन पर कोप किया है जिस पर तुम कोप करो उस का जानिये आयु का अंत आया है. हमपर कृपा कर कोप का कारण कहो इसभांति पुत्रों ने विनती करी तब माता आंसू डार कहती भई हे पुत्रो मैं काहू पर कोप न किया न मुझे किसी ने असाता दई तुम्हारा पिता से युद्ध का आरंभ सुन मैं दुखित भई रुदन करूं हूं. गौतमस्वामी कहे हैं. हे श्रेणिक तब पुत्र माता से पूछते भए हे माता हमारा पिता कौन तब सीता ने आदि से लेय सब वृतांत कहा राम का वंश और अपना वंश विवाह का वृत्तांत और वन का गमन अपना रावणकर हरण और आगमन जो नारदने वृतांत कहा था सो सब विस्तार से कहा कछु छिपाव न राखा और कही तुम गर्भ में आए तब ही तुम्हारे पिता ने लोकापवाद का भयकर मुझे सिंहनाद अटवी में तजी वहां मैं रुदन करती थी सो राजा वज्रजंघ हाथी पकड़ने गया था सो हाथी पकड़ बाहुडे था मुझे रुदन करती देखी सो यह महा धर्मात्मा शीलवन्त श्रावक मुझे महा आदर से ल्याया बड़ी बहिन का आदर जनाया और सत् सनमान से यहां राखी मैं भाई भामण्डल समान इस का घर जाना तुम्हारा यहां सन्मान भया तुम श्रीराम के पुत्र हो राम महाराजधिराज हिमाचल पर्वत से लेय समुन्द्रान्त पृथिवी का राज्य करे हैं जिन के लक्ष्मण से भाई सो महा बलवान् संग्राम में निपुणहै न जानिये नाथ की अशुभ वार्ता सुनूं अक तुम्हारी अथवा देवरकी इसलिये आरतचित्तभई मैं रुदनकरूं हूं और कोई कारण नहीं तब सुनकर पुत्र प्रसन्न वदन भए और माता से कहते भए हे माता हमारा पिता महा धनुष धारी लोक में श्रेष्ठ लक्ष्मीवान्

विशाल कीर्ति का धारक है और अनेक अद्भुतकार्य किए हैं परन्तु तुम को वन में तजी सो भला न कीया इसलिये हम शीघ्रही राम लक्ष्मणका मानभंग करेंगे तुम विषादमतकरो, तब सीता कहती भई हेपुत्र होवे तुम्हारे गुरुजन हैं उनसे विरोध योग्य नहीं। तुम चित्त सौम्य करो। महाविनयवन्त होय जाय कर पिताको प्रणाम करो यह ही नीतिका मार्ग है, तब पुत्र कहते भये हे मता हमारा पिता शत्रुभावको प्राप्त भया हम कैसे जाय प्रणाम करें और दीनताके बचन कैसे कहें हमतो माता तुम्हारे पुत्रहैं इसलिये रण संग्राम में हमारा मरण होय तो होवो परन्तु योधावों से निन्द्य कायर बचन तो हम न सहें, यह बचन पुत्रों के सुन सीता मौन पकड़ रही परन्तु चित्तमें अति चिन्ता है दोनों कुमार स्नानकर भगवान्की पूजा कर मंगल पाठ पढ़ सिद्धों को नमस्कार कर माता को धीर्य बन्धाय प्रणाम करदोनों महामंगलरूपहाथीपर चढे मानों चान्द सूर्य गिरिके शिखरतिष्ठेहैं अयोध्या ऊपर युद्धको उद्यमी भये जैसे रामलक्ष्मण लंका ऊपर उद्यमी भये थे इनका कूच सुन हज़ारों योधा पुण्डरीकपुर से निकसे सब ही योधा अपना अपना हल्ला देते भये वह जाने मेरी सेना अच्छी देखी वह जाने मेरी, महाकटक संयुक्त नित्य एक योजनका कूचकरें सो पृथिवीकी रक्षा करते चले जांयहैं किसीका कछू उजाड़ें नहीं पृथिवी नानाप्रकारके धान्य से शोभायमान है कुमारों का प्रताप आगे आगेबढ़ता जायहै मार्गके राजा भेंटदे मिलेहैं, दस हजार बेलदारकुदाल लिए आगे आगे चलेजायहैं और धरती ऊंची नीची को सम करें हैं और कल्हाड़े हैं हाथ में जिनके वेभी आगे आगे चले जांयहैं और हाथी ऊंट भैंसा बलद खच्चर खजानेके लदे जायहैं, मन्त्री आगे आगे चलेजांय हैं और प्यादे हिरणों की नाईं उछलते जाय हैं और तुरंगों के असवार अति तेजी से चलेजायहैं तुरंगोंका

पद्म
पुराण
॥६२८॥

हींस होय रही है और गजराज चले जाय हैं जिनके स्वर्ण की सांकल और महा घटावों का शब्द होय है और जिन के कानों पर चमर शोभे हैं और शंखों की ध्वनी होय रही है और मोतियों की झालरी पानीके बुदबुदा समान अत्यन्त सोहे हैं और सुन्दर हैं आभूषण जिन के महा उद्धत जिन के उज्वल दांतों के स्वर्ण आदि के बन्ध बन्धे हैं और रत्न स्वर्ण आदिक की माला तिन से शोभायमान चलते पर्वत समान नाना प्रकार के रंग से रंगे और जिन के मदझरे हैं और कारी घटा समान श्याम प्रचण्ड वेग को धरें जिन पर पाखर परी हैं नाना प्रकार के शस्त्रों से शोभित हैं और गर्जना करें हैं और जिन पर महादीप्ति के धारक सामन्त लोक चढे हैं और महावतों ने अति सिखाये हैं अपनी सेना का और परसेना का शब्द पिछाने हैं सुन्दर है चेष्टा जिन की और घोडों के असवार बखतर पहिरे खेट नामा आयुध को धरे बरछी है जिन के हाथ में घोड़ों के समूह तिन के खुरों के घात से उठी जो रज उस से आकाश व्याप्त होय रहा है ऐसा सोहे है मानो सुफेद बादलों से मण्डित है और पियादे शस्त्रों के समूह से शोभित अनेक चेष्टा करते गर्व से चले जाय हैं वह जाने मैं आगे चलूं वह जाने मैं और शयन आसन तांबूल सुगंधमाला महामनोहर वस्त्र आहार वलेपन नाना प्रकार की सामग्री वटती जाय है उस से सबही सेना के लोक सुखरूप हैं किसी को किसी प्रकार का खेद नहीं और मजल मजलपै कुमारों की आज्ञासे भले भले मनुष्यों को लोक नाना प्रकारकी वस्तु देवे हैं उन को यही कार्य सौंपा है सो बहुत सावधान हैं नानाप्रकारके अन्न जल मिष्टान्न लवण घृत दुग्ध दही अनेकरस भांति भांति खानेकी वस्तु आदर सों देवें हैं, समस्त सेना में कोई दीन बुभुक्षित तृषातुर कुवस्त्र मलिन चिन्तावान

दृष्टि नहीं पड़े है सेनारूप समुद्र में नर नारी नाना प्रकार के आभरण पहिरे सुन्दर बस्त्रोंकर शोभायमान महा रूपवान अति हर्षित दीखें इस भांति महा विभूति कर मण्डित सीता के पुत्र चले चले अयोध्या के देश में आये, मानों स्वर्ग लोक में इन्द्र आये जिस देशमें यव गेहूं चावलआदि अनेक धान्य फल रहे हैं और पौंडे सांठेयों के वाडे ठौर ठौर शोभ हैं पृथिवी अन्न जल तृणकर पूर्ण है और जहां नदियों तीर हंसोंके समूह क्रीड़ा करें हैं और सरोवर कमलों कर शोभायमान हैं और पर्वत नाना प्रकारके पुष्पों कर सुगन्ध होयरहे हैं और गीतोंकी ध्वनि ठौर ठौर होय रहीहै और गाय भैंस बलधों के समूह विचर रहे हैं और गवालणी बिलोवणा विलोवे हैं, और जहां नगरों सारिखे नजीक नजीक ग्राम हैं और नगर ऐसे शोभे हैं मानो सुर पुरही हैं महा तेजकर युक्त लवणांकुश देशकी शोभा देखते अति नीति सेआये किसीको किसीही प्रकारका खेद न भया, हाथियोंके मद झरिबे कर पंथ में रज दब गई कीच होय गया और चंचल घोड़ोंके खुरों के घात कर पृथिवी जर्जरी होयगई। चले चले अयोध्या के समीप आये दूरसे सन्ध्याके बादरोंके रंग समान अतिसुन्दर अयोध्या देख बज्रजंघ को पूछा हे माम यह महा ज्योतिरूप कैसी नगरी है तब बज्रजंघ ने निश्चयकर कही हे देव यह अयोध्या नगरी है जिसके स्वर्णमई कोट उनकी यह ज्योति भासे है इस नगरीमें तुम्हारा पिता बलदेवस्वामी बिराजे हैं जिसके लक्ष्मण और शत्रुघ्नभाई इस भांति बज्रजंघ ने कही और दोनोंकुमार शूरवीरता की कथाकरते सुख से आय पहुंचे कटक के और अयोध्याके बीच सरयू नदी रही दोनों भाईयोंके यह इच्छा कि शीघ्रही नदी उतर नगरी लेवैंजैसे कोई मुनिशीघ्र ही मुक्त हुवाचाहें उसमोक्षकी आशारूपनदी यथाख्यात होने न देय आशारूप नदीको

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिरे तब मुनि मुक्त होय तैसे सरयू नदी के योग से शीघ्र ही नदीसे पार उतर नगरीमें न पहुंच सके तब जैसे नन्दनवन में देवोंकी सेना उतरे तैसे नदीके उपवनादिमें ही कटक के डेरा कराये॥

अथानन्तर परसैना निकट आई सुन रामलक्ष्मण आश्चर्यको प्राप्त भये और दोनों भाई परस्पर बतलावें ये कोई युद्धके अर्थ हमारे निकट आए हैं सो मुवा चाहे हैं वासुदेवने विराधित को आज्ञा करी युद्ध के निमित्त शीघ्र ही सेना भेली करो ढील न होय जिन विद्याधरोंके कपियों की ध्वजा और बैलोंकी ध्वजा और हाथियों की ध्वजा सिंहोंकी ध्वजा इत्यादि अनेक भांति की ध्वजा तिनको बेग बुलावो सो बिराधित ने कही जो आज्ञा होयगी सोई होयगा उसही समय सुग्रीवादिक अनेक राजावों पर दूत पठाये सो दूत के देखवे मात्रही सब विद्याधर बड़ी सेनासे अयोध्या आये भामंडलभी आया सो भामण्डलको अत्यन्त आकुलता होय शीघ्र ही सिद्धार्थ और नारद जाय कर कहते भये यह सीताके पुत्रहैं सीता पुण्डरीक पुर में है तब यह बात सुनकर बहुत दुखित भया और कुमारों के अयोध्या आयवे पर आश्चर्य को प्राप्त भया और इनका प्रताप सुन हर्षित भया मनके बेगसमान जो बिमान उसपर चढ़कर परिवार सहित पुण्डरीकपुर गया बहिन से मिला सीता भामण्डलको देख अति मोहितभई आंसूनाखती संती विलाप करती भई और अपने ताईं घरसे काढ़नेका और पुण्डरीकपुर आयबे का सर्व बृत्तान्त कहा तब भामण्डल बहिनको धीर्य बंधाय कहताभया हे बहिन तेरे पुण्यके प्रभावसे सब भला होयगा और कुमार अयोध्या गये सो भला न कीया, जायकर बलभद्रनारायण को क्रोध उपजाया राम लक्ष्मण दोनों भाई पुरुषोत्तम देवों से भी न जीते जांय महा योधा हैं कुमारों के और उनके युद्ध न होय सो ऐसा उपाय

करें इस लिये तुमभी रखो तब सीता पुत्रोंकी बधू संयुक्त भामण्डल के विमान में बैठ चली राम लक्ष्मण महा क्रोधकर रथ घोटक गज पयादे देव विद्याधर तिनकर मण्डित समुद्र समान सेना लेय बाहिर निकसे और घोड़ों के रथ चढ़ा शत्रुघ्न महाप्रतापी मोतियों के हार कर शोभायमान है वक्षस्थल जिसका सो राम के संग भया, और कृतांतवक्र सब सेना का अग्रेस्सर भया जैसे इन्द्र की सेना का अग्रगामी हृदयकेशी नामा देव होय उसका रथ अत्यंत सोहता भया देवों के विमान समान जिसका रथ सो सेनापति चतुरंग सेना लिये अतुलबली अतिप्रतापी महाज्योति को धरे धनुष चढ़ाय बाण लिये चला जाय है, जिसकी श्याम ध्वजा शत्रुवों से देखी न जाय उसके पीछे त्रिमूर्ध्न वन्हिशिख सिंहविक्रम दीर्घभुज सिंहोदर सुमेरु बालखिल्य रौद्रभूत जिसके अष्टापदों के रथ वज्रकर्ण पृथुमार दमन मृगेन्द्रध्वज इत्यादि पांचहजार नृपति कृतांतवक्र के संग अग्रगामी भए बन्दीजन बखाने हैं बिरद जिनके और अनेक रघुवंशीकुमार देखे हैं अनेक रण जिन्हों ने शस्त्रों पर है दृष्टि जिनकी युद्धका है उत्साह जिनके, स्वामीभक्ति में तत्पर महाबलवन्त धरतीको कंपातेशीघ्रही निकसे, कईएक नानाप्रकारके रथों परचढे कईयक पर्वत समान ऊंचे कारी घटा समान हाथीयों परचढे, कईयक समुद्र की तुरंग समान चञ्चल तुरंग तिनपर चढ़े। इत्यादि अनेक वाहनों पर चढ़े युद्धको निकसे वादित्रों के शब्दकर करी है व्याप्त दशों दिशा जिन्होंने बखतर पहिरे टोपधरे क्रोधकर संयुक्त है चित्त जिनका, तब लव अंकुश परसेना का शब्द सुन युद्ध को उद्यमी भए वज्रजंघ को आज्ञा करी, कुमार की सेना के लोक युद्धके उद्यमी थे ही। प्रलयकाल की अग्नि समान महाप्रचण्ड अंग देश बंग देश नेपाल बर्बर पौंड मागध पारसैल स्यंघल कलिंग इत्यादि अनेक देशों के राजा रत्नाङ्कको आदि दे

महा बलवन्त ग्यारहहजार राजाउत्तम तेजके धारक युद्ध के उद्यमी भए दोनों सेनावों का संघट्ट भया दोनों सेनावों के संगम में देवों को असुरों को आश्चर्य उपजे ऐसा महा भयंकर शब्द भया जैसा प्रलयकाल का समुद्रगाजे परस्पर यह शब्द होते भए क्या देख रहा है, प्रथम प्रहार क्यों नकरे, मेरा मन तोपर प्रथम प्रहार करिवे पर नहीं इसलिये तू ही प्रथम प्रहारकर और कोई कहे है एक डिग आगे होवो जूं शस्त्रचलाऊं कोई अत्यन्त समीप होय गये तब कहे हैं खड्ग तथा कटारी हाथ लेवो निपट नजीक भये बाणका अवसर नहीं। कोई कायर का दल कहे हैं तू क्यों कांपे है मैं कायर को न मारूं तू परे हो आगे महा योधा खड़ा है उससे युद्ध करने दे. कोई वृथा गाजे है उसे सामन्त कहे हैं हे क्षुद्र कहा वृथा गाजे है गाजने में सामन्तपना नहीं जो तोमें सामर्थहै तो आगे आव तेरी रणकी भूख भगाऊं इस भांति योधावों में परस्पर वचनालाप होय रहे हैं तरवार वहे हैं भूमिगोचरी विद्याधर सब ही आये हैं भामण्डल पवनवेग वीरमृगांक विद्युद्ध्वज इत्यादि बडे बडे राजा विद्याधर बड़ी सेना कर युक्त महा रण में प्रवीण सो लवण अंकुशके समाचारसुन युद्धसे पराङ्मुख शिथिलहोयगये और सब बातोंमें प्रवीण हनूमान सो भी सीताके पुत्र जान युद्धसे शिथिलहोय रहा और विमानके शिखर विषे आरूढ जानकी को देख सबही विद्याधर हाथ जोड सीस निवाय प्रणामकर मध्यस्थ होयरहे सीता दोनों सेना देख रोमांच होय आई कांपे है अंग जिसका लवण अंकुश लहलहाट करे हैं ध्वजा जिनकी रामलक्ष्मणसे युद्धके उद्यमी भये रामके सिंहकी ध्वजा लक्ष्मणके गरुडकी सो दोनों कुमार महा योधा रामलक्ष्मणसे युद्ध करते भये लवण तो रामसे लडे और अंकुश लक्ष्मणसे लडे सो लवने आवतेही श्री रामकी ध्वजा छेदी और

पद्म पुराण ।९३३।

धनुष तोडा तब राम हंसकर और धनुष लेयबेको उद्यमी भया। इतनेमें लवने रामका रथ तोडा तब राम और रथ चढ प्रचंडहै पराक्रम जिसका क्रोध कर भृकुटी चढ़ाय ग्रीष्मके सूर्य समान तेजस्वी जैसे चमरेंद्र पर इंद्र जाय तैसे गया तब जानकी का नन्दन लव रणकी पाहुनगति करनेको रामके सन्मुख आया रामके और लवके परस्पर महायुद्ध भया। उसने उसके शस्त्र छेदे उसने उसके जैसा युद्ध राम और लवका भया तैसाही अंकुश और लक्ष्मणका भया इसभांति परस्पर दोनों युगल लडे तब योधा भी परस्पर लडें घोडों के समूह रणरूप समुद्रकी तरंग समान उच्छलते भये कोई एक योधा प्रतिपक्षीको टूटे बखतर देख दयाकर मौन गह रहा और कईएक योधा मने करते करते पर सेनामें पैठेसो स्वामी का नाम उचारते परचक्रसे लड़ते भये कईएक महाभट माते हाथियों से भिड़ते भये केई एक हाथियों के दांतरूप सेजपर रणा निद्रा सुखसे लेते भये किसी एक महाभटका तुरंग काम आया सो पियादा ही लडने लगा किसीके शस्त्र टूट गये तोभी पीछे न होता भया हाथोंसे मुष्टि प्रहार करता भया और कोई एक सामन्त बाण वाहने चुक गया उसे प्रतिपक्षी कहता भया फिर चलाय सो लज्जाकर न चलावता भया और कोई एक निर्भयचित्त प्रति पक्षीको शस्त्र रहित देख आपभी शस्त्र तज भुजावों से युद्ध करता भया वे योधा बडे दाता रण संग्राम विषप्राण देते भए परंतु पीठ न देतेभये जहां रुधिरका कीच होय रहाहै सो रथोंके पहिये डूब गये हैं सारथी शीघ्रही नहीं चला सके हैं। परस्पर शस्त्रों के संपात कर अग्नि पड रही है और हाथियों की सूंड के छांटे उछले हैं। और सामन्तों ने हाथियों के कुम्भ स्थल बिदारे हैं सामन्तों के उरस्थल बिदारे हैं हाथी काम आय गये हैं तिन कर मार्ग रुक रहा है

और हाथियों के मोती बिखर रहे हैं। वह युद्ध महा भयंकर होता भया जहां सामन्त अपना सिर देकर यशरूप रत्न खरीदते भए जहां मूर्छित पर कोई घात नहीं करे और निर्बलपर घात करे सामन्तों का है युद्ध जहां महा युद्धके करणहार योधा जिनके जीवनकी आशा नहीं चोभ को प्राप्त भया समुद्र गाजे तैसा होय रहा है शब्द जहां सो वह संग्राम समरस कहिये समान रस होता भया॥ भावार्थ॥ न वहसेना हटी न वह सेना हटी योधावोंमें न्यूनाधिकता परस्पर दृष्टि न पड़ी कैसे हैं योधा स्वामी विषे है परम भक्ति जिनकी और स्वामीने आजविका दई थी उसके बदले यह जीव दिया चाहे हैं प्रचंड रणकीहै खाज जिनके सूर्य समान तेजको धरें संग्रामके धुरंधर होते भयेइतिएकसौदोयवांपर्वपूर्ण

अथानन्तर गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक अब जो वृतांत भया सो सुनो अनंगलवण के तो सारथी राजा वज्रजंघ और मदनांकुश के राजा पृथु और लक्ष्मण के विराधित और राम के कृतांतवक्र तब श्रीराम वज्रावर्त धनुष को चढ़ायकर वृतांतवक्र से कहते भये अब तुम शीघ्र ही शत्रुवों पर रथ चलावो ढील न करो, तब वह कहता भया हे देव देखो यह घोड़े नरवीरके बाणोंकर जरजर होयरहे हैं इन में तेज नहीं मानों निद्रा को प्राप्त भये हैं यह तुरंग लोह की धाराकर धरती को रंगे हैं मानों अपना अनुराग प्रभुको दिखावे हैं और मेरी भुजा इसके बाणोंकर भेदी गई है बक्तर टूटगया है तब श्रीराम कहते भए मेरा भी धनुष युद्ध कर्म रहित ऐसा होयगया है मानों चित्राम का धनुष है और यह मूसल भी कार्यरहित होय गया है और दुर्निवार जे शत्रुरूप गजराज तिनको अंकुश समान यह हल सो भी शिथिलता को भजे है शत्रुके पक्षको भयंकर मेरे अमोघशस्त्र जिनकी सहस्र सहस्र यक्ष रक्षाकरें वे शिथिल होय गए हैं

शस्त्रों की सामर्थ नहीं जो शत्रुपर चलें गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक जैसे अनंग लवण आगे राम के शस्त्र निरर्थक होय गये तैसे ही मदनांकुशके आगे लक्ष्मणके शस्त्र कार्य रहित होय गये वे दोनों भाई तो जाने कि ये रामलक्ष्मणतो हमारेपिता और पितृव्य(चचा) हैं सो वे तो इनका अंग बचाय शर चलावें औरये उनको जानें नहीं सो शत्रुजान कर शर चलावें लक्ष्मण दिव्यास्त्र की सामर्थ उनपर चलवेकी न जानें शर शेल सामान्यचक्र खडग अंकुश चलावता भया सो अंकुश ने वज्रदण्डकर लक्ष्मणके आयुध निराकरण किये और रामके चलाएआयुध लवण ने निराकरण किये फिर लवणने रामकी ओर सेलचलाया और अंकुशने लक्ष्मण पर चलाया सो ऐसी निपुणतासे जो दोनोंके मर्मकी ठौर न लागे सामान्यचोट लगीसो लक्ष्मणके नेत्र घूमने लगे बिराधित ने अयोध्या की ओर रथ फेरा तब लक्ष्मण सचेत होय कोप कर बिराधितसे कहता भया हे बिराधित तैंने क्या किया मेरा रथ फेरा अब पीछा फिर शत्रुका सन्मुखलेवो रण में पीठ न दीजिए जेशूरवीर हैं तिनकोशत्रु के सन्मुख मरण भला परन्तु यह पीठदेना महा निंद्यकर्म शूरवीरों को योग्य नहीं कैसे हैं शूरवीरयुद्धमें बाणोंकर पूरितहै अंग जिनका जे देव मनुष्योंकर प्रशंसा योग्य वे कायरता कैसे भजें मैं दशरथ का पुत्र राम का भाई बासुदेव पृथिवी विषे प्रसिद्ध सो संग्राममें पीठ कैसे देऊं यह बचन लक्ष्मण ने कही तब बिराधित ने रथ को युद्ध के सन्मुख किया सो लक्ष्मण के और मदनांकुश के महायुद्ध भया लक्ष्मणने क्रोधकर महाभयंकर चक्रहाथमें लिया चक्र महाज्वालारूप देखा न जाय ग्रीष्मके सूर्य समान सो अंकुश पर चलाया सो अंकुशके समीप जाय प्रभारहित होय गया और उलटा लक्ष्मण के हाथ में आया फिर लक्ष्मणने चक्र चलायासो पीछा आया इसभांति

बारबार पीछाआया फिर अंकुशने धनुष हाथमें गहा तब अंकुशको महा तेजरूप देख लक्षमणके पक्षके सब सामन्त आश्चर्यको प्राप्तभये तिनको यह बुद्धि उपजी यह महापराक्रमी अर्धचक्री उपजा लक्षमण ने कोटि शिला उठाई और मुनिके वचन जिनशासनका कथन और भांति कैसेहोय और लक्षमण भी मनमें जानताभया कि ये बलभद्र नारायण उपजे आप अति लज्जावान होय युद्धकी क्रियामें शिथिलभया

अथानन्तर लक्षमणको शिथिल देख सिद्धार्थ नारद के कहे से लक्षमणके समीप आय कहता भया वासुदेव तुमहीहो जिनशासन के वचन सुमेरुसे अति निश्चल हैं यह कुमार जानकी के पुत्र हैं गर्भ में थे तब जानकी को बन में तजी यह तुम्हारे अंग हैं इसलिये इनपर चक्रादिक शस्त्र न चलें तब लक्षमण ने दोनों कुमारोंका बृत्तान्त सुन हर्षित होय हाथसे हथियार डार दिये बषतर दूर किया सीता के दुःख कर अश्रुपात डारनेलगा और नेत्र घूमने लगे रामशस्त्र डार बक्तर उतार मोह कर मूर्छित भए, चन्दन से छांट सचेत किये तब स्नेहके भरे पुत्रोंके समीप चले पुत्र रथसे उतर हाथ जोड़ सीस निवाय पिताके पायन पड़े श्रीराम स्नेह कर द्रवी भूत भया है मन जिसका पुत्रोंको उरसे लगाय विलाप करतेभये. आंसुवों करन मेघ कासा दिन किया राम कहे हैं हाय पुत्रहो मैंमंद बुद्धि गर्भमें तिष्ठते तुमको सीता सहित भयंकर वनमें तजे. तुम्हारी माता निर्दोष हाय पुत्रहो मैं कोई विस्तीर्ण पुण्य कर तुम सारिखे पुत्र पाए सो उदर में तिष्ठते तुम भयंकर बन विषे कष्टको प्राप्त भए हाय वत्सहो जो यह बज्रजंघ बन में न आवता तो तुम्हारा मुखरूप चन्द्रमा मैं कैसे देखता, हाय बालक हो इन अमोघ दिव्यास्त्रोंकर तुम न हते गये सो मेरे पुण्य के उदयकर देवोंने सहाय करी हाय मेरे अंगज हो मेरे बाणोंकर बींधे तुम रणक्षेत्र में पड़ते तो न जनूं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जानकी क्या करती सब दुखों में घरसे काढ़ने का बड़ा दुःख है सो तुम्हारी माता महा गुणवन्ती व्रतवन्ती पतिव्रता मैं बनमें तजी और तुमसे पुत्र गर्भमें सो मैं यह काम बहुत बिना समझे कीया और जो कदाचित् तुम्हारा युद्ध में अन्यथाभाव होता तो मैं निश्चय से जानूं हूं शोक से विहूल जानकी न जीवती इस भान्ति राम ने बिलाप कीया, फिर कुमार विनय कर लक्ष्मण को प्रणाम करते भये लक्ष्मण सीता के शोक से विहूल आंसू डारता, स्नेह का भरा दोनों कुमारों को उर से लगावता भया। शत्रुघ्न आदि यह बृतान्त सुन वहां आये कुमार यथायोग्य विनय करते भये ये उरसों लगाय मिले। परस्पर अतिप्रीति उपजी दोनों सेना के लोक अतिहित कर परस्पर मिले क्योंकि जब स्वामी स्नेह होय तब सेवकों के भी होय सीता पुत्रोंका महात्म्य देख अति हर्षित होय विमान के मार्ग होय पीछे पुण्डरीकपुरमें गई और भामंडल विमान से उतर स्नेह का भरा आंसू डारता भानजों से मिला, अतिहर्षित भया और प्रीतिका भरा हनुमान् उरसे लगाय मिला और बारम्बार कहता भया भली भई भली भई, और विभीषण सुग्रीव विराधित सब ही कुमारों से मिले, परस्पर हित संभाषण भया भूमिगोचरी विद्याधर सब ही मिले और देवोंका आगम भया सबों को आनन्द उपजा राम पुत्रों को पाय कर अति आनन्द को प्राप्त भये, सकल पृथिवी के राज्य से पुत्रों का लाभ अधिक मानते भये. जो राम के हर्ष भया सो कहिवे में न आवे और विद्याधरी आकाश में आनन्द से नृत्य करती भई और भूमिगोचरीयों की स्त्री पृथिवी में नृत्य करती भई और लक्ष्मण आपको कृतार्थ मानता भया मानों सब लोक जीता हर्षसे फूलगये हैं लोचन जिसके और राम मन्न मनमें जानता भया मैं सगर चक्रवर्ती समान हूं और कुमार दोनों भीम और भगीरथ समान हैं राम वज्रजंघ से

For Private and Personal Use Only

अतिप्रीति करताभया जो तुमभेरे भामंडल समान हो अयोध्यापुरी तो पहिलेही स्वर्गपुरी समान थी तो फिर कुमारोंके आयबे कर अति शोभायमान भई जैसे सुन्दर स्त्री सहजही शोभायमानहोय और शृंगार कर अति शोभाको पावे, श्रीराम लक्ष्मणसहित और दोनों पुत्रोंसहित सूर्यकी ज्योतिसमान जो पुष्पक बिमान उसमें बिराजे सूर्यसमानहै ज्योति जिनकी रामलक्ष्मण और दोनों कुमार अद्भुत आभूषण पहिरे सो कैसा शोभा बनी है मानों सुमेरुके शिखरपर महामेघ बिजुरी के चमत्कार सहित तिष्ठा है।

भावार्थ-बिमान तो सुमेरु का शिखर भया और लक्ष्मण महामेघका स्वरूपभया और राम तथा राम के पुत्र विद्युतसमान भय सो ये चढ़कर नगरके बाह्य उद्यान विषे जिनमंदिरहैं तिनके दर्शनको चले सो नगरके कोटपर ठौर २ ध्वजा चढी हैं। तिनको देखते धीरे २ जायहैं लार अनेक राजा कई हाथियों पर चढे केई घोड़ों पर केई रथों पर चढे जायहैं और पियादों के समूह जाय हैं धनुष बाण इत्यादि अनेक आयुध और ध्वजा छत्रों कर सूर्यकी किरण नजर नहीं पडे हैं और स्त्रियों के समूह झरोखों में बैठी देखे हैं। लव अंकुशके देखबेका सबोंके बहुत कौतूहलहै नेत्ररूप अंजालियोंकर लवणांकुश के सुन्दरता रूप अमृतका पान करे हैं सो तृप्त नहीं होयहै एकाग्रचित्त भई इनको देखे हैं और नगर में नर नारियोंकी ऐसी भीड़भई किसीके हार कुंडलकी गम्य नहीं और नारीजन परस्पर वार्ता करे हैं कोई कहे है हे मातः टुक मुख इधर कर मुझे कुमारोंके देखिबे का कौतुक है। हे अखण्ड कौतुके तूने तो घनी बार लग देखे अब हमें देखने देवो अपना सिर नीचा कर ज्यों हमको दीखे कहां ऊंचा सिरकर रही है कोई कहे है हे सखि तेरे सिरके केश बिखर रहे हैं सो नीके समार और कोई कहे है हे चित्तमान

से कहिये एक और नहीं चित्त जिसका तू कहा हमारे प्राणों को पीड़े है तू न देखे यह गर्भवती स्त्री खडी है पीड़ित है कोऊ कहे' टुक परे होहु कहा अचेतन होय रही है कुमारों को न देखनेदे हे यह दोनों रामदेवके कुमार रामदेवके समीप बैठे अष्टमीके चंद्रमासमानहै ललाट जिनका कोई पूछे है इनमें लवण कौन और अंकुश कौन यहतो दोनों तुल्यरूप भासे हैं तब कोई कहे है यह लाल वस्त्र पहिरे लवणहै । और यह हरे वस्त्र पहिरे अंकुश है अहो धन्य सीता महापुण्यवती जिसने ऐसे पुत्रजने और कोई कहेहै धन्य है वह स्त्री जिसने ऐसे वर पाए हैं एकाग्रचित्त भई स्त्री इत्यादि वार्ता करतीं भई इनके देखवे में है चित्त जिनकी अति भीड भई सो भीड में कर्णाभरणरूप सर्पकी डाढकर डसे गये हैं कपोल जिनके सो न जानती भई तद्गत है चित्त जिनका काहूकी कांची दाम जाती रही सो उसे खबर नहीं काहू के मोतियों के हार टूटे सो मोती बिखर रहे हैं । मानों कुमार आये सो ये पुष्पांजली बरसे हैं और केई एकों को नेत्रों की पलक नहीं लगे है असवारी दूर गई है तोभी उसी ओर देखे हैं नगरकी उत्तम स्त्री वेई भई वेलसो पुष्पवृष्टि करती भई सो पुष्पोंका मकरंदकर मार्ग सुगंध होय रहाहै श्रीराम अति शोभा को प्राप्त भये पुत्रोंसहित वनके चैत्यालयों का दर्शनकर अपने मंदिर आये कैसाहै मंदिर महा मंगल कर पूर्ण है ऐसे अपने प्यारे जनोंके आगमका उत्साह सुखरूप उसका वरणन कहां लग करिये पुण्य रूपी सूर्यके प्रकाशकर फूलाहै मन कमल जिनका ऐसे मनुष्य वेई अद्भुत सुख को पावें हैं ॥ इति १०३ पर्व पूर्ण

अथानन्तर विभीषण सुग्रीव हनूमान् मिलकर राम से बिनती करते भये हे नाथ हम पर कृपा करो हमारी बिनती मानों जानकी दुःख से तिष्ठे है इसलिये यहां लायवे की आज्ञा करो, तब राम दीर्घ उष्ण

निश्वास नाख क्षण एक विचार कर बोले, मैं सीता को शीलदोष रहित जानूं हूं, वह उत्तम चित्त है परन्तु लोकापवादकर घर से काढ़ा है अब कैसे बुलाऊं, इसलिये लोकों कोप्रतीति उपजायकर जानकी आवे तब हमारा उनका सहवास होय, अन्यथा कैसे होय इसलिये सब देशों के राजावों को बुलावो समस्त विद्याधर और भूमिगोचरी आवें सबों के देखते सीता दिव्य लेकर शुद्ध होय मेरे घर में प्रवेश करे जैसे शची इन्द्रके घर में प्रवेश करे तब सब ने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा तब सब देशों के राजा बुलाये सो बाल बृद्ध स्त्री परिवार सहित अयोध्या नगरी आये जे सूर्य्य कोभी न देखें घरही में रहें वेनारी भी आईं और लोकों की कहा बात जे बृद्ध बहुत बृतांत के जाननहारे देश में मुखिया सब दिशावों से आए कैयक तुरंगों पर चढे कैयक रथोंपर चढे तथा पालकी हाथी और अनेक प्रकार असवारियों पर चढे बड़ी विभूति से आये विद्याधर आकाश के मार्ग होय विमान बैठे आए और भूमिगोचरी भूमि के मार्ग आये मानों जगत् जंगम होयगया, रामकी आज्ञासे जे अधिकारीथे तिन्हों ने नगर के बाहिर लोगों के रहने के डेरे खडे कराए और महाविस्तीर्ण अनेक महिल बनाये तिनके दृढ़स्तंभ के ऊंचे मंडप उदार झरोखे सुन्दर जाली तिन में स्त्रियें भेली और पुरुष भेले भये पुरुष यथायोग्य बैठे दिव्य को देखने की है अभिलाषा जिनके जेते मनुष्य आए तिनकी सर्वभांति पाहुनगति राजद्वार के अधिकारियों ने करी, सबों को शय्या आसन भोजन तांबूल वस्त्र सुगंध मालादिक समस्त सामग्री राज द्वारसे पहुंची सबों की स्थिरता करी और राम की आज्ञा से भामण्डल विभीषण हनूमान सुग्रीव विराधित रत्नजटी यह बडे बडे राजा आकाश के मार्ग क्षणमात्र में पुण्डरीकपुर गए सो सब सेना नगर के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाहिर राख अपने समीपी लोगों सहित जहां जानकी थी वहां आए जय जयशब्द कर पुष्पांजलि चढ़ाय पांयन को प्रणाम कर अति विनय संयुक्त आंगण में बैठे, तब सीता आंसू डारती अपनी निन्दा करती भई दुर्जनों के वचनरूप दावानल का दग्ध भये हैं अंग मेरे सो क्षीरसागर के जलकर भी सींचे शीतल न होंय तब वे कहते भये हे देवि भगवति सौम्ये उत्तमे अब शोक तजो और अपना मन समाधान में लावो इस पृथिवी में ऐसा कौन प्राणी है जो तुम्हारा अपवाद करे, ऐसा कौन जो पृथिवी को चलायमान करे और अग्नि की शिखा को पीवे और सुमेरु के उठायवे का उद्यम करे और जीभ कर चांद सूर्य को चाटे ऐसा कोई नहीं तुम्हारा गुणरूप रत्नों का पर्वत कोई चलाय न सके, और जो तुमसारिखी महा सतीयों का अपवाद करें तिनकी जीभ के हजार टूक क्यों न होवें हम सेवकों के समूहको भेजकर जो कोई भरतक्षेत्र में अपवाद करेंगे उनदुष्टों का निपात करेंगे और जो विनयवान् तुम्हारे गुणगायवे में अनुरागी हैं उनके गृहमें रत्नवृष्टि करेंगे यह पुष्पकाबिमान श्रीरामचन्द्र ने भेजा है उस में आनन्दरूप होय अयोध्या की तरफ गमन करो सब देश और नगर और श्री राम का घर तुम बिना न सोहे जैसे चन्द्र कला बिना आकाश न सोहे और दीपकविना मंदिर न सोहे और शाखा बिना वृक्ष न सोहे हे राजा जनककी पुत्री आज रामका मुखचन्द्र देखो. हे पंडिते पतिव्रते तुमको अवश्य पतिका बचन मानना जब ऐसा कहा तब सीतामुख्य सहेलियोंको लेकर पुष्पकविमानमें आरूढ़ होय शीघ्रही सन्ध्याके समय अयोध्या आई सूर्य अस्त होय गया सो महेन्द्रोयनामा उद्यान में रात्री पूर्ण करी आगे राम सहित यहां आवती थी सो बन अति मनोहर दीखता था सो अब राम बिना रमणीक न भासा॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथानन्तर सूर्य उदय भया कमल प्रफुल्लितभये जैसे राजाके किंकर पृथिवी में विचरें तैसे सूर्यकी किरण पृथिवी में विस्तरी जैसे दिव्य कर अपवाद नस जाय तैसे सूर्य के प्रताप कर अंधकार दूर भया तब सीता उत्तम नारियों कर युक्त राम के समीप चली हथनी पर चढ़ी मन की उदासीनता कर हती गई है प्रभा जिसकी तौभी भद्र परिणामकी धरणहारी अत्यन्त सोहतीभई जैसेचन्द्रमाकीकला ताराओंकर मंडित सोहे तैसे सीता सखियोंकर मंडित सोह सब सभा विनय संयुक्त सीताको देख वंदना करते भये यह पापरहित धीरताकी करणहारी रामकी रमा सभा में आई राम समुद्र समान क्षोभ को प्राप्त भये लोक सीताके जायबेकर विषाद के भरे थे और कुमारों का प्रताप देख आश्चर्य के भरे भये अब सीता के आयबे कर हर्ष के भरे ऐसे शब्द करते भए हे माता सदा जयवन्त होवो नादो वरधो फूलो फलो धन्य यह रूप धन्य यह धीर्य धन्य यह सत्य धन्य यह ज्योति धन्य यह महानुभावता धन्य यह गंभीरता धन्य निर्मलता ऐसे वचन समस्तही नर नारियों के मुख से निकसे आकाश में विद्याधर भूमिगोचरी महा कौतुक भरे पलक रहित सीता का दर्शन करते भए। और परस्पर कहतेभए पृथ्वी के पुण्यके उदय से जनकसुता पीछे आई, कैएक तो वहां श्रीरामकी ओर निरखे हैं जैसे इन्द्रकी ओर देव निरखें कैएक रामके समीप बैठे लव और अंकुश तिनको देख परस्पर कहे हैं ये कुमार राम के सदृशही हैं और कईएक लक्षमणकी ओर देखे हैं कैसाहै लक्षमण शत्रुवों के पक्षके क्षय करिबे को समर्थ और कईएक शत्रुघ्नकीओर कईएक भामण्डलकी ओर कईएक हनूमानकी ओर कईएक विभीषणकी ओर कईएक विराधितकी ओर और कईएक सुग्रीव की ओर निरखेहैं और कईएक आश्चर्यको प्राप्तभए सीताकीओर देखेहैं

अथानन्तर जानकी आगे जायकर रामको देख आपको वियोग सागर के अन्तको प्राप्त भई मानती भई, जब सीता सभामें आई तब लक्षमण अर्घ देय नमस्कार करता भया, और सब राजा प्रमाण करते भए सीता शीघ्रता कर निकट आवने लगी तब राघव यद्यपि अक्षोभित हैं तथापि सकोप होय मनमें विचारते भये इसे विषम बन में मेलीथी सो मेरे मनकी हरणहारी फिर आई। देखो यह महा ढीठ हैं मैं तजी तौभी मोसे अनुराग नहीं छाडे है यह रामकी चेष्टा जान महा सती उदास चित्त होय विचारतीभई मेरे वियोगका अन्त नहीं आया मेरा मनरूप जहाज विरह रूप समुद्र के तीर आय फटा चाहे है। ऐसी चिन्त से व्याकुल चित्तभई पगके अंगूठेसे पृथिवी कुचरती भई बलदेवके समीप भामंडल की बहिन कैसी सोहे है जैसी इन्द्र के आगे सम्पदा सोहे तब राम बोले हे सीते मेरे आगे कहां तिष्टै है तू परे जा मैं तेरे देखवे का अनुरागी नहीं मेरी आंख मध्यान्हके सूर्य और आशी विष सर्प तिन को देख सके परन्तु तेरे तनु को न देख सके हैं तू बहुत मास दशमुख के मन्दिर में रही अब तुझे घर में राखनी मुझे कहां उचित तब जानकी बोली तुम महा निर्दई चित्तहो तुमने महा पण्डित होयकर भी मूढ लोकन की न्याई मेरा तिरस्कार कीया सो कहां उचित मुझे गर्भवती को जिनदर्शन का अभिलाष उपजा था सो तुम कुटिलता से यात्रा का नाम लेय विषम वनमें डारी यह कहां उचित, मेरा कुमरण होता और कुगति जाती इसमें तुमको कहां सिद्ध, जो तुम्हारे मनमें तजवे की थी तो आर्यिकावों के समीप मेली हुता। जे अनाथ दीन दलिद्री कुटुम्ब रहित महा दुखी तिनको दुख हरिवेका उपाय जिनशासन का शरणहै इस समान और उत्कृष्ट नहीं, हे पद्मनाभ तुम करवे मैं तो कछू कमी नकरी, अबप्रसन्न होवो आज्ञा करो सो

करूं यह कहकर दुख की भरी रुदन करती भई। तब राम बोले हे देवि मैं जानूं हूं तिहारा निर्दोषशील है और तुम निपाप अणुव्रत की धरणहारी मेरी आज्ञा कारिणी हो तुम्हारे भावनकीशुद्धता मैंभलि भांति जानूं हूं परन्तु ये जगत के लोक कुटिल स्वभाव हैं। इन्होंने बृथातुम्हारा अपवाद उठाया सो इनका सन्देह मिटे और इनको यथावत् प्रीतीति आवे सो कर. तब सीता ने कही आप आज्ञा करो सोही प्रमाण जगत् में जेते प्रकार के दिव्य हैं सो सब करके पृथिवी का सन्देह हरूं, हे नाथ विषों में महा विष काल कूट है जिसे सूंघकर आशी विष सर्प भी भस्म होय जाय सो मैं पीऊं और अग्नि की विषम ज्वाला में प्रवेश करूं और जो आप आज्ञा करो सो करूं तब क्षण एक विचार कर राम बोले अग्नि कुण्ड में प्रवेश करो, सीता महा हर्ष की भरी कहती भई यही प्रमाण तब नारद मन में विचारते भये यह तो महा सती है परन्तु अग्निका कहां विश्वास इसकेमृत्य आसँगी और भामण्डल हनूमानदिक महा कोप से पीडित भये और लवअंकुश माता का अग्नि में प्रवेश करवेका निश्चय जान अति व्याकुल भये और सिद्धार्थ दोनों भुजा ऊंची कर कहता भया हे राम देवों से भी सीता के शील की महिमा न कही जाय तो मनुष्य कहां कहैं। कदाचित् सुमेरु पातालमें प्रवेश करे और समस्त समुद्र सूक जाय तो भी सीता का शीलव्रत चलायमान न होय, जो कदाचित् चन्द्र किरण उष्ण होय, और सूर्य किरण शीतल होय तो भी सीताको दूषण न लगे मैं विद्या के बल से पंच सुमेरु में तथा जे और अकृत्रिम चैत्यालय शास्वते महां जिनबन्दना करी हेपद्मनाभ सीताके व्रतकी महिमा मैं ठौर ठौर मुनियों के मुखसे सुनीहै इसलिये तुम महा विचक्षण हो महा सती को अग्नि प्रवेश की आज्ञा न करो और आकाश में विद्याधर अर पृथिवी में

भूमिगोचरी सब यही कहते भये हे देव प्रसन्न होय सौम्यता भजो हे नाथ अग्निसमान कठोर चित्त न करो सीता सती है सीता अन्यथा नहीं अन्यथा जे महा पुरुषों की राणी हो वें कदं ही विकार रूप न होवें सब प्रजा के लोक यही बचन कहते भये और व्याकुल भये मोटी मोटी आंसूओं की बून्द डारते भये तब रामने कही तुम ऐसे दयावान् हो पहिले अपवाद क्यों उठाया रामने किंकरों को आज्ञा करी एक सीनमें हाथ चौखूटिया वापी खोदो और सूके ईंधन चन्दन और कृष्णागुरु तिनकर भरो और अग्निसे जाज्वल्यमानकरो साक्षात् मृत्युकास्वरूप करो तब किंकरों ने आज्ञा प्रमाण कुद्दालों से खोद अग्निवापिका बनाई और उसी रात्री कोमहेन्द्रोदय नामा उद्यान में सकलभूषण मुनिको पूर्व वैर के योग से महारौद्र विद्युद्वक्रनामा राक्षसी ने अत्यन्त उपसर्ग कीया सो मुनि अत्यंत उपसर्ग को जीत केवलज्ञान को प्राप्त भये। यह कथा सुन गौतमस्वामी से श्रेणिक ने पूछी । हे प्रभो राक्षसी के और मुनि के पूर्व वैर कहां ? तब गौतमस्वामी कहते भये । हे श्रेणिक सुन विजियार्द्ध गिरिकी उत्तर श्रेणी में महा शोभायमान गुंजनामा नगर वहां राजा सिंहविक्रम राणी श्री जिसके पुत्र सकलभूषण उसके स्त्री आठसै तिन में मुख्य किरण मण्डला सो एक दिन उसने अपनी सौकिन के कहे से अपने मामा के पुत्र हेमशिख का रूप चित्रपट में लिखा सो सकलभूषण ने देख कोप कीया तब सब स्त्रियों ने कही यह हमने लिखा है इसका कोई दोष नहीं तब सकलभूषण कोप तज प्रसन्न भया एक दिन यह किरणमण्डला पतिव्रता पति सहित सूती थी सो प्रमाद थकी बरडकर हेमशिख ऐसा नाम कहा सो यह तो निर्दोष इसके हेमशिख भाई की बुद्धि और सकलभूषण ने कछू और भाव विचारा राणीसे कोपकर वैराग्य को प्राप्त भए और राणी किरणमंडला

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भी आर्यिका भई परन्तु धनी से द्वेष भाव जो इसने झूठा दोष लगाया सो मरकर विद्युदृक्त नामा राक्षसी भई सो पूर्व बैर थकी सकलभूषण स्वामी आहारको जाय तब यह अंतराय करे कभी माते हाथियों के बन्धन तुड़ाय देय हाथी ग्राम में उपद्रव करें इनको अंतराय होय कभी यह आहार को जांय तब अग्नि लगाय देय कभी यह रजोवृष्टि करे इत्यादि नाना प्रकार के अन्तराय करे कभी अश्व का कभी वृषभ का रूपकर इनके सन्मुख आवे कभी मार्ग में कांटे बखेरे इसभान्ति यह पापिनी कुचेष्टा करे एक दिन स्वामी कायोत्सर्ग धर तिष्ठे थे और इसने शोर किया यह चोर है सो इसका शोर सुनकर दुष्टों ने पकड़े अपमान किया फिर उत्तमपुरुषों ने छुड़ायदिए एकदिन यह आहार लेकर जाते थे सो पापिनी राक्षसी ने काहू स्त्री का हार लेकर इनके गले में डार दिया और शोर किया कि यह चोर है हार लिये जायहै तब लोग आय पहुंचे इनको पीड़ा करी हार लिया भले पुरुषों ने छुड़ायदिये इसभांति यह क्रूरचित्त दयारहित पूर्वबैर विरोध से मुनि को उपद्रव करे. गई रात्रि को प्रतिमा योग धर महेंद्रोदय नामा उद्यान में विराजे थे सो राक्षसी ने रौद्र उपसर्ग किया वितर दिखाये और हस्ती सिंह व्याघ्र सर्प दिखाए और रूप गुण मंडित नाना प्रकार की नारी दिखाई भांति भांतिके उपद्रव किए परन्तु मुनि का मन न डिगा तब केवलज्ञान उपजा सो केवल की महिमा कर दर्शन को इन्द्रादिक देव कल्पवासी भवनवासी व्यंतर जोतिशी कैयक हाथियों पर चढ़े. कैयक सिंहोंपरचढ़े. कैयक ऊंट खच्चर मींढा बघेरा अष्टापद इन पर चढ़े. कैयक पक्षियों पर चढ़े कैयक विमान बैठे कैयक रथों चढ़े. कैयक पालकीचढ़े. इत्यादि मनोहर बाहनों पर चढ़े आए, देवों की असवारी के तिर्यंच नहीं देवों ही की माया है देवही विक्रीयाकर तियंच का

For Private and Personal Use Only

रूप धरे हैं आकाश के मार्ग होय महा विभूति सहित सर्व दिशा में उद्योत करते आए मुकट धरे हार कुण्डल पहिरे अनेक आभूषणों कर शोभित सकलभूषण केवली के दर्शन को आये पवन से चंचल है ध्वजा जिनकी अप्सरावोंके समूह सहित अयोध्याकी ओर आए महेंद्रोदय उद्यानमें केवली विराजे हैं तिनके चरणारविंद विषे है मन जिनका पृथ्वीकी शोभा देखते आकाशसे नीचे उतरे और सीताके दिव्य को अग्निकुंड तयार होय रहाथा सो देखकर एक मेघकेतु नामा देव इन्द्रसे कहता भया हे देवेंद्र हे नाथ सीता महासतीको उपसर्ग आय प्राप्त भयाहै यह महाश्राविका पतिव्रता शीलवंती अति निर्मल चित्तहै इसे ऐसा उपद्रव क्यों होय तब इंद्रने आज्ञा करी हे मेघकेतु मैं सकलभूषण केवलीके दर्शन को जाऊं हूं और तू महासतीका उपसर्ग दूर करियो इसभांति आज्ञाकर इन्द्रतो महेंद्रोदय नामा उद्यानमें केवली के दर्शनको गया और मेघकेतु सीताके अग्निकुंडके ऊपर आय आकाश विषे विमान में तिष्ठा कैसाहै विमान सुमेरुके शिखर समानहै शोभा जिसकी वह देव आकाशविषे सूर्य सारिखा देदीप्यमान श्रीरामका ओर देखे राम महासुन्दर सब जीवोंके मनको हरें हैं॥ इति १०४वां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर श्रीराम उस अग्निवापिका को निरखकर व्याकुल मन भया विचारे है अब इस कांता को कहां देखूंगा यह गुणोंकी खान महा लावण्यता कर युक्त कांतिकी धरणहारी शील रूप वस्त्रकर मंडित मालतीकी माला समान सुगंध सुकुमार शरीर अग्निके स्पर्शही से भस्म होय जायगी जो यह राजा जनक के घर न उपजती तो भला था यह लोकापवाद अग्नि विषे मरण तो न होता इस बिना मुझे क्षणमात्रभी सुख नहीं इस सहित वनमें वास भला और इस बिना स्वर्गका वासभी भला

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहीं यह महा शीलवन्ती परम श्राविका है इसे मरणेका भय नहीं यह लोक परलोक मरण वेदना अकस्मात असहायता चोर यह सप्तभय तिनकर रहित सम्यकदर्शन इसके दृढ़है यह अग्नि विषे प्रवेश करेगी और मैं रोकूं तो लोगोंमें लज्जा उपजे और यहलोक सब मुझे कह रहे यह महा सती है याहि अग्निकुंड में प्रवेश न करावो सो मैं न मानी और सिद्धार्थ हाथ ऊंचे कर कर पुकारा मैं न मानी सो वह भी चुपहोय रहा अब कौन मिसकर इसे अग्नि कुण्डमें प्रवेश न कराऊं अथवा जिसके जिस भांति मरण उदय होय है उसी भांति होय है टारा टरे नहीं तथापि इसका वियोग मुझसे सहा न जाय इसभांति राम चिंता करे हैं और वापा में अग्नि प्रज्वलित भई समस्त नर नारियों के आंसुवों के प्रवाह चले धूम कर अंधकार होय गया मानों मेघमाला आकाश में फैलगई आकाश भ्रमर समान श्याम होय गया अथवा कोकिल स्वरूप होयगया अग्नि के धूमकर सूर्य्य आछादित हुआ मानों सीता का उपसर्ग देख न सका सो दयाकर छिपगया ऐसी अग्नि प्रज्वली जिसकी दूरतक ज्वाला विस्तरी मानों अनेकसूर्य उगे अथवा आकाश में प्रलयकाल की सांझ फूली जानिये दशों दिशा स्वर्णमई होय गई हैं मानों जगत् विजुरीमय होय गया अथवा सुमेरुके जीतवे को दूजा जंगम सुमेरु और प्रकटा तब सीता उठी अत्यन्तनिश्चलचित्त कायोत्सर्ग कर अपने हृदय में श्री ऋषभादि तीर्थंकरदेव विराजे हैं तिनकी स्तुतिकर सिद्धोंको साधुवों को नमस्कार कर श्री मुनिसुव्रत नाथ हरिवंश के तिलक वीसमा तीर्थंकर जिन के तीर्थ विषे ये उपजे हैं तिन का ध्यान कर सर्व प्राणियोंके हितु आचार्य तिनको प्रणाम कर सर्व जीवों में क्षमाभाव कर जानकी कहती भई मन कर वचनकर काय कर स्वप्न विषे भी राम बिना और पुरुष मैं न जाना जो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में झूठ कहती हूं तो यह अग्निकी ज्वालाक्षणमात्रमें मुझे भस्म करियो जो मेरे पतिव्रताभावमें अशुद्धता होय राम सिवाय और नर मन से भी अभिलाषा होय तो हे वैश्वानर मुझे भस्म करियो जो मैं मिथ्या दर्शनी पापिनी व्यभिचारिणी हूं तो इस अग्नि मे मेरी देह दाह को प्राप्त होवे और जो मैं महा सती पतिव्रता अणुव्रत धारणी श्रावका हूं तो मुझे भस्म न करियो, ऐसा कह कर नमोकार मन्त्र जप सीता सती अग्निवापिका में प्रवेश करती भई सो इसकेशील के प्रभावसे अग्नि थी सो स्फटिक मणि मासिखा निर्मल शीतल जल होयगया मानों धरती को भेदकर यह वापिका पाताल से निकसी जल में कमल फूल रहे हैं भ्रमर गुञ्जार करें हैं अग्निकी सामग्री सब बिलाय गई न ईन्धन न अंगार जलके झाग उठने लगे और अति गोल गंभीर महा भयंकर भ्रमण उठने लगे जैसी मृदंग की ध्वनि होय तैसे शब्द जल में होते भये जैसा क्षोभको प्राप्तभया समुद्र गाजे तैसा शब्द वापी विषै होताभया और जलउछला पहले गोड़ों तक आया फिर कमर तक आया फिर निमिषमात्रमें छातीतक आया तब भूमिगोचरी डरे और आकाशमें जे विद्याधर थे तिनकोभी विकल्प उपजा न जानिये क्या होय फिर वह जल लोगों के कंठतक आया तब अतिभय उपजा सिर ऊपर पानी चला तब लोग अतिभयको प्राप्तभये ऊंची भुजाकर वस्त्र और बालकों को उठाय पुकार करते भये हे देवि हेलक्ष्मी हे सरस्वती हेकल्याणरूपनी हे धर्मधुरंधरेहे मान्ये हेप्राणीदयारूपणी हमारीरक्षाकरो हे महासाध्वी मुनिसमान निर्मल मनकीधरणहारी दयाकरो हेमाता बचावो २ प्रसन्नहोवो जबऐसे वचन विह्वल जो लोक तिनके मुखसे निकसे तब माता की दयासे जल थंभा लोक बचे जलविषै नानाजाति के ठौर ठौर कमल फूले जल सौम्यताको प्राप्तभया जे भ्रमणउठेथेसो

मिटे और भयंकर शब्द मिटे वह जल जो उछला था सो मानो वापी रूप वधू अपने तरंगरूप हस्तोंकर माता के चरण युगल स्पर्शती थी कैसे हैं चरण युगल कमल के गर्भ से अति कोमल हैं और नखोंकी ज्योति कर देदीप्यमान हैं जलमें कमल फूले तिनकी सुगंधता कर भ्रमर गुञ्जार करे हैं सो मानो संगीत करे है और क्रौंच चकवा हंस तिन के समूह शब्द करे हैं अति शोभा होय रही है और मणि स्वर्ण के सिवाण बन गये तिनको जल के तरंगों के समूह स्पर्शे हैं और जिसके तट मरकत मणि कर निर्माप अति सोहै हैं ऐसे सरोवर के मध्य एक सहस्रदलका कमल कोमल विमल विस्तीर्ण प्रफुल्लित महाशुभ उसके मध्य देवोंने सिंहासन रचा रत्नोंकी किरणोंकर मंडित चन्द्र मंडल तुल्य निर्मल उसमें देवांगनाओंने सीताको पधराई और सेवा करतीभई सो सीता सिंहासनमें तिष्ठी अति अद्भुतहै उदय जिसका शची तुल्य सोहती भई अनेक देव चरणों के तल पुष्पांजली चढ़ाय धन्य धन्य शब्द कहतेभए आकाश में कल्प वृक्षों के पुष्पोंकी वृष्टिकरते भए और नाना प्रकार के दुन्दभी बाजे तिनके शब्द कर सब दिशा शब्द रूप होती भई गुञ्ज जाति के वादित्र महा मधुर गुंजार करते भये और मृदंग बाजते भए ढोल दमामा बाजे नांदी जाति के वादित्र बाजे और कोलाहल जातिके वादित्र बाजे और तुरही करनाल अनेक वादित्र बाजे शंखों के समूह शब्द करते भए और बीण बांसुरी बाजी ताल झांझ मंजीर झालरि इत्यादि अनेक वादित्र बाजे विद्याधरोंके समूह नाचते भए और देवों के यह शब्द भए श्रीमत् जनक राजाकी पुत्री परम उदयकी धरणहारी श्रीमतरामकी राणी अत्यन्त जयवन्त होवे अहो निर्मल शील जिसका आश्चर्यकारी ऐसे शब्द सब दिशाविषे देवोंके होतेभये तब दोनों पुत्र लवण अंकुश अकृत्रिम

है मातासे हित जिनका सो जल तिरकर अतिहर्षके भरे माताके समीप गए दोनों पुत्र दोनों तरफ जाय ठाढ़े भए, माता को नमस्कार किया सो माताने दोनों के सिर हाथ धरा रामचन्द्र मिथिलापुरी के राजा की पुत्री मैथिला कहिए सीता उसे कमलबासिनी लक्ष्मी समान देख महा अनुरागके भरे समीप गए कैसी हैं सीता मानों स्वर्णकीमूर्ति अग्निमें शुद्ध भई है अति उत्तमज्योतिके समूहकर मंडितहै शरीर जिसका राम कहे हैं हे देवि कल्याण रूपिणी उत्तम जीवोंकर पूज्य महा अद्भुत चेष्टा की धरणहारी शरदकी पूर्णमासी के चन्द्रमा समान है मुख जिसका ऐसी तुमसो हमपर प्रसन्न होवो अब मैं कभी ऐसा दोष न करूंगा जिसमें तुमको दुःखहोय हे शील रूपिणी मेरा अपराध क्षमा करो मेरेआठ हजार स्त्री हैं तिनकी सिरताज तुम हो मोको आज्ञा करो सो करूं हे महासती मैं लोकापवाद के भय से अज्ञानी होयकर तुमको कष्ट उपजाया सो क्षमा करो और हे प्रिय पृथ्वीमें मो सहित यथेष्ट बिहार करो यह पृथ्वी अनेक बन उपबन गिरियों कर मंडित है देव विद्याधरोंकर संयुक्तहै समस्त जगतकर आदर सो पूजी थकी मो सहित इस लोक विषे स्वर्ग समान भोग भोगो उगते सूर्यसमान यह पुष्पक बिमान उसमें मेरेसाहित आरूढ़ भई सुमेरु पर्वतकेबन विषे जिनमंदिरहैं तिनका दर्शनकर और जिन जिन स्थानोंविषे तेरीइच्छा होय वहांक्रीड़ा कर हे कांते तू जो कहेसोही मैं करूं तेरावचन कदाचितनउलंघू देवांगनासमान वह विद्याधारी तिनकर मंडित हेबुद्धिवंती तू ऐश्वर्यको भज जो तेरी अभिलाषा होयगी सो तत्काल सिद्धहोयगी मैं विवेकरहित दोषके सागरमें मग्न तेरेसमीप आयाहूं हेसाध्वि अब प्रसन्नहोवो।

अथानन्तर जानकी बोली हे राम तुम्हारा कुछ दोष नहीं और लोकों का दोष नहीं मेरे पूर्वो

पार्जित अशुभ कर्मके उदयसे यह दुःख भया मेरा काहू पर कोप नहीं तुम क्यों विषाद को प्राप्तभए हे बलदेव तुम्हारे प्रसाद से स्वर्ग समान भोग भोगे अब यह इच्छाहै ऐसा उपाय करूं जिसपर स्त्री लिंग का अभाव होय यह महाक्षुद्र विनश्वर भयंकर इंद्रियों के भोग मूढ जनोंकर सेव्य तिनकर कहां प्रयोजन मैं अनन्त जन्म चौरासी लक्ष योनि विषे खेद पाया अब समस्त दुःखके निवृतिके अर्थ जिनेश्वरी दिक्षा धरूंगी ऐसा कहकर नवीन अशोक वृक्ष के पल्लव समान अपने जेकर तिनकर सिरके केश उपाड रामके समीप डारे सो इन्द्र नील मणिसमान श्याम सचिक्कण पातरे सुगंधवक्र लम्बायमान महामृदु महा मनोहर ऐसे केशोंको देखकर राम मोहित होय मूर्छा खाये पृथ्वी में पड़े सो जौलग इन को सचेत करें तौलग साता पृथ्वीमती आर्यिका पै जायकर दीक्षा धरती भई एक वस्त्र मात्रहै परिग्रह जिसके और सब परिग्रह तजकर आर्यिका के व्रत धर महा पवित्र परम पवित्र परम वैराग्यकर युक्तव्रत कर शोभायमान जगत के वंदिवे योग्य होता भई और राम अचेतभयेथे सो मुक्ता फल और मलियागिरि चन्दन के छांटिबे कर तथा ताड़ के बाजनों की पवन कर सचेत भए तब दशों दिशा की ओर देखें ता साता को न देख कर चित्त शून्य होगया, शोक और कषायकर युक्त महा गजराज पर चढ़ सीता की ओर चले सिर पर छत्र फिरे हैं चमर ढुरे हैं जैसे देवों कर मंडित इन्द्रचले तैसे नरेन्द्रों कर युक्त राम चले कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके कषाय के वचन कहते भए अपने प्यारे जन का मरण भला परन्तु विरह भला नहीं देवों ने सीता का प्रतिहार्य किया सो भला किया पर उसने हम को तजना विचारा सो भला न किया अब मेरी राणी जो यह देव न दें तो मेरे और देवों के युद्ध होयगा यह देव न्यायवान् होयकर मेरीस्त्री

क्यों हरें ऐसे अविचार के वचन कहे लक्ष्मण समझावे सो समाधान न भया और क्रोध संयुक्त श्री रामचन्द्र सकल भूषण केवली की गन्ध कुटी को चले सो दूर से सकल भूषण केवली की गन्ध कुटी देखी केवली महा धीर सिंहासन पर विराजमान अनेक सूर्य्य की दीप्ति धरे केवली ऋद्धि कर युक्त पापों के भस्म करिबे को साक्षात् अग्नि रूप जैसे मेघपटल रहित सूर्य का बिम्ब सोहे तैसे कर्म पटल रहित केवली ज्ञान के तेजकर परम ज्योति रूप भासे हैं इन्द्रादिक समस्त देव सेवा करे हैं दिव्य ध्वनि खिरे है धर्म का उपदेश होय है सो श्रीराम गन्धकुटी को देख कर शांतचित्त होय हाथी से उतर प्रभु के समीप गए तीन प्रदक्षिणा देय हाथ जोड़ नमस्कार किया भगवान् केवली मुनियों के नाथ तिन का दर्शन कर अतिहर्षित भए बारम्बार नमस्कार किया केवली के शरीर की ज्योति की छटा राम पर आय पड़ी सो अतिप्रकाश रूप होय गए भाव सहित नमस्कार कर मनुष्यों की सभा में बैठे और चतुर निकाय के देवों की सभा नाना प्रकार के आभूषण पहिरे ऐसी भासे मानों केवली रूप जे रवि तिनकी किरण ही है और राजावों के राजा श्रीरामचन्द्र केवली के निकट ऐसे सोहे हैं मानों सुमेरु के शिखर के निकट कल्पवृक्ष ही हैं और लक्ष्मण नरेन्द्र मुकट कुण्डल हारादि कर शोभित कैसे सोहें मानों विजुरी सहित श्याम घटा ही है और शत्रुघ्न शत्रुवों के जीतनहारे ऐसे सोहे मानों दूसरे कुबेर ही हैं और लव अंकुश दोनों वीर महा धीर महा सुन्दर गुण सौभाग्य के स्थानक चांद सूर्य से सोहैं और सीता आर्यिका आभूषणादि रहित एक वस्त्र मात्र परिग्रह ऐसी सोहे मानों सूर्यकी मूर्ति शांतता को प्राप्त भई है मनुष्य और देव सब ही विनय संयुक्त भूमि में बैठे धर्म्मश्रवण की है अभिलाषा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनके वहां एक अभयघोष नामा मुनि सब मुनियों में श्रेष्ठ संदेह रूप आताप की शांतिके अर्थ केवली से पूछते भए हे सर्वोत्कृष्ट सर्वज्ञदेव ज्ञानरूप शुद्ध आत्मा तत्वका स्वरूप नीके जानने से मुनिनको केवल बोधहोयउसका निर्णयकरो, तब सकलभूषण केवली योगीश्वरोंके ईश्वरकर्म्मोंके चयका कारण तत्वका उपदेश दिव्यध्वनिकर कहतेभए हे श्रेणिक केवलीने जो उपदेशदिया उसकार हस्य मैं तुमको कहूं हूं जैसेसमुद्र में से एक बूंद कोई लेय तैसे केवलीकी वाणी अतिअथाहउसकेअनुसार संक्षेपव्याख्यान करूं हूं सो सुनो ॥

हो भव्य जीव हो आत्म तत्व जो अपना स्वरूप सो सम्यक् दर्शन ज्ञान आनन्द रूप और अमूर्तीक चिद्रूप लोक प्रमाण असंख्य प्रदेशी अतेंद्री अखंड अव्याबाध निराकार निर्मल निरंजन पर वस्तुसे रहित निज गुण पर्याय स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव कर अस्तित्व रूप है जिसका ज्ञान निकट भव्यों को होय शरीरादिक पर वस्तु असार हैं आत्मतत्व सार है सो अध्यात्म विद्या कर पाइये है वह सब का देखन हारा जाननहारा अनुभव दृष्टि कर देखिये आत्मज्ञान कर जानिये और जड़ पदार्थ पुद्गल धर्म अधर्मकाल आकाश ज्ञेयरूपहैं ज्ञाता नहीं और यह लोक अनन्ते आलोकाकाश के मध्य अनन्त में भाग तिष्ठे हैं अधोलोक मध्य लोक ऊर्धलोक ये तीनलोक तिनमें सुमेरु पर्वतकी जड़ हजार योजन उसके तले पाताल लोक है उसमें सूक्ष्म स्थावर तो सर्वत्र हैं और बादरास्थावर आधार में हैं विकलत्रय और पंचेन्द्रिय तिर्यंच नहीं मनुष्य नहीं खरभाग पंकभाग में भवनवासी देव तथा विंतरदेवोंके निवास हैं तिनके तले सात नरक हैं तिनके नाम रत्नप्रभा १ शर्करा २ बालुका ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमःप्रभा ६ महातमप्रभा ७ सो सातोंही नरक की धरा महा दुःखकी देने हारी सदा अन्धकाररूपहै चार

For Private and Personal Use Only

नरकमें तो उष्णका बाधा है और पांचवें नरक ऊपर ले तीनभाग ऊष्ण और नीचला चौथा भाग शीत और छठे नरक शीतही हैं और सातमें महा शीत ऊपरले नरकों में ऊष्णता है सो महा विषम और नीचले नरकों में शीत है सो अति विषम नरककी भूमि महा दुस्सह परम दुर्गम हैं जहां राधि रुधिर का कीच है महादुर्गंध है श्वान सर्प मार्जार मनुष्य खर तुरंग ऊंट इनका मृतक शरीर सड़जाय उसकी दुर्गंधसे असंख्यातगुणी दुर्गंधहै वहां नानाप्रकार दुखोंके सर्वकारणहैं और पवन महा प्रचण्ड विकरालचले है जिसकर भयंकर शब्द होय रहा है जे जीव विषय कषाय संयुक्त हैं कामी हैं क्रोधी हैं पंचइन्द्रियोंके लोलुपी हैं जैसे लोहेका गोला जलमें डूबे तैसे नरकमें डूबे हैं जे जीवोंकी हिंसाकरें मृषाबाणी बोलें परधन हरें परस्त्रीसेवें महा आरम्भी परिग्रही वे पाप के भार कर नरक के बिषे पड़े हैं मनुष्य देह पाय जे निरन्तर भोगासक्त भये हैं जिनके जीभ वश नहीं मन चंचल वे पापी प्रचण्ड कर्म के करणहारे नरक जाय हैं जे पाप करें करावें पापका अनुमोदना करें वे आर्तरौद्र ध्यानी नरक के पात्र हैं वह वज्राग्नि के कुण्डमें डारिये हैं वज्राग्नि के दाह कर जलते थके पुकारे हैं अग्नि कुण्डसे छूटे हैं तब वैतरणी नदीकी ओर शीतल जल की बांछा कर जाय हैं वहां जल महा खार दुर्गंध उसके स्पर्शही से शरीर गल जाय है। दुखका भाजन वैक्रियक शरीर उसकर आयु पर्यंत नाना प्रकार दुख भोगवे हैं पहिले नरक आयु उत्कृष्ट सागर १ दूजे तीन तीजे ७ चौथे १३ पांचवें १७ छठे २२ सातमें ३३ सो पूर्णकर मरे हैं मार से मरें नहीं वैतरणी के दुख से डर छायाके अर्थ असिपत्र बन में जाय हैं वहां खडग बाण बरछी कटारी समान पत्र असराल पवन कर पड़े हैं तिनकर तिनका शरीर विदारा जायहै पछाड़ खाय भूमि में पड़े हैं और तिन का

कभी कुम्भीपाक में पकावे हैं कभी नीचा माथा ऊंचा पग करि लटकावें हैं मुदगरों से मारिये हैं कुहाड़ों से काटिये हैं करोतनसे विदारिये हैं घानो में पेलिये हैं नानाप्रकारके छेदन भेदन हैं यह नारकी जीव महा दीन महा तृषा कर तृषित पाने को पानी मांगे हैं तब तांबादिक गाल प्यावे हैं वे कहे हैं हमको यहां तृषा नहीं हमारा पाछा छोड़ दो तब बलात्कार तिनका पछाड़ सण्डासियोंसे मुख फाड मार २ प्यावे हैं कण्ठ हृदय विदीर्णहोय जाय हैं उदर फट जाय है तीजे नरकतक तो परस्परभी दुःख है और असुरकुमारोंकी प्रेरणासे भी दुःख है और चौथे से लेयसातवें तक असुरकुमारोंका गमन नहीं परस्परही पीडाउपजावे हैं नरक में नीचले से नीचले बढ़ता दुःख है सातवांनरक सबोंमें महादुःख रूप है नारकीयों को पहिलाभव याद आवे है और दूसरे नारकी तथा तीजे लग असुर कुमार पूर्वले कर्म याद करावें हैं तुम भले गुरुवों के वचन उलंघ कुगुरु कुशास्त्र के बलकर मांस को निर्दोष कहते थे नानाप्रकार के मांसकर और मधु कर मदिरा कर कूदेवोंका आराधन करते थे सो मांसके दोषसे नरक में पडे हो ऐसा कहकर इनही का शरीर काट २ इन के मुख में देय हैं औरलोहे के तथा तांबे के गोला बलते पछाड २ संडासियों से मुख फाड़ २ छाती पर पांव देय २ तिनके मुख में घाले हैं और मुदगरों से मारे हैं और मद्य पानीयों को मार २ ताताताबां शीशा प्यावे हैं और परदारारत पापियोंको वज्राग्निकर तप्तायमान लोहे की जे पूतली तिन से लिपटावें हैं और जे परदारारत फूलोंके सेज सूते हैं तिनको सूलों की सेजऊपर सुवावे हैं और स्वप्न की माया समान असार जो राज्य उसे पायकर जे गर्वे हैं अनीति करें हैं तिनको लोहके कीलोंपर बैठाय मुदगरों से मारें हैं सो महाबिलाप करे हैं इत्यादि पापी जीवों को नरकके दुःख होय हैं सो कहांलग कहें

एक निमिषमात्र भी नरकमें बिश्रामनहीं आयु पर्यंत तिलमात्र आहारनहीं और बुन्दमात्र जलपान नहीं केवल मारही का आहार है इसलिए यह दुस्सह दुःख अधर्मके फलजान अधर्मको तजो वे अधर्म मधुमांसा दिक अभक्ष्य भक्षण अन्यायवचन दुराचार रात्रिआहार वेश्या सेवन परदारा गमन स्वामिद्रोह मित्रद्रोह विश्वास घात कृतघ्नता लंपटता ग्रामदाह बनदाह परधन हरण अमार्ग सेवन परनिंदा परद्रोह प्राण घात बहु आरम्भ बहुपरिग्रह निर्दयता खोटीलेश्या रौद्रध्यान मृषावाद कृपणता कठोरता दुर्जनता मायाचार निर्माल्य का अंगीकार माता पिता गुरोंकी अवज्ञा बालवृद्ध स्त्री दीन अनाथों का पीड़न इत्यादि दुष्कर्म नरकके कारण हैं वे तज शांतभाव धर जिनशासन को सेवो जिसकर कल्याण होय जीव छै कायके हैं पृथिवी काय अप(जल)काय तेजः (अग्नि)काय वायुकाय बनस्पतिकाय त्रसकाय तिनकी दयापालो और जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल यह छै द्रव्य हैं और सात तत्व नव पदार्थ पंचास्ति काय तिनकी श्रद्धा करो और चतुर्दश गुणस्थानचतुर्दश मार्गणा स्वरूप और सप्तभंगी वाणी का स्वरूप भलीभांति केवली की आज्ञा प्रमाण उरमें धारो, स्यात्अस्ति । स्यातनास्ति स्यात्अस्तिनास्ति । स्यादवक्त व्य स्यातअस्तिअवक्तव्य । स्यातनास्ति अवक्तव्य । स्यातअस्तिनास्ति अवक्तव्य । ये सप्तभंग कहे और प्रमाण कहिये वस्तुका सर्वांग कथन और नय कहिये वस्तुका एक अंग कथन और निक्षेप कहियेनाम स्थापना द्रव्य भाव ये चार और जीवों में एकेन्द्री के दोय भेद सूक्ष्म बादर और पंचेन्द्री के दो भेद सैनी असैनी और वे इन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री ये सात भेद जीवोंके हैं से पर्याप्त अपर्याप्त कर चौदह भेद जीव समास होय हैं और जीवके दो भेद एक संसारी एक सिद्ध जिसमें संसारीके दो भेद एक भव्य दूसरा अभव्य

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो मुक्ति होने योग्य सो भव्य और मुक्ति न होने योग्य सो अभव्य और जीवका निजलक्षण उपयोग है उसके दोयभेद एक ज्ञान एक दर्शन ज्ञान समस्त पदार्थोंको जाने दर्शन समस्त पदार्थोंको देखे सो ज्ञानके आठभेद मति श्रुति अवधि मनपर्यय केवल कुमति कुश्रुत कुअवधि और दर्शनके भेद चार चक्षुअचक्षु अवधि केवल और जिनके एक स्पर्श इंद्री होय सो स्थावर कहिये तिनके भेद पांच पृथिवी अप तेज वायु बनस्पति और त्रसके भेद चार वे इंद्री तेइंद्री चौइंद्री पंचेंद्री जिनके स्पर्श और रसना वे द्वे इंद्री जिन के स्पर्श रसना नासिका सो तेइंद्री जिनके स्पर्श रसना नासिका चक्षु वे चौइंद्री जिनके स्पर्श रसना नासिका चक्षु श्रोत्र वे पंचेंद्री चौइंद्रीतक तो सब सन्मूर्छन और असैनी हैं और पंचेंद्रीमें केई सनमूर्छन केई गर्भज तिनमें केई सैनी केई असैनी जिनके मन वे सैनी और जिनके मन नहीं वे असैनी और जे गर्भ से उपजे वे गर्भज और जे गर्भ बिना उपजे स्वते स्भाव उपजे वे संन्मूर्छन गर्भज के भेद तीन जरायुज अंडज पोतज जे जेरकर मंडित गर्भ से निकसे मनुष्य घोटकादिक वे जरायुज और जे बिना जेर से सिंहादिकसो पोतज और जे अंडावों से उपजें पक्षीआदिक वे अंडज और देव नारकीयोंका उपपाद जन्म हैं माता पिताकेसंग बिनाही पुण्य पाप के उदय से उपजे हैं देव तो उत्पादकशय्या में उपजे हैं और नारकी बिलोंमें उपजे हैं देवयोनि पुण्यके उदयसे है और नारक योनि पाप के उदय से है और मनुष्य जन्म पुण्य पाप की मिश्रतासे है और तिर्यन्च गति मयाचार के योग से है देवनारकी मनुष्य इन बिना सर्व तिर्यंच जानने, जीवोंकी चौरासी लाख योनिये हैं उनके भेद सुनो पृथिवीकाय जलकाय अग्निकाय वायुकाय नित्यनिगोद इतरनिगोद ये तो सात२ लाख योनि हैं सो बयालीस लाख योनि भई और प्रत्येक बनस्पति दस लाख ये बावन लाख भेद स्थावर के

For Private and Personal Use Only

भये, और बे इन्द्री ते इन्द्री चौइन्द्री ये दोय दोय लाख योनि उसके छै लाख योनि भेद विकलत्रयके भए और पंचेंद्री तिर्यचके भेद चार लाख योनियें सब तिर्यन्च योनिके बासठ लाख भेद भये और देवयोनि के भेद चार लाख नरकयोनियोंके चार लाख और मनुष्य योनिके चौदह लाख ये सब चौरासी लाख योनि महा दुखरूप हैं इनसे रहित सिद्धपदही अविनाशी सुखरूपहै संसारी जीव सबही देहधारी हैं और सिद्ध पर मेष्ठी देहरहित निराकार हैं शरीरके भेद पांच औदारिकवैक्रियक आहारिक तैजसकार्म्मण तिनमें तैजस कार्म्मण तो अनादिकालसे सब जीवनको लगरहे हैं तिनका अंतकर महामुनि सिद्ध पद पावे हैं औदरिक से असंख्यात गुणा अधिक वर्गणावैक्रियकके हैं और वैक्रियकसे असंख्यातगुणीआहारकहऔरआहारक से अनंतगुणी तैजसके हैं और तैजससे अनंतगुणी कार्म्मणके हैं जिस समय संसारी जीव देहको तजकर दूसरी गतिको जाय है जितनी देरी एक गातिसे दूसरी गतिमें जाते हुये जीवको लगे है। उस अवस्था में जीवको अनाहारी कहिये। और जितना वक्त एक गतिसे दूसरी गतिमें जानेमें लगे सो वह कर्म एक समय तथा दो समय अधिक से अधिक तीन समय लगे हैं सो उस समय जीव के तैजस और कार्म्मण ये दो ही शरीर पाइयें है वगैर शरीरके यह जीव सिवाय सिद्ध अवस्थाके और किसी अवस्था में किसी वक्त भी नहीं होता इस जीव के हर वक्त और हरगति में जन्म ते मरते गर्भ में साथ ही रहते हैं जिस वक्त यह जीव घातिया अघातिया दोनों प्रकार के कर्म क्षय करके सिद्ध अवस्था को जाता है उस समय तैजस और कार्म्मणका क्षय होताहै और जीवोंके शरीरोंके परमाणुओंकी सूक्ष्मता इस प्रकारहै कि औदारिक से वैक्रियक सूक्ष्म और वैक्रियक से आहारक सूक्ष्म आहारक से तैजस

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूक्ष्म और तैजससे कार्म्मणसूक्ष्महै सो मनुष्य और तिर्यंचोंकेतो औदारिकशरीरहै औरदेवनारकियों के वाक्रियकहै और आहारक ऋद्धिधारी मुनियोंके संदेह निवारिवेके अर्थ दसमेद्वारसे निकसेहै सो केवलीकेनिकट जाय संदेह निवार पीछा आय दशमें द्वारमें प्रवेशकरे हैं ये पांच प्रकारके शरीर कहे तिनमें एकैकाल एक जीव के कभी चारशरीरभीपाइयें तिनकाभेदसुनों तीन तो सबही जीवोंकेपाइये नर और तिर्यंच के औदारिक और देव नारकीयों के वैक्रियक और तैजसकार्म्मण सबों के हैं तिन में कार्म्मण तो दृष्टिगोचर नहीं और तैजस किसी मुनि के प्रकट होय है उसके भेद दो हैं एक शुभ तैजस एक अशुभतैजस सो शुभतैजस तो लोकों को दुखी देख दाहिनी भुजा से निकस लोकों का दुख निवारे है और अशुभतैजस क्रोध के योगसे वाम भुजासे निकस प्रजा को भस्म करे है और मुनि को भी भस्म करे है और किसी मुनि के वैक्रिया ऋद्धि प्रकट होय है तब शरीर को सूक्ष्म तथा स्थूल करे है सो मुनि के चार शरीर भी किसी समय पाइयें एकै काल पांचो शरीर किसी जीव के भी न होंय ॥

अथानन्तर मध्यलोक में जंबू द्वीप आदि असंख्यात द्वीप और लवण समुद्रआदि असंख्यात समुद्र हैं शुभ हैं नाम जिनके सो द्विगुण द्विगुणबिस्तार को लिये वलयाकार तिष्ठे हैं सब के मध्य जंबू द्वीप है उसके मध्य सुमेरुपर्वत तिष्ठेहै सो लाख योजन ऊंचा है और जे द्वीपसमुद्र कहे तिन में जंबूद्वीप लाख योजन के विस्तार है और प्रदक्षिणा तिगुणी से कछू इक अधिक है और जंबू द्वीप में देवारण्य और भूतारण्य दो बन हैं तिन में देवों के निवास हैं और षट् कुलाचल हैं पूर्व के समुद्र से पश्चिम के समुद्र तक लावें पड़े हैं तिनके नाम हिमवान् महाहिमवान निषध नील रुक्मी शिखरी, समुद्र के जल

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का है स्पर्श जिनकै तिनमें ह्रद और ह्रदोमें कमल तिनमें षट कुमारिकादेवि हैं श्रीह्री बुद्धिकीर्तिधृति लक्ष्मी और जंबूद्वीप में सात क्षेत्र हैं भरत हैमवत हरि विदेह रम्यक हैरण्यवत ऐरावत और षटकुलाचलोंसेगंगादिक चौदह नदीनिकसी हैं आदिकेसे तीन और अंतकेसेतीन औरमध्यकेचारोंसेदोयदोयय ह चौदह हैं और दूजाद्वीप धातुकी खण्ड सोलवणसमुद्र से दूना है उसमें दोय सुमेरुपर्वत हैं और बारह कुलाचल और चौदह क्षेत्र यहां एक भरत वहां दोय यहां एक हिमवान वहां दोय इसभांति सर्व दुगणे जानने और तीजाद्वीप पुष्कर उसके अर्ध भाग में मानक्षेत्र पर्वत है सो अढाई द्वीप ही में मनुष्य पाईये हैं आगे नहीं आधे पुष्कर में दोय मेरु बारां कुलाचल चौदहक्षेत्र धातु की खंडद्वीप समान जहां जानने अढाई द्वीप में पांच सुमेरु तीस कुलाचल पांच भरत पांच ऐरावत पांच महाविदेह तिन में एकसौ साठ विजय समस्त कर्म भूमि के क्षेत्र एक सौ सत्तर एक एक क्षेत्रमें छह छह खण्ड तिन में पांच पांच म्लेच्छखण्ड एक एक आर्य खण्ड आर्य खंड में धर्म की प्रवृति विदेहक्षेत्र और भरत ऐरावत इन में कर्मभमि तिन में विदेह तो शाश्वती कर्मभूमि और भरत ऐरावत में अठारा कोडा कोडी सागर भोग भमि दोय कोडा कोडी सागर कम्मभूमि और देवकुरु उत्तरकुरु यह शाश्वती उत्कृष्ट भोग भमि तिन में तीन तीन पल्य की आयु और तीन तीन कोस की काय और तीन तीन दिनपीछे अल्प आहार सो पांचमेरु सम्बन्धी पांच देव कुरु पांच उत्तर कुरु और हरि और रम्यक यह मध्य भोग भूमि तिन में दोय पल्यकी आयु और दोय कोस की काय दोय दिन गए आहार इसभांति पांच मेरु संबन्धी पांच हरि पांच रम्यक यह दश मध्य भोग भूमि और हैमवत हैरण्यवत यह जघन्य भोग भूमि तिन में एक पल्य की आयु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और एक कोस की काय एक दिन के अंतरे आहार, सो पांच मेरु संबन्धी पांच हेमवत पांच हैरण्यवत जघन्य भोग भूमि दश इस भांति तीस भोग भूमि अढाई द्वीप में जाननी, और पंच महाविदेह पंच भरत पंच ऐरावत यह पन्द्रह कर्मभूमि हैं तिन में मोक्षमार्ग प्रवरते है अढाईद्वीप के आगे मानुषक्षेत्र के परे मनुष्य नहीं देव और तिर्यंच ही हैं तिनमें जलचर तो तीन ही समुद्र में हैं लवणोदधि कालोदधि तथा अंत का स्वयंभूरमण इन तीन बिना और समुद्रों में जलचर नहीं और विकलत्रय जीव अढाईद्वीप में हैं और अंत का स्वयंभूरमणद्वीप उसके अर्ध भाग में नागेन्द्र पर्वत है, उसके परे आधे स्वयंभूरमणद्वीप में और सारे स्वयंभूरमण समुद्र में विकलत्रय हैं मानुषोत्तर से लेयनागेन्द्र पर्वत पर्यंत जघन्य भोगभूमि की रीति है, वहां तिर्यंचोंका एक पल्य का आयु है और सूक्ष्म स्थावर तो सर्वत्र तीनलोक में हैं और बादर स्थावर आधार में हैं सर्वत्र नहीं एकराजूमें समस्त मध्यलोक है मध्यलोकमें अष्टप्रकार व्यंतर और दशप्रकार भवन पतियोंके निवास हैं और ऊपरज्योतिषी देवोंके विमान हैं तिनके पांचभेद चन्द्रमा सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र सो अढाई द्वीप में ज्योतिषी चरभी हैं और स्थिरभी हैं. आगे असंख्यात द्वीपोंमें ज्योतिषी देवोंके विमान स्थिरही हैं फिर सुमेरु के ऊपर स्वर्गलोक हैं वहां सोला स्वर्ग तिनके नाम सौधर्म ईशान सनत्कुमार महेंद्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लांतव कापिष्ट शुक्र महाशुक्र सतार सहस्रार आणत प्राणत आरण अच्युत यह सोलह स्वर्ग तिनमें कल्पवासी देव देवी हैं और सोलह स्वर्गों के ऊपर नवग्रीव तिनके ऊपर नव अनुत्तर तिनके ऊपर पंचोत्तर विजय वैजयन्त जयंत अपराजित सर्वार्थ सिद्धि ये अहमिन्द्रोंके स्थानक हैं जहां देवांगना नहीं और स्वामी सेवक नहीं और ठौर गमन नहीं, और पांचवां स्वर्ग ब्रह्म उसके अन्तमें लौकांतिक देव

For Private and Personal Use Only

हैं तिनके देवांगना नहीं वे देवर्षि हैं भगवान् के तप कल्यानक मेंही आवें ऊर्धलोक में देवही हैं अथवा पंच स्थावरही हैं। हे श्रेणिक यह तीनलोक का व्याख्यान जो केवली ने कहा उसको संक्षेपरूप जानना तीन लोक के शिखर सिद्धलोक है उस समान देदीप्यमान और क्षेत्र नहीं जहां कर्म बंधनसे रहित अनन्त सिद्ध विराजे हैं मानो वह मोक्ष स्थानक तीन भवन का उज्वल छत्रही है वह मोक्ष स्थानक अष्टमी धरा है अष्ट पृथिवी के नाम नारक १ भवनवासी २ मानुष ३ ज्योतिषी ४ स्वर्गवासी ५ ग्रीव ६ और अनुत्तर विमान ७ मोक्ष ८ ये आठपृथिवी हैं सो शुद्धोपयोगके प्रसादसे जे सिद्धभयेहैं तिनकी महिमा कही न जाय तिनको मरण नहीं फिर जन्म नहीं महा सुखरूप हैं, अनन्त शक्ति के धारक समस्त दुःख रहित महानिश्चल सर्वके ज्ञाता द्रष्टा हैं यह कथन सुन श्रीरामचन्द्र सकलभूषण केवली से पूछते भये हे प्रभो अष्ट कर्म रहित अष्टगुणआदि अनन्त गुण सहित सिद्ध परमेष्ठी संसारके भावन से रहित हैं सो दुःख तो उनको किसी प्रकारका नहीं और सुख कैसा है तब केवली दिव्य ध्वनि कर कहते भये इस तीन लोकमें सुख नहीं दुखहीहै अज्ञानसे बृथा सुख समान रहे हैं संसारका इन्द्रिय जनित सुख बाधा संयुक्त क्षणभंगुर है अष्टकर्म कर बंधे सदा पराधीन ये जगत्के तुछमात्र भी सुख नहीं जैसे स्वर्णका पिंड लोहकर संयुक्त होय तब स्वर्ण की कांति दब जाय है तैसे जीवकी शक्ति कर्मोंकर दबरही है सो सुख रूप नहीं दुखही भोगवे हैं यह प्राणी जन्म जरा मरण रोग शोक जेअनन्त उपाधि तिनकर महापीडित है तनुका और मनका दुख मनुष्य तिर्यंच नारकीयों को है और देवोंको दुख मनहीका है सो मनका महा दुख है उस कर पीड़ित हैं इस संसार में सुख काहे का ये इन्द्री जनित विषय के सुख इन्द्र धरणेंद्र चक्रवर्तियोंको शहतकी लपेटी खडग की

धारा समान हैं और विष मिश्रित अन्न समान हैं और सिद्धों के मन इन्द्री नहीं शरीर नहीं केवल स्वाभाविक अविनाशी उत्कृष्ट निराबाध निरुपम सुखहै उसकी उपमा नहीं जैसे निद्रा रहित पुरुष को सोयबे कर क्या और निरोगोंको औषधिकर क्या तैसे सर्वज्ञवीतराग कृतार्थ सिद्ध भगवान तिनको इन्द्री योंके विषयों कर क्यासूर्य दीपको चन्द्रादिककर क्या जे निर्भय जिनके शत्रु नहीं तिनके आयुधों कर क्या जे सब के अंतर्यामी सब को देखें जाने जिनके सकल अर्थ सिद्ध भये कछु करना नहीं बांछा किसी वस्तुकी नहीं वे सुखके सागरहैं इच्छा मनसे होयहै सो मन नहीं आत्म सुखमें तृप्त परम आनंद स्वरूप क्षुधातृषादि बाधा रहित हैं तीर्थंकर देव जिस सुखकी इच्छाकरें उसकी महिमा कहालग कहिए अहिमिन्द्र नागेंद्र नरेन्द्र चक्रवर्त्यादिक निरन्तर उसही पदका ध्यान करे हैं और लोकांतिक देव उसीसुख के अभिलाषी हैं उसकी उपमा कहांलग करें यद्यपि सिद्ध पदका सुख उपमा रहित केवली गम्यहै तथापि प्रतिबोध के अर्थ तुमको सिद्धोंके सुखका कछु इक वर्णन करे हैं अतीत अनागत वर्तमान तीनकाल के तीर्थंकर चक्रवर्त्यादिक सर्व उत्कृष्ट भूमि के मनुष्यों का सुख और तीन काल का भोग भूमि का सुख और इन्द्र अहमिन्द्र आदि समस्त देवों का सुख भूत भविष्यत वर्तमान काल का सकल एकत्र करिए और उसे अनन्त गुणा फलाइये सो सिद्धोंके एक समयके सुख तुल्य नहीं काहेसे जो सिद्धोंकासुख निराकुल निर्मलअव्याबाध अखंड अतीन्द्रियअवि[illegible]शीहै और देवमनुष्योंकासुखउपाधिसंयुक्तबाधासहितविकल्प रूप व्याकुलता कर भरा विनाशीक है और एकदृष्टांत और सुनो मनुष्यों से राजा सुखी राजावों से चक्रवर्ती सुखी और चक्रवर्तीयों से विंतरदेव सुखी और विंतरोंसे ज्योतिशी देव सुखी उनसे भवनवासी अधिकसुखी

और भवनवासियों से कल्पवासीसुखी औरकल्पवासीयोंसे नवग्रीवके सुखी नवग्रीवसे नवअनुत्तरके सुखीऔर तिनसे पंच पंचोत्तरकेसुखी पंचोत्तरसर्वार्थसिद्धसमानऔरसुखी नहींसोसर्वार्थ सिद्धकेअहिमिन्द्रोंसे अनंतानंत गुणा सुख सिद्धपद में है सुख की हद सिद्धपद का सुख है अनन्तदर्शन अनन्तज्ञान अनंत सुख अनंत वीर्य्य यह आत्मा का निज स्वरूप सिद्धों में प्रवर्तें है और संसारी जीवों के दर्शनज्ञानसुख वीर्य कर्मों के क्षयोपशम से बाह्य वस्तु के निमित्त थकी विचित्रता लीये अल्परूप प्रवरते है, यह रूपादिक विषय सुख व्याधिरूप विकल्परूप मोह के कारण इन में सुख नहीं जैसे फोड़ा राध रुधिर कर भरा फूलै उसे सुख कहां तैसे विकल्परूप फोड़ा महा व्याकुलता रूप राधिका भरा जिनके है तिनके सुख कहां सिद्ध भगवान् गतागत रहित समस्तलोकके शिखर विराजे हैं तिनकेसुखसमानदूजासुखनहीं जिनके दर्शन ज्ञान लोकालोक को देखें जानें तिन समान सूर्य ता उदय अस्त को धरे है सकल प्रकाशक नहीं वह भगवान सिद्ध परमेष्ठी हथेली में आंवले की न्याई सकल वस्तु को देखें जाने हैं छद्मस्थ पुरुष का ज्ञान उन समान नहीं यद्यपि अवधिज्ञानी मनपर्य ज्ञानी मुनि अविभागी परमाणु पर्यंतदेखे हैं और जीवों के असंख्यात जन्म जाने हैं तथापि अरूपी पदार्थों को न जाने हैं और अनन्तकाल की न जाने, केवलीही जाने, केवलज्ञान केवलदर्शन कर युक्त उन समान और नहीं सिद्धोंकेज्ञानअनन्त दर्शनअनंत और संसारी जीवों के अल्पज्ञान अल्पदर्शन सिद्धों के अनन्तसुख अनन्तवीर्य और संसारियोंके अल्पसुख अल्पवीर्य यह निश्चय जानों सिद्धों के सुख की महिमा केवलज्ञानी ही जाने और चार ज्ञान के धारक भी पूर्ण न जाने यह सिद्ध पद अभव्यों को अप्राप्य है इसपद को निकट भव्य ही पावें अभव्य अनंत काल भी काय

करें अनेक यत्न करें तौभी न पावें, अनादि काल की लगी जो अविद्यारूप स्त्री उनका विरह अभव्यों के न होय सदा अविद्या को लिये भव बनमें शयन करें और मुक्ति रूप स्त्री के मिलाप की बांछा में तत्पर जे भव्य वे कैयक दिन संसार में रहे हैं सो संसार में राजी नहीं तपमें तिष्ठते मोक्ष ही के अभिलाषी हैं जिनमें सिद्ध होने की शक्ति नहीं उन्हें अभव्य कहिये और जे सिद्ध होनहार हैं उन्हें भव्य कहिये, केवलीकहे हैं हे रघुनन्दनजिनशासन बिना और कोई मोक्षका उपाय नहींविना सम्यक्त कर्मों का क्षय न होय अज्ञानीजीव कोटिभवमें जे कर्म न क्षिपायसके सो ज्ञानीतीन गुप्तिको धरेएकमहूर्त में क्षिपावे सिद्ध भगवान परमात्माप्रसिद्धहैं सर्वजगत्उनकोजानेहे किवे भगवान्हें केवलीबिनाउनकोकोईप्रत्यक्ष देख जान न सके, केवलज्ञानी ही सिद्धोंको देखें जाने हैं मिथ्यात्व का मार्ग संसार का कारण इसजीवने अनंत भवमें धारा तुम निकट भव्यहो परमार्थकी प्राप्तिकेअर्थजिनशासनकी अखंड श्रद्धाधारो हे श्रेणिक यह वचन सकलभूषणकेवलीके सुन श्रीरामचन्द्र प्रणामकर कहतेभए हे नाथ इस संसारसमुद्रसे मुझे तारो हे भगवान् यह प्राणी कौन उपाय से संसारके वाससे छूटे है तब केवली भगवान कहतेभए हे राम सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र मोक्ष का उपाय है।जिनशासन में यह कहा है तत्व का जो श्रधान उसे सम्यक्दर्शन कहिये तत्व अनंतगुणपर्यायरूप है दोयभेदहैंएकचेतनदूसराअचेतन है सोजीव चेतन है और सर्वअचेतन है और दर्शन दोय प्रकारसे उपजे है एक निसर्ग एक अधिगम जोस्वतः स्वभावउपजे सोनिसर्गऔर गुरुके उपदेशसे उपजेसो अधिगम सम्यक्दृष्टि जीव जिनधर्म विषेरतहैं सम्यक्तके अतीचार पांचहैं शंका कहिये जिनधर्म विषे संदेह और कांक्षा कहिये भोगों की अभिलाषा और विचिकित्सा कहिये महामुनि को

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देख ग्लानि करनी और अन्यदृष्टि प्रशंसा कहिये मिथ्या दृष्टी को मनमें भला जानना और संस्तव कहिये वचन कर मिथ्या दृष्टिकी स्तुति करणा, इनकर सम्यक्तमें दूषण उपजे है और मैत्री प्रमोद करुणा मध्यस्थ ये चार भावना अथवा अनित्यादि बारह भावना अथवा प्रशमसंवेग अनुकंपा अस्ति और शंकादि दोषरहित पना जिन प्रतिमा जिनमंदिर जिनशास्त्र मुनिराजोंकी भक्ति इन कर सम्यकदर्शन निर्मल होय है और सर्वज्ञ के वचन प्रमाण बस्तु का जानना सो ज्ञानका निर्मलता का कारण है और जो किसी से न सधे ऐसी दुर्धर क्रिया आचरणी उसे चारित्र कहिये पांचों इंद्रियोंका निरोध वचन का निरोध सर्व पापक्रियावों का त्यागसो चारित्र कहिये त्रस स्थावर सर्व जीवकी दया सबको आप समान जाने सो चारित्र कहिये, और सुनने वालेके मन और कानोंको आनंदकारी स्निग्ध मधुर अर्थ संयुक्त कल्याणकारी वचन बोलना सो चारित्र कहिये, और मन वचन काय कर परधनका त्याग करना किसीका बिनादीया कुछ न लेना और दीयाहुआ भी आहारमात्र लेना सो चारित्र कहिये और जो देवोंकर पूज्य महादुर्धर ब्रह्मचर्यब्रतका धारणसोचारित्रकहियेऔरशिवमार्गकहियेनिर्वाणकामार्गउसे विघ्नकरणहारी मूर्छा कहिये मनकी अभिलाषा उसका त्याग सोई परिग्रहका त्याग सो भी चारित्र कहिये है. ये मुनियोंकेधर्म कहे और जो अणब्रतीश्रावक मुनियोंको श्रद्धाआदि गुणोंकरयुक्त नवधाभक्तिकर आहार देना सो एक देश चारित्र कहिये और परदारा परधनका परिहार पर पीड़ाका निवारण दया धर्मका अंगीकार दान शीलपूजा प्रभावना पर्वोपवास वैराग्य बिनय विवेक ज्ञान मन इंद्रियोंका निरोध ध्यान इत्यादि धर्मका आचरण सो एकोदेशचारित्र कहिये यह अनेकगुण कर युक्त जिनभासितचारित्र परमधामका कारण कल्याणकी प्राप्ति

For Private and Personal Use Only

के अर्थ सेवने योग्य है जो सम्यक दृष्टिजीव जिनशासनका श्रद्धानी परनिंदाका त्यागी अपनी अशुभ क्रिया का निंदक जगतके जीवों से न सधे ऐसे दुर्द्धरतपका धारक संयमका साधन हारा सोही दुर्लभ चारित्र धारिवे को समर्थ होय है और जहां दया आदि समीचीन गुण नहीं वहां चारित्र नाहीं और चारित्र बिना संसारसे निवृति नहीं जहां दया क्षमा ज्ञान वैराग्य तप संयम नहीं वहां धर्म नहीं विषय कषायका त्याग सोई धर्म है शम कहिए समता भाव परमशांत दम कहिये मन इंद्रियोंका निरोध संवर कहिये नवीन कर्मका निरोध जहां ये नहीं वहां चारित्र नहीं जे पापी जीवहिंसा करे हैं झूठ बोले हैं चोरी करे हैं परस्त्री सेवन करे हैं महा आरंभी हैं परिग्रही हैं तिनके धर्म नहीं, जे धर्मके निमित्त हिंसा करे हैं वे अधर्मी अधमगति के पात्र हैं जो मूढ़ जिनदीक्षा लेकर आरंभ करे हैं सो यति नहीं यतिका धर्म आरंभ परिग्रहसे रहित है परिग्रह धारियोंको मुक्ति नहीं जे हिंसा में धर्म जान षट काय के जीवोंकी हिंसा करे हैं वे पापी हैं हिंसा में धर्म नाहीं हिंसकों को इसभव परभव के सुख नहीं शिव कहिए मोक्ष नहीं जे सुखके अर्थ धर्मके अर्थ जीवघात करे हैं सो वृथा है जे ग्राम क्षेत्रादिक में आसक्त हैं गाय भैंस राखे हैं मारे हैं बांधे हैं ताडे हैं दाहे हैं उनके वैराग्य कहां जे क्रिया विक्रिया करे हैं रसोई परेंडा आदि आरम्भ राखे हैं सुवर्णादिक राखे हैं तिनको मुक्ति नहीं जिनदीक्षा निरारंभ है अतिदुर्लभ है जे जिनदीक्षा धारी जगत्का धंधा करे हैं वे दीर्घ संसारी हैं जे साधु होय तेलादिकका मर्दन करे हैं स्नान करे हैं शरीर का संस्कार करे हैं पुष्पादिक को सूंघे हैं सुगन्ध लगावे हैं दीपक का उद्योत करे हैं धूप खेवे हैं सो साधु नहीं, मोक्षमार्ग से पराङ्मुख हैं अपनी बुद्धिकर जे कहे हैं हिंसा में दोष नहीं वे मूर्ख हैं तिनको शास्त्र का ज्ञान नहीं चारित्र नहीं

और जे मिथ्या दृष्टि तप करे हैं गाम विषे एक रात्रि बसे हैं नगर विषे पांच रात्री और सदाऊर्ध्वबाहु राखे हैं मास मासोपवास करे हैं और वन विषे विचरे हैं मौनी हैं निपरिग्रही हैं तथापि दयावान नहीं दुष्ट है हृदय जिनका सम्यक्त बीज विना धर्मरूप वृक्ष को न उगाय सकें अनेक कष्ट करें तौ भी शिवालय कहिये मुक्ति उसे न लहैं जे धर्म की बुद्धिकर पर्वत से पड़ें अग्नि में जरें जल में डूबें धरती में गडें वे कुमरण कर कुगति को जावे हैं जे पापकर्मी कामना परायण आरत रौद्र ध्यानी विपरीत उपाय करें वे नरक निगोद लहैं मिथ्या दृष्टि जो कदाचित दान दे तप करे सो पुण्य के उदय कर मनुष्य और देव गतिके सुख भोगे हैं परन्तु श्रेष्ठदेव श्रेष्ठ मनुष्य न होय सम्यकदृष्टियोंके फलके असंख्यातवें भाग भी फल नहीं सम्यकदृष्टि चौथे गुणस्थानी अव्रती है तौभी नियम विषेहै । प्रेम जिनका सो सम्यकदर्शन के प्रसादसे देवलोक विषे उत्तम देव होवें और मिथ्या दृष्टि कुलिंगी महातप भी करें तो देवोंके किंकर हीनदेव होंय फिर संसार भ्रमण करें और सम्यकदृष्टि भव धरे तो उत्तम मनुष्य होय तिनमें देवन के भव सात मनुष्यों के भव आठ इस भांति पंद्रह भवमें पंचमगति पावें वीतराग सर्वज्ञ देवने मोक्षका मार्ग प्रगट दिखायाहै परन्तु यह विषयी जीव अंगीकार न करे हैं आशारूपी फांसीसे बंधे मोहकेवश पड़े तृष्णाके भरे पाप रूप जंजीरसे जकड़े कुगति रूप बन्दीग्रह में पड़े हैं स्पर्श और रसना आदि इंद्रियों के लोलुपी दुःखही को सुख माने हैं यह जगत के जीव एक जिनधर्म के शरण विना क्लेश भोगे हैं इंद्रियों के सुख चाहै हैं सो मिले नहीं और मृत्युसे डरें सो मृत्यु छोडे नहीं विफल कामना और विफल भयके वशभए जीव केवल तापही को प्राप्त होयहैं तापके हरिवे का उपाय और नहीं

आशा और शंका तजना यही सुखका उपायहै यह जीव आशाकर मरा भोगोंको भोग किया चाहे है और धर्म विषे धीर्य नहीं धरे है क्लेश रूप अग्निकर उष्ण महा आरंभ विषे उद्यमी कबहूभी अर्थ नहीं पावे है उलटा गांठका खोवे है यह प्राणी पापके उदयसे मनवांछित अर्थको नहीं पावेहै उलटा अनर्थ होय है सो अनर्थ अतिदुर्जय है यह मैं किया यह मैं करूंहूं यह मैं करूंगा ऐसे विचार करते ही मर कर कुगति जायहै ये चारों ही गति कुगतिहैं एक पंचम गति निर्वाण सोई सुगतिहै जहांसे फिर आवना नहीं और जगतविषे मृत्यु ऐसा नहीं देखे है जो इसने यह किया यह न किया बाल अवस्थाआदि सर्व अवस्था में आय दाबे है जैसे सिंह मृगको सब अवस्थामें आय दाबे अहो यह अज्ञानी जीव अहित विषे हितकी बांछा धरे है और दुख विषे सुखकी आशा करे है अनित्यको नित्य जाने हैं भय विषे शरण मानेहैं इन के विपरीत बुद्धिहै यह सब मिथ्यात्वका दोषहै यह मनुष्यरूप मातहाथी भार्या रूप गर्तमें पड़ा अनेक दुःखरूप बन्धनकर बंधे है विषयरूप मांसका लोभी मत्स्यकी नांई विकल्परूपी जाल में पडे है यह प्राणी दुर्बल बदलकी न्याईं कुटुंब रूप कीचमें फंसा खेद खिन्न होय है जैसे कोई वैरियों ने बन्धा और अंधकूपमें पडा उसका निकसना अति कठिनहै तैसे स्नेह रूप फांसीकर बंधा संसाररूप अंधकूप में पडा अज्ञानी जीव उसका निकसना अतिकठिनहै कोई निकटभव्य जिनवाणीरूप रस्सेको गहे और श्रीगुरु निकासने वाले होय तो निकसे और अभव्यजीव जैनेन्द्री आज्ञारूप अति दुर्लभ आनंदका कारण जो आत्मज्ञान उसे पायवे समर्थ नहीं जिनराजका निश्चय मार्ग निकटभव्यही पावे और अभव्य सदा कर्मों कर कलंकी भए अति क्लेशरूप संसारचक्र विषे भ्रमे हैं। हे श्रेणिक यह वचन श्रीभगवान सकल भूषण

केवलीने कहे तब श्रीरामचन्द्र हाथ जोड सीस निवाय कहते भए हे भगवान मैं कौन उपायकर भव भ्रमण से छूटूं मैं सकल राणी और पृथ्वीका राज्य तजवे समर्थ हूं परन्तु भाई लक्षमणका स्नेह तजवे समर्थ नहीं स्नेह समुद्रकी तरंगों में डूबूहूं आप धर्मोपदेश रूप हस्तालंबन कर काढ़ो हे करुणानिधान मेरी रक्षा करो, तब भगवान कहते भए हे राम शोक न कर तू बलदेव है कैयक दिन वासुदेव सहित इंद्र की न्याई इस पृथिवी का राज्य कर जिनेश्वर का व्रत धर केवल ज्ञान पावेगा, ए केवलीके वचन सुन श्रीरामचन्द्र हर्ष कर रोमांचित भए नयनकमल फूलगए बदनकमल विकसित भया परम धीर्य युक्त होते भए और रामको केवलीके मुखसे चरमशरीरीजान सुर नर असुर सबही प्रशंसाकर अतिप्रीति करते भए इति १०

अथानन्तर विद्याधरों विषै श्रेष्ठ राजा विभीषण रावण का भाई सुन्दर शरीर का धारक राम की भक्तिही है आभूषण जिसके सो दोनों कर जोड प्रणाम कर केवलीको पूछता भया, हे देवाधिदेव श्री रामचन्द्र ने पूर्व भव में क्या सुकृतकिया जिसकर ऐसी महिमा पाई और इनकी स्त्री सीता दण्डक बन मे कौन प्रसंगकर रावण हरलेगया धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पुरुषार्थ का वेत्ता अनेक शास्त्रका पाठी कृत्य कृत्यको जाने धर्म अधर्म को पिछाने प्रधान गुण संपन्न सो काहे से मोह के वश होय पर स्त्री के अभिलाषा रूप अग्नि विषे पतंग के भाव को प्राप्त भया और लक्ष्मण ने उसे संग्राम में हता रावण ऐसा बलवान विद्याधरों का महेश्वर अनेक अद्भुत कार्यों का कारण हारा सो कैसे ऐसे मरणको प्राप्तभया, तब केवली अनेक जन्म की कथा विभीषणको कहते भये हे लंकेश्वर राम लक्ष्मण दोनों अनेक भव के भाई हैं और रावण के जीव से लक्ष्मण के जीवका बहुत भव से बैर है सो सुन. जंबूदीप के भरत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षेत्र म एक नगर वहां नयदत्त नामा वणिक अल्प धनका धनी उसकी सुनंदा स्त्री उसके धन नामा पुत्र सो रामका जीव और दूजा पुत्र वसुदत्त सो लक्ष्मणका जीव और एक यज्ञवलि नामा विप्र वसुदत्तका मित्र सो तेरा जीव और उसही नगरमें एक और वणिक सागरदत्त जिसके स्त्री रत्नप्रभा पुत्री गुणवती सो सीताका जीव और गुणवती का छोटा भाई जिसका नाम गुणवान सो भामंडल का जीव और गुणवती रूप यौवन कला कांति लावण्यताकर मंडित सो पिता अभिप्राय जान धनदत्त से वहिनकी सगाई गुणवानने करी और उसही नगरमें एकम महा धनवान वणिक श्रीकांत सो रावणका जीव जो निरन्तर गुणवतीके परिणवे की अभिलाषा राखे और गुणवतीके रूपकर हरा गया है चित्त जिसका सो गुणवती का भाई लोभी धनदत्तको अल्पधनवंत जान श्रीकांतको महाधनवंत देख परणायवेको उद्यमी भया, सो यह वृत्तांत यज्ञवलि ब्राह्मणने वसुदत्तको कहा तेरे बड़े भाईकी मांग कन्याका बड़ाभाई, श्रीकांतको धनवान जान परणाया चाहे है तब वसुदत्त यह समाचार सुन श्रीकांत के मारिवे को उद्यमी भया खड्ग पैनाय अंधेरी रात्री में श्याम वस्त्र पहिर शब्द रहित धीरा धीरा पग धरता जाय श्रीकांत के घर में गया सो वह असावधान बैठा था सो खड्ग से मारा तब पड़ते पड़ते श्रीकांत ने भी वसुदत्त को खड्ग से मारा सो दोनों मरे सो विंध्याचल की बनी में हिरण भए और नगर के दुर्जन लोक थे तिन्हों ने गुणवती धनदत्त को न परणायवे दीनी कि इस के भाई ने अपराध कीया, दुर्जन लोक बिना अपराध कोप करें सो यह तो एक बहाना पाया तब धनदत्त अपने भाई का मरण और अपना अपमान तथा मांग का अलाभ जान महादुखी होय घर से निकस विदेश गमनकरताभया और वह कन्या धनदत्तकी अप्राप्तिकर अतिदुखी भई और भी

For Private and Personal Use Only

किसीको न परणती भई, और कन्या मुनियों की निंदा और जिनमार्गकी अश्रद्धामिथ्यात्व के अनुरागकर पाप उपार्जे काल पाय आर्त ध्यानकर मूई सो जिस वनमें दोनों मृगभए थे उसही वनमें यह मृगी भई सो पूर्वले विरोधकर इसी के अर्थ वे दोनों मृग परस्पर लड़कर मूए, सो वन शूकर भए फिर हाथी भैंसा बैल वानर गैंडा ल्याली भींडा इत्यादि अनेक जन्म धरते भए और यह वाही जाति की तिर्यंचनी होती भई सो इस के निमित्त वे परस्पर लड़कर मूए जल के जीव थल के जीव होय होय प्राण तजते भए और धनदत्त मार्गके खेदकर अति दुखी एकदिन सूर्य्य अस्त समय मुनियों के आश्रमगया भोला कछु जाने नहीं साधुवों से कहता भया मैं तृषाकर पीडित हूं मुझे जल पिलावो तुम धर्मात्मा हो तब मुनितो न बोले और कोईजिनधर्मी मधुर वचनकरइसेसंतोष उपजायकरकहताभया हे मित्र रात्रीको अमृतभीनपीवनाजलकीकहा बात जिस समय आंखोंकर कछू सूझेनहीं सूक्ष्मजीवदृष्टिनपड़ें ता समयहेवत्सयदितू अति आतुर भी होयतो भी खान पान करना रात्री आहार में मांस का दोषलागे है इसलिये तू न कर जिस कर भव सागर में डूबिये यह उपदेश सुन धनदत्त शांत चित्त भया शक्ति अल्प थी इसलिये यति न होयसका दयाकर युक्त है चित्त जिसका सो अणुव्रती श्रावक भया. फिर काल पाय समाधिमरण कर सौधर्म स्वर्ग में बड़ी ऋद्धि का धारक देव भया, मुकुट हार भुजबंधादिक कर शोभित पूर्वपुण्य के उदय से देवांगनादिक सुख भोगे फिर स्वर्ग से चय कर महापुरनामा नगर में मेरुनामा श्रेष्ठी उसकी धारिणी स्त्री के पद्म रुचि नामा पुत्र भया और उसही नगर में राजा छत्रछाय राणी श्रीदत्ता गुणों की मंजूषा है सो एक दिन सेठ का पुत्र पद्मरुचि अपने गोकुल में अश्व चढ़ा आया सो एक वृद्धगति बलदको कंठगत प्राण देखा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तब इस सुगन्ध वस्त्र माला के धारकने तुरंग से उतर अतिदयाकर बैल के कानमें नमोकार मंत्र दिया सो बलदने चित्त लगाय सुना और प्राण तज राणी श्रीदत्ता के गर्भ में आयउपजा राजा छत्रछाय के पुत्र न था सो पुत्रके जन्म में अतिहर्षित भया नगर की अतिशोभा करी बहुत द्रव्य खरचा बड़ा उत्सव कीया वादित्रों के शब्द कर दशों दिशा शब्दायमान भई यह बालक पुण्यकर्म के प्रभावकर पूर्वजन्म जानता भया सो बलद के भवका शीत आताप आदि महादुख और मरण समय नमोकार मंत्र सुना उसके प्रभावकर राजकुमार भया सो पूर्व अवस्था यादकर बालक अवस्थामें ही महा विवकी होताभया जब तरुणअवस्था भई तब एक दिन विहार करता बलदके मरण के स्थानक गया अपना पूर्व चारित्र चितार यह बृषभध्वज कुमार हाथी से उतर पूर्वजन्म की मरण भूमि देख दुखित भया अपने मरणका सुधारण हारा नमोकार मंत्रका देनहारा उसकेजानिबेकेअर्थ एक कैलाश के शिखर समान ऊंचा चैत्यालय बनाया और चैत्यालय के द्वार विषे एक बडे बैलकी मूर्ति जिसके निकट बैठा एक पुरुष नमोकार मंत्र सुनावे है ऐसा एक चित्रपट लिखाय मेला और उसके समीप समझने मनुष्य मेले दर्शन करबेकोमेरु श्रेष्ठी का पद्मरुचि आया सो देख अति हर्षित भया और भगवान का दर्शन कर पीछे आय बलै की चित्रपटके और निरखकर मनमें विचारे है बैलको नमोकार मंत्र मैंने सुनायाथा सो खड़ा खड़ा देखे वे पुरुष रखवारे थे तिन जाय राजकुमार को कही सो सुनते ही बडी ऋद्धि से युक्त हाथी चढ़ा शीघ्रही अपने परम मित्रसे मिलने आया हाथी से उतर जिनमंदिर में गया कि फिर बाहिर आय पद्मरुचिको बैलकी ओर निहारता देखा राजकुमारने श्रेष्ठी के पुत्रको पूछी तुम बैलके पटकी ओर कहां निरखा हो तब

For Private and Personal Use Only

पद्मरुचिने कही एक मरते बैलको मैंने नमोकार मंत्र दियाथा सो कहां उपजा है यह जानिवे को इच्छा है तब वृषभध्वज बोले वह मैं ऐसाकह पायन पड़ा और पद्मरुचि की स्तुतिकरी जैसे गुरुकी शिष्य करे और कहता भया मैं पशु महा अविवेकी मृतुके कष्टकर दुखी था सो तुम मेरे महा मित्र नमोकार मंत्र के दाता समाधि मरण के कारण होते भये तुम दयालु परभवके सुधारणहारे ने महा मंत्र मुझे दिया उस से मैं राजकुमार भया जैसा उपकार राजा देव माता सहोदर मित्र कुटुम्ब कोई न करे तैसा तुम किया जो तुम नमोकार मंत्रदिया उस समान पदार्थ त्रैलोक्यमें नहीं उसका बदला मैं क्या दूं तुमसे ऊरणनहीं तथापि तुमविषे मेरी भक्ति अधिक उपजी है जोआज्ञा देवो सो करूं हे पुरुषोत्तम तुम आज्ञा दानकर मुझको भक्तकरो यहसकल राज्य लेवो मैं तुम्हारा दास यहमेरा शरीर उसकर इच्छाहोय सो सेवा करावो इसभांति वृषभध्वजने कही तब पद्मरुचिके और इसके अतिप्रीति बढ़ी दोनों सम्यक्दृष्टि राजमें श्रावक के व्रत पालते भये ठौर २ भगवानके बड़े २ चैत्यालय कराए तिनमें जिनबिंब पधराए यह पृथिवी तिनकर शोभायमान होती भई फिर समाधि मरण कर वृषभध्वज पुण्यकर्म के प्रसादकर दूजे स्वर्ग में देवभया देवांगना के नेत्ररूप कमल तिनके प्रफुल्लित करने को सूर्य समान होता भया वहां मनबांछित क्रीड़ा करताभया और पद्मरुचि सेठभी समाधि मरणकर दूजेही स्वर्ग देव भया दोनों वहां परम मित्र भये वहां से चयकर पद्मरुचि का जीव पश्चिम बिदेह विशे विजियार्धगिरि जहां नंद्यावर्त नगर वहां राजा नन्दीश्वर उसकी राणी कनकप्रभा उसके नयनानन्द नामा पुत्र भया सो विद्याधरों के चक्रपद की संपदा भोगी फिर महा मुनियोंकी अवस्था धर विषम तप किया समाधि मरण कर चौथे स्वर्ग

देव भया वहां पुण्य रूप बेल के सुख रूप फल महा मनोग्य भोगे फिर वहां से चयकर सुमेरु पर्वत के पूर्व दिशा की ओर विदेह वहां क्षेमपुरी नगरी राजा बिपुल बाहन राणी पद्मावती तिन के श्री चन्द्र नामा पुत्र भया वहां स्वर्ग समान सुख भोगे तिन के पुण्य के प्रभाव से दिन दिन राजा की बृद्धि भई अटूट भंडार भया समुद्रांत पृथिवी एक ग्रामकी न्यांई वश करी और जिसके स्त्री इन्द्राणी समान सो इन्द्र कैसे सुख भोगे हजारों वर्ष सुख से राज्य किया एक दिन महा संघ सहित तीन गुप्ति के धारक समाधि गुप्ति योगीश्वर नगर के बाहिर आय विराजे तिन को उद्यान में आय जान नगर के लोक बन्दना को चले सो महा स्तुति करते वादित्र बजावते हर्ष से जाय हैं, श्री चन्द्र समीप के लोकों से पूछता भया यह हर्षका नाद जैसा समुद्र गाजे तैसा होयहै सो कौन कारण है. तब मन्त्रियोंने किंकर दौड़ाये निश्चय कियाजो मुनिआएहैं तिनके दर्शनको लोकजायहैं, यह समाचार राजासुनकर फूलेकमल समान भए हैं नेत्र जिस के और शरीर में हर्ष से रोमांच होय आए समस्त राज लोक और परिवार सहित मुनि के दर्शन को गया प्रसन्न है मुख जिन का ऐसे मुनिराज तिन को राजा देख प्रणाम कर महा विनय संयुक्त पृथिवी में बैठा भव्य जीव रूप कमल तिनके प्रफुल्लितकरवे को सूर्य समान ऋषिनाथ तिन के दर्शन से राजा को अति धर्म स्नेह उपजा, वे महा तपोधन धर्मशास्त्र के वेत्ता परम गंभीर लोकोंको तत्वज्ञान का उपदेश देते भए यतिका धर्म और श्रावक का धर्म संसारसमुद्रका तारण हारा अनेक भेद संयुक्त कहा और प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोग का स्वरूप कहा प्रथमानुयोग कहिये उत्तम पुरुषोंका कथन और करणानुयोग कहिये तीनलोकका कथन चरणानुयोग कहिये मुनिश्रावकका धर्मऔर द्रव्यानुयोग

कहिये षट्द्रव्य सप्त तत्व नव पादार्थ पंचास्तिकाय का निर्णय कैसे हैं मुनिराजवक्ताओंमें श्रेष्ठहैं और आत्तेपनी कहिए जिन मार्ग उद्योतनी और त्तेपनी कहिए मिथ्यात्व खंडनी और संवेगजनी कहिए धर्मानुरागिणी और निर्वेदिनी कहिए वैराग्यकारिणी यह चार प्रकार कथा कहते भए, इस संसार असार में कर्म के योग से भ्रमता जो यह प्राणी सो महा कष्ट से मोक्ष मार्ग को प्राप्त होय है संसार का ठाठ बिनाशीक है जैसा संध्या का वर्ण और जल का बुद्बुदा तथा जल के झाग और लहर और बिजुरी का चमत्कार इंद्र धनुष् क्षणभंगुर हैं असार है ऐसा जगत् का चरित्र क्षणभंगुर जानना इस में सार नहीं नरक तिर्यंचगति तो दुःख रूप ही है और देव मनुष्य गति में यह प्राणी सुख जाने है सो सुख नहीं दुःख ही है जिस से तृप्त नहीं सोही दुःख जो महेन्द्र स्वर्ग के भोगों से तृप्त नहीं भया सो मनुष्य भव के तुच्छ भव से कैसे तृप्त होय यह मनुष्य भव भोग योग्य नहीं वैराग्य योग्य है काहू एक प्रकार से दुर्लभ मनुष्य देह पाया जैसे दरिद्री निधान पावे सो विषय रस का लोभी होय वृथा खोया मोहको प्राप्त भया जैसे सूके इन्धन से अग्निको कहां तृप्ति और नदियों के जल से समुद्र को कहां तृप्ति तैसे विषय सुख से जीवन को तृप्ति न होय, चतुर भी विषय रूप मद कर मोहित भया मंदता को प्राप्त होय है अज्ञान रूप तिमिर से मंद भया है मन जिस का सो जल में डूबता खेदखिन्न होय त्यों खेदखिन्न है परन्तु अविवेकी तो विषय ही को भला जाने है सूर्य तो दिनको ताप उपजावे और काम रात्रि दिन आताप उपजावे सूर्यके आताप निवारवे के अनेक उपाय हैं और कामके निवारवे का उपाय एक विवेक ही है जन्म जरा मरणका दुःख संसारमें भंयकर है जिसका चितवन किए कष्ट उपजे यह कर्मजनित जगतका ठाठ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अरहटके यन्त्रकी घड़ी समान है [illegible] जरा अवस्था जीर्ने, और यह शरीर दुर्गंधिहै यंत्र समान चलाया चलेहै विनाशिक है मोह कर्म के योग से जीवका काया से स्नेहहै जलके बुदबुदा समान मनुष्य भवके उपजे सुख असार जान बड़े कुलके उपजे पुरुष विरक्त होय जिनराज का भाषा मार्ग अंगीकार करे हैं उत्साह रूप बखतर पहिरे निश्चय रूप तुरंग के असवार ध्यान रूप खड्ग के धारक धीर कर्म रूप शत्रु को विनाश निर्वाण रूप नगर लेयहैं यह शरीरभिन्न औरमैं भिन्न ऐसा चिंतवन कर शरीरका स्नेह तजहेमनुष्यो धर्मकोकरो धर्म समानऔर नहीं और धर्मोंमे मुनिका धर्म श्रेष्ठहै जिन महामुनियोंकेसुख दुःखदोनोंतुल्य अपना और पराया तुल्य जेराग द्वेष रहित महापुरुष हैं वे परम उत्कृष्ट शुक्ल ध्यान रूप अग्नि से कर्म रूप बनी दुःख रूप दुष्टों से भरी भस्म करें हैं मुनि के वचन राजा श्रीचन्द्र सुन बोध को प्राप्त भया विषयानुभव सुखसे वैराग्य होय अपने ध्वजकांति नामा पुत्रको राज्य देय समाधिगुप्ति नामा मुनि के समीप मुनि भया महा विरक्त है मन जिस का सम्यक् की भावना से तीनों योग जे मन वचन काय तिनकी शुद्धता धरता संता पांच सुमति तीनों गुप्ति से मंडित राग द्वेष से परांमुख रत्नत्रय रूप आभूषणों का धारक उत्तम क्षमा आदि दशलक्षण धर्म कर मंडित जिनशासन का अनुरागी समस्त अंग पूर्वाङ्गका पाठक समाधान रूप पंच महाव्रत का धारक जीवों का दयालु सप्त भय रहित परमधीर्य का धारक बाईस परीषह का सहनहारा, बेला तेला पक्ष मासादिक अनेक उपवास का करणहारा शुद्ध आहार का लेनहारा ध्यानाध्ययन में तत्पर निर्ममत्व अतीन्द्रिय भोगों की वांछा का त्यागी निदान बन्धन रहित महाशांत जिनशासन में है वात्सल्य जिसका, यति के आचार

For Private and Personal Use Only

में संघ के अनुग्रह में तत्पर बाल के अग्रभाग के कोटिवें भाग भी नहीं परिग्रह जिस के स्नान का त्यागी दिगंबर संसार के प्रबन्ध से रहित, ग्राम के बनमें एक रात्रि और नगर के बनमें पांच रात्रि रहन हारा गिरि गुफा गिरिशिखर नदी के पुलिन उद्यान इत्यादि प्रशस्त स्थान में निवास करणहारा कायोत्सर्ग का धारक देह से भी निर्ममत्व निश्चल मौनी पंडित महातपस्वी इत्यादि गुणोंकर पूर्ण कर्म पिंजर को जर्जरा कर काल पाय श्रीचन्द्रमुनि रामचन्द्र का जीव पांचमें स्वर्ग इन्द्र भया, वहां लक्ष्मी कीर्ति कांति प्रताप का धारक देवों का चूड़ामणि तीन लोक में प्रसिद्ध परम ऋद्धि कर युक्त महा सुख भोगता भया नन्दनादिक बनमें सौधर्मादिक इन्द्र इसकी संपदाकोदेख रहे इसके अवलोकन की सब के बांछा रहे महा सुन्दर विमान मणि हेममई मोतियों की झालरियों कर मंडित उस में बैठा विहार करे दिव्य स्त्रियों के नेत्रों को उत्सवरूप महासुख से कालव्यतीत करता भया, श्रीचन्द्र का जीव ब्रह्मेंद्र उसकी महिमा, हे विभीषण वचन कर न कही जाय, केवल ज्ञानगम्य है यह जिनशासन अमोलक परमरत्न उपमा रहित त्रैलोक्य में प्रकट है तथापि मूढ़ न जाने श्रीजिनेन्द्र मुनीन्द्र और जिनधर्म इनकी महिमा जानकर भी मूर्ख मिथ्या अभिमानकर गर्वित भए धर्म से परांमुख रहें जो अज्ञानी यह लोक के सुखमें अनुरागी भया है सो बालक समान अविवेकी है जैसे बालक बिना समझे अभक्ष्यका भक्षणकरे है विषपान करे है तैसे मूढ़ अयोग्य का आचरण करे है जे विषयके अनुरागी हैं सो अपना बुरा करे हैं, जीवों के कर्म बन्ध की विचित्रता है इसलिये सबही ज्ञान के अधिकारी नहीं कैयक महाभाग्य ज्ञानको पावे हैं और कैयकज्ञानकोपाय औरवस्तुकी बांछाकर अज्ञान दशाको प्राप्तहोय हैं और कैयक महानिन्द्य जो यह संसार

जीवों के मार्ग तिनमें रुचि करे हैं, वे मार्ग महादोष के भरे हैं जिन में विषयकषाय की बाहुल्यता है जिनशासन से और कोई दुःख के छुड़ायवे का मार्ग नहीं इसलिये हे विभीषण तुम आनन्द चित्त होयकर जिनेश्वर देव का अर्चन करो, इसभांति धनदत्त का जीव मनुष्य से देव, देवसे मनुष्य होयकर नवमें भव रामचन्द्र भए, उसकी विगत पहिले भव धनदत्त १ दूजे भव पहले स्वर्ग देव २ तीजे भव पद्मरुचि सेठ ३ चौथेभव दूजे स्वर्ग देव ४ पांचमें भव नयनानन्दराजा ५ छठे भव चौथे स्वर्ग देव ६ सातमें भव श्री चन्द्र राजा ७ आठमें भव पांचमें स्वर्ग इन्द्र ८ नवमें भव रामचन्द्र ९ आगे मोक्ष यहतो रामके भव कहे हैं अब हे लंकेश्वर वसुदत्तादिक का वृतांत सुन कर्म्मों की विचित्रगति के योगकर मृणालकुण्ड नामानगर वहां राजा विजयसेन राणी रत्नचूला उसके वज्रकंबु नामा पुत्र उसके हेमवती राणी उसके शंभ नामापुत्र पृथिवी में प्रसिद्ध सो यह श्रीकांत का जीव रावण होनहार सो पृथिवी में प्रसिद्ध और वसुदत्त का जीव राजा का पुरोहित उसका नाम श्रीभूति सो लक्ष्मण होनहार, महा जिनधर्मी सम्यक्दृष्टि उसके स्त्री सरस्वती उसके वेदवती नामा पुत्री भई, सो गुणवती का जीव सीता होनहार गुणवती के भव से सम्यक्त बिना अनेक तिर्यंचयोनिविषे भ्रमणकर साधुओंकी निन्दाके दोषकर गंगाके तट मरकर हाथिनीभईएकदिनकीच में फंसी पराधीनहोयगयाहै शरीर जिसका नेत्र तिरमिराट और मन्द मन्द सांस लेयसो एकतरंगवेगनामा विद्याधर महा दयावान उसने हाथिनीके कानमें नमोकार मंत्र दिया सो नमोकार मंत्रके प्रभावकर मंद कषाय भई और विद्याधरने व्रतभी दिये सो जिनधर्मके प्रसादसे श्रीभूति पुरोहितके देववती पुत्री भई एक दिन मुनि आहारको आए सो यह हंसने लगी तब पिताने निवारी सो यह शांतचित्त होय श्राविका

भई और यह कन्या परमरूपवती सो अनेक राजावोंके पुत्र इसके परिणवेकी अभिलाषी भए और यह राजा विजयसेनका पोता शंभ जो रावण होनहारहै सो विशेष अनुरागी भया और पुरोहितश्रीभूति महा जिनधर्मी सो उसने जो मिथ्यादृष्टि कुबेर समान धनवान होय तौभी मैं पुत्री न दूं यह मेरेप्रतिज्ञाहै तब शंभुकुमारने रात्रि विषे पुरोहितको मारा सो पुरोहित जिनधर्मके प्रसाद से स्वर्ग लोक विषे देव भया और शंभुकुमार पापी वेदवती साक्षात देवी समान उसे न इच्छती को बलात्कार परणबे को उद्यमी भया वेदवतीके सर्वथा अभिलाषा नहीं तब कामकर प्रज्वलित इस पापीने जोरावरी कन्याको अलिंगनकर मुख चुंबमैथुन किया तब कन्या विरक्त हृदय कांपे है शरीर जिसका अग्नि की शिखा समान प्रज्वालित अपने शील घातकर और पिताके घातकर परम दुःखको धरती लाल नेत्र होय महा कोप कर कहती भई अरे पापी तैंने मेरे पिताको मार मो कुमारीसे बलात्कार विषय सेवन किया सो नीच मैं तेरे नाशका कारण होऊंगी मेरा पिता तैंने मारा सो बडा अनर्थ किया मैं पिताका मनोरथ कभी भी न उलघूं मिथ्यादृष्टि सेवनसे मरण भला ऐसा कह वेदवती श्रीभूति पुरोहितकी कन्या हरिकांता आर्या के समीप जाय आर्यियाके व्रत लेय परम दुर्धर तप करती भई केश लुंच किये महातप कर रुधिर मांस सुकाय दिये प्रकट दीखे हैं अस्ति और नसा उसके तपकर सुखाय दिया है देह जिसने समाधि मरणकर पांचमें स्वर्ग गई पुण्यके उदयकर स्वर्गके सुख भोगे और शम्भु संसार विषे अनीतिके योग कर अति निन्दनीक भया कुटुम्ब सेवक और धनसे रहित भया उन्मत्तहोय गया जिनधर्म पराङ्मुख भया साधुवों को देख हंसे निन्दा करे मद्य मांस शहत का आहारी पाप क्रिया विषे उद्यमी अशुभके उदय कर नरक तिर्यंच विषे महा दुःख भोगता भया।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथानन्तर कुछ इक पापकर्म के उपशमसे कुशध्वज नामा ब्राह्मण उसके सावित्री नामा स्त्रीके प्रभासकुन्दनामा पुत्र भया सो दुर्लभ जिनधर्मका उपदेश पाय विचित्रमुनिके निकटमुनिभया काम क्रोध मद मत्सरहरे आरंभ रहित भया निर्विकार तपकर दयावान निस्पृही जितेंद्री पक्षमास उपवासकरे जहां सूर्य्य अस्त हो वहां शून्य वनविषे बैठ रहे मूलगुण उतरगुणका धारक बाईस परीषहका सहनहारा ग्रीषममें गिरिके शिखर रहे वर्षामें वृक्षतलबसे और शीत कालमें नदी सरोवरीके तट निवास करे इसभांति उतम क्रियाकर युक्त श्री सम्मेद शिखरकी वन्दनाको गया वह निर्वाण क्षेत्र कल्याणका मंदिर जिसका चितवन किये पापो का नाश होय वहां कनकप्रभ नामा विद्याधरकी विभूति आकाशमें देख मूर्खने निदान किया जो जिनधर्म के तपका माहात्म्य सत्य है तो ऐसी विभूति मैं भी पाऊं यहकथा भगवान केवली ने विभीषण को कही देखो जीवोंकी मूढ़ता तीन लोक जिसका मोल नहीं ऐसा अमोलिक तप रूपरत्न भोगरूपी मूठी साग के अर्थ बेचा कर्मके प्रभाव कर जीवनकी विपर्यय बुद्धि होय हैं निदान कर दुःखित विषमतप करे वह तीजे स्वर्ग देवभया वहां से चयकर भोगों विषे है चित्त जिसका सो राजा रत्नश्रवा के राणी केकसी उसके रावणनामा पुत्र भया लंकामें महा विभूति पाई अनेक हैं आश्चर्यकारी वात जिसकी महा प्रतापी पृथिवी में प्रसिद्ध और धनदत्तका जीव रात्री भोजन के त्याग से सुर नर गति के सुख भोग श्री चन्द्रराजा होय पंचम स्वर्ग दश सागर सुख भोग बलदेव भया रूपकर बलकर विभूति कर जिस समान जगत में और दुर्लभहै महा मनोहर चन्द्रमासमान उज्वल यशका धारक और वसुदत्तका जीव अनुक्रमसे लक्ष्मी रूप लता के लपटानेका वृक्ष बासुदेव भया उसके भवसुन वसुदत्त १ मृग २ शूकर ३

हस्ती ४ महिष ५ वृषभ ६ वानर ७ चीता ८ ल्याली ९ मींढा १० और जलचर स्थलचर के अनेक भव ११ श्रीभूत पुरोहित १२ देवराजा पुनर्बसु विद्याधर १४ तीजे स्वर्ग देव १५ वासुदेव १६ मेघा १७ कुटुम्बी का पुत्र १८ देव १९ बाणिक २० भोग भूमि २१ देव २२ चक्रवर्ती का पुत्र २३ फिर कइयक उत्तमभव धर पुष्करार्द्धके विदेह में तीर्थंकर और चक्रवर्ती दोयपदका धारी होय मोक्ष पावेगा और दशानन के भव श्रीकांत १ मृग २ सूकर ३ गज ४ महिष ५ वृषभ ६ बादर ७ चीता ८ ल्याली ९ मींढा १० और जल चर थलचर के अनेक भव ११ शंभु १२ प्रभासकुन्द १३ तीजे स्वर्ग १४ दशमुख १५ बालुका १६ कुटुम्बी पुत्र १७ देव १८ बाणिक १९ भोगभूमि २० देव २१ चक्रीपुत्र २२ फिर कईएक उत्तमभव धर भरत क्षेत्र में जिनराज होय मोक्ष पावेगा फिर जगत जाल में नहीं और जानकी के भव गुणवती १ मृगी २ शूकरी ३ हथिनी ४ महिषी ५ गाय ६ वानरी ७ चीती ८ ल्यालनी ९ गारद १० जलचर स्थलचर के अनेकभव ११ चितोत्सवा १२ पुरोहितकी पुत्री वेदवती १३ पांचमेंस्वर्ग देवी अमृतवती १४ बलदेवकी पटराणी १५ सोलहवें स्वर्ग प्रतेन्द्र १६ चक्रवर्ती १७ अहिमिंद्र १८ रावणका जीव तीर्थंकर होयगा उसके प्रथम गणधर देव होय मोक्ष प्राप्त होयगा। भगवान सकलभूषण विभीषण से कहे हैं श्रीकांतका जीव कइयक भव में शंभु प्रभासकुन्द होय अनुक्रम से रावणभया जिसने अर्द्धक्षेत्र में सकल पृथिवी वश करी एक अगल आज्ञा सिवाय न रही और गुणवती का जीव श्रीभूत की पुत्री होय अनुक्रमकर सीता भई राजा जनककी पुत्री श्रीरामचन्द्र की पटराणी विनयवती शीलवती पतिव्रताओं में अग्रेसर भई जैसे इन्द्रके शची चन्द्रके रोहणी रवि के रेणा चक्रवर्ती के सुभद्रा तैसे राम के सीता सुन्दर है चेष्टा जिसकी और जो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुणावती का भाई गुणवान् सो भामण्डल भया श्रीराम का मित्र जनकराजा की राणी विदेहाके गर्भ में युगुल बालक भये भामण्डल भाई सीता बहिन दोनों महा मनोहर और यज्ञबलि ब्राह्मण का जीव विभीषण भया और बैलका जीव जो नमोकार मंत्र के प्रभाव से स्वर्ग गति नर गतिके सुख भोगे यह सुग्रीव कपिध्वज भया भामण्डल सुग्रीव और तूं पूर्वभव की प्रीति कर तथा पुण्य के प्रभाव कर महा पुण्याधिकारी श्रीराम, उसके अनुरागी भए यह कथा सुन बिभीषण बालि के भव पूछता भया और केवली कहे हैं हे विभीषण तू सुन राग द्वेषादि दुःखों के समूह कर भरा यह संसार सागर चतुर्गति मई उस विषे वृन्दावनमें एक कालेरा मृग सो साधु स्वाध्याय करते थे तिनका शब्द अंतकाल में सुनकर ऐरावत क्षेत्र विषे दित स्थान नामा नगर वहां विहित नामा मनुष्य सम्यकदृष्टि सुंदर चेष्टा का धारक उसकी स्त्री शिवमती उसके मेघदत्त नामा पुत्रभया सो जिन पूजा में उद्यमी भगवान का भक्त अणुव्रतका धारक समाधि मरणकर दूजे स्वर्ग देव भया वहां से चयकर जम्बूद्वीप विषे पूर्व विदेह वहां विजियावतीपुरी उसके समीप महा उत्साह का भरा एक मतकोकिला नामा ग्राम उसका स्वामी कांति शोक उसकी स्त्री रत्नांगिनी है स्वप्रभ नामा पुत्र भया महासुन्दर जिसको शुभ आचार भावे सो जिनधर्म में निपुण संयत नामा मुनि होय हजारों वर्ष विधि पूर्वक बहुत भांतिके महातप किये निर्मल है मन जिसका सो तपके प्रभावकर अनेक ऋद्धि उपजी तथापि अति निगर्व संयोग संबन्ध में ममता को तज उपशम श्रेणी धार शुक्ल ध्यान के पहिले पाए के प्रभाव से सर्वार्थ सिद्ध गया सो तेंतीस सागर अहिमिन्द्र पदके सुख भोग राजा सूर्यरज उसके बालि नामा पुत्र भया विद्या

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धरों का अधिपति किहकंधपुरका धनी जिसका भाई सुग्रीव महा गुणवान सो जब रावण चढ़ आया तब जीवदया के अर्थ बालीने युद्ध न किया सुग्रीव को राज्य देय दिगंबर भया सो जब कैलाश में तिष्ठे था और रावण आय निकसा क्रोध कर कैलाश के उठायबे को उद्यमी भया सो बाली मुनि चैत्यालयों की भक्तिसे ढीलासो अंगुष्ठ दबाया सो रावण दबने लगा तब राणीने साधुकी स्तुति कर अभयदान दिवाया रावण अपने स्थानक गया और बाली महामुनिके गुरुके निकट प्रायश्चितनामा तप लेय दोष निराकरण कर क्षायक श्रेणी चढ़ कर्म दग्ध किये लोकके शिखर सिद्धक्षेत्र हैं वहां गए जीव का निज स्वभाव प्राप्त भया और वसुदत्तके और श्रीकान्तके गुणवती के कारण महावैर उपजा था सो अनेक जन्मों में दोनों परस्पर लड लड मरे और गुणवती से तथा वेदवती से रावणके जीव के अभिलाष उपजी थी उस कारण कर रावण ने सीता हरी और वेदवती का पिता श्रीभूति सम्यक दृष्टि उत्तम ब्राह्मण सो वेदवती के अर्थ शत्रु ने हता सो स्वर्ग जाय वहां से चयकर प्रतिष्ठित नाम नगर विषे पुनर्वसु नाम विद्याधर भया सो निदान सहित तपकर तीजे स्वर्ग जाय रामका लघु भ्राता महा स्नेहवन्त लक्ष्मण भया, और पूर्वले वैर के योग से रावण को मारा और वेदवती से शंभुने विपर्यय करी इसलिये सीता रावणके नाश का कारण भई जो जिसको हते सो उसकर हता जाय तीन खण्ड की लक्ष्मी सोई भई रात्रि उसका चंद्रमा रावण उसे हता लक्ष्मण सागरान्त पृथिवी का अधिपति भया रावण सा शूर वीर पराक्रमी इस भांति मारा जाय यह कर्मों का दोष है दुर्बल से सबल होय सबल से दुर्बल होय घातक है सो हता जाय और हता होय सो घातक होय जाय संसार के जीवों की यही गति है कर्म की चेष्टा कर कभी स्वर्गके सुख

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पावे कभी नरकके दुःख पावे और जैसे कोई महास्वाद रूप परम अन्न उस विषे विष मिलावे दूषित करे तैसे मूढ जीव उग्र तप को भोगाभिलाष कर दूषित करे हैं जैसे कोई कल्पवृक्ष को काट कोई की बाडि करे और विष के वृक्ष को अमृतरसकर सींचेऔरभस्मकेनिमित्तरत्नोंकी राशिको जलावे और कोयलों के निमित्त मलिय गिरि चन्दन को दग्धकरे तैसे निदानबंधकर तपको यह अज्ञानी दूषित करें इस संसार में सर्व दोषकी खान स्त्री हैं तिन के अर्थ क्या कुकर्म अज्ञानी न करें जो इस जीवने कर्म उपार्जे हैं सो अवश्य फल देय हैं कोऊ अन्यथा करबे समर्थ नहीं जे धर्म में प्रीति कर फिर अधर्म उपार्जें वे कुगति को प्राप्त होय हैं तिनकी भूल कहां कहिये जे साधु होयकर मदमत्सर धरे हैं तिन को उग्रतप कर मुक्ति नहीं और जिसके शांति भाव नहीं संयम नहीं तप नहीं उस दुर्जन मिथ्या दृष्टि के संसार सागर के तिरवे का उपाय कहां और जैसे असराल पवन कर मदोन्मत्त गजेन्द्र उड़े तो सुसा के उड़वे का कहां आश्चर्य तैसे संसार की झूठी माया में चक्रवर्तादिक बडे पुरुष भलें तो छोटे मनुष्योंकी क्या बात इस जगत् में परम दुःख का कारण वैरभाव है सो विवेकी न करें आत्म कल्याण की है भावना जिन के पाप की करणहारी वाणी कदापि न बोलें गुणवती के भव में मुनों का अपवाद कीया था और वेदवती के भव में एक मंडलका नामा ग्राम वहां सुदर्शननामा मुनि बन में आये लोक वन्दना कर पीछे गये और मुनिकी बहिन सुदर्शना नामाआर्यिका नाम मुनि के निकट बैठी धर्मश्रवण करेथी सो वेदवतीने देखकर ग्राम के लोकों के निकट मुनि की निंदा करी कि मैं मुनि को अकेली स्त्री के समीप बैठा देखा तब कैयकोंने बात मानी और कैयक बुद्धिवन्तोंने न मानी परन्तु ग्राममें मुनिका अपवादभया, तबमुनिने नियम

For Private and Personal Use Only

कीया कि यह झूठा अपवाद दूरहोय तो आहार को उतरना तब नगर देवताने बेदवती के मुखकर समस्त ग्राम के लोकों को कहाई कि मैं झूठा अपवाद किया यह बहिन भाई हैं और मुनिके निकट जाय बेदवतीने क्षमा कराई । कि हे प्रभो मैं पापनी ने मिथ्या वचनकहे सो क्षमाकरो इसभांति मुनिकी निंदाकर सीताका झूठा अपवाद भया, और मुनिसे क्षमा कराई उसकर अपवाद दूरभयो इसलिये जेजिनमार्गी हैं वे कभी भी परनिंदा न करें किसीमें सांचाभी दोषहै तौभी ज्ञानी न कहें और कोऊ कहताहोय इसे मनेकरें सर्वथा प्रकार पराया दोष ढाकें जे कोई पर निंदा करें हैं सो अनन्त काल संसार बनमें दुख भोगवें हैं सम्यक् दर्शनरूप जारत्न उसका बड़ागुण यही है जोपराया अपगुण सर्बथा ढांके जो सांचा भी दोष पराया कहे सो अपराधी हैं और जो अज्ञानी से मत्सरभाव से पराया झूठा दोष प्रकाशे उस समान और पापी नहीं अपने दोष गुरु के निकट प्रकाशने और पराये दोष सर्बथा ढांकने जो पराई निंदा करे सो जिनमार्गसे पराङ्मुख हैं यह केवली के परम अद्भुत वचन सुनकर सुर असुर नर सब ही आनन्द को प्राप्त भए वैर भाव के दोष सुन सब सभा के लोग महादुख के भयकर कंपायमान भए मुनि तौ सर्व जीवों से निर्बैर हैं अधिक शुद्ध भाव धारते भए और चतुर्निकाय के सबही देव क्षमा को प्राप्त होय बैरभाव तजते भए और अनेक राजा प्रतिबुद्ध होय शांति भाव धार गर्ब का भार तज मुनि और श्रावक भए और जे मिथ्या वादी थे वहभी सम्यक्त को प्राप्त भए सबही कर्मों की विचित्रता जान निश्वास नाषते भए धिकार इस जगत्की माया को इसभांति सब ही कहते भए और हाथ जोड़ सीस निवाय केवली को प्रणाम कर सुर असुर मनुष्य विभीषण की प्रशंसा करते भए कि तुम्हारे आश्रय से हमने केवली के मुख उत्तम पुरुषों के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चारित्र सुने तुम धन्यहो फिर देवेंद्र नरेंद्र नागेंद्र सबही आनन्दके भरे अपने परिवार वर्ग सहित सर्वज्ञ देव की स्तुति करते भये हेभगवान पुरुषोत्तम यह त्रैलोक्य सकल तुमकर शोभे है इसलिए तुम्हारा सकल भूषण नाम सत्यार्थ है तुम्हारी केवल दर्शन केवलज्ञान मई निजविभूति सर्व जगतकी विभूति को जीत कर शोभे है यह अनन्त चतुष्टय लक्ष्मी सर्व लोक का तिलक है यह जगतके जीव अनादि कालके वश होय रहे हैं महादुःख के सागर में पडे हैं तुम दीनों के नाथ दीनबंधु करुणा निधान जीवोंको जिनराज पद दो हे केवलिन हम भव वनके मृग जन्म जरामरण रोग शोक वियोग व्याधि अनेक प्रकार के दुःख भोक्ता अशुभ कर्म रूप जाल में पड़े हैं इस लिए छूटना कठिन है सो तुम ही छुडाइवे समर्थहो हम को निज बोध देवो जिसकर कर्मका क्षय होय, हे नाथ यह विषय बासना रूप गहन वन उसमें हम निजपुरी का मार्ग भूल रहे हैं सो तुम जगतके दीपक हम को शिव पुरीका पंथ दरसावो और जे आत्म बोधरूप शांत रसके तिसाये तिनको तुम तृषाके हरणहारे महा सरोवर हो और कर्म भर्म रूप वनके भस्म करिवे को साक्षात् दावानलरूप हो और जे विकल्प जाल नानाप्रकारके वेई भए वरफ उसकर कंपाय-मान जगत् के जीव तिनकी शीत व्यथा हरिवे को तुम साक्षात् सूर्य्य हो. हे सर्वेश्वर सर्व भूतेश्वर जिनेश्वर तुम्हारी स्तुति करिवे को चार ज्ञान के धारक गणधर देव भी समर्थ नहीं तो और कौन हे प्रभो तुमको हम बारम्बार नमस्कार करें हैं ॥ १०६ एकसौ छठा पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर केवली के वचन सुन संसार भ्रमण का जो महादुःख उसकर खेदखिन्न होय जिन दीक्षा की है अभिलाषा जिसके ऐसा राम का सेनापति कृतान्त वक्र राम से कहता भया हे देव में इस संसार

For Private and Personal Use Only

असार विषे अनादि कालका मिथ्या मार्ग कर भ्रमता हुवा दुःखितभया अब मेरेमुनिव्रत धरिवेकी इच्छा है, तब श्रीराम कहतेभए जिनदीक्षा अति दुर्धरहै तू जगतका स्नेह तज कैसे धारेगा महा तीव्र शीत उष्ण आदि बाइस परीषह कैसे सहेगा और दुर्जन जनोंके दुष्टबचन कंटक तुल्य कैसे सहेगा और अब तक तैंने कभी भी दुःख सहे नहीं कमलका किरण समान शरीर तेरा सो कैसे विषमभूमि के दुःख सहेगा गहन बनोंमें कैसे रात्रि पूरी करेगा और प्रकट दृष्टि पडे हैं शरीर के हाड और नसा जाल जहां ऐसे उग्र तप कैसे करेगा और पक्ष मास उपवास कर दोष टाले पर घर नीरस भोजन कैसे करेगा तू महा तेजस्वी शत्रुओंकी सेनाके शब्द न सहि सके सो कैसे नीच लोकोंके किये उपसर्ग सहेगा तब कृतांतवक्र बोला हे देव जब मैं तुम्हारे स्नेहरूप अमृत के ही तजबेकी समर्थ भया तो मुझे कहां विषम है जबतक मृत्युरूप वज्रकर यह देह रूप स्तंभ न गिरे उस पहिले मैं महा दुःख रूप यह भव बन अंधकार मई उससे निकसा चाहूंहूं जो बलते घरमेंसे निकसे उसे दयावान न रोके यह संसार असार महानिन्द्य है इसे तजकर आत्म हितकरूं अवश्य इष्टका वियोग होयगा इस शरीर के योग कर सब दुःखहै सो हमारे शरीर फिर उदय न आवे इस उपाय विषे बुद्धि उद्यमी भई है ये बचन कृतांत बक्रके सुन श्रीरामके आंसू आए और नीठेनीठे मोहको दाब कहते भए मेरीसी विभूतिको तज तू तप को सन्मुख भया है सो धन्य है जो कदाचित् इस जन्ममें मोक्ष न होय और देव होयतो संकटमें आय मुझे संबोधियो हे मित्र जो तू मेरा उपकार जाने है तो देवगतिमें विस्मरण मत करियो तब कृतांतबक्रने नमस्कारकरकही हे देव जो आप आज्ञाकरोगे सोही होयगा ऐसाकह सर्व आभूषण उतारे और सकलभूषण

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केवलीको प्रणाम कर अन्तर बाहिरके परिग्रह तजे कृतांतवक्रथा सो सौम्यकवक्र होयगया सुंदरहै चेष्टा जिसकी इसको आदि दे अनेक महाराजा वैरागी भए उपजी है जिनधर्मकी रुचि जिनके निर्ग्रंथ व्रत धारते भये और कइएक श्रावक व्रतको प्राप्तभए और कैयक सम्यक्त को धारते भए वह सभा हर्षित होय रत्नत्रय आभूषणकर शोभित भई समस्त सुर असुरनर सकल भूषण स्वामी को नमस्कारकर अपने अपने स्थानक गये और कमलसमान नेत्र जिनके ऐसे श्रीराम सो सकलभूषणस्वामी को और समस्त साधुवों को प्रणामकर महा विनयरूप सीता के समीपआए कैसी है सीता महानिर्मल तपकातेज धरे जैसी घृतकी आहुतिकर अग्निकी शिखा प्रज्वलित होय तैसी पापोंके भस्म करिवे को साक्षात अग्निरूप तिष्ठी है आर्यिकावों के मध्य तिष्ठती देखी देदीप्यमान है किरणोंका समूह जिसके मानों अपूर्व चन्द्रकांति तारावों के मध्य तिष्ठती है आर्यिकावों के व्रतधरे अत्यन्त निश्चलहै तजे हैं आभूषण जिसने तथापि श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी लज्जा इनकी शिरोमणि सोहेहै श्वेत वस्त्रको धरे कैसी सोहे है मानों मन्दपवन कर चलायमान हैं फेन कहिये झाग जिसके ऐसी पवित्र नदी ही है और मानों निर्मल शरद पूनोंकी चांदनी समान शोभा को धरे समस्त आर्यिकारूप कुमुदनियों. को प्रफुल्लित करणहारी भासे है महा वैराग्य को धरे मूर्तिवंती जिनशासनकी देवताहीहै ऐसी सो सीता को देख आश्चर्यको प्राप्तभया है मन जिसका ऐसे श्रीराम कल्पवृक्ष समान क्षण एक निश्चल होय रहे स्थिर हैं नेत्र भ्रकुटी जिनकी जैसे शरदकी मेघमाला के समीप कंचनगिरि सोहै तैसे श्रीराम आर्यिकावों के समीप भासतेभये, श्रीराम चित्त में चितवते हैं यह साक्षात चन्द्रकिरण भव्य जन कुमुदनी को प्रफुलित करणहारी सोहे है बड़ा आश्चर्य है यह

For Private and Personal Use Only

कायर स्वभाव मेघके शब्द से डरती सो अब महा तपस्विनी भयंकरवन में कैसे भयको न प्राप्त होयगी नितंबहीके भार से आलस्य रूप गमन करणहारी महा कोमल शरीर तप से बिलाय जायगी कहां यह कोमल शरीर और कहां यह दुर्धर जिनराज का तप सो अति कठिन है जो दाह बड़े २ वृक्षोंको दाहे उसकर कमलनी की कहां बात, यह सदा मनबांछित मनोहर आहार की करणहारी अब कैसे यथालाभ भिक्षा कर कालक्षेप करेगी यह पुण्याधिकारणी रात्रि में स्वर्ग के विमान समान सुन्दर महिल में मनोहर सेज पर पौढ़ती और बीण बांसुरी मृदंगादि शब्द कर निद्रा लेती सो अब भयंकर बन में कैसे रात्रि पूर्ण करेगी बन तो डाभकी तीक्ष्ण अणियों कर विषम और सिंह व्याघ्रादिके शब्द कर डरावना देखो मेरी भूल जो मूढ़ लोकोंके अपवाद से मैं महा सती पतिव्रता शीलवंती सुन्दरी मधुर भाषिणी घरसे निकासी इस भांति चिंताके भारकर पीड़ित श्रीराम पवनकर कंपायमान कमल समान कंपायमान होते भये फिर केवलीके बचन चितार धीर्य धर आंसू पूंछ शोक रहित होय महा बिनयकर सीताको नमस्कार किया लक्ष्मण भी सौम्य है चित्त जिसका हाथ जोड़ नमस्कार कर राम सहित स्तुति करता भया हेभगवती धन्यतूं सती बन्दनीक है सुन्दर चेष्टा जिसकी जैसेधरा सुमेरु को धारे तैसें तू जिनराजका धर्म धारे है तैने जिन बचनरूप अमृत पिया उसकर भव रोग निवारेगी सम्यक्त ज्ञान रूप जहाजकर संसार समुद्र को तिरेगी जे पतिव्रता निर्मल चित्तकी धरणहारी हैं तिनकी यही गति है अपना आत्मा सुधारें और दोनों लोक और दोनों कुल सुधारें पवित्रचित्तकर ऐसी क्रिया आदरी हे उत्तम नियमकी धरणहारी हम जो कोई अपराध कियाहोय सो क्षमा करियो संसारी जीवों

के भाव अविवेक रूप होयहैं सो तू जिनमार्ग विषे प्रवरती संसारकी माया अनित्य जानी और परम आनन्द रूप यह दशा जीवों को दुर्लभ है इसभांति दोनों भाई जानकीकी स्तुति कर लव अंकुश को आगे धरे अनेक विद्याधर महीपाल तिन सहित अयोध्यामें प्रवेश करते भए जैसे देवों सहित इंद्र अमरावती में प्रवेश करें और समस्त राणी नाना प्रकार के वाहनों पर चढ़ी परिवारसहित नगरमें प्रवेश करती भई सो रामको नगरमें प्रवेश करता देख मंदिर ऊपर बैठी स्त्री परस्पर वार्ता करे हैं यह श्री रामचन्द्र महा शूरवीर शुद्धहे अन्तःकरण जिनका महा विवेकी मूढ़ लोकोंके अपवाद से ऐसी पतिव्रता नारी खोई तब कैयक कहती भई जे निर्मल कुलके जन्में शूरवीर क्षत्री हैं तिनकी यही रीतिहै किसी प्रकार कुलको कलंक न लगावें लोकोंके संदेह दूर करिबे निमित्त रामने उसको दिव्य दई वह निर्मल आत्मा दिव्य में सांची होय लोकोंके संदेह मेट जिन दीक्षा धारती भई और कोई कहैं हे सखि जानकी बिना राम कैसे दीखे हैं जैसे बिना चांदनी चांद और दीप्ति बिना सूर्य तब कोई कहती भई यह आप ही महा कांति धारी हैं इनकी कांति पराधीन नहीं और कोई कहती भई सीता का वज्रचित्त है जो ऐसे पुरुषोत्तम पति को छोड़ जिन दीक्षा धारी तब कोई कहती भई धन्य है सीता जो अनर्थरूप गृहवास को तज आत्म कल्याण किया और कोई कहती भई ऐसे सुकुमार दोनों कुमार महा धीर लव अंकुश कैसे तजे गए स्त्रीका प्रेम पतिसे छूटे परन्तु अपने जाए पुत्रों से न छूटे तब कोई कहती भई ये दोनों पुत्र परम प्रतापी हैं इनका माता क्या करेगी इनका सहाई पुण्य ही है और सबही जीव अपने अपने कर्म के आधीन हैं इस भांति नगर की नारी बचनालाप करें हैं जानकी की कथा कौनको आनन्द

कारिणी न होय और यह सबही रामके दर्शन की अभिलाषिनी राम को देखती देखती तृप्त न भई जैसे भ्रमर कमल के मकरन्द से तृप्त न होय और कैयक लक्ष्मणकी ओर देख कहती भई ये नरोत्तम नारायण लक्ष्मीवान अपने प्रतापकर वशकरी है पृथ्वी जिन्होंने चक्रके धारक उत्तमराज्य लक्ष्मीके स्वामी वैरियोंकी स्त्रियोंको विधवा करणहारे रामके आज्ञाकारी हैं इस भांति दोनों भाई लोक कर प्रशंसा योग्य अपने मन्दिर में प्रवेश करते भए जैसे देवेन्द्र देवलोक में प्रवेश करें। यह श्रीराम का चारित्र जो निरन्तर धारण करे सो अविनाशी लक्ष्मी को पावे ॥ इति एकसौ सातवां पर्व सम्पूर्णम् ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतमस्वामी के मुख श्रीराम का चारित्र सुन मन में विचारता भया कि सीता ने लव अंकुश पुत्रों से मोह तजा सो वह सुकुमार मृगनेत्र निरन्तर सुख के भोक्ता कैसे माता वियोग सहसके ऐसे पराक्रम के धारक उदारचित्त तिन को भी इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग होय है तो औरों की क्या बात यह विचार कर गणधर देव से पूछा, हे प्रभो मैं तुम्हारे प्रसादकर राम लक्ष्मणका चरित्र सुना अब बाकी लव अंकुश का सुना चाहूं हूं तब इन्द्रभूत कहिये गौतमस्वामी कहतेभए हे राजन् काकन्दी नाम नगरी उसमें राजारतिवर्द्धन राणी सुदर्शना उसके पुत्र दोय एक प्रियंकर दूजा हितंकर और मन्त्री सर्वगुप्त राज्यलक्ष्मी का धुरंधर सो स्वामीद्रोही राजाके मारिबे का उपाय चिन्तवे और सर्वगुप्त की स्त्री विजियावली सो पापिनी राजा सें भोग किया चाहे और राजा शीलवान परदारा पराङ्मुख इसकी माया में न आया, तब इसने राजा से कही मन्त्री तुम को मारा चाहे है सो राजाने इसकी बात न मानी तब यह पतिको भरमावती भई कि राजा तुझे मार मुझे लिया चाहे है तब मंत्री दुष्टने सब सामंत

राजाने फौरे और राजा का जो सोवने का महिल वहां रात्रि को अग्नि लगाई सो राजा सदा सावधान था और महिल में गोप सुरंग रखाई थी सो सुरंग के मार्ग होय दोनों पुत्र और स्त्री कोलेय राजा निकसा सो काशी का धनी राजा कश्यप महान्यायवान् उग्रवंशी राजा रतिवर्धन का सेवक था उसके नगर को राजा गोप्य चला और सर्वगुप्त रतिवर्धनके सिंहासनपर बैठा सबको आज्ञाकारी किए और राजा कश्यप को भी पत्र लिख दूत पठाया कि तुमभी आय मुझे प्रणाम कर सेवा करो, तब कश्यपने कही हे दूत सर्व गुप्त स्वामीद्रोही है सोदुर्गति के दुःख भोगेगा, स्वामीद्रोही का नाम न लीजे मुख न देखिये सो सेवा कैसे कीजे उस ने राजा को दोनों पुत्र और स्त्री सहित जलाया सो स्वामी घात स्त्रीघात और बाल घात यह महादोष उस ने उपार्जे इसलिये ऐसे पापी का सेवन कैसे करीये जिस का मुख न देखना तो सर्व लोकों के देखते उस का सिर काट धनी का बैर लूंगा, तब यह वचन कह दूत फेर दिया दूत ने जाय सर्वगुप्त को सर्व बृतांत कहा, सो अनेक राजावों कर युक्त महासेना सहित कश्यप ऊपर आया सो आयकर कश्यप का देश घेरा, काशी के चौगिर्द सेना पड़ी तथापि कश्यप के सुलह की इच्छा नहीं युद्ध ही का निश्चय, और राजा रतिवर्धन रात्रि के विषे काशी के बनमें आया और एक द्वार पाल तरुण कश्यप पर भेजा सो जाय कश्यपसे राजाके आवनेका बृतांत कहताभया सोकश्यपअति प्रसन्न भया और कहां महाराज कहां महाराज ऐसे वचन बारम्बार कहता भया, तब द्वारपालने कहा, महाराज बन में तिष्ठे हैं तब यह धर्मी स्वामी भक्त अतिहर्षित होय परिवार सहित राजापै गया और उसकी आरतीकरी और पांवपड़कर जय जयकार करता नगरमें लाया नगर उछाला और यह ध्वनि नगरमें विस्तरी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कि जो किसीसे न जीता जाय ऐसा रतिवर्धन राजेन्द्र जयवन्तहोवे राजा कश्यपने धनीके आवनेका अति उत्सव किया और सब सेना के सामन्तों को कहाय भेजा कि स्वामी तो विद्यमान तिष्ठे है और तुम स्वामीद्रोही के साथ होय स्वामीसे लड़ोगे क्या यह तुमको उचित है तब वह सकल सामंत सर्वगुप्तको छोड़ स्वामीपै आए और युद्ध में सर्वगुप्त को जीवता पकड़ काकंदीनगरीकाराज्य रतिवर्धनके हाथ में आया राजा जीवता बचा सो फिर जन्मोत्सव किया महादान किए सामंतोंके सनमान किए भगवान्की विशेष पूजा करी कश्यप का बहुत सन्मान किया अति बधाया और घरको बिदा किया सो कश्यप काशी के विषे लोकपालों की नांई रमें और सर्वगुप्त सर्वलोकनिन्द मृतक के तुल्य भया कोई भीटे नहीं मुख देखे नहीं, तब सर्वगुप्त ने अपनी स्त्री विजयावली का दोषसर्वत्र प्रकाशा कि इसने राजा बीच और मोबीच तफावत पाया यह बृतांत सुन विजियावली अति खेद को प्राप्त भई कि मैंने राजा की भई न धनी की भई सो मिथ्या तप कर राक्षसी भई, और राजा रतिबर्धन ने भोगों से उदासहोय सुभानुस्वामी के निकट मुनिब्रत धरे सो राक्षसी ने रतिवर्धन मुनिको अति उपसर्ग किए मुनि शुभोपयोग के प्रसाद से केवली भए और प्रियंकर हितंकर दोनों कुमार पहिले इसी नगर विषे बसुदेव नामा विप्र श्यामली स्त्री के बसुदेव की स्त्री विश्वा और सुदेव की स्त्री प्रियंगु इनका गृहस्थ पद प्रशंसा योग्य था इन श्री तिलक नाम मुनि को आहार दान दिया सो दान के प्रभाव कर दोनों भाई स्त्री सहित उत्तरकुरु भोगभूमि में उपजे तीनपल्यका आयुभया, लगघुका जो दान सोई भया वृक्ष उसके महाफल भोग भूमि में भोग दूजे स्वर्ग देव भए वहां सुख भोग चये सो सम्यग्ज्ञान रूप लक्ष्मी कर मंडित पाप कर्म के क्षय

For Private and Personal Use Only

करणहारे प्रियंकर हितंकर भये मुनि होय ग्रैवयक गये वहांसे चयकर लवणांकुश भये महाभव्य तद्भव मोक्षगामी और राजा रतिवर्धन की राणी सुदर्शना प्रियंकर हितंकर की माता पुत्रों में जिसका अत्यन्त अनुराग था सो भरतार और पुत्रोंके वियोग से अत्यन्त आर्तिरूप होय नानायोनियोंमें भ्रमणकर किसी एक जन्म विषे पुण्य उपार्ज यह सिद्धार्थ भया धर्म में अनुरागी सर्व विद्यामें निपुण सो पूर्व भव के स्नेहसे लवअंकुशको पढाए ऐसेनिपुणकिए जो देवों करभी न जीते जांय यह कथा गौतमस्वामीने राजा श्रेणिक से कही और आज्ञाकारी हे नृप कि यह संसार असार है और इस जीव के कौन२ माता पिता न भए जगत के सबही सबंध झूठे हैं एक धर्म ही का सम्बन्ध सत्य है इस लिए विवेकियों को धर्म ही का यत्न करना जिसकर संसार के दुःखों से छूटे समस्त कर्म महानिंद्य दुःखकी बृद्धि के कारण तिनको तज कर जैन का भाषा तपकर अनेक सूर्य्यकी कांति को जीत साधु शिवपुर कहिये मुक्ति गए। एकसौआठ०

अथानन्तर सीतापति और पुत्रों को तजकर कहां २ तप करती भई। सो सुनों कैसी है सीता लोकमें प्रसिद्ध है यश जिसका जिससमय सीता भई वह श्रीमुनि सुव्रतनाथजी का समय था वे बीसमें भगवान महाशोभायमान भवभ्रमके निवारण हारे जैसा अरहनाथ और मल्लिनाथका समय तैसामुनि सुव्रतनाथ का समय उस में श्री सकल भूषण केवली केवल ज्ञान कर लोक लोक के ज्ञाता बिहार करें हैं अनेक जीव महा व्रती अणुव्रती कीए सकल अयोध्या के लोक जिन धर्म में निपुण विधि पूर्वक गृहस्थ का धर्म आराधें सकल प्रजा भगवान सकलभूषणके वचन में श्रद्धावान जैसे चक्रवर्ती की आज्ञा को पालें तैसे भगवान् धर्म चक्री तिनकी आज्ञा भव्य जीवपालें राम का राज्य महाधर्म के उद्योतरूप जिस समय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घने लोक विवेकी साधु सेवा में तत्पर देखो जो सीता अपनी मनोग्यता कर देवांगनावों की शोभा को जीतती थी सो तपकर ऐसी हो गई मानों दग्ध भई माधुरी लता ही है महावैराग्य कर मण्डित अशुभ भाव कर रहित स्त्री पर्याय को अतिनिंदती महातप करती भई धूर कर धूसरे होय रहे हैं केश जिस के और स्नान रहित शरीरके संस्कार रहित पसेव कर युक्त गात्र जिस में रज आय पड़े सो शरीर मलिन होय रहा है बेला तेला पक्ष उपवास अनेक उपवास कर तनु क्षीण किया दोषटार शास्त्रोक्त पारणा करे शीलके गुण व्रतकेगुणोंमें अनुरागिणी अध्यात्म के विचार कर अत्यन्त शांत होयगया है चित्त जिसका वश कीये हैं इन्द्रिय जिसने औरों से न बने ऐसा उग्रतप करती भई मांस और रुधिर कर वर्जित भया है सर्व अंग जिसका प्रकट नजर आवे हैं अस्थि और नसा जाल जिसके मानों काठकी पुतली ही है सूकी नदी समान भासती भई बैठ गये हैं कपोल जिसके जूड़ा प्रमाण धरती देखती चलेमहादयावन्ती सौम्य है दृष्टि जिसकी तप का कारण देह उसके समाधान के अर्थ विधिपूर्वक भिक्षा वृत्ति कर आहार करे। ऐसा तप कीया कि शरीर और ही होगया अपना पराया कोई न जाने सो जो यह सीता है इसे ऐसा तप करती देख सकल आर्या इसही की कथाकरें इस ही की रीति देख और आदरें सबोंमें मुख्यभई इसभांति बासठ वर्ष महातप कीये और तेतीस दिन आयु के बाकी रहे तब अनशन व्रत धार परम आराधना आराध जमगुष्पादिकउच्छिष्ठमाथरेकोतजी तैसेशरीर कोतजकर अच्युतस्वर्ग में प्रतेन्द्रभई, गौतमस्वामी कहेहैं हे श्रेणिक जिनधर्मका माहात्म्य देखोजोयह प्राणिस्त्रीपर्यायविषे उपजीथीसोतपके प्रभावकर देवोंका प्रभु होय सीता अच्युत स्वर्ग विषे प्रतेन्द्र भई वहां मणियों की कांति कर उद्योत कीयाहै आकाश विषे जिसने ऐसे

For Private and Personal Use Only

विमान विषै उपजी विमान मणि कांचनादि महाद्रव्यों कर मण्डित विचित्रता धरे परम अद्भुत सुमेरु के शिखर समान ऊंचे हैं वहां परम ईश्वरता कर सम्पन्न प्रतेन्द्र भया हजारों देवांगना तिनके नेत्रों का आश्रय जैसा तारावों कर मण्डित चन्द्रमा सोहै तैसा सोहता भया. और भगवान की पूजा करता भया मध्यलोक में आय तीर्थों की यात्रा साधवों की सेवा करता भया और तीर्थंकरोंके समोसरण में गणधरों के मुख से धर्मश्रवण करताभया, यह कथा सुन गौतमस्वामी से राजा श्रेणिकने पूछी हे प्रभो सीताका जीव सोलमें स्वर्ग प्रतेन्द्र भया उस समय वहां इन्द्र कौन था तब गौतमस्वामी ने कही उस समय वहां राजा मधु का जीव इन्द्र था। उसके निकट यह प्रतेन्द्र भयासो वह मधुका जीव नेमिनाथ स्वामी के समय अच्युतेन्द्रपद से चय कर वासुदेव की रुक्मणी राणी ताके प्रद्युम्न पुत्र भयो और उस का भाई कैटभ जांबुवती के शंभु नाम पुत्र भया, तब श्रेणिक ने गौतमस्वामी से बेनती करी हे प्रभो मैं तुम्हारे वचन रूप अमृत पीवता पीवता तृप्त नहीं जैसे लोभी जीव धनसे तृप्त नहीं इसलिये मुझे मधुका और उसकेभाई कैटभका चरित्र कहो तब गणधर कहते भये। एक मगध नामा देश सर्व धान्य कर पूर्ण जहां चारों वर्ण हर्ष से बसें धर्म अर्थ काम मोक्ष के साधक अनेक पुरुष पाइयें और भगवान् के सुन्दर चैत्यालय और अनेकनगर ग्राम तिन कर वह देश शोभित जहां नदियों के तट गिरियों के शिखर वनमें ठौरठौर साधुवोंके संघ विराजें हैं राजा नित्योदित राज्यकरे उस देशमें एक शालि नाम ग्रामनगरसारिखा शोभितवहां एकब्राह्मण सोमदेव उसके स्त्री अग्निला पुत्र अग्निभूत वायुभूत सो वे दोनों भाई लौकिक शास्त्र में प्रवीण और पठन पाठन दान प्रतिग्रह में निपुण और कुल के तथा विद्या के गर्व कर गर्वित मनमें ऐसा जाने, हमसे अधिक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोई नहीं जिनधर्म से परांमुख रोग समान इन्दीयों के भोग तिन हीं को भले जाने एक दिन स्वामी नन्दीवर्धन अनेक मुनियों सहित बनमें आय विराजे बडे आचार्य्य अवधि ज्ञान कर समस्त मूर्तिक पदार्थों को जाने सो मुनियों का आगम सुन ग्राम के लोक सब दर्शन को आये थे और अग्निभूत वायु भूतने । किसीसे पूछी जो यह लोक कहां जायहैं तब उसने कही नन्दिवर्धन मुनि आये हैं । तिनके दर्शन जाय हैं तब सुनकर दोनों भाई क्रोधायमान भये जो हम बादकर साधुवोंको जीतेंगे तब इनको माता पिता ने मने किया जो तुम साधुवोंसे बाद न करो तथापि इन्होंने न मानी बादको गये तब इनको आचार्य के निकट जाते देख एक सात्विक नामा मुनि अवधिज्ञानी इनको पूछते भये तुम कहां जावो हो तब इन्होंने कही तुम में श्रेष्ठ तुम्हारा गुरु है उनको बादकर जीतवे जायहैं तब सात्विक मुनि ने कही हमसे चर्चा करो तब यह क्रोधकर मुनि के समीप बैठे और कही तुम क्या जानो हो तब मुनिने कही तुम कहां से आये तब वह क्रोधकर कहते भये यह तैं कहां पूछी हम ग्राम में से आये हैं । कोई शास्त्रकी चर्चा कर तब मुनिने कही यह तो हम जाने हैं तुम शालिग्राम से आये हो और तिहारे बापका नाम सोम-देव माताका नाम अग्निला और तुम्हारे नाम अग्निभूत तुम विप्रकुल हो सो यह तो प्रकटहै परन्तु हम तुम से यह पूछे हैं अनादिकालके भवन विषे भ्रमण करोहो सो इस जन्म विषे कौन जन्म से आये हो तब इन्होंने कही यह जन्मान्तरकी बात हमको पूछी सो और कोई जाने है तब मुनिने कही हम जाने हैं तुम सुनो पूर्वभव विषे तुम दोनों भाई इस ग्रामके बनमें परस्पर स्नेह के धारक स्याल थे विरूप मुख और इसी ग्राम विषे एक बहुत दिनका बासी पामर नामा पितहड ब्राह्मण सो यह क्षेत्र

For Private and Personal Use Only

में सूर्य अस्त समय क्षुधा कर पीडित नाडी आदि उपकरण तजकर आया और अंजनगिरि तुल्य मेघ माला उठी सात अहोरात्रका झड़ भया सो पामर तो घरते आय न सका और वे दोनों स्याल अतिक्षुधा तुर अन्धेरी रात्रिमें आहारको निकसे सो पामरके क्षेत्रमें भीजी नाडी कर्दमकर लिप्त पडीथी सो इन्होंने भक्षणकरी उसकर विकराल उदर वेदना उपजी स्याल मूवे अकाम निर्जराकर तुम सोमदेव के पुत्र भये और वह पामर सप्तदिन पीछे क्षेत्र आया सो दोनों स्याल मूए देख और नाडी कटी देख स्यालों की चर्म ले भाण्डी करी सो अब तक पामर के घरमें टिकी है और पामर मरकर पुत्र के घर पुत्र भया सो जातिस्मरण होय मौन पकड़ी जो मैं कहा कहों पिता तो मेरा पूर्वभव का पुत्र और माता पूर्व भव के पुत्र की वधू इसलिए न बोलनाही भला सो यह पामर का जीव मौनी यहांही बैठा है ऐसा कह मुनि पामर के जीव से बोले अहो तू पुत्रके पुत्र भया। सो यह आश्चर्य नहीं संसार का ऐसाही चरित्र है जैसे नृत्यके अखाडे में बहुरूपी अनेक रूपबनाय नाचे तैसे यह जीव नाना पर्य्यायरूप भेशधर नाचें है राजा रंक होय रंक से राजा होय स्वामी से सेवक सेवकसे स्वामी पिता से पुत्र पुत्र से पिता मातासे भार्या जो भार्यासे मात. यह संसार अरहट की घड़ी है। ऊपरली नीचे नीचली ऊपर, ऐसा संसार का स्वरूप जान हे वत्स अब तू गूंगापना तज वचनालाप कर इस जन्म का पिता है तासे पिता कह माता से माता कह पूर्व भव का व्यवहार रहा यह वचन सुन वह विप्र हर्ष कर रोमांच होय फूल गये हैं नेत्र जिस के मुनि को तीन प्रद-क्षिणा दय नमस्कार कर जैसे वृक्ष की जड उखड जाय और गिर पड़े तैसे पायन पड़ा। और मुनि को कहता भया हे प्रभो तुम सर्वज्ञ हो सकल लोक की व्यवस्था जानों हो इस भयानक संसार सागर में मैं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डूबूं था सो तुम दया कर निकासा आत्मबोध दिया । मेरे मन की सब जानी अब मुझे दीक्षा देवो ऐसा कह कर समस्त कुटुम्ब का त्याग कर मुनि भया यह पामर का चरित्र सुन अनेक लोक मुनि भये अनेक श्रावक भये और इन दोनों भाईयों की पूर्व भव की खाल लोक लेआये सो इन्होंने देखी लोकों ने हास्यकरी कि यह मांसक भक्षक स्याल थे सो यह दोनों भाई द्विज वड़े मूर्ख जो मुनियों से वाद करने आये थे ये महा मुनि तपोधन शुद्धभाव सबके गुरु अहिंसा महाव्रतके धारक इस समान और नहीं यह महामुनि महाव्रत रूप शिखाके धारक क्षमारूप यज्ञोपवीत धरें ध्यानरूप अग्निहोत्र के कर्ता महाशांत मुक्ति के साधन में तत्पर और जे सर्व आरम्भ विषे प्रवरते ब्रह्मचर्य रहित वे मुखसे कहे हैं कि हम द्विज हैं परन्तु क्रिया करें नहीं जैसे कोई मनुष्य इस लोकमें सिंह कहावे देव कहावे परंतु वह सिंह देव नहीं तैसे यह नाम मात्र ब्राह्मण कहावें परंतु इनमें ब्रह्मत्व नहीं और मुनिराज धन्य हैं परमसंयमी धीर क्षमावान तपस्वी जितेंद्री निश्चय थकी येही ब्राह्मण हैं ये साधु महाभद्र परणामी भगवत के भक्त महा तपस्वी यति धीरबीर मूल गुण उत्तर गुण के पालक इन समान और नहीं यह अलौकिक गुण लिये हैं। और इनही को परिब्राजक कहिये काहे से जो वह संसार को तज मुक्ति को प्राप्त होवें ये निग्रन्थ अज्ञान तिमिर के हर्ता तप कर कर्मकी निर्जरा करे हैं क्षीण किये हैं रागादिक जिन्हों ने महा क्षमावान पापों के नाशक इसलिये इनही को क्षमा कहिये यह संयमी कषाय रहित शरीरसे निर्मोह दिगम्बर योगीश्वरध्यानी ज्ञानी पंडित निस्पृह सोही सदावंदिवे योग्य हैं ये निर्वाणको साधें इसलिये साधु कहिये और पंच आचारको आप आचरें औरोंको आचरावें इस लिये आचार्य कहिये और आगार कहिए घर उसके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्यागी इसलिये अनागारकहिये शुद्ध भिक्षाके ग्राहक इसलिये भिक्षुककहिये अतिकायक्लेशकरें अशुभकर्म के त्यागी उज्ज्वल क्रियाके कर्ता तप करते खेद न माने इसलिये श्रमण कहिये आत्मस्वरूप को प्रत्यक्ष अनुभवें इसलिये मुनि कहिये रागादिक रोगोंके हरिबेका यत्न करें इसलिये यति कहिये इस भांति लोकों ने साधुकी स्तुति करी और इन दोनों भाइयोंकी निन्दा करी तब यह मानरहित प्रभा रहित विलखे होय घर गये रात्रिके विषे पापी मुनिके मारिबेको आए और वे सात्विक मुनि परिग्रही संघको तज अकेले मसान भूमि विषे अस्थ्यादिकसे दूर एकांत पवित्र भूमिमें विराजे थे कैसीहै वह भूमि जहां रीछ व्याघ्र आदि दुष्ट जीवोंका नाद होय रहाहै और राक्षस भूत पिशाचों कर भरीहै नागों का निवास है और अंधकाररूप भयंकर वहां शुद्ध शिला जीव जंतु रहित उसपर कायोत्सर्ग धर खड़े थे सो उन पापियों ने देखे दोनों भाई खडग काढ़ क्रोधायमान होय कहते भए जवतो तुझे लोकोंने बचाया अब कौन बचावेगा हम पंडित पृथिवी विषे श्रेष्ठ प्रत्यक्ष देवता तू निर्लज्ज हमको स्याल कहे यह शब्द कह दोनों अत्यन्त प्रचंड होंठ डसते लाल नेत्र दयारहित मुनिके मारिबे को उद्यमी भए तब बनका रक्षक यक्ष उसने देखे मनमें चितवता भया देखो ऐसे निर्दोष साधु ध्यानी कायासे निर्ममत्व तिनके मारिबे को उद्यमी भए तब यक्षने यह दोनों भाई कीले सो हल चल सके नहीं दोनों पसवारे खडे प्रभात भया सकल लोक आए देखें तो यह दोनों मुनिके पसवारे कीले खडे हैं और इनके हाथमें नांगी तलवारहै तब इनको सब लोक धिक्कार धिक्कार कहते भए यह दुराचारी पापी अन्याई ऐसा कर्म करनेको उद्यमी भए इन समान और पापी नहीं और यह दोनों चित्त में चितवते भये कि यह धर्म का प्रभाव है हम पापी

For Private and Personal Use Only

थे सो बलात्कार कीले स्थावर सम करडारे अब इस अवस्था से जीवते बचें तो श्रावग के ब्रतआदरें और उसही समय इनके माता पिता आए बारम्बारमुनिको प्रणामकर बिनती करते भए हेदेव यहकुपूत पुत्र हैं इन्होंने वहुत बुरी करी आप दयालु हो जीवदान देवो साधु बोले हमारे काहू से कोप नहीं हमारे सब मित्र बांधव हैं तब यक्ष लाल नेत्रकर अति गुंजार से बोला और सबों के समीप सर्व बृतांत कहा कि जो प्राणी साधुवों की निन्दा करें सो अनर्थको प्राप्त होवें जैसे निर्मल कांच विषे बांका मुख कर निरखे तो बांका ही दीखे तैसे जो साधुवोंको जैसा भावकर देखे तैसाही फल पावे जो मुनियों की हास्य करे सो बहुत दिन रुदन करे और कठोर बचन कहे सो क्लेश भोगवे और मुनिका घबकरे तो अनेक कुमरणपावे द्वेष करे सोपाप उपार्जे भव भव दुख भोगवे और जैसा करे तैसा फल पावे यक्ष कहे है हे विप्र तेरे पुत्रों के दोषकर मैं कीले हैं विद्या के मानकर गर्वितमायाचारी दुराचारी संयमीयोंके घातक हैं ऐसे बचन यक्षने कहे तब सोमदेव बिप्र हाथ जोड़ साधुकी स्तुति करता भया और रुदन करता भया आपको निंदता छाती कूटता ऊर्ध भुजाकर स्त्री सहित बिलाप करता भया तबमुनि परम दयालु यक्षको कहते भए हेसुन्दर हे कमलनेत्र यह बालबुद्धि हैं इन का अपराध तुम क्षमाकरो तुम जिनशासन के सेवक हो सदा जिनशासन की प्रभावना करोहो इस लिए मेरे कहे से इन से क्षमा करो तब यक्ष ने कही आप कहा सो ही प्रमाण वे दोनों भाई छोडे तब यह दोनों भाई मुनि को प्रदक्षिणा देय नमस्कार कर साधु का ब्रत धरिबे को असमर्थ इस लिये सम्यक् सहित श्रावक के ब्रत आदरते भए जिनधर्मकी श्रद्धा के धारक भए और इनके माता पिता ब्रतले छाड़ते भए सो वे तो अब्रतके योगसे पहिले नरकगए और यह दोनों विप्र पुत्र निसंदेहजिनशासन रूप अमृत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का पानकर हिंसा का मार्ग विषवत् तजते भए समाधिमरणकर पहिले स्वर्गउत्कृष्ट देव भए वहां से चय कर अयोध्या में समुद्र सेठ उसके धारणी स्त्री उसकी कुक्षिमें उपजे नेत्रोंकोआनन्दकारीएक का नामपूर्णभद्र दूजे का नामकांचनभद्र सोश्रावकके व्रत धार पहिले स्वर्गगए और ब्राह्मणके भवके इनके माता पिता पापके योग से नरक गए थे वे नरक से निकस चांडाल और कूकरी भए वे पूर्णभद्र और कांचनभद्र के उपदेश से जिनधर्म का आराधन करते भए समाधिमरणकर सोमदेव द्विज का जीव चाण्डाल से नन्दीश्वर द्वीपका अधिपति देव भया और अग्निलाब्राह्मणीका जीव कूकरी से अयोध्या केराजाकी पुत्री होय उस देवके उपदेशसे विवाह का त्याग कर आर्यिका होय उत्तम गति गई वे दोनों परम्पराय मोक्ष पावेंगे और पूर्णभद्रकांचनभद्र का जीव प्रथम स्वर्ग से चयकर अयोध्या का राजा हेम राणी अमरावती उसके मधुकैटभ नामापुत्र जगत्प्रसिद्ध भए जिनको कोई जीत न सके महाप्रबल महारूपवान जिन्होंने यह समस्तपृथिवी वशकरी सब राजा तिनके आधीन भए भीम नाम राजा गढके बलकर इनकी आज्ञा न माने जैसे चमरेन्द्र असुर कुमारों का इन्द्र नन्दनबन को पाय प्रफुल्लित होय है, तैसे वह अपने स्थानक के बल से प्रफुल्लित रहे और एक बीरसेन नाम राजा बटपुर का धनी मधुकैटभ का सेवक उसने मधुकैटभ को विनती पत्र लिखा हे प्रभो भीम रूप अग्नि ने मेरा देश रूप बन भस्म किया, तब मधु क्रोध कर बड़ी सेना से भीम ऊपर चढ़ा सो मार्ग में बटपुर जाय डेरा किए बीरसेन ने सन्मुख जाय अतिभक्ति कर मिहमानी करी उसके स्त्री चन्द्राभा चन्द्रमा समान है बदन जिसका सो बीरसेन मूर्खने उसके हाथ मधु का आरता कराया और उसहीके हाथ जिमाया चन्द्राभा ने पतिसे धनी ही कही जो अपने घर में सुन्दर वस्तु होय सो राजा को न

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिखाइये पतिने न मानी राजा मधु चन्द्राभा को देख मोहित भया मनमें विचारी इस सहित विन्ध्याचलके बन का बास भला और इसबिना सर्व भूमि का राज्य भी भला नहीं सो राजा अन्याय ऊपर आया तब मंत्री ने समझाया अबार यह बात करोगे तो कार्य सिद्ध न होयगा और राज्य भ्रष्ट होयगा तब राजा मन्त्रियों के कहेसे राजा बीरसेनको लारलेय भीम पर गया उसे युद्ध में जीत वशीभूत किया और और सब राजा वशकिए फिर अयोध्या आए चन्द्राभा के लेयबे का उपाय चिन्तया सर्वराजा बसंत की क्रीड़ा के अर्थ स्त्री सहित बुलाए और बीरसेनको चन्द्राभा सहित बुलाया. तबभी चन्द्राभाने कही कि मुझे मत लेचलो सो न मानी लेही आया, राजानेमास पर्यंत बनमें क्रीडा करी और राजा आए थे तिनको दान सनमान कर स्त्रियों सहित विदा किए और बीरसेनको कैयकदिन राखा और बीरसेनकोभी अतिदान सनमान कर बिदा किया और चन्द्राभाके निमित्त कही इनके निमित्त अद्भुत आभूषण बनवाये हैं सो अभी बन नहीं चुके हैं इसलिये इनको तिहारे पीछे विदा करेंगे सो वह भोला कछू समझे नहीं घरगया वाकेगए पीछे मधुने चन्द्राभाको महिलमें बुलाया अभिषेककर पटराणी पददिया सबराणियोंके ऊपरकरी भोगकर अंधभया है मन जिसका इसे राख आपको इन्द्र समान मानताभया और वीरसेन ने सुनी कि चन्द्राभा मधुने राखी तब पगलो होय कैयक दिन में मंडव नामा तापस का शिष्य होय पंचाग्नि तप करता भया और एक दिन राजा मधु न्याय के आसन बैठा सो एक परदारा रत का न्याय आया सो राजा न्यायमें बहुतबेर लग बैठ रहे फिर मन्दिर में गए तब चन्द्राभा ने कही महाराज आज घनी बेर क्यों लगी हम क्षुधा कर खेदखिन्न भई आप भोजन करो तो पीछे भोजन करें, तब राजा मधुने कही आज एक परनारीरतका न्याय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आयपड़ा इसलिये देर लगी तब चन्द्राभाने हंसकर कही जो परस्त्रीरत होय उसकी बहुत मानता करनी तब राजाने क्रोधकर कही तुम यह क्या कही जे दुष्ट व्यभिचारी हैं तिनका निग्रह करना जे परस्त्री का स्पर्श करें संभाषण करें वे पापी हैं सेवन करें तिनकी क्या बात जे ऐसे कर्म करें तिनको महादण्ड दे नगर से काढ़ने जे अन्याय मार्गी हैं वे महापापी नरक में पड़े हैं और राजावों के दण्ड योग्य हैं तिनका मान कहां, तब राणी चन्द्राभा राजाको कहती भई हे नृप कि यह परदारासेवन महा दोष है तो तुम आपको दण्ड क्यों न देवो तुमही परदारारत हो तो औरों को क्या दोष जैसा राजा तैसी प्रजा जहां राजा हिंसक होय और व्यभिचारी होय वहां न्याय कैसा इसलिये चुप होयरहो जिस जलकर बीज उगे और जगत् जीवे सो जलही जो जलायमारे तो और शीतल करणहारा कौन ऐसे उलाहना के वचन चन्द्राभा के सुन राजा कहता भया हे देवी तुम कहो हो सो ही सत्य है बारम्बार इसकी प्रशंसा करी और कहा मैं पापी लक्ष्मी रूप पाश कर बेढा विषय रूप कीच में फंसा अब इस दोष से कैसे छूटूं राजा ऐसा विचार करे है और अयोध्याके सहश्री नामा बन में महासंघ सहित सिंहपाद नामा मुनि आए राजा सुनकर रणवास सहित और लोकोंसहित मुनिके दर्शन को गया, विधिपूर्वक तीन प्रदक्षिणा देय प्रणाम कर भूमि में बैठा जिनेन्द्र का धर्म श्रवणकर भोगों से विरक्त होय मुनि भया और राणी चन्द्राभा बड़े राजा की बेटी रूपकर अतुल्य सो राज्य विभूति तज आर्यिका भई दुर्गति की वेदना का है अधिक भय जिसको और मधु का भाई कैटभ राजको बिनाशीक जान महा ब्रतधर मुनि भया दोनोंभाई महा तपस्वी पृथ्वी विषे बिहार करते भए और सकल स्वजन परजनके नेत्रोंको आनन्दका कारण मधुका पुत्र कुल

For Private and Personal Use Only

वर्धन अयोध्याका राज्य करता भया और मधु सैकड़ों बरस व्रतपाल दर्शन ज्ञान चारित्र तप एही चार आराधना आराध समाधिमरणकर सोलवां अच्युत नामा स्वर्ग वहां अच्युतेंन्द्र भया और कैटभ पंद्रमा आरण नामा स्वर्ग वहां आरणेंद्र भया गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक यह जिनशासनका प्रभाव जानों जो ऐसे अनाचारीभी अनाचारका त्यागकर अच्युतेंद्र पदपावें अथवा इन्द्र पदका कहां आश्चर्य जिन धर्मके प्रसादसे मोक्ष पावे मधुका जीव अच्युतेंद्रथा उसके समीप सीताका जीव प्रतेंद्र भया और मधु का जीव स्वर्गसे चयकर श्रीकृष्णकी रुक्मिणी राणीके प्रद्युम्न नामा पुत्र कामदेव होय मोक्ष लही और कैटभका जीव कृष्णकी जामवन्ती राणीके शंभुकुमार नामा पुत्र होय परम धामको प्राप्त भया यह मधूका व्याख्यान तुझे कहा अब हे श्रेणिक बुद्धिवन्तों के मनको प्रिय ऐसे लक्ष्मणके अष्ट पुत्र महा धीरवीर तिनका चरित्र पापोंका नाश करणहारा चित्तलगाय सुनो॥ इति १०६ वां पर्व संपूर्णम ॥

अथानन्तर कांचन स्थान नामा नगर वहां राजा कांचनरथ उसकी राणी शतह्रदा उसके पुत्री दोय अति रूपवन्ती रूपके गर्वकर महा गर्वितातिनकेस्वयंवरके अर्थ अनेक राजा भूचर खेचर तिनके पुत्र कन्याके पिता नेपत्रलिख दूत भेजे शीघ्रबुलाएसोदूत प्रथमही अयोध्या पठाया और पत्रमें लिखा मेरी पुत्रियोंकास्वयंवर है सो आप कृपाकरकुमारोंकोशीघ्रपठावोतबरामलक्ष्मणने प्रसन्नहोयपरमऋद्धियुक्तसर्वसुतपठाएदोनोंभाइयों के सकल कुमार लव अंकुशको अग्रेसर कर परस्पर महा प्रेमके भरे कांचनस्थानपुर को चले सैकड़ों विमानों में बैठे अनेक विद्याधर लार,रूपकर लक्ष्मीकर देवों सारिखे आकाशके मार्ग गमन करते भये सो बडी सना सहित आकाश से पृथिवी को देखते जावें कांचनस्थानपुर पहुंचे वहां दोनों श्रेणियोंके विद्या

धर राजकुमार आये थे सो यथा योग्य तिष्ठे जैसे इन्द्रकीसभामें नानाप्रकारके आभूषण पहिरे देव तिष्ठें और नन्दनबन में देव नानाप्रकारकी चेष्टा करें तैसे चेष्टा करते थे और वे दोनो कन्या मन्दाकिनी और चन्द्रवक्का मंगलस्नानकर सर्वआभूषण पहिरे निजबास से रथ चढ़ी निकसी मानों साक्षात लक्ष्मी और लज्जाही हैं महागुणोंकर पूर्ण तिनके खोजा लार था सो राजकुमारोंके देश कुल संपति गुणनाम चेष्टा सब कहता भया। और कही ये आए हैं तिनमें कई बानरध्वज कई सिंहध्वज कई वृषभध्वज कई गजध्वज इत्यादि अनेक भांति की ध्वजा को धरे महा पराक्रमी हैं इन में इच्छा होय सो वरो तबवह सबोंको देखती भई और यह सब राजकुमार उनको देखसंदेहकी तुला में आरूढ भये कि यहरूप गर्वित हैं न जानिये कौनको वरें ऐसी रूपवन्ती हम देखी नहीं मानो येदोनों समस्त देवीयों का रूप एकत्रकर बनाई हैं यह कामकी पताका लोकों को उन्मादका कारण इस भांति सब राजकुमार अपने २ मन में अभिलाषा रूप भए दोनों उन्मत्तकन्या लवअंकुश को देख कामबाण कर बेधी गई उनमें मन्दाकिनी नामा जो कन्या उस ने लवके कंठमें बरमाला डारा, और दूजी कन्या चन्द्रवक्का ने अंकुश के कण्ठ में वरमाला डारी तब समस्त राजकुमारों के मनरूप पक्षी तनुरूप पींजरे से उड़ गये और जे उत्तम जन थे तिन्होंने प्रशंसाकरी कि इन दोनों कन्यावों ने रामके दोनों पुत्रवरे सो नीके करी ये कन्या इनही योग्य हैं इस भांति सज्जनों के मुख से बाणी निकसी जे भले पुरुष हैं तिनका चित्त योगसम्बन्ध से आन्द को प्राप्त होय ॥

अथानन्तर लक्ष्मणकी विशल्या आदि आठ पटराणी तिनके पुत्र आठ महा सुन्दर उदार चित्त शूरवीर पृथिवी विषे प्रसिद्ध इन्द्रसमान सो अपने अढाईसे भाइयों सहित महा प्रीति युक्त तिष्ठते थे जैसे तारावों

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मैं ग्रह तिष्ठे सो आठ कुमारों विन और सबही भाई रामके पुत्रों पर क्रोध भये। जो हम नारायण के पुत्र कान्तिधारी कलाधारी नवयौवन लक्ष्मीवान बलवान सेनावान हम कौन गुण कर हीन जो इन कन्याओंने हमकोनवरा और सीताके पुत्र वरे ऐसा विचार करकोपित भये तब बडे भाई आठोंने इन को शांतिचित्त किये जैसे मंत्रकर सर्पको वश करिये तिनके समझानेसे सबही भाई लवअंकुशसे शांत चित्त भये और मन में विचारते भये जो इन कन्यावोंने हमारे बावा के बेटे बडे भाई वरे तब ये हमारी भावज सो माता समान है और स्त्री पर्याय महा निन्द्यहै स्त्रियोंकी अभिलाषा अविवेकी करें स्त्रियें स्वभाव ही से कुटिल है इसके अर्थ विवेकी विकार को न भजें जिन को आत्मकल्याण करना होय सो स्त्रियोंसे अपना मन फेरें इस भांति विचार सबही भाई शान्त चित्त भये पहिले सबही युद्धके उद्यमी भये थे रणके वादित्रोंका कोलाहल शंख झंझा भेरि झंझार इत्यादि अनेक जातिके वादित्र बाजने लगे थे और जैसे इन्द्रकी विभूति देख छोटे देव अभिलाषी होय तैसे ये स्वयंवरमें कन्यावोंके अभिलाषी भये थे सो बडे भाइयोंके उपदेशसे विवेकी भये आठों बडे भाइयों को वैराग्य उपजा सो विचारे हैं। यह स्थावर जंगमरूप जगतके जीव कर्मोंके विचित्रताके योगकर नानारूप हैं विनश्वरहैं जैसा जीवों के होन हारहै तैसाही होयहै जिसके जो प्राप्त होनी है सो अवश्य होयहै और भांति नहीं और लक्ष्मणकी रूपवती राणीका पुत्र हंसकर कहता भया। भो भ्रातः हो स्त्री क्या पदार्थ हैं। स्त्रियों से प्रेम करना महा मूढताहै विवेकियों को हांसी आवे है जो वह कामी क्या जान अनुराग करे हैं। इन दोनों भाइयों ने ये दोनों राणी पाई। सो कहा बड़ी वस्तु पाई जे जिनेश्वरी दीक्षा धरें वे धन्यहैं केलिके स्तंभसमान असार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काम भोग आत्माके शत्रु तिनके वश होय रति अरति मानना महामूढताहै विवेकियों को शोक भी न करना और हास्य भी न करनी ये सबही संसारी जीव कर्मके वश भूम जालमें पडेहैं ऐसा नहीं करें हैं जिसकर कर्मोंका नाश होय कोई विवेकी करे सोई सिद्धपद को प्राप्त होय इस गहन संसार वन विषे ये प्राणी निजपुरका मार्ग भूल रहे हैं ऐसा करें जिसकर भव दुख निवृत्ति होय हे भाई हो यह कर्म भूमि आर्यक्षेत्र मनुष्य देह उत्तम कुल हमने पाया सो एते दिन योंही खोये अब वीतराग का धर्म आराध मनुष्य देह सफल करो एक दिनमें बालक अवस्था विषे पिताकी गोदमें बैठाथा सो वे पुरुषोत्तम समस्त राजावोंको उपदेश देतेथे वे वस्तुका स्वरूप सुन्दर स्वर कहतेथे सो मै रुचिसों सुना चारों गति में मनुष्यगति दुर्लभहै सो जो मनुष्यभवपाय आत्महित न करे हैं सो ठगाएगए अज्ञान दानकर तो मिथ्यादृष्टि भोगभूमि जावें और सम्यग्दृष्टि दानकर तपकर स्वर्ग जांय परम्पराय मोक्ष जावें और शुद्धोपयोग रूप आत्मज्ञानकर यह जीव इस ही भव मोक्ष पावे और हिंसादिक पापोंकर दुर्गति लहे जो तप न करे सो भववन में भटके वारम्बार दुर्गति के दुख संकट पावें इस भांति विचार वे अष्टकुमार शूरवीर प्रतिबोध को प्राप्त भये संसारसागर के दुःख रूप भवोंसे डरे शीघ्र ही पिता पै गए प्रणाम कर विनय से खडे रहे और महा मधुर वचन हाथ जोड़ कहते भए हे तात हमारी विनती सुनो हम जैनेश्वरी दिक्षा अंगीकार किया चाहे हैं तुम आज्ञा देवो यह संसार विजुरी के चमत्कार समान अस्थिर है केलि के स्तम्भ समान असार है हम को अविनासी पुर के पन्थ चलते विघ्न न करो तुम दयालु हो कोई महा भाग्य के उदयसे हम को जिनमार्ग का ज्ञान भया अब ऐसा करें जिसकर भवसागर के पार पहुंचे ए काम भोग आशीविष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्प के फण समान भयंकर हैं परम दुःख के कारण हम दूरही से छोड़ा चाहे हैं इस जीवके कोई माता पिता पुत्र मित्र बांधव नहीं कोऊ इसका सहाई नहीं यह सदा कर्म के आधीन भव वन में भ्रमण करे है इस के कौन जीव कौन कौन संबंधी न भये हे तात हम सो तुम्हारा अत्यन्त वात्सल्य है और मातावों का है सो एही बन्धन है हमने तुम्हारे प्रसाद से बहुत दिन नाना प्रकार संसार के सुख भोगे निदान एक दिन हमारा तुम्हारा वियोग होयगा इस में संदेह नहीं इस जीवने अनेक भोग किए परन्तु तृप्त न भया ये भोग रोग समान हैं इन में अज्ञानी राचें और यह देह कुमित्र समान है जैसे कुमित्रको नाना प्रकार कर पोषिये परन्तु वह अपना नहीं तैसे यह देह अपना नहीं इस के अर्थ आत्मा का कार्य न करना यह विवेकियों का काम नहीं यह देह तो हमको तजेगी हम इस में प्रीति क्यों न तजें ये वचन पुत्रों के सुन लक्ष्मण परम स्नेह कर विह्वल होय गए इनको उर से लगाय मस्तक चूंब वारम्वार इन की ओर देखते भए और गदगद वाणी कर कहते भए हे पुत्र हो ये कैलाश के शिखर समान हेमरत्न ऊंचे महिल जिनके हजारां कनक के स्तम्भ तिन में निवास करो नानाप्रकार रत्नों से निरमाए हैं आंगन जिनके महा सुन्दर सर्वउपकरणों कर मंडित मलियागिरि चन्दनकी आवेहै सुगंध जहां उसकर भ्रमर गुञ्जार करे हैं और स्नानादिक की विधि जहां ऐसी मंजन शाला और सब संपति से भरे निर्मल है भूमि जिनकी इन महिलों में देवों समान क्रीड़ा करो और तुम्हारे सुन्दर स्त्री देवांगना समान दिव्यरूप की धरें शरद के पूनों के चन्द्रमा समान प्रजा जिनकी अनेक गुणोंकर मंडित वीण बांसुरी मृदंगादि अनेक वादित्र बजायवे विषे निपुण महासुकंठ सुन्दरस्त्री गायवे में निपुण नृत्यकी करण हारी जिनेंद्र

For Private and Personal Use Only

की कथा में अनुरागणी महापवित्रनः पवित्र तिन सहित वनउपवनगिरि नदियोंकेतट तथा निजभवनके उपवन वहां नाना विधि क्रीडा करते देवों कीन्याईं रमो हेवत्स हो ऐसे मनोहर सुखोंको तजकर जिन दीक्षाधर कैसे विषमवन और गिरिकेशिखर कैसेरहोगे मैं स्नेहकाभरा और तिहारी माता तुम्हारेशोक कर तप्तायमान तिनकोतजकर जानातुमको योग्यनहींकैयक दिनपृथिवीका राज्यकरो तब वेकुमार स्नेहकी वासना से रहित भयाहै चित्त जिनका संसारसे भयभीत इन्द्रियोंके सखसे पराङ्मुख महा उदार महा शूरवीर कुमार श्रेष्ठ आत्मतत्व में लगा है चित्त जिनका क्षण एक विचार कर कहते भए हे पिता इस संसार में हमारे माता पिता अनंत भए यह स्नेह का बंधन नरक का कारण है यह घर रूप पिंजरा पापारंभ का और दुःखों का बढ़ावनहारा है उसमें मूर्ख रति माने हैं ज्ञानी न मानें अब कभी देह संबंधी तथा मन संबंधी दुःख हम को न होय निश्चय से ऐसा ही उपाय करेंगे जो आत्मकल्याण न करें सो आत्मघाती हैं कदाचित् घर न तजे और मनमें ऐसा जाने मैं निर्दोष हूं मुझे पाप नहीं तो वह मलिन है पापी है जैसे सुफेद वस्त्र अंग के संयोग से मलिन होय तैसे घरके संयोग से गृहस्थी मलिन होय है, जे गृहस्थाश्रम में निवास करे हैं तिनके निरन्तर हिंसा आरंभकर पाप उपजे है इसलिये सत्पुरुषोंने गृहस्थाश्रम तजे और तुम हम सों कही कैयक दिन राज्य भोगो सो तुम ज्ञानवान् होयकर हमको अंधकूप में डारो हो जैसे तृषाकर आतुर मृग जल पीवें और उसे पारधी मारे तैसे भोगोंकर अतृप्त जो पुरुष उसे मृत्यु मारे है. जगत् के जीव विषय की अभिलाषा कर सदा आर्त्त ध्यानरूप पराधीन हैं जे काम सेवे हैं वे अज्ञानी विषहरणहारीजड़ी बिना आशा विष सर्प से क्रीडा करे हैं सो कैसे जीवे यह प्राणी मीन समान गृहरूप तालाब में वसते विषयरूप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांस के अभिलाषी रोगरूप लोह के आंकडे के रोगकर कालरूप धीवर के जालमें पडे हैं भगवान् श्री तीर्थंकर देव तीनलोक के ईश्वर सुरनर विद्याधरों कर वंदित यह ही उपदेश देतेभए कि यह जगत्‌के जीव अपने अपने उपार्जे कर्मों के वश हैं और इस जगत् को तजे सो कर्मों को हते इसलिये हे तात हमारे इष्ट संयोगके लोभकर पूर्णता न होवे यह संयोगसंबंध बिजरीके चमत्कारवत् चंचल हैं जे विचक्षणजन हैं वे इनसे अनुराग न करें और निश्चय सेती इस तनुसे और तनुके संबंधियों से वियोग होयगा सो इन में कहा प्रीति और महाक्लेशरूप यह संसार वन उसमें कहां निवास और यह मेरा प्यारा ऐसी बुद्धि जीवों के अज्ञान से है यह जीव सदा अकेला भव में भटके है गतिगति में गमन करता महादुखी है हे पिता हम संसार सागर में झकोला खाते अति खेदखिन्न भए कैसा है संसार सागर मिथ्याशास्त्ररूप है दुखदाई द्वीप जिसमें और मोहरूप हैं मगर जिसमें और शोक संतापरूप सिवानकर संयुक्त सो और दुर्जयरूप नदियोंकर पूरितहै और भ्रमणरूप भ्रमण के समूहकर भयंकरहै और अनेक आधिव्याधि उपाधिरूप कलोलोंकर युक्त है और कुभावरूप पातालकुण्डोंकर अगमहै और क्रोधादिकरभावरूपजलचरोंके समूहकर भराहै और वृथा बकवादरूप होयहै शब्द जहां और ममत्वरूप पवनकर उठे हैं विकल्परूपतरंग जहां और दुर्गतिरूपक्षार जलकर भरा है और महादुस्सहइष्टवियोग अनिष्ट संयोगरूपआतापसोई है वडवानलजहां, ऐसे भवसागर में हम अनादि काल के खेदखिन्न पडे हैं नानायोनि में भ्रमण करते अतिकष्ट से मनुष्य देह उत्तम कुल पाया है सो अब ऐसा करेंगे फिर भवभ्रमण न होय। सो सबसे मोह छुडाय आठोंकुमारमहाशूरवीर घररूप बन्दीखाने से निकसे उन महाभाग्योंके ऐसी वैराग्य बुद्धि उपजी जो तीनखंड का ईश्वरपणाजीर्ण

For Private and Personal Use Only

तृणवत् तजा वे विवेकी महेन्द्रोदय नामा उद्यानमें जायकर महाबलनामा मुनि के निकट दिगंबर भए सर्व आरंभ रहित अन्तर्बाह्य परिग्रह के त्यागी विधि पूर्वक ईर्य्या समति पालते विहार करते भए महा क्षमावान् इन्द्रियों के नग्न करणहारे विकल्प रहित निस्पृही परम योगी महाध्यानी बारह प्रकार के तप कर कर्म्मों को भस्म कर अध्यात्मयोग्य से शुभाशुभ भावों का निराकरण कर क्षीणकषाय होय केवल ज्ञान लह अनन्त सुख रूप सिद्ध पद को प्राप्त भए जगत् के प्रपंच से छूटे। गौतम गणधर राजा श्रेणिक से कहे हैं हे नृप यह अष्ट कुमारोंका मंगल रूप चरित्र जो विनयवान भक्तिकर पढ़े सुने उसके समस्त पाप क्षय जावें जैसे सूर्यकी प्रभाकर तिमिर विलाय जाय॥ इति ११०वां पर्व संपूर्ण ॥

अथानन्तर महावीर जिनेन्द्र के प्रथम गणधर मुनियों में मुख्य गौतमऋषि श्रेणिकसे भामंडल का चरित्र कहते भए हे श्रेणिक विद्याधरों की जो ईश्वरता सोई भई कुटिला स्त्री उसका विषम वासनारूप मिथ्या सुख सोई भया पुष्प उसके अनुराग रूप मकरंद विषे भामण्डलरूप भ्रमर आसक्त होता भया चित्तमें यह चितवे जो मैं जिनेंद्री दीक्षा धरूंगा तो मेरी स्त्रियोंका सौभाग्य रूप कमलों का बन सूक जायगा ये मेरेसे आसक्त चित्तहैं और इनके विरह कर मेरेप्राणों का वियोग होयगा मैं यह प्राण सुख से पाले हैं इसलिये कैयक दिन राज्यके सुख भोग कल्याणका कारण जो तप सो करूंगा यह काम भोग दुर्निवारहैं और इनकर पाप उपजेगा सो ध्यानरूप अग्निकर क्षणमात्रमें भस्मकरूंगाकोईयकदिनराज्य करूं बडी सेना राख जे मेरेशत्रुहैं तिनको राज्य रहित करूंगा वे खडगके धारी बडे सामंतमुझसे पराङ्मुख भये खडग कहिए गैंडा तिनके मानरूप खडग भंगकरूंगा और दक्षिण श्रेणी उत्तर श्रेणी विषे अपनी

आज्ञा मनाऊं और सुमेरु पर्वत आदि पर्वतों विषे मरकमणि आदि नाना जातिके रत्नोंकी निर्मल शिला तिनमें स्त्रियों सहित क्रीड़ा करूं इत्यादि मनके मनोरथ करता हुवा भामंडल सैकडों वर्ष एक महूर्तकी न्याईं व्यतीत करताभया यह किया यह करूं यह करूंगा ऐसा चितवन करता आयुका अन्त न जानता भया एक सतखणे महिलके ऊपर सुन्दर सेजपर पौढ़ाथा सो विजुरी पडी और तत्काल कालको प्राप्त भया, दीर्घ सूत्री मनुष्य अनेक विकल्प करें परन्तु आत्माके उद्धार का उपाय न करें तृष्णाकर हता चणमात्रमें भी साता न पावे मृत्यु सिरपर फिरे है उसकी सुध नहीं चणभंगुर सुख के निमित्त दुर्बुद्धि आत्महित न करें विषय बासनाकर लुब्ध भया अनेक भांति विकल्प करता रहे सो विकल्पकर्म बंधके कारणहैं धनयौबन जीतव्य सब अस्थिरहैं जो इनको अस्थिर जान सर्व परिग्रहका त्यागकरें आत्मकल्याणकरें सो भवसागरमें न डूबें और विषयाभिलाषी जीव भव भव विषेकष्ट सहें हजारों शास्त्र पढ़े और शांतता न उपजी तो क्या और एकही पद कर शांतदशा होय तो प्रशंसा योग्य है धर्म करिवे की इच्छा होय तो सदा करबो करे और करे नहीं सो कल्याणको न प्राप्त होय जैसे कटी पांखका काग उड कर आकाश विषे पहुंचा चाहे पर जाय न सके जो निर्वाणके उद्यम कर रहितहैं सो निर्वाण न पावे जो निरुद्यमी सिद्धपद पावें तो कौन काहेको मुनिव्रत आदरें जो गुरुके उत्तम बचन उरमें धार धर्म को उद्यमी होय सो कभी खेदखिन्न न होय जो गृहस्थ द्वारे आया साधु उसकी भक्ति न करे आहारादिक न दे सो अविवेकी है और गुरु के वचनसुन धर्मको न आदरे सो भव भ्रमण से न छूटे जो घने प्रमादी हैं और नाना प्रकारके अशुभ उद्यमकर व्याकुल हैं उसकी आयु बृथा जाय है जैसे हथेली में आया रत्न जाता रहे, ऐसा

जान समस्त लौकिककार्य को निरर्थक मान दुःखरूप इन्द्रियोंके सुख तिनको तजकर परलोक सुधारिवेके अर्थ जिनशासनमें श्रद्धाकरी, भामंडल मरकर पात्रदानके प्रभावसे उत्तमभोग भूमिगया॥ इति १११ वां पर्व॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण परस्पर महास्नेह के भरे प्रजा के पिता समान परम हितकारी तिन का राज्य विषे सुखसे समय व्यतीत होता भया, परमईश्वरता रूप अति सुन्दर राज्य सोई भया कमलों का बन उसमें क्रीडा करते वे पुरुषोत्तम पृथिवीको प्रमोद उपजावतेभए इनके सुखका वर्णन कहां तक करें ऋतुराज कहिए बसंतऋतु उसमें सुगंध वायु बहे कोयल बोलें भ्रमर गुंजार करें समस्त वनस्पति फूले मदोन्मत्तहोय समस्तलोक हर्षकेभरे शृङ्गारक्रीडाकरें मुनिराज विषमबनमें विराजें आत्म स्वरूपका ध्यानकरें उसऋतुमें रामलक्ष्मण रणवास सहित और समस्त लोकोंसहित रमणीक वनमें तथा उपवनमें नानाप्रकार रंगक्रीडा रागक्रीडा जलक्रीडा बनक्रीडा करतेभए और गृीष्मऋतुमें नदीसूकें दावानल समान ज्वालावरसे महामुनि गिरिके शिखर सूर्यके सन्मुख कायोत्सर्ग धर तिष्ठेंउसऋतुमें राम लक्ष्मण धारामंडप मांहलमें अथवा महारमणीक वनमें जहां अनेक जलयंत्र चन्दन कपूर आदि शीतल सुगंध सामिग्री वहां सुख से विराजे हैं चमर ढुरे हैं ताड़ के बीजना फिरे हैं निर्मल स्फटिककी शिलापर तिष्ठे हैं अगुरु चन्दन कर चर्चे जलकर तर ऐसे कमल दल तथा पुष्पों के सांथरेपर तिष्ठे, मनोहर निर्मल शीतल जल जिसमें लवंग इलायची कपूर अनेक सुगंध द्रव्य उनकर महा सुगंध उसका पान करते लतावोंके मंडपों में विराजते नानाप्रकार की सुन्दर कथा करते सारंग आदि अनेक राग सुनते सुन्दर स्त्रियों सहित उष्ण ऋतु को बलात्कार शीतकाल सम करते सुखसे पूर्ण करते भए, और वर्षाऋतु में योगीश्वर तरु तले तिष्ठते

महा तपकर अशुभ कर्म का क्षयकरे हैं विजुरी चमके हैं मेघकर अंधकार होयरहा है मयूर बोले हैं दाहा उपाड़ती महाशब्द करती नदी बहे हैं उसऋतु में दोनों भाई सुमेरु के शिखर समान ऊंचे नाना मणिमई जे महिल तिन में महाश्रेष्ठ रंगीले वस्त्र पहिरे केसरके रंगकर लिप्त है अंग जिनका और कृष्णागुरु का धूप खेय रहे हैं महासुन्दर स्त्रियों के नेत्र रूप भ्रमरों के कमल सारिखे इन्द्र समान क्रीडा करते सुख से तिष्ठे और शरद ऋतु में जल निर्मल होय चन्द्रमा की किरण उज्ज्वल होय कमल फूले हंस मनोहर शब्द करें मुनिराज वन पर्वत सरोवर नदीके तीर बैठेचिद्रूपका ध्यानकरें उसऋतु में रामलक्ष्मण राज लोकों सहित चांदनी के वस्त्र आभरण पहिरे सरिता सरोवर के तीर नानाविधि क्रीडा करते भए और शीत ऋतु में योगीश्वर धर्मध्यान को ध्यावते रात्रि में नदी तालावों के तट में जहां अति शीत पड़े बर्फ पड़े महा ठण्डी पवन बाजे वहां निश्चल तिष्ठे हैं महा प्रचंड शीतल पवन कर वृक्ष दाहे मारे हैं और सूर्य का तेज मन्द होयगया है ऐसी ऋतुमें राम लक्ष्मण महिलों के भीतरले चौबारों में तिष्ठते मनवांछित विलास करते सुन्दर स्त्रियों के समूह सहित वीण मृदंग बासुरी आदि अनेक वादित्रोंके शब्द कानों को अमृत समान श्रवण कर मनको आल्हाद उपजावते दोनों वीर महा धीर देवों समान और जिनके स्त्री देवांगना समान वाणी कर जीती है वीण की ध्वनि जिन्होंने महा पतिव्रता तिनकर आदरते पुण्य प्रभावसे सुखसे शीतकाल व्यतीत करते भये अद्भुत भोगोंकी संपदाकर मंडित वे पुरुषोत्तम प्रजा को आनन्दकारी दोनों भाई सुख से तिष्ठे हैं।

अथानन्तर गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक अब तू हनूमानका वृतान्त सुन हनूमान पवनका पुत्र

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्णकुण्डल नगर विषे पूर्व पुण्यके प्रभावसे देवोंके से सुख भोगवे जिसकी हजारों विद्याधर सेवा करें और उत्तम क्रियाका धारक स्त्रियों सहित परिवार सहित अपनी इच्छाकर पृथिवी में बिहारकरे श्रेष्ठ विमान विषे आरूढ़ परम ऋद्धिकर मंडित महा शोभायमान सुन्दर बनों में देवों समान क्रीड़ा करे सो बसंतका समय आया कामी जीवनको उन्माद का कारण और समस्त वृक्षों को प्रफुल्लित करणा हारा प्रिया और प्रीतमके प्रेमका बढ़ावनहारा सुगंध चले है पवन जिसमें ऐसे समय विषे अंजनी का पुत्र जिनेंद्रकी भक्ति विषे आरूढ़चित्त, अति हर्ष कर पूर्ण हजारों स्त्रियों सहित सुमेरु पर्वत को और चला हजारों विद्याधरहैं संग जिसके श्रेष्ठ विमान विषे चढ परम ऋद्धि कर संयुक्त मार्ग में बन विषे क्रीडा करते भए कैसे हैं बन शीतल मन्द सुगन्ध चले हैं पवन जहां नाना प्रकार के पुष्प और फलों कर शोभित वृक्ष हैं जहां देवांगना रमें हैं और कुलाचलोंके विषे सुन्दर सरोवरों कर युक्त अनेक मनोहर बन जिन विषे भ्रमर गुंजार करें हैं और कोयल बोल रही हैं और नाना प्रकारके पशु पक्षियों के युगल विचरें हैं जहां सर्व जातिके पत्र पुष्प फल शोभे हैं और रत्नोंकी ज्योतिकर उद्योतरूपहैं पर्वत जहां और नदी निर्मल जलकी भरी सुंन्दर हैं तट जिनके और सरोवर अति रमणीक नाना प्रकार के कमलोंके मकरंदकर रंग रूप होय रहाहै सुगंध जल जिनका और वापिका अति मनोहर जिन के रत्नोंके सिवाम्न और तटोंके निकट बडे बडे वृक्षहैं और नदीमें तरंग उठे हैं झागोंके समूहसहित महाशब्द करती बहे हैं जिनमें मगरमच्छ आदि जलचर क्रीडा करें हैं और दोनों तट विषे लहलहाट करते अनेक बन उपबन महा मनोहर विचित्रगति लिये शोभे हैं जिनमें क्रीड़ा करवेके सुंदर महिल और नाना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकार रत्नकर निर्मापे जिनेश्वरके मंदिर पापोंके हरणहारे अनेक हैं पवन पुत्र सुंदर स्त्रियोंकर सेवित परम उदय कर युक्त अनेक गिरियों विषे अकृत्रिम चैत्यालयों का दर्शनकर विमान विषे चढ़ा स्त्रियोंको पृथिवी की शोभा दिखावता अति प्रसन्नतासे स्त्रियोंसे कहे है हे प्रिये सुमेरु विषे अति रमणीक जिन मंदिर स्वर्ण रत्नमयी भासे हैं और इनके शिखर सूर्यसमान देदीप्यमान महामनोहर भासे हैं और गिरिकी गुफा तिनके मनोहरद्वार रत्नजड़ित शोभानाना रंगकी ज्योतिपरस्पर मिल रहीहै वहां अरति उपजे ही नहीं सुमेरु की भूमि तल विषे अतिरमणीक भद्रशालवनहै और सुमेरुकी कटि मेखला विषे विस्तीर्ण नंदन बन और सुमेरुके वक्षस्थलमें सौमनस वनहै जहां कल्प वृक्ष कल्पताओंसे वेढे सोहे हैं और नानाप्रकार रत्नों की शिला शोभितहैं और सुमेरुके शिखरमें पांडुक वनहै जहां जिनेश्वर देवका जन्मोत्सव होयहै इन चारोंही वनमें चार चार चैत्यालयहैं जहां निरंतर देव देवियों का आगम है यक्ष किन्नर गंधर्वों के संगीत कर नाद होय रहा है अप्सरा नृत्य करे हैं कल्पवृक्षों के पुष्प मनोहर हैं नानाप्रकार के मंगल द्रव्यकर पूर्ण यह भगवान्के अकृत्रिम चैत्यालय अनादि निधन हैं हे प्रिये पांडूक बन में परम अद्भुत जिनमंदिर सोहे हैं जिनके देखे मन हरा जाय, महाप्रज्वलित निधूमअग्निसमान संध्याके बादरोंकेरंग समानउगते सूर्य समान स्वर्णमई शोभे हैं समस्त उत्तम रत्नकर शोभित सुन्दराकार हजारों मोतियों की माला तिन कर मंडित महामनोहर हैं मालावों के मोती कैसे सोहे हैं मानों जल के बुदबुदाही हैं और घंटा झांझ मंजीरा मृदंग चमर तिनकर शोभित हैं चौगिरद कोट ऊंचे दरवाजे इत्यादि परम विभूति कर विराजमान हैं नाना रंगकी फरहरती ध्वजा स्वर्ण के स्तंभ कर देदीप्यमान इन अकृत्रिम चैत्यालयों की शोभा कहांलग

For Private and Personal Use Only

कहें जिनका संपूर्ण वर्णन इन्द्रादिक देवभी न कर सकें, हे कांते यह पांडूक बन के चैत्यालय मानों सुमेरु का मुकट ही है अति रमणीक हैं इसभांति महाराणी पटराणीयों से हनूमान वात करते जिनमन्दिरों की प्रशंसा करतेमंदिरके समीपआये विमानसे उतर महाहर्षितहोय प्रदक्षिणा दई वहां श्रीभगवान्के अकृत्रिम प्रतिबिंब सर्व अतिशय विराजमान महा ऐश्वर्यकर मंडित महा तेज पुञ्ज देदिप्यमान शरदके उज्ज्वल बादरे तिनमें जैसे चंद्रमा साहे तैसे सर्वलक्षण मंडित हनूमान हाथजोड़ रणवाससहित नमस्कार करता भया कैसा है हनूमान जैसे ग्रहतारावोंके मध्य चंद्रमा सोहे तैसा राजलोकके मध्य सोहे है जिनेन्द्र के दर्शनकरउपजा है अतिहर्ष जिसको सासंपूर्णस्त्रीजन अतिआनंदकोप्राप्तभई रोमांचहोयआये नेत्रप्रफुल्लितभए विद्याधरी परम भक्तिकर युक्त सर्व उपकरणों सहित परम चेष्टा की धरणहारी महा पवित्र कुल में उपजी देवांगनावों की न्याईं अति अनराग से देवाधि देवका विधिपूर्वक पूजा करती भई महापवित्र पद्मह्रद आदिक का जल और महा सुगंध चन्दन मुक्ताफलावों के अक्षत स्वर्ण मई कमल तथा पद्मराग मणि मई तथा चन्द-कांति मणि मई तिन कर पूजा करती भई और कल्पवृक्षों के पुष्प और अमृत रूप नैवेद्य और महाज्योति रूप रत्नोंके दीप चढ़ाए और मलयागिरि चन्दनआदि महासुगंध जिसकर दशोंदिशा सुगंधमई होयरही हैं और परमउज्ज्वल महाशीतल जल और अगुरुआदि महापवित्र द्रव्योंकर उदजा जो धूपसो खेवतीभई और महा पवित्र अमृत फल चढ़ावतीभई और रत्नोंके चूर्णकर मंडला मांडती भई महा मनोहर अष्टद्रव्यों से पतिसहित पूजा करतीभई हनूमान राणीसहित भगवान की पूजा करता कैसे सोहे है जैसा सौधर्म इन्द्र इन्द्राणी सहित पूजा करता सोहे कैसा है हनूमान जनेऊ पहिरे सर्व आभूषण पहिरे महीनवस्त्र पहिरे महा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पवित्र पापरहित वानर के चिन्हका है देदीप्यमान रत्नमई मुकट जिसके महाप्रमोदका भरा फूलरहे हैं नेत्र कमल जिसके सुन्दर है वदन जिसका पूजाकर पापों के नाश करणहारे स्तोत्र तिनकर सुर असुरों के गुरु जिनेश्वर तिनके प्रतिबिम्ब की स्तुति करता भया, सो पूजा करता और स्तुति करता इन्द्रकी अप्स-रावोंने देखा सो अतिप्रशंसा करती भई और यह प्रवीण वीण लेयकर जिनेन्द्रचन्द्रके यश गावता भया जे शुद्धचित्त जिनेन्द्र की पूजा में अनुरागी हैं सब कल्याण तिनके समीप हैं तिनको कछु ही दुर्लभ नहीं तिनका दर्शन मंगलरूप है उन जीवों ने अपना जन्म सुफल किया, जिन्होंने उत्तम मनुष्य देह पाय श्रावकके व्रत धर जिनवर में दृढ़ भक्ति धार अपने करमें कल्याण को धरा है, जन्मका फल तिन ही पाया हनूमान ने पूजा स्तुति वन्दनाकर वीणा बजाय अनेक राग गाय अद्भुत स्तुति करी यद्यपि भग-वानके दर्शनसे बिछुरनेका नहीं है मन जिसका तथापि चैत्यालयमें अधिक न रहे मतकोई आशातना लागे इसलिये जिनराज के चरण उरमें धर मन्दिर से बाहिर निकसा, विमानों में चढ़ हजारों स्त्रियों कर संयुक्त सुमेरु की प्रदक्षिणा दी, जैसे सूर्य्य देय तैसे श्रीशैल कहिए हनूमान सुन्दर हैं क्रिया जिसकी सो शैल राज कहिए सुमेरु उस की प्रदक्षिणा देय समस्त चैत्यालयों में दर्शन कर भरतक्षेत्र की ओर सन्मुख भया सो मार्ग में सूर्य्य अस्त होय गया और संध्या भी सूर्य के पीछे विलय गई कृष्णपक्ष की रात्रि सो तारा रूप बंधुवों कर मंडित चन्द्रमा रूप पति बिना न सोहती भई हनूमान ने तले उतर एक सुर दुन्दभी नामा पर्वत्त वहां सेना सहित रात्रि व्यतीत करी, कमल आदि अनेक सुगंध पुष्पों से स्पर्श पवन आई उस कर सेना के लोक सुखसे रहे जिनेश्वर देव की कथा करतो किए रात्रिको आकाश से देदीप्यमान एक

For Private and Personal Use Only

तारा टूटा सो हनमानने देखकर मन में विचारी हाय हाय इस संसारअसार वनमें देव भी कालवश हैं ऐसा कोई नहीं जो कालसे बचे बिजुरी का चमत्कार और जल की तरंग जैसे क्षणभंगुर हैं तैसे शरीर विनश्वर है इस संसारमें इस जीव ने अनन्त भव में दुःखही भोगे, यह जीव विषय के सुख को सुख माने है सो सुख नहीं दुःख ही है पराधीन है विषम क्षणभंगुर संसार में दुःखहीहै सुखनहीं अहोयह मोह का माहात्म्य है जो अनन्त काल जीव दुःख भोगता भ्रमण करे है अनन्तावसर्पणी काल भ्रमणकर मनुष्य देह कभी कोई पावे है सो पायकर धर्म के साधन बृथा खोवे है यह विनाशिक सुख में आसक्त होय महा संकट पावे है यह जीव रागादिक के बश भया वीतराग भाव को नहीं जाने है यह इन्द्रिय जैन मार्ग के आश्रय बिना न जीते जांय यह इन्द्री चंचल कुमार्ग के विषे लगायकर जीवों को इस भव परभव में दुःखदाई हैं जैसे मृग मीन और पक्षी लोभ के बश से बधिक के जाल में पड़े हैं तैसे यह कामी क्रोधी लोभी जीव जिन मार्ग को पाए बिना अज्ञान के बश से प्रपंच रूप पारधी के बिछाए विषय रूप जाल में पड़े हैं जो जीव आशाविष सर्प समान यह मन इन्द्री तिन के विषयों से रमें हैं सो मूढ़ अग्नि में जरे हैं जैसे कोई एकदिन राज्य कर बर्षदिन त्रास भोगवे तैसे यह मूढ़जीव अल्पदिन विषियों के सुख भोग अनन्त काल पर्यंत निगोद के दुःख भोगवे हैं जो विषय के सुख का अभिलाषी है सो दुःखों का अधिकारी है, नरकनिगोद के मूल यह विषय तिनको ज्ञानी न चाहे मोहरूप ठगका ठगा जो आत्म कल्याण न करे सो महा कष्ट को पावे जो पूर्वभव में धर्म उपार्जे मनुष्य देह पाय धर्मका आदर न करे सो जैसे धन ठगाय कोई दुखी होय तैसे दुखी होय है और देवों केभी भोगभोग यहजीव मरकर

देवसे एकेन्द्री होयहैं इसजीवके पाप शत्रु हैं और कोई शत्रु मित्र नहीं और यह भोग ही पाप के मल हैं इस से तृप्ति न होय, यह महा भयंकर हैं और इनका वियोग निश्चय होयगा यह रहने के नहीं जो मैं इस राज्य को और यह जोप्रियजन हैं तिनको तजकर तप न करूं तो अतृप्तभया सुभूमि चक्रवर्ती की नाई मरकर दुर्गति को जाऊंगा और यह मेरे स्त्री शोभायमान मृगनयनी सर्व मनोरथ की पूर्ण हारी पतिव्रता स्त्रियों के गुणों कर मंडित नवयौवन हैं सो अबतक मैं अज्ञान से इनको तज न सका सो मैं अपनी भूल को कहां तक उराहना दूं देखो मैं सागर पर्यंत स्वर्ग में अनेक देवांगना सहित रमा और देव से मनुष्य होय इस क्षेत्रमें भया सुन्दर स्त्रियों सहित रमा परन्तु तृप्त न भया जैसे ईंधन से अग्नि तृप्त न होय और नदियों से समुद्र तृप्त न होय तैसे यह प्राणी नाना प्रकार के विषय सुख तिन कर तृप्त न होय मैं नाना प्रकार के जन्म तिनमें भ्रमण कर खेद खिन्न भया रे मन अब तू शांतता को प्राप्तहोइ कहां व्याकुल होय रहा है क्या तैंने भयंकर नरकोंके दुःख न सुने जहां रौद्र ध्यानी हिंसक जीव जायहैं जिन नरकोंमें महातीव्र वेदना असिपत्र वन वैतरणी नदी संकट रूपहै सकल भूमि जहांरे मन तू नरकसे न डरे है रागद्वेष कर उपजे जे कर्म कलंक तिनको तपकर नाहि खिपावे है तेरेएते दिन योंही वृथा गए विषय सुखरूप कूपमें पड़ा अपने आत्माको भवपिंजरासे निकास पायाहै जिन मार्गमें बुद्धिका प्रकाश तैंने तू अनादिकालका संसार भ्रमणसे खेदखिन्न भया अब अनादिके बंधे आत्मा को छुड़ाय हनूमान ऐसा निश्चयकर संसार शरीर भोगोंसे उदास भया जाना है यथार्थ जिनशासनका रहस्य जिसने जैसे सूर्य मेघरूप पटलसे रहित महा तेजरूप भासे तैसे मोहपटलसे रहित भासताभया जिस मार्ग होय जिनवर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिद्धि पदको सिधारें उस मार्ग विषे चालिवेको उद्यमी भया ॥ इति एकसौ बारहवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर रात्रि व्यतीत भई सोला बानी के स्वर्ण समान सूर्य अपनी दीप्तिकर जगत विषे उद्योत करता भया जैसे साधु मोक्षमार्ग का उद्योत करे नक्षत्रोंके गण अस्तभए और सूर्यके उदयकर कमल फूले जैसे जिनराजके उद्योत कर भव्य जीव रूप कमल फूले हनूमान महा वैराग्यका भरा जगतके भोगोंसे विरक्त मंत्रियोंसे कहता भया जैसे भरत चक्रवर्ती पूर्व तपोवनको गए तैसे हम जावेंगे तब मंत्री प्रेमके भरे परम उद्वेगको प्राप्तहोय नाथसे विनती करते भए हे देव हमको अनाथ न करो प्रसन्न होवो हम तुम्हारे भक्तहैं हमारा प्रतिपालन करो तब हनूमानने कही तुम यद्यपि निश्चय कर मेरे आज्ञाकारी हो तथापि अनर्थके कारणहो हितके कारण नहीं जो संसार समुद्र से उतरे और उसे फिर सागर में डारे वे हितू कैसे निश्चय थकी उनको शत्रुही कहिए जब इस जीव ने नरकके निवास विषे महा दुःख भोगे तब माता पिता मित्र भाई कोई ही सहाई न भया यह दुर्लभ मनुष्य देह और जिनशासन का ज्ञान पाय बुद्धिवानों को प्रमाद करना उचित नहीं और जैसे राज्य के भोगसे मेरे अप्रीतिभई तैसे तुमसे भी भई यह कर्म जनित ठाठ सर्व विनाशिकहैं निसंदेह हमारा तुम्हारा वियोग होयगा जहां संयोगहै वहां वियोगहै सुर नर और इनके अधिपति इन्द्र नरेंद्र यह सबही अपने अपने कर्मोंके आधीन हैं कालरूप दावानल कर कौन कौन भस्म न भए मैं सागरापर्यंत अनेक भव देवोंके सुख भोगे परंतु तृप्त न भया जैसे सूके इन्धनकर अग्नि तृप्त न होय गति जाति शरीर इनका कारण नाम कर्म है जिसकर ये जीव गति गति विषे भ्रमण करे हैं सो मोहका बल महाबलवानहै जिसके उदयकर यह शरीर

For Private and Personal Use Only

उपजा है सो न रहेगा यह संसार बन महा विषम है जिस विषे ये प्राणी मोह को प्राप्त भये भवसंकट भोगे हैं उसे उलंघकर मैं जन्म जरा मृत्यु रहित जो पद वहां गया चाहूं हूं यह बात हनूमान मंत्रियों से कही सो रणवासकी स्त्रियों ने सुनी उसकर खेदखिन्न होय महारुदन करती भई ये समझाने विषे समर्थ सो उन को शांतचित्त करी कैसे हैं समझावन हारे नाना प्रकार के बृत्तांत विषे प्रवीण और हनुमान् निश्चल है चित्त जिस का सो अपने वडे पुत्र को राज्य देय और सबों को यथा योग्य विभूति देय रत्नों के समूह कर युक्त देवों के विमान समान जो अपना मंदिर उसे तज कर निकसा स्वर्ण रत्न मई देदीप्यमान जो पालकी उस पर चढ चैत्यवान् नामा बन वहां गया सो नगरके लोक हनुमानकी पालिकी देख सजल नेत्र भये पालिकी पर ध्वजा फर हरे हैं चमरों कर शोभित है मोतीयोंकी झालरीयों कर मनोहर है हनुमान बन विषे आया। सो बन नाना प्रकार के बृक्षों कर मण्डित और जहां सूवा मैना मयूर हंस कोयल भ्रमर सुन्दर शब्द करे हैं और नाना प्रकार के पुष्पों कर सुगन्ध है वहां स्वामी धर्मरत्न संयमी धर्मरूप रत्न की राशि उत्तम योगीश्वर जिन के दर्शन से पाप विलाय जावे ऐसे सन्त चारण मुनि अनेक चारण मुनियों कर मण्डित तिष्ठते थे आकाश विषे है गमन जिनका सो दूर से उन को देख हनुमान पालकी से उतरा महा भक्ति कर युक्त नमस्कार कर हाथ जोड कहता भया, हे नाथ मैं शरीरादिक परद्रव्यों से निर्ममत्व भया यह परमेश्वरी दीक्षा आप मुझे कृपाकर देवो तब मुनि कहते भये अहो भव्य तैंने भली विचारी तू उत्तमजन है जिनदीक्षा लेवो यह जगत असार है शरीर विनश्वर है शीघ्र आत्म कल्यण करो अविनश्वर पद लेयवे की परम कल्याणकारणी बुद्धि तुम्हारे उपजी है यह बुद्धि विवेकी जीव के ही उपजे है

ऐसी मुनि की आज्ञा पाय मुनि को प्रणाम कर पद्मासन धर तिष्ठा मुकट कुण्डल हार आदि सर्व आभूषण डारे और वस्त्र डारे जगत से मनका राग निवारा, स्त्रीरूप बन्धनतुडाय ममतामोह मिटाय आप को स्नेह रूप पाश सेछुडाय विष समान विषय सुख तज कर बैराग्य रूप दीपक की शिखा कर राग रूप अन्धकार निवारकर शरीर और संसारको आसार जान कमलों को जीते ऐसे सुकमार जेकर तिनकर सिरके केश लौंच करताभया समस्त परिग्रह से रहित होय मोक्षलक्ष्मी को उद्यमीभया महाव्रत धरे असंयम पर हरे हनूमान् की लार साडा सात सौ बडे राजा विद्याधर शुद्धचित्त विद्युद्गति को आदि दे हनमानकेपरममित्र अपने पुत्रों को राज्य देय अठाईसमूल गुण धार योगीन्द्र भये । और हनूमान की राणी और इन राजाओं की राणी प्रथम तो वियोग रूप अग्नि कर तप्तायमान विलाप करती भई फिर बैराग्य को प्राप्त होयवन्धु मति नामा आर्यिका के समीप जाय महाभक्ति कर संयुक्त नमस्कारकर आर्यिकाके व्रत धारती भई वेमहा बुद्धिवन्ती शीलवन्ती भव भ्रमण के भयसे आभूषण डार एक सुफेद वस्त्र राखती भई शीलही है आभूषण जिनके तिन को राज्यविभूति जीर्ण तृणसमान भासती भई और हनूमान महा बुद्धिमान महातपोधन महापुरुषसंसारसे अत्यन्त विरक्त पंचमहाव्रत पञ्चसमिति तीन गुप्तिधार शैल कहिये पर्वत उससे भी अधिक श्रीशैल कहिये हनूमान राजा पवन के पुत्र चारित्र विषे अचल होते भये तिनका यश निर्मल इन्द्रादिक देव गावें बारम्बार बन्दना करे और बडे बडे राजा कीर्ति करें निर्मल है आचरण जिन का ऐसा सर्वज्ञ बीतराग देव का भाषा निर्मल धर्म आचार सो भवसागर के पार भया वे हनमान महा मुनि पुरुषों में सूर्य्य समान तेजस्वी जिनेन्द्रदेव का धर्म आराध ध्यान अग्नि कर अष्ट कर्म की समस्त प्रकृति इन्धन रूप तिनको भस्म कर तुङ्गिगिरि

के शिखरसे सिद्ध भये। केवल ज्ञान केवलदर्शनआदि अनन्त गुणमईसदा सिद्ध लोक में रहेंगे॥ इति ११३पर्व
अथानन्तर श्रीराम सिंहासनपर विराज थे लक्ष्मणके आठों पुत्रोंका और हनूमानका मुनि होना मनुष्यों के मुखसे सुनकर हंसे और कहते भए इन्होंने मनुष्य भवके क्या सुख भोगे यह छोटी अवस्थामें ऐसे भोग तजकर योग धारण करें हैं सो बडा आश्चर्य है यह हठ रूप ग्राहकर ग्रहे हैं देखो ऐसे मनोहर काम भोग तज विरक्त होय बैठे हैं इस भांति कही यद्यपि श्रीराम सम्यकदृष्टि ज्ञानी हैं तथापि चारित्र मोहके वश कईएक दिन लोकोंकी न्याईं जगत विषे रहते भये संसारके अल्पसुख तिन विषें रामलक्ष्मण न्याय सहित राज्य करते भये एक दिन महा ज्योतिका धारक सौधर्म इन्द्र परम ऋद्धिकर युक्त महा धीर्य और गम्भीरताकर मंडित नाना अलंकार धरे सामान्य जातिके देव जे गुरुजन तुल्य और लोक पाल जातिके देव देशपाल तुल्य और त्रयस्त्रिंशत जातिके देव मन्त्री समान तिनकर मंडित तथा और सकल देव सहित इन्द्रासन विषे बैठे कैसे सोहैं जैसे सुमेरु पर्वत और पर्वतों के मध्य सोहैं महा तेज पुंज अद्भुत रत्नों का सिंहासन उसपर सुख से विराजता ऐसा भासे जैसे सुमेरु के ऊपर जिन राज भासे। चन्द्रमा और सूर्यकी ज्योति को जीते ऐसे रत्नोंके आभूषण पहिरे सुन्दर शरीर मनोहर रूप नेत्रों के आनन्दकारी जैसी जल की तरंग निर्मल तैसी प्रभा कर युक्त हार पहिरे ऐसा सोहे मानों शीतोदा नदी के प्रवाह कर युक्त निषध्याचल पर्वत ही है मुकट कंठाभरण कुण्डल केयूर आदि उत्तम आभूषण पहिरे देवों कर मंडित जैसा नक्षत्रों कर चन्द्रमा सोहे तैसा सोहे है अपने मनुष्य लोक में चन्द्रमा नक्षत्र ही भासे इस लिये चन्द्रमा नक्षत्रोंका दृष्टान्त दियाहै चन्द्रमा नक्षत्र

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्योतिषी देव हैं तिन से स्वर्ग वासी देवों की ज्योति अधिक ज्योति है और सब देवों से इन्द्र की महा अधिक है अपने तेजकर दशों दिशा विषे उद्योत करता सिंहासन विषे तिष्ठता जैसा जिनेश्वर भासे तैसा भासे इंद्रके इंद्रासन का और सभा का जो समस्त मनुष्य सहस्र जिह्वा कर सैकड़ों वर्ष लग वर्णन करें तौभी न कर सके सभा में इंद्र के निकट लोकपाल सब देवों में मुख्य हैं सुन्दर है चित्त जिनके स्वर्ग से चय कर मनुष्य होय मुक्ति जावें हैं सोलहस्वर्ग के बारह इन्द्र हैं एकएक इंद्र के चारचार लोकपाल एक भवधारी हैं और इंद्रों में सौधर्म सनत्कुमार महेन्द्र लांतवेन्द्र सत्येन्द्र आरणेंद्र यह षट् एकभवधारी हैं और शची इन्द्राणी लौकांतिक देव पंचम स्वर्ग के तथा सर्वार्थसिद्धि के अहिमिन्द्र मनुष्य होय मोक्ष जावे हैं सो सौधर्मइन्द्र अपनी सभा में अपने समस्त देवों कर युक्त बैठा लोकपाला-दिक आनेअपने स्थानक बैठे सो इन्द्रशास्त्रका व्याख्यानकरते भए वहां प्रसंग पाय यह कथन किया अहो देवो तुम अपने भाव रूप पुष्प निरन्तर महा भक्ति कर अर्हंत देव को चढ़ावो अर्हंतदेव जगत् का नाथ है समस्त दोष रूप वन के भस्म करिवे को दावानल समान है जिसने संसार का कारण मोहरूप महा असुर अत्यन्त दुर्जय ज्ञान कर मारा, वह असुर जीवों का बड़ा बैरी निर्विकल्प सुख का नाशक है और भगवान् वीतराग भव्य जीवों को संसार समुद्र से तारिवे समर्थ हैं संसार समुद्र कषाय रूप उग्र तरंग कर व्या-कुल है काम रूपग्राह कर चंचलता रूप मोह रूप मगर कर मृत्यु रूप है ऐसे भवसागर से भगवान् विना कोई तारिवे समर्थ नहीं कैसे हैं भगवान् जिनको जन्म कल्याणक विषे इन्द्रादिक देव सुमेरुगिरि ऊपर क्षीरसागर के जल कर अभिषेक करावे हैं और महा भक्ति कर एकाग्रचित्त, होय पारिवार

For Private and Personal Use Only

सहित पूजा करे हैं धर्म अर्थ काम मोक्ष यह चारों पुरुषार्थ हैं तिन विषे लगा है चित्त जिनका जिनेंद्रदेव पृथिवी रूप स्त्री को तजकर सिद्ध रूप बनिता को बरते भए कैसी है पृथिवी रूप स्त्री बिन्ध्याचल और कैलाश हैं कुच जिस के और समुद्र की तरंग हैं कटिमेखला जिसके ये जीव अनाथ महा मोह रूप अंधकार कर आछादित तिनको वे प्रभु स्वर्ग लोकसे मनुष्य लोक विषे जन्म धर भवसागरसे पार करते भए अपने अद्भुतानन्तवीर्य कर आठों कर्मरूप वैरी क्षणमात्र में खिपाए जैसे सिंह मदोन्मत्त हस्तियों को नसावे भगवान सर्वज्ञदेव को अनेक नामकर भव्यजीव गावे हैं जिनेंद्र भगवान अर्हंत स्वयंभू शंभु स्वयंप्रभ सुगत शिवस्थान महादेव कालजर हिरण्यगर्भ देवाधिदेव ईश्वर महेश्वर ब्रह्मा विष्णु बुद्ध बीतराग विमल विपुलप्रबल धर्म चक्री प्रभु विभु परमेश्वर परमज्योति परमात्मा तीर्थंकर कृतकृत्य कृपालु संसार सूदन सुर ज्ञान चक्षु भवांतक इत्यादि अपार नाम योगीश्वर गावें हैं और इंद्रधरणीन्द्र चक्रवर्ती भक्ति कर स्तुति करे हैं जो गोप्य हैं और प्रकट हैं जिनके नाम सकल अर्थ संयुक्त हैं जिनके प्रसाद कर यह जीव कर्म से छूट कर परम धामको प्राप्त होय है जैसा जीवका स्वभाव है तैसा वहां रहे है जो स्मरण करें उसके पाप विलय जांय वह भगवान पुराण पुरुषोत्तम परम उत्कृष्ट आनन्द की उत्पत्ति का कारण महा कल्याण का मूल देवों के देव उनके तुम भक्त होवो अपना कल्याण चाहो हो तो अपने हृदय कमलमें जिनराजको पधरावो, यह जीव अनादि निधनहै कर्मोंका प्रेरा भव बनमें भटके है सर्व जन्ममें मनुष्य भव दुर्लभहै सो मनुष्य जन्म पायकर जे भूले हैं तिनको धिक्कार है चतुर्गति रूपहै भ्रमण जिस विषे ऐसा संसाररूप समुद्र उसमें फिर कब बोध पावोगे जे अर्हंतका ध्यान नहीं करे

हैं अहो धिक्कार उनको जे मनुष्य देह पाय कर जिनेन्द्रको न जपे हैं जिनेंद्र कर्म रूप वैरीका नाश करणहारा उसे भूल पापी नाना योनिमें भ्रमण करे हैं कभी मिथ्या तपकर क्षुद्र देव होयहैं फिर मरकर स्थावर योनिमें जाय महा कष्ट भोगे हैं यह जीव कुमार्गके आश्रयकर महा मोहके वशभए इन्द्रोंका इंद्र जो जिनेंद्र उसे नहीं ध्यावें हैं देखो मनुष्य होयकर मूर्ख विषयरूप मांसके लोभी मोहिनी कर्मके योग कर अहंकार ममकारको प्राप्त होयहैं जिनदीक्षा नहीं धरे हैं मन्दभागियों को जिन दीक्षा दुर्लभ है कभी कुतपकर मिथ्या दृष्टि स्वर्ग में आन उपजे हैं सो हीन देव होय पश्चात्ताप करे हैं कि हम मध्य लोक रत्नद्वीप विषे मनुष्य भए थे सो अर्हंतकामार्ग न जाना अपना कल्याण न किया मिथ्या तपकर कुदेव भए हाय हाय धिक्कार उनपापियोंको जो कुशास्त्रकी प्ररूपणाकर मिथ्या उपदेशदेय महा मानके भरे जीवों को कुमार्गमें डारे हैं मूढ़ोंको जिनधर्म दुर्लभ है इस लिये भव भवमें दुःखी होयहैं और नारकी तिर्यंचतो दुखी हो हैं और हीन देव भी दुखी ही हैं और बड़ी ऋद्धिके धारी देव भी स्वर्ग से चये हैं सो मरण का बड़ा दुःख है और इष्ट वियोग का बड़ा दुःख है बड़ेदेवोंकी भी यह दशा तो और क्षुद्रों की क्या बात जो मनुष्य देह में ज्ञान पाय आत्म कल्याण करे हैं सो धन्य हैं इन्द्र इसभांति कहकर फिर कहता भया ऐसा दिन कब होय जो मेरी स्वर्ग लोक में स्थिति पूर्ण होय और मैं मनुष्य देह पाय विषय रूप वैरियों को जीत कर्मों का नाश कर तप के प्रभाव से मुक्ति पाऊं तब एक देव कहता भया यहां स्वर्ग में तो अपनी यही बुद्धि होय है परन्तु मनुष्य देह पाय भूल जाय हैं जो कदाचित् मेरे कहेकी प्रतीति न करो तो पांचमें स्वर्ग का ब्रह्मेन्द्रनामा इन्द्र अब रामचन्द्र भया है सो यहां तो योंही कहते थे और अब वैराग्यका विचार ही

नहीं तब शची का पति सौधर्मइन्द्र कहता भया सब बंधन में स्नेह का बड़ा बन्धन है जो हाथ पग कंठ आदि अंग अंग बंधा होय सो तो छूटे परन्तु स्नेह रूप बंधन कर बंधा कैसे छूटे स्नेह का बंधा एक अंगुल न जायसके रामचन्द्र के लक्ष्मणसे अतिअनुराग है लक्ष्मण के देखेबिना तृप्ति नहीं अपने जीव से भी उसे अधिक जाने हैं एक निमिष मात्र भी लक्ष्मणको न देखें तो रामका मन विकल्प होय जान सो लक्ष्मणको तजकर कैसे वैराग्य को प्राप्त होंय कर्मों की ऐसी ही चेष्टा है जो बुद्धिमान् भी मूर्ख होय जाय हैं, देखोसुने हैं अपने सर्व भव जिसनेऐसा विवेकी राम भी आत्महित न करे अहो देव हो जीवोंकेस्नेह का बड़ा बन्धन है इस समान और नहीं इसलिये सुबुद्धियों को स्नेह तज संसारसागर तरिवे का यत्न करना चाहिये, इसभांति इन्द्रके मुखका उपदेश तत्वज्ञानरूप और जिनवरके गुणोंकेअनुराग से अत्यंत पवित्र उसे सुनकर देव चित्त की विशुद्धता को पाय जन्म जरा मरण के भय से कंपायमान भए मनुष्य होय मुक्ति पायबे की अभिलाषा करते भए ॥ इति ११४ एकसौ चौदवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर इन्द्र सभा से उठे तब सुर कहिए कल्पवासी देव और असुर कहिए भवनवासी वितर ज्योतिषीदेव इन्द्रको नमस्कार कर उत्तम भावधर अपने अपने स्थानकगए, पहिले दूजे स्वर्ग लग भवन वासी वितर ज्योतिषी देव कल्पवासीदेवोंकर लेगए जाय हैं सो सभा में के दो स्वर्ग वासी देव रत्न चूल औरमृगचूल बलभद्रनारायणके स्नेह परखिबे को उद्यमी भए, मन में यह धारणा करी वे दोनों भाई परस्पर प्रेम के भरे कहिए हैं देखें उन दोनों की प्रीति राम के लक्ष्मण से ऐसा स्नेह है जिस के देखे बिना न रहे सो राम का मरण सुने लक्ष्मण की क्या चेष्टा होय लक्ष्मण शोक कर विह्वल भया क्या

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चेष्टा करे सो क्षणएक देख कर आवगे शोक कर लक्ष्मण का कैसा मुख हाजाय कौन से कोप करे क्या कहे ऐसी धारणा कर दोनों दुराचारी देव अयोध्या आए सो राम के महिल में विक्रिया कर समस्त अन्तहपुर की स्त्रियों का रुदन शब्द कराया और ऐसी विक्रिया करी द्वारपाल उमराव मंत्री पुरोहित आदि नीचामुख कर लक्ष्मणपै आए और रामका मरणकहते भए, कि हेनाथ रामपरलोक पधारे ऐसेवचनसुनकर लक्ष्मणने मन्दपवन करचपल जो नील कमलउस समानसुन्दर हैं नेत्र जिसके सो हायहायशब्दको आधा सा कह तत्काल ही प्राण तजे, सिंहासन ऊपर बैठा था सो वचन रूप वज्रपात कर मारा जीव रहित होय गया आंख की पलक ज्यों थी त्यों ही रहगई जीव जाता रहा शरीर अचेतन रह गया लक्ष्मण को भ्राता की मिथ्या मृत्यु रूप वचन रूप अग्नि कर जरा देख दोनों देव व्याकुल भए लक्ष्मण के जिवायबे को असमर्थ तब विचारी इसकी मृत्यु इसही विधि कही थी मन में अति पछताए विषाद और आश्चर्य के भरे अपने स्थानक गए शोक रूप अग्नि कर तप्तायमान है चित्त जिनका लक्ष्मण की वह मनोहर मूर्ति मृतक भई देव देख नसके वहां खड़े न रहे निन्द्य है उद्यमजिनका। गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे राजन् बिना विचारे जे पापी कार्य करें तिनको पश्चात्ताप ही होय देवता गए और लक्ष्मण की स्त्री पति को अचेतन रूप देख प्रसन्न करने कोउद्यमी भई कहे हैं हे नाथ किस अविवेकिनी सौभाग्य के गर्व कर गर्वित ने आप का मान न किया सो उचित न करी हे देव आप प्रसन्न होवो तुम्हारी अप्रसन्नता हमको दुखकाकारण है ऐसा कह कर वे परम प्रेम की भरी लक्ष्मण के अंग से आलिंन कर पायन पड़ीं वे राणीचतुराई के वचन कहि वे विषे तत्पर कोई यक तो बीण लेय बजावती भई कोई मृदंग बजावती

For Private and Personal Use Only

भई पति के गुण अत्यन्त मधुर स्वर से गावती भई पति के प्रसन्न करिबे विषे उद्यमी है चित्त जिनका कोई एक पति का मुख देखे है और पति के वचन सुनिवेकी है अभिलाषा जिनकेकोई एक निर्मल स्नेहकी धरणहारी पति के तनु से लिपट कर कुण्डल कर मंडित महा सुन्दर कांत के कपोलोंको स्पर्शती भई और कोई एक मधुरभाषिणी पति के चरण कमल अपने सिर पर मेलती भई और कोई मृगनयनी उन्माद की भरी विभ्रम कर कटाक्ष रूप जे कमल पुष्प तिनका सेहरा रचती भई जंभाई लेती पति का बदन निरखती अनेक चेष्टा करती भई, इस भांति यह उत्तम स्त्री पति के प्रसन्न करिवे को अनेकयत्नकरे हैं परन्तु उन के यत्न अचेतन शरीर विषे निरर्थक भए वे समस्त राणी लक्ष्मण की स्त्री ऐसे कंपायमानहैं जैसे कमलों का वन पवन कर कंपायमान होय नाथ की यह अवस्था होते संते स्त्रियों का मन अतिव्याकुल भया संशय कोप्राप्तभई क्षिणमात्रमें यहक्याभया चितवनमेंनआवे औरकथनमेंनआवे ऐसाखेदकाकारणशोकउसेमन में धर कर वे मुग्धा मोह की मारी पसर गई, इंद्र की इंद्राणी समान है चेष्टा जिनकी ऐसी वे राणी ताप कर तप्तायमान सूक गई न जानिए तिनकी सुन्दरता कहां जाती रही यह वृतान्त भीतर के लोकों के मुख से सुनश्रीरामचन्द्र मंत्रियों कर मंडित महा संभ्रम के भरे भाई पै आए भीतर राजलोक में गए लक्ष्मण का मुख प्रभातके चन्द्रमा समान मन्दकांति देखा जैसा तत्कालका वृक्ष मूलसे उखड़ पड़ा होय तैसा भाईका देखा मन में चितवते भए यह क्या भया विना कारण भाई आज मोसे रूसाहै यह सदा आनन्द रूप आज क्यों विषाद रूप होय रहा है स्नेह के भरे शीघ्र ही भाई के निकट जाय उस को उठाय उर से लगाय मस्तक चूमते भए दाहे का मारी जो वृक्ष उस समान हरि को निरख हलधर अंग से लपट गया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पद्म
पुराण
१०३२॥

यद्यपि जीतव्यता के चिन्हरहित लक्ष्मण को देखा तथापि स्नेह के भरे राम उसे मवा न जानते भए वक्र होय गई है ग्रीवा जिसकी शीतल होय गया है अंग जिसका जगत्की आगल ऐसी भुजा सो शिथिल होय गई सांसो स्वास नहीं नेत्रोंकी पलक लगे न विघटे लक्ष्मणकी यह अवस्थादेख रामखेदखिन्न होय कर पसेव से भर गए यह दीनों के नाथ राम दीन होय गये बारम्बार मूर्छा खाये पड़े आसुवों कर भरगए हैं नेत्र जिनके भाई के अंग निरखे इसके एक नख की भी रेख न आई कि ऐसा यह महा बली कौन कारणकर ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया यह विचार करते संते भयाहै कंपायमान शरीर जिनका यद्यपि आप सर्व विद्याके निधान तथापि भाईके मोहकर विद्या बिसरगई मूर्छाका यत्न जाने ऐसे वैद्य बुलाए मंत्र औषधि विषे प्रवीण कलाके पारगामी ऐसे वैद्य आय सो जीवता होय कछु यत्न करें वे माथा धुन नीचे होय रहे तब राम निराश होय मूर्छा खाय पडे जैसे वृक्षकी जड उखड जाय और वृक्ष गिर पडे तैसे आप पडे मोतियों के हार चन्दन कर मिश्रित जल ताडके बीजनावोंकी पवनकर रामको सचेत किया तब महा विह्वलहोय बिलाप करते भए शोक और विषादकर महा पीडित राम आसुवोंके प्रवाह कर अपना मुख आछादित करते भये आसुओं कर आछादित राम का मुख ऐसा भासे जैसा जल धारा कर आछादित चन्द्रमा भासे अत्यन्त विह्वल राम को देख सर्वराज लोक रूप समुद्र से रुदन रूप ध्वनि प्रकट होती भई दुख रूप सागर विषे मग्न सकल स्त्री जन अत्यर्थ पणो रुदन करती भई तिनके शब्द कर दशों दिशा पूर्ण भई कैसे विलाप करें हैं हाय नाथ पृथ्वीको आनन्दके कारण सर्व सुन्दर हमको बचन रूप दान देवो तुमने बिना अर्थ क्यों मौन पकडी हमारा अपराध क्या बिना

For Private and Personal Use Only

अपराध हमको क्यों तजो हो तुम तो ऐसे दयालु हो जो अनेक चूक पडे तो क्षमा करो ॥ अथानन्तर इस प्रस्ताव विषे लव और अंकुश परम विषादको प्राप्त होय विचारते भए कि धिक्कार इस संसार असारको और इस शरीर समान और क्षणभंगुर कौन जो एक निमिष मात्रमें मरणको प्राप्त होय जो बासुदेव विद्याधरोंकर न जीता जाय सोभी कालके जालमें आय पडा इस लिये यह बिनश्वर शरीर यह विनश्वर राज्य संपदा उसकर हमारे क्या सिद्धि यह बिचार सीताके पुत्र फिर गर्भमें आयबे का है भय जिनको पिताके चरणारविन्दको नमस्कार कर महेन्द्रोदय नामा उद्यान विषे जाय अमृत स्वर मुनिकी शरण लेय दोनों भाई महा भाग्य मुनि भए जब इन दोनों भाइयोंने दीक्षाधरी तब लोक अतिव्याकुल भए कि हमारा रक्षक कौन रामको भाई के मरणका बड़ा दुख सो शोकरूप भ्रमणमें पडे जिनको पत्र निकसनेका कुछ सुध नहीं रामको राज्यसे पुत्रोंसे प्रियायोंसे अपने प्राणसे लक्ष्मण अति प्यारा यह कर्मोंको विचित्रता जिसकर ऐसे जीवोंकी ऐसी अशुभ अवस्था होय ऐसा संसार का चरित्र देख ज्ञानी जीव वैराग्यको प्राप्त होय हैं जे उत्तम जन हैं तिनके कछु इक निमित्त मात्र बाह्य कारण देख अंतरंग के विकार भाव दूर होय ज्ञान रूप सूर्यका उदय होय है पूर्वोपार्जित कर्मोंका क्षयोपशम होय तब वैराग्य उपजे है।

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे भव्योत्तम लक्ष्मण के काल प्राप्त भए समस्त लोक व्याकुल भए और युगप्रधान जे राम सो अतिव्याकुल होय सब बातों से रहित भए कछु सुध नहा लक्ष्मण का शरीर स्वभाव ही कर महा सुरूप कोमल सुगंध मृतक भया तो भी जैसे का तैसा सो श्रीराम लक्ष्मण को एक क्षण न तजें कबहूं उर से लगाय लेयँ कभी पपोले कभी चूंबे कबहूं इसे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेकर आप बैठ जावें कभी लेकर उठ चलें एक क्षण काहू का विश्वास न करें एक क्षण न तज जैसे बालक के हाथ अमृत आवे और वह गाढ़ा गाढ़ा गहे तैसे राम महाप्रिय जो लक्ष्मण उस को गाढ़ा गाढ़ा गहे। और दीनों की नांई विलाप करे हाय भाई यह तुझे कहां योग्य जो मुझे तज कर तैंने अकेले भाजिबे की बुद्धि करी मैं तेरा विरह एक क्षण सहारबे समर्थ नहीं यह बात तू कहा न जाने है तू तो सब बातों में प्रवीण है अब मुझे दुःख के सागर में डार कर ऐसी चेष्टा करे है हाय भ्रातः यह क्या क्रूर उद्यम किया जो मेरे बिना जाने मेरे बिना पूछे कूच का नगारा बजाय दिया है वत्स हे बालक एक बार मुझे वचन रूप अमृत प्याय. तू तो अति विनयवान् था बिना अपराध मो से क्यों कोप किया, हे मनोहर अब तक कभी मोसे ऐसा मान न किया अब कछु और ही होय गया कहो मैं क्या किया, जो तू रूसा तू सदा ऐसा विनय करता मुझे दूर से देख उठ खड़ा होय सन्मुख आवता मुझे सिंहासन ऊपर बैठावता आप भूमि में बैठता अब क्या दशा भई मैं अपना सिर तेरे पायन में दूं तौभी नहीं बोले है तेरे चरण कमल चन्द्र कांति मणि से अधिक ज्योति को धरे जे नखों कर शोभित देव विद्याधर सेवे हैं हे देव अब शीघ्र ही उठो मेरे पुत्र बन को गए सो दूर न गए हैं तिनको हम तुरतही उलटे लावें और तुम बिना यह तुम्हारी राणी आर्त्तध्यान की भरी कुरची की नांई कल कलाट करे हैं तुम्हारे गुण रूप पाश सों बंधी पृथिवी में लोटी ज़ोटी फिरे हैं तिनके हार बिखर गए हैं और सीस फूल चूड़ामणि कटिमेखला कर्णाभरण बिखरे फिरे हैं यह महा विलाप कर रुदन करे हैं अतिआकुल हैं इन को रुदन से क्यों न निवारो अब मैं तुम बिना क्या करूं कहां जाऊं ऐसा स्थानक नहीं जहां मुझे विश्राम

For Private and Personal Use Only

उपजे और यह तुम्हारा चक्र तुम से अनुरक्त इसे तजना तुम को क्या उचित और तुम्हारे वियोग में मुझे अकेला जान यह शोक रूप शत्रु दबावे है अब मैं हीनपुण्य क्या करूं मुझे अग्नि ऐसे न दहे और ऐसा विष कंठ को न सोखे जैसा तुम्हारा बिरह सोखे है अहो लक्ष्मीधर क्रोधतज घनीबेर भई और तुम ऐसे धर्मात्मा त्रिकालसामायिक के करणहारे जिनराज की पूजामें निपुणसो सामायिक का समयटलपूजा का समय टला अब मुनियों के आहार देयवे की बेला है सो उठो तुम सदा साधुवों के सेवक ऐसा प्रमाद क्यों करो हो, अब यह सूर्य्यभी पश्चिम दिशा को आया कमल सरोवर में मुद्रित होय गये तैसे तुम्हारे दर्शन बिना लाकोंके मन मुद्रित होय गयेइस प्रकारविलाप करतेकरते दिन व्यतीत भयानिशा भई तबराम सुंदर सेज बिछाय भाई को भुजावों में लेय सूते किसीकाविश्वास नहीं रामनेसब उद्यम तजेएकलक्ष्मण में जाव, रात्रि को कानों में कहे हैं हे देव अब तो मैं अकेला हूं तुम्हारे जीव की बात मुझे कहो तुम कौन कारण ऐसी अवस्था को प्राप्त भये हो तुम्हारे बदन चन्द्रमा से अतिमनोहर अब कांति रहित क्यों भासे है और तुम्हारे नेत्र मंद पवन कर चंचल जो नीलकमल उससमान अब और रूप क्यों भासे हैं अहो तुम को क्या चाहिए सो ल्याऊं हे लक्ष्मण ऐसी चेष्टा करनी तुमको सोहे नहीं जो मन में होय सो मुखकर आज्ञा करो अथवा सीता तुमको याद आई होय वह पतिव्रता अपने दुःख में सहाय थी सो तो अब परलोक गई तुम को खेद करना नहीं हे धीर बिषाद तजो विद्याधर अपने शत्रु हैं सो छिद्र देख आये अब अयोध्या लुटेगी इसलिये यत्न करना होय सो करो और हे मनोहर तुम काहू से क्रोध ही करते तबभी ऐसे अप्रसन्न देखे नहीं अब ऐसे अप्रसन्न क्यों भासो हो हे वत्स अब ये चेष्टा तजो प्रसन्न होवो मैं तुम्हारे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पायन परूं हूं नमस्कार करूं हूं तुम तो महा विनयवंत हो सकलपृथिवी विषे यह बात प्रसिद्ध है कि लक्षमण राम का आज्ञाकारी है सदा सन्मुख है कभी पराङ्मख नहीं तुम अतुल प्रकाशजगत् के दीपकहो मत कभी ऐसा होय जो कालरूप वायु कर बुझ जावो। हे राजावों के राजन् तुम ने इस लोक को अतिआनन्दरूप कीया तुम्हारे राज्य में अचैन किसी ने न पाया इस भरतक्षेत्रके तुम नाथ हो अब लोक को अनाथ कर गमन करना उचितनहीं. तुमने चक्र करशत्रुवोंके सकलचक्र जीते अब कालचक्रका पराभव कैसे सहो हो तुम्हारा यह सुन्दर शरीर राज्य लशमी कर जैसा मोहता था, वैसाहीमूर्छित भया सोहे है हेराजेंद्र अब रात्री भी पूर्ण भई संध्या फूली सूर्य्य उदय होय गया, अब तुम निद्रा तजो. तुम जैसे ज्ञाता श्री मुनि सुव्रतनाथ के भक्त प्रभातका समय क्यों चूकोहो, जो भगवान वीतरागदेव मोहरूप रात्रीको हरलोका लोक का प्रकट करणहारा केवलज्ञान रूप प्रताप प्रकट करतेभये, वे त्रैलोक्यके सूर्य्य भव्यजीवरूपकमलों को प्रकट करणहारे तिनकाशरण क्यों न लेवो और यद्यपि प्रभात समय भया परन्तु मुझे अंधकारही भासेहै क्योंकि मैं तुम्हारा मुख प्रसन्ननहीं देखूं इसलिये हेविचक्षण अबनिद्रा तजो जिनपूजाकर सभामें तिष्ठो सब सामंत तुम्हारेदर्शनको खड़े हैं, बड़ा आश्चर्य है सरोवर में कमलफूले तुम्हारा वदन कमल में फूलानहीं देखूंहुं ऐसी विपरीतचेष्टा तुमने अब तक कभी भी नहींकरी उठो राज्यकार्य में चित्तलगावो हे भ्रात.तुम्हारी दीर्घ निद्रा से जिनमंदिरों की सेवा में कमी पड़े है संपूर्ण नगर में मंगल शब्द मिटगये गीत नृत्यवादित्रा बन्दहोगये हैं औरों की क्याबात जे महाविरक्त मुनिराज हैं तिनको भी तुम्हारी यह दशा सुनउद्वेग उपज है तुम जिनधर्म के धोरी हो सबही साधर्मीक जन तुम्हारी शुभदशा चाहे हैं वीण बांसुरी मृदंगादिक के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्द रहित यह नगरी तुम्हारे वियोग कर व्याकुल भई नहीं सोहे है कोई अगिले भव में महा अशुभ कर्म उपार्जे तिनके उदय कर तुम सारीखे भाई की अप्रसन्नता से महाकष्ट को प्राप्त भया हूं हे मनुष्यों के सूर्य्य जैसे युद्ध में शक्ति के घावकर अचेत होय गये थे और आनन्द से उठे मेरा दुःख दूर किया तैसे ही उठकर मेरा खेद निवारो ॥ इति एकसोसत्तरवां पर्व शम्पूर्णम ॥

अथानन्तर यह बृत्तांत सुन विभीषण अपने पुत्रों सहित और विराधित सकल परिवार सहित और सुग्रीव आदि विद्याधरों के अधिपति अपनी स्त्रियों सहित शीघ्र अयोध्यापुरी आये आसुवों कर भरे हैं नेत्र जिनके हाथ जोड़ सीस निवाय राम के समीप आये महाशोकरूप हैं चित्त जिनके अतिविषाद के भरे राम को प्रणाम कर भूमि में बैठे, क्षण एक तिष्ठकर मंद मंद वाणी कर बीनती करते भये हे देव यद्यपि यह भाई का शोक दुर्निवार है तथापि आप जिनवाणी के ज्ञाताहो सकलसंसार का स्वरूप जानो हो इसलिये आप शोक तजिवे योग्य हो, ऐसा कह सबही चुप होय रहे फिर विभीषण सब बात में महा विचक्षण सो कहता भया हे महाराज यह अनादिकालकी रीति है कि जो जन्मा सो मूवा, सब संसारमें यही रीति है इनहीको नहीं भई जन्मकासाथी मरण है मृत्यु अवश्य है काहू से न टरी न काहू से टरै इस संसार पिंजरे में पड़े यह जीवरूप पक्षी सबही दुखी हैं काल के वश हैं मृत्युका उपाय नहीं और सब के उपाय हैं यह देह निसंदेह विनाशीक है इसलिये शोक करना बृथा है, जे प्रवीण पुरुष हैं वे आत्मकल्याण का उपाय करे हैं रुदन कीये से मरा न जीवे और न वचनालाप करे, इसलिये हेनाथ शोक न करो यह मनुष्यों के शरीर तो स्त्री पुरुषों के संयोग से उपजे हैं सो पानी के बुदबुदावत विलाय जांय इसका आश्चर्य कहां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अहमिन्द्र इन्द्रलोकपाल आदि देव आयु के क्षय भए स्वर्ग से चये हैं जिन की सागरों की आयु और किसी के मारे न मरें वे भी काल पाय मरें मनुष्यों की कहा बात यह तो गर्भके खेदकर पीडित और रोगों कर पूर्ण डाभकी अणीके ऊपर जो ओसकीबूंद आयपडे उससमान पड़नेको सन्मुख हैं महामलिन हाडों के पींजरे ऐसे शरीरके रहिबेकी कहां आशा आप यह प्राणी अपने सुजनों का सोच करे सो आप क्या अजर अमर है आप ही काल की दाढ में बैठा उसका सोच क्यों न करे जो इनही की मृत्यु आई होय और और अमर हैं तो रुदन करना जब सबकी यही दशा है तो रुदन काहे का, जेते देहधारी हैं तेते सब काल के आधीन हैं सिद्ध भगवान् के देह नहीं इसलिये मरण नहीं यह देह जिसदिन उपजा उसही दिनसे काल इसके लेयबे के उद्यममें है यह सब संसारी जीवों की रीति है इसलिये सन्तोष अंगीकार करो इष्टके वियोग में शोक करे सो वृथा है शोक कर मरे तौभी वह वस्तु पीछे न आवे इसलिये शोक क्यों करिये देखो काल तो वज्रदंड लीये सिर पर खड़ा है और संसारी जीव निर्भय भए तिष्ठे हैं जैसे सिंह तो सिर पर खड़ा है और हिरण हरा तृण चरे है त्रैलोक्य नाथ परमेष्ठी और सिद्ध परमेश्वर तिन सिवाय कोई तीन लोक में मृत्युसे बचा सुना नहीं वेही अमर हैं और सब जन्म मरण करे हैं यह संसार विंध्याचल के वन समान काल रूप दावानल समान जलै है सो तुम क्या न देखो हो यह जीव संसार वन में भ्रमण कर अति कष्ट से मनुष्य देह पावे है सो वृथा है काम भोग के अभिलाषी होय माते हाथी की न्याईं बंधन में पड़े हैं नरक निगोद के दुःख भोगवे हैं कभायक व्यवहार धर्म कर स्वर्ग में देव भी होय हैं आयु के अंत वहां से पडे हैं जैसे नदी के ढाहे का वृक्ष कभी उखडे ही तैसे चारोंगति के शरीर मृत्युरूप नदी के ढाहे के वृक्ष हैं इनके उखड़ने का क्या आश्चर्य

For Private and Personal Use Only

है, इन्द्र धरणेंद्र चक्रवर्ती आदि अनन्त नाश को प्राप्त भए जैसे मेघ कर दावानल बुझे तैसे शान्ति रूप मेघ कर कालरूप दावानल बुझे और उपाय नहीं पाताल में भूतल में और स्वर्ग में ऐसा कोई स्थानक नहीं जहां काल से बचे, और छठेकाल के अन्त इस भरतक्षेत्र में प्रलय होयगी पहाड़ विलय होय जावेंगे तो मनुष्यकी कहा बात जे भगवान तीर्थंकरदेव वज्रवृषभ नाराच संहननकेधारक जिनके सम चतुर संस्थानक सुर असुर नरोंकर पूज्य जो किसी कर जीते न जांय तिनका भी शरीर अनित्य वेभी देहतज सिद्धलोक में निजभावरूप रहें । तो औरोंका देह कैसे नित्य होय सुर नर नारक तिर्यंचोंका शरीर केले के गर्भ समान असार है । जीव तो देह का यत्न करे है । और काल प्राण हरे है. जैसे विलके भीतर से गरुड सर्प को लेजाय तैसे देह के भीतर से जीवको काल लेजाय है. यह प्राणी अपने मूवों को रोवे है हाय भाई, हाय पुत्र, हाय मित्र, इसभांति शोक करे है और कालरूप सर्प सबोंको निगले है जैसे सर्प मींडक को निगले, यह मूढ़ बुद्धि झूठे विकल्प करे है यह मैं कीया यह मैं करूं हूं यह करूंगा सो ऐसे विकल्प करता काल के मुख में जाय है जैसे टूटा जहाज समुद्र के तले जाय । परलोक को गया जो सज्जन उस के लार कोई जायसके तो इष्ट का वियोग कभी न होय जो शरीरादिक पर वस्तु से स्नेह करे हैं सो क्लेशरूप अग्नि में प्रवेश करे हैं । और इन जीवोंके इस संसार में एते स्वजनों के समूह भए जिनकी संख्या नहीं जे समुद्र की रेणुकाके कण तिमसे भी अपार हैं और निश्चय कर देखिये तो इस जीव के न कोई शत्रु है न कोई मित्र है, शत्रु तो रागादिक हैं, और मित्र ज्ञानादिक हैं । जिस को अनेक प्रकार कर लडाईये और निज जानिये सो भी बैर को प्राप्त भया महा रोस कर हणे, जिसके स्तनों का दुग्ध पीया जिसकर शरीर

वृद्ध भया ऐसी माता को भी हने हैं धिक्कार इस संसार की चेष्टा को जो पहिले स्वामी था और बार बार नमस्कार करता सो भी दास होय जाय है तब पायों की लातों से मारिये है, हे प्रभो मोह की शक्ति देखो इसके वश भया यह जीव आप को नहीं जाने है पर को आपा माने है, जैसे कोई हाथ कर कारे नाग को गहे तैसे कनककामिनी को गहे है इस लोकाकाशमें ऐसा तिल मात्र क्षेत्र नहीं जहां जीवने जन्म मरण न कीये और नरक में इसको प्रज्वलित ताम्बा प्याया और एतीवार यह नरकको गया जो उसका प्रज्वलित ताम्र पान जोड़िये तो समुद्र के जल से अधिक होय और सूकर कूकर गर्दभ होय इस जीवने एता मल का आहार काया जो अनन्त जन्म का जोड़िये तो हजारां विन्ध्याचल की राशी से अधिक होय और इस अज्ञानी जीव ने क्रोधके वशसे एते पराये सिर छेदे और उन्होंने इसके छेदे जो एकत्र करिये तो ज्योतिषचक्र को उलंघ कर यह सिर अधिक होवें जीव नरक प्राप्त भया वहां अधिक दुःख पाय निगोद गया वहां अनन्तकाल जन्म मरण कीये यह कथा सुनकर कौन मित्र से मोह माने एक निमिष मात्र विषय का सुख उसके अर्थ कौन अपार दुख सहे, यह जीव मोहरूप पिशाच के वशपड़ा उन्मत्त भया संसारवन में भटके है। हे श्रेणिक विभीषण राम से कहे है हे प्रभो यह लक्ष्मण का मृतक शरीर तजबे योग्य है। और शोककरना योग्य नहीं यह कलेवर उर से लगाय रहना योग्य नहीं, इसभांति विद्याधरों का सूर्य्य जो विभीषण उसने श्रीराम से बेनती करी और राम महा विवेकी जिन से और प्रति बुद्ध होंय तथापि मोह के योग से लक्ष्मण की मूर्त्ति को न तजी जैसे विनयवान् गुरुकी आज्ञा न तजे ॥ इति ११८ एक सो अठारवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर सुग्रीवादिक सब राजा श्रीरामचन्द्र से बेनती करते भए अब वासुदेव की दग्ध क्रिया

करो तब श्रीराम को यह वचन अतिअनिष्ट लगा और क्रोध कर कहते भए तुम अपने माता पिता पुत्र पौत्र सबों की दग्धक्रिया करो, मेरे भाई की दग्धक्रिया क्यों होय जो तुम्हारा पापीयों का मित्र बन्धु कुटुम्ब सो सब नाशको प्राप्तहोय मेरा भाई क्यों मरे उठो उठो लक्ष्मण इन दुष्टोंके संयोग से और ठौर चलें जहांइनपापीयोंके कटुकबचन न सुनिये ऐसाकह भाईको उरसे लगाय कांधेपरउठचले विभीषण सुग्रीवादिक अनेक राजा इनकी लार पीछे २ चले आवें राम काहूका विश्वास न करें भाईको कांधे धरे फिर जैसे बालकके हाथ विषफल आया और हितू छुडाया चाहैं वह न छोडे तैसे राम लक्ष्मणके शरीर को न छोडे आंसूवोंसे भिज रहे हैं नेत्र जिनके भाई से कहते भए हे भ्रातः अब उठो बहुत बेर भई ऐसे कहां सोवो हो अब स्नानकी बेला भई स्नानके सिंहासन बिराजो ऐसा कह मृतक शरीर को सिंहासन पर बैठाया और मोहका भरा राम मणि स्वर्णके कलशोंसे भाईको स्नान करावता भया और मुकुट आदि सर्व आभूषण पहिराये और भोजनकी तैयारी कराई सेवकों को कही नानाप्रकारके रत्न स्वर्णके भाजन में नानाप्रकारका भोजन ल्यावो उसकर भाईका शरीर पुष्ट होय सुन्दर भातदाल फुलका नाना प्रकार के व्यंजन नानाप्रकारके रस शीघ्रही ल्यावो यह आज्ञा पाय सेवक सब सामग्रीकर ल्याये नाथके आज्ञा कारी तब आप रघुनाथ लक्ष्मणके मुखमे ग्रास देंय सो न ग्रसे जैसे अभव्य जिनराजका उपदेश न ग्रहै तब आप कहते भए जो तैंने मोसे कोप किया तो आहारसे कहां कोप आहार तो करो मोसे मत बोलो जैसे जिनवाणी अमृतरूप है परंतु दीर्घ संसारीको न रुचे तैसे वह अमृतमई आहार लक्ष्मणके मृतक शरीरको न रुचा फिर रामचंद्र कहैं हैं हे लक्ष्मीधर यह नानाप्रकारकी दुग्धादि पीवने योग्य वस्तु सो पीवो

ऐसा कहकर भाईको दुग्धादि प्याया चाहै सो कहां पीवे यह कथा गौतमस्वामी श्रेणिकसे कहे है वह विवेकी राम स्नेहकर जैसी जीवतेकी सेवा करिये तैसे मृतक भाईकी करता भया और नानाप्रकारके मनोहर गीत बीण बांसुरी आदि नानाप्रकारके नाद करता भया सो मृतकको कहां रुचे मानों मरा हुवा लक्ष्मणरामका संग न तजता भया भाईको चन्दनसे चर्चा भुजावोंसे उठाय लेय उरसे लगाय सिर चूम्बे मुख चूम्बे हाथ चूंबे और कहे हैं हे लक्ष्मण यह क्या भया तू तो ऐसा कभी न सोवता अब तो विशेष सोवने लगा अब निद्रा तजो इस भांति स्नेहरूप ग्रहका ग्रहा बलदेव नानाप्रकारकी चेष्टा कर यह वृतांत सब पृथिवी में प्रकट भया कि लक्ष्मण मूवा लव अंकुश मुनि भये और राम मोहका मारा मूढ होयरहाहै तब वैरी क्षोभको प्राप्त भये जैसे वर्षा ऋतुका समय पाय मेघ गाजे शंबूकका भाई सुंदर इसका नन्दन विरोधरूप है चित्त जिसका सो इन्द्रजीतके पुत्र बज्रमाली पै आया और कही मेरा काका और दादा दोनों लक्ष्मणने मारेसो मेरा रघुवंशियोंसे वैरहै और हमारा पाताल लंकाकाराज्य खोस लिया और विराधितको दिया और वानर वंशियोंका शिरोमणि सुग्रीव स्वामीद्रोही होयं रामसे मिला सो राम समुद्र उलंघ लंका आये राक्षसद्वीप उजाडा रामको सीताका अति दुख सो लंका लेयबेका अभिलाषी भया और सिंहवाहिनी और गरुड वाहिनी होय महा विद्या राम लक्ष्मणको प्राप्त भई तिनकर इन्द्रजीत कुम्भकर्ण बन्दी में किये और लक्ष्मणके चक्र हाथ आया उसकर रावणको हता अब कालचक्र कर लक्ष्मण मूवा सो वानरवंशियों की पक्ष टूटी वानर वंशी लक्ष्मण की भुजावों के आश्रय से उन्मत होय रहे थे अब क्या करेंगे वे निरपक्ष भये और रामको ग्यारह पक्ष होय चुके बारहमां पक्ष लगा है सो गहला होय रहा है भाई

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के मृतक शरीर को लिये फिरे है ऐसा मोह कौन को होय यद्यपि राम समान योधा पृथ्वी में और नहीं वह हल मूशलका धरणहारा अद्वितीय मल्ल है तथापि भाईके शोकरूप कीचमें फंसा निकसबे समर्थ नहीं सो अब रामसे बैर भाव लेनेका दाव है जिसके भाईने हमारे वंशके बहुत मारे शंबूक के भाई के पुत्र ने इन्द्रजीत के बेटे को यह कहा सो क्रोधकर प्रज्वलित भया मंत्रियों को आज्ञा देय रण भेरी दिवाय सेना भेली कर शम्बूकके भाईके पुत्र सहित अयोध्याकी ओर चला सेना रूप समुद्र को लिये प्रथम तो सुग्रीव पर कोप किया कि सुग्रीवको मार अथवा पकड उसका देश खोस लें फिर राम से लडें यह विचार इन्द्रजीत के पुत्र बज्रमाली ने किया सुन्दर के पुत्र सहित चढा तब ये समाचार सुनकर सर्व विद्याधर जे रामके सेवक थे वे रामचन्द्र के निकट अयोध्यामें आय भेले भये जैसा भीड़ अयोध्या में लवअंकुश के आयवे के दिन भई थी तैसी भई, वैरियों की सेना अयोध्या के समीप आई सुनकर रामचन्द्र लक्ष्मण को कांधे लिये ही धनुष् बाण हाथ में समार विद्याधरों को संग लेय आप बाहिर निकसे उस समय कृतांतवक्र का जीव और जटायु पक्षी का जीव चौथे स्वर्ग देव भये थे तिनके आसन कंपायमान भये, कृतांतवक्र का जीव स्वामी और जटायु पक्षी का जीव सेवक सो कृतांतवक्र का जीव जटायु के जीव से कहता भया हे मित्र आज तुम क्रोधरूप क्यों भये हो तब वह कहता भया जब मैं गृध पक्षी था सो राम ने मुझे प्यारे पुत्र कीन्याई पाला और जिन धर्म का उपदेश दीया मरण समय नमोकार मंत्र दीया उस कर मैं देव भया अब वह तो भाईके शोक कर तप्तायमान है और शत्रु की सेना उसपर आई है तब कृतांतवक्र का जीव जो देव था उसने अवधि जोड़कर कही है

For Private and Personal Use Only

पद्म पुराण १०४६

मित्र मेरा वह स्वामी था मैं उसका सेनापति था मुझे बहुत लड़ाया भ्रात पुत्रोंमे भी अधिक गिना और मेरे उनके वचन है जब तुमको खेद उपजेगा तब तुम्हारे पास में आऊंगा, सो ऐसा परस्पर कहकर वे दोनों देव चौथे स्वर्ग के वासी सुन्दर आभूषण पहिरे मनोहर हैं केश जिन के सो अयोध्या की ओर आये दोनों विचक्षण परस्पर दोनों बतलाये कृतांतवक्रके जीवने जटायुके जीवसे कहा तुम तो शत्रुओं की सेनाकी ओर जावो उन की बद्धि हरो और मैं रघुनाथके समीपजाऊंहूं तब जटायुका जीव शत्रुओंकी ओरगया कामदेव का रूपकर उनको मोहित कीयाऔर उनको ऐसी माया दिखाई जो अयोध्या के आगेऔरपाछेदुरगमपहाड़ पडे हैं और अयोध्या अपार है यह अयोध्या काहू से जीती न जाय यह कौशल पुरी सुभटों कर भरी है कोट आकाश लग रहे हैं और नगर के बाहिर भीतर देव विद्याधर भरे हैं हम ने न जानी जो यह नगरी महाविषम है धरती में देखिये तो आकाश में देखिये तो देव विद्याधर भर रहे हैं अब कौन प्रकार हमारे प्राण बचें कैसे जीवते घर जावें जहां श्रीरामदेव विराजें सो नगरी हम से कैसे लई जाय, ऐसी विक्रीयाशक्ति विद्याधरों में कहां हम बिनाविचारे ये काम किया जो पटबीजना सूर्य्यसे वैर विचारे तो क्या कर सके अब जो भागों तो कौन राह होयकर भागों मार्ग नहीं इस भांति परस्पर वार्ता कर कांपने लगे समस्त शत्रुवों की सेना विह्वल भई तब जटायु के जीवने देवविक्रया की क्रीड़ाकर उनको दक्षिणकी ओर भागने का मार्ग दीया वे सब प्राणरहित होय कांपते भागे जैसे सिचान आगे परे वा भागे आगे जायकर इन्द्र जीत के पुत्र ने बिचारी जो हम विभीषण को कहां उत्तर देंगे और लोकों कोक्या मुख दिखावेंगे असा विचार लज्जावान होय सुन्दर के पुत्र चारों रत्न सहित और विद्याधरों सहित इन्द्रजीत

के पुत्र वज्र माली रतिवेग नामा मुनि के निकट मुनि भये, तब यह जटायु का जीव देव उन साधुओं का दर्शन कर अपना सकल बृत्तांत कह क्षमा कराय अयोध्या आया जहां राम भाई के शोक कर बालक की सी चेष्टा कर रहे हैं तिनके संबोधवे के अर्थ वे दोनों देव चेष्टा करते भये, कृतांतवक्र का जीव तो सूके बृक्ष को सींचने लगा और जटायु का जीव मृतक बैल यगल तिनकर हलवाहवे का उद्यमी भया और शिला ऊपर बीज बोने लगा सो ये भी दृष्टांत रामके मन में न आया फिर कृतांतवक्र का जीव रामके आगे जलको घृत के अर्थ विलोवता भया और जटायु का जीव बालू रेत को घानी में तेलके निमित्त पेलता भया सो इन दृष्टांतों कर रामको प्रतिबोध न भया और भी अनेक कार्य इसी भांति देवों ने कीये तब रामने पूछी तुम बड़े मूढ़ हो सूका बृक्ष सींचा सो कहां और मूवे बैलों से हल बाहना करो सो कहा और शिला ऊपर बीज बोवना सो कहां और जलका विलोवना और बालू का पेलना इत्यादिकार्य तुम कीये सो कौन अर्थ, तब वे दोनों कहते भए तुम भाई के मृतक शरीर को बृथा लीर्णफरो हो उसमें का यह वचन सुनकर लक्ष्मण को गाढा उर से लगाय पृथिवीका पति जो राम सो क्रोधकर उन से कहता भया हे कुबुद्धि हो मेरा भाई पुरुषोत्तम उसे अमंगल के शब्द क्यों कहो हो ऐसे शब्द बोलते तुमको दोष उपजेगा इसभांति कृतांतवक्र के जीव के और के विबाद होय है उसही समय जटायु का जीव मूवे मनुष्य का कलेवर लेय रामके आगे आया उसे देख राम बोले मरे का कलेवर काहे को कांधे लिये फिरो हो तब उसने कही तुम प्रवीण होय प्राण रहित लक्ष्मण के शरीर को क्यों लिये फिरो हो पराया अणुमात्र भी दोष देखो हो और अपना मेरुप्रमाण दोष नहीं देखो हो, सारिखे की सारिखे से प्रीति होय है सो तुम

को मूढ़ देख हमारे अधिक प्रीति उपजी है हम बृथा कार्य के करणहारे तिनमें तुम मुख्य हो हम उन्मत्तता की ध्वजा लियेफिरे हैं, सो तुमको अतिउन्मत्तदेख तुम्हारे निकट आए हैं इसभांति उन दोनों मित्रोंके वचन सुन राम मोहरहित भया शास्त्रों के वचन चितार सचेत भए, जैसे सूर्य मेघ पटल से निकस अपनी किरण कर देदीप्यमान भासे तैसे भरतक्षेत्र का पति राम सोई भया भानु सो मोहरूप मेघपटल से निकस ज्ञानरूप किरणोंकर भासता भया, जैसे शरदऋतु में कारी घटा से रहित आकाश निर्मल सोहे तैसे रामका मन शोकरूप कर्दमसे रहित निर्मल भासता भया राम समस्त शास्त्रों में प्रवीण अमृत समान जिनवचन चितार खेदरहित भए, धीरता को अवलंबनकर ऐसे सोहे जैसा भगवान्का जन्माभिषेक में सुमेरु सोहे जैसे महा दाहे की शीतल पवन के स्पर्श से रहित कमलों का बन सोहे और फूले तैसे शोकरूप कलुषता रहित राम का चित्त विगसता भया जैसे कोई रात्री के अंधकार में मार्ग भूल गयाथा और सूर्य के उदय भए मार्ग पाय प्रसन्न होय और महाक्षुधाकर पीड़ित मन वांछित भोजन खाय अत्यंत आनन्द को प्राप्त होय और जैसे कोई समुद्र के तिरिबे का अभिलाषी जहाज को पाय हर्षरूप होय. और बनमें मार्ग भूला नगर का मार्ग पाय खुशी होय और तृषा कर पीडित महा सरोवरको पाय सुखी होय, रोग कर पीडित रोग हरण औषध को पाये अत्यंत आनन्द को पावे, और अपने देश गया चाहे और साथी देख प्रसन्न होय और बंदीगृह से छूटा चाहे और बेड़ी कटे जैसे हर्षित होय तैसे रामचन्द्र प्रतिबोधको पाय प्रसन्न भए प्रफुल्लित भया है हृदय कमल जिनका परम कांति को धारते आप को संसार अंधकूप से निकसा मानते भए मन में जानी मैं नवा जन्म पाया श्रीराम विचारे हैं अहो डाभकीअणीपर पड़ी ओसकीबूंद उससमान चंचल मनुष्य

पद्म पुराण १०४६।

का जीतव्य एक क्षणमात्र में नाश को प्राप्त होय है चतुर्गति संसार में भ्रमण करते मैंने अत्यंत कष्ट से मनुष्य शरीर को पाया सो बृथा खोया कौनके भाई कौनके पुत्र कौनका परिवार कौनका धन कौनकी स्त्री इस संसार में इस जीवने अनंत संबंधि पाये एक ज्ञान दुर्लभ है इस भांति श्रीराम प्रतिबुद्ध भए तब वे दोनों देव अपनी माया दूरकर लोकों को आश्चर्य की करणहारी स्वर्ग की विभूति प्रकट दिखावते भए शीतल मंद सुगंध पवन बाजी और आकाश में देवों के विमान ही विमान होय गए और देवांगनागावती भई बीण बासुरी मृदंगादि बाजते भए वे दोनों देव राम से पूछते भए आप इतने दिवस राज्य कीया सो सुख पाया तब राम कहते भये, राज्य में काहे का सुख जहां अनेक व्याधि हैं जो इसे तज मुनि भये वे सुखी और मैं तुमको पूछू हूं तुम महा सौम्यवदन कौन हो और कौन कारण कर मुझसे इतना हित जनाया तब जटायु का जीव कहता भया हे प्रभो मैं वह गृध्र पक्षी आप मुनो को आहार दिया वहां म प्रतिबुद्ध भया और आप मुझे निकट राखा पुत्र कीन्यांई पाला और लक्ष्मण सीता मुझसे अधिक कृपा करते सीता हरीगई उसदिन मैं रावण से युद्धकर कंठगति प्राण भया आपनेआय मझे पंचनमोकार मन्त्र दिया सो मैं तुम्हारे प्रसाद कर चौथे स्वर्ग देव भया स्वर्ग के सुखकर मोहित भया अबतक आपके निकट न आया अब अवधिज्ञान कर तुमको लक्ष्मण के शोक कर व्याकुल जान तुम्हारे निकट आया हूं और कृतांतवक्र के जीवने कही हे नाथ मैं कृतांतवक्र आपका सेनापति था आप मुझे भ्रात पुत्रों से अधिक जाना और बैराग्य होते मुझे आप आज्ञाकरीथी जो देव होवो तो हमको कभी चिंता उपजे तब चितारियो सो आपके लक्ष्मण के मरण की चिन्ता जान हम तुमपे आये तब राम दोनों देवों से कहते भये तुम मेरे परममित्र

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो महा प्रभाव के धारक चौथे स्वर्ग के महाऋधिधारो देव मेरे संबोधिवे को आये तुम को यही योग्य ऐसा कहकर रामने लक्षमण के शोक से रहित होय लक्षमण के शरीर को सरयू नदी के तट दग्ध कीया श्रीराम आत्म भाव के ज्ञाता धर्म की मर्यादा पालने के अर्थ शत्रुघ्न भाईको कहतेभए हे शत्रुघ्न मैं मुनि के व्रतधारसिद्ध पदको प्राप्त हुआ चाहूं हूं तू पृथिवी का राज्य कर तब शत्रुघ्न कहते भये हे देव मैं भोगों का लोभी नहीं जिसके राग होय सो राज्य करे मैं तुम्हारे संग जिनराज के व्रत धारूंगा और अभिलाषा नहीं है मनुष्यों के शत्रु ये काम भोग मित्र बांधव जीतव्य इनसे कौन तृप्त भया कोई ही तृप्त न भया इसलिये इन सबों का त्याग ही जीवको कल्याणकारी है॥ इतिएकसौवोन्नीसवां पर्व सम्पूर्णम्॥

अथ राम का निर्वाण नामा छठा अधिकार॥

अथानन्तर श्रीरामचन्द्रने शत्रुघ्नके वैराग्यरूप वचन सुन उसे निश्चयसे राज्यसे पराङ्मुख जान क्षणएक विचारअनंगलवणके पुत्रको राज्य दिया सो पिता तुल्य गुणोंकी खानकुलकी धुराका धारणहारा नमस्कार करे हैं समस्तसामंत जिसको सो राज्यविषे तिष्ठा प्रजाका अतिअनुरागहै जिससे महाप्रतापीपृथ्वीविषेआज्ञा प्रवर्तावता भया और विभीषण लंकाका राज्य अपने पुत्र सुभूषणको देय वैराग्य को उद्यमी भया और सुग्रीवभी अपना राज्य अंगदको देयकर संसार शरीर भोगसे उदास भया ये सब रामके मित्र राम की लार भवसागर तरवेको उद्यमी भये राजा दशरथ का पुत्र राम भरतचक्रवर्तीकी न्याईं राज्यका भार तजताभया कैसाहै राम विष सहित अन्नसमान जाने हैं विषय सुख जिसने और कुलटा स्त्रीसमान जानी है समस्त विभूति जिसने एक कल्याणका कारण मुनियोंके सेववे योग्य सुर असुरोंकर पूज्य श्री मुनिसुव्रत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाथका भाषा मार्ग उसे उरमें धारता भया जन्ममरणके भयसे कंपायमान भया है हृदय जिसका ढीले किये हैं कर्म बंध जिसने धोयडाले हैं रागादिककलंकजिसनेमहावैराग्यरूपहैचित्तजिसकाक्लेशभावसेनिवृत जैसामेघपटलसे रहित भानु भासे तैसा भासताभया मुनिव्रत धारिबेकाहै अभिप्राय जिसके उस समय अरह दास सेठ आया तब उसे श्रीराम चतुर्विध संघकी कुशल पूछते भए तब वह कहताभया हे देव तुम्हारे कष्ट कर मुनियोंका भी मन अनिष्ट संयोगको प्राप्तभया ये बात करे हैं और खबर आई है कि मुनिव्रतसुव्रत नाथके वंशमें उपजे चार ऋद्धिके धारक स्वामी सुव्रतमहाव्रतके धारक कामक्रोध के नाशक आये हैं यह वार्ता सुनकर महाआनन्द के भरे राम रोमांच होय गयाहै शरीर जिनका फूल गये हैं नेत्रकमल जिनके अनेक भूचर खेचर नृपों सहित जैसे प्रथम बलभद्र विजय स्वर्णकुम्भ स्वामी के समीप जाय मुनि भये थे तैसे मुनि होनेको सुव्रतमुनिके निकट गये वे महाश्रेष्ठ गुणोंके धारक हजारां मुनि माने हैं आज्ञा जिनकी तिनपै जाय प्रदक्षिणादेय हाथ जोड सिर निवाय नमस्कार किया साक्षात मुक्तिके कारण महा मुनि तिनका दर्शनकर अमृतके सागरमें मग्नभये परमश्रद्धाकर मुनिराजसे रामचन्द्रने जिनचंद्रकी दीक्षा धारवेकी बिनती करी हे योगीश्वरोंके इन्द्र मैं भव प्रपंचसे विरक्त भया तुम्हारा शरण ग्रहा चाहूं हूं तुम्हारे प्रसादसे योगीश्वरोंके मार्गमें बिहार करूं इस भांति रामने प्रार्थना करी कैसे हैं राम धोये हैं समस्त रागद्वेषादिक कलंक जिन्होंने तब मुनींद्र कहते भए हे नरेंद्र तुम इस बातके योग्यही हो यह संसार क्या पदार्थहै यह तजकरतुम जिनधर्मरूप समुद्रका अवगाहै करो यह मार्ग अनादिसिद्धबाधारहितअविनाशी सुखका देनहारा तुमसे बुद्धिवानही आदरें ऐसामुनिने कहा तब रामसंसारसे विरक्तमहा प्रवीणजैसे सूर्य

For Private and Personal Use Only

सुमेरु की प्रदक्षिणा करे तैसे मुनिन्द्र की प्रदक्षिणाकरतेभयेउपजाहैमहाज्ञान। जनका वैराग्यरूपवस्त्र पहिरे बांधीहै कर्मों के नाशको कमर जिन्होंनेआशारूपपाश तड़ स्नेह का पींजरा दग्धकर स्त्रीरूप बंधनसेछूटोमोह का मान मार हार कुंडल मुकट केयर कटिमेखलादि सर्व आभूषण डार तत्काल वस्त्र तजे, परम तत्व विषे लगा है मन जिनका वस्त्राभरण यूं तजे ज्यों शरीर तजिए महासुकुमार अपने कर तिन करकेश लोंच किए पदमासन धर विराजे शील के मंदिर अष्टम बलभद्र समस्त परिग्रह को तज कर ऐसे सोहते भए जैसा राहु से रहित सूर्य सोहे पंचमहाव्रत आदरे पंचसुमति अंगीकार कर तीन गुप्ति रूप गढ़ में विराजे मनोदंड वचनदंड काय दंड के दूर करणहारे षट काय के मित्र, सप्त भय रहित आठ कर्मों के रिपु, नवधा ब्रह्मचर्य के धारक, दश लक्षण धर्म धारक श्रीवत्स लक्षण कर शोभित है उरस्थल जिनका गुणभूषण सकलदूषण रहित तत्वज्ञान विषे दृढ़ रामचन्द्र महामुनि भए तब देवों ने पंचाश्चर्य किए सुन्दर दुन्दभी बाजे और दोनों देव कृतांतवक्रकाजीव एक जटायकाजीव तिन्होंने परम उत्साह किए जब पृथिवी का पति राम पृथिवी को तज निकसा तब भूमिगोचरी विद्याधर सब ही राजा आश्चर्य को प्राप्त भये और विचारते भए जो ऐसी विभूति ऐसे रत्न यह प्रताप तज कर रामदेव मुनि भए तो और हमारे कहां परिग्रह जिसके लाभ से घर में तिष्ठें व्रत बिना हम एते दिन योंहीं खोए ऐसा विचार कर अनेक राजगृह बन्धन से निकसे और राग मई पाशी काट द्वेष रूप बैरी को विनाश सर्व परिग्रह का त्याग कर भाई शत्रुघ्न मुनि भए और विभीषण सुग्रीव नील नल चन्द्रनख विराधित इत्यादि अनेक राजा मुनि भए विद्याधर सर्व विद्या का त्याग कर ब्रह्मविद्या का प्राप्त भए कयकों को चारणऋद्धि उपजी इसभांति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राम के बैराग्य भये सोलह हजार कछु अधिक महीपति मुनिभय। और सत्ताईस हजार राणी श्रीमति आर्यिका के समीप आर्यिका भइ ॥

अथानन्तर श्रीराम गुरुकी आज्ञालेय एकाविहारी भए तजे हैं समस्त विकल्प जिन्हों ने गिरों की गुफा और गिरों के शिखर और विषम बन जिन में दुष्ट जीव विचरें वहां श्रीराम जिनकल्पी होय ध्यान धरते भए अवधिज्ञान उपजा जिस कर परमाणु पर्यंत देखते भए और जगत् के मर्तिक पदार्थ सकल भासे लक्ष्मणके अनेक भव जाने मोह का सम्बन्ध नहीं इस लिये मन ममत्व को न प्राप्त होता भया अब राम की आयु का व्याख्यान सुनो कौमार काल वर्ष सौ१०० मंडलीक पद वर्ष तीन सौ३०० दिग्विजय वर्ष चालीस ४० और ग्यारह हजार पांचसै साठ वर्ष ११५६० तीन खंड का राज्य फिर मुनि भए लक्ष्मण का मरण इसही भांति था देवों का दोष नहीं और भाई के मरण के निमित्त से राम के वैराग्य का उदय था अवधिज्ञान के प्रताप कर राम ने अपने अनेक भव जाने महा धीर्य को धरे व्रत शील के पहाड़ शुक्ल लेश्या कर युक्त महा गंभीर गुणन के सागर समाधान चित्त मोक्ष लक्ष्मी विषे तत्पर शुद्धोपयोग के मार्ग में प्रवरते, सो गौतम स्वामी राजा श्रेणिक आदि सकल श्रोताओं से कहे हैं जैसे रामचन्द्र जिनेन्द्र के मार्ग में प्रवर्त्ते तसे तुम भी प्रवरतो अपनी शक्ति प्रमाण महा भक्ति कर जिनशासन में तत्पर होवो जिन नाम के अक्षर महा रत्नों को पाय कर हो प्राणी हो खोटा आचरण तजो, दुराचार महा दुःखका दाताहे खोटे ग्रन्थों कर मोहितहे आत्मा जिनका और पाखंड क्रियाकर मलिन है चित्त जिनका वे कल्याण के मार्गको तज जन्मके आंधे की न्याई खोटे पंथ में प्रवरते हैं कैयक मूर्ख साधुका

For Private and Personal Use Only

धर्म नहीं जाने हैं और नानाप्रकारके उपकरण साधुके बतावे हैं और निर्दोष जानग्रहे हैं वे वाचाल हैं जे कुलिंग कहिये खोटे भेष मूढ़ोंने आचरें हैं वे वृथा हैं तिनसे मोक्ष नहीं जैसे कोई मूर्ख मृतकके भारको वहे है सो वृथा खेद करे है जिनके परिग्रह नहीं और काहूसे याचना नहीं वे ऋषि हैं वेई निर्ग्रन्थ उत्तम गुणोंकर मंडित पंडितों कर सेयबे योग्य हैं यह महावली बलदेवके वैराग्यका वर्णन सुन संसारसे विरक्त होवो जिसकर भवताप रूप सूर्यका आताप न पावो ॥ इति एकसौ बीसवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं। हे भव्योत्तम श्री रामचन्द्र के अनेक गुण धरणींद्र भी अनेक जीभ कर गायबे समर्थ नहीं वे महामुनीश्वर जगतके त्यागी महाधीर पंचोपवास की है प्रतिज्ञा जिनके सो ईर्या समति पालते नन्दस्थली नामा नगरी वहां पारणा के अर्थ गये उगते सूर्यसमान है दीप्ति जिनकी मानों चालते पहाड़ही हैं महा निर्मल स्फटिकमणि समान शुद्ध हृदय जिनका वे पुरुषोत्तम मानों मूर्तिवंत धर्मही मानों तीन लोकका आनंद एकत्रहोय रामकी मूर्त्ति निपजी है महा कांति के प्रवाहकर पृथ्वी को पवित्र करते मानों आकाश विषे अनेक रंगकर कमलों का बन लगावते नगर में प्रवेश करते भए तिनके रूप को देख नगरके सब लोक क्षोभको प्राप्त भये लोक परस्पर बतलावें हैं अहो देखो यह अद्भुतरूप ऐसा आकार जगतमें दुर्लभ कभी देखिबे में न आवे यह कोई महापुरुष महासुन्दर शोभायमान अपूर्व नर दोनों बाहु लुम्बाये आवे है धन्य यह धीर्य धन्य यह पराक्रम धन्य यह रूप धन्य यह कांति धन्य यह दीप्ति धन्य यह शांति धन्य यह निर्ममत्वता यह कोई मनोहर पुराण पुरुष है ऐसा और नहीं जूड़े प्रमाण धरती देखता जीवदया पालता शांत दृष्टि समाधान चित्त

जैनका यति चला आवे है ऐसा कौनका भाग्य जिसके घर यह पुण्याधिकारी आहार करे कौन को पवित्र करे उसके बड़े भाग्य जिसके घर यह आहार लेय यह इन्द्रसमान रघुकुलका तिलक अक्षोभ पराक्रमी शीलका पहाड़ रामचन्द्र पुरुषोत्तम है इसके दर्शनकर नेत्र सफलहोय मन निर्मल होय जन्म सफलहोय देही पाये का यह फल जो चारित्र पालिये इसभांति नगरके लोक रामके दर्शन कर आश्चर्यको प्राप्त भये नगरमें रमणीक ध्वनि भई श्रीराम नगरमें पैठे और समस्त गली और मार्ग स्त्री पुरुषों के समूह कर भर गया नरनारी नाना प्रकार के भोजनहैं घरमें जिनके प्रकाश जलकी झारी भरे द्वारे पेखन करे हैं। निर्मल जल दिखावते पवित्र धोवती पहिरें नमस्कार करे हैं। हे स्वामी अत्र तिष्ठ अन्न जल शुद्ध इसभांति के शब्द करेहैं नाहीं समावेहै हृदयमें हर्ष जिनके हे मुनींद्र जयवन्त होवो हे पुण्यके पहार नादो विरदो इन वचनोंकर दशोंदिशा पूरित भई घरघरमें लोग परस्पर बात करें हैं स्वर्णके भाजनमें दुग्ध दधि घृत ईष रसदाल भात खीर शीघ्रही तयारकर राखो मिश्री मोदक कपूरकर युक्त शीतल जल सुन्दर पूरी शिखिरणी भली भांति विधि से राखो या भांति नर नारियोंके वचनालाप तिनकर समस्त नगर शब्दरूप होय गया महासंभ्रमके भरे जन अपने बालकोंको न विलोकतेभए मार्ग में लोक दौडे सो काहूके धकेसे कोई गिर पडे इसभांति लोकनके कोलाहलकर हाथी खूंटा उपाडते भये और ग्राममें दौडते भए तिनके कपोलों से मद झरिबे कर मार्गमें जलका प्रवाह होयगया हाथियों के भय से घोड़े घास तज तज बन्धन तुडाय तुडाय भाजे और हींसतेभए सो हाथी घोडों की घमसाणकर लोक व्याकुल भए तब दान विषे तत्पर राजा कोलाहल शब्द सुन मन्दिर के ऊपर आय खडा रहा दूरसे मुनि

का रूप देख मोहित भया राजाके मुनिमे राग विशेष परन्तु विवेक नहीं सो अनेक सामन्त दौडाये और आज्ञाकरी स्वामी पधारे हैं सो तुम जाय प्रणामकर बहुत भक्ति बेनतीकर यहां आहारको ल्यावो सो सामंत भी मूर्ख जाय पायनपर पड कहते भए हे प्रभो राजा के घर भोजन करहु वहां महा पवित्र सुन्दर भोजन हैं और सामान्य लोकों के घर आहार विरस आपके लेयबे योग्य नहीं और लोकों को मने किए कि तुम कहा दे जानों हो यह वचन सुनकर महामुनि आप को अन्तराय जान नगर से पीछे चले सब ही लोग अति व्याकुल भए वे महापुरुष जिन आज्ञाके प्रतिपालक आचारांग सूत्र प्रमाण है आचरण जिन का आहार के निमित्त नगर में विहार कर अन्तराय जान नगर से पीछे वनमें गए चिद्रूपध्यान विषे मग्न कायोत्सर्ग धर तिष्ठे वे अद्भुत अद्वितीय सूर्य मन और नेत्रको प्यारा लगे रूप जिनका नगर से बिना आहार गए तब सब ही खेद खिन्न भये ॥ इति एकसौ इक्कीसवां पर्व संपूर्णम् ॥

अथानन्तर राम मुनियोंमें श्रेष्ठ फिर पंचोपवासका प्रत्याख्यान कर यह अवग्रह धारते भये कि वन विषे कोई श्रावक शुद्ध आहार देय तो लेना नगर में न जाना इस भांति कांतारचर्या की प्रतिज्ञा करी सो एक राजा प्रतिनन्द उसको दुष्ट तुरंग लेय भागा सो लोकोंकी दृष्टिसे दूर गया तब राजाकी पटरानी प्रभवा अति चिन्तातुर शीघ्रगामी तुरंग पर आरूढ राजाके पीछे ही सुभटों के समूह कर चली और राजाको तुरंग हर ले गयाथा सो वनके सरोवरों विषे कीचमें फंस गया उतनेही में पटराणी जाय पहुंची राजा राणी पै आया तब राणी राजासे हास्यके वचन कहती भई हे महाराज जो यह अश्व आप को न हरता तो यह नन्दन वन सा वन और मानसरोवरसा सर कैसे देखते, तब राजा ने कही हे राणी

वनयात्रा अब सुफल भई जो तुम्हारा दर्शन भया, इस भांति दम्पती परस्पर प्रीतिकी बात कर सखीजन सहित सरोवर के तीर बैठे नाना प्रकार जल क्रीडा कर दोनों भोजन के अर्थ उद्यमी भए उस समय श्रीराम मुनि कांतारचर्या के करणहारे इस तरफ आहार को आए यह साधु की क्रिया में प्रवीण तिन कोदेख राजा हर्ष कर रोमांच भया राणी सहित सन्मुख जाय नमस्कार कर ऐसे शब्द कहता भया हे भगवान् यहां तिष्ठो अन्न जल पवित्र है प्राशुक जल से राजा ने मुनि के पग धोए नवधा भक्ति कर सप्तगुण सहितमुनिको महा पवित्रक्षीर आहार दिया स्वर्ण के पात्र में लेय कर महा पात्र जे मुनि तिनके कर पात्र में पवित्र अन्न देता भया निरंतराय आहार भया तब देव हर्षित होय पंचाश्चर्य करते भए और आप अक्षीण महा ऋद्धि के धारक सो उसदिन रसोई का अन्न अटूट होय गया पंचाश्चर्य के नाम, पंच वर्ण रत्नों की वर्षा और महा सुगंध कल्पवृक्षों के पुष्प की वर्षा शीतल मन्द सुगंध पवन दुन्दुभी नाद जय जय शब्द धन्य यह दान धन्य यह पात्र धन्य यह विधि धन्य यह दाता नीके करी नीके करी नादो विरधो फूलो फलो इस भांति के शब्द आकाश में देव करते भए अथवा नवधा भक्ति के नाम, मुनि को पड़गाहनो ऊंचे स्थानक सखना चरणारविन्द धोवने चरणोदक माथे चढ़ावना पूजा करनी मन शुद्ध वचन शुद्ध काय शुद्ध आहार शुद्ध यह नवधा भक्ति और श्रद्धा शक्तिनिर्लोभता दयाक्षमा अदेयसापणो नहीं हर्ष संयुक्तयहदाता के सात गुण वह राजा प्रतिनन्दी मुनिदान से देवों कर पूज्य भयाऔरश्रावकके व्रत धारे निर्मलहै सम्यक्त जिसके पृथिवी में प्रसिद्ध होता भया बहुत महिमा पाई और पञ्चाश्चर्य में नाना प्रकारकेरत्न स्वर्ण की वर्षा भई सो दशों दिशा में उद्योत भया और पृथिवीका दरिद्रगया, राजा राणी सहित महाविनयवान् भक्ति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर नम्रीभूत महा मुनि को विधिपूर्वक निरंतराय आहार देय परम प्रबोध को प्राप्त भया अपना मनुष्य जन्म सफल जानता भया और राममहामुनि तप के अर्थ एकांत रहैं बारह प्रकार तप के करणहारे तप ऋद्धि कर अद्वितीय पृथिवी में अद्वितीय सूर्य विहार करतेभए ॥ इति एकसौबाईसवां पर्व सम्पूर्णम् ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिक से कहे हैं हे श्रेणिक वह आत्माराम महा मुनि बलदेव स्वामी शांत किए हैं रागद्वेष जिस ने जो और मनुष्यों से न बन आवे ऐसा तप करते भए महा बन में विहार करते पञ्चमहाव्रत पंच सुमति तीन गुप्ति पालते शास्त्र के वेत्ता जितेन्द्री जिन धर्म में है अनुराग जिनका स्वाध्याय ध्यान में सावधान अनेक ऋद्धिउपजी परन्तुऋधियों की खबर नहीं महा विरक्त निर्विकार बाईस परीषह के जीतनहारे तिन के तपके प्रवाह से बन के सिंह व्याघ्र मृगादिक के समूह निकट आय बैठे जीवों का जाति विरोध मिट गया राम का शांतरूप निरख शांतरूप भए श्रीराम महा व्रती चिदानन्द में हैचित्त जिनका परवस्तु की बांछा रहित विरक्त कर्म कलंक हरिवे का है यत्न जिनके निर्मल शिला पर तिष्ठते पद्मासन धरे आत्म ध्यान में प्रवेश करते भए. जैसे रवि मेघमाला में प्रवेश करे वे प्रभ सुमेरु सारिखे अचल हैचित्त जिनका पवित्र स्थानक में कायोत्सर्ग धरे निज स्वरूप का ध्यान करते भए कबहुक विहार करे सो ईर्य्या समतिपालते जूडा प्रमाण पृथिवी निरखते महा शांत जीव दया प्रतिपाल देव देवांगनादिक कर पूजित भए वे आत्म ज्ञानी जिनआज्ञाके पालक जैन के योगी ऐसातप करते भए जो पंचम काल में कहू के चितवन में न आवे एक दिन विहार करते कोटि शिला आए जो लक्ष्मण ने नमोकार मन्त्र जप कर उठाई थी सो आप कोटि शिला परध्यान धर तिष्ठे कर्मों के खिपायवे विषे उद्यमी क्षपक श्रेणी चढ़वे का है मन जिनका ॥

For Private and Personal Use Only

अथानन्तर अच्युतस्वर्गका प्रतेन्द्र सीता का जीव स्वयंप्रभ नामा अवधि कर विचारता भया, रामका और आपका परम स्नेह अपने अनेक भव और जिनशासन का महात्म्य और रामका मुनिहोना और कोटि शिला पर ध्यान धर तिष्ठना फिर मन में विचारी वे मनुष्यों के इन्द्र पृथिवीके आभूषण मनुष्य लोक विषे मेरे पति थे मैं उनकी स्त्री सीता थी देखो कर्म की विचित्रता मैं तो व्रतके प्रभाव से स्वर्ग लोक पाया और लक्ष्मण राम का भाई प्राण से प्रिय सो परलोक गया, राम अकेले रह गए जगत् के आश्चर्य के करणहारे दोनों भाई बलभद्र नारायण कर्म के उदय से बिछुरे श्रीराम कमलसारिखे नेत्रजिनके शोभायमान हल मूसलके धारक बलदेव महाबली सो वासुदेव के वियोग से जिनदेवकी दीक्षाअंगीकार करतेभये राज अवस्था में तो शस्त्रोंकर सर्व शत्रुजीते फिर मुनिहोय मन इन्द्रिय जीते अब शुक्लध्यानधारकर कर्म शत्रु को जीताचाहे हैं ऐसा होय जोमेरी देव मायाकर कछूइक इनका मन मोह में आवेवह शुद्धोपयोग सेच्युतहोय शुभोपयोगमें आय यहां अच्युतस्वर्ग में आवें मेरे इनके महाप्रीति है मैं और वे मेरुनन्दीश्वरादिककी यात्रा करें और बाईससागरपर्यन्त भेले रहें। मित्रतावढ़ावें और दोनों मिल लक्ष्मणकोदेखेंयह विचारकर सीताका जीव प्रत्येन्द्र जहां राम ध्यानारूढथे वहांआया इनको ध्यान से च्युत करवे अर्थ देवमायारची, बसन्त ऋतु वन में प्रकट करी नानाप्रकार के फूल फूले और सुगन्ध वायुवाजने लगी, पक्षी मनोहर शब्द करने लगे और भ्रमर गुन्जार करे हैं कोयल बोले हैं मैंना, सूवा, नाना प्रकारकी ध्वनि कररहे हैं आंब मौर आये भ्रमरोंकर मण्डितसोहे हैं कामके बाणजे पुष्प तिनकी सुगन्धताफैल रहीहै और कर्णकार जातिकेवृक्ष फूले हैं तिन कर वन पीत होरहाहै सो मानों बसन्तरूपराजा पीतम्बरकर क्रीडा कररहाहै और मौलश्री की वर्षा

होयरही है ऐसी वसंत की लीला कर आप वहप्रतेन्द्र जानकीका रूपधर राम के समीप आया. वहमनोहर वन जहां और कोईजननहीं और नाना प्रकारके वृक्षसबऋतुके फूल रहे हैं. उस समय रामके समीप सीता सुन्दरी कहती भई हे नाथ पृथिवी में भ्रमण करते कोई पुण्य के योग से तुम को देखे वियोगरूप लहर का भराजो स्नेहरूप समुद्र उसविषे मैं डूबूहूं सो मुझे थांभो अनेकप्रकाररागके वचनकहे परन्तुमुनिअकंप सो वह सीता का जीवमोह के उदय से कभी दाहिने कभी बाईं भ्रमे कामरूप ज्वरके योगसे कंपित शरीरऔरमहा सुन्दर अरुणहै अधरजिसके इसभांति कहतीभई हे देव मैं बिना बिचारे तुम्हारी आज्ञा विना दीक्षा लीना मुझे विद्याधरीयोंने बहकाया अब मेरा मन तुम में है इस दीक्षाकरपूर्णता होवे परन्तु यह दीक्षा अत्यन्तबृद्धों को योग्य है कहां यह यौवनअवस्था और कहांयह दुर्द्धर व्रत महाकोमल फूल दावानल की ज्वाला कैसे सहार सके और हजारों विद्याधरों की कन्या औरभी तुम को बरा चाहे हैं मुझे आगे धरल्याई हैं कहे हैं तुम्हारे आश्रय हम बलदेव को वरें यह कहे हैं और हजारों दिव्य कन्या नानाप्रकार के आभषण पहरे गज हंसनी समान है चाल जिनकी सो प्रत्येन्द्र की विक्रीया कर मुनीन्द्र के समीप आई कोयल सेभी अधिक मधुर बोलें ऐसी सोहें मानो साक्षात लक्ष्मीही हैं मनको आल्हाद उपजावें कानोंको अमृत समान ऐसे दिव्य गीत गावती भई और बीण बांसुरी मृदंग बजावती भई भ्रमर सारिखे श्याम केश बिजुरी समान चमत्कार महासुकुमार पातरी कटि कठोर अति उन्नत हैं कुच जिन के सुन्दर शृंगार करे नाना वर्ण के वस्त्र पहिरे. हाव भाव बिलास विभ्रम को धरती मुलकती अपनी कांति कर व्याप्त किया है आकाश जिन्होंने मुनिके चौगिर्द बैठी प्रार्थना करती भई हे देव हमारी रक्षा करो और कोई एक पूछती भई

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हे देव यह कौन वनस्पति है और कोई एक माधवी लता के पुष्प के ग्रहण के मिस बाहू ऊंची करती अपना अंग दिखावतीभई, और कोईएक भेलीहोय कर ताली देती रासमंडल रचती भई, पल्लवसमान है कर जिनके और कोई परस्पर जल केलि करती भई इस प्रकार नाना भान्तिको क्रीडा कर मुनों के मन डिगायवे का उद्यम करती भई, सो हे श्रेणिक जैसे पवन कर सुमेरु न डिगे तैसे श्रीरामचन्द्रमुनि का मन न डिगा आतम स्वरूप के अनुभवी रामदेव सरल है दृष्टि जिनकी विशुद्ध है आत्मा जिनका परीषह रूप वज्रपात से न डिगे क्षपक श्रेणी चढ़े शुक्लध्यान के प्रथम पाए विषे प्रवेश किया, रामचन्द्र का भाव आत्मा में लग अत्यन्त निर्मल भया सो उनका जोर न पहुंचा मूढजन अनेक उपाय करें परन्तु ज्ञानी पुरुषों का चित्त न चले; वे आत्म स्वरूप में ऐसे दृढ़ भए जो किसी प्रकार न चिगे प्रतेन्द्रदेव ने माया कर राम का ध्यान डिगायवे को अनेक यत्न किए परन्तु कछुही उपाय न चला, वे भगवान् पुरुषोत्तम अनादि कालके कर्मोंको वर्गणाके दग्ध करिवेको उद्यमीभए पहिलेपाएके प्रसादसेमोहकानाशकर बारह में गुणस्थान चढ़े वहां शुक्लध्यान के दूजे पाए के प्रशाद से ज्ञानावर्ण अन्तराय का अन्तकिया, माघ शुक्ल द्वादशीकी पिछली रात्रि केवलज्ञान को प्राप्त भए केवल ज्ञानविषे सर्व द्रव्य समस्तपर्याय प्रति भासे ज्ञान रूप दर्पन में लोकालोक सब भासे तब इन्द्रादिक देवों के आसन कंपायमान भए अवधि ज्ञान कर भगवान् राम को केवल उपजा जान कर केवल कल्याणक की पूजा को आए, महाविभूति संयुक्त देवों कर समूह सहित बड़े श्रद्धावान सब ही इन्द्र आए घातिया कर्म के नाशक अर्हंत परमेष्ठी तिनको चारण मुनि और चतुरनिकाय के देव सब ही प्रणाम करतेभए वे भगवान छत्र चमर सिंहासन आदिकर शोभित

For Private and Personal Use Only

त्रैलोक्य कर वन्दिवे योग्य संयोगकेवली तिनकी गंधकुटी देव रचते भए दिव्यध्वनि खिरती भई सब ही श्रवण करतेभए और बारम्बार स्तुति करतेभए सीता का जीव स्वयंप्रभ नामा प्रतेन्द्र केवली कीपूजा कर तीनप्रदक्षिणा देय बारम्बार क्षमा करावता भया, हे भगवान में दुर्बुद्धिने जो दोष किए सोक्षमा करो, गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक वे भगवान बलदेव अनंत लक्ष्मी कांति कर संयुक्त आनन्द मर्त्ति केवली तिनकी इन्द्रादिक देव महाहर्ष के भरे अनादि रीति प्रमाण पजा स्तुति कर विहार की विनती करते भए, तब केवली ने विहार किया सो देव भी लार विहार करते भए ॥ ॥इति एक सौतेइसवां पर्व सम्पूर्णम्॥

अथानन्तर सीता का जीव प्रतेंद्र लक्ष्मण के अनेक गुण चितार लक्ष्मण का जीव जहां था वहां जायकर उसको सम्यक्ज्ञान का ग्रहण करावता और खरदूषण का पुत्र शंबूक असुरकुमार जातिका देव भया था सो ये तीजे नरकतक नारकीयों को बाधा करावे हिंसानंद रौद्रध्यान विषे तत्परपापीनारकीयों को परस्पर लड़ावे, पाप के उदयकरजीव अधोगति जावे सो तीजे लगतो असुरकुमारभी लड़ावे हैं आगे असुर कुमार नजांयनारकी परस्पर ही लडेहैं जहां कईयकोंको अग्निकुण्ड विषेडारे हैं सोपुकारे हैं कैयकों को कांटां कर युक्त जो शाल्मलीवृक्ष तिनपर चढाय घसीटेहैं कैयकोंको लोहमईमुद्गर और मूसलोंकर कूटे हैं और जे मासाहारी पापी तिनको उनही का मांस काट काट खुवावे हैं और प्रज्वलित ताम्बे के लोहे का गोला तिनके मुखमें मार मार देवे हैं और कैयक मारके मारे भूमि में लोटे हैं और मायामई श्वान मार्जार सिंह व्याघ्र दुष्ट पक्षी भषे हैं, वहां तिर्यंच नहीं नरक की विक्रिया हैं कईयकों को सूली चढ़ावें हैं वज्र अग्नि के मुद्गरों कर मारे हैं कईयकों को कुम्भीपाक में डारे हैं कईयकों को ताता तांबा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाल गाल कर प्यावे हैं। और कहे हैं यह मदिरा पीने के फल हैं कैयकों को काठ में बांधकर करौंतों से चीरे हैं और कैयकों को कुठारों से काटे हैं कैयकों को घानी में पेले हैं कैयकों की आंख काढे हैं कैयकौं की जीभ काढे हैं वह क्रूर कैयकों के दांत तोडे हैं इत्यादि नारकीयों को अनेक दुःख हैं सो अवधिज्ञानकर प्रतेन्द्रनारकीयों की पीड़ा देख शंबूक के समझायबे को तीजी भूमि गया सो असुर कुमार जातिके देव क्रीडा करते थे वे तो इनके तेज से डर गये और शम्बू को प्रतेन्द्र कहते भए अरे पापी निर्दई तैंने यह क्या आरंभा जो जीवों को दुःख देवे है हे नीचदेव क्रूर कर्म तज, क्षमा पकड़ यह अनर्थ के कारण कर्म तिनकर कहां और यह नरक के दुःख सुनकर भय उपजे है तू प्रतक्षनारकियों को पीड़ा करे है करावे है सो तुझे त्रास नहीं यह वचन प्रत्येन्द्र के सुन शंबूक प्रशांत भया, दूसरे नारकी तेज न सह सके रोवते भए और भागते भए तब प्रत्येन्द्र ने कही हो नारकी हो मुझसे मत डरो जिन पापों कर नरक में आये हो तिनसे डरो, जब इसभांति प्रत्येन्द्र ने कही तब उनमें कैयक मनमें विचारते भए जो हमहिंसा मृषावाद परधन हरण परनारीरमण बहु आरंभ बहु परिग्रह में प्रवर्ते रौद्र ध्यानी भए उसका यह फल है भोगों में आसक्त भए क्रोधादिक की तीव्रता भई खोटे कर्म कीये उससे ऐसा दुःख पाया देखो यह स्वर्गलोक के देव पुण्यके उदयसे नानाप्रकार के विलास करे हैं रमणीक विमान चढे जहां इच्छा होय वहांही जांय इसभांति नारकी विचारते भए और शंबूकका जीव जो असुरकुमार उसको ज्ञानउपजा फिर रावण के जीवने प्रतेन्द्रसे पूछा तुम कौन हो तब उसने सकलवृतांत कहा मैं सीता का जीव तपके प्रभाव कर सोलमें स्वर्ग में प्रत्येन्द्र भया, और श्रीरामचन्द्र महामुनींद्र होयज्ञानावर्ण दर्शनावर्ण मोहिनी अंतरायनी का नाशकर केवली भए सो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मोपदेश देते जगत् को तारते भरतक्षेत्रमें तिष्ठे हैं नाम गोत्र वेदनी आयुका अंतकर परमधाम पधारेंगे और तू विषय वासना कर विषम भूमि में पड़ा अबभीचेत ज्यूं कृतार्थ होय, तब रावण का जीव प्रतिबोध को प्राप्त भया अपने स्वरूप का ज्ञान उपजा अशुभकर्म बुरे जाने मन में विचारता भया मैं मनुष्यभव पाय अणुव्रत महाव्रत न आराधे तिससे इस अवस्था को प्राप्त भया हाय हाय मैं क्याकिया जो आपको दुःख समुद्र में डारा यह मोहका महात्म्य है जो जीव आत्महित न करसकें रावण प्रतीन्द्रको कहे हैं हे देव तुम धन्य हो विषयकी वासना तजी जिनवचनरूप अमृत को पीकर देवों के नाथ भए तब प्रत्येन्द्रने दयालु होयकर कही तुम भय मत करो चलो हमारे स्थान को चलो ऐसा कह इसके उठावे को उद्यमीभया तब रावण के जीवके शरीर की परमाणु विखर गई जैसे अग्नि कर माखन पिगलजाय काहू उपायकर इसे लेजायबे समर्थ न भया जैसे दर्पण में तिष्ठती छाया नग्रही जाय तब रावण का जीव कहता भया हे प्रभो तुम दयालु हो सो तुमको दया उपजेही परन्तु इनजीवोंनेपूर्वे जे कर्म उपार्जे हैं तिनका फलअवश्य भोगे हैं विषय रूप मांस का लोभी दुर्गति का आयु बांधे है सो आयु पर्यंत दुःख भोगवे है यह जीव कर्मों के आधीन इसका देव क्या करें हमने अज्ञानके योग से अशुभ कर्म उपार्जे हैं इनका फल अवश्य भोगवेंगे आप छुड़ायबे समर्थ नहीं तिससे कृपा कर वह उपदेश कहो जिसकर फिर दुर्गति के दुःख न पावें, हे दयानिधे तुम परम उपकारी हो, तब देवने कही परमकल्याण का मूल सम्यक्ज्ञान है सो जिनशासन का रहस्य है अविवेकियों को अगम्य है तीनलोक में प्रसिद्ध है आत्मा अमूर्तीक सिद्ध समान उसे समस्त परद्रव्यों से जुदा जाने जिन धर्म का निश्चय करे यह सम्यक्दर्शन कर्मों का नाशक शुद्ध पवित्र परमार्थ का मूल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवों ने न पाया इसलिये अनन्त भव ग्रहे यह सम्यग्दर्शन अभव्यों को अप्राप्य है और कल्याणरूप है जगत् में दुर्लभ है सकल में श्रेष्ठ है सो जो तू आत्मकल्याण चाहे है तो उसे अंगीकारकर जिसकर मोक्ष पावे उससे श्रेष्ठ और नहीं न हुवा न होयगा इसीकर सिद्ध भए हैं और होंयगे जे अरहंत भगवान् ने जीवादिक नव पदार्थ भाखे हैं तिनकी दृढ़श्रद्धा करनी उसे सम्यग्दर्शन कहिये इत्यादि वचनों कर रावण के जीव को सुरेन्द्र ने सम्यक् ग्रहण कराया और इसकी दशा देख विचारता भया जो देखो रावण के भव में इसकी कहां कांति थी महासुन्दर लावण्य रूप शरीर था सो अब ऐसा होयगया जैसा नवीन वन अग्नि कर दग्ध होयजाय जिसे देख सकल लोक आश्चर्य को प्राप्त होते सो ज्योति कहां गई, फिर उसे कहता भया कर्मभूमि में तुम मनुष्य भए थे सो इन्द्रियों के क्षुद्र सुख के कारण दुराचार कर ऐसे दुःख रूप समुद्र में डूबे। इत्यादि प्रत्येन्द्र ने उपदेश के वचन कहे, तिन को सुन कर उसके सम्यक् दर्शन दृढ़ भया और मन में विचारता भया कर्मों के उदय कर दुर्गति के दुःख प्राप्त भए तिनको भोग यहां से छूट मनुष्य देह पाय जिनराज का शरण गहूंगा. प्रत्येन्द्र से कही अहो देव तुम मेरा बड़ा हित किया जो सम्यक्दर्शन में मुझे लगाया, हे प्रत्येन्द्र महाभाग्य अब तुम जावो, वहां अच्युतस्वर्ग में धर्म्म के फल से सुख भोग मनुष्य होय शिवपुर को प्राप्त होवो, जब ऐसा कहा तब प्रत्येन्द्र उसे समाधान रूप कर कर्मों के उदय को सोचते संते सम्यक् दृष्टि वहां से ऊपर आया संसार की माया से शंकित है आत्मा जिसका अर्हंत सिद्ध साधु जिन धर्म्म के शरण विषे तत्पर है मन जिस का तीन बेर पंच मेरु की प्रदक्षिणा कर चैत्यालयों का दर्शन कर नारकीयों

For Private and Personal Use Only

के दुःख से कंपायमान है चित्त जिसका स्वर्ग लोक में भी भोगाभिलाषी नभया मानों नारकीयों की ध्वनि सुने है, सोलमें स्वर्ग के देव को छठे नरक लग अवधिज्ञान कर दीखे है तीसे नरक के विषे सबापु के जीवको और संबूक का जीव जो असुरकुमारदेव था उसे संबोधिसम्यक्त्वमासकिया है श्रेणिक उत्तम जीवों से पर उपकार ही बने फिर स्वर्ग लोक से भरतक्षेत्र में श्रीराम के दर्शन को आए पवन से भी शीघ्र गामी जो विमान उस में आरूढ अनेक देवों को संग लिये नाना प्रकारके वस्त्र पहिरे हार माला मुक्तादिक कर मंडित शक्ति गदा खड्ग धनुष बरछी शतघ्नी इत्यदि अनेक आयुधों को धरे गज तुरंग सिंह इत्यादि अनेक वाहनों पर चढ़े मृदंग बांसुरी बीण इत्यादि अनेक वादित्रों के शब्द तिन कर दशों दिशा पूर्ण करते केवली के निकट आए देवों के वाहन गज तुरंग सिंहादिक तिर्यंच नहीं देवों की विक्रिया है श्रीराम को हाथ जोड सीस निवाय वारंवार प्रणाम कर सीता का जीव प्रत्येंद्र स्तुति करता भया । हे संसारसागर के तारक तुमने ध्यानरूप पवन कर ज्ञानरूप अग्नि दीप्त करी, संसार रूप वन भस्म किया और शुद्ध लेश्या रूप त्रिशूल कर मोहरिपु हता, वैराग्यरूप वज्र कर दृढ़ स्नेहरूप पिञ्जरा चूर्ण किया हे नाथ हे मुनीन्द्र हे भवसूदनसंसाररूप घन से जे डरे हैं तिनको तुम शरण हो हे सर्वज्ञ कृत कृत्य जगत गुरु पाया है पायवे योग्य पद जिन्होंने हे प्रभो मेरी रक्षा करो संसार के भ्रमण से अतिव्याकुल है मन मेरा तुम अनादि निधन जिनशासन का रहस्य जान प्रबल तप कर संसार सागर से पार भए, हे देवाधिदेव यह तुम को कहा युक्त जो मुझे भववन में तज आप अकेले विमल पद को पधारे, तब भगवान् कहते भए हे प्रत्येन्द्र तू राग तज जे वैराग्य में तत्पर हैं तिन ही को मुक्ति है । रागी जीव संसार में

डूबे है जैसे कोई शिला को कंठमें बांध भुजावों कर नदी को नहीं तिर सके तैसे रागादिक भार कर चतुर्गति रूप नदी न तिरी जाय, जे ज्ञान वैराग्य शील संतोष के धारक हैं वेई संसार सागर को तिरे हैं जे श्रीगुरु के वचन कर आत्मानुभव के मार्ग लगे वेई भव भ्रमण से छूटें और उपाय नहीं काहू का भी लेजाया कोई लोकशिखर न जाय एक वीतराग भाव ही से जाय इसभांति श्रीराम भगवान् सीता के जीव को कहते भए, सो यह वार्ता गौतमस्वामीने श्रेणिकसे कही फिर कहतेभए हेनृप सीताके जीव प्रत्येंद्र ने जो केवलीसे पूछी औरउसन कहा सो तू सुन, प्रतेंद्र ने पूछी हेनाथ दशरथादिक कहांगए और लवणंकुश कहां जावेंगे तब भगवान् ने कही दशरथ कौशल्या सुमित्रा केकई सुप्रभा और जनक और जनक का भाई कनक यह सब तपके प्रभाव कर तेरहमें दवलोक गए हैं यह सब ही समान ऋद्धि के धारी देव हैं और लवणंकुश महाभाग्य कर्म रूप रजसे रहित होय विमल पद को इसही जन्म से पावेंगे, इसभांति केवली की ध्वनि सुन भामंडल की गति पूछी, हे प्रभो भामंडल कहां गया, तब आप कहते भए हे प्रत्येन्द्र तेरा भाई राणी सुन्दरमालिनी सहित मुनिदान के प्रभाव कर देवकुरू भोगभूमि में तीन पल्य की आयु के भोक्ता भोगभूमिया भए तिन के दान की वार्ता सुन अयोध्या में एक बहु कोट धनका धनी सेठ कुलपति उसके मकरा नामा स्त्री जिसके पुत्र राजाओं के तुल्य पराक्रमी सो कुलपति ने सुनी सीता को बनमें निकासी तब उसने विचारी वह महागुणवती शीलवती सुकुमार अंग निर्जन बन में कैसे अकेली रहेगी धिक्कार है संसारकी चेष्टा को, यह विचार दयालुचित्त होय द्युतिभट्टारक के समीप मुनि भया और उसके दोय पुत्र एक अशोक दूजा तिलक यह दोनों मुनिभए सो द्युतिभट्टारक तो समाधि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मरणकर नवमग्रैवेयक में अहमिन्द्र भए और यह पिता पुत्र तीनों मुनिताम्रचूडनामा नगर वहां केवली की वंदनाको गए सामार्ग में पचास योजनकी एक अटवीवहां चतुर्मासिक आयपड़ा तबएकबृक्षकेतले तीनों साधु विराजे मानों साक्षात् रत्नत्रय ही हैं वहां भामण्डल आय निकसा अयोध्या आवे था सो विषम वन में मुनों को देख विचार किया, यह महा पुरुष जिन सूत्र की आज्ञा प्रमाण निर्जन वन में विराजे चौमासे मुनियों का गमन नहीं अब यह आहार कैसे करें तब विद्या की प्रबल शक्ति कर निकट एक नगर बसाया जहां सब सामग्री पूर्ण बाहिर नानाप्रकार के उपवन सरोवर और धान के क्षेत्र और नगर के भीतर बड़ी बस्ती महासंपत्ति, चार महीना आपभी परिवार सहित उसनगर में रहा और मुनियों के वैयावृत किये, वह वन ऐसा था जिस में जल नहीं सो अद्भुत नगर बसाया, जहां अन्नजल की बाहुल्यता सो नगर में मुनों का आहार भया और और भी दुखित भुखित जीवों को भान्ति भान्ति के दान दीए, और सुन्दरमालिनी राणी सहित आप मुनों को अनेकवार निरंतराय आहार दीया, चतुर्मास पूर्ण भए मुनि विहार करते भए और भामंडल अयोध्या आय फिर अपने स्थानक गया एक दिन सुन्दरमालिनी राणी सहित सुखसे शयन करे था सो महल पर विजुरी पड़ी राजा राणी दोनों मरकर मुनिदानके प्रभाव से सुमेरु पर्वत की दाहिनी ओर देवकुरु भोग भूमि वहां तीन पल्यके आयु के भोक्ता युगल उपजे, सो दानके प्रभाव से सुख भोगवे हैं जे सम्यक्त रहित हैं और दान करे हैं सो सुपात्र दानके प्रभाव से उत्तमगति के सुखपावे हैं सो यह पात्रदान महासुख का दाता है यह बात सुन फिर प्रत्येन्द्र ने पूछी हे नाथ रावण तीजी भूमि से निकस कहां उपजेगा और मैं स्वर्ग से चयकर कहां उपजूंगा मेरे और लक्ष्मण के और रावण के केते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भव बाकी हैं सो कहो, तब सर्वदेव ने कही हे प्रतेन्द्र सुन वे दोनों विजयावती नगरी में सुनंदनामा कुटम्बी सम्यक दृष्टि उसके रोहिणी नामा भार्या उसके गर्भ में अरहदास ऋषिदासनाम पुत्र होवेंगे महागुणवान् निर्मल चित्त दोनों भाई उत्तम क्रिया के पालकश्रावक के व्रत आराध समाधि मरण कर जिनराज का ध्यान घर स्वर्ग में देव होंयगे वहां सागरां पर्यंत सुख भोग स्वर्ग से चयकर फिर उसही नगरी में बड़ेकुल में उपजेंगे सो मुनों को दान देकर हरिक्षेत्र जो मध्यम भोग भूमि वहां युगलीया होय दोय पल्यका आयुभोग स्वर्ग जावेंगे फिर उसही नगरी में राजा कुमारकीर्ती राणी लक्ष्मी तिन के महायोधा जय कान्त जयप्रभ नामा पुत्र होंयगे फिर तपकर सातमें स्वर्ग उत्कृष्ट देव होंयगे देवलोक के महा सुख भोगेंगे और तू सोलवां अच्युत स्वर्गवहां से चयकर इसभरतक्षेत्र में रत्न स्थलपुर नामा नगर वहां चौधे रत्नका स्वामी षट खंड पृथिवी का धनी चक्रनामा चक्रवर्ती होयगा तब वे सातवें स्वर्गसे चयकर तेरे पुत्र होंयगे रावण के जीव का नाम तो इन्द्ररथ और वसुदेव के जीव का नाम मेघरथ दोनों महाधर्मातमाहोवेंगे परस्पर उनमें अतिस्नेह होयगा और तेरा उनसे अति स्नेह होयगा जिस रावणने नीतिसे तीन खंड पृथिवी का अखंड राज्य काया और ये प्रतिज्ञा जन्म पर्यंत निवाही जो पर स्त्री मुझे न इच्छे ताहि मैं नसेऊं सो रावण का जीव इन्द्ररथ धर्मात्मा कैयकश्रेष्ठ भव धार तीर्थंकर देव होयगा, तीनलोक उसको पूजेंगे और तू चक्रवर्तीराज्यपदतज मुनि व्रतधारी पंचोत्तरो में वैजयंतनामा विमान वहांतप के प्रभावसे अहिंमिन्द्रहोयगा वहां से चयकर रावण का जीव तीर्थंकर उसके प्रथम गणधर होय निर्वाण पद पावेगा, यह कथा श्रीभगवान राम केवली तिनके मुख प्रतीन्द्र सुनकर अतिहर्षित भया फिर सर्वज्ञ देवने कही हे प्रतेन्द्र तेरा चक्रवर्ती

पदका दूजा पुत्र मेघरथ सो कैयक महाउत्तम भव धर धर्मात्मा पुष्करद्वीप के महाविदेह क्षेत्र में शतपत्र नामा नगर वहां पंचकल्याणक का धारक तीर्थंकर देव चक्रवर्ती पद को धरे होयगा, संसारका त्यागकर केवल उपाय अनेकों को तारेगा और आप परमधाम पधारेगा, ये वासुदेव के भव तुझे कहे और मैं अब सात वर्ष में आयु पूर्णकर लोक शिखर जाऊंगा जहां से फिर भव नहीं, और जहां अनंत तीर्थंकर गये और जावेंगे अनंत केवली वहां पहुंचे जहां ऋषभादि भरतादि विराजे हैं अविनाशीपुर त्रैलोक्य के शिखर है, जहां अनंत सिद्ध हैं वहां हो मैं तिष्ठूंगा ये वचन सुन प्रत्येंद्र पदमनाम जे श्रीरामचन्द्र सर्वज्ञ वीतराग तिनको बार बार नमस्कार करता भया और मध्यलोक के सर्व तीर्थ वंदे भगवान के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय और निर्वाणक्षेत्र वहां सर्वत्र पूजा कर और नंदीश्वरद्वीप विषे अंजनगिरि दधिमुख रतिकर वहां बड़े विधान से अष्टानिका की पूजा करी देवाधिदेव जे अरहत सिद्ध तिनका ध्यान करता भया, और केवली के वचन सुन ऐसा निश्चय भया जो मैं केवली होय चुका अल्प भव हैं और भाई के स्नेह से भोग भूमि में जहां भामंडल का जीव है वहां जाय उसे देखा और उसको कल्याण का उपदेश दीया और फिर अपना स्थान सोलवां स्वर्ग वहां गया जिसके हजारों देवांगना तिनसहित मानसिक भोग भोगताभया श्री रामचन्द्र का सतरह हजार वर्ष का आयु सोलह धनुष की ऊंची काया कैयक जन्म के पापों से रहित होय सिद्ध भये वे प्रभु भव्यजीवों को कल्याण करो जन्म जरा मरण महारिपु जीते परमात्मा भये जिनशासनमें प्रकट है महिमा जिनकी जन्मजरा मरणका विछेदकर अखंड अविनाशी परम अतीन्द्रिय सुख पाया सुर असुर मुनिवर तिनके जे अधिपति तिनकर सेयवे योग्य नमस्कार करवे योग्य दोषों के विनाशक पच्चासवर्ष तपकर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुनिव्रत पाल केवलीभये सो आयु पर्यंत केवल दशा में भव्यों को धर्मोपदेश देय तीन भुवनका शिखर जो सिद्ध पद वहां सिधारे, सिद्धपद सकल जीवोंकातिलक है रामसिद्ध भये तुम रामकोसीसनिवायनमस्कार करो रामसुरनर मुनियों कर आराधिवे योग्य हैं शुद्ध हैं भाव जिनके संसार के कारण जे रागद्वेषमोहादिक तिनसे रहित हैं परमसमाधि के कारण हैं और महामनोहर हैं प्रतापकर जीता है तरुण सूर्य का तेज जिन्होंने और उन जैसी शरदकी पूर्णमासीकेचंद्रमा में कांति नहीं सर्व उपमारहित अनुपम वस्तु हैं और रूप जो आत्मरूप उस में आरूढ हैं श्रेष्ठ हैं चरित्रजिनके श्रीराम यतीश्वरोंके ईश्वरदेवों के अधिपति प्रतेंद्रकी माया से मोहित न भये जीवों के हितु परम ऋद्धिकर युक्त अष्टम बलदेव पवित्र शरीर सोभायमान अनंत वीर्य के धारी अतुल महिमा कर मंडित निर्विकार अठारह दोष कर रहित अष्टादशसहस्र शील के भेद तिनकर पूर्ण अतिउदार अति गंभीर ज्ञान के दीपक तीनलोक में प्रकट है प्रकाश जिनका अष्टकर्मके दग्धकरणहारे गुणोंके सागर क्षोभ रहित सुमेरुसे अचलधर्मके मूलकषायरूप रिपुके नाशक समस्तविकल्परहित महानिर्द्वंद जिनेंद्र के शासनकारहस्यपाय अंतरात्मा से परमात्माभये उन्होंने त्रैलोक्यपूज्य परमेश्वरपद पाया तिनको तुम पूजो धोय डारे हैं कर्मरूपमल जिन्होंने, केवलज्ञान केवल दर्शनमई योगीश्वरोंके नाथ सर्वदुःखके दूर करणहारे मन्मथ के मथनहारे तिनको प्रणाम करो, यह श्रीबलदेव का चरित्र महामनोग्यजो भावधर निरंतरबांचें सुनें पढ़ें पढ़ावें शंका रहित होय महाहर्षका भरा रामकी कथा का अभ्यास करे तिसके पुण्य की वृद्धि होय और वैरी खड्ग हाथ में लिये मारिवे को आया होय सो शांत होय जाय, इसग्रंथ के श्रवणसे धर्म के अर्थी इष्टधर्म को लहैं यश का अर्थी यश को पावे राज्यभ्रष्ट हुआ और राज्य कामनाहोय तो राज्य

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पावे इसमें संदेह नहीं इष्ट संयोग का अर्थी इष्टसंयोग लहे धनकाअरथी धन पावे, जीत का आरथी जीत पावे स्त्री का अरथी सुन्दर स्त्री पावे लाभकाअरथी लाभ पावेसुखकाअरथीसुखपावे और काहूकाकोई वल्लभ विदेशगया होय और उसके आयवे की आकुलताहोय सोवहसुखसे घरआवे जोमनविषे अभिलाषाहोय सोही सिद्धहोय सर्व व्याधि शांत होय ग्राम के नगर के देवों के देव जलके देव प्रसन्न होंय और नवग्रहों की बाधा न होय, क्रूर ग्रह सौम्य होय जांय और जे पाप चितवन में नआवें वे विलाय जांय और सकल अकल्याण राम कथा कर क्षय हो जाय और जितने मनोरथ हैं वे सब राम कथाके प्रसादसे पावें औरवीतराग भाव दृढ होय उसकर हजारांभव के उपार्जे पापोंको प्राणी दूर करे कष्टरूप समुद्र को तिरसिद्धपद शीघ्र ही पावे यह ग्रन्थ महा पवित्र है जीवको समाधि उपजावने का कारण है नाना जन्म में जीवने पाप उपार्जेमहाक्लेश के कारण तिनका नाशक है और नाना प्रकार के व्याख्यानतिनकर संयुक्त है जिसमें बड़े बड़े पुरुषों की कथा भव्यजीवरूप कमलों को प्रफुल्लित करणहारा है सकल लोककर नमस्कार करिबे योग्य श्रीवर्धमान भगवान उन्होंने गौतमसेकहा और गौतमने श्रेणिकसे कहा इसही भान्ति केवली श्रुतकेवली कहते भए, रामचन्द्र का चरित्र साधुवों को समाधि की वृद्धिका कारण सर्वोत्तम महामंगलरूप सो मुनो की परिपाटी कर प्रकटहोता भया सुन्दर हैं वचन जिसमें समीचीन अर्थ को धरें अति अद्भुत इन्द्रगुरु नामा मुनि तिन के शिष्य दिवाकरसेन तिनकेशिष्य लक्ष्मणसेन तिनकेशिष्य रविषेण तिन जिनआज्ञा अनुसार कहा, यह रामका पुराण सम्यग्दर्शन की सिद्धि का कारण महाकल्याण का कर्ता निर्मलज्ञानका दायक विचक्षणजीवों को निरंतर सुनिबे योग्य है अतुलपराक्रमी अद्भुत आचरण के धारक महासुकृती जे दशरथके नंदन तिनकी महि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मा कहांलग कहूं इस ग्रन्थ में बलभद्र नारायण प्रतिनारायण तिनका विस्ताररूप चरित्र है जो इस में बुद्धि लगावे तो अकल्याणरूप पापों को तजकर शिव कहिये मुक्ति उसे अपनी करे जीव विषय की वांछाकर अकल्याण को प्राप्त होय हैं। विषियाभिलाष कदाचित् शांति के अर्थ नहीं, देखो विद्याधरों का अधिपति रावण पर स्त्री की अभिलाषाकर कष्ट को प्राप्त भया काम के रागकरहता गया ऐसे पुरुषों की यह दशा है तो और प्राणी विषय वासनाकर कैसे सुख पावें, रावण हजारां स्त्रियों कर मंडित निरंतर सुख सेवे था तृप्त न भया परदारा की कामनाकर विनाश को प्राप्त भया इन व्यसनों कर जीव कैसे सुखी होय जो पापी परदारा का सेवन करें सो कष्ट के सागर में पड़ें और श्रीरामचन्द्र महा शीलवान् परदारा पराङ्मुख जिनशासन के भक्त धर्मानुरागी वे बहुतकाल राज्य कर संसार को असार जान वीतराग के मार्ग में प्रवर्ते परमपदको प्राप्त भए और भी जे वीतराग के मार्ग में प्रवर्तेंगे वे शिवपुर पहुंचेंगे इसलिये जे भव्य जीव हैं वे जिनमार्ग की दृढ़प्रतीति कर अपनी शक्ति प्रमाणव्रत का आचारण करो जो पूर्णशक्ति होय तो मुनि होवो और न्यूनशक्ति होय तो अणुव्रतके धारक श्रावक होवो यह प्राणी धर्मके फलकर स्वर्ग मोक्षके सुख पावे हैं और पाप के फल से नरकनिगोद के दुःख पावे हैं यह निसंदेह जानों अनादि काल की यही रीति है धर्म सुखदाई अधर्म दुखदाई पाप किसे कहिये और पुण्य किसे कहिए सो उरमें धारो जेते धर्म के भेद हैं तिनमें सम्यक्त मुख्य हैं और जितने पापके भेद हैं तिनमें मिथ्यात्व मुख्य है सो मिथ्यात्व कहां अतत्व की श्रद्धा और कुगुरु कुदेव कुधर्म का आराधन परजीव को पीड़ा उपजावना और क्रोधमान माया लोभ की तीव्रता और पांच इन्द्रियों के विषय सप्त व्यसन का सेवन और मित्रद्रोह कृतघ्न विश्वासघात अभक्ष्य

For Private and Personal Use Only

का भक्षण अगम्य में गमन मर्म का छेद वचन सुरापान इत्यादि पाप के अनेक भेद हैं वे सब तजने और दया पालनी सत्य बोलना चोरी न करनी शील पालना तृष्णातजनी कामलोभ तजने शास्त्र पढ़ना काहू को कुवचन न कहना गर्व न करना प्रपंच न करना अदेयस का न होना शांत भाव धारना पर उपकार करना परदारा परधन परद्रोह तजना पर पीड़ा का वचन न कहना बहु आरंभ बहु परिग्रह का त्याग करना दान देना तप करना परदुख हरण इत्यादि तो अनेक भेद पुण्य के हैं वे अंगीकार करने, अहो प्राणी हो सुख दाता शुभ है और दुःखदाता अशुभ है दारिद्र दुःख रोग पीड़ा अपमान दुर्गति यह सब अशुभ के उदय से होय हैं और सुख संपत्ति सुगति यह सब शुभ के उदय से होय हैं ॥

शुभ अशुभ ही सुखदुःखके कारण हैं और कोई देव दानव मानव सुख दुःखका दाता नहीं अपने २ उपार्जे कर्मकाफल सबभोगवे हैं सबजीवोंसे मित्रता करना किसीसे बैर न करना किसी को दुख न देना सबही सुखीहों यहभावना मनमें धरनी, प्रथम अशुभको तज शुभमें आवना फिर शुभाशुभसे रहितहोय शुद्धपदकोप्राप्त होना, बहुतकहिबे कर क्या इसपुराणके श्रवणकर एकशुद्धसिद्ध पदमें आरूढ़होना अनेकभेदकर्मों का विलय कर आनन्दरूप रहना है। हो पंडितोहो परमपदके उपाय निश्चय थकी जिनशासनमें कहे हैं वे अपनी शक्ति प्रमाण धारणकरो जिसकर भवसागरसे पारहोवो। यहशास्त्र अति मनोहर जीवोंको शुद्धताका देनहारा रवि समान सकलवस्तुका प्रकाशकहै सो सुनकर परमानंद स्वरूपमें मग्न होवो, संसारअसार है जिनधर्म सार है जिस कर सिद्धपदको पाईये है सिद्धपद समान और पदार्थ नहीं जब श्रीभगवान् त्रैलोक्यके सूर्य वर्द्धमान देवाधिदेव सिद्धलोक को सिधारे तबचतुर्थकालके तीनवर्ष साढाआठ महीनाशेष थे सोभगवान्‌को मुक्तिभए

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीछेपंचमकालमें तीन केवली और पांचश्रुतकेवलाभएसो वहांलगतो पुराण पूर्णभया, जैसाभगवान्ने गौतम गणधरसे कहा औरगौतमने श्रेणिकसेकहा वैसाश्रुतकेवलीयोंनेकहा श्रीमहावीरपीछे बासठवर्षलग केवलज्ञान रहा, और केवल पीछेसौवर्षतक श्रुतकेवलीरहा पंचमश्रुतकेवली श्रीभद्रवाहुस्वामी तिनके पीछे कालके दोष सेज्ञान घटता गया तब पुराणका विस्तार न्यूनहोता भया, श्रीभगवान्महावीर को मुक्तिपधारे बारहसौ साढ़े तीन वर्षभए तब रविषेणाचार्यने अठारहहजार अनुष्टुप्श्लोकों में व्याख्यानकिया यह रामका चरित्रसम्यक्त का कारण है केवली श्रुतकेवली प्रणीत सदापृथिवी में प्रकाश करो जिनशासनके सेवक देव जिनभक्ति में परायण जिनधर्मी जीवों की सेवा करें हैं जे जिनमार्ग के भक्त हैं तिनके समीप सम्यक्तदृष्टि देव आवे हैं नाना विधि सेवा करे हैं महाआदर संयुक्त सर्वउपायकर आपदामें सहायकरे हैं अनादिकालसे सम्यक्दृष्टि देवों की ऐसीही रीतिहै जैनशास्त्र अनादि है काहूकाकीया नहीं व्यंजनस्वर यहसब अनादिसिद्ध हैं रविषेणाचार्य कहे हैं मैं कछुनहीं किया शब्द अर्थ अकृत्रिम हैं अलंकार छंद आगम निर्मल चित्त होय नीके जानने इसग्रंथमें धर्म अर्थ काम मोक्ष सर्व हैं अठारह हजार तेईस श्लोक का प्रमाण पद्मपुराण संस्कृत ग्रन्थ है इसपर यह भाषा भई सो जयवंत होवे जिनधर्म की बृद्धि होवे राजा प्रजा सुखी होवे ॥

चौपई–जम्बद्वीप सदा शुभस्थान। भरतक्षेत्र ता माहि प्रमाण। उस में आर्यखंड पुनीत। बसें ताहि में लोक विनीत ॥१॥ तिसके मध्य ढूंढारजुदेश। निवसें जैनी लोक विशेष। नगर सवाई जयपुर महा। तिसकी उपमा जायन कहा ॥२॥ राज्य करे माधवनृप जहां। कामदार जैनी जन तहां ॥ ठौर ठौर जिन मन्दिर बने। पूजे तिनको भवजन घने ॥३॥ बसे महाजन नाना जाति। सेवें जिनमारग बहुन्याति ॥ रायमल्ल साधर्मी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक। जिसके घटमें स्वपर विवेक ॥४॥ दयावंत गुणवंत सुजान। परउपकारी परम निधान॥ दौलतरामसु ताके मित्र। तासो भाष्यो वचन पवित्र ॥५॥ पद्मपुराण महाशुभ ग्रन्थ। तामें लोकशिखरको पंथ॥ भाषारूप होय जो यह। बहुजन बांचे कर अतिनेह ॥६॥ तिसकेवचन हिये में धार। भाषाकीनी श्रुतिअनुसार॥ रविषेणाचार्य कृतिसार। जाहि पढ़े बुद्धिजन गणधार॥७॥ जिनधर्म न की आज्ञा लेय। जिनशासनमांही चितदेय॥ आनन्द सुतने भाषा करी। नंदोविरदो अतिरस भरी॥८॥ सुखी होवे राजा और लोक। मिटो सबनके दुख अरु शोक। वरतो सदामंगलाचार॥ उंतरो बहुजन भवजल पार॥९॥ सम्वत् अष्टादश सत जान। ता ऊपर तेईस बखान (१८२३)। शुक्लपक्ष नवमी शनिवार। माघ मास रोहिणीऋक्ष सार॥ १०॥

दोहा—ता दिन सम्पूरण भयो, यह ग्रन्थ सुखदाय। चतुरसंघ मंगल करो, बढ़े धर्म्म जिनराय॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथउसकी भाषावचनिकामें १२४ वां पर्व संपूर्णम्॥

सूचना—इस समय हिंदुस्तान में सब से बड़ा जैनग्रंथों का भंडार यही है क्योंकि यहां अपनी और पराई सर्व प्रकारकी पुस्तकें एकेत्रित हैं आवश्यक्तापूर्वक मंगावो॥

पुस्तक मिलने का पता—

ला० जैनीलाल जैन मालिक दिगम्बर जैनग्रन्थ प्रचारक कार्यालय

मुकाम देवबन्द ज़िला सहारनपुर

लाला जैनीलाल जैन के प्रबन्ध से जैनीलाल प्रिंटिंग प्रेस देवबन्द में छपा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सबप्रकार और सर्वजगह बम्बई,इटावा,लाहौर आदिके छपे जैनग्रंथ मंगानेका सबसे बड़ा कार्यालय

श्री पाण्डवपुराण भाषा छन्दबद्ध मूल्य २॥)

* श्री पद्मपुराण भाषा *

श्री आराधनासारकथाकोष (१२८ कथा ३॥)

आ. श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि ३८२००९

पता-बाला जैनीलाल जैन मालिक दिगम्बरजैनग्रन्थप्रचारक पुस्तकालय मु०देवबन्द (सहारनपुर)

For Private and Personal Use Only